## भक्कल्भामुञ्जाः

न्वर्थाट

अञ्चलके नमस कावात्मव भाज महनिजाकात्तारि वर्गक्रम विन्रस्थ थाजू भर जरनूवक निक्र नामार्थ भर्यत्र भुमानादि महिल जसहर भुम्का थिल कावतानकात हुन्तः भुम्कि नकाताराह्त । पुत्रस्थ दागनिमान मृजिव्यवस्थि मन्यूक मर्बर्गन मेजानूमाति मन्स्ला खिशान



প্রীরাধাকান্ত দেবেন বিরচিতঃ

১৭৪৯ উনপঞ্চাশদধিক সপ্তদশশত শুকুনুকে কলিকাতা নগরে জীবিশ্বনাথ দেব দাসেন মুদ্রাক্তিক

दर्गेक्वर्गिषि जीयवर्गक। अरम्। इ-রণহান তালু। ইতি ব্যাক্ষণ।। (माग्रा मः हर्निक र उपा । इंडि भूभक्षमातः ॥ चार्वाखतेवानि বর্গস্য দ্বিতীয়াদি বর্ণোচারণে স্বর স্পর্শনাদিতি স্তোক গ্রান্থীর স-স্পাদিভিচ্যথাস্থানমূলভীভি ভটীকাকারে। বিশ্বৰূপঃ।। তৃদ্য लिथन भुकारता यथा। छेकृतिः কুঞ্চিতারেখাতাসু বুক্ষেশসমিভঃ । वात्यती कमला निज्या विषा माजा भुकी दिं जा दें जि वर्णा बात्र उख् ।। व्यम् इत्रभः यथा । इकातः পর্মী किर्गु॰ श्रय॰ পর্ম অওলী। भारत स्थलीयुक्त शक्षाप्यमयः महा ॥ शक्ष्याम सयः वर्गः शक्ष পুাণাত্মক সদা। ব্ৰিবিন্দু সহিত वर्गः जमा केश्वत अग्युज्या পীত বিদ্যুল্লভাকার• ছকার• পুণনাম্যহণাইতি কামধেনুতজ্ঞণা৷ ष्ट्रः वि निर्यंगः। ইতি मिनि তরল•। ইত্যেকাক্সকোবঃ।। ছ: পু• ছেন্ন। ইত্যেকাক্সকোবঃ।। ছপ: পু- জী ছাগ:।ইভি হেমচন্দু:॥

हिकातः । जञ्च वाक्षन मधमा हरागः जी शृर कत्रीयः। इकि इकिन्तः। इंगमः क्री नीववर्षः। इंजिरमिनी॥ ष्ट्रभनः शृं जी ष्टींगः। इंडि स्मिरिमी।। स्मार शिक्षाः विमर्ग खानूगः। इगन कः भु जी हागः। इडामनः॥ ष्ट्रगण। जी वृद्धात्रकव्षः। इंडि मुद्र तङ्गाव्या (मिनिव् ॥ र्षिनाङ्की जो एगनाञ्जी। ইত্যমর ष्टी काया : बनानाथः ॥ ' हगनाधी जो हगनाखी। ইত্যমর ही कायाः बायगुक्रहः ॥ . हगनाञ्चिका जी हगनाञ्जी। ইভি भद ख़ावनी।। ছ गन: जी वृष्त्र मात्र कवृष्तः ।. ই গ্রসরঃ॥ ব্কঃ। ইতি রাজনিষ্টঃ॥ रुगनी डी हागमाजा॥ वृक्तात्रक বৃক:। ইতি বিশ্ব:॥ ष्ट्री जी पीक्षिः। यथा। महाहरी **ঁভিন্ন** ঘনেন বি ভূত। নৃসি•**হ সৈ•হী**-भठन• जनुषुया । **ই** ि भाषः॥ ष्टिकनः शु गूवाकव्कः। इंडि <u> बिका ७८ मरः ॥</u> ছটা ভা জী বিদ্যুৎ।ইতি হারাবদী॥ एक की रतोपुर्वृष्टि वालगार्थ भावत्रग 🕆 বিশেষঃ। ছাতি ইতি ভাষা। তেৎ े भर्यायः। बाजभवः २। रेज्यमनः।. हाराभिक व शहिष्ट 8 । इंडि

निमेत्रक्षातृज्ञी॥ अम्प्रगूनाः। व्हेपाउन श्लि ग्रीयू हिम नाणिष् । वर्ग मृष्टि कातिष् । भूख्रावद्गा मन्त কারিত্বণ। ইতি রাজবল্পভঃ।। 🗱।। छाम्। १ वक्तु रिजा अ भारत कमनश्च भूनि श्रेनुवि वागान् नकाय नकाय भुक्तिक्र তৎপত্নী রেণুকা তান্ বাণানানীযা-नीय जरम भाराट मा मधाइ काल (द्रोरपुर) शीखिला वृक्तहाया **म**वनम् किकिष्ट काल हिंद्या **ভা**नानिनाय श्राव उपा कुष्त छ।-নাহ কি চিরেশগতা সা আহ मूर्य (उजमा न नितः भारती শন্তপ্তৌ তেন বৃক্ষছায়া নাশ্ৰিত্য হিতা তমাৎ চিরাবৈতৎ ক্তা ७ हु दाम्नितार जारा म्या मजाति তেজসা নিপাত্যিষ্যামি ইত্যুক্ত্বা भन्षि वातान् मक्षाय मृयं । जिमूत्था **৭তিষ্ঠ সূ**ৰ্য্য স্ত দৃষ্ট্বা ভীতো দ্বিল- ॥ कारिय जागजा जार मूर्याक्साहि **ট্**বৃত্তি তেনামেন ভবজ্ঞিঃ কর্মাণি কিয়ুত্তে কথমেন হনিষ্যসি এবং ুমাকাৰী তথাপৈ মুনিঃ শম ন জগান অথস্যাঃ শির্জাণ ছত্ত नियाम: उरेय मद्दा यहानुक्छि

अडर लाक भुव्यतिया छि नुविधिन् व्यम् मान सहायवा हेर्युक्त म गठः ॥ 🛊 ॥ उत्र नीन कन्ः মুখা। ছব ছি ভরত শেষ্ঠ স ्रशुप्तप्राष्ट्रिकाउरय । मुखु॰ भऊ 🕟 শলাক রৈ স প্রেত্য সুথমেধতে 📭 ,স. শক্রলোকেবসতি, প্রস্মানো দিকাতিভিঃ। অপুরোভি**শ্চ সতত**• দেবৈক্ষ ভরতর্যভ ।। ইতি মহা-ভারতে দান ধ্যঃ ৷৷ ঞ্চা৷ অথ ছত্রযুক্তিঃ।বিশেষশ্চাথ সামান্য ছब्ना हिविधा किसा। बाक्टमूब॰ विष्मवाधाः नामानाकानामुहाउ ্।। তত্ৰ বিশেষ ছবে।দেশেঃ। मम् ७ व्यापः निर्मातः । उरक्छा । দ্বিবিধ পুনঃ সদপ্ত তত্র বিক্তেয় मात्रशक्षमाञ्चकः ॥ मञ्जः कन्मः भनाका**क तब्जू र्वत क** कीनकः। (द्ररेज: जूमिन(क्षे भूज মিত্যভিধীয়তে ॥ দিগপ্ত বট্ চ उई उपीर्या मर्था यूग कमार। च प्रांग (यह नयन विजल्धा कन्त উচ্যতে ॥ শতান্যশীতিঃ ষষ্টিপ্য চত্তারি শমুগ কমাং। শলাকাঃ यह नक (यर वि इरेडः निम्छः। क्रमार्।।नवि उडि (जः मूब-मृदेव स

নবভি পুন:। গুণৈল্প নবভিঃ शाला व्रन्ति रेड नविष र्छावर्।। निया अन्य विष्य किया विभागी बङ्कवः क्रांट । वजः भनाका षिशूनमायासन्भुि हिष्ठ ।। जानू मिश् शुरु वजुि बक्नी जि स कीलकः। वशाःवधान मूहि छः **ज**नुष्कात्मव ज्ञाय ॥ शास्त्रान• युवत्राज्ञमाऽ व्यानाऽवास्त छम्ब्रन्डः। अञ्च द्वारका मर्खा मण इसः गूरवाजमा छर। व्यानुवाः छर।। विमुश्व कांश्रमु छ मधकरन्तो उथा শলাকা অপি শুদ্ধ বংশজঃ। तब्बू " ह तक। दमनक तक हव **जुजार॰ नृ**পতে ईरिष्ठ ॥ **जुजार**-निि भुगानार्ह्ण।। नीत्ना मुख्य বক্তঞ্চ শিরঃ সম্ভ স্ত কানকঃ। भोवर्गः यूवजाबनाः भुजाभानाम विभुज ।। ठान्हरनी मधकान्ही চেৎসুশুল্লে রজ্জু বাসসী ৷ ছত্র• मनारुत॰ त्राद्धा॰ अर्गनस्याभ-শোভিতণা শৃক্লানি রজ্জু বাসাংসি त्रनंश्रम् सर्वाभिति । हेम् कनक দ্ভাখ্য ছত্ৰ সর্বার্থ সাধক।।। म अ कन्म भनाकाम्य मुक सर्पन নিৰ্মিতাঃ। কীলক স্বৰ্ণ ঘটিত।

बण्डू बंड्यू क्यानी विद्यापि व्य रु जाकि कामजीकि यथा कम । क्षानावथ इंगामी नव त्रज्ञानि तकराए ॥ वाकि नत्योकिकी माना हाजि॰ भड़ज मानायर। সর্বোপরি বুন্ধজাতি বিশুদ্ধ हीत्रकं नारमर् ।। मखाख क्व-विनहाः भे भूग्रज्ञागाः भे विन्रास् স্বামিহ্টেক মানেন চামর: সিত ইব্যতে ॥ ইত্যয় নবদ্ধাথ্য শুত্র त्रात्ना भरीजुना । मेजिएतकः विवारहर गुरागा भीजिवर्षनः॥ পতাকানবদ খাগ্রেরাজোষ্ঠাকু লি न भिंजाः। चय कि विकशी नाम ছত্রাজো মহীভুজা ।। ভোজরাজকৃত যুক্তিকল্পতকঃ।।

ছত্রঃ পু মুলেন পত্রেণচ বচাকার
বৃক্ষঃছোতারিয়া বিষাছাত্রনাবিষ
। থরবিষ ইতিচ ভাষা । তথ
পর্য্যায়ঃ । অভিছত্রঃ ২ কটুঃতা
ইতি রহ্নমালা।। ভূতত্ণ । ইতি
রাজনির্ঘটঃ।।

ছত্রকঃ পু নৎস্যরক্পকী।ইতি শন্চন্দ্রকা। অতিহ্ব:। রাকা কুলেখাড়া ইতি ভাষা। ইতি রন্ধালা। ইখারগৃহ্দ্রিশেষঃইতি भपत्र द्वावनी है। ह बगुइः शूर्भ गृं अञ्गर । है जि

ছ্ত্ৰচক । क्रे চক্ৰবিশেষ: । यथा। অখিনী মঘ মূলাদ্য চক্ত ছব। वयाचा कः । शुजीही मध्यः त्रियाया . क्रेमानाड॰ इयाविभः॥व्याद्ययाड- " नताथीत्मः रेनश्र जान्न गन्नाथिनः। ত্রখা ছত্রবিভাগেন জ্ঞাতব্যঞ্চ শুভাশুভ• ॥ অন্যস্য রাজ্ঞো॥ नामकः यव ছবে उउःकन्। চান্য় কলস বীণা ছব দণ্ডঃ || भाउनु रुः ॥ यामन कोलक त्रब्बू র্নবভেদাঃ পুকীর্ত্তিতাঃ। যত্র ছত্রে ছিতঃ সৌরি ভঙ্গ তস্য বিনিদিশেৎ ॥ চাম্রে চণ্ডতা वारमा बनाव्षिः शुकाराउ । দুৰ্ভিকঞ্চ ভবেৎঘোর• পুরাগীডা न अ•भयः॥ कलजाइ ভবেषुक्त• 🍴 ज्वा याजामिक· धुत्र-। वीगाइ-

কপুত্রেণ পউরাজ্ঞী বিনশ্যতি।।
চলচিত্রো ভবেদুাজা ভবভীতাচ
মেদিনী । বদা ঋক ত্রেয়ে সৌরি
শুত্রে দণ্ডে পত্র হৈ ।। তদ্য
তস্য ভবেডক শুত্রস্যাস্য ন
কাশ্য । আসন্স্য ভবেদাশ

व्यामन्द्र गरिनकृति ॥ युवता क्यः कील वस्तरः ब्रब्ह् में ब्रिट्डी। পৌনা যুকোতিচারস্থ্য শনি ৰক্ত ফলে। नহি ॥ বক্ত : কুরযুক্ত । **गर्व**्कृतःक्रािक मः। मनिताङ् कुअमि जा यमा बीरबन्म् अन्युजाः ॥ উडवा थीणवात्का देवनिक्ठिड॰ **ছ ब ७ १ म**ः । कृ त • ह जु है यर ऋ व तू व **চ**त्तुग म•यू छ•। श्र्व ह्व विन माय उथा भाभ ठडू देय । मुक्तम् সংযুত্ত ছত্তে দ্কিণে শস্য ভক্দ कलमानिष्णः । यथा मूडे कल मोत्रि खथा मोग्र कत्ना गूंकः ॥ ভৌম জ্ঞৌ গুৰু রাহ্চ রবি চন্দ্রে वल मानी। यथा शानिकद्राः कृता ন্তথা সৌন্যাঃ শুভক্ষরাঃ ॥ এতে ত্রাপ্টো গুহাখু তার পরচকেণ ভব্দঃ । নৃপু নামৰ্কগো রাহ্ঃ কেতুর্বা যত্র স ছিতঃ॥ ছবভকো ভবেওস্য বিষদানেন ভূপতে: ৷ মৃগ্যা मारुमः याजाः मृष्ठेरुखुःच वारुनः॥ বিশৃহঞ্চ ত্যজেদালা ছত্ৰছে ক্রথে हात्र । उद्घोद्यवः न्याञ्चिकः कृष्णां गुरागा॰ कायाज मुंड॰ ॥ देखि সম্যামতে চত্তচক্র- 11

্ছিত্রপারঃ ত্রি ছত্ত্বরঃ। ছাতিপরা "ছত্রাপান্ত-ইতি ভাষা। তৎ পর্য্যায়ঃ। ছায়া- বাজনির্ঘণী

করঃ ২এইতি হেনচন্দুঃ॥ ভাষার জী জলপদা । ই

ছত্রপত্র• সী ছলপদ্ম• । ইতি ক্রিকাওশেষঃ॥

ছবগরঃ পু॰ ভূর্কঃ। ইতি রয়নালা।। মানকচুঃ। ইতি কেচিৎ ।। সপ্তপর্ণ বৃক্ষঃ। ইতি কেচিৎ।। ছবভক্ষঃ পু॰ বৈধব্যঃ।। স্বাভন্ত্য

॥ नृभनाभः। इंडि स्निति॥

ছত্র। জী মিবিঃ। মোরী ইভি ভাষা
। অতিহ্তা। শলুপা ইভি ভাষা
।। কুন্তুৰ্ক। খন্যা ইভি ভাষা।।
শিগীৰু । কোঁডকছাতা ইভি

ভাষা। ইতি মেদিনী।। মঞ্জিখা। ইতি রাজনির্মণ্ট:॥

ছত্রাক ক্লী কি**ন্দাকু:।ছত্রিকা।ই**তি পুাষশ্চিত্রবিবেক:॥

ছত্রাকঃ পু• জালবর্রক বৃক্ষঃ। ইতি রাজনিঘটঃ॥

छ्वाकी जी त्रान्ता। हेळानदः॥

ছবাতি হবঃ পৃ• ছবাকার দলোন্ডব সুগন্ধাখ্য তৃণবিশেষঃ।তৎ পর্য্যাবঃ 1 ছবাতি হবা ২ পালম্যঃ ৩ অতি-হবা ৪ সুগদ্ধা ৫ ছবকঃ ৬ কটুকঃ :পক্টুঃ ৮। ইতি শদ্ধব্যবলী।। शक्ताथानाः की सुनाकः। इंडि त्राजनिर्घणः॥

रुविका जी निनीमु । किंउक हाडा इंडि जाया। उट मर्गायः। शामग्रह्जिका २ हिलीतः 0 भिनी मुक• 8 उँईक• a वनादा ह• ও গোলাস । ইতি হারাবলী॥ ছ বাক ৮ ইতি মৃতি:।। উছিলী সু• ৯। ইতি প্রভাগবত।। করীবেকু भनात भृथी (दगुक इ बिकायाः সামান্য পূণাঃ। শীতদ্ব। ক্ষাযত্ব। बाहुद्वः । शिहिनद्वः । शूक्दः। **হর্দ্যভীসার জ্**র শ্লেম্ম রোগ कात्रिष्य ॥ भनानज हिकिका গুণা:। পাকে স্বাদুরসত্ত্ব। ক্রক্তু । (मायकातिष्क ॥ मूहिङ्गान कार्ष ব শ গোষ্ঠজম্বেড ছব্ৰিকায়া গুণঃ। অতিদোষ কারিত্ব। অন্য ছ ত্রি**কা স্তেভ্যো** বিগর্হিতাঃ। ইতি রাজবল্পভঃ ॥

हवी थ्॰ नाभिजः। इंटि मन्द्रज्ञावनी
।। हविभिष्टि वि। यथा। शहहर्वाउत्प हवी प्रशे दाव हिनेपूर ।
, इंडि मृडिः ॥

हिद्दाः शूरं गृहं ॥ क्युः । इंडि निषा ह त्स्रेमून्या मूर्गानि वृजिः॥

ष्ट्रन्तः

इन उ क जिल्ला । इंडि कविक इस मः ॥

इत माकि क छड्डिन। छड्डिन दन। बोबनक। ই 5 कि किन्नेक्सः।

इन कि क मग्वरको । ইতি कविकन्नक्रमध्या

ছদ: পু পত্র-।। পক্ষ:।। গুছিপর্ন কৃক্ষ:।।তমালবৃক্ষ:।ইতিমেদিনী।। ছদন ক্লী পত্র-।। পক্ষ:।। পিধান । ইতি মেদিনী ।। তমালপত্র-। তেজপাত ইতি ভাষা। ইতি রাজনির্ঘণী:।।

ছদপর: পু॰ ভূর্জপত্রক্ষ:। ইতি কাচিৎ রক্ষালা।।

ছুদিঃ ক্লী পটল•। চাল ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ॥

इन्ने की व्याबः। कशहः॥ जशहमः।

1 श्व तशहामनः। इंडि स्मिन्ने॥

इन्ने जातानः शृ इन उभिन्ने। उद् श्रियाः। সर्वाजिमन्नी २ विजान वृत्रिकः ३, विभावति । इंडि भवत्रावानी।।

हिन्निका जी गुज्ही । **इंडि** ंबाबनिर्धिः॥ . :

ছন: পু: অভিপান: ॥ বশ: । 'ইত্যমর: ॥ অভিলান: । ইতি ভরতঃ ॥ বিষা। ইতি শন্চনিদ্রুকা ॥ तर्ज बि । ইত্যমন্ত্রিক। जीतमूनस्ती॥

इन्दः की भेदर ॥ (वदः अ रिश्रवाचित्रः ।। अखिनायः। इंडि स्मिनी । चात्रमा वक्षण येथा । भारा চজুন্দী ভট় বৃত্ত জাভি রিভি দ্বি।। বৃত্ত সক্ষর সংখ্যাত জাতি ৰ্মাত্ৰা কৃতা ভবেৎ॥ সম মৰ্জসম॰ বৃত্ত বিষন্পেতি তথিগা সমণ সগচত্ত্বাদ ভবত্যৰ্জনম পুনং।। जानि खुठीय वषामा भाग खर्गा। विञीय वर । जिम िक्स ठलुझामः বিৰুম্ পরিকীর্ভিত ৷৷ এযান্থঃ ! অক্ষর সংখ্যাত অক্ষর গণন্যা পরিপ্রাপ্ত• বৃত্তন্ত্র । মাত্রাক্তা মাত্রা গণন্যা নিণীতা জাতি জাতি সংক্রিকা ভবতি ॥ সমং नगर जूना हर। जाका मन र यम्। श्रुथमः পাদঃ তৃতীযেন পাদেন তুল্যঃ ठकुर्थः शासा विजीवन शासन जूनाः । विषमः शृथक् नक्षा **চতুরাদ•। ইতি গঙ্গাদাসঃ॥** उ<del>ত</del>্ত্র नानाविष• जन्य शुद्धाः हरनता-विविधि शिक्ष एत्सा मक्षती শুত্রবোধাদয়: সভি তেমু ছন্দো-मक्षयूर्ज नकरगामाञ्जनामीन विथाउ।।

1000

à

क्षेत्रां वृद्धि नामानि	ভেষা•মাত্রাঃ ৬ শুক ৷ লঘু	তেবামুদাহর পনি
একাকরা বৃত্তিঃ। উক্থা জ্রীঃ	, w	ুত্তে। <mark>সান্তা•</mark> ॥
জ্যাক্রাব্রিঃ। অত্যক্থা ত্রী ত'ক্রা ক্রিঃ। ম	<b>33</b>	'গোপ ব্রীভিঃ। কৃষ্ণেরেনে॥
नाही	৬৬৬	(गाभाना नाजीिकः । भूत्रहार्गाट कृत्का यः ॥
मृशी	<b>৬</b> .৬,	স। মৃগী লোচনা। রাধিকা প্রীপতেঃ।
চন্তরফরা বৃক্তিঃ। পুতিষ্ঠা কন্যা	<b>৬৬৬৬</b> .	ভাষৎকন্যা দৈকা ধন্যা। यम्याः कृत्व कृत्का श्रथवर ॥
<b>ন</b> ুহী	1119	মুধ্রিপোত্বপদ গ্রমতিসাননুসতীয়
भक्षाक्त विद्या मुभु जिक्ष	1	
পঙ্জি	, હાહહ	, কৃষ্ণ সনাথা তর্ণক পঙ্কিঃ। যামুন কছে চাক চচার॥
পিুযা বৃদ্ধরা বৃত্তিঃ। গায়ত্রী	ા <b>ા</b>	বুজসুক্রবো বিলসৎকলাগে অভবন্ প্রিয়া মুর বৈরিণঃ॥
<b>उ</b> न्यशा	<b>ઝઝ</b> ાા <b>ઝઝ</b>	মূর্ত্তি মুরশতো রত্যজুত কপা। আ্রাণ মম চিজেনিত্য তমুমধ্যা।
<b>ममित्रना</b>	!!!!৬%	णणिवहनाना॰ वुज्ञं क्रिना । अथंत जूषा जिं अधृतिशु रेतहर ॥
সোনরাজী স্থাক্রা বৃত্তিঃ টেফিক্	<i>ઇહાજ</i> હા	হরেগোনরাজী সমা তে যশ ঞ্জীঃ। কগন্ম ওলুস্য ছিনভাজ কার ।।:
শ্বুমতী	thme	ति पृश्चि छाउँ नवकुनुम् छिः। वाधिक मुध्मकी मधूमधन मूर्णा

इन्त्राः द् क्रिनामान	(७वा भावाः
	७ ७०। वघू
কুমারললিতা	ાહાાહહ
<b>ब</b> म्र <b>नथा</b>	৬৬৬॥৬৬
भएतिथा षश्चेकतावृद्धिः। यमुश्रून् विजना	હ્યાહાર
নাণবক•। মাণবক ক্ৰীড মিতি কেচিৎ	
' বিদ্যুন্মান্ত্রা	! . <i>'<b>७७७७७</b>७</i> ७
ন্মানিকা	<b>৬</b> ৷৬৷৬৷৬
পুমাণিকা নুবাক্ষরবার জিং । র চাকী	<b>ાઝાઝ</b> :ઝ
নবাক্ষরাব্তি:।বৃহতী ভ্রগশিশুস্তা স্ভেড্যত্র ভ্তা	્રાાાા
ইতি যুতা ই্ভিচ কচিৎ	ı t

ম্যারি জনুবল্লী কুমার বলিতা সা। ्युरेक्य नग्नानाः छ छान सूप सूरेहः ॥ त्रक् वाक्षित्रभाषाचीन्त्राचारत्वथा । नक्षाञ्चाद्रभः वो कञ्तो द्रम हही।। यामून रेमक ड (परम (गान्यम् जन কেলৌ। ক•স রিপো গভি লীলা हक्षन हुए क्शीन वं म कुरैनः किविभन्न । भुग्य मर्थ स्मन्न मूथः नन्त्रमुक गागवक ॥ वारमा वली विन्।चाला वर्क (मुनी শাক্ষাপ:। যুষ্মিদান্তা তাপো हिरें (गामश्रहः क्कात्माहः॥ यम्। क्कभानभग मिल क्छान नन्। थीः मगानिका भारतमः त्राहि-তাত্ৰ মৎসরেণ ॥ পুনাৰ ভক্তি রচ্যুতা সদাচ্যুতান্ত্ৰি পদ্মযোঃ। শুভি স্মৃতি পুমাণিকা ভবাদুরাশি তারিকা। , इंर उरे निकरे क्लोगी जूबगनिणू-म्ठा वामीए । मूत्रविभू पनिएउ नारम वुक्कन मूथरा माजूर।

ছন্দসা বৃত্তি নামানি তেবা মাত্রাঃ

५ इक । वश

মণিন্ধ্য•

७।७७७।७

কাল্বিয় জোগা ভোগ গত স্তন্মণি মধ্য শ্বীত ৰুচা। চিত্ৰপদাভো নন্দ मू उ का क ननर्ख (यत्र मुर्थः॥

ভূরদসস্তা

৬৬৬৬৬ তরলা তরক বিকিতে র্যমুন। ত্রভান সকলে। ক্রভান ভূতক সকতা। কথমেন্ত বৎস-

। চারক কপল: সদৈব তা হরি:॥

म्भाकतावृद्धिः। भड्किः

ৰ শ্বৰতী। ৰূপৰতা ওাওওঙাওড

হুচিৎ। চম্পক-

মালেভি কাপি

कार प्राचा वार्काः शक्तिभृतेक र्यम् লদা ক'সদ্বিবি ভক্তিঃ। রাজ্যপদে

रुष्णांनि क्रांत्रा क्यावजी विधः

খলু তস্যা

ম্ভা

**৬৬৬৬।**।।।৬৬

भीजा मडा मध्मध्भानी कानिन्ही-

(य ७६ वनकूरक्षा उपरोवासी वृक्ष कन

বামা: কামাসকা মধু জিতি চকে।।

জ্বরিতগতি:

momb

ত্ববিভগতি বু জ যুবতি স্তরণি সূতা

বিপিনগতা।মুররিপুণারতিভক্ণা

পরিরমিতা পুমদমিত্যা

ননোরসা

াভিভাভাভ তরণিজাতটে বিহারিণী বুজবিলা-

এकामभाक्तराव्विः।बिद्रै

मिनी विवामछः । मूर्वेतिला छन्ः পুনাৰবঃসুক্ত শালিনা•ম্নোরমা॥

ইন্দু বজা

৬৬।৬৬।।৬। গোঙে গোরি সব্য করেণ প্রা কঙেম্বরু হুতি যুক্ত বৃষ্টো। যো গোক্ল গোপ কুলঞ্চ সূত্র চক্রে দ বোরক্ত চক্রপাণিঃ।।

ृष्ट् नरः

इन्त्राः वृद्धिभागानि তেষা• মাত্রাঃ

५ ७क । वधू

ष्ट्रन्सः

**अ**वागूमाञ्ज्ञगानि

উপেন্দুবজ্ঞা **উপেন্দ্**বজা্যা ইন্দুবজ্বাযাল চরণ<sup>া</sup> ষ্টিভা উপজাভয়ঃ ভাষ্ক চত্ত্ৰ্ণ পুস্তার ভেদাৎ আদ্যন্তৌ ত্যজ্বা চতুদ্দশ পুকারা ভবন্তি। **म्**म्थी

বিভ্রণানা ছুরিত বপুত্তে। মরানি গোপীভি কপাস্যমান সুরক্ত भूष गणि मख्भञ्।।

ાાહાાહાાહ

जर्मा जुड़ा उठ कुछ ग्रह यमन বিধু মিত দীধিতিভিঃ। তিমির मूममा मूथ मृम्थी इविनवलाका **ठूठूच-**ठित्र• ॥

नानिनी অস্যা শ্চতুর্থেততঃ সপ্তমে চ যতিঃ

৬৬৬৬৬।৬৬। অংহা হতি জ্ঞান বৃদ্ধি বিধতে ধর্ম- ধরে কাম মর্থঞ্চ সূতে। मूकि॰ দত্তে সর্বদোপাস্যমানা পু•সা• শুদ্ধা শালিনী বিষ্ণু ভক্তিঃ॥

ৰাভোমা

৬৬৬৬॥৬৬। খ্যাতা মূর্ত্তি: ক্ষণ মপ্যচ্যুতস্য ৬৬ শ্রেণী নামা গদিতা হেল্যাপি। সংসারে ২িমান্ দুরিতং হস্তি পু•সা•বাভোমী পোত মিবাস্তোধি मध्यऽ॥

ভুমুরবিলসিভা ১৬৬৬।।।।।।৬ ভুমর্বিলসিভ মিডি কেচিৎ

মুখে মান পরিছর নচিরা-তাৰণ্য স্তে সফলযত্ত হরি: ফুল্লা-বল্লী ভূমর বিলসিতা ভাৰে শোভা কল্যতি কিনু তা।।।

বিশ্ব বন্দ্য কিছুমা ত ভলামি ভাৰ

গম্য মদ্যুত্ত।।।

(ভ্ৰা•মাত্ৰা 'इन्स्माः वृद्धि नामानि তেষামুদাহরণানি ७ **७का न**घु । ৬॥৬৬॥॥৬৬ বল্লব বেশা নুররিপু মৃর্জির্গোপ অ্নু কুলা মৃগাক্ষী কৃত রতি পূর্তি:। বাঞ্চ मिरेका भुगि भवमा मामगृक्वा 'জগতি নকস্য।। ৬৬॥৬।৬।৬ রাধিকা দ্বি বিলোডনস্থিতা কৃষ্ণ রথোদ্ধতা (वन् निनरे द्राथाषाठा । यामून• তট নিকুঞ্জ মঞ্জস। স। জগাম निवाङ्डि इवार ॥ ৬৬॥**৬॥৬৬**। যস্য চেত্রি সদা মুরবৈরী বল্লবী স্থাগতা बन विवाम बिलावः। छम्। नृन. মমরাল্য ভাজ: স্থাগতাদ্র করঃ সুর বৃগঃ ।} (माधक তাবক नाम शहर मा क्षेত्र लहे मू विनिर्गम काल यन मि মেষ্যতি যোগ ॥ ষোটনক• ৬৬॥৬॥৬॥৬ রঙ্গে থলুমল্ল কলা কুশল কাণ্র महाउदे भारेनकः। यः किलि লবেন চকার সমে সম্পার হিপুণ পুতি মোটবতু ৷৷ ৬।৬।৬।৬।৬।৬ यग्रकी र्ख दिनमु कुन्त इन्तन भाग শেগনী (भवत्वाक भाकती महा। बाइ वीक

इन्स्नाः वृक्ति नामानि

(ত্যা-মাত্রাঃ) ७ धक। वधु

তেবামুদাহরণানি

দ্বাদ শাক্ষরা বৃৰিঃ।জগভী

চন্দু বন্ধা

৬।৬।।।।। । চন্দুবর্জ পিহিত । ঘন তিনিরৈ রাজ वर्षा ब्रह्छि अन गमरेनः। इष्टे वर्षा उरवक्ष मद्राम कूक्षवर्ष्मान इदि खब कु जुकी ॥

ব শহ বিল • ব শন্তনিত মিতি ক্লাপি

। । । । । । । विनाम व महिवन मूथानिकः भ भूभूर्य यः 'भक्षम द्वाग मृद्धिद्वन् । वुबाक्षनाना मिल गान मालिया॰ **बराद्र गानः महितः शूनाञ् दः॥** ৬৬৬৬॥৬। দৈত্যেন্দ্র বংশাল্ন কদীর্ণ দাধিতিঃ ৬৬ পীতাম্বরে এসে ক্রমান্ত ----

इन्द्रव•भा ব শহবিলেন্দ্ৰ শ চরণো ভথ বচিতা চ্চতু ইর্ণপুস্তারীযা-দ্যন্ত ব্যতিরিক

পীতাৰরো হসৌ লগতী ভমো रुद्रः।यश्चिममञ्जूः भवञा **३**त वर् । তে कः न हाप्त्र मूथा मथ दिनः॥

চতুদ্দশ প্রকারা

উপজাত্যো ভব্ডি জ্লোদ্বতগতি:

હામકાસમહ

यनीय इनरका विरमाक्य दिशमः क्विन्त्उनया क्वाइडग्राडः ।

বিলাস বিপিন• বিবেশ সহসা करतां कूमन रनी म बगका।।।

ख्वन श्रांज॰

**७७।७७।७७** ৬৬

नरातात्रक कािं ज्रज्यित्य यत्मछ॰ दूषः जीवनः निप्नमानः।

मया क्लिनिनः कालियाथः कुक्षः

जूबक पुराज कड आंग्रांका

Ę	न्मः	<b>२ क्या</b>
. ছন্দেশা বৃত্তি না	নাণি তেযা-মাত্রাঃ	তেবামুদাহরণানি
	५ छक्। वध्	
(ବ୍ୟାତ୍	1 113.13.13.13	यम्नाउछ निष्ठ अविक्वावमा हि
		मताकर मक्कि। मुस्तिशहरे
		करण द्रशराजु गय • यि । हि भि कस
		নিজ• সফল•া৷
ञ्चिनी	<i>ভাঙভাঙভ</i>	इन्द्रनीलाशिक्षात्वय या निर्मिजा
·	७७१४	শাতকুয় দুবালফ্ডা শোভতে।
		नवा (मयह विः भी जवामा रुत्र म् दि
		वाखाः मरेमरवावित्र मृशिनी ॥
<b>तिथामरी</b>	<b>৬৬৬৬৬</b>	अहं। मत्र्या ज विश्वामत्रामा
	<u>3</u> 5133	मरिष्ठितिक॰ कृष म छाई छक्ता।
		ত্রাশেষাত্মশ্যন্থিতে ভাবিনী তে
		जुा जः मण्यमात्राथना रिवधानवी ॥
পুমিতাকরা	ાંકાકાાકાર	व्यम् जमा क्रिक्रियामित्र की तन
		মৌজিকা-শুলহরী ছুরিতা।পুমিতা-
		ক্ষরা মুর্রিপো ভণিতি বু জসুভুবা
ফ্ৰতবিলম্বিত•	<b>सिंशालाला</b>	মভিজহার মনঃ।। তরণিজা পুলিনে নবযল্লবী পরিষ্ঠা
	Mononore	गर किल कुज्रलार । कुज्विलिधिङ
		ठाक दिशादिग• इदि गृह• श्र <b>म्</b> रयून
		नमा वरहा।
मुन्ता किनी	unnersere	विष्युमन स्थितिया मक् जाशमुखन
4 4 4 4 4		कहि युक्त भैक्तांकिनी । महानिहिड
		कृष्टि युग्रं भेन्ताकिनी भूत्रानिहिछ निज्यक जुड़िका श्रेष्ठ क्रग्रह्म भीजीवृत्रः।
		शीजीचर्द्धः।
		المراجع

**७**वें।सूनाह्तपानि

।।।।७७।।।।७५ विभिन विशाद कुमूम बिहिजा কুত্তকিত গোপী নহিত চরিতা। मूत्रतिभू मृद्धि मू थिति उ व भा हित মবভাদ্ব গুরুল বভ•সা।।

> ।।।।७।।७।।१७ दू हे जूबमा मकबन्द मत्नाङ्क• तुष वनना नयनानि विशीछ । তব मूथ **তানরস• মুরশ্রে।** হাদ্য তিডাগ

> > विकामि यना स्व॥

भाग जै ৰমুনেতি কাপি।

াাাডাডাডাড ইছ্ ক্লযাচুতে কেলি কাননে মধু রস সৌরভ সার লে:লুগঃ। কুসুম কৃত লিত চাক্বিভুনা মলিরপি ष्ट्रिक गाम**ी** गृङ्ध।।

মণিমালা ष्यम्याः वष्रेगर्याजः

ভামরস্

७७॥७७७ भुसामय मोलो नानाभन कुछ জাত পুতিবি**ষা শে**:গা মণিমালা। গোবিন্দ পদাবে রাজী নথরাণা मा**ञाः ममिष्टि श्राञ्चः मामय**ङी॥

ं जनस्त्रभाना অস্যাশ্চ ব্রভির্ঞা-ভিন্ধ বৃতিঃ ৷

या जङ्गाना किन मूर्तिराज्यधाना <u> ১৯৯৬ ।।।। ७</u> <u> ৬৬৬</u> তাপো ছেদে জলধরমালা নব্যা। ভব্যাকারা দিনকর পুত্রী কুলে কেলী (बाबा इद्विउन् तवारमा वः॥

े खरगाम भाषा क्रा वृख्ः, ় অভিন্নগভী। भ्राह्म বৈভিদশ্যভিশ্যবি:-

৬৬৬য়া৬৬ গোপীনা মধর সুধা রসস্য পানে कबूक खन कवार्माश्राष्ट्रीनका আশ্চর্য্যে রপি রতি বিভূমৈ নু রুদরঃ न नात्र मिक्क ब जव भूक्षिणी है।।

रुन्प:		<b>छैन्स</b> ः
हिनानाः वृद्धि नामानि		ভেষাসূদাহরণানি
	५७क्। वध्	
<b>ৰ</b> ুচির।	151511115	পুনাত্ত বে। ইরি রতিরাস বিভূগী
•চভাৰ্ভ ৰ্ব্ভিক	। ७१७	পরি ভ্রদ্রুজক চির। ফ্নান্তরে। সমী-
যঙিঃ।		রণোল্লনিত বতাত্তরালগো যথা মঞ্-
, , , ,		उत्त ज्यान ज्यहः॥
মুক্মিয়ুরঃ	৬৬৬৬৬ ১৬	बीब। न्छन् नंख मार्व धनि काउः
চন্ত <del>তি</del> শ্ব <del>তিক</del>	॥ ७५	न् उन्नीभारमाहि भाराहानिन तम्।
युद्धिः।		कार्स क्रीडाकृष्ट मना लगत वंशृज्धः
<i>ny r</i> <b>⊎</b> , r <b>y</b>		कः मधु • मो निर्जन वृन्तावनमाश ॥
i	ուս թ դ	करिं दिश्कि तिथू छाउँव नीना
	99	कुशिङ कदनकत्र कालिय भोत्नो।
		हेत्र कमन यूग हालन हुओ शर
		নথ কচি জিড ভোগি মণি 🕮:॥
ন্ত্ৰী ভাষিণী	। ७। आ। ७	অন্তোমি শীতল করেণ লালয•
जून <b>ि</b> एनी जि	१७१७	স্তনুকান্তি চোরিত বিলোচনো হরে।
माञ्जा।		नियं इ॰ कनानिधि त्रमी उ वलवी
•		মুন মচ্যতে ব্যধিত মঞ্জুভাবিণী ॥
<b>इन्स्कि</b> ।	१।।।३५ । ५५	man and a man and an area and a financial forms.
<b>उ</b> ट्स श्री कि	19	कत्र जनया जीत (मरम इति:।
কুপি। সপ্তভিঃ		বিহরতি রভসাদল্বীভিঃ সম•
বড়িশ্চ যতিঃ।		ত্রিদিবযুবভিভিঃক্যেপিছেছে। যথা।।
কলহ•সঃ	॥ ५।५॥। ५	यमूना विद्युत मुज्दक् कण्डला
ক্লিংহন্যদুঃ ক্লাপিঃ	श कर	वृत्र के भिन्ने क्रमिन्ने के उपिन्न
azi.		• जनिव का तिकल कि निमानः गुर्मारं
, •		ज्ञान के जन्म जन्मः।।
•	<b>■</b> ; .	

<b>इस</b> ः		ष्टमाः
इन्त्राः वृश्चि नामानि	তেবা• মাত্রাঃ	তেবামুদাহরণানি
•	७ ७ व । नशु	<i>.</i>
পুৰোধ্বতা	॥ ७। ७ मा ७ १७। ७	শयिका म्या हरून माननिष्या तिक किल कुछ निन्या विनामिनी। मूत
		देशक कुल किना स्वास्त्र । चूत्र देवितिया बहन हुमनाहिना त्रिक
ग्रानम् मू थ॰	11113 11 3 1 3 1 33	माउठान मशिह পুर्वाविजा।। एक जून वीर्यं जतः रही महान्ना
<b>চ उर्क भाक्त ता वृ जिः भक्ती</b>		यूधि नमूलिका ने होनयां किकीतः। कृषिक म्लान्यमूथ् म्ला छलिल, कृष् थल् विज्ञि कीवनम् (यानः।।
অসহায়। পঞ্জি ন্বভিশ্চ	ાાાાલ્ટ ટહ્ય ઇટ્ટ	वीर्यादी (यन ज्वाठ त्रांत्रमाट किर्छ रेपर्डाटमु बाडा थत्रिव त्रिय स्माधा
युद्धिः ।		। धर्म हिडार्थः भुकारिङ क्रि जनकः जाधनाः वाधाः भुनमयङ म कः जाबिशा
বসন্ততিলক। মিংহোদ্ধতাকাপি অষ্ট।ভিঃবন্তিশ্চ ষতিঃ।	७५ १५ १११ ७ ११४ १४५	ফুল্ল বসম্বতিলক তিলক বনাল্যা লীলাপর পিককুল কলমত্র রৌতি। বাত্যেব পুর সুরভি র্মল্যাদ্রি বাতো বাতে ইরিঃ সম্থুরা বিধিনা হতাঃ
স্থাৰ জিত। সঙ্গিৰ্গতিং	॥॥॥ ७ । ७ ॥ ७ । ७	यः॥  यहनविधिष्ठक भुजाश क्जाला यहू  निव्यवस्था शिव त्रश्राकिजा। व्यक्षयक  नमत्र नम्छ त्रिभू दुकः म क्यिक  क्ष्माजाःगिक ग्रंक प्रथकती

कन्मः/ क्ति। वृद्धि नामानि दक्ता माजाः তেষামুদ হেরণানি ५ खका वधु পুহরণকালকী अभूग ব্যথ্যতি **शुरुद्र**गकिना min & min ্সগুভিৰ্বণৈ ব্তি: পুমদবনভবা তবধনুবি ভভা!বিরহ বিপদি মে শরণ মিহ ততো মধু-মথন গুণস্বরণ মবিরত।।। जु। मा ज्रीनि ज तम धुता ना रिगा ही रिजः *७५७७७*।।।।७ ৬৬৬৬ ত্রীথ ওাদের ভু ত পর্বনর্মন্দানেশালা। लोक्य (जामा शहाव विवास खा-ল্লানেঃ ক•সায়াতে নৃত্যিত সদৃশী বাসম্ভীয়•॥ मूर्ष योवन नन्नीर्विद्ध्विज्ञमाना एएए।।एएए লোলা *७७*।,७७ विलाक्या जुडब्ला (गावित्माडि •প্রা: সপ্ততি র্যতিঃ मुद्राभः । छव्नरादन ब्राख च्छक्क সনাৰে জ্ৰীনাথেন সমেতা স্বছন্দে হ্বৰু কেলি ৷৷ नान्तीमूथी সরস খগসলালাপ নান্দীমুখীय• ।।।।। ७५ ७५ অ্স্যা: সপ্তভি লহরিভুদ্দল চাক্ফেন স্বিত্রীঃ ৷ 166 য্তিঃ মুরহর কল্যাসন্তি মাসাদ্য কিন্তে **शक्षरणाकता** वृद्धिः। পুৰুদিত হ্দযা ভাৰুজা নৃত্যতীহ ৷৷ অতিশর্করী। मनश्रम जिलंक समृति अनिहिन्तः mannin 5 শশিকলা বুজযুবতি-শ্লুসদলিক্ नर्रिक न्येन इन्ध् के निन रिष

ব্যভরুত বিভতরভঙ্গ পরিউর্লা।।

ছাত্রং
ভাষান ভেষা নাত্রঃ তিয়ার্দাহরণানি

mmanni 5

याय महर्षीत कित्रजत छामयी <u>মু</u>দিন বসতি রনপগত পরিন্লা সুগিবনিবসবিলসদনুপমরসা সুমুখি मूरिज मनुक्रमनन क्रमर्य।।

মণিগুণনিকর: অষ্টভি: সপ্তভি শ্চ यज्ञिः ।

Hillillill &

নরকরিপুরবত্ত স দিখিল সুগতি

রনিতমহিন ভূর সংক্র-নিবস্তিঃ। অনকবি ন্ণিভানিকর পরিচ্তু

वानिनी অষ্টভি:সপ্তভিশ্চ যতিঃ ॥॥ ५५५। **एहा एह**  সরিদ্ধিপতিরিব ধৃততনু, বিভবং॥ म्गमर क्षकहा भी उरकी स्य वामा ক্চির্শিথিশিথঙা বদ্ধমিল্লপাশা । অন্জু নিহিতম শে ব শসুংকাণ-यडी थ्उमध्तिय नीन् निनिनि

भाख दाया।।

नीनाथन

*৬৬৬৬৬৬৬* シシシシシシ भाषात्वा भाविनतः कानिनिकृन কৌণীচকে রাসোলাসঃ क्षाशीं जिः गार्कः वीवार्थवः। मन्ता-কিন্য স্ত্রাপান্তে ধ্রৈ কীডাভি व्वित्वायष्ट्रप्रवानामी मः स्व माजिः থেলখীভিঃ॥

।।।।७ ।।७ ७७

বিপিনতিলক বিক্সিত বসন্তাগমে नयुक्ठमरेन मधुकरेत तर्गाष्ट्रवृ छ । নল্য নক্তা রাচ্তল্যস্থাল্যেই-যন্ বুজযুবতিভি বিশ্বভিত্তী । হ্রি: 11

हन्त्राः वृद्धि नामानि	ভেষা•মাত্রাঃ ৬ ভক্। লঘু	ভেষামুদাহরণানি
তৃণক•	৬াঙাঙ ৷ ৬ ৬ 1৬ ৷ ৬ ৷ ৬	সান্বনকৈতক বিকাশি ভৃষপ্রিত পঞ্চবাণ বাণদাল পূর্ণ হেমত্নক । রাধিকা বিতক্য মাধবাদ্য মাসি
हन्दुः <u>चथ</u> ्र- मध्यम् यष्टस्म विक	৬৬৬৮।৬৬৬ ১। ৬৬। ৬৬	नावत्व साहरम्जि निर्जतः प्रयो विना कनानित्व।। विद्दार ज मूदाद्व भाष्ट्र भूकाना क्षे हि सान्द्वार पूक्न न जाज्ञ विद्वा न। बाधास्माहन्म गर्ज
কিনু 1	জ । জন । জল জনসমসকল	नीन। यथा हम्मुलिया किक्षार्छ। द्रा॰ मात्र शे थर्ड धुन॰ की वर्याण॰॥ ॰ लागानी नीन। लाना यह ८ किन-मात्र कार्या कार्य (थन मुकारात्र न्यू किर्य हामा कार्य की की की की की किर्मात्र कार्य की की की की की की किर्मात्र की की की की की किर्मा कार्य की की की की की किर्मा कार्य की की की की की की किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा की की की की किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा की किर्मा किर्म किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा किर्म किर
ষোডশাক্রাবৃত্তিঃ।অ <b>ঠিঃ</b> চিত্র•	ভাভাভ'ভা ভাভাভাভা	नात्कावात्र्याधिम् ८० ठवकात् ॥ विक्रमाक्ष्णायद्वाध ल्यां छि द्वतू वाम् । रुष्ठे वल्लवोकमात्र स्ट्रम् काञ् मृथ क्षेकाक्ष । जाः स्ट्रम्ब, द्वासूत्व
শ্বভগজবিলসিত। গজত্তরপ বিলসিত মিডিলাঙো। সপ্তভি নিবভিশ্চ যুতিঃ।	ા આણામ આણામ આ	भूगाना शामरामय दन् गृह्णिक कि मानि शामराम् शामराम् शामराम् ।।  स्या इतिक हु श्रास्थ तस्त्र ने श्री भारतः हु कि दिन स्थानिक स्यापिक स्वापिक स्

्र क्रिक्ट के किए के किए	37	क्रमः इन्सः
इन्हमार वृद्धि नामानि	তেষা মাত্ৰাঃ	~ (ञ्वामूमाञ्ज्ञगानि
	५ ६ का विष्	
চকিতা অন্যা <b>অষ্টনে</b> য <b>িঃ</b>	७ ॥॥ ७७५७ ७७ ॥॥ ७	
পঞ্চামর•	1 ৯ ৷৬ ৷৬ ৷৬	নক্ষন বিপিনে গছত শরণ কৃষ্ণ ভো ভীতা ভবরিপুতঃ।।
	18 18 18 18	निर्णि जंबिक्तिन ज्वित्त मनीन वजुर्मान में। मूदाक्षना ज वल्लवी त्या भूगक ठामत सुत्र ममीस वीक्रिज
মদনললিত। চত্তথে বংগ্ৰচ যতিঃ	14 TA 111 .9.	महाहु उ॰ जन्नाम छै॰ । विज्ञ मुम्न विक विक्रा (बोजावत भूगे। मायर्थ भवाविव कृष्ठ उत्तिर्श्वासार्थि जन्म । त्रावाक्य के किसेन विज्ञान
<u>বাণিনী</u>	॥। ७१७॥। ७१७। ७७	নের হেল ব্লাবপুঃ ক সারীতো রতি রস নহে। চক্রে হতিচটুল ।।  মুরতুমনাননেদ্য ননুবাণি নীতি রম্য । তবচরণ পুসাদ পরিপাকতঃ কবিত্ব । ভবজনরাশি পারকরণ ক্ষম । মুসন্দ সতত মহ অবৈঃ স্বাচিতৈঃ
लुव कुना	\$3555 III 5	ख्वानि निज्रशा पूजार कार मृत्य हनवन्य सङ्गात प्रका मूक्ष भारत्यामः भुकिर्वे जुना कारिनामः। सिज्ञ क्लू स्क्याम् मि पर्वे किरामार्थिनीनी हर्ति क्षिप्त

ভেষা•মাত্রাঃ

७ ६व। वधु

1111७1७111७

1333551111

15 ॥ ५ । छ।

॥७।७७।७

७५॥।७

19919

इस्नी। वृद्धि नामानि

অচলধ্তি:

१ स ५ स उ

নীউন্**শা**করা বৃদ্ধিঃ। অত্য

ৰ্ঠে একাদ**শেচ** য**িঃ** 

অপ্তনে নবনেচযকিঃ

শিখারীণ

**श्**थी

59 • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
हिंग (खरामूमी इंद्रशानि
তরণি দুহিত্তট কচিরতর বসভি
রমর মুনিমুখ জন বিহিত ধৃতিরিহ।
मध्तिभू त्रिंजनव कनध्त कि उन्
त्रव्तर्िक कमयाजि मृक् कि क्रि थेवू।।
অমর মধ্র মানস মুদে পথেদে খুনি
র্গক্তক্ত সুরারি ভূজণেন্দু
স্জাসনে । ধ্রণি ভরাবতার বিধি
ডিণ্ডিমাড ধরঃ স अय् <b>তি ক</b> ॰ স রক্
ভূবি मि श्नामा श्राः॥
कद्राम्म् जुर्छ नन् निथिति गि म्म् जि-
শিশো বিলীনাঃ স্বঃ সত্যু নিয়ত
भवत्थयः उपिरिनः । इं विकारितः।
পানুচিত নিভ্তালাপ জনিত মিত:
विज्यास्त्वा जगमवन त्रावस्त्र शरी स्व
দুরত দনুজেশার পুরুর দুঃছ পৃথীতর•
জহার নিজ লীলা। যদুকুলেবতীর্য্যাশু যঃ। সএষ জগতীগতি দুরিতভারে
मयाम्णा॰ इतियाजि इतिः स्डि
মার্ণ চাটুভি স্তোষিতঃ।।
নভদ ব•শপত্রপতিঔ\ রজনিজল লুর•
भगा नेजन (मेरिक्के ब्रिटिडी इन ने
क्रजार विषठ छ होत्स्य निक्रः-

ব <b>·শ</b> পত্ৰপতিভ•
ব•শদল মিতিশস্তৌ
ব•শগত্রপতিতা ইভিকেচিৎ ।
মুস্টা দলমে সপ্তমে চুম্তিঃ।

৬।।১।৬। ॥ ५ ॥॥॥ ५

	क्रन्तः
इन्स्नाः क्	ख नामानि

ভেষা• মাত্রাঃ ৬ **৩**ক । **ল**যু

তে্যাসুদাহরণানি

मनराकाडा जन्या म्हज्यर्थ दर्ष अक्षरमह यक्तिः॥ इत्र-(होज्यदर्गनाश-(यागिनीम्खा। ৬৬৬৬।।।। ৬৬।৬**৬**। ৬৬ (भूमानारेनः शिव्यविख्तरेनः श्रीनिष्ठा विक्रमारेन्। संन्हाकाष्ठा करन् नियुष्ठः वन्ध्रजात्मिक् बाला। अवः निका वहन भूववा त्राधिकायाः स्थीनाः श्रीकः भाषाः स्थिक् सूर्वरा (ह्वकी-नन्हत्ना दः॥

**হ্**রিণী ষষ্টে চন্তর্থে **স**প্তমেচ যভিঃ ।।।। ७५७७७ । ७ ॥ ७ । ७ व्यक्ति मृतिषि त्रिकः नीष्ठा शुतः इतिरी गणाषुक मृगम्भाः मृत्नराई-रम्यास्त्रमयन शिष्ः । धर्मयमनिमाः मृत्राभागास मृताति करणवरत व्यक्तिन-मृतिकारम् । दिलाण-विलाहनः ॥

नम् हेकः

111131311 3113113 | वुजनिजादमञ्जिलकी वर्षमञ्जूष्र निष्मेश्वन वाष्ट्रिक कन्न करः । विज्ञ निज्ञानिक कालि मुक्टी मूरि- एक क्रिंग करिंग क

বুনকোকিলক• অসঃ সপ্তনে যঙে যুক্তিঃ॥• १११७ ११ ७ ११७ ११ ७ হল্পা• বৃত্তি নামানি তেবা নাৰা:

ভেবামুদাহরণানি

৮খক। লঘ্

হারিণা जनाम्हरूर्थ वर्ष সপ্তমেচ যভিঃ।

৬৬।৬৬। ৬

৬৬৬৬ মান ৬ বস্যানিত্যে শুভি স্বলযে শ্রীশালিনী লোচনে রাগঃ স্বীযো **২পর কিসল**যে नाका तनातक्षन । भोती कास्टिः পুকৃতি কচিরা রম্যাক্রাগ ছটা ना क-नारत त्रक्षनि नक्ष- त्रांधा न्ति। হারিণী॥

ভারাকান্তা চত্তথে যাও সপ্তমে চ যভিঃ।

**७५४७ ॥॥७** ।७॥७।७

वद्राप्तमा क्रिश वृद्धिः ধৃতিঃ।

*७४७७७* ॥॥ । ম বঙ্গে সন্ত্ৰে

**ठ शल्हा**.

ভারাক্রান্তা মম তনু রিষ্ণ গিরীন্দু বিধারণাৎ কম্প গত্তে শুম জলকণ **७**था भित्रमूक्छि । ইত্যাব্यन् करि जलम अनाकत वज्ञती अंत्युरवाष्यं অর বিলসিত বিলোক্য গুৰু স্থায়িঃ।। कीउ८ कानिकी ननिष्ठ नर्दी বারিভি দাক্ষিণাতৈয় বাতেঃখেলজিঃ সসুমিত লভা বেল্লিতা মনদ স্নে। ज्याबी गीरैकः कियलय करतालामि-তোল্লাস্য লক্ষ্মী• তন্বানা চে**ভো রভন্দ** তরল চক্রপাণে শ্চকার ॥

नन्त-अकामरण मध्याठ ৰভিঃ।

ાર્શકા હવા ७।७।७५।७

ভরণি সুতা তরক প্রনিঃ সলীল गथुँतिशू शामशक्क तकरे मुन्ठ न्थीठन्। मुत्र्वत हिब (किटें) कवा अनु। अन्याद्यकः क्रिंडि छन नंगरन वुद्धार भ अर्थ वृन्तावन भे

ছন্দা বৃত্তি নামানি তেখা মাত্ৰাঃ

**उत्रामुमारुव्रगानि** 

৬ গুৰু। লঘু

বি•শত্যক্রাব্ভিঃ।কৃতিঃ

जू वहना সপ্তমে চত্তৰ্দেশ বি শতৌচ যতিঃ

**৬৬৬৬। ৬৬** lilli 655 iii

পুত্যাহ্নত্যেন্দ্রিযাণি ত্বদিকর বিষযা-मानागु नयना ज्वा॰ भग्रयस्त्री निकरक्ष পর্মতর কচে হর্ষোত্থ পুলকা। वाननाम्, भुठाकी वमित मुवहन। যেবৈগ্ৰুৱস্কিল কামাৰ্ত্তি ভ্যক্তুকামা

ননু নরক রিপো রাখা নম সখী॥

कराजान हक्ष्म क्रुक्त सन मिण्यान ७॥७।७॥ मत्नाद्यमा द्रम्भीय त्वपू निनाम विक्रम

नक्रम् न्थावहा । वक्षानुद्राश নিবাস রাস সমুদ্রবা ভব্রাগিণ•

विमाशो इति थन् वल्ल किन हाक

চামর গীতিকা ॥

গীতিকা

11 ७ १७ ॥ ७ ।

3131313 1515151

**हिंख व्**ख नीनगा निमर्ग तमा (मङ् । ७। ७। ७। क्र वि जुःसन ता**बमान म**ष्या विवास मन्द्रा कना अ बृह्दन । यः भमः वुकाक्ना बरेनः मूदाक्ना निरेखः मूथ॰ স্মেত্য বিষ্ণু কল্ললাস চিত্তপদাকোষ विष्तरः मत्म महास्त्र॥

नशीयूरवाचीन एनद्रिक यूगना नवा ন্মা ফলাভ্যা• তবো কদ্ধ• রাজন্তর-व किनवरानिष्ठे जूनिश्व नाथा। वज-म् कात्रकाट भन व्यवस्य हम् विशा-कि जागा महा | माजा मिली भिवन विभिद्धेतः कृष मा काशि वल्ली।।

অভিচ'ষতি:শ্

इ.स्मा वृद्धि नामानि

(उनाः भावाः ৬ ध्यः। नयु ভেৰামুদাহরণানি

একবি শত্যক্ষর। বৃত্তি:।

পৃক্তিঃ।

সুধারা সপ্তমে চত্তুদ্দ**েশ** একবি•শতৌচযতিঃ

१ ७७७ ।।।।।।७७१७७ । ७७

সরসী . ৷৷৷৷৬ ৷ ৬ ৷৷৷ গি•হকমিতি ক্বাপি।<sup>;৬:৷ ৬ ৷৷</sup> ৬ ৷ ৬ ৷ ৬

দ্বাবি•শ্ত্যক্ষরাবৃত্তিঃ। আকৃতিঃ।

> হ•সী ৬৬৬৬৬৬৬ অষ্টমে দাবি•শভৌ !!!!!!!!!!৬৬ চযতিঃ ৷

गणित्रा

511 511 511 511 511 5 11 5115 व्यात्कार्यक्तीयज्ञान् कनक कय लगन् निश्वानाः मूहामा वर्ष्ट् कहन्तुकारेष्ठ वंगिरिन विक्रता वाक कर्णायन्न । व्यान व्यानक वर्णाधृति मूचिन कर्णायन्त विक्रा व्यान व्यानक वर्णाधृति मूचिन कर्णान विक्रा त्रवं कर्णान वः मुख्ता हात्र हाता ॥ विक्रतक नाम रेणान विक्रत्र वाक्षत्र । क्वत्यम् मूजन मूप्तार्थित् त्रू वेवस्नायुका मूचिन मञ्जू वाक म्यान विक्रित् । क्वत्य यूग वक्षत्र विक्रा मूक्ता क्व्य व्यान मूणान विक्रित् । क्वत्य यूग वक्षत्र विक्रा मूक्ता क्व्य व्यान म्यान विक्रत्र म्यान मूक्ता क्व्य व्यान म्यान विक्रत्र म्यान म

সার্দ্ধ কান্তেনৈকান্তে হসী বিকচ
কনল মধু স্রভি পিবন্তী কান ক্রীডাকৃতক্ষীত পুনদ সরস ভর নলঘুরসন্তী
নকালিন্দানে পদ্মারণ্যে পবন পভর্ন
পরি তরল পরাণে ক-সারাতে পশ্য
পেছ স রভস গতি রিছ বিলস্তি
হংগী।

মাধ্ব মাসিবিকসর বেশিরপুর লসন্
দিরা কুদিতৈ ত্ক জাল কণ্ণারীত বনে বনমালিন মালি কলা নির্দিশ সপ্তাহাদ্র্য পল্লব ক্রিত তল মনল ননোজ দেশ বৃণ ভল মাণ্ডিকা মৃশু নর্ত্ব যামুন বৃণত ক্তোপগ্রামি ছন্দ্রা বৃত্তি নামানি তেষা মাত্রাঃ े छक्। वयू

\_(उद्गामूमारुत्रगानि

ত্রযোবি শত্যক্ষরাবৃত্তিঃ। বিকৃতি:।

> **चित्रुजन**याः ব্যব্যবিত মিত্য-गुव।

ाम ७ १७ m/ **७१७**॥७१ ७॥। ७

খরতর শৌর্য্য পাবক শিখা পতত্ निज मः। मृध पन्रामा जनिविन्ज। বিলাস বসতিঃসতা-গতিরশেবনান্য মহিমা। ভুবনহিতাবতার চত্তর শ্চরা চরধরে। ২বতীর্ণ ই**হছি ক্রি**তি বল্যে ত্তি কংস শ্ব্ৰীমন ত্তবেতি তম্বোচ-मृद्धि जनगा॥ -

মন্তাকীড• অষ্টনে ত্রবোদশে ৰযোবি•শতৌচ য্তি:।

৬৬৬৬৬৬৬ mmmmus 5

চন্তবি •শভ্যক্ষর বৃত্তিঃ। ন:কৃতি:।

বি শক্তেচ যুতি:

मूष्याची नम्र खाकी छ॰ मधू मभय मृत-च मथूत्र मथूत्रमार गात गात किक्षिष्ठ् म्मन्त्रज् शर स्कृत नयन यूगन नत्रिकः। त्रारमाल्लान कीउ८ ক্রু বুজ্যুব্তি বল্য রচিত ভুজ রসং नानुननरः वृन्हात्रः अत्र इति মনঘ চরণ পরিচয় ।।।

माध्य मूरिक मधुकब विकटिंडः काकिन ক্জিত মল্য সমীরেঃ কম্প মুপেতা मन्यक नितिषः द्वावनका भाषिगछ তনু দাহ।। পদ্ম পলাশৈ বিরচিত भागतन (एक्क मः अतृत् छत शतिपूरन নি:খসতী সা মুহ্ রতি প্রক্ষ धान नाय उव निर्मम् उन्।। `

ष्ट्रमाः वृद्धिनामानि विवासाजाः ७७कः। वधु

:उवामूमारुव्रगानि

পঞ্বি•শত্যক্র। বৃত্তিঃ। অভিকৃতিঃ।

কৌঞ্চানা পঞ্চনে দশমে শঙ্টা-দশে পঞ্চনি শভৌ চয়তিঃ। ७ ॥ ७७७ ॥ १ ७७ ॥ ॥ ॥ । ७ ॥ ॥ ७

বিহ্নি•শত্যক্ষরাবৃতিঃ। 🍊

ভুজদ্বিজ্যান্তত 
ভুষ্টান উনবিংশতো

যভবিংশতো চ

যভিঃ।

**एट्ट्रिट्ट** ८१ ट्यामामा **८१ ट**ा

অথ্য ওক্টি সপ্তবি•শত্যক্ষরাবৃত্তিঃ। চণ্ডবৃধ্নি পুপাতঃ

८८। ७ ॥॥। । ८८ । ८८। ८। ८८। ८८ ८! ७ কৌঞ্পদালী চিত্রিত ভীরা মুদ্ধ কল
থগ জল কলকল কচিরা ফুল সরোজ
শ্রেণি বিলাসা মথু মুদিত মধুপরব
রভস করী। ফেনবিলাস প্রোজ্জল
হাসা ললিত লহর ভর পুলকিত
সূত্রুং পশ্য হরেংসৌ কস্যন চেত্রো
হরতি তরলগতি রহিমকিরণজা।।
হেলোদঞ্চয়ঞ্চং পাদ পুরুট কিকট
নটনভরো রণং করতালক শ্চাক
প্রেছ্ডো বর্হং শুতি তরল নব কিসল্য
ন্তর্জিত হারধৃক। ত্রসালা জীভি
ভাল্যা মুদ্ধলিত কর কমল যুগ্ কৃত
ন্তর্জিত গাবালশিক্ষার ক্রিলিনী
হুদ্ধ কৃত নিজ বস্তি বৃহজ্জল্পবিজ্ঞিতে।

भूगण घन घटे। ग्रेशत ग्रं (ग्रेशिवनी)

ह अव हे भूभा छाल्ल । स्थान क जिल्ल । जन्म कि स्थान क स्

ছল্সো॰ বৃত্তি নামানি তেষা•মাতাঃ

ভেষামুদাহরণানি

७ छक। वधु

बि॰ममक्त्रावृद्धिः।

. 1'

অণঃ

ক্ষয় জয় জগদীশ বিক্ষো হরে
রাম দানোদর শ্রীনিবাসাচ্যুতানন্ত
নারায়ণ ত্রিদশগণগুরো মুরারে
মুসন্দাসুরারে হুষীকেশ পীতাম্বর
শ্রীপতে মাধব । গকডপমন কৃষ্ণ
বৈষ্ঠ গোবিন্দ বিশ্বস্তরোপেন্দু
চক্রাযুধাখোক্ষজ শ্রীনিধে বলিদমন
নৃসিংহ শৌধর ভবাস্তোধি ঘোরার্ণসি
বুংনিমজ্জন্ত মভ্যুক্ষরোপেত্য মাং॥

व्यक्तिः भमक्रतावृद्धिः।

তাণবঃ

वहेकि अम कतावृजिः।

ব্যালঃ

্ৰবসৰ্ণবাদীৰা মপুগ্ৰদাহরণানি বোদ্ধ-ব্যানি॥

ভনচর্বারি শদক্রা

वृज्ञिः i

की गलः

४७१४ ।।।।।। ४५१४५१४ ४५१४५१४ ४७११४५। ४१४८५४ ছন্দ্ৰা বৃত্তি নামানি তেষা মাত্ৰাঃ

তেবামুদাহরণানি

৬ শুক। লঘু

দ্বাচত্বারি শদক্ষরা

वृज्धिः।

नीनाकदः

পঞ্চভারি শদকরা

বৃত্তিঃ৷

**উদ্দামঃ** 

े व्यवसर्वामीना स्त्रुपाइद्रगानि (वाष्ट्रवानि॥

অষ্ট্রচত্ত্বারি শদক্ষরা

वृक्तिः।

न्युः। ইত্যाদ्यः

 इन्तमा वृद्धि नामानि

्डवा॰ गाजाः ५ ७०। जम

(उषानुराष्ट्रामनि

**স**প্তবি•শত্যক্ষরাবৃত্তিঃ পুটিভকঃ

७ । ७७ । ७७

।।।।।। ७७।७ भूतङ्त यमुक्नाःस्राधिननु १७७।७७। (मवकी गर्छ त्रज् जिलारेकक नाथ ७७, श्रुष्टि उक्षे वे जूबा वि बुर्का करा न सहा-বল জোন (বদুগুৰণে কেশরাল্ড্র) চৰণ নথর সুখাংশু ছটোন্মের বিঃশেষিত ধ্যাবি চেতো নিবিস্টান্ধকার পুণত জন পরিতাপোগু' हा वान ला इन त्य

অপ্তবি•শত্যক্ষরাবৃত্তিঃ। অশোকপুষুমঞ্জরী

७।७।७। ७।७।७। ७।७।७।। 9191

भुगीन भुगीन भुगीए।। मुर्कि हाक हम्लक मुखा मनीन (वर्डन॰ ল সল্লবৃহ্ব চাৰু চল্দিক। কচেষু কৰ্ণযো ৩ | ৬ | ৬ | রশোক পুরুমঞ্জরী বতংশকো গালাভ কান্ত কেশরোপভুগুদার। ফুল্ল নাগ-क्लानानि गुन्न (तन क्वन **क**ानो বিচিত্র মিত্যুপান্ত বেশ এষ কেশবঃ পুনাতু বং সুপ্র ভ্রিডং সম্র্ভিনানি বাগভো মধুবিহ ভূমিত ॥

मक्षवि • **ड**ाक्षत्र । वृद्धिः । ं अभूमखवकः

113113113 ો**ઝ !!ઝ** !! છ ।।७॥७॥७

वित्रताम यही नक्तः कनकनूरिक वस्त्रत वाममृनः कृष्ठकृष्ठेन्या जुन्द्र भुकरवन যথাব্ত মূর্ত্তি রশোকলতা বিলসৎ अमृ । खतकः । न नदीन अभावस्व পু उमह वि विज् र जीव पिरनाउन इन्ति वशु काराना कवित्राभ्याक दक्ति वद्धा इति बच्च महीय क्रमच्या मक्षणकः।।

हिन्तानान् वृद्ध नामान उन्हर्भावा

(उवागराष्ट्रतपानि

সন্তবি•শত/ফ্রাবৃত্তিং I

ব্টানি শত্যকরা বৃতি।

আন্ত্রেশথর:

আন্ত্রেশথর:

আন্ত্রানি স্মান্

ভাতি সম্ব্রানি স্মান্

ভাবি। গ্রা

অথাৰ্জসমব্ভানি। উপচিত্ৰ• ১১ বৃডিঃ

প্রম াদে ভৃতীয় ॥৬॥৬॥৬ পাদেচ ছিতীয় পাদে চম্ভর্ম ৬॥৬॥৬ পাদেচ• ভ্ৰেমগৌর• বসানোহ শূন্ড শতনী**লা**: निष्ड वयानि नुष्ठे मियानु क्रामिक्रिडा स्वा जाता न स्वा न किन নলে ঞ্ছিতো ভব্য ভূষোজ্বলা**স্থ: সম্** भोदिगा। ञञ्जना जास्त्रतममू जन्मा-वनाट्डन (मरहन जीवा भहीहाज शामार्चि को दूशिनः कः न तना प्रिनः পাৰ ব শুক্রপাণি পভিক্রীড্ৰা महमाउक्नीनाक्द्रः॥ उत्तिकारमी मुधाकतः भूदा विद्याक यामः। রাখিকে বিজ্ঞুমাণ পৌর मीविजी विज वह्न नियानः कथा ज वृह्रां का का का विकास के बन का मध्य दे व किमू। इंडि शुरमान काविगी श्रिना পুনোদ লক্ষণা গির সন্দ্রির मूत्रातित्रख्ठाः भुरताय कान मक्रमाः लगणना मानाज (कनि कोडकी করোভ বঃ ক্ভার্থভা।।। मृत्रदेवित वशू<sup>क्</sup>खन्ठा॰, सूम॰ (इस निङ्गाः भूक हन्मन विश्वः । ग्रागः क्षनना भिद्धिक यथा नौत्र नीव्यदेव केंशिव ।।

ছন্দেশ ব্ভিনামানি তেবা মাতাঃ

তেয়ানদাহরণানি

५ ७ म। नघ

(वनपद्यो ३०। ३३ वृ. छः

প্রমাণানে তৃতীয<sup>া</sup> ও॥ ও॥ পানেচ

षिजीय भारत हाउथ ७॥ ७॥७॥

श्रीतिषु जा २२। २२ वृद्धिः

ष्मभद्भवङ्गः ३३। ३२ वृष्टिः

পুথনে তৃতীবেচ

७।७ शारम

न्भिजानु। १२। १० वृज्धिः

পুথন পাদে তৃতীय IIIII ७ 1७ । পাদেচ

धिकीय भारत हर्स्य ॥। ७॥७। भारत PHILED

ज्ञानहाँ २०११) वृद्धिः

॥७॥७।७ ७ পুথমে তৃতী পাদেচ

षिड़ीय हडार्थ ।।। ५५॥ ५। शार्म्

इंडाफ्रमग दृखानि नग्रावानि॥ श्रा

মর বেগৰাজী বু**জ**রামা কে**শৰ** यण्य बरेव ब्राज्य मुख्य । ब्रज्य मागुबन् গণৰভী কেলি নিস্ঞু গৃহায়জনান্।

গুথন পানে তৃতীয় ॥ ৬ ॥ ৬ ॥ মুট ফেন চয় হরিণ পুতা বলি ম্নোত্ত ভট। ভরণেঃ সূডা। কলছ • स शिकीय भारत छ उथ ।। ७ ॥ ७ । भारत व मा निमा विस्तरका स्त्रिय े इ.स.चंनः ॥

া।।।।৬।৬।৬ কট সুন্ধুর বেণু গীভিভি ভন্পর पिठीत्य हार्र्यह । । । । । । । वक् भत्वछ नायव । मृग मूवि मिताः নন ছিভা বুদ্বনিতা ধ্ৰ ্চিভ বিভূমা॥

> কর কিমল্য শোভ্যা বিভাগী স্বচ ফল ভার বিন্যু দেহ যক্তি। স্বিত कित विभाग भूति जाना वुकरूविक বুততী হরে মুদে হভূৎ।। यन (वाहम (वक्ष) जूनमती भतिष्ठः एत्र

ন্যেন চক্ষুষা। অপি কংস হরস্য नुब्रि वहन छिन्थी कु विश्वयः॥

		५ सक्। बाधु	
ভূাথ বিষম্বৃত্য	न ।		
উন্নতা ,পুথনেপাল		1151511151	বিল্লাস গোপ রমণীযু তরণি তন্যা
দ্বিত্তীযে			পুভোর্তা। ক্ঞন্যন চকোর যুগে
<b>ভূত</b> ীযে			म्य जी जुवा भू कित्र शा विज्ञ में ॥
চন্ত্ৰৰ্থে	30	ા <b>કા કા</b> મ <b>ક</b>	অথবাসবস্ত্রচনেন কচির বদনন্তি-
সৌরভক		<b>১৯১৬</b> °	কোচন মি ভ্যাদি ভারবাবুদ্ধভাভেদঃ॥
<u> ગ</u> ુથ <b>ા</b> મના	र ३०	॥५:७॥।७।	পরিভৃত ফুল্ল শঙ্পত্র বন বিস্ত গন্ধ
দ্বিভীবে	70	•	विज्ञा। केमा इस इतजीह रुख मृथ
ত্তীযে	20	७ ! ७ ॥ ७ ॥	পত্ম সৌরভকলা ভবাজ্তা ॥
চত্তৰ্থে	Ç\$	। ७।७॥ ७। । ७।७	
<b>ল</b> লিড			
পূৰ্মেপা	र ३०	॥७:७॥७।	वुक्त मन्त्री मनून्यम सूनिक सनमा
षि श्रीरग	)a		मा शीयरं । शिमकत शनि अभिवा-
ত্তীয়ে	<b>&gt;</b> 2	ummene	म् ७क॰ लिखा मूर्वाति मूथ्रम्
<b>इन्ड</b> रर्थ	20	॥७१७॥७ १७१७	বিচ্যুত্ত• ॥
<i>ব</i> জু•		•	
<u> ગુ</u> ષ(ત્રમા(	<b>t</b> b	७७७७।७	वकुारम्भः नमा त्यातः एकः नी लि। - भनः कृतः। वल्लवीनाः सूत्राहार
<b>ৰিতী</b> যে	b	৬৬৬৬ <b>।</b> ৬	(क्टाइ) ज्यः वस्त्राहः॥
তৃতীয়ে	ь	७१७७१७ ७७	
<b>ह</b> खर्थ	b	৬৬৬৬ 1৬ ৬৬	

হুলহোগ বকি সংঘণ	নি কৈছা আক	(*************************************
इन्स्मा॰ वृद्धि नागा		ভেষামূদাহরণানি
	৬ শক। বাষু	
পথ্যাবক্তু•		
शुथामशाहि ५	৬।৬॥৬৬।	রাস কেলি সত্তল্য কৃফস্য
विजीख ৮	1 1	नत्तानः । यानीः ज्ञाल नृगाकीताः
<b>ज्</b> ञीत्य ৮		<b>श्थात्रकु मधु सुजिः ॥</b>
চত্তথে ৮	ि १०७० १० १	
<b>ज</b> नुष्ट्रभा		
भूथः भइतः ५	। ७१७॥७७।	शक्त वयु गर्ब मधंग हि
षिञीय 🕨	৬।৬॥৬।৬	ज्डर्थराः । <b>एक र</b> उन्ह शामानाः
ভৃতীযে ৮	॥७७।७७७ /	(भःवद्यविष्णा मृजः॥
চন্তার্থ ৮	৬৬ গ্রাডা ড	
ই ভি বিহম বৃত্তানি		
नमाधानि॥ 🕸॥		
অথ মাক্তানি		
षागु। अर्थाट भाषा	A A A A B B A	कार्वा के संदर्भ का कार्य
भुष्यमभारम ३२	৬৬ ! ৬ ! ৬৬	ক্লংশিশুঃসুভো মে বল্লৰ হলটাতি-
দিভীবে ১৮	७॥॥७१७१ ७॥७	রাজ্তো নগ্ছে। ক্ষণদাপ ব্যভ্যসা- বিতি জগাদ গোধ্যা• যশোদার্ঘ্যা।
<b>्रहे</b> । इंड	॥॥ ७।७॥	
<b>इन्हर्श</b> े.	। १७१ २७१७	
भुकातास्त्रा वथा	৬৬	_
नुषर्मभारि >२	७७।७।७७	व्नावत मनीन वनुष्म का अ
पिडोव अ	।।।।।। ८ ।। ८८ ५७ •	निश्चि छन् गिष्टः। स्मित् सूर्धार्भिङ
<b>ভ</b> ्डीरगं ; ३२	·	(वगुः क्रका यि सनि सनि कः चर्यः ॥
<b>हे</b> ज्या के	७ ५।॥।७५५	

<b>इन्स</b> ः	•	. इन्सः
इन्ह्याः कृष्डि नामानि	ভেষা•মাত্রাঃ ৬ গুক্। লঘু	ভেষামুদাহরণানি
नवधा व्याग्या वथा। ११९८३ १९९४ व्याप्त भारत ३२ १९७१ वर्षा ३२ १९७१ ३२ १९७१ ३२ १९७१ ३६	111 & 11 & 5   51 & 52 & 51   50 & 50   111 & 1111   50 & 10   50 & 50   5	জব জয় নাথমুরারে কেশব ক সান্তকা- চুতোনন্ত। সক ককণা মিতি বিনতিঃ পথ্যা ভব রোগ দুঃ হানা ।। আত্র দিতীয় পাদান্ত লবো গুরুত্ব । পূর্ব পরার্জ্বো দ্বাদশ মাত্রায়া যুতিঃ।। পু-সা কলিকাল ব্যাল হতানা । নাস্থ্যসহতি রক্নাপি। বীর্য্য বিপুলা
দ্বিতীষে ১২ .ভূড <b>়িযে ১৪</b> চন্তথে ১৩	હાાહા હહુ હ હ હ હ હ	मूर्थ (हर्न्भार्त्वाविन्ताथा मखकना। अब विजीय ह्याड लाघा र्छक्षः। भूवं भ्याक्रिया व्याहम्म माजाः मः नद्भा यक्तिः॥
চপলা পুথমেপাদে ১২ দ্বি চীযে ১৮ ভূতীযে ১২ চন্তর্থে ১৫ মুশ্বচপলা		চপলা ন চেৎ কদাচিম্ণাণ ভবেডজি ভাবনা কৃষ্ণে। ধর্মার্থ কাম মোকা- ভদা করহা ন সন্দেহঃ॥
পূথ্যেপাদে ১২ দ্বিতীয়ে ১৮ ভ্তীযে ১২ চন্তর্থে ১৫	ાકાઇકોકો હહ્ય કાશા હક્ય	গছ ভবৈক। যত্ৰ ভবতি তে রাগঃ কাপি লগাদেতি মুখ্চপলা।। অত্ৰ দ্বিতীম পদান্ত লঘো গ্ৰুত্ব ।।

তেবামুদাহরণানি इन्स्नाः वृद्धि नामानि (उदाः गावाः ५ ७क। नव्

## জঘনচপলা

७७७७॥ ७ क्कः म्कात्रभद्वं यो वन यन हक्षनः পূথমে চরণে ১২ ७।।।। ७। ७। जूनविजादः । जानीषुकाद्गनानाः দ্বিতীযে তৃতীযে 25 ७७।७३७७ मत्नार्द्रा बचनव्यनानाः॥ চ ভ্ৰথে 20 19191111 ৬৬

## शीजिः

**(कम**व व•मध्नि गींडि र्लाक माना প্রথমেচরণে ১২ ७॥७७॥७ দ্বিতীয়ে मृग इतिरी बयि । गालीमान गुरस ७॥७॥ ७७ 11911 विंत्यावनी निवामायनाक्यां।।। তৃতীযে ৬৬৬৬৬৬ অত দিতীয় চরণাস্ত লয়ে। গুৰুত্ব।। চন্ত্ৰে 74 15155151 ৬৬৬

## উপগীতিঃ

প্রথমেচরণে ১২ नव (गांश भूनस्त्रीगां ब्राह्माह्मारम ॥७।७।७७ দ্বিতীযে 20 मुत्रातालिः । व्ययात्रयमूनगीजिः युर्ग ৬৬৬৬ । ৬৬৬, তৃ কীযে 25 वतकी मृत्राः गीडिः॥ ५५॥॥ ५५ চ্ৰুৰ্থে 20 ७॥७७।७७

१५॥५

## উদ্দীতিঃ

পূথমেচরণে ১২ ५५।५।५॥ দ্বিভীয়ে **৬৬৬৬** । ৬৬৬ - তৃতীযে ৬৬৬৬৬ চন্তর্থে . ७॥ ७७। ७

নারায়ণস্য সম্ভত মুদ্নীতিঃ সংস্থৃতি ভेक्যा। यहाया मामिक मू उन्न সংসার সাগরে তরণিঃ॥

· ছল্মা· কৃত্তি নানানি (ত্ৰা•মাত্ৰা:

ভেষামুদাহরণানি

৬ ধক। লঘু

আর্য্যাগীতিঃ

পুথমেচরণে ১২

দ্বিতীযে ২০

ं ज्ञीय भ्र

চত্তর্থে ১৮

পূর্বার্দ্ধে বি শত্যা শতরি শত্যাবা নাত্রাণা পরার্দ্ধে বোডশ নাত্রাণা পরে লঘু

वर्ग हजुडेख मा शुधमः विजीयको लक्ष्मतः भागा

व्यार्यायाः नामात्म् वर्ष

नियमः॥

বৈতালীয় । **অপ**রবক্তু

মিত্যেকে।

जुथ्याहत्रा >8

দ্বিতীযে ১৬

ज्डीय >>

চম্ভর্থে ১৬

॥७॥७।७

। ७ ८। ७।। ७७।। । ७

แงแงเจ้

। ७ ७३५५५। ५

ঔপছন্দসক•

नुवासहत्राम ३७ ५५५५। ७।७

দ্বিতীবে ১৮ ৬৬৬॥৬।৬

ज्हीख २७ ५५५५।४।५ जुहीख

চন্ত্রপে ১৮ ৬৬৬॥৬।৬ ১৬৬

**এভ**দ্বৈভালী যভেদः॥

৬৬৬॥॥ ৬ হর্ষাশু ন্তিমিত দৃশঃ পুমোদ রোমাঞ্চ ।৬।৬৬।৬ কঞ্চাঞ্চিত দেহাঃ। আর্য্যাগীতি॰

১।১১।৬ কঞ্চাঞ্চিত দেহা:। আর্য্যাগীতি• ।৬।।৬৬ ১৯৬৬৬৬ ভক্তা গাযন্তি শ্রিপতে শ্চরিত

৬৬৬৬৬৬ ভক্তা সাধান্ত শ্রেপ্ত করেব

७।७। व्यव्यः॥

গুৰু বিপৰ্য্য ৰূপ পুস্তার ভেদেন বহু বিধা আৰ্য্যা ভবন্তি॥

मम् । मार्ग प्रहिंखः ख्य यक्षिनहिंखः व्याधित्क क्ष्णः । मूर्ग माउनू छ १ व शिक्ताः । विकास विकास

আত্বান সুরারি কান্তা স্বৌপছন্দ-সক হাণ বিনোদ । ক স । যা নির্জ্ঞান দেবো বন্দে ত জগ্তা ছিতি দ্বানি।।

ছন্দ্ৰা বৃত্তি নামানি	তেবা নাত্রা:	<b>ভে</b> ৰামুৰাছ্ <b>রণা</b> ৰি
	५ ७ क । वाबू	
পজ্বিকা পুথমেচরণে ১৬ দ্বিতীশে ১৬ ভূতীবে ১৬ চন্তর্থে ১৬ দোহডিকা পুথমেচরণে ১৩ দ্বিতীযে ১৩ ভূতীযে ১১ চন্তর্থে ১১ চন্তর্থে ১১ সম্যা অস্ত্যা মাত্রা লম্বী অপভূম্পভাষযাপুচারঃ॥ ইভি মাত্রা বৃত্তানি সমাপ্তানি ॥ গ্লানি	1	उत्रण वर्षः ना शिक्षे कक्ष क्षण्ण ज्ञ श्राक्षः । स्माण हमल क्षियं हम्म क्षियं हम्म व्याप्त वृद्धः व स्थाण क्षियं क्ष्यं क्षियं क्ष्यं क्षियं

অত্ত্ৰানি ত্ৰয়ন্তি। শৃদ্ধিক শত অৰ্থসম ব্ভানি বট্ বিষম ব্ভানিচ বট্ মাত্ৰা ব্ভানি পঞ্দশ সমুদায়েন ব্ঠাধিক শত সংখ্যকানি ছন্দা সি লিখিতানীভি ॥ ॥ इन्स्क्लाउनः ल्॰ इन्प्रजानमः। इंडि बहायदः॥

हरमानः पुः जामनः। मामरदिनी। ः ইতি बरोधदः॥

ছনোগপরিশিষ্ট নী কাত্যায়ন মূনি কৃত সামবেদি কর্মবোধক গোভিল স্বাণা পরিশেষ শাত্রণ । ইতি মৃতি:।।

ছলেবিচিতিঃ জ্রী শুতিছনসোণ পুত্যাযক শাস্ত্রণ ইত্যমরটাকায়। ভরতঃ।।

हम की त्रश्ः। निर्जनहान । ইতি (मिरिनी।।

ছন্ন: ত্রি ছাদিত:। ইতি মেদিনী।। রহ:। ইত্যমর:॥

ছপ ইক সর্পে। গতৌ। ইতি \*কবিকল্লফনঃ।।

ছম উ ভক্ষে। ইতি কবিকল্লফমঃ।।

ছমণ্ডঃ পু• মৃতপিত্ক:। ছেমডা ইতি ভাষা। ইত্যুণাদিকোষ:॥ বন্ধুহীন:। ইতি স•ক্ষিপ্তসারে উণাদিক্জি:॥

हर्ष क दमता । इंडि कि विकन्न हर्मः ॥ हर्षः की दुमनः। इंडि (इसहन्मुः॥ हर्मनः की दमनः। इंडि (इसहन्मुः॥ हर्मनः पू॰ खनत्वत्राक्रनः॥

निषद्कः । ইতি ह्महन्तुः॥

सन्दकः । ইতি ভাবপুকाणः॥

हर्माणनिका जी कई।। ইতি

दाजनिर्षणेः॥

ছদি: জ্রী রোগবিশেষ:। বাঁতি ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাयः। পুছর্দি-का २ हर्षः ० वमशुः ८ वमनः ६ বিনিঃ ও । ইতি হেনচন্দুঃ॥ इर्फिका १ इफ्री का ४ वाडि: ३। উদ্বার: ১০। ইভি রাজনির্ঘণী:॥ উৎकात्रिका ३३ हर्मन १३ । इंडि भदत्रवावना। उन्ता निमानामि यथा । मूर्डि (मीरिक्ः भृषक् गरैव वी ८ छत्रात्वाकना पि । भूप्यः পঞ্চ বিজ্ঞেয়া স্তাসা লক্ষণ মুচ্যতে ॥ অভিদুবৈ রভিন্নিংশ রহুদৈঃ অকালে চাত্তি র্লবণৈরতি । মাত্রৈশ্চ তথা সাব্যৈ <del>গ্রুচ ভোজনৈঃ</del> ॥ मुनाख्याङ्याद्वादिगाहकीर्गाः ক্ৰিনি দোৰতঃ। নাৰ্য্যা কাপন সন্ত্বাধা স্তথাতি জ্বতমশ্বঃ।।বীভ-ক্লৈহেত্ভিক্টান্যৈ হ্ৰত মুৎক্লেশি-তো বলাং! ছাদ্যমানন (বুগৈ-त्रफ्यम्य ज्ञातः ॥ निक्ठां उ ছদিরিতি দোবোবজু পুধাবিতঃ । 🛊 । जम्राः भूवंकानः यथा।

হল্লাসোদ্ধর রোধৌচ পুসেকো वर्ग उनुः। ज्न (हर्म) रम्भात **ह** वमानाः शृहं वक्रमः ॥ #॥ वाउजाया खम्या क्रम व्या श्ट भार्य भीषा मूथ (माव भीर्व नाज्यक्तिकाम यद्गाजन (जारिनः। উन्नात भेष भुवल माकन विहिन क्षः जनूकः कषायः।। क्रह्नुग চাল্ল•মহতা চ বেগেনার্ভো ২নিলা इर्प्या 🗱 । उत्राः निडनाया क्षर यथा। मृहा পেপাসা মুথশোব মৃদ্ধ তাল্কি मडाभ छामा जुमार्वः। भीउ॰ ভ্শোফ হরিত সভিক ধ্রুঞ शिखन वामe अनारः ॥ #॥ **उ**न्धाः भूगाबाया क्रन यथा। उन्द्राभा भाष्या कक भुरमक ॥ मखाय निमाक्ति भौतवार्जः। ्त्रियः घन सामू कका विभूकः नेलाभश्या १ नक्षः यसह ॥ 🗱॥ जगा जिलावकाया क्रभ यथा। শ্লাবিপাকাক্চি দাহ তৃষ্ণা শাস शुरमार भुवना भुमकः। एफि जि (भाषाञ्चवनाम नीन नात्मुक त्रकः वमके। नृगाः महार् ॥ #॥ चनाश्या नक्न वथा। विष् स्वर

मृबाचूवहानि वागुः (সাভা-नि मःकश्च यानाष्ट्रायाज्ञ । उरमा দোৰস্য সমাচিত ত দোব সমূ-क्य नज्ञ का का ।। विभूजयां छ८ मम गन्न वर्ग जृहे थान कामार्डि युज भुमकः॥ भुहर्ष्यः पृष्ठे भिश्वितियगाख्यार्षिक काम् विनामस्मि । 🕸 ॥ योगस्र हाया वक्रनः यथा। वीज्यम् मा बामबा ज् अमाज्य बा या किमि-बाह या हि। मा भक्षमी डाक विजावरयह प्रार्वाहरयरेनव যথোক্তমাদৌ॥ ক্রিমিলাযা লক্ষণ• यथी। मून रुझाम वङ्ना ক্রিনিজাচ বিশেষতঃ। ক্রিমি হদ্যেগ ভুল্যেন লক্ষণেনচ লক্ষিতা । क्रीनमा या इफि द्रिक भुमञ्ज সোপদ্বা শোণিত প্য যুকা। সচন্দ্রিকা॰ তা॰ পুরদেদসাধ্যা• नाध्यांकिकिৎসে विकश्रम्याकाः **७**म्। উপদুবা यथा । कामः শ্বাসো জ্বো হিহ্না তৃঞা বৈচিত্ত্য भवह। इत्नाग समक्रीका उद्या पूर्ण क्ष्रपुराः॥ इंडि माध्यकदः॥ 'দি: "জী বমি:। ইত্যুণাদিকোৰ:॥ 'फिका जी इफि:।। विकृकासाः

ছাগঃ

.। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

हिप्ति कार्तिशः श्रु क्रिपुना। इंडि अफ्टिन्सिका।।

कृषि इ: श्रु निषव्कः। ইडि तद्भागा॥

हन् ही जुनिङ्॥ भार्थः। इंडि (मेरिनी॥

हिलः जो पुक्। हाल ইতি ভাষা।
। ইতি শদরত্বাবলী।।

हली जी वीक्ट ॥ जडामः॥ वन्नः॥ अनुमिविष्णयः। इंडि (मिनिनी॥

ছবিং জ্রী শোভা॥ দীপ্তিং। ইত্যমরং॥

ह्य क व्यव । इंडि क विकल्लक्ष्मः। ।

हा जी बाह्य मनः। इंडि (मिम्नी।।

हाः भू भावकः। इंडि (म्लिमी।।

हां भू भावकः। इंडि (म्लिमी।।

हां भू भावकः। इंडि (म्लिमः। ख्रेट्रें । व्या १ हेंग्लकः २ व्या १ हेंग्लकः। हिंग्लं । हिंग्लं ।

मिनालुगः २०। ইতি मदत्रदावनी

**ह्**नगंत

॥ अबूकः २५ (मर्वाः २२ मर्जुः २ शयस्यः २८। उद्याः म गूर्गाः। লঘুৰ । সিপাৰ । নাজিশীতৰ । কচি বল পুষ্টিদাতৃত্ব। নিদ্দোৰত্ব । বাত পিত্ত নাশিত্ব । মধুরত্বক । ইতি রাজনির্ঘটঃ।। শুক ধার্তু সাম্য কারিত্ব। বৃ•হণত্ব•। ব্লিপড়্ব•। अमृत्वः। अन्ञिष्ठानिरवः। नाजू।सः वृक्ष। इंडि दाबदल्लंडः ॥ हाग পোত মা•সগুণাঃ। লঘুত্ব•। শীতত্ব• । পুমেহনাশিত্বক।। তৃণচারিণস্তস্য भा•मम्।भूगः।देवल्लघुष्-।वलमाञ्च-क ।। जन्म जन्म । कर्षेत्र । जिक्द । ककव्। नाजीविवार्कि श्लीरहाम्ब कक् थान धना (भाक नाभिद्र। वयु द्वा इंडि द्वा जनिर्घणः॥

লবুরকাহাও রালাবি। ঘুঁটের আগুন ইতি ভাষা।ইতি ত্রিকাপ্তশেষ:॥ ছাগভোজী পু॰ জী বৃক:।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ ছাগভক্ষকে ত্রি॥ ছাগরথ: পু॰ অ্লি:।ইতি হেমচন্দুঃ॥ ছাগল: পু॰ জী ছাগ:।ইতি

त्राविविचिष्टः ॥

हागनेकः शृं सर्ग्यिति महः। यथा।

त्था मुशाकः मसः मीर्घ वृद्धः

तिः मन्नाः हागनकः वस्ति। गतन

দিকট: কিল তস্য পৃষ্ঠে কট: সুগ্ৰেয়া কচিদো বলপুদ: ॥ ইতি বাজনিষ্ট: ॥ ছাগলস্চ॥

ছাগলাজিকা ত্রী বৃদ্ধদারকবৃদ্ধঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

ङ्गणनाखी खी वृकः। ইতি बाजनिर्गणेः॥

ছাগবাহনঃ পু• অগ্নিঃ। ইতি বিকাওশেষঃ।।

**ছागिका जी हागी। इंडि (इमहन्तुः॥** हागी की हागमाजा। वक्तो इंडि - পাঁটী ইতিচ ভাষা। তৎপর্যায়ঃ । जनार भयमिनी ७ जीकः १८ मथ्या ৫ গলেন্তনী ৬। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। ष्टाणिका १ मञ्जा ৮ मर्बज्करा २ शनस्मी 🕽० । इंडि (इम्हन्युः ॥ हूनूम्भा ३३। ইভি दिका ७८ मदः॥ व्यम्राः कीत्रम् ७ ११ः। स्यूत्वः। नीउन्दराश्वाङ्यरामीयनद्वरा রকৈ পিত্ত বিকার ক্ষয কাস नामिष्य । अज्ञानाः वयुकायद्यः-माना मुक्र निरम्वण । नाज्य शाना द्यायामार मर्वद्याधिक्त ं शयः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। কৰাযত্ত্ব ा गयुष्रे । অতীসার জ্ব নাশিত্ঞ।। जम्बिलाः। উज्युन्। गुाहिव्। **ण**घुत्रः । त्रायवया**शरुतः । भा**त्र कानार्भः क्रय कार्त्भायु नेखवः। দীপনত্বঞ্চ। ইতি ভাবপুকাশ:॥ কফ বাভ নেত্ৰদোৰ দুৰ্নাম খাস: काम नामिषुः। উष्ण्युः। स्टाप्तुः । পাচনত্বঞ্চ ।। তন্ত্ৰবনীত গুণা:। वयुद्धः । मध्यद्वः । कथार्यद्वः। बि: माय नामिञ्च । ठक्ष्याञ्च। मीপनद्भा वन्यद्भा अमाहि उद्यक्षः। তন্নবোত্থ নবনীত গুণাঃ ৷ ক্ষয্কাস (न बाभय कक ना निषु । व ना पु ।। পরনদীপনত্বঞ্।। তদ্ঘৃত গুণাঃ । **ठक्र्**याञ्चर । मीशनञ्चर। वलवर्षानञ्चर । কাস খাস কফ নাশিত্ব। রাজযক্ষণি শতত্বঞ্চ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

ছাতঃ ত্রি ছিন্নাং দুর্বলঃ। ইত্যমরঃ॥ ছাত্র• ক্লী বরটী ছত্র সম্ভব•মধু। তস্য গুণাঃ। খিত্র ক্রিমি রোগ রক্ত পিক্ত নাশিত্ব• । গুক্তৃঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ॥

ভাত্রং পূণ শিষ্য:। ইত্যমর:॥

ছাত্রকণ স্লী ছাত্রণমধু। যথা।

ছত্রাকারম্ভ পটলণ সরঘা: পীত

পিক্লা:। যে সর্বিভিতদুৎ পন্নণ মধু

ছাত্রক মীরিতণা। খিত্র মেই কৃমি

े प्रश्ने विम्ताहाक स्थाखन । इंडि ं ज्ञाकि विर्वेष्टः ॥

ছাত্রগণ্ডঃ পু• পদাদ্যবিৎ।বিভক্ত্য-স্তম্য শ্লোক চরণম্য বা আদি মাত্র বেক্তা।ইতি হারাবলী।।

हाजम्मन की रेशक्वीन । इंडि

ছাদ• ক্লী পটল•। ছাত ইতি চাল ইতিচ ভাষা। ইতি জটাধর:।।

हारन क्षी हरन । शंख्रकान ॥ भव । इंडामत होकाया छत्रः॥ भाहारनक्षा

हारनः श्र नीनामानव्कः। ইতি রাজনির্ঘটা।।

ছাদিতঃ ত্রিছিয়:।ইতি জটাধ্র:।।
আছাদিতঃ । যথা । ঘনতর
ঘনবৃদৈদ শুদিতৌ পুরবস্তৌ ।
ইত্যুক্টঃ।।

हान्त्रज्ञः शृ॰ (वनात्थ्यका। इन्छामत्रः॥ हात्न्ताग्रि॰ क्षी मामत्वत्नाशन्वद्। इन्डि विकिमम्भूकायः॥

हाया खी (तोष्ट्रण्नेंग्र)। उट् शर्यायः। ভावानुगा २ म्हामा ० चाउकः ८ ভोकः ৫ चनाउशः ७ चाजीजिः १ चाउशाजातः ৮ जावानीना २। चमहा खगाः। मधुत्रद्रा भी उनद्र। फार्म्महत्रद्रशाहे जित्राकनिर्घणेः शिष्यं नाणिषु ।। (स्व हाया धनः ।
भूत जुन मूर्डा मुडाश नाणिषु ।
हेि ता क व ल जः ।। # ।। हायाविल्लाय (तार्या यथा। तिश धरे।
छन्न हाया हि सर्कण नथा तिकः ।
छक्त मार्जात (त्र पूण्ठ हिंछ शूग्र)
शूतिविष्ठ ।। हैि कर्माणा हन ।। ॥।
शुतिविष्ठ ।। मृर्ग्र भद्दी। मा म छत्वा
शुष्ठिकृतिः।। भाणन ।। छैट का ।।
का छिः ।। महा छ। ।। भङ्किः ।
हेि (मित्नी ।। का छा यनी। हैि ।
भन्त द्वावनी ।। छमः । हेि ।
हिम्म नमुः।।

ছাযাকরঃ ত্রি ছএধার:। ছাতা বরদার ইতি ভাষা।ইতিহেমচন্দুঃ।। ছাযাতনয: পু• শনিঃ।ইতি হলাযুধঃ।। ছাযাতকঃ পু• ছিরছাযবৃক্ষঃ। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ।।

ছাযাত্মল: পু॰ শনিগৃহ:।ইতি ত্রিকাওশেষ:॥ ছাযাপথ: পু॰ দেবপথ:। আকশি:। ইতি ত্রিকাওশেষ:॥

ছাযাভূৎ পু চন্দু:।ইতি হেমচন্দু:॥ ছাবামিত্র• খ্লী ছপ্র•।ইতি শদর্গ্না-বলী।।

हायाम्गध्यः भुः हमुः। ইडि . विकाश्रामदः॥ ছাবাসুতঃ পু শনিঃই ভ হেমচন্দুঃ।।
ছিঃ পু গহা। ইত্যেকাক্ষরকোষঃ।।
ছিঃনী জ্রী বৃক্ষবিশেবঃ। ছিক্নী
ইতি নাকছিকনা ইতি হাঁচোটী
ইতিচ ভাবা। তৎ পর্য্যায়ঃ।
জ্বকৃৎ ২ ভিক্রা ৩ ছিক্নিনা ৪
ঘ্রাণদুঃখদ। ৫। অস্যা গুণাঃ। কটুরুণ
। কচ্যন্তং। তীক্ষরুং। উফরুং। বহি
পিত্ত কারিবুং। বাত রক্ত কুষ্ঠ
কৃমি বাত ক্ফ নাশিল্বঞ্চ। ইতি
ভাবপুকাশঃ।।
ছিক্লা জ্রা ক্ষরুং। বলী।।
ছিক্লা জ্রা ছিক্না। ইতি ভাবপুকাশঃ।।

हिछ । वि हिन । हेडान तः॥
हिड १ १ कत्र कर्कः । हेडि
भाष्ठ निमुका॥ (हम क

रेवती । इंज्यामिकायः ॥ हिम इत थ डे क ছেम । इंजि क्विकन्नक्रमः॥

हिन वि हिनक्डा। हिनडीठ क्डांबिक्ष भुडायः॥ हिनक की वजुराइंडाशिकायः॥

हिनक द्वी वजु । इन्जु गाम का वहा। हिना औ हिनन । इन्जि मुक्त वास ।। हिनिः जी कुठातः। हिन्दा (जातोगा-

हिनु उक (छाम । इंछि किविक मैं क्याः॥ हिनु की (छमः। किंमा इंछि छाया। छट भग्रायः। अहत र भूषित । अ विवतः । विवा । किव्रायन । अ (ताक । भ तक्क । । भ छु । अ वभा । अ भूषिः । ३ हे छु । ता । मूया । । के छि । इंछि छु । के । । मूया ।

हिमुरेवरमञ्ची जी जनशिश्ननी। ইতি जान्नविष्टः॥

हिमाडः श्र ननः। ই ि क्रांजनिर्विः॥ हिम्। कन् क्री भाष। कन्। ই ि दाजनिर्विः॥

ছিদ্তিঃ ত্রি ক্তহিদুঃ। তৎপর্যায়ঃ
। বেধিতঃ ২ বিদ্ধঃ ৩। ইত্যমরঃ ।।
ছির্নণ ত্রি ক্তহেদনণ। ছেঁডা ইতি
কাটা ইতিচ ভাষা। তৎপর্যায়ঃ।
ছাত ২ লূনণ ০ ক্রণ ৪ দাত ও
দিত ৬ ছিত প বৃহণ ৮। ইত্যমরঃ
।। কৃষ্টণ ৯ ছাদিত ১০ । ইত্তি
জটাধরঃ।। ছেদিত ১০ থণ্ডিত ও
১২। ইতি হেন্চন্যঃ।।

हिन्ने शृष्टिनिक। खी विश्वर्गिका। ইতি রাজনিঘণ্টঃ।।

হিন্নপত্রী জী অম্বন্ধা। ইতি পাজনিঘটিঃ।।

हिन्नक्श बी गृज्ही। ইত্যমরঃ॥ वर्गाक्कि ॥ मलकी । ইঙি রাজনিঘটঃ॥

हिन्न(विनिका जो शार्त)। आकनामी इणि जाया। इणि अपन्छिन्द्रका॥ हिन्न। जो ७५००।। भू भन्नी। इणि विश्वः॥

हित्सा छन्। खे ७ ७ ही। ইडि त्राजनिर्घण्डः॥

ছিলিহিওঃ পু• পাতালগৰ্ডবৃকঃ। ইতি ভাবপুকাশঃ॥

हुल्मती की कल्लिविशा हुँ हो।
हें जाय। । जर्मर्गायः।
गक्षन्या २। हें जि स्महन्द्रः॥
हिन्नः ७ (वन्यानञ्जनः ६ भ्रे त्यः ६
गक्षम्यकः ७। हें जि जिका अल्पयः
॥ गक्षम्यकः ७। हें जि जिका अल्पयः
॥ गक्षम्यका १। हें जि ह्वायूथः॥
त्राक्षम् जी ৮ প্রিম্যিকা ৯ मृश्वि
म्यिका ७० गक्षम् अनी ७० मृश्वि
म्यिका ५० गक्षम् अनी ७० मृश्वि
म्यिका ५० गक्षम् अनी ०० मृश्वि
म्यिका ५० गक्षमञ्जवः ७८ हुक्षः ७६

ছুর শি লোপে। ইতি কবিকল্পছ্নঃ।।
ছুর 

ছেনে। ইতি কবিকল্পছ্নঃ।।
ছুরা স্ত্রী সুধা। চূণ । ইতি
হারাবলী।।

বিশ্বঃ 1

ছুরিকা ত্রী অস্ত্রবিশেষ: । ছুরী
ইতি খ্যাতা। তৎপর্যায়: । শ্রী
২ অসিপ্ত্রী ৩ অসিধেনুকা ৪।
ইত্যমর: । ছুরী ৫। ইতি ভরত:।।
খ্রা ৬ ছুরী ৭ তৃপাণিকা ৮
ধেনুপুরী ৯ । ইতি ছেনচন্দু: ॥
ছুরিকা ১০। ইতি শদ্মজ্বাবলী।।
ছুরিকা তি ইতি জটাধুর:।।

ছিনক।।
ছ্রী ক্রী ছ্রিক।।ইতি ভরত:।।
ছ্রিকাপত্রী ক্রী শেতা। ইতি
রাজনির্ণি:।।

मृषिक। २० शक्तमृ िक्षे । मृष्टि । हृती खी ह्रोतिका। ইতি হেমहैन्दुः ॥ मृषिक। २२। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ हृत कि अन्तीशताইতি, कविकन्नक्षमः॥ शक्काथुः २० शक्त अन्यः २८ हृक्षुः २० ॥ हृत ४ इत छ क की छत ॥ नीस्थी वमत । ইতি কবিকল্প্রমং॥

(ছক: ত্রি গৃহাসক্তপক্ষিম্গৌ।

ডৎপর্য্যায়:। গৃহ্যক: ২। ইত্যমর:
।। নাগর:। ইতি মেদিনী॥

ছেকোক্তি: জ্রী বক্রোক্তি:। ইতি
জটাধর:॥

ছেদ ত ক ছেদে। ইতিকবিকল্পজনঃ॥ ছেদঃ পু॰ ছেদন॰। ইতি হেনচন্দুঃ॥ খণ্ড॰। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

प्राप्ता । जान ।

ছেদিত জি ছিন্ন । ইতি হেম্চন্দু:।। ছেমপ্ত: পু পিতৃহীন:।ছেমড। ইতি ভাষা।ইত্যুণাদিকোষ:॥ ছিলু: পু সোমরাজী। ইতি শহচন্দুকা।;

ছো য লুনো।ইতি কবিকলক্ষমঃ।। ছোটিকা জ্রী তর্জন্যস্থাঙ্গলিখুনিঃ। যথা। ছোটিকাভি দশ দিগুন্ধন. করা ভূক শুদ্ধি অর্থাৎ । ইতি তক্ষারঃ।।

দিনটি পু

কিবর্ত । ইতি

কিবাওশেষঃ।।

ছোরণ লী পরিত্যাগঃ। ছোডন ইতি

হিন্দী ভাষা।ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

ছোলকঃ পু

নাতুলুকঃ। টাবালেরু

ইতি ভাষা।ইতি শদরত্বাবলী।।

ছ্যু ড গত্যা।ইতি কবিকল্পুমঃ।।

ककातः। म नुष्क्रनाष्ट्रेम वर्गः। চবগ ভূতীয় বর্ণ ক্ষা অস্যোচ্নারণ স্থান তালু। ইতি ব্যাকরণ ॥ व्याम्। १ शिख्या । विमर्ग छानुगः (भाषा ण চবर्शक युष्णा। इंडि পুপঞ্চসারঃ॥ অস্যলেখন পুকারে। যথা। উদ্ধাৰ্থ: সঞ্চিত। রেখাতাসু तुरक्रम महिजुः। वार्यायी कमना-নিত্যা দ্বিধা মাত্রা পুকীর্তিতা।। ইতি বর্ণোধ্বারতন্ত্রণা অস্য স্বৰূপ• यथा। জকার• পরমেশানি যা স্বয• মধ্য লওলী। শরচন্দু পুতীকাশ। **সদ**া ত্রিগুণ স•যুক্ত• ॥ পঞ্চদেবন্য• বর্ণ পঞ্চপুণ ময় সদা। ত্রিশক্তি সহিত বর্ণ ত্রিবিন্দু সহিত। প্রিয়ে॥ ইতি কামধেনু তজ্ঞ।।

कः शु म्ञूछियः ॥ कनिः॥

তাতমাত্র ॥ জনার্দ্র: । ইতি

নেদিনী ॥ বিষ•॥ ভুক্তিঃ॥ তেজঃ॥
• পিশাচঃ । ইতি শহরত্নাবলী ॥
বিগঃ। ইত্যেকাক্ষরকোষঃ ॥

জ: ত্রি বেগিতঃ॥ জেতা। ইডি শব্দরগ্লাবলী॥

ककि ही वार्ज्ञ शृज्ञ इंडि मिनी॥ ककि १ शु॰ सनगर्भ ईडः॥ सङ्ग्रङः । शुङ स्माननाः॥

जगहकः शु मूर्यः। इ.ज. (इ.स. १०० क्या क्या किया विश्वः । उट शर्यायः । क्या विश्वः । उट शर्यायः । क्या विश्वः । विश्वः । विश्वेशः । विश्वेशः । विश्वेशः । विश्वेशः । विश्वेशः । विश्वेशः ।। विश्वेशः विश्वेषः । विश्वेशः ।। विश्वेषः । विश्वेषः ।। विश्वेषः । विश्

কগংকরা পু॰ বুক্ষাইতি হেমচনুং॥ জগৎপাণঃ পু॰ বাদুঃ।ইত্যমরঃ॥ জগৎসাক্ষী পু॰ সূদ্যঃ।ইতি

(रुभठन्मुः॥

बगडो खी जूपनः॥ পृथी १ जनः ॥ एत्माविष्मयः। इंडि मिनिगे॥ बष्वभुः। ইंडि एम्मन्मुः॥

ङ्गम्या द्वी मूर्गा। यथा। यम्द्र | ङ्गम्यायाः भात्रनीर्याग्रहाट्नदः । इजुङ्किः॥

जनमात्रातः भू वागुः। इंडि ्मन्हिन्द्रका॥ अनमानुगः। यथा।

कारना हि बगराधातः। हे छि मृ छि: ॥ बगरी मः शु विष्णुः । हे डि मदत्रावनी ॥

जगाप्ती जी गनमारि वी । इंडि

জগদ্ব পু• বাসুঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

জগথোনিঃ পু॰ শিবঃ।ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ॥ বিষ্ণুঃ।ইতি তন্য সহসু
নাম ॥ বুন্ধা।ইতি জনারঃ॥
পৃথিব্যা•জী।ইতি শহ্চন্দুকা॥
জগদ্ব জী পৃথিবী।ইতি
ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

জগদিনাশঃ পু• যুগান্তঃ। ইতি হলাযুধঃ॥

क्रमाशः शुः विकृष्टः । इति

रम्माः ॥ श्रूकवाख्य (क्राञ्चः ।

यथा। वृत्रय छेत्रः। श्रुकवाख्याच्याः

ग्रम् (क्राञ्चः श्रुकवाख्याच्याः

ग्रम् (क्राञ्चः श्रुक्तः माक्षाः

नविष्या॥ पर्मनाण्यु क्रिपः माक्ष्यः

नविष्या। पर्मनाण्यु क्रिपः माक्ष्यः

नविष्या। पर्मनाण्यु क्रिप्ताः क्रिपः

नविष्यय ख्यामार्थः श्रुकः । क्ष्यः

। अः ॥ एक्रियानः क्ष्यः ।

এতৎ ক্ষেত্রবর ঞাস্য বপু ভূ তি नश्जानः। स्व॰ वश्यान् राजारङ স্বনাত্রাথ্যাপিত হি তৎ ॥ यथा চালুদিন দেবাঃ निकाः तुकार्यय " থা। সম্চিতু মিহাযাভিদেবেশ• ॥ ন তথান্যতঃ ৷৷ অহো তৃৎ পরমণ ক্ষেত্র বিস্তৃত দশ যোজনৈঃ। **তी**थदाबगा मिनामू व्यितः वानु-কাচিত ৷৷ নীলাচলেন মহতা নধ্যন্থেন বিরাজিভণ এক ভনমিব পৃথ্যা: সুদ্রাৎ পরিভাবি**ড**়া।। ব দ্বাণ পুতি বিষ্ণু বাক্য। সাগর-. भाउदा जीत महानमाञ्जू मिक्ता । সপুদেশः পৃথিব্যা॰ हि সর্বতীর্থ एन शुपः ।। এकामुकानमाञ्चाव-ष्क्रिकारिष जीवजुः । शमार ॥ গদাৎ শুেষ্ঠতমঃ ক্রমেণ পরিকী-ৰ্ভিঙঃ॥ সিন্ধু ভীরেচ যে। বুন্ধন্ वाजाउ नीलभव्यः । श्थिवाः --- ্গাপিত ভান ভব চাপি সুদুর্ল ভ ॥ जुदा जुदाना पुरक्कंय भाषयाहा-**मिड• म्म । नर्वमक् श**तिष्ठाक ত্তৰ ভিষ্ঠানি দেহভূৎ। সৃষ্ট্যালযেন .নাজান্ত কেৰ । নে পুৰুষোভ্য । नीवाषु तस्त जृति कन्नन। रण्य म्बज्या वाकग्रा मिनि वटक छ। (द्राहिनं नाम निमुद्ध । जडीत्व

নিবসম্ভো মা•পশ্যন্ত শ্চর্ম চক্ষুষ্যা। **७** ए छ ना की न भागा यम मायुक्त মাগু যুঃ । বুভেষু ভীর্থেষুচ যক্ত मानत्याः भूगाः यमुकः विमनाञाः না হি ৷ অহ নিবাসালভডেচ সর্ব নিমেষ বাসাৎ খলু চাম্বনে-থিক । 🛊 ॥ জৈমিনিক্রাচ । **উদকাर्डः সমাগত্য সভ**শ্চিদ্বাব-সোভম: 11 কারণোদক সংপূর্ণে ভিষান্ সংগু নিমজ্জি তঃ।।বিলোক্য नाथवः नीलवङ्गका**डिः क्পानिधिः।** काकामञ्॰ जनु । जुरुमानः মৃত্:ক্ষিতৌ। শহু চক্র গদা পানি ख्ना भाष्यं वाविष्ठः॥ 🕸 ॥ বন·পুতিলন্ধী ব্যক্য·। পঞ্জোশ मिषः (कञः अमृमुास्ट्रं)विष्टि**७**ः। বিকোল তীথরাজস্য তটভ্নৌ मूनियंव ।। भूवर् वाव्काकीर् নীলপর্বত শোভিত। যো সৌ वित्थियवा (मवः माकानातायगा-ञ्चकः ॥ नःयम् विषयगुमः नमूनु তট মাছিতঃ৷ উপাসিতু জগন্নাৰ **ठ उ: र**हु जिमः शुद्धः ॥ यामश्र ইভিখ্যাতে। যম সংযম নাশনঃ। य॰ मृष्ट्वी भूक्षियञ्चा कू त्कारि निक कनः वर्ष्ट्र ॥ त्रीमा भुजीही (क्कबर) मङ्गाकाद्रम् । मूर्कि !

শহাগ্নে নীলকণ্ঠঃ স্যাদেত কোশ সুদুর্লভ । । পরম পাবন কেব नाकामाद्रायगम् दि । मञ्जूरम् । जु ভাগস্ত সমুদ্যেদক সংশ্বৃত ।। यट मम्मकाट ममुद्रा २व তীথরাজত্ব মাগতঃ । যথা ২য ভগবারু ক্রিপুদে। দৃষ্টিপথ গভঃ।। ভথেদ মরণাৎ ক্ষেত্র সিকু সানা हिमुक्तिम । ठिष्ट्रम तुत्रीयः शृर्वः ৰুদুঃ কোধাভুপঞ্ম।। তছিরে।। मुखाङ गृङ्ग् वृक्षा ७ भविबञ्जाम । ভ্রাগভো যদা বুকা কপাল। পরিমূক্তবান্ ৷৷ কপাল মোচন তীৰ্থ দ্বিতীয়াব র সংস্থিত । তস্য मिक्किन शास्त्रं जु ग्रान । खत्याहन ॥ তৃতীযাবত্ত সীনাযা। শক্তি। নে विनवाद्याः। जानीहि अर्यदाकदः ভূকিমুক্তিফল পুদাণানাভিদেশে 🍴 স্থিত ভেতৰ এবং **ল**ণ্ড বটো বিভু: । কপাল মোচন: যাবদ-জাশনী পুতিষ্ঠিতা ॥ মধ্য শঙ্ক্ৰস্য कानीयाय मूख्छ ठक्माणिना। তা • দৃষ্টা পুণমেম্ব ভোগান্সো শ্বাতি শাখতান্ । সিন্ধুরাজস্য निना९ यावस्त वहेमा रैव। कीर शिक मनुब्रागा मन्नाम् किः (म) मुंडः ॥ चल्लां चित्रः भूगुः।

বাঞ্গুতে ত্রিদ**ৈশ রপি । অ**ত স্থিতান্ হি পশ্যন্তি সর্বাণ্চকাৰু ধারিণঃ !৷ কামাখ্যা ক্ষেত্রপানশ্চ বিম্লা চান্তরা স্থিতা। সা**ক**ি षुका बदाला श्रमो नृति । ए **एकिए।** विस्त्राः ॥ कः ॥ जङर्श्स्र রক্ষণার্ধ শক্তযো ২গ্রৌ পুকল্লিড । উগ্ৰেণ ভপসা পূৰ্ব মহ॰ সৰ্বেণ ভাবিতা ॥ পর্যুর্থ সা ম্যা সৃষ্ঠা গৌরী ভন্যাথ ভাবিনী। नर्वामार्या दम्हि वंशुर्वा म विनिर्भडा॥ छना मृक्षा मया छातु वहन भ श्रिय अरू। अष्टाईमी রক্ষ মন পরিভন্ত স্বস্তিভিঃ।। সাত্র ভিঙতি মুৎ প্রীত্যা অইধা দিক্ষু স·স্থিতা। ম**স্**লা বট মূলত পশ্চমে বিমলা **তথা।** শ্রুদ্য পূর্ভাগেতু স-ছিত সর্মক্ষণ।। অর্জাশনী তথা লয়া भरतत्र मिनि मः इंडा। कावतीं ৰ্দকিণস্যা• পূৰ্বস্যান্ত মরীচিকা॥ কালরাব্যা তথা পশ্চাৎচণ্ডক্রপা ব্যবস্থিতা। কদ্যাণ্যাশ্চাষ্টথা ভেদ• - मृह्व भू प्राणि मक्द श मांजान •মইধা/ভিভ্ৰা উপাত্তে পরমেশ্র•।। কপাল্যোচন নার্ম ক্ষেত্রপাল যমেশ্রে ৷ মার্কণ্ডেয় তথেশান

विष्यं नी न कर्रक ।। वह मृत्न वर्षेमक विकानाको गर्विणुः। रानि मृष्ट्री তথা सृदा शृहियिदा বিষ্ঠ্যতে ॥ ঞ্চা তত্ৰ জগন্নথেস্যা-विভाव काর १ । देशिमिन क्वाह । ইন্দুগুরুস্য নৃপতে: কেত্রে ত্রীপুক্ষোন্তনে। জগদীশ পুষা-দায় পিডামহ নিদেশতঃ৷ একোন ক্রমশঃ স•স্থা মবাপ পৃথিবীপতেঃ ॥ मह्नु इश्राम्थना यथाविदि **ाित छ। ज्**छा नथ हिना পূর্ব যা রাত্রি রভবদ্ধিলা: !! फ्रमा खतीयभूरत भागाला दिक् মব্যয় । খ্যানে ত্রিন্দদর্শাসৌ মহাভাগ্য বশার্প:।। পুত্যক নিব স খে**ত**দ্বীপ• মু, টিক নির্মিত । তন্মধ্যে দদৃশে (দব॰ শ্রুচক गमाध्यः ॥ नीनकीमृत्र नहामः বন্মালা বিভূষিত ৷ দক্ষপাৰ্থে 🗻 (স্থান্ত 🖰 🗷 🗷 🖹 रते नायन भद्दातु मुद्रधाङ চতুইয় । দক্ষা শেষ্ঠিতা । বিঞ্চ লম্বী তা শুভলক্ষা। বরাভ-श्रृहु इन्डा॰ देव ज्रह्मुया जि॰ जुल्ला-हनाः। मम्मं शम्यामनगैर लावग्रा-ষুধি পুতিকা ।।পিভানহঞ দদ্শে পুরতো ২শ্য ক্তাঞ্জি। বাম-॥

পাৰ্শ্ব স্থিত চক সৰ্বজ্ঞান ম্য বিভো: ।। 🕸 ।। ততঃ পুৰবৃতে স্ত্যা নৃপতে বালিমেধিকা। শক্তঃ স্তোহৈ দিব্য দৃগ্ধি বণক্রম ममुब्बृतिः !! पश्चित् उठेज् (प्रत्म বিশ্বেশ্বর সমীপতঃ ৷ নিযুকাঃ সেৰকা রাজ্ঞা সম্খ্রুম মৃপস্থিতাঃ ॥ न्रायमयञ्च नृशिकः क्छाञ्जलि भूटे। विकाः । (स्वम्त्के। सहावृक् उद्घे जृत्मी मत्ना मत्यः॥ शुविहानु ज्यमुष्टि कल्लान अत्युक्तः। মাঞ্জিষ্টবৰ্ণঃ সর্বত্র শহ্র চক্রাঞ্চিতঃ व्लवन्।। नम् छे भृत्रव्धा क्रम्म। १न मून् ८ সূৰ্য্য নিভাংশুন। নিযুক্তানাং বৃচঃ नुजा ताका नातम मन्वीए ॥ তৎকি নিনিভ বদৃষ্ট তক্ষেচি वहिं (७। नाइएः शुरुमन् वाक्ष মুবাচ মৃগদ রম। ।। উপছি হন্ত তে ভागाः सः यम् देवान् भूता। धिक দীপে বিশ্বমূর্তি দ্ ষ্টো যোবিফুরব্যবঃ ॥ তদ**ক স্থলিত। লোন ত**ল্ড্র মুপপদ্যতে । তভাগ্য বশগঃ मर्वाकाना॰ नयनाजिषिः॥ ভবিষ্যতি মহারাজ সর্ব কল্মষ্ নাশনঃ। সমাপ্যাব্ভূথ স্থান• তটান্তে সরিভা• পক্তে: ॥ উৎসব• সুমহৎ কৃত্বা কৃত কৌতুক মঙ্গল ।

ি মহাবেদ্যা• হাপযাত্র যজেশ• ं उक किंगि।। 🛊 ॥ विठार्यार्थः মুদা যুক্তো তোচ নারদ ভূভ্কো। সুসন্দো ভভো যাভৌ যত্ৰাসৌ छगवान् सनः ॥ भूनः भूनः शुर्वेम् १ वर्षानुः नयत्न नृशः । - ছিলৈ রাহার্যামাস তক্ কল্বোল लाञ्जि ॥ जुग्नकारवाशनः मित्राः महारविने विनिगुवः । वहना नातनरेम्। न श्रुवयान्यम् शार्थियः ॥ ৠ।পূজাবসানে পপুছ নারদ • মুনি সভম•াকীদৃশী• পুতিমা• বিঞো र्घडे विष्ठां कि कः शूनः ॥ विष्ठात्रयस्त्री **जा**दिन्थ• यावमात्रम शाबिद्वो । অশরীরা ততো বাণী শুশাব চান্তরী**ক্ষতঃ** অপৌক্ষেয়ে 11 ভগবাৰ সদ্বিচার পথে স্থিতঃ ৷ मृग्थायाः सहार्तिन्। स्या स्याव-ভরিষ্যভি ৷ পৃত্বাদ্যতা দিনান্যেব যাবং পঞ্চশানি বৈ ৷ উপন্থিতো २ग था वृद्धः भद्रशाशिस वैद्यकी ॥ अनम इः भूरवरे भाव हात वश्च यङ्ग ७:। वहिर्वाम् अनि कूर्वेख यावङ्ग ॥ घटेना ভবেए।। पुत्र उत्घटेना नात्व। वादिग्राक्षद्वमायकः। नत्रत्क ় বসতিঞ্চৈব<del>জ্</del>যগ্ৰহ**ে স**ন্থান নাশন• ॥ नाडः পुरवणनः अर्ग्यामनाणाः

कराठन । नियुक्तान्त्रः भुभरम्। ह-দাজে। রাষ্ট্রস্য চৈব হি।। দুইুন্চালি মহা ভীতি বন্ধতা চ যুগে যুগে। **७ह**ुदे। नात्रमाम्या (ख यथाकः বিষ্টুনা স্বয়ণা চিকীৰ্যন্তি তথা কলু • **७ बारा ७ स** वर्षकी । श्रादाह नृशिकः (मा रंथ चरत म्हास गालुवा ॥ जानवारु· घिष्ठानि मारूगा सिंव्य ক্রিণা। ইত্যুক্তান্তদ্ধে বেদ্যা। वृषा वक्ति क्रिश्क्।। वश्वनार्थः यनुष्राणाः भाकाबादायणा विजुः। ততঃ স পৃথিবীপাল স্তথা কৃত্বা-ন্তরীক্ষণা॥ যদুবাচ গিরা দেবী তত্তংশরিচচারচ। নির্ববাহ স্বয়ণ रितः क्रमार शक्षराम मिति॥ हजु म् खिः न छगवान् यथा পূर्वः माया-**पि उः। पि यु नि•शामन गंखा दल** ভদু সুদর্শনৈ: ৷৷ শহু চক্র গদা পদ্ম लमहाङ् र्जनापनः। इनः मुक्त চকারু পার্যন্ পল্পাকৃতিঃ ুদ্ ছত্রী কৃত ফণা সপ্ত মুসটোজ্ল श्वाः। मुख्नु। हाक्वम्ना वद्राद्वा-ভग शादिगी।। वासी: भाषू ई ज्रावशः म्ब्रिक्न किशी। मुस्मन्ड यहक् मने विकाः कत्त्र इंडे ॥ শাথাগু স্তম্ভ মধ্যস্থ ভ্রুপন্ত তুরী-যক। 🛊 । নিবৃত্তি ভগবন্ধণ চত্ত

का मियु क्लिनी।। लाकाना मूल- || काताय भूनवाशास्त्रीकगा। भटि হাছাদ্য সর্ত রূপতে পুতিমা जिसामान क वर्ग श्रामान वर्गक শ্চিত্রকর্মণ। অমুব্রিক স্বর্গেণ मृष्टाः भाषाय (इ. इतः॥ (गामनीयाः পुयाञ्चन भड़ेनियांत्र तलुरेलः শিति जिः कणअभौतम् हगाहाम-यां गुडः॥ दर्ख न्रखं ह मःकार्या भूवं न कात्र (साठनाट । श्रांड वद्ग्ल লেপস্ত সতু দিব্য শ্চিরস্তনঃ।। পুगामाचारि छ॰ (लश मशनी एउ क क । पूर्णिक · गाक शाला नुष्ठि कामे। हीयरक ।। तिक्कि कर्रा ख्दा द्राजन् कनाि मनवात्राः। ननूरपाण जारकम् मृक्षाः क्रु छ्य (र इतः ॥ जमार मृहिबा पुरुवा। वल्यान वियानिजाः। नीनाम् ॥ কল্ল বৃক্ষ্য বাষব্যা শত হস্ততঃ৷৷ भूतिरम जुनरू हात भागामः जुर्णाय छ । উ छात्र नत्र मि रहमा সহসু কর মুদ্ভিত• II কার্যিত্বা পুতিষ্ঠাপ্য তবৈন বিনিবেশ্য। পুরা ছিতঃ পথতে হিষান্ (प्रचिष्ठविक माथवर K नाम विश्वन वमू नीम भवादा दिकंदा खंमः। ভদ্য সম্ভতি রেবাস্য লেপন স্থান

কৰ্মণি ॥ নিযুদ্যতা মহারাজ ভविषारम् भारवष्ठ । **उडः म** নুপতিঃ জীমান্ শিল্প শান্ত বিশার-मान् ॥ न कार्रेत्र मान भारतम्ह रयाजयामात्र जामब्र। मिरन मिरन সুব্টিতঃ প্রাসাদে। বৃক্ধে विकाः॥ পরিতঃ প্র্যানান্ত শুদ্র পক্ষে यथा मनी। #। नात्रम छैवाह। भुवर्ष-दङ् द्राष्ट्रन्यु हिन्। हास्यिन् हिद्र॰ ভूवि॥ আরাধ্য জগন্নাথ নুপচারৈ র্মছোৎ-गरेवः। शिञामर् मुश्रुकारमा गसा **(**हम्बिक विखाः ॥ उतामका छि (मालान) याका खाछा माहार नदीः । উट्टी को मिका यात्म बणाञ्च মুনি ভূভানা পুদক্ষিণাক্তা হরি• ব্যোন মণ্ডল নখ্যগ্ৰ । দৃষ্টা পিতা-নহ- দূরাৎ দুপ্তার- জগতা- নৃপ:॥ णमग्र विज्ञानुष्ठाः माकाम्लाक नगः इति । गरेनः गरेन यर्थो जूनः शुगनाच क् ठाञ्जनिः ॥ खरन् शुगि পতন্ ভূমো সাধৃস স্থলিত। दुष्पन् । जानविश हि उट कार्यं। गानयम्भ मडम ॥ উवाह भतम श्री ७ इन्द्रमृद्रः भिजामहः। किमर्थ নাগতোম্যত তদ্ বুহি হৃদ্য ছিত• ॥ হন্দুদুগুন্ন উবাচ । আবিব্ৰভূব ভगवान् ज्ञ जवा जवः शुज्ः।

शेषु। (मव • जगमार्थ • इं। श्रीय । निव शुरका॥ अ॥ वेरिकावाह। उमगुरका धता गड़ा गादर मद्यात निक्रमर। করিষ্গিনহাভাগ তাবদেব বুজা-ग्रहः ॥ इन्तुमुह्मानि क्षेत्रा मृक्षे वांकी भिय विजाः। वाजगाम ভূব- বিশা বিধিনাচানু মোদিতঃ। व्यागडाठ कगन्नाथ हितामू ८ कथे यानमः । पंखव भूगनामात्मो ঘ্ন রোনাঞ্চ কণ্ডুক: ॥ততঃ ক্রমাৎ সন্দৃশে বিমানাগ্যু পুজাপতেঃ। इर्ग इन्त्र मोटिः इति क्श्नानः দন্ততঃ!! পুণিপত্য জণলাথ• বিঃ প্রীভ্য পিতানহঃ । **আনন্দ সি**স্কু मः मण्डः नातामाव्य वश्वः स्या 🕮 ॥॥ गमुख्यो उटा वृक्षाक् उचयुग्यनः स्ता श्रीविक नीप्रमारेम् । क विविष्ठ वा क्रि खथा। श्रामान घाति त्रि-তে রহুন্তয়েও নণ্ডপে। বাস্থি-॥ ভ্ৰাভিষেকায় সংম্থাদুশ মণ্ডলে ॥ जुवामिटें इद्रश्रेष्ठ छीर्थ বাযু পদ ভূতৈ: । ধুক্তাভ্যা স্ত্ৰী পুৰুষয়ো রভিষেক গিতামহ: ॥ চকার ভগবান লোক সংগ্রহার্থ-দিকোত্রমাঃ। ততোভালক্তান্ দেবান্ গ'ন্ধ নাল্যোপশে।ভিভান্∥ ।। नीताजियु। विधिव न स्यः

লোকভাবন: ৷ রত্রসি-হাসনে রম্যে इ। भगामाम मञ्जठः ॥ इ। भिषिद्वा জामाथः ग्लंड्डी जम्। इत्युक्तः। আনুষ্ঠুভ ন্তরাজ সহসু পুৰজা-भर्। रिवणाथम्यामता भःक अर्थ-न्। পृष्रयागडः। क्डा পुष्रिध ভো বিপাঃ শোভনে গুৰু বাসরে ॥ 🗱 ॥ उग्रहानुनाम्याहाबारः यथ।। वरुन् नियाक्षयञ्ज लाक। ন্ ত্রৈবগিকানুত ॥ লৌকিক ব্য-বছারোয় পচতি ত্রী: স্বয় ধুর । **जू**एक नादाया निज्य ज्या रेनरवम् अभिष्य मृष्क्ति शात्रगांद ভক্ষণান্দ্যপানাদি নহাদ্রিত নাশন ॥ আঘাণামানস পাপ मगनाम् डिज • उथा। जासामासाक् ক্ত পাপ শু:বণঞ ব্যপোহতি। স্পৰ্দনাং ত্ৰুক্ত পাপ নিথ্যা-लान उथा विकाः ॥ गाद्भ লেপ দত্তেৎ পাপ শার্নিরণ रित नमः भयः। नदा शतिजः हि श्त निविषिठ· निवाहरामः शिठ् (तुत क्यांन । ज्लाबि उत्य পিতরঃ সুরাশ্চ পুষান্তি গৌক মধুস্ননস্টা নাতঃ পরঃ হি বভুঙি হব্য কব্যেষু ভো দ্বিদাঃ। নরাণা॰

क्ष्रभाष्ट्राय उपमुखि दिव्योकमः ॥ বিষ্ণালয় গত•ত দ্ধি নির্মাল্য • পতি-ভাদযঃ। স্পাতি চেমদুই হৈ যথ। विक्षु खरेथन ज्यानिन्म चि त्व जन-त्रृङः प्राचित्रः । यय• **দওধর ভেবু সহতে** নাপরাধিন: !! বেবা মত্র নদওংশ্চদ্ধ্বা ভেষা হি मूर्गि ३: । अञ्चीभारक महारघारत **भ**ठ्यस्य (ङङिमाक्ष्यः ॥ वित्रङ् মপি সংশুরু নীত বা দূর দেশতঃ **। যথা তথোপ**যুক্ত তৎ সরগাপা- ॥ श्रामन ।। रेनर्वम्याम बग्रखनु र्गाद्धः वाद्रि ममः हयः। मृष्टि न्मामंन চিন্তাভি ভঁকণাদ্য নাশন• इज्रूष्कनथं ७ ।। # ।। म करन मंभ जर्जु वर्ष भर्ग्रेड॰ भृशिवता তিৡতি। যথা। শাল্যামোহরে মুর্ত্তি জগদ্বাথশ্চ ভারত ৷ কলে मन नर्नाख यायो छाक्। रातः **शमः ॥ ই**তি तुन्नरेववर्ख भुक्ि ંચેલ: 11

জগন্নঃ পু• ভাগ্নিঃ।। জন্তঃ। ইতি विषः भदत्रशावलीत ॥ बगन् त्रि भार्ठः ॥

बगतः न्तृ क्वा । इक्ति (र्भावन्तुः बगवः भू न्यू त्राकन्तः। (भया इकि

ইত্যমর:।। নদনবৃক্ষ:।। পিষ্টমধ্য• ॥ পূর্ত্তে ত্রি ইতি মেদিনী। কবচঃ। तनयोदिकहार्।। शामय ही इंडि बङ्गाना॥

জশণ ত্রি ভুক্ত। ইত্যমর:॥ জিঞ্চঃ দ্রী সহভোজন-৷ ইত্যমরঃ . ।। ভক্ষণ । ইতি হেমচন্দুঃ।। জিন্মিঃ পু• বায়ঃ।ইতিকেচিৎ।। জঘন• ক্লী স্ত্ৰীকট্যাঃপুরোভাগঃ॥ কটি:। ইতিমেদিনী॥

**ज**घनक्षरको पु॰ अञ्चरको। इंडि इनायूषः ॥ विवश्नारहारः मदः॥

জঘনেফলা জ্রী কাকে।ভূম্বরিকা ইত্যসুরঃ ৷৷

**जघन्रः** वि চরমः ॥ গহিত:॥ (सङ्द द्वी। इंडि (मिनी। म्पू प्र। इंडि मद्दद्वावनी ॥

बचनाकः शृ जी मृनुः॥ कनिष्ठः। ইতি মেদিনী া

জন্নিঃ পু॰ হ্ননযোগ্যাত্র । ইতি न कि अना दः ॥

জয়ু: ত্রি হতা। হননকর।। इंकुशामिकावः॥

রস্ম: ত্রি অস্থাবর:1 গতি শক্তি विणिष्ठेः। उद्भयंत्रयः । इतिकः र ভाषा। उर्भगायः। (महकः २। वृद्धः ७ वृद्धः ६ वृद्धाः ६ वृद्धः ६ वृद्धाः ५। इंज्यबः॥

खक्रमप्री खी हव । ইতি विकाश्यामयः॥

জঙ্গল তি নির্বারিদেশ:। ইতি
শঙ্গরত্বাবলী ॥ নির্জনস্থান ॥
- পিশিতে জী।ইতি মেদিনী॥

ह्मानः भू॰ (द्रायविष्णयः। हामान इंडि जाया। उर्भयायः। जानिः २ भक्षादः १ (मजुः ४ मक्षदः ६।

ইতি জটাপরঃ ॥

জকু। নী বিষণইতি ত্রিকাণ্ডশেবঃ।।
জত্বা ত্রী গুল্পে দ্বালি গুলেগা ।
জাড় ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ।
পুস্তা২। ইত্যবরঃ।।

জল্পাকরিকঃ তি ধাবকঃ। তৎপর্য্যাবঃ ॥
। জাল্পিকঃ ২। ইত্যমরঃ॥

জন্ত্রা ক্রাণ ক্রী জন্ত্রাসন্নাহ:। তথ পর্য্যায:। মঙ্ক্রুণ ২। ইতি ত্রিকাপ্রশেব:॥

हाहातः जि जिल्लिन्। उट शर्यायः। जिल्लिक्तः २। इज्यायः हा श इतिनः ॥ जनः ॥ कत्रकः ॥ श्रियाः॥ श्रियाः॥ न्याः । श्रियाः॥ श्रियाः॥ न्याः । ॥ ताक्रीतः ॥ मूजी ॥ ज्याः भा•मछनाः। कङ्गानाः श्रायमः मर्ब शिख् स्था इताः स्राः। किक्षिः॥

জজ • শুদ্ধ। ইতি কবিকল্প জনঃ।।
জজ ই যুদ্ধে। ইতি কবিকল্প জনঃ।।
জজপ্কঃ ত্রি পুনঃপুনর্জপকর্তা।
ইতি মুধ্ববোধং।।

জট • সংহতী।ইতি কবিকল্পজনং॥
জটা ত্রী লগ্শকচং। তৎপর্য্যায়ং।
শটা২।ইত্যমরং॥ মূল•॥ মা•সী
। ইতি মেদিনী ॥ কদুজটা ॥
শতাবরী । ইতি রাজনির্ঘণ্টং ॥
কপিকছুঃ।ইতি রল্পশালা॥

জটাজ্টঃ পু• জটাসমূহ:।যথা।
জটাত্ট পুস্থি• দুচ্যতি রঘ্ণা•
পরিব্চ:। ইতি মহানাটক•॥
শিব জটাচ॥

किं। क्षांवा शू॰ शुनीभः। ইতি हात्रावनी।।

জটাটক্ষঃ পু• শিবঃ। ই্তি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

জটাটীরঃ পু• শিব: । ইতি ত্রিকাগুশেষঃ।।

কটাপ্ররাধনী। বুজভেদ: । ইতি শব্দরভাষনী। বুজভেদ: । ইতি ত্রিকাওশেষ: ।। অভিধানতথ্র-কারকা।।

জটাযু करामा जी जी मूगिक प्राविष्यः। खर्भयायः। ननस्य विद्यानी ० পেষী ৪ সাৎসা ৫ কৃষ্জটা ও জটী ৭ কিরাতিনী ৮ জটিলা ৯ লোনশা ১০ তপশ্বিনী ১১। ইতি রঙ্গুমালা।। ভূতজটা ১২।ইতি ভাবপুকাশঃ॥ পেশা ১০ কব্যানী ১৪পিশিতা ১৫ निभी ७५ (भिमनी २१ करें। ४४ হি• সা ১৯ মা• সিনী ২০ জটালা ২১ नवता २२ (नवी २७ जाममा २३ চক্ৰবভিনী ২৫মাতা ২৬ অমৃতজ্টা २१ जननी २৮ जिंगवे २२ म्ग डक्पा ७०। जम्म खनाः। সুরভিত্ব। কধাযত্ব। কটুত্ব। শীতলত্ব । কফ ভূত দাহ পিত্ত নাশির। কান্তি মোদ কারিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘটিঃ॥ তিক্তত্ব• । स्मिश्वः। वनश्रम्वः। अपूवः। ् बिरिग्यामु वीनर्भ ऋष्ठ नानिवृक्ष। ইতি ভাবপুকাশঃ ॥ অনুবেপনেন ্জুর ক্জতা নাশিত্র । ইতি রাজবল্পভঃ 🛚

करेगुः भ् यनामधाउभकी। मञ् यक्ष भूधः। मण्यात्रम् इः। मुन्यव्यता जन्यः। नी जाङ्य न नम्रय द्रावरान रुड: । ইতি द्रामायनः ॥

शुशुक्ः। इंडि मिरिनी ॥ मार्खा-প্যয়•। ইতি শ্বিৰূপকোষঃ॥

कोगनः क्हू द्रः ॥ वर्षः ॥ 8 मूहकः॥ भूभुलुः। ইতি রাজনির্ঘট: ॥ জটাযুক্তে ত্রি।ইতিশব্রত্নাবলী।। क्रोना की क्रोमानी। इंडि রাজনিঘণিঃ।।

क्रोगिकी की क्रोगांगी। ইতি ब्राजनिघंफिः॥

क्रीवज़ी खी क्नुकरो॥गन्नमाः भी। ইতি রাজনিষ্টঃ।

बी प्रकृत्कः । इंडि मदत्रञ्ञावली ॥ अप्रै।। नम्रः॥ ইত্যুগাদিকোষঃ॥

क्रिवः भू•ुनि•इः। ইতি শব্চন্দ্রিকা ॥ জটাযুক্তে ত্রি। ইতি মেদিনী॥ किंग की किंगा नी। इंज्यातः ॥ भिन्ननी। इंडि मिनिनी॥ वहा। উद्दृष्टी । ইতি রহ্মালা।। দমনক व्कः। ইতি রাজনির্টঃ॥রাধিকা শ্বশ্রঃ যথা। জটিলা রাধিকা শ্বশ্রঃ কার্যতো হবিশদেব ত ৷ ইতি (गोत्रगानात्मर मः॥

कती जी शर्क हो वृक्यः। इंडि मद्रवद्गावनी ॥ करामा नी । इंडि इज्ञान।॥

কটা পু॰ প্লফবৃক্ষঃ। ইভামরঃ।।
• জটাবিশিষ্টে ত্রি।।

कंरूनः পু॰ कञ्कः। सक्छ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ः। কালক: ২ পিল্ল: ১। ইত্যমরঃ॥

कर्रतः वि वश्वः॥ करिनः। ইতি
भवत्रद्वावनी॥

कठेतः भू ली छेनतः। ইडि (मिनि।।

জঠরনুৎ পু॰ আরণ্ধব্কঃ।ইতি শদ্চনিদুকা॥

জঠরাম্যঃ পু• জলোদররোগঃ। ইতিরাজনির্ঘটঃ!!

জড॰ ল্লী জল•। ইত্যমর টাকাযা• রাষ্মুস্টঃ ॥ সীসক•। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

জড়ঃ ত্রি হিন্গুরুঃ ॥ মূকঃ ॥ অপুজঃ।ইতি মেদিনী॥

कडिक्यः वि पीर्घम्वी। वित्रिक्यः। इंडि स्वायुधः॥

কডত। জ্রী জাড্য • । তৎপর্য্যায়:। স্থৈনিত্য • ২ শীতলত্ব • ০ অপাটব • ৪। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বিরহ দুঃখেন জীবন নাত্র ছিতিঃ । ইতি রসমঞ্জরী।।

জড়। জ্ঞা শ্কশিখা। ইত্যারঃ।।

ভ্ৰামলকী। ইতি রহমালা ॥
ব্
জডিমা পু॰ জড়তা। তস্য লক্ষণ•
যথা। ইপ্তানিপ্তাপরিজ্ঞান• যত্র
পুশেরনুত্তর•। দর্শন শুবণাভাবো
জডিমা সো ২ভিধীযতে।। ইত্যুজ্ঞান নীলমণিঃ।।

জড়লঃ পু॰ দেহস্থিততিলকঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥

जजु ही वृक्षिमियां प्रवित्यसः। (जो रेडि ना रेडिन जावा। उट शर्यायः । बाका २ नाका ० यावः ८ व्यनकः ६ स्मामयः ७। रेडिमाः।। बक्षाः। । रेडि ब जमः।। की विका । कि मिंछाः। ৯ जजुका >० जङ्गाः २० गदाविकाः। २ । रेडि बजुमाना।।

अजूक क्री हिक्यू॥ नाका। इंडि (मिनी॥

জতুক। ত্রী জনী নামগদ্ব্য । ইত্যমর টীকাবা ভরতঃ ॥ চর্মা চটিকা । ইতি শব্দরভাবলী ॥ পর্লটী । ইতি ভাবপুকাশাং॥ ভাতাবিশেষ্ঃ। সাতুমালবেপুসিদ্ধা । ত্রস্পাঃ পর্যামঃ। জতুকারী ২ জমনী ও চক্রবর্তিনী ও তির্য্তক্ কলা ৫ নিশাদ্ধা ৬ বহুপুত্রী ৭ স্পুত্রিকা ৮ রাজবৃক্ষা ৯ জনেপ্টা ১ किनिक हुक लोशमा ३५ दक्षनी ३२ मृत्रवली ३० जुम ती २८ क्क क्का २१ १८ विब्बृ लिका ३५ क्क क्का २१ शृष्टि भर्गा ३৮ मूर्व हिका ३३ जक्वली २० पीर्यक ला २३। अम् ११ । भिष्म त्रवृष्ट । जिल्वु । जिल्वु । । जिल्वु । । त्रक्षा विष नाष्ट्रिश कि किक पार ज्या विष नाष्ट्रिश कि त्राक निर्वा त्रवृश । पीर्श नव्य १ हें जि त्राक निर्व के । । कल का शि भागेः। निष्णाका क्क कर राजि अ । । विल्वा कर मार्थ विष्णा विष्णा विष्ण कर स्वा विज्ञ कर मार्थ । । विल्वा विष्ण कर स्व विष्ण कर स

জতুকারী জী জতুকালতা।ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

खजुक्द जी खनी नामगन्न पुर्व । इज्यान स्था

জতুক্ষা জী পপটী। ইতি ভাবপুকাশঃ॥

জত্নী জী চম্চটিকা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

জতুপুত্ৰকঃ পু• নয়:।পাশকগুটিকা ।ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ।।

किश्विष्ट्रकृति। ११ विष्युत्रमः भू॰ व्यवक्रकः । ইिक

बज्का जी बनी नाम गन्न मुन्रः। इज्याबः ॥ हम्प्रहो । इजि भक्तज़ादनी॥

জত্ব ক্লী ক্ষমসন্ধিঃ । পাথুরা । ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ ॥

জবুক লী জবু। ইতি শদরগাবলী।। জবুশাক লী শিলাজতু। ইতি রাজনিষ্টঃ।।

জন ম ল ইর জনৌ। জননে ইতি কবিকল্পজমঃ।

बन के भ ह य बती। बनता इंडि क्रिक्न क्रमः॥

জন: পু॰ লোক: ॥ মহলোকা-দূদ্ধ লোক: ॥ পানর: । ইতি মেদিনী ॥

জনকঃ পু৽ পিতা ॥ রাজভেদঃ।
সতু নিথিলাধিপতিঃ । ইতি
নেদিনী ॥ ইক্ষালরাজপুত্রা নিনি
বিশিষ্ঠ ত্যক্তা যক্তঃ কৃতবান্
বিশিষ্ঠ অমজ্জান নাগত্য রাজানন্যান্ত্রানাল রাজাতদা নিদ্ভিতঃ
মুনিঃ কোথাত্তঃ শশাপত্বংবিদেহো
ভব। দৃষ্টা বিদেহং রাজান ম্যযঃ
সর্প্রবে তে। তঞ্চ তে যাজ্যামাসু

यावधीका अनीविषः ॥ नातन्तु-· স্যাপি ত · দেহ মরক্ষ্বিপুক্বাঃ '। विक मारिनाम्ह गरिक्षम्ह भूकामानः मूङ् मू ङ्ः॥ अष्याणि मङ्गाजा ःनः। निभित्तरः समिहितः। अत्रिक्ति \_দেহাতু মন্থানিশাপি চক্রিরে।। ্মস্ত্র হোমৈ মহাত্মানঃ পুত্র (र्हे कि नित्म उपा। जनगा मथा मानायाः भाषु ज् ा यउक मः ॥ অত্যে নিথি রিভি খ্যাতো জননা-জ্ঞনকো হভবৎ। বিদেহ শ্চাভব-শ্নানহাত্রা দ্বহাত্রপাঃ। তথা-ছিদেহাঃ প্রেচ্যেন্ত সর্বে ভদ্ব-শঙ্কা न्भाः। भाः विष्ठताबस्य भूतिका क्रमाका २७व८ । गिथि मध्य महा-वीरयं। यन जा निथिन। ७८९। ইতি রামায়ণ-॥ উৎপাদকে ত্রি॥ জনকতন্যা জ্রী সীতা। ইতি त्राभागगः ॥

জনকৰন্দিনী জ্ৰী সীতা। ইত্তি রামায়ণণা।

জনকসুতা জী সীতা। **ইতি** রামায়ণ ॥

জনকাত্মজা জী সীতা। ইতি শক্ষুত্ৰী।।

जनकाती भू॰ व्यवक्रकः। इंडि त्राजनिर्घणेः॥ बनक्राः भू॰ চাঙাল:।ইত্যনর:॥ बनठा জी बननम्रहः।ইত্যনর:॥ बनद्रकः॥

बनन॰ क्री व॰माः ॥ अस्य । इंडि भिनिती ॥

कनिः छो कनी नाम गक्त पुराः। इंडि मेप्रज्ञावनी ॥

कननी की माठा ॥ मया । इंडि भिन्नी ॥ कनी नाम गक्त प्राप्ता । हर्णहरी । इंडि भक्त क्ष्मिता ॥ यृथिका । इंडि भक्त निष्ठा ॥ करेका ॥ मिक्षिष्ठा ॥ व्यक्तकः ॥ करिका भी । इंडि ज्ञाकनिष्ठिः ॥ कर्मित्री ॥

जनभुवामः शुः लाकाशवामः । उद्ध्यायः । क्विनानः २ विशानः १ वहनीय । इन्डि ह्महन्मुः ॥ जनश्रियः शुः धान्यकः ॥ लानाञ्चन वृक्तः। ইতি व्राक्तनिष्ठिः॥

জনমের্যঃ পু॰ পরীক্ষিত রাজপুঞা।
তৎ পর্য্যায়ঃ।রাজি ইঃ ২পারীক্ষিতঃ
৩। ইতি, ত্রিকাগুশেষঃ ॥ পুরু
রুজপুঞা। ইতি ত্রীভাগর্কঃ॥
জনমিতা পু॰ পিতা।ইতি হেমচন্দুঃ॥
জনমিতী ত্রী নাতা।ইত্যমরঃ॥
জনরবঃ পু॰ লোকবাদঃ। যথা।

পরীবাদ স্তথ্যে। ভব্ঠি বিত্তথো বাপি মহতা• তথাপ্টুছেধারা• र्वि गश्मान जनववः । ইঙি लक्षा (मनः।।

जनः नाकः शुः महर्त्वारकाशित जुदन । यथा। अया महि म्हालीकः ম্বর্লোকা**ে পরমাজুতঃ। কল্নাযুষো** ব্সন্তঃত্র তপসা ধুতকলাবাং ॥ इन्धः कथाः कथयत्त्रा जगदम्भायाः शिय । क्रशार्खन विमान उक्तन लाकः निनाय जान्।। निवमञ् মলা যত্র মানসা বুন্ধনঃ সূতাঃ। স্নন্দ্ৰাদ্যা যোগীজাঃ সৰ্ব্বে তে ভূগেদ্ধরৈতসঃ।। অন্যেতু যোগিনো (य रेव श्रुवषु का तिनः। मर्व षम् বিনিশুকি স্তেবসন্ত্যত্র নির্মালাঃ॥ নহলেকঃ ক্ষিতেকজ্ব নেক কোটি পুনাণতঃ৷ কোটিদ্বযেতি সংখ্যাতো स्ता ज्लाका स्तः॥ इंडि कात्मकानीय ७ ॥

জনবল্লভঃ পু•়খেতরোহিতবৃক্ষঃ ৷ ইতিরাজনিঘটঃ।।লোকপুথে তি॥ জनवामः পू॰ जनপुवामः। ইতি इने देशः॥

জনশু,তিঃ দ্ৰী সত্য মসত্যমা লোক भूवामः। उट् शर्यायः। कियम् हो २ ॥ कनातः भू भाषः। (कना इंडि । ३७७मनः ॥

जनसान हो मधकात्रग्र<sup>•</sup>। इंडि बहाधतः॥ म अकात्रः। मभीश स्रात विष्णयः। यथा। इक्षाल ताजगुत्वा म् ७: म् काठार्य। कन्। मत्रका विवास् -হীব। মৈথুন কৃতবান্ সমূনি <del>তং শুত্র।</del> রাজান• শশাপ ৷ সপ্তরাক্রেণ ব্রাজাসৌ সভ্ত্য বল বাহনঃ। পাপকর্ম সমাচারে৷ ববং প্রাপ্তাতি मूचिं ॥ **अर्व अदा**नि यानीह कक्रमानि जितागित । महर्विषाः शा मुवर्षि क्या किशु छविष्ठ डि ॥ मछमा विषया गावट जावट সবন মাশুম•া পা•শৃভূত নিবাক-সাৎ সপ্তরাত্রান্ডবিষ্যতি।।ইত্যুজ্বী কোধ সম্ভ জনাশুন নিবাসিন• । बन• बनगरमहाराख श्रीयजा মিত্যবোদত॥সপ্তাহান্ডম সান্ভূতঃ স চাপি বুন্ধতে জসা। তস্য দণ্ডস্য विवया विकार लेलका जानुषु॥ उना भुज्ि काय ए म एका द्रग মুচ্যতে । তপদ্বিনঃ হিতা যত্ৰ छज्जनहान मूह्य ॥ वानायगः॥

দ্রী উৎপত্তিঃ জনা मुक्षःवादः ॥

भातमा ज्या। इंडि धनक्ष्यः॥

জনাশনঃ পু• বৃকঃ । ইণ্ডি ব্লাজনিষ্টঃ।।

জনশ্যঃ পু॰ মঙ্পঃ।ইত্যমরঃ॥
জনিঃ ব্রী উৎপত্তিঃ।ইত্যমরঃ॥
নারী॥মাতা।ইতি শদ্রহাবলী॥
জনীনাম গদ্বুত্ত।ইত্যমরটীকাযাণ রাযমুস্টঃ॥

क्रिका जी मुया। इंडि अक्रुज़ी-ट्ली॥ क्रमक्री है।

জনিত বি উৎপাদিত। যথা।
সেনাচরী ভব্দিভানন দানবারি
বাসেন যস্য জনিত। সুরভী রণ
জ্বিঃ। ইতি নৈষধণ।।

জনুং ক্লী জনাইত্যমরং।।
জনুং জ্লী জনাইত্যুগাদিকোষং।।
জনুং জ্লী জনাইতি শদর্লাবলী।।
জনেইঃ পু॰ মুদ্রবৃক্ষঃ । ইতি
রাজনির্ঘটঃ।।

জনেষ্টা জ্রী জতুকা॥ বৃদ্ধিনানৌ যধিং।। জাতীপুরুং॥ হরিদু।। ইতি রাজনিঘটং॥

জনোদাহরণ ক্লী যশং ই তি ধনজ্ঞ যং।। জনোঃ পু জনরক্ষকঃ। ইতিমুগ্ধবোধণা। জন্তঃ পু পুণী। ইত্যমরঃ॥

জন্তকষুঃ পু• ক্মিশত্বঃ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

জন্ত কা জী নাডীহিন্দু॥লাকা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।

जल्ला की विषय•। ইতিশদরহাবলী । स्वा । ইতি ব্লুমালা।। শু

कर्षाः । शुः वीक्षभूदः । हैि त्राक्षनिर्यण्डः ॥

জন্তগা জী বিভন্ন ইতি

त्राजनियंग्रेः॥

क्रस्तामन की हिन्सू । ইতি बाजनिर्घण्डः॥

জন্তপাদপঃ পূ॰ কোষানুবৃক্ষঃ। ইতি ব্লাজনিঘটঃ॥

ৰুদ্ভফলঃ পু• উড়ুম্বরঃ। ইত্যমরঃ।।

জী নিম্কঃ । ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ।।

জন্তবা ত্রী কাশত্ণ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ !!

জন্তহন্ত্ৰী ন্ত্ৰী বিডঙ্গ । ইতি বাজনিৰ্ঘটঃ॥

बग्ने क्री आफाक्र गमकः । उट भग्रायः। बनः २ बननः ० बनः ८ উट् পिखः ६ উद्धरः ७। ই छान तः।। ॥ बग्नः १ बनी ४। ই छि छत्र छः ॥ छह मूं जामू ज कर्मण। छवि। यथा। मूं जाना म मूं जानाक कर्मण। बग्न बायर्छ। भुगुरक्तर व ह मई व नान १ क्रुखर बनाः ।। ই छि तुक्त रैवरार्ख भुकृ छिथछः॥ छ।। छम। करमा यथा। थाठो विकाल छवि यानिः कम् वयट महा। गर्भाम्य छठः मुकः श्रेष्ठः तुक मग्नि छ।। यन १ व काल मुक्ता। यानि छ्वछि याविछाः। स्मृष्ठेः मुक्तमर्छ। यानो रैनिछ गर्जाम्यः

শনৈঃ!! ৠ ৷৷ ঋতাবপিচ যোনিশ্চে-ষাত পিত্ত কফাবৃতা। ভবেভদা বিশেষত্ব॰ নৈব ভস্যা•প্ৰভাষতে॥ খাৰ কালে যদা শুক্ৰ নিদোষণ যোনি সংস্থিত। তদা তদ্যাযুনা ग्ण्डे॰ <u>जी</u>तक्करेनकजा॰ नुरब्ध्या निष्वक गानव जीगा वीज পাপ্ত রজস্যথ। মুক্ত মাত্রোপি नत्काट दर्गाहाि भूगम् १८७॥ विभर्ग करन मूक्तमा कीवः, करन স্কৃতঃ । গৃত্য পুৰিশতে যোনি• कर्माङः सिनिधामिङः ॥ 🏗 ॥ তত্ত কেক্ছ নেকাছাৎ কলন ভবে । পঞ্চর।ত্রেণ কলন। वृष्माकात्रा वृष्ट ॥ वृष्ट्र সপ্তরাত্রেণ না'স পেবী ভবেত্ততঃ ৷ দ্বিসপ্তাহান্ডবেৎ গেষী রক্ত-মা•সাচিতাদ্চা।।বীজ সৈগ্ৰান্তুর: পেষ্যাঃ পঞ্বি শতি রাত্রতঃ। ভব্ভি নাস মাত্রেণ শঞ্ধা জায়তে श्रुनशाशीया मित्रम्ठ क्षेष्ट श्रुवरम् ख्याः पद्मः। भागि भामः ख्या भार्यः क्रिगाबः उटेथ्रह ॥ मामहरम्न नर्वाि कमणः नग्रवि वि । ত্ৰিভি মানৈঃ পুজাবন্তে সৰ্বাঙ্গা-कुत गक्षयः॥ मारेमफ्डर्ভि तकुन्तरः शुकायात यथाकम्। देश्यं । इंडर्थ

চাস্থানা পঞ্চা শোণিতোভবঃ॥ ্মুখ নাসাত কণৌ চ জায়ন্তে নাসি निक्रम । वर्ष्ठ वनमा वर्गमा नथ লোশু। 🌣 সম্ভবঃ।। দন্ত প•ক্তি ততথ। শুরু জাবন্তে নথাঃ পুনঃ। কর্ণ- ॥ 4য়াশ্চ ভবেছিদু• সন্মাসাভ্যম্ভরে-गह॥ भाषु (र्म्यू मू भङ्क ना डिटेक्ट-বোপজায়তে। সন্ধয়ে। যেত গাতেষু জাগন্তে মাসি সপ্তনে॥ মনস্তচেতন। यूष्ट्रा नाजी मायू मिंगा उठः। সপ্তমে চাষ্টমে চৈব বৃত্যাৎস স্থৃতি-মানপি।। অহ পুত্রস্পূর্ শितः (हम ममन्तिः। विज्ञा-वनवः न्त्रदेः भून मीनाष्टरमन् हा नवाम मणाम मानि शुविषः मृजि নাক্তিঃ। নিঃসার্যতে বাণ ইব बर्ख भिष्ट्रिय जब्दः ॥ 🕸 ॥ मनन **"**हक्षनाञ्चन यहा गर्छाङ्ग जिंदि ।ত। বিকৃতি ৰূপেণ পাপাত্ম। हि भुकाय उ॥ भू हे खर नगामान्। यमा वरुष्डि माक्छः। उमा शुत्रृत्व भाभिधान् यक्षन् कर्य वशिष्ट् छान् ।। 🟶 ॥ মাত্রকোত্রা নারী পিতঃ मृकाखाता नतः। উ ज्या वी ज সামান্যে জ্বায়তে বৈ নপু সক ॥ অন্যন্ত । বিষমাধাণ তিথো কিন্ত न गाबी इस कन्यकाः। नमायाः शुक्य गूंन (किं माल मनीयियः।। वामाक्त्रने ভবেষারী দক্ষিণেन भूमान् ভবেৎ । त्रकाथिका মাতৃৰ শ•রেতো ধিক্যে ভ পৈতৃক• ।। শুক শোণিত সংঘাতে বাযুন। চ हिंदा क्छ। यभो अप्राछो॰ ত্ৰিধা চেতি চত্তৰ্যা বহু ধাপি বা॥ ততো হীনাধিক ব্যক্ত হারু বামন-कामयः । जायस्य नर्भ अधारा বিক্তান্যাশ্চ যোন্যঃ ॥ ৠ॥ তথাচ সায়কলিকায়। গর্ভাৎকোটিশুণ मुः थः यानि यञ्ज निशीखान। जः মূর্ছ। তদ্য জঠর।জ্জ।यमानस्र (रहिनः॥ जायमानः भूतीयाम्यूज শুকাবিলাননঃ। পুরোপতে ন वाट्यन भीज्यमानाङ् वक्षनः ॥ অধোমুখো বৈ ক্রিয়তে পুবলৈ: সৃতি মাকতৈঃ।ক্লেশান্ত্ৰান্তি মাযা-তি জঠরামাত্রাত্রঃ ।। 🕸 ॥ তত ख· देवकवी भाषा मगासन्हरिं নোহিনী। ত্যাবিমোহি ভাসানৌ क्कान चु भ मवायु याद्या म्हेमावना বোরশ্চ জুরঃ সমুপজাযতে। তেন জ্ঞোশহতা নহামোহ: পুর্ধাতে ।। कैफेरेकदिव हिमानः क्किरितिय দারিঙঃ। পুতি বুণারিপতিতো धर्गाः कि निका यथा॥ ज्यु ज्या

পরীতাবঃ খুচিভিঃতি বা রটন্। বিমুত্র ভক্ষণাদ্যঞ্চ গভজ্ঞানঃ नमाहित्रट्या कथ्यान श्लिहामकः পরিবর্ত্তে হপ্যনীশ্বরঃ৷ স্থান পানাদি-কাহার মগ্যাশ্রেতি পরেছ্যা ॥ जम्हिः मः उदा मृज्ञ म्-नामिकि उथा । जन्माना **হুপি নৈবৈষা• সমর্থো বিনিবার্**ণে ।। কেন বন্ধন বন্ধোহ কারণ কিন-কারণ । কি কার্য্য কিমকার্য্যখা কি বাচ্য কিঞ্চ নোচ্যতে ॥ কোহধর্ম: কন্চ বৈ ধর্ম: কমিন वा वर्डां कथः । किः कर्डवा मकर्खवार कि वा कि छा (मायद) া সংমৃতেগ্য মৃতি ভুংশঃ শীঘুং স-জাৰতে পুনঃ। রতিঃ স-জাৰতে जूर्े बारा खेंबर बगनि ।। दार्जा মৃতক্ত লোকোংয মকার্য্যে সম্পু-বর্ত্ত। দেহী দেহ॰ পরিত্যক্স मिनु হান মগী हि ।। ভষাৎ কীটোৎণি জ্ভ্না• সুন্দে৷ জাযতে ভৃশ•। নচাত্মান• বিজ্ঞানাতি নগ-त्रः नव रेषवज्या क मृत्याजि भन्नः ल्यिः निक्किष्यं निक्वि निक्वि अञ्जाः नजानां वृ वृश्वातां वृ वि রপি॥ সম্সারে ক্লিশ্যতে তেন রাগ লোভ বশানুগঃ।ইভিস্থ বোষ্ঃ।।।

জন গ্লী উৎপত্তি: 1 ইত্যমর টীকাষা ভরতঃ ॥ জন্মকীলঃ পু বিষ্ণু: 1 ইতি ত্রিকার্ত্ত-শেষঃ॥

জন্মদ: পু• পিতা। ইতি শদ্মন্ত্রানলী।। জন্মবন্ত্র ক্লী যোনিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।।

জন্মান্তর• ক্লী পরলোক:।ইতি ভরত: ॥ তৎপর্য্যয়:। ভবান্তর•১ প্রেত্য ২ অমূত্র ৩। ইত্যমর:॥

बगारेगी जी निक्षकमा जिथि:। न। जू मूथ्रहात्मुन भावनम् क्षार्थमी भौगहात्मुन जामुना। **ज्ब व्यक्किमा ब**न्नकाला यथा। বুন্ধপুরাণে। অথ ভাদুপদে মাসি क् माधेमाा कत्नो यूर्ग । अक्षेति -मिडिय बाउः क्लग्शारमो (एवकी नु डः ॥ विकृ भू द्राप्त नहामायाः পু डि ভगवद्याक्यः। भाव हेकाल ह नज्ञि क्काडेग्रा॰ सङ्गिनि। উৎপৎস্যামি नवमग्रस्त পুসৃতি• ত্বমবাশ্ল্যসি।। শ্ৰাবণে বানভস্যে ব। রোহিণী সহিতাইনী। यहाक्ष्क नरेत्र लंका मा बयही भुकी खिंठा॥ অন্নি পুরাণে। রোহিণী সহিতা कृका गामि जापुशाम श्रेमी। मधग्रामर्कत्रावाधः क्रमणाणि यह।

ভবেৎ া৷ তত্ৰ জাতো জগমাথ: || ্কৌ ভ ভী ছরি রীশবঃ। তমেবোপ-/वामeकाण• **७**व वर्गाह कागत•॥ व्यविकायायः मर्कायाः (एवकीनम्तः। ইতি স্প্রম্যবেধে - जम भूवगः कन्नु जिलामिविक्षः ॥ 🕸॥ नवग्रामि (यागम् शुन्न-मा वथा। वुक्तदिवदर्ख । उत्तरविष्ठाष्ट्रमी किथिवनी मकना यि । जारबु वृषेक्य युका भाषाभडाकं मःयुका॥ অপি বৰ্ষশতেনাপি লভ্যতে বান॥ বা বিভে।। পদ্মপুরাণে । প্রেড যোনি গ্তানাম্ভ পুেতত্ব-নাশিভন্ত रिङः। रेयः क्छा भावता मानि অষ্টমী রোহিণীযুতা॥ কি॰পুনর্বুধ বারেণ সোমেনাপি বিশেষতঃ। कि शून नेवभी युका अवाका छ। स मुकिमो ॥ #॥ उनिवामामि कन | যথা। ভবিষ্য পুরাণে। একে বৈবোপবাসেন কৃতেন স্ক্রন্দ্ন। সপ্তজন্ত্তাৎপাপান্যচ্যতে নাত্র अभ्यः ॥ वुक्तरेववर्छ । भगामि मिवान भारत यट कन नान भूकरिनः । कनः ভामुभाम् डेम्राः ভবেৎ कारिसनः वित्र ॥ जमासियो বারিমাত্র• পিতৃণা• যঃ পুষছতি। গ্ৰাশাল কৃত তেন শতাদ নাত্ৰ

म•भगः॥क्राष्ट्रिशवामाक्त्रत्यत्मात्वा वथा। ভবিষ্যোভরে । শাবণে e বহু লে পক্ষে কৃষ্ণ জন্মাইমী বুত । ন করোতি নরো যস্তুস ভবেৎ ক্র द्राक्रमः॥ वर्ष वर्ष्क या नात्री क्ष লমাষ্ট্রমীবুতণন করোতি মহাক্রা वृशानी ভविं कानान ॥ ऋात्म । न कादां छ यहा बिक्श क्यछी স-জ্ঞক বুত । যমস্য বশ্মাপনঃ সহতে নারকী ব্যথা ।। ভবিষ্যে। जूडेर्र्थ (एवकी मृत्न। ब्रॅंबडी স-জ্ঞক-বুত্ত। কর্ভব্য-চিন্ত্যমানেন ভক্তा ভক্তब्रोनः मर ॥ व्यवस्त् নরক থাতি যাবদিন্দা শতুর্দশ ॥ 🗱॥ তৰোপবাস কম:। ভবিষ্য भूतात । भार्थ उद्मिवतम भुारक्ष म्डवादन भूईक । उभदामम् नियमः गृशीयाङिङ्जावउः ॥ বাসুদেব সমুদ্দিস্য স্বাপাপ भुभाडरय। উপবাস॰ করিব্যামি क्काडेम्याः नज्यहः ॥ व्यन्य क्काडेगी॰ (पवी॰ नजन्मू नाइ।हिगी ।। अई यिष्वाभवासन व्यक्तिं इ मशत १ इनि ॥ वर्षेति। क कारमात्रि महाविनत बिखानिक। उष्म मूक्ष्यू मिन्डाहि পত্তিত শোকসাগরে ॥ আজন

मद्रगे यावष्याया मूद्रु उ॰ कृष्ठ॰। ७२ भुगानग लाविन भुनीन भूकरवा छम ॥ # ॥ ग्रम्भकम s । তন্মধ্যে প্ৰিনা স্থাপ্যা কাঞ্চনাদি বিনিমিত।। পুত্রকাঞ্নাভা সা দেবকী সুতপস্বিনী।। সাঞ্চাপি बानक मुर्छ भुम् जा नी त्रमह वि । বসুদেবোপি তত্ত্রিব খন্নচমধির **হিত• ৷৷ যশোদা চাপি ত**ৰৈব भुमृত वत्रकारका । वन्छमु ख्या নদে। দক্ষো গর্গশ্চতু মুখঃ।। এব॰ ञ भ् त्राय छ ङ्या शक्त भूत्राक रेडः करेवः । इञ्डिल इाभरयाप्रतीः अन्तु । द्वाहिगी छथा ॥ **(**मनकी । व मूर्ति वक्ष य रामामा नन्तरमव । **हिल्का वनाम्बद्ध भूजा भाष्म** প্রসূচ্যতে ৷৷ অন্ধরাকে বসোধারা · " পাঠযেদুভদৰ্শিবা। ততো বৰ্দা-পন ষ্ঠা নামাদেঃ করণ নম !! কর্ত্তব্য তত্কণাদ্রাবৌ পুভাতে নব্মী দিনে বৈথা মম্তথা কার্য্যো ভগবভ্যা মহোৎসবং ॥ ব্ৰাহ্মণান্ जुड़ारवज्जा उज्जा ममाह र्शिक्ता । जुनर्ग काथन रेगाक বাংসাণসূকুসুমানিচ॥য্মদিইত্মণ লোকে কৃঁকে। মে প্রীয়তা মিতি । य र एवं र एवं की र दी वनू पर वाद :

জীৱনং ॥ ভৌনস্য বুদ্ধণো ওপ্তৈ **उरेय** दुकाञान नगः । मृतुकाः বাসুদেবায় গোবাদ্ধণ হিতায়ত 🗓 माভित**स** मिवकास इंज्राक्ता **जाने** বিসর্জবৈশা এবং যঃ কুকতে দেব্যা (त्वकाः मून्रहा ८ मर्वे १। वर्षवर्ष ভগবতো মড्ডा धर्मनन्त्र । नरता वा यहिया नात्री यस्थाक कवा মাল্ল যাৎ ॥পুত্র সন্তান মারোগ্য धनषाना कि नम्गृह । महार्किनाः পি যঃ কুর্যাৎ কশ্চিজ্জনাইনীবুত• ॥ विकू नाक नवादा कि नहा ना-স্ত্র সংশ্ব:। প্রাচ মধ্রেত্রে গাৰুডে। কৃষাষ্টম্যান্ত রোহিত্যা मर्कतात्व १६न श्रतः। 🛊 । नुज পারণযো কাল নিয়ন: । এক **मित्न अयुडी लाउ उदेवादा**-পবাস: । উভয দিনে চেত্রদা পরদিনে । জ্বস্ত্যলাভে তু (ब्राहिनी युकाक्षेत्रान । উভयम्ति রোহিণী यु ठाइँ भी लाख् भत्रित **उ**रवाट्य निकीय **अश**क्षिन्।-মষ্টন্যা উভয় দিনে নিশাথ **अश**रक जनगरक वा शब्रहित ইতি ৷৷ উপবাস প্রদিনে তিথি नक्षडर्या द्रव्यात भादग । যদা মহানিশাযাঃ পূর্ব মেকতর-

স্যাবসানমন্যভরস্য মহানিশাযা• ् **७** मन उत्रक्षा ७ देन **कछत्रायमात भा**-) द्वनः यहा महा निभागा मू खयहि छि **खरा উ**८मवास्त्र भात्र**ा** इंडि जिथाि हिज्द ।। # II इति जि-विनाम मुख्य जूभवाम काला यथा । जगारेमी भ्रविका न कर्वगा कराहन । भनावत्थञ् विरभुनु मक्षमानाक्षेमी • जात्र ॥ मूत्राया विन्तुना म्बृष्टे• शक्ताञ्चः कलम• यथा । विना श्राक्रण कर्डव्या नवमी मः-যুভাইনী।। সঞ্চাপিন কর্ত্ব্যা नधरी मःयूजाक्षेती। छमाए मर्व পুৰত্বেন ভ্যান্ত মেবাশুভ বুং ।। বেধেপুণ্ড ক্ষয় । বাজি তম: সূ্যেগ্ৰ मय यथा। यह विक्रिश्रवागामी (भाकः विकार्श्वमी तुउ। अरविकव পর• ভ ভ কৃত বা দেব মাযযা।। পারণ কালো যথা । यहा তিথ্য-करिया (त्रव हरिया त्रस्डिजू भारताः । বিযোগতঃ ৷৷ কেচিচ্চ ভগবজ্জন্ম **मरहार मद दित मूर्छ। ভरक्तार-**नवार अर्ब छि देवक वा नुरु भावन ।।

बसी पू॰ भागी। इंडामतः॥ बाराकयः पू॰ खनामवयतानः। ইভি প্রভাগবড়।।

জন্য লী হউঃ॥ পরীবাদঃ॥ সংগ্রাসঃ
। ইতি মেদিনী ॥

জন্য: পু॰ জনকঃ। ইতি মেদিনী॥
জন্য: ত্রি উৎপাদ্যঃ। যথা। জনকস্য

बन्धा जी भाज्ययम्। इंडि स्मिनिनी ॥ श्रीजिः। इंडि (इसप्तमुः ॥

জনু জনু পুণী।। অগ্নিঃ।। ধাতা।
। ইতি মেদিনী।।

জপ • হৃদু হারে ।। বাচি । ইতি কবিকল্লফন:।।

बनः भू मत्वाहातनः। उन्णान्कानः यथा। मनः मः ङ्छ विययासञ्जार्थ गठमानमः। न कठः न विषय्थ बार्णित्मोकिक भएकि वट् ॥ जनः न्यां एकता वृक्ति मान्यानाः भू वाहिरेकः। थिया यहं केत्र (भूगीः वर्ण्यत्र भूमाजिकाः॥ উहत्वहर्थ

मुफ्तिणा मानमः म बनः म्उः। बित्खाक्षी ठानत्य ८ किथिए द्व वटा গতমানসং॥ কিঞ্ছিবণ যোগ্যঃ স্যাদুপা•শুঃ স লগ: নৃতঃ। ন্ত্র मूहाव्यवाठा वाधिकः म बनः मृजः ॥ 🕸 ॥ উहिर्ध्शाविनिष्टेः 'मापूर्याः मू मंगि छिं्गः । किञ्चा-ৰূপঃ শতগুণঃ সহসে। মানসঃ मृ इ: ॥ जिल्लाजभः म विष्ठियः কেবল জিল্ব্যা বুখৈ:।। গ্ৰা তত্ৰ वर्षाः यथा। विद्युद्वार्गर्भ नक्षः हि ্যুক্তঃ কর্ম করে। তি চ। জপার্চনা-किक मर्ब मर्भाव ब छत्व ि भूख।। मिनि। इद (कमारि मूथ(होर्गक्र) সাবুতঃ ৷ যো জপেত্ত মহত্যা-শু দেবতা গুপ্তি স্স্তিতা।। আ্লস্য জ্ঞান নিদ্য ক্ত ভ নিষ্ঠা-वन • ७१ । नी हा क्र ग्लामन • (का न) क्रथकारण विवर्कस्य 🖽 ॥ ज्राथ कत्रनाना अभ नियामः यथा । **७**र्जनी स्थासामा कनिश्र চেত্রি তাঃ ক্রমাৎন তিসোংস্থল্য द्विश्वारण मथामा हिक श्रीइंका॥ शर्ब हरः मधामारा मिक्ख्नाग-कन्नत्यर्थः। यनामा मध्य मात्रज्य क्निक्राहिङ अवष्ठ ॥ उर्ज्नी मल

भर्गञ्जः मम भईमू मः इति । षनामा म्ल मात्रज् किनिधारिङ **पवर ॥ उजनी मध्य भर्यास मन्द्र** गर्दम् मः अतिर । এ जघरन स অষ্টোত্তর শতাদি বিষয়। শক্তি दिवरपश्नः। अनामिका वयः शर्व কনিষ্ঠাদি ত্রি পরিকা। মধ্যমা-যাশ্চ ত্রিত্ব॰ ভজনী নূল পর্ণি॥ उद्धनाशु उथा मध्य या बाशर ग रू भाभक्षा व्यवस्था म्लगात छ शुम्बिना करन्य ह ॥ नशानि म्नभगुष्ठ मञ्जभईम् मः जल्दा वीविन्याविवयं भूनः। व्यनाना मध्यायान्त्र म्लागुक वयः वर्गः॥ किनिश्रायाण उड़्जिन्। खरा॰ शर्व मृद्धस्यति ॥ स्यनामा मध्यामान्ह (गकः म्राट्हिउग म् छ । शुप्तिन क्रभाष्म् वि काशिधिशूते जुनस्त्री ।। क्निष्ठा मूलमात्र अपूर्विक्गु क्रांभ ह। उर्जनी मूल भग्रेष्ठ मह शर्वम् म जलार ॥ इममित्र व्यक्षि खत मं जाहि विषय ।। 🕸 ।। जङ्गली নিবিযুঞ্জীত কিঞ্চিদাঙ্গগিতে তলে । शक्वीना॰ विरयः गाइ हिर्द् ह **ज्**वर**ं जभः ॥ अञ्चल**ऽर्ग्रह यङ्ख्छ• यद्युः त्मक वहुःन। भईमित्रयू

वब्बलं उरमर्ब निव्यतः ज्यार ॥ গণনাবিধি মূলত্ব্য যোজপেতজ্প यज्ञागृङ्गाचि द्वाक्तमा (खन गगरय) नर्वथा वृक्षः ॥ ङ्राय इस मारताना **छि**र्याक् कृद्धा कत्राकृषीः। **णाष्ट्राम्** वानमा श्खो मिक्तान नहा জপেং 🗱 । জপস্ত্যাশাত নিবিদ্ধ मुव्या । नाक रेड रेख भरेब बी नशरिन्य नर श्रुहेकः । न हन्तरिन भृ जिक्या जनमः था क काइरय् ॥ । ত व विश्विम् वर्भ यथा। वाका অধীদ সিন্দুর গোময়ঞ্চ করীষক । ৷ এতি নিমায বটিকা জপস খ্যা छ काद्रस्य ।। अ।। अथ वर्गमानाजन नियाना यथा। अविन्तृः वर्ग मुहार्य পশ্চামন্ত্র- জপেরুধঃ। অকারাদি ক্ষকারান্ত•বিন্দুযুক্ত•বিভাব্য চ॥ বর্ণমালা সমাখ্যাতা অনুলোম বিলোম তথা পঞ্চাশল্লিপিভি শালা विञ्जि। मई कर्यम् ॥ चंकादानि क्रकावज्ञा वर्गमाला भुकी डिंडा॥ ক্ষাৰ্ণ মেক মুখ তহ কল্লযেনানি ज त्या जन्या जई म्रजुःगाः क्रशः नर्द मुम्बिनः ॥ 🛊॥ उन्। फन यथा। जननिष्ठा विकामुकाश्यिव युक्त कनः नः ७८। जाईवा (भव

यक्तानाः कायाजश्ती महाकनः॥ ৰূপেন দেবতা নিত্য স্থ্যমানা পুनीपि । भुनमा विश्वान् कामान् मगागुकिक माथठी ।। यक রক্ষঃ পিশাচাশ্চ গুহাঃ সঙ্গাশ্চ ভীষ্ণাঃ। জাপিন- নোপসপত্তি ভ্য ভীতাঃ সমন্ততঃ ৷৷ যাবন্তঃ कर्मा यक्काः मुद्रः भूमिष्टानि छला --मिচ। नार्द (उ बनाय क्वमा कना। নাইন্তি বোডশীণা নাহাত্ম্য • বাচি-क्रेनाउट जभ यद्भग की चिंड॰ । তথাছত হুণোপা শুঃ সহসে। মানসঃ মৃতঃ।। ইতি তত্ত্বসায়ং।। ৰূপন• ্লী জপঃ।ইত্য মরটাকা।। জপপরায়ণঃ ত্রি জপাসক্তঃ। জপন-भीनः। यथा। भिवताबि वुजः (स्व शृक्षा जभ भद्रायगः। कद्रानि विधिवप उ॰ गृहागार्घ । महस्थत ॥ ইতি ভিথ্যাদিতত্ব•॥ ब्रशा खी ब्रवावृकः। ইতি হেমচन्द्रः॥ क छ । रेमथूरन। ইতি कविकन्नकमः। क इ रेमश्रा इंडि क्विक्नक्मः॥ ক্র ই ড জ্য়ে। গাত্রশৈথিক ইতি यावट। इंडि कविक्सक्रमः॥ ब उ ज्ञा । इंडि क्विक्वक्यः ॥ ই ক নগ্রীকরণে। ইতি

कविकन्नक्रमः ॥ कम छ ভক্ষে। ইতি কবিকল্লছমঃ॥ कम् वर शङ्गी। ইভি कम्माठीमद **ोिकायाः ভরত धृत्र नामगुशकः** ॥ জম্জঃ ত্রি যমজঃ। ইতি দ্বিক্প (कावः॥ कम्राः पू॰ यमराम्मिनः। ইতি দ্বিৰূপকোৰঃ ॥ সতু ভ্গু বংশা-ख्व अठीकमूनिপूबः। भन्नभूताम পিতাচ। ইতি ঐভাগবত।। क्रमन की (क्रमन । (ভाজन। ইত্যমর টাকাযা• ভরতঃ।। क्लाजी पु॰ कायानजी। ইত্যমর:॥ षिवन्नार्**अश्यः भ**दः॥ बरानः भूः भक्षः । ইত্যমরः ॥ শৈবাল:। ইতি মেদিনী॥ কেতক वृक्तः,। ইতি भद्रज्ञावनी।। बदानिनी जी नहीं। ইতি (इनहन्पुः।। **खचित्रः भू• बचीतः। ই जि मद**तङ्गावली ॥ कषीतः शु कनव्कविष्मयः। कामीत्र इंडिं (नवू इंडिंग ভारा। **७८ भ**र्यायः । म्हेमेराः २ बद्धाः ० बहुीतः ८ बद्धनः ८ । इंड्रम्तः ॥ बद्धी ७ রোচনকঃ १ मूथानाधी ४ बाড্যারিঃ ৯। তস্য ফলস্যগুণাঃ। णम मधुव वेनद्र । वाक नालिद्र । ॥

পথ্যত্বং। পাচনত্বং। রোচনত্বং।
পিত্ত বলাগ্নি কৃদ্ধি কারিল্লঞ্চ। ইন্তি
রাজনিষ্ঠাঃ ॥ অভ্যান্তবং। গুক্তর্বল্বং। বিহ্না কফ
বাত বিবন্ধ নাশিল্পঞ্চ। ইতি
রাজবল্লভঃ ॥ পদ্বস্য ভস্য গুণাঃ ।
নপ্তরন্তবং। কফার্তি পিত্তাস্ দোষ
নাশিল্বং। বর্ণ বীর্য্য কচি পুষ্টি
ভৃষ্টি কারিল্পঞ্চ ॥ সক্রবকঃ ॥
অর্জকঃ ॥ সিতার্জকঃ । ইতি
রাজনির্ঘণীঃ ॥

জন্বঃ জ্রী **জ**্গ। ইত্যনর চীকাযা। ভরতঃ।।

जम् क्री जी जम्कन•। उৎ পर्यायः। जम्ः २ जामव•७। ইতামরः॥

জন্তুকঃ পু॰ শৃগালঃ॥বৰুণঃ॥ বৃক্ষ বিশেবঃ।গোলাপজান ইতিভাষা ॥ নীচে ত্রি। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ শ্যোণাকপুভেদঃ। ইতি রাজনি-র্মানীঃ॥

জমুদ্বীপ: পু• পৃথিব্যা: সপ্ত দ্বীপান্ত-গত দ্বীপ বিশেষ: । অয়• দ্বীপ: পদ্মকে। বমধ্যবর্ত্তি কোষ ইব লক্ষ্ যোজন বিস্তীর্ণ: পদ্মপৃত্র ইব সম বস্তুল: লক্ষ্যোজন বিস্তৃত লব্দ সমুদ্রেণ বেপ্তিত:। যিমান্ পুত্যেক

नवजङ्गु (याजनायानानि नववर्षानि ॥ ' তেবा वर्षाणामाडी नीमशर्वा ्रोजिष्ठि । 🕸 । अयो वर्षाणा मत्रा इनाव्ड वर्षः मध्यविर्ड यम्। मध्रामाभ मृत्यक **भर्व**ः नक ∥ याज्ञतायात्रयः। हेनाव् वर्व-সোত্তরে নীলপর্বতঃ দ্বিসহসু যোজন বিস্তীৰ্ণঃ অযুত্ত যোজনোৎ-সেবঃ পূর্বপশ্চিমযোঃ কার সমুদ্র-विषिशिर्शः। अपूख्रत तम्यक्रि ভদূৰরে খেতপর্কঃ দিসহ্সু॥ বোজন বিস্তীৰ্ণঃ অযুত্ত বোজনোৎ-(अतः शृत्रशन्हिन्स्याः कात्रमन्ता-॥ विव मीर्चः रिएर्चा नीलशर्वां जाए किञ्चिन विक मना नाम नामः **াঞা তদুত্তরে হি**রণ্মব্যর্য **তদু** ভরে मृक्वान् शब्दः छम्। विखाताम्यः শ্বেত পর্যত বং দৈর্ঘ্যে শ্বেত পর্বতাৎ কিঞ্চিদ্যিক দশা-শেন न्। नः। 🕸 । जमु खरत कुक वर्षः जमु-ভারে লবণ সমুদুঃ। ইলাব্ত বর্ষস্য দক্ষিণে নিষ্ধ পর্বতঃ দিসহ্সু যোজন বিস্তীৰ্ণঃ অযুত্ত যোজদোঁৎ-সেখঃ পূর্ব পশ্চিন্যোঃ ক্ষারসমূদ্রা-विधि मीर्घुः । छ। छम्मित्र म्हित्वर्षः তদ্দিশে হেম্কৃটপর্বতঃ অস্য विखाद्गामरगानियभव ६ रेमर्स्य निय-

थाएकिकिमधिक मणाः लग गृतः । उप किए। हिमालय भई उ: व्यज् -भूईवं रेपर्छा বিস্তারাদ্যঃ स्मकृष्ठे भर्वजार किकिमिषक म्भा रामन मृतः। 🕸 । उम्सिक्श ভারত্বय<sup>•</sup> তদ कित्। कात्रम्पूः। ইলাবৃত্স্য পশ্চিমে মাল্যবান্ পর্বতঃ দ্বিসহসু যোজন বিস্তীর্ণঃ व्ययुज (याकाना (अवः উত্তর मिक्क गर्या नी व निषध शर्व जाविष দীর্ঘ: | জ্ঞা ভৎ পশ্চিনে কেতুমাল वर्षः ७९ शिक्त्य ववगम्युद्धः। ইলাবৃতস্তপুরে গিন্ধমাদন পর্বুঃ वान्य विखादा मान्य वान्य विख्या साम्य তৎপূৰে ভদুশ্ববৰ তৎপূৰ্বে वातर जगुषुः क्षा (माताः श्रहा कि छ-जुं चकु गमत (नक्ममत मुनार्च क्मेर नामानः शर्वजा खिश्रेष्ठि। তেষ্চ্ত জন্ম কদৰ ন্যেপুলা শচত্বা-(द्वा कृष्णः मिछ। (उ मार्व रिमार्घ) একাদশ শত যোজন পরিমিতাঃ বিস্তারে শত যোজন পরিমিতাঃ ! তেবা-শাখ্য বিস্তার:একাদশ শত য়োজন পর্য্যন্ত । তেরু পর্যতেরু ट्रेन कवातः भर्या मधिकुतम म्हे बनाः। अव नन्तन टिकंतथ विद्या-জক সন্ধতেভেদু সংজ্ঞকানি চত্বা-

ति (मरवाम्यानानिक अखि। 🕸। মন্দরোপরি স্থিতকাদশ শভ বোজনেত্ব চূত নত্তকাৎ পর্বত শ্ল वट स्वामि कनान्य्वदन्नानि প্রসত্তি। তেখা বিশীক্ষাণানা মতিমধুর সুগন্ধি ব্ললাকণ त्रामान्याक्षामान्यन्यीयन्त्रः পিরি শিখরানিপতত্তী পূরোণে-चान् । मृश्यानय्ति। 🕸 । अदः **जस्**॥ कनानान्युह निभाउ विभीनाना समिक्षियाला विक्वायनिजानाः त्रायन अपूराम नदी मिक मन्दर मिथ्रानवं न जल निश्वजी मिक-ণেনেলাবৃত্ত বছতি। তস্যা উভ (गा की तरम। म् छिका जब् तरमना-मुविश्रभाना वायुकं मः खाग विशा-কেন সদান্রলোকাভরণ জায়ু न्यं नाम सर्ग जवि । 🗱 । मुनार्य পর্ভিস্থো যোক্দববৃক্ **ভস্যপঞ্**-কোটরেভ্যো বিনিঃসৃতাঃ পঞ্চ-ব্যাম জুলাঃ পঞ্চ মধু ধারাঃ সুপার্শ্ব শিখরাৎ পতন্তঃ পশ্চিল-নৈলাব্ত মনুমোদযুত্তি। 🟶 । কুমুদ 📗 -পূর তোপরি ছিতো যো ব্টকৃক ভস্য ক্ষেভ্যে নিগতাঃ প্ৰেৰ্দিধি ষ্ত নধু, গুডায়াদ্যখর শ্যাসন। **छत्रगानि युकाः कामनूया नम**ः

কুমুদাপুাৎ পুগতত্ত উত্তরেণে-লাকৃত মুগভোজয়ৱি। 🛊 । তান্ नमान् (स्वयानानाः शुकाराः वनी পनि इन सम (मोगक्र) জন্মনন মৃত্যু শীভোঞ্ধ বৈবর্গ্যোপ-সগাদ্য স্তাপ বিশেষা ন কদাচিত. ভবন্তি যাৰজ্জীব নিরতিশয় সুথ भव । कूत्रक कृत्रत कूनुक्क रैवकक ত্রিকূট শিখর শিশির পতঙ্গ কচক নিষেধ শিতিবাস কপিল শুগু रिवर्ग्य काक्षि इंग्न श्रवं नाग कालक्षत नीद्रमामयः পत्रजा মেরো মূলদেশে পরিত উপক্ষাঃ १८मद्भः शृहिम **अल्ड**क्रामक्षा-म भ त्याजन मीरघोँ जठेत (मवरूष्टे পৰতৌ ভিঙ্কা। তৌদি সহসু যোজন বিস্তারৌ এব দ্বিসহ্সু (याज्ञत्नाः हो। (मृद्धाः পन्त्रिमाया নিংশি প্রবন পারিপাতৌ পত্নতৌ উত্তরস্যা॰ অষ্টাদশ যোজন দীযৌ দ্বিসহ্সু যোজন বিভারৌ দ্বিসহ্সু (याकत्माहो। अव मिक्नमानिस-**णि** किलाम कत्रवीत शद्वाउँ। भृद्व म्यामञ्चामम याजन मीरघी দ্বিসহসু যোজন বিস্তারৌ দ্বিসহসু যোজনোটো। এবমুন্তরস্যাণ তিশৃ मकत शर्वा श्रम्भा महारू

(याजन होरवो हिनहन् याजन ॥ े विखादो विमन्तु याजनादो। ) अवन वर्ष वर्षे नहाः नहाः वहनः স্তি।। 🖘।। তত্রাপি ভারত দেব दर्वः कर्याक्षवः अनुरान्ध्रीनि বছাণি মার্গণা• পুণ্যশেষাে সভোগ ছানানি ভূষণ নামাখ্যাতানি। বৰাণি তেদেৰকলা স্যুতহ্ভিবল विभिद्धे। वजु वस्र महावाः महमा মোদ্যুক্তঃ দলি। যেব দেবপভ্যঃ সগণঃ সন্ত্রাকাঃনানাস্থানেষু বৈর• বিহ্রভি।নবসুববেৰু ভগৰালারা-या उड्ट भुक्षाण नन्गृह्य ষু মূর্ত্তি: ভদেবার্যাপি স্লিভিডেগ ভবঙি।। 🕸 ।। ইলাব্তে ভূবৰে जगतान् नित अक अत शुक्रयः खवानी भूषानाबुन महरेकु औ গণেঃ পরিবৃত্তঃ নারাষণ্য্য সক্তষণ न छा । इंद्यास्य महिदाश ख्रवद्याख ॥ # ॥ जन्। एथं वर्ष তদ্বপতি ভদুশুবানান ধ্যানু চঃ **उ**ट्यनभठमः शुक्रा जगवाजा रुयणीर्षाछियानाः मृद्धिः भन्नम नगाविना मिना मिना स्वति ॥ 🛊 ॥ **र्तित्य**िकग्रनामस्य तिकाशगास्य ञ्ब भुद्धारम रेन्छ। मानव जन

जीर्थ सक्तभः जन्नरे भुकरेष সহানন্য ভক্তি যোগেনোপাস্তে ॥ अ। (कञ्चमाल जगवान् कामार व चक्ला वक्ताः श्रिय हिकीव-যা আন্তে ভন্ত গৰভো নায়ান্য क्षण शहन ननावि वालन द्रमा দেবী সম্বংসরস্য রাত্রিমুগুলাপতে দু হিত্ভিকপেডা অহঃ সুভদ্ভত্-ভিৰূপেতা উপাস্তে ৷ক্ষা হিরণায়ে वर्ष जगवान् क्षंजन् विज्ञाला নিবসতি ভভগবমূত্তি গিভৃগণা-ধিপতি রয়ানা তছ্ব পুৰুবৈঃ नश् डेभारख ॥ 🗱 ॥ डेखत्रक् वर्षि जगवान् वज्ञान्क्ली आख छः ज्ञि उषद शुक्रिः मङ्गान् সুলিত ভক্তিযোগেনোপাত্তে॥ 🛭 ।। किन्ने सात दार्घ छ गवान् मान्य तथि রান মাপাশতে ত॰ তচুরণ সন্নিকর্ষা-ভিরতঃ পর্ম ভাগবতো হনুমান্ অবিরত্ত ভক্তি তদ্বর্ব পুরুষে কৃপান্তে ॥ 🍇 ॥ ভারতে বর্ষে ভগবানরনারাবণাখ্য সাত্রা জ্ঞানি-ना मनुश्रायानुकन्त्रया अवाक्र-প'তি ত্তপশ্চরতি। তমুন্তি নারদঃ वर्गाभूम युकाछ छं त्रव्यभी य শুকাভিঃ মহ ভগবদনুভাবোপ-वर्गनः शक्षत्रांवः मावर्गः क्शाह-

ক্ষ্যমাণঃপরম ভক্তিভাবেন সেবতে । 🐉। ভারতেপ্যমিন্ বর্ষে সরি-देहना दहदः मिडा यथा । मनगः मन्तर्भः रेमनाकः जिक्षः **্ড: কৃটক: কোল্ল: সহ্য:** দেবগিরিঃ ঋষ্যমূকঃ জ্রীশৈল गहन्तुः वाविधातः विकाः मुक्ति-মান্ অক্লিগিরিঃ পারিপাত্রঃ দ্যোণঃ চিত্রকৃটঃ গোবর্জনঃ রৈবভকঃ ক্রুভ: নীল: কোকঃ গোমুখঃ इन्मुकी वः कामणिति ति छ। ना চ শত সহসুশঃ শৈলাঃ।ৠ ভেষা• ॥ ্ৰ নিতম্ব পুৰুবানদ্যো **হুস**•খ্যাতাঃ । যথা । চন্দুবংশা ভামুপণী অবটোদা ক্তনালা বৈহাবসী कारवत्री (वर्श शवस्त्र) नक्त्रावर्त्ता তুর্সভদা কৃষ্ণবেশ্ব ভীমরথী श्रीकारविद्यो निर्दिक्ता भरवाकी ভাপী রেবা সুরসা নর্মদা চম্মণ্ডী মহানদী বেদমৃতিঃ শ্বিদ্ল্যা॥ ত্রিসামা গণ্ডকী বাম্মতী কৌশিকী मन्ताकिनी यसूना मत्रस्की मृणदकी গোমতী সরমূঃ ওয়বতী সুমোনা ঁ পাঁডজ: চন্দু ভাগা মৰুদ্ধা বিতস্তা অসিক্লী বিশ্বাইতি মহানদ্যঃ। অন্ধঃ (भागकं नाम)। का अन्तन् वार्वः লন্ধক্মভিঃ পুৰুধেঃ শুক্ল লোহিত

कृष वर्णन श्राव्रक्षन कथां। पितुः
भानुव नाव्रकगाठाण ভविष्ठ॥ ॥।

ब्रम्नीभाग बाक्षी उभिष्ठीभाः महिः

मगवाबादिव्यथास्यर्ण हेमाः महीः
भविष्ठा निधनिक कभकिन्नाः।

उपया। श्रावृद्धः ठन्मु मकः व्यादर्छनः व्याप्त मग्रह्तिगः भाक्ष
बन्धः मिः हवः बक्ता हेि । हैिं

श्री ভागवे ।। ॥। (क्रां जिःमाञ्ज माज व्याप्त होगः। उमामिशः।

मज् ज्रार्व होगः। उमामिशः।

पिठी गाष्त्र हार्ण बीभविष्ठ मा मधः

मन्ना मा हिर्मा हिरमा हिर्मा हिरम हिर्मा हिर्

अयुवः थू॰ अयृत्कः॥ (क उकत्कः। । ইতি বিখঃ॥

জমুবনজ ক্লী শেতজবাপ্র । বথা।
পারিভদ্ পাটলাচ বসল গিরিশালিনী। তিলক জমুবনজ পীতক
তগরস্থি।। এতানি হি পুশস্তানি
লসুনান্য চুতেইনে। ইতি বাননপুরণে।।

নধুং দ্রী নাগদমনী । ইন্তি রাজনির্বটঃ ॥ বৃক্ষবিশেষঃ । জাম ইতি ভাষা। তৎ পর্যায়ঃ । সুরভি-পত্রা ২ নীলফ্রা ৩ শ্যামলা ৪ নহাস্কা ৫ রাজাহা ৬ রাজফ্লা

१ भुकि श्रिया ৮ स्मानस्मानिनी २। े. ভৎকল গুণা:। ক্যাযত্ত্ব। ম্যুরত্ত্ব ा শুন शिख हार क्थार्डि भाव কৃমি দোব স্থাসাতিসার কফ काञ विनालिङ्गः । विष्ठेसिङ्गः । রোচনত্ত্ব । পাচনত্ত্বঞ্চ । ইতি वाजनिर्वणः ॥ ७ वृष् । त्रामृष् । मोजनदः । अग्निमः मृष्यादः । ৰক্ষত্ব । বাতকারিত্ব । ইতি त्राबवल्लाः॥ मा वृष्ट्यू मु (छात्र দ্বিধা। ভত্র বৃহত্যাঃ পর্য্যায়ঃ । महाबम् । महाभवा २ ताबबम् 🗢 तृह८कवा ८ । ইতি রত্ন। 🕶। ॥ कलन्तुः ৫ नन्तः ७ महाकना ৭ সুরভিপ্রা৮় এতৎ ফল গুণাঃ । বিষ্টম্ভিত্ব॰ । গুৰুত্ব॰ । রোচনত্ব॰ । इंडि ভাবপুकामः ॥ कुम्गयाः भर्यायः। मृत्र कृष्कवा ) मीर्मभडा २ मध्या १। वनजच्नय्रायः। ভ्रिक्यः > काककमः २ नामियी ৩ শীতপল্লবা ও। ইতি রত্নসালা ॥ ज्ञाभवा ६ बनबस्का ७। ७९ कनस्याः। गुरिष्ः। कम्पः। क्फ निखानुमार नानिष्म । ইতি ভাবপুकामः॥ उर्कनम् भर्यायः । बरूर बाचव॰ ०। इंडामदः॥ ब्रम्कः श्रु जी मृगानः । ইতি
मदत्रवादनी॥ब्रम्कमदार्थाभ्य ॥
ब्रम्का जी काकनीमुक्ता । ইতি
त्राविदिष्टः॥

बष्णः भू॰ बष्ठ्कः॥ (कञक्ष्कः। इंडि (मिनि ॥

জন্মালকা জী কন্যাবরযোমু থ চন্দ্রিকা। ইত্যুদ্বাহতত্ত্ব ।। জন্দ্রণ বর পক্ষীয় জীণা পরিহাস বচন তেষা মালিকা শ্রেণী । ইতি হরিব শ টীকায়া নীলকণ্ঠঃ।।

कञ्चः भू॰ रिन्डार्डिनः ॥ रुष्ठः ॥ विषेतः। ज्ञाने । इंडि सिनिनी ॥ यामाः ॥ इनुः ॥ जुनः । इंडि रहमहन्द्रः॥

बाग्रकः शृ॰ जश्रीतः। इंडि मया जिन्नका।। बाग्रका जी ज्ञा। इंडि ताजनिर्मणेः॥ बाग्रिकि शृ॰ हेन्मुः। इंडि (इस क्युः॥ बाग्रिकि शृ॰ हेन्मुः। इंडि (इस क्युः॥ बाग्रिका शृ॰ हेन्मुः। इंडि स्वारकाः॥ बाग्रतः व्या॰ बाग्रितः। इंडि मया क्युतः।

बहुनः शु॰ कश्रीतः ॥ वृक्ताप्तर विष्णवः। ইতি মেদিনী॥

জ্বনা জী রাক্সীবিশেষঃ। বথা । সমুদ্দেগ্রভরে জীরে জন্তুনা নাম রাক্সী। ত্সগ্রঃ স্বরণ মাত্রেণ

ब्याजिय उद्धिता वनार्छ ७ ॥ জম্ভারিঃ পু॰ বহি:॥বজু॰।ইতি विषः॥ इन्द्रः। यथा । जञ्जाति ्मस्यानय इंज्युबद्ग रेनयथः॥ कञ्जी पूर बन्नो दः। इं जि ने प विमुका।। জন্ত্রীরঃ পু॰ জন্বীরঃ।ইত্যনরঃ॥ म म्य कः। इं जि उषो काया • अब उः॥ बरः शु भवू नत्राद्याधीकत्राः। ू किए इंडि ভाषां। उट्नर्यायः। विजयः २ जगनः २ । ইত্যমরः ॥ অগ্নিস্থ:।। জযন্ত:।। যুবিষ্ঠির:। इं अ (मिरिनी।। विजयनस्नदाजः । সতু ইক্ষ্ ব বশোভবঃ । ইতি (इम्हेन्द्रः ॥ श्रीनातायगभार्यमः। यथा। এ:তা দ্বো পার্য দৌ মহা। জবে। বিজ্ঞা এবচ। কদথী কৃত্য মা• यहा বস্থকাতা নতি কন•॥ ইতি শ্রীভাগবত•া৷

कर्यकानाइनः शृ शामक (छनः।

> वे निम्द्रज्ञावनी ॥ जयध्निक॥

कर्यकः जी वाम्द्रविष्मयः। जयकाक

वे जिल्लाका वे विष्णु निका॥

क्रमुखः शृ ्हेन्युश्वः । वे जि

रहमहन्द्रः॥

विभागा गर्छिनी ভবেশ ॥ ইতি जयन क्ली जूतका किमाइः । जयः ।

का आजित छ जुता कमा छ छ ।।

का आजि क्षा । इकि ताक निघणेः ॥ जयनी जी हैन्युक न । ই জি का आजिः श्रा विकास । विकास है। विकास विकास । विकास विकास विकास । विकास विकास विकास । विकास विकास विकास । विकास विकास विकास विकास । विकास विकास विकास विकास । विकास वि

बरम्रः श्रु हेन्पुण्यः । उर्भग्रीयः । श्राक्षणामिनः २ । इड्डामतः॥ येन्द्रिः २ । इडि मिनि ॥ निवः॥ हन्द्रः । इडि विकाखानयः ॥ जीमः । इडि मिनि ॥

জযন্তিক। জ্রী হরিদু। ইতি রাজনিঘটিং॥

कर्षे क्री श्री ॥ हेन्द्रभू की ॥
भू कर्षे । इंड भिर्म । वृक्ष
विष्म । उर्भ्यापः । कर्ष २
उक्षंत्री ० नाप्त्री ८ विक्रयं दिक्ष्रे
८ । इंड अतः ॥ वना ७ भाषा १
इति । भ विक्रया २ भूक्ष मृना २०
विक्रा ३२ ज्ञा अत्राक्ष छ। २२ ।
ज्ञा छ।। । मरगक्ष युक्त । ।
जिक्क । कर्षे विष्माधन पृक्ष
। उब क्षा त्रभायनी । इंडि
ताक निर्मण्डः॥ अञ्हाकमा छ।।।।
गत्रा ना नित्र । इंडि ताक
वक्ष छ।।। (यागविष्म । यथा।

क्यः भूगुष् अक्ट क्य के मिठि । जाः विदृः। (ताहिनी महिठा क्षाः मान क भागानिश्वेमी।। व्यक्तां वा-मधान क भागानिश्वेमी।। व्यक्तां वा-मधानिष्कं क्ष्मया भियमा क्रिट्र। क्रिजी नाम मा (भाजा मर्नभाभ भूगामिनी।। इंकि जिथा मिठाँ प्

कर्भव की जन्यामधीय यद्धाराहेक কপালে বদ্ধা লিপি:। তঘথা। रेबलाक्र विजयो द्वारमा द्वावगान्छ-কর: পুভঃ। সদীক্ষিতো বাজি-নেধে তদ্যায় প্রেক্ষিত: পশু:॥ शामिरा नन्नागीनव मूनका বিলক্ষিতঃ। সংপ্রচেপরিস্ত্যার্জ্য নৰৈ বিভিচ সংস্তা ॥ ইভি वानिष्ठ द्वामायण ॥ 🕸 ॥ विवान বিষয়ক জয়বোধক লিপিঃ৷ ডিকরি ইতিইক্রাজী ভাষা। যথা। यष्ड॰ व्यवहात्राञ् भूर्वभाका उत्राप्तिकः । কিয়াবধারণোপেত ° জয়পত্রে २थिन विषय ।। भ्रबं खित्र किया युक्त निर्वाड यहा न्नः। शुर्हा-জ্জিযিনে লেখ্য জয়পত্ৰ তদ্চ্যতে ॥ ইতি ব্যবহারতত্ব•॥ खरभानः भू विधिः ॥ विकः ॥ ज्ञानः । इंकि नदत्रावनी ॥ वृक्षिति भवः । ब्रमान् (गार्ट । इंडि ভाषा । उट्शर्यायः । मात्रकः २ (त्रहेकः १ डिडिडिक्निकः ४ एडी-वीकः ६ मन्द्राति ७ वीकः (त्रहेकः १ ब्रह्मितीकः ५ महिनोतिकः ५ घणे । वीकः ५० घणिनीतीकः ५० नम्साः थावीकः १२ (भावनीतीकः ५० हक्षर्यविकः १८ (भावनीतीकः ५० हक्षर्यविकः १८ (भावनीतीकः ५० हक्षर्यविकः १८ (भावनीतीकः १० हक्षर्यविकः १८ (भावनीतीकः १० मीशनद्वः । विक्ष्यः । विक्ष्यानद्वः । मीशनद्वः । वृत्रि क्षाम कर्षतामय् नानिद्वः । वृत्रि क्षाम कर्षतामय् नानिद्वः । वृत्रि क्षाम कर्षतामय् नानिद्वः । वृत्रि क्षाम कर्षतामय्

जयभूबकः भू भागक उपः। ইতি
भद्दश्वावनी।।

ज्ञयम्बनः भू॰ द्राज्ञवाश्च हसी। इंडि भक्तव्यावनी ॥ ज्ञद्रश्चित्रभवः । इंडि रेवर्गकः॥

জনবাহিনী জী শহী। ইন্দুগী। ইতিহেন্দ্ৰুগ়া

जया जी मूर्गा। जम्मा गुर शिख र्या।

कयः कन्मा । विष्या मा । विष्या । विष्य

বিজয়।। শাস্তাবৃক্ষঃ।। নীলদ্র্র।।
অগ্নিস্বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।
পতাকাবিশেষঃ।ইতিযুক্তিকল্পতকঃ।।
ক্রমাবহা জী ভদুদ্ধীবৃক্ষঃ। ইতি
রাজনির্ঘটঃ।।

क्यानुग जी कत्र जी ज्गः। ই जि ् त्राक्र निर्घणः।।

बराखा जी जनुमङीवृकः। इंडि वाजनिर्घणेः॥

জ্যী ত্রি জ্যযুক্তঃ। বিজ্ঞানী । ব্থান জগতি জ্যিনো যস্য বিশিখান। ইতি মহিন্নংস্তোত্রণ।।

জার্যঃ ত্রি জেতু শক্রং। জাবকরণ যোগ্যঃ।ইত্যমরঃ॥

कठेतः जि कर्कणः ॥ भाणुः॥ कठिनः। इंडि (मिनिनी ॥ कोगः। इंडि (इमहन्दुः॥ कत्रायाः भूः। इंडि विश्वः॥

बाइ जो जो ज्निति। विश्व शिक्यां विश्व शिक्यां विकार सुनाना व क्यां मुया का स्वाद्य शिक्यां स्वाद्य स्वाद स्वाद्य स्वाद स्

कत्र प॰ क्ली हिन्स्। न्राह्मेष्यी। कीर्ण वि। ইতি শহরহাবলী।। बद्रभः भू॰ बीद्रकः ॥ कृष्ण्बीद्रकः ॥
(त्रीवृह्र्ण्ण्वप्रभा । हेि णद्दद्वाव्यी
॥ कात्रमुद्धः । हेि द्राक्षनिर्द्धः ॥
बद्रभा जी कृष्ण्बीद्रकः । हेि
दाब्रनिर्द्धः ॥

জরণজন: পু॰ অশ্বর্ক:।ইউ রাজনিঘ্ট:॥

জরণ্ডঃ ত্রি জীর্ণ:। ইতি সংক্ষিপ্ত-সারে উণাদিব্ভিঃ॥

बद्ग विं वृषः । ইত্যমরः॥ পুরাতন•। ইতি হেমচনদুঃ॥

बद्ध कारू: भू भूनिविश्वासः। ख्य भर्गायः । यायावदः २ । इंडि विकाश्रामयः॥

बद्गद्भाकः जी मनगापिती। ইতি विकाश्रामयः॥

बद्र का क शिया जी सन मार प्री। इंडि मे प्रदार जी।

জরতী জী বৃদ্ধ। ইতি রাজনির্ঘণিঃ। জরদ্বঃ 'পু• জীণ্বৃষঃ। তৎপর্যাবঃ । বৃদ্ধোক্ষঃ ২। ইত্যমরঃ।।

बद्गन् शृ॰ वृकः। ইতি রাজনির্ঘটঃ।। बद्गतः शृ॰ মহিষः॥ वृकः। ইতি বিকাওশেষः॥

জ্রসান: পু॰ মনুষ্য:।ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যা মুণাদিবৃত্তি:।। ज्ता जो वयःक्ठ न्रथमा जान्। वहा ् (छमः । ७८ भर्य)। यः । विज्ञा २ । ় ইত্যমরঃ।। সাতু কালকন্যা। যথা। कालकनऽ। बद्धा मिकाट (नाक खा॰ নাভিনন্দতি।স্বসার•জগৃহে মৃত্যুঃ 🖚 যায় জননে খর:॥ ইভি 🗐 ভাগ-वं । 🗱 ।। अवाः (छम् भुख्यम् हजूःवं है क्षः सृजाः। स्टुरकन्ता भू जारेन्द्रव बद्रा उम्रान्द्र कन्यका॥ ॥ জরাচ ভ্রাতৃভি: সার্জ শখজুমতি ভূতন । এতেচোপায় বেভার নগছভিচ সংমত্তশা পলাবন্তেচ তৎ দৃষ্টা বৈনভেষ মিবোরগাঃ। চঙ্গুজ-नक्षरायामा भाषावरिखन(भृवनः॥ কর্ণ তৈল মৃদ্দ্ি তিল জরাব্যাধি বিনাশকণ বসন্তে ভুমণ-বহিংসেবা স্বণ্ণ করোতি যঃ।৷ বালাঞ্চ সেবতে কালে জরা ত॰ নোপগছতি। খাত भी छो प्रकन्नायी (नवर्ड हन्प्रन्प्व॰ ।। নোপয়াতি জরা তঞ্চ রিদাঘে ধ্নিল সেবিন । প্রাবৃত্তফোদকরায়ী ঘনভোষ ন সেবতে ॥ সম্যেত স্মাহারী জরা ত নোপ্যছতি। শরাদীদ নগৃহাতি ভূমণ ভত্তবর্জ-(य<।।थाउदायी ममाहाती जता उ॰ নোপতিষ্ঠতে। খাষ্ট্রায়ী চ হেনন্তে काल वङ्गि । निःववाज ॥ जूङ्क ॥ कताशुक्षः भू । इति

নবায় মুক্ঞ জরা ত নোপগছতি। শিশিরে ২০ শুক বহিঞ্চ নবোফা মঞ্চ সেবতে ৷৷ যএবোঞ্চোদক স্থায়ী জরা ত নোপগছতি। সদ্যো মা স নবামঞ্চ বালন্ত্রী ক্ষীর ভোজন।। ঘৃতঞ্জেবতে যোছি জয়া ভ॰ নোপ-गहाउ। जुड्रक मनमः कृषकाल ज्काया॰ भीया**उ जन**।। निर्जुः ভূড্কে চ তাষূল জরা ত নোপগ-हि । पि रिश्यक्वीनक नवनीजः **७था गुफ्- !! निज्यान्य जुड्ड अन्यमी** যো জরা ত॰ নৈবগছতি। শুযুনা•স• जिर्यावृष्टा वालाकं छक् १ मध्या ত-সেবস্ত-জরাবাতি পুক্ষীভাত্-जिः **म**र । রাজी य मधि (मतरा পু:শ্চলীঞ্চ রজস্বলা।। তনুগৈতি कर्ता रुड़ी जाञ्जिः तर मृत्ति। 🔰 🧸 कुक्तरेवदार्ख वुक्तर्थकः ॥ 🕸 ॥ कीतिका व्कः। इंडि भक्डिस्दा।। वाक्तभी विष्मयः।यथा। अन्।भा मिन जार्यायाः नकता एव वृश्कु-থাৎ। তে মাত্রা বহি ৰুৎস্ঞে কর্যা চাভিসন্ধিতে ॥ ইভি খ্রীভাগবত•॥ बताजूतः जि कीर्गः। कत्रात्ताशगुरुः

। ইতি শব্দালা।।

भवत्रञ्चावनी ॥

জরাভীকঃ পু॰ কামদেবঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ জরাভ্যশীলে ত্রি॥

कतायिः शृ॰ कतात्रकः। ইতি শব্दश्वावनी।।

জরাযুঃ পু॰ যেন বেপ্তিতো গর্ভঃ
কুক্ষো ভিপ্ততি সং। গর্ভবেপ্টনচন্দা।
আঁওল ইতি ভাষা। তৎ পর্য্যায়ঃ
। গর্ভাশয়ং ২ উল্ব॰ ৩ কললঃ ৪।
ইত্যমরং॥ জ্বা। যাত্ চর্মাকৃতিঃ
সুস্থা জরাযুঃ সা নিগদ্যতে। ইতি
মহাভাগবতে ভগবতী গীতা।।
.অগ্নিজার বৃক্ষঃইতি রাজনিঘণ্টঃ।।

ন্থান জার বৃক্ষাহাত রাজান্যভাগ জরাযুক্ত: ত্রি গব্তাশ্যজাতঃ। সতু নৃ গবাদিঃ। ইত্যমরঃ।ঞ্জায়াত চর্মা-কৃতিঃ সৃদ্ধা জরাযুঃ সা নিগদ্যতে । শুক্রশোণিত্রয়ে র্যোগস্তম্মিন্ সং-জায়তে যুক্তঃ।। ত্র গর্ভো ভবেম্দ-মান্তেন প্রোক্তো জরাযুক্তঃ। ইতি মহাভাগবতে ভগবতীগীতা।।

জরাসক্ষঃ পু চন্দুব শীষরাজবিশেষঃ

1 সতু বৃহদুথ রাজ পুত্রঃ 1 ক স
শশুরঃ দ্বন্যুদ্ধে ভীম স্ত হতবান্
শিস্য নাম কারণ যথা। অন্যস্যানপি ভার্য্যায়া শকলে দ্বে বৃহদুথাৎ

। তে নাখা বহি ক্ৎসৃষ্টে জর্বা চাভিসন্ধিতে ॥ জীব জীবেতি কীতন্ত। জরাসন্ধো ২ভবৎ সূতঃ। ইতি শ্রীভাগবত ।। তৎপর্যায়ঃ। বার্হদুথিঃ ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। জরাসন্ধজিৎ পু• ভীমঃ। ইতি

জরী ত্রি বৃদ্ধঃ।ইভি ছেমচন্দুঃ।। জক্থ ক্রী সা স ।ইভিত্রিকা ওশেবঃ।। জর্ম শ উক্তো । ভাষ্ট্র । ইভি ক্রিকল্লফ্সঃ।।

ত্রিকা গুশেষঃ ॥

জার্ছ শ উক্তো ।। ভারে । ই**চি** কবিকল্লজনঃ।।

জৰ্জ শ বাচি।। ভঙ্গে। ইঙি কবিকল্লন্দনঃ।।

জব্দ্ধরঃ পু• শৈলজঃ॥ শত্রপ্বজঃ॥
জরাতুরে ত্রি।ইতি মেদিনী॥

জর্জরীক: ত্রি বহুছিদুদুব্য ॥ জরাতুরঃ। ইতি মেদিনী।।

জর্ম শ ভঙ্গে। উক্তো। ই**তি** কবিকল্লফনঃ।

জর্ণঃ পু• চন্দুঃ।। বৃক্ষঃ। ইতি মেদিনী।। জীর্ণে ত্রি। ইতি হেমচন্দুঃ।।

জर्नः शु॰ (यानिः॥ श्ली। ইতি স-क्रिश्रमाद्ध উनाहित् जिः॥

জর্ভিলঃ পু॰ বনোন্ডবভিলঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ (হ্মচন্দুশ্চ।।

জबुः शुः (यानिः॥ इडी। ই जूःगानिः (काषः॥ জ্জু • বার্ঝো। রক্ষে। ইন্ডি কবি- " ুকলুদ্রুমঃ। বার্ঝঃ ভঙ্গু ন•উক্তিক্ষ। ইতি উট্টাকা॥

सर्हिनः পু• অর্ণ্যতিল:। ইতি রাজনিঘণি:॥

কল জ ধানে । ইতি কবিকল্প জনঃ।।
ধান্য জীবনোপযোগিকিয়া আছাদনমা ধন্স্য ভাবো ধান্য সমৃদ্ধিঃ
। ইতি ভটীকা।।

कन क भिशात। आहामन इंडि यावट। इंडिकविकन्नकमः॥

कन क्री (गारुनन ।। श्रीत्वत । हेि মেদিনী ॥ পঞ্জু ভান্তগ্ত ভূত विश्वाश जम्य धर्माः। क्षर मुवद्ध शु छ। करया शिष्वक । इंस • शुक् इम विनिष्ठेक। भग्र भूता कठुकन । যথা। স্পর্নাঃ সংখ্যা ২ পরিমিতিঃ ০পৃথক্র • ৪ সংযোগঃ ৫ বিভাগঃ ও পরত্ব প অপরত্ব ৮ বেগঃ ১ पुरुष: ४० शुक्षः ४४ क्षाः ४२ तमः ১৩ রেহঃ ১৪। অস্যবর্ণঃ শুল্ল: রসে। মধুরঃ স্পর্শঃ শীতলঃ। স্নেহঃ দুবরু স্বাভাবিক গুণঃ।পর্নাণুজল নিত্য । সাব্যবজল প্রনিত্য । প্রনিত্য कल • जिविष्यं या। (त्र • व्यानिक • > इंन्द्रिय॰ इमन॰ २ विषयः मिक्क श्यािनः १। ইভिভाষাপরিছেদः

॥ 🕸 ॥ जाजार शिक्ष र्यथा। क्रम माञाधिकुर्दाभारज्ञासा दिन्दराहि-তা<। तेन नाव मञ्ख्यामस्या জিস্থা রসগুহ: ৷৷ গু ৷৷ তস্য **লক্ষ**ণ• यथा। क्रिन्न शिखन जृष्टिः शुन-नाभायतामनः। जाभाभतासमा **ভূগ खुमञ्जरमा वृ**खयख्याः॥**ই**ভি 🗐 ভাগবত• 🛭 🗱 🛚 অপা• শৈত্য• তথা লেদে। দুবত্ব দ্মহ সৌম্যতা। জিহ্বা বিস্যান্দনঞ্চাপি ভৌমানা শুপণ তথা ॥ চতুর্থ মাপো বিজেষ জিহ্বাধ্যান পুচক্ষতে । অধিভূত রস তত্র সোম তত্রাধি দৈবত ।।ইত্যাখনেধিকপর্ব । 🕸 ॥ ত ( शर्य) यः । जाशः २ जीविक् वहाबहनात्डाय-। वाः ७ वादि ८ मनिन • ६ कमन • ७ भयः १ की नान • ► अम् ठ· ৯ जीवन· ১० ভূवन· ১১ ১৫ পুরুর•১৬ সর্বতোনুথ•১৭ জন্তু: ১৮ अर्नः ১৯ তোय-२० शानीय·२১ নীর ২২ক্ষীর ২৩ অম্ব ২৪ সম্বর ২৫ মেবপুদ্ধ ২৬ ঘনরসঃ২৭। ইত্যম্রঃ ।। जाभः २৮ जाउद्गीरवायः। जित्रवः ২৯ সল ৩০ জড ৩১ ক ৩১ অন্ধ ৩৩ क्नक्ष: ७८ छहः ७८ हक् ७५ नावः ८१ **नवतः ०৮ व्यद्ध**शूत्रः ०२ घनत्रमः ८०

ষ্ত । ইভি ভরত: ॥ গীগ্ল ।। ৪২ কুশ ৪৯ বিষ ৪৪ কাণ্ড ৪৫ नवत्र·85 नव्र·89 क्ली है·86 हत्नू 1-ব্লস-৪৯ সদন-৫০ কৰু বি-৫১ ব্যোম ৫२ मदः ৫० मदः ৫৪ ইর१ ৫৫ বাজ ৫৬ তামর ৫৭ । ইভি क्रोधितः ॥ कश्चन १५ मान्सन १० अवन ७० बन्भीय ७३ कत ७२ খাত ৬৩ উর্জ্জ ৬৪ কোমল ৬৫ **সোম•৬৬৷ ইতি শ**দরক্লাবলী॥ৠ। **छम्राग्नाः। केष**्कषाय**ष्**। स्थूत्रष् क्रिक्षिः। मीउवदः। उका नामिदः ় অব্যক্তরসত্বণ শরীরেন্দ্রিতর্গণ-ष्क ॥ #॥ मूगक्षम् उम्र भूगाः । অস্পষ্ট রসত্ত্ব সুশীতত্ত্ব । তব না-मिद्रका। #॥ यह मा जमा गृगाः। बयुद्धा इत्राद्धा भूगवद्धा 🛊 ॥ भर्ग रेमवान कर्मन युक्र जनगुगाः। शिहिनद्रः। कृभिनद्रः। क्रियद्यः। विवर्णञ्चा विव्रञञ्जा मान्मुञ्गा मुर्ग-**क्षित्रुः। यश्चिक**।तित्रुक्षः।क्षः। দিবा স্যাকিরণ রাজিচলু রশ্মিজুই জল গুণাঃ। অৰু করে। অনভিব্যক্তির। गमगायुकुनाद्वस ॥ 🕸 !! जाथाद्रव **जनगूनाः। व्यादः । मीनादः** । मधुत्रवः। नत्रुष्काः 🛊 ॥ वर्षाकानीन कवगुगाः। गुरुष्। चित्रानित्वः

। मध्रद्वः। मात्रकद्वः ॥ 🕏 ॥ भद्र कानीन बनगुगाः। अन्ियु-मित्वः वयुव्यः ॥ 🖝 ॥ रेहमजिक कनगुगाः। त्रिअव्। वन्। वृश्वः । हिउकातिषु । गून पुष्ण ॥ 🗱 ॥ শৈশির জলগুণঃ৷ কফ্বাতনাশিত্ব । रेशिकार किक्किन्नगृज्यः ।। 🕬। वामस्कि कनगुनाः। कवायवः। भवू द्रवः। वन्।वः। क्ष प्रका 🗱।। रेगुम्बक वनगुगः। अन्छियुनित्दः ॥ 🕸 ॥ नोउन जनगुषाः । यन गृही ছদি পিভন্ন শুন কুম ত্যা দাহ नमाज्य विष नामिष्यः॥ 🕸 ॥ शव-নাহত ধারাপাত জলগুণঃ। বিষ্ট-भिष्-। मुख्यव्याक्षाक्षाय विद्वाला শীতল তৎ শৃতশীত তস্য গুণঃ ৷ बिराय नामिव्।। क्षा कनम् সিদ্ধ করণপুকার: ৷ হেমস্তে শি-শিরে পাদহীন বসম্ভেপাদছিত গুল্ম শর্ৎকালয়ে রন্ধারশেষিত वर्षाम्रहावर्णविड• । दिवा निष्क• জল রাত্রোগুৰু রাত্রিসিদ্ধ দিবা-পুক ।। 🕸 ।। পুন্ন সুবাসিত শুন্ন বঙ্ক প্ত न्यन म्रभावश् जल भूगः। मक्त कि कार्रिष्। का जिल् कलाभाषयः जीतं वलनुषः आहात्र কালে আযুর্জনক ভুক্তামোপরি

वात्वो न शियः । छ । जावि । भाष **जनभागुगः। काम श्वामाञीमात्र** ঁজ্ব বনথ্কতা কোঠ কুণ্ঠ মূত্ৰাঘাত छेर दार्भः श्वयथु गल ब्यितः कर्ग नामा চক্রোগ বাত গিত্ত কফ ক্ষয়জ রোগ নাশিত্বণা জ্ঞানেঘশূন্যরাত্রি শেষে নাসিকারদ্ধেণ জলপানগুণাঃ । वृष्ति कातित्रः व्यक्ष्टिंडव्। वनी शिनि अई द्वांश नामिव्या 🏶 ॥ জলগণ্ডু বিধিপাল রম্বরীক্ষোভব বুৰাঃ। ধারঞ্জ কারককৈব ভৌষার• হৈন নিত্যপি।। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।! 🕸।। ত্ৰিতায রোলিণেপি জল• (मय वथा। शानीय न्यानिना न्यान उमायल हि कीयन। उदाः नवीदवञ्चानु न कृष्ठिषाति वार्याटः ॥ ॥ अधानाशि विना कछः शांभान् **ধার্যতে চির•। তো্যাভাবে পি**-शाना डं:कनाट शारेन विमृहारक॥ ত্ৰিতো গোহ সাধাতি গোহাৎ প্রাণান্ বিমুঞ্তি। তমাজ্জল নবশ্যু হি দাত্তব্যু ভেষজৈঃসম্ ॥ ইতি রাজবল্লভ:॥ 🏶॥ পাদেন ঘটনুত্থাপ্য ভাজনে পূর্যেজ্জল । তজ্জল• মদিরা তুল্য• ভাগুঙ্গ• সুর্যা সম ।। ইতি কর্মলোচন

॥ 🗱।। उन्। मान माराबा वर्ग । व्यामहास्त्र नात्राम् भागामस्य **७** व शु ७ । भु । माना कि भन्न भ ৰ দাৰ মিহ বিদ্যতে ॥ অন্ন• বাপি পু जविज भागीया ८ कुक अखन। नीव्र बार्छन हि विना न किक्षिट স•পুবর্ত্তে ৷৷ অলৌষধ্যে । মহারাজ वीक्षक जानाक्षताः। यउः भाग ভ্তা পুৰাঃ সম্ভবন্তি বিশাস্পতে ॥ उमार भानीय मानारेष नभन्न विष्ठाउँ कृष्टिश उह प्रमानदा नि-ত্য• यमीहে ভূতি মাত্মনঃ॥ ধ্ন্য• य मात्रा सामृदाः अनसान निर्हा-চ্যতে। শনু•শ্চাপ্যধিকৌন্তেম সদা ভিষ্ঠতি ভোষনঃ।। সর্ব কামান-याः १। कि की जिंदेक (यह भाषा छी। ণ্ডে চানস্থ নশাতি পাপেভাঙ্গ পুন্চ্যতে।। তোষদে। মন্জ ব্যাঘু यर्गः भद्रा महापृश्छ। अक्रयान् म মবাগেতি লোকানিত্য হর্বীমনুঃ ।। ইতি মহাভারতে দানধ্যঃ।। %।। একহতে গৃত তে ।। ভাষা ভাষা ।। সর্ব সমত । ইতি বুক্ষ বৈবর্ত্তে জ্ঞা-थ ७ ।। 🕸 ।। উष्कृठ । वाग्र्छन যভোশ পিবতি দ্বিজঃ সুরাপানেন ভল্য ন্যামনুরাহ পুরাপতিঃ !!

क्षेत्र नगूः॥
कामः वि कपः। वि (समिनी॥
कामकारेकः शुः मृत्राष्टः। भानीकम
केति ভाषा॥ मजीवः। वि श्रादाः।
कामी॥

জলকপিঃ পু• শিশুমারঃ। ইতি হারা-বলী।।

কলকরক্ষঃ পু॰ নারিকেশফল॰।। পদা•।। শায়ঃ।। জললতা।। মেঘঃ। ইতি মেদিনী।।

জলকলঃ পু শ্বালঃ। ইতি হারাবলী জলকাকঃ পু পক্ষিবিশেষ:। পানী-কৌডি ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। দাত্যহঃ ২ কালকপ্তকঃ ৩। অস্য মা সগ্ণাঃ। স্থিক গুৰু হিমা বৃষ্য মা সংজল পক্ষিণান্ত বাতহর । ইতি রাজনির্ঘটিঃ।।

জনকাদ্ধ: পু• জ্রী হস্তী। ইতি ত্রিকাপ্রশেষঃ॥

জলকাছুন পু• জী হস্তী।ইতিহারা-বলী।।জলাভিলাবিণি ত্রি॥ জলকাম্বারঃ পু• বক্ণঃ।ইতি হেম-

कुन्मः ॥

इनकामूकः शुः अपूषिनीवृकः। इंडित्राक्षनिधंगः॥ इनकित्राप्तः शुः शुः शुः इंडिङ्गत्रवनी बनमङ्गी जी गन्धिती। ३७ राजानणी॥

কলনকুত: পু॰ কলচরপক্ষিবিশেন:
। কোডাপাথি ইতি ভাষা। তৎ
প্যাবঃ।কোষপ্তিঃ ২ শিথরী ৩।
ইতি হেনচন্দুঃ॥

**জলস**ন্তলঃ পু॰ শৈৰা**ল•। ইতি** ভূৱিপুযোগঃ॥

बनकृशी जी कृशगर्छः॥ शृङ्गिती।
। इंजि सिमिनी॥

কলকৃষাঃ পু• শিশুমারঃ। ইভি ত্রিকাওশেষঃ॥

बनक्षः भू• रेगवान । ই उ হারা-वनी ॥

क्रवकी पा जो नन्तारनेवयम्तानि जिः गर क्रव निः क्रिशानि क्रिकी पा। उट्शर्गायः। क्रवशाङ् र गाजुकी अक्रवशाङ्कि। ८। इं ि हात्राविनी।। क्रवश्याः श्रु क्रवावर्जः॥ क्रह्भः ॥ क्रम्प्रवृत्र । ইं ि स्मिनी॥

बनकः भू॰ महाकानः। ইতি রাজ-নির্ঘটিং।।

জলক্ষঃ পু• জনক্ষঃ। চাওালঃ। ইত্যনরটাকাষা•ভরতঃ॥

कलहाती पु॰ ग्राः। इंडि मन् हिनुका॥ कलहात् वि॥ काज की शत्रा भन्। ইতি মেদিনী || कवाजानः পু• ইল্লীশনংস্যঃ ইতি ্॥ কোশার•। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ बंगकः श्रु मट्माः। ইতিশদ हिन्तुका ।। জলে নিবাসাৎ সম্ভীর শিশু-ग्राताम्यः। वयाः नाःन श्राः। गृक्षः। উक्षः। मधुत्रः। ज्ञिक्षः । বাত নাশিত্ব। শুক্র বর্ত্মনত্বঞ্চা ইতি রাজবল্ল ভঃ॥ হিজ্জলবৃক্ষঃ॥ रेनवनः ॥ वानीतवकः ॥ मङ्गः । ইতিরাজনিঘটঃ॥ স্পীলুঃ। ইতি छावशुकामः॥ कर्क है मीन ज छ রাশ্যঃ নকরশেষার্জঞ । ইতি मी शिका। जनकार वि॥ बन ब स्टः भू • बन ब भागी। उ ८ भया। यह । শাদঃ ২। ইত্যমরঃ॥ बनबल्का सी बानोका। इंडि ভর उः **जनज**्ञी अग्र-। इंडि (इन्टन्दुः।) कत्रव्या जी कृत्वयः। ज्रेकान ইতি বননান ইতিত ভাষা।ইতি ভাবপুকালঃ॥

কলজিল্বঃ পু॰ নকঃ। ইতি হারাবলী।। क्रवारिषः शुर मध्कः। इं ि श्राक्षावनी জলতাপিকঃ পু॰ ইল্লীশমতস্যঃ।। কাকচান্ত্ৰ্যঃ।ইতিশ্বরহাবলী৷ জলতাপী পু• ইল্লীশমৎস্যঃ।ইতি भवत्रवावणी।।

ত্রিকাওশেবঃ॥

জলতিকিকা স্ত্রী শলকীবৃদ্ধাইতি রাজনির্ঘণীঃ॥

कलवा जी ছ धः। ইতি হারাবলী॥ जनमः शृ· (मयः॥ मुखक•। ইতি (मिनि ॥ जनमानक खेति कि॥ कनमागनः भू वर्षाकानः। ই वाजनियंगः॥

जनमामनः श्र मानवृकः। इंडि यफ्रिक्म का॥

জনধ্রঃ পু• নেবঃ॥ মৃস্তক•। ইত্যম্রঃ ॥ সমূদুঃ। ইতি হেমচনদুঃ॥ তিনিশ বৃক্ষঃ। ইতি রাজনিঘটঃ ॥ जन ধারিণি তি॥

कविशः शु॰ जमूपुः॥ पण्णेकु मह्या । সাতু শত লক্ষ কোটযঃ। ইঙি नीनावजी ॥

🎚 জল্পিগা জ্রী নদী।ইতি হেম্চন্দুঃ॥ কলধিকা জী লক্ষীঃ।ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ ৷৷

कलनञ्रलः शु॰ कलङ्खित्राभैवः। शांखिया इंछि छेन्विङाल इंछिष **ভाষा। ७८ १**र्य) यः । উनुः २ जन-मार्जातः ७ बनायुः १ बन्ध्रवः ६। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ম জলবিডালঃ ৬ नीরाथुः १। ইতি হারাবলী ॥ भानीयनअवः ৮ বসী ১। ইতি হেমচন্দুঃ॥

कनिविः शृ॰ ममुम्ः। ইত্যমরः।। कनिर्गमः शृ॰ शाकातगृहिज्छ। दि-यु कन निःमतगमार्गः। ইতি ভর उ ॥ एत कन शाकातादियु जन निःमतगद्वातः। ইতি সর্বানন্দः॥ তৎপর্য্যায়ঃ। ভুমঃ ২। ইত্যমরঃ॥ বক্ত•০ পৃটভেদः ৪। ইতি স্বানা।। कनमोनी की मियान।। ইত্যমরঃ॥ कनक्तः शु॰ অসুরবিশেষঃ।।

তিস্যোৎপত্তি কারণ যথা।

শিব দুষ্টু শিবলোক গড়া ত্রক 
ভ্যানক পুৰুষ দুষ্টা ত পুলংপুলং
পপুছ ইশ্বং কুগতং । স উত্তর ন
দদৌ ইন্দুং কুদ্ধ স্ত বজুণ জ্যান
ততো কদু স্তেজসা পুদ্ধজ্বাল তত
ইন্দু দাহার্থোৎপন্ন ভালনেত্রস্থ
ইন্দু দাহার্থোৎপন্ন ভালনেত্রস্থ
বহিং গৃহীত্বা গঙ্গাসাগর সন্ধনে
পুান্ধিপৎ ততঃ স বাল ক্রণো
ভূত্বা করোদ তস্য রোদন শদেন
সপ্তলোকা বিধিরীক্তা স্তমুদ্ধার্কা
বিন্দিত স্ত্রা গত্য ত বাল সমুদ্ধ
ক্রোডে দৃষ্ট্রভ পপুছক স্যায়ণপুত্রঃ

नगुम् उ॰ भूगः महावाह यम भूवः यमा बाठकर्यापि क्य रेज्ःक्। বুন্ধকোডে দদৌ স বাল স্তম্য শ্নশু, দধার শা্মশু, ধুনুভো বৃক্ষণো নেত্রাভ্যা জলমগনং বুলা সমুদ্ मुवाह यमाम्यान मन (नवाज्याः নিৰ্গত জল ॰ ধ্ত ত আদ্য ভলন্ধর नामा अधुरेनव महाभा खादा का कृष् বিনা সর্ব ভূতাব্ধ্যান্ড ভবিষ্যতি ইতৃক্তাশুক্র নাছ্য তনাসূর রাজ্যে न्यानभाग्य म कानातिम मुखाः वृ-न्तापुर्यस्य। इंडिभाष्मा इत्थु ७ জলগতিঃ পু॰ বৰুণঃ।ইতিহেমচলুঃ ॥ समुनुः। अशु जिति छ। मत मानार জলপারাবভঃ খু প্রিক্রিশেষঃ তৎ পর্য্যায়ঃ কোপী২ চলকপোতঃ ৩1 ইতি রাজনিঘটঃ॥

अनिशितः क्ली यहिः है जिमप्रवादनी अनिश्वनी खी शिन्ननी विष्मयः। अनिश्वनी खी शिन्ननी विष्मयः। अनिश्वनी है जिन्नि जाया। उर्भियहा महात्राष्ट्री २ मात्रमी ० जायवल्लाती ८ मर्मापनी वि मर्मागका ७ लाक्नी १ मञ्जा-प्रती ৮ यद्गिना ३ हिं जुमे की ३० भूगाना ३२ ज्नमी जा३२ वर्गमिथा ३०। यम्हानुनाः। कहुन्। जीक्षुः। क्वायवः। भनामाधनेवः। तुग की । होति ताव तमात्राव नामिव्यः।

े वि तांकनिर्घातः॥

জলপৃষ্ঠজা স্ত্রী শৈবাল । ইতি শন্টিন্দুকা॥

জলপুায় ক্লী জল বহুল স্থান । অনুপদেশঃ । ইতঃমরঃ।।

क्रविश्वः १ । ठाउकशकी। ইडि भदादावनी ॥ न्याद्याः । ইडि भदादावनी॥

कनपुरः थु॰ जनगणनः ইতিহারাবলী कनकन॰ ज्ली मृक्षार्टक॰। ইতি

ভাবপুকাশঃ ॥

कलवक्षकः शृ कलमध्रगः श्रांटा ভেদকর দাক শিলাদি । তৎ পর্যায়ঃ। বিদারকঃ ২ ক্পকঃ ৩। ইতি শদ্রত্বাবলী ।!

कत्वतः श्र गर्माः। ইতি भद-চন্দ্ৰা।।

জলবৃদ্ধ শ্লী জলবিষণ যথা। মানুষ্যে কদলীস্তম্ভ নিঃসারে সার মার্গণ। যঃ করোতি স বৈ মূঢ়ো জলবৃদ্ধ সন্নিভে॥ ইতি শক্ষিতত্ব তথা।

कनत्सी अधि हिनामाही। इंडि

बन जूः भू (मयः॥ कक्षरे । इंडि

भवितिमुका॥ जनमूहः भू भट्मात्रक्षकी। ইडि रातावनी॥

জলনপ্কঃ পু॰ নধ্কবৃক্ষ পুভেদঃ
। জলনহু আ ইতি ভাষা। তৎ
পর্যায়:। নক্ল্যঃ ২ দীর্ঘপত্রকঃ ৩
নপ্রপুরঃ ৪ ক্ষোদুপ্রিয়ঃ ৫ পতকঃ ৬
কীরেষ্টঃ ৭ গৈরিকাখ্যঃ ৮। অস্য গুণাঃ। নধুরত্ব। বুণ বাস্তি নাশিত্ব।
গুলুক বল কারিত্ব। শীতত্ব। রসাযনত্রক্ষ। ইতি রাজনির্ঘটিঃ।।

জলম্সিঃ পু• মেঘঃ।ইতি হারাবলী।]
জলম্জিকা ন্ত্রী বারিক্মিঃ।ইতি
ত্রিকাওশেষঃ।।

জলনাৰ্গঃ পু• পুণালী। নৰ্দনা ইতি ভাষা। ইতি হেমচন্দুঃ॥

ज्ञावा। शब ५ निष्युः ॥ जनभाजातः शुः जननञ्जः। ইতি ইতি ত্রিকাওশেষः॥

জলমুক্ পু॰ মেঘ:। ইত্যমর:॥ জলমুর্ভি: পু॰ শিব:। ত্স্যাষ্টমূর্ভি পূজাযা•তিথ্যাদিতত্ব•॥

जनमृद्धिका छी कत्रका । ইড়ি শহ उत्मिका॥

জলমোদ ক্লী উশীর । ইতি রাজ-নঘণ্ট: ॥

जनयञ्चगृर· क्ली जनमर/क्रग्र·।

कल दृष्टि है जि का गाता तथा है जिठ ভाषा। ज पर्या गाता तथा है कि विका श्रामा । मातु पृष्ट । २ । ই जि जिका श्रामा ।।। ज न यखा-निक् जन । १ जिं के हाता न नी।। ज न-यखा निम्दि । १ विश्व विका । विका कि ज मिला ज । १ विका कि ज न माता । १ विका कि ज माता । १ विका कि ज माता । १ विका के ला तका है । १ विका के ला तका । १ वि

क्लायूथः॥ कलब्रक्षः शृ• वृक्लभकी। ইडि (रुभज्नुः॥

कनतमः शृ नवगगहेि हातावनी॥ ह कनकरे शृ भगगहि हिस्स्ना कनकर् की भगगहि हिस्स्ना कनक्षः शृ सक्राः।हेि विकाख-

লৰ্পঃ পু• মকর:। হাত ত্রিকাণ্ড-শেবঃ॥

कनना जी जत्रकः। ই िङ्गतावनी॥ कनवत्रणः: श्रू॰ जनवन्र अथायाः। शानीवन्र इंडि जाता । ट्रू॰ , शर्यायः। (मागः २ हिंडिङ्गतावनी॥

कनवन्नः भू॰ कृञ्जिका । भागा इंडि ভाषा। इंडि हातावनी ॥ कनवन्नी जी मृश्योकः। ইंडितान- निर्घणेः ।

बनवायमः पूर्मपुर्वाशानीप्रवेडि इंडि ভाषा। इंडि (इमहन्तुः॥ न बनवानकः पूर्विकाशवडः। इंडि (इमहन्पुः॥

कनवानिका खी विषुऽ८। ইতি হেন-চन्मः॥

জলবাস লী উশীর । ইতিরাজ-নিঘটঃ।।

জলবাসঃ 'পু॰ বিষ্ণুকন্দঃ। ইতি রাজনিষ্টঃ॥

बनवारः भू॰ (भवः। ইতি (ए महम्पः॥ बनविजानः भू॰ बननवनः। ইতি इाजावनी॥

जनित्रका खी यावनानी मर्जना। इंजिन्नजिन्दं हैः।

जनितः भू• कर्व हैः। भक्षाः॥ जनञ्जूत•। हा उत्तजन है जि जाया। हे जि समिनी॥

জলবিবৃব লী তুলাস কান্তি:।তৎ
পর্যায়:। আশ্বিনচিক্সিত ২।
ইতি শব্রত্নাবলী । চক্রবিশেষ:।
যথা। মান শিরে ষণ্মথ পঞ্চ বৈর 
বক্ষত ভি বহু বিভূলাভ:।
ভোগ: করে ষট্পদ্যোস্ত ষট্কে
ভীতি ন্ণা স্যাদিষুবস্য চকে।।

् -मार्यवृथः। ইতি गनाग्रः॥ क्रमत्रिकः शुः विक्विन्गः।

তি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

**ললা**বতসঃ পু• বানীরবৃক্ষ: হতি রাজনিঘণ্টঃ ॥

कनव्यः शुः कक्ष्वार्वेन ८ मृः। ইতি ত্রিকাণ্ডশেবঃ॥

कनव्यानः शु॰ यनगरं नर्शः। ইত্যনরः । কুরক্ম। জল্জন্তঃ । ইতিরাজ-निघणः॥

জলশ্যঃ পু• বিষ্ণুঃ।ইতি ছেনচন্দুঃ॥ জলশ্যন: পু বিষ্ণা ইতি হলাযুধ্যা

कन्मायी भु विक्यायथा। कन्मारश বরাহঞ্চপাবকে জলশাযিন। ইতি भुद्रागः ॥

क्रवम्किः जी मध्कः। इंडाप्रतः॥ খানুক ইতি জলসীপী ইতিচভাষা । তৎ পর্য্যায়ঃ। বারিশুক্তিঃ ২ ক্মি-শুকি: ৩ ক্ষুদুশুক্তিকা ৪ শস্কা ৫ নরশুক্তিঃ ৬ পুষ্টিকা ৭ তোযশুক্তি-কা ৮। তস্যাগুণাঃ। কটুত্ব॰। স্থিপার॰ । मीशनवः । शृन्य म्व वियमाय नार्मिषु । क्ष्ठाषु । भाठनषु । वन माञ्जुक। ইতি রাজনিঘটিঃ।। कनम्क की रेगवान । इंडि इन ज्नुः

যিমিন্ন বসেডানুঃ স্থলাৎ সাল জলশুকরঃ পু সম্ভীরঃ ।ইতি হেম-**इन्मः**।।

> जनमिनी जी जानोका। इंडि (इमहसुः ॥

> জনস্চি: পু॰ কক্তোটন্স্য:॥ मृक्षा मिनुमादः॥कलोकाया॰ ञ्ची। ইভি সেদিনী।। काकः। ইঙ্ডি (इयहन्मु:॥

कवज्ञा की गलमूर्व। इंजिताकनिर्यणैः कलरु क्ली अनुकलयखग्रः। ই**उ** ত্ৰিকাণ্ড**শেষঃ** ॥

জলহাস: পু॰ সমুদুফেন:।ইতি ত্রিকা গুশেষঃ॥

জলাকা জ্রী জলৌকসঃ।ইতি শব-बङ्गावनी॥

জলাখু: পু॰ জলনসল:। ইতি ত্রিকা-

जनाक्षन ही याजावातिनिर्गमः॥ रेमवान। इंडि (निमनी।।

जनारेनः शृ· कङ्गको ।इंडियिनिनी कवारिनी क्षी कलोका। इंडि स्मिनी। जनार्कः शुः नकताजः । इंडि रावावनी ॥

बना ७क॰ ब्ली लाजादान । इंडि गम्बद्धावनी॥

बनाजिका औ बलोका। ইতি

भवित्रवावनी ॥

कलाक्षातः भु॰ कलाभयः। ইউऽमतः॥
कलाक्षिरेष्ठः भु॰ वक्षाः। ইতি

हलायुषः॥ भूवीवाजा नक्षां की ।

हेि क्षांठिष्ण।

জলাখিকা স্ত্রী কূপঃ। ইতি হারাবদী ।। জলাগ্মিকা ইতি কৃচিৎ পাঠঃ।।

कनायुका खी कालोक। । इंडि मद-त्रञ्जावनी ॥

জলাদু: পু• আদু বস্ত্র•।ইতি হারাবলী জলাদু। জ্রী ক্লিমবজ্ঞ।ইতি হেনচন্দুঃ জলার্ণবঃ পু• ব্যাকালঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। জলসমুদুশ্চ।।

জলালুঃ পু• পানীযালুঃ। ইতি রাজ-নিঘটঃ।।

জলালুক• ক্লী পদাকন্দ:।ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

জলালুকা স্ত্রী জলৌকা।ইতি শব্দ-রহাবলী।

बनात्नाका জी জলৌকা। ইত্যনর টীকাষা ভরতঃ।।

জলাবর্ত্ত: পু• জলপুল্ম:। সম্ভ্রসা• ভুনঃ। ইতি জটাধর:।।

कलान्य को উশীর । ইত্যমর:॥ লামজ্জক । ইতি রাজনিঘ্ট:॥ কলান্য: পু• জলাধার:। সতু পুয়রি- गामिः। इंडामदः॥ ममून्ः। इंडि (स्महन्द्रः॥ मृक्षाहेकः। इंडिनाज-निचण्डः॥

जनाया जी गृथानात्कः। ३िंड त्राजनियणेः॥

कनाम्यः श्र॰ वृडगू ७ छ्१॰। ই 🕃 त्राक्ष निघण्डः॥

জ শুবা জ্ঞী শ্লীতৃণ ॥ বলাকা। ইতিরাজনিঘটিঃ॥

कनाक्षीना खी भुद्रति। **३७** शतावनी।।

জলাস্থ্য ক্লী উৎপল । ইতি রাজ-নির্ঘটঃ।।

बनाको खी बनिश्ननी। इंडिमद-तदावनी॥

জলিকা স্ত্রী জলৌকা। ইত্যমর টীকাষা ভরতঃ॥

জনুকা স্থ্রী জলোকা। ইতিশব্র জাবলী জলুকা স্থ্রী জলোকা। ইতিহেনচন্দুঃ।। জলেচরঃ পু॰ জলচরপক্ষী। সত্ত হণস নদু বকাদিঃ। তস্যু মাণস গুণাঃ। গুক্তবং। উফত্বং। শ্রিকত্বং। নধুরত্বং। বিষয় নাশিত্বং। শুক্ত কারিত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ।।

जलहया जो रिडम् अत्कः। **रेडि** मन्द्रशतनी॥ काराजानः जी भग्नः। इं जिल्लास्त द्वावनी कृत्यकः गुः वक्षाः ॥ मारु। मृश्चिः॥ क्ष्मिः । केन्ति स्विमी॥ व्यापाः गुः बाउवाद्यः । ইति कृतिभूरदागः॥

करविक्श जी स्टूबिनीवृकः। ইতি दाकनियकः॥

জলেবাহ: পু॰ জাভিবিশেষ:।

ডুবক ইতি ভাষা। যথা। জলেবাহানথাভূথ বহু-সত্ত ন্যুযোজয়ং।

ডংকৃদ্ধা পরন হত্ত মাপুরাভরণ
ন তথা ইতি পাদ্মেপাভাল্য দুং।

कालाभगः भुः म्हाः हिछि विकाशःभवः॥

জালখর: পু• বক্ণঃ।ইতিশ্বরহানলী ॥ সমর্ভ॥

কলোক। জী কলোকা ।ইভ্যনর ট্রিকাশা ভরতঃ।।

कानाम् । मु॰ कनामय॰ भित्रभूर्यः जनविक कनरा मर्दा उर्न । रहा उर्न । रहा वर्न । कना जुः । भारत वर्न । राज्य प्रवृद्धि । प्रवृद्धि । राज्य वर्ष । राज्य । राज्य वर्ष । राज्य । राज्य वर्ष । राज्य ।

পুরেশার্থ ম্পায়ো মুখান্ ইভিখ্যাত ইত্যেকে। ইক্তি ভন্নতঃ ॥ ভৎ পर्यायः। शहीदाष्ट्रः २। ইত্যमद्रशा জলোদন औ अठेबास्यश उत्रा निहा-नामि यथा। यः दिङ् शीटाशानु-वानिकादा वासादिविका भाष वः निक्षणः शिव**ञ्जलः भी उल मा भू** তদ্য সোতাংশি দুশ্যন্তি হি তদ্ব-रुगि ॥ एएश्रामनिष्ठप्रथ्वामि তেষু দকোদর• পূর্বদভ্রপৈতি I গ্রিখা নহত্ত পরিবৃত্ত নাভি সমা-लं भिनायुनाम।। यथा मृजिः ক্ষু ভ্যতি কম্পতেই **শব্দা**যতে হা**পি** मरकामत्र ६। जन्मरेनरवामत्र अर्दः भागः कृष्ट्र ज्ञाः स जः। दिन्त छ एका-ভাষু যত্ন সাধ্য: নবোপ্থিত: !! ইঙি माध्यक्तः॥

জলে ভা वा वा जा जा वा जा जा जा जा जा जा

জলোভূতা দ্রী ওণ্ডালাকুপঃ। ইতি রাজনিদটঃ॥

জলোরগী ত্রী জলৌকা।**ইত্যমর** টীকালারদুন্দরী॥

জলৌধনঃ জ্রী চনৌকা।সাভবছারস-নান্ডো২ন•শহঃ। ইত্যুদরঃ।।

জলৌকসঃ প্রি জলৌক।।ইত্যার

**ोिकानाः तारम्यदेशायकाताः छारः** बादोकाः खी बादीका। इंडि ভরতঃ।। ब्रालोका खी बन बरु विस्मयः। (काँक ें जि जारा। जर्भयायः। तक्ना ২ জলৌকসঃ ১। ইত্যনরঃ ॥ জলুকা ८ जलाका ৫ जलोकाः अजलात्रगी ৭ জলাযুকা ৮ জলিকা ৯ জলা जुका २० बन बन्छका २२ (वर्गी २२) बनाताका > बत्नोक्मः > १ बालोकमी ১৫। इंडि ভরড: ॥ জলৌকস• ১৬ জলৌকসা ১৭ ৷ ইভি রাযমুস্ট: ॥ রক্তপাযিনী ১৮ রক্ত-সন্দলিকা ১৯ ভীক্ষা ২০ বমনী ২১ कनकी वनी २२। इंखि द्राक्षनिर्घणेः॥ রক্তপাতা২০ বেধিনী ২৪ জলসর্গি-भी २० जनमृतिः २७ जनाविनी २१ জলাকা ২৮। জলপটাত্মিকা ২৯ कनिक। ७० कनानुका ७১। ইতি मक्रवावनी।।

জল্ল ০ বাচ।ইতি কবিকল্পদ্ধনা। ইতি ত জল্ল: পুং বিজিগীবোঃকথা। পর মৃত
খণ্ডন পূর্বকং স্থ মৃত ব্যবস্থাপনং।
ইতিজটাধরঃ গৌতমশ্চ॥কথাচা।
জল্লনং লী কথনং। বথা। কিংমিখ্যা
শত জল্লনেন সততং রে বজুরামং
বদ। ইত্যুক্তটোঃ মা

জন্নাকঃ ত্রি বহুসৎ সিতভাষী।
তৎ পর্য্যায়ঃ। বাচালঃ ২ ক্রাটঃ

৩ বহু গর্হ্যবাক্ ৪। ইত্যারঃ॥
জল্লিত ত্রি উক্ত । ইত্যারঃ ॥
কথনে নী॥

জবঃ পু• বেগঃ ॥ বেপবতি ত্রি। ইতি মেদিনী॥

कवनः श्रे (वर्णः। देण्यः।।

कवनः श्रे (वर्णः।। (वर्ण्यक्राश्यः॥

कवनः श्रे (वर्णः।। (वर्ण्यक्राश्यः॥

कवनः। ইতি হেন্চন্দুः॥ श्रीकाती

मृगः॥ (घाठकः। ইতি রাজনির্ঘন্টः
॥ (यह्जाভিবিশেষः। এব পূর্ব।

कवनम्हणाख्यः कविष श्रामी

मगत রাজেনাস্য সর্বশিরে। মুখন।

সর্বর্থ বহিস্তর্গ চকার। ইতি

হরিব।শং॥ বেগ্যুক্তে বি। ইতি

মেদিনী॥

জবনাল • ব্লী ফলবিশেষ:। জনার ইতি ভাষা। অস্যুগুণা:। স্বাদুত্ব। শীতবৃণ। বাযুকারিবৃণ। কফ পিত্ত নাশিবৃঞ্চ। ইতি রাজবল্লভ:॥

বনিকা জ্ঞী ব্যবধায়কবন্ধ। কানাৎ ইতি ভাষা। জুপের্য্যায়ঃ । পুতিসীরা ২ তিরক্ষরিণী ৩। ইত্যমরঃ।। যুবনিকা ৪ যুমনিকা क वित्रकातिगी ७। इंडि छ छोका ॥

क वृद्धि की व्यवी छ ना । इंडि
छ विष्णु ॥ ख वरी छ छ । इंडि एक मह त्र द्वावनी ॥

क वा की स्र ना मथ्या छ श स्र त्वावनी ॥

क वा की स्र ना मथ्या छ श स्र त्वावनी ॥

क वा की स्र ना मथ्या छ श स्र त्वावनी ॥

क वा की स्र ना मथ्या छ श स्र त्वावनी ॥

क वा की स्र ना मथ्या छ श स्र त्वावनी ॥

क वा छ छ । थ प्र श स्र त्वावनी क व्यक्ति ।

विक्ष क । इ न्मू नु ख विनाम का ति वृः ।

विक्ष क । इ न्मू नु ख विनाम का ति वृः ।

विक्ष क क क वृः । मृर्या ता थ न मृत्व छ छ न त्र छ न का ति वृः । ह छ ॥

मृत्व छ छ न त्र छ न का ति वृः । ह छ ॥

ता क व छ छ न त्र छ न का ति वृः । ह छ ॥

ता क व छ छ न त्र छ न का ति वृः । ह छ ॥

ता क व छ छ न त्र छ न का ति वृः । ह छ ॥

ता क व छ छ न त्र छ न का ति वृः । ह छ ॥

ता क व छ छ न त्र छ न का ति वृः । ह छ ॥

करानि जी जूगिकपुराउपः। उद् शर्यायः। गक्रवाकः २ क्विनः २ मृगवर्षकः ८ मगृरुगकः दिगकाण्डः ५ मिश्वः १ मामु। गिकर्षनः ५ मुगक्रिडम निर्यामः ५ कष्टुरमामः ५०। यमु वाक्यः। । नीवमद्रः। मिश्वदः। वेषदः शिक्दः। मृगक्रमद्रः। याज्ञाश यमुग्याः। प्रोगिक्रकदः। सिश्वदः। देकदः। प्रावहदः। वाद्य हिडदः। वाद्यः। प्रावहदः। वाद्य हिडदः। वाद्यः। प्रावहदः। वाद्य हिडदः। विद्यः। साहनीद्राम काव्यद्धः। हेडि वाक्रनिर्यणः॥ জবাধিক: •পু• বেগাধিকবোটক: । ইত্যমর:॥ অভিশ্য বেগযুক্তে তি॥ জবাপুর• ক্লী ওড়ুপুর•। ইতি শদরত্বা-ব্লী॥

জবী ত্রি বেগযুক্তঃ।ইতি হেমচন্দু:॥
উষ্ট্রঃমঘোটকঃ।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥
জয় এং বধে। ইতি কবিকল্পজ্ঞাঃ॥
জস্ম ইর যুউ সোক্ষে।ইতি কবিকল্পজ্যাঃ॥

জস ক বধে।। অনাদরে। ইতি কবিকরজমঃ।।

जम है क त्रक्रा हिंठ कि विकल्ल मः॥ जमूतिः भू॰ वजु॰। हेनु शामि का यः॥ जहकः भू॰ का नः। है जि कि का अल्यः ॥ जा गक जि कि । हेनु शामि का यः ॥ वा नः॥ निर्माहः॥ निर्माकः। है जि मश्लिका। मिल्हिं॥ जहा जी मुखिनिका। मुखिती है जि ভाषा। है जि मक् हिन्दु का॥

জহানকঃ পৃ• পুল্যঃ।ইতি হেমচন্দুঃ।।
জয়ৣঃ পু• বিষ্ণুঃ।। রাজবিভিদঃ।
স চন্দু ব•শোন্তব কুক রাজ পুতঃ।
গঙ্গাগনন কালে যেন গঙ্গা পীতা
পুন ভগীরথ প্রাথনেন উষ্ণ ভিত্তা
বহি নিগমিতা তেন দা জাছ বীতি
খ্যাতা।ইতি রামাযণং।।

सह उनया थी शका। इंग्लिश ।। कर्म मृज्य की शका इंग्लिश जिल्ला के दें सक इन सम्मान ।। गठो। इंडि क्विक्स मार्थ।।

कक् क मूं न ज्या । शाम। हेडि कविकन्नष्टनः॥

জন্ধণ গ্লী ভক্ষণ । ইতি হেন্দ্রা। ঃ পু• জন্ম। ইত্যমন্ত্রীকা।।

জন্ধা পু• যন্ত্রোগঃ। ইত্যের-টীকাযা•ভরতঃ।।

জা দ্রী যাতা। ভরু ভু তি গ্রী। ইত্যেকাক্ষরকোষ: ॥

জাগরঃ পু• খ্রী জাগরণ•। ইত্যমরঃ ॥ কবচে পু•। ইতি ভট্টীকা॥

জাগরণ লী নিদ্যভাবঃ। জাগাইন্ডি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। জাগর্ম্যাই জাগরাও জাগরঃ৪।ইতি ফ্নচন্তুঃ ॥ জাগ্রিয়া ৫ জাগরিং৬।ইত্যন্ত্র-টীকা॥

জাগরিতা তি জাগরণশীলঃ ইত্যারঃ লাগরী তি জাগরকঃ। ইতি হেন্দলুঃ জাগরকঃ তি জাগরণশীলঃ। জাগরণ কতা। ভৎপর্য্যায়ঃ। জাগরিতা ২ । ইত্যারঃ॥ জাগরী ৩। ইতি হেন্দলুঃ॥ জাগর্জিঃ জী জাগরণ। ইত্যার हो कामाः तामसूक्षेः॥ ज्ञानस्ता ज्ञी जागद्गनः। इञ्जूदः॥ ज्ञानुष्ठः ज्ञी ज्ञूमः। इञ्जिकिन्धः स्मदः॥

জাগৃক লু জাগরে ইতিকবিকল্পমঃ
জাগ্বিঃ পু অগ্নিঃ। ইতি হেনচন্দুঃ।
জাগুৎ ত্রি জাগরণবিশিষ্টঃ। যথা।
গক্ষোভূক তরক সক্ষত জটাজুটাগু
জাগুৎ ফণি মুজৎ ফ্ৎকৃতি ভীতি
সমূত চমৎকার মুরৎ সংভ্রা।
ইতি কাব্যচন্দ্রিকা।।

লাগ্রিয়া স্ত্রী জাগনণ । ইত্যমরটীকা-যাণ রাযমুকটঃ ॥

আহনী ক্রী উলংই তি ত্রিকাণ্ডশেষঃ
আহল ক্রী নাংসংই তি হেসচন্দুঃ।
জাহলঃ পূ
কপিঞ্জলপদী। ইতি
নেদিনী।

জাঙ্গলঃ ত্রি স্থলজপশুবিশেষঃ। যথা।
হরি গণ সরস্ব্য প্ষত ন্যজুশমরাঃ
।র জিবো লিচ মু গ্রী চেত্যাদ্যাজাঙ্গল
সংজ্ঞকাঃ। হরিণ স্তামুবর্ণঃ স্থাদেশঃ
কৃষ্ণঃ পুনী র্ভিতঃ। কুরক্ ইমন্তামুঃ
স্যান্ধরিণাক্তিকো মহান্।। খ্য্যোনীলাণ্ডকো লোকে স রোক্ ইতি
কীর্তিতঃ । পৃষত কিন্দুবিন্দুঃ
স্যান্ধরিণাৎ কিঞ্চিদ্পকঃ।। ন্যক্ষ

ুৰ্ব্ৰু বিষাণো হথ শম্বরো গৰ্যো निर्मेत् । त्राकी वस्त्र मृत्या (ऋत्या রাজীভিঃ পরিতো বৃতঃ॥ যো মৃর্গঃ मृत्र हीनः म्राट्म मूखीि निगम्राज। जम्रा मा॰मना गुगाः। न्यवृद्यः। ज्ञान्यः। कषायवः। नघृषः। वनावः। व् रहणवः। वृष्ठवः। मीशनवः ।দোৰহরজ্থ নূকজ মিমিনজ্গ দুদ-जार्भि उताविकाकि हिमिशुरार मुश्र जाता मी श्रम शनश्र वायू রোগ নাশিক্ঞাইতি ভাবপুকাশঃ ।। শী এব॰ । মনুশ্ৰহি তব্ব॰ । ইতি রাজব্ল ভঃ ॥ জ ॥ নিবারিছে শঃ। इंडि सदउद्गावनी ॥ जमानंकिंगः यथा। जाकाम मुच् उहम्ह सन शानीयलार शः। समी कतीत विद्यार्क शीनु कर्वसु मः क्नाः ॥ इतिनगर्वेऽ পৃষত গোকণ থর সঙ্গুলঃ। সুরাদু कनवान् (मर्गा वाच्या जाक्यः মৃতঃ ॥ ইতি ভাবপুকা**শঃ**॥ 🕸 ॥ তস্য গুণাঃ। বাত পিত্ত কারিত্ব।। উक्षत्र । क्ष्कपृथः॥ उत्परभीय जन গুণঃ। অনুপদেশাৎ বিপরীতত্ব।। इंडिस्कवझ डः। तक्कष्ण नवण्यः। । লঘুর । ভনুর । পথ্রে । বহি कफ वर्षिकात कातित्रक। है जि

ভাবপুকাশঃ॥ बङ्गल (मर्गाण्डवक बाङ्गलिः १९. व्यालगुःशि। ইতি শক্ষরভাবলী॥

काक्नी जी भ्किषी।इंजिसिनी॥ काक्न की दिष्णा कानिनीकन॰ १इजिंभस्त्रदावनी॥

काञ्चलः शृ॰ विषदिन्छः। नाशृष्ठ हेि जावा। हेि न्यातद्वावनी॥ काञ्चलकः शू॰ वजानगाही। हेज्यादः काञ्चली खी विषविन्छा। हेिज (हमहन्पुः॥

জাল্বিকঃ পু॰ উষ্ট্রা। প্রকারীবৃক্ষঃ
। ইতি রাজনির্ঘটঃ।। জল্পাজীবী।
পাবকাদিং। তৎপর্যায়ঃ। জল্লা
করিকঃ২। ইত্যমরঃ।।

জাজ্ল্যমানঃ ত্রি দেদীপ্যমানঃ। যথা।জাজ্ল্যমান তেজাভীর্বি-বিম্ব নিবাম্বরাৎ। ইতি চঞী।।

জাটলিঃ পু•জী বৃক্ষবিশেষঃ।ইতি লিক্ষানিস•গুহে অৃন্রঃ॥

काष्ट्रः क्ली कप्रजा । उर्श्यापः । उम्रः २ ॥ स्मोर्थाः । इंजि ह्मा क्लां । द्वि तां क काष्ट्रातिः भू । कषीतः । इंजि तां क निर्यक्तः ॥

জাত ক্লী ন্তে ।। সন্হঃ।। জন্ম ।। উৎপদে ত্রি। ইতি নেদিনী।। নাত্রক। দ্বী নাত্রবালক স্থাপুভাপুভ নির্ণাবক পুসং। তস্য ভেদাং। কাতক নিগিকা ) লাতকান্ত । ২ কাতক রঞ্জি। ৩ লাতককৌ মুদী ৪ নাতক রঞ্জাকরং ৫ নাতক সারং ৬ লাতক রঞ্জাকরং ৫ নাতক সারং ৬ লাতক। বিং ৭ লাতক্চ ন্দ্রিকা ৮ লযু নাতক। ১ বছজ্জাতক। ১০ ইত্যাদি। ইতি ন্যোতিষ।। নাতকঃ পুণ কার গ্রি। ভিক্ষং।।

জাতে ত্রি। ইতি ধ্রণিঃ॥ **জা**তক্র্ম ক্লী দশস্কারান্তর্গ**ত** 🎚 সংকার বিশেষঃ৷ তস্য ক্রমোযথা । পুৰে জাতে পিতা নাভি• নাক্ভত স্তনক্ষমাদ ভইত্যভিধায় কৃতসানঃ **্কৃ**তব্ৰিশ্বাদ্ধঃ পুকালিত শিলা-যা• বুন্ধচারিণা স্বনায্যা গর্ভবভ্যা वा भुज्याधाय भीन वाक्षणन वा অনাব্ত লোষ্ট পিষ্টো বুীছি যবৌ ॥ मिक्ति इसानानिकाकुक्षान्त्राः প্হীত্বা মত্ত্ৰেণ সমারম্য জিল্পা --नाहि। उठं खेरेथव मुदर्शन घुड-ण्हीजा माजन उरेशतं कमातमा কিবা॰ মাষ্টি। ভতঃ পুনরপি **সু**वर्शन घ् ड॰ गृहीज्ञा माखा उरेशन সমারশ্য জিবা• মাষ্ট্রি। ততো 'নাভি**• কৃস্তত স্তনঞ্চ**দ্ৰেতি পিতা-

বুবাং সান পুনঃ পিতান স্থাৎ । ইতি ভবদেবভটঃ।।

স্

জাতবেদাঃ পু॰ অগ্নিঃ।। চিন্রকবৃক্ষঃ
। ইত্যারঃ।।

काउक्र की सर्गाधुस्तः। ইত্যমরः ।। উৎপন্নৰূপে তি। যথা। ন জাত ৰূপছদ জাতৰূপতা।ইতিন্ত্ৰীহৰ্ষঃ॥ জাতাপত্যা স্ত্রী পুসূতা। ইত্যমর:॥ জাতিঃ স্ত্রী গোত্রণাজন্ম ৷৷ অশ্মন্তিকা ।। আমলকী। সামান্য•। তভুবুাস্কণ क्ष वियं देव भार भूमाञ्चरः॥ इनः॥ কাতীফলণা মালতী।ইতি মেদিনী ॥ কাম্পিল্লঃ।ইতি বিশ্বঃ॥গোত্বাদি: । उम्रेनक्र १ था। शाक् छि गुइ ११ জাতি লিফানাঞ্ন সর্ভাক্। সক্দাখ্যাত নিগুাহা গোত্রঞ্ চরণৈঃ সহ।। ইতি মুশ্ববোৰ ।।। অস্যার্থঃ।জাক্রিয়তে ব্যব্যুত্ত অন-যেতি আকৃতিঃ **স·ছান· আ**কৃত্যা গুহণ জ্ঞান যস্যাঃ সা আকৃত্তি পুহণা জ্বাতি রাক্তি পুহণা ভবতি স-স্থান ব্যস্থ্যা ইত্যৰ্থঃ৷ তেন মনুষ্য (गा मृग इ॰ नामीना॰ প्यक् शृथक् স•স্থানৈ ব্যক্তমানা মনুষ্ণ গৈছে মৃগত্ব হ•সত্বাদি জাতিঃ। এব• वाका कविय निष्ण मृहाना श्थक्

म•ङानाङावाद वाद्मगद्गाम अं जि-'বু-নাৈযাত মিতি লক্ষণান্তরমাহ विकारीकिन সর্বভাগিতি या সর্বাণি লিস্থানি ন ভলতে সাচ জাতি রি'ত্যর্থঃক্রি পু•সযোরপত্যান্তা দ্বি ্চভূঃ ষট্পদোরগাঃ। জাতি ভেদাঃ পুমাখ্যাম্য ইত্যমরসিংহে জাতি **ভिनाना खी शू**न्हाया द्वादि नियाम तु। आनामीना अर्वानक ভাৰিত্ব ভাৰাজ্ঞাতিত্ব• ৷ কিউ অ্জাত হ্ৰস্যু জনস্য হ্ৰ-বতোপি তস্য সংস্থানেন হংসত্বং ব্যঞ্জিলু ন শক্যতে ইতি হণ্ম-স্যাপি জাভিত্ব নায়াত নিভি शृई लक्क भन्य (मायः । अव (मव-**ए**खारि ग•छा भद्रमुग्राश नवीं वज् ভাজিত্বাভাবাক্ষাভিত্বাপত্তি রিতি দ্বিতীয় লক্ষণস্য দেখেঃ ইতি (मायवय मनाकर्न् वःयानं क्रिया ুৰ্বিশেষণমাহ সক্দাখ্যাত নিগুগা-**ছেতি স**ক্দেক বার মাথ্যাতেন-উপদেশেন নি নিশ্চযেন গ্রাহ্যা পুহীতু শক্যা ইত্যর্থ: । তেন वेष्ट्रेश इन्म इंजूलिएल इन्मन मृष्ठेव उमा माश्रामन रामपुर ব্যঞ্জিতু শক্যত এবেতি পূৰ্ব- "

वक्षणमा न (मायः । अव (मवः पर्लाम म॰छा मस्मा এक খিলুগদেশেপি অন্যামিন্ জ্ঞানা-ভাষাৎ কাতিত্ব ন স্যাদিতি পর লক্ষণস্যালি ন দোষঃ ! গার্গ্যঃ शूक्षः गाधी की पार्धाः जन মিতি সৰলিক্তাজিত্বাৎ সংস্থান-ব্যক্ত্যভাবার পার্গ্যাদীনা জাতি-ত্বানুপপত্তো ভূজীয় লক্ষণমাহ গোনক্ষতি পুত্ৰ গৌত্ৰ গুভ্তিক নগত্য- গোত্র নিতি পূর্বাচার্য্য পরিভাষিত গোত নিহ পৃ**হতে** भागी वादनी जामि। हजूर्य नक्षन মাত্ চর্ণৈ: মহেতি চর**াঞ্জাতি** রিত্যথঃ: চরণশব্দো বেদৈক দেশ वाही कठारि क्लः मा अश्वापन कियानस्यान शुवृडवाद किया-বাচক এব নতু জাতি বাচকঃ তেনাস্য জাতি সংজ্ঞার্থ• চর্ণৈঃ मरह्यू छ॰ गार्ग्यामीना॰ विदामी नि সিদ্দেপি জাতি সংজ্ঞা ফলন্ত गागी जायंत्र यम्त्रारमो गानी जायंत्र इंडारही नाधाकरका डिडार्हिना भू•वज्जाव निरवदः। भाभी जामी ভাষ্যা চেতি গাৰ্গ্যভাষ্যা ইক্যাদৌ क्षिडानिः श्रुचिन्डिशिह्न। श्रुनुः भूष्णावः।। हेि पूर्णां तामः ॥ ॐ॥ नामानाः विविधः भूषाः भवाषाः । पूर्वां विविधः वृद्धिः । भवाषाः । भूर्वां विविधः । भवाणाः । भवाणाः । भवाणाः । भवाणाः । व्याभक्षाः भवाणाः भवाणाः । व्याभक्षाः भवाणाः । पूर्वां विविधः व्याभित्वां । भूर्वां विविधः । व्याभक्षां । भूर्वां विविधः । व्याभक्षां । भूर्वां विविधः । व्याभित्वां । भूर्वां विविधः । व्याभित्वां । व्याभित्वां । व्याभितिः । पूर्वां विविधः । विषः । विविधः । विधः । विविधः । वि

জাতিকোশ• গ্লী জাতীফল•।ইতি ভাবপুকাশঃ॥

·জাতিকোষ• ক্লী জাতীফল•। ইডি হেমস্দুঃ॥

काि जिल्ला की का जी भने। इंडि त्राजनिर्वण्डः ॥

জাতিকৃদ• ল্লী জাঙীফল•। ইতি হেমসন্দুঃ।।

काि जुः मक्तः की नविष्णाभाष्ठ गं अभागविष्मवः। यथा। वाक्षणमा क् कः क् अ। ज्ञा कि त्रः ज्ञुय मन्। याः। किक्षः भूं भिन्न रेमथुनाः काि जुः म कतः स्वः।। इति सनुः॥ वाक्षणमा मख्यां दिना शीषाकिया व्याप्यः। वास्ना, भूतीयानि रेक्षकः अदिनेषः

জাতী ত্রী জাতীপুয়৽ । চনেলী ইতি

হিন্দী ভাষা। তৎ পর্যানত মুন্তিল
গল্পা ২ সুমনাঃ ৩ সুরাপুলা ৪

চেতকী ৫ সুস্মনারাও সন্ধ্যাপুরী ৭

মনে।হ্রা৮ রাজপুত্রী ৯ মনোজ্ঞা
১০ মাল তী ১১ তৈলভাবিনী ১২

জনেষ্ঠা ১০ জ্লাগুল্পা ১৪। অস্যা
পুশঃ । তিকরু । শীতত্ব । কফ
মুথপাক নাশিত্ব । ইতি রাজ্জানির্ঘটঃ ॥ উক্তর্ব । তুবরত্ব । লঘুদোষ শিরো হক্ষি দন্তরোগ বিষ
হন্ত বুণ রক্তদোষ নাশিত্ব । ইতি
ভাবপুকাশঃ ॥ তৎ কল্লিল্স্যুগুণঃ ।
নেত্ররোগ বুণ বিস্ফোট হন্ত নাশিত্ব ।
ইতি রাজনির্ঘটিঃ ॥

काडीकाण क्री काडीक्व । इंडि 'र्हें इन्दुः॥

জাতীকোৰ প্লী জাতীফল । ইতি হেমচন্দু:।।

জাতীপরী জী জাতীকলত্বক্। জৈতী

ইতি ভাষা। তৎ পর্য্যায়ঃ। জাতিকোষী ২ সুমনঃপত্রিকা ৩ মালতী

গত্রিকান্ত সৌমনসায়নী ৫ জাতিপত্রী ৬। অস্যা পুণাঃ। কটুত্বং।
তিক্তবং। সুরভিত্বং। কফ জাড্য
নাশিবং। বক্তবৈষদ্য জননত্বশু।
ইতিরাজনির্ঘটিঃ।। লঘুত্বং। মাদুত্বং
। উক্তবং। কচি বর্ণ কারিত্বং। কফ
কাসব্দি খাসভ্ন্যা বিষ্ণাশিব্ধ
। ইতি ভাবপুকাশঃ।। দুর্গন্ধনাশিবং
। ইতি রাজবল্লভঃ।।

জাতীফল গ্লী ফলবিশেব:। জাবল ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। জাতী-কোব হ । ইত্যনর:।। জাতীকোশ । ত জাতিফল ও ৪। ইতি তটাকা।। জাতিশস্য ৫ শালুক ও মালতী-ফল ও মজ্জসার ৮ জাতিসার । সপুট ১০ সুনন:ফল ১১। সম্য পুশং। ক্ষায়ত্ব । উপত্ব । কতুব । কঠান্যার্ভি বাতাতীসার মেহ নাশিব । বৃষ্যব্ব । দীপনত্ব । লঘুবৃঞ্চ। ইতি রাজনিঘণ্টঃ ।। রসে তিজন্ত্ব । তীক্ষন্ত্ব । রোচনত্ত্ব । গ্রাহিন্ত্ব । স্বরহিতন্ত্ব । শ্লেম্মানিল মুখবৈরস্য মলদৌগর্ক্য কৃষ্ণতা কৃমি কান বমি খাস শোষ পীনস হৃদ্র্যাশিল্পঃ। ইতি ভাবপুকাশঃ ।। তৃফা শূল নাশিল্ব । ইতি রাজ-বল্লভঃ।।

জাতীয়ঃ ত্রি ভদ্ধিতপুত্যববিশেষঃ।
সতু পুকারার্থে ভবতি । যথা।
তার্কিক জাতীয়াইতি মুধ্ববোধণা।
জাতীরসং ক্লী বোলঃ। ইতিরাজনির্ঘণীঃ।

জাতু ব্য কদাচিৎ। ইত্যমর:॥ সম্রাবিতার্থ:॥ গর্হার্থ:। ইতি শবরত্বাবলী॥

জাতুক প্লী হিন্দু। ইতি শব্দ নিদ্বা॥ জাতুধানঃ পু• যাতৃধানঃ। রাক্ষসঃ। ইত্যমর টীকাষা• রমানাথঃ॥

জাতুষ ত্রি জতুবিকারঃ। জতুনির্মিত। ইতি জটাধরঃ।।

काराकः शृ उे ए शम उक्ता हे छ प्रमान ।। उ परमा मृष्ठे म्मा छ ।। उ परमा मृष्ठे म्मा छ छ । शु छ व नियम छ ।। इ छ छ न ।। इ छ छ न ।। इ छ छ न ।। इ छ छ ।।

का ठाकः वि बनाकः। यथा। अन रा ক্লীৰ পতিতৌ জাত্যন্ধ ব**ধি**রৌ **ত**থা । উন্মান্ত ছড দ্কাশ্চ থেচ কেচিমিরি-नित्याः ॥ इंडि मन्ः ॥

कारता वि बाठः। हे उ नुष्ठ-लाक्ष्यतः॥

জানকী দ্রী সীত।।ইতিত্রিকাওপেয়ঃ कानश्रमः शुः क्रनः॥ (मणः। हैडि त्मिनि ॥

बानू की जिल्बद्वास्त्रजामः। यें है इंडि ভाषा। उर्भाग्रायः। विका-शर्ब २ जहीर ० अहीरान् 81 ইত্যনরঃ॥ চকিকা ৫। ইতিরাদ্ধ-निर्घणिः॥

জাপঃ পু॰ জপঃ।ইতি জটাধরঃ॥ জাপকঃ ত্রি জপকর্ত্ত। জপবাডোঃ क ले ति पक शु छ। त्यम निवस्तः॥

काशन॰ क्षी नित्रमन॰॥निवर्डन॰। ইতি খ্রণিঃ॥

জাবাল: ত্রি অজাজীব:।ইত্যনর:॥ मुनिविष्णयः। यथा। जावात्मा या छ वनु कि रेवनमायन अवह । इंडि जुक्दिव छ श्रुहानः ॥

कावा चिः शु॰ चुनिविष्मवः। यथा। কাশ্যপ•। ইতি রান্দেশ।।

काममगुः भुः कममग्रिभुदः। भत्रभू-রামঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ 🦟

জানাতী পু॰ দুহিত্পতি: জানাই ইতি ভাষা।ইত্যের: ॥ স্থ্যবর্ত্তঃ ॥ धरः। इंडि मिनी।।

कामिः जो यमा।। क्लग्री।हेर्छम्बः॥ काभी जी काभिः हेि मस्बद्धार्यनी॥ कारमयः शू॰ ভाগितियः। ইতি हिन ठन्तः॥

জাৰব জী জন্কন। ইত্যম্রঃ ॥ मृत्रा । इंडि दाज नेघं है: II **जाय**-वित भुः। इति मदा छनः॥

काचनकी जी नागमननी। इंडि त्राजनिवं है।। बीक्नभन्ने। जायव करा। इंडि बी जागव ड॰ ॥

काष्यान् शुः अकताकः। म वुक्तभुजः । यथा। या हताजना नुरवा २व মহাপু।জঃ নুদুজনঃ। পিতামহ সূতশ্চাত জায়বানিতি বিশুতঃ ৷৷ इंडि तामायगः॥

कारती जी नागरमनी। ইতিরাজ-निर्घणः॥

জায়ুবান্ পু॰ জামবান্।ইতি ভরতো ষিক্সকোষশ্চ ॥

সুবজ্ঞ বালদেব্ধ জাবালি মথ । জাধুনদ লী স্বৰ্ণ । ধুসূর: । ইতি द्राजनिर्घण्डः॥ चनदिः नवः। यथा।

জানক ক্লী কালীযক। কালিয়া ইতিখ্যাত পীতবৰ্ণ নুগন্ধি কান্ত। । ইত্ৰৱঃ ॥

জায়া স্ত্রী ভার্যা। ইত্যমর:॥ জায়াজীবঃ পু॰ নটঃ। ইত্যমরঃ॥

कायानुकी वी श्र. नहें ॥ वक्शकी। इंडि (मिनी॥ विनात्रिक्ता हैंडि नद्रकावनी॥ मुद्रः। इंडि (इंग-हन्मुः॥

ভাষাপতী পু ভার্তাপতী। মাগু
ভাতার ইতি ভাষা। নিত্য দ্বি
বচনান্তা ২য় শব্দাইত্যমরঃ।।
ভালঃ পু ভষ্ম ইত্যমরঃ।।
ভারঃ পু উপপতিঃ। ইত্যমরঃ।।
ভারগা বি উপপতি লাত সন্তানঃ।
ইত্যমরঃ।।

কারণী আঁ জুলধীরক:। ইতি রাজ-

নিষ্য টঃ ।। জারী স্ত্রী প্রধ্বীবিশেবঃ। জাড়ী ইতি ভাষা।ইতি নেদিনী॥

জাৰুথঃ পু॰ ত্রিগুণদক্ষিণাক্য**ক্তঃ।** ইতি নহাভানতে বনগর্ব॥

काल की सनान्यां उन्हाहि निर्मित्र न प्राहि धात्रां शायः । उद भगायः । यानायः २। इञ्जनतः ॥ कानकः ०। इठि मदत्रद्वादनी ॥ गवाकः ॥ कात्रकः । भञ्च यद्वृष्ठे किनका स्पाश्चाहि कृषुक्वस्थ ॥ दशः ॥ मग्रः । इठि (स्मिनी ॥ देन्द्रकानः । इठि (स्मिन्द्रः॥

जानः शृ कम्यवृक्तः। ই ि तिमिनी॥
जानकः क्षी ज्यु हेकनिका। ই ि
हतकः ॥ स्या शिम क्ष्मुक्नः।
हेि मात्रन्त्री ॥ स्थार्या श्रामः।
कात्रकः २। ই छ मत्रः॥ कात्रकः॥
माञ्चः ॥ क्नायः॥ स्थानायः। ই छि
स्मिनी॥ मम्रः। ই छ मन्द्राः।
वनी॥

जानक ती जी पाठक्कन । इंडि (मिरिनी।।

জালকঃ পু• গবাকঃইতিহেমচন্দুঃ॥ জালকারকঃ পু• মর্ক,টকঃ॥ইতি হেমচন্দুঃ॥জালকভরি বি॥ ৰালিক

कालकिनी जी (मरी। इंडिस्मिन्मुः॥ कालगर्फ्डः शृ॰ (द्वागिविश्मियः। उम्र) काकग॰ यथा। विमर्भव प्रभिष्ठि यः भाथसम् द्वभाकवान। माइस्कृतकदः भिडा प्रस्ति । कालगर्फ्डः॥

इंडि नाश्वकतः ॥ जानरगानिका जी मधिनश्चन छाउ विरम्पः। ७९ शर्य∫ायः । कथाना २ । र्डिमद्दु ज्ञावनी ॥

জালন্বঃ পু॰ বিগর্জদেশ: । ইতি কোন্দ্রঃ ॥ তদেশস্থে পু॰ ভূরি।। জালপাৎ পু॰ হ•সঃ। ইতি বিকাও-শেষঃ॥

জালপায়া ত্রী অঙ্গরকিণী। লোহা-র সাজোয়া ইতি ভাষা। ইতি হেমচন্দু:॥

काल व त्रकः श्र व त्र्त्र क्वित्नियः

। ज श्रांगः । ह जाकः २ ह्ल

क के कः ७ ज्ञानाथः ८ उन्हायः ६

तक्षक के । ज ज ज ज जानावः । शिख माह

कातिवः। क वायवः। उक्ष व । हे कि

' त्राक्ष निष्यः।।

क्वालिकः शृ॰ मर्क हेकः। ইভি হেম-চन्द्रः। टेकवर्डः। ইভি ত্রিকাওশেষः ।। বাগুরিকঃ। জালেন মৃগবন্ধন কর্ত্তা नाइ वी

। ইত্যনর:॥

कालिकः वि शुगकाली। क्रिलेशकीवी। ইতি মেদিনী॥
कालिका की व्यविष्णयः॥ गितिनातः
॥ कलोका॥ विषया॥ उद्योगमान्य
व्यविष्णवः॥ विषया॥ उद्योगमान्य
व्यविष्णवः॥ विषया॥ उद्योगमान्य
व्यविष्णवः॥ विषया॥ उद्योगमान्य
व्यविष्णवः॥ विषया॥ उद्योगमान्य
कालिनी की विव्याला। ই उद्येगमान्य
विष्णवः॥ व्यायाउकी। ইতি दान
माला॥

জালী জ্রী জ্যোৎস্মী।বিক্সোইন্তি খ্যাতা।ইত্যমরঃ॥পটোলঃ।ইন্তি রাজনিঘটঃ॥

জাল্ম: ত্রি পামর:॥কুরঃ॥ অসমীক্ষ্য কারী। ইতি মেদিনী॥

জাষক স্ত্রী কালীয়নাম গন্ধদুব্য । ইত্যমর টাকা সারস্করী।।

জাহক: পু (ঘাছু:। যোঘইতি ভাষা
।। মার্জার:।। পট্টা।। কাক গুকা।
ইতিমেদিনী।।বিলেশ্য জন্তবিশেষ:
। তৎপর্যায:। গাত্রসংক্ষার্চা ২
নগুলী ৩ বহু কপক: ৪ কানকপী
৫ বিজ্ঞান্ড বিল্বাস: ৭। ইতি
রাজনিঘটঃ !।

काङ्ग् वो जी गन्। इंटिं एमम्पुः ॥ अञ्चाम काइन यथा। जानू हाजा

পুরা দত্তা জহু: সংগীয কোপতঃ ुः ज्ना कन्या यक्षणा जाङ्ग्वी (उन की विजा।।इंछि वृद्धरिवदर्व बीकृष क्रमथ्यः ॥ 🕸 ॥ उम्राः जिथि विरुग्ध शान क्ल प्रथा। जानाना क्तियमञ्चान महन्नः भृगु मुन्दति। शून्। न मगुन्दिक्षव भोषण श्रान**ङ**ः পর•া। তত ব্রি-শদ্গুণ• পুণ্য• রবি म क्रम्श मिति। অমাযাঞ্চাপি ख बुनाऽ विथ्य मि**क्षांयत्।। उ**खा म् भागुनः शुगुः नतानारका उतायरा ৷ চাৰ্ভিনাম্যাণ শৌণনাম্যাণ অনস্তণ भूग (मन्ह ॥ सक्तावाक उत्तार रेन ज्राहर निक्रिण । वाम था, भूगा ক্ৰছ মেতেষু শ্বান দানকণ নামান্য ित्वम ज्ञानाय मानायमञ्चल। ज्द< ॥ मनुखन्नाषा **(म**विना गुगान्।।वा• जरेशवह। माघमः। भिज সপ্তন্যা • ভीचा। छैम्पा • खेष्त्र॥ **उ**रञालि दिख्यः भूगः महात्याः च्य पूर्वाञ्च। प्रभावती प्रभावतीक यूगाम्। मि सम्यानाः। नन्तानस्य বাৰণ্যা• মহৎ পূৰ্বে চতুর্গ্ণ। তত भार शूर्शा • भूगा • विनइ ९ शृ विक मि ।। शूनी का छिला दिन मानाना माना हि वर । हत्मु भिद्राग

मगर्य मृर्ग्य मणगून छडः॥ भूत्। श्राक्त हर्य काल छडः मछगून कन्न । गर्ब बारमय मझन रेवकवाना विशर्य प्रशः ॥ इंछि युक्त देवर्ख शुक् छिथ छ ॥

জি • জ্বে।। অভিভবে। ইতি ক্বিকল্পদ্যঃ।

জিঃ ত্রি জেতা।। পিশাচে পুণ ইত্যে-কাক্ষরকোষঃ।।

जिगजुः शु॰ शुगिवागुः। ইजुगिहि-कारा।

জিগমিষা দ্রী গমনেছা। ইতি ব্যাকরণ ।।

जिशीया खी करगहा॥ त्रत्रमायः ।

शुकर्यः। ইकि गिरिनी॥

जिथ्या खी कृषा। ইकि स्मिक्तुः॥

जिथ्या कि कृषिकः। ইक्रमदः॥

जिथा नकः जि स्मित्रकः। ইकि

त्राकत्राः॥

জিঘা সাজী হননে ছাইতিব্যাকরণ জিঘা সু: পু: শত্রঃ। ইতি হেনচনুঃ ॥ হননেছো জি। যথা। পুশান্ত চেই হরিণ কিঘা সুরিতি ভড়িঃ॥ জিঘু: জি ঘুণক ভা। যথা। সামী নিশ্বনিতেপ্যসূষ্তি ন্নো জিঘুঃ সপত্রী জনঃ। ইতি সাহিত্যদেশ্নং॥ দ্বিতারি

किलिनी खी वृक्तविष्मयः। उৎ शर्यायः 1 विक्नि २ विकी ० मूनियामा 8 भुशानिती ६। अन्। गृगाः। मध्-बङ्गा डेक्ड्रा कवायज्ञा यानि (मामन्द्रः । कृद्धः। दुव इत्याग বাজাতীসার নাশিত্ব । পটুত্বক। ইতি ভাবগ্ৰাশঃ॥

किंसी की मिलिशा हे अमदः॥ লিতঃ পু• অর্নুপাসক বিশেষঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥

জিডঃ ত্রি পুাপ্তপরাজ্যঃ। ত**েপর্যা**য়ঃ 🔢 **।পর ভে তঃ২ পরিভ্তঃ৩ অভিভূতঃ** ৪ ভগ্ন ৫ পরাজিতঃ ৬। ইতি 🛚 (इन्हमः॥

জিতকাশিঃ পূ• দৃদমুপ্তিঃ৷ ইতিভারত **ठीकाया॰ नीनक्थः** ॥

লিতকাশী ত্রি জয়সূকঃ। তৎপর্য্যয়ঃ । জিতাহ্বঃ ২। ইতি হেমচন্দুঃ।। জিতনেনিঃ পু॰ অশ্বত্যনিনিতদ্তঃ। **७८१**र्यायः । जाम्यः २ । इंडि (इग्रहन्तुः॥

জিতশত্ৰঃ পু॰ বৃত্তাহ্ৎপিতা। ইতি ह्महन्दुः॥ क् उभे बु भन्ना प्रति॥ জিতানিত্রঃ পূ• বিষ্ণুঃ ইতি শব্রহা-বলী। কৃতশত্রপরাজয়ে ত্রি॥

শেষ: 🗓 বৃত্তাহ্ৎপিতা । ইতি হেমচন্দু:॥ ক্বিতশতৌ বি ॥ 🖰. জিতাহব: পু· জিতকাশী i ইভি (रमञ्मुः॥

জিতাক্রঃ তি কৃতাক্ররর:।।বশী-ভূ তাকরকঃ। দৃষ্ঠি মাত্রেণাকর (वादिन भाठेकसः। इंडि लाक-शुभिषः॥

किर अन्ति । वि वनी कृर अन्ति यः। उट भर्यायः। भाउः २ माउः ०। ই जि (इग्रन्दः ॥

जिर्जिन्स्याद्यः शु· क्सिव्कित्कः। ैं कि ताज निर्द्धिः॥

জিৰুনঃ পূ॰ জিতুনঃ। সিথুনরাশিং। ইতি জ্যোতিষতত্ত্বণা জন্দীলানা• मः भाषे उत्तर ।।

জিত্য। স্ত্রী হলি:।ইতি হেম**দ্র**:॥ জিবুরঃ ত্রি জেতা।ইত্যমরঃ !!

জিন্বরী স্ত্রী কাশী।ইতিত্রিকাণ্ডশেষঃ किनः शु अर्हन्।। तृष्तः।। वियुः। ইতি হেমচন্দুঃ।৷ অতিবৃদ্ধঃ৷ ইত্য-ণাদিকোষঃ ॥ জিত্বুরে ত্রি। ইতি (मिनिनी॥

जिनयानिः शु॰ भृगः। ইতি मदत्रा-वनी॥

জিতারিঃ পু॰ বুদ্ধাইতি ত্রিকাও- জিনস্ফ লী জিনগৃহ•।তৎপর্য্যায়ঃ।

চৈত্যঃ ২ বিহারঃ ৩। ইতি হেম-চন্দুঃ॥

- जितनपुः शृ वृषः। ই कि इतायुषः॥
- जिम के ज्या । ই कि कि विकास मा।
- जिति तम शिर्माया। । है कि कि विकास मा।
- किति तम शिर्माया। । है कि कि विकास

जिव हे शीगता ३ उक्विक प्रमाः॥ जिवाजिवः शु॰ कीवकी वशकी। इंडि भक्ष बद्दावनी॥

जितुः शु॰ गमगः ॥ शकी । इठि गिषा छ (को मृष्ण) सूपापि वृद्धिः ॥ जिय छ (यक । इठि कविक सुक्रमः॥ जिकुः शु॰ विष्णुः । इठि (क्षण न्युः॥ केन्युः॥ यज्ञ निः॥ (जर्जात्र जि। इठि (मिनी॥

जिन्नः ती जगतवृक्तः। इंडि स्मिनी।। जिन्नः वि अधिनः !! सन्तः। इंडि स्मिनी।।

किकागः शु अर्थः॥ मन्द्रश वि । इंडि (मिनि गे।।

 क्रिकारमाञ्नः शृ (छकः। ইতি मद-त्रवातनी ॥

জিন্ধশল্যঃ পু॰ খদিরঃইতি জটাধরঃ জিল্প ক্লী তগরল্ল•াইতির রুমালা।। জিল্প: পু॰ জ্রী জিল্পা। ইত্যনর টাকাবা• ভরতঃ।। জিহাল: ত্রি লুকা: । লোলুপা: । যথা ।
শুক্ষাক্তর পরশুক্ষে ভূঞ্জে যেচ
জিহালা: । পতন্তি নরকে যোরে
লুগু পিণ্ডোদক ক্রিয়া: ।। ইতি
শুক্ষেত্র ।।

জিষা ব্রী রসজ্ঞানেন্দ্রিশ। জিব ইতি
ভাষা। তৎপর্যায়: । রসজ্ঞা ২
রসনা ৩ । ইত্যার: ॥ রশনা ৪
রসনা ৫ জিল্ড: ৬। ইতি তউীকা॥
অসাঃ পরীক্ষা বথা। শাক্পত্র
পুভা ক্ষা বুটিতা রসনানিলাং।
রক্তা শ্যামা ভবেৎ পিত্তালিপ্তাদুর্গিবলা কফাৎ ॥ পরিদক্ষা খ্রশানিক্ষা দোষত্র্যে হবিকে। সৈব
লোষ ঘ্যাধিক্যে দোষ দ্বিত্য লক্ষণা
॥ ইতি ভাবপুকাশঃ॥

জিহানিলেথন ক্লী জিন্তামার্জন।

জিহালাত দেশাকুল কোনল
কৃশ স্বৰ্ণ কেপ্য তামুলোহ

নির্মিত জিহ্বামলাপকর্ষণে পুশন্ত
। তস্য গুলঃ। বভুবৈরুষ্য জিহ্বাদ্

শ্বিষ্ঠ মল নাশিল্ব। আরোগ্য কৈটি
কারিল্বঞাইতি রাজবল্লতঃ !!

জিহ্বাপঃ পুণ সফুরঃ ॥ ব্যামুঃ ॥

বিডাল: ॥ ভল্লুক: ॥ ইভি শব-রত্নাবলী ॥ চিত্রকব্যাঘু: । ইভি বিশ্ব:॥

জিস্থানল ক্লী জিস্থাস্থিতনল । তৎ পর্য্যায়ঃ। স্বলুক ২।ইডি জিকাও-শেষঃ॥

হেমচন্দুঃ!!

জীনঃ ত্রি বৃদ্ধঃ। ইত্যমরঃ!!

জীনুতঃ পু॰ পর্বতঃ!! নৈদঃ । নৃতা।।

দেবতা ডবৃক্ষঃ । ইত্যমরঃ !! ইন্দুঃ ।
ভূতিকরঃ ॥ ঘোষকলতা । ইতি
হেম্চন্দুঃ !!

জিহ্বায়াদঃ পু॰ নেত্ন•। ইতি

জীগৃতকূট: পু• পর্যত:। ইতি হারামগী॥

জীন্তসূল জী শটী। ইতিরন্নসালা। জীন্তবাহন: পু॰ ইন্দুঃ। মেঘবাহন ইত্যমর দর্শনাং ।। ধর্মারন্থ নামক স্তি সংগৃহকভাচ।।

জীন্তবাহী পু॰ ধুনঃ। ইতিছেনচন্দুঃ
জীরঃ পু॰ জীরকঃ ॥ খরঃ। ইতি
নেদিনী ॥ অনুঃ। ইতি সিশ্ধান্তকৌসুল্যা মুণাদিবৃদ্ধিঃ॥

জीतकः शुर दिल्लु गुर्विष्युष्ट होता इ जि जाया। ज भगंगमः। सन्नाः ২ অলাজী ৩কণা ৪। ইত্যারঃ ॥ कीर्नः ৫ की बः ७ मी भाः १ की त्राः ৮ অন্নাজিকা ৯ বল্লিখঃ ১০ बाग**दः ১১ । ज्ञानुग्नः ! क**हुन्न• ! উक्ष्व्। मीপनव्। याज खन्याध्याना-তীসার পুহণ ক্রিনি নাশিব্ধ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।:কটি বর কারিত্ব• । গত্নবুক্তর্•। কফ বাত না**লিত্ব•।** পাকে কট্র•। তীক্ষর•। লঘুর্ব•। িত্রকর্মরুঞ্।ইভিরাজবল্লভঃ !! জীরণঃ গ্ জীরকঃইতিরাজনির্ঘটাঃ৷ জারিকা স্ত্রী বংশপত্রীভূণ ু। ইতি রাজনির্ঘ-টঃ॥ ্বী জীন্- প্লী শৈল্জ-।ইভি রাজনিষ্ট::

নীর্ণ: পু॰ নীরক:।ইতিরানমিটিঃ।। নীর্ণ: তি বৃদ্ধ:।ইত্যমর:।। পুরাতন:

শইতি হেমচন্দু:।।

कीर्गनाकः शृ॰ वृद्धानातकः स्वः । किन्न विद्याता विष्मय देखि (लाक । ख्यः । शर्यायः । कीर्गकक्षी २ मूश्रीका ७ विद्या खन्नता ८ मृज्यश्यां ६ । खन्मप्रक्षाः । श्यानप्रदेश शिक्षित्वः । कक वाज कानामामा सामितः । वन्मप्रकः । देखि जानिर्मितः ॥ '

জীর্ণপত্রিকা স্ত্রী বংশপত্রীতৃণ•। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

कीर्गशर्भः शुः कष्यः। इंडिद्रावनिर्यणः ॥ ॥ भूदाउनभव्य द्वी ॥

কীর্ণবজু লী বৈকান্তমণিঃ। ইতি রাজনিষ্টিঃ॥

कीर्गवञ्च क्षे भूताउनवञ्च । उट পর্য্যাय:। পটছর ২। ইত্যমর:।।

की वृद्धः शुः शिकालाषुः। ইতি दाइनिर्वणः॥

জীর্বুক লী পরিপেল। কেওট মুতাইতি ভাষা।ইতি রাজনির্ঘট: জীর্ণা জী স্লজীরক:।ইতি রাজ-নির্ঘট:॥

को निः की कार्मानः। को ने ठा। ইত্যনরः को বি: পু সঠার: । ইতি সিদ্ধান্ত- कोगुम्हा भूगारिवृद्धिः ॥ भक्छे ।। कायः ॥ शणुः॥ **इंडि मः कि**छमात्र উगारिवृद्धिः॥

নীর শ্ব প্রাণে। প্রাণধারণ ইতি ্বেবং। ইতি কবিকল্লফমঃ।।

श्रीकः भू॰ अभूशात्रगः। ইতামतः॥ शुंगी ॥ वृद्धिः ॥ वृक्कविष्णवः॥ বৃহস্তি:। ইতি সেদিনী।। কর্ণঃ । ইতি ধরণী।। (ऋजक्कः। তৎ পর্য্যায়ঃ৷ আত্মা ২পুক্ষ:৩ পুদ্ধল:৪ অন্তর্যানী ৫ ঈশ্বর:৬। ইতি ত্রিকাণ্ড-(भवः।। उत्र अक्षण यथा। क्रयंगा জীবৰূপণ্ট সন্তত তৎফলপুদঃ। কৰ্মৰূপশ্চ ভগবান্ শ্ৰীকৃষ্ণ:পুক্তে: পর: 11 সোপি তত্ত্বেত্রপশ্চ কর্ম তেন ভবেৎসতি। জীবঃ কর্মফল• ্ভুড্ক আত্রা নির্লিপ্ত এবচ ॥ व्याजानः পुछिविषक (मही कीवः न ववठ। भाग (महामि ज्याहरी স জীব: পরিকীতিত:।। ইতি বুন্ধ-বৈবর্ত্তে পুকৃতিখণ্ড• ।। 🕸 ॥ বেদান্ত माउ घटाविह्याकाण वर महीत ব্রিত্যাবৃহিন্ন চৈত্র্য ।। কেুবা-ঞ্চিমতে দর্পাত্ত মুখপুতিবিশ্বং বুদ্ধিছ চৈতন্য পুতিবিশ।। बीवः शु॰ क्ली कीविछ। इंछि सिमिनी।। **>२ नयु ३३:>० मऋ नाऽः >8** क्रॅमीयंकः १५ व्हारः १५ यागु-भान् २१ जीवनः २५ वननः २३ । ष्यमः यूषाः । सयु उद्गः। भी उद्गः। तकि शिवानिवा विकय पार्क्त न। बिद्धः। भूक (मुग्र विवर्षा नद्दकः। ≷ 🥭 রাজনির্ঘ-টঃ ॥ বল কারিত্ব• । कार्भी वाज नात्मिन्नः । जन्य क्रमः यथा। জীবকর্ষ ভকৌজ্ঞেয়ৌ হিমাদু শিথরে।ভারী। রসোন কন্দবৎ कल्मो निःमारतो मृश्वंभवको ॥ कीवकः कृईकाकात्रः वायाचा व्य **ण्यत्राजीवकर्य ज्वस्रात विना-**রীনূন। ইতি ভাবপ্কাশ: ॥ 🕸 ॥ शु । कि ।। भी उना वः ॥ क्रमाः। ইতি নে দিমী।।

की तकः जि (मवकः !! वृष्णां भी ।। की वी ।। चित्र जिकः । देखि (मिनी।। की विज्ञीयः भुः जी विक्षी विभक्षी। देखि भक्ष बद्दावनी।।

জীবঞ্জীবঃ পু: চকোরপক্ষী। ইত্যমর: "

॥ वृक्षिविष्णयः। इंडि मिनि ॥
कीवलाका जी कीवल्यू किका। उद् शर्यायः। कीवस्थः । इंडिल्स्मिन्धः॥ कीवल्याः जी नथ्या । इंडिल्स्मिन्धः॥ स्मिन्धः॥

कीव शिव्कः श्रु विम्यानिशव्कः
। यथा। यभा ज्ञान श्रवा मुक्तः
मिक्ता नूथ (जाकन । न कीव श शिव्कः वर्षा श्रवा क्रिका शिव्हा
ज्वरा है जिथ्यामि जव् ।

की तथः शृ॰ शृशः। कृयः। मन्तः॥

ययः॥ शिचिकि वित्रायुवि वि वि ।

हेजुशाहिकायः॥

জীবদঃ পূ॰ বৈদ্যः ॥ বিদ্বিট্। ইতি
নেদিনী ॥ জীবনদাতরি তি ॥

कीवमाधी जी अस्तिः। इंडि ब्राकनियण्डः॥

জोत्यन ्री ग्राप्तिक । ইতি ত্রিকাগুশেয:॥

জীবন প্লী বৃত্তিঃ।। জল।।। পুন্ধ রেশ।
। ইতি নেদিনী।। হৈণক্ষীন । ইতি রাজশক্তিন্দুকা।। মজ্জা। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

कीवनः शृ कीवरकोषधा वाज्य है जि वाकनिर्घणः ॥ क्रूपुकलक वृक्षः । है जि मद्यानुका ॥ शूबः । है जि (र्यष्युः॥

की वनक की जान । इंडि (इमहन्पुः।। की वनवानिः जी यह वित्मवः। मञ् जी ने पुषः महोति शुगिमका । का त्रा । इंडि जा या श्रीति हुनः।। की वना जी त्या ने विष् । इंडि त्या नि ।।। की वना या जिल्हा । विष । इंडि मक् हिन्दुका।।

कीवनावामः श्रु वक्षाः। ইতি मक्-त्रज्ञावनी ॥

कीবনিকা ত্রী হরীতকী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

कोतनी जो की तही। काकानी।।

(उ। डो।। (न्रा।। न्रायका। हिंड ताकनिर्धणैः।। ग्री। हेंडि नद-हिंगुका॥

कोवनीय को जल । इंडि एक् महन्तुः॥ कोवनीय गणः थु अवस्ति (मवः । यथा। अक्षेत्र गर्ना (नित्रो कीवडी नत्र ख्या। कोवनीय गणः (भूणका . कीवन खभन खया॥ इंडि देवन्त क श्रिकायः॥

कीवनीया जी कीवडी। ইতাসর:॥ कीवतन बी जी रिमः इली। ইতি রাজ-নিঘটি:॥

कीवानीवयः क्री यन मियमाणा कीवि

उप्तिषय । जीवब्रक्ताकावि । जीव (नाशायः। उर्श्यग्रायः । जीवाउः २। ইত্যमतः॥

की वष्ठः श्रु॰ ঔषद्यः।। श्रापः ।। श्रायः-विभिष्टे वि । इक् गाहित्कायः ॥ कीवमाकः। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

बोवञ्चिकः शृ• कीवाञ्चकः । इञ्जात होका नात्रमुन्सत्री ॥

জীবস্তিক। জী বন্দ।।বৃক্ষোপরিজাত বৃক্ষঃ ॥ পুড়ুগী॥ জীবাখ্যশাকঃ। ইতি নেদিনা॥ জীবতীহরীতকী। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

कीवडी को लंडाविष्मयः। कीवह है डिं कीयां डी हैंडिंग जायां उट मर्गायः । कीवनी र कीवनीयां 2 कीवं 8 नर्थः के। हैंडिंग्नं देशां कीवना के नर्थम्वा न मुवाकः। हैंडिं उड़ी कां।। भयस्रिनी 2 कीवाः 20 कीवं कां।। भयस्रिनी 2 कीवाः 20 कीवं कतां 28 जम् 20 म्लां 20 कीवं कतां 29 कां कि कार 2 मन्निविश्व को कि रूग्नं दिवा विकास के। स्वृथ्यामा रूप्ता दिका देश कीव्या देश कीव्या देश हैंडिं (किंग्रिटा। सम्प्रा कीव्या देश हैंडिं (किंग्रिटा। सम्प्रा शृशीः । मधुत्रवः । भीजवः । तक शिख वायु क्रय मारु जृत नामिषः । क्र वीर्यः विवर्ष नवृश्चा रेठि त्राक्ष-निर्माणेः ॥ सामुष् । त्रिश्वः । विद्यास नामिषः । त्रमायनषः । वनकातिषः । क्रक्रिं जुः । गुार्श्विः । नयुष्यः । रेठि जावधुकामः ॥ भाम काम धानुक्रय नामिषः । स्रतकातिष्यः ॥ मृताष्ट्रे (मण्ड सर्गवर्ग स्तिष्यः ॥ मृताष्ट्रे (मण्ड सर्गवर्ग स्तिष्यः ॥ मा (त्रस् भाक स्त्रां स्तिष्यः ॥ भनी ॥ गुष्वी ॥ वन्ता । रेठि (मिनी ॥ एपाष्ठो ॥ रेठि त्राक्ष निर्मि ॥ एपाष्ठो ॥ रेठि त्राक्ष निर्मि ॥ एपाष्ठो ॥ रेठि त्राक्ष निर्मि ॥

की विश्व कः वि अ अवनाथ ও বুকাণি

नाका । কৃতে হজান তং কার্য্য

निक्ष তক্মাদীনা বাধি তত্ত্বাদিখিল

বিদ্যা বিশ্ব বি

कीव भू जकः । इं कि मिन्नः । इं कि मिन्न इं विवास की या-भू जा इं कि जाया। इं के अन्न की काया-नू जा इं कि जाया। इं के अन्न की काया-न्र जानाथः ॥

• की वश्रा जी वृश्की वडी। है जि त्राक निर्धिः॥

লীবপুৰা জ্ৰী হ্রীতকী।ইভিরাল-নির্ঘটঃ॥ जीवज्या जी जीवजीवजा ॥ वृष्क-नामीवयः। इंजि ताजनिर्घणः॥ जीवनित्तः मी मतीतः। इंजि निभ-हिम्द्रितः॥ जीवना जी मिश्नी। इंजि ताज-निर्घणः॥ जीववली जी कीत्रकाकानी। इंजि ताजनिर्घणः॥

জীবশাক: পু নালবে পু সিদ্ধ শাক বিশেষ: 1 তৎ পর্যায়ঃ 1 জীবন্তঃ ২ রক্তনালঃ ৩ তামুপত্রঃ ৪ পুবালঃ ৫ শাকবীরঃ ৬ সুনধুরঃ ৭ মেবকঃ৮ ১ অন্যপুণাঃ 1 সুমধুরত্ব: 1 বৃ হণত্ব ১ বস্তিশোধনত্ব: 1 দীপনত্ব: 1 পাচ-নত্ব: 1 বল্যত্ব: 1 ব্ধ্যত্ব: 1 পিত্তাপ-হারকত্বক। ইতি রাজনির্ঘটঃ 11

जीवम् ह। जो की तकाकानी। इंडि ताजनिर्धणः॥

जीवरम्का जी अकिनामीयव । इंडि

জীবসংজ্ঞ: পু• কানব্**জিব্ঁক্:।** ইতিরাজনির্ঘণী:।।

জীবসাধন ক্লী ধান্য । ইতি রাজ-নিঘট: ॥

জীবসৃং স্ত্রী জীবন্তোকা। জীবৎ-পুত্রিকা।ইতি হেমচন্দুঃ॥

कीवश्रानः क्री मर्गा है डि श्लायुदः॥ र्जाता खी जीवडीतृकः॥ भोही ॥ বঁচা।। শিঞ্জি হ ।। ভূমি:। ইতি (गिमिनी।। জीवि उभ इंडि क्राँगिस्तः बीतभ्जः शुः क्री छकः॥ बीविजः॥ जीवत्नोषदः। इंडि (मिनि)।। कीताज्ञो शु॰ (मञी: उৎ शर्यायः। श्रम छ गी २ जी गः । गम् भाग ३ मञ् ৫ (रइज्ट ७ जन्नः १ जगुः ४। हैि (इन्जिक्षा नानी त जिनः २०ज ती २२ महीती २२। इन्डास्वः ॥

**E**94; 11 জীবান্তক পু জীবনার্থ পদিবতিকঃ । उर्शन तिः मा क्रिकः २। इंडा-गतः।। जीव नागत्क जि॥

জীবাধারঃ পু॰ কেব॰।ইতি হেম-

की ताला जी रेन (इली। इंडि बाब-निर्घण्डः॥

बीविका जी बीवरनाभागः। उर शर्गागः। आजीतः २ वार्डा **उ** वृखिः ৪ বন্তন ৫ জীবন ৬। ইত্যনর:॥ कीवः १। इंडि भवत्रात्नी ॥ कीवडी । इं जि (म'मनी।।

बीविकः दो बीवनः। इकि (इमहन्तुः ॥ की वचनुरङ जिला

जीविञ्जा जी नाजी। ইতি রাজ-निर्घणः॥

कीविः जनः शु. शुगननाषः॥ यमः॥ ठन्दुः॥ नृर्य्यः। **३७ मदत्र**क्षावली।। জীবাতঃ। ইতি ছেমচনদুঃ। জীবি-তেশ্বে ত্রি। ইতি দেদিনী।।

जीती पू॰ भागी। यथा। जीविना॰ , দাৰুণোরোগঃ ক্মভোগঃ শুভা-मु जः। ভক্তে रेवम्। सः निरुष्टिक्यः ভক্তि तमायना । । इंडि नुक्ति वतार्ड गानिश्व ७ ॥

जीवता जी शाक्रुतम्था !! कीवडी !! **इ**ब्रोडकी। ই डि ब्राइनियं**डेः॥** त्र श्रि। इंडि कित् क्लूफ्नः॥ জ্ ড গত্যা । ইতি কবিকলুদ্দমঃ॥ জুণ ই ত্যাগে। ইতি কবিকলুজনঃ॥ জুগুপ্লন ক্লী নিন্দা। ইতি হেমচন্দুঃ॥ जुगुङ्गा जी निन्ता। इंड्रामद्रशा जुक्ः शु॰ वृक्षमात्रकः। ইত্যমतः॥ जूककः भुः वृक्षमात्रकवृक्षः । इंडि রাজনির্ঘণ্ট:।।

जुका खी जुकः। ইত্যমরটীকাষা• त्रमानाथः॥

জুঙ্গিতঃ তি ত্যক্তঃ। জুগ ধাতোঃ कर्या कि शुक्रायम विद्वार ॥

कीविङ्गालः भः भागुः। हेल्प्रमृतः॥ ॥ जूरेकः ती करे।। हेलि मध्वद्रात्वी ॥

इंडिज काका है कि लग ए। देवी। ভাভ ক পেরণে। ইভিক্বিকর্দগ ।। **जुड** भि दरकः है 5 करिकड्स्बरः ॥ अप्र म गाउँ। इंडि क्विक्ल्काः । क्ठ था छ मीखो। इंडिक विहन्यमः জুন শ পতৌ। ইতি কৰিকলু জনঃ।। জুর্ব 🗗 বংখ। ইতি ফবিকল্পজনঃ।। জুল ক পিৰি। চূণী করণে। ইতি क विकन्नक्यः॥

জুষ কি তকে॥ তৃ:প্র1। ইতি কবি-कन्नक्रमः ॥

जुन 🕮 म ७ वे इत्य ॥ (मत्ना ইতি ক্বিকলুছন:॥

ङ्गु इः शु गृषः। इ**डि भद** हिन्तुका॥ जुड़े- हा डिहिंड-॥ (मिनिट बि। इंडि (मिनिनी।।

দুখঃ ত্রি সেব্রঃ। ইতি মুক্ষবেষে।। জুল্বানঃ পু॰ কঠিনজ্দ্যঃ ।। অগ্নিঃ वृ दिशा

'ক্তি যজপাত্ৰ•।। জুহোত্যন্যা জুহুঃ। ইত্যমর ভরতৌ।।

জু চুরাণঃ পু॰ অগ্রিঃ। অধ্যারি। ইতি বিভিন্ন জী জুরঃ। ইত্যমরঃ।।

इंडिका की निया। एं हैं इंडि दिनी । जुर्वान् श्र आहि। इंडि अम्बर्हा-

ष्ट्रं वाकानः। सत्रव अ। शिनांगं । करम । इंडि भदाद्वादनी ॥ বুরাগলন।। গনন। ইতি মেনিণী।। ज्रे १ १ भिवजित। इंडामत्रीकायाः ভরতঃ: জটা। ইতিশব্যহ্রাবলী ॥ জুটক ক্লী কেশ্বন্ধঃ। জটা। ইতি ভ্রিপুযোগঃ ॥

जु कि: जो (वनः। **३ कामतः**॥ জু জিক। দ্রী কপ্রিভেদঃ। ইতি রাজ-निर्घ हैः॥

কবিকল্পজনঃ॥

জনাধঃ পু॰ তণবিশেষঃ। উলু ইতি ভाষ।। उर्शिगामः । मृह्याः २ कृतकः अस्डिं S चत्रहमः 🕒 इंडि इङ्गाना । **উ**न्क ७ **উन्भः १** । ইতি কেচিৎ॥

॥ বৃক্ষা ইতি সংক্ষিত্রসারে উণাদি- 🖁 গুণাল্যঃ পু• দেবধান্য• । ইতি (इस्टन्मः ।

कुष्टः जी भनामकाधिन्यि जार्फाजन्द्रा जूर्गिः जी (वगः। इज्रागितकावः॥ ्षानि जाः ॥ (मरुः ॥ वृक्ता ॥ जुतः । इंडि म किथनात उना दिव् खि:॥

विषः॥ हन्द्रः। इक्ति।हिरकायः॥ । जून यः वर्ष। इंडिकविकस्प्रमः॥

कृषः ती गु॰ यृषः। मृहानि हाथतमः । ।
•हें ज विकासिमः गुरु विकासः ।
•हें का

ज्मा : हो न्यः विश्ववः। शहेकुन ५०। फाया। ইতি सद्द्रान्ति ।

ख् • नाहात् । इंकि किनिहासमः। खृ च दे ६ ख्रा । इंकिनिहासम्बद्धाः। खृ च दे ६ ख्रा । शावामध्यम् दे इंकि नावट । इंकि किनिहासम्बद्धाः। ख्राह्यः वि नुशां किनिहासः। हाई इंकि ख्राह्यः। इंटि श्राह्यः। इंहिन्द्र छ्रा

श्रिका 81 है जि महाज्ञावनं ।
 अञ्च के प्रकार। है जि हा जिस्पेट ।
 स्कु जिल्ला के मंगीति गाँ । है जि है जिस्ता के ।। कु तूर शक्र क्रियु विकास । कि मार्थि के विकास । कि मार्थि के विकास ।
 रें कि कर्मा कि निकास । कि ।। विकास ।
 रें कि कर्मा कि निकास ।

া। মুরে জঃ। ইতি শবর রাবলী।।

জয়ন কী জৃষ্টঃ। ইত্যনরঃ।।

জ্য়া জ্ঞা জ্য়াইতি শবর রাবলী॥॥

জ্য়েকা জী জ্য়াইতি শবর রাবলী

জ্য়ত কী বিচেক্তি ।। পুর্বা ।

জৃষ্টা। মুটি জাইতি হে সচন্তা

खीगा कर्ने । इंडि सिमिनी।।

ब्खिनी खी अनाशगें। इंडि मद-

**विद्का**ः

ू य इत य म ज्यान। शलवङ्बारा।
जाव इंडि शावट । इंडि कृविकन्नजनः ॥

कृ नि कि कारन हिलादिकहम्मा জেতা ত্রি জয়শীলং। তথ্যসংগ্ৰহণ জিকাং ছিত্যতৈ ছৈত্ত। ইত্তারঃ (जन्नाकः पू॰ (यन विष्मयः। यथा। অথ ক্ষেত্তকে চিকীয়ু ভূমি পরী-ক্ষেত্ৰ পূৰ্বস্থানিক শি উত্তরস্যায়া গুণবৃত্তি পুশস্ত ভূমিভাগে দেশে ক্ষমধুর মৃতিকে সুবর্ণ বর্ণমৃতিকে वा ननी शर्तादाश शुक्र दिग्रामीना॰ জলাশ্যানা ম্ন্তম্ম কুলে দক্ষিণে পশ্চিমে বা সূপভীথে কন সুবিভক্ত ভাগে দেশে সন্তাঞী বা অরহ্নীঃ পুক্রম্য উদকাৎ প্রাড্মুখ মুদঙ্মুথস্ব। অভিমুখ তীর্থ কুটা-गात्र काद्राय् छिट्रमध विखाद्रछः পরম্রবীঃ যোড**শাসম্**ভাৎ **স**ংবৃত মৃৎকর্ম সম্পন্ন মনেক বাতাবন অসচে কুটাগোরস্যাতঃ সম্ভতো মরজি বিস্তারাৎ সেখাঁ• পিণ্ডিকা কার্যেৎ আক্রাটান্মধ্যে চাস্ত কৃটাগার্স্য চন্তব্ন্ত্রুনাত্র• দ্বিপুক্ষ পুনাণ ন্রায়ণ কন্দু সং-

স্থান বহুস্ফাছিদু অকারকোষ্ঠক खयु अलियान कात्रायथा उक्षथा हि-ज्ञागा मायकविकामा॰ वा **(म्राय)**न कार्टमान्द्रविद्य भूनी भरम । म यना कामीवाट्यायुनकानि काष्ठानि গতধ্যানি অথ তপ্ত কেবল ম্মি-·**না তদগ্ৰিগৃহ**• যেৰ বোগ্যেন চোমা-ণা যুক্তমিতি ৷ তবৈন বাতহ্রা ভ্য-ক্রাভ্যক্তগাত্র বস্ত্রাবছয়৽ পুরেশ্-राट भूरवणार रेक्टनमन् निष्ठाट (नोम्र श्विमकन्यागायाद्वाग्राय চেতি পুবিশ্য চৈনা পিণ্ডিকা মধি কহা পার্শারপার্শাভ্যা• যথাসুখ• শरीथाः। नह ज्या (त्रत मृह्। भर्ती-তেনাপি সতা পিণ্ডিকৈষা মোক্তব্যা वाशालाह्यमा जुमानात्वाञ्डः পিণ্ডিকাবকাশাৎ দ্বার মধিগছন্ ষেদ নৃ है। পরী তত্ত্বা সদ্যঃ প্রাণান্ জহাঃ ত্রাৎ পিণ্ডিকা ন কথঞ্চ न मुत्क्थाः। मयमा जानीयाविगठा-जियान भाषान जम्म भून्ड (समिशिष्ट् भर्त्र म्याद्या विमुक् वयु-১ ভূতমুপণত বিবন্ধ স্তম্ভ সুপ্তিগৌরব বেদনমিতি তত স্ত ৷ পিণ্ডিকা মুন বসন্ গার• পুপদ্যেত নিরুম্য র ॥ गर्मा हक्ताः शतिशाननार्थ

रिकशिनि শীত মুদক• ম্পূশেৎ। অগগত ক্লম্ महाभ ख मृह्र्नाट म् भारान् वातिना यथान्यायः शतिविद्छा श्नीयाद् । इंछि हत्रकः॥ জেমন ল্লী ভোলন। ইত্যমালা (জয়ঃ ত্রি জেতব্যমাত্রক। ইত্যর্গা। জেৰ ঋষ্ড গত্যাণ ইতিকবিকল্পন্ন সেহ খড মলে।ইতিকবিকরকনং। रेज '७ करव । इंडि क्विक्तूक्रमः॥ জৈত্র• ল্লী ১উধবণ ইতি রাজনিঘণ্টঃ ॥ জৈতঃ ত্রি জেত।। ইত নরঃ।। পারদে পু॰। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ रेजञ्ज्ञथः दू॰ जयमीनः । इंडि र्नागुरः॥ बद्धादली ॥

रेजडी बी जगडी वृकः। इंडि भय-

रेंजनः शुः जिल्लाशामकः। (वोकः। हेि इन गुन्धः ॥

रिजिशालः शू॰ जयशालवृक्तः। इंडि দ্বিৰূপকোষঃ॥

रैजिनिः शु॰ मूनिवित्भवः। मरतम-व्यामिषाः छे बत्रनी या॰ माकर्ना ভারতক্ৎ বজুবারক=5/1 रथा। रिजनिनिक सुगलुक रेनमलायन थव्छ। शूनख्रः शूनक्रेक्व शरक्र বজুবারকাঃ॥ইতি গুরাণ•॥

देनवाञ्कः शुः हन्तुः ।। कभ्राः । ,ইত্যমরঃ।। পুর:। ইতি স किछ-ইতি হেমচন্দুঃ॥ रिजवा-वृकः जि मीर्घायुः॥कृणः। ইতি व्यक्ति॥ রৈহ্যা• ক্লী জিহাতা। স্টিলতা। यथा। क्षिर्याः भूः मिष्ट रेमथूनाः জাতি ভু॰শকর॰ মৃত•। ইতি প্রায-শ্চিভ বিবেকঃ।। জোহক ক্লী অগুক।ইত্যময়ঃ।। জোক্টঃ পু· গব্ভিণ্যভি**লা**সঃ। সাদ ইতি ভাষা। ইতি হারাবলী।। জোটিক: পু• মহাদেবঃ॥ মহাবুতী । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। (जाञ्चाला जी (नवशानारः । इंडि হেমচন্দুঃ। कायः क्री **जूथः। ইতি শ**दत्रङ्गावली॥ " **জোষম্ব্য তৃ**ঞী ।। সুখ । ইত্যমরঃ।, জোষা জ্ঞী যোষা। ইতি শদরগ্নাবলী জোবিকা জ্বী জালিকা।ইতি শব-त्रज्ञावनी ॥ /जावि जी यावि । इंजि नेप ब्रङ्गीवनी ॥ काविका जी याविट। इंकि नम् बदावनी।।

कः पु वुका॥ वृषः॥ भिष्ठः॥ মহীসূতঃ। ইতি ধরণী॥ সারে উণাদিব্ভি: ।। ভেষজ । ।। ত্ত্রপ কম জ্রপ্তৌ। ইতিকবিকল্ল দমঃ क्रिष्ठि योदगालाक निमान ভোষণ স্বত্যঃ। ইতি ভটীকা্যা• मूर्गामानः॥ জ্ঞপিতঃ ত্রি জ্ঞাপিতঃ। ইত্যমরঃ॥ জ্ঞপ্তঃ ত্রি জ্ঞাপিতঃ। ইত্যম্রঃ।। জ্ঞপ্তিঃ জী বুদ্ধি:। ইত্যমর:॥ ক্তা গ বোধে। ইতি কবিকল্পদ্ধনঃ।। ক্তা কম মারীণে ॥ আলোকে॥ নিশানে।। ভোষণে।। স্কতৌ। ইতি ক্বিকল্পজনঃ ৷৷ ক্তা ক প্রেরণে। ইতি কবিকল্পদ্দমঃ॥ জ্ঞাত • ত্ৰি কৃতজ্ঞান । জানা ইতি ভाষা। তৎপর্য্যায়ঃ। বিদিত ২ বুদ্ধ ৩ বুধিত ৪ পুমিত ৫ মত ৫ পুভীত ৭ অবগত ৮ মনিত ১ অবসিত ১০। ইতি ফটাধ্রঃ।। ক্তাভব্য - বি জ্ঞানীয । (জ্ঞয । (वन्रः। व्यवगञ्जव्यः। (वाध्रः। मञ्ज-ব্য•। ইন্ডি ব্যাকরণ•।। জ্ঞাতসিদ্ধান্ত: পু• শাস্ত্ৰতত্ত্বভঃ৷ত্ পর্য্যায়ঃ। তাজিক: ২। ইত্যমর: ।। क्काञा वि क्कानमीनः। जर्भर्यायः

। विদুর:। ২ বিন্দু: ৩ ) ই্ভ্যমর:।।

**छाडिः शू॰ मिश्रश्मरहामदा**मिः। बानाडिहिंग अनि इंडिक् छाडि: । इंडि ভরতः ॥ उৎপय्यायः । সংগাबः २ वासवः ७ वसुः ८ सः ৫ স্থলন: ৬। ইত্যমর: ॥ অ॰শক: १ গন্ধঃ৮ দাযাদঃ ১। ইক্তি ত্রিকাও-শেব:।। স চতু বিধ:। সগুনপু ক্ষ পর্য্যন্ত সপিও:। তত ক্রি পুৰুষ পর্য্যন্ত সঙ্গল্যঃ। ততশ্চতুর্থপুক্ষ পर्याष्ठ भगातामकः । बन्न नाम मृजि भगंऽस मिन ममानाएकः। ভতঃপর• গোত্রজাইতি শুদ্ধিতত্ত্ব• ॥ এया॰ विष्मय खल्य मास्य मुळेवाः ॥ 🕸 ॥ छाजि (मृार्क् (माया यथा। যানি কানিচ পাপানি বুক্ষহত্যাদি-कानिक। द्धािक (मृश्या) भाभमा क्ला॰ नाईडि वाउमी॰॥ ইडि वुक्रदिवर्र्स्ड शुक्रिवथ ७ ।। 🕸 ॥ পিতা।ইতি মেদিনী॥

ক্তাতেষ•ক্লী জ্ঞাতের্ভাবঃ।জ্ঞাতিত্ব• ।ইত্যমরঃ॥

জ্ঞান ক্লী বিশেষেণসামান্যেনচাব-্বোধঃ ৷ মোক্ষেধী জ্ঞান মন্য অ বিজ্ঞান শিল্পশান্তযোঃ ৷ ইত্যনরঃ ৷৷ অস্যার্মঃ ৷ মোক্ষে শিল্পে শাস্ত্রেচ যাধীঃ সাজ্ঞান বিজ্ঞানঞ্চেচ্যতে

এवा विष्मव शुवृ खिः। अन्। ब घढे পটাদৌ যা ধীঃ সাপিজ্ঞান• বিজ্ঞা-নঞ্চোচ্যতে এষা সামান্য পুবৃত্তি:। **माक्कि थी र्ज्जान• विज्जानक यथा-**জ্ঞানামুক্তি রিভি সা যাটিভাচ বিজ্ঞান তুষ্টা ঋদি পুষছতি ইতি । यनाब यथा छानमस्त्र ममसमा জন্তে। বিষয় গোচরে ইতি ঘটত্ব পুকারক জ্ঞান মিতি যে কেচিৎ প্ৰাণিনো লোকে সৰ্বে বিজ্ঞানিনো-মতা: ইতি। বুক্ষণো নিত্য বিজ্ঞা-নান**ন্দ ৰূপত্বাদি তি** এব চিত্ৰজ্ঞান • ব্যাকরণ জ্ঞান• ঘটপট বিজ্ঞান-मिडापिक भुगुका छ १व। साम-निगिड शिल्लभाज्यया श्री क्यान-মুচ্যতে তরি নিত্ততো হ্ন্য নিমিত্ত যা তয়ো ধীঃ সা বিজ্ঞান মিডি কেচিত। মোক বিষয়া মোক कना थी र्छान अन्य शी विज्ञान কুন্যত্র ইত্যাহ শিল্প শাস্ত্রযোরি 🕃 কেচি<। অনবোধ ইত্যধ্যাহৃত্য विवरत अवरवारवा थीः (মাক্ষ অন্যত্ৰ ঘটপটাদি বিজ্ঞান• শিল্প-শাঙ্ৰ বিষযে বিজ্ঞাননিতি কৈচিৎ । ইতি ভরতঃ॥ 🕸 ॥ যোগ শাত্র-মতেন্তা একত্ব বৃদ্ধি মনসো রিন্দ্রি-

यानाथ मर्बनः। आञ्चाना वरानिन-∙**ভাত** জান মেতগ্ৰুষ•া। ইতি भाक्ष्यभावकत्र वृद्धिमावनाव-शान वृष्किवृज्जिनियाध है जिगाव । इंडि उड़ोका ॥ 🗱 ॥ यमानिज ेমদম্ভিত্ব মহি•সা ক্ষান্তি রাজবি•। আচার্য্যোপাসন শৌচ স্থৈর্য্য-भाजा विनिगुइः ॥ इन्निगार्थमु ॥ रिवतागा मनश्कात अवठ। बच्च मृजु बद्रा वराधि मूःथ (मायानूममन ।। অসক্তি রনভিম্বস্বঃ পুত্র দার গৃহা-দিযু। নিত্যঞ্জ সম্চিত্তত্ত্ব নিষ্টানি-**छाललियु।। म**यिष्ठाननः (यार्गन ভক্তিরব্যভিচারিণী ৷ বিবিক্তদেশ সেবিত্ব মর্জি র্জন সংসদি ॥ স্বাধ্যা-আ\_জ্ঞান নিত্যত্ব• তত্বজ্ঞানার্থ দশ-ন• ৷ এতজ্জান মিতি পুোক ম-জ্ঞান॰ যদতোন্যথা॥ 🗱॥ সাত্ত্বিক রাজস তামস ভেদেন তঞিবিধ•। সাত্ত্বিক যথা।সর্বভূতেষু থেনৈক ভাব মব্যয় মীক্ষতে। অবিভক্ত• বিভক্তে বু ভজ্জান বিদ্ধি সাত্ত্বিক। ' **রাজস**•যথা।পূথকত্বেনতুযজ্জান• ॥ নাৰা ভাবান্ পৃথগিবান্। বেভি मर्खियू ज्रिष् जब्छान विश्वि वाकमः।। जाममः यथा। यञ्जू क्८-

ল বদেক ঝিন্ কার্য্যেসক্ত মহেতুক• । অতত্বার্থ বদল্লঞ্চ তক্তাম**স মুদ**া হ্বত ।। ইতি ভ্রীভগবদ্ধীতা ॥ 🗱 🛭 न्यायमञ्जू । अभुमाह भुमाहिव জ্ঞান দ্বিবিধ মৃচ্যতে । তৎ শুন্য তন্মতিযাস্যাদপুমা সা নিক্পিতা ॥ তৎপুপঞ্চো বিপর্য্যাসঃসংশ্যো-शि शुकी चिंठः। गारिता (**एक् या**जा वृक्तिः मङ्गामो भीजिमा मजिः॥ ভবেন্নিশ্চন ক্পা সা সংশ্যো হথ পদর্শ্যতে। কি•স্বিমরো বা স্থাণুর্বে-ठाि वृष्तिस मः भयः॥ उम् ভावा-भुकाताधी खर्भुकाताजू निर्गरः॥ স সংশ্যে। ভবেদা शे द्रक्बा-ভাবভাব্যেঃ। সাধারণাদি ধর্মস্য জ্ঞান সংশ্য কারণ ॥ দোষো २ भुगाया जनकः भुगाया छ छा। ভবেৎ। পিন্ত দূরত্বাদি কপো দোষো নানা বিধোমভঃ॥পুণঃস্যা-ভূম ভিন্নন্ত জ্ঞানমত্ত্রোচ্যতেপুমা। অথবা তৎ পুকার• যজ্জ্ঞান•তদ্বৎ বিশেষ্যক• ৷৷জ্ঞান• য্নিৱিকল্লাখ্য• **उम्डोन्द्रिय निष्ठाउ । उ**९ शुम्ना-नाभुमानाभि छ।न यि विक्किक् शुकातवाहि भूना शह महस्रानवगा-रना । ই । जावां श्रीहरू ।।

জ্ঞানদর্পণঃ পু• প্রজিন: 1 ইতি ত্রিকাপ্রশেব:।।

জ্ঞানলকণা জ্ঞী বিবিধালোকিক
সন্মিকর্যান্তর্গন্ত সন্মিকর্য: । তস্য
লক্ষণ যথা। বিষয়ী যস্য তল্যৈব
ব্যাপারে। জ্ঞান লক্ষ্য: । ইতি
ভোষা পরিছেদ: ॥ অস্যার্থ: । তদ্বিযযজ্ঞাপক তদ্বিষয়জ্ঞান । যথা
পূর্বে ঘটাদি জ্ঞানে সতি পশ্চাৎ
ঘটাদিজ্ঞান ।।

क्छानी शु॰ रेपवक्रः॥ छानगूरक वि । ॥ ইতি মেদিনী।। তস্য লক্ষণ যথা । পुजरुं ि यहां कामान् नर्वान् | পার্থ মনোগভান্। আত্মন্যেবাত্ম-नाजुद्रैः इिंडभुक्त स्रामाहरू ॥ मूः (थञ्चनु विश्वमनाः मूर्थयु विगठ-স্পৃহঃ। বীতরাগ ভয় ক্রোধঃ স্থিতধী মু নি ৰুচ্যতে॥ যঃসর্বানভিয়েহ खब्द्रभाभा मुजाम्ब । नाबि-নন্দতি নদ্বেষ্টি তস্য প্ৰুক্তা পূতি-ষ্ঠিতা।। যদা সংহরতে চায় কুর্মো श्कानीय **मर्बनः ।** इन्द्रियानीन्द्र মার্থেভ্য স্তম্পুক্তাপুতিষ্ঠিত।।।।।।। क्छानिनाशि कर्म कर्खवाः यथा। **ग**काः कर्मागुविषा रमा यथाकूर्वस्रि

कीयुः कमा मन्त्रुश्।। न वृक्ति छ हर बनयमञ्जानाः कर्ण निक्नाः। बावरयर महक्यांनि विदान् युकः नमाहतन् ॥ शुक्राः कियमागानि **७८१ः** कर्माणि **मर्बणः । অरु** कात्र বিমৃঢাত্ম। কর্ত্তাহ মিতি মন্যতে।। তত্ববিভূমহাবাহো গুণ কর্ম বিভা-গযোঃ। গুণা গুণেষু বর্ত্তত ইতি নত্ব। ন সজ্জতে ।।ৠ। জ্ঞানিপুশ সা यथा। চতু বিধা ভজন্তে না জনাঃ मुक्जिता १ ब्हुन। या हो बिक्छा-সু রর্থাথী জ্ঞানীচ ভরতর্বভ ॥ (তবা• জ্ঞানী নিত্য যুক্ত একভক্তি বিশিষ্যতে। প্রিযোহিজ্ঞানিনো-**୧ত্যর্থনহ•সচমমপ্রিযঃ।। উদারাঃ স**ন্বএবৈতে জ্ঞানীত্বাব্যৈ ব মে মত•৷ আহিতঃ সহিযুক্তাত্মামামেবানুত্ত-মা গতি ।। বছুনা ক্মনাম্স্তে জ্ঞানবান্ধা• পুপদ্যতে। বাসুদেব:। मह मिठि म महाजा मृहूर्व छः। ইতি ঐভিগবদ্দীতা॥

জ্ঞানেন্দ্ৰণ ক্লী বৃদ্ধীন্দ্ৰণ তথ ষদ্বিণ। মনঃ ১নেত্ৰণ ২ শ্ৰোত্ৰণ ও ঘাণা ৪ জিহ্বা ৫ ত্বক্ ১ হিড ভাগবত।।।

ভারত। श्रंगांबिद्यां ख्या मक कि- ∥ छानन ही वायनः। बानान ইতি

ভাষা।ইতি ব্যাকরণ ।।
জ্ঞান্তি: জ্ঞা জ্ঞাপন । ইতি মুধ্ববোধণা
জ্ঞা গি জরাষা । ইতি কবিকল্লজম: ॥
ক্যা জ্ঞা ধনুগুণ: । তৎপর্য্যায়ঃ ।
মৌরী ২ শিঞ্জিনী ৩ গুণঃ ৪ ।
ইত্যমর: ॥ মাতা॥ বসুধা । ইতি
মেদিনী॥

জ্যানিং জ্রী জীণ্ডা ॥ হানিং॥ তটিনা। ইতি শব্দক্ষাবলী॥ স্ জ্যাথান ত্রি অতিবৃদ্ধং। তৎপর্য্যাথং । ববী থান্ ২ দশনী ৩॥ পুশস্যঃ । ইত্যম্যং॥

জু ড গত্যা । ইতি কবিকল্প দ্বা।।
জুত ইর দীপ্তৌ। ইতিকবিকল্প দ্বা।।
জুত খড় দীপ্তৌ। ইতিকবিকল্প দ্বা।
জ্যেষ্ঠঃ ক্রি অতিবৃদ্ধঃ ।। শেষ্ঠঃ ।।
ক্যেষ্ঠনাসি পুণ। ইতি নেদিনী ।।
অগুলঃ ।। অধিকব্যাঃ । ইতি ভরতঃ
ক্যেষ্ঠতাতঃ পুণ পিতৃরপুলঃ । ক্যেঠা
ইতি ভাবা। ইতি শব্দর্হাবলী ।।
ক্যেষ্ঠবর্ণঃ পুণ ব্যক্ষণঃ । ইতি
শব্দরহাবলী ।।

क्रिवना जी महप्तवी । इंडि द्राव-निर्चणः॥

জ্যেষশুঃ স্ত্রী পল্পাজ্যেষ্ঠাভগিনী। বডশালী ইতিভাষা। তৎপর্য্যাবঃ । স্বলী ২। ইতি হেমচন্দুঃ॥

জ্যেষ্ঠসাম লী সামভেদঃ।। তদধ্যয-নাক্রুত । ইতি মিতাকরা ॥ জ্যেষ্ঠা স্ত্রী অখিন্যাদিসপ্তবি**ংশভি** নক্ষরান্তর্গতাপ্তাদ**শ** নক্ষর• ৷ সাতু শ্কর দস্তাকৃতি ভারক বিভযাত্মি-का। इंडि कालिमामः ॥ वलयां-কৃতি:। অস্যা দেবতা ইন্দুঃ মিশু **শুণঃ। ইতি দীপিকা।। অত্র জাতস্য** कल । मदकी जिं भूरे विविवेशः সমেতো বিভাবিতো ২ত্যম্ভ লসৎ পুতাপঃ। শুেষ্ঠ পুভিষ্ঠো বিকল. স্বভাবে জ্যেষ্ঠা ভবেম্স্যচ জন্ম काल।।ইতিকোষ্টাপুদীপঃ।।#।।गृह-গোধিকা। ইতি মেদিনী।। মধ্যমা-कृतिः। ইতি হেমচন্দুः॥ गङ्गा। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ধীরাদিনাযিকা ভেদঃ। তদ্যা লক্ষণ যথা। পরিণী-তত্ত্বেসতি ভর্রধিকরেছা। ইতি त्रममञ्जदी ॥ 🕸 ॥ जन्द्रीः । यथा ভগবতী পুতি মহাদেব বাক্য। माः भुगमा भूत (र्स्व। ममझूः कीत नागत । जिम्मन् भूमकामात्मर्व भया (मरेवन्द्र जाविनि ॥ (ब्रिक्षाप्तर्व) , সমুৎপদ্মা রক্তসুগাসসাবৃতা। উৎ-्भमा जातुवीएकवान् किः कर्डवाः

মযেতি বৈ।।তামবুর্ব छन। দেবী जर्र्द्र (हर्गना ज्मनायवा ग्राह्र इर् निज्यः कनश्यः भुवर्त्वतः ॥ जर् হান-পুৰহানো বাসন্তত্ৰ শুভাননে য়স্যগেছে কপালাছি ভমা কেশ-**দি চিহ্নিত• ।। প**ৰুষ• ভাষতে निज्य-वर्ष्डान्ड वाहिनः। अक्या কালেচ যে পাপাঃ স্থপন্তি মৃলচে- " তসং॥ তেষা বেশ্মনি স তিষ্ঠ দুঃখ मात्रिमु प्रायिनी । क्लान (क्न-ভমান্থি তৃষাস্থারাণি যত্র তু ॥ তৰ তে সতত স্থান ভবিষ্যতিন **ज॰ न**गः। अङ्ग्रा भारत्याः (मोठ·य স্থাচামতি দুর্মতি: ॥ ত ভজৰ जरा (हिंद कलू (वेशा कृष) । ভূণকোর কপলোশ্ম বালুকায়স **ठर्माञ्डः ॥ मड्यावन कर्ना**ता ভবিষ্যন্তি নরাধনাঃ। রমশ্ব কলিনা দেবি তেষা বেশানু নিত্যশ:॥ **তিল**পিষ্টঞ্চ নক্তঞ্চ কালিস্থ শিশু, প্জেন । ছতাক বিভ্রাহঞ বিলু-**का**याउकीकनः।। यन।तृ श्रीकनः त्य देव थानयन्त्रि नदाधनाः। (ज्ञाः गृष्ठ उव ज्ञान । पति मात्रिमुएम সদানা ইত্যাদিশ্য সুরাঃ সর্ব্বে তে লেঙা কলিবলভা। পুনশ্চ

মন্থন চকু: ক্ষীরাজি সুস্থা-ক্তা:॥ইতি পাদ্যে উত্তরথপ্ত:॥ জ্যোস্লীয়: পু• জ্যৈস্থাস:।ইতি ক্রিকাপ্তশেষ:॥

জ্যেষা বুলার । চেলুন ইতি
ভাষা। ইতি বৈদ্যকপরিক্রাণা।।
জ্যেষাশুনী পু• গৃহহঃ। ইতি
হেন্চন্দুঃ।।

काशी जी गृहागाया। (कठी है जि िक्रिकी इंडिंচ ভाषा । उ गर्गायः। मुर्वा २ मुनवी ० कुछ। मट्मा ४ गृह्रणाधिका ६ मृली ७ हुँईहुँकी १ भेष्ठनङ्का ৮ गृशां भिका ঠ। ইতি শব্রহাবলী ॥ ভস্যাঃ পতন ফল যথা। নিপত্তি যদি পল্লী দক্ষিণাকে নরাণা স্বজন ধন विरयाला जा जमा वाम् जाला। উর্নি শির্সি পৃষ্ঠে কণ্ঠদেশেচ রাজ্য-কর চরণ ছাদি স্থা সর্বাস্থ্য-দ্দাতি। ইতি জ্যোতিয় ।। দিগ্-বিশেষে ভস্য শব্দ ফল । বিভ तुकारी कार्या निषित्र उता माक क् डार्म ७ या मा मी ७३॰ ज्रविषि किल लीडः जर्जुम्।नाय। বায়ব্যা বরবন্ত্র গদ্ধ সলিল্ দিব্যাঙ্গনা চোত্তরে ঐশান্যাণ

মরণ ধ্রুব নিগদিত দিশ্লক্ষণ থপ্তানে।। জ্যেষ্ঠাকতে ফুতে হপ্যেব মূঢ়ুঃ কেচিচ কোবিদাঃ । ইতি তিথ্যাদিতত্ব।।

कार्षः शृ मामविष्मयः । कार्षा बक्क युका (भोर्गमानी कार्ष्व) ना यक माम खर्क नः । त्य इति शातक मूक श्रिममाम प्रकिः म्हान्तुः । त्यतामिष्ठ प्रिकः (मोतः । इति यृकिः ॥ उर्ध्वर्णायः । मूकः २ । इत्रामतः ॥ (कार्षः अ । इति भवतः विष्मा विद्याः श्रूकः मुके यथा । विष्माय्किः श्रूक्यः मुके निवित्र वृक्षि विन्याः विद्या हिन्द्र । दिव्यद्वि विन्याः विद्रिश्वर्षाः । स्वित्र वृक्षि विन्याः विद्रिश्वर्षाः । स्वित्र वृक्षि विन्याः विद्रिश्वर्षाः । स्वित्र वृक्षि विन्याः विद्रिशे कार्षाः । स्वित्र वृक्षि विन्याः विद्रिशे कार्षाः ।

কৈ, গুলামা পু• কে, গুলামা। কে, গুলামা।
কে, গুলামা। ইতি মিতাক্ষরা।।
কৈ, গুলামা। কৈ, গুলামা। ইতি
শব্দ রত্বাবলী।। কে, গুলামা।
কেন্দ্র ক্রিম্যে ।। ব্রাদেশে ।। ।।

জ্যে ড নিযমে ॥ বু হাদেশে ॥ উপনীভৌ।ইতি কবিক্লুজনঃ॥

জেগতিঃ ক্লী দৃষ্টিঃ ।। নক্ষ এ॰ ।।
পুকাশ: । ইতি মেদিনী ।।
জ্যাতিঃ পু• অগ্নিঃ ।। সূর্য্য: । ইতি

**জ**্যোতিব

মেদিনী, ।। মেথিকা। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

জ্যোতিরিক: পু॰ খদ্যোত:। ইতি শব্দরত্নাবলী॥

জ্যোতিরিস্থা: পু
ত কটিবিশেষ: ।

জ্যোনাকপোকা ইতি ভাষা। ত
পর্যায়: । খদ্যোতঃ ২ গ্বান্তোমে বঃ
ত তনোমণিঃ ও দৃষ্টিবন্ধঃ ৫ তনোজ্যোতিঃ ৬ জ্যোতিরিস্থ: ৭ নিমেবকঃ ৮ । ইতি শদ্রত্বাবলী ॥
ক্যোতিরীজি ৯ নিমেষকক্ ১০ ।
ইতি ত্রিকাগুশেষ: ॥

জ্যোতিরীজি ন্নী জ্যোতিরি**দ্**শ:। ইতি ত্রিকাগুশেব:।।

জ্যোতিশ্চক লী চন্দু স্থ্যাদিগুছ
নক্ষত্ৰ মণ্ডল । রাশিচক । বথা।
ক্যোতিশ্চক ভুবো মান মূর্জা
পোবাচ কেশবং । চাত্তলক ।
জ্যোতিষ্ব্য সার ক্দুণ্য সর্বদং॥
ইতি গক্তপুরাণ ।। অপিচ।
সপ্তবিশ্বিত তৈ- জ্যোতিশ্চক ।
ভিনিত্ত বাযুগণ তদক । শোভবেদ্যান নবিক্ষা চরণান্ধিতঃ ॥ ইতি
তিপ্যাদিতত্ব ।।

জ্যোতিব॰ ক্লী বেদাঙ্গুলান্তবিশেবঃ। তৎ গুহুণাদি গণন শারু। ইভ্য-

मत्रीकाया । ভत्र उः।। প्यस्कत्रिमः শাস্ত্র হোরা গণিত সংহিতা। কেরলিঃ শঙ্কনঞ্চৈবেতি পুশুরত্ন होका॥#॥ व्यम्र अञ्चक्ताहि यथा। অস্য শাত্রস্য সহক্ষো বেদাঙ্গ মিতি চোদিত:। অভিধেষঞ্জগতা। শুভাশুভ নিৰ্পণ।। ইক্যাধ্যয়ন ॥ স কান্তি গুহ বোডশ কর্মণা।। भुर्याजनक विरद्धयः उख्रकान विनिर्भयः। इंडि नात्रमीयः ॥ # ॥ व्यम्प्राथ्ययन दिलाः कडवप्र यथा। সিদ্ধান্ত সংহিতা হোৱা ৰূপ স্বন্ধ ज्याञ्चकः। (वहम् निर्मनः চकू र्জ्याजिः भाज गकन्यवः॥ विदेन उ-দ্থিল শ্লৌ ড মার্ভ কর্ম নসিধ্যতি । जमाञ्जगिकारायमः तुक्रा নির্মিত পুরা॥ অতএব দ্বিজ রেতদধ্যেতব্য• পুষত্নতঃ । ইতি नात्रमः ॥ 🕸॥ भूमुम् शार्थे निरम्था বথা। সেহাল্লোভাচ মোহাচ যো বিপ্রো হক্তানভোগিবা। শৃদ্যাণা-मुनारम छ मन्त्राट मनत्रकः बुद्धट ॥ इंडि गर्गः ॥ 🛊 🏻 ज्यम् छान मोरे मारु यथा। (यहा हि यद्धार्थ मिल्युव्डाः कानानू भूद्या विहि-**७१७ वद्धाः । उमा**हिहः काव

বিধান শাস্ত্র-যোজ্যোতিষ বেদ স (वर यक्कान्॥यथा मिथा मयूत्रागाः नागानाः मगरया यथा। जन्नत्वराक् শাস্ত্রাণা॰ গণিত• মৃদ্ধি স•ছিত•॥ ইতি বেদাকজ্যোতিষণাঞ্চা অস্যা थायन कन यथा। अव सिध्या শুতি নেত্ৰ শাস্ত্ৰ স্বৰূপ ভৰু: থলু मर्गन रेव। निरुख्यामय कन्य बनाना॰ वउद्रज्ञ॰ धर्म मुशालाम॰ महार ॥ इंडि मा खराः॥ क्ष ॥ यम् জ্ঞানে ফল যথা। জ্যোতিশ্চকেত লোকস্য সর্বস্যোক্ত শুভাশুভ । **ब्ह्यां के क्वांने खारा कि में** পরমা॰ গভি•॥ ইভি গর্গঃ॥ জ্যোতিবিকঃ পু॰ জ্যোতিবিকঃ। ই ভ্যমরটীকা। क्राञ्चि जो जाता। इंजिक्महन्मुः । ক্যোতিবশান্তক্তে তি॥ জ্যোভিষ্ণ পু• চিত্রকবৃক্ষঃ॥ নেথিকা-वीकः। इंजि त्राक्रनिर्यकः॥ गणि-কারিকাবৃক্ষঃ। ইতি রন্নমালা।। জ্যোভিয়াঃ পু• চন্দার্কগৃহ নক্তর छात्रकाः। इंडि (इमहन्द्रः ॥ वङ् वहनात्डार्य मदः॥ ক্যোতিয়া জী ক্যোতিযুতীলতা। इंड्रम्ब होकाया सामी॥

ক্যোতিষ্ঠোম• ক্লী যোড়শ ঋত্বিক্সাব্য ্যক্তঃবিশেষঃ। তত্ৰ হ্বাদশ শত গো एकिया। इं**डि मनमामउद्गा**। জ্যোতিমূতী জী লভাবিশেব: 1 , सालक्क्रनी इं जिल्डाफ ह्क्द्री इं जि त्यक्ति इंडिंग्र जावा। उर পর্য্যায়: ৷ পারাবভাদ্ধি: ২কটভীত পিণ্যা ৪। ইত্যন্তরঃ ॥ পারাবত-भनी ৫ नगगा ७ इ. हेवजनी १ भृ डि-তৈলা ৮ ইজুরী ১। ইতি রত্নমালা ॥ ষর্ণলতা ১০ অনলপুভা ১১ জ্যোভিল্তা ১২ সুপিক্লা ১৩ मोक्षा २८ (मध्या २८ मिक्स ३७ দুজ্রী ১৭ নরস্বতী ১৮ অমৃতা ১৯। অদ্যা: সুস্থায়া গুণা:। সতি তিজ্জ্ব । কিঞ্চিৎ কটুত্ব। বাত কফাপহ-दक्षः वजाः शृनाया खगः। मः ह-शृहव्या मीलनव्या (नश्या शुक्का वृष्कि-কারিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ **जीकृद्ध । युग वित्सारे ना मिष्कारे जि** রাজবল্লভঃ।। রাবিঃ। ইতি রাজ-निर्घण्डः॥

জ্যোতীরথঃ পু• প্রুরঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেবঃ॥

(क्यार्यः। ज्ञी वन्तुरक्यािकः। हामनी इंडि हिन्ती जाया। उर्श्यायः। विस्कार (कोम् ही १। इंडामदः॥ विस्कार (कोम् हो १ व्याप्तः १ व्याप्तः १ व्याप्तः १ व्याप्तः १ व्याप्तः १ व्याप्तः १ व्यक्ति १ व्यक्तार्थः । विद्याप्तः । विद्याप्तः । इंडि द्राक्षनिर्यः ॥ क्वायदः। मध्यदः । हाइ द्रव्हिश्खः ॥ क्वायदः। मध्यदः । हाइ द्रव्हिश्खः ॥ (क्यार्यः। मध्यदः । हाइ द्रव्हिश्खः ॥ (क्यार्यः। मध्यद्रवः। हाइ द्रव्हिश्खः ॥ (क्यार्यः। मध्यद्रवः। हाइ द्रव्यक्ति॥। भाष्टि। विका । इंडामद्रवे व्यक्ताः।।

জ্যেৎ শ্বাপ্রিয়: পু• চকোর:। ই**ডি** হেমচন্দ্র:॥

জ্যেৎসাবৃদ্ধঃ পু• দীপাধারঃ। ইতি ত্রিকাওশেবঃ।।

জ্যোৎদ্রী জ্রী পটোলিকা। বিক্রো ইতি ভাষা। চিন্দুকা যুক্তারাত্রিঃ। জ্যোৎস্থারাত্রিরিতিখ্যাতা। ইত্য-মরঃ।। রেণুকানাম গন্ধদুব্য । ইতি শক্চিন্দুকা।।

জ্যোতিধিক: পু• দৈবজ্ঞ:।ইত্যমর:॥ জ্যোৎসু: ত্রি দীপ্ত:। জ্যোৎসু:। যুক্ত:॥ জ্যোৎস্কিক জ্রী জ্যোৎস্মান্ত্রানিশা।
।ইতিশ্বর্ত্বাবলী॥

জ্যোৎদ্মী স্ত্রী পূর্ণিমা যুক্তরাত্রি:। ইতি ছেমচন্দু:।। জ্যোৎদ্মী।ইত্য-মরটীকাষা• রাষমুস্টঃ।।

দ্রি • অভিভবে।ইভিক্বিকল্লনঃ॥ জী ণি কি জ্যানে। গতবহু বৰোভাব ङ्डि गाव्ट। इंडि कविक्तम्बः॥ क्त्र स स्तारण। इंकि कविकन्नस्यः॥ क्दः भू • क्द्रपः। इनामध्या छात्राणः। **७८भ**र्यायः। जुर्त्तिः २। इकामद्रः ॥ জুরি: ৩ আতক্ষঃ ৪ রোগশৃতঃ ৫ মহাগদঃ৬।ইতি রাজনির্ঘটিয়াঞা। ভস্যেৎপত্তি যথা : কলোগ্ৰকদুঃ কোপেন চিক্ষেপ ভ্র মৃল্প । বভ্রু याम्याः मध्यं ज्ञाकाष्ट्रा हिन्। ॥७•मृह्य जगदान् कृत्यः मन्नदेवस्यदः -**ভ্রণড**•চিক্ষেপজ্র• হস্ত*•*নাহে**শ**• त्र भूर्जन ॥ 🕸 । न । रूम ज्राकाता यथा। बनकः अई द्वागानाः मुर्वादा দাকণোজুরঃ৷ শিবভক্ত যোগীচ সংব্যক্তাক্তিঃ॥ ভ্রান্ত্রপাদ जिलिकाः बहुत्वा नव (लाहनः। ज्य शुरुद्रशो ह्योनुः कानासक য্মোপমঃ॥ৠ। ভস্য ভেদাঃ৷ বাযুক্তঃ পিত্তৰ শৈহন শ্ৰেম্বলচ তথৈবচ। জ্যুভেদান্চ ত্রিবিধা শচতুর্থন্চ ত্রি व्यविषः ॥ इ**ं तु ऋरेववन्त** गुद्राणः । জি।। জাভিভেদে জ্বরভেদে। যথ।। **এক্টব্চে। শৃণুত্ব ত্বর সন্দেশ**• यथा । वाद्यः हिंद्यान्। महनाि वृ

विनाख खया भारत्र व्हारा विशा विভक्षा हासानः स्टिश्यः पृषि काङ्का । ठल्ह्यामध्य खरेबत्कन विजीयन हाइब्रान्॥ ज्जीया যাত ভোগো মানুবের্পপথ-স্তে। তিখাভূত বগুঃ, কুর্। পঞ্ছি ভব জুর।। চত্থে ব ख्छीरमा ভবিষ্ঠি চ । इ धुर्। একাডত চতুর্ভাগঃ খোরকক্ষচতু র্থকঃ।। মানুষের্থ থেরায় বস ত্র-शुवि उद्या क्राजि व्यावस्मवाम् निवम दः मृश्व स्य ॥ व्यश्यक्षः । मानू (बबुगल् शियाजायः जमः हजु-ভগে ক্রা একাংশেন পঞ্চি ু বস षिजीयन अकाउ। एका (खरू ज् डीयाः मः (थात्रकः हजुधाः मन मानुष्वत् तत्र ॥ वृहक्षु की छेल्छा । তথা সহোচ পত্ৰক: । পা গুপত্ৰ চ वि**र्याजः** कलदाज्या (भद्र ॥ षाउँगुं निःसात्रका ।। भनिनीतु হিনো ভূৱা পৃথিব্যামণি চোষরঃ৷ ष्मभा•जु नीविद्याः विम्हार सिर्थाः ষ্টেদশ্চ বর্হিণা।। গৈরিকঃ পর্বতে 🕻 দ্বেব নং পুসাদাভবিব্যসি। গোল-প্রারকো ভূত্বা থ্যারকণ্ট ভবি-कुनि ॥अव-विदिध कार्णन ভविद्यनि

महीडाम । मर्मना८ मार्मनारेउव || शालिनाः न्यस्मयानि ॥ श्रष्ठ स्व मनुम्याः का नान्य छा । विवस्थि । **३७ इ**बिवन्मः ॥ क्ष ॥ देवसुक मछ मिवक्त्रान्। १ भिक्ष र्था । तक्षशभार मञ्जूष बनु निश्राम-जहारः। ज्ञार्धेश म्थान्तु नः বাভাগতল: নৃতঃ ।। জন্য विशुक्छे काइण कथन लुर्बिहा मञ्जाखि र्यशा मियाइं । विशा-बन्ध (मारा श्वानाणवाण्याः । विवि विविभा (क्षिशिः जुत्रनाः मू <sup>11874</sup> थाः ॥ ७ ॥ ७८४ **माना**नु णभाः दशाः (ामाव्यायः **मञानः** सर्वास शुरूपड्या । गुननपाड রেংগে ভূ স জ্রে। ব্যুপদিশ্যকে ॥ क्ष ॥ जम् भूर्वक्रभ यथा। भुभा १वछ दिवर्गद्व रेवव्रम्य नयनप्रवः। ইहा (वर्षा मूल् कानि শীত বাতাতপাদিয়ু।। জ্ঞাঙ্গ-নৰ্দো পুক্তা রোমহ্বো হক্চি खभः । जशुरुवंक भीउक खर-্ৰত্যুৎপৎস্যতি জ্বো॥#॥ বাতি-कना जना नका यथा। विभर् ৰিব্যোবেগঃ কণ্ঠোষ্ট পরিশোষণ-। নিদ্রানা**শ: ফব** স্তস্ত্রো গারাণা<sup>। ।।</sup>

রৌক্ষানেৰচ।।শিরো হ্যাত্রকণ্যক্র रैवद्रमाः गाजितिहैकला। म्लाधाः न জ্ঞাপ্ ভবত্যনিলজে জ্রো। ৫॥ रेगिङ्कमा छमा नक्ष्म यथा। বেগ স্তীক্ষো ২তিসারণচ নিদ্রাল্লব্র• তথা কনিঃ। কণ্ঠান্ত নুখ নাসানা। পাক: ভেৰক জাযতে ॥ পুলাগো वक् कर्षे डा मृहा मार्श यम ख्वा। পী ছবিণু দ্ব নেত্ৰত্ব গৈভিকে তুন এবচাঞ্জা কক্রুরস্য ভস্য লক্ষণ বথা। স্তৈমিত্য• স্তিমিতো বেগ আলস্য ন্যুরাস্তা। শুলু মূর भूतीयद्व छप्ज उछि तथानिह।! भोतवः भी जनुरक्षामा क्षाम रहान २ जिनिम् जा। गु जिम्पार्या १ कि কাসঃ কক্ষে ংক্সেল্ড শুব্রতায়ায়।। वाउ रेनिङ्कमा छमा नक्ना यथा । ज्का मूही जुत्मा नाहः चयनानः লিরোক্তা। কণ্ঠাস্য লোবো वमश् রোगहर्या २ कृति खमः ॥ भर्ब ভেদ"চ জ্ফ্রা চ বাঁতপিওজ্বা-ক্তিঃ॥ 🕸॥ বাত শ্লৈশ্মিকস্য ভস্য **লক্ষণ** যথা। ব্রৈমিত্য পর্যা ভেদে। निमा भोद्रय (मवह। मिता शुरुः शुक्रिमाश्यः कामः (यहा পুवर्त्तन ॥ जसाला मध्यादयन

ভুর वाउरप्रया जुजाकृष्टिः।। 🟶 ॥ शिस रेनुश्किमा छमा बक्षा ৰিপ্ত ভিকান্যতা তলুগ নোহঃ कारमा कि छ्या। मृश्रुमीरहा मृश्र শীত পিত্ত শ্লেমজুরাকৃতি:।। 🗱 🛚 ।। সান্নিপাতিক্স্য তস্য লক্ষণ যথা । कल हारुः कल भीउ महिजि **भिःदाक्षा। भागात क्वृत्य प्रक्** निर्जू । চালি লোচনে।। সম্বনৌ **স**ङ्खो करो किश्वः भूरेकव्रिवावृज्यः। তন্ত্ৰামোহঃপুলাপক কাসঃখাসো ९क ि ज्या। পরिम्या थर्मा बिन्द। সুন্তাঙ্গতাপর•। গ্রীবন• রক পিৰস্য কফেনেছি। শ্ৰিতন্য ।। नितरमा (मार्ठन ज्या निम्न नात्मा হৃদিব্যথা। স্বেদ সূত্র পূরীযাণা। চিরাদ্দর্শন মল্লশঃ ৷৷ কৃশত্ব•নাতি-গাত্রাণা পুতত কঠক্রন। কোঠানা•শ্যাবরকানা• মঙলানাঞ্ দর্শন ।। মৃকত্ব স্বোতসা পাকো **७क्ष मु**र्जनात । विज्ञार भाकक দোষাণা• সন্নিপাভজ্বাক্তিঃ।।।।।। অসাধ্যস্য সান্নিপাতিক্স্য তস্য ं लक्क १० वर्षा। (मार्य विवरक्क नर्छ १एनो सर्व जम्मूर्ग लक्काः। जिल्लाक ब्दा १नाधः क्षुमाध खला

হন্যথা ৷৷ সপ্তকে দিবলে প্রাপ্তে म्यान् बार्ष्यां वा। भून (वांद्र-ভরে। ভূত্ব। প্রশম বাতি হস্তি वा ॥ मधमी विचना देव नवरमा কাদশী তথা এবা ত্রিদোব মর্য্যাদা (माकायक नथायक ॥ अभिभाउ-জুরস্যান্তে কর্ণমূলেমুদা**কণঃশোথঃ** সংক্রায়তেতেন কশ্চিদেব পুমুচ্যতে ॥ ইতি माथन कवशा क्षा कीर्नकृत्रम् नक्षा । यथा : बिमश्राष्ट्र वाडी उस জুরো যন্তনুতা গতেই প্লাহাগ্নি সাদ• কুৰতেসজীপজ্ব উচ্যতে॥ভাত **জ্ব** প্রমন দিন পরিভ্যত্য গণনীয়ঃ।। ইতি বৈদ্যকণা খ্রান্সাগভুজারা যথা ।অভিঘাতা ভিচারা ভ্যানভিষকা-ভিশাপড়ঃ৷ আগন্তর্জাযতে দোবৈ-र्यथाञ्च : विভावत्यरः !! # !। विष-**चक्र का ग**खकमा उमा **नक्र १** रथी ৷ শ্যাৰাস্যতা বিষকৃতে তথাতী-সার এবচ। ভক্তাক্চি: পিপাসাচ **তाह** क क्रम्ह्या ॥ 🕸 ॥ ७वशी গন্ধজন্য কাম্জন্য তদ্য লক্ষণ यथा। 'अयथी शक्त क मृही निद्धाः-ক্শুম্পু তথা। কামজে চিত্তবিভূ স खनुवित्रा भाषाबन• ॥ **चरा**९-<u> भुनाभः (भाकाः ज्यर. (काशाः </u>

नुत्र

বেপথু:। অভিচারাভিশাপাভ্যা• , নোহ স্থা চ জাযতে॥ ভূতাভি-ৰকাদুছেগোহাস্য রোদন কম্পন ।कान (माक ज्याद्यायुः कायाद-পিত্ত ৰয়ে। মৃগা:।। ভূতাভিষক। ৎ জ্প্তি ভূত্ৰামান্য লক্ষণাঃ। 🕸। विवमज्यमा मः भाषि यंथा। मार्या **২**ল্লো ২হিত সমূতো জ্রোৎস্**ইস**ে ব। পুন:। খাত মন্যতম প্ৰাপ্য করে।তিবিষমন্ত্র•॥ #॥ সম্ভতাদি জ্রাণা পুতিনিয়ত দ্ব্যা ধাতবো যথা। সম্ভত রস রক্তর্য সো क्त्रामूरः शिमिजान्त्रिजः। (मामा-গত ভূতীয়ে ২ জি বৃদ্ধি নজ্জগতঃ পুন: ।। সর্ব্যাদ্বাত্ত্থক ঘোর মতক রোগসক্রণ। সপ্তাহ্যা দশাহ্যা দাদশাহ নথাগি বা ।। সন্তত্য যোহবিস্গী স্যাৎসম্ভতঃ স নিগ-দ্যতে। অহোরাত্রে সভতকো (हो कानावन्वर्ड्छ ।। श्रांत्रपृत्र् ন্ত্ৰোরাত্র এক কাল পুবর্ততে। ত্তীয়ক স্তীযেৎক্লি চতুৰ্থে ২ ক্ল চতুর্থক:।। কেচিভ্তাভিষা সাখ বুঁবতে বিষমজ্র। কক গিডাল-কগাহী পৃষ্ঠাদ্বাত ককাত্মক:।! বাত পিভাছিরোগুামী ত্রিবিধং

স্যাৰ্তীমৃক:। চাত্ৰ্কো দৰ্শবঙ্তি প্रভावः विविधः वृतः॥ बङ्गाल्याः रेम्नचिकः भूवं नित्रख। १निन मञ्जयः । विषम ज्ञत्र धवानाः काजुर्वक विभर्गग्रा मास्य व्यहनी ভ্রযত্যাদাবস্তেচ মুঞ্জি: 🛊। বাত-ব**লাস**ক জ্বাে যথা। নিত্য•মন্দ-जुरता ककः भूनक (उन जीपिछ। ন্তকাৰ: শ্লেম ভ্যিষ্ঠো নরো বাত-वनामकी ॥ 🗱 ॥ भूरनभक्ष्रता यथा। शुक्तिकामिय गाजानि घर्ष्यन গৌরবেণ বা । মনদ জ্বর বিলেপীচ ननीजः महार भुरत्नशकः॥ 🗱 ॥ বিষমজ্র বিশেষাঃ বিদ্ঞেৎ লরসে দেহে শ্লেশ্ম পিত্তে ব্যব্ছিতে। उनार्कः भी उनः (मरह ठार्कः (भाषः <u> भुकायक ॥ कार्य मुष्टे॰ यहा शिख॰</u> শ্লেমাচান্তে ব্যবস্থিতঃ৷ তেনােঞ্ত্বু৽ **म**त्रीत्रम् भी ७५॰ रुख भारत्याः ॥ 🏶 ॥ উक्रार्थम् विशर्य्यम জुद्रास्त्रः। कार्य (भूना यहा मुद्रेः পিরকান্তে ব্যবস্থিত। শীওত্ব তেন গাত্রাণা মুক্ত্ব• হস্ত পাদ্মো: ॥ भा भी उभू रही जुरता यथी। पुरु हो (मुद्यानिलो भीउ गारमो बनयला জ্বে। তথোঃপুশান্তথেঃ পিত মন্তে मारु कात्राजि ।। #।। मारुश्रही कुद्रा यथा। कद्राउँप्राप्ते उथा পিত্ত• ত্বক্ছ• দাহ মতীবচ। ত্ৰিন্ भुनार उद्भारतो सक्छः भीज भवतः ॥ बारवरको नाह भौजानी জ্রৌ স•সর্গন্ধে স্ভৌ। দাহ भूब खर्याः कक्षः क्षुनाध्रउनक স: ॥ #॥ উক্ত বাতাদি জ্রাণা। খাতু বিশেষ দ্য্যত্যা অধিক वक्गानि यथा। ७क डा इतरपाट-**द्भिनः जरन इन्**र्छ श्राहरको। त्र महिन कृत्र विकः रिन्यकारम्या-পদাযতে ॥ ১ ॥ রক্তনিষ্ঠীবন मारा भार भूमन विज्ञानी। পুলাপঃ পিডকা তৃষ্ণা ব্লন্তপুঞ্জে 🛭 জুরে নৃণা• ॥ ২ ॥ পিণ্ডিকোছেষ্টন• ত্ফা স্প্রমূত্র পুরীবত। উআন্ত-র্দাহ বিক্ষেপৌগ্লানি: স্যান্সা-সগে-मृद्धा। ७॥ ज्रूमः स्वतः स्वा सृही भुवाभ मूर्फि (इवठ । (होर्गक्रा-(बाहरको-नानि (र्यपः ए हाम्हि-कु डा ॥ ८ ॥ (छ (दा २ झा । कू बन । यात्मा विद्रक मृिक द्रवह। বৈকেপণঞ্চ গাত্রাণা মেতদছিগতে 'ব্রে ॥ ৫॥ তম: পুবেশন হিক্ক। कानः रेगञ्जः विभ उथा। श्रञ्ज-

फ्रांहा महायाजा नपंहरक मञ्जागा । ।। महा । भूष या उन শুক্ছান গতে জ্রে। শেফসঃ স্তব্ধ হা নোকঃশুক্রস্যতু বিশেষতঃ ৭॥ 🗱 ॥ খান্তভেদে জ্ব বিশেষো য্থা। বৰ্ষা শরম্বসম্ভেষু বাজাদ্যৈ। भुक्तिः कमार । रिक्ला १ना স দু:সাধ্য: পাুক্ত ক্চানিলোন্ডবঃ ॥ वर्षामु माक्छा मूद्रेः भिङ् (मुगानिका **ब्**त्र । अर्ये। ८ शिख्य भद्रिक जम् हान्यनः ककः ॥ ७८ পুক্ত্যা विनर्गाह छव नानण-নান্ডব্ । ককে। বসত্তে ভম্পি वाउ शिख • ভবেদ नू ॥ काल यथा स• महिवा॰ भुवृत्ति वृत्ति द्वव वा 1 # । अनुभन्याभन्यया र्नक्न । निषाताकान्गमत्या विभन्नीत्वा-**भनाविजा ॥ 🕸 ॥ অ**स्टर्वग जुत्र वक्राः। व्यक्षम् । इति व्या भूनीभः अमन· ज्ञानकऽहि म्न मखारा (नाव वर्हा विनिगुइः॥ षा इर्सि गम् । तिकानि क्रिके मार्ग न्भार्य । अ। विहार्तगङ्गद्र नक्षा । সম্ভাপোভ্যধিকো বাহ্য ভ্ঞাদীনা-क्यार्फ्व । विह्दिगम् विद्वानि সুধসাধ্যত্ব মেবচ।। 🕸।। আমজুর

नक्रा । नाना शुरमरका क्लाम क्रत्याणुकारताहकाः । जनुनानगा বিপাকাস্য বৈরস্য গুক্গাত্রতা 🛚 क्रुवात्मा वङ्ग्डद् खक् ठा वन-ंदान् ज्रुयः। आमज्रुयम् विकानि न एर्।। (ज्यूज्ञः शामानाम्मा ज्या ज्मयि ज्ञा 1 # । পচ্যान जुत लक्षा । जुत-(यर्गा १ विक खुका शुन्। भः भगनः ভূম:। মলপুবৃত্তি কংক্লেশ: পচ্য-भानमा वाकार ॥ # ॥ शक्जात नक्षा कृ कामडा नमूद्रक गाजागा ज्वमार्च व । (मात्र পुर् डि त्रहोत्हा निदासमृद न रूपः ॥ 🤻 ॥ नाश्रज्ञंद्र लक्ष्**गः । वलव**र सन्न-(मार्ययू वृदः जार्थत २न्शमुदः । #। অসাধ্যজ্ব লক্ষণ । ছেতৃ ভি ৰ্হ ভি ৰাভোবলিভি ৰ্হ লক্ষণঃ । इतः भागा इक्षण नीयु मिनित्य नामनः ॥ कृतः कीणमः भ्नमः गञ्जीद्भारेमर्घाद्राविकः। समार्थाः বলবান্ যশ্চ কেশ সীমন্ত কৃজ্জ্বঃ | ॥ 🗱 ॥ ७ व भञ्जीत ज्ञृत छ्वान । गञ्जीवस्व वृद्धा एकत्या शहरीरहर्न ভৃষ্ণ । আনন্ধন্ত্বে চাত্যর্থণ यानकारनाह्नास्त्रन्छ। व्याद्रश्चाहि-

वासायस्य मण्ड वा रेमर्घ्य ताबिकः । ক্ষীণস্য চাতি ক্ষস্য শস্ত্রীরো यम् रुष्टि ७ ॥ 🗱 ॥ विम 😘 স্তান্যতে য**ন্ত শেতে নিগতিতোপি** ৰা৷ শী ভাদিভো হস্তক্ষণচ জ্বেণ भुग्रा नद्रः ॥ (या ऋडेरद्रामा तकाका रुपि मः घाउ भ्ववान्। বক্ত্ৰেণ হৈবোছ/সিতি ভ• ম্বুরো হস্তি নানব ।। হিক্লা স্থাস ত্ৰাযুক্ত। মূঢ় বিভাৱ লোচন । সম্ভভা-हु। जिन की १० नद्र क्षा श्रय कि कुद्रः॥ হ তপুভেন্দ্িশ কাম মরোচক নি-পীড়িত। গম্ভীর তীক্ষ বেগার্ত্ত। क्तिउ॰ भित्रवक्ष (यर ॥ 🕸 ॥ ज्र-স্যোপদুৰা রক্ষিতোক্তাঃ। খ্বাসো मृहां २कि पृष्टि ख्काञीतात विज्गुहाः। हिङ्काकात्ना इक्खिम्क ब्द (म्रानम्वा मण ॥ 🕸 ॥ ज्द मुक्ति পূर्वक्षभः। मारुः (त्रामा जुम ন্তৃণা কম্প বিছিদ সু-জ্ঞিতা। क्षनकामा दिशका माक् छित्र (भाकरा ॥ कः ॥ जुत्रमुक नकरा। (ৰদো লঘুত্ব শিরস: কণ্ড্: পার্কো মুখস্চ। ক্ৰথু শ্চান্ন লিস্পাচ জ্ব-मुक्ता वक्ता। इंडि मान्यकाः॥ बुत्रः पु गूज्ही। वाल्कः। ই छि त्राजनिर्घणेः ॥ ज्रनामक कि ॥ ज्रम्ञु जी मक्षिष्ठां । ই जित्राज-निर्घणेः ॥ ज्रमी ह ॥

नियकः ॥ जुत्रशिष्ठ ॥

जुत्राणः पुः जुत्रक्षभाणिः। छ ८ शर्यायः

। व्याधिसनायः २। ই छिहातावली ॥

जुत्राकी जी छुनुमिस्तका। ই छित्राजनिर्वकः ॥

ল্রান্তক: পু • নেপালনিম্বঃ। আরণ্ধ:
। ইতিরাজনির্ঘণ্ট: ॥ ঔবধভেদ: ।
ইতি বৈদ্যক • ॥ জ্রনাশক দ ॥
জ্রাপহা জী বিল্লপত্তী। বেল শুঁঠা
ইতি ভাষা। ইতি শন্চন্দ্রিকা॥
জ্রনাশকে ত্রি॥

क्ति उ: जि क्ती। ই जिलाक निर्मणेः॥ क्ती जि क्त्रयुकः। यथा। खर्म जिल्हा-क्ताकाल वा कृती नाम् शादकथकन । ই जिक्र भागिम जः॥

জুল জম চলে।। জিবি।ইতি কবি-কল্লুফ্মঃ।।

জ্ব: পৃ• জাল:। দীন্তি:।। দীন্তি বিশিষ্টে ত্রি। ইতি মুখ্যবোধ•।।

জ্লকা জী অণিশিখা। ইভিছেম- । ঝ বকোরঃ। সব্যঞ্জন নবমবর্ণ: চবর্গ চন্দ্রঃ।। চত্ত্ববর্ণত । অস্যোচারণ স্থান

ক্লন: পু॰ অগ্নি: ।। চিত্রকবৃক্ষ: । ইভামর:।। দহনে লী।।

ब्ननामा श्र म्याकाडनिश हेडि

त्राजनिर्घणेः॥ ज्वाजः जि एकः॥ উज्वः। ইडि ज्विनिरो॥

জ্বিনী জী মূর্বালতা। ইতি রাজ-নির্ণটঃা

क्वानः शृ क्री व्यशिनशा इंडामदः॥
की शिविनिष्टे वि। इंडि म्यावाशः॥
काना क्री मयामः। इंडि न्याक्तिम् का
॥व्यशिन्था। इंडामदः॥ माइन्छ॥
कानागर्मं डकः शृ द्वागवित्नयः।
उर्भग्रायः। ज्ञादाप्रज्ञामयः
२ ज्ञानाथद्वगदः । ज्ञादाप्रज्ञामयः
२ ज्ञानाथद्वगदः । ज्ञाद्वगदः ।
इंडि द्वाकिनिर्यणेः॥ ज्ञाद्वाप्रज्ञामयः
कानगर्मं ज्ञाद्वाप्रद्वारः॥

জ্বালাজিহ্ব: পু॰ অগ্নি:।ইতিহেমচপ্দুঃ
জ্বালামুখী জী পীঠছানবিশেষ:।
তরভগবত্যাজিহ্বাপ্ডিতা।তর
অধিকাদেবী। উন্মন্ত নামকভৈরবশ্চ।ইতি পীঠমালা।।

4

ধ বকার:। স ব্যঞ্জন নবমবর্ণ: চবর্গ চন্তর্থবর্ণন্চ। অন্যোচারণ স্থান তালু। ইতি ব্যাকরণ:।। অন্যোৎ-পত্তির্যথা। বিসর্গ স্তালুগ: সোমা শংচবর্গঞ্বস্তথা।ইতিপুগঞ্চসার:

॥ यम् प्रवाश वया। वका व भव्राम শানি স্ওলী নোক্ষ্ক্সিণী।রক বিদ্যুল্লভাকার সদা ত্রিগুণ সংযুত্ত ॥ भक्षास्यमयः वर्गः भक्ष भागाञ्च-क : ज़रा। बिविन्तु महिङ वर्गः ত্রিশক্তি সহিত তথা ॥ ইতি কামধেনুভজ্ঞ• ॥

यः भु• यञ्चावाजः॥ नष्टः॥ **यस्**वर्याः। इंडि भद्रज्ञावनी ॥ यणीमः॥ मूत्रशुकः॥रेमज्जानः ॥ ध्निः॥ ভারবায়ঃ। ইতি মেদিনী॥

यकातः पु॰ जुमतामिनदः।यथा। नु।त्रस्ता मशुरेण त्रकात्रण मरहा ঝকার কোলাহল:। ইতি বল্পাল-(मनः॥

क्या जी श्वनिविष्णवः॥ बनकग वर्षणः **। इंडि भद**तक्वावनी ॥

यश्वानिनः शुः भाव्यिकवायुः। यश्वा-বাতঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

अक्षावाजः प् भावृधिववायुः । इंडि र्नायूदः ॥

ষ্ট • স•হভৌ। ইভি কবিকল্লফ্ম:॥ अिं शुः कून्वकः। इंडिशाहित्कायः॥ यि कि वा करा नीम्। उर्शर्गायः । जाक् २ जक्षमा ७ जङ्गाय ८ সপদিও দ্বাক্ ৬ ম ক্ । ইভামের।।

বাত্তি ব্য বাটিতি। ইতি প্ৰাকৃত ভাষাযা• कांब्रश्रुकाणः॥ अन्थातः शू• अनुकत्रग**म**यः। **कस्र**-गानिश्रुनिः। यथा। উদ্বেল্ল জু जवलि কন্ধণ বান হকারঃ ক্ষণ বার্য্য তা । ইতি ক্লিদাস:॥ ঝম উ ভক্ষে। ইতি কবিকল্লফম:॥ अष्णः **शृ जष्णाउभ**जन•। **न**मुः। इंडि किंग्यतः॥ यम्भाकः श्रु वानद्रः। ইতি শदद्राः

वनी।।

वान्त्रामी भू• मटमात्रक्शकी। ইতি किंग्यद्रः ॥

वान्त्री भू॰ वानवः। इंडि नफ्तवावनी॥ কর: পু• নিকরে:। পর্বতাবভীর্ণ कन्तुवाहः। ইত্যমরः॥ यत्रा जी यतः। ইত্যমরটীকাষা॰

ভরত: 11

जी वातः। इंडामत्रहीकायाः ভরত: 11

বছ**িশ** উক্তো।। ভত্নে । ইতি কবি-कन्नुक्यः ॥

यह न উक्ता। जङ्गी इंडिकविन कनुक्रभः॥

्यवं म फेलो।। जङ्गि। इंडि कवि-कन्नकमः॥

বার্মরঃ পু॰ বাদ্যবিশেষঃ।ইত্যনরঃ॥ व्याभुवाहामिक काईशान । ইजि ए छ। का मात्रमून्म दी ।। कद्र ५ इंडि খ্যাতঃ৷ ডিভিনে৷ ডেক্রীপ্রোক্তো ব্যারঃ পটহ: म् তঃ। ইতি ভরত-ধ্ত বৈস্ঠঃ॥ তৎপর্যায়ঃ। বাল্লকী २ वाल्ली ७ वाल्जी ८ वार्वाजी ए। इंडि न्यस्त्र विशास्त्र विश्व ग्रामित । । इंडि (मिनि ॥

বাবর্যকঃ পু॰ কলিমুগ॰। ইতি ত্রিকা প্রশেষঃ ॥

বাবারা জ্রী বেশ্যা।ইতি ত্রিকা (न्यः॥

वार्वाो जो वार्वाववाम्। १३७ मप ज्ञज्ञावनी ॥

বার্বারি পু• শরীর•। ইত্যুণাদি-কোষ:।। দেশ:।। চিত্র-। ইতি ।। न-किश्रमाति डेगामिवृख्धि।।

ত্রিকাওশেব:॥

(बहिनो॥

ा इंडि सिमिनी॥

वालः পু বর্ণসক্ষমাভিবিশেষ:। বাষ লী থিল। ইত্যজ্বপাল:॥

ইতি জটাধ্য়া৷ সক্ষত্রিয়াৎবু৷ত্যাৎ সবর্ণাযা-জাতঃ। ইতি মনুঃ। পুহা-সক:। ভাঁড ইতি ভাষা। ইতি নহাভারত•॥

यज्ञक क्षी का॰मानिर्मि उकत्र उलाक॰ । यथा । निवागात वालक्ष স্ग्रागात ह भद्यकः । मूगागात व- मिवान्तर- मधुबीक न वानरवर।। ু ইতি তিথ্যাদিভত্ব•॥

यञ्जकथेः शृ॰ भातावउः। ই ि रातावणी।।

वाह्यती व्या क्ष्या वावात्वानु ।। বালচক্র•।বালডীতিখ্যাত•।ইতি (न्हिनी ॥ भूबः ॥ (त्रुपः। इंड्र-জন্পালঃ।

বাল্লিকা খ্ৰী উৰ্ভনপটঃ॥ দ্যোতঃ । इंडि (संपनी ॥ উद्वर्धनमन•्। ङ्खि **म**स्बद्धावनी॥

বাগজুলা জ্রী হত্তিকর্ণাল্যালন । ইতি বাল্লী জ্রী বালারবাদ্য । ইতি শব্-ब्रदावनी ॥

বলরী শ্রী হুড়ুঃ: । বার্ররবাদ্য া। । বাল্লোল: পু তকুলাসক: । টেস্থার বালচক্র । কেশবক্র । ইতি বাটুল ইতি ভাষ।। ইতি হারাবলী ব্যষ ০ বৃধে। ইতি ক্বিকল্জনঃ॥ योगा की कन्या।। व्याजभारम्यां वाव वा गुरू।। भिषात । इंडि কবিকল্পদনঃ॥

वारः भू न न न । इंडामदः॥ **जानः** ॥ वनः । इंकि व्यक्ति ॥ मीनदानिः। यथा। मार्श्वमध गरव মেবে বসুসার্দ্ধো ঘটে ব্বে । ইতি अभवश्रभीभः॥ বাৰকেতনঃ পু॰ কন্দৰ্পঃ,। ইতি **रुनागुषः॥** ব্যবা জ্রী নাগবলা (ইভ্যমর: ॥ यवाद्यः भू व्यनिकषः। इंडि एस-ठन्द्रः ॥ ব্যবাশনঃ পু॰ শিশুমার:। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥ व्यापान्त्री जी व्यागमाजा। इंडि ত্রিকাণ্ডশেবং॥ वाक्षित्र क्षी हत्रभावसात्रविष्णवः। ইতি ধরণিঃ॥ বাটিঃ পু• निक्छाः॥ काञ्जा ।। बुगमीना भाडन । इंडि (मिनी॥ বাটিল: পু• ঘ্টাপাটিলি: ইড্যমর:॥ याते। खी ज्नामनकी। इंडामतः ॥ ।। यूथीव्कः। ইতি भद्रान्त्रा।। वारिका छो ज्यानगकी। इंडि नम्हिन्द्रका ॥ यानकः क्री मत्यक्षेका। याना इंडि ভाषा। ইতি हात्रावली।। ঝনের: পু• তকু শাণ:।টেস্যারশাণ

ইতি ভাষা।ইতি শব্দরত্নাবলী॥ वाकदः श्राची वार्वातकः। वार्वात वाराकर्डा । ইতি व्याकत्रनः ॥ कानिः की व्रक्षनिवास्यः। कान्नि ইতি খ্যাতা। যথা। আমূ **মাম ফল**ণ পিষ্ট রাজিকা লবণান্বিত ৷ ভৃষ্ট হিষ্যুত পূত ঘোলত ঝাল क्ठारङ ।। यानि र्इतिङ जिख्यायाः क्षेषु क्षेष्णाधिनो । यन्तः यन्तः निली जा ना द्वाहनी वङ्गिता (ध्वी ॥ ইতি ভাৰপুকাশ:॥ वातः भु वृक्वविष्मयः। वाउँ इंडि ভাষা।ইতি শব্রহ্লাবলী॥ ঝাবুক: পু বৃক্ষবিশেষ:। ঝাউ **ইতি ভাষা। তৎপ**ৰ্য্যায়ঃ। পিচুলঃ २ साबू: ७ सानू: ८। इंडि म्य बन्ना-वनी ॥ विकाक की कनविष्मवः। विका ইতি ভাষা। অস্য গুণাঃ। তিক্তত্ত্ব• । মধুরত্ব॰ । আমবাত মন্দাগ্রি কারিত্বঞ। ইতি রাজবল্লভঃ॥ বিকিনী জী জিঙ্গিনীবৃক্ষঃ। ইতি ভাবপুকাশঃ ॥ উল্পাইতি শব্-ब्रङ्गादभी ॥ विश्री जी जिल्निगीत्कः। इंडि ভাবপুকাশ:॥

विश्विमः भू मार्वाद्यः। इं इ हात्रावनी ।
विश्वित्रद्वे। जी क्षूत्रविष्ण्यः। विश्वित्रीहे। इं इ जार्वा। छ भ्यायः। कना
२ भी छ भूता । विश्वित्रा । व

মিশ্বী স্ত্রী বিল্লী। যথা। বিশ্বীবাব্যক্ত মধুরাক্জন্তী মধুরাক্তি:। ইত্যা-গমঃ॥

বিটো জ্রী প্রবৃক্ষবিশেব:। বাঁটো ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। দৈরী-যকঃ ২। ইত্যমর:।। কট সরটঃ ৩ সৈরেযক: ৪ বিণ্টেকা ৫। ইতি রালনির্ঘটঃ।। নীলবিন্ট্যঃপর্য্যায়ঃ । বাণা ১ দাসী ২ অর্ত্তগলঃ ৫। ইত্যমর:।। বাণঃ ৪ আর্ত্তগলঃ ৫ ইতি ভটীকা।। সহচর: ৬নীলঙ্গর-টক: ।। ইতি রত্তমালা ।। অৰুণ বিল্ট্যোঃ পর্য্যায়ঃ। জরবকঃ ১। ইভ্যমর:।। পীতবিন্ট্যাংপর্য্যায়ঃ। ইভ্যমর:।। পীতবিন্ট্যাংপর্যায়ঃ। ইভ্যমর: ।। পীতবিন্ট্যাংপর্যায়ঃ। ইভ্যমর: ৩ সহচরী ২। ইত্যমরঃ ।। সহচর: ৩ সহচরা ২। ইত্যমরঃ দাসী ৭ সর্ক কঃ৮। ইতি রত্ননালা।
॥ অস্যাগুণাঃ। কটুবু । তিক্তবু ।
দস্তান্য শূলবাত কফ শোফ কাস
বৃংগ্যায নাশিবৃঞ্চ ॥ সন্দরতৃণ ।
ইতি রাজনির্ঘটাঃ।

वित्रिका क्षी विल्ली। इंडि मद-

सिती की विल्ली। इंडि मदत द्वावली।।

विल्लाः की वाम्यविष्मयः। यथा।

यण्यानाः स्थाप्ति स्थाप्ति।

विल्लाः की व्याप्ति हो गृम्दा विल्लाः

तिव्याः शकानाः सम्याद्ध वाम्यः

रमवा वाद्याद्य विल्लाः

सीशिका।।

বিল্লেকা জী কিল্লী। আতপস্য-কটিঃ। বিলেপনমল । ইতি হেন-চল্দুঃ।। কিল্লিকারাবঃ।। উদ্ভানবজ্ঞ কচিঃ। ইতি শদ্রহাবলী।।

বিল্লী দ্রী কীটবিশেষ:। বিঁকিপোকা ইতি ভাষা।তৎপর্য্যায়:বিল্লীকা ২ বিল্লেকা ৩ বিরেকা ৪ বীককা ৫ বিরে ৬ চীলিকা ৭ চীল্লিকা ৮ চিল্লী ৯ ভৃষারী ১০ চীল্লকা ১১। ইতি শ্বরত্বাবলী।। চীরী ১২।ইত্য-মর:।। চীককা ১৩।ইতি ভট্টাকা।। আতপক্টিং।। বজী ।।উদ্বর্ত্বনা শুকা। ইতিমেদিনী।। স্থালীলগ্রদ্ধারণ। ইভ্যন্ত্রপাল:।। বিল্লীকণ্ঠ: পু• গৃহকপোত:।ইতি ত্রিকাওশেষ:।।

विज्ञीका जी विज्ञिका। ইভি एम-हन्मः॥

থীককা জী থিলী।ইত্যমর:॥

থুট: পু• ভদ:। অপুকাওবৃদ্ধ:।

ইতি শন্তি কো।।

युग्तिः जी त्राणिगीतिष्णवः। यथा

श्रीयः णृकात वङ्का भाषीक

स्युता मृषः। अरेकत युग्ति र्कारक

वर्गानि नियरमाङ्गिष्ठा ॥ অতো

कक्षण (मङ्गा नामाद्याति विष्ण
वकः। इमः कि णालगः ज्वः गुजिकः

नृश दक्षनः॥ इकि जक्षी जमारमा
महः॥

ঝুণিঃ পু• জমুকভেদঃ। দৃষ্টদৈব-শুভিঃ। ইতি মেদিনী।।

ঝু ব য র জ্যানে। গতবহু ব্যোভাব
ইতি যাবং । ইতি কবিকল্পুজ্মঃ॥
কোডঃ পু॰ ভবাকবৃক্ষঃ। ইতি
ভূরিপুযোগঃ॥

ঝু উ গভ্যা। ইতি কবিকন্নজনঃ।।

B

इ।न जानू। इंडि व्याक्रन ॥ #॥ অস্যোৎপান্তি র্যথা। বিসর্গন্তালুগঃ সোন্ম শ চবর্গঞ্ধ বস্তথা। ইতি পুপঞ্চসার: 11 # 11 অস্য লেখন-भुकारता यथा। अ अनी कश्रमाङ्गय দক্ষতো বামত স্ততঃ। খজু কাথো-গতা মাত্ৰা বামত: সঞ্চিতা পুনঃ॥ তিঃষ্টি ভাসু নিত্যাসু স্থ্যেন্দ্ৰ-वक्गाः जमा। अधनी हर क्शा जु যা মাত্ৰা মধ্যতঃ ছিতা॥ মহাশক্তি यक्षभा मा ध्रान मम् भूवकार्ड। ইতি বৰ্ণোব্দারভন্ত।। 🗱।। অন্য यक्ष ग्था। जना वेश्वत्र मःयूकः क्षकात्रः भृगु जुन्मति । त्रक्रविषुऽ-ल जाकात था स्य शत क खनी।। भक्षाम्यगयः वर्गः भक्ष शुगाजा कः-সদা, ত্রিশক্তি সহিত বর্ণ ক্রিবিন্দু-সহিত সদা।।ইতি কামধেনুতত্ত।। कः भुः भाषनः ॥ घर्षत्रश्रुनिः । ইত্যেকাক্ষরকোষ: ॥ वनीवर्षः ॥ শুকঃ।। বামম্তিঃ। ইতি মেদিনী।। ঞি: পু• পুত্যববিশেষঃ। সপেরণার্থে ভবতি । তঁস্য ইকার স্তিগ্রভি।। ধাতোরনুবন্ধবিশেবঃ। স বর্ত্রমনি জ পুত্रय (वाधकः। ইতি (वाशामव याभी॥

हें ० हेकाइः। म युक्षरेनकाम्भवर्गः हेवर्ग भूषम वर्गम् । व्यामाहाइर्ग हानः मृद्धा। हेठि व्याकद्वरः ॥ व्याप्र स्वर्गः यथा। हेकादः हक्ष्णा-शाक्षि स्वरः शदम व्यक्षी। काहि-विमुद्धाठाकादः शक्ष्यम् व गयः मनः ॥ शक्षभागयुकः वर्गः खन्द्रय मम-विका विमक्षि महिष्ठः वर्गः वि वि-नम् महिष्ठः मन्।॥ हेठि काम्य्यन् उद्धः॥

हे॰ क्षी कब्रकः। ইতি विश्वः॥ हेः श्रु॰ वामनः॥ शामः॥ निश्वनः। , ইতি मिमि॥

हैक है क वास । है जि कविकन्नक्रमः॥ हेकूमभीयः शुः वाज्कणाकः। है जि जिका अल्यः॥

টগরঃ পু• টস্কণফারঃ॥ ছেলাবিভুম গোচরঃ॥ কেকরাফে ত্রি। ইতি নেদিনী॥

টক্ষঃ পু॰ কোপঃ॥ কোষঃ॥ অসিঃ
॥ পাবদারণঃ । ইতি মেদিনী।।
পারিনাণ বিশেষঃ। সতু চতুনাবক
কাপ শচতুর্বি:শতি রক্তিকা কাপো
বা।। জন্ত্রা। ইতি হেনচন্দুঃ॥ দর্পঃ।
ইতি হলাযুধঃ॥

हेकः भू क्षी तीनकशिषः। थनिबः।।

हेक्षनः। इंडि जिनिनी ॥ मर्नः। इंडि अपद्रवादनी ॥

हेक कः शृ त्र अ अ जून्। होका है छि जारा। है छि क् श्राध्यक्ष माद यमति हो नात्र मुन्दती जत अ छ ।। हेक कशिकः शृ क् श्राध्यकः। हेक क भानानियु कः। हैं। क मात्न त्र यथ्यक हे छि जारा। हे छ महिंदि का नात्र यून्दती।।

টক্ষকশালা - স্ত্রী রক্ষতমূদ্যগৃহ । টাকশাল ইতি ভাষা। ইত্যমর-টাকা সারদুদ্রী॥

টকটাকঃ পৃ॰ শিবঃ। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ

हेक नि । उर्भिर्माः । साङ्ग्री हेक नि । उर्भिर्माः । भाव-नकः २ नाणके शिवकः ० लाह् (णूक्षाः ४ व्यक्षां । हेक रहम-वन्तुः ॥ वेक्ष्यकातः ५ वक्ष्यकातः १ वन्तुः ॥ वेक्ष्यकातः ५ वक्ष्यकातः १ वन्तुः ॥ वेक्ष्यकातः ५ वक्ष्यकातः १ वन्तुः ॥ वेक्ष्यकातः ५ वर्जुलः २० मृज्यः २२ वर्जुलः २० कनकः २४ क्षातः २८ मिननः २५ वाज्यक्ष जः ११ । हेकि वाज-निच्छः ॥ मानकीठीतमञ्जदः १५ पृति २२ पृत्वकः २० लाङ्गुष्क-कावकः २२। हेकि जावशुकाणः॥ স্বৰ্ণপাচকঃ ২২। ইতি রন্নমালা।।
অস্য গুণাঃ। কটুত্ব । উষ্ণত্ব । ॥
কক স্থাবরাদি বিষ কাস স্থাস
নাশিবৃঞ্চ। ইতিরাজনির্ঘটঃ।। অগ্নি
ব্যত পিত্ত কারিল । ক্রুত ।
ইতি ভাবপুকাশঃ।।

हेका की कड़ा। इंडि सिनिश। हेकानकः शृ॰ . तुक्तनाक्त्कः। इंडि भद्रहिनुका।।

টক্ষারঃ পৃ• বিষয় । পুসিদ্ধঃ ।!

শিঞ্জিতপুনিঃ। ইতি নেদিনী।।
টক্ষারী স্ত্রী ফুপবিশেষঃ। টেকারী।
ইতি ভাষা। অস্যশুণাঃ।বাভ শ্রেম শোকাদর ব্যথা নাশির্ণ তিকর
। দীপন্র•। লঘুর্ঞ।ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

हेकः पूर्ती थनिकः॥ थङ्गा छहः॥ कड्डा। इंडि मिनिनी॥

টক্ষ: পু• টক্ষণ:। সোহাগা ইতি
ভাষা । ইতি শহতন্দ্রকা ।। চতু
মাবক পরিমাণ । ইতি বৈদ্যক
পরিভাষা।।

টঙ্গণঃ পু ক্লী টক্ষণঃ। সোহাগা ইতি ভাষা। অস্যগুণাঃ। শ্লেম বাযুনাশিব । ক্ষাররসর্গ তীক্ষর । উঞ্জুণ অগ্নিবদ্ধ ক্রিণ বিক্লমণর । (ভদকর । वनवर्षनपृक्ष। ইঙি রাজবলকঃ॥

हेति जी वृक्ष विश्वा । आकनामि हेति जावा। हेित अमह मिनुका।। हेसेनी जी (काश्वे। हेित जिका अस्परः हेसेनी जी भ्यावामः॥ मन्नावाम्।।। शहरवाम्। हेित स्विनी।। हेस्रुवः शू॰ (ज्वीमदः। हेित (हमहन्तुः॥

हेन ज विद्वादा विख्नी जाव इंडि यावटा इंडिक विक्रम्भः।। हेन्न की विद्वार हैन। इंडि जाया । इंडिहेनथाटा जाव १नहे॥

শোকেদের ব্যথা নাশিরণ তিজর । টা দ্রী পৃথিবী।ইত্যেকাফরকোষঃ॥
। দীপনরণ লঘুরক্ষাইভি রাজ-টাঙ্করঃ পু• নাগবিটিঃ।ইভিত্রিকাওনির্ঘণিঃ॥

(শবঃ॥

টারঃ পু॰ লকঃ॥ তুরকঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥

টিক খ ড গত্যা। ইতি কবিকল্লজনঃ
টিটিভকঃ পু• টিডিভগক্ষী।
ইত্যানর টাকা।।

টিউভ: গু॰ পক্ষিবিশেষ:। টাঠি ইভিভাষা। তৎপর্য্যায়:। টাঠি-ভক: ২। ইভি শহরত্বাবলী।। টিউভক: ১। ইভ্যমর:।। টিটি-ভক: ৪। ইভিডটীকা।। টিউভক: পু॰ টিউভগকী।ইড্য-মর:॥

টিটিণিকা **ত্রী অনুশিরীবিকা** ইতিভাবপুকা**শঃ**॥

টিভিশঃ পু॰ বৃক্ষবিশেষঃ। ডিপ্তিশাইন্তি ডেঁডলী ইন্তিচ, ভাষা।
তৎ পর্য্যায়ঃ। রোনশফলঃ ২
তিনিদেশঃ ৩ মুনিনিমিতঃ ৪। ইতি
রাজনির্ঘটঃ।। ডিপ্তিশঃ ৫। অস্য গুণাঃ।ক্চিকারিত্ব। ভেদকত্ব। পিত্ত শ্রেমাশ্ররী নাশিত্বং। সুশীতত্বং । বাত্তব্বং। কৃক্তবং। নুত্রত্বক্ষ।
ইতি ভাবপুকাশঃ।।

हिल क नूमि। (भुत्र १ इंडि यावर । इंडि कविकन्नक्रमः ॥

हिन्ननी जी होका। गथा। श्रीमञ्जानन॰ है नद्या नीनावज्याः मृहिन्ननी। ভবে-শেন मृद्याशार्थ॰ क्रियुट यमुद्राः

M.3.11

টীক ঋ ড গভাগে ইতি কবিকল্লফনঃ টীকা জী বিবরণগুস্থা। ইভি লিকাদিসংগুহে অমরঃ॥

हेकुंकः श्र (माराशकव्यः। इंडा-गतः॥ क्षथितव्यः। इंडि मद-हिनुका॥ शकिवित्यतः। हेख्रिन इंडि ভाषा। इंडि मदत्रशावनी॥ শ্যোণাকপুডেদঃ। ইতি রাজনি-র্ঘটঃ।।

টুণ্টুকঃ ত্রি নীচঃ। ইতি মেদিনী।। কুরঃ। ইতি বিখঃ॥

पूँग्वेका जी हिन्निनीवृक्तः । ইতি
न्यस्वित्तुका॥

টুনাকা জ্ঞী ভালমূলীবৃক্ষ:।ইভি শহচন্দ্ৰকা।।

টেরকঃ ত্রি ব্জ্রস্কুঃটেরা ইতি ভাষা

। তৎপর্য্যায়ঃ বলিরঃ ২কেকরঃ ৩
কেদরঃ ৪। ইতি শদরত্বাবলী॥

ইল জ বিশ্লবে। ইতি কবিকলুফ্নঃ॥

ठ

ठे ॰ ठेकातः। अ वृद्धन हाम् भवर्गः हेवर्ग हि शेय वर्ग्छ। অरम्प्राहात्रग् हानः मूका । हेि व्याक्त्रगः॥ अम्प्र यक्तभः यथा। ठेकातः हक्षना-भाक्ति अखनी स्माक्तिभिगे। भीख विमुद्धालाकातः नमा जिख्य मः यूखः ॥ भक्तिवाजाकः वर्गः भक्षभुगमयः ममा जिविन्मू महिखः वर्गः जिम्मिक महिखः ममा। हेि कामस्पनू ज्यः ठेः भूः भिवः॥ महाधृनिः॥ हन्यु-मखनः । हेर्छ काक्त्ररकावः॥ मखनः॥ मृन्युः॥ स्नाक्त्रगाहतः। हेडि (मिनि ॥

ठेकूतः পू॰ (मिन्डा। ठेक्पत हेडि
चेडाडः। यथा। मुन्नमनाम भाषानः

श्रीमान् मून्त्र ठेक्पतः। हेड्डमस्
म•हिडा॥

১০১১ ব্য অনুকরণ শবং। ঠন্ ঠন্
ইতি ভাষা। যথা। রামাভিষেকে
নদবি ল্লাযাঃককাছুতে। হেন্ঘট
স্ত দণ্ডাঃ। সোপান মাক্ষ চকার
শবং ঠঠং ঠঠং ঠং ঠঠঠং ঠঠং ঠঃ।।
ইতি মহানাইকং॥
ঠেরঃ বি বৃদ্ধায়গাকাঠের ব্ হস্তী
।ইতি কাব্যপুকাশে দেশী ভাষা

## উ

। ড: পু॰ শিব: ।। শব: ।। আস: । ইত্যেকাক্ষরকোব: ।। বাডবাগ্নি: । ইতি মেদিনী ।।

प्रमृती जी क्वितिम्बः। छ<

शयायः। जाक्रती २ मीर्घर्वाकः २

प्रथती ४ प्रकाती ६ नामण्डी ७

गज्ञपंडकवा १। व्यम्ता खगाः। मीठवतुः। क्विकाद्रिष्। माह शिखाम्

(मावार्गा काउ। मृजद्राध नाणिषः।

छर्भवः। शोन। प्रका हे जित्राक्ष
निर्वाणः॥

उनाजी जी उन्द्रीकन । ই ि दाक-निर्घणेः॥

ড় ক ঞ ড স•ছতী। ইতি কবি-কন্নজনঃ॥

ডপ: উই ঞ ক সংহতী। রাশী করণ ইতি যাবং। ইতি কবিকল্ল-ক্রমঃ।।

ডব ইক পুরণে।ইতি কবিকল্লফন: ডভ ই ক ঞ সংঘে।ইতি কবি-কল্লজন:।।

ডম: পু॰ বর্ণসক্ষরজাতিবিশেব:।
ডোম ইতি ভাষা। স চাপ্তাল্যা॰
লেটাৎজান্ত:। ইতি বুক্ষবৈবর্ত্ত পুরাণি।।

जगतः न्नी जीजाशनायनः। उट शर्यायः। ण्गानिकां २ विद्वः ३ ডিম্ব·৪।ইতি হারাবলী।।
ডমরঃ পু॰ পরচক্রাদিভয়ণ। অত্র
কলহঃ।ইত্যমরটীকাষা স্বামী।।
ভৎপর্য্যায়:।ডিম্বং ২ বিশ্লবঃ ১।
ইত্যমরঃ।।ডিম্বং ৪ বিম্বং ৫ ডামরঃ
৬।ইতি ভরতঃ।।

ডমকঃ পু॰ বাদ্যভেদ:। ইত্যমর:।।
কপালি যোগিবাদ্য । ইতি ভরতঃ
।। ক্ষীণমধ্যে শুটিকাদ্বা লিঘ্রতঃ।
ইতি সারসূন্দরী ।। চমৎকার:।
ইতি বিকাওশেব:।।

ড यन श्री क भे तथः॥ নভোগতিঃ
। ইতি হেমচন্দু:।।

ডল্লক লী বংশাদিনিফিতপাত্র।

ডালাইতিভাষা।যথা। ত্রিশতক

ৰষ্ট্যধিক ডল্লক বন্ধ সংযুত্ত।
সভোজ্য সোপবীতক সোপহার
ননোহর ।। ইতি বুক্ষবৈবর্ত্তে
পুকৃতিখণ্ড।।

पर्ः भू वृक्षविष्यः। एक्या हें क्रिंगांत्र हें कि कावा। उट भर्गायः। नक्तः २ निक्रतः ०। हें कुप्तरः॥ व्यम्प्रकृषः। गूक्द्रः। विश्वेद्धिदः। बिष्गांत मूकपृष्टि कात्रिद्धः। हें वि त्राक्षवञ्चाः॥ पर्शः भू उट्ः। हें कि भन्तव्यावनीः। ण जो जिक्नी। इंडि मिनि।।
णिक्नी जी कालीशगिविष्णवः। यथा
। मार्कक जिक्नीनाक विक्रीनाः
जिक्निजिः। इंडि वुक्रविवर्द्ध
शुक्डिथछः॥

णाक्ती जी एक्त्रीक्व॰। हिंडि दाक्रिविष्टेः॥

पानतः प् निर्वाक्रमाञ्चित्मयः !

मञ् वप्विथः । (उषाः नामानि

श्लोकमः थाः म यथा। (यां गप्तान्तः ।

२०६२०। निर्वाननः १०००। मूर्गः

पानतः १०००। नात्रवणानतः ।

पानतः १०००। वृक्षणानतः १००६। गक्षवः

।। प्रमद्भातः । व्या । ज्ञानाः

पानतः १००० कातः । यथा । ज्ञानाः

पानतः १००० कातः । यथा । ज्ञानाः

पानतः १००० कातः । व्या । व्या ।

पानतः १००० कातः । व्या । व्या ।

पानतः १००० कातः ।

पानतः १००० कात्राः ।

पानिनः १००० कात्रः ।

पानिनः १००० कात्रः ।

पानिनः १००० कात्रः ।

पानिनः १००० कात्रवः ।।

ডাহলঃ পু• ত্রিপুরদেশঃ। ইভি ভূরি-পুযোগঃ॥

ডাহ্ন পু॰ দাত্যুহপক্ষী। ইতি कটাবর:॥

िक्तः পू॰ उक्तः॥ क्लिशः॥ थवः॥ धूर्त्तः॥ (मवकः। ইভিশদরত্বাবলী॥

ডि ७२: भू॰ वान्रभूर छहः। इंड्र- डिश्न क्री खरः॥ कननः॥ कृतुनः। मदः॥ (उन्द्रीिक थाउः। इंडि ভরতঃ। মাহেশ্বদগুতি খ্যাতঃ। है जि नात्रजुन्मती ॥ कृष्णाक्कनः ।পানীআমল। ইতি ভাষা। ইতি - नेक्ठिन्तिका॥ ডि खितेः शुः नमूम् एकनः । इंडि (इम्बन्युः॥ ডि ७ इति । इति ब्राजनियंगः॥

ডিভিশ: পু॰ টিভিশ:।ইভি ভাব-शुकानः ॥

ডিপ ড ক ঞ স•হতৌ। ইভি কবিকল্পজনঃ ॥

ডিপ 🍽 क य ইর नूमि। প্রেণ ইতি যাবং। ইতি কবিকল্লদ্ম:।। **ডিপ ই**কঞ্ড **সংহ**ভৌ।ইভি ক্বিকল্পফ্মঃ 11

ডিব ইক প্রেরণে।ইতিকবিকল্প-क्यः॥

ডিভ ইঞক সংঘে।ইতি কবি-कन्नक्यः॥

ডিম • হিংসে: সৌত্রধাভুর্ব•। ইতি कविक्रमुक्मः॥

ডিমঃ পৃ• নাটকস্যক্পকবিশেবঃ। ইতি হেমচন্দু:॥

ইতি হারাবলী॥ ডমরঃ। ইত্যমরঃ फिन्नः भू• ভयध्निः॥ **चा ७**•॥ कृत्रु नः ॥ भ्रीरा॥ विश्ववः। इंडि सिनिनी ॥ ডিম্ৰঃ। ইতি দ্বিৰূপকোৰঃ॥

ডিয়াহবঃ পু॰ নৃপতিরহিতযুদ্ধ। ইতিজটাপ্র: 🛭

**ডिश्विका जी कामूकी॥ जन**िषः॥ (भागकवृकः। ইতি भद्रवावनी।। ডিস্তঃ বি শিশু:। ইত্যমর:॥ মূর্থ:। **ইতিমেদিনী॥ अ**স্যক্**ণান্তর**•ডিম্ব: । ইতি দ্বিপকোব:॥

ডিম্রক: ত্রি বালক:। ইতি শব-बद्दावनी ॥

ডিয়চক লী নরাণা শুভাশুত নিৰ্ণাষক চক্ৰবিশেষঃ। যথা।ডিস্ত-চক্রে ন্যাসভানি ভানু ভাদি বি मलाक । मूर्थ जीनि ह्रयः करक टेटरेकक वाष्ट्र खरयाः।। इ. मि ११६ নাভি গুছে চৈকৈক বট্চ कान्ताः। চরণাভ্যা॰ তথিকৈক॰ कग्रक्षभञनार क्वा।। मीर्वाइ हव লাভ:স্যাৎ বক্তে মিষ্টান্ন ভোলন• ।। ऋक्त बनीह वाङ् छा। इनिजुडी ভবেরর: ৷৷ পাণিভ্যাণ ভক্রি৷ नश्री श्रामायू क् नाजिं उः। धरश

কামো ভূমো জানো রল্পনীবিচ পাদযোঃ।। ইতি স্থন্নোদযঃ।। ডিন্তা জী অভিশিশুঃ। ইত্যনরঃ।। ডীড নভোগতৌ।ইতিকবিকল্লজনঃ।। ভীড ওয় গতৌ।। নভোগতৌ।ইতি কবিকল্লজনঃ।।

ডीन• ক্লী পক্ষিগতিঃ। ইতি জটাধরঃ।। ভডেদা যথা।ক্ষণাৎস্পত্যনিষ্ম্য পক্ষসম্পাত মুচ্যতে ভিদ্বাধোগতি সম্বন্ধঃ সমুদীব পুচক্ষতে॥স কল্প পক্ষণমন মূচ্যতে ব্যতিরিক্তক। **ষদ্বি শতি রমীভেদাঃ পাতা**নামিছ, मर्निजाः॥ सहाजीन विद्यारेगवाः পাতানা• ত্রিবিধা গতি:। গত•তত্র या था फि हे बाग उ भून दाग सः ।। भुगावृत्तिः भुजिगि वि वि সপ্ততিঃ স্তাঃ। তেবা॰ নিপাতাঃ ৰুথ্যন্তে পুত্যেক পঞ্চ বি শতিঃ।। खम्या। उड्डीन छक्ष्ममन > अव-ডীন অধঃপত্তন ২ পুড়ীন পত্তন বেগৰত্তা ৩ ডীন• পত্তনমাত্র• ৪ निष्ठीन नीरिः भउन ৫ मः छीन সম্যক্পতন-৬ উির্য্যণ্ডীন-ভির্য্যক্ পতন-পৰিডীন-বিচিত্ৰ-গভন-৮ প্রিড়ীন সর্বভঃপতন ১ পরাড়ীন পরাবৃত্ত্যগমন ১০ সুডীন সুজমার

পাতঃ ১১ অভিডীন আভিমুখ্যেন পুনঃপুনঃ পতন• ১২ নহাভীন• क्तूर भाजतान भाजाति । >> নিডীন ভক্ষ্য মাশুব্ৰা পশ্যতঃ পতন ১৪ অতিডীন দীর্ঘপতন ১৫ অবডীন অ**ধংশতন** ১৬ পুড়ীন• অধঃ পতনে বেশবন্তা ১৭ অবস-ডীন- অংগ পতনে শোভন বক্তা ১৮ ডীনডীনকং পতনংনির্বি-শেষণ হৃৎসিতঞ্চ ৯ স•ডীনো-জ্ঞীন শোভনমূদ্ধ শমন ২০ স ডীন-ডীন শোভন গমন মাত্র• ২১ পুনড়নি তদেৰ সামান্য গমন ২২ ৌনাব্ডান্**ক•** ভদেবা**ধ্য স**ৎ-সি 3ঞ্চ ২০ সম্পাত বহু ভিঃস্চ্ श्रमन॰ २८ मगृतीयग॰ शक्रम्शव স্পাৰ্দ্ধনা গমন•২৫ ততোন্যৎব্যক্তি-রিভক• ত্যাংশার্জা কৃতাদেত্য সুেছ কৃত পতন ২৬। এতেযু ষড্বি•শতি সংখ্যেৰু পতন এক ডীন নামক নিবিশেষণ পতন মাত্র• সবিশেষণানি পতনানি পঞ্ বি শতি সংখ্যানি তত্ত্ব তানি সবিশেষণানি ৰক্ষ্যমাণ চত্তভি विलिशेनि इंडि नड॰ निर्दिष्णवर्षक मिकि शकाखन

मठः । छानि हदाति वित्मवनानि स्था। गङः गमन माङः। जागङः जान्न । जागङः जान्न । जागङः जान्न । जागङः जान्न । शुं छिगङः गद्वि भूनर्गमनथः। हैं कि कर्गवि । स्था। जागम नाज वित्मवः। यथा। जामङः जमङः जिनः नुङ कानी विनामकः। मधः कि। । हिं मुख्याना हजः।। छीन जीनकः जी निक्याना हजः।। छीन जीनकः जी निक्याः गिर्छ ।। जागः। विवतः। हिं जिल्लाः।। विवतः। । व्याः। विवतः। छीन निक्याः। विवतः। । व्याः। विवतः। छीन निक्याः।।

ডীনাব্ডীন নী পঞ্চিগতিবিশেষ্থ । তত্ত্ব দ্বাণিত গত্ত স্থর নিশ্বণ ।। অথঃ সংসিত গন্দক ট্রেডি নহাভারতে কর্ণার্টী া।।

ভুখু: পু: ড্ভু ভসর্পঃ। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ॥

ডুণ্ড : পৃ ত্ সর্পবিশেষ:। টোডা ইভি
ভাষা। তৎপর্য্যায়:। রাজিল: ২।
ইত্ত্যার:॥ দৃণ্ড : ০। ইভি ভরত:
॥ নাগভ্ৎ ৪ ডুণ্ড : ৫। ইভি
ভিকাপ্তশেষ:॥

प्रेवः प्र कुनु(भहकः। छ० भर्यायः । कुनु व्हान्कः २ माक्रानयः २ शिक्षः ८ वृक्षाम्यी ६ वृक्षु वी ७ विमा-न्याकः १ ख्यक्तः । ३ छ जाकः निर्वणः॥

पुनिः जी मूनिः। कमठी। ইত্যमत

होकायाः त्रायमूक्षः॥

पुनिका जी शक्षनाकात्रशक्किविष्णयः

। ইতি জটাধরः॥

जुनी की विलीमाकः। ইভিরাজ-নির্ঘণীঃ।।

एउपि की क्रुंभिति स्वा । उट्ट भर्यायः। कीवडी २ स्वाक्त्यं १०० मूथानूका ८ वङ्बन्नी ६ नीर्मभवा ७ मूख्या १ कीवनी ४ स्वम्या स्वाः । कर्ष्युः। जिङ्का । पिक्ष्युः। मीभ-नषुः। कर्य वाज क्ष्रोमय ब्रक्ट भिन्नोर्कि मारु नास्युः। क्राप्युक्षः। हेजि वाक्रनिर्युष्टः।।

ডার নী হস্তাদিবন্ধন নূত্র । যথা।
কো ২নত ইত্যুদী য্যাথ ধৃত্যা তৎ
করণ লব । হস্তাদাক্ষ্য তড়োর ।
ক্ষিণ্ডবান্ পাবকোপরি ॥ ইতি
ভবিষ্যপুরাণে অনন্তব্রত কথা।।

ডোরক স্নী ডোর । যথা। চতুর্দশ গুস্থিযুক্ত সম্ভুমাক্ত সুডোরক। ক্রিমন্ট পুক্ষিশ্চেব বধ্বীয়াৎ বাম দক্ষিণে ॥ ইতি ভবিষ্যপুরাণে অনন্ত বুত কথা।।

(ডाরডी जी वृङ्डी। ইভি রাজ-

ए एकातः। स वाञ्चन एउन् म वर्गः।

हेनर्ग एउच्च वन्कः। अत्माहात्रन

हानः स्ता। हेठि गाकतनः॥

अन्य स्वभः यथा। एकातः भत्रमा
ताधः य। स्रगः अधानि भागा । भक्षः

रिवास् कः वर्गः अभ शान्यगः स्ता।
॥ स्ता विक्त स्नुङः चास्मानि

एकातः नुगसास्र ।। हेठि काम
(यनुङ्ः॥

हः श्रुः हक्षा ॥ या ॥ य**नाञ्चः** । इ**डि** विवित्री ॥ विख्नः ॥ युनिः । इङ्ख्याकृतकाषः ॥

ঢকু: পু॰ দেশবিশেষ: । ঢাকা ইভি তাদা। ইভি ভূরিপুবোগঃ॥

एक्ष जी वाम्हिन्त्यः। एक इंडि जारा। उर्श्वायः। युगः भ्रोहः २। इंडिमद्रः॥ विश्वसम्बन्धः ७ । ইंडिमद्रद्राद्यंगी।।

ঢকারী জ্ঞী ভারিনী। যথা। ঢকারবাচ

ঢকারী ঢকারবরবা ঢকা। ইতি

ললসভাবে ভারালহস্নামস্তোত্র•

ঢলী জ্ঞী বাক্যবিশেষঃ। যথা

ঢলীবাক্য স্বক্পাচ ঢকারাক্রর

ক্পিণী।ইতিক্রজানলে অ্লপূর্ণা
সহসুনাম।

णान क्री कनक । यथा। । । निमक करकत्री कि व्यवहाक क्रीय मृह्मु नाम विवद्याः।।

णिनी कि जानविनिष्ठः । ज्यो । यथा । जानिशक अयकती ज्कात वर्ग क्लिनी । इंडि क्षूबानल अर्थन्न जरुद्दानत्लावः ॥

णमत्रा की रःमी। ই**डिधन** क्षयः॥ দৃত্ব ত অনুষণে। ইতিকবিকলুজনঃ।। हुनिः शू॰ शरण**मः। उ**मान काद्रप॰ যথা। গণেশ• পুতি শিব বাক্য•। অনেষণে ভুটি রব• পুথিতো ২স্তি ধাসুং সর্গার্থ দুণ্টিভত্তথা ভব ঢুণ্টি नामा। काशी शूतश मिश (का লভতে ধ্র দেখী ভোষণবিনা ভব বিদাৰকভূতি রাজ। ৠভয়াহাল্য্য• यथा। हुए भुगम् भूतं उर भार পদা থা না নমস্যতি পুনানিছ काणिवाजी। छ८ कर्पमृत स्थितमा পুরাদিশানি তৎ কিঞ্চিত্র নপুন-ভ্ৰতান্তি যেন ৷ যঃপুত্যছ্ নমত্তি ঢুণ্টিবিনাযক ত্বা॰ কাশ্যা॰ পুলো পুতিহতাখিল বিশ্ব সংঘঃ নোত্তস্য জাতু জগতীতলবৰ্ত্তি বস্তু দুৰু ৰূপ মত্রচ পরত্রচ কিঞ্চনাপি !৷ পুথুন্ চুণ্টিরাজোসি মম দক্ষিণতো ননাক্ । খাট্টু সর্ব ভক্তেভ্যঃ সর্বার্থান্

नः भुगह् नि॥ 🕸 । जम्र गावा विदानः श्रा। भाषभूक हर्ख्या छ नक नुक गतीकाः। य जा पृतः १हियम् डि उर्ह्णाः मूर् के मूक्षिका॰ ॥ दिशाय গ্ৰিকী যাৰা চতুথী পুপ্ हैशित्री । मृद्धाः मृद्धं डिरेवर्षकान् गुनियाल इकान्युकी। कार्या याका न्याङ्गन किंव निष्क्र मजी अलिः। इम्राः ठकुर्याः वट शीरका पृत् সংবাপসৰ্গ হ্ৰ'।। তা॰যাত্ৰা॰ নাত্ৰ यः अयाबिरदमा जिनन क्रान्। উপস্গ সহকৈ अ र उर्वा भना-क्र्या॥ (काम डिलाका मुरदान য়: করিষ্যতি ভক্তিতঃ। ভৃস্যা **ह**ुर्थाः मञ्जक समा मञ्जः भूष्ट স্যতি ॥ ইতি কাশীখণ্ড•॥

**ঢোলः शु॰ स्रनामशाउनाम्। यथा** । দ্বা ঢোল পিয়া নিত্যা ঢোল-याम् अप्रानिनी। छानक्त्रा छान-ধরা ঢোলশব স্বর্লপণী । ইতি ৰদুজানলে অনপূৰ্ণা সহসুনান-স্থোত ॥

ঢৌক খাড় পছ্যা। ইভি কবিকল্প-क्रमः॥

हेवर्ग अक्ष्म वर्ग्नहा चरम्याहात्रग श्वन मूर्का।हेडि व्याकत्वन ॥ चन्य म्बक्त थ्या। गकात्र भद्रायमानि या स्वरं भव्य अनी । भी उविद्रु-लं जाकात्र भक्षात्व मय निमा।। शक्षभुगगमय • (मित जमा जि**ल्**ग সংযুক্ত । আজাদি তত্ত্ব সংযুক্ত । मशासार भुगायक ॥ इंडि कोम-ধেনুকজ।।

णः भू॰ ज्ञान ।। निम्हयः ! ইত্যে-काक्तरकायः॥ विन्तूरम्वः। न वृष्-দেবভাবিশেষঃ ॥ ভূষণ ॥ ৩৭-विक्तिं ॥ भानीयनिनयः। ইঙি व्यक्ति ॥

**ণখ • গডৌ।ইভি কবিকল্লফমঃ।**! ণট • নৃত্যে। সাভিন্যন্ত্য ইতি यावर ॥हि माया। इंडि कविकन्न-क्रमः ॥ भाशिक्षण विष्यो वर्कतिशि व्यम् भवमा भागेः क्वाकिमन् রোধাং! ইতিভটীকাযা-দুর্গাদাসঃ निष्ठं म न्राजी। चा जिनयत्रहि जन्जु ইতি যাবং। ইতি কবিকল্লছন:॥ ণদ 🔹 শ্লিষ্টোকৌ। অব্যক্তশন্ ইভি

যাবৎ। ইতি কবিকল্প সঃ।। ণদ ক ভাসি। ইতি কবিকল্লফমঃ॥ ণভ ৯ ড হি•সে। ইতিক্রিকলুডুসং॥ न नकाराः। म वाश्वान भक्षमण वर्गः। । । । च य भ हि । इंडि कविकन्न प्रशा

শম ও শবে ॥ নতৌ। ইতি কৰিকল্প-ফনঃ ॥ শযু ড গভৌ ॥ রক্ষে । ইতি কবিকল্প

कमः॥

गर्म • भर्म। ইতি ক্বিকল্জমः॥

गर्म • भर्म। ইতি ক্বিকল্জমः॥

गर्मा । देवा विकल्पाः॥

गर्म । देवा विका । देवा क्विकल्पाः॥

गर्म ए देवा वर्षा । देवा क्विकल्पाः॥

गर्म ।

শক্ষ • গভৌ। ইতি কবিকল্লজনঃ।।

পাথ খাত আশিবি।। উপভাপো।

ঐশ্বর্য্যে।। অর্থনে। ইতি কবিকল্লকনঃ।। শোপদেশ বিধানস্যবর্জনে
থপি ইছ্ পাঠঃ কস্যচিদনুরোধাৎ
। ইতি ভতীকা্যা দুর্গাদাসঃ।।

শাধ খাত নাথে। ইতি কবিকল্লজনঃ।।

শোপদেশ বিধাবস্য বর্জনে গুপি

उड़ीकायाः मूर्गामामः॥

गाम अड थाता मद इंडि यादः

ेर्डेड कविक्यक्रमः॥

निम हें ड न मूर्यो। इंडिकविक्य

ইহপাঠঃ কস্যচিদ্নুরোধাৎ ৷ ইতি

हैं कि किंकि हुक्यः॥

निव के मिकि। हैं कि किंकि हुक्यः॥

निव है के हुक्यः।है कि किंकि हुक्यः॥

निक ॰ हुक्यः। है कि किंकि हुक्यः॥

नी के शुनित। हैं कि किंकि हुक्यः॥

नी के शुनित। हैं कि किंकि हुक्यः॥

नी के शुनित। हैं कि किंकि हुक्यः॥

नी के वर्ता। नी वर्तक द्वा हैं दिशाविष्या हैं कि किंकि हुक्यः॥

हैं कि किंकि हुक्यः॥

निम • मील। ममाधाविकि गान्ट।

गीव • स्होलाः । इंडि कविकन्नक्रमः ॥

गृ ल खंडो। इंडि कविकन्नक्रमः ॥

गूम दे अ म (भूद्राग। ईंडिकविकन्नक्रमः ॥

ণু শি স্তবনে। ইতি ক্বিকল্লফন: ॥ ণেদ খাঞ সন্নিধৌ॥ **দং-সনে।** ইতি ক্বিকল্লফন:॥

ণেষ ঋড গভৌ। ইতি কবিকল্লদুসং॥ এতেধাতবং স্বভাবতো দন্ত্যনাদ্যো ণোপদেশেন সূৰ্দ্ধন্যণাদ্যীঃখ ভ তকার:। স ব্যঞ্জন বোডশ বর্ণ:
তর্গ পূথ্য বর্ণশা আস্যান্তর্গ পূথ্য বর্ণশা আস্যান্তকার: চঞ্চলাপালি
বয়ং পর্ম লগুলী। পঞ্চলোত্যুক্ বর্ণ পঞ্চ প্রাণ ময়ং সদা
।। ভিশ্বিক সহিত বর্ণআত্মাদি
ভার সংযুক্ত । ত্রিবিন্দু সহিত বর্ণ
পীত্রিদ্যুৎ সমপুত ।। ইতি কাম।। বিদ্যুৎ সমপুত ।। ইতি কাম।। বিভ্তত্ত ।।

ভ লী ত্রী ভরণ ॥ পুণ্ড । ইভি মেদিনী॥

छः ग्॰ क्रीतः॥ ष्यम् छ॰॥ शृह्॰॥
क्रिष्ठः॥ स्रहः । ই छ स्मित्ते ॥
गर्जः॥ श्रेटः। ই छ सम्बद्धावनी ॥
ब्रहः॥ स्रग्डः ॥ याषः ॥ गोद्रविविधित्रभृह्०॥ क्रिष्ठेशृह्०। ই छिऽकाक्ष्रव्रावायः॥

छक • नहता। हारन। हेडि क्रिन क्लक्सः।।

ভক ই দৌছে । ইভিকবিকল কন্যা।
ভকিলা বি ধূর্ব: । ইভুগোদিকোব: ॥
ভকিলা বী ঔবধ । ইভুগোদিকোব:॥
ভক্য: বি হাস্য: ॥ সহনীব:। ইভি
ভক্ষাভো: কর্মণি ব: পুভ্যব:॥
ভক্ শ্লী পাদামুস যুভ দ্যি। ইভ্য-

मतः।। **७८ ग**र्यक्षायः। (भात्र**मब**• २ বোল ৩ কালসেব ৪ বিলোডিড ৫ দঙাহত ৬ অরিষ্ট ৭ অনু ৮ উদ্খিৎ ৯ मुब्हिः २० पुरः ১১। ইভি রাজনির্ঘণ্ট:॥ তৎপঞ্চবিশ্ব• । তেৰা•ভিয়ানি নামানি লক্ষণানিচ यथा। अनद्र निर्वतः रहान अविद्र ত্বসরোদক। তক্র-পাদরলেপ্রেড मूनियनक्वात्रिकः ॥ इहिका नत्र क्रीन·ग्रामहा शुहुत्र बात्रिका ॥#॥ ভেষা-**ও**শাঃ। বাত শিক্তহর- ঘো**ল**-ম্বিত কক পিত নৃৎ৷ ভক্ত গ্ৰাহি कवायान सामृशाक त्रनः नयू। वीर्य्याकः मीभनःव्याः भीगनः वाख নাশন ৷ গ্ৰহণ্যাবিমতা পথ্য खर्दरम्भाहि नाचवार ii किक স্বাদুবিপাকিত্বান্নচপিত্ত পুকোপণ । क्वार्याक विकालिज्ञासुक्राहा-পি কফাপছ-।৷ ন ভক্তাস্বীৰ্ত্যথভে कराविष्वक्रम्याः शुख्यसि द्वानाः । यथा मुद्रागामगृङ मुधार छवा नद्रागाः जूवि कक्रमाङ्गा उनिचर क्क्र्बन्ड भूभन्न भन्नम मछ। एहिका मीछना नहीं भिन्ने मुन्ने ज्वा रत्री॥ वाजनूट कफक्ट माजु मीलनी नवगानिका। 🛊। व्यायान्ति ग्र

ভোকোদ্ভ ঘৃতানুদ্ত ঘৃতানা• তকাণা-৩ণাঃ। সমুদ্ত ঘৃত-তক-পূথ্য ৰাষু বিশেষতঃ। স্তোকোজ্ত ষ্ঠ তমাদুৰ বৃষ্য কফাৰহ।।। অনুজ্ভ ষ ভংস্ন্দু ওক গঠি কক পুদ্ৰ- ক্লি অৰু দোৰ বিশেষে ব্যাধি বিশেষে ভক বিশেষা:। বাভে **५**त्र• भ्रम्बारकः ठक• भूशे रेमद्रव সংযুক্তা পিত্তে ৰাদু সিতা যুক্ত नव्याक मव्य करका। श्किन बीत्रयूक ঘোল পৈদ্ধবেন সূস যুত। ভবেদ তীববাতন্ন মর্নো ২তী সারস্থ শর विनालन। मूबक्र्ष्टु जु मगूष्ठः लापू ्रवारण अधिबक ॥ # ॥ **অথামগ**কু ুডকগুণাঃ। ডক্মামণ কফ। কোঠে . হন্তি কৃঞ্জিকরে।তিচ। গীনস স্বাস ্কাস্যক্ষেণকুষের পুযুজ্যতে॥ 🗱 ॥ 🔐 ুৰ্পু হুক্ত কেবন নিমিস্তানি। শীত , कात्व्रिभात्मा छथ। वाजाभाय-বুচ।অফ্টো সোজসা। রোধে ভক। नश्रद्भाष्ट्राश्रम्।। छजु रुखि गत्रह फि भुरमक विषमण्डान्। भाष् प्राप्ता ्रार्थामा न्यार जनत्रान् ॥ (मर् गूना मडीनात भून द्वीरहा-मन्त्रम्याना । यन तमाय प्र वाशीन्

**ল'ঃ শোথ** তৃষা কৃষীন্।:#!! অথা-**ए**कविषयाः । रेनव ७क॰ क्र्राङ् पराक्षाक काल न पूर्वली न मृहा ভুন দাহেৰু ন রোপে রক্ত গৈভিকে ॥ 🗱 ॥ व्यथ गव्यासीनाः उकानाः विभिष्ठे भूगाः। यानु कानि मधी ऋष्ये। **७मू ग• ७ क मा मिर्ल्य ।। इक्रि∕**ভाव-<u> প</u>ক। **न:** 11

**७**क क्हिंका जी जिक्षमुर्व्या अकरणारान-জাতা। ছানা ইভি ভাষা। অস্য পুণাঃ।মূলবন্ধ বাভ কারিত্বণ কক্ষ-ष् । मूर्जन्नष् । ই छि नाबदल्लाः।। ॥ जूक्छ । भूडिए वन्तर विख्या विक्रमा विक्रमा विश्वनित्यवः। वर्शन ইভি পারশ্য ভাষ্যা ওস্য পাক পুকারে। বথা। পাকপারে ঘৃত দত্য स्तिना रिक्न अक्तंस्य । ছाशासः সকলস্যাপি খণ্ডান্যষ্ঠৌচ ভর্নেথ ।। निकित्याण्डः बनः रज्ञा १८५ सृह ভের• যথা। রাজিকাদি যুতে ভজে **मा•्न थं आनि शाहरवट्या उन्धर्ग्नाः** । उक्या नह वाड्य नघु कार वन शुष् । कक्ष शिखन किस्ट সর্বাহারস্য পাচন ।। ইতি ভাব ুকাশ: 11

छकाष्टः शू॰ महानम्खः । **ই**डि

क्षात्रावनी ॥

তগ ই সুলনে।। কম্পে।। গছৌ। ইতি কৰিকন্নদুম:।।

छनंत्रः क्री निर्मेकः। निश्वजनंत्र हेि क्रिक्षां क्रिक्षः। छन्त्रम्न हेि क्रिक्षः। छर् नर्यायः काना-ने साहिता र तकः अकिन । क्रिक्षः । क्रिक्षः । छन्द्रभाविकः । हिंछ त्रव्रमाना॥ विनम् । अक्षिकः । हिंछ त्रव्रमाना॥ विनम् । अक्षिकः । हिंछ त्रव्रमाना॥ विनम् । अक्षिकः । हिंछ त्रव्रमाना॥ विनम् । अम्बद्धः । क्रिक्षः । वर्षः । अन्य वाक्षः । क्रिक्षः । । भी छन्द्रः । जिक्क्षः । क्रिक्षां व विवार्षि ज्रामान च्य नाम्बदः । निश्वष्रः ॥ आङ्गा क्षः। हेि त्रामिर्वरेः ॥

তগর 🗝 পু • পুনৃবৃক্ষ বিশেষ:। টগর

ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। সিত

গ্র: ২ কালপর্ণ: ১ কটুছ ছ: ৪।

ইতি শদরত্বাবলী ॥ নদনবৃক্ষ:।

ইতি রাজনিষ্ট:॥

তগরপাদিক প্লী তগর । ইতি রহুমালা।।

उक्तः शुः ली भाषानमात्रनः। ইত্যমत कीकायाः त्रमानाथः॥ श्रियवित्रस्त ভাপ: ।। ভষ । ইতি লিছাদি সংগৃহ টীকাষা ভরত:।। দুী জী হিন্নপত্রী। ইতি রাজ-

ভদী জী হিস্তুপত্রী। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ॥

তট • উছু ।বে। ইতি কবিকল্লফমঃ।। তট ক আহতো। ইতি কবিকল-জমঃ।।

তট ক্লী কেব। ইতি মেদিনী। তট ক্লি তীর । তড় ইতি ভাষা । ইত্যমর:।।

তটহ দুনী লক্ষণবিশেষঃ। তস্যস্বৰূপণ যথা। ততিসত্ত্বসতি ভাষোধকত্ত্ব । তথাচ। সৰ্বপণ তটহ দিখা লক্ষণণ স্যাৎ মৰ্বপন্য বোধো যতো লক্ষণ শাভ্যাণ স্বৰূপে পৃবিষ্ঠাৎ স্বৰূপে-হপুবিষ্ঠাৎ যথা কাক বন্তা গৃহাঃ শণ বিশক্ষ ॥ইতি বেদান্তকারিকা।। তটছিতে ত্রি॥

ভটাকঃ পু ভডাগঃ। পদ্মাদিযুক্ত সরঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী॥ ভটিনী জ্ঞী নদী। ইত্যমরঃ॥ ভটা জ্ঞী ভীরং। ইত্যমরঃ॥ ভড ক জ্বি॥ আহতৌ। ইঙি ক্বিক্লক্ষমঃ॥

ওড ই ও আহতৌ।ইতি কুবিকর কন্যা। তডগঃ পু• ভডাগঃ। ইতি দ্বিৰূপ-॥ কোষঃ।।

ভডাকঃ পু• ভডাগ: । ইভি শক্-রহাবলী॥

তডাকা ত্রী নদীসমূদ্যো•ভটভাগঃ ॥ আঘাতঃ । ইতি সংক্ষিপ্রসারে উপুদিবৃত্তিঃ॥

ভডাগ: পু॰ ক্লী য়ন্ত্ৰক্টক:। ইভি (मिनि ।। भन्माहियूक मद्रः 1 **७८**भर्यायः। भन्नाकतः २। इंड्रा-मद्राः। उपाकः ७ उठाकः ४। ইতি भवतञ्जावनी ॥ **उ**प्तगः 🜓 ইতি . দ্বিকাপকোষঃ ।। পঞ্চশত ধনু: পরি मान बनानयः । ठजुम्मिक् शक চত্মারি শক্তান্যনভাষা সহসু षिত্য হস্তান্যনত্বেন ভডাগঃ। ইতি नव्यवस्थान श्ला विभिन्नः ॥ 🗱 ॥ **ভস্যজলগুণাঃ। বাযুকালিজ্বণ স্বাদুজ্ব** । কবাযত্ত্ব•। পাকে কটুত্ত্ব•। শিশির হিনকালে পুশস্তত্বকা ইতি বাল-वझ जः।। इत्या ८ मर्गविविर्यथा। পুল্ভ্যউবাচ। শৃণু রাজমহাবাছো ভডাপাদিষু যো বিধি: ৷ পুরাণে শ্বিভিহাসেযু মন্যতে রাজসভন ॥ ৈ প্ৰাপ্তপক্ষ শুভ শুন্নমাগতে চোভ द्रोयः १। भूत्पश्रि विरे भुः किया छ-

ক্ত্বাব্ৰাহ্মণ বাচন।। প্ৰাক্পুসুবণা-मञ्ज खडागम्। मभीभवः। हजू ईंख সমা বেদী চতুরসা সমস্ত্রীতথা বোডশহস্তঃস্যান্যগুপশ্চ চতুমূ্থঃ ॥বেদ্যাউত্তরতো গর্ভারত্নিমাত্রা তু (मथला। नव महाथवा शक्ष (यानि বকু। নৃপাত্ম না। বিভত্তিমাত্রাযোঁনিঃ म्यार वर्षे मक्षाकृत विक्रा। मर्ख ৰহ্তমানাঃ সূত্ৰিপৰোছ্ডি নেধ-লাঃ॥ সহেচ সহ বর্ণাঃসুঃপতাকা धुम में यूजाः। सम्बद्धापुरव श्रम বটশাথা কৃতানিচ।। ম ওপস্যপুত্তি **হিশ ভারাণ্যেতানি কার্যে**শ । ৠ। শুভা স্তৰাষ্ট হোভারো দারপালা ত্তথাপরে।।অস্থে তুলাপকাঃকার্য্যা वुष्क्रिया (वस्त्रीव्रशाः । अद्य<sup>े</sup>लक्क्र गम्भूनी मञ्जविद्यिक्तिकिन्याः। इत শীল সমাযুকাঃ সাপিতা এছিল সস্তমাঃ। শুভি ভদ্তেদু কলসা যক্ত্ৰোপক্ষরণানিচ। ব্যৱনঞ্চাসন• শুভু ভামুপাত্র সুবিত্তরণা আচা-र्यः भुक्तिरमञ्ज्याममूहन्तुः विष्ठकाः । बार्विक्षात्वा यूनः नार कीति বৃক্ষ বিনিমিতিঃ৷ যদমান পুমাণো বা সংহাপ্যে ভৃতিমিছ্ভা॥ 🗱॥ হেমালফরিশ:কার্য্যা: পঞ্বি:শভি

अधिकः ॥ अधनानिक रेक्सानि কৈযুর কটকানি চ। তথাজুলী পৰি बानि वाजाः जि विविधानि है।। के नूरः नमानि সর্বেবা মাচার্য্যে वि ७१ भूनः ्। महाह्यन म गूक माञ्चन कानि न्ट कृष्ठ•।। (भोवर्गा कृषं मकरहो बाक्टनो मरमा मृथुट्नो। ७वा क्लीत मञ्कावायमः निन्मात्रकः ॥ ॥ এবমাসাদ্য তৎ সর্ব স্বর্ণপাত্র। विनाम्भारक। क्षा मूज्ञमान्। भ्रव दतः भुक्षगक्षान्त्वशनः॥ महो वश्रुप्रक স্থাত: পাঠিতো বেদপু*ক্*বৈ: । যুদ্ধ-মানঃসগন্ধীকঃ পুত্র পৌত্র সমন্তঃ ।। शन्त्रमः हात्र मानामः भुवित्न-আগ মণ্ডপ। ততো মহল শব্দেন-(छत्रीगा॰ नियासन **हा। तक्र**णा म ७व मर्गा ८ शक्यान वाहिंछ। বৈডিশার তত শ্চক প্রারাগ সুশোভন।। বেদ্যামুপরি তৎক্ত্ব। गुक्रान् गुक्भठी ख्या। मंन्रामग्र-रु अर्वान् शुक्तिकृतिहरू ।।। ७८ गाउ इागयग्रास्य वाक्न मञ्ज मान्त्रिः। तुकागक निवः বিষ্ণু-তত্ত্বেন সাপবেদ্বুধ: ॥ বিনাধ-क्ष विनामा क्रमना महिकाः छछः । मास्पर्धः नर्वाकानाः ज्ञुनाम

मानवडः ॥ भूद ७का करेन वृक भिवः कृष्विशिवाजनः । व्यक्ताःक त्रवृगर्जी क वारमाणिः भतित्व**डे**-(यट्।। गद्गभूदेवद्ग क्ष क्ष वाद्रभागान् সমন্ত:। পঠধু মিতি তান্ বুযা-माहाय। मिन नृक्राय ।। वस्रुहो भृतं छः भारभी मिना प्रवर्धिति। । পশ্চিমে সামণৌ হাপ্যা বুত্ত-द्रिगाभाष्ट्रवर्शो॥ উদভূমখा मिक-गरा यहामान उभावित्यः । भर्वेषु মিতি ভান্ ব্ৰুয়াৎ যদ্প মিতি বালক।।।উৎকৃষ্ট মন্ত্ৰ পাঠেন ভিগ্নপু• মন্ত্রগকা:। এবমাদিশ্য ভান্ नर्वान् भगुर्वराणिः न मखिर ॥ बृङ्यामाञ् जी यरेज ताना क निष তথা। ঋত্বিগ্ৰিশ্চৈব হোতব্য वाकरेगत्त्रव नव् छः॥ 🗱 ॥ रेव्हा**व**ः পৌৰুষ সূক্ত পৌপু চন্দু সুস हिज । रिममव अक्षिनिधन शायसि (बार्ष्ठमामणाः ॥ वामामव॰ वृक्**ट**-সাম রৌরব সরপ্তর । গবা বুত विकर्ण द्राकान नद्रथस्था ॥ गायिक मामगा ताबन् मण्डिम दात मान्उाः। जबदंगा (काउर्जू শান্তিক পৌষ্টিক তথা ম র্রগঙ্কে मनमा (पर मानुजा वक्षाः भुजूः।

পূর্বেদ্য রভিভোমক্রৈ রেব ক্রাবি-वामनः ॥ शकाश्व तथा बन्धीक नःगानद्रथ (गान्यार्।सूरमामाय मम्राष्ट्र भुक्तिराष्ट्र यथा उथा॥ त्राहन ११ अभिकार्थान् गन्नान् शुन् মেবচাসুগন ভদ্য কভব্য • গঞ্চগব্য স্মৃত্রিত ।। মূদ্ধিকভুমিহামত্রৈ রেব কৃত্ব। বিখানত: । এব রফ্তি वाक्रार्थान् विवियुक्तिन कम्पगाः 🕬। ভত: পুভাতে বিমলে সংমাতে ভ গবা-শত । ব্রাঙ্গণে হ্য: প্রদাতব্য-হোমান্তে বাথ বাপুনঃ।।পঞ্চাশদ্বাথ ষট্ত্রি•শৎ পঞ্বি•শক্তি রেবচ । **७७: मञ्चरमात्र भार्य मृत्क नाः** मूलाज्य ॥ (यमनीयन्त्रभाक्षरिं-वारिमाण्य विविधिःश्वः। कनकाल-कृ जो • कृ द्वा करन गा नव जात्र (यू ।: नामगाय ह ना (स्या वाक्षाय विणाम्भाउ । भावी सामाय সৌবণী • পঞ্চরত্ব সমন্বিতা • ।। ভত্র निःकिशा गकतः म् नाहिः देन्हव नर्बमः। ४ ठा॰ कडु जि विरेनुक (वर (वहाक भावर्षः।। महानही জলোপেতান্ দধ্যক্ষত বিভূষি-তান্। ,উত্তরাভিমূথো कन्मांश्य भुकान्य ।। व्याधर्वान

णून**णाना**• खरेथवह । আপে:হ্নিষ্টেভিসম্ভেণ ক্ষিপেদাগত্য ্ল নওপ•॥ পূজ্যিত্বা সুরা• স্তত্র বলি• ष्पराष्ट्रजनिष्ठः । भून फिनानि হোভব্য• চত্ত্বারি রাজসভ্তম ॥ চতুথী কম কৰব্য দেয় তৰালি শক্তঃ ৷ কৃত্বা তু যক্তপাঁৱাণি यञ्जाभकत्रगानि है। अष्ट्रिग्र स नम-मम्बार मध्यः विভ्राहर्भनः। र्शनभावक नगाक जानाग्राय निर्वरूपर ॥ उठः मह्मु विभाग **मथ्यार्थनं ७ ७था । (जाज**यह यथा मङ्गा शकामहाथ वि मिडिः 🏿 🍇 বিমেব পুরাণেষ্ব ভডাগবিধি ৰ্চ্যতে। কুপ বাপীযু সহানু তথা পুতিষ্ঠাসু তথৈবচ । সম্ভন্ত विष्मवः म्याट भागामाम्यान ভূমিষু ৷৷ অযন্ত ঝত্নিগাচায্য বিধি-দৃষ্টেন কমাণা। অল্লেম্বেকাগ্নি বৎ काग्र॰ विख्नां ग्रीमृत्क नृगाः॥ 🗱 ॥ ভডাগে কালবিশেবে জলস্থিতে: कन यथा। शुावृहे काल इंड॰ ভোষ **ন**াইটো**ন সন** মৃতি । **म**त्र काल क्रिंड छाय यमूक क्न नायक ।। वाक भिय कन नम

হৈম্য শিশির ছিত। অশ্যেহ नमः পाङ् वंगद्ध समय हिछ।॥ খ্ৰীমেপি তু হিত ভোষ রাজস্য कनाधिक । # । उडाग कद्रांग ফুল-যথা। এভান হারাজ বিশেষ ি ধর্মনে করোভি বোর্ঘ্যাভৃথ শুদ্ধ-বুদ্ধিঃ। সুয়াতি বুন্ধালয় মেক কন্ন• मिय॰ পून शां**डि** তথিব দিব্য•॥ ইভিপাদ্মে সৃষ্ঠিয়ও।।

ভডাঘাতঃ পু• উদ্ধী কৃত্য হৈন্তি শুঙা-ेश्चा । यथा । উहिः कहिकद्रा ইতি কুমারসম্ভব টাকা॥

छिए सी विद्युर। इंडाअब्रः श ভডিত্বান্ পু• মেঘঃ॥ মুম্ভক•। ইত্য-गद्धः ॥

**७ ७कः गु॰ थञ्जनभक्ती ।।** (कनः ।। नगान शाय वाक् ॥ गृहत्ति ॥ **७**क्षकः ॥ भागा वङ्गक जि। ইতি মেদিনী।।

ভঙক: পু॰ ক্লী পরিশ্বার:। ইতি লিক।দিস-গুহে অমরঃ॥

छ छुः भू नियमात्रभाविदि नियः। इं इनागू थः ॥

**७** थुत्रीयः भू•ेकी देमा ब• ॥ ७ ७ व **एक ।। वंदात्र वि। हेलि (मिनी।।** 

**ज्युनः भू** विष्ठक् । इंजि मिनि॥ **उथुनीयमाक्। ই** जिम्दब्रन्नावनी॥ बान्रामि निक्तः। ठाउँव ইভिভाষा । ইতি মেদিনী।। ভৃষ্ট তণ্ডুল গুণাঃ । मुगिक्षिष् । ककनानिष्। ककष्। পিত কারিত্ঞ। ইতি রাজবল্লভঃ। उधूना जी सहामसना ॥ विषक्र। ইতি রাজনিঘণ্ট:॥

उथुनाम् क्ली उथुलामकः । कन्नि ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। জ্যেষ্ঠা- 🖊 ষু ২। ইতি বৈদ্যক পরিভাষা॥ क्रिल ভডাঘাত॰ বিদু রু থাঃ। ॥ - ভঞুলোখ• ৩। ইভি রাজনির্ঘণীঃ।। তপুনী ব্ৰী যবতিকা লতা ।। **শশা**-थुनीकर्क हो ॥ **७ थुनीय नाकः ।** ইভি রাজনিঘণীঃ॥

> ङ**्गीकः भु॰ ভ**ुनीयभाकः। ইঙি मदद्भावनी॥

**उ**ञ्जीयः पु॰ शत्रभाकवित्मवः । कृषियानको इंडि ीशानको इंडिह ভाষা। তৎপর্যায়ঃ। অল্পনারিষঃ २। ইত্যনরঃ॥ তণ্ডগীকঃ ৩ ভণ্ডলঃ 8। इंडि भपत्रद्वावनी ॥ ७ श्रीतः ৫ उथुनी ७ उथुनीयकः १ गुहिनः ৮ वर्ष्ट्र वीर्याः अध्यानः २० वन बनः >> मूनाकः >२ भवानाकः १० সু, জ্পু: ১৪ স্থনিতান্থ্য: ১৫ বীরঃ

५७ छल्डानामा ५१। जामा छलाः ।
लिनित्रवः। मधुत्रवः। विष निख
मार ज्ञानालिवः। किकातिवः।
मीननवः। नथा वक्षा। छ ए लख्नाः
। हिनवः। जानः निख तक विष
काम विनालिवः। गुरुकवः।
मधुत्रवः। विभाकः मारु लाव नावः। किमाज्वकः। गुरुकवः।
मभनवः। किमाज्वकः। हिंछ ताबनिर्वः। विष्ठः। विभाजानाः। हिंछ समनवः। विभाजानाः। विश्वावः।

छ धुनीयकः भू॰ छ धुनीयभाकः॥ विख्यः। ইতি রাজনির্ঘণীः॥

छ धूनीयिका जी विषक् । इंकि बाजनिवंगे:॥

**ভ**ণ্ডুলু: জ্রী বিডক্ত। ইতি শদ-রহাবলী॥

ভণুলের: পু• ভণুলীয়শাক:। ইভি হেমচন্দু:।।

ख्रुलाथ की उशुलाशू। ইडि त्राजनिर्घणेः॥

তপুলোদক সী তপুলামু। যথা।

জল নইখণ দ্বা পল কণ্ডিত

তপুলাং । ভাববিদ্বা ভতো দেয়

তপুলোদক কর্মণি। ইতি বৈদ্যক ॥

পরিভাষা।।

ভণ্ডুলৌষ: পু• বেষ্টব-শঃ।বেউডবঁশ

ইতি ভাষা। ইতি শন্চ ক্রিকা।' তথু লসমূহ ক।। তথু ব্য হেতু:। ইত্যমর:॥ দ্ তথ বি বৃদ্ধিহ পরামর্শ:। সেই ইতি ভাষা। সর্বনাম শ্রেণ্থিয়া। ইতি ব্যাকরণা।

তত লী বীণাদি বাদু হিত্যসর:॥ ততঃ ত্রি বিভ্তঃ॥ ব্যাপ্তঃ॥ বায়ৌ পু•।ইতি মেদিনী॥

ততঃ ব্য হেতুঃ। ইত্যমরঃ॥ আদিঃ ॥ পরিপুশ্রঃ॥ পঞ্চন্যর্থঃ॥ কথান্তর• ॥ আনন্তর্য্যং । ইতি বিশ্বঃ॥

उज़्भवी की करनी क्षः। इंडि भक्तिनुका॥

তত্তম: ত্রি বহু বু মধ্যে সং। অনে-কেরমধ্যে সেই ইতি ভাষা। তছ-কাৎ ডতম পুত্যুবেন স্মুধ্ঃ। ইতি ব্যাকরণং॥

ত ভরঃ ত্রি দ্যোর্মধ্যে সং। দুযের নধ্যে সেই ইতি ভাষা। ভচ্দাৎ ড ভর পুত্যযেন নিরন্ধঃ। ইতি ব্যাকরণং॥

ভতস্য কি তৎসম্বন্ধি। ভার ইভি
ভাষা । ভত্তস্ শব্দাৎ ভ্যপ্
প্রত্যযেন নিরন্ধ । ইভি ব্যাকরণ ।।
ভঙ্জিঃ জী শ্রেণী। ইভি হেমচন্টু ।।

তিতি ত্রি তৎপরিমাণ। তত্তল ইতি ভাষা। বহুবচনাম্বোহ্যণ। ইতিব্যাকরণ।।

उद्यानः पृ वर्जनानकानः। उद भग्नायः। उपादः २। ইতাमतः॥ उद्यानभीः जि भुजाद्शमन्तिः। उभाव ज्वादिः। हि इम्हन्तुः॥ उद्यानभाः जि कर्मकातः। वजनः विना जात्रवशादिकश्ची। ইडामतः॥

्छव् की छन्। ইडामदः॥
छेद्भादः वि ञामकः। ইडामदः॥
छद्भादः वि ञामकः। ইडामदः॥
छद्भादाः वि उमामकः। यथा •
मूका जविष्ठ यमादः इडाकाः क्षभावायगाः। ইडि भाष्या खद्रथ्थं ॥
छद्कतः भू जवनव ॥ क्ष्रमास्मी
यिदः॥ होत नाम मूलकि मूदा ।

ইঙি ধরণিঃ॥

ভন ইউ ক ধারণে। ইতি কবিকল্লজনঃ।। ধারণ ধ্রণ। ভাষাযা
নস্য বিস্তারণে প্রায়ঃ প্রয়োগঃ।
কেচিভু ভন্তি ধাতঃ স্টুম্বারণে
বর্তে ইত্যাহাঃ। ইতি ভটীকাযা।
দুর্গাদাসঃ।।

তর বাঁ ত্রিন্। তবোঃ। তেষু। সেথানেইতি ভাষা।ইতি ব্যাকরণ• তর্ত্যঃ ত্রি ত্রভবঃ। ত্রিয়ুৎ প্রাঃ।

ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণ ॥ তত্রভবান্ বি শ্লাঘ্যঃ। ইতি জটাধরঃ **७५ - ही "यक्षण ॥ भवनाया ॥** विविधि उन्छ। इंडि मिरिनी।। বাদ্যপুভেদঃ। ইতি বিশ্বঃ॥ বস্তু। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। চেতঃ। ইতি ধ্রণিঃ॥ ৠ:। চতুর্বি•শতি ভত্তানিযথা । कि जिः) जाशः २ (उनः ७ मक्८ ও ব্যোম ৫ গন্ধ: ৬ রস: ৭ ৰূপ: ৮ व्यामाः अन्यः २०(नवः ১) नाश्विका )२ जिस्र्। **)**० कगः)८ दुक् **)৫ हरुः** १७ भारः ११ मूथ १४ भार्ः १२ विकः २० शुक्जिः २) गनः २२ वृक्तिः २० वश्कातः २४। ইতি পুরাণতত্ত্ব ॥ তত্ত্ব নানা মুনিভি নানাবিধ মৃক্ত•। তত্ৰ ত্ৰীণি ভদ্বানি যথা। সত্ত্ব॰ ১ রজঃ ২ তমঃ ৩। চতু-রিধানি যথা। তেজঃ ১ আগঃ ২ পृथी अ याजा ४ । भक्षविधानि वर्षा। मदः > ल्लाः २ द्रमः ७ शकः 8 क्रिंग क्ष्या । ক্ষিতি: ১ আপঃ ২ ভেন্ন: ৩ বাযু: 8 আকাশ ৫ পরমাত্রা ৬। সপ্ত-विवानि यथा। क्रिजिः > जाभः २ . (उनः ७ वायुः ८ जाकानः ৫ जीवः ७ वाजा १। न्व विशानि यथा।

পুক্ষঃ ১ পুক্তিঃ ২ মহতত্ত্ব ১ | তত্ত্বজ্ঞান দ্লী বুদ্ধিওণবিশেষপা তত্ত্ অহন্ধারঃ৪ নভঃ৫ বাযুঃ৬ জ্যোভি १ याभः ৮ किजिः है। अकामण বিধানি যথা। শ্ৰেত ১ বৃক্ ২ চফুঃ ৩ ঘুণে ৪ জিল্বা ৫ বাক্ ৬ পাণিঃ ৭ ডপছ: ৮ পাশু: র আদু: ১০॥ भनः >>। जियान म विश्वानि यथा। নভঃ ১ বাযুঃ ২ জ্যোতি: ৩ আপ: ৪ কিভি: ৫ শুেৰে ও বৃক্ৰ চফুঃ ৮ ্ষু। প ৯ জিল্বা ১০ মনঃ ১১ জীবাত্ম। ১২ পরমাত্মা ১৩। বেডেশ বিধানি यथा। नं जः ३ वायुः २ (ब्राजिः ७ আপ: ৪ পৃথী ৫ শদঃ ৬ স্পর্শ: ৭ क्रि । इमः न गक्तः रः (मुविः ১) दुक् )र हकूः) o जिल्ला 18 शानः २० जनः २७। मछन्म विधानि यथ। ।পূর্বোক্তানি বো**ডশ ১**৬ আত্ম। 59। পঞ্চবি•শতি তত্ত্বানি যথা। श्रद्धाकानि मधरम )१ शृक्षः ১৮ পुक्जिः 🕽 महान् २० अहहातः २) मूश २२ भागिः २० डेम्इः २८ भागूः २६। विष्णं में जि विशान यथा। পুরে জিনি পঞ্চি শতিঃ ২৫ জীবঃ ২৬। সপ্তবিশ্শতি বিধানি অথা। পুরোকানি ষত্বি শাঙিঃ ২৬ ঈশ্বরঃ ২৭। ইতি 🕮 ভাগবন্ত।। 📗

বুন্ধ জ্ঞান•াইতি হেমচনুঃ।।বৃথী 1 शुगान शुरमव मः मग भुरगाक्षम দৃষ্টান্ত সিদ্ধান্তাব্যব তর্কনির্ণয वाम बन्न विज्ञा (इवाजाम हन জাতি নিগুহ হানানা বোডল পদার্থানা তত্বজ্ঞানালিঃশৌুরসাধি পন্য। ইভি গোর্ভন্সূত্র ॥

**उ**द्गन होत्रः शु॰ विकु शृजा विवयक-न्। नित्रिक्तः । यथा । नामि काञ्चा नथार्गा के जीवारम् देकक्रणा वरम् । नमः भन्नारयजुरहार्यः जङ खबुष्यात नमः ॥ क्षीव शुग म्हर .(शुक्का महास्मयु भुविन्यामर । **७८७। हान्य बर्**थाठ **७५** जयक বিন্যােশ ॥ ইত্যচ্যতীক্ততনু विनधी ७ उद्देन । मान्य के नहीं-कत्रनजुर्राजा । ज्यः भातायह তদাপ্রণ মাত্মনেচ নত্যন্ত মুদ্ধরতু **७३ मनू करमा १। मकल वशू विक्री**वः পুণি মাথোজ্য মধ্যে ন্যসভূমতি गर्कात्रः मनाक्ठि मङी। क मुथ श्रम्य छ्या । हि स्था मदश्रा अप-गणनथकर्गारि शिक (मुाज भूर्व) ॥ वागानीन्त्रिय वर्ग माञ्चानिन्दर-वाकाम भूबं भग मूर्बात्मा कृत्रय শিরে চরণযো হ্র্ পুঞ্রীকণ

क्षि।। भ वीक क् श्रुवतीक **७५ कारि भू**विनःस्मर । इन्दीकः ं मृग्रम खन उद्दर क्षि भूवि न्यान ८ ।। সংবীক্ষা চন্দুমণ্ডল ভত্ত্বং ভত্ত शुविनारमः। तःवीत्रः वक्कि नखन তত্ত্ব বিন্যসেশ্যা বংবীকং প্রনেধিতত্ত্ব বাসুদেবঞ্চ মূর্দ্ধনি । यःवीक-न्यथ शुःखद्वः मह्हर्यः মথো মুখে ॥ ল•বা র• বিশ্ব ভত্বঞ্চ भुनु । तुक क्षि न । तुन्ती छः निवृज्जि जञ्जक व्यनिक क मूशश्राक ॥ ण दीक्र अर्वज्यक्ष भारत नात्रायन न्यत्म । (क्र्ने॰ वीब॰ (काপउर्देश न्ति : अर्वे गाउति ।। वव : उद्मानि विनामा भागायाय ममाहात्र ॥ षामा कलः यथा । जन्नामः **७** इंग्रंट नाथकः निषि <ক্তবে । কৃতেন যেন দেবস্য রূপতা নেব যাস্ত্রসৌ। ইতি গৌতনীয় ভজ্ঞ।।

তৎক্ষণঃ পু• সদ্য:। ইত্যমর:।।
তথা ব্য সাম্য• । ইত্যমর:।।
অভ্যুপগম:॥ পৃষ্ঠপুতিবাক্য• ॥
•সমূহয:॥ নিশ্চয:। ইতি মেদিনী॥
তথাচ ব্য পুরোজার্থদ্টীকরণ।।
ইতি স•ক্ষিপ্তসার ব্যাকরণ• ॥•

তথাগতঃ পু৽ বৃদ্ধ:।ইত্যমর:।।
পূর্ব্বাক্ত পুকারেণাগতে ত্রি।।
তথৈব বৃ তদদেব। সেই পুকার
ইতি ভাষা। যথা। অন্তি পুত্রো
বশে যন্য ভার্য্যা ভল্প তথৈব চ।
ইতি চাণক্য:।।
তথ্য: ক্লী সভ্য:। তদ্বতিত্রি।ইত্যমর:
তদ্ ত্রি তং ।ইতি ব্যাকরণ:।।
তদা ব্য ত্মিন্কালো। সেইসম্যে

ইতি ভাষা।ইত্যমর:॥ তদাত্ব ক্লী তৎকালঃ। বর্ত্তসমর:॥ ।ইত্যমর:॥

ভদানী ব্য ভিষ্মিনকালে। ইভ্যমরঃ ভদামুখ স্লী আরম্ভঃ। ইভিভূরি-পুযোগঃ।।

छिएन वे हिनमधाः ॥ शुडिहिन्हें इडि इनहन्दुः॥शृद्धी क्रिहिन्हें।। उद्याः वि क्शाः । इडि इ्नहन्दुः॥ उद्या जी वार्गित्याः । इडि इस्ता जी वार्गित्याः । इडि

ভদু ই সাদে ॥ মোহে। সৌত্র ধাতুর্য । ইভি কবিকল্লজন: ॥ তন দ উ. ঞ বিস্তৃতৌ । ইভি কবিকল্লজন: ॥

ভন কি উপক্তৌ ।৷ শুদ্ধায় ।। আহাতে ।৷ শদ্বে ।৷ উপতাপে ।৷ ভনুত্রা

উপসর্গাদৈর্ঘ্য। ইতিকবিকল্লজন: " তনুত্বচা ক্রী ক্রাণ্নিছ: ।,ইতি ইতৌ। শতৌ। ইতি

কবিকল্লজনঃ ॥

**७**न, फे**व मःश्र**ि। ইতি कविकन्न-क्यः॥

তনু উ ধ সংকোচে। ইতি কবিকল্প-क्यः॥

छनयः बि পूबः। ইত্যমরः॥

কন্যা । ইত্যমর: ॥ **চক্রপ**ল্যালভা। ইভিশ্বচন্দ্রিকা।।

ওবিষ্ট্ৰ- ত্রি অযু মন্যোরতিশ্যেন তনু:। ক্ষুদু:। ইতি ব্যাকরণ।।

**उनीयान्** वि अयस्यकामिकिशास्यन তনু:। অল্ল:। ইতি ব্যাকরণ-॥

**७**न्ः क्ली **म**जीत्र । इजुर्गामित्कायः॥

ত্রী শরীর ।। তুক্। ইতি (मिरिनी।। जी। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

**७**नुः बि अन्नः ॥ वित्रवः ॥ क्माः॥ इंडि (मिनि ॥

छन्हायः शुः जानवतृ तकवृक्षः। हेछि त्रो जनिर्घण्डः॥ मतीत्रहायाया शिची ह

जनुषः **পু॰ शूबः। ই** ि इनायुशः॥ छनुका जो कना। । इंडि मदत्र कावनी।।

**७**नुब॰ क्ली वर्ण। इंड्रामद्रः ॥

ত শুৰাণ ল্লী তনুৰ । ইতি হলাযুধঃ।। भवीत वक्षा ।

त्राज्ञनियकः॥

তন্পত্র: পু॰ ইসুনীবৃক্ষ:। ইতি রাজনিঘট: 🏾

जन्ज्या जी नामिका। **इंजि मद**-त्रञ्चावनी ॥

जनुत्रमः भू॰ घर्माः। इति शातावनी।।

उन्कृष्ट्रे की उन्कृष्ट्र इंडि भद्रक्षा-वली।।

जनकर की जनकर। इंडि मक्त्रज्ञा-वनी।

তনুলঃ ত্রি বিস্তৃতঃ। ইতি সংগি गाরে উণাদি বৃক্তিঃ॥

उन्ताउः शुः नतक विष्मयः। ই ि (रगहन्मः॥

जन्तीकः शू॰ রাজনদরः। ই**ভি** রাজ-निर्घ छै: ॥

তনুরুণঃ পু॰ বন্মীক রোগঃ হৈতি मद्रवावनी॥

उन्मकातिभी जी वानिका जी। ইडि मद्याना ॥

তনুক্ষীরঃ পু॰ আমাতকঃ। ইতি রাজ-निर्घणः॥

**उन्: जी म**तीत । इंडामतः ॥

**उन्कृ**डः बि छक्षेः। यद्गीक्**छः। ই**छ्ऽ-मद्रः ॥

তিন্ধাং পু•জী পুত্রং।ইতি ফটাধরং॥ ক্রিন্নপ•লী ষ্ত•।ইতি শব্দল্কা॥ তন্নপাৎ পু• অগ্নিং॥ চিত্রকবৃক্ষং। ইত্যমরং॥

তন্ক্হ প্লী রোম।। পতত্র । ইতি মেদিনী।।

उन्कंदः भू॰ भृवः॥ शक्र ॥ लाम । ইতি (स्महन्मुः॥

ভনূহুদঃ পু• পাযুঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।।

ভিক্তঃ পু॰ সূত্র॰। ইত্যমরঃ॥ গুল্ছ: ।
ইতি হেমচন্দুঃ॥ সন্ততিঃ। বথানা
অন্তঃল্যুঃ সর্বভূতানা মাত্রা বোগেশরো হরিঃ। স্ব সাধ্যা বৃণোদ্ধভ<sup>ি</sup>
বৈরাট্যাঃ সক তন্তবে ॥ ইতি
গ্রিভাগবত•॥

তন্তকঃ পু॰ তন্তভঃ। সর্ধপঃ। ইত্যমরটীকাষা•রমানাথঃ॥

তন্তকান্ত ক্লী তুলী। তাঁতেরকাঠ ইতি ভাষা। ইতি শবরগ্নাবলী।। তন্তকী ন্ত্রী নাডী। ইতি রাশনির্ঘণ্টঃ

তন্ত্রকা জ্বা নাড়া। হাত রাগান্যকঃ তন্ত্রকাটঃ পু• কোষকারঃ। গুটিপোকা

ञ्चकारुः भूर रकायकान्नः। खारुरााक इंठि **ভाষा। ইতি क**ंगिथतः ॥

তন্ত্রণঃ পুণ গুরু । হাত্তর ইতি ভাষা। ইতি হেমচন্দুঃ।

प्रकलक मे शत्रामधाताशवी जिनान-

जिथिः। সাশুविधी प्रिमा ६ जि जिथापिज्वः॥ ज्वनागः / भूः भुाशः। ইजि (स्मः

**व्यक्त**ः ॥

তন্তনিযা**স: পু॰ তাল:। ইতি** শব্দরহাবদী॥

তন্তভঃ পু॰ সর্যপঃ।। ইত্যন্তরঃ॥ বংসঃ।ইতি জটাধ্রঃ॥

७ छत्र॰ क्वी मृगान•। ই छि मदत्रञ्ञा-वनी॥

তন্তল প্রী মৃণাল । ইতি হেমচন্দু:।।
তন্তবাপ: পু তন্তবাব: । তাঁতি
ইতি ভাষা। ইতি জটাধর:।। তন্ত্রণ
। তাঁত্ ইতি ভাষা। ইতি শবমালা।।

তন্ত্রবায়ঃ পু॰ লূতা। ইত্যনরঃ রেই তন্ত্রবায়ঃ। ইতি শদরত্নবিলী ॥ তন্ত্রবিগূহা জী কদলী। ইতিত্রিকাণ্ড-

তন্ত্রশালা দ্রী তন্তবপনগৃহ । তাঁত্ ঘর ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। গর্ভিকা২।ইতি হেমচন্দুঃ।।

তম্ভসম্ভত বি সূত্রবিস্তবক্তাদি।

সিক্ষানকাপড ইতি ভাষা। ত**্র**পর্য্যায়: । উত্ত**ং** সূত্র ত উত ৪
। ইত্যমর: ॥

পু॰ তথাকবৃক্ষ:। ইতি তন্ত্র সার: ত্রিকাওশেयः॥ ভञ्छ∙ द्वी बहुँब ह्डार• ो विकाइः॥ | अविदः ॥ भूवान ॥ ठखवायः॥ श्रीहरूः ॥ मुक्ति भाषाविष्णयः॥ (रुजुः ॥ উভयार्थभूत्याहकः ॥ रें कि कर्डवाडा। इंडि (मिनी।। ताष्ट्रे ।। भत्रहन्तः ।। कत्रनः ॥ व्यर्भादकः ॥ उद्धः ॥ रेमनुरः॥ ्यत्राष्ट्रेज्ञिं। इंडि इमज्मू शुवकः। ই जि मद्वा वावनी माशधः । इंडि दर्गी ॥ वन ॥ गृह ॥ ॥ **ঁবপনসাধ্ন**।! <mark>সল• । ইতিনানা</mark>থ-ধ্বিমঞ্জরী ক্রা শাস্ত্রবিশেষঃ ভত্রা-गन्मा लक्ष प्या। मृष्टिक भूलय **.শৈ**চৰ কেবতানা• বথাৰ্চ্ন•! সাধ্ন-रिक्षव में अवंधा भुत भवतार प्रवास विध कर्मा मायन थिव भागत्या महजू-ৰিধঃ। সপ্তভি র্ল কণিযুক্ত নাগম• **उ**षिपू वृ शाः॥कः॥ यामनमा नक्रनः। সৃষ্টিশ্চ জ্যোতিষাখ্যান•নিত্যকৃত্য शुमीशन । कममूब गगजिए। बाजि: छर खरेथवर्ग ॥ यूगवर्म क न थ्राटा याम्नम्य वक्षा । 🗱। তুন্ত্রন্য লক্ষণ। সগশ্চ পুতি-नर्गक मञ्जनिर्गय ववह।। (नव्डा-

नाक मः ज्ञानः ठीर्थानारेक्षव र्यन्तः । उरेथवामुनवर्यन्छ दिशु निन्हाने स्विक ॥ अ•ङ्गित्थिव ज्ञाना॰ गर्खागरिकव निर्गयः। উৎপত্তি বিবৃধানাঞ্ তৰাণা কল্প স-ক্লিড।। স-জ্যান- জ্যোতিষাক্ষৈব পুরাণা-थान (नवह। कारमा कथन किन বুতানা পরিভাষণ ॥ শৌচা-শৌতস্য চাখ্যান• নরকাণাঞ্চ वर्गन । इत्र कम् हाथान जी भृग्नारेण्डव राक्षण ॥ ताक्रवास्ति , मानवत्या वृभधर्य छरेश्दछ । वाद-হারঃ ক্ণ্যতে চ তথা চাধ্যাত্ম वर्गनः ॥ इंड्यानि सक्तरेण्युङ्कः दञ्ज निम्नु हिनी यस्त । 🗱 । जन्मु गाराञ्चाः। विकृवंतिका (मनानाः इनान नृम वि खया। ननीना अध्या গঙ্গাপর তানা হিমালয়ঃ। অশ্বং সর্বৃক্ষাণা॰ রাজ্ঞানিন্দ্রে যথা वतः। (स्वीनाक यथा मूर्या वर्गानाः त्राक्तः ११ गथा ॥ ७०। नम्य-শাস্ত্রাণা॰ তত্ত্ব শাস্ত্র মনুভ্র-॥ नर्व कान शुम शुगु । छक देव (वम मिष्य । की ड्रेन ( एत्ए र्यम् रतमा भाव भाव ॥ भावन मुख्य-थानाना निर् (नारक शब्बंह। क्षा

छम् (भाकमाथा। यथा। न मकाः বিস্তরাঘজু মপি বর্ষ শতৈরপি।। সংক্ষেপাৰৈ পুৰক্ষ্যামি বোক कालाक दर्जन। हिर्ति (मार्व নবলক পাতালে বুক্ষশাসনে।। ল ক্নাৰ ভারতেচ ক্লিভৌ তন্তাণি যানিচ : ্লাখান • ত্রিবিধ • প্রোক্ত • চত্থ নৈশ্র স্তিণাকল শচত্রিবঃ (पुंक्ति जागरना उपनंत खथा। याग नक ज्या ज्यः (ज्याः (ज्याः ृथक् शृथक् ॥ **#** ॥ मूक्काथाः शुनक्ष मात्रराथाक नात्ररः। ग्राग्य किलाला (यागः कन्नः কণিঞ্জল: ॥ অনৃতশুদ্ধি বরিশ্চ मिक्तरगृत्त छथा । भूथरनाष्ट्र गर्मुङ (भाका मन् भूको विजाः॥ दिशीय। मू कक खब वर् मह्नापि शःश्रीत्रा (भू, हाः मजाकं मन्थ्राजा ख् शेव जिसर्नु १६ ॥ भाजवयः সাধিকঞ্জোকানা পঞ্চবি শতিঃ । ত্রিংশাতর সহসাণি শ্লোকানা। **जान म** श्राया ॥ भूभाक भूथाम তত্তে দিতীয়ে বসুস-খ্যয়া। সহ-मुापि उथा (माकाः मधिव माउ সংখ্যা।। ভ্তনেত্র সহসাণি -তৃতীযে পঞা সহসুক•। শাত্রয• ॥ शह्किल्लाकाः भुशकःदिधि दिश ॥ कनाम•ग्रा मह्मानि भात्रनायाः পুकीर्निडी: । भक्षिन माधिकाः द्याका **दम् द्याकाम्य नात्रमः**॥ বি শতিক সহসাণি বট্ সহসাণি সংখ্যা। বসুশাকাক কথিতাঃ किननः (भाकमः थाया। बरयामः সহসাণি কালোত্তর শতর্যণাশ্লাক नःथा नमूफिष्टे सात् कल्ल ह मःथाया ॥ वानमःथा निस्मुनि শ্লোকা নবতিঃ কীন্তি তাঃ। শ্লোকা-महमानि एक्षेतिः भाउ সংখ্যা শ্লোকাচ ভানুসংখ্যাতা স্তব্ৰেণিচ কণিঞ্জাল। অন্তশুদ্ধৌ সহসাণি পঞ্চানাখিকাতি চন পঞ্চৈব ক্থিতা নেত্ৰ সংখ্যাতানি यथार्थ ३:। वीदागरम व ५ र्सिकानिः শ তানি পরিস খ্যা।। সহসাণিচ ভাবন্তি শ্লোকানান্ত যথার্থতঃ। গঞ্চাধিক সহসু।ণি শ্লোকান। মৃত্ত স-খ্যয়া।সিদ্ধসন্তরণোক্তানি ঐশ্ব রেণ यथाপুরা । 🕸। ভামরঃ ষভি্ধে। জ্ঞেবঃপুথমো যোগডামরঃ॥শ্লোকা ন্তৰ ৰযন্ত্ৰি-শৎতথা পঞ্চলতানিচ । ত্রিবি শতি সহসাণি 'শ্লেকান (हरु मःथाया । अकाम म मर्माण

স-খ্যাতাঃ শিবডামরে॥ শ্লোকাঃ **স**প্তৈব নিশ্চি*ত্য ঈশ্ব*রে**ব্**ণব ভাষিতাঃ । তावर स्नाक मर्ह्यानि शक क्षाक **भ**जानि ह । खाना ब्रानि मूर्गाया जामत्र कथिजानि ह ॥ नव শ্লোক সহস্থানি নব শ্লোক শতানি চ। সারম্বতে তথা শ্লোকাঃ পঞ্চিব পরিকীর্ভিডাঃ ॥ বর সংখ্যা সহসাণি শ্লোকানা- বুক্ষডামরে। ্পঞ্চের্ম্বর শতান্যত্র সংখ্যাতানি শিবেন তু ।। ষষ্টিঃ শ্লোক সহসূর্য শন্ধর্ ডামরোভ্মে। শ্লেকাশ্চ. ৰপ্তিসংখ্যাতা বুল্ধণা ব্যক্তযোদিনা **।।**#।।यामनाः यहै न•थ्याञास्रवाहा-্রন্দিযামলে। দ্বাত্রি-শচ সহস্রাণ ত্রবন্ত্রি•শৎ শতানিচা।দ্বিতীষে বুক্ষ न रखे जू दाविः শতिक म र्थाया । সহসাণি শতান্যত্র তান্যেব কথি ভানিচ ॥ जावद मः भा সহসাণি শতানি পরি সংখ্যযা। বি-শতিক তথা সংখ্যা শ্লোকাক বিষ্ণুযামবো৷ কালসংখ্যাসহসাণি বেদস-খ্যা শতানিচ। পঞ্চৰ্ত্তি ख्या (नाका कनिष्ठं क मुयामला।। নবুশ্লোক সহস্যাণি ত্রযোদ শ শতা-निष्ठ । 'द्यावि गाँउ ख्या (ग्लाका

गरान यामलाखरम।। दिवस्था मरुमुानि चामिजारथा ज् याम 🙉 । #। তত্ত্বে নী**লপতা**কাযা• সহস্যাণি চ পঞ্চ ৷৷ পঞ্জবি শক্তি শ্লোকাশ্চ ক্থিতা বামকেশ্বরে। ত্রোদশ সহসাণি দেশতে বি•শতি শুথা।। শ্লেকা মৃত্যুঞ্জনে তক্তে সংখ্যাতা স্তত্ত্রেদি ভিঃ। গল্প-খ্যা সহস্যুণি ত্রীণিস·খ্যা শতানিচা। সপ্ত**্লোকা** দশল্লোক বহুসুটো তাবড়েব শতানিচ।। মাধাখ্যের মহাতত্ত্ত যথার্থতঃ পুকীন্তিতাঃ। সঞ্চশ্লোক সহসাণি তাবস্ত্যেব শতানিচ॥ শতাৰ্দ্ধ সংখ্যয়া শ্লোকা দক্ষিণা মূর্ত্তি তন্ত্রকে। দশশ্লোক সহস্থাণ ভাৰন্ত্যেৰ শভানি চ্যা এযোদশ তথাশ্লোকাংকালিকাখ্যে ট ভব্ৰকে ।কামেশ্বর্যান্তত্ত্রবরে সহস্যুণি ত্রয• महर ॥ (भाकानाः जःथाया हात ভন্তরাজেচ সংখ্যা ৷ নবশ্লোক সহসাণি নৰংশ্লাক শভানি চ॥ দ্বাবি শতি সহসাণি হরগৌর্য্যাথ্য ভল্লকে। ভথাচ বি শতিঃ শ্লোকা ন্তক্রেমিন্ পরিকীর্ত্তি।: । সর্ক সংখ্যা সহসাণি দ্বিতীযে তত্ত্ৰ

বেদিভিঃ। অষ্টাবি শতিক্ষ শ্লোকাঃ সংখ্যাতা স্বজ্রনির্ণয়ে । স্বব্লিকাথ্যে 'মহাতত্ত্ৰে শ্লোকাণ্ড দশসংখ্যযা। সহসাণি তথা সপ্ত সংখ্যাতানি भनी विভि: ॥ विजीय वर्रे मह्मानि छम्बद्ध कनिश्चक । अर्क मःश्रा সহ্সাণি তথাস্কুশ শতানিচ।। তাবদেব্যাসহাত্ত সেংখ্যাতানি ছিজোভীমঃ। দ্বাবি শতি সহসাণি 📗 ছাবি•শতি শতানিচ ৷৷ কাত্যায়ন: ন্তু তত্ত্ৰস্য সংখ্যাতানিমনীবিভিঃ। বসু শ্লোক সহসাণি ভাবস্তোব শভানিচ ৷৷ পুত্যঙ্গিরায়া স্তত্তে চ নিশ্চিতানি যথাৰ্থতঃ। ভূত স্ংখ্যা সহসাণি তথাহি ভছতানিচ ৷৷মহা লক্ষ্যা স্তন্ত্ররাজে পঞ্চ শ্লোকাশ্চ কীৰ্ভিতাঃ। গল সংখ্যা সহস্যাণ শ্লেক্যাশ্চ ঋতুসংখ্যমা । ত্রিপুরার্ণবে মহাভজে লিখিতাঃ পর্নবিভিঃ। সরস্বত্যাঃ সহস্কে দ্বে দ্বে লভে সংখ্যম মৃতে ॥ পঞ্ শ্লোকা স্থবাত্র বিজ্ঞাতব্যা দিলাতিভিঃ । দ্বাবি শতি সহসাণি আদ্যে ত্যজ্ঞান্তনোত্তরে ॥ অঞ্ সংখ্যা শতান্যত্র শ্লোকাঃ পঞ্চলৈৰ তু। काविः भेडि प्रश्नाि छथा वागः

শতানিচ ৷৷ দ্বাত্তি-শত্ন তথা শ্লোক্য যোগিন্যা স্তম্ভরাজকে। দ্বিতীযে ষট্সহসু:ণিতথাচ ত্রিশতানিচ॥ ত্রয়ঃ শ্লোকা ভথিবাত বারাহ্যা স্তন্ত্র উভ্ৰমে ! উমি সংখ্যা সহস্যাণি তত্ত্ব সংখ্যা শতানি চ ॥ গবাক্ষে তন্ত্ররাজেমিন্ শ্লোকা হি তত্ত্ব अ.थ)या । वर्ग अच्या अस्त्रानि দ্বেশতে পরিনিশ্চিতে।। শ্রোকা-ত্রষ্শ্চ সংখ্যাতা ভক্তে, নারাষ্ণী-यत्क । (वन मःथ्या मह्मानि ভান্যের চশতানি চা শ্লোকানবতি সাখ্যাতা মৃডানী তন্ত্ররাজকে ৷ ভূতীযে ত্রি সভ্যুণি ত্রি শতানি कनिश्रंक ॥ जि॰मंद (भ्राकाण সংখ্যাতা জ্ঞাতন্যা স্তন্ত্রবাদাভঃ ।।ঞ্চা উপতন্তাণিয়থা। সৈক্ষোক্তা-ন্যুপতজ্ঞাণি কাপিলোক্তানিয়ানিচ । অভূতানিচএতানি জৈমিন্যুক্তানি यानिष्ठ ॥ विश्वष्ठः कशिव रेण्डव ভাগব: मिष्का माञ्चवत्तूरा ভ्छ ख्या। भूका वृङ्गािक क्विन्द्र বে মুনি সভ্সাঃ। এতিঃ পুণীতান্য न्यानि উপভক্তाণि गानिह गुन সংখ্যাতানি ভান্যুত্র শ্বিশাবিদ্ধি র্মহাত্মভিঃ। সারাৎ সারতরাশ্যেব সংখ্যাতানি নিবোধত ॥ ইতি বারাহীতজ্ঞ ।।

ভন্ত কি না নূজ ক্রণ ইত্যন্ত ।। ভন্ত কাষ্ট জী ভন্ত ব্যবস্তুরী।ইভি কিকাওশেষঃ।।

ভন্ততা দ্রী অনেক মুদ্দিশ্য সক্ शुक् छि:। यथा। वाल्यगाष्टाकशादेन-न्तु परेष्ठनम् अस्या वाजानाः वयागाः वारान्।हाकनात्वानाः म् रानानी मानी विकारण कथान यागानाः অ্যাণা সক্ৎসক্দনুছিতেন পু্বা-कान्यक्राताशकातः निव्यति । তথা नामा नुकावय माञ्च नावारम শেন সকৃৎপা্যশ্চিত্তে কৃতে বৃদ্ধ বিধ্রম্পোগনাশঃ। ভজভোষা হেতুক। অনৃষ্ঠার্থৈকজাতীয় কর্মণঃ काल (मनकर्वामीना शुर्यागानुवन्न বৈৰফেতু ভূতানা মভেদে উদ্দেশ্য विष्मगागुरु इंछि । धन्यः द्वार्टा হ্ধিকারী ভবতি দৈবে পৈত্রে চ কর্মণি ৷ পবিত্রাণা তথা জাপ্যে দানেচ বিধি দশিক ইতি বিফুক্ত। **অন্নাত্বা নাচরেৎকম জপ হোনা**দি 'ক্ঞনেতি দক্ষোত্রপ কিশা হ সান-क वृत्र का द्वा व दिव व किन क ब गा-

শেষ কর্মার্থ মেক নেব নতু পুর্তি
কম্ম করন্য: ইতিপুন্দি ভতত্ম: ॥
তন্ত্রবাপঃ পু• তন্ত্রবানঃ । তন্ত্রপু•নী
। ইতি শদরহাবলী ॥

তত্রবায়ঃ পু॰ বর্ণসঙ্করজাতিবিশেষঃ ।তাঁটিইডি ভাষা। অস্যেৎপ্ৰি यथा। जाम्अ अहम् काग्रा॰ नि-কারশ্চ জাগতে। মণিকারাৎ তামু-अप्रा: न्विरकाश्य १ जाया ॥ भगिवकात्रागिकाय्या । उद्धनायाक জন্মিরে। ইতি পরশের পদ্ধতিঃ।। **७**९ शर्यप्रायः। अतिनतः २। ই ७ प्रमातः ॥ তত্রবাপঃ ৩। হাত ভরতঃ॥ ভদ্তবাপাঃ ৪ ৷ ইতি কটাবরঃ 🔃 **उ**खनायः **८। इ** ७ मदान्नावनी ॥ व्जा। इंजामत्वीकायाः सामी ॥ ভব্রিকা স্ত্রী।ইন্ডনরঃ॥ **उज्जिभागकः भू• जयम्थर्तिकः।** इंडि नद्याना॥

उद्धी जी वीगाथाः ॥ ७५० ॥ (महिना। इंडि मिनि।। निनी-विम्पाः ॥ यूवडीर्डिमः । इंडि मफ्तक्षवनो ॥ ब्रब्हः । इंडि (हमहिनुः॥

उन्मृतानः शू॰ उञ्चतायः। हेन्युन्तः भोकामाः साममूजिल्हे॥ जन्न जी निम्।। यानमाः। हिन्
'(हमहन्दुः॥ जमानिमानः यथा।
'जमावाज कजान्ता हिन ।
जन्माथः। हिन्द्रवार्थम्न विजि ॥
जन्माथः। हिन्द्रवार्थम्न विजि ॥
जन्मायः कृष्ठाः क्रान्यः। निम् । नि

তন্দুলু: তি নি দুলো: ই তি জটাধর:।
তন্দু: জী নিদু। ॥ আলস্য:।
ইঠুগাৰ্দিকোধঃ।

छिन्द्रिका खी छिन्द्रः । ই । अस-बङ्गावनी ॥

खन्तीः खी अग्रहम्माहिनामबीह्न-न्तिपाणुज्यः ॥ अञ्जडम्पाहिना नवाक निनीलनः निःमश्डिठ यावट रेग्रान्। रेठि ज्व गः॥ उट भग्रायः । भुगीला २ । रेट्यावः ॥ उन्द्रा अ उन्द्रिः ९ । रेठि काक्षिका ६ विषयाञ्चानः ७ । रेठि वाक्षिती ॥

ভিন্নি: জ্রী চক্রস্বার ইতি রত্নসাবার তব্দি রলি পাঠঃ।

ভন্যতুঃ পু॰ রাত্রিঃ।। বাদ্য•।। ইত্যাদিকোষঃ।।

छन्। जी क्नाकी।यथा। उव उदि-

विश्वादिको नियरको हक्त छिती । वामगृपु कत्रगाशी ख्वान् यब कत्र भूपः ॥ इकि का लिपामः ॥ मालपर्गि । इकि ताक्त निर्ध्यः ॥ जन एक पार्थ । इकि क्रिक्न-क्रमः ॥ व्यमाञ्चादनप्रीक्राम्यः ॥ इकि उक्षे कारा-पूर्णाप्तामः॥

তপ ঔ উপতাপে। ইশ্বী ভাবে
।ইতি কবিকল্পন্য:।।
তপ যড ঔ দবে। উপতাপইতি
বাবং ।। ঐশ্যে। ইশ্বী ভাবইতি
যাবং ।ইতি কবিকল্পন:।।

তপ ক দাহে। ইতি কবিকল্পনাং।।

সলা তপস্যা। তৎ ত্রিবিধং।

শারীরং বাচিকং মানসঞ্চ। যথা।

দেব দ্বিল গুৰু পাজ্ঞ পূলনং শৌচ

মার্লবং।বৃন্ধচর্য্যহিংসাচ শারীরং
তপ উচ্যতে।। ১ ।। অনুদ্বেগকরং
বাক্যং পত্যং প্রিম হিতঞ্চ যথ।

স্বাধ্যায়া ভাসনক্ষৈব বাল্যমং তপ

দৈচ্যতে।। যাননং পুসাদংসৌম্যান্ত্রং
নৌন মান্ত্রাবিনিগুহং। ভাব সংশুদ্ধি
রিত্যে ভত্তপোংমানস মৃচ্যতে।। ৩
।। গ্রুণা তদপি ত্রিবিধং। সাত্রিকং
রাজসংভানসঞ্চ। যথা। শুদ্ধয়েশ
পর্বাধিতপ্তং তপ তথ ক্রিবিধংনরিঃ

। অফলাকাঙ্ক্লিভি যুক্তি: সাত্ত্বিক। পরিচক্ষতে॥ ১॥ সৎকার মান পূজার্থ• তপো দন্তেন চৈব যৎ। ক্রিয়তে তদিহ প্রোক্তণ রাজসণ চল मधुन्।। २॥ मूहगुाह्गाञ्चाता यट পীড়বা ক্রিয়ন্তে তপঃ। পরস্যোৎ-সাদ্নাৰ্থৰা তত্তাম্স মুদাছতে ॥ ৩॥ ইভি শ্রীভগবদ্দীতা॥ 🕸 ॥ बनलाकामू कुलाकः । यथा । অদ্যোপরি তপো লোক স্তেকোন্য উদাহ্ड:। বৈরাজা यङ ভে দেবা বসেযু দেবে পুজিতা: ৷৷ বাসুদেবে মনো যেবা বাসুদেবে হপিত ক্রিয়াঃ **৷ ভপসা ভোষ্য গো**ৰিন্দ মভিলাৰ বিবর্জি ভাঃ। ত॰ তপোলোক মাসাদ্য वमिष विकिछित्रियः। भिलाक ब्डायाय रेव मरहान्धनिकाम्ह य ।। যেহ্শ্মন্ত উ।শ্চ মুনযঃশীর্ণপর্ণা-শিনক্ষ যে। খ্রীব্রে পঞ্চাগ্নি ভপসো वर्षामु इ खिला नवाः ॥ (इमाख শিশিরে বাবে ক্ষিপন্তি সলিলে ক্ষ-পাঃ। জন্মাগু নীরবিন্দু: শচ ত্ষিতা যতযোহপিবন্ ৷ বাতাশিনোহতি क्कृषिकाः भाषाक्षष्ठागु ज्रूम्ण्याः। **धिक्**र्ञ्छ। त्रविष्ण (स्काङ्क्ष्मान निकेलीः ॥ (य देव पितानिकहानाः

মাসোদ্বাসাশ্চ যে পরে। মাসো-পবাস পর্বিত চাত্র্মাস্য বুক্তা ক যে ॥ খদ্বন্তে তোয়পানা যে যে ব্যাসোপবাসকাঃ যে চ ব্যানি-भिवा रेव वर्षभात्राष्ट्र अर्थकाः ॥ স্থাপুসাম্যোপসংপ্রাপ্তা মৃগকণ্ড্ সৌখ্যদাঃ। জটাটবী কোটরান্তঃ কৃত নীডাওজাক যে।। পুৰুচ विनाकाकाका महायुग्वाञ्चि मुख्याः া **লভাপু**তারিঃপরিতো বেঞ্চিতাব-যুৱাশ্চ যে ৷৷ শন্যানিচ প্রচানি যদক্ষেষ্ব মহীপতে ৷ ইভ্যেতৈ नियरेम् यं जु क्रिष्टाजान खला-প্রনাঃ !৷ ব্রফালুষ স্তপোলোকে তে বসন্ত্রন্থভোভ্যাঃ । ইতি পদ্ম श्रुवानः ॥ 🕸 ॥ छान्त्रायनामित् उ० ॥ धयः। ইতি मिनि॥

তপঃ পৃ• প্রীষ্মঃ। ইত্যদরং॥
তপঃকরঃ পৃ• তপদীমৎস্যঃ। ইতি
শক্ষরতাবলী॥ তপস্যাকারকে তি
তপঃদ্রেশসহঃ তি দান্তঃ। ইত্যমরঃ॥
তপঃস্থলী ত্রী কাশী। ইতি ত্রিকাও
শেষঃ॥

তপতী দ্রী ছায়নামস্য্পন্নী।ইতি ত্রিকাগুশেষঃ॥ সৃষ্ঠকন্যা। সা অক্তৰ-শীষ ঋফরাজ পুত্র সম্বরণ

**इन्स्ः** ॥

ভার্যা ইতি শ্রভাগরত।।
ত্রানঃ পু॰ স্র্য:॥ ভল্লাতকবৃক্ষ:॥
ত্রাগদি দাহাত্মক নরকঃ॥ গ্রীমঃ।
ইতি হেমচন্দুঃ॥ তাপঃ। ইতি
ধরণী॥ অর্কবৃক্ষঃ॥ ক্ষুদ্রামিষ্টবৃক্ষঃ ॥ স্র্যকান্তমণিঃ। ইতি
রাজনিষ্টিঃ॥

তপ্নছদঃ পু॰ আদিত্যপত্রকঃ। ইতিরাজনিঘটঃ॥

তপনতন্ধা ত্রী শনীবৃক্ষঃ।। যমুনা।
।ইতিরাজনিঘণ্টঃ।।

তপননণিঃ পু॰ সূর্যকান্তমণিঃ।ইতি ।। রাজনিধনিঃ॥

তপনাত্মজা স্ত্রী গোদাবরীমদী। ইতি হেনচন্দুঃ॥ যমুনা চ।।

তপনী জ্রী গোদাবরী। ইতি হেমচন্দুঃ।

छन्नीय- क्री सर्ग-। इंडाबदः॥

তপনীযক লী সুবর্ণ। ইতি রাজ-নির্মণীঃ।।

তপনেষ্ট॰ ক্লী তানু<sup>৯</sup>। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।

তপসঃ পু• চন্দুঃ। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ ॥ পক্ষী । ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যামুণাদিক্তিঃ॥

क्रशसकः भुः हेन्द्रः। हेवि (६म-

उभगुः क्ली जन्मभूतः। ইতি শন্ চন্দ্রিকা।।

তপস্যঃ পু॰ कानुननामः। ইত্যন্রঃ।। অজ্জুনঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।।

তপদ্যা . জ্ঞা তপ:। তৎপর্য্যায়:।
বুতাদান । ২ পরিবুজ্যা ত নিম্ম
হিতি: ৪।ইতি হেমচন্দু: ।। বুত
চর্য্যা ৫।ইতি মেদিনী ॥

তপষিনী জী জটামা•সী।ইত্যমরঃ
।। কটুরোহিণী।ইতি হেমচন্দুঃ ।।
নহাশাবণিকঃ।ইতিভাবপুকাশঃ
।। তপোয়ক্তাজী চ।।

তপশ্বিপত্রঃ পূ॰ দমনকব্**কঃ।ইতি** রাজনির্ঘটঃ॥

তপরী বি তপোযুক্তঃ। তৎপর্য্যায়ঃ
। তাপসং২ পারিকাদ্ধী ৩।ইত্যমরঃ
।। পারকাদ্ধী ৪ পারিকাদ্ধকঃ ৫।
ইতি শবরন্নাবলী ॥ তপোধনঃ ৬
।। আনুকম্প্যঃ।ইতি মেদিনী ।।

তপদ্বী পু নারদ:। ইতি শদ্রদ্রাবলী ।। মৎস্যবিশেষ: । তপম্যা
নাচ্ ইতি ভাষা । তৎপর্য্যায়: ।
তপংকর্:২ চেপ্তক: ০ চেপ্ত:৪ । ইতি
শন্চিন্দ্রনা ।। বৃতক্র
ইতিরাজনির্ঘট: ।।

छगाः भू भावमानः॥ विनित्रकानः । ইতি মেদিনী ॥ গ্রীম:। ইত্যমর **होकाया॰ नयनानलः** ॥

**७**भाज्य**ः भू** वयाकानः । हेडि (रुग्रम्भुः॥

ভপিত বি ভণ্ড ৷ ইতি দ্বিক্প-८कावः ॥

তপু: পু• অগ্নিঃ॥ স্র্যঃ। ইভূগোদি-(कावः।।

তপোৰনঃ পু• তপষী। ইভি নেদিনী ॥ मननकव्कः। इंडि রাজনিঘंটः॥ **उर्लादना जी मू** श्रीती। इंडि मिसिनी **ত**পোवर्षः श्र् तुकावडंत्मः। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

সম্ভাপিত: ২ দূন: ৩ বৃপাবিতঃ ৪ ধ্পিত: ৫। ইতি হেনচন্দুঃ॥

ভপ্তসম্ভঃ পু॰ নরকবিশেষঃ।ইতি मार्क्एवन्यूद्वानः ॥

**उ**छकृहुः श्रु वु उवित्मयः। यथा। ় **প**যোষ্**তমুদক**•বাযুতপ্ত•পুতিত্যহ্• পিবেৎসভপ্তকৃছঃ।ইতি পৌতমঃ॥ छक्षभाषाणम् ७ क्री नतक वित्मवः। ইতি বুক্ষবৈৰৰ্ভেপুক্তিখণ্ড•॥

ভন্তবালুকঃ পু॰ নরকবিশেবঃ। ইতি श्रुवाग-॥

তপ্তৰপক লী বৌপ্ত- ইতি বান্ত-निर्विष्टः ॥

ভপ্তশৃমিজ্ও জ্লী নরকবিশেব:। ইতি বুন্ধবৈৰৰ্ভে পুক্তিখণ্ড•॥

তপ্তসূরাই ও জী নর কবিশেষঃ। ইতি वुक्रदिवार्डभुक्डिथ ७ ।।

তम উ ইর ভ य (श्राम् ॥ इहाया॰ । ইতি কবিকল্লফ্মঃ।।

**७ग॰** क्री अक्षकातः ! इंडि भंद-ब्रज्ञावनी ॥'शामागु॰। इंडि नंब-**इ**न्स्कि॥

छमः शु॰ जाबाखाः। ইত্যানর টাকাযা। রাযমূলটঃ।। তমালবৃক্ষ:। ইতি माञ्चा प्राचित्र भा

তপ্তঃ তি ভাপযুক্তঃ। তৎ প্যায়িঃ। তমঃ ক্লী পুক্তেওণবিশেষঃ। ভক্ত আবরক নোহ্নেডু:। ইভানর ভরতৌ ৷৷ অস্য কার্য্য সংহারঃ ৷ ইতি এ পরস্বামী।। তস্য ধর্মো যথা १ भूमारः ३ (मारुः २ जयः ० क्रास्टिः ৪ বিষাদঃ ৫ শোকঃ ৬ অরতিঃ ৭ व्यनार्ग्रजा ৮। ইতি নোক্ষধর্ম:॥ भूमः २ जन्दा २० (मारुः २२। ইত্যাখনেধিকপর্ব।। তান্ধকার:1 **७९** भर्यायः। ७ मनः २ निमाठग ৩ নীলপক্ষ• ৪ রজোবল• ৫ দিবা-छकः ७ वियष्ट्रिः १ चल्क् ४ व्यः

३।इंडि विकाश्वरण यः ॥ त्राक्षात्रमः
- दे॰ पिनास्तरः १२ स्वरुः १२ स्वरुः १२ स्वरुः ११ स्वरुः ।। स्वरुः इंडि स्वरिनी ॥ भाषाः । इंडि स्वृहन्तः ॥

जमः क्री शृ ताष्टः॥ ই जि स्मिनी। जमकाः शृ हेन्द्रत्वायः। मक्षकः हे जि स्माहन्द्र जिकाश्रान्यकः। जमकः जि ज्यकः। वाक्ष्रिकः हेज्ञादिकायः॥

जमगुडः शृ नद्गक्षा हिए (रुनहसुः।

তমর কী বঙ্গ । ইতি হেমচন্দুঃ।
তমরাজঃ পু শকরাবিশেষঃ। নবাত
ইতি গুগাত ইতি কেচিৎ। তৎ
পর্যাবঃ। শালকঃ ২ তস্য গুণঃ
ত্মাজুর দাহ রক্তপিন্ত নাশিরে।
ইতি রাজবল্পভঃ।।

ভনসং ক্লী অন্ধকারঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেবঃ॥ নগরং। ইতি সংক্ষিপ্তসারে উপাদিস্ভিঃ॥

ভনসং পু কৃশং ॥ অন্ধকারং। ইতি সংক্ষিত্তসারে উণাদিব্তিং॥ ভনস। প্রী নদীবিশেষং। ইতি সংক্ষিণ্ডসারে উণাদিবৃত্তিং॥ তমন্ততিঃ দ্রী অন্ধারসমূহঃ। ইতি তমিসা শব্দার্থে মেদিনী॥ তম্মিনী দ্রী রাজিঃ ॥ হ্রিদুা। ইত্যমরঃ॥

তমা জী রাজি:।ইতি ক্মচন্দু:।।
তমালবৃক্ষ:।ইতি শদ্চনিদুকা।।
স্
তমা: পু• রাহ্:।ইতি নেদিনী।
তমাল• লী পত্রক•।ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

उनानः शुः वृक्वित्मवः। उ পर्यायः। कानकक्षः २ उाषिणः ၁ । ইত্যমর: ॥ তাপিঞ্জ: ৪ । ইতি ভরতঃ৷৷ নীলভালঃ ৫ ভনালক: ৬ नी नथुषः १ कान जानः ৮ स्रायनः २। यम् गूनाः। मधुत्रवः। वंकावः। वृष्युवः। निनित्रवः। शुक्दः। कक পিত্ত ভূষ। দাহ শুম শান্তি করত্বঞ্চ । ইতি রাজনিঘণ্টঃ ॥ তিল্কং॥ খন্নঃ।। বৰুণবৃক্ষঃ। ইতি মেদিনী।। क्ष्यमितः। इंडि मक् हिन्का॥ বৃক্তদে ব॰শত্চিচ পু॰ ক্লী। ইতি লিফাদি সংগ্রহে অমর ভরতৌ।। ত্রনালক প্লী সুনিষণুশাক। ইতি ত্রিকাপ্তশেষ্ট্র।পত্রক । তেজপাত ইতি ভাষা।ইতি রাজনিয়টা उमालकः शु की उमालवृक्तः॥ ভযোগ

व भव्क । ই जि भव्यक्षावनी॥ তমালপত্ৰ• ব্লী ভমালবৃক:।।

जिनकः॥ भवकः। ই छि (मिमिनी॥

ত্रनानिका जी जामनिश्रास्मः।

ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। তামুবল্লী।।

ভূম্যানলী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ তমালিনী जी ज्यामनी। इंडि

রাজনির্ঘ<sup>ণ</sup>টঃ ॥ ভামলিপ্তদে**শঃ।** 

**ই**তি (হমচन्दुः॥

अमानी जी जामुबली॥वक्गवृक्षः। है जि जा जिन विकि ।।

তনিঃ জী রাত্রিঃ। ইত্যমরটীকাযা।. ভরতঃ ॥

তনিসু॰ ল্লী অন্ধকার । ইত্যমর:।। কোধঃ। ইতি মেদিনী॥

তনিসা জী অন্ধকাররাতিঃ। কৃষ্ পক্ষনিশা। ইত্যমর: ॥ তমোযুক্ত

बाबिबाब॰ । इंडि बायमूळिः ॥ मर्भाताबिः । ই**डि** वावन्त्राजिः ॥

তনন্ততিঃ।ইতি মেদিনী।।

তমিসুপক্ষঃ পু॰ কৃঞ্পক্ষঃ। বথা। ভনিসুপক বুটি কুট ভক্কিত নিতি ॥

ीश्यः।

**्भो जो दाविः॥ हिंदुम्। ই** छ। सदः॥ ज्याकः भु॰ वहिः॥ म्याः॥ हमुः॥

वृषः ॥ किमवः ॥ मञ्जः । इंडि

ত্যোহ

(मिनिगा

ज्याकारिः भू कारितिक्षः **३**ि मदत्रदावनी ॥

ज्यानूरे शु अशिः॥ जूर्याः॥ हन्दुः॥ मीशः। इंडि मस्त्रज्ञावली।।

उत्भावूमः भू॰ मूर्याः। इति भक्-बद्राक्नी॥

उत्भाषकः भू॰ मृर्गुः ॥ हन्तुः ॥ वृष्तिः ॥ अगिः। इति व्यक्ति ॥

उत्मां छिट श्रु॰ थान्। इंडि मद्यामा॥

তমোমণিঃ পু॰ থদ্যোতঃ। ইতি जिका ७१ मयः ॥ (गामिरकमिशः। इंडि दाजनियं है:॥

ज्यानिको भी मिनविमिनः। ज्या नुक इंडि ভावा। उर्श्यायः। তানলিঙিঃ ২ বেলাকুল- এ ভ্না-निरा ८। इंडि मक्द्रदावनी। ভামলিপ্ত• ৫ ভামলিহী ৬। ইভি বিকাওশেবঃ।। দামলিগু-৭ ত্মা-विनी b खन्नु भ विकृग्रः > 1 इैंडि (इमहन्मुः॥

ভদোবিকার: পু• রোগ:। ইভি त्राजनिर्घणः॥

उत्मार्तः भ हमुः। हेडि मन् बद्धान्त्री॥

ত্প। স্ত্রী গৌ:।ইতি হেমচন্দু:॥
তথ ত গভৌ।ইতি কবিকল্লফম:॥
তথা স্ত্রী গৌ:।ইতি হেমচন্দু:॥
তথ ড গভৌ॥ রক্ষে।ইতি কবিকল্লফম:॥

তর: , পু॰ তরণ: !। কৃশানু: । ইতি মেদিনী ।। বৃক্ষঃ।ইতি ভূরিপুযোগঃ

प्रमुख्य के बल ॥ (वशः ॥ छीत ॥ शः । इंडि में दत्रज्ञातनी ॥

তরক্ষঃ পৃ৽ বাযুনা নদ্যাদ জলস্য।
তিয্যপৃদ্ধ প্লবন : চেউ ইতি ভাষা।
তৎপর্যায়ঃ । ভক্ষঃ ২ উর্মিঃ ও
বীচিঃ ৪।ইত্যমরঃ। উম্মী ৫,বিচী
৬ বিচিঃ ৭ লহরী ৮ হলী ১ বিলিঃ
১০।ইতি ভরতঃ। লহরঃ১১।ইতি
সারস্দরী। জললতা ১২ ভৃঞ্জিঃ ১৩
।ইতি হারাবলী।। বন্ধ ।।হ্যাদীনা
সমৃৎফালঃ । ইত্যমরঃ ।।
তরকিণী স্ত্রী নদী । ইত্যমরঃ ।।
তরকিণী স্ত্রী নদী । ইত্যমরঃ ।।
হরি দুর্গাদাসঃ ।। পারগমন । সম্ভাবিশা সংগ্রাদাসঃ ।। পারগমন । সম্ভাবিশা স্থা। ক্লণম্পি সজ্জনসক্তি
রেকা ভবতি ভবার্ণক তর্পে
নৌকা।ইতি মোহমুদ্ধরঃ ।।

তরণঃ পু॰ ভেলকঃ।ইতি ত্রিকাণ্ড--শেষঃ।। স্বগঃ। ইতি শন্মক্তি- সিস্কু: ।। তরণি: জ্রী নৌকা ।। ঘৃতসমারী। ইত্যমর: ।।

ভরণি: পু• সূর্য্য: ॥ অকবৃ**ফ:।** ইত্যমর:॥ ভেলক: ॥ কিরণ:। ইতি হ্মেচন্দু:॥

তরণিপেটকঃ পু• কাগ্রামুবাহিনী। তিজটাধরঃ।।

ভরণিরত্র• ক্লী মাণিক্য•। ইভি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

তানী স্ত্রী নৌকা। ইতি শব্দরত্বাবলী

। পদ্মচারিণী। ইতি শব্দচন্দ্রকা

। প্তস্মারী। ইত্যমর টাকাযাণ
ভরতঃ।।

তর ওঃ পু• ক্লী বডিশীসূত্রবন্ধকা গ্লাদি ॥ প্লবঃ ॥ নৌকা । ইতি মেদিনী॥ সম্ভ তুখীরম্ভাদি স্করঃ । ইতি শব্রত্বাবলী॥

उत्रथः शू॰ (मणविष्णयः । ইতি णक्तज्ञावनी।।

ভরগুপাদা ত্রী নৌকা। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

তরতী জী নৌকা। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

তর জী প্রবং ।। কার্মন্তর শক্ষী। ইতি মোদনী।।

**छ**ब्रवा

जतनी जी कफेकिव्क राज्यः। उप शर्यायः। जात्रमी २ जीतु। २ शर्व ता १ तक्तिक कार्यायम् । १ १ जिक्क । स्वत्रकः। स्कद्भः। वन प्रदेश किक नामित्रकः। कृति ताम-निर्दाणः॥

তরন্তঃ পৃণ ভেকঃ ।। আসারঃ ।।
সমুদুঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ।।
তরন্তী ন্ত্রী তরিঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ।।
তরপণ্যণ ন্ত্রী আতরঃ। ইত্যমরঃ।।
তরপ্যণ ন্ত্রী কলবিশেষঃ। তরমূজ
ইতি খ্যাতঃ। শথা। কৈয়ে সোসি
মহেন্দানি শৌর্মাস্যাণনি শাজকে
। তালাররা নহাকালী ভুনন্তা পিতৃ
কাননে।। তল্ভারা ব্রাণাভাসে
ফলা দত্ত তরমুলা। তথ্যকল
ভক্ষণাভূপ্ত। বরদাসি হর্মিখা।।
বো মে দদ্যাৎ ফলা রম্যণ স
চিরাযু ফ্রনুণা।। ইত্যেরন
কামাখ্যা তন্ত্রণ।।

ত্যলঃ পু হারঃ ।। হারমধ্যেণিঃ
।। তল । ইত্য জয়পালঃ ।।
তরলঃ ত্রি চলঃ ।। বিল্লঃ ।। ভাষরঃ
। ইতি মেদিনী ।। মধ্য শূন্য দুব্য ।।
ইতি মর্ণিঃ ।। দুবী ভ্রশ্চ ।।
তরললোচনা জী চঞ্চলন্যনানারী ।

ই তি হেমচন্দু:।।
তরলা জী ধ্বাগৃং।। সূরা। ই ডি
মেদিনী ।। মধুমক্ষিকা। ই ডি
হেমচন্দু:।।

ভরলিত॰ বি জাতভারল্য•। एৎ भर्यायः। (भुद्धानि छ २ नृ नि छ • ३ পেঞ্জিত ৪ ধৃত ৫ চলিত ৬ কম্পিত প ধত ৮ বেলি 🦘 चारतः वि ७ २० वि वि स्वयंत्रे मा তরবারিঃ পু॰ খয়ঃ। তরবার ইতি ভাষা ৷ ইতি হেমচন্দুঃ ৷৷ অথ থাৰ পত্ৰীক্ষা।। অঞ্চ ৰূপত তথা জাতি নেঁতারিষ্টেচ ভূমিকা।ধুনি মান নিতি প্রোক্ত থত্ন জ্ঞানাষ্টক শুভ ।। অভিনে দৃশ্যতে যাদ্ক विভिन्त घिटि जथा। यसिव দৃশ্যতে চিহু তদক সংপ্রহ ক্তে।। ীল কৃষ্ণাদিক পদ্মেকপ মিত্যভি-ধীয়তে ৷ তেনৈৰ যৎ পুত্ৰীত স্যাৎ ভজ্জাতি রিভি গদ্যতে ॥ অঙ্গাতি-রিক্ত বজ্জাতি তথাহাত্ম্যোপসূ-চকণ ভলেত্র মিতি জানীয়াৎ খল্পে খায় বিশারদাঃ ॥ অকাতিরিত। थङ्गाति यह् का द्वाशम्हकः। जम ति 🎖 নিভিপ্রাহ্ ভূনি রঙ্গাদি ধারণ।।। यः थ्या काय्र जारा नथ्र प्रशासना

🦅 🧿 । ज धुनि चलना सान । छ्डान || न्त्रं हे विश्विष्ट्रमः ।। शक्षाम्या निशूरेगः थः इत्र ज्ञावारङि शिक्विमाः। षद्याव कृतिभो (छत्यो जात्व मह्ना-বিতি ৷৷ শত মক্রনি চত্ত্বারি ৰূপাণি कात्रय उथा। विः भासवागि कानीया-দরিষ্টানি তথৈবৃচ্যা ভূমিশ্চ দ্বিবিধা ्रद्भवाधनि तहे विष्या मङः। मानस्र বিষ্-পেশুক্ত নিভেগ্না সংগ্ৰে। মতঃ : ৽ অথ খন্ন্য শতা হ শনে लोङ्गपत् । क्ष्य वर्ग गः । ब वृक मग्न अ वाक् क्काक्ग (अ जास्त्राज शरा जिलानन कना शुझि हिता रै जिज्जिताः। भाषा की यक यहे शरमार्ख মরিচ ব্যালাখ বর্ছাঞ্জন কোণু कूपुक मिका उर यव वीहि कुमा সুর্যপুঃ।। সিংহী তণ্ডুল দো শির। শিব নথ গুছোকি কেশোপল যুেণী ককে কপাল পত্ৰ ভবরী বিষ্ ক্টা সর্বপাঃ। নীলী রক্ত বচা রখেন সুম্না জিন্ধী শ্ৰী রোহিত গ্ৰেটা मातिव गार्कवा थूब उंजिया हि 🤏 😘। भताः ॥ पृत्री विनु समृत हुँ 🖰 क भंगे मार्जातिका (कंड की मूर्व। रख् कनाय हम्भक वना नात्भाध वन्धा **९मनाः। (काश्चे कान** शिशीनिका

नल तकः अधा ७ ताम म्पृशी कर्कन् वंत्रवात्रनाव निह्य सह सू वका है जि ॥ (पुाका (लोइ विभाव एम मूनिना थक्न म् (जराः कमार । 🗱। व्यथ उम्र চত্ত্বারি ক্পাণি। নীলঃক্ষঃপিশ**ল** \*চ स्मूल्डिं इंडिशः । यर् शुकर्यः थञ्जानाः कथिएा मृनि भूकरिवः।।।।।। व्य ह उत्राक्षा उषः। युष्त्रभः कविरय। বৈশ্যঃ শ্দুশ্চেতি চভাৰিখঃ। জাতি (जला विनिर्दिष्टेः थङ्गानाः मूनि-शूक्रेवः ॥ 🗱 ॥ व्यथ जि॰ मामजानि । ठक· शचा· शसा भाडा फमक **र्क**नू রস্কুশঃ। ছত্র• পতাকাবীণাচ মৎ স্ত निक श्रकनायः॥ क्यः मृनम् मा-पृ नः ति•इः ति•इ।त्रन• ग्रनः।इ•स्ता नगूरता किञ्चाठ मन्ननः थन्न अवह।। शुक्रिकः हायद्वर रेमनः भूषमाना ভুজস্বঃ বিংশদৈতানি নেত্ৰাণ খন্নানা•কথিতানি বৈ ৷ 🕸 ৷৷ অথ ত্রিত্রদরিষ্টানি। ছিদু কাকপদ राशा ভिन्न (ভকশ্চ म्विकः। বিডাল: শর্করা নীলী নশকে৷ ভূক্ স্চিকে। जिविन्द्रः कानिका मही करभाउः काक अवह । अर्गतः मृददी কোডী স্পপত্ৰক জাকিকে॥ করাল क्क थर्ज् त मृक शृह थनिवकः।

লাক্ল বডিশাখ্যঞ্ মুনিনা তত্ত্ব বেদিনা ॥ প্রোক্তান্যেতান্যরিষ্টানি খন্ধানা • ত্রি • শদেব হি। 🙉 । তাথ দ্বি বিধা ভূমিঃ। দিব্যভৌল বিভাগেন **ज्ञिस** विविधा जत्य । क्षः । यशा द्वेषा थुनि:। इ.म का माजु एक्स ना काक **ভञ्जी थताम्प्रना** । धुनत्व हे विधः প্ৰোক্তা নাগাছু ন মুনে মঁতাঃ 🛭 🏶 🕕 व्यथ दिविषः नानः। উखनायम **७ एक मान ७ कि** विष ७ वर । ইতি প্রোক্তানি স্ত্রাণি খন্নানা জ্ঞান হেতবে ॥ এতানি তত্বতো জ্ঞাত্বা ভবেষ্পতি পুলিতঃ। ইতি সূত্রাধ্যায়: ৷৷ 🕸 ৷৷ তত্র পূথ্মতো २क्षाना विक्रगानि निर्वाधक । लोश्मील । कल्पुलब नगान्य র**ক্ শ্বেত• পুতীযতে**। উদ্ধৃ • তন্তু মহামূল্য ক্পা ব্ৰু মুবস্তি ত া৷ এব थङ्गत्राता प्रमालली मायु र्यामा वन > । इन्त्रिथा वनी उन्नी यखुःमी নিকষোপমা। স্বৰ্ণবজু মিতি প্ৰাহ त्रायु लंकी जयभूम रा। गत्र मृ आकृ ि **ज्**यो क्कारा मक मस्यः। अज ব্ৰু মিতি পাুহু রক্ত লাশে ভ उद्यापि क्यां कि वाशि गमन পুकाननासुमा । जल **GA**S

कीलांशि ज्ञान उद्योगः नाश्य মহী ৩ া এরওবাজ পুতিম মই ভূমিঃ সিতেভরা । ক্রুবজু মিদ• नामा भाव नर्श कन्छतः॥ এउना न्या माजित नदीः न्यात्मृत्रुहार । गहियाथा भिष् वजु (विविष्ट ম**ীবিণঃ৪াতাক • দমন পত্রাভ • থ**ক্ষে यश्चिन् भुडीयाङ् । विम्राम्सम् वज्रुक छक्दछ्य दिविष् वृद्धिः ॥ नीना मृज्या ভবেकृति खब नीना গত্নীয়সী । ভিম্মিন্ প্যু/বিভ তোয়• গন্ধে দলনকোপন•।। তৎ भुजायायधीभाषाः क्ष्याः भृषी श् সাধ্যেৎ, ৫। শার্ক্রস্যা একাস্থ্রা লিতা রেখা ভূমি নী লাদ্চ।যদি। श्वाक सक्तजुः उधिमालकीरमः श्रम्भावज्यकात्र खत्यहाथः. शृत শ্চিরতর স্থিতিঃ এত মহান্ত মপরে: वम् छि थङ्गकाविमाः ७॥ घृष्टायाः দৃশ্যতে ভূমৌ অঙ্গঞ্গ পুতি বিশ্বিত । অঞ্বজু• ভবেত্তস্য দ্বিধা ভূমিঃ সিতাসিতা ৭ ॥ লৌহপুদীপেপি। নিরক্ ক্প্রেভ মীষ্মণিনিভৃঞ্ यटा मूर्झाछ जम् राम्ला का स्वाहर . शुरुक्षा ७ । क्षा जूगि ज्वि सहा পীতা বজাল সংলতা। কৃষ্ণ বজু \_

ক্সিভিপুাল্ স্তৎক্ষতে নোহ উচ্যতে পुरोशिश । कृषा ज्ञिः সুतर्ग छ-ं भी यह काव मन्द्र छ। छ। इन विज्ञ क॰ विम्राट कान म छ मथाभात ৮ ॥ সৃক্ষণ সৃক্ষ মৃক্ঞেদক। ভূমিঃ মিতে ভরা। অকৃণাখ্য মিদ বর্ শত पर्श निमृतन । मूर्या भू जार्भ মাত্রেণ বহিক্লপাম্বনেৎ শিখা। ত্স্য স্পূৰ্ণন মাৰেণ পদাকোষঃ ा, बहेशिला ॥ मझा छ॰, उत्रामुक्ताना॰ ভাগৈঃ জনাপি লভ্যতে। তদ্মো-জন মহ্মুদ্য রিষ্ট নাশ্বতি ধ্রে 🛚 ম । খেতা স্থিসূ ব্রা রে**থা** | আন্বন্ধেলক্যতে খে এ**ক্**নিভি छिहरापरमा नश्ची वनशुमः १०॥ আলোজ দল সভাশ সঙ্গ ভূনিং নিভেতরা। অস্ত্রোজবজুণ তলে্জ্রয• क्बिङ मूनिश्रुक्ररेवः ১১॥ श्रञ्जः सम्र পদাকার• ভূমিশ্চৈব সিতেভরা।। शमावज्र निमंबुमार उरकाठ मृव সম্ভবঃ ১২ II অ**ঙ্গ**েকৃঞ্জিলাকার• ভূমিশ্চৈব সিতা ইসিতা। তিল বজু মিদ ভেষে লক্ষী বল যশঃ भूषर ॥ उद **करड** जिनरेजना जा বসা পুচ্যবতে ২বিক ১৩ ৷ ধূমুবর্ণা ভবেন্দুসি,রক্ বিছ্লা শিখোপম !।

অগ্নি বজু মিদ জ্বেষ শত্না দাহ কারকণ অত্র শীতোদক-ন্যস্ত তপ্ত ভবতি চ ক্ষণাৎ ৷৷ শাণে বহিং क्रान्य ख उथा मूर्य राष्ट्र म मन्या । **७९ का उनवान् मारहा मध**वह বুণোভবেৎ ॥ এতৎ পরমভাগ্যেন লভ্যতে ধরণী হলে১৪। ভূমিঃ সিতা जिनावाशि अक्राध्य शिश्नेनी भुछ। ॥ কণা বজু মিদ । জ্বেय মন্তর্দাহন্ত তৎ ক্তেঠিক্ষাভূমি ইদিবাকে **দৃশ্যতে গুস্থি সঞ্**বঃ।৷ গুস্থি বজুনিদ• (क्ट्रय॰ देवित्र शक् विनामन•। उ ক্ষতে বলবান্দাহ স্বাচ জ্ব এবচ ३७ ।। भानश<sup>्</sup>रनाकात सङ्गः কৃষণসিপুত্রিকা। স্থিরা বজু মিদ• পু।ছ স্তৎ ক্ষত্তে বেপগু র্ভবেৎ ১৭॥ যদা তিভিরি পক্ষাভ মঞ্চ ভূমিঃ সিতেতরা।এতভিভিন্নি বজু• স্যাৎ তৎক্ষতে বহু বেনবঃ১৮ ৷৷ বনমালা সমা যিমন্ মালা খঙ্গে পুদৃশ্যতে। মালাক মিতি ভৃদ্বিদ্যান্তভোষ পদ্ধ वर्ष्ट्र ।। **च**ञ**्राक्षाम्क•** नुरु• শীত ভবতি তৎক্ষণাৎ। এষ দাহ পরীতানা মৃতে পিত্তহতাতানা।। ভবেৎপরমভৈষজ্য ভাগ্যেনে ভিন্নি मञ्जार । यहा क्षेत्रिक महाम

নঙ্গ ভূমিং সিতা হসিতা ॥ এতজ্জীরকবজু স্যান্ত ক্ষতে তৎ কণাজ্ভুরং
২০ ৷ ভূমিং সিতাসিতকেরা অস্কৃ
ভূমাত মিষ্যতে ॥ তর চেমধ্যম
ন্যন্ত শেষ নাপ্নোতি কেবল । এতভূমর বজু স্যান্ত হলতে স্যাদ্ধিসূচিকা ২১ ॥ উদ্ধৃগ কপিলাভাস
নঙ্গ যন্তিন্ পুতীযতে । উদ্ধৃবজ্জ
নিদ পাত বিষ্যে নিস্দন । লৌহ ॥
পুদীপেপি । উ

সুদীপেপি ।

मक्र-यिम् भुजीयर । लाक्ताक्छ তদ্বিদ্যাৎ স্পর্শে তস্যা হহি নাশন ং ২২॥ অঙ্ক মরীচ সঙ্কাশ ভবেডুমিঃ সিতেতর।। মরীচাক মিদ বজু **७८क्राडक** है ब्रक्त जा ॥ उ**र भुकान** न তোষেন নশ্যন্তি পীনসাদ্যঃ২৩ যদা गर्यक्षाकात्र मञ्च कृ शिल्ल निर्मा। ভুৱন্ধ বলু তিছিদ্যাৰ্থ ক্ষতে বিষ ব্জজা৷ ভদ্য স্পূৰ্ণন আছেণ ভেকঃ পুর্বি বিনূচ্যতে ॥ একস্যাস্য পুসা-দেন কৃৎ সা• শান্তি নহী• নৃপঃ ২৪। यनाश थुत जङ्गाम मदः ज्मिन्छ निमंगा। অখাঙ্গ मिठि उपिराए থড় পরম দুর্ল্লভ । তস্য সংযোগ সাহেণ্রাজী মন্দোপি ধাবতি।। छम् कोवन (जार्यन स्याना॰

রোগ নাশন•। এত েক্ষতে জ্শ• मूहा पाइन्ह जुम अवह २६॥ मग्र-পিছ সদৃশ সঙ্গভূনিঃ সিতে তর্বী वर्शक भिठि छ॰ विम्राख्य कर्छ বান্তি রিষ্যতে ॥ সর্পাণা মিহ সর্বেষা-गमा मामश्कुण। এउए व नृश-তিভি ভাগৈয়: স্ত্রাগি লভ্যকে২৬॥ ভূমিরঞ্জন সঙ্কাশা ধারাচাস্য সিতা ভবেৎ। অঞ্জনাখ্য মিদ• প্রাযঃ সূর্র-रिन्दाशनङ्खारनोहभूमीर्शन। ধারা শুভাু ভবেম্স্য ভূমিঃ কজল निमा । क्ष द्रीक किछ याति বিদ্যাৎ কব্জল বজুক ২৭॥ মণুবৰ্ণ मना जूमि बक् वामवु विन्तु वर्। क्षिनाथा मिछि कानीयाट कर नको यमः भूमः ॥ मान्यदाति । নিমু কক্ষো ভবেঘত রাত্রিন্দিব বিলেপিতঃ। মধুরো মধুবর্গালঃ স খলে। দেব বল্লভঃ।। বিশেষান্তাত্র রজ্যন্তি সতত মৃক্ষিকাদ্যঃ ২৮। আনীম কোণিকা যস্য ক্ষুদ্ৰাৰ্ ञ अनीक् छ ।। कु पुत कु क नामान । शुङ् नागार्जुता मुनिः । **हेम**॰ ब अन र जुक शाह लोहार्गत मूनिः ।। अन्य क्षा वृत्वा वान् नाहा मन विलाकिङः २०। यहवः मिकाः

কার• ভূমিশ্চৈব সিভাসিতা।। দ্মেহঃ শুব্যতি চৈবাত্র মঞ্চিকাঙ্গণ ·डंब्रांक्रिष्मे ७०। अङ्गः यमा खवा-কার• যাচ ভূমিঃ সিতাসিতা ॥ जूव वज्रु मिर॰ थााउ॰ পुारु नागाजुं-(ना मूनिः ७)। अञ्चर यव क्लाकात्रः ভূমিঃ कृषा जिञा उथा॥ यताक মিতি ড॰ বিদ্যাৰৎ স্পাশ কণ্ড मसुवः। এव थन्नश्म खुनाका यही-हिकु विभागानः १२॥ अञ्च दीहि भुजृतां छ । ज्य श्रा का छ टिक क्। छम्तुं छि दकु॰ जानीयाह्जूना॰ छय वक्षन : २०॥ यज्ञी क्ल म्हान्म मई ভূমিঃ সিতা ২সিতা। অতসী ব্জু মাহ ও তৎক্ষতে শিরসোক্ষা৩৪!। যদাস্বপ্ৰীকাভ মৃশ্ৰু-ভূমি: সিতা-হসিতা। থর ধারঃ থর স্পর্শঃ সব-পাঙ্কঃ ম দুল্লভঃ ৩৫॥ সি ত্যাকার। ভনেষ্দ্য অঙ্গ-ভূমিঃ পিতাসিতা। সি•হীবজুন্ত তিহিগাভং কেতে भून(भग्नः ॥ ७ छ्वातन (ठारयन काम (दार्गाभनागनः ३५ । यहः ত গুল সঙ্কাশ ভূমিগুলু লিভাসিতা ॥ তও্লাক মিম-বিদ্যাদশঃ 🗐 বল বধান ৷ এতৎপয়ু বিত তোৰ ভণুলোদক সন্নিত ॥ অস্য পুভা-

বান্মনুদ্ধে। ভূষ্টা• হি লভতে শিু্য• .৩৭। অঙ্গঞ্জে দ্বোক্ষুরাকারণ ভূমি রাঘাত নিঃসহা ॥ খড়াধ্ম মিদ॰ विन्तारहावजुः नाम नामजः ७৮। इना नीर्याः भिताः कृषा ভ्रिटेफिय সিতানিতা ॥ শিরাজ্ মিতি ত॰ বুবাদেন থলাবন বুধাঃ ৩৯। শিব-লিস্বাকৃতি শ্চাকে ধারাটেব সিতা-থবা।। শিবাক মিভি ত বুবাছ बू भक्क निमृहन · 80 । यहा वृश्यु नथा-কার মঙ্গ ভূমিস্ত পিঙ্গলা।। নথবজু-भिम• तुयां इट कार्ड श्वय् र्छादट । এउहामिय अम्लमां शुवित्म<u>ः</u> यय (भवहि ८) ॥ गु।इनु (हानमञ्जूषः ভূমি ধূ মাথরাকৃতিঃ৷ গাুছাক্ মিতি জানীয়া ছত্ৰু বংশোপনাশনং!! অস্য স্পৰ্ন নাৰেণ জীবন্নৎ স্যা জহত্য সূন্ ३२ । यमा भनू ज (न बाज मनः ভূমিঃ সিভাসিত।।। নেত্রাঙ্গ নিতি बानीगाट नःगुराम विवयं भूमः এতজাবন ভোষেন নূদ মস্কোপি পশ্যতি ৪৩॥ অঙ্গু-কেশ সম্ যস্য ভূমি শুমা রিতাসিতা। কেশাঙ্গ भिक्ति कानीयार दिन्द मृथ्य ख्याशहर 88 ॥ नित्रक् कृत्रभुक् अभूगनाकः विमृत्रु थाः। এত कि गुह्राहरूना लारक

দৃশ্যতে দ্বিজ সত্তম ৪৫ ৷৷ পদ্ম-পুরাণস্য। নিরকা নিশিতা ধারা শাণে বহিং বমত্যপি। দ্বোণীবজু মিদ ভেব পৃথিব্যা নাতিদুল্ল ভ ৪৬ ৷৷ অস্ব কাক পদাকার ভূমি রাঘাত নিঃসহা । এষ খঙ্গাধ্ম স্ত্যাজ্যে কাকাশো ভৃতি মিছতা 89॥ यमा कभान मास्यु मृभाऽत्त रशर्भंडः थर्नः। এङ कि मुःथ कनकः কপালাস্ণবুধ ন্তঃকেৎ৪৮॥ তদ্বীপত্রা বলান্ধ। যা সুবৰ্ণান্ধাসিপুত্ৰিকা। পৰবৰুক মাহ छ॰ আযুৱেদবিদো-্জনাঃ।। লৌহাণ্বেপি। সুপর্ণ সন্ধিভা ভূমি রঙ্গণ কাল পুতীয়তে তৎপত্র বজ্ৰ কাক্স্য সুপৰ্ণ মুপদাযভে।। जूरती मन नकाम नमः यमिन् পু भेगरत । जूनदी नुष्रु मान् संख्ट ক্ষতে শিরসো ভুমঃ ৷৷ এয় খ্যাধ্য ख्याब्या यत्री हिड्डीवन निष्ठ १३०। विषी कल मभा जुभि तक विशी कलाभमः॥ विश्वी वजुङ ভिषिम्छा-**ভজ্জন**• ভিক্ত মুচ্যতে। পিত্ত শ্লেম বিকারাণা পুশমায পুযুক্ততে ৫০ ॥ পূি্যসু সদৃশন্ত্র স্ত্রিক কপিলা-কুতিঃ। ফল বজু নিদ॰ পোক। भारा धून वग छाति ७३ ॥ अञ्च

সর্বপ পুষ্লাভ ভ্নিকৈব স্থিতা श्निजा । अज्यमर्ग वजुःमार मात व इ रवन्छान ॥ जनि व र्के লিকা• যা**তি এতদেত**্যন্ত কোমল• । এতৎ পুনাদাৎ ক্ষিতিপঃ কৃৎসা जावया मही । ६२ ॥ नीवीतज जमा ज्ञि तक भीनी जतक वटा नी बी वजु मिन मृष्टे भाग बङ्गि निथा इ न् াাএষ থল্ল বরো নৃণা মরিষ্ট ভাষ ন।শনঃ ৫৩। রক্তা তিসে সহারেখা ভূমি কৈব সিতাসিতা।। মজাক मि जि जानी यादेष विशक्त विनामनः। मारान यस बङ्गाचा नीवायः दमाङ শিখা।। রক্ত স্থাপন মাত্রেণ স্বয়নের নিকৃন্ততি। ক্ষতেস্য রক্ত শ্ববগু ত্কা मारुक जाया ७ ४८।। जाय • वृहा **দল সম**॰ ভূমি শৈচন সিতাসিত। । বচা বজু মিদ • জ্ঞেন তৎক্ষতাদিষ नामन-॥ अवश्वताता का का माधनीयः পুযত্নতঃ ৫৫ । রসোনাদুভন ছক ভূমি স্তস্য দলোপন।।। রসোন বজু• बानीयाए मारा विकार वग्रजामा অস্য ধাবনভোষেন আমবাত বিনা-শন ৫৬ ৷৷ নিরস্কা নিমলা 'ভূমি র্জারা তীক্ষা খরঃ ম্বরঃ। সুমনা বজু মেতৎ ন্যাভূবিনাত্যন্ত দুৰ্লভ • ৫৭॥

॥ मिक्कि मम्मा भीषां खरतृत (तथाः ्यू विखनाः। जिली वजु निष् नाम সর্ব কামার্থ সাবন ৫৯ : অঙ্ক শেমী ॥ পত্র সমা ভূমি ধূরো সিডা হসিতা। শনীবজু মিদ জেব শনৈশ্চর मुमावरु ॥ भाराषु वमा विद्या সহতে বহি পীড়ন ৬০। রোহিত বল্ল সদৃশ মঞ্• ভূমিঃ সিতাসিতা বা পি। পৃন্যু গন্ত্রীর স্বর যুক্ত ধারা তীক্ষা সিতা ভদেদ্রেখা! রোহি তাখ্য मिम वजु गर्विष्ठि विनासना वजि সংস্পর্ন নাত্রেণ কিংকি চিলি চিমানতে ॥ इंड्यन्मूब्रांब्रः यहारस्यानः विश कथारा ७५ । भक्तीयकृताकात **মঞ্** ভূমিঃ সিতা হসিতা ৷৷ প্রেটী বজুদির প্রাক্ত ন্যত ভরতি বারি । । এব খ্রেভিমোরাজ্ঞা বিপক্ষ কল नामकः।। कनाविद्यान्तराज नार्यक इं ज्राज नज्या मही ७२। जन्मा-রিবপত্রাভ ভ্মিঃ স্যাদ্বিম ছবিঃ া ইত্যয় নারিষা**ল: স্যাৎপৃথি**ষ্যা• नाजिदूर्लाङ्का । ज्याना भूताज নক ভূমির বিপুভাগ আঘাত সহ-তে নৈব এব খড়াধমোমভ:৬৪। খারা তীক্ষাখুরাকারা ভূমিরক্সবিবজিতা৷৷ আ্যাত সহতে কোর লাণে বহিং

ব্মত্য**পি। খুরাক নিতি জা**নীয়াৎ প্থিব্যা॰ नाजिमू झंड॰ ৬৫॥ निर्मना नमना ज्मिज्दिहित कहा कहा। মন্দা তীবুা ভবেদ্ধারা ভডিহন্তুস্য वक्र १ ५५ ॥ नीवाक्षन मना ज्ञि রক্ । জল তরক্বৎ।মেঘাক্ মিতি জানীযাছাণে শীত•ভবত্যপি ॥এষ **খন্নাধনন্ত্যান্তে**গায়দীছেড্ভূতিমাআন । ভ र् : পু তাপ : শমষেদু वि विष : यथा খনঃ৬৭। নৃক্ৰাধারা ভূশ-গাঢ়া ভূমি রক বিব্রজিত।।পর্ভাক মিদ• না**ম** সহবৈৰোগকভ্যতে ৬৮॥অল हल अभ- ज्भिनी निन्दा । अभा বভু হিদ•পৃষ্ঠ•ছপ্ত•ভবজি ঘৰ্ষণে 🛭 শানে সিন্দূর সঙ্কাশারজোবন্**তি চা** সক্থাএৰ খন্নবরোরাজ্ঞাভাগ্যাদে-বোপযুদ্ধতে॥ অস্য পুভাবান্তমান্তি यम महर्गाठ न्मः ७२॥ अञ्च छन् শরাকার• ভূনিংশ্চব সিতাসিভা 🔢 ধারাতীক্ষাবমতিচ শাশে বহি সমাঃ শিখাংশের বজু মিদ • জ্রেয় রাজ্ঞা • वाष्ट्रित जिल्लाय १०॥ मृता मल निजा ভূমি দারা তীক্ষা থর:মর:। শাণেন বমতে বহিং দূর্বাবজুং সুদুর্লভংগ ॥ अत्र विवृद्धाकात ुर्वृतिर कव সিতাসিতা। বিশ্বজুমিদ শাণে দীল

পীতেবমেছিখে।।এবথম্বরংপ্রোক্তঃ **শ**ञ्चा अन्तर्भनः १२। समृत्रम्य ज-ক্ষাশা ভূমিরস্পন্স্রব্যাস্রাস্ মিদ-শাণে রজো বম্ভি চাক্ণ-৭৩। শোণপুর নিভা রেখা দীর্ঘা ভূমি: সিত্তের্যাশোণাঙ্গনিতিজানীয়াৎ श्रुः भव्रमपूर्व ७ । १८। भिरोपन गमा ভূমি রঙ্ক তৎ জসুমোপম ।। শটী বজু নিদ• পাুুুুোলভাতে ৩৭ বভর• **৭**৫ ৷ মার্জার রোম সদৃ**শ ম**ৃক্ ∙ভূমিঃ সিতেতরা ॥ মার্জারাক্সমিদ নাম। রোগ শোক ভবাবহ•া এবথগ্নাধন. ख्यारक्या यनी हिन्द् जिमाञ्चनः १७॥ কেতকীপত্ৰ সদৃশনস্ক বিমান্পুতী-যতে । বিদ্যাৎ কেতক বজু তৎ বারাণস সমুস্তব পপ ।। লৌহ পুদীপস্য ৷অঙ্ক॰ মর্বা তন্ত নি ভ॰ভূনি মূর্রা দলছবিঃ। শাণেন বমতে শুরাণ শিথা মৌৰী ভবে ব্ৰতঃ ৷৷ মৌৰ্য্যক্ भिर मू क्षे यमः की खिवनावश , 9৮। লিক ভীক্ষণ খর গাটে শাণে वाङ्क र्वामे क्रिने ब्रामी विष् লৌহ বজু । ক্ল মিতি তদ্বদেৎ ৭৯। কলাযপুর সদৃশ সঙ্গ ভূমিঃ সিতা হ निजा । क्वायवज् कानीयाट उट ক্ষতে পাক ইষ্যতে ৮০। অহ •চম্পক

পুরাভ• ভ্মিঃ কৃষণ তথা সিতা॥ শিখা-শাণে বনেছীত তিক্ত তৃস্য बनः ভবেৎ। ইमः हम्भक वज्जुः न्यार नवं विषय्पूरकाशायक वनामन সম ভূমিঃ শুক্লা তথেতরা। বলাবজ্র মিদ • জ্ঞেয • নান । ভাব • ভবেদুত ।।। ইত্যয়-বাতরোগাণা-নাশনেশরনৌ-বধ-৮খ অঞ্বটারোহ সম ভূমিবট मनह विशा वरेवजु **भिमः** उद्ययः थतः খলাৰম• বুংধাঃ এতস্য স্পাশমাত্তেণ नाता मूहाउ मन्मना ४०॥ वःन নীলীসমাভূমিঃ খরধারাসিতাকৃতিঃ । तं भाक मिठि जानीयाह भ वृद्धि কর্•পর•৮৪॥ ভূমিঃ শালদলাকারা অস্ণ ব্যুসিতাংসিত। শালাকু এवशङ्गार প्राः भवाय मायकः॥ অয় শাণে বমেদ্বহ্লি ধারাচাপ্যথবা ভবেৎ ৮৫। ভ্নিঃ সিতা ২পিতা বাপি অক জ্যেষ্ঠা সম লযু ॥ জ্যেষ্ঠা वज् विष् निक्तः न न्यूनाः वा हिट्डिइ जिः ৮७। श्रवान बान जम्म মঙ্গ ভূমিঃসিতাংসিতা॥ জালবজু भिमः भू बार भेजू सम्मिखि नामन । यहि শাণে বমেন্নীলা শিখা বহি বমেচ वा।। उरिषकुर्झ जः थङ्गानानाथा जय হেত্তকঃ৮৭॥ অঙ্ক • পিপীলিকাকার•

ভূমি দুম্য তথা দিতা। পিপীলিকাক ইত্যেষ তৎক্ষতে কণ্ঠু সম্ভব:। ম্বৰ• ंयि ভবেজ্ गुः শাণে প্রত্তম স্তদ। ৮৮॥ नव भव मन। ज्ञि तक्ष्ट अभूत्मालम् । नलाक् मिठि कानीया-ভ রু: সর্বার্থ সাধকঃ ৮৯॥ নিরস্কা निर्मना जूमि वृष्ठि वृष्ठे व्यमपुषः। पृषा **ধা**রাভৃশ•স্থা আঘাত•সহতে নচা व्रकावज्ञिमः निन्तुः गज्राः विजया-বহ-৯০: সমাওেবীজসদ্শনস্ভ্নিঃ সিতাংসিতা।। **স**মাওঁব্জু·জানীযা ভৎক্ষতে বেগ নিগুহঃ ৯১। অঙ্কু ন্রোমসদৃশ•ভূমিধ্নাসিতাসিত। ৷৷ রোমাঙ্গ মিতি জানীযাভৎক্ষতে लिएकाइमः २२। ज्भिःद्व शिष्व সমা অঙ্ক• তৎকণ্টকোপম•া ধারা তীক্ষারবন্তীক্ষো লঘুনান• খরা সৃশা । সুধীকঃখন্ন ইত্যেষ তৎক্তে দাহ ত্ত ভূমাঃ॥ মুখাক্ষি কৰ্ণ নাসানা। দাহঃ পাকশ্চ জাযতে। অয় যদিচ সর্গাণা ফণাসূপরি বিশ্যতে॥ ফণা বিদার নাগোতি সর্পো লোট্যতে শিরঃ৷ অস্য ধাবনভোষেন জন্তরোগ किनामन २०॥ कक्षु मलश्राजा ज्भि त्रश्रु उ< नम• । कक्षुवजु• কানীয়াত্তৎক্ষতে দাহ নাশনা৷ এব

খঙ্গাধ্মস্ত্যাজ্যোজেতব্যায়দি বিদিৰঃ ৯৪়া অঙ্কণ বন্ধল পুরাভণ ভূমি স্ত ফল সন্নিভায় বসলাক মিদ • পুৰ্যু मारा मुद्राजिगद्गव्। उद्याखि बगजी মধ্যে যদনেন ন সাধ্যতে ৯৫॥ অঙ্ক॰ সমিশ্রিত ব্যামকঞ্জ্যক্রমী-ক্ষ্যতে । সর্বেধাণ দর্শনণ বালি তীক্ষ্ ধারঃ খরম্বরঃ।। এব কাঞ্জিক বজুঃ স্যাত্মত্বাদেবোপলভ্যতে ৷ নৈন• প্রাপ্যাপি বন্ধন্তে শেষাশ্চিত্রাদ্যো পিচ ৯৬॥ ভূনি: কৃষ্ণানির কাচে জার। তীক্ষা দ্ঢাপিচ। আঘাত সহতে ঘোর রক্ত স্পর্শেন যো বিশেৎ।। শাণেন বহিং বমতি ধুন বাগ্যতি घर्यगाट । महियाकः म रेव थङ्गः পৃথিব্যা• নাতিদুৰ্লভ: ৯৭ ৷৷ অভ্যস্ত নির্মলা ভূমিঃ শরীর পুতি বিশিত। । ধারা তীক্ষা স্বর তীক্ষঃ স্বচাঞ্চ তি বিদিলিশেৎ ৯৮ ॥ তিমান্ যদা ভবেদুেখা উদ্ধা পাত্বাখ্যক তদা ৯১৷ অম্মিন্নপি ভবেদ্বকা রেখা বকাভি-थङ्गानाः भुवतः वृदेशः। भुष्याना লভ্যতে লোকে যদি সর্বগুণাবছ ।।। ইতীদ নিখিল প্রেক্তি ব্জাণা नक्राभ्या। भ्रयोत्र निथिजः व्यक्ति

সর্বো• হিতকাম্যবা।। ইতঃ পরস্ত *(वोहानाः वक्का*॰यव वक्कारक। छना দাসো ভবাম্যেৰ পুতিজ্ঞেতি কৃতা भया ॥ विविक भिणु भारताकः भिणाक भिक्ति निर्मित्म । अर्विषा मक्मालाका महीक मिनि শেৎ।। ইতি খন্ন পরীক্ষাফা মঙ্গা-श्वारया विजीयः॥ 🗱॥ श्रेष्ट्रा क्लानि यथा। नीली कलाय अनुम हिव शृक्षनाजा या हन्तु नीवश्रि काह মণিপুভাচ।ভূমিক যামরকতপুতি-মাৰভাসা খন্নস্য নীল মিভি ৰুগ . মিদ-বদস্থি॥তএচেমিন্দিতান্যঙ্গা-न्धविश्वानि वङ्ग्धि । मृन्धाः वङ् " দোষালি তথালি গুণবত্তর ১॥ যা कालकाष्ट्रम मनी तम कालमर्भ महा স্ককার কচভার সমা বিভাতি।ভূমি শ্চ যা ভুমরবন্ধু সমাবভাসা ধন্নস্য কৃষ্ণ মিতি ৰূপ মিদ্মদন্ত।। অত নেত্রাণি সম্পত্তির অরিষ্টান্যশুভা-নিচ ৷ সাধারণ মিদ জ্প পুাহ नागाजुरनामूनिः ।।या भाक्षिण नव (छक मभान वर्गा शास्त्रहत्न मम्भा পিচ যস্য ভ্মিঃ। খন্নস্য পিক্মিতি ৰূপমিদস্বদূতি ভতুৰশোবলধনক য कार्रिगाय ० १ या मन्त ध्रम अन्ना ह

শিরীষ পুরু ভল্যা বিভাতি মূলিনা পিচ থত্ন ভূমিঃ। নাগাজুনো বছতি भूम् भिष•ि क्षश• छख् मरिणादन थना বলিবৰ্জনায় ৪ ৷৷ ছিৰূপ: মিশ্ৰিত• क्षा भक्षत्र शुन्तमपुषः। १० छी ৰূপৈঃ সমেহন্ত ব্যান্তপুৱ সন্দিত্ত• ॥ ৰবৈশ্চৰভিঃ সংযুক্ত চন্তর খন্ত মুভর॰। ইভি লৌছার্বিষ্য খন **পরীক্ষাযা॰ বর্ণাধ্যায় ভূতী** यशा 🕸 ॥ জাতি শ্চ दर्बिशा পোক। থয়।না॰ या भूका मगा। मन्भू उत्ति भुगद्भव ভাসা-লক্ষণমূচ্যতে।৷শ্ৰাস্ক্ৰ্ वर्षम् मृत्वकः भूत्रत्मः राशे स्मून्यार्थः मुमात्त्वय की क्ष्याद्वा महाभूगः !! श्र<sub>न</sub>ः ৰাকণ জাতি ত পুৰ্ন নাগাজু নো মুনিঃ৷ অস্যক্ষতে ভবেছোথোঘোরঃ নর্বাক গোচরঃ। মূর্টা পিপাসা मार्क ज्राता म्हू क जाया । व्यष्ट्रे विक्वा दन् गर्वताविनिर-বোষিত গামলিনত্ব নসন্ধতে নিৰ্মল • প্রকল্পে পর । তব্দাদিত্য কির্ণ म्मारित ज्रा इंडिश ।। मर्ट्य मर्ड নভু কর পুৰুষস্য হিধারিণঃ। গায়-বুছোর মাত্রেণ থরতা ব্জতিষ্ঠ ।। এव यहान तः महमति छे ना नारा कृतः । यग्र भुमामाञ् भूक्य जिलाक-

निवन क्ष्यनं अकात निवन जिल्ला कर्षा । भारान थे तका हान हा के क्ष्या निक्छि । देना का कि तय था करके क्ष्या व मर्भन ।। नाकुर कृष्टी ना किहीनः प्रविद्याशन हा कि वा जिल्ला स्थान महाने कृत वाता मृत्यतः।। जिल्लात देव मानि स्थान हा कि भारत देव मानि तय शह करक नालांशि तमना। मृताप्तरा व्यम स्थारण प्रविद्ध कि जाना ।।

म्नुएउ ।। द्वार्याम्भन गास्त्राकः बादकः थन्नमानित्यः । वरागाः लक्षारेनव विकारिः श्रम्भामित्यर 1! इंडर्ना विक्र**ातित कां ३ महत्र** मूहारङ । इंडि लोहार्गवमा श्र পরীকাবা জাত্যধ্যায়ঃ ॥ ৠ ॥ আথ ক্রিশরেত্রাণা লক্ষণান। চক্রাকার। যদা নেত্ৰ খন্ত স্যাকে পুদৃশ্যতে ৷ ত চক্ৰনেত্ৰ কানীয়াৎ ভৰুই সন্ত্ৰা ৰ্থ সাধন ।। অনেনৈকেন খড়েন क्टमा भाषयल मही । शुकुष्त .পদ্ম সঙ্কাশ নেত্ৰ পদ্ম দলোপ**ম** : ॥ यहि বা দৃশ্যতে খড়ে পদ্মনেত্র॰ मभानित्मर । जयः थङ्ग वाता यव उदेवत कमनानयार।। अष्तु। अना यहा রেখা গদাকারাপুতীয়তে।গদানেত্র बिम विकास मञ्जू निमूमन o ।। শহ্বাকার• যদা 'নেত্র• খন্নস্থ্যেভি-দৃশ্যতে শহুনেত্র মিদ সর্দেবানা-মিপি দুল্লভ ৪ ॥ ডম্ব পুতিম (मब रमा जृत्मी भुडीयर । मर्वार्थ সাধক থত্ন তিয়দ্যাদ্বিজয় পূদ থে। धनुः श्रुक्त १ रामञ भनुति नृष्टि ত । তস্য স্পর্শন মাত্তেশ মন্দো হপি পুমুখাযতে।। অয় বিচীথে বি**জনে খ**ল্পো স্বন্ধনায়তে ওলা

বংলৰ নজুশকোর তবিদ্যানুগ্র-ব্রাণা। খন্ন নস্কুশ নেত্রাখ্য ভব্রুং मर्दाशं मार्थकः। अने की मान इरक्षायुः কৃত্যা পুই নিবারণ ৭ ॥ ছতাকারণ বদানেত্ৰ ভূত্ৰকৈত্ৰ বদন্তি ভণ অস্য পুভাবাৎ ক্ষীণোপি সার্ভৌমো ভবেমৃপঃ।। দীনোপিচ সুখী ভূষাৎ **मू**थी ভ्याचा (इश्वतः । नारुश्वता (भ স্চিবঃ সচিবে। মণ্ডলেখরঃ।। মণ্ড-(लेमफ क्दडी जित्रक नमः मयः। পৰ্ভীকাকৃতি নেএঞ্ছে সৰ্বসভাৱি कात्रकः।।পতाकानिबसाष्ट्र छ॰ म॰ गुम विजय भूर भी (नज वीगाक् जियमा दीनात्नव मुर्वाष्ठ उनानिभीत्य विकत्न थ ज्ञा वीगावट अन नावह्ट। अन्र পুভাবাৎ সরেশ্যা অপি বশ্যা ভবন্তিহি>ণামৎস্যাক্তিয়দানেত্রু নংস্যানেত্র নিমা বিদুঃ৷ অম্য পুভা-বাংক্ষিতিপঃকৃৎসাংশাধ্যতে মহীণ >>।। निविविक् मन्दिन किक्तिक িমিম-বিদুঃ। ভব্তু: সর্বার্থ সংসিদ্ধৈ। শত্ণা• নাশনায চা৷ বামপাখে ভ या बायः श्वरंत्रायः उथा तरा ১२। অত্র পুরাহ্ব চন্দু কলসানা লক্ষণনি প্ৰতিভানি ১০। ১৪। ১৫। শ্লাকৃতি यहा तिबः भृष तिबः वहिष्ठ छ।।।

नर्दार्थ नाधकः नर्दातिष्टानिष्ट श्रृंगा-শনঃ ১৬। শাদূলি নেত্র• ভিন্ধ্যিত শাদ্ৰীকৃতি নেত্ৰতঃ !! পতুলোণী বিনাশায় সংগ্রামে বিজয়ায়চ ১৭। সি হাকৃতি যদানেত্র সি হনেত্র সি-मः विमुः॥ अत्र भुजावा की लाति কৃৎনা। সাধ্যতে নহী। ১৮। তৎ সি হাসননেত্ৰ স্যাৎ নেত্ৰে नि शामानाभाम ॥ जमा भुजावाद ক্তিপঃ কৃৎসা
 সাধ্যতে নহী ১৯। গজাকৃতি যদা নেত্ৰ• গজনেত্ৰ• বদন্তি তথা অস্যপুভাবাৎক্ষীণোপি বাভতে রাজসম্পাদ• ২০ ৷ নেত্র• र·गाकृ ि यमा र गत्व वर्षे छि उ॰ ॥ अम्। भु नावार ज्भाता रेनः পু। গ্রে । ভানু ভন । ২১। মধুরা কৃতি নেত্রে ছে তন্ত্ৰে নিতি নিৰ্দিশেৎ ॥ অস্য পু ভাব अनु जः नर्भ मर्शामिन् मर्यर ২ । জিস্বাকার । यদা নেত্র জিস্থা-নেত্র স্বৰন্তি চ।। সংগ্রাম খার্গরেছেব॰ শিনেদ্রৈরি শিরোরজঃ>৩ দম্ভাকার• যদানত্ৰ দস্তনত্ৰ বদস্তিত গা অযু• রিপু গণ• মৃদ্ধি চর্যত্যতি নরব•। ২৪। খন্ধকার যদা নেত্র- খন্ধনত্র-वरिष्ठ उ॰ ॥ यम् भुजावः सन्ब डिए। की॰ वनस्यरिंग २०। मनुष्र

সুত্রকাকার। পুত্রিকানেত্র মুচ্যতে।। . वर्षे गरेमवा गन्नीभा क्उ्नाः সাধকতে ক্লিভি•। নচেয• পুত্রিক। किन्छ कर लक्षी दिश्वग्राधिकामाय॰ মন্ব্যাণা মল্ল ভাগ্যেন লভ্যতে ২৬ । চামরাকৃতি নেত্রভারেত্র নিতি निर्फिल्टा अमृत्यु जावाङ्कायस्य চানরোজ্ত সম্পদঃ ২৭। একানেক শিথে শৈল নেত্ৰে ভয়েত্ৰ সংজ্ঞক ।। অপিরাষ্ট্র ভবে যুদ্ধে বিষমে বৈরি সঙ্কটে। ছিরীকরোতি ধরণী थ्रती भर्वा यथा २৮ ॥ भूत्रमामा সম্, নেত্ৰ- পুত্ৰ নেত্ৰ- বদন্তি তা। व्यक्तित् ज्ञावाख्याखि गुराः नंबाक স্কেবতাঃ ২৯ ॥ ভুজঙ্গন সমে নেত্রে সর্পনেত্র মিদ মত্ত । অয• শুরু গুণ হস্তি যথা মর্ত্ত্য ভুরঙ্গ ম: ৩০।।সবর্ণ-সমবর্শঞ্চ তৎসর্র-ছিবিধ্ च्या नवर्गः भाष्ठि मुम्लेखाः तिलू ने ल्या उथानत ।। हरमा तिकव পৃষ্ঠেত ত্ৰ পুন বিবিধণ ভবেৎ। এক লোক সুথ নৈদ দদাতি দ্বিবিধ ष्याः ॥ मृत मधागु मः शाना ७० পুনর্দ্ধি বধ্ব ভবেৎ। অগ্রেচাগ্র্য ফল (छक् मत्या मया कन मन ।। नृत्व .कनं अयना मार शुरं नामान्ता

মুনিঃ। এক ছে ত্রীণি নেত্রাণি নাত্র স-খ্যা ব্যতিক্রম: ॥ এক-ধ্রম: স্বর্গ কামৌদ্ধে ত্ৰীণিচ ত্ৰিবৰ্গকণতৎফলা-নি প্ৰছঙি পুছে নাগাজুনো মুনিঃ৷৷ দ্বিনেত্র নিতি কানীযাৎ স্ব সংজ্ঞাণ নেত্রযোর্ঘয়ে। ত্রিনেত্রঞ্চ ত্রিভির্জ্জে-য•বহুনেত্র মতঃ পর•॥ যথোভর• खनवरु थङ्गमाल बनुडमन पिड्मा-ত্ৰ মিতি নিদিষ্ট নেত্ৰাণা শুভদা-यिना ।। जीनु । ।। भक्ता ना क म्लान स শুভাবহ•। ইতি খল্প পরীকাষা• ति वाध्यायः शक्यः ॥ 🏶 ॥ यथा নেত্রস্য সংস্থান তথা রিপ্তস্য লক্ষ-(यट्। तिर्ज्यु श्रानियरमा ना तिर्छ হান নিৰ্ণয়ঃ। পুশস্তাকোপি য**ংখ**্লো श्रिक्षि रेनक्ति निक्ति जः। 🕸। जथ बि·नम्बिष्ठानाः वक्तानि॥ हि<u>म</u>् বন্দ্যতে খল্লে স্বভাবেন চ **লক্ষ**্ত-(ত। ছিদুারিষ্ট মিদ বিদ্ধি ভর্ वीर्ये वनाशहः ३॥ यहा काक-পদাকার মরিষ্ট। দৃশ্যতে ইচিৎ। অবংকাক পদারিষ্ট:সরাভীষ্ট বিনা-·শনঃ২ ৷৷ রেথাকার• যদারি**ঔমূজ্**ত্বা जिर्यारणव वा। द्विधातिष्ठे भिम • विश्व ভতু বীৰ্ণ্য বলাপহ• ০ ৷ ভিচ্ ভূঞ্জ করণ পাপণ ভিমারিপ্র মিদণ বিদঃ।

खबूर क्व गरणा बाहु ना रुषा न कुरक्ट भ्रय । । यमा (जकिमादा ৰূপ ম্বিষ্ট• দৃশ্যতে ক্বচিৎ!(ভকারিষ্ট भिमः नाम। मःगुास खयनायकः ॥ অরিষ্টে মুবিকাকারে মৃবিকারিষ্ট मूह्याउ। यग थङ्गाधमः कर्या १ शकुः **পাতाल সङ्गः ७**॥ विखाल नयना-কারে। বিন্দুরেকোতি বিস্তরঃ। विजानातिष्ठे भिष्ट ग्राट जबुः **जर्बार्थ नामन १।। अतिष्ठ गर्कता-**কার? যদা স্পর্শেন বুখ্যতে। শর্ক-রারিষ্ট মেতৎ স্যাজন বুদ্ধি विनामन ৮ ॥ यहा भोनी तुना-ভাস মরিষ্ট দৃশ্যতে কৃচিৎ। নীল্য-तिष्ठे भिम•रळ्य• यम्भा नक्ती विना-শন•৯:।অরিপ্টে মশকাকারে মশকা-রিষ্ট মুচ্যতে। ভত্ত্ব:সলে যশো বুদ্ধি। थ् जि॰ भी जिक्ष ना मराय ८०॥ ज्वमा পুতিমো বিন্দু রেকোংনেকোংথ বা यमा। ভূজনারিষ্ট ইত্যেব ধৃতি সৃতি বিনাশনঃ ১১.॥ সূচীক্প মরিষ্টঞে-मृक्षमा जिर्मा ११ वन वा । मृहा विश्वे भिष्कः नाम ভर्दुः कल विनामन >२ना ত্রখশ্চেদ্বিদ্বো রাজন্ পড্কুযো विकासक का । उनमुह निव वास। ৯ প্র ক্রিবিন্দাথ্য মরিষ্টক ।। তস্য

স্পাৰ্শন নাত্ৰেণসচেল: স্থানমাচরে ্থ ১৩ । কালিকারিপ্ত মিত্যেড 'পী ধৃতি স্মৃতি নাশন ১৪ !! ব্ৰুক্ত যদি নছেৰ পু্যত্নেনাগি সম্ভঃা मात्री नाम महातिष्ठे• **म**र्जाजीष्ठ বিনাশন্যা অনেকগুণ সম্পন্ন: খল্গো লোকৈ ন গৃহাতে ১৫। কলোতপক পুতিম মরিষ্টঞ্চেন্ডদাস্থ্য ।। ভর্ क्ल॰ यामा विम्रा॰ वल॰ वृक्षिक নাশ্যেৎ ১৬। কাকাকৃতি যদারিষ্ট্রং काका विश्वेश छामाग्राङ ॥ व्यानन ভ্ৰুঃ সংগামে ভঙ্গ এবোপলায়তে ১৭৷ অরিষ্টে খর্পরাকারে খর্পরারিষ্ট मुहारछ। ভर्जुर्यामा वनः वीर्याः नुष्तिः श्री जिक्ष नाभारय अभा यहान रहा है भकनः ॰ नगः अग्राहित **नक्**राउ । **म**क्वीि **न दि थ**ङ्गः **महा**भिद्वे নিসূদনঃ ১৯॥ কোডী স্বশপত্রকযো র্কণে পতিতে ২০।২১। যদিয়ে মিবা ভাতি মধ্যে বাদৃশ্যতে ্বটিত্। बानातिष्ठे भिनः नाम ভडुः कन धनाषरः २२ ॥ व्हेक्क द्रिशा मीर्घागु यहा পল্লবিনী ভবেত্। স্পাশে বাথ করেণাথকরালারিষ্ট মুচ্যতে ৷৷ অয়• ্হি ক্ষিতি পালানা দৃষ্টি যোগ্যো ভবেছাই। দর্শনাদেব নশ্যন্তি ধংশা

न्त्री . जराप्यः २०॥ व्यतिष्टे क्छ-পর্রভৈ কল্পারিষ্ট• তদুচ্যতে। অস্য न्नाक्त्रमाद्भग नमाजाय गरमा नवः ২৪ ৷৷ খজুরবৃক্ষ পুতিম বদা রিইস্ত লক্ষাতে। খজুরাবিষ্ট সেত্ত স্যা-खुं अन धनाशङ् २<u>८॥ (शाम् श्रा</u>ख मतिष्ठे (छए मृङ्गातिष्ठे॰ उपूष्ठाउ। लातन उन्दूर्नभाष्टि विश्वी वव स्वा-म्यः २७॥ (भाषुहाक्ति हिए या অরিষ্ট সংপুটী ম এক। পুছারিষ্ট निष्कः नाम अर्जुः नहाथ नामानः ২৭॥ খনিত্রাভ মরিঈঞ্চেৎ খনিত্রা-রিপ্ত নৃচ্যতে। শ্রাণা মিপি সংগ্রামে ज्य गण्ट भुगह कि २४ ॥ व्यति १६ ক্রন্তিলাকারে লান্সলারিও মৃত্যুতে। তাব পাগাৎ পাগতরঃ পেক্ষণাযো न ভূভূজা ॥ जय भागुः भागुः र छ विम्याः वल मार्भाग छः २०। व छमाः ব্রিট্রস্য লক্ষণ পভিত্ত ২০ ॥ ইভ্য तिश्वाने (शुकानि नाना उंखार भ्यञ्जः। विठारेवी ज्ञानि स्र ज्ञान খন্ন কোশে নিধাপ্যেৎ।। দিন্ত্রাত্র निर्गृष्टिके मतिहाना श्रिजाना । অমঙ্কানা सन्ताना मर्गनका मुखा বহণা অৱিষ্ট মেকমেব স্যাদ্ধিররিষ্ট• मु जिन्दर। व्यानाना मेन्द्र इन्।

দ্বিষা হি বিষা যথা ৷৷ এক মারভ্য সভান্ত মরিষ্ট পুাছ নান্যথা। যথোত্তর দ্বি শুণিত ফল মাহ र्मनीविषः ॥ इंडि यज्ञ भन्नीकारा মরিষ্টাধ্যায়ঃবদ্ধঃ॥ ৠ ।। অথ দ্বিবিধা ভূনিঃ।. দিব্য ভৌম বিভাগেন ज्ञिया विविधा मजा। किया किवि সমুদ্ভা ভৌমা ভূমি সমুদ্ভবা ॥ তল্লক্ষণ মশেষেণ লিখ্যতে তরি-বোধত। দেব দানবয়ো মধ্যে থয় সৃষ্টি রভূৎ পুরা॥ তে থঙ্গাঃ পুণ্ট দেশেষু কেষু কেষু পুতিপ্তিতাঃ।দিব্য लक्क १ रथा। (य थङ्गाः झ्ल श्रीत्री ভূশ মতি লঘবে৷ নিমলাঙ্গাঃসুনেত্রা যে রিষ্টা শ্চাম্বরূপাঃ সুবিমল তনব শ্চাপ্যসংস্কার যোগাৎ। দুভেদ্য দুঘটাশ্চ ধুনি গুণ গুরবো যৎ ক্ষতে माइ भारको उ मियाः सद्दाउ < भी अन क्षत विजय **टी** याना বৃদ্ধিসাশু ১॥ অথ ভৌম লকণ বৃহদ্ধারীতে।পূর্ণমহেশেন বিষাণি যানি ভুক্তানি তেষা• পতিতাস্ত विनहवः। यश्चिन् शुक्तरण ज न अव দেশঃ কালাব্সামাকরতা জগাম।। পুরামৃত কীর সমুদু মধ্যাদংগাদ্য मःगृश् ययुः मुरत्रन्तुः। छिन्तर्वा

যত্র নিপেত্ত রেষ শুক্ষায়সামাকরতা• জগাম॥ যে বিষোত্থা ভ্শ স্কালাঃ খরাকা:সম্ভ বন্তি হি।মূদ্রাদাহ জুরা-নাহ শোক হিক্না বনী করা।। যে < মৃত্যেখাঃকর্রাঙ্গা মন্দাঙ্গা: স•-ভবস্তি চ। বলী পলিত মালিন্য बदा ব্যাধি বিনাশনাঃ ৷৷ যবৈব পতিত• यबु তৰদাৰুর ভাক ভাঃ। তম্থা। বারাণসী মগধ সি হল ভূমি ভাগে ধনপাল ভূমিযুত্থাক মহীপুদেলে। পৌরাষ্ট্রিকেন্যতর ধন্য মহীবিভাগে **भूकायमा** क्ञिवताः भुवम् छ अग्र. ॥ ভদ্রা। বারাণসেয়াঃ সুক্রিখা खीक्षाताः जमक्रिनः । वघदः जूथ मक्षया छारा काल्डिर काविनः॥ মাগধাঃ ককশাঃ জ্লধারা গৃত্তরা- ॥ क्तिः। छत्रता मुःथ मस्त्रयाः थङ्गा ख्खिया विष्क्रकेरेनः॥ तिशान कि म शू-ভবা मित्रक्षा निम्हलाम्ह (स्। क्रियाः जिन्ही विविधा विविधः इति शासितः॥ ॥ কালিকা গুরবঃ স্থচা ব্যক্তাকা স্তম্ভ হেতবং। সৌরাষ্ট্র। নির্মালাঃ স্লিকাঃ जुराकाका ज्म थर्ताः॥जि·इन ही श কাতানা॰ চৰন্ধা ভেদ উচ্যতে। क्किन्नम्य। गूर्वतः कर्कमाः शिक्ष शाबिनः॥ (किट् नम्क्। वहनः

जुनिया जुनवादिगः। वदाः कप्रा মিশ্রেণ ক্তেয়া হি দ্বিজ জাতযুঃ ॥ मामान्। दिख्य क्षोपुः कृति मं ब्ग खजः । कत्तः भाज ब्गः जुरूः ভ माह जु॰ सर मुदा।। वजा ए सहि खाः পাণ্ডি নিরবি দলেভি গুণৈঃ। ততঃ কোটি সহসেণ হ্যকান্তঃপুশস্তে ।। इंड्रामिक ज्ञायानीभायोगिक भित नख थात मृष्टेकन । यमार । আসান্ত লৌহ জাতীনা বজু খদ্ধায যুক্ত্যতে। তথাচ। যে খড়া স্তীক্ষ্ বারা ভ্ল মতি গুরবঃ যড়গুণাচ্যাঃ সুভে-দ্যাঃ কেচিৎসংস্থা নিরস্থাঃকতিচন সমূলা নিম্লাঃ কেচিদেব্। তে ভৌসঃস্বতে খ্মী খন বিজ্ঞীবল• यए गूना निखना वा उ मृःश मिक মুগু দপ্ধতি বল কুল শ্ৰী যশো নাশনা স্তে।।ইতি খন্ন পরীক্ষাযা•ভূম্যধ্যাযঃ च अगः २ ॥ 🗱 ॥ व्यथा द्वेषा द्विः। ध्वि प्रष्टेवियः (भारका यः ११वर ग्र সংগ্ৰেষামপি লিখান্যত্ৰ সগুণ लक्षनाष्ठकः॥ उपया। शृद्दि विदातः मु छमाः পরে নিন্দাস্পদা खथा। বি-চাৰ্য্য খন্ন মানঞ্চ কৰ্ত্তব্য খন্ন কোবি-দৈঃ৷ধোরঃস্তার ইতি খ্যাতোদ্বিবিষঃ थङ्ग (काबिरिनः। यात्रः महाद मूथ

বৃষ্ণীৰ্টেও তার উচ্চার্টনে মতঃ ৷৷ যত্র || হ স রবস্যেব খড়ে নথ হতে ধ্নিঃ। इ र ज्यूनि द्रय थ शुः नकवार्थ भूजा-ধ্বঃ>!৷কা•স্যশদ ইবাভাতি যখিন্ থক্নে হতে ধুনিঃ৷ কা-স্যধ্নি রয় খলঃ পাহ নাগাজুনো মুনিং ২॥ অভুস্য **লকণ পতিত ৩** ॥ ঢক্কা **শব্দ ই**বা ভাতি যিমিন্ খন্নে হতে ধুনি: । ঢকু ध्नि द्रयः शङ्कः अद्यं अव् निम्मनः ৪ ॥ কাকশ্বর ইবা ভাতি যস্মিন্ থঙ্গে হতে ধ্নিঃ৷ কাক মরোয় ধত্ন: স্যাৎ 🗐 यणः जन नाणनः ৫ ॥ তত্ত্ৰী স্বুর সম্যোষ্থিন ভবেৎখন্নে হতে ধ্নি:। তন্ত্ৰী পুনি রয় খনঃ সল শ্রী ধন ज्ञानिनः ७॥ थतान्तर् धृनि यश्चिन् খর্ধুনি রয় সভঃ। 🗐 যশো জ্ঞান বিজ্ঞান জয় তেজো বিনাশনঃ 9 ৷৷ भुँ छत्र (माद्व यः थङ्गः म निन्तुः थङ्ग লক্ষণে৮।গভীর তার ধ্নিতা খন্ত্রস্থ मृ छमेक्षा । উडान मन् क्वित्र थङ्गान्य विकाश । यश वर निव श्रीतालि थङ्गः मुध्रुनि कञ्जमः॥ ककः क्रक्ला मनुद्धा यथा ভृति मूगायनः । मेर्ब लक्ष्म मम्ममः थङ्गा या श्रुनि ়বর্জিতঃ॥ স নিন্দ্যঃ সুন্দরাঙ্গোপি यथा वाका विविज्ञा । नाथन

वाथ राखन जथा लोह भनाक्या। লোঙেন শর্করাভির্বা ধ্বনি বিজ্ঞান মুচ্যতে । ইতি খড় পরীক্ষাযাণ थुन्रशारगाष्ट्रेमः ॥ 🗱 ॥ व्यथ विविधः মানণ যক্সান দ্বিবিধ পুোক তস্য লক্ষণ মুচ্যতে। উত্তমাধ্ম ভেদেন ভেদে। হি দ্বিবেণ মতঃ॥ উভম• यिष्मान माल्य मान भुकी खिंउ अथमः उइ यद्थवः शुक्मानः পুকীৰ্ভিত ২॥ তৎপুন ব্ৰি বিধণ প্ৰোক্ত মাদি মখ্যান্ত ভেদতঃ। যৌ মুষ্টি বি শতি সমাযত তীবু ধারে। ভৰু ভবেৎ পুসরতোপি বডকৃ नी जि:। गारनन हाई भनिकः महि थङ्ग माथा नाजि शुक्षे न विक्षे कन्तरः गार ॥ या हारणा नव मूक्षिजि ज्ञायकः मा माना ভবেৎ পুসরতো ২পি চন্তর্থ ভাগঃ৷ তাবৎপলৈঃপরিমিতস্কততোধিকো वा यज्ञाथामा धन यमः ऋज ना-শনায় ৷৷ নাগাল্পুনোপি ৷ যাবত্যো मुष्टेरवा रेन्दर्वा उनका जुनरवा यह।। भुत्रात उइ उर्था भागि दि रेव मान मू-खम्भायावरङ्गामुष्ठरमारेमर्छा भुगरत **ত**প্রিভাগিকঃ। পলৈ स<del>्टर्स्ट इंटिजः</del> স থল্গে মৃধ্য উচ্যতে ॥ যাবত্যো

मूछेर्या दिर्द्या जर्मा भाः शुमात छ ७८ । यथनः कीर्जिङः थङ्ग उट मामा वाधिकः भीवः ॥ ভৌমান। सिम-मुफ्रिक्टे दिवास नघरवा मजाशाहिक थङ्ग भवीकायाः मानाश्यायः ॥ कः ।। जिल्लाक्षः शृः मोकाविष्यसः। छ छ छेजि ভোজস্ত। দীঘতা লঘুতা চৈব খর বিস্তীণতা তথা। দুর্ভেদ্যতা সুঘটতা খয়ানা গুণ সংগুহঃ॥ থর্বতা গুক্তা চৈৰ মন্দ হা তনুতা তথা৷ সুভেদ্যভা দুৰ্ঘটতা খল্পানা দোষ সংগ্ৰহণাইতি নিখিল মুদার মুক্ত মত্র বহু তচ্ছেষ্ নিক্ষ্য থম্বস্থেই: নৃপতিরিতিবিচিস্ত্য বো বিধত্তে সচিরতরা শূি্য মুদ্ভিতা লভেত ।। ইতি যুক্তিকল্পতক্ত थ्युभद्रीका ममाक्षा। ভরস• ক্লী মা•স•। ইভ্যমর:॥ ভরস্থান• ক্লী ঘউঃ। ইতি জটাধরঃ॥ उत्रमान् जि मृदः॥ (तृगी। ইতি व्याकत्र १ ।।

ভরস্বী ত্রি শূরঃ।। বেগী। ইভ্যমরং!। গৰুডে বাযৌচ পু•। ইতি রাজ-निघफैः॥

তরক্ষঃ পূ• তরক্ষুঃ। ইত্যমরটীকাষা• ভরতঃ ॥

ক্রেড্রু পুরু ব্যাঘুবিশে**বঃ ৷ নেকডে**-ৰাঘ ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ।

**७ कुः २ म्शाम्नः ७ ७ इक्क्**रि। ইতি শ্বরত্বাবলী।।

তর ফুকঃ পু তর জুঃ। ইছি শব-बङ्गावनी।।

ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। হোডঃ ২ वहन ७ वाई है: 8 वहिंब दि। विका अभागः।

তরালুং পু• নৌকাবিশেষ: ইতি श्वावनी।!

তরিঃ জ্রী নৌকা। ই সমরা। দক্ষা॥ ় ৰজাদিপেটকঃ ইতি হেম্চল্য়।। তরিকঃ পু॰ শ্লবঃ। ইডি ত্রিক।ও-শেষঃ !!

নৌকা। ইতি শক্ত তরিকা জী त्रवृ।वनी ॥

তরিণী ত্রী নৌকা। ইভি হেন-**ठन्मः** ॥

তরিতা জী তর্জনী। ইতি শুক্ **চ**न्द्रिका ॥ गृक्षन । गाँवि इंडि ভাষা। यथा। সম্বিদা কলিক্টঞ্ তामुकृष्टेश धुख्रतः । अहिरकनः থজুরস স্তারিকা তরিতা তথা।। ইভি সলাণ্বত্স্ত।।

.ভরিরথঃ পু॰ অরিত্র•।ইভি্হারা-रकीग

उक्जीवन क्ली वृक्तमून । ইতি भव्दक्तिमुका।।

ভক্র কর স্থান ইভিনেদিনী।। ভক্র প্রত্যাল জারকঃ।। এরওঃ।।। ইভির্ভানির্ভঃ।।

তক্লাঃ ত্রি যুবা। ইতি মেদিদী॥ নূতনঃ। ইতি ধরণী॥

তক্শররঃ পু• সপ্তাহাবধিজ্বঃ যথা আ সপ্ত রাত্র• তক্ণ• জ্ব সাহ্ মনীধিণঃ। ইতি চক্রদন্তঃ।।

ङ्गानिष क्री शक्षिताजी जम्बि।
ङ्गि दिन हकः। श्रृष्ठः साःमः जिया
क्षानिणाकं खक्षाः मिश्रुजार्
देश्रुनः निमा सन्द्रः भाग इताति

ষট্॥ ইভি চাণক্য ॥ उक्ी जी विठीयवयाः जी।। ज्या ভূশ: পুবর্ত্তমানরজাঃ স্ত্রী। ইত্যমর द्वीकायाः मात्रमुन्द्रती॥ उ८ भर्यायः । যুবতী ২। ইত্যমরঃ ॥ তলুনী ও ্যুবঙি: ৪। ইতি ভরত:॥ গৃহকন্যা ।। দত্তী বৃক্ষা। চীডা নাম গৰা দুব্য ।। পুর বিশেষঃ। সেউতী ইতি ভাষা । उट्शर्यायः । महा २ व्यमात्री **७**ः ণদ্ধাট্যা ৪ চাক্ষেশরাৎ ভূক্তেষ্টা ৬ রামতকণী ৭ সুদলা ৮ বছাপত্রিকা ৯ভূকবলভা ১০ ইতিরাজনিঘটঃ । (नवजी ३३। यथा। हालकाट् পুর শতকাদশোক: গুর **মৃত্য: ।** অশোকাৎ পুন্ন সাহসাৎ: সেবজী পুরু মৃত্যুল। সেবতী পুরুষাহসাৎ अतुक· १ मगुखमः।। ই।ত নারসি·হ পুরাণ-।। অস্যা গুণা:। শিশিরত্ব-। রিপত্ত দাহ জুর মুখপাক ज्या विहम्मि ना निष्ठः। मधुत्रप्रका

ভৰণীকটাক্ষমালঃ পু• ভিলকবৃক্ষঃ। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

তৰ্ত্লিকা জী বাতৃলিঃ। বাদুড ইভিভাষা। ইভিছারাবলী ॥ ভৰ্দুলিকাপিপাঠঃ॥ তক্ৰথং পু• কণ্টকঃ।ইতিহারাবদী।। তক্রঃ পু• আকাল্লা ।। বিতক্রী । তক্তভুক্ পু• বন্দাকঃ।ইতি রাজ-নিঘণ্টঃ।।
ভাষাপরিছেশঃ ॥ সচ পঞ্জিধঃ।

छक्मृगः शू॰ वानतः। ইভি: मन्-ज्ञञ्जावनी।।

ভক্রাগ ল্লী কিশলয । নৃতনগলব: । ইতি হারাবলী।।

তক্রাজ: পু· ভালব্দ: १ ইতি রাজনির্ফি:॥

তৰুক্ছা স্ত্ৰী বন্দাকঃ। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ॥

छक्रतारिणे जी वन्ताकः हैं हैं जि जाजनियंगेः॥

তক্রলী খ্রী জতুকাল্ডা। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

ভকশাগী भू॰ भकी। ইভি হারা-यनो।।

छक्সातः शु॰ क्श्राः । ইতি হার।বলী।।

क्रक्श जी वन्ताकः। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

তকটঃ পৃ• উৎপলকদঃ। অস্য গুণাঃ। গুৰুত্ব•। বিষ্ঠান্তত্ব-। শীতল-ত্বশাইতি রাজবল্লভঃ।।

एकं क मीखो।। विछक्तं इंडि

কে: পু আকাল্লা।। বিতক্লা।
ব্যভিচার শক্ষা নিবর্ত্তক:। ইতি
ভাষাপরিছেশ: ॥ সচ পঞ্চবিধান
ক্রা।আল্লাশ্রাং অন্যেন্যিশ্রাং
২ চক্রক:৩ অনবছা ৪ পুনাণবাধিভার্থক: ৫। ইতি জগদীশাঃ।। এবাং
লক্ষণানি ভত্তকে দুইব্যানি।।
উহং ॥ হেতুশাক্ষং । ভতু মীমাংসাদি ইতি মেদিনী।।

छर्ककः पू॰ याहकः। ইতি (स्मह्मुः॥ छर्ककात्रकण्ड॥

उर्कित्रा को न्यायित्रा। छ८ अर्यप्रायः मानिकिकीर। इन्यानदः॥ उर्कात्री की अयुजीत्कः। इन्यानदः॥ उर्कितः भू हक्यप्रवृक्षः। इन्यि

তকী ত্রি ভর্কবিশিষ্ট:। মীমাণসক:
। যথা। ত্রৈবিদ্যো হৈতুক ভরী
নৈক্জো ধর্মাপাঠক:। ত্রয ক্চাশুনিশংপূর্বে পরিবৎস্যাদ্দেশ্বিমা
। ইতি ননু:।।

उकुः जी मृश्नियागयञ्च । हिका इंडि जाया। उर्रश्यागः। क्यान् नानिकार। इंडि जिका अस्परः॥ उकुं हो अमृबनांश इंडि शाहादणी॥ उकुं हे जी, कर्जन । काहेसाकाहे हैं डि जाया। ইতি विकाश्यायः॥
जुक् ही जी जुक् । ইতি হারাবলী॥
जुक् लिखः पु॰ उक् हिजम्द लिखः।
्टिकाর वाँद्रेल ইडि जाया। उद भर्तायः। दिल्ती २। ইडि जित्रायः।
॥ उक् लीठी ० वर्ज् ला ८। ইडि

ভিকুশীঠী দ্রী ভকুপিণ্ড:।ইতি হারাবলী।

ভত্লাসকঃ পু॰ ঝল্লোলঃ। খরসা ইতি ভাষা। ইতি হারাবলী ।। ভকুশাণঃ পু॰ সামকঃ। টেকোর শাণ ইঙি ভাষা। ইতি ত্রিকাপ্ত-

ভর্জ । ইতি কবিকল্পদ্যঃ।।
ভর্জ ক ও ভঙ্গে । ইতি কবিকল্পদ্যঃ।।
ভর্জ ক ও ভঙ্গে । ইতি কবিকল্পদ্যঃ।।
ভর্জ ক লী ভঙ্গ ক । যথা। স্বীরাকা ভার্জন ভারনাদি। ইতি রসনী।।

ভলনী আ অসুষ্ঠদনীপান্ধ্বি:।
তৎ গ্ৰ্যান্ধ:। প্দেশিনী ২ ।
ইত্যান্ধ:। সাত্ গর্ভহুদ্য চতুভি
নাদৈ ভবভি।ইতি সুখবোধ:।।
ভলিক: পু
দেশবিশেব:। ভৎ
শিল্যান্ধা ভাষিক: ।ইতি হেন্চল্ম:।।
ভগ্ন: পু
বৎস:।ইতি হেন্চল্ম:।।

তর্ণকঃ পু• সদ্যোজাতবৎসঃ। কোনলেবাছুর ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ॥
তবিঃ পু• স্র্যঃ॥ প্লবঃ।ইতি শদার্থকল্পতকঃ॥

ভর্ত্তরীক• ক্লী নৌকা॥ পারগে ত্রি। ইতি মেদিনী॥

তর্দ । ইংলে। ইতি কবিকল্পন্য ।। তর্দ জী দাক্ষতকঃ। কাঠের হাতা ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ ।।

ভর্পণ ক্লী ভৃষ্টিঃ। প্রীগ্রনণ ইভ্যমুরঃ ॥ यञ्जकाष्ठः । इञ्जि (रमहन्तुः॥ নহাযক্তবিশেষ:। ততু পিত্যক্তঃ। भिज्ना करा वाचा नी नाक विश्वना . कवाब शासन जुलि जन्मानुः। इंडामत्र होकासः जुतुनः ॥ उट हिविशः भुशानः अक्षा उजाम्। यथा। जर्भनक मुहिः अर्ग्या प्रेंडाइ স্নাতকো দ্বিজঃ। দেবেভা শ্চ পাবি ভ্যক্ষ পিতৃভ্যক্ষ যথা ক্রমণা ইতি শাভাতপঃ।। বিধ্বা মধিকৃত্য । ভর্মণ পুত্যহ কায্য ভদুঃ কুশ किलामरेकः। उट्मिन् उट्मिन् क्तान शाकामि शूर्वकः।। इंकि কাশী খণ্ডণাদ্বিতীয় যথা। নিত্য বৈমিত্তিক কাষ্য তিবিধ সান মুচ্যতে।ভর্পণন্ত ভবেত্তস্যলীকীন

वाविष्ठ ।। इंडि वुका शुहारा । 🕸 !। 🍴 **ভ**र्পगाकत्राय, मारम् । यथा। नास्त्रिक्त ভাবাদ্বশ্চাপি ন তগ্যতি বৈ সুতঃ ৷ शिविष्ठ (वह निः मुाव शिख्ता देव জলার্থিনঃ॥ ইতি যোগি যাক্তরদুঃ ॥ 🗱 । ७ म । निविषः इनि। नियथा। নেষ্টকারচিতে পিতৃ•স্তর্গবেৎইতি শহুলিখিতৌ ৷৷ যন্ন সর্বায় চোৎ-সৃষ্ট•যहাভোজ্য নিপানজ•় তদ্বর্জ্য• निन•ভাভ সদৈব পিত্কমণি।। ইভি মাকণ্ডেষপুরাণ।॥ #॥ তস্য विधान यथा । मां कार्म् वामा দেব পিতৃ ভপণ মন্তঃছ এব **স্**র্য্যাৎপরিবর্ত্তিক্রাসাক্ষেৎতীর মুৰীৰ্য্যেতি। ইতি বিষ্ণু:।। তীৰ্থে वित्मारम यथा। जिल्लामकाञ्जान र्प्या बनिष् श्रीथ वानि छिः। ইতি ম**্স্পু**রাণণা তীর্থে হল**হ**ু **(फ८ उर्भगः कादां कि उमा कर्षा-**ক চরণঃ আচম্য ক্র্য্যাৎ ভ্রস্ত জলেচ তপ্ৰণ মবিক জাহলেতপ্ৰিণ म्टिं कार्या । यथा । भागागुरू जूदा खार्या २ मन्द्रा रेक्ट्रमधा छः । शिकृ फ , मिनारशुत्र मम्यामिक बनाक्षनीन्।। इंडि चार्यमभूतान । जन्ति (एरण कु। यवान्ति इतः

বাল্লেদ্দকে (দ্বতা পিতৃন্। खाना वर्षा काम मश्च महर ुर्विशिष्ट ।। इंडि विकुः ॥ शारिमण নাত্ৰ ইন্ধৃত্য সলিল প্ৰান্থাঃ न्दान् । छम्बान्याः स्टर्भाङ शिजून मिक्ति उथा।।इंडि मकः ॥ डेब्टाएकज् । शाजाबा हंत নাদাব শুচৌপ তান্তর ক্লিপেৎ । अन পূरा १ थाता गार्ख न इरल जु विवर्शिक इंडि इाती जः ॥ यक्रु-জ্তিঃ পুলেঞ্জু ভিলান্ সংমি-শুযেজনে। সতোন্থা তু সব্যেন ভিলা পুাহা বিচক্ষণৈঃ।। ইভি स्मार्के वाक्यवद्भाः ॥ अङ्गृष्टानामि-का जाक्ष मिक्कारमाज्यार क्राए । তিলান্ গৃহীয়া পাত্ৰ । ব্যাইন্ সম্ভর্গথেৎ পিতৃন্। ইতি নারদ:।। **#**ा। (मव ७९१) यथा । वुकान उर्शयदः भूई • विकृ कपु • भुका भिक । (एवा यका खणा नागाधक्र बां अव-সোৎসুরা:। কুরা: সর্পা: সুপর্ণান্চ **ए**त्रवा बसुकाः थगाः। विकाधना कलापाता उर्धिताकाणगामिनः ॥ নিরাছারাক যে জীবাঃ পালে ধর্মে **त्रञान्द्रश्यान्य अस्ति ।** यरजनविनः भया।। हेमः উल्द्वीजिना

পাল্য থেন দৈবতীর্থেন কার্য্য।। ়। মনুষ্য তপণ যথা। সনকল্চ - अनेन्त्रक , ज्जीयक ननाजनः । ্ৰক্পিল শ্চ/সুরি শৈচক বোঢ়ঃ পঞ্চ-দ্বিথ স্তর্থা।। সর্বেতেতৃপ্তি মাধান্ত खना<del>ष</del>ूनामहा। इंहरनिवी जिना সনুষ্য তীর্থেনসামগেনপুত্যগুর্থেন कार्याः जना (विमना उपद्मारथन কাৰ্য্য া জ্বা তত ঝ্ৰিতপ্ণ পুা-ब्या (थन जिनवीजिना रिनवजीर्थन কার্য্য । জতো দিন্য পিভূ ভর্পণ मिक्नगमृत्थन भागीनावीजिना ब তিল ছলেন পিতৃতীর্থেন কার্য্য। " তকঃ িতৃ তপ্ণ•।। 🕸 ॥ ভীন্মা-ষ্টন্যা ভাষা তপণ। ভস্য মক্তো ৰথ। বৈষানুপদ্য গোত্ৰায় সাস্কৃতি পুবর বিচ। অপুত্রার দদান্যেতৎ निन जी या रची ।। পুर्यन मञ्जा যথা৷ ভীষ্মঃ শাস্তনবোবীরঃ সত্য-वामी किरजनित्यः। वाजित्रिक রবাগ্নেতুপুরপৌনোচিতা•কিযা• ॥ 🗱॥ (भुक्ठकुक्तंमा)। यमकर्भनः यथु।। यभाय अर्भाजावाय मृज्यत **চाङ्कायह । देवयञ्चलाय कालाय** नर्वञ्चकयाय व ॥ छेजूबद्राय मञ्जाप नी नाय भन्नरमिक्षत । वृत्का

দ্বায চিত্ৰায চিত্ৰপ্ৰপ্ৰায় বৈ নমঃ॥ প্ত্যেক নামভি জ্ঞী-জ্ঞান দদ্যাৎ॥ #॥ তিল ভর্গণ নিষেধো यथा। রবি শুক্ত দিনেচৈব দ্বাদশ্যা। नुषक वामरत्। मधम्। क्य मिवरम ন স্ব্যাভিল তপ্ন ॥ ইতিমৃতি:॥ সংক্রান্ত্যা•নিশি সপ্তম্যা•রবিশুক দিনে তথা। শ্ৰাজে জন্মদিনে চৈব ন স্ব্যান্তিল তপণ।। ইতি মৎস্য-পুরাণ ॥ তত্র পুতিপুসবো যথা। অ্যনে বিষুবে চৈব **ন**•কান্ত্যা• পুহণেষুচ। উপাকর্মণি চোৎসর্গে যুগাদৌ মৃতবাসরে। সুর্য্য শুক্রাদি বারেপিন দোষস্তিল্ভর্পণে ৷৷ তীর্থে ভিথি বিশেষে চ কাৰ্য্য• প্ৰেভে চ সর্বদা।ইতি मৃতি:!! তীর্থে তিথি বিশেষে চ গঞ্চাবাং প্রেতপক্ষকে ৷ निविष्किनि मित्न अर्थाए उर्ना॰ তিলমিশ্রিত।। ইতি মরীচিবচন। ॥ 🟶 ॥ তিলাভাবে পুতিনিধি যথা। তিলানামপ্যভাবে তু সুবর্ণ ক্লতান্বিতণ তদভাবেপি সিঞ্ছেৰ দৰ্ভৈ মন্ত্ৰেণ চাপ্যথ॥ইতি যাজ্ঞ-वन्।: ।। कः।। यगक्ति। यातुका उम् পর্য্যন্ত জগভূপ্যতু। ইত্যানে এ॰ खर्भाय्य। इंड्राङ्गिकउष्।। कामी

থণ্ডমতে তু। আবুকা শুম্ব পর্যান্ত দেববি পিত্মানবাঃ। তৃপ্যন্ত সর্বে পিত্রো নাতৃ মাতামহাদয়ঃ।। অতীত লল কোনাণ সপ্ত দ্বীপ নিবাসিনাণ। আবুকা ভ্বনাল্লোকা দিদমন্ত তিলোদক।।। জ্বা। জন্মাণ্টন্যাণ তর্পাস্য ফলংযথা। তস্যাণ তিথো বারি মাত্রণ পিতৃগাণ যঃ পুরাছতি। গ্রা। শুদ্ধান্ত কৃতণ তেন শতাব্দ নাত্র সংশ্বঃ। ইতি বুক্ষাণ্ডিও।।

তর্পনী ত্রী গুক্ষমবৃক্ষ: । সচ্ শ্লেমাণাবৃক্ষ: । ইতি শদ্মালা।। তর্পদেন্তু: পূ ভাস্ম: । ইতি শদ্-রহাবলী।। তর্পনাকাঙ্ক্লিনি ত্রি।। তর্পনী ত্রী পদ্মচারিনী। ইতি শদ্তন্দ্রকা।।

তর্ব গতৌ। ইতি কবিকল্লজনঃ।।
তর্বঃ পু• বংসরঃ। ইতি শদ্রহাবলী।। চক্রনদ্রি। ইতি রাজনির্ঘটিঃ।।

তম লা যুগাগু । ইত্যনর: ॥
তমঃ পু অভিলামঃ ॥ ত্ফা ।
ইত্যনর: ॥ প্রবং ॥ সমুদুঃ । ইত্যুগ্রাহিকাবং॥ স্যাঃ ইতি সংক্ষিপ্তসারে উণাদি বৃবিং ॥

ভর্ণ• শ্লী পিপাসা। ই**ভি জটাধরঃ।।** ভবিভঃ ত্রিভঃ৷ ইভি ব্রিকাণ্ড-শেষঃ ॥

ভফু: পু॰ তরক্ষ্য ইভিশবরত্বাবৃদী ভক্ষ্য: পু॰ যবক্ষার:।ইভিরত্বমালা॥ ভল কি পুভিধিতৌ। ঘুতসাক: ইভিযাবৎ।ইভিক্বিকল্লফ্মা

তन॰ क्री शु॰ स्वतंशः। यथा मही-তनः॥ अनुष्वः। ইতি নেদিনी॥ তन॰ क्री क्राधाजनात्रः॥ काननः॥ कार्यानीजः। ইতি নেদিনী॥ গर्छः । ইতি ক্রিকাওশেষः॥ পাদভলস্য নধ্যং। ইতি হেনচন্দুः॥

তলঃ পু• তালবৃক্ষঃ ।। চপেটঃ ।।
ক্লকঃ।। সন্তপাণিনা তন্ত্ৰী ঘংতঃ।
ইতি মেদিনী। সভাবঃ।। ভাবারঃ
। ইতি হেমচন্দুঃ ।।

उनकः क्री भूकृतिगी। उना अँहेडि हिन्मी ভाषा। ইडि हातावनी।। उनर्भृहातः भुः हामादे । उट भर्यायः। हर्षा २। ইडि हातावनी ।। उनावाउन्हा।

তলসারক প্লী ঘোটকস্যান্তোজন পাত্র । ইতি কেচিৎ।। যোটকস্য বক্ষস্থল বন্ধন রজ্জঃ। তৎপর্য্যায়ঃ । বক্রপাউঃ ২ তলিকা ৩২। ইতি (इन्हन्दुः॥

**छनङ्ग्यः** क्षी भाष्ठनग्रमशुः

্ৰুতি (হমচন্দ্ৰ:।।

**छत्। जी रिगाश। ब**डाघा छवा त्र ११

शिही खी ननिस्थि उक्टेश हैं डि

श्वादावनी।।

তলাতল ল্লী পার্তালবিশেবঃ।ইতি শद्भावा ॥ ७७ यय नामा मान-বেন্দু (স্থপুর)বিপজি ভগবতা তি 🛙 পুরারিণা ত্রিলোক্যঃ শ চিকীষুণা निम्बानश्व द्या उट्यानार नक भारत स्वा विना नाजावा महा-দেৰেৰ পরির ক্তিতাবিগতস্দ শ্ৰ ভবে: নহাবতে।ইতি শ্রীভাগত।। 🖔 ভলিকা জ্ঞী তলসারক । ইতি (रुब्हन्दः ॥

**छनिङ** की ज़िश्चेमा भरा गया। मुख्या न विधायन मा निम्म मा गुनावि**उ॰। शुन उनाका न**े कृष्टै॰ ভলিত পুোচ্যতে বুধৈঃ॥ অস্য গুণাঃ। তলিত বল মেধাগ্নি মাণসৌ-बः भूक वृक्षि क्रा ७ मण वध् সুমিধা রোচন দৃঢতা কর।। ইতি ভাবপুকাশঃ ॥

**उनिनः जि वित्रनः ॥ (खाकः ॥** महः। इंडि मिनिनो। मूर्वनः। ইতি হেমচন্দুঃ॥

তলিম• ক্লী হৃষ্টিম• ॥ তল্প• ॥ **চ**न्द्रांभः ॥ विजानकः । इंडि (मिनिनो ॥

ভলুনঃ পু॰ প্ৰনঃ।। যুবা। ইতি (मिमिनी।।

उल्नी जी उक्ती। गूवजी। इंडि णप्रवाननी।।

তলেক্ষণঃ পু• শ্করঃ৷ ইতি শবার্থ-कन्न उकः॥

তলোদরী জী ভার্যা। ইঙ্কি मादार्थकन्नु उकः॥

তলোদা দ্রী নদী। ইতিত্রিকাণ্ডশেষঃ उन्नः क्षी वनः। ইতি ভিকাওশেষः॥ उन्न की भू॰ भग्रा॥ अकेलिका ।। मात्राः। ३७)मत् जत्रा ।।

ज्ञकीणेः भू• कीणेवित्सवः। **ছा**त्र-পোৰা ইভিভাষা। যথা। জবৈহক · एक्षकीठेन्ड उपा म्हारा ज्यानुत्।। ইতি বুদ্ধবৈবত্তে ব্রিক্ষরমাগও।। তল্পন জা করিপ্র। ইতি ভূর-भूषागः ॥ भृष्ठवः नमः माःमः। इंजि हाजान्ती॥

छन्नि• क्वी भया। इंडि हातावनी।। उझ• क्वी विकाश किवाश किवा

তল্ল: পৃ• জলাধারবিশেষঃ। তলাও ইতি হিন্দী ভাষা। ইতি নেদিনী॥ তল্লজঃ পু• পুশস্তঃ। ইত্যমরঃ॥ অয়• অজহল্লিকঃ সমাসে উত্তর পদে ভবতি। যথা সমারী তল্লজঃ। ১ইত্যমরটীকা॥

তল্লী জী তক্ণী। ইতি মেদিনী।। তবরাজঃ পু• যবাসশর্করা। ইতি রাজনির্মণ্টঃ।।

ভবরালোভবথগুঃ পূ৽ যবাসশকর।
ভবথগুঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। সূধানোদকলঃ ২ খণ্ডলোভবলঃ ৩ সিদ্ধমোদকঃ৪অমৃতসারজঃ৫সিদ্ধ্যণঃ
৬। অস্য গুণাঃ। দাহ তাপ তৃষ্ণা
নোহ মূর্ছা স্থাস নাশিত্ব•। ইন্দ্রিয
ভপণত্ব•। শীতত্ব•। সদা সুমধুরত্বঞ্চ
। ইতি রাজনির্ঘটঃ।

ভবক্ষীর ক্লী ভোষাক্ষীর ইতি
থ্যাত । তৎ পর্য্যায় । প্যঃক্ষীর । ২
ব্বজ ৩ ব্বজোড ব ৪ । অস্য গুণাঃ । মধুরত্ব । লিলিরত্ব । দাহ পিত ক্ষ্যকাস কফ স্থাসাসুদোষ নালিত্ব । ইতি রগজনির্ঘটঃ ॥

खनकोती की गक्तशका । ইভি त्राकनिर्द्रण्डः॥

खिविकः भू॰ चर्गः॥ नमूपुः। ইতি

जिका अको महामुगा दिवृद्धिः ॥

जिक् वि की नि ॥ इन्युकन्या ॥

मिक्तः । इंकि निका अको मूह्यामूगा दिवृद्धिः ॥

जिविशः शृ अर्थः ॥ न्यूक्या । वर्गः
। इंजि मिदिनी ॥

जिविशे की इन्युक्या । इंजि
मिदिनी ॥

ত ঠ: ত্রি তনুক্তঃ। ইত্যমরং।।

ব্য

তপ্ত। পুল ত্বসা। ছতার ইতি ভাষা

। বিশ্বক্ষা। আদিতাবিশেষঃ।

ইত্যমরটাকাষা রমানাথং।।

তসং ই কি অনস্ভৌ । ইতি কবিকল্পজন তস যউর উৎকেপে । ইতি কবিকল্পজনঃ।

তসরঃ পু• তসরঃ। সূত্রবস্তম•। ইত্যুণাদিকোবঃ॥

তক্ষরঃ পু৽ চৌরঃ।। পৃক্ষাশাকঃ।
ইভি রত্মালা।। মদনবৃক্ষঃ। ইভি
কটাধরঃ।। কণঃ। যথা। ব্যাবৃত্তা
যৎপরস্বেভ্যংশুতৌ ভক্ষরভা স্থিতা
। ইভি রঘুঃ॥ ভক্ষরঃ কর্ণচৌরবো
রিভিকোবাস্তরণ। ইভি ভটীকা।।
ভক্ষরশ্বাযুঃ পু৽ কাকনাসা লভা।
ইভি রাজনির্ঘণীঃ॥

ভক্ষরী জী কোপনা নারী। ইতি
শক্ষার্থকল্পতকঃ।।

उक्क कार्णा। इंडि किवक्क्षक्रमः॥ उक्क विहाशुर्छ। हर्माणाशुरुण इंडि गाउर ॥ जमदल । इंडि

्चिक ज्ञामा। जिन उत्म। कृणकत्र १ हेडि याव । इंडि कृतिक ज्ञाम ॥

তক্ষকঃ পুণ পাতালহাইনাগান্তর্গত
নাগবিশেষঃ। সাকশ্যপাৎ কদ্দ
গভে জাতঃ ইন্দুস্থঃ অস্য বাসঃ
থাওববনে আনীৎ অন্য পরীক্ষিত্র দপ্তবান্।ইতিপ্রিভাগনত।
। জুই।।ইত্যসরঃ।। বিশ্বদর্মা।
ইতি অধ্বর্গবলী।। দানভাদ।
ইতি অধ্বর্গবলী।। দানভাদ।
ইতি অধ্বর্গবলী।। দানভাদ।
ইতি অধ্বর্গবলী।।

ज्यूनः जी कृतकानः । उक्र वार्जा ज्यात् प्रमो १८ प्रशः॥

ভক্ষণ জি বাসী মন্ত্রণ ইতি শব- । রল্লান্ডা।

ভিফ্শিলা জ্রী দেশবিলেশঃ। ইতি লিজান্ত কৌমুদী॥

তক্ষ পু• বৃষ্টা। ইত্যসর:॥ তাটক্ষ: পু• তাডক্ষঃ। ইতি দ্বিকপ কোষ টীকাষা• ভরতঃ।।

তাটছ্য সী উদাসীনত্ব ।। নিকটছত্ব । । যথা। তাটছ্যেন উদাসীনত্বেন ইতি ।। তটছো নিকটছঃ পুসিদ্ধ পূর্ব পুণ্য ইতিচ কাব্যপুকাশ টীকায়া চণ্ডীদাসঃ।।

তাডঃ পু॰ তাডন•।। শদঃ॥
মুপ্তিমেযত্ণাদি। ইতি মেদিনী॥
পর্বতঃ।ইতি হেমচন্দুঃ॥

ভাতকা জী রাক্ষনীবিশেবঃ। সা সুকেতু যক্ষকন্যা বৃদ্ধবরেণ সহস্ত্র হস্তি বল যুতা পুরু দৈত্য পুরুগ্য সুন্দম্য ভার্তা মারীচ মাতা সুন্দে নিহতে পুরেণ সহ অগন্ত্য মৃষিণ ধর্ষয়িতু মুদ্যভা তদ্য শাপাৎ স প্রা রাক্ষ সত্ত্বণ গতা জীরামেণ

अफकाक्ष• श्री कृत्स्**या।** हैं

তাড়কঃ পু: কর্নভূষা। কান্তর্জন কর্নজা হ । ইতি ত্রিকাপ্তশেষ্টা ভাটকঃ ৩ । ইতি দ্বিলপকোষ টাকাষা ভরতঃ। কর্নিকাপ্ত তাল-পদ্ধ ে। ইত্যমরঃ। ভাডপত্র ৬। ইতি হেন্চন্দুঃ।

তাতন ল্লী আঘাতঃ। যথা।

শ্লাষ্য নীরস কাঠ ভাডন শত। শ্লাষ্য: পুচপ্রাতপ:।ইতি শৃস্বার-তিলক।।

ভাতনী স্ত্রী অপভাতনযঞ্চি:।তৎ পর্য্যায়:।চর্ম্যস্তি:২কশা ৩ ভীমা৪ চর্ম্মলালিকা ৫।ইতি শব্দমালা।। ভাতপত্র• ব্লী ভাতক্ষ:।ইতি হেমচন্দু:।।

ভাডি: ব্রী বৃক্ষবিশেষ:। ভাডিযাত্ ইতি ভাষা । ইত্যমর টাকাযা ভরত:॥

ভাটী দ্রী প্রক্ষম: 1 ভাডিয়াত্ ইভিভাষা।ইত্যমরমেদিনীকরো॥ তৎপর্য্যায়: 1 তাড়িঃ ২ তালী ৩ ভালিঃ ৪ । ইভি ভরত: 11 আভরণ বিশেষ: । ইভি দুর্গসিংহং 11

ভাড়ুলঃ পু• ভাডযিতা। ইতি " স•ক্ষিয়সারে উণাদিবৃত্তিঃ॥

ভাড্যমানঃ পু• পট্ছাদিঃ। ইভি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ ভাড্নযুক্তে ত্রি॥

তাওব লীপু নৃত্য । ইত্যমর:॥
তাওেন মুনিনা কৃত তাওি নৃত্য শান্ত তদস্যান্তী জি। ইতি ভরত:
॥ তণ্ডুনা প্রোক্ত মিতি স্বামী॥ তৃণ
বিশেষ:॥ উদ্ধতন্ত্য । ইতি
নিমিনী।

। তাণ্ডবভালিকঃ পু॰ নন্দী। স শিব দারী। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ তাণ্ডবপ্রিয়ঃ পু৽ শিবঃ। ইতি শব্দালা॥

তাজি ক্লী নৃত্যশান্ত। ইত্যন্ত্র
টীকাষা ভরতঃ।।
তাতঃ পু পিতা। ইত্যন্ত্রহা

আনুকম্পাঃ। ইতি নেদিনী।। পুজ্যে

তি ইতি শব্দরত্বাবলী।।
তাতভঃ পু ক্লুড়াতঃ। পিতৃবাঃ।
জনকম্যহিতে ত্রি।ইতি নদিনী।।
তাতজন্বিত্রো জ্রী নাত্রপিতারী
। ইত্যনরঃ।। দ্বিচনান্তোহ্যা
তাতভুল্যঃ ত্রি পিতৃসন্মঃ। তৎ
পর্য্যায়ঃ। মনোজবসঃ ২। ইতি

৫। ইতি মেদিনী।। তাতনঃ পৃ॰ খঞ্জনপক্ষী। ইতি বিকাপ্তশেষঃ।

হেমচন্দুঃ॥ মনোজবঃ ৩ পিতৃ

সন্ধিভঃ ৪ ৷ ইত্যমরঃ ॥ তাত্তলঃ

তাতলঃ পু॰ রোগঃ।। পাকঃ।। লৌহকূটঃ।। মনোজবঃ। ইঙি মেদিনী।। ভগুমাত্রে ত্রি। ইড্য-জযপালঃ।।

তাতিঃ পু॰ পুৰ:। ইতি জটাধর:॥ তাৎকালিকঃ ত্রি তৎকাল্ভবঃ । यथा। उठः भाक्ष मण्डा उ कूर्यात्मकाम् छथा। कर्नु छाट • कालिकी मुक्षि द्रभूकः भूनद्वय मः। इठि मुक्षि उद्य मङ्गा

ভাৎ পर्यं की অভিপাयः। ইতি नेपायकन का। वकु तहा। ইতি ভাষাপরিছেদঃ।।

ভাদাব্যা ক্লী তংশকপণা অভেদ-স্মুদঃ। ইতি ন্যাযশাস্ত্ৰণ।।

ভাদৃক্ ত্রি সইব দৃশ্যতে হসৌ। ভাষারমত ইতি ভাষা। ইভি মুগ্ধবোধা।

তাদৃশঃ 
বৈ তাদ্ক্। ইতিমুশ্ববোধ•
তাদৃক্ঃ

छान श्री विखातः॥ छानविषयः। इ जिल्हार्थकन उकः॥

তানঃ পু৽ গানাক্বিশেবঃ। যথা।
বিভার্যন্তেপুযোগায়ৈ মু ইনাশেব
সংশ্বাঃ। তানা স্তেপ্নপঞ্চাশং
সপ্তবঃ সমুক্তবাঃ।। তেভ্য এব
ভবস্তান্যক্টতানাঃ প্থক প্থক
। তে সুঃ পঞ্চসহস্থান ভবক্তি।
ইতি সক্বিভদানোদরঃ
ভানিত।। ইতি সক্বিভদানোদরঃ
ভানিব ক্লী গাত্রেভনুতা। যথাভানব
ভনুতা গাত্রে দৌর্বল্য ভুমণাদি
কং । ইত্যুজ্লনীল্মণিঃ।।

ভান্র: পু॰ প্রসাণ্ড্রম:। আবর্ত্ত:।
ইতি ভ্রিপুযোগ:॥

কালং কি সালং। ইকি সাকার্ক

তান্ত: ত্রি শুস্তা। ই**তি শদার্থ** কলুতকঃ॥

তান্ত্রিক: ত্রি জ্ঞান্তসিদ্ধান্ত:। **শাস্ত্র** তত্ত্বজ্ঞ: । ইত্যমর: ॥ **তত্রশাস্ত্র** বেন্তা ত**্**সম্বীচ॥

তাপঃ পু॰ সম্ভাপঃ॥ ক্ছু॰। ই**তি** মেদিনী॥

তাপকঃ পু• জুরঃ । ই**ভি শ**ন্ধ-রত্নাবলী॥ তাপকর্ত্তরি ত্রি॥

তাপত্যঃ পু• অজুনঃ। ইতি শুরাণ•।।

তাপনং পু॰ সূর্য্য: । ইতি হেমচন্দুঃ

। কামবাণঃ । ইতি জটাধরং ।।

সূর্য্যকান্তমণিঃ। ইতিরাজনির্ঘটঃ:।
তাপযিতরি ত্রি।।

তাপস লী তমালপত্র । তেরপাৎ ইতি ভাষা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। তাপসঃ ত্রি তপস্বী। ইত্যমরঃ।। দমনকবৃক্ষঃ।। ব্রুপক্ষী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

ভাপসতক: .পু ইঙ্গুদীবৃ**ফ:।** ইত্যমর:॥

ভাপসদ্ধঃ পু ইঙ্গুদীবুক্ষঃ। ইভি হেমচন্দুঃ॥

ভামলি

ভাপসক্ষমসন্ধিভা স্ত্রী গর্ভদাত্রীক্ষুপ াইতি রাজনির্ঘণ্টঃ !!

ভাগনপূ্যঃ পু পু্বালব্কঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

ভাগৰপূৰা জী मुक्का। ইতি রাজনিষ্টঃ॥

**ভাপर्**ती जी व्यक्षनवित्मवः। यथा। ষ্তে হরিদা সংযুক্তা মাধাণাণ **ভर्जायहोः। ७**श्रुवाः काशि नि-**ছোঁতান্ সহৈব পরিভর্জাবে**।। নিজিযোগ্য জল তত্ত্ৰ পুক্ষিপ্য কুশলঃ পচেত। লবণাদু ক হিন্দুনি মাত্রয়া তত্র নি:ক্ষিপেৎ ॥ এষা সিকি সমাযাতা প্রোক্তাপহরী ब्रेशः। व्यम्ता खगाः। ভद डाशहरी वन्ता वृष्ता (भूषान मान्द्रि । ৰ্•হণী ভৰ্ণণী ৰুচ্যা গুৰী ভিত্ৰ গুণাঃ || মৃতাঃ॥ ভাহরী ইতি লেকে ইতি ভাবপুকাশঃ৷ তাপহারিণ্যাণ ক্রিয়া ভাপিঞ্চ পূ• ভমালবৃক্ষঃ। ইত্যমরগ্রা ভাপিঞ্জ• ক্লী খাতুমান্ধিক•। ইভি त्राजनिर्घणः॥

পু ওাপিশ্যা ইত্যমর টীকাথা ভরতঃ॥

इनि खी डाशिनीनमी। नाशिकन वाहिनी निकालन शुनिका। हेडि রাজনির্ঘণ্টঃ ।। যমূনা । ইউি ত্রিকাওশেষঃ।।

ভাপী পু॰ বুদ্ধ: ইভিত্রিকা গুলেবুঁ: ।। ভাপযক্তে বি।।

তাপ্য श्री भाजुनाकिक । इंडिं त्रज्ञाना।। एक् महत्मूशः निर्देश श्री जाभ्यकः क्री माकिक । इंडि ताके निर्देशः।

ত।পুর্গেল দ্রকা শ্লী নাক্ষিকধান্তঃ। ইতি রহুমালা॥

তানঃ পু• ভীষণঃ ॥ দোৰঃ । ্ইত্ৰেষশালঃ॥

ভাসর স্থা জল । । নৃত । ইঙি ভরত ধৃত কদু:।।

ভানরসং ক্লা পদ্ম ।। সারসঃ। হত্যারং॥স্বা ।। তালু । ইতি মেদিনীয়া

ङागनकी जी ज्यानंतकी। इञ्ज्याः।

ভান লিপ্ত ক্লী দেশবিশেষঃতিনোতামলিপ্তা জ্ঞা লক ইতি ভাষা।
তৎপর্য্যায়ঃ। দামলিপ্ত ২ তামলিপ্তা ৩ তমালিনী ৪ স্তম্বপৃঃ ৫
বিষ্ণাহ ৩ ৷ ইতি হেনচন্দুঃ ৷৷
তমোলিপ্তা ৭ বেলাক্ল ৮ তমালিকা ৯ ৷ ইতি ত্রিকাপ্তশেষং ৷৷

তামসঃ পু॰ সর্পঃ। খলঃ। ইতি (मिनि ॥ ऐलू हः । इंडि ताज-ি বিঘটঃ । চতুর্থননুঃ। অফায়মুস্তরে হরিনাম। বিক্ষেরবতার:। ত্রিশিখ नाम हिन्दुः। देवध् अस्य। (एवाः । (कार्रा विश्वामान्यः मञ्जर्वसः। वृतः थाि जिन्द्राम्या मनुभूजाः । इंडि প্রী ভাগবভংগ**র্কা ভগে যুক্তে** বি ॥ जामन मुनया यथा। क्यानः ১ গৌতনঃ ২ শক্তিঃ ১ উপমন্যুঃ ৪ रेकिजिनिः ৫ पूर्वामाः अम्कणुः १ वृश्लितिः ৮ ভागवः २ अभन्तिः २०॥ जानम भाजानि यथा। अनुत-মোহনার্থ শিব কৃত শৈব থাশুপ-जानि ३ कपान कृ उन्यानीन भरोपि ২ ব্ৰাহ্মণ কপি ভগৰৎ কৃত বৌদ্ধ শাস্ত্র ও জৈমিনি কৃত নিরীশ্বর ' সাংখ্য: ৪!। তামসগুরাণানি বথা। मारमा १ किया २ रेनक ० रेनातः ४ कान्तः ६ चालागः ७॥ ভামস ষ্ত্ৰো যথা। গৌতম• ১ वार्च्याञ्डाः २ नामृजुः ७ यमः 8 শাহ্ব্যু ৫ ঔশনস ৬। 🕸।। রাজস जामन कमानि प्या । यट्टादः দৈবত পৈত্ৰ নৌপদৈব তথাধুরণ শাক্তি শৈবেং গাণপত্য: যাগ্

रहामाहिकः उथा॥ श्लोद्धाः विकास पानन कर्मा प्रति विकास विकास विकास प्रति विकास विकास

তামসী দ্রী নিশা॥ দুর্গা। ইতি মেদিনী॥ জটানা•সী। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

नुज्रयः॥

তামিসু প্লী অন্ধকারম্য নরক।
ইতি মনুঃ।। পর বিভাপত্য কলত্রাপহর্তা যমদূতৈ নিপাত্যতে

যক্ষ ইতি শ্রী ভাগবত।।

ভামিদ্র: পু• ভোগেছা পুভিষাতে ক্রোধঃ।ইভি শ্রীভাগবভটীকাযাণ স্বামী॥

্তাৰু লী তৈজসধাতু বিশেষ্য ভাষা

है कि काँगा है कि कारा। छर भगंऽ।यः। जामूक · ) भूतः र सिह-মুখ ৩ ছাই ৪ বিষ্ঠি ৫ উডুম্বর ৬। ইত্যমর:। দিষ্ঠ প উদম্বর ৮ म्बिनुबत् २ उन्द्रतः २० खेषुबतः २२ । इंडि उद्योका ॥ उभरनष्ट- ১२ चारकः ३० चार्र विन्तरः ३८ तविरत्ना इ॰ ३६ त्रविश्विषः ३५ ज्ञङः ५१ रेन था-বিক ১৮ রক্তবাত্ ১৯। সুগর্স্য **७**मा खाः। मधुद्धः। क्यायद्वः। ভিক্তব্ব বিগাকে কটুত্বণ **শীতল-**'দ্বুুুুুুুুু কফ পি**ভ**'বিবন্ধ <del>শূল</del> পাপ্তুুদর ভন্ম নাশিত্বখ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ অনুত্র-। সারকত্র-। রোপণ্র-। লগুরু । লেথনরু । অর্নে। জুর कुष्ठ काम याम क्य भीनमञ्जू शह শোথ কৃনি নাশিত্ব। অল্পুর্-হণ-ত্ব্য। ইতি ভাবপুকাশঃ। পরিনাম **म्**न द्रीर वायु।नम्न वङ्खाग न। मिद्वः। भृषिकातिद्वः। दनायु স্তেম: পৃষ্টি তুষ্টি কারিত্ব নিত্য-সেবনে বলী পলিত নাশিত্বঞ ॥ 🗱 ॥ मृत्विष्ठिः अभूते १ कन्त गर्ड নিহিত গোম্বাগ্মভমীকৃতপঞ্চা-মৃত দ্বারা পঞ্চ পুট দত্ত ভামুন্য **७१: । वाडि जुाडि म्वा**मि सा

ন্যান্নপিত্ত নাশিত্ব। বল কারিত্বঞ্চ । 🕸 ।। অশে। ধিত তানু দোৰাঃ। আযু: শুক বল নাশিত্ব। রোগ क् क इसि सूह। जुन द्वर नाना ताग क्ष भून किराश स्वराकृष्टि িচিত্ত সন্থাপ কারিজ্ব•। বিষত্বাৎ-ত্বক ৷ ইতি সুথবোধ: ॥ # না ত:স্যাৎপত্তি' র্যথা। শুক্র• বৎ कार्जिएमा शक्जिः धर्गी जला **ज्याद्ञामुः नमूद्रभग्न भिन्नाङ्** भूतादिनः ॥ # ॥ छम्। लक्ष्यः यथा। बनाकृतुम जकानः दियः मृरू घन कन। लाइनालाङ्गिङ **छातुः ना**त्रभाय शुन्नमाः छ ॥ कृष् ৰক্ষ মতি ভৱা শ্বেতঞাপি ঘনা সহ ৷ লোহ নাগ যুভঞ্চে শুলু দুষ্ট পুকী বিতশক্ষা তস্য শোধন विधि यंथा। भड़नी क्उ भवानि **जामुन्याद्मी भुजाभायटानिवित्कट** ভপ্ত ভপ্তানি তৈলে ভক্তেচ কাঞ্জিকে ॥ शान्त्व ह कूनवानाः क्वारा ह ত্রিখা ত্রিধা। এব• তানুস্য পত্রাণা• বিশুদ্ধি: সংপুদাৰতে । অথ তস্য नावन विदि यंथा। मृचानि छात्र পরাণি কৃত্ব: সংস্বেদ্যেদ্ব ধঃ।: বাসর ত্র মন্ত্রের জ্বতঃ থল্লে বিনিঃ-

ক্ষিপেৎ। পাদা শ সূতক দত্বা याम् मः द्वा भर्मायः ॥ ७७ উष्कृत्र •পত্রাণি লেপযেদ্দিগুণেন চ। গন্ধ-(कनामु घ्रिष्ठेन जम्र कुम्राइरगानकः ं ॥ ७ ७. शिष्ट्राह भी ना को • हारक्री • স পুনর্গবাণ তৎকল্পন বহিগোল লেপথেৎ দ্বান্ধ্রা ধ্রা ভদ্মোলক ভাণ্ডে শরাবেণচ রোধ-(त् । वाल्कािः भूभू**र्गा**थ বিভূতি লবণাদুটিঃ !! দল্বা ভাও मृत्य मून्। उउन्हलाः विभावत्र । कन वृक्तारिना अनाक् यावद्वान চভুৱন ৷৷ স্বাঙ্গ শীক্ত সনুজ্ঞ अन्नत्यहृत्र १ पुरे तः। यारेगकः (गान-ক ত ভূনিঃ কিপেছুরণোদরে ॥ মূদা-লেশস্ত কর্ত্ব্যঃ সর্বতো *২ম্ব* ৪: মাত্রক:। পাচ্য গ্রুপুটে ক্ষিপ্ত। মৃত ভবতি নিশ্চিত। বননক विद्यक्ष ज्ञा इन स्थाक् हि । विनाइ । स्वर मृ ८ द्वर न करता छ কদাচন ৷ ইতি ভাবপুকাশগ্রীঞ্চা শৃল্নি ভঃ। অৰুণবৰ্ণঃ। ইতি ছেন-**চन्दुः नप**तञ्जावली ह ।। उन्नजि जि:।

ভागुः पू॰ इंडरत्रगिविष्मयः। ইভি कर्में विशाकः॥

ভাসুক ক্লী ভাসু । ইভাসর: ॥ ভাসুকণী জী অঞ্জননামপশ্চিম দিগৃহত্তিপত্নী। ইত্যমর: ।।
তামুকার: পু॰ বর্ণসঙ্করজাতিবিশেষ:। কাঁসারী ইতি ভাষা।
তৎপর্য্যায়:। তান্তিক:২ শৌলিক:

उर्भग्रायः। जानुकः २ (मा प्वतः ७ जानुक्रकेकः १। इठि मद्मक्षावनी ।। व्यानगर्भितः क्निक्तं मद्म-मुक्षेत्रा ।।

তামুকুউক: পু• তামুকার:।ইত্য-মর:॥

তামুক্ট: পু নী ক্সুপবিশেষ:।
তামাক্ ইতি ভাষা। যথা। সম্বিশা
কালক্টক তামুক্টক পুস্তর ।
অহিফেন খজুরস: তারিকা
তরিতা তথা ॥ ইত্যপ্তৌ নিদ্দি
দুব্যানি ষথা স্র্যাইক পুথে।
ইতি জলান্ব ডক্তা।

তামুকনিং পু ইন্দুগোপকীট: । ইতিভ্রিপুযোগ: হারাবলীচ।। তামুর্গভ ক্লী ড্পা ইতি রাজ-নির্ঘট:॥

ভানুচ্ড: পু জী ক্টুট:।ইত্যারঃ
।। স্টুরজ:।ইতিরাজনির্ঘট:॥
তামুদ্ধা জী গোরক্দুধা।ইতি
রাজনিষ্ট:॥

তানুপউ লী তামুনিমিতলেথন পত্র থেখা। দত্বা ভূনি নিবহয়। কুত্বা লেখান্ত কার্ণেখা আগমি ভাগুনূ

ভদু নৃপতিঃ পরিজ্ঞানায় পাথিবঃ

॥ পটে বা ভানুপটে বা সমূদ্যে
পরিচিহ্নিত । ইতি মিতাক্ষর। ॥

ভাসুপত্র: পু॰ জীবশাকঃ। ইতি রাজনিষ্ট:॥ তামু নিমিত পত্রে রী॥

ভানুপণী দ্রী দীঘিকাভেদ:।ইতি ভূরিপুযোগ:॥ নদীবিশেষ:।ইতি পুরাণ-॥

जामुभल्लयः भू चार्णाकत्कः। इजि द्राजनिर्वणेः॥

ভামুপাকী পু॰ গৰ্মভাওবৃক্ষঃ ইতি রত্নমালা।।

जामुनानी जी इ॰मननी। ইতি बाबनिर्यणः॥

जामुन्द्रः नृ• दक्काक्षनः। ইতি करोधदः॥ ভূনিচম্পকः। ইতি শদচনিদুকা॥

छामुश्रम्भका जी तक्किव्र । इंडि त्राजनिर्घणः॥

তামুপ্রী জী ধাতকী ৷৷ পাটলা বৃহ্চঃ। ইভিরাজনির্ঘটিঃ ৷৷

ভামুফল: পু• चाह्याठेव्कः। ইভি রাজনিষ্টঃ।।

ভামুন্লা ত্রী দুরাল ভা ॥ লজ্জালুঃ। ইভি রাজনির্বটিঃ। ক্টুরা। থিরইে ভাম্সা

ইতি ভাষা।ইতি রত্নালা॥

তামুবর্ণঃ পু॰ পল্লিবাহত্**ণ•।ইডি** রাজনিয়ণিঃ।।

তामुवर्गा क्वी ७ ५ पूज्य वृक्तः। इंडि ।
भक्तिका॥

গামুবল্লী ত্রী মঞ্জিপা। ইতি
রহনালা।। চিত্রক্ট দেশ পুসিদা
লতা। তথ প্রথাবাং। তামু। ২
তালী ৩,তনালী ৪ তনালিকা ৫
স্ক্রবল্লী ৬ সুলোনা ৭ শোধনী ৮
তালিকা ৯। অন্যা গুণানা ক্রায়বুং।কক দোস মুখ কণ্ডোত্ম রোগ
নাশিকুং। শ্লেম শুদ্ধি কারিবুঞ্জ।
ইতি রাজনির্ঘণ্টাঃ।

তানুগীজঃ পু• **সলত্যঃ। ই**তিঃ রাজনির্ঘণ্টঃ॥

তামুব্রঃ পু• কুলগাঃ। ইতি থিকাওশেষঃ॥ ' '

ठान्व्हा खी कृष्णिका। इंडि एम्प्रमुः॥

ত। इंजि उड़भावा॥

छामुनिथी भू खी कृत्रूरेः। इंडि

তামুসার স্থা রক্তদ্ব হিছি রন্ধ্যাল না ভানুসারক॰ ব্লী রক্তচন্দ্র-। ইতি
্রাঞ্জনিঘণ্টঃ।।

তামুদারকঃ পু॰ রক্তথদিরঃ। ইতি ৴ রাজনির্ঘটাঃ।

তামু জী সৈ ভ্লী।ইতিরাজনির্ঘটঃ

তাত্রাকুঃ পু• উপদ্বীপভেদঃ।ইতি শব্দালা।।

তামাভ নি রক্তচন্দ্র । শহচন্দ্র ॥

তামুার্দ্ধ• ক্লী কা•স্য । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

তাদাকঃ গু॰ কোকিল: ! ইতি ত্রিকাঞ্চলে !!

তামুকঃ পু॰ ক•সকারঃ।ইতি শব্দ-রত্নাবলী।। ভাসুনিমিতে তি । যথা। কার্ষিকে তামুকেপণঃ।ইত্যমরঃ॥

ভাগ্নিকা জী গুঞ্জা। ইতি রাজ নির্ঘণীঃ।। নালরজ্যা বাদ্যং। ইতি ভ্রিপুযোগঃ।।

গান্য জী বাদ্যানশেষ: । তং পাৰ্য্যায়ঃ । মানৱন্ধা ২ বিকারিকা ৩1ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥

ভাষ্ব লৈ প্রা পর্ন গ্রাইত ভাষা। অস্য গুণাঃ। কটুত্ব:। তিভত্ব:। তিভত্ব:। তিভত্ব:। তিলত্ব:। মগুরত্ব:। কারত্ব: ক্যায়ত্ব:। বাত ক্মি কফ দুঃখ দেয়ে

नामिष् । कामाप्ति मन्तीमनष्। স্ত্রীসম্ভাষণ ভূষণত্ব। ধৃতি বজু পাটবোৎসাহ কান্তি কারিত্ব। সুগুোখিতে ভুক্তেচ শস্তত্বাদস্তাস্য मृत्राम ज्याबाद्धः। ऋगिनि मूर्वे **डप्** ।ইতি রাজবল্লভঃ॥অপিচা ভীনুদ্ श्लीनम काम नामिष् । काइ । माइ कातिष्व ॥ अ॥ क्ष भर्गा গুণাঃ। তিক্তব্ব। উষ্ণব্ব। কৰা গ্ৰ্ব। দাহ বক্তু জাত্য ম্লধারিত্বক।।।।।। मुङ्गर्नम् खनाः। भ्रम्म वाजामय न् मिन् भथाव्। क्राव्। नीनः নত্ব পাৰ্চন বৃঞ্চ ৷জি৷ সদ্যন্ত্ৰোটিভ ভাষুলভদনশণঃ মূখরেশে ক্সাড্য দোষ্য ভারেখকর জমল বিষ্টম্ভ বান্তিকারিক্লাঞ্চানিরাত্রত্রোটিত ভূষো ভল যোজিত ভাষূল গোঃ। উভমত্ব। কৃচি वदा कादिवः। जिमायार्डि नामिष्य ॥ 🕸 ॥ শিরাপর্ণস্ত শৈথিল্য কুর্য্যান্ত স্যাসু क्रमुजः। भीर्लः ज्याव मस्रमः ভক্ষিতে ভুসিতাসিতে ॥ অনি-शाय मूर्थ भर्ग- भूग- श्वामया नद्रश मिं कुरला स्तिष्टः न्यानस्य न মারতে হরি।। ইতি রাজনির্ঘটিঃ ॥ 🗱 भगम् हा दामहा विः भगार्

भाभमक्षयः । हुर्गभर्गः इस्त्रमायुः लिता वृक्ति विनालिनी ॥ नायू व्राप्तृ दिषः मृत्व मत्था श्वाकी वंप्रव-ष्टि छ। उत्थारगुक्ष मृत्रक स्थः প্ৰণাদ্য ৰজ্লাখ্য। চূণাধিক হয়তি গন্ধ নথাবিপুগং রাগং তথাধিক मनक मुगक्तिकाति। जाचून मुख्य মিদ রসনাগু ভিন্ন পর্ণ নিশাস্থ-থিক খণ্ডিত পণন 🔄 ।। তাছুল। न इंड-(श्वाक- मंत्रीत क्क म् बला জ্বাস্য শোষ পিতাসুমদ মূছাক্ষি রে গিষু ॥ তাচুলাভুগেয়োগাৎ म्प्रारहायः शिल्लानवामुखा। (६२ দূক্ কেশ দভাগ্নি গ্ৰেভাৰ বণ বল !! ক্ষ্যংগ্র ইতিরক্ষেব্ল 🤃 🚓 বিনা-পর্ণ মুখে দত্তা গুৱাকণ ভফ্যেইদি । जार्फ्विक हथाला यादम्भाः न गहु जि ॥ इंकि कर्याना वनः॥ 🕸 तुक्क ठातिनाः। जगिष्ठ नाक विरमुन्तु ্গোমা সদৃশ ধুরণা ইতি বুকা-रिवरार्ख वुकाथ ७ ।। 🕸 ।। क मूक ।। ইতি মেদিনী॥

ভার্লকরকঃ পু॰ ভার্লপাত্র•। भारनत्र वाहै। इंडि ভाषा । ७९ भर्यायः। इणी २ हे जिर्म्स्नाः। তাर्नमः जि जार्नमाजा। छ८ পग्रायः । वागु विकः २ । हेडि ত্রিকাওশেষঃ ৷৷

তাষ্লপত্রঃ পু• পিণ্ডালু:। ইঙ্কি র।জনির্ঘণ্টঃ॥

তামূলরাগঃ পু॰ মৃশ্রঃ। ইতি श्वावनी।। जाश्वमावस्य।।

তাষূলবল্লিকা জ্রী তাখূলী।ইঙি मञ्जूबङ्गावनी ॥

ভাষুলবল্লী ত্রী ভাষুললভা। পাণের गाष्ट्र । इ. इ. चाषा। उर भगायः। তাষু ী ২ নাগবল্পী ৩। ইত্ৰেরঃ।। পণ্নত ৪ সন্থ শিরা ৫ সপল তা ও ফ পালীণ ভ্রগনত ৮ ভক্ষ্যপ্রা ৯। ইতি রাজনিধ্নীঃ।। তাস্থল-বল্লিকা ১০ পণ্যত্ৰী ১১ ভাদূলিং১ছ । इंडि स्याञ्चावकी ॥ नार्शनी ३७ নাগবল্লরী ১৪৷ইতি ভাবপুকাশং॥ ।। তাৰুল বিধবা জীণা যতিনা । তাৰুলী জী তাৰুলবল্লী। ইত্যমরঃ॥ ভাষ ঋড পালনে::সন্তভৌ।বিস্তার इंडि यावट । इंडि कविकन्नक्रमः॥ তাযিকঃ পু॰ তজ্জিকাভিধদেশঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥

> তার॰ क्ली क्लां। ইতি मिनिनी। মুক্তা। ইতি রাজনিঘটঃ॥ जातः शु वानत्रविष्मवः॥ मुकाः

বিশ্বিঃ। শুন্ধনোক্তিকঃ। ইতি দেদিনী।। পুণবঃ। ইতি তন্ত্রণ।। তরণ । ইতি বিশ্বঃ॥ কূর্দ্বীজণ। ্ইতি তন্ত্রদারঃ॥

তারঃ ত্রি অতুছেশবং। ইতি মেদিনী।। মুরিতকিরণঃ।। নিমলঃ । ইতিধরণিঃ।।

ভারক কী চৃষ্ণু: ইতি মেদিনী॥ ভারক কী জী চফ্সুরারা। নক্ষর । ইতি মেদিনী॥

ভারকঃ পু॰ দৈত্যবিশেষঃ॥ কণ ধারঃ।ইতি মেদিনী॥ ভেলকঃ। ইতি শদরহাবদী॥ ভাতরি তি । ইতি মেদিনী॥

ভারকজিৎ পু• কার্ত্তিকেশঃ। ইত্য-নরঃ॥

তারকরুকা লী বডকর নাজ বিশেবঃ।

যথা। বডকর নাজ নাজ তারক তারক বিক্রা উচ্যতে বেভজন্তি না ভক্তা।
তেবা মুক্তি নাম লাখান নাল ইত্যেব মুদ্বার্থ্য মন্ত্র নৃত্র মানাম নাল ক্রিক ভি পাশিনাম শি মুক্তিদ ।।
ইমা মন্ত্র জালি পারণামন্ত্র সম্ভূত ক্রিলি ভ্যান্থি ।। মুক্লে তদভূৎ লাক্তি ম্বালে ভ্রান্ত নাল্তি ভ্রি।। মুক্লে তদভূৎ লাক্তি ম্বালে মুভাৎ ।

ত্বনপ্যনেন জ্রীরাম তারকাখ্যেন मञ्ज उः ॥ जूरा काम्प्राः विश्वनात्वा मराञ्जा পরিপালকঃ। কৃত্বা মুক্তান্ की तमाजान् मानुवामीन् भवःभमः ॥ অন্যথকিন্তে ভ্যণমন্ত্রপু ভাবাৎ পু।পথিষ্যসি । ইভি সন্দিশ্য মাণ तिक् विमनज मकन्नगान् ॥ इंडि পাদ্যোত্তর খণ্ডে শ্রীশিব পুতি শ্ৰীবিষ্ণুবাক্যে।। অপিচ। মুমূর্যো मू निकर्गास अस्ताहक निवासिनः। অহ•দিশানি তে মন্ত্র• ভারক<u>•ব</u>ুন্ধ বাচক।। ওঁ শ্রীরাম রাম রামেত্যে-তত্তারক মুচ্যতে।অত স্তৃ॰ জানকী-নাথ পর•বুক্ষ বিনিশ্চিত।। ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে এরাম পুতি এ শিব বাক্য।।

তারকা জীল্লী নক্ষত্র• ॥ কনীনিকা। ইতি মেদিনী॥ ইন্দুবাৰুণ্যা• জী। ইতি রাজনিঘটঃ॥

তারকারি: পু• কার্ত্তিকেয:। ইতি হেনচন্দু:।।

ভারকিত ত্রি ভারকাযুক্ত । যথা।
ভারকাদেরিতঃ ভারকিত নভঃ।
ইতি সুপদ্ম ব্যাকরণ ।। ভথাচ।
সিতি নিশাদৃশদি সুটদুৎপর্ভৎ
কণ গুণাধিপ ভারকিতামরঃ।

ভারা

ইতি নৈষধ।।

छात्रकिनी जी. त्राजिः । इति प्राज्ञ-निर्घणेः॥

ভারণঃ পু॰ ভেলকঃ ইতি শব্দ রিয়বলী ।। তরণ কার্যাক্রি তি । ভারণিঃ স্ত্রী নৌকা। ইতি ছারাবর্ল। ভারতপুলঃ পু৽ ধ্বল্যাবনালঃ ইতি রাজনির্ঘটঃ ।।

তারতম্য ক্লী তরতম্যোর্ভাবঃ।
ন্যুনাধিক্য । যথা। নিধন নিধন
মেত্রোর্ঘার্থা স্তার তন্য বিধি নুজ
চেত্রসা। বোধনায় বিধিনা বিনির্মিতা রেফ এব জয় বৈজয়ন্তিক।
। ইত্যুদ্দ টা।

ভারদী জী ভরদীবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘটি:।।

তারপুর: পু• কুন্দবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

তারলঃ ত্রি বিটঃ। ইতি ভূরি-পুযোগঃ।।

ভারবিমলা জ্রী ধাতুবিশেষঃ। ইতি শদাথকলতকঃ।।

ভারশুদ্দিকর নী সীসক। ইতি বিষয়েনির্ঘটঃ॥

তারা জীপু: নক্ষত্রণ ইত্যন্র:॥

যথা। এক তার নভো দৃষ্ট্রা

মার্রব্যানারদে। মুনিঃ। তাবার 🗟 চপ্রালে৷ যাবদীন্যা ন পশ্ তথ इंडि कर्यापाटन ॥ य वस्ति। ইতি নেদিনী ।। শেবন্য পর্য্যাযঃ। ि ब्रेगी २ क्नीनिका ७ । हाँ छ রাজনিমণ্টাঃ। তারকা ৪:ইত্সেরঃ॥ खी 'नुकासनटारलमः ॥ বৃহস্পতি ভাৰ্তা৷ ইতি নেদিনী !৷ वानि अथे। जा जूवि कारा कन्ता। इंजि ज्ञामायन ॥ हीजा॥ मुका। इंजि तार्जानवं है: ॥ 🕸 ॥ **विजीयानकिः। यथा। जीलया व**ष्ट् भूमा हिट एडम की मा अबस्त्री। ভারকত্বাৎ সদা ভারা সুথ মোক शुकायिनी ॥ উशुश्विडाविनी यसा-দুগুতারা পুকী ভিঁতা। অস্যাধ্যান• यथा। भुज्रानी जनार्निजाह्न अव क्ष्यात्राष्ठेशमा भन्ना थल्लन्दीयतः কতৃখিপর ত্রাক্কার বীলোভবা । थर्डा नील विभाग शिक्षण कहाँ। ল্টেক নাগৈ যুতা জাড্য ন্যস্য কপালকে বিজগতা হন্তগুতারা স্বৰ ।। অপিচ। পুত্যালীত পদা• थर्शः नासामत्रीः छीमाः व्याघु-চন্দ্ৰাবৃত্য কটে মানবংখীৰ ন**সম্পন্মা** •

৴ পঞ্মুদ্। বিভূষিতা । চতুভূজা। वानक्कियाः महाजीमाः वत्र भूमाः ।। খন্ন কত্ সমাযুক্ত সব্যেতর ভুক দ্বা । কপালে পেল সংযুক্ত नवांभानि यूगानि जा।। भिक्तिरेगुक करी शायसीनावस्का गुरु्विष । वालाकं मधनाकात्र लाहन वय ভূষিতা ৷৷ জুলছিতা মধ্যেশতা रवात्रमः हु। कत्रालिनी । नारवन মেরবদনা স্ক্রালকার বিভূষিতা। ।।বিশ্বব্যা**পক তো**যাস্তঃশ্বেতপদ্মো-॥ পরি হিতা । 🕸 ৷ অন্যাদশাকর 🕆 मञ्जाक प्रानः यथा। न्यामवर्गः बिनयना विज्ञा दत्र **शक्र छ**। एधाना वह वर्गां विव क्रांबि রাবৃতা ।। শক্তিভিঃ মের বদনা *(बार्जा) किक* ज्वना । त्रङ्गभाष्ट्-करमा नांख भाषाञ्चल मुगा नात्र ॥ ইতি তন্ত্রসার:॥

তারাপতিঃ পু• শিব: ॥ চন্দু:॥ বৃহশ্বতি:॥ বালী ॥ সূপ্রীব: । ইতি ॥ পুরাণ•॥

जातानशः भ्∙ वाकामः । ই3ि ह्नायूथः॥

তারাগীড: পু চন্দুঃ। ইক্লি ক্রিকাণ্ড-শেষ:।। তারাভ্যা জী রাজি:। ইতি রাজ-নির্ঘট:।।

जाताजुः शृ॰ कश्राः। ইতি ताब-निर्घ है: ।।

ত্রামওলঃ পু• ইশ্বরণ্ছবিশেবঃ। ইতি শদ্বত্বাবলী॥

ভারারিঃ পু• বিটমান্দিকঃ।ইভি হেমচন্দুঃ॥

ভারিক। জী ভালরস:।তাডী ইতি ভাষা। যথা। সম্বিদা কালকুটঞ্চ ভামুকুটঞ্চ ধুস্তুর•। অহিফেন• 'থজ্জুরিস ভারিকা তরিতা তথা॥ ইতি স্লাণ্ব তন্ত্র•॥

किविजाः न ज्ञात मुक्का सनर्शन विकृष्णिः। भाष्टिज्यः सर्वे मारळपू
श्रोत धनशिक छर्वरः।। द्राक्त न्राह्माद्र स्रोत धनशिक छर्वरः।। द्राक्त न्राह्माद्रकः। सर्वे क्रयसाद्मािक वृष्ट्रम्भाकि दिवा-श्रद्धः।। ইकि छळ्ज सद्धः।। व्यन्तरः।। श्रातः क्षातामास पृष्टेवरः।। छाद्यपः श्रूः वानिभूवः। ইकि क्रोनिश्वः।।

তার্কিই: ত্রি জকশান্তবেক্তা।।
তর্কাধ্যেশন কর্ত্রা।ইতি ব্যাকরণনা
স বহিংখা যথা। বৈশেষিক: ১
তিনু ম্যং বার্যস্পত্য: ৩ নান্তিকঃ
৪ লৌকাব্তিকপ্রে সার্বাকঃ৬।ইতি
ত্মচন্দুঃ:।

ভার্কঃ পু৽ কশ্যপঃ। যথা। পুনথ্য
তাসারা জ্ঞাশাল্লাদী নৈদ্যপদ্ধগান্। পশ্য কা-সর্বলাকানা তার্ক্র
পুতঃ সুনানির ॥ ইতি প্রভাগবতঃ
তাক্ষি প্রী পাতালগক ডীল্ডা।
ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।
তাক্ষ্যঃ পু৽ অখং॥ সর্পঃ। গক্ডাপুতঃ ।। গক্ডঃ। ইতিনেদিনী ॥
শালব্দ্যা। স্বর্ণাইতি শদ্রপ্রাব্লী

णथकर्वकः॥ सुन्तनः॥ हेनि द्याप्रसुः॥

ভাষ্ঠ্র শ্লী রসাঞ্জন । ইতি ভাবপুকাশঃ॥

তার্ক্যপ্র: পু• বিষ্ণু: ইতি ছেম-চন্দু:॥

তাক্ষ্যাকঃ পু• পক্ড:। ইতি রাজনিঘণ্টঃ॥

তার্জ্যপুসবং পু• অশ্বকর্ক:।
ইতি রামনির্ঘট:।

ভাক্ষ্য**িলে॰ ল্লী রসাঞ্জন•। ইডি** ইতিরাজনিঘটঃ॥

जाक्ते∫ जी न्यन्य ग्रादिरम्यः। ইঙি 'मदत्रञ्जादनीः॥

তাল- ক্লি হরিতাল-॥ তালীশপত্র-। ইতি রাজনির্ঘণীঃ॥ দুর্গাসি-হাসন-। ইতি হেন্চন্দুঃ। তালফলঞ্চঃ।

গলঃ পু বৃক্ষবিশেষ: । তৎ
পর্যায়: । তালজন: ২ পত্রী ৩
দীর্ঘক্ষম: ৪ ধৃজজন: ৫ ত্ণরাজ: ৬
নধ্রম: ৭ নদাট্য: ৮ দীঘপাদপ:
১ চিরাফ:১০ তক্রাজ:১১ দীঘপত্র:
১২ পুত্পত্র: ১০ আনব্দ: ১৪।
ইতি রাজনির্ঘট: ।: লেখ্যপত্র: ১৫
নত্যেরতঃ ১৬। ইতি ভাবপুকাশ:
।। অস্যভিণা: । নধুরত্ব: শীতত্ব: 1

िशित पार मुमाभञ्जूक ॥ 🕸 ॥ অস্বস ৩৭:। কফ পিত দাহ (भाक् नामित्रा यहकातित्र्काः #11 ভত্ফলভণা:৷ শীভলব্ৰ বল্যব্ৰু ! न्त्रिकद्वः । स्नामूत्रनञ्घः । ७कञ्चः । বিষ্টয়িত্বণ বাত পিতাসু ক্ষতদাহ क्रय नानिज्ञका इंडि द्राजनिर्वणः ॥ शिष्ठ द्रक (श्वम विवर्धनद्वः। मूर्धवर्ग वङ्ग्बन उन्द्रा छिरानि শুক বাত্র 🗷 ইতিভাবপুকাশা। বাত ক্ৰি জ'ঠ রক্ত পিত্ত নাশিত্ব• । त्•इण्द्रः। त्राद्वः। चामृद्धः।. ইভি রাগেরল্লভঃ॥ 🗱 ৷ তথ্যজ্ঞ व्यर्थार उत्त नमः मा वादी। मूब করত্ব । মিইত্ব । বাত পিত্ত क्त्रव् । ६क् इक ॥ # ॥ उत्हि जब्द्र ७ ११ । भवू १ वृः । भू ब वृः वृः । শীতলত্ব । ওক্ত্বকা এনা তালাৰ खगाः। शिख नामिष्। मूक छन्। वृष्ति कारिष्ठः। धमपुषः। ইতি রাজনিঘটিঃ॥ # ॥ তালজ তৰ্ণ-(उायखगः। चित्रभय गर काविषुः •1 তদে নামীভূত পিত্ত বাত দোষ क्ट। इंडि जावनुकामः॥ क्क क्न इत्रवः। क्रावः। वाउनवः। मूर्जत्रक्ष। इंडि दंगकवल्ल छः॥ सः॥

**जानभूनम्थाः । क्रमदः । ऋ**उ রোগ নাশিত্বঞ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। 🗱 ॥ তাল তৰণ মব্জ ওণা:। किक्षित्र रकत्रवः। वयुवः। श्लियकातिः ত্ব-। বাত পিত্ত নাশিত্ব-। সম্মেহত্ব-। নধুরত্বণ সারকত্বঞ্চ। ইতি ভাব-পুকাশঃ॥ ঞ্চা তালশিরো ৩গাঃ। यारूष्। जिक्का क्यायप्। म्बा-ভঙ্করোগ নাশিত্বণ বল পুাণ শুক্ বৃদ্ধি কারিত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ ॥ 🗱 ॥ श्री ७ काल किया मान । व्ययः अत्र हेय८ कालः (गयः हेय८ काल विविधि उ इयद काल कड़ ইয়ৎ কাল মধ্যনিতি বোধ্যিতু बेर्षेण र्रेष त्रकून। तूथन भूमा-রণাদি ক্রিয়াভি নর্ভিতব্য গাতব্য ঞ্চিকাল ক্রিয়য়েঃ পুনাণ তালঃ ॥ माञ्ज इर नियৎ काल श्य निष्ठिक। विनाञ्चापात्रक्थना दि ক্রিয়া মান• তাল ইতি ॥ কালস্য **अक वि जि भाजाम् । हात्र १ नियमि-**তস্য ক্রিযায়াঃ পরিস্পন্যাত্মি-कागाः भौतिष्ट्रम (श्वृ छान इंजि मधुः ॥ कालन नडन गलब्हान् কিষাণা সান তাল: তারাদেক ্ব কাল মেষা বিরাম স্তাল ইত্যন্যে।

ইত্যমর টাকাষা• ভরতঃ ॥ 🟶॥ जम्मादमिक रंथा। शोबी इद्राधा ন্ত্যেন তালো বভ্ৰ। তস্যকারণ• । किया कालक । इत न्छामा ভাণ্ডব গৌৰ্যা নৃত্যস্য লাষ্য ইভি স'জ্ঞা অর্থাৎ পুৰুষন্যতস্য নাম।তাওবস্যাদ্যাক্রেণলাস্য न्याम्याक्तरव्याः भिनिद्या जान इंजि স•জ্ঞা জাতা। ইতি সঙ্গীতশাস্ত্ৰ• ॥ 🛊 ॥ তস্য ভেদা বথা। চচ্চৎ পুট ১ শ্চাৰপুটঃ২ বদ্বিতাপুত্ৰক তথ্য **১। উদ্বুউক:৪ স**দিপাতঃ৫ কঙ্কণ:৬ কোকিলারব:৭ ৷ রোজকোলাহলো तक्विन्याध्य > निश्चित्यो >। शार्वजीत्वाहत्या >> द्राक्रह्डामणि ১२ **ब**यि**नु**(यो ১०॥ वामकाकून ১৪ ॥ कम्तर्भं ७६ नलक्वत ७७ मर्भागः ३१ । রভিলীলো ১৮ মোক্ষপতিঃ ১৯ শীরকঃ ২০ সি ছবিক্রমঃ ২১ ॥ मीशका २२ मिल्लकात्माका २० গজনীলন্চ ২৪ চর্চনী ২৫। কুহকো २७ विक्रगानला २१ वीत्रविक्रम विक्रिक २२॥ त्रशास्त्र १०० **একীর্ভি ৩**১ বনমালি ৩২ চন্ত-मुंभाः ७० । निःश्नन्तन ७८ ।

নন্দীশ এই চন্দুবিশ্ব ৩৬দ্বিতীযকাঃ ०१।। बगमञ्जल ७৮ गन्नर्व ७२ गकतम्त 8• बि**ङ्क्**यः 8) । त्रिङ তালো ৪২ বসস্তশ্চ ৪৩ জগঝস্পো ৪৪ ২থ গাৰুণি: ৪৫॥ কবিশেখর ৪৬ ঘোষৌচ ৪৭ হরবল্লভ ৪৮ ভৈরবৌ ৪৯। গভপুত্যাগভো ৫০ मझ जाला ७३ रेज त्रव मखकः ७२॥ সরম্বতীকগ্রাভরণঃ ৫০ ক্রীড়া ৫৪ निः शाकः (प्रवह ६३ । मूकावनी ৫৬ র ক্রাজ ৫৭ ভরতানন্যে ৫৮ 'रि**ञानकाः ८३**॥ अम्माङ्केक ७०० ইত্যাদি তালা ভরত সংমতাঃ। সংক্ষেপ্তো নিগদিতা অ্থৈষাণ लक्षा गया।। आ। श्रामात कडि (छन (नकमाब नघू मृड । हि मारुख ७क (छ्वर॰ विभावस प्र उ॰ मकः ॥ जाल हहर भू दि उद्धेय ६क बन्तः वदः मु उः २। एक वदः পু তশ্চৈৰ ভবেছাৰুপুটাভিবে ২॥ গল গাল গলা শৈচৰ ষষ্ট্ৰ ভাপুত্ৰকে भवाः **२।** উद्वेष्ठरककः गमनाः । ८ সন্নিপাতে ওক্র্যত: ৫11 চত্রবিধ্ পরিজ্ঞেয় স্তাল: কম্বণ নামক: ৬। भूनः थथः मम रेक्टन विवमरेक्टन कथाउँ ॥ नम्बर् गली भूल

थए विन्तृषय धकः। यगपन्त मान ক্তেয় স্তগণো বিষয়ে ভবেৎ ॥ খ ॥ हर्द्धः सर्वे अर्थे श्रेष्ट्र स्व वित्र हर्दे हैय ी नगठासः वमूरेकक छात्वायः কোকিলারব: গা লচন্দ্র স্বত্যন্ত थ वयः थ वयः वयः। वयु विनमू इयक्षित दाक्राकाकाका जिल्हा ह ॥ थहर (हो नुष्ठो यज तक विन्धा-ध्यः अञ् 🔊। वद्नि की 🕈 स्वमू छक्ति दीनि यव रेके ॥ अञ्चबक यबाडि म जानः मग्रहिमियः ३॰ । थवर छक्लो विन्दू लो भू छो গৌ পুতৌ পুনং।। যব তালঃ স বিজেয়: পাৰ্ৰ হী লোচনাভিখ: ১১ 🖟 । ताक हु अभागी विन्तू जंग विन्तु र्वामी माजी हरा। द्रगामा मा गूक **শৈচৰ অ**য়তী বিভি কথ্যতে ১০। मुखी लघु इ उद्देश (नोरनो क्छयूनाः व्यवः॥ वञ्खकः विकालमः जानः मात्राहारक क्षा १८% । क्**उ**ह्य यकात्रक कार्राभीन भूकी विजः १० ।। हज्जादम खद्राका यक हज्जातः मुखेका व्यक्ति। नश्कताणि हदाति छाला १य॰ नगक्य द्वः १५॥ विन्यू वयः ध्वरेण्डय छ्रवद्वा मान्न्र्याः ১৭। রভিনীলে বিধানব্য-নঘুদন্

**॰**कृष्वर-७৮।।ञाहि।(वाउँ मेखद्रावा दाबि महायवस्तरः। एकः वश्चिरं ষ্ত্র সোহ্য থােক্ষপতি র্মতঃ ৯॥ শীরক সংজ্ঞকে তালে মগণাল্লযু मुखो मछो २०। ति इतिकमे जालंड मगणा नथगाः चर्गा २४ ॥ পুতো লঘু: প্লভশ্চৈৰ ভালে मीशक नामनि २२। जाल गाब-ज्ञिकारमारमः **न**ष्ठपः **५**५७४४• २०॥ वन्डद्रः विद्रामाष्ठः गहनीतन् भुकी वि ३ र १८। **अहे क्वु स** हह र्या • विवासार करा नमूः २०११ कनः षम् । ভবেङाल सर्कात्य नम् **ब्रगः २७! जरायू** विब्रगानानतः नवरकः वधु वय २९१। वीत्र विक्रम जात्व छ करजो नागो जला जार है है कि का इगापन नहारिकरेनच क्ञान्त्राक् **₹৯॥ ভগণো গ প্লভী স্যাতা**∙ व्रकाजवग नामक २०। विकेखि न-खाक-खान ७क बन्द्र- नघू हर-ত্যা চৰক্ষা কৰু দ্বে'ত ফতো গো बनमानिकि ०२ । हडम् थाडिए-**ভালে**শগণানম্বর সুও:৩৩। ভগণ্ भु रका **मरगो विम्मू इयः रगोनः** भु क ন্তথা। লবু: প্লুভোকত শৈকো লবু हर्य मधा शिष्ट्रा निः मदः व ह खर्कः

তালে স্যাৎ সি•হনন্দনে।গো লঘু (गो नवः भू उ छाल नन्तीश्वरत-भ जाः १८।। गाय छो नो मु उद्दन्तुः हन्दिश्च भूको डिज : 28 । क्या क्रिक् वपुरेम्क उरावम्या बुवि शेषाक २१ ।। मकादण यकादण अयमक्व भागनि ७৮। हजादा धत्रावा विन्तु **फब्राइफ स् उ। जलि ॥ विनर**्वा मन यहे लाक आल गत्तर्व म जिल्ला ७३। मकत्रत्म कड बन्तुः वश्वचन्त् मत्था ७४:३०॥ ७४ वधुः मु उरेम्हर ত্রিভব্দি: পরিকীব্রিডঃ ৪১। অত্র র্ত্তি তাল্স্য লক্ষ্ণ পতিত ৪২!৷ " বসত্ত তালে কর্ত্তব্যা নগণো নগণ खथा ४०। कगसम्भ चक्रेम्हरका विदानाडक थ घर 8811 ग सुरठो लो क्छो नम्ह मुखा गाक्षि 82 শেথরে ৪৬। প্লুভঃ শ্ন্যে নগৌ ल=5 थ हरक उटा नयूः॥ **थह**जूदुः বিনাশন্ধ য়ত্র ঘোষ: সউচ্যতে ৪৭ । হরবল্ল ভ তালেচ প্লু তোলো গৌচ श्वयं १५८। जगनः न द्वारानीगरयो ্লু তে। লঘুক্চ ভৈরবে ৪৯ । গত भुज्रागरं जान ला भी भी भी भूकी खिंडोर ो। एउन्**व र्मन्न जान**े ৰিরামান্ত জত ঘ্য। লগে। গৌ

(न) माती गन्छ थ ह्य जह य भूनः॥ न हड्यू: विना भद्र: ठात्व टेंड दन **मञ्जल ७२ । म**त्रम्र शैक्श्रां छत्र(१ लो न्यू क कडहरा दाः अक वर প্লুতো যত্ৰ ক্ৰীডাভাল: স উচ্যতে **৫**८ ॥ क उद्ययः विद्यामाञ्चः जात्न निः मारू क् भ ड॰ ৫৫ । খ बय॰ म विवामान्यः भी भूनः थवय रुषा।। প্লু তৌগঃ থ্যুগ গশ্চ যত্ৰ মুক্তাবলী ख मा (७) नागी विन्तृयुगः(गी (ना तक्तात्व श्रुकी विंठः ৫१॥ अध्य भ विज्ञाभाष्ठः शुकः शु उद्वयः वदः। য় ভালে স বিজ্ঞে: । ভরতানন্দ भ•छकः १८५।। जा कि जाता वाष्ट्री क ইত্যাহ ভরতো মুনি: ৫১। মগণক শ্লু তাদ্যন্তঃ সংপক্ষেকভালকে ৬০ ॥ একাধিকশতে ভালে নঞ্জি মুখ্য তম। ইমে। 🗱। অথ পুস্তার:। গুৰুঃ নু তাধো ভাগে ভ গুৰধো ভাগতো वयू:। कञ-वाया त्राया जारा खाँग द्वाउ भए किका॥ उद्देश करा-भन्हाकिथः भुखाद्रग कवः। अर्व भुजार नमात्र माजा निवस निर्मिकार ॥ जादर शुखात्रायमाख যাবৎ সর্ব ফ ভ ভ বেৎ। অত্র তাল शुखात शिक्ववम्ही पिष्ठे सिक-

পতाकारयः मिं वार्षेन्। ज्या-মোকাঃ॥ #॥ অথ শ্লু তাদি নাত্র। ভেদেন তাল্যাতন । তালেনিকাত श्यः अ छ नन्यदेश्यद्वा अस्तरु म नंदः उद् शन्द्राट् खोठ घार वेनिनम विव्रहिट्डो मर्भारामृक्षा छ। २४: । **भू**गुड्वार कड़ उपनाविक बगिड পুন: সূত্র সিছে বিসাদা বিপাংঘাত बग उर जिकव उनू यहि वर्षायम्-र्बा इता अक्षा कः भगदा विकन न्ह ब्राज्ञ नद्दीन ख्यानाः (मा প্रুष्कु-याञि जोनायनययनियञा-ন্তান হ'বাস্বীভিঃকিংখাইকৈক মাত্রা সমুদ্যিনি লঘৌ ঘাত একো-নিনাদী ঘাত্যোমাত্রাজভাতি জভ वश्वि वाद्या दर्जनात्मन घाउः॥ .ইন্তি ভাল ঘাতন পুকার: ॥ 🕸 ॥ 🗐 त्राक्षा मनिवक्ककक्षणवरहा मुकावनीन खनः की जारह व दन इ त्रक क्रमा शक्तर्व जीना तडः ৷ সাক্ষামোকপতি শ্চন্তমুখ নতো যে৷ রাজচূড়ানণিঃ সোহয় ভালন্য •छ्राष्ट्र ज्नवर मः मात्रवद्यः इतिः ॥ अ ॥ अभि । ननीत्माश्क छन् मूर्थन वनङ छहन्तु विश्वामग्रः कल्लानमञ्बद्गा बिल्जो यन्।-

ত্তিৰূপে তুলে। কণ্ঠান্তঃ কিল কো-किला तव छाता वारहो इय श्रीतरहा তালায়া মুরজিছিন ভু সভণঃ স•-সারপাশাবলীণা খ্যাভো য: কবি-চক্রবর্ত্তি পদভোবিদ্যাচনৈর্যঞ্চিতঃ সৌভদুেষ নিন্ যুমজুন যুশাঃ সো ৎজীজনৎ শ্রী ধরঃ৷ তস্য শ্রীল শুভদ্বস্য ভণিতৌ সঙ্গীতদামো-দরে তালাদ্য: স্তবকোংচুতে স্তব कृत्वो याज ख्वीयः भद्देः ॥ 🗱 ॥ वन ह। वामाव हे उथा करना तुम ইন্দু শ্চতুদ্দ শাদশাবতার বন্ধাদি নৃত্য নাট্য ততঃ পর ।। তথাই-उग्न(उपाः। याषः ) (राजः २ জ্যোতিঃ ৩ চন্দুশেখরঃ৪ গঞ্জন ৫ পঞ্তাল: ৬ ৰূপক প্ৰসম্ভাল: ৮ ॥ वर्ष कमुञानम्य (छनाः । वीतः-विक्रमः > विव्यमसूनुः २ ध्रापः ৩ वीत्रमणकः ८ मध्कः ६ कन्तर्भः ७ ভাশপাহিড: ৭ পুরচরণ ৮ দশ-कारी २ गाबन्यगुकः १० ष्ट्रिका १) ।। অথ বুক্ষতাল (ভদাঃ। বুক্ষ ১ विज्ञास वुकार यहँकना ७ मधमाजा ৪॥ অথেন্দু ভালভেদাঃ।দেবসারঃ ) (एवठाजी २ महन्राला ७ ६४-भिद्ध हैं । अभानी द रेम् जारः ७

।। অথ চতুদ্শিতালভেদাঃ। চিহ্ন-ভাল: ১ চন্দুমাত্রা ২ দেবমাত্রা ৩ वर्षाक्रािकाश्वर्गमात्रः कमार्थः ७ वदाशात्रा १ वमस्य वाक्र का ककला a कोइनका > काखरी >> इव-शांत्रका ३२ ভाষা ১৩ मफ्साबा 28 ॥ (उदाः सक्षानि यथा। अक ভাল ভভঃ শ্ন্য-যুগল- ভালিকা **পরে। সঙ্গীতঃ পুথমঃ সার** আড-**ভानः পু**की खिंजः ३॥ এक তानक শেব শ্ব্যু-কলাভেদে দোলাখ্যক **ভবেৎ পৃথক २॥ পৃথম** यूगणः তাল্ক এক এক তথাপরে । কলা-তেদে গানভেদ ক্যোতিক পরি-कीर्खिङ आ हन्तु कन्तु खबा यूग्रः खबा हम्मु खबाशकः। वर्ह्जाना **বিভ**বন্ত্যেব• চন্দুশেশর ভাষিত:৪ ॥ একভালে। ভবেছে %: কমেণাপি **हजूदेवशम्बर्म्यः गञ्जनभ**नद्धाः मूनि ভाषिछ ।। पुषमः मुगलहेक्द ভংগরং ভাল যেককণ লেবেযুগ্রং **७वा म्ना-नक्जाब- भूकी** विंउ-४ া বৃগক পুৰম-ভাল তৎপরভ্রেক भूगुकः। (भर्षे यूगनः जानः ৰূপৰ• পরিকীর্ত্তিভ-গাওকভাল•

তথা শূন্য• ক্রমেণ দ্বিবিধ• ভবেং । শেবেযুগলভালঞ্সনভাল•ভাবেৎ পর ৮ ৷৷ একভাল তথা শ্ন ক্ৰমেণ ত্ৰিৰিধ ভবেৎ। তৎপর যুগল•তাল মিত্যেব•বীরবিক্রমঃ ১॥ যুশ্মতাল তথা শ্ন্য তৎপর দ্বতাল্ক ৷ শেবেচ যুগল ভাল• मम्द्र विषम् स्व उ र ॥ यूषा जानक শুন্যঞ্চ এক তাত্রঞ্চ তৎপরে। শেষৈকত্র ত্রিমূন্যঞ্চবিষম ধরণ ভবেৎ ১া৷ একতাল তথা শ্ৰু ক্লমেণাপি ক্রিশ। ভবেৎ । যুগল• যুগল পশ্চাৎ সবীর দশকঃ মৃতঃ 🗴 🏿 পূথম: এক তালঞ্চ ভৎপর• শুন্য মেককণ শেষৈকত্ৰ ত্ৰিভালঞ্চ মঞ্কদ্যু গতি বঁথা ৫।। সমতাল॰ वर्षः मृष्टे- जन्म कम्मर्भ गः किन्। मनाजाता, जावल, मूनाः कनार्म नार्ख ७८ भूनः ७ ॥ भक्षानार পর• শ্ন্য• উল্পাহিড মুন্তম•। वाज्यक्ष कारवर बखा मान्याममा ৰথা গতিঃ ৭॥ একতাল- তথা **ण्**नऽः कामगाणिः विश्व खावरः । লেবৈকৰ ত্ৰিতালক্ষ পুৰ চরণ ,ভাৰিত ৮া৷ একতাল নেকশ্ন্য मिर्छादक खाद्य क्याटा विद्रायः

একতালঞ্চ বাণ্ডেদে দশকোবিকা ३॥ युगन• युगन• भन्ठा९ उम्रास्ड (शुक्छानकः। (मरमह यूग्र म्नाअ गाबन्य छक जाविज > > ॥ युग्र मृन्। বিরামেচ একতাল ভবেৎ ক্রমে। ছুটকাখ্যানক ধীর সংলীত পরি-निष्ठिः १२॥ यूग्रक्ष बद्धः भूषरेमक ভাল • कि कि बिदारम शून दिक जान । वुकाना जानक नहीं ग्राथ यथा কপোতী হি করোতি শব্ ১। যুণ্ম-ভাল্- ভবেশ্ৰস্ত- একভাল্ঞ তৎ পরে। শেষে ঘিতীয় শুনে চ বিরাম-वुक्तजानक २॥ পुथम किक जानक যুগ্ম শ্ন্য ভথা পরে ৷ শেবৈক্ত ব্ৰিভালেতি ষ্ট্ৰুলা থল কথ্যতে ৩ । আদে বি কুথা যুগা। ত্রিতালংগ ভূথাগ<sup>া কা ড</sup> সাত্র। ভবত্যেবা বুকা বি কা ড প্রি ও॥ স্বিরামণ ত্রিকা । (मा व व्यक्तिक (महनगात इंट्रेंबिकन्नस्यः॥ भन्। विद्राप्त छवि ना नगिरदेवे । (नावन हिम् हिम्दुः॥ विद्या शिली २॥ विद्या शिला १ ॥ विद्या शिला । ज विद्या शिला । ज विद्या शिला । विद्या । विद्य

সনারভ্য পঞ্ডাল ভবেতথা। অত্যুদ্ধ তথা বস্ত ওক গছৰ मेत्रिजः ८ ॥ भावनम् वया धाता खथा **जाला जतम्**चनः । शक् তালাম্বরাণীভি পঞ্চালীভি পুকী-ৰ্ত্তিতা ৫ ।। সবিরামণ চতুন্তাল। बिजानः मृन्। मस्जः। सिघात्रस्त যথা কেকা ৰুষন্তে ইন্দু ভাবিভ:৬॥ এক তালক শ্ৰাক কমেণ বিতৰণ ভতঃ। শেষে চতুইয় এন্ত চিহ্ন-जान **रे**जीर्ग्रा**उ 🕽** ॥ अक हम्मु खथा যুণ্ম তাল পুভ্যেকত ব্রব । শেবে बी पिष्ठ म्नानिष्ठ मुनाबा छ वर भन्नी ২ ৷৷ পুথম• বট্ক ভালঞ্চ অত্যূজ্ ভ ज्यद क्या (मात्र यूग्रः उथा मृत्रः দেবনাত্রাচ সোচ্যতে আ চন্দুশ্ন্য• বিভালফ বিরামেণ ক্ষেণ ভু। অত্যুদ্ধন্ত ভবত্যেবং অদ্ধ্যোতি রিভিছিভিঃগ্রাএকৈকভালান্তর যুশ্ম তালাৎশূন্য ত্রয় তৎপর মেকতাল । कवा जिला मून्य जिला नभाश्या न স্বৰ্গসাৱাখ্য নবীনভাল: ৫॥ যুশ্ম শ্ন্য বিরামেণ দেবতাল মিভি कमार। कमाडार्था १ खात न्नाः है जि नई ब ভाषिত । । । नवा पूर्य मामिनि भीषु यान उथा नुमयक

সুতালভান। যুণ্ম সত্তত ক্ষত চ ভাল-শেষে ত্রিভালঞ্চ ধরাধরাখ্যা ৭॥ একতাল্ফ শ্ন্যঞ্ জ্মেণাপি চল্ত ইয়ণ ক্ৰমান্তাল ক্ৰয়ঞ্চিব বসস্ত-বাক্ সমুদাছতঃ ৮ ॥ সবিরাম• ছয় তাল যুশ্মতাল তথাপরে। শেষৈকত্র ত্রিভালঞ্চ ভবেৎ কাক-কলেভিসা ৯৷৷ বিভালঞ্চ ভবেপ্রস্ত• ভং.পর• ত্বেকভালক•। শেষেপিচ विजानात्थः कीत्रमदा भूठकाराज ३० ॥ युग्म॰ यूग्म॰ তথা यूग्म॰ তাল छुक॰ खर्द कमार । (**स्वम्**न्) कना 'ভেদে তাগুৱীতি ভবেৎ পৃথক্ ১১।। সবিরাম• ছय• তাল• युग्प भून्यक जर्भद्र । (भारमाकुंख विजानक रुवंशात्रा भुकी दिंज। >२ ॥ ठन्मु भ्नाः विद्यास्त्र हयः **ভाञ- ভবেৎ क्रमार । अठ्रक्**र ভবেএন্ত ভাষাখ্য ভাল মুন্তম ১৩ ॥ অত্ৰুদ্ধ ত্ৰিভালঞ্চ দ্বয়• তাল বিরামক। ইত্যদ্ধ মাত্রা বিজেষা সন্ধীত ভূবি সর্বতঃ ১৪॥ ভারপুবদ্ধলক্ষণ পুবদ্ধশব্দে নিত্য नाहेर्भुवस्वाम् वक्षा नाम् नाम् मुद्धेवाः ॥ 🗱 ॥ कत्रञ्चः ॥ व्यक्

মধ্যমাজ্যা• সম্মিত• ৷৷ করাস্থালঃ ।। কা•স্য নিৰ্মিত বাদ্য ভাণ্ড• ম क्रुकः। ইতি मिरिनी॥ তালক জ্লী হরিতাল। ইতিরাম-निर्घणेः॥ द्वात्रयखः। ञाना ইঙি ভাষা। ইতি হ্সেচন্দুঃ॥ তুবরিকা । ইতি শद्द्रज्ञा्वनी॥ তালকাভঃ পু• হরিতবর্ণঃ।ইতি (रुमहन्दुः ॥ उद्वि वि॥ ভালকী দ্রী ভালসুরা। ভাডী ইভি ভাষা। ইতি ত্রিকাগুশেব:॥ তাল্ধুর: **थु॰ वनाम्यः। ই**ভি रवायूथः॥ **जानधुका** जी भूतीविरमसः। यथा। चिर जानधुषा नाम नगती विहि-বোপমা। ইতি ক্রিয়ের সসার:।। जानभव· ज्ञी जाएकमार्भ मः सुनातः॥ ভালবৃক্ষ্য প্ৰং শূন্ত কণ তালপত্রিকা স্ত্রী: ও ॥ পঞ্চতাল্নী। ইতি রাজনির্ঘণ শুপাহিত মুভঃ তानभनी जी स्वर जखा में गाउँ अित्नी 5: १॥ अक्ठानः जानभर्ग· मगानि विश्व खरवर मन-দুব্য । ই ি বিভালক পুর । ভালপণী জী একভাল নেক ই ডি कोषतः । खाद कमार।वित्रः

**जान**भूत्रक॰ ङ्गी भुरभोखत्रीकः। ्इं जिम्बद्गावनी॥

**छान**ञ्ञ् शू॰ वनास्यः। ইতি ত্রিকাওশেষ:॥

**खानभूनद•** क्री जानकरे। यथा। তথা ভালপুলয়ক কক কত ৰুজাপহ। ইতি রাজবল্লভঃ॥ ভালমূলিক। खी তালমূলী। ইত্যমরঃ॥

তালমূলী জী স্বনাম্থ্যাত বৃক্ষঃ। তৎপৰ্য্যায়ঃ। অর্শোদ্মী ২ মুবলী ৩ তালী ৪ খলিনী৫। ইতি রত্নমালা।। সুবহা৫ তালপত্রিকা ৬গোধাপদী १ (रुमगुद्री ४ ज्ञानी २ मोघ-কন্দিকা ১০। অস্যা গুণা:। মধুরত্ব । শীতত্ব। ব্লুব্যত্ব। পৃষ্ঠি বৰা কফ शुरुष । 🛊 🖟 विष् । शिख राष्ट् नुगर्भ ए क्र दाजनिर्घणेः॥ जिक्के न पाकके । छन्ज (दा-गा 🖟 विकन्न स्वयः॥ 🐪 देखि ভाव-शुका क्षेत्री भगविष्वेषा (भाका খেতা কুন্দু: 🛚 ৃখতা স্বল্প গুণাপে সু॰ রসবিশেষায়নী।। ভালিক: পু॰ পুসারিতাঙ্গুলি গাণিঃ ইতির ভাষা। স

स्यान्तः॥

তালবৃত্ত• ল্লী ব্যজন•। তালপাভার পাথা ইতি ভাষা। ইতি হেমচন্দুঃ ॥ তস্য বাযুগুণঃ। ত্রিদোব **শমনত্ব**• । ব্যুত্বক। ইতি রাজবল্পভঃ॥ তালব্সক। ক্লী ব্যজন। ইত্যমর:॥ তालवहनकः शू॰ नहेः। ইতি मद-রত্বাবলী। তালরেচনকোপি পাঠ: তালব্য• ত্রি ভালুজাত•। ইভি ব্যাকরণ।।

তালক্ষীরক• ক্লী তালসম্ভূতত্ব-• कीत्र•। ইতি রাজনির্ঘণীঃ॥

তালাখ্যা ত্রী মুরা। ইতি **শদ**-**म्हिका**॥

তालाकः भू• वलाप्यः। ইত্যমরः ॥कत्रभवः॥ माकत्छमः॥ महा वक्त जम्मूर्ग भूकवः॥ भूखकः॥ र्वः। ইতি (र्नहन्तः॥

তালাবচর: गु॰ निः। ইঙি ত্রিকাণ্ডশেব:॥

তानिः बी ज्नामनकी। ইতি রত্বমালা॥ তালী৷ ইত্যমর টীকাষা• ভয়তঃ ॥

া তৎ পর্য্যায়:। চপেটঃ২ পুতল: ৩ তाननम् ने हाट जवि . । इति । जनः ८ शुरुतः ৫ जानः ७। ইति হেমচন্দু:।। লিথিতস্য নিৰন্ধন• । তৎপৰ্য্যায়:।কাচনী ২ কাচনকী ৩। ইতি শদ্যব্যাবলী।।

তালিকা জ্রী চপেটঃ। তালমূলী। ইতি শব্দগুণবলী। তানুবলী। ইতি রাজনিষ্টঃ।।

তালিত শ্লী তুলিতপটঃ ॥ বাদ্য ভাগু•॥ শুণঃ। ইত্যন্তবঃ॥

তালিশ: পু• পর্বত:।ইত্যাদি-কোবঃ।।

जानी जी जाजी। जाजियार इंडि
जारा।। जामनकी। जूरुँ जामना
इंडि जारा। इंडिम्प्रद्वावनी।। जानम्नी
। इंडिम्प्रद्वावनी।। जानम्नी
। इंडिम्प्रद्वावनी।। शुंडिडानी।
कुक्षिकाविष्मरः। इंडि स्मिष्टमुः॥
जामुबन्नी। इंडि ताननिर्वाणेः॥
मूत्राल्मरः। जाजी इंडि जारा।।
इंडिम्हिः।।

তালীপত্ৰ• ক্লী তালীশপত্ৰ•। ইতি বাজনিৰ্ঘটাঃ।

তালীশ প্লী তালীশপত্র । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

ভালীশপত্র• ক্লী বৃক্ষবিশেষঃ। ভিত্পর্য্যায়ঃ।ভালীশ•২ পত্রাখ্য• ৩ শুকোদর• ৪ ধাত্রীপত্র• ৫ व्यर्कत्थः ७ कतिशवः १ कति हरः ।

५ नीवः २ नीवाष्ट्रः २० छ।वः २२ छ।व्यरः २५ छ।व्यरः २५ छ।व्यरः २५ छ।व्यरः २५ छ।व्यरः १४ छ।व्यरः १४ छ।व्यरः १४ छ। व्यरः छ।। व्यरः । व्यरः व्याप्टः । व्यरः व्याप्टः । व्यरः । व

जान की जिस्लिन्या विश्वानः। यथा।
म्थ ज छान निर्जितः जिस्वा ज्ञानजाय छ। ज छान नामा द्रामा जा छ।
जिस्वा। या विश्व मार्थ छ।। इति
ज्ञिजागव जः। छ लगा इति हो। इति हो। का का विश्व मार्थ का विश्व मार्य का विश्व मार्थ का विश्व मार्य का विश्व मार्य का विश्व मार्थ का विश्व मार्य का व

তালুনিজঃ পুশপাহিত মুন্ত ইতি। হেমচন্দুঃ।ধহ ব্ৰস্ত সংগ্ৰাস

जान्तः शुभा धक्ठानः हस्य-हन्दुः॥ शामि विश्व खाः

ভावकीन विভालक धुव इतीय। ভোমার একভাল নে । ইভি ব্যাকরণ বিৎ ক্যাৎ। ভाবৎ व्य माक्नारः॥ व्यविः॥ मानः॥ व्यवधादगः। ইভ্যমतः॥ भूभःमा॥ भक्तास्तः। ইভি व्यय-त्रज्ञावनी॥

তাবর ক্রী ধনুর্ত্ণ:। ইতি ভূরি-পুষোগং॥

जावियः श्रु वर्गः॥ ममूपुः। इंडि निकासकोमून्यां मूर्गान वृद्धिः॥ जावियो जो हेन्युकन्या ॥ नहीं॥

भृथिवी । ইতি निषाञ्चकीमून्छा-मूनाहिन् डिः॥

खंबीयः भू॰ यर्गः ॥ खमूरिः॥ काक्षनः। ইভিমেদিনী॥

ज्ञिषी जी जन्मुकन्त । इंडि स्मिनि ॥

তাবুরিঃ পু• ব্ররাশিঃ । ইতি দীপিকা॥

তিক 'ঝ ড পত্যা•। ইতি কবিকল্প-ফমং॥

ত্তিক ন আন্ধনে। বৰে। ইতি কবিকল্লফমঃ॥

ভিক্ত ক্লী পগটিকৌষধি: । ইতি হেন্চন্দু: ।।

তিক: পু॰ রসবিশেষ: । তিত ইতি ভাষা । স বাহাকাশ গুণ বাহ্দ্যাৎ ভবতি । ইতি শিব- हातः ॥ उत्र स्थाः । वह वहं

ब्रार्कि कात्र हार नामिष्ण (त्राष्टनष्ण । ইতি त्राव्य निर्यण्टः ॥ मीठपुणः ।

क्रम स्र्रा शिख क्रम विराय (त्रम्भ त्रक्षण नामिष्ण । स्यमत्राष्टिकृष्णः ।

क्रम नामिष्ण । स्यमत्राष्टिकृष्णः ।

क्रम प्रात्र (माधनष्ण वाठवष्णः ।

क्रम प्रात्र । नामात्मावण्यः ।

क्रम प्रात्र । विकार महा विकार ।

क्रम प्राप्त । विकार महा विकार ।

क्रम प्रात्र । विकार महाना ।।

क्रित्र मण्यावा ।।

क्रित्र मण्यावा ।।

क्रित्र मण्यावा ।।

ভিক্তকঃ পৃ॰ পটোলঃ। ইত্যমরঃ
।। চিরতিকঃ। চিরতা ইতি ভাষা।
ইতি শদ্রত্বাবলী ।। কৃষ্ণাদিরঃ।
ইতি শদ্মালা ।। ইফুদীকৃকঃ।
ইতি ভাবপুকাশঃ।।

তিক্তকন্দিক। দ্বী গদ্ধানা।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

তিককা জী কটুতুথী। ইতি শ্দ রন্নাবলী।। তিক্তপদ্ধিকা জী ব্যাহকারা। ইতি

्रे म्**न्याना ॥** 

जिक्छक्षा धी क्रह्मः । **७**८ ॥ भर्यायः । कृपुत्रमा २ त्रम्या ० विष्म शक् ही 8। इंडि श्रादारणी॥ তিভতওুলা দ্রী পিপ্নদী। ইভি व्राजनिर्घ छै:॥ **ভিক্তৃ** श्रे जो कर्तृ जू श्रीन छ।। ই ভি ज्ञाकिनिर्घणेः॥ ভিকত্মী জী কটুতুমী। ইভি রত্ন-याला ॥ **िक** पृथा जी की ति ी।। व्यवस्थी। इंडि ब्राजनिर्घणेः॥ ত্তিভগাতুঃ পু• পিত্ত•।ইতি রাজ-निर्घ केः 🛚 ভিক্তগত্র: পু· কর্কেট্ক: ৷ কাকরে ছাল ইতি ভাবা। ইতি হেনচন্দুঃ॥ ি ভিক্তপৰ্। পু• দুৰ্ব। ইতি জটাধ্রঃ॥ हिन्दानी ॥ ७५० ॥ यष्टिमधू। ইতি মেদিনী॥ ভিক্তপুর। জ্রী পাঠা। ইভিরাজ-निर्घ छै:॥ তিভকল: ় পু॰ কতকব্দঃ। ইতি वाजनि। किः॥

তিক্তৃপা নী যবতিকালতা।।

विवारिः॥

वार्ड् दी।। वर्ड्जा। ইতি রাজ-

जिक्छमुकः शुः शाष्ट्रावः। इन्ति

**णक्**5न्मिका॥ তিক্রবিচঃ পু॰ কতকবৃক্ষ:। ইতি त्राञ्जनिश्यः।। ভিক্রেহিণিক। জী কটুকা। ইভি बब्दाना ॥ ্বিক্রেছিণী স্ত্রী কটুকা। ইতি: त्राक्रिविंग्डेः॥ তিজবল্লী জী মূর্বালতা। ইভি व्यव्याना ॥ তিকবীজা জ্লী कर्रेज्यी । इंडि ब्राजनियं छैः॥ **डिक्ज्याकः पू॰ थ**ितत्रवृक्तः॥ द्यान व्कः ॥ भवमून्दत्कः । इंडि (मिषिनी।। जिकनात क्ली मीर्घाताहियकज्गः। इंভि ताबनियंगः॥ ভিক্তসার: পু• খদিরবৃক্ষ:। ইভি ब्रङ्गाना॥ **जिका द्यी क**र्द्रप्राहिगी । हेजि त्मिक्नो॥ भाठे।। ইতি রব্দাল।। য্বভিক্তালভা ॥ যড্ভুজা । ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ছিকুনী। ইতি ভাব-প্কাশঃ।। ভিক্তাখ্যা স্ত্রী কটুভূপী। ইভি রাজনিঘণ্ট:॥

े जाका की भाजानगरू जीनजा।

ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

তিজিকা জী কটুতুবী।ইতিশব

রুতাবলী॥

তিগ ন হি•সাযা•॥ আফলে।ইতি
ক্রিকল্লন:॥

তিশা নী ভীক্ষ । খর ।। তদ্বতি বি । ইত্যমর: ॥ তিশা শুং পু স্ব্যঃ হৈতি হলাবুধ:॥

তিঘ ন ঘাতনে।ইতি কবিকল্পদ্মঃ।। ভিন্ন ক ভিন্দীকরণে।ইতি কবি-কল্পদ্মঃ।।

তিক ড ক্লাভৌ। নিশানে। ইতি কবিকল্পফন:।।

তিজিল: পু॰ চন্দু:। ইভূগোদিকোষ: ।। রাফস:। ইঙি সংক্ষিপ্তসারে উণাদিব্ভিঃ।।

তিটো স্ত্রী ভ্রিব্ । ইতি শব্দ চিন্দুকা।।
তিওঁট: 'পু চালনী । ইত্যমর:।!
তিতিভ: পু ইন্দুগোপকটি:। ইতি
হেমচন্দু:।।

- छिडिन• क्षी नन्सक•। नामा ইखि ভाষा ॥ छिडिनकद्रग•॥ छिन-निष्ठंछै•। ইঙ্গক্ষयः॥

তিতিক। স্ত্রী ক্ষান্তিঃ।ইত্যন্রঃ॥ শীতোফাদি ধন্দ্ সহিষ্ণুতা।ইতি বেদান্তসারঃ॥ जिजिक्काः विकासः। **देखि** बहेषद्रः॥

তিতিজ্: বি ক্ষমাশীলঃ। কাস্ত:। ইত্যমর:॥

जिलियः भू जिलियिभकी। **रै**जि भद्यकावनी॥

जिखितिः शृ शिक्य विषयः। जिखितः
इति जाया। जिल्म श्रीयः। जिखितः
२। इति मदत्र श्रावणी ।। जिजितः
२। इति मदत्र श्रोवणी ।। जिजितः
२। देति मदत्र श्रोवणी ।। जिजितः
२। देति अश्रीय विषयः। विष्युः। विषयः। विष्युः। विषयः। विषयः। विषयः। विषयः। विषयः।। विषयः।। विषयः।। विषयः।। विषयः।। विषयः।।

ভিথঃ পু॰ আন্ন:॥ কাম:। ইভি
সিদ্ধান্তকৌমুদ্যা মুণাদি বৃত্তি:॥
কাল:। ইভি ত্রিকাগুশেব:॥
পুরেট্কাল:। ইভি সংক্ষিপ্তসারে
উণাদিবৃত্তি:॥

তিথি: ত্রী পু॰ চন্দুকলাক্রিই ক্রপা।
চন্দুকলা ক্রিযোপলাই ক্রীন
ইতিবা। তদ্যাঃ স্বৰূপ-ইন্টা
অনাদি পৌণনাদ্যভা যা এব
ক্রিশিনঃ ক্লাঃ। তিথ্য তাঃ স্না

থ্যাতা: বোডলৈব বরাননে ।। ভত্র পূথম কলা কিষা ৰূপা পূতিপং वर दिडीयारि कना किया क्रा षिञीयामिः। जाठ वृष्टिक्ला हि শুলা হ্ৰাস ৰূপা চেৎকৃষ্ণ। যথা। তত্ৰ পকা বুভৌ মাসে শুক্ল ক্ঞ জনেণ रि। जन्म वृक्षिकतः मृहः क्ष महन्तु क्रयाञ्चकः॥ अक्रडाम्रास्त्र छिथयः कमार भक्षमण मृजाः। मर्गाष्ठाः কৃষণক্ষে তাঃ প্রিমান্তাশ্চ শুরুকে ॥ 🛊॥ (गाजिलाकामावाम्या यहेक উপর্যুগো ভাবাপন সমসূত্র পাত 'न्रारयन द्रार्ण्यका वरहरमन सर्वाव इन युकाकं मधनाइन् मधनमा दानि দ্বাদশাংশ দ্বাদশাংশ ভোগাত্মক নিৰ্গমৰূপ বিয়োগেন শুল্লাযাঃ পুতি भारामि छउ८ डिखिक्ट शिवः। अवः গোভিলোক্ত পৌর্ণনাসী ঘটক সপ্তম রাশ্যবস্থান ৰূপ পরম নিযোগান-खत्रमक्म ७ व भू (व भा यह सुम ७ व म) রাশি হ্রেশা•শ দ্বাদশা•শ ভোগা-जा क श्रीविण क्षा मिकर्य न क्षाया ু শ্ৰন্থ কৈ প্ৰতি। যথা। कुर्नाविनिः मृडः शाही । यद्वाछाइ तर्शनगी। जोरेग द्वामना उट् न्। जिथिकानुगमः दिनः।। जिः लाः

শকতথারাশেভাগে ইত্যভিধীয়তে। णारि ग्राहि शुक्षेत्र जाग हार नक यन। চন্দ্রমাঃ স্যান্তদারাম তিথি রিত্যভিধীয়<del>তে।।#॥ সাদেবকৃত্</del>যে প্রায় যুতা গুছো। একাদশ্যুপ-বাসাতিরিক ছলে সর্বত্ত ত্রিসন্ধা व्याभिनी गुण्या।। 🕸 ॥ व्यथमुजिभद । সাচ কৃষ্ণা দ্বি ঠীয়া যুতা গুৰু। শুক্লা অমাবস্যাযু ভাগু ছাক্ফাপু পেবাসে দিতীয়া যুকা নগাুছা। অত্র তৈলা-**७१वः** क्या। ७७का, कात्रक न कार्ये ।। 🛪 ।। जय विठीया। जाह ক্ষা পূর্বযুতা শুল্লা পরযুতা গুঞ্ছা। ভ্ৰুত্দিতীযাতু অপ্তথাবিভক্ত দিন পঞ্জाः म गुजा शाका उंख्यिति তল্লাভে পরযুতা গ্রাহা। তত্র বৃহতী **७क्र १ - कार्या ।। \$11 अथ वृ**ठीया । সাচ রম্ভা বুতেতর দেব কার্য্যের চতুথী বুভা গুছো। রম্ভাবুতে ভু দ্বিজ্ঞীয়া যুতা। তত্র মাংস ভক্ষণ शरोन ७क१७ न कार्याः ॥ कः॥ অথ চতুথী । সাচ পঞ্মীযুতাগুছে। । विनायक वृत्छ ज्ञीया यूजा भुाका। मक्वरात मूझ हजूबी चक्या। অত্র সূত্রক ভক্ষণ ক্লৌরণ পুদোষে व्यथ्यनकः न कार्यः । ভाषुमात्र

हजूर्थाः हत्सु। न मुश्चेदाः । भुनामा- " फ्ट्रे। ति·इ: भुरत्रन मदक्षेट नि·रहा জামবতা হতঃ। সুকুমারক না রোদী खव एक् न मामञ्जूकः ॥ जानन मास्य-ণাভিমন্ত্রিত জল পেয় আচারাং माम्बद्धानान्यान्य **ल्या**उद्यनाङ्गा অথ পঞ্মী। সাচ চতুথী যুতা পাহা। অত্র বিশু ন ভোকব্য ।। 🕸।। व्यय बंधे। मा(मधमी युङा गु। श्राहा। क्रमावशी ज भक्षमी यूजागुर्गा व्यम्। শিরোভ্যকো নিম্ব ভক্ষণঞ্চ ন क खंदा । ॥ ॥ जाव मधमी। मा ষ্ঠী যুতা পুাহা। তক্ৰ ভালা न **७क्राय** । मूह्नशक्ता मुख्याः यि द्रविवादा ज्याद ना विश्वान मध्यो। याच्यामकः भूतामधमाः **मिवाकद्रा द्रथ मानूः छ्याट गा** - द्रथमधनी । जा स्वाहिक्ट। **उन**्रा॰ व्यक्ष्यन न कर्डवा ॥ 🕸 ॥ व्यश्वकी । मः भूजा नवबीयुका शुश्चा कृषा मक्षभीयूजा। जनाबायन नातित्कन ভক্ষণঞ্চন কর্ত্তব্যণ শনিবারে অথবা महनदाद क्षाध्मी भूग्जना। वृङ्ग्णि विवादत मूद्राष्ट्रेमी व्यक्षया। , मूर्वा डेभी প्वं विका गु। श्राधिभी बावज्ञा एह्राच मुहेवा।। 🗱 ॥ व्यथ 📗

नवनी। ना ठाडेनी यूजा गुष्का ভত্রালাবু ভক্ষণ ন কর্ত্তব্যণ মাঘস্য भूजा नवनी महानन्तर । द्रामनवनी व्यवहा उद्दर्भ मुद्रेव्या ॥ 🕸 ॥ व्यय मन्त्री। नाह मुङ्गा अकामन्त्रा क्याजू नवम् । युजा गुाञ्चा । या कन्मी **७क्न** न कर्डवर ॥ 🕸 ॥ ७काम्मी व्यवहा अवित्काः नयन व्यवहा ह **छडह्र पृष्ठे**वता ॥ # ॥ व्यथ हाम मी । माठ बकामनी युजा गुाञ्चा। अब পৃতিকা ভক্ষণ-ন কর্ত্তব্য । কালুনস্য **मू**ङ्गा द्वाप्तभी शूष्ठा नक्कज्यायुका (हर (गाविनरहान्भी।।क्ष।। व्यवहरगान्भी । সাচ শুক্লাদাদশী যুতা কৃষণ পর্যুতা গাুছা। অত্ৰ বাৰ্ত্তাকী ভক্ষণ ন कर्खवाः । श्रा व्यथहजूकं नी ना भूका भृिनायुजा क्का बर्यामणी युजा পা্ছা। তত্রমাধােন ভাক্তব্য**াল্যে**ষ্ঠ क्षा ठठूर्म गा। भुरमास नाविकी नुष्ठ॰ कर्डवार । जब यहा बरवाह भी দিবাভাগে দণ্ডদ্ব নাত্র সন্ত্রেপি চতুৰ্দ্দশী ভৰেৎ ওদ্দিনে ব্ৰত• কর্তব্য । পূর্বাহে ত্রিপ্রি পুরাহে ত্রিসন্ধ্যব্যাপিত্বে পরাধুপুর। यह ত প্রাপর্যে। नं उथाविधा केनानि পরাহ এব 🕕 ভাদে মাসি কৃষ্ণা

**इज्**ली अत्यादा । गारवक्षा ष्ठवूर्णी बर्वे ।। भिवदानि वावशा उहार मुश्चेगा।। 🛊 ॥ वाथ (भोगंनानी । छब मान्तर न ভোকব্য॰। माठ ठजुम्ह नी यूजा शुक्षा मानु मानक गूना (हर उत्। मर्जी। कोर्डिक गाम क्डिका. নক্ষৰ যুতা পৌৰ্মানী মহা-कार्डिको अवसम्यवाणि । महा-रिकाकी वावका जहाय मुक्षेवा॥ काञागत्र वाव इ। उहरद पुष्टेद्या ॥ श्रा वयानावन्।। व्यव माःमः ন ভোকব্য । সা পুতিপদ্বুতা गु। गक्षा । यक्ष वदादि यहि ज्यावन्ता ভবেৎ छना गक्लान्य मात्रज् भोनी ভূदा वा गकाया नायाट স সহসুগোদান জন্য ফল দাপু -वारः। जनावाना। मान्त वावङ्। भुष्यमञ्जू पृष्ठेवता। (भोष नाष्या ज्ञगावाम्। यमि मिवा अविवास ব্যতীপাত শুবণ নক্ষর যুক্তা ভবতি চিদা অর্জোন্য যোগঃ স্যানী অযু
কোটি স্যা গুছ े जिंता है पर्वे जावब्बन गर्शाहक च्डीर<sup>े</sup> यटकिकिमान (मङ् পৰিভঞ্চ ভৰতি। ইতি তিথ্যাদি-

ज्यः ॥ जिथिक्जाः नाम भएर मुद्धेवाः।।
जिथिभूगीः भू॰ हन्मुः। ইजि क्यः।
हिथिभूगीः भू॰ जियावमा। ইजि
मदार्थकन्नज्यः॥
जिथी स्त्री जिथिः। ইजि ज्यञः॥
जिनामकः भू॰ जिनिभव्कः। ইजि
भिम्यज्ञावनी॥

जिनिणः शृ वृक्षितिण्या मणुता-(मोजिनाण हें जि था जिला प्रजित्य मामन हें जि था जण्णा छट भर्या यः । मामनः २ मिनी ० तथ्यः ८ णिक्रमुक्तः ६ वञ्चनः ७ विजक्ट १। हें छानतः ॥ विकी ४ मण्णाकः २ मक्षेः २० तथः २२ तथिकः २२ जमाण्डः २० मिनी २८ जनवतः २६ । यमा छाः । कशायतः । हेक्यः । कक त्रकाजीमात्र वाजानय नामि-प् । गुर्कप् । मार् जनक्य्यः। हें जित्राजनिर्घणेः ॥

जिडिजः शृ हिक्षा ॥ वृक्षायः ।
ंजि विश्वः॥ देनजाज्ञः । इजि

रङ्गहन्द्रः ॥
जिडिजिका जी जिडिजी । इकि

ंশक्रश्रावणी॥

তিন্মুক

তিভিডী জী বৃক্বিশেষঃ। তেঁতুন্ इंडि छ वा। उट्भर्यायः । विका ২ অ'দ্নকাত।ইত্যমর:॥ভিস্তিডী-कः ८ छिडि छोकः 🖎 ५ डि छि जोका ७ অন্নীকা ৭ আন্নিকা ৮ আন্নীকা ১। ইন্তি ভটীকা ॥ প্তিম্ভিনী ১০ ভিম্বিডিকা ১১ আদ্দিকা ১২ চুকু: ১০ চুকা ১৪ চুকিৰ্কা ১৫ অন্না ১৬ অভ্যা ১৭ ভূকা ১৮ ভূকিকা ১৯ চারিত্রা ২০ গুরুপত্রা ২১ গিছিলা २२ यगमृजिका २०। ইंजि मफ-রত্নাবলী।। শাকচুক্রিকা ২৪ সূদু- " अञ्चिष्ठोन् एउ॰ ही চুঞ্রী। कॅं।ইবীচিন্ন ক্রিকা ২৫ সু ভিন্তিডা ২৬। অস্যা আম কল্স্য গুণাঃ৷ অভ্যান্ন ৷ কক্ পিত্ত কারিবৃঞ্। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।। বাতনাশিত্ব।। অস্যা: পাঃ ফলস্য खनाः। मीशनद्रः। क्रिकारिदः। **ं रिप्तः ।** डेक्प्नः । करू वाड नामिद्रकः। ইতি রাজবল্লভঃ॥ विश्वेष्ठ नामिव्। मध्यान्नवः। शिक माञाजु करण्याय शुक्ताभगद्य ॥ পङ्ठिकाकनत्रमङ्गाः। मध्त्रासूद्रः। ৰুচিপুদৰ্। শোফ পাক করব। (नार युग्रमाय नामिवृक्ष ॥ अन्।ः পত্রস্য ওগঃ:শোদ রক্তদোৰ ব্যথা नानिवः॥ वन्धाः मृत् वक्कात्रम्

खनः। म्व मन्तायि नानिष्-। ই ভि त्राजनिर्घण्डः ॥ यन्निकायाः कलः পঞ্- মৰ্দ্দি ত বারিণা দৃচ ৷ শর্করা মরিচোমি শু•লবকে ন্দু সুবাসিত গা অদ্লিকা ফল সমূত পানক হাত নাশন । পিত্ত স্লেফাকর কিঞ্চিৎ সুৰুচ্য বহ্নিবোধক।। ইতি ভাব-পুकानः॥ वृक्तानः। ইতি विश्वः॥ তিন্তিডীক শ্লী বৃক্ষার। ইত্যমর:॥ ভিভিডীকঃ ত্রি ভিভিডী। ইত্যমুর-**होकाया**• **७**त्र**डः** ॥ থেলা ইতি ভাষা। ইতি শদ-बङ्गावली ॥ তিন্তিলিক। জ্রী তিন্তিডী। ইত্যমর-होका॥ তিত্তিলী জী তিভিডী।ইতি শন্-त्रवावनी ॥ তিরিলীকা ভী তিন্তিড়ী।ইত্যমর-<u> छोका ॥</u> जिन्तिनः गुः हि खिनव्कशा है जि রাজনির্ঘণ্টঃ॥ जिन्दः भू• जिन्द्रकर्कः । कु

नमत्रज्ञावनी ॥

বৈদ্যক পরিভাষা॥

তিন্দুক ল্লী কর্ষপরিমাণ। ইতি

তিমির

जिन्मूकः भू जी वृक्वविष्णवः। गाव् ইতি খ্যাতঃ। ইত্যমর টীকা-नात्रमूनरती।। (कन्मूकवृकः। इंडि ভরত: ॥ ভেঁদুইতি ভাষা। ইতি त्राकनिर्घण्डः ॥ उर्भग्रायः । সুর্জক: ২ কালস্বদ্ধ: ৩ শিত্তি-नांत्रकः ८। ইত্যমतः ॥ सूर्वकः ৫ কেন্দু: ৬ তিন্দু: ৭ তিন্দুল: ৮ ভিন্দুকি: ৯ ভিন্দুকী ১০। ইতি **अ**पत्रज्ञाबनी ॥ नीनमात्रः ১১ অতি-गुरुकः ১२ सर्यकः ১৩ রামণः **38 द्वर्जनः ३६ म्यन्स**नाञ्चयः ३५ কালসারঃ ১৭। অস্য আম ফলস্য खनाः।कषायदः। गुाहिद्ः। वाउ कात्रिवः। भी उनवः। नगुव्यः। পকৃফলস্য গুণাঃ । মধুরত্ব• । तिथाव । पूर्वत्रव । त्याप्तव । ভক্র-। বুণ বাত নাশির-। পিত্ত পুমেহাসু কারিত্ব• । বিষদত্বঞ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।। পিত্ত পুনেহাসু শ্লেয় নাশিত্ব•। ইতি ভাবপুকাশঃ । তৎসার চির রোগ জিৎ।। <sup>कृ</sup>विश्विजमूक भाषाय विश्विष् পুঁহি শীতল। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ अमूकिः की जिन्मूकः। **३**जि मन् ब्रङ्गावनी॥

जिमुकिमी श्री वावर्सकी। ইजि त्राजनिर्घणः॥ তিন্দুকী জী ভিন্দুক:।ইভি শহ-बदादनी। जिन्मूनः र्भू जिन्मूकत्रमः। ইতি मद्भवद्गादजी ॥ তিপ উ ড্ৰা রঙ্গণাইতি কবি-कन्नक्रमः ॥ १ ভিম 🙍 ক্লেদ্ৰে। আদুভাব ইতি यावट् । इंडि कनिक्इसमः॥ जिम य (कूम्राम) ইजिकविकल्लक्ष्यशा তিমিঃ জ্রী মং ন্যবিশেষঃ ইত্যমরঃ ॥ চিলি মহিকাযোল শেস্য ক্লিৎ 'সামুদুঃ। তথাচ। অন্তি নৎস্য खिमिनाम भेटावाकन विखद्रः। ইতি ভরত: ॥ সনুদুঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ তিगिकायः भू नम्मूः। इंडि ত্রিকাপ্তশেষ:॥ जिनिक्निः भू मर्म्। विस्मयः। তিমি•গিরতি য:। ইত্যমর:॥ जिमिक्तिना शु· महाम< माः ৰিশেষ:।ইতি হেমচন্দু:।। তিমিত: ত্রি নিশ্চল:। ইতি ধরণী ॥ ক্লিমঃ। ইত্যমরঃ॥

তিনির॰ লী অন্ধকারঃ। ইত্যমরঃ

।। (न व রোগবিশেষ:। তদ্য লক্ষণयथा। তিনিরাখ্য: দবৈদোষ শ্চতুর্থপটল- গতঃ। কণ জি সর্বতো দৃষ্টিলিক্ষ নাশ নতঃ পর-। ইতি
নাধ্বকর:।।
নির্রিপুঃ শু- সূর্য্য: । ইতি

তিমিররিপুঃ পু• । ইতি হলাযুবঃ।।

जिनयः शु श्रमाक्क हो। ইजि जिका अरमयः । नाहामुः। ইजि स्वावनी।।

তিনী ভ্রী তিনিমৎস্য: । ইতি দিকপকোশ:॥

তিরং ব্য প্রস্থান । তির্যুগর্থঃ।
ইত্যনরং ।। তির্কারং । ইতি
ভটীকাষা সামী॥

ित्रणी खी शशुशकिखी। माम।

हैं जिज्ञान। है जि मुक्तानावः।।

जित्रकृतिभी खी गुत्रनावकशिः।

कान। ६ है जिज्ञाना है जुन्नतः।।

कित्रकातः का समामतः। है जिल्ला

, তির্কারঃ পু• অনাদর: । ইতি হলাগুৰঃ।।

তিরক্ষারিণী জী তিরক্ষরিণী। ইত্যমরটাকাষা নীলকণ্ঠঃ॥

তিরফ্তঃ ত্রি আনাদ্তঃ। কৃত্তিরআরঃ। যথা। অবিব্যক্তি বাচ্চো
ব্রুত্র বাচ্য- ভবেদ্ধনী। অথাভরে

সংক্রমিত মত্যুত্র তিরক্ । ইতি কাব্যপুকাশঃ॥ তিরসুিবা দ্বী অনাদরঃ। তিরকারঃ। ইত্যমরঃ॥

তিরিটিঃ পু॰ ইক্ষুণুছিং । ইভি শন্মালা॥

তিরিমঃ পু॰ শালিভেদঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

তিরিয়ং পু॰ শালিবিশেষঃ। অস্ত গুণাং। নধুরত্বং। নিপাত্বং। শীত-গড়াং। দাছ পিক্ত সর্বাময় নাশিত্বং। । ত্রিদোব শাননত্বং। ক্চত্রাং। পথ্যত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘটিং।। । তিরীটং ক্লী কিরীটং। ইত্যুণাদি-কোবং।।

ভরতি: পু• লোখঃ। ইত্যমরঃ॥ ভিরোধান• ক্লী অন্তর্জান•। ইত্য-মরঃ॥

তিরোহিতঃ ত্রি অন্তর্হিতঃ।আছা-দিতঃ।ইত্যমরঃ॥

ियार्क् वा वकुः। उट् भर्यायः।
भावि २ जिद्धः २ । ईज्यादः॥
जिद्धाः १ विक् कार्यः १ द्वि विक

विर्याक्त्याकाः भू शणुशकंतिः। ज वुक्ताशक्ष्वाःमर्यः। यशेविः भ-

विषः। यथा। जिज्ञकान्द्रेयः मर्गः॥ সোষ্টাবি•শ্বিধো মতঃ। তেষা• वक्रभग्वया। विदिक्ता ভূৱিভম্নো ঘুণেলা হাদ্যবেদিনা।ইতিঞ্জীভাগ-ব**ড** ॥ তিল্ল চা তিল্যক্ষোত্সা । अविषः अञ्चलि छानम्नाः। ভূরি তন্সঃ আহারাদি নাত্র নিঙাঃ ! युगका यार्गरेनय इक्षेत्रर्थ जानिष्ठ । क्षि अव्दिश्नः शीर्यानुनक्षान यागी ॥ अक्षेति मिं ( उमा यथा । (भोद्राक्षा महिषः कृषः भूकादा গৰযো কৰাঃ দ্বিশকাঃপশৰণেচনে অবি ক্ট্রশ্চ সভন।। খরে। ংখে। হুশ্বতরো গৌরঃ শরভ শ্চনরী তথা । এতে हिक्नकः कवः मृगू नक नधान् शण्न्।। या ण्गाला व्का न्यास्या गार्डादः मम मन्याको। नि· इः किन गंजः कृत्या (गाधा D मक्त्रापयः ॥ **कक्ष गृधु** दक् म्हान ভাস জলুক বহিণঃ। হ•স সারস विकास कारकाल्कामयः थणाः॥ 'হক্টি ভাগবত।। গৰাদ্য উষ্ট্ৰা-सः विभका विश्वा नव । थतानय क्रमगुडा এक भकाः वहे। श्वान्रया (गावाडाः गक्नथा चारम। এতে

ভ্ররা: मध्वि मिजि:। মকরাদযো জলচরাঃ কল্কান্যঃ খগাঃ অভূচর-স্থেনিকীকৃত্য গৃহীতা এব নপ্তাবি•-**म**ि छिनान/वस्ति। यान्यवास्ति ভিৰ্য্যক্ পুৰ্ণিনা যথাৰথ **মেতে**-ম্বন্তভাৰ: 14 ইতি ভট্টাকাষা• वीषत्रश्रामी !!

ত্রশ্রানঃ পু• কুলীরঃ৷ ইতি বিকাও-(भाषः ॥

শূन्याः। इंडि उड़ीकायाः धीधत विर्माहः । इंडि নে হিনী। পশুঃ। ইতি হেমচন্দুঃ। वक्रणायी। ইতি मस्त्रज्ञावनी॥ ত্রী তিরশ্চী। জ্রীপশু शक्रापिः। इंडि मुख्रावाध-॥ ভিল । গভৌ।ইতি ক্ৰিক্লুজনঃ॥ जिन न तिहि। इंजि कविकन्नकमः॥ जिन क दिल्। ইजिकविक्नुक्रमः॥ जिनः भु· चनानथ्याजमग्र·। छट् পर्यग्रयः। (शमदान्गः २ भविवः ७ পিত্তপ্ন: ৪ পাপন্ন: ৫ পৃত্যান্য ৬। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।। সুেহকলঃ ৭ সেহক গপুরক নঃ ৮। অস্যতণাঃ । রসে কটুত্ব•। তিকত্ব•। মধুনত্ব• । তুররত্বণ গুৰুত্বণ বিপাকে কটুত্ব• यानुषु । जिस्सव । डैकव । कक পিত কারিত্ব। বল্যত্ব। কেশ

**इडिड् । इन्यामंद् । उन्द्र ।** . खन्। वृत्व हिञ्जुः । प्रस्तुन्। অলুমূত্র কারিজ্ণ গুণাহিজ্ণ বাত-য়ৃত্ব•। অগ্নিলভি দুদত্বংখ। ইতি **ভा**रशुकाणः ॥ वर्गकातिष्यः ॥ 🕸 ॥ कृषः भथाज्यः निका श्लखानः क्रीनाः किलारन्। जिलाः। इंछि द्राज-निर्घणेः॥ जिलि । दृष्ः (गुंहजन ত্তেরু শুক্রলো মধ্যমঃসিতঃ। অন্যে হানভরাঃপোকা ডজে রক্তাদয खिनाः ॥ ইতি ভাবপুকाশः ॥॥॥ **उ**टेडनच्याः। यनदत्रुः। (कम्ऽ-ष्राग्युत्वः। ठिक्क्वः। क्वाग्वः উष्ण्य । जीक्ष्य । वन कातिष् । কফবাত ছন্ত থজ্জু বুণ কণ্ড্তি नानिव्। काहिएव्। वस्रज्ञ প্রান নস্য কর্ণাঞ্ছি প্রণেষ্ হিতত্ত্বক । इंভि दाक्रिकं छैः ॥ ठियका वकः । वथ।। (नवध्य भुगारिन ब्रिखार्भ ' মে মর্বতী। তেনাহ নৃপ জানানি ভान्मङा खिल यथा। इंडि काविमात्रः॥

ভিল'ক ক্লী ক্লোম ॥ ক্ষ্পবর্ণ-সৌবর্দ্ধণ। ইত্যমরঃ॥ সৌবর্দ্ধণ। ইভিমেদিনী॥

जिनकः शू· शूह्रवृक्षविष्मयः।

ज्र अर्थायः। विष्मवकः २ सूथ-নওনকঃ ৯ পুত্রুকঃ ৪ পুত্রুঃ ৫ ছির-পুন্নী ও ছিন্নকৃষ্ণ: ৭ দথাকৃষ্ণ: ৮ মৃত্রদীব: ৯ তক্ণীকটা**ফকাম: ১**০ वामस्मूनितः >> मूक्ष्यः >२ ভালবিভূষণস-জ্ঞ: ১৩ পুয়াগঃ ১৪ तिर्ठकः ४६ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ कृतकः १५ जीमान् ११ शृक्यः १४ ছত্রপুরক: ১৯।ইতি ভাবপুকাশঃ ।। অস্য গুণাঃ। পাকেকটুত্ব। বাত **शिख कक ना मिल्र । वन** शृष्टि सिपः कादिवः। ज्रम्पदः। वधुष्यः॥ जङ्गः श्रुभाः। कवायवुः । উक्क्षुः । शृ स्यु मस দোষ কৃমি শোক বুণ রক্তদোষ नानिष्का इंजि द्राजनिर्घकः॥ ॥ मद्रीत्र जिनः। जर्भयासः। जिनकानकः २ । ইভानतः ॥ कानकः ७ लिन्नः ८ बपूनः ८। **३७ (६२**५मु: ॥ 🕸 ॥ मकवकः ! ইতি রহ্মালা।। অশ্বভেদঃ।। রোগ (छपः। ইতি मिहिनी। (भवगा निमान नक्षा यथा। क्षानि छिन माजाणि नीक्षानि ममानि है। বাত পিত্ত কফোছেকাৎ তান্ विम्यां जिल्ला विकास ।। इंडि नाववकतः ॥ भुषान वि। हैकि

नानार्थ्यनिमञ्जदी।।

हन्स्ना दिना भू॰ क्ली ভিলক: जनागि हामभाष्ट्रक् क् उ विक् বিশেষঃ৷ তৎপর্য্যায়ঃ৷ ভনালপত্র•২ চিত্রক ওবিশেষক । ইত্যমরঃ॥ তন্য थात्र भुकात्रा यथा। घामभाव्य वनारे। दिनकः इतिमन्तिः। मानास्य रेनकवः कूर्यप्राट शुल्डाकः কৃঞ্নামভিঃ। বানে বক্ষসি নেত্রান্তে গণ্ডে ২০নে শহ্ব চিক্লিত। তথৈব मिक्ति कुर्य। प्रदिश्काकि के गूरन ।। अ।। बनाएं किन्व विष्ता कार्थ প্ৰিপুৰুষোভ্ৰম•। বান ৰাছৌ বানু-(एव॰ भरवर मास्मामत्रस्था।। नारकी नाजायगरेक्षव भाषत क्रमरा उथा। (गाविन्तः एक्टिए भार्ष्यं वात्व रेष्ठव जिविकम• ॥ विकु • मत्या कर्भात **एकित्य स्थूम्म । भि**द्धासद्यु হ্বীকেশ। পদ্মনাভঞ্চ পৃষ্ঠ ।। क्रब हां न मानानि गठिवा छिवा कानि जु। यः कूर्यारेष्ठकरवा निज्रः कार्भ्य जिल्लाभाष्यार ॥ अ॥ (य क्शे नम जूनमी छव काश्चमाना (य দানশাক হরিনান ক্তোর্ছ পুঞ্রাঃ। যে কৃষভক্তি সুদ্চ। ধৃত শহ্ব চকা। एउ दिक्षवा जूवन माणू शविवंय छि ॥

॥ 🕸 ॥ তিলক ভূর্নপুঞ্ছাথ্য 🗝 মধ্য हिनु क् नावम। यमि कूर्यप्राह्मनारि তहिरायः इदियमितः॥ **यानामा** মূলদাশিত্য শিরোমধ্যগত মূনে। क्तिशाराक्र नामाम्य मात्र छ। यत्र उः॥ इतिमिन्तित वट मर्ब॰ उना-ধাবলভীয়ক। আরাধাবলভীব॰ यखिनक भूगी नाइब ॥ योगन **ज**ङ्ग विरक्षपः शमि सप् मृत्रां स् उः॥ क्ष ।। यन्ष्यपृञ्जुः ভिजयः त्यास्य-তথ্নোহর । তথ্য পাত্রেগঞ धिननुष्यानुष्यः निनः ॥ छ। 🕮 রানোপাসনা যন্য ভিলম্ব তজু भुष्कुक । खुरवा निका निक्नाम कि विश्रु मानाइत ॥ 🕸 ॥ लातः नर्जा-ব্তারাণা॰ ন্ৎস্পাদীন নেবিশোষতঃ। উপাসকানা ভিলক কেব**ল ছ্**রি-मन्तितः ॥ ६ ॥ छेर्ष्वापुषुः विकः कुर्गाएक विशाना खेवन विना नान्छ ज्या विशुक्तुः (सर्वा अजाकृष्ठ- ॥ अ: णहिनु नृत्रिथुड (यकुर्वां छ कना ধনাঃ। ভেৰা• ঘলাটে সতত॰ শুনঃ भारता न मन्ययशाम् है। ভारत चिका-**डीनान**हिंदु नृत्तं शुक्षकः । कार्यः कृष्ण्य वि • कृष्त्र। दश्चिणा हा परयञ्च श • ॥ 🛊 ॥ वदावे म्किए। बुकावरम-

দাসে নহেশ্বর:।ন ে বিঞুর্বসেনিভ্য• || ख्याग्रधाः न (जगरय ।। क्षावर्ज्ज् नः जियं। गहिनु • शुम्र • नीर्य • छक • नजू। লক্ষণসংযুক্ত বিলক যদ্মিরর্থক ॥थनिब यशि कुक्ष जिल्ल मुकूता-क् इः । विशु अ विकिन्तु के विवकः यमित्रवंकः॥ भुगान्ड्रेक् भू थुन्र कीर्यः न्राट् किन वर्क्षाः। यानाना मृन मात्र अ दुकाब की गठ यहि ॥ म् मू-সৈ্যকান্ধুল প্ৰোক্ত মাযত ভান্ধুল বিশি। ক্ষতিযে ত্রাস্কুল তদ্বদু।সাণে ठजूबबुवा ।। नामिकोया जि**जा**रैग-কো ভাগো মানেন যো ভবেং। ভু (वा संवेतानवः छानः मृत आङ्-र्मनीविगः॥ अ॥ तुक्काती ग्रहण वान शुरहा या छा छा । कूर्या च मृष् **পুঞ্- ভ**দৈশব। হরি নিশ**র** ।। বৈশ্ববা ै विशु कुना (क्ट दिन्धा मृमु। छ। जा- ॥ मुमाः। यमृष्कुं शृक्षुः दिख्तू छामव হুরিমন্দির•ম নরে বাপ্যথ বা নারী युनि कृष्णिथा नाज्य। यञ्ज सनभी भाना मकार्या इतिमन्तिन ॥ गद्याः क्ट्रिमु न कूर्गाम खिलक गिरिक्यः ॥ । শ্ব পদ• ভদ্নিত। তুল্য• ভবেমারদ बान्या।। 🚓 ॥ म् छाकात्र हित्रथ॰ यिवनकः मृनकागकः। मध्रहिनुर्छ 🎚

७८ शुष्ट् कष्कृशृष्ट्रः मत्नाहतः ॥ অধোমুখারু কলিকাকার তিলক मूडमः। मध्रहिमुः यूगादिशं मृष् পूषु भूकी हिंउ।। # II ठीर्थम् मक কাষ্ঠঞ্চ বিশ্বে। মলয সম্ভব । অশ্বত্থ जूननी मून म्डिका (गान्नम्म् ह।। काइ वी. म्बरानिष जूलनीकाष्ठ-भिवह। कल्री कुक्रुमः कल्लु जिन्त्रः इक्टन्सन ।। (शाद्माहन। शक्तकार्रः बनः ठा७क (गामयः। शाबीम्नमः ন্দ্রে হরিত্রা গোগৃহল্য ।। স্নানাস্তে नद्वाना मानुनाना खरेथवह । এতানি তিলকান্যান্থ: সন্ধ্যাদি সূর্ব कर्पभू॥ 🛊 ॥ व्यानितः। गङ्गामृजुननी मून मृजिका मनार्याख्य । नार्या कत्र म न न : इंडा म्लाइ मार या श्याय मृत मृताभी हन्तन । जीर्थ मृक्तिका । कुरूपा जूननी काक्षः रेवकवाक् व मृखिका॥ शास्त्राहना D क ख़ुती रु ति मा ७ क B प्रमा । वन्ती क मृक्तिका गन्नः शन्त्रकः इतिहन्दनः॥ গন্ধকান্ত মহানিখে৷ যমুনাতীর मृक्तिकाः। अक्लाएत्रका रातिनी नाष्ड्रि त्रका बला। क्वा भुक्तिने म्नान (मरें जर्जन्मानि जिः। हाक्र यिखनक गुर्ख उमाम दिक्देव

निकाः यटकित्थिट कर्य नाइक। वर्गाभुमाना॰ जन्नाखि नानाखि डिनक विना। कर्य वर्गामुमागाः म्याट रेमव रेभव न जटकन । ग्रान अक्षा शक्ष्यकान् रेशकः (श्रामामि कर्या यः॥ विना जिनक দৰ্ভাৰ্ডাণ কুৰ্য্যান্তনিম্বল ভবেৎ। ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ড•॥ঞ্চা। বীক্যা-मार्च जान वानि या विमधार भूगइंडः । উषानृषु महाजागः স্ যাত্তিশর্মাঙ্গতি ।। ইতি পাদ্মে भा**डावथ७**•॥क्षाः भिवागस्मिन रैं स थार्गः डिर्गक् बिश्रुक्ः। বিফাগনে দীক্ষিতত উদ্পূপুণ বিধার্যেৎ ৷৷ ইতি নাগোঞ্জীভট ধ্ত স্তস হিতা।।

তিলকট: পু॰ তিলস্যরজ:। তিলচূর্ণ-। ইতি শহার্থকলতক: " ব্যাকরণঞ্চা।

ভিলক। स्त्री श्राहरजनः । ইভি कर्तानुदरः॥

তির্ক্তালকঃ পু॰ শরীরহুতিল:। ইত্যমর:॥ তিলযুক্ত:। ইতি ভটীকা তিলকাশুয়ঃ পু॰ ললাট•। ইতি শদার্থকন্নতকঃ॥

श्रुतः ॥ १ ॥ काम्यः तिमिलिकः ॥ जिलकिष्यः क्षी जिलमलः । छर निक्कः यदिकिष्टः कर्ण नावषः । अग्यायः । भिग्याकः २ जिल्पानिः ७ वर्गाणुमानाः जन्नास्ति नानास्ति । अग्यायः । न्यानिष्यः । वक्षप्रः । जिलकः विना ॥ कर्ण वर्गाणुमानाः विश्वेष्ठिष् । कृष्टिन् वन्यकः । ইजि म्यार रिम्दः रिभवः न जर्मनः । ज्ञावनुकानः ॥

ভিলকী বি তিলকযুক্তঃ। যথা।
শিখী ভিলকী কৰ্ম কুৰ্য্যাৎ। ইতি
মৃতিঃ॥

তিলচিত্রপত্রকঃ /মু• তৈলকদ:। ইতি রাজনিয়র্ঘট:।।

তিলচূর্ণ লী চূণী কৃততিলং। তৎ প্রয্যায়ঃ। তিলকল্প ২ পলল ৩০ পিষ্টক ৪। অস্যগ্ণাঃ। নধুরত্ব। ক্রম্যত্ব । পিস্তাসু বল পুষ্টিদত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘ-টঃ॥

ভিলভণুলক ক্লী আলিহ্নন । ইভি শদনালা ॥ ভিল নিশ্ভি-ভণুলক্ষ ॥

তিলতিল লী তিলগ্রেহঃ। তিলেৰু তৈল । ইতি ব্যাকরণ ।। অস্ত গুণাঃ তিলশংখ দুষ্টব্যাঃ।। তিলবেনুঃ দ্রী তিলনিমিতি।ধেনুঃ

व्यापन् जा विधानम् अतिन्द्रः
। यथा । विधानः जिल्लास्ताः स्वः
वुहि भीषुः षित्नास्त्रः। मूनिः स्वाह्रः
विधानः य८ उह्नुष्ट्र नदाधिनः।
वारुभाग्मारम्यो (धनू मुजूर्खि ई८.म-

को ভবেৎ। ইফ্দগুন্যাঃ পাদা म् छा: भूमभगाः णु जाः॥ नामा गक्त-भयो जन्मा बिख्ना ७ प्रमयी ज्था। হিতা• কৃষাজিলৈ ধেনু• বাগোভি ৰ্মিকা শুভাগ সূত্ৰেণ বাসিতা সমাযুক্তা• মন্ত্ৰপুতান্ত দাপবেৎ॥ অর নে জায়আ সদ্য: পান সপ্ত त्रमा ख्या। कांग्र मज्ञाभयायाकः ভিলধেনুমুপাৰ্জিভা:॥গৃহামিত্বা **(एवि ७**क्डा कर्षेत्रार्थ विरमवडः। জটুম্ব কাম- জ্ঞ্জা- ভিল্পেনো নমোহস্ত তে ৷ এব বিধাণনরো দত্বা उन्तिन् न्लाडम । সईकाम সনাপ্তিস্ত লক্তে নাত্ৰ সংশ্ব:॥ ইতি পাদ্মে সৃষ্টিথও।।।

ভিলপর্ণ ক্লী চন্দন। ইভি রাজ-ীনিষ্টিঃ।। ভিলবৃক্পতক।।

ভিলপর্ণ: পু• শ্রীবেষ্টঃ।ইভিন্নাজ-निर्घणः॥

(इम्हन्दः॥

ইভ্যমর: 11 তিলপেন্ন: পু॰ নিয়ুলভিলঃ।ইভাসরঃ जिलमपूतः भू मण्यदिरमयः। छ भर्यायः। धक् फेकः २। १७ ত্রিকাওশেবঃ ॥

ক্ত্রা পঞ্রত্ন সমষ্ট্রাণ। সরো বিধি । তিলরসঃ. পু॰ ভিলতৈব। ইতি मदार्थकष्ठकः ॥

ভিলয়েহঃ পু॰ ভিল্ডৈল । ইভি नमार्थकन्न उकः॥

जिनाकिकेरनः श्रु रेजनक्यः। इंडि द्रावनिष्णेः॥

. जिनाभज्या की क्षणीयकः। इंडि मद्रान्त्रा॥

তিলিৎসঃ পু• গোনসসর্গঃইড়াইরঃ ठिलासमा जी सर्वना। हैडि শহচন্দ্রকা।। তস্যা নাম কারণ• যথা। তিল তিল সমানীয রহানা। यद्विनिर्भिजा। তিলো ভ্রমেতি তত্ত-স্যানাম চক্তে পিতামহং ॥ ইতি মহাভারতে আদিগরী।

তিলপর্ণিকা জী রক্তচন্দ্র-।ইতি তিলৌদ্র- ল্লী কৃশরঃ।ইতি হারা-वनी ॥ 11

তিল্পণী জী রক্তচলনে। ইত্যমর: তিল্য লী তিলক্তেত্র । তৎপর্য্যাবঃ ভিলপিছট লী ভিলপিউক । তিল ট্রলীন ২। ইভানর: ।

कृषे। इंडि जावा। इंडि (किटिशा डिल्ला । गाउँ। इंडि कविकन्नक्रोडी जिमिश्वः शू॰ निक्षम जिम्हा जिम्हा जिम्हा शू॰ (माधुः । ইত্যमदः॥

শেষ্ডলোধু: । ইতি ভটীকাষা
সূভ্তি: ৷ রক্তলোধু: ইতি স্বামী ৷৷
তিলুক: পু
লোধু: ইতিরাজনিষটে: ৷৷
তিঠুলু: পু
সন্ধ্যাকাল: ৷ বথা ৷
আতিঠুলু হুপন্ সন্ধ্যা
নায়তীগব ৷ ইতি ভটি: ৷৷

जियाः पू॰ भूषा नक्ष्यः। ইতা मद्रञ्जावनी ।। किन्युगः। ইতি मिद्रञ्जावनी ॥ जियाकः पू॰ लोषमानः । ইতি मद्रञ्जावनी ॥ जियाकः पू॰ लोषमानः । ইতি मद्रञ्जावनी ॥

ভিষ্পুরা জ্রী আমলকী ৷ ইভি-ভাষ্চন্দুকা ৷৷

ভিষ্যকলা জী আমলকী। ইত্যমর:॥ ভিষ্যা জী আমলকী। ইতি শব-রত্নাবলী॥

ভিছা পু• ব্যাধি:॥ ব্রীহি:॥ ধনু: । সভাব: । ইতি সংক্ষিপ্তসারে ॥ উণাদিবৃত্তি:।।

ভীম য ক্লেদনে। ইতি কবিকল্লজনঃ।। ভীর ভ ক কর্মণা সমাঙৌ। ইতি কৃষিকল্লজনঃ।।

নীর কী নদীকুল । ইভ্যনর: ।।
গ্রাতীর বথা । সাজহন্তশত

রাবং গভত তীর মুচ্যতে। ভাদু
ক্ষচভদ্প্যা যাবদাক্ষতে রল

। जावज्ञ विकान गाँ छमनाजीत्र मूठाउँ।। देखि भागिक छ उद्युः
।। भागकः। देखि बिका अस्मदः।।
जीतः भू बर्भा देखि मिनते।।
जीतज्ञः भे समिति भावः।
जीत्र ज्ञाः भे समिति भावः।
जीत्र ज्ञाः भिक्ष ज्ञाना। छ८
भग्रायः। निह्निः २ दिस्हः ०।
देखि बिका अस्मिः।।

তীরিত শ্লী কর্মণা সমাপ্তি। ইতি তীরধাতো ভাবে ক্ত পুভ্যবেন নিমুমণা

জীর্ণ: জি উত্তীর্ণ:।। জভিত্তলা শ্লুড:। ইতি তৃষাভো: কর্ডরি জ পুত্যবেদ নিমুল:॥

छीर्गनि बी जालमूनी । इंडि -। यह निष्का॥

ভীর্থ- ক্লী শাব্র-।। করুরঃ।। ক্ষেত্র-।।
উপায়ঃ।। নাদ্বীরকঃ।। অবভারঃ।।
শ্বিলুষ্টামু।। পাত্র-।। উপাধ্যায়ঃ।।
নজী। ইতি মেদিনী।। যেনিঃ।।
দর্শনা। ঘটাঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।।
বিশুঃ। আগনাঃ। নিদান-।। ভারিঃ।
ইতি সংক্ষিপ্তসারে উপাদিবৃত্তিঃ
।।
ইতি সংক্ষিপ্তসারে উপাদিবৃত্তিঃ
।।
ইতি সংক্ষিপ্তসারে উপাদিবৃত্তিঃ
লাগ্রেতিগিন যথা। ক্ষুন্দুলাগ্রেতিগিতিগি বিশালিক ক্রিন্দুলাগ্রিং।
কার্থ-। মধ্যে প্রস্থা কুলোগাঃ পৈত্র

তীথ

ম্নে অজ্ঞন্য ব্ৰাহ্মণ। ইত্যমর ॥ 🕬 ॥ जीर्थः बिविधः। यथा। 'बक्न' ) मानमः २ द्या**बद्र**' ७। उथाइ । वाक्षां बक्षाः डीर्थः निर्माण नार्वका निर्माण । यमा वारका एकरेनव शुक्रान्ड मनिरना कनाः॥ अ॥ व्यर्गाष्ट्रं क्वाइ। मृनू छीर्थानि गम्छा अनिमानि न्यान्य । (ययू नम्हर्क् नद्रः माजा भ्रवाञि পরমাণ গতিং॥ সত্যং ভীর্থ ক্ষমা जीर्थ जीर्थ मिल्प्य निगुक्त मई-**ज्**ठमया जीर्थः मर्द्रबार्द्धव स्मित्र ॥ मानः ठीयं मन् डीयं नखाय ন্তীর্থ মূচ্যতে। বুন্ধচর্য্য পর তীর্থ তীথঞ্চ প্রিবাদিতা।। জ্ঞান• তীর্থ धृठि खीर्थः भूगाः जीर्थं मुमाइ छ। তীর্থানা মপি তত্তীথ বিশুদ্ধির্মানসঃ 🝷 পরশা এতত্তে কথিত দেবি মানসং **जीर्थ लक्ष्म । क्षा (जीमाना मिश्र** डीर्थानाः भूगुर्द्ध काइनः भृगु ॥ यथा শরীরস্যোদ্দেশাঃ কেচিয়েধ্যতমাঃ মৃতাঃ। তথা পৃথিব্যা মুদ্দেশাঃ কেচিৎ পুণ্যতমাঃ মৃতাঃ।। পুভাবা-দভুতাভূমে: সলিলস্য চ তেজসা। পরিশৃহামুনীনাঞ্ তীর্থানা পুণ্ডা মৃতা ॥ তমাডে।মেরু তীর্থেরু..

মানসেষু চ নিত্যশঃ৷ উভযেম্বলি যঃ ন্নাতি স যাতি পরমাণ্গতি ।। 🟶 ॥ ভীর্থাগমনে দোষো যথা। অনুশোষ্য ত্রিরাত্রাণি ভীর্থান্যনভিপম্যচ । चनदा काक्षन गाक्ष महित्रा नाम काय्र ।। क्षा अर्थगम्य क्ल य्या । व्यशिक्षीमानिक ये देख विश्वे विश्व क्षिंगे:। न उर कन मवाशांज जीर्था जिन्नमानन यह ॥ अ॥ जीर्था-न्यत्रम् वीतः भुष्यानः मभाहिजः। ক্তপাপো বিশুখ্যেত কিং পুনঃশুদ্ধ कर्म क्टााि क्यािन न रेव शहर अरहरमन ह बायल । न मूःथी न्यार স্বৰ্গভাক্ চ নোক্ষোপাযঞ্ বিন্দৃতি ॥ # ॥ जीर्थ कन जानिता यथा। যুদ্য হস্তোচ পাদোচ মনকৈব সুদ্র-যতণ বিদ্যা তপশ্চ কীৰ্ত্তিশ্চ স তীৰ্থ ফল মানুতে ॥ পুতিপুছাদুপাবৃত্তঃ সম্ভঃষ্ঠা যেন কেনচিৎ । অহন্ধার বিমুক্ত স. তীর্থ ফলু মশুতে ॥ यमाञ्चिका निवादस्या नघुःहारवा जिर्जिन्द्रयः। विमुक्तः भन्नं भरेक् यंः স তীর্থ ফুল মশুতে ॥ অকোপনে। **१मनमिकः म**ञ्जामी मृष्युकः । আত্মোপমশ্চ ভ্তেষু স ত্থি ফুল मनुष्ड ॥ अनुप्रधानः नानाञ्जा

ना खिरका १ हिम ने भयः। (रज्निकक পৰিতে ন তীথ কল ভাগিনঃ৷৷ইভি का नीय छ ।। 🕸॥ जी थरा जा विषान गथा। या यःकिन्धि छी थ या बां खु गहि ८ সূস-যতঃ সচ পূর্ব- গৃহে যে। কৃতো-भवातः मूहिद्रभुमखः मःभूकाय छिक नाम्। गर्गार्यवान् शिवृन् द्वाक्षणाः रैक्टर माध्न धीमान् शीगयन् विख मक्ता भुवद्गार । भुजामजनानि शून उरेशव (हवान् शिजून् बु। क्रांगान् यर्कः कलः उৎमात्राज मन्तर्वेव । इंडि वुक्रमुद्रागः॥ भा भुगाम ठीर्थ याडाया॰ निज् माज् विरयागडः। कहाना वर्गन कर्गार वृथा न वि-কচে। ভবেৎ।। ইতি ভবিষ্য পুরাণ• ॥ 🗱 ॥ जीर्थ यांजा ममात्रस्य जीर्थाए প্ত্যাগমে পিচ। वृष्किमाष्क भु-वरी उ वह मिर्शः ममनिष्ठ ।। ইতি क्ष्रीत्रागः ॥ 🗱 ॥ अथर्गना छ-माश्वाहार गरहमातन या नद्रः। নিয়ন তস্য ভত্তীর্থ ভ্যামান विवर्जायर ॥ इंडि मर मार्भूतान ।। 🗱।। नम्र नद्र विमामान भूनडीर्थ बुद्धायि । मू अनिकाशिवामक उना यह्निन कात्राय८ ॥ इंडि गङ्गा-

विवान थया। न भन्नी का विवन

रंखांबा वर्ष हि। नेक् जिः नि अस्त्रम् हक् गानायस्त्रन है। कर्डवा मृद्धिक पृष्टै शिगादकन थएन। भाषाके । व कुकर्वा मर्गा-वाहन वर्षिञ् ॥ अकारमभावता कात्व डीर्थम्। पेह डर्भन । व्यवि-नामन कर्जवार तिया विम्न ममाहातर ॥ यमक्रि जीर्थभाक्षिः माजला १३: পূর্ব বাসরে। উপবাসশ্চ কর্ত্ব্যঃ भारिष्ठ श्रि भाषामा अवटा। जीर्था-প্রাস: কর্ত্তব্য: শিরসোমুগুন-তথা । শিরোগতানি পাপানি যান্তি মুওন-তো यजः॥ जीर्थः भाभा भुमांक्न मानः डीर्थं मभागद्र । मानबः कव মাণ্নোতি ভীৰ্থযাত্তা শূত নতু ॥ইতি काणीथ ७ ।। मू अनस्थार्ग वाजाक नर्बे जैर्थि श्वयः विश्वः। वर्क्षयेज्ञानयाः गकाः विभावाः वित्रबाख्या॥ ইতি क्षाम्(।। क्षा। वाडमा म न न डाउ यः পরার্থেন গছতি। অন্ধ্ তীর্থফল। **उन्य यः भुनाक्न गर्हा । इं**डि रेशठीनितः॥ ज्ञाशरयः जिल्ला मिना-मीन् छा**ौ॰ खीर्थ्य नाहास्त्राः। स्रान**्र-थागर्वास्त्राङ वनासीर्थं चर् कन्।।

इंडिकाम्स् ।। भाउत्र शिउते वाया ভাতর সূহ্র ওক। य সুদিশ্য নিম্জ্রেড অইভাগ লভেড সং।। ইতি পাুয় শিচ ভতত্ত্বে নাৰ্কণ্ডেয়পুরাণ-॥ 🚓 ॥ कलो जीर्थानाः भृथिव्याः क्रिकाला यथा । अत्रवजी भूग क्षित्र भाषागाम ह जीत्रकः । गदा শাপেন কল্যা ষ্ফু ভছৌ হরেঃপদে ।। পশ্চান্ত গারথা বিভা মহী ভাগী-त्रथी मूखा। नमाबगाम, कनया वागी শাপেন নারদ।। পদ্মা জগাম কল্যা সাচ পশ্মাবতী নদী। ভারত ভারতী শাপাৎস্বয়•তছে হরেঃপদে া কলে: পঞ্জ সহসুক্ষ বর্ষ হিত্তাচ ভারতে ৷ জগুম স্তাশ্চ সরিদুপ বিহায গ্রিহরঃপদণা যানি সর্বানি তীর্থানি कामी वृन्सावन विना। बानाडि ত। जिः नार्षक रेवन्रथेमा ऋगा रात्रः ॥ 🕸 ॥ डोर्थभुडि गुरह (मारवा यथा ৷ তত্ৰ নারায়ণ কেত্রে অকক্ষেত্রে **स्द्रःभए । वाद्राणम्याः वपर्या**कः গলাসাগর সহমে॥ পুরুরে ভাকর কেত্রে পুভাসে রাসমগুলে॥ হরি-দ্বারেচ কেদারে সোমে ব্দরপাচনে ।। नत्रच्छी नमी जीव्ह भूत्य वृन्ता-बब बब । शामावर्गाकको निकाः

বিবেণ্যাঞ্ছিশালবে।। এতেমুন্যেসূ रया मानः পुडिगृङ्गांडि काम्यः। সচ জীৰ পুতিগাহী সম্ভীপাক भुवाि ह ॥ हेि वुक्तरेवदार्ख **भु**-क्डिथ ७ ।। 🏶 ।। याना रिना गमान रमारवा यथी। भूगार्कः स्वरक मान তদৰ্ম ছব্ৰ পাদুকে। তদৰ্ম তৈল মা সভ্যা সর্ব হরতি মৈথুনে॥ इंडि कर्याताहन ॥ #॥ यूगास्त ভীর্থ বিশেষস্য শুেচন্ত্র- পাছে। ক্তেতু পুঃর• ভীর্থ• ৰেভাযা• रेनिमयस्था। दाशास्त्रज् जनसम्ब कलो गका नमानुखर ॥ 🕸 ॥ ভীর্থসংখ্যা যথা। ডিসুঃ কোট্টের १ बंदगारी ह जीयांना वायु त्रव्वी र । দিবি ভ্ব্যম্বরীক্ষেচ তানি তে সম্ভি बाइ वि ॥ 🕸 ॥ व्यय जूमखनमु शामकिलान जीर्थानि यथा। शुद्रतः ১ তত্ত্বু বুন্ধণঃ স্থান তীর্থরাজেতি নানা খ্যাত তত্ৰ ত্ৰিসন্ধ্য দশকোটি তীর্থান্যায়ান্তি। তস্যুক্তল অস্থলেধ তুল্য ৰুক্ষ লোক গমনঞ।। बहुमार्गः २ डिमा कन वायाम्ब তুল্য বিষ্ণু প্ৰাপ্তিক ।। তণুলিকা-मुगः ७ जम् कन पूर्गं जिविनोमः वुकालाक शास्त्रिक ।। व्यवस्थानहः

ও ভৰ্তিরাভোপবীসেন বাজপেয ভুল্য কণ শাকাহারেণ কৌমার-লোক পাণ্ডিক্যা ধর্মারণ্য ৫ তত্ত্ব ক্যাশুনঃ ভদ্য ফল পুবেশ নাত্রেণ পাগক্ষঃ দেব পিতৃ পূজনেন ष्यश्रामध जुनार कना विवृश्याक পুাপ্তিক্ষা য্যাতিপত্তন ৬ ত্র গননেৰ অখনেৰ যক্ততুল্য ফল ।। কোটিভীর্থ• ৭ ভত্র নহাকাল স্তিষ্ঠতি ক্লানেন অশ্বমেধ তুল্য ফল।। ভূদু-বটঃ ৮ তত্ৰ উন্নাপতি স্তিগ্ঠতি তণ্দৃষ্ঠা গোসহসু দানফল-তস্য গাণপত্যঞ্চ ভব্তি ৷৷ নম্মদানদী ৯ তক্ৰ পিতৃ দেবভর্মণাৎ অগ্নিষ্টোমতুল্য ফল ।। দক্ষিণসিমু: ১০ তত্র বুক্ষচযেঁতে। অগ্নিষ্টোমত্ল্য ফল জিদিব প্রাপ্তি **भ्रह ॥ हर्ष्याञ्जीनमी ১১ ভ**ত্তেनिमुग-স•য্মনেন জ্যোতিষ্টোম্ফলণাহিম-বংসূতাৰুদিঃ ১২ ডত্ৰ বশিষ্ঠান্স্নঃ ভিমান্নেকরাত্র বাসেন গো সহসুদান ফল ।। পিক্ ভীথ ১৩ ভত্তেন্দ্রি স্থ্যমনেন স্বৎস শতক্ষপিতা দান ফল ।। পুভাস: ১৪ ওক হ ভাশন বিষ্ঠতি ভৰ স্থানেন অগ্নিষ্টোমাতি-'र्आबरयाः कन·॥ अत्रश्र**ी जा**गत-সহ্ন: ১৫ তত্ৰ মানেন গোসহসুদান 'l

ফল• ত্রিক্নভোপবাসেন পিতৃ দেব তপ্ণেনচ অস্থ্যেথ ফল• ৷৷ ব্রদান• ১৬ যত্ৰ বিষ্ণবে দুৱাসসা বয়ো দতঃ **७** इत्तिन श्रिमेश्यु सान कला। দ্বারবভ্যা• পিঞারক তীর্থ• ১৭ ভত্র পদাচিত্র যুক্তা মূদুা: শ্লচিত্রি ভানি পদ্মানি অনুস্পি দৃশ্যন্তে নহাদেব खिक्षिकि म्रात्मि देख् मुदर्ग यद्धकन्।। नगु पुनिक्षु नक्षाः ১৮ छव नातन পিভূ দেব ভর্পণেনচ ব্ৰুণলাক পুাপ্তি:।। দ্রিমীতীর্থণ ১৯ তত্র মহা-দেব বিষ্ঠতি তত্র স্নানেনাখ্যেধ্ **कन॰ महारित मन**नाईना छ्रा॰ সর্বাপ নাশঃ।। বসুধারা ২০ তল্যা দশনেৰ অশ্বয়েষ ফল- বাৰভপণা-ভ্যা•विक्रुलाक्ष्राधिः॥निक्रुडम॰२১ **७** ज्ञातन वङ् मूवर्ग यञ्जकन ॥ যদুভূকে ২২ ভত্ত গমনেন বুন্ধালে।ক পুান্তিঃ।।সমারিকাশকতীথ ২৩ ভত্র স্থানেন বিমলস্থ-ভবতি ৷৷ পঞ্চনদঃ২৪ তত্ৰ পঞ্চজ্জফল•॥ ভীমাস্থান•২৫ তত্র স্মাত্বা নরে৷ দেবীপুত্রো ভবতি গোসহসুদান ফলঞ্চ লভতে ॥গিরি-बक्ष• ২৬ তত্ত্র বুন্ধা তিপ্ততি তস্য নত্যা গোসহসুদান ফল।। বিমল-ভীর্থ:২৭ খদ্যাপি ভত্ত সৌবর্ণ রক্ষেত

মুৎস্যা দৃশ্যন্তে তত্ৰ স্নান পানাভ্যা• বাজপেয়ফল• ৷৷ বিতস্তানদী ২৮ তত্ৰ তৰ্ণনৈ বাৰপেয়ফল স্বৰ্গপাপিক ৷৷ কাশ্মীরে বিভস্তাখ্য ভক্ষক নাগ-जरन २३ ७व मान्न वाक्र भयक्त • विकृत्वाक शासिको।। समाभन्ना ७० छ व नाय नक्षाया नी तन नशाहित हरू नित्तरानन् व्यथ्याथ **मह**र्भा-धिक कनः॥ क्षुग्लामः ७) उब महारम्य मर्भनाट अध्यामश कनः॥ মণিমান্পর্বঃ ৩২ তত্র ত্রিরাত্রো-পবাসেন জ্যোতিঃস্তামফলণা দেখি-का नहीं ७० ७७ महास्व छान ভত্ৰ স্থান মৃহাদেক দৰ্শনাভ্যা• म्हारत्याय हक निर्वत्तन ह नई काम भाशि पिरालाक भाशिक। \_रिविकायाः क्युजीयः छव सामार সিদ্ধি প্ৰাপ্তিঃ৷ এবং ছেবিকাষা থজন याजन तुक्तवानुक शून्नन्। मृ म॰ छः-कानि जीर्थानि (उयु जानार मद्रग , ভয বিনাশ: ॥ দীর্ঘসত্র ৩৪ তত্র গমনাদেব দীর্ঘসত্র ফলপ্রাপ্তিঃ রাজ-ज्याश्वरमध कन भाषिका। विनमन॰ ৩৫ মেৰুপ্ঠে অন্তৰ্ভিত। সরস্বতী যত্ৰ ষাতি সা চমসভীর্থে এবং শিরো-त्किरन नारगारक्तिक मृग्यारक वस्त्रा

म्नानार वाजालय कनः नारगारखार ম্বানাৎ নাগ**লোক প্ৰা**প্তিঃ।**শশপান**-তীৰ্থ ৩৬ ভত্ৰ শ্বানাৎশিববদ্দীপ্তিঃ श्गा **मर्जु मान कन शु**ाष्ठिक ॥ সমারকোটা ৩৭ তত্ত্র স্নানেন পিতৃ रित भूकतन ह भवान्य याग कन शुक्तिः ॥ कृषुकाष्टी ७५ यव काषि श्रीवारा भिविछ। अरुमार्गु कृर् দুক্যামীতি পুছিতানা তেষা সম্ভোষার্থ একো কৃদুংকোটিমূর্ভযে। **২ভবং । তত্র স্থানাৎ অখনেধ ফল** शाक्षिः कला**ष**त्रगक्ष ॥ **ग**त्रवर्जी-সঙ্গমংগ্ৰ তত্ৰ জনাৰ্দ্দন স্তিষ্ঠতি ভত্ত नानार वक् जुवर्ग कागकन भाषिः॥ স্বাবসান ৪০ভত্ত গ্ৰানাৎ গোস্ভ্সু मान क्नुशिशा **अक्रक्व । ८३ ७**व গমনাৎসর্বপাপক্ষয় ততো মচকুক দারপালস্য নম্ফারেণ গো সহস দান ফলপাপিঃ।। বিকুস্থান ৪২ তত্ত্ৰ न्नानार विकृतमंनार जन्यामशकन॰ বিফুলোক প্রাপ্তিশ্চ ৷৷ পরিপল্লব ৪৩ তত্র অগ্নিষ্টোমাতিরাত্র বাগ কল পাপ্তি:।। পৃথিবীভীথ • ৪৪ তত্র গো **मरुज् मान कला। भाग्**किनी छीर्थः ৪৫ তত্ৰ দশাখনে ধিকে সানাৎ গো मर्मु हान कनः॥ मर्शिक्वी ६७

না নাগড়ীৰ্থ- কত্ৰ গমনেৰ অগ্নিষ্টো-अकन-नागरनाक शाखिक ॥ व्यवनक ছারপাল: ৪৭ ভবৈক্রাত্র বাসাৎ (गानर्जु नान कन नाशिः॥ शक्नकः ৪৮ভৰকোটি জীৰ্থে ন্নানাৎ অশ্বমেশ্ব কল ।। অশ্বিতীৰ্থ ৪৯ তত্ৰ ৰূপ शुािक्षः॥ वत्रार जीय • ६० यब वत्रार ৰূপী বিষ্ণু: হিডঃ ভত্ত সানাদ্মি-होन कन्याधिः॥ बवडाः ६) उब (जामजीत्थ ज्ञानार द्राक्रम्य कन পুান্তি: ৷৷ একহ • সভীর্থ • ৫২ ভত্র গো गर्जु राग कल्पुाश्विः॥ क्उल्मोहः ৫০ তত্ৰ গমনাৎ পুগুৱীক বজ্জফল नाशिः ॥ मूक्षावरे ठीर्थः ৫৪ उडु মহাদেবস্থান-তাৰৈক প্লমীবাসাৎ গাণপত্য পাুঞ্জি:তবৈৰ বিশালাকী यकी पर्णनाथ मर्वकाम भाकिः॥ জামদগ্যান্থত পৃশ্বরতীর্থ ৫৫ তত্ত ন্ধান প্ৰনাভগা-হ্যমেধ ফল-াারাম্-হুদঃ ৫৬ যত্ৰ বামেণ ক্ষাত্ৰ মুৎলাদ্য তেবা রকেন পঞ্জুদাঃ ক্তাঃ তেবু ন্থান ভপণাভ্যা পিতৃগণাৎ বর शुक्षिः वर् मूवर्ग यक्कक्त शुक्षिक য় ব॰শম্লক। ৫৭ তত্ত্ব স্থানাৎ, चन्ना बन्ना कायर ना वन १८५ ७ व न्नानाट (एरम्बिः॥ त्वात्काकादः

১েডৰ বানাৎস্কীয় লোকোদ্ধার: ॥ খ্ৰীতীৰ্থ: ৬• ভত্ৰণমনাৎ উত্তম শ্ৰী शासिः॥ किनना जीर्थ ७३ उव दान দেবপিতৃপুলনাভ্যা কপিলা সহসু मान कवा।। मूर्या जीर्थ ७२ छव द्वारना-পবাস পিতৃ প্রানে রাইটোম কল। (प्रवाक शां(छेफ ॥ गवा-छवन• ৬৩ ভত্রাভিবেকেণ গোসহসু দাব ফল•া৷ শগ্বিনীতীৰ্থ-৬৪ ডব্ৰ স্থানাৎ উত্তনবীर्ग भाक्षिः॥ वृक्षावर्जः ५० তত্ৰ স্থানাৎ বুন্ধলোক পুঞ্জি:॥ লুতীৰ্থক ৬৬ ভত্ত পিতৃদেবানা-সালিখ্য ভত্ত সান পিত্দেৰ প্ছনৈ রখনেধ ফল পিত্লোক প্রাপ্তি ।। অমুমতী ৬৭ তত্ৰ কাশীশ্বর তীর্থে স্থানাৎ সম্বরোগ নাশঃ বুন্ধলাক পুাপ্তিক্ষ তৰৈব মাতৃতীথু • তৰ্ मानार जडानवृष्तः बीलुाखिक।। শীতবন ৬৮ তত্র কেশাভুগেলণেন পবিৰতা ॥ স্থানলোমাপই: ৬৯ তত্র স্নানাৎ পরম্পতি প্রাপ্তিঃ॥ দশাশ্বমেধিক ৭০ তত্ৰ স্থানাৎ নিশ্চল গতি প্ৰাপ্তিঃ৷৷ নাসুষ্তীৰ্থ: ৭১ তত্ৰ ব্যাধণীডি ভা কৃষ্ণমূগা বিগাছ-गानुषदः भाषाः ७व मानार मर्ह পাপ মুক্তিঃ স্বৰ্গবস্তিক্ত ৷৷ আপগা-

नहीं १२ छब एवं शिबुएएए मरेनक ্ৰান্ধণ ভোৰনেন কোটি ব্ৰান্ধণ ভোজন সিদ্ধিঃ৷
শুক্ষোতৃষর:৭০ তত্র বুক্ষা ভিষ্ণতি ভত্ৰসপ্তৰিদভেশানাৎ गर्भाभनात्मा तुकालाकगुा छिक ॥ কলিলম্যকেদার '48 তত্র ভপসা नर्वभाभनामः चर्छकान भाषिक।। नत्रकः १६ ७५ वृष्युक भूगात्मन जर्बकाम जिवलाकत्याः शुक्तिः॥ ইলাম্পদ ৭৬ ভত্ত মান দেব পিতৃ श्रुबना ভ্যा॰ मूर्ग छिविना मः वांबारीय कन भाषिक ॥ किन्सान ११ ७व नानाम्भुरमय मानकवाः। किः जनाऽः ৭৮ তত্ৰ সানাৎ অপুমেষ জপফল• 11 व्यनाष्ट्रग्राज्ञीय क्रिक्ट नाउन হান তত্ৰ পাণভ্যাগাৎ অনুভম লোক পুাপ্তিঃ।। বৈতরণীনদী ৮০ তত্ৰ স্থান শ্লপাণি প্ৰনাভ্যা• সৰ্ব পাপ মুক্তিঃ পরম পদ প্রাপ্তিষ্ট।। क्नकी डीर्थ ५३ क्नकी वरन (एवा **স্তগণ্চরম্ভি।। নিশুক ৮২ তত্র** নার-দেন সর্বতীর্থানি মিশ্রিতানি ত্র ज्ञानाट नई जीव नानकन ।। भव वही ৮১ সাদেবীছান• তত্র স্থানদেব পিতৃ পূরনভিগে গোসহসুদানফলপুাঞ্চিঃ ।। কৌশিকী দ্ৰদ্বী সঙ্গনঃ ৮৪ তত্ৰ

मानार महनानम् किः। किन्ति क्ना ba छव छिन्नभूह मानी**८ भ**ग वय मुक्तिः भव्रमनिषि भाष्टिक। (वरी-डीर्थ ५७ जब नानाट शामहनुसान कन्भािखः॥ चरः मूमिन जैथिवर ५१ जरयाः नानार न्यारलाक शिशः ॥ नृगव्भः ৮৮ छव विकृशिक मानार वामन প्रानाह जर्देशांशमूं जिः प्रवि লোক পুাপ্তিক।। সরস্বত্যা ভীর্থ-প্রিসঞ্জ ৮৯ তত্র স্থানাৎ স্বর্গবসতিঃ ॥ रेनिमियञ्खा २० छित्रान् त्रानीं इरामध कन भाषिः॥ कन्यां अर्थः ৯১ তত্ৰ স্থানাৎ জ্যোভিষ্টোম কল भाकिः॥ वुका स्नानः ৯२ छव द्रानीर न् मुजाति वाञ्चनञ्च वाञ्चनेत्र পরমগতিঃ।। সোমতীর্থণ মঠ তত্র मानार सामगांग कन शुक्तिः॥ লন্ত লার্যত তীর্থ ১৪ তত্র স্থান লপাভ্যা বৃদ্ধলোকপ্রাপ্তিশা ঔশন-সক ৯৫ তত্ৰ ভিসন্ধ্য কাভিকেয়স্য সন্মিধান•া৷ কপালমোচন•৯৬ তত্র ন্নাৰ সৰ্বপাপ নাশঃ৷৷ অণ্নিতীৰ্থ• ৯৭ ভব্ৰ স্থানাৎ বহিলোকপ্ৰাপ্তিঃ সংলাজরণঞ্যা বিশ্বামিত্রতীর্থা ১৮ **७** ज्ञानार तुकारा शुरिकः ॥ तुका-वानिः ৯৯ छ माना वुकालाक

वातः॥ পृथ्रकः ১३० ७८ कार्खिक्य স্থান• ভত্রাভিষেকাৎ অশ্বনেধফল शुाखिः भागिनामणि वर्गशुाखिः॥मधु-जुव १०२ छव माना (गानश्जुनान क्नभुष्टिः ॥ नत्रवज्ञक्गानक्रमः ১০২ তত্ৰ ত্ৰিৱাত্ৰোপবাস স্থানাভ্যা• বুক্ষহত্যাপাপনাশ: ॥ অবকীর্ণ ১০০ उट मर्जिम्नि निर्मितः मर्जिन। हवातः अमृम् यानीखाः छवनानार দুৰ্গতি বিনাশ: ॥ শতসহসূক ১০৪ সাহসুক ২০৫ উভযত সানাৎ (गात्रक्रुमान कल मार्नाभवारत) সহসূত্রণৌ ভবেৎ ॥ রেণুকাতীর্থ ৯০৬ ভত্রাভিবেক পিত্দেব প্জনা-ভ্যা- সর্বপাপ নাশু: অগ্রিষ্টোন ফল भाषिक ॥ विस्माहनः ३०१ छव সুনাৎ সর্বপুতিগুহক্তপাপনাশঃ ।। পঞ্চবট ভীর্থণ ১৮৮ ভত্ত গম্নাৎ महाभूग्रभाषिः वर्गगमन् । टेजक-স• ১০৯ যত্ৰবুদ্ধাদিভি: সৈনাপত্যে कार्डिकरगांडिकिकः ॥ व्यक्ञीर्थः ১১০ তত্ৰ স্নানাৎ কদুলোক পুনিষ্ঠিঃ ।। वर्गहात्र >>> उर्वे गमनार चर्गानावादिक्षाम कन भाकिः॥ व्यनव्रकः १३२ ७व मानार पूर्गि নাশঃ।। অছিপুর ১৯০ তত্র পিতৃ

দেব তপণাৎ অগ্নিষ্টাম ফল প্রাপ্তিঃ ॥ প্রসাহদকূপ: ১১৪ ভত্র স্থানাৎ वुक्तताक भाष्टिः॥ भागूवरे डीर्थ >>० তত্র শ্লানৈকরার্ত্র বাসাভ্যা ক্দু লোক গ্রান্তিঃ ৷ বদরীপাচন- ১১৬ ভৰু ৰশিগাশুমঃ তত্ৰ ত্ৰিরাভো-भवाम वहत ईक्रगाच्या अध्यक्ष ফল হরলোক প্রাপ্তিক।। ইন্দুমার্গ ১১৭ ত্রাহোরাকোপবাসাৎ ইন্দু लाक शास्त्रिः ॥ चारिज्याभुगः ১৯৮ তত্ৰ সানাৎ সূৰ্য্যলোক পান্তিঃ ॥ সোমতীর্থা ১১৯ তব স্থানাৎ भागताक भाषिः॥ कन्याम्यः १२० ত্র ত্রিরাত্রবাসোপবাসা ভ্যা• কন্য। শত পুাধিঃ বুন্ধলোক গমনঞ্য।। দ্বীচতীর্থ•১২১তত্র স্নানাৎ বাজপেয ফল প্রান্তি:।। সন্নিহ্নিভাভীর্থ ১২২ **७**व बनावमायाः महाि छीर्थाः न्यायां खि वयं न्यं गुर्हा नाना শতাশ্বনেথ ফল প্রান্তিঃ স্থানদানা-ভ্যা• স্বৰ্গলোক প্ৰাপ্তিক। ভত্ৰামা-বস্যায়া সূর্যগুহণে সানশাদ্ধাভ্যা• অখ্যেধ সহসু ফল প্রাপ্তি:৷ স্নানসা-वार मर्बनान नामः वृक्षाकाक शुक्षिक ॥ गकार्कः ३२० एव मानार वाकम्यायमध्यक्ष भाषिः॥

**স্ক্কেত্র• ১**২৪ তৎ তরম্ভকারন্তক याः वरः तामहुर मठकूकरमा द्रस्तरः এতং স্যামন্তপঞ্ক পিতাম্ছস্যো-खत्रविषः ॥ धर्माजीर्थः ३२० छव नानानामध्य कत्नाबदगः ॥ कादा-পচন• ১২৬ ভত্ত শ্বানাৎ অগ্নিষ্টোম কল বিকুলোক প্রাপ্তিক।।সৌগণিক वन > > १ यब वुकाम्या (मवाः পুত্যহমাযান্তি তদ্দ পুৰেশ মাত্ৰেণ नर्वभाभ नामः॥ प्रक्रमद्रश्रुठीः ५२५ তত্ৰ স্থান পিতৃ দেব পূলনাভ্যাণ व्यथ्यम् य य श्री शिः ॥ वेशाना थुः-विज १२२ जब मार्क सुदी (मंदी ভত্র ত্রিরাত্রোপবাস,শাকাহায়াভ্যা• बारमवर्ष माकाशत्र कन भाशिः॥ স্বর্ণাখ্যুণ্ডাত তত্র শিব্স্তিষ্ঠতি তস্য পূরনাৎ অখনেধ কল গাণপত্যযোঃ ্ৰপুথিঃ ॥ ধুমাৰতী ১৩১ তক বি-क्रात्वाभवामार मनकाम गुारिः॥ ध्यावजी पक्षिगाटकं त्रथावनं: ५०२ **ভ**ञादाङ्गिन सङ्गादित भुनाहार পরমগড়ি পাুপ্তি:।। ধারা ১০০ তত্ত मानार (भाकनाभः॥ शकाषात्र १००८ ভত্ৰ কোটি তীৰ্থে স্থানাৎ পুঞ্জীক याग क्व शाक्षिः ऋताष्ट्रता वक ব্লাত্র বাসেন গো সহসু দান কণ

भाषिक ॥ जलगक् । १०६ विगद्ध ১১৬ সম্ভাবৰ্ত্ত: ১৩৭ এতেষু পিতৃ ह्म उर्भगाद भूगुरलाक भाकिः॥ গৰাষমুনাসস্থমঃ ১৩৮ তত্ৰ স্থানাৎ मनायानय कन भाक्षः काना-षद्भाक्ष। कनथनः ১৩১ তত मान বিরাবোপবাসাভ্যা•বা**ন্ধিমেধ্ ফল** वुक्रत्वाकरगाः भाष्टिः॥ क्रिनाविः ১৪০ তত্ত্রৈকরাত্রবাসেন গো সহসু मान कल भाष्टिः॥ किनवनागदाबः ১৪১ ভত্রভিবেকাৎ কপিলা সহসু मान कन भुाखिः॥ ननिजिका ১८२ ना नासन् जीर्थः उब मानाए मूर्गाउ বিনাশ:॥ সুগদ্ধা ১৪৩ তত্ৰ গম-नाट नई भाभ विमृष्दिः वुद्रालाक পুাপ্তিক।।ৰূদুবৰ্ত:১৪৪ তৰ স্নানাৎ तुक्तलाक भाष्टिः ॥ गङ्गामत्रवजी-সক্ষঃ ১৪৫ তত্ৰ স্নানাৎ অস্বমেশ্ব कन्भािक्षः अर्गगमनक।। जमुकर्ग्युदः ১৪৬ তত্র স্থান শঙ্কর পূজনাভ্যা• मूर्गिजनामः विकुलाक भाशिकः॥ क्तृामुक > १८१. छक शमनाञ् अर्थ পুান্তি: এঅক্সন্তীবট: ১৪৮ তবৈক রাত্র বাসাত্রো সহসুদান ফল शुक्तिः जलाखद्रगक्ष ॥ जामून्क॰ **১८२ छ** बिद्राखाभवारमन स्मा

जर्जु कान कन- कलाबन्ध ॥ বুদাৰ্ক ৯০ তব প্ৰনাত্ পান্ন-होत्र कन वुक्तनाक भारिक।। যমুৰাপুভবঃ ১৫১ তত্ৰ স্থানাত্ णचयमक्त वर्गलाकरमः शुक्तिः॥ मदी मंकन्न १०१ उन् गमनाज् बाजित्मप कव शुक्तिः वुकाबाक गमनक ।। मिक्रु गुजरः ১৫১ छव পঞ্রাত্রাসাত্বত্সুবর্যজ্ঞ কল ্পুণিঃ।। অর্থবেদী ১৫৪ তত্ত্র গম-ना प्रश्वासकन वर्गायाः भाषिः॥ वानिधीनमी छरेंबव श्रविक्ना २०० বাশিষ্ঠী গমনাৎ সর্ব বর্ণানা বিজ্ঞ ব शुक्षिः श्रविष्यवाशयाः द्वारेनक मात्र वान नाकाशितः सवित्वाक गुाछिः ॥ ভ্ৰতৃষ্ণ ১৫৬ তত্ৰ পদানাৎ বাদি-त्मिष कल भाष्टिः ॥ वीत्रश्रामाः ১৫৭ ভত্ৰ গমনাত্ সৰ্বপাপ পুণাশঃ ।। महरा मा विरताजीर्थ ১৫৮ जब न्नानाञ् यव उदेवद विष्ठा शुक्षिः॥ महानुमः ১৫১ ভবৈত काल निद्रा-হারাত্ শুভলোকপুাপ্তিঃ॥ মহালযঃ ১৬০ তত্ৰ বঠকালোপধাঙ্গেনৈক মাস বাসাত্ আস্থানা সহৈক বিংশতি **পুरুर्ताषातः** তত্ত্বৈ মহেশ্বর দর্শ-ৰাত্ সৰ্বপাপ মূরণভ্যবে৷ বিৰাশঃ

वर जूनर्व वाग कन शुक्तिक।। বেতসীকা ১৬১ তত্ত্ৰ পন্ননাত্ অম্ব-নেৰ ফল ঔশনৰ গতি প্ৰান্তিক গ সুন্দরিকা ১৬২ তর গমনাত্ কপ भूष्टिः ॥ तुष्किणिका ७७०, छव गननाज् तुकारनाक भाकिशा रेनिनव সঙঃ ভৰ (বৃদ্ধা ভিপ্তভি ভৰ পুবেশাত্ সর্ব পাপনাশঃ স্নানাত্ गदायय यागकन् शुक्तिः मधन्या-साबः উপवारमन भागजानार सर्ग शुनिक ॥ मक्तारकनः ३७৫ छव विद्राः वाशाया नाज् वाह्य कन नु। थि: विकृत्वाक वामक ॥ मत्रवरी ১৬১ ভত্র পিত্দেব ভর্পণাত্ সার-च डाकाक वामः॥ वाङ्ग्सनिमी ३७१ তৰৈক রাত্তি বাসাত্রুদ্লোক পুাপ্তি:।। গোপুচারতীর্থণ ১৬৮ তত্ত্ব সর্যূতীর তব সানাত্ সর্পাপ नानः प्रवाक भुष्टिकः।। शा-মত্যা বামতীৰ্থ ১৬৯ তৰ শ্বানাৎ **अथरमध् कन्यु**। छिः नि**बन्दन्या**वन्य ৷৷ সাহসুব ১৭০ তত্ত্ত গমনাৎ রাজ-न्याचात्रव कव शादिः ॥ वाबगूरः ১৭) তব স্থানাত্ करवत्र वहाङ्गाह भाषिः॥ मिनागः ३१२ ७व गम-नाज् रणा जरजु रान कन प्राधिः

এব তৎ সমীপে নিত্য কর্মকর-ণাত্ সপঁবিষভ্য নাশ: এক রাত্র ু বাসাত্ সর্ব,পাপনাশক ॥ গোত্র वन >११ ७व क्लाइल माना इ পরুমগভি প্রান্তি: ।। এদেবী ১৭৪ ভত্ৰ গমনাভ্ প্ৰীপাুপ্তিঃ ॥ উদপান• ১৭৫ ভত্রাভিবেকার্কু বাজিনেধ ফল शुष्टिः ॥ जनकत्राजक् भः ১१७ छवा-ভিষেকাত্ বিষ্ণুলোক প্রাপ্তি:।। বিন্দন ১৭৭ তত্ত্ত গমনাজ্বাল-(भग कम भाशिः ॥ विमाना ३१৮ ना नई डी थं बला खरा उब गमनार বাজপেয় ফল প্রাপ্তি: বরিলোক গমনঞ্চা। তপোবন স্থান ভত্ৰাবি-বাসাৎ ওহাকলোকবাস:॥ কম্পনা-নদী :৮০ সা সিন্ধনিবেবিভা ভত্ৰ গমনাৎ পুগুরীক যাগ ফল পুান্তিঃ॥ বিশ্বসানদী১৮১ ভব্র গমনাৎ অগ্নি-ষ্টোন ফল দেবলোকে চিরবাসশ্চ ।। মাছেশ্বরী ১৮২ তত্ত্র গমনাৎ অশ্ব-(मध्यक भाशिः मञ्जानाम् त्रभः ॥ मिरवोकः भूक्षिणी ३४० उब गमनार ৰুগতি বিনাশ: বাজিমেধ ফল ्शाशिक ॥ द्राम्भर ३৮८ छङ গমনাৎ অশ্বমেধ কল•া৷ মাহেশ্বর-रामः अद छव द्यानां पर्यसम्

কল তত্ৰ ভীৰ্কোটা ভত্ৰ স্থানাৎ পুগুরীক যাগ ফলপুান্তিঃ॥ নারাশণ হান• ১৮৬ বত্ত পাল্গ্যুম নামাহরি-ভিষ্ঠতি ভৱ গদ্যাৎ অপ্নমেশ কৰা বিকুলোক গমনক।তবৈৰ উদ্পান• খ্ৰ চত্ত্বাৰঃ সমুদ্যঃ সমিহিতাঃ ডব नानार मूर्गछि नामः छव स्राहित স্তিঠতি ভত্ৰ গমনাত্ অখ্মেধ ফল **পু**।श्चि: **३ मुलाक वामक**ा बाडियदः ১৮৭ তব সানাত্ কাতিমরত্ব প্রাপ্তিঃ 11 বটেশ্বরপুর• ১৮৮ ত**ত্র কেশবস্য** দৰ্শন পূজনাভ্যা মুপৰালেন চ বাশ্বি কাম প্ৰান্তিঃ ৷ বামন্ত্ৰীৰ্থণ ১৮১ তত্র গমনাত্ দুর্গত্তি বিনাশঃ বিষ্ণুলোকপাগুল্চ। ভত্ত কৌশিকী কিঃতি ভন্যাঃ সেৰ্নাভ্রাজস্য যক্ত ফল পুৰ্যম্ভি: ॥ চল্প কারণ্য • ১৯• ভবৈকরাত্র বাসাৎ গোসহসু দান क्लमुखिः ॥ (गौन्नेन- ১৯১ उदैक्क ब्राखाभवामा चिम्निक्षाम्बन्धाः । তব দেব্যাসহ বিশেষর ভিষ্ঠতি ভস্য দৰ্শনাৎ মিত্ৰা বৰুণ লোক-ৰাসং॥ ক্ষ্যালয়েদ্য• ৯৯২ ভত্ৰাহার कवार मनुद्याक गुरिक्षः ख्याममाम यक्य • खब्छ ॥ निकीवानमी ४३० ভব শন্নাৎ অখনেধ ক্সপুৰিঃ

তীর্থ

ভীথ बक्रालाक्षत्रगथः। निकीता मक्राम व्यवसातन तुक्ताक गमन । उब ৰশিষ্ঠাশুমঃ ভৰাভিষেকাৎ বান্ধ-পেয় ফল প্রাপ্তি: ।। দেবকুট ১৯৪ ভৰ গমনাৎ বাজিমেধকল প্ৰাপ্তিঃ क्लाबन्न ॥ (कोनिक्यूनिक्रः ३२० छव मान नामा८ अध्याप्यक्त প্রান্তি:।। সর্ভীর্থবর্ত্ত্ব: ১৯৬ তত্ত बाना८ वङ्गूवर्गांग कव भाषिः मूर्गां विनामक ॥ वीतामुभः ১৯१ ভৰ সমার তিঃতি ভৰ গম্নাৎ व्ययस्य कन्याधिः॥ व्यक्तिवात्र। ३३५ उर्गमना८ अथरमध् कन भाषिः क्लाक्र तपक्षा भिजासङ्ग्रहः १३३ ভত্র শৈলরাজপুতি গিতৌ শিব্বিফু-ভিষ্ঠতঃ ভত্রাভিবেকাৎ অগ্নিপ্টোম ফুলপাঙিঃ। ভবৈৰ সমারধারা ভব স্নানাৎ কৃতাৰ্থতা জিকালোপৰা-সেন বুক্ষহত্যানাশঃ॥ গৌরীশিখর• ২০০ তত্তারোহণাৎ শৃষ্তা তত্ত कर्ण द्वान शिज् (म्वाइनाच्या) व्यथ्याय कल भाष्टिः वर्गगमन्।। ভাসাৰণা ২০১ ভৰ গমন্বং বালি-মেধ ফগ পুান্তি: শক্রন্যেক গমনঞ্ ॥ मन्दिनी २०२ जब जिल्ला (मिर्विड:-क्लः ७७ धमनार नवस्मध कन

शुक्तिः॥ (कोनिकतका मक्राः २०० তত্ৰ ত্ৰিরাক্তোপবাসাৎ সর্বপাপ मूकिः ॥ উर्वनी जीर्थः २०३ (मामा-मुभः २०० अञ्चर्कर्गम्मः २०५ छन् भाना अयरमयक्त भाषिः सर्गमन নক্ষা কোকামুখ ২০৭ তব স্থানাহ का जियाबद्या मिनहा २०५७व गमनार् ক্তাৰ্তা সৰ্পাপনাশ: স্গ্ৰামন্ ।। খবভদ্বীগঃ ২০১ তত্ত্ৰ কৌঞ্চনি-ज्रूक (अवनार अवस्त्राः मानाह विमान विज्ञाकः ॥ जिल्लानक जीर्थः ২১০ তত্ৰাভিবেকাৎ সৰ্বপাপ নাশঃ ॥ तुकाजीर्थः २०० छव गमनार वाबारभयकनभाक्षिः ॥ वन्त्रा २)२ ভাৰ গমনাৎ গোসহসু দান ফল পান্তি:।। নরেভিকা ২১১ ভত্র গম-नां वाकाराय कल विमान भाषिक ।। সংবিদ্যতীর্থ ২১৪ তই স্নানাই विम्रा भाष्टिः॥ (बोहिड्य २७६ उड गमनाट वहा जुवर्ग यागकन्तु छिः ।। করতোযা ২১৬ তব বিরাবো-भवाजाए व्योजकामभ मान कन পুাপ্তিঃ৷কোশলাফা- কালভীর্থ-১১৭ **उब शबना** श्वान क्व भाष्टिः चर्गगनन्। गक्रामागन সহ্ম: ২১৮ তত্ত্ত গম্নাৎ শ্তা-

খমেধ ফল প্রাপ্তি: ॥ গদাযাঃ পর্ববীপ:২১৯ ভর বান বিরাবোপ-वात्राजाः नर्वकामशुक्तिः।।दैवजद्गी ২২০ গুৰু গমনাৎ সৰ্ব পাপনাশ:॥ वित्रकः २२३ छव भूगार हन्तुः वम्ति थिः॥ পु जवः २२२, छ ज गमना ८ সর্বপাপ নাশঃ গোসহসু দান ফল• স্বস্পাবনক্ষম শোণজ্যোতীর্থী-সক্ষঃ ২২৩ উত্র পিতৃ দেব তর্গণাৎ অগ্নিষ্টোন ফলপুনিজ্ঞালৈশপুত্ৰ: २३८ नर्माराणु छवः २२७ व मण्नाः ২২৬ তত্ৰ সানাৎ বাজিনেধ ফ**ল** भाषिः॥ याय छः १२१ छद गमनार গোসহসুদান কল প্ৰান্তিয়া পুদ্ধবতী ২২৮ তত্ত্র স্থান ত্রিরাত্ত্রোপবাসাভ্যা• গোসহসু দান ফল প্ৰাপ্তি: লগোৰ-ন্দ্রণঞ্চ।। বদরিক 🗮২৯ তত্ত্র স্থানাৎ मीर्चायुष्ट्र भाष्टिः सर्गगमनक ॥ মহেন্দুণইভঃ ২৩০ তত্ৰ রামতীথে न्नानाट वाजितम्य कन प्राक्षिः॥ भउरकातः २०) उव द्वानाट सर्गताक शुं छि:॥ शिशईंडः २०२ ভত্ত বদীতীরে সানাৎ অশ্বমেধফল ি প্রমূলি জি পাপ্তিক তত্র মহাদেবে। দেব্যাসহ তিপ্ততি তত্ত্ব দেবহুদে স্থানাৎ অশ্বনেষ ফল প্রাপ্তিঃ শিব

লোক গমনক।। পাঞ্জদেশে প্ৰভ-भईडः २०० डक गमना८ बाबालय क्न भाशिः सर्गगमन्सः ॥ कारवत्री ২৩৪ ভৰ গমনাৎ গো সহসু দান क्ल॰ ॥ ममूम्जीत्र कन्याजीर्थ॰ २०६ जुब नानाट जब भागनामः॥ সমুদুৰ্গ গোকৰ্ণভীৰ্থ ২৩৬ 📭 শিবস্তিষ্ঠতি ভস্য পূলনাৎ তিরা-ভোগবা**ন্ধা**ছ দশাখনেধ তুল্য ফল• गागलैंडा शासिः हामण बाद्वाश-বাসাৎ কৃতার্থভাচ। তত্র গাযত্রী-'**হান**ণ ভৰু ত্রিরাহোপবাসাৎ গো महमु मान कन शुक्षिः वाकानम भायबी भाठां जमा जन्मजा অব্যক্ষণস্য পাঠাৎ তস্যা বিনাশ:। সম্বৰ্ত্তাপী ২৩৭ তত্ৰ গমন 🐞 ৰূপ সৌভাগ্য প্রান্তি: ৷৷ বেরা ২০৮ তব পিতৃ দেব ভর্পণাৎ ন্যুর হংস যুক্ত বিমান পুান্তি:৷৷ গোদাৰরী ২৩৯ তত্র গমনেন পৰাম্য যক্ত ফল পুাশ্তিঃ বাযুলোক গমনঞ্য। বেগ্ৰাসক্ষঃ ২৪• छब जानार नर्शनाथ नाणशा वत्रमा-नक्रमः २८३ छत्र ज्ञानार वानित्मव क्व भुष्टिः ॥ तुक्त ष्ट्रणा २८२ छै व बाखानवामाए शामहमुमान क्ल शुक्तिः इर्ग गमनकः ॥ जनन्त्रन

২৪৯ তত্ৰ স্নাৰ ত্ৰিৱাৰোপৰাক্ষভগ্ৰ हन्मुलाक शाक्षिः॥ (पब्युपः २ 88 क्करवशामन्खववन १३६ (ब्रांडि- " माज्युरः २८७ कन्यानुमः २८१ छित् नमनाद चित्रिष्ठाम कन भाषिः। (एउड्रूप द्वाना (गात्रहर्नु एान केन ्र भूतिकः। ब्याउमिक्युपः द्वानार का जिया देव ।। शरमधीन मी २८৮ তত্ৰ স্থান তৰ্ণশাভ্যা• গোৰহসু দান কন পুাপ্তি:॥ দওকারণ্য•২৪৯ তত্ত্ব महाद्रात्व बनम्गर्भाट ली महम् मान कन भाषिः॥ भन्न छना भुनः २०० जनामुनः २०७ जन गमनार দুর্গতিনাশ: স্বপবিত্রভাচ ৷৷ সুর্পা-রক ২৫২ ভভুরামভীর্থ ভত্ত স্থানাৎ वर् 🖣 वर्गवक्त कल भूषिः ॥ अख-গোদাবর ১৫৩ ভব সানাৎ মহা-शु**ग्र शुक्षिः (**स्वर्ताक गन्नन्थः ॥ দেবপথ ২৫৪ ভত্র গমনেন দেবসত্র ফল পুান্তি:॥ তুক্কারণ্য ২৫৫ তত্ত भुरवणार जन्त्रः भान मानः मान বাসাৎ মুসলস্য পবিত্রতানুষালোক গমনক ৷৷মেধাবিক ২৫৬ তত্ৰ পিতৃ দেৰ্ উৰ্ণাৎ অগ্নিষ্ঠাম ফল মৃতি নেধানা পুান্তি:।। কালজ্বপর্বতঃ 261 क्रम (न वकुर मानार मूर्य) त्नाक

मुनिशा बिक्डे मई डः १८६ उन ममाकिना नान निज्द दे उन्ने वा जा ज्ञान वा निज्द दे उन्ने वा गा ज्ञान । जिल्हे शान १८६० उन का जिल्हे कि इंडि उन गनना ८ गर्न काम शाकिः। का कि विश्व माना ८ गामरुम् मान कन शाकिः।। का के रान १५० उन महास्य चिक्ठेड उस्मिना८ क्यूंयमी छि:। उन क्रम ठ्या अपूर्ण चिक्ठेड उन मान शुम्किगाजा भन्नमगित शाकि।। म्वर्यवश्व ११५० यन वास्मा गन्ना

गः छव नानर नवं भाग नाणः विकृत्मक भाषिण ॥ मूझाविः २७२ छव महारिव सिक्ठिछ छम् भूसन भूकिमाण्डाः भागमण्डा भूकि। । छत्तीर्थ माह वी क्षानार भवं भाग माणः॥ भूगामः २७० छव जीगानि क्षामि छव यमूनया गर्मा मक्छा यव वृक्षापर्या रिवाः निष्याः भिछतः मनर क्यात मूथा श्वर्या नाग मूगर्ग मिक्ष कण्यक्षत्रां प्रवा नाग मूग्र्ग मिक्ष कण्यक्षत्रां प्रवा नाग मूग्रा प्रवा यख्डाण्डम् विभिन्नः वुक्षा यूग्रा-मर्ख। म मव जीर्था ज्ञा श्वर्यः। जम् नाम म कीर्लन भूवन मृद्धि-कान् छत्। मव भाग नाणः छव

ুশ্বানাজ্ মিলোক্তে এব বেদ বিদ্যা-সু বহু পুণ্য ভত্ পুাপ্তি: রাজস্বা-শ্বমেৰ ফল পুৰিক ভব বপন ্মুহৎ য় ভোগবতী নাম বাসুকি-ভীৰ্থ ২৬৪ ভত্ৰাজ্ঞিবেকাৎ অখ ে নেধ কন পু।প্তি:॥ 🕸 ॥ আফ্রেগ্রা अथुवा वावा काणी काकी व्यवस्थिका াপুরী দারবভী চৈব সপ্তৈভাসোক काविकाः ॥ छोत्र् वावः शुकूर्वाङ (य मृठ] वा नदाः शतः। शब्राह न भूनर्क्का माज्गर्कम् कुविष्ठ्।। ইভি পাদ্মে ভূমিথও ॥ **जीर्थकद्रः पुः बिनः। ই**जि ह्माम्पुः॥ जीर्थकृष् शू॰ जिनः। देखि **यु**की॥ ভীর্থকর: পু• জিনঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ ভীৰ্যনানী জী কালী।ইতি ত্ৰিকাণ্ড-(नदः॥ ভীর্থবাকঃ পু• কেশঃ ইতিহেমচন্দুঃ छीर्थामवी<sup>न</sup> गृ• खी वक्शकी। इंडि ব্লাজনিহণ্টঃ ॥ ভীৰ্থবাসিনি তি॥ তীব • (হাল্যে। ইতি কবিকন্নজনঃ।। ভীবরঃ পু॰ সমুদুঃ॥ ন্যাধঃ। ইভি ৴নিদিনী।। বর্ণসক্ষর জাতিবিংশবঃ। তেওর ইতি ভাষা। সত্রাজপুর ত্রিয়া॰ ক্ষরিয়াজ্যাতঃ। ইতি বুর্ন্ধ-रिवर्खः ॥ हूर्वक्चार्यायाः भूधुका- श्रीक

জাত/। ইভি পরাশর পদ্ধতি: ।। ভীবরী ত্রী ব্যাধপত্নী। ইভিনিদার-কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তি: ।।

ভীবৃ ক্লী অভিশয়: | ইভানর: ||
ভীর: || ভীক্ন: || বলু | ইভানর: ||
কোষঃ | বোহ: |ইভিনান নিঘট: ||
ভীবৃ ে ত্রি অভ্যক: া নিভান্ত: ||
কটু: |ইভানাদিকোর: || শিতান্ত: ||
কটু: |ইভানাদিকোর: ||
|ইভিশয়ব্রাবলী ||

खीतुक्छेः श्॰ न्त्रनः। ইভি রাজ-निर्मकः॥

जीवुनका विज्ञा ग्यानी। हेडि ब्राय-विष्णेः॥

তীৰুজ্বালা জী ধাডকী। ইতি রাজ-নির্গটঃ।।

তীবুবেদনা জী যাতনা। অভিশয-্বেদনা। ইত্যনরঃ॥

अनु की करूँ (दाहिनी।। गुणमूर्वा। दाकिना। इंडि स्मिनी।। नहीं-विस्मियः । इंडि म्बद्धावनी।। नहां (क्यांडियांडी।। उद्गीतृकः।। कृतक्षेत्र इंडि दाकनिर्वाः।।

তীকু লী থর ।। বিষ ।। লোহ ।।

যুদ্ধ । ইত্যমর: । নরণ ।। লেজ ।।

লীঘু । ইতি তউীকাসারসুন্দরী ॥

সামুদুলবণ ।। মুদ্ধ । ইতিমেদিনী

। हिर्द्र कर्श है जिल्ला निर्द्य हैं।। यह के रे कि रूप है कि रूप है जिल्ला है। कि प्र प्र हिल्ला है। कि प्र प्र है। कि प्र कि प्र है। कि प्र प्र है। कि प्र प्र है। कि प्र कि प्र है। कि प्

ভীক্ষ তি তিশা। আত্মত্যাপী।
ইতি মেদিনী । নিরালস্যঃ।।
সূব্দিং। ইতি ধ্রণী। যোগী।
ইত্যন্তব্দালঃ।।

जीक्षकः प् मृत्रकः ॥ गोत्रत्रवंशः। ইতি ताबनिवंधः ॥

शिक्षक एकः शृ॰ शृख्यः। ইতি कर्छा-ध्राः ॥ वर्षः॥ इक्षी ॥ कत्रीतः। ইতি রাজনিষ্টা।।

তীক্ষকটকা জী কছারীবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

তীক্ষকন্দঃ পু• পলাঞুঃ শ ইতি রাজনিষ্টা।

जीक्कणा वि जीवुकणा। उट शयायः। व्यायः भ्विकः २। इंडि विकाश्यम्यः॥

। চব্যক । ইতি রাজনির্মটি । মরক । । তীক্ষকলঃ পু তুর্ক বৃক্ষ । ইতি
। ইতি হেমচন্দু: । क । তীক্ষবত্তি । রাজনির্মট । ।।

जीक्ष्मक १ प्रशासका । इंडि जाक निर्घणेः ॥ जक जून भी । इंडि जङ्गाना ॥ जन्तु क नाम गक्ष प्रशासका । इंडि क हो। ध्राः॥

তীকুগন্ধকঃ পু• শোভাঞ্জনকুছা। ইত্যমরঃ।।

जीक्षणका जी स्थंडवहा॥ कञ्चाती
॥ त्राकिका। इकि त्राक्षनिर्यकः॥
वहा। इडिस्मिनी॥ कीवजी। इडि
निक्तिका॥ म्रिक्षना । इडि
तक्ष्माना॥

जीक्कु धूना जी शिन्न । रेडि त्रक्रमाना॥

डोक्ट्रेडन॰ क्री जर्बत्रमः॥ मुही-कीत्र॰॥ जुत्रा। इंडि मदत्रद्वादनी॥ डोक्ट्रम•क्ट्रेः पु॰ व्याष्ट्रः। ইंडि ताब-निर्यणेशाः

তীক্ষপত্র: পু• তুর্কবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘট:॥

তীক্ষুণুর• ক্লী লব**ক্ষ•। ইতি রাজ্-**নির্ঘটিঃ।।

ভীক্ষপুরা **দ্রী কেতকী। ই**ক্রিপ রাজনির্ঘটিঃ।।

डीक्कनः शु. जूष्यवृकः। हेडि

তু

द्राजनिर्घणेः॥

তীক্ষ্মূলঃ পু॰ শিগুঃ॥ স্বজ্ঞা। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

তীক্ষরসঃ পু• যবকার:। ইতি ক্রমালা॥

ভীক্ষশ্ক: পু॰ যব:। ইতি হেনচন্দু:।। ভীক্ষসাল্লা জ্রী শি॰শপা। ইতিরাজ-বির্ঘণী:।।

তীক্ষ। দ্রী বচা য়া সর্পক্ষালিকা-বৃক্ষঃ। ইতি রতুমালা !! কপিকছু: !! মহাজ্যোতিমাতী !! অত্যন্নপণী । ইতি কটাধরঃ !!

ভীক্ষাবসং ক্লী লোহবিশেষঃ। তীখা ইতি-ইশপাত ইতিচ ভাষা। তৎ পর্য্যায়ঃ। লোহং ২ শস্ত্রায়মং ৩ শস্ত্রং ৪পিণ্ডা ৫পিণ্ডায়সং ৬ শঠং ৭ আয়ুসং ৮ নিশিতং ৯ তীকুং ১০ খল্লং ১১ মুণ্ডিড়ং ১২ অষঃ ১৩ চিত্রায়সং ১৪ চীনজং ৯৫। অস্য গ্লাঃ। কক্ষরুং। উষ্ণরুং। ভিক্তরুং। বাত পিত্ত কফ পুমেহ পাণ্ডু শূল নাশিরুং। ভীক্ষরুং মুণ্ডলোহাধিক-ক্লাইতি রাজনির্ঘটঃ।।

च वृत्छो॥ हि नाया ॥ भूत्छो ॥ १ इंडिकविकन्न क्रमः॥

कु वर भामभूदगः॥ (छमः॥ व्यव-

थात्रगः । के अप्रतः ॥ ज्ञाहरः॥ शकाष्ट्रतः ॥ निरयागः॥ शुक्तः ना॥ विनिगुरः। ইতি क्यत्रज्ञावनी॥ ब

ত্ক্ পু॰ অপভ্যং। ইতি হেমচন্দুঃ॥ তুকাক্ষীরী জী তুগাক্ষীরী। ইতি হেমচন্দুঃ॥

তুগা জ্রী বিশ্লোচনা। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

তুগাক্ষীরী দ্রী ব শলোচনা। ইতি রাজনির্ঘটঃ । ব শলোচনাভেদঃ । অস্যান্ডণাঃ । ক্ষয় খাসকাস না-শিব্ব । নধুরব্ব । হিনত্ক । ইতি রাজবল্লভঃ ॥

अनीरत । भीरनक भुंद्क मकरत ॥ নহীজে শনৌ ত্রাযা নিভি তুক (गर्वः ॥ इंडि अन्याग्डः॥ 🕸 ॥ অথ তুস্ত গুহু ফল । তু: द १ कः শুভ সংযুতঃ শুভক্রৈ মিত্রৈশ্চ मृत्ही यहा। देनवाद शनाउ उनानि ৰা শুভকরানেক বিক বাতিক।। বিভেশঃপুথিতো বিমর্দিত রিপুঃ कोगी म मात्या वसा खालावाहि उ পাদপদা যুগলোরাজা ত্রিকোণেযদা ॥ इ॥ उद्य हन्त्यिन भुमन वभूषि বুধাদনউদ্যুতৌ পুখ্যাতোরিবিমর্দ-কোৎগদতন্ রাজেখরো **ৰূপবান্।** জ্বাপালাছিত পাদপদ্ম যুগলো বা थर्म नीला महान् (मोरेम) (त्रव यूर्डा रुथवा शियल्या मृष्टि जिकारा-. গিচ।। চ।। যদি ভবতি মৃগছে। 🔏 ভূমিপুত্র छमारिय न मिनकत्र मयूथा कुश्रान्ति नर्ततन्तुः । व्यगम उन् র ভীতঃ শত্রুদর্পাপহারী পুণত রিপু नित्तमुः न्यां बुद्धां । य ॥ कन्।। इः भभवाक्नम्। उन्य खिला मिकः मन्यु जो मृक्षा वा যদি সংযুত্তঃ শুভকরৈ জ্জাত স্তদা ज्भििः। यादायाः खत्राशि ग्रहकद्विणाः यारेज संशी कम्प्राज

তুষ

नम्बाञ्घानीकश्विगीवज्यासि ভিকোণেপিচ।। বু।। তকে ভরে। निव थरगन म्रह्भा ताका ভरविमन्त् সমান মূর্ভিঃ। গছাত্ব নৌকা নর পূর্ণলক্ষী: পৃথীপতিঃ স্বস্য ত্রিকো-নগেপি।। বৃ।। ভক্ষে ভ্গৌ শুভ जुक्द भुगु उठ मृष्टे रेम वार्टिंगूनः न যদি পশ্যতি নিত্র সংঘান্। ভূপা-বিপো ভবতি ফীর্ত্তিকরঃ পুধানো मीर्यायूकगुम्थ ज्रुग्ज्छ ब बिका-(१॥ भू॥ उत्क भानी मित्र थरगन . দৃষ্টে পুচও দঙো নৃপতি পুখানঃ। नम्भाराज मिश्रमानम धुवी विकाग-গে চাপিনরেন্দুমৃর্জিঃ॥ শ।। ভবতি थत्र निभारना नी हत् किः भुजाभी इय গজ ধন পূর্ণো জাতিবর্গে বিরক্তঃ। **স্টিলম্ভি রনীতো ভ্রিভাণ্ডার**. যুক্ত ন্তমঙ্গি মিথুন সংস্থে জাগতে भान(वन्द्रः॥ द्रा॥ मृशशिक्व व्य कन्द्रा कर्क देश्हर द्वारही खविख विश्रुन লক্ষী রাজ রাজাধিপো বা। হ্যগজ नद्र तोका मिखें नाई लिया নৃপতি রমর প্রেগ রাহাভ্রমী हित्रायुः॥ त्रा ॥ व्यति निथन व्यय खर्के की खिंठ पाउट कनः वार्थः। (वेन्सु ব্রিকোণে লাভে বা ভঙ্গফল খথো-

তৃত্বীপ

ুদ্ধিই ।। ইতি কোষ্টাপুদীপঃ ।। চুক্কঃ ত্রি উগুঃ ॥ পুখান ।। উন্নতঃ। ইতি শদরত্বাবলী ॥ কিঞ্জলে ক্লী । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

जुक्क कः भू श्रागव्कः। ই छि भद्रज्ञावनी॥

ভুষ ভদুঃ পু• মদোৎকটহন্তী। ইতি মেদিনী॥

जुक् जुन् की निर्मितः। ना मिक्का भूतिका। उन्हा कलमह मूनाः। त्रिकानः। निर्माणवः। सामृद्यः । गूकानः। कञ्ज भिकामुमाज्यः । भूतिः भाषाह्यः। स्थाकत्रव्यः। हेजि द्राक्रनिर्यण्यः॥

ভুক্ষশেথরঃ প্ পর্বতঃ। ইতি শব-নালা।।

ভূক। জ্ঞা বংশলোচনা।। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

जूकिनी जी गहामजावती। हैजि त्राजनिवर्णः ॥

जूकी जी इतिमा। वर्षता। हैजि भिन्नि॥

তুলী পু ওক্ষান ছিতঃ। উছছ-গুহং। ইতি জ্যোতিষ ।। তুলীপতিঃ পু চন্দুঃ। ইতি বিকাণ্ড-শেষঃ॥

जूकीमः भूर मितः॥ क्षः॥ मूर्यः॥ १७ मेपत्रङ्गातनी ॥

তূह• ক্লী পুলাক**ন•। ভূবি ইতি** ভাষা।ইত্যুণাদিকোৰ:।।

তুহঃ ত্রি শূন্য:। ইত্যমর:।। হীনঃ
। ইত্যুণাদিকোবঃ ।। অলঃ । ইতি
হেমচন্দুঃ ।।

जुहकः भू॰ এর ওব্**कः। ইতি শ**দ-চন্দ্রি।।

তূ ह বান্যক : ব্লী পুলাক: । আগড়া ইতি ভাষা। ইতি রত্নমালা।।

जुहा जी खन्या। नीनीवृक्तः। ইडि ভাবপুকাশः॥

তুজ ইক দীপ্তো। নিকেতনে।। হি•সাযা•॥ বলে॥ দানে। ইতি ক্ষিকলুজ্ম:॥

তুল ই পুগে।। বলে। ইতি কবি-কলুজমঃ।।

তুল • হিংসে। ইতি কবিকল্পদাং॥
তুট শি কলহে। ইতিকবিকল্পদাং॥
তুটুমাং পৃ• উন্দুক্ঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥
.

তুড শি ভেদে। ইতি কবিকল্প দ্বা।।
তুড ই ড বথে । নিম্নীডন ইতি
যাবং। ইতি কবিকল্প দ্বা।
তুড ঝ বথে । দ্বিগাক্সণ ইতি

তুজিল

যাবং । ইতি কবিকল্প জ্বঃ ।।
তুত্ত 
ত্ব 
অনাদরে।ইতিকবিকল্প জ্বঃ ।।
তুণ 
শ্ব 
ভাটিলীকরণে।ইতিকবিকল্প জ্বঃ ।।

তুনিঃ পু॰ স্বনিঃ। তুন্নবৃক্ষঃ। ইত্য-শর্টীকাষা• স্বামী॥

তুও ক্লী মুখ । ইত্যমর: ॥ তুওকেরিকা জ্লী কার্পাসী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

ভুওকেরী দ্রী বিশ্বিকা।ভেলাস্কচা ইতি ভাষা। ইত্যমরটীকাষাণ , ভরতঃ।

ভূঙি: পু॰ মুখ•॥চঞ্চুঃ॥ইতুऽণাদি-কোষ:॥ নাভৌ জ্রী।ইতি শব-রহাবলী॥

তুণ্ডিকা জ্রী নাভিঃ। বিশ্বিকা। ইতি শদ্রহাবলী।।

তু গুকেরী স্ত্রী কার্পাসী। বিশ্বিকা
। ইত্যমর: ॥ অস্যা ক্রপান্তরাণি।
তু গুকেরিকা তু গুকেরিঃ তুগুকেরী তু গুকেশী। ইত্যমরটীকা॥
তু গুকেশী স্ত্রী বিশ্বিকা, । ইতি
শব্দিকা॥

जु ख़िनः वि क्षनािनः। वृश्यािकः। वृश्यािकः। वृश्याः।

ज्िनः जी व्कनाजिः। इज्यनतः॥ ज्या जी नीनीव्कः॥ कूरेन्ना।

ত্থা

ন্থরঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ॥ তুথা তক ভ্রো। ইতিকবিকন্দ্র-জনঃ॥

ত্थ की धर्मतीजृथः॥ जञ्जनराज्यः। जु जिया इंडि जावा। ज॰ भग्रायः। নীলাঞ্জন: ২ হরিতাশ্ম: ৩ তুত্থক: ৪ নযুরগুবিক ৫ তামুগর্ভ ৬ অন্তোভব প ন্যূরত্থ ৮ শিথিকপ্ত ৯ নীল-১০। ইতি রাজ-নিঘণ্টঃ৷৷ ভুত্থাঞ্জন•১১ শিথিগুবি• **১২ विज्ञक ১**১ मगूत्रक ১৪। · ইত্যমর: ৷৷ তূতক· ১৫ মৃষাতুণ্য• ১৬ মৃতামদ ১৭। ইভি শব্দ-हिन्द्का ॥ अमृख्नाः । कर्नुव । কষাযত্ত্ব। উঞ্জ্ব। স্থিত্র নেত্রাময नानिव्। अर्वविष (माय भगनव्। বান্তিকারকত্বঞ্চা ইতি রাজুনির্ঘণ্টঃ ॥ कात्रवः। नियमवः। मध्वः। ভেদকত্ব। কৃমি-কণ্ড সপ্ত কফ নাশিত্বঞ। ইতি রাজবল্পভঃ।। 🕸।। **त्रमाक्षनशाना**वा । इंजुरना मिरका यः ।। অগ্নিঃ । ইতি সংক্ষিপ্তনারে উगानिवृबिः॥ यशो शूरा हे जि (रुमहन्तुः ॥

जुल्यक क्री जूला इंडि मस हिन्दुका। जुल्या क्री नीनी वृक्षः।। कूरे पुना। 'ভূনিভ

ইর্সের:।। মহানীলী। ইতি রাজ-নির্ঘট:॥

ভূত্যজন ক্লী উপধান্তবিশেষ:। ভূত্য । ইত্যমর:।। ।

তুদ শঞ্ ঔ ব্যথে। ইতি কবি— কল্লফমঃ।। '

তুন্দ কুলি উদর•। ইত্যমরঃ॥ তুন্দ কুলিক। জ্রা নাভিঃ । ইতি হেমচন্দুঃ॥

তুন্দকপী স্ত্রী নাভিঃ। ইঠি ত্রিকাও শেষঃ।।

তুন্দ্পরিনার্জ্ঞ: তি তন্দপরিস্কঃ। ইত্যনর টাকাযাণ রমানাথঃ॥

তুন্দপরিমৃদ্ধ: ত্রি অসমঃ।ইত্যুমরঃ॥
তুন্দি ক্লী উদর•।ইতি হেনচন্দুঃ॥
গন্ধর্র বিশেষে পু৽।ইতি জটাধরঃ॥
তুন্দিঃ স্ত্রী নাভিঃ।ইতি ত্রিকাণ্ড-

(मक्दा

जूनिस्कः जि विभाणकार्रेः द्वाकनः। इति भद्रद्वावनी।।

তুন্দিকা স্ত্রী নাভিঃ। ইতি শব-।। রহাবলী॥: •

তুন্দিতঃ ত্রি ত্ঞিলঃ। ইতি ভরতস্য শুদ্দিরপকোষঃ ।।

जूनिएडः वि जूनिएनः। ইতি मफ इङ्कादनी।। ष्ट्रक

ज्नितः विभागमध्यामाः।
ज्राप् इंडि जाया। उर्पर्शयः।
भिविश्वः २ वृष्ट्यकः ७
जुन्तिकः ८ जुन्ति ।
इंडि मद्रवायनी॥

ত্নিৰেফন। জ্ৰী ৰপুৰী। **ইভি** কাজনিঘটং।।

তুন্দী জ্ঞানাভিঃ। ইতি শব্দর্গাবলী।।
তুন্দী জ্ঞান্ত তুন্দিলঃ। ইতি শব্দরহ্লাবলী অমরক্ষা

তন্ত্র পূথ নন্দীবক্ষ: । তুঁদ ইতি ভাষা। ইত্যনর: ॥ বংথিতে ত্রি। ইতি তুদ্ধাত্বর্থ দশনাৎ ॥

্বতুলবাষঃ পুশ্ শৌচিকঃ। দর্জী ইতিভাষা। ইত্যমন্ত্রঃ॥

তুর 

বধে। ইচি কবিকলুফনঃ।।

তুর 

বধে। ক্লেশ। ইতি কবি
কলুফনঃ।।

তৃত্ন ত বধে। ইতি কবিকল্জনগা।
তৃত্ন শ বধে।। ক্লেশে। ইতি কবিকল্জনঃ।।

ভূপ 

বংগ। ইভি কবিকল্পদ্মঃ।
ভূপ প্রাক্তন, ক্লেশ।। বংগ। ইভি
কবিকল্পদ্মঃ।।

তৃপ ইক অদ্নোইতি কবিকল্পনঃ॥ তুক পশ শ্রেশে॥ বধে।\ইতি फूबि

कविकन्नक्रमः॥

তুক • ব্ৰে। ইতি কবিক্লুজনঃ।। তুব ই ক অন্দে। পীডাবামিতিযাবৎ । ইতি কবিকলুজনঃ।।

তুভ ৯ ড হি শো। ইতি কবিকল্প-্জনঃ।।

জূত্র য় গ হিংসে।ইতি কবিকল্প-জনঃ॥

जू ज य श हि एम। ই जि क विक ज़ - क मः ॥

जून्तः भुः ती जून्तः। ইত্যমর টীকাযা-রাযমুক্তঃ॥

তুমুল প্লী রণসঙ্কুল । সঙ্কী প্রদান । ইত্যমর মেদিনী করে।। পরস্পর-সম্বাধোরণস ঘটঃ। ইতি ভরতঃ।।

তুমুল: পু• কলিবৃক্ষঃ। ইতি নেদিনী ।। ব্যাসলো রণ: । ইতি ত্রিকাগু-শেষ:।।

जूबः गु॰ जी जनातूः। ইত্যন্তর টীকাষা•ভরত:।।

जूबकः शृ॰ ञानाबुः। ইতি नद्यञ्जावनी ।। त्राज्ञानातुः । ইতি त्राज्ञनिष्णेः।।

তুম। স্ত্রী অলাবু:। ইতি শন্তর রাবলী। গবী। ইতি ত্রিকাণ্ডশেব:॥

जूबिः जी जनातुः। ইতি नप्तद्रा-दंनी। **जुर्**क

ज्विका जी जनातूः। इंडि नर-त्रज्ञावनी ॥ कर्र्युज्ञी इंडि ज्ञार्धः निर्चिः॥

তৃষিনী জী কটুতুন্মী। ইভি রাজ-নির্ঘটঃ॥

ত্ধী ত্রী অলাবুঃ। ইত্যমরঃ ॥ স্পলিকবৃক্ষঃ।ইতিরত্নসালা॥

ত্মীপুর• ক্লী লতামুজ•। আলগবুপুর•। ইতি হারাবলী।।

ज्युक• क्री. शनाव्यकः । **३७** २९५२मुः॥

ज्यूकः भु• यमातुः। ইতি ভরত-পৃত হয়ুচন্দুः॥

जूबूबी खी अकूबी॥ धनग्रकः। इंडि (मिनिनी॥

তৃহ্ব ক্লী সন্তুষ্ক। ইত্যমরটীকাথা•-ভরতঃ।।

उत्स्वः शुः गक्त बित्यवः। सर्गगायकः

। ইতি জটাধরः ॥ অহনুপাসকवित्यवः। ইতি হেনচন্দুः॥ वृक्षভেদः। তৎ পর্যায়ः। শুলম্ন: ২।
ত রহ্মালা।।সৌরজঃ ৩ সৌরঃ
বনজঃ ৫ সানুজঃ ৬ দিজঃ ৭ তীক্ষকল্প:৮ তীক্ষ্ফলঃ ৯ তীক্ষ্পত্রঃ ১০
মহামুনিঃ ১১ মুটলঃ ১২ সুগঙ্কিঃ
১০। অস্তিশাং। মধুরবৃং। তিক্তবৃঃ

্ৰা,কৰ্টুত্ব । উষ্ণত্ব । কফ বাত শ্ল 🎖 छाल्याम् द्रायमान किमि नालिवः। • विद्वारी भनवृष् । ই छि द्राव्य निर्घ छै:।। ভুর লির বেগে। ইতি কবিকল্পদ্রনা। তুর: बि বেগ্বান্। ইতি তুরগ नद्रीकायाः र्वत्रजः॥ ত্রগঃ পু॰ চিত্ত।। ঘোটক:। ইতি ` ∡नसिनी॥ তুরগগন্ধা জ্রী অখগন্ধা। ইতি **ब्र**ब्भाना॥ जूतगत्कावर्ग्यक द्वी जांजावामकना-ত্যাগঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ তুরগী তি **অখারোহ:।** ইতি (रुम्हन्मुः॥ जूतगी जी अश्वनका। इंडि सिनिना। অশ্বরী।ইতি ব্যাকরণ ॥ जूतकः भू जो वाहेकः। इंडामझः॥ চিত্ত•। ইতি শব্দর রাবলী।। जूतक्तः भू (वायकाक्छिः। इसि-ষোষা ইতি খ্যাতঃ। ইতি রন্নমালা जूतक्षियगी जी सहियी। हे जि त्राजनिर्घणेः॥<sup>\*</sup> তুরু স্পুৰঃ পু॰ यवः। ইতি রাজ-क्रिवं है।।

্ভুর্স্ম: পু• জী বোটক। ইত্যমর:॥

जूतक्रकुः शू किमतः। शेंज ॥

किंगध्यः। তুরক্বদ্স: পু. কিন্নর:। ইত্যমর:॥ जुबकाद्भिः भू कन्नवीतः। इकि नञ्ज-मानां॥ তুরব্দিকা ত্রী দেবদালীলতা। ইব্রি ब्राजनिर्घक्तः॥ ज्यकी जी अधगका। हेर्जि स्य-त्रज्ञावनी ॥ (वार्षिकावृक्तः । इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ 🛭 তুরায়ণঃ ত্রি পরায়ণঃ। ইত্যমর-**होकाया** श्वासी॥ তুরাষাট্ পু• ইন্দু:। ইত্যমর:॥ অসা ৰূপান্তর । তুরাবাড্।। 🛮 ভুরি: ত্রী ভুরী। ইতি শব্দরত্বাবলী।। তুরী স্ত্রী ভস্তবায়স্যকাণ্ঠনির্মিতোপ-कत्रन विरमयः । उৎপर्यायः । ভস্ত্রকাপ্ত ২ তু লি: ৩ তুলী ৪ তুরি: ৫। ইতি শদররাবলী।। তুরীয• ক্লী বুন্ধ। ইতি বেদান্তসারঃ।। जुत्रीयः जि ठज्थः। इं जि मूक्षतादः॥ जूतीयवर्गः शू॰ मृदुः। ইতি হলायुषः॥ जूकद्वः भू• भक्तम् व्याखनः। व्यिना-রস ইতি,খ্যাতঃ। তৎপর্য্যাবঃ। यवनः २ शृगुः ३ शृगुवर्गः ८ मूगिकिकः ৫ সিহুকঃ৬ সিহুসার: ৭ পী ভ্রমার:

৮ কপি: ১ পিণ্যাক: ১০ কপিজ্ঃ১১

তুল

कनः १२ निक्षितः १३ निक्षितः १४ । १८ करतवतः १८ कृष्मिकः १४ । १८ करतवतः १८ कृष्मिकः १४ । १८ कर्षाः । १८ कर्षाः । १८ कर्षाः । १८ क्ष्मिकः । १८ क

जुर्गः वि ठजूर्थः । इठि मुक्षत्वायः ॥
जूर्गः वि ठजूर्थः । इठि मुक्षत्वायः ॥
जूर्गः प् य्याठिवाक्षभुवः । यथा ।
य्याठि क्वाठ । य द्युः भा क्वाटः
क्वाटा वयः यः नश्यहिता ज्याटः
भुवान महि ए जुर्द्रमा ज्व यान् । जिल्लाम
हत्वपृ । भिणिजाणियु कार्वियु
नूनः वाका ज्वियु जिल्लाम
भूत्वपृ जिर्युशानिः गर्ज्य ह ॥
भूत्वपृ जिर्युशानिः गर्ज्य ह ॥
भूत्वपृ विर्युशानिः ।।
जन्य कि भित्रमार्गः हिक् किविकन्नक्रिनः ॥

তুক্সী

कनुः >२ निश्चित्रः >६ निश्चित्रज्ञनकः । जूनमातिनी जी जूनना शिक्ष भक्ष >८ करत्वतः >६ कृष्टिमकः >৬ । माना।।

> जूननी सी सनामश्राजव्कः। ७९ পর্য্যায়ঃ। সুভগা ২ ভীবাু ৩ পাবনী ৪ বিফুবল্লভা ৫ সুরেন্যা ৬ সুরুসা १ कायहा ५ मूत्रेषून्यु जिः अमृत्रजिः २० क्ल्लाबी २२ स्क्रिन প্রিয়া ১৩ অপেতরাক্ষরী ১৪ শান্মা ১৫ গৌরী ১৬ ত্রিদশনজ্ঞরী ১৭ ज्उन्नी ४५ ज्उभवी ४२ । इंडि রাজনির্ঘটেঃ ॥ পণাসঃ ২০ বৃন্দা ২৯ কঠিঞ্জর: ২২ সঠেরক: ২৩। ইতি मक्तक्षावली ।। रिक्कवी २८. भूग्रा २० भविजा २७ माववी २१ वम्डा ২৮ পত্রপুদ্ধা ২৯ সুগন্ধা ৩০ গন্ধ-হারিণী ৩১। ইতি ভরত ধ্ত मध्यिवः॥ मृत्रवल्ली ७२ (পु उदाक-नी ७० नुबहा ७६ गुम्मा ०६ जुल ভा ৩৬। वङ् मक्षत्री ०१.(५व-षुन्द् जिः ३८: ইতি ভাবপুকा मः॥ 🕸॥ কুদুপত্র তুলস্যাঃ প্রসায়ঃ ৷ খর-পত: ১ बश्चीतः २ পঞ্পুদ্ধ: ৩ क र जूकः ८ जन्न भवः ६ मभी द्राः ७। ইতি রহমালা ॥ सक्रकः १ भुक्भूद्वः (b) ইত্যন্तः ॥ 🕸 ॥ गङ्ग जूनागाः भग्रायः। मूगक्तकः ১

ভুনসী

शक्षनभा २ जोक्षगक्षः ० किष्कुकः ८ शक्षकिष्ठः ६ जूगक्षः ७ स्वि-कुम्पू जिः १ ७८७ तक ज्वजाः शयायाः। ইতিবোকব্যক্ষারং॥

द्राप्त्र प्रायः। देवन्रश्रेकः । ১ विन्याद्धः २ जन्नमानकः ०॥ 🕸 ॥ শ্বেত তুলস্যাঃ পর্য্যায়ঃ। অর্জকঃ ১ ब्यउपर्नामः २ गन्नभवः ७ घरठेत्रकः ৪ অসুজকঃ ৫ তীক্ষ্ণ ৬ তীক্ষণদ্ধঃ ৭ সিতার্জক: ৮ ॥ জনা কৃষ্তুলস্যাঃ भय्त्रयः। कृष्णक्रकः ३ कृष्य्वगी र কালনান: o করালক:৪ কালপণী @ म्ब्डिः ७ गानकः १ कालमानकः ৮ ॥ 🗱 ॥ वर्वश्रेज्वम् ११ १ वर्षायः। সূরভিঃ ১ তুলসীছেবা ২ সুরস। ৩ অপেতরাক্ষসী ৪। ইতি রত্নমালা।। বর্রী ৫ কবরী ৬ তুক্রী ৭ খরপুরা ৮ অর্থিন্ধিকা ১ ৷ ইত্যের: ॥ 🕸 ॥ नामानाः जुनन्ता खनाः। कर्षेत्रः। जिक्दः। উक्दः। সুর্ভিত্ত**ः।** শ্লেম বাত জন্ত ভূত কৃমি বান্তি নাশিত্। कृति कात्रिष् का है जित्राक्र निर्मणेश्वा দাহ পিত্র কারিত্ব। দীপনত্ব। হুঙ क्हु भू शार्श्वदा निवृष् । न्क्र। क्ष्म -- চতুলগী, ভগৈ স্থল্যা ইভি ভাব-नुकामः॥ अगा प्रभित्यं ..

। गालाकं इय जूननी गानी প্রিকৃষ্ণপূরা ত্রীকৃষ্ণেন সহ অস্যাঃ की**ष्ठ / मृद्धे। द्राथा मामाभ वः मान**थी• যোনি বাহি। ভ হুবা সা খিলা গোবিন্দ ভা মুবাচ ত্ব ভারতে ভগ ভঞ্চমমা•শ•নারাযণগলভি্**ষ্**সি। সা পৃথিব্যা ধর্মাধ্র রাজসিল্লা माधवाा कार्खिकी भूर्निमाया बाजा नद्रा नार्या का मुद्देश जूनमा नाजू মবোগ্যা স্তেন ইছ লোকেপি তুল-সীতি নামা খ্যাতা। সাতপ স্তর্তু क्न गठा उपानी जापा नाभार সুদাম গোপালো দানবীণ যোনি• পুল্যে শহুচ্ড নানা খ্যাতঃ সোপি कुकारण क्यां नर्वावश्रव शासः যদা তদ্পস্থাঃ সভীত্ব নাশো ভবি-याञ्चि उपा महिद्याना देखि दुना उमुक्तवान् । मः जूलमी मूवाइ (एवान) अधिकात करात (एवाः বুন্ধসভা পভা: বুন্ধা ভৈ: সার্ধ निवालाक गडवान् निवरेखः नार्स• रिक्रिके गडवान्। नात्रायान वृक्षान म्वार मेम भून ग्रीदा भिता যুদ্ধার্থ ভক্তগছতু অহঞ্চ শ্রুচ্ড-करभग उट भन्नाः मजीवः कृषः করিব্যামী ইতি শুদ্ধা শিব ঠিক खगान म निर्वन मह्युष्क नियुक्त खगानी नातायम छ८ भारी छप्त श्रिम धर्मिकवान शण्डाट मा गाँजायम खाद्वा मणाण द्वा भाषात्मा छ्व स्वचारहा साद्यान विस्वतिकानि हेंदुःद्वा उह्नद्वात भागांक स्राताम क खाद्वा नावायम छ। स्वाह द्वाम क

ভ্যক্তা রমা সদৃশী ভব ময়া अह की क हैया छन् गं छको नहीं ভবতু তব্*কেশ সমূহ ভল্*সী নাম্ৰা भूशव्का जवज् जरा उ८ अर्ब म जूर । इंडि वुका रेववर्ङ ।। क्या नामा পুরাণমতে জলম্বরপত্নী রুন্দালাবণ্ড मर्भानन विक्रुम् अः छात्रमारु वाद्रशार्थः দেবা মহাদেব শরণকুতাঃ মহাদেব डानुबार माया मानास्य (छ मायाः जुडेतुः भाषा जानुसार जह तकः नष् ज्या खरेप लो दी नची स्था करना ভিধানি ভা যুদ্মাক কার্য্য বিধান্যন্তি उहुता (रवा छात्राः नवीलवा-গত্য পুণেমু: তা তেভ্যো বীক্নামি ममु वाकाति बगमून एक विकु তিষ্ঠতি ভবেমানি বাঁজানি বপষ क्ति । उथा ठक् उद्योक्ति । जस्म व्काञ्च जन्माबीमान् जी जूनमीह बादी स्था न ज्वा नाव की व ना

ङ्डा डूनभी भोग्र•म ड्डांश का। ज्वमा माहाबार यथा। व्यावक া তুলস্যাঃ শৃণু মাহায়্যুৎ পাপ্স• সর্কামদে। যৎ পূরা বিষ্ণাপ্তে। তত্তে বৃদ্ধান্যশেষতঃ ॥ সম্পান্ত कार्डिक पृष्ट्री नियरमन बनाफनः। প্রনীয়ো মহজ্ঞিচকোমলৈ ভলসী मरैवः।। मृष्टा न्यूडा ख्या बिर्जित কার্ভিকে নমিতা্র্চিতা । রোপিতা সেবিতা নিভ্যা পাপ হস্তি যুগা-क्किंउ।। अक्षेश जूननी रेवस সেবিভা দ্বিজ সত্তম। যুগ কোটি नर्नुारि उ क्निडि रुद्ध ग्रि॥ রোপিতা তুলসী যাবৎ সকতে মূল বিস্তৃত তাবদুগ সহসাণিতনোতি मुक्छ रुतिः॥ जूनमी मन भूदानि . (या मन्त्राष्ट्रद्रय मून । कुार्न्डिक সকল পাপ সো হব দ্বনাজিতি प्रस्थ ॥ (द्राभिज ज़ूनमी यावर বন্ধতে বসুধা তলে। তাব্ৎ কর সহসুণি বিষ্ণুলোকে মহীযতে ৷৷ যৎ কল সর্গুরেশ্চ সর্গত্তেণ যৎফল । ज्वम्। उपलाद्धन भूगाः महादिकु भृत्रत् ॥ जुद्रानी गन्न बानाय यव गहि जाक है। मिला मण भूना छ।-म् ज्ञ गु।माःम्ड्डिशन् ॥ ज्नमी

তুলসী

কাননোজ্তা ছাবা বত্ত ভবেমুনে তত্ত শুদ্ধে পুনাতব্য পিতৃণা তৃপ্তি হেতবে। তৃলদী বীজনিকরো যমিন পত্তি বৈ মুনে। তৎ ছান।

।। यिभिन् शृहि विजाम् छ जूननी তল মৃত্তিকা ৷ তত্তৈব নোপসপত্তি - इं उत्न यम किन्न दाः।। जून मी मृखिका विश्वा यकि भागाम् भदिउहिन्।। যমেন নেক্ষিতৃ শক্তে। মুক্তঃ পাপ ॥ শতৈ রপি ॥ তুলসী মৃত্তিকা লিশু ननारे वना म्नाउ। जन न्माङ নো তৃষ্য কলি মুনি বরোভম। यः किन्दुननी मूल कार्लिक क्षिवित्रुयः। मीशःममाञि वित्रुन्म न लाङिषक्व र नारः ॥ जूलनीकाननः रिकद भृष्ट् यम्प्राविष्ठरा उन्गृहः जीर्थज्उ । हि नायांडि यमकिक दाः॥ म्मन नर्मरायास गक्ताज्ञान छरेष-वह । जूनशी वन मःमर्गः मझ म ত্র্য স্ত ।। ব্লেপণাৎ পালনাৎ रत्रवाष्ट्र मंनार न्यमंनाश्गाग ठूलत्री দহুতে পাপ-বাত্মনঃ কায় সঞ্চিত ।। जूननी मछात्री छ र्दः कर्गाप्तित হরার্চন• । ন স গর্ভ গৃহ• যাতি ॥ मुक्जिजागी ज्यमनः।। गूर्वाएगनि ...

जीर्थामि मक्षाम्।ः महिङ खणा। वामूरम्वामरया रमवा वमस्रि जूननी पत्न / जूननी मक्षती युक्ता यस भागाम् विमक्षि । यस्मा म वीकिञ् শক্তো যুক্ত: পাপশতৈরপি॥ ইতি भाष्याख्रथछ।। 🕏 ॥ देविक खननी त्क उिठे ि विक में खर्ग। जीवन किम्माः मार्व गुक्त विष्टु निवारगः॥ किनवः शब अवशुरू প্ৰাণেত পুৰাপতিং ৷ প্ৰ निविखिष्ट ज्वामाः मर्वापिय दि॥ লক্ষ্মী সরস্বতী চৈব গায়ত্রী চণ্ডিকা उथा। नहीं हामा (मंदशक्त उट् भूरवृत् यमिष्ठ रेव ॥ इतिमा १ विः শমন শৈচৰ নৈথাজো বৰণ তথা। প্রনশ্চ স্বের্শ্চ উদ্বাধার্যা বস-छानी ॥ जारिजारि गुराः गर्व विष्यत्तवाक नहीं। वनवा वनव ৈচৰ ভখা দেবৰ্ষযো হথিলা।।। विम्यास्त्राक्त गन्नर्वाः निकाकाभावम ख्या। जूननी भव मानुजा मईना নিবসম্ভি বৈ ॥ চিবৃত্তি ভূণলাভীনি जुल शै म्ल बानि दि । उपस्च हा বুক্ষহত্যা শিচনোভি তৎক্ষণান্ধরিঃ ॥ श्रीयकाल विकाम् अ भूगीकः भी जोन क रेनो। जुननी (महन 🍂

नत्त्रा निर्दाण माशु याट्या हन्तु उशः वा ছव वा ज्वरिम यस यह छ। विष्यवाद्या निमायिषु न मृद्धः नर्व भाउरेक: 11 दिमार्थ **१ क** उधादां जि ्त्रिक्टियं खनत्री कनः । (महस्य সো, হখমেধন্য ফল - প্রাশ্নেতি **्निअः** ॥ कमाहिजूनत्रीः पूरेकः সেচ্যেছে। নরোভ্রমঃ। ভঙ্গ্য বেশ্মনি বিপুষে লক্ষ্ম ভৰ্তি নিশ্চল। ॥ लागरेय खलती मूल यः कूर्यप्राप-नुलिशन । সমার্জনঞ্চ সক্তে তস্য পুণ্য ফল শ্ণু ৷৷ রকাংসি তস্যু याविष्ठ मूत्रीज्ञानि देविभारत । ভাবৎ কল্ন সহসাণি মোদতে तुक्रा भर ॥ यक्षर्य कर्य वक्रा মনুল: পৃথিব্যা: নারায়ণ প্রিয়তমা: जुननी विना ह । उर नई स्मर বিফল ভবতি শ্বিজেন্দু পদ্মেক্ষণো-পি নহি তুব্যতি দেবদেবঃ।। যস্য স্যাভুলসী পর মুখে শিরসি কর্ণযোঃ । মৃত্যুকালে ছিজপ্রেষ্ঠ তস্য স্বামী ন ভাক্ষরিঃ।। ইভি পান্মেকিবাযোগসারং ৷ ৠ সমুতঃ नर्वजीर्थिषु नर्द्रयक्तिषु नीकिः। তুরাসী, পরতোবে চ যে৷ ভিষেক:

यर कृतः न ज्ञा नद्रः। जूननी अञ हातन छ८ कनः कार्डिक गठिः॥ তুলসী ভোষ কণিকা স্ভ্যুকালে চ (या वा छ । इज्यान मनाक्श रेवज्रके ज भुया 🤝 🕫 ॥ जिक्स्ब তুলসীপত্ৰ• শুদ্ধ• গয়ু বিত• সতি । भुत्राक्त बुद्ध वा मान वा शुविश्वायाः সুরার্চনে ॥ ভূগত তোষ শতিত। यम ड विकाद ग्रिश मूक्छ जुनभी পত্र॰ कान्नामन कर्या । 🏶 ॥ जूननी हरान निरम्य कारना राश्रा । शृतिंगाया समायाक जारचातः রবিস•ক্রনে। তৈলাভ্যক্ষেত স্নাত্তেন न्यशाक्त निनि मक्तरयाः ॥ अस्मोत्ह **২**শুচিকালেচ রাত্রিবানান্তিতেপি বা । তুলসী: যেচ চিন্নন্তি তে ছিন্দন্তি ह्रातः नितः॥ 🗱॥ जूननी म्यामानन নিথ্যা পুতি জ্ঞায়া• নিথ্যা শপথেচ क्लारमा यथा । जूनमी चक्रदा क्दा স্বীকার থো ন রক্ষতি। স যাতি कानभूबक यावहःमु निवाकःदो ॥ করেনতি মিথ্যা শপথ তুলস্যা য়ো হি মানবঃ। স যাতি সম্ভীপাকঞ্চ याविष्मु । कृष्म ॥ इति वुका-रिवदर्ख भूई डिय छ।। 🗱।। जुलमीः मनाहरत्र ।। भवामगुरु पात्नन ॥ भव हरायी मद्रा यथा । माङ

स्मितिशाविक क्रम्यानक काञ्चित । नात्राय्गमः भूकार्थः हित्नाकि द्वाः न्स्भ। २ छाउ ॥ ज मूर्यः नातिका छ।रिन्धः मुगरिक्षःत्रशि (कमकः। प्रया विमा रेनवः छुन्ति हित्नामि जा मञः শুভে।। বুগাবিমা মহাভাগে সমন্ত॰ कर्यानदृत्रः। अड स्त्रति स्वि द्वाः -हित्सिम वद्रमा ज्वः॥ हयत्नाज्व मूर्थ शक्ति विक्रिक्ति वर्जर । उद क्रम्य बगन्नाक जनित वार समा-महरा। क्डांक्षणि दिनाग्यान् भविद्वा रेवकरवा बनः। क्वजान जनः मञ् हिन्याज्वभी मल्या मार्टनः मत्न खथा:क्रारेत महोगरं जूनेगी-क्वर । यक्ष न कलार्ड नाथा ज्नमा विकामख्याः ।। • विना हमान विभू खन्नाथ। यथा जातर । उथा इहि वाथा विका मी गर्ड তুরসীপড়েঃ ॥ ইতি: পাদ্দে ক্রিয়া-(यागमातः।। इत्रा जूनमी कार्ड भनना माइचिंद्र वथा। जुन मौकार्ड नियान मालाः गृङ्क छि य नहाः। शहर शहर হুখ্যমেধানাঃ লভতে নিশ্চিত ফল ॥ हेि तुक्तिवर्ष भूकृष्टिथ ७०॥ ' भावरे उ खन भी कार्र भागा सिक्ष मम् छ । व। बागानिका गुयाक्न (वृत्रक्त-

ক্তন্য লক্ষণ।। হরিভক্তন্য তুলনী अक्षकाष्ठ्रममुख्या। हिङ्गार्थामात्राता यान। गुत्रा क्रकन मणिजा।। इंडि भाष्या उर्वेशकः ॥ क्षा भाष्य भूकत जुननी निरवरदा यथा। जुननी नुष्ठि সণেশ কার্ক্ট । পুরাণা-সারভূতা ত্ব॰ ভবিষ্যাস মনোরমে। কর্লাণশেন मङ्खाला वर्ग नातायन शिया।। शियादः नर्वत्तरानाः क्षना हित्न-व अः । श्का विभूक्तिमा नृगाः सम ত্যাল্যা চসর্কা॥ ইতি বৃন্ধবৈবর্ত্তে ्रगराम्थ्य खग्राक्का जून ग्राः खरवा यथा। नावायण्डेवाह। वृन्हाः बृन्हावनीः বিশ্বপূজি ভা•বিশ্বপাবনী।পুল্ল নারা• नित्मी क जुनमी क्क नित्नी ।। **এ**ड्रहामाष्ट्रकरे**क उट (स्टाब-** नानार्थ) সংযুক্ত । য়ঃ পঠেত্তাঞ্চ সংপ্রা সো **९ याम् कनः नाउटः ॥ इंडि वुक्र-**বৈবৰে পুক্তিথ ও ।।

जूनोहिना ही नहीं। इंजि नहमाना जूना ही नाम्मार्धा मानः॥ गृहागाः प्राक्षकायभी दिका ॥ भनमानः॥ जायः । इंजि स्मिनी॥ स्मर्गापः वाम्म नामान्तर्गज मध्य नामिः। जट्मर्यायः। यूकः २ यूक् २ पद्धि ॥ जोनी दनना जूट्या है जिल्ला जिन्

h সা চিত্ৰা শেল পাদ **ব**য় ৰাভী जज्ञाना गुळ विन्याभा भुषयभाग ৰবেণ ভৰ্তি। ভ্ৰমিষ্ঠাভূবিদ্বতা जूनाशक्रिश्क्तः । <del>च</del>न्धः नित्रन फिरयः मानावनः छेकच्छातः। ना अक्टिय मिक् सामिनी कायुत्रानिः निष्या विकास निः नम् कावाहिनी णमुम्डामा जन्नजीवना मृष्यंना जमानाका है। इब बाउन्। एक । बका विमात्रवः जीमूः चिकः। ইড়ি क्राङकः॥ बयकावीन हन्यानुरेख-उपानिकनः। त्र जूतकः गर्वः क्य विक्रया दिव मुद्राहन मान मनाः শুমান্। শশিনি জৌলি গতে বহু ামার ভারিভার সঞ্চিত চিত্রিত विक्रमः ॥ इंडि क्लिडी मुसीनः ॥ ভদ্যা উদৰে তদাসক লগ্ন ভৰতি **৷ তস্য গণিত পুঞ্জ পরিমাণ: হস্ম** ব্যসু লাধিক পঞ্চাঙ্গুল পুভে দেশে ब ह नात्नावि भावना रम बहै वि॰मर्भनाधिक भक्षस्थाः। हेकि ৰ্যোভিষণা ভত্ৰ ক্লাভ ফলণ। তুলা लए भूगान् बाउः पृथीः प्रश्कर्य ७९ भन्नः। विद्यान् सर्वकवाविद्या প্ৰাঢ্যে জনপ্ৰিতঃ।। ইতি কোঠা क्षिणः॥ ॥ भक्षेक् वित्मवः।

ব্যথা রাজনঃ। ব্রাহ্মণন্য ঘটো দেবঃ क्षियमा राजामातः । रेवमामा निविध स्वय न्यू प्रमा विक स्वयन्त्र ॥ সাধারণঃ সমন্তানা কোম: প্রেক্টের बनीकिकः । दिन वर्ष्क दान्ननिः मर्खिनास जूना मृजा ॥ 🛊 ॥ श्राथ ভুন্যা উৎপত্তি বিধিঃ। যজ্ঞিয় বৃক্ষ य्गक्तात्व ग्वंक हिंचा जाक्नीकि ভ্য: পুণম্য পজিজ: চতু হন্তা চতর্বাপদ্ধী জুলা কার্য্যা তর বিষ্ হাৰেৰু বল্বানি সাভব্যানি। তত্ৰ नक्ष्रकोल्डोक्या रलप्य वर्गानन मिक्तिशाखन्नाया मिर्लि। इंख वर निथ-নন কৃত্বা পউধারক কীলকাপু ভদ্তবো ৰূপরি অভ ধ্য ছিদু• মধ্য নিৰেশিত দৌহাকুশ গউক নিধাব ভৎপউকস্য মধ্য হিতাকুলেন তুলা ष्राध्य बनवङ् कोरूः जःगुक्षप्रार । ভুলাদ'ণ্ড ভিঠতি ভুলাগুছিতাভ্যা মাৰস কীলকাভ্যা শিক্য হয় রজু वक्षमः वर्गाः । जुनायाः भाषायाः পুৰক্ পুজ্ঞক্ দিশো ভোরণ ভাষ্ট্রী जूनाका मनाकृताहु। यो कार्यप्र তোরগবোকুপরিসূত্রসংরক্ষৌমৃথায়া-व्यामृत्थो हि मलक हृश्विना वक्नात्वी

ভূতাগ

कार्यते। जुनाम अः न् निन्मरग ्र वीर्याः। नूर्वनित्का निना-रजानत्यर পশ্চিমে কর্ত্তার ভলায় উপরি মল रमयः यमि बन् नप्नयस्य छम। जूमा नमा (क्रिया।। क्री। चरिव द नामानः 1 ক্ভোপৰাৰ্স্ট ক্ভন্নাৰাকৈঃ প্ৰাদ্ধি-वाका बाका कार्यः न्हर - নিৰেদিত বিৰেচ্ছে । তত্যেতি যুক্ত ভোল্ঘিত্বান্ধভার্য্য ধর্মাবাহনা-मिक वर्गार । उँउर निर्कृष्टार्श ব্ৰাহ্মণত্ৰয় গদাদিনা প্ৰবিদ্ধা তান্ यसि भूगाइम्बि-भुरङ्कि विदीह-যিত্বা দিব্যাক ভূত হোমার্থণ বুক্ষচভূ **প্রথ• ঋত্মিক্ চতুষ্টধ্রক পাদ গদিভি**র-खाई। वृत्वार । **जनका**त्वकः दुकान মেক পর্বিজ্ঞ। ওতত্ত্বাণ সপতা-কাংশু ৰালক্তা ভ্ৰোনিবাৰতস্যা भाग्राधः भावितकः भूत्राक्षण्यामा য ওঁভূ ভূবিংম রিভুছোর্য এছেছি **७ गरन् वर्षा भिरत्। ज्ञानिम् जञ्जनिम्** महित्वा (वाक्नोरेकक वदारिक) मकप्रताः। देखि माजन वर्षा मानास् इनमर्गाः अवस्यायः मनः इन्जानः भुरवारगणार्च नामाक्रमनीच नर्दू শৰ্কাচমনীয় বন্ধ যজেগুৰীভাচমনীয় मूक्ट कटक जूनगाज मन्ना छर्थ

वार्वति ज्याउर गुगवानि नामा-श्ख्या वाचे वाद्या श्व नहार हेन्द्राय मिन्निग्राक्ति समाय शिन्तिक संस्थाय উত্তরস্থাত করেরাক আগ্রেম্যান ব্যায়ে নৈক্ত্যাণনিক্ ভাষ কাৰ্য্যা कारत के भागा। के नावाद। ईन्सुक रकिन गार्च चष्ठवंज्ञाः नुरक्ताकः नामिक । छत्र वर्गाय पुराप সোমায जागार जनिजार जननीर भुज् वाय भुजानियाः सम्मिनिस्स यांचा जना कारणे विस्तुष्ठात्र जम ধাত্তে অৰ্য্যন্নে নিতাৰ কল্পান কল্প-বে ভগাব ইন্দান বিবন্ধত প্ৰেপৰ্জ-न्याय वृष्ट्रे विकरत्। अधिशक्तिमञ्जाल তথিকাৰ শক্তেন্ডঃ ভাৰমীয়ভদুৰ্য महरव निजी भार बेर्रेडकंगल बहि বুধাৰ পিনাকিনে অপরাজিভাষ जुनना वी यहार कर्णा जिल्न इनिहर्न खेरीका य**मा सम्बद्धाः गरिन्। खरा**न भाक्काः एक मुहिन्छ भारकार्यक रक्षेभारेर्याः हेरकहेनाः सामारेक भारहरेमु ११ हा कु आरेया निमा जूर खड़ गानिषाकः बक्लान्त्रतः खडेनक्छाः **७कः अन्ननारः न्यर्ननार**ः वारत व्यतिवाय वाक्खाकन्त्रामाय भारत नावः की वास्वाहा छत्र छत्र छत्र मूर्गारेन

भारति ज्वनार रदा पर्याय मन-भूज ध्न रीन देनदेन प्रामि भू वेद कर्या ইন্দুদি দুর্গান্তভেগ্রগন্ধাদি। দ-मार। उउक् वृक्षिक हज़्किन विशि क्का श्वीत् वनकात्वविक-कमारि शादिवाकः गृरक्षकिविका-ন্ধ-ছ্ৰাল্য পুণৰ পুটিভাশ সৰ্গাছ্ किका भारती चारास गृहार्य म्रायान्य न्याक्षि र्मिन्डा ভির্টোভরশত অপ্তাকি শতি অপ্তে वा बुक्रमार् उछ। मिनाः नमार श्याप इतनाष्ठाः (स्वभूकाः विशाय লোক্ত ক্তাগৰাসং আৰু বাসসং शक्तिमानिक क्षेत्र इंडेका क श्व-শৈক্যে ক্রা উত্তোল্য ধটোপরি জল দানেন সাস্থ্যব্ধম্য অবভার-र्यंटा उंकः शाहिवाकः उक्ति नककः वभना विद्याराक्षारिम्नाम्भिक् च्यान जनमन्धाकत्तनः व्यक्तिक कर्मुगर्किमाना निकारमहोकू मिलाला ेक् केव<sup>्र</sup> यमण्डं <sup>स्था</sup>क्षकः त्राविला े উरভक् अस्मा "सर्वाशि कामानि 'শরস্য ক্তে•া ইভি চতুশুড়ারিণ-শিংকর নক সমেতা সভিযুক্তার্থ कर्मा करा करा भिरमेटिया पर है भिर यां न्यानमा न ग्री क निजाि

ৰূপা পুৰিজ্ঞা লিপি গতে বিলিখ্য তৎপত্ৰ শোধ্য শিরোগত স্বর্যাৎ । छड:- त्राङ्गिकाका वर्षे मामजल क्षि चिः। इः धरि। वृक्षाः मृष्टः भक्ती-कार्क चूत्रायानार्। १कःत्राक्य मृत्ति खु केकाजार के हिन नज ।। ধৃতো ধারবতে যমানট তেনাভি-धीयत् । प् । ११८ मि ने ब्लिंगि পাপানি সুকৃতানিচ ৷৷ ত্রুমেব দেখ कानीत्व न विकू यामि मानकाः। ব্যবহারাভি শক্তোয় - মানুষঃ শুক্তিকিছ ডি ৷৷ তদেন স স্থাদ মা-দ্শত জাতু মহসি। তুলাধারকট नियामपानन । तुलाहा (य मृज्ध লোকা যে লোকা: কুটসাক্ষিণ:। ভলাধারস্য তে লোকা স্কলাণ ধারু যতো ম্কা।। শোধ্যন্ত ভলা মভি मख्यम् (ननः। वृःखरने त्रञ्जानानि ब्रीहर्म इनरेच विभिर्माका। उर जेडार वहाकनां नि मः नयाचा वित्यम्हय ॥ ৰদ্যবিদ্ পাল ক্ষাত ভভো মীণ क् मायानवा मुक्तक्त्रमायाक् मान मर्द- (१८मिः कृ अक्ष्र-॥ उदेः नाष्ट्रवाकः शृहामन ७ शृह्यक्र मार्त्वाभारार्/ जात्वाशिक माकार्ष्ट শ্বিদ্বাস্থয়ন্ত প্র্যাকাশে দেশে স্বাস্থাঃ

काड क्ट वृत्त शूर्ण हम्यू भदा-ब्राक्ती हिट। क्रूटकामः शाहे एक्ड শেচতো রাহ্ :কুর:পাদ্যাভযাজাতে क्षामार नरेग्रकाड कर्डगा देखाना भक्षो गाठकाकरव मुका-भूम खानाग दानायटा उड़ा भूडि-মান দুব্যাদ্যু বহানে শুৰাঃ অবে।-व्यक्तनवृष्टः । जनावश्यान व्यन कारा मक्तरह भूता नहीका करा। क्क कींगक निकृ नामाकामीना॰ म्हे काइन व्यक्तिद्राक्न एक एक वानामुम्ब माहित्मर । उउःभूदा-क्रिडाहार्ग्रामीन मिकणामिडिखा-कायर । इंजि मिवाजवुना • कुगारकारिः जी न्नुदः॥ मानरङ्गः ॥ अवृ मः। इंडि (इमहन्तुः॥ क्नाका है। बी ज्नाका है। रेडि बन्न है कावा॰ जन उः ॥ ভুগাকোষা পু ভুগাপরীকা। ইতি विडाक्ता। क्नाधतः भू॰ जुनात्रानिः ॥ वरित्रि वि। इंडि (मिनि)। ज्याखनः। इंडि (हमहस्सः ॥ তুগাপুৰুষান ক্লী বোডশস্থা-कानाडमंड कान विरेणवा । यथा। 'नामाडः मर्बनामानाः जुनाग्रका

न-जिल्हा का जना काला यथा। नाकानियानि एकानि महामानानि বোড়ৰ। ভানি ভে কণুবক্সাহি यथा वसनू भ्रमा। ज्लाभूक वयार्गा र्यः (क्यामारमे विवीवर्छ। ज्यान বিবৃধে চৈব ব্যতীপাতে দিনক্ষে।। यूगाहिस्नद्रारमस् छथा अनुख्री-मिनु । न काला लो भी भी नामा वामनीवृष्टेकान् ह ॥ यख्डार्नव विवारक्ष्यू" ब्:स्पाष्ट्र्य घर्णाव । प्रवा वाका गाला क नुका वा वक बार्विशा स्त्रा क्या स्वरण विशेष জীৰ্ক বাৰজন গোষ্ট কুপাৰাম महिर मूठ । गृत्स वाब वान वानि ज्ञां क्रियं वा ॥ मेरापानानि (क्यानि मनात एक जिल्ला। यमः विधानः वदाः। भूगाः जिदि म्बामाम् क्षाः बुम्मन वाहनः। मक्षा तक्ष्यविद्यान् (वाउन दावन ता कन्नान्।। म**ुन्नः कान्न**रविद्याः कञ्जीमन वृथः। मधर्खा स्व (वरी मध्य) मध्यक्राच का॥ उचारि ভোরণ কুর্ম্যাৎ সারসাক্ষরণ পুত্ত। । कुर्गार कुरानि ह्याति हर्षिक् विष्टमाः ॥ जुना जाभग भुनाकः। রশ্বিভি ভোরণাণ্যের বর্ষে

विश्वान जः ॥ जूरमथला (यानि जमा-युजानि मः भूर्व अञ्चानि महामनानि ! मूजानु इर ७ हर मः मूजानि न्यङ्गः পারাণি সহসুরাণি।। হস্তপুমাণানি তিলাল্য পূর পুল্লোপহারাণি সুশো ভনানি ৷ প্রোন্তরে হস্ত মিতা চ (वशी शुकामि (मर्वश्रंत भूजनाव।) অর্ঘার্ছন•বুক্স শিবাচ্তোনা• তরের कार्याः कत् वज्र मारेनाः। वुका निता-চুতোৰা প্ৰিমাস প্ৰা কাৰ্যা इंडरक्षा इंखिल कार्या। लाक-শ বর্ণাঃ পরিতঃ প্রভাকা মধ্যে ধৃত্র-কিন্ধিণিকা যুত্ত স্যাহ । ছারেযু কার্য্যাণিচভোরণানি চত্ত্বার্য্যপি ক্ষীর वनन्ग जीना ।। बाद्य वृष्ट स्य म व कार्वाः नुप्तक ध्भाषत्र त्रङ्ग युक्तः। 🕸 । यट भूर्व भाव माक स्वरं कुर्याहि-जुङ् जात्रामानी सनुधान मास्। नात्वकृती कल्पन (एवराक श्रिन्नर्श विन् शियकाकानायः । उम्र धरः হত যুগাবথাত ক্ষা দ্ঢ় পঞ্-करताह्नि छ । छ८॥ उम्बद । इस हजू-श्चेयः ग्राम्राक्षाख्यायाः क्रम् इत्यत या 🗱 ॥ ठजुर्रे छ। जुना कार्यं। भारते ॥ कारगुर्वे उथा विश्वो । जडवह उरग र्श्स्त्री छत्रस्थलं त्मन्ह ॥ मनान ॥

बाडिक जुनावनभू। रेश्सन मध्ध शुक्रवित युका। देश्यम शुक्रविति লুবৰ্ণ নিমিত বাসুদেৰাকৃতিনেতি (वाक्षवाध देवार्याता ना इस हजू देव-न्धार शृर्गद्व मन्ध्राख्य मासूनी न्ध्रास् ৷৷ সুৰ্ণ পত্ৰা ভ্ৰণাচ ফাৰ্য্য সুলোছ পাশধ্যশৃষ্ট্ৰলাভিঃ। ৰুতা সুবর্ণেন জু রয়নালা বিভূবিতা মাল্য ক্লিন নাচ্যা। চক্ৰ লিখেমানিক গভযুক্ত নানারজোভিভ বিকাণপুরণ বিতা-নকক্ষোপরি পঞ্চ বর্ণ সংস্থাপয়েৎ পঞ্চ পতাক শোভ•া ইতি তুলা-निर्माण मुक्कि।। क्षा व्यथ विका त्वर-विषक्त कार्याः जुवामत्वणान्य श्रील गुर्काः। विधान मकाः भहेत्य १न्क्ना (बहार्य) (रम भुख्या हि . (अन्तुः ॥ शूक्क (वनाक विनार्यः) **एम नमुख्यः मील क्वां क्रिशः।** कार्याः भूतागा जित्राजा जिम कः भूत्रम গম্ভীর মরমতীকঃ।। পুরেণি পণ্যেদ किरो यथा छा। यबुद्धि हो एकिन-उक्त भारते । इन्तिने विका नाम-বিদৌচ পশ্চাদপর্ণা বুত্তত শ্চ कार्यते ॥ विनादकामि गुरु लाक-পাল ব্ৰষ্টকাদিত্য ম্ৰুদ্বগানা । वुकाह्य भाग वनगारीनाः सम्ब

তো হোন চতুইব• স্যাৎ॥ बन্যানি ॥ ।স্কানি তথৈব চৈৰা মনুক্ৰমেণাপি यथा सक्रमः। अ छ। इ (यह्माक्र छीन् कत्मन मरिख दशी जियं बमान युकः॥ इं अवाक्ष मुद्रान्द्रशाष्ट्रिया स्म कृष्ण । अ अनानिह देशमानि मुबाणि कहेकानिह।। विश्वाः गुत्राव मन्।-- प्यूर्वनी द्यापना पिक । करम्यः ना छि-काशाय क्रीन्काः मर्द्रा किण ॥ উপোবিতা ৰ্স্ততঃ সৰ্বে কৃত্ৰৈৰ মঞ্চি-বাসন। আদাবন্তেচ মধ্যেচ স্বর্যা-ছুক্ষেণ বাচন । ততা নক্ল শব্দেন স্মাগিতো বেদ পুরুবৈ:। বি: পুদক্ষিণ মাব্তা গৃহীত অসুমা-প্রতিঃ।। শুনু মাল্যামবো ভূত্বা তা॰ जुना मिन्न अराय । 🗱। नमास नर्व দেবানা শক্তি স্তু॰ শক্তি মাছিতা । সাকী ভূতা জগদ্ধাতা নিমিতা विश्वरयानिना॥ (क्कृ जः अई अल्डानि ভথা ভূত শতানিচ। ধ্যাধ্য কৃতা। মধ্যে স্থাপিতাঙ্গ্রি জগদ্ধিতে।। বু॰ জুল সর্ব ভুতানা পুরাণ মিহ কীভিত্যানা তোলগন্তা সংস্থান দুজরম্ব নমো হস্ত তে।।(বা হস্য ত ष्ट्राविला एतः शुक्रः शक्षवि नकः । गन्ताविश्वित्वा (मित द्वि क्याम

নো হন্ত ডে ।। ননো নন তে গোবিন্দ जूनाभूक्य मः छक । दः रात जात्र यायानयार जन्नात्र जानतारा क्षा পূণ্য-কাল মথাসাদ্য কৃত্বাধিবাসন• **शूनः। शूनः शुक्किनः कृद्धा छाः जुला** मान्दर्षः ॥ नथः हमः कवही नदां जत्र । अर्थाताक नथा-माय्टियः मूर्या भग्युजः॥ कद्राजाः মৃদ্ মুপ্তিভগ় মান্তেপশ্যন্ হরে মু থে। ভতোৎপরে তুলা ভাগে ন্যমেযুর্দ্ধি शृक्षवाः ॥ जा नामकाधिकः याव •কাঞ্চন• চাতি নির্মাল । পুষ্টিকামস্ত স্বীত ভূমি স হলরেশ্র ॥ ऋग माब· ठ छः हि ज़ा भून (त उ मू मी द्राय**्** । नम (उ माकी जू ठानाः माकी जूरह সনাতনি ॥ পিতামছেন দেবি ত্ব॰ নির্ঘিত। পরমেষ্টিনা। ত্বা ধ্ত॰ कगर नर्बः जरु जावत कक्ष्मः॥ नर्ब ভূতাকা ভূতহে নম তেবিশ্বধারিণি । ততোৰভীৰ্য্য গুৱবে পূৰ্বনৰ্দ্ধ নিবে-मरवर्गा भागा उना मनुकाक ज्या-**(मुर्ल्ड)िंग मानाय** । मीनानाथ विणिश्वादीन्ज्बायर वाक्षरेगः महा নচির•ধারয়েয়েছে ছেন স•প্রোক্ষি-७ तूपः । ठिक्षस्यावद् यसारहाक व्याधिकतः न्गारा भीषु भत्रश्रीकत-

তুণা

পাৎ শ্রেক:প্রামেটি গুরুস।ক্ষা ডব্য ॥ क्ष्या विल्लायन कन्नन्यथा । जडी-নাম্শিখাত্না যন্তলা সক্তেনরঃ । वर्ष भारिकः भुत्रुत्त्र छ यत्ना सक् कार मछरिक्श। कारकाजू हि छ उब **धाव८ काडिना**डानिक । कामराड क्रक वर्काणाः सर्गातमाहक व अन्यवः ॥ चथ मान्या माकमा कराहिर काल भर्गारम। धनधाना मम्हार देव सामह सर्जा **मरन ॥ व्याद्य नस** जूना रुष् मृदर्भ यः भुषद्द्वि । म जात्रायर भिङ्गगान् एमण्डीन् एमाणकान्।। ॥ ব্দাত্মনন্ত তথা ভদ্বৎফলভাগ্নাযতে নর:৷ জন্ম পুভ্তি বৎপাপ মাত্ক 🖠 रिभेज्क ज्या ॥ मूतर्ग मानार স্বারিদ্যু ন পশ্যতি কদাচন। রন্ধত-न्। जूनाः क्दा मुक्जीयः नुबद्दाजि॥ **ভাবন্ধর্ব পুমাণেন নির্মানঃ মুর্গভাগ্ন-**বেৎ। অনন্তর-ভবেদ্যুলা পৃথিবগ্য माज मन्यवः ॥ भूतर्ग हाद्री किही वा সন্ধ্যাধি কুভোগি কান ভানুস্য ভূ ভুলা ক্তা মুচ্যতে নার সংশ্যঃ । नजू वर्व नहनु रेव वर्गानातकः वरीयाउ। कांगामाकृ जुनाः कृषा विर्मुख्या वः भुषद्वि ॥ म जू इन्तुगर गुग्ग दिन्छ। गर् स्थार द

्वायमगा जूना कृदा माठा हन्ना किला ज्या । निक्ता काया माया क्या हिना काया काया का निक्ता काया का निक्ता काया । जा इन्ता का निक्ता का निक

मननाः॥ एक मिता १ ए न्यह छि

माननाः॥ एक मिता १ छि का यर छ

एगा छि छ छ इकी दिनः । दे छ छ छ

जूना । कृषा (या दे प प्रणाणि का छ ए

॥ करता गित्र । मूर्शिक दे का गुन्ना न
शि का यर । क्या मान मधु कुष्णा । सा। करन ।

वि का य छ जून । कृष्णा । सा। करन ।

वि का य छ जून । कृष्णा । सा। करन ।

वि का का वि का हिल्ला के दर्ग । कृष्णा । कृ

ভুবরী

जूनावीकः क्री ७३३। ইতি बिकाध-(मयः॥)

जुनिः छो जुती। इंजि नेपत्रज्ञावनी॥ जुनिका। इंज्यात होका नात नुन्हती॥

ভূলিকা স্ত্রী খঞ্জনিকা।ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।।

ज्विनी खी मान्यविः। ইতি রহ-भावा॥

ভূৰিকলা জী শালালিঃ। ইতি রয়

जुनी जी जुनी। के जिन नदन दावनी।।
जुनी जी जुनी। के जिन नदन दावनी।।
जुना: २ नम्माः अनम्भः ६ मम्क
(दनाथानुमः अनम्भः ६ मम्क
(दनाथानुमः अनम्भः ६ मम्क
(दनाथानुमः अनम्भः ६ मम्क
नदमः ६ मिष्णः अनक्षः २०।
के जिन प्राप्तः । जिन्न देन क्रिकान्यः।
वाद्यान्यः। निज्यः अनक्षाः २।
वाद्यान्यः। निज्यः अनक्षाः २।

নীকাশ: ও পুতীকাশ: ৪ উপমা ৫ । ইত্যমর: ।। ভূত: ৬ কপ: ৭ কর: ৮। ইতি ভরত: ।। পুভ: ৯ । ইতি শক্ররাবলী ।।

তুল্যপান লী আত্মীযেন জনেন সহ নিলিড্বাএককালে কৃত পান। তৎ পর্য্যায়: । সপীতিঃ ২ । ইত্যমরঃ ॥ তুবরঃ পু লী কলাযরসঃ । ইত্যমরঃ ।। ক্ষায়যুক্তে শ্মশুহীনে চ তি। ইত্যুণাদিকোবঃ ।।

ज्यत्रयाननानः श्रुः शानप्रतिष्णयः।
ज्यान्यानः। ज्यतः २ क्याययातनानः अत्र क्यायनानः ८ त्नाहिजव्यायद्वः। उष्यदः । विद्यप्रकदः।
क्यायदः। उष्यदः । विद्यप्रकदः।
कर्णाहिष्यः। वाज समनदः। विद्याहिष्यः। त्याय कात्रिष्यः। हिष्यः।

वृत्तिका की मृत्राष्ट्रकम्बिका।
वृत्तिका की मृत्राष्ट्रकम्बिका।
वृत्तिका काणकी। रिक ज्यकः॥
वृत्तिका काणकी। रिकार्यक्रिका
मृद्या ३ जामकः १ मनी ७
मृत्रिका विमृत्तिका ४ काली २
मृत्रिका २० मृत्रमृत्तिका ४२ खणा।
३२ काकी ३० मृत्रमृत्तिका ४२ खणा।
३२ काकी ३० मृत्रमृत्तिका ४३ खणा।

গুৰ্ণা:। ভিক্তব্ব । কহাবত্ব । উक्छ-। (वर्शनङ्ग-। ठक्क्ष्य/द्य-। ্ৰণাহিত্ব । ছদি পিও জ্ঞা नामिज्य । इंजि ताजनिर्दि ।। जुगती निषः शु हकगर्एक वृक्तः। इंडि मद्यान्ति ।। जुितः जी जूषी। इंजि मदगाना।। जूर कि २ ये छे जूही। इंडि কবিকল্লফনঃ ৷৷ खुराः पू• थानाज्ञक् ॥ वि **बी उक**-বৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ॥ তুষগুহঃ পু• অগ্নিঃ।ইতি ত্রিকাও-শেশ্যঃ ।। তুষসারঃ পু• অগ্নিঃইতি শব্দালা।। जुवाननः भू जुवाग्निः। उरभर्गायः । अक्वः २ । इंडि (इमहन्तुः ॥ जुवातः शृ॰ हिमा। (मना उमः॥ সীকরঃ॥ হিমভেদঃ। ইতি ছেম-हन्पुः ॥ मी उत्त जि । यथा। अभा• हि ज्ञाय न वाति धाता मानूः সৃগিদ্ধি: স্বদতে তুখারা । ইতি रेनवथन। कर् ब्राइमः। इंडि ब्राइ-

তুষিতঃ পু॰ দেবগণবিশেষ:।ইত্য-নরঃ॥ তে ষট্ত্রি•শং স্তা:।ইতি ভরতঃ॥কেবাঞ্জিলতে দাদশয্থা।

निर्घण्डः 🕕

भागिशिव ममानाक छित्राता वरान वर्षा व्यक्त अथा । हात्रक्षित्व जू जूकि व्यन उथा । हात्रक्षित्व जू जुकि वा (एवा: सार्त्रा, विर्वेशहा ।। के मात्रमून्त्री।।

जूषात्य की जूषामक । इंडि इाजनियं है: ॥

जूरवाहक की काक्षिक । इंडिं हातावनी।। काक्षिक कुन्छ । अमा नक्ष्म यथा। जूरवाहक मेरे त्रारेमः मक्रेयः मकनी कृरेकः। यरेन कहके महिरेकः मतान वर्णाक द्वार ।। यमा खाः। ही मनद । क्राप्त ।। भाष्ट्र कि गह विश्व मृन नामित्। कीकृद्ध । উम्प्त । भारत्य । भिन्न तक काति दक्ष । है कि जाव-भूकाणः॥

তুই: ত্রি তোষপুণ্ডি:। যথা '। তক্ষিণ স্তুষ্টে জগভূই পুনিতে পুনিত জগৎ। ইতি পুরাণি।।

जुद्दैः शुः कर्ण्यानिः।इंडि मक् हिन्तुका॥ जुन । धारन । इंडि कविकन्नक्रमः॥ त्रमानम्थः ॥

त्रुन्दरी।।

। ইতি কবিকল্লছমঃ॥

हन्मुरङ्केश इंजुरनाहिरकावः ॥ হিনা-শ্রৈজ ক্লী কপ্রতিল। ত্র ক্লী বাদ্য ইতি হেনচন্দুঃ॥ \_ ইভিরাজনির্ঘণ্টঃ॥

**ज्** उ था जनाम् (त्र। इ कि कि विकन्न क्रमः॥ তূণ ৎক সঙ্কোচে। ইতি কবিকল্ল মং। তৃণ ক সঙ্কোচে।ইতি কবিকল্পদ্মঃ॥ তৃণ ভ ক প্রণে।ইতি কবিকল্ল ফনঃ॥ " তুর্ণিঃ পু॰ মল। ইত্যুণাদিকোৰঃ जृगः शू· क्वी वागाक्षातः। उरशर्यायः

। উপাসক: ২ তুণীর: ৩ নিষক: ৪ ইবৃধিঃ ৫। ইত্যমরঃ ॥ তৃণী ৬। ইতি শবর্রবেল্।।

তৃণক : इन्हि दिग्न वः। यथा। **ত্**ণक ममानिका शह खय विना-दिन । ই कि, इ टैन विक्षती

र्ज्गी. जो र्ज्नाः। इंडि मेर्द्रवावची।।

তুণী পু নন্দীবৃক্ষঃ ইতি রাজ

নিষ্টঃ ॥তৃণ্যুক্তে তি ॥

प्रमः श् ज्वः। इडामत होकायाः जूनीकः शु नन्तीव्कः, निर्घणः॥

यः क्री ध्विः । ইতি विकामि- ज्नीतः श्रु ज्नः। ইতामतः॥ ज-गुर्ह तुङ्ग भद होकाया मात- ठूठक क्री जुला । जुडिया ইडि ভाषा । इंडि मफ्हिम्का॥

তুহ ইর অদ্নে। বধ ইতি যাবং তৃদঃ পু•় তুলবৃক্ষঃ। ইতি রাজ-निर्घणेः॥

তুহিন ক্লী হিম । ইত্যমর: ॥ তুর য ৬ ই হি সে।। বেগে। ইতি কবিকল্পজ্মঃ॥

ू जूती खी शुख्तव्षः। इं ७ ७१०-

कुं को भीषु । उष्ठि वि। ইত্য

॥ ত্বরা। ইতি হেমচন্দুঃ॥ শ্লোকঃ। ननः । **३७ म**िक्छ नात्र উगारि-वृद्धिः ॥

ज्र्गं की वामा । इंडि (इसहमु: ॥ ভূর্য্যথণ্ড: ेशुः দুগডবাদ্য: । ইতি रात्रावनी ॥

ভূল ক ড প্রণে। ইভিক্বিকল্লছমঃ।। कृत क निक्दर्य। इय जा शति हम ইতি যাবৎ। ইতি কবিকল্লফমঃ।। ত্ল ল্লী আকাশ। ইতি মেদিনী ॥ अध्याक्। त्रृक्वि(भवः।। शना-

াপপল ইতি তুও ইতিচ ভাষা। ॥

১০ পর্যানঃ। তুদঃ ২ বুদ্দকান্ত ও

বুদ্দেশ্যঃ ৪ প্রকঃ ৫ বুদ্দকান্ত ও

সূপুর ৭ সূক্ষণ ৮ নীলবৃত্তক ৯

ক্রুকঃ ১০ বিপ্রাপ্ত ১১ নদসারঃ

১২।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ । পূগঃ ১৩।

তৎপত্ব ফল গুণাঃ। গুরুত্ব । স্বাদুর্

। হিন্তু । পিত্তানিল নাশির্ভা ॥

তদান ফল গুণাঃ। গুরুত্ব । স্কুলিত্ত

কারির্গ্ । ইতি ভাবপুকাশঃ ॥

নধুরামুর । দাহ পুশননত্ব ।

ব্যার । ক্রামার । ক্রু নাশির্গ্

। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

তৃলঃ পু॰ কার্পাসাদতূল:। তৎ পর্যাব:। পিচ্: ২। ইত্যমর:॥ পিচুল: ৩ পিচুতূল: ৪তূলপিচু: ৫ । ইত্যমরটীকা ॥ পিচুতূল• ৬। ইতি ত্রিকা গ্রশেষ:॥

ज्नकः क्री ज्नाः हें इश्वाहिनार्थकः।
ज्नकाम् कः क्री ज्नार्याहेनार्थकः
। धूनथन हां जाता। ज्याद्याहेनार्थकः।
। शिक्षकः २। हें जिकाश्रामधः॥
ज्नहाशः पू॰ ज्नकाम् कः। हें जिकाश्रामधः॥
ज्नहाशः पू॰ ज्नकाम् कः। हें जिकाश्रामधः॥
ज्नाहाशः प्राह्मके।।
ज्नाहालका क्री शिक्षका। माहिक

ইতি ভাষা।ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।
তুলনালী স্ত্রী তুলনালিকা।ইতি
ভূরিপুযোগঃ।।
তুলপিচুঃ পু• তুলঃ।ইক্তমরটীকাষা•
ভরতঃ।।

्. पू॰ .भाग्यनी । ইতি রাজনির্ঘটিঃ॥

॥ ज्नमकत्रा खी कार्भामचीक । इंटि भक्षाना॥

जून(नहन की जूब इर्न । काहेना इंड डावा। इंडि मदमाना । । जूना जी कार्लामी । इंडि ताक-निर्धाः। विदिश्हिंड मदत्र नवनी।। जूनिः जी सनामण्डा ठिडकरत्राभ-क्ता । इंडि मिक्का उरको मून्द्रा-मूणानि वृज्ञिः।।

ত্লিকা স্ত্রী চিত্রকরোপনরণ।
ত্লীইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ।
ঈর্বিকাং।ইত্যমরঃ।।ত্লিঃওত্লী
৪ইবীকা ৫ইনীকা৬।। বীরণাদি
শলাকা। ইত্যন্যে।। আবন্তিতমনাবন্তিত সুর্নেণ জ্ঞাতু যদিক্ষিণ
প্রতে ত্রেত্রতানে । ত্রাক্ ক্রিত্রতারে ক্রিচিৎ। ইতি ভরতঃ।।
শ্ব্যোপন্যরণ । ত্রেষক্ ক্রিত্র

তৃত্ত

ভাষা । ইতি মেদিনী ॥ वर्डिः। ইতি শবরত্বাবলী॥

ত্তিন জী লক্ষণাকন: । ইতি রাজনির্ঘটানীশালালিব্ল:।ইতি ভাবপুকাশ:।।

जूनिकना जी मानानिः। ইতি রত্নালা।

ज्ली खी नीनी ॥ वर्खिः । ইति नद्रवृद्धिनी ॥ ज्लीका । ইত্যমর

ভূবর: পু॰ কালেঅজাত শৃংকা গৌ । নেডাগক ইতি ভাষা॥ অশ্নশু, পুক্ষ:। নাজনিয়ো ইতি ভাষা। ইত্যনর:॥ পুক্ষ ব্যঞ্জন ত্যক:। ক্ষায়রস:। ইতি নেদিনী।।

তুবরিকা স্ত্রী তৃবরিকা। ইত্যনর টাকাযা-রমানাথংগা

ত্বরী জ্রা সৌরাষ্ট্র মৃত্তিকা।ইত্যমর টাকাযাণ ভরত্যা

ত্ব তুটো।ইভিক্বিকল্পজনং॥

जूकी वा भोन । हे अनवः॥ जुकी भीनः जि भोनी। उर भर्गायः

ीज्कोकः २ १ इंडामाः ॥

ल्कीकः जि ज्की नीनः। इंडामदः॥

ज्कोकाः वर्धानः। ইত্যমরः॥ १ के को शिक्षः॥ किं।। ইতি मिनि दुः

।। भाभः॥ ज्यः। इंडि भएतेश्री-वनीः॥

তৃট্ স্ত্ৰী ইছা॥তৃষ্ণা। কানকন্য। ইতি নেদিনী॥

তৃথ• ক্লী জাতীফ্**ন•। ইতি শদ**-চন্দ্ৰিকা॥

তৃণ উঞ্চ ডক্ষে। ইতি কবি-কল্লুজনঃ॥

তৃণ ক্লী নডাদি॥ চিনাখড ইভি খ্যাত । ইতি কেচিৎ । ইডি ভরতঃ॥ তৎপর্য্যায়ঃ। অজ্জুন ২। ইত্যমর:॥ ত্রিণ• ৩ খট• ৪ থেউ• ৫ হ্রিভ ৬ ভাত্তব প । ইতি শद्राञ्चात्रनी ॥ #॥ (गांच∫ ख्र मान कन गथा। जीय मात्नयू य পুণ্য । যৎ পুণ্য । বিপু ভোজনে। भूगाक महानात यह भूगा হরি সেবনে।। সর্ব ব্তোপবাসেযু সর্দ্ধেষ্ ব তপঃ সূচ। ভুবঃ পর্য্যটনে মন্ত্ৰু সভ্য বাক্যেষু যভ্যেৎ।। যৎ भूगा अर्ब याळाडू मीकायाश वाञ्चतः । ७९ भूगुः वज्र প্রাক্তো গৌভ্যে দত্ত্ব। ত্ণানিচ।। ইতি বৃন্ধবৈবৰ্ত্তে ত্ৰীকৃষ্ণ ধন্মথণ্ডণ ।। #।। धनिष्ठामि शक्ष नक्षावयू ग्र निभिन्न ज्वेकाष्ठाहत्वरप्रमाया यथा -ইএগা

া অনি টোর ভয় রোগো রাজনী ডা প্রক্রি:। সংগৃহে তৃণ কাষ্টানা কৃতে ব্যাদি পঞ্জে।। ইতি জ্যোতিঃসারসংগৃহ:॥ ভ্রত্ত্বং ক্লী সুগদ্ধব্যভেদঃ। তৎ

ত্ণসন্ধুন লী সুগন্ধুব্যভেদঃ। তৎ
পর্যায়ঃ। ত্ণাস্ক্ ২ গন্ধি ও ত্ণশোণিত ও ত্ণপুল্ল ৬ গন্ধাধিক।
ব ত্ণোত্ম ৮ ত্ণগৌর ৯ লোহিত।
১০। অস্যভণাঃ। কটুন্ধ। উষ্ণন্ধ।
কক মাকত শোক কণ্ড্রি পামা
ক্ষানদোৰ নাশিব। পরন্দ্রায়রবৃঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

ত্ণস্থ ী ব্ৰী ত্ণাছাদিতগৃহণ তৎ পৰ্য্যয়ঃ। কাষ্মান ২। ইতি ব্ৰিকাণ্ডশেষঃ॥ ত্ণৌকঃ ৩। ইতি ॥ হেম্চন্দুঃ॥

ত্ণকৃম: পু তুখী। ইতি শবসালা।।
ত্ণকেতৃঃ পু ব শঃ। ইতি হারাবলী।।
ত্ণকেতৃক: পু ব শঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

তৃণগোধা ব্রী চিত্রকোল:॥ কৃকলাস:
।ইতি মেদিনী॥ তৃণজলৌকা।ইতি
কেচিৎ ॥

তৃণগুছি: স্ত্রী স্বর্ণজীবন্ধী।ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

ত্ণগুহी भू नी समितिः १ है जि जान-

ভৃণপু

নির্ঘটিঃ।। মণিবিশেষঃ। কাফুরদানা ইতি ভাষা। ইতি শব্দার্থ কল্প ভক্তঃ ।। তথপর্য্যায়ঃ। শ্কাপ্তঃ ২ ভূপ-মণিঃ ৩। ইতি হারাবলী।।

ত্ণজন্তঃ তি ত্ণভক্ষক: ॥ ত্ণবর্ণ দন্তযুক্তঃ। ইতি কেচিৎ ॥ ত্ণতা ত্রী ধনুং ॥ ত্ণব্রং । ইতি মেদিনী॥

তৃণজন: পু৽ তাল: ।। প্রকাক: ॥
তালী ।। কেঠকী থা প্রজুর: ॥
খজুরী ।। নারিকেল: ॥ হিস্তালং ।
এষা • নির্মান গুণা: । শীতলত্ব ।
লঘুর ৷ মোহনত্ব । বলকারিব ।
হাদের ৷ তৃষ্ণা সন্তাপ নাশির্ক ।
ইতি রাজনির্ঘট: ॥

क्षानाः क्षी धानाः विष्मवः । উषि-धान इति ভाषा । छ< भर्यायः । नीवावः २ । ইত্যমतः ॥

তৃণধ্ব: পু॰ ব॰শ:। ইত্যমর:॥
তৃণনিম্ব: পু॰ বেপালনিম্ব:। ইতি
রাজনির্ঘণ্ট:॥

ज्नशिका जी है कुमर्जा। इंडि ब्राह्मनिर्घणेही।

তৃণপত্রী জ্রী ডিগুলিনী।ইভিরাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

ज्गनून ही ज्गनक्मा हिज ताक-

় নিঘণ্টঃ '।

'রাজ্নির্ঘণীঃ॥

ज्गिश्ली जी हैका। हाँ इंडि ভाषा । इंडि हात्रावनी॥.

ज्गवन्त्रा जी वन्त्रा है जि दान-নির্ঘণীঃ।।

-ভ্ণনণিঃ।পু• ভ্ণগু।ছী। ইতি ছারা-

ज्गमः कृषः र्भुः नग्नकः । जानिन् 🗕 考 ি ভাষা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। তৃণরাজঃ পু• তালবৃক্ষঃ। ইত্যনরঃ।। नातिकनः। इंजि ताजनिर्यणः॥ তৃণবীলঃ পু॰ শ্যামাকঃ। ইতি ইত্ন-याना ॥

ज्नवीरकाखनः शृ **म्यामाकः। ই**जि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

তৃণশীত की কৰ্ণণ গন্ধত্ণ। ইতি ब्रङ्गाला ॥

ভৃণশীতা জী জলীপিন্নলী ৷ ইতি त्राज्ञनिर्घण्डः॥

ज्गम्ना क्री महिका। (कडकीकन এ ই তি নৌদিনী।। তৃণী হিতে ত্রি।। তৃণষট্পদঃ পু॰ বরোলঃ। বোল্ভা ॥

ইতি ভাষা। ইতি হারাবলী॥ (जुनमाता जी करनी। ইতি हाता-

वनी ॥

ত্ণপুথী দ্রী সিন্দুরপুথী বৃক্ষঃ। ইতি তৃণসি হঃ পু ষঠারঃ। ইতি শবংগ্র-कन्न उक्शा

> ত্ণহর্ম্যঃ পু• ত্ণযুক্তাউালিকা। অউ।লিকোপরি ভৃণনিমিতগৃহ•। **७८ १ वर्गायः । अयोः २ । ই**ভি श्वावनी।।

> তৃণা-ভূপ: পু । মহানকতৃণ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

> তৃণাগ্নিঃ পু॰ তৃণজাতাগ্নিঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। বৎসলঃ ২। ইতি ত্রিকা-ওশেষঃ 11

> ত্ণাঞ্জনঃ পু॰ কৃকলাসঃ। ইতি ত্রিকা ওশেষঃ।।

> ত্ণাচ্য শ্লী পৰ্বততৃণ । ইতি রাজ-विर्घण्डः॥

ত্ণামু ক্লী লবণত্ণ। ইতিরাজ-निर्घणेः॥

তৃণাসৃক্ পু• তৃণসঙ্গুম•। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

ভ্ণেক্ষুঃ পু• বল্বজা।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ब्रावन्त्र के स्ना

ত्गान्त्रः भू नीवातः। इंडि ताब-निर्घणेः॥

ज्लोकः ही केरियमानः। ज्लिमिक

देश्यहन्तुः ॥

তৃণৌৰখ শ্লী এলবালুকাখ্যগন্ধদুব্য । इंडि नद्रिक्।।।

ভ্ণ্যা স্ত্রী ভূণসমূহঃ। ইভ্যমরঃ॥ **ज्ञीयः वि क्यामा** भृतपः। (उमता ইত্যাদি ভাষা। ইতি ব্যাকরণ।।। ভৃতীযপুকৃতি: ক্রী তৃতীযাপুকৃতি:। ইত্যমর টীকাষাণ ভরতঃ।।

**ज्ञीया जी जिथिबिद्यायः। मा**हन्मु মণ্ডলস্য ভৃতীয় কলা ক্রিয়া ৰূপা তৎক্রিযোপলক্ষিতঃ কালো বা। ইতি তিথ্যাদিতত্বুণা অস্যা• জাত-न्य कन्न यथा। नकन ७१ शङीखा ভ্মিপাল। नुत्रागी প वनगत विगाली नर्दालाकाशकाती। शत्रविषय नि-वानी कोठूकी मङ्गाही ভवि निधिवविष्णा य ख्ञीया शुत्रृखः॥ ইতি কোগ্যপুদীপঃ॥

ज् शेयाक्**ड**॰ बि वात्रवयक्**ष्ठरक्वः**। ভিনবার চাসদেযা ক্ষেত ইভি ভাষা। ইত্যমর:॥

ত् डीया पुक् जिः जी ने पू अर्क । इंडा-सदः ॥

ज्म इव द छे था। अनामूद्र ॥ हि·रम । ইতি কবিকন্নদ্ৰমঃ।।

र्वर•। थप्याचत हेि जाया हैि । ईत म 'श्रीगत्त्। हैि कविक्वक्रमः॥ ख़न्न **म** भीषान। ইতি कविन्नस्रमः॥ ल्न्ह छे न हिः सा इ ि क्रिक्न

> তৃপ কি সন্দীপনে॥ প্রীণনে। ইঙি ক্ৰিকল্ডন: 11

ত্প न ्रीपान। ইক্তি কবিকদ্নজনঃ॥ ज्भ कि २ य 🗟 श्रीमान। क्रें **क**वि-कन्नक्रमः ॥

ভগ গশ গুণিনে। ইতি ক্বিকল্প-क्यः॥

তপ্ত পূ• চন্দঃ: ইত্গেদিকোৰঃ ॥ ছত্র•। ইতি সিন্ধান্তকৌনুদ্যানুণা-दि वृद्धिः ।

**ञ्भना** जो नजा। हेटुगानिकारः ॥ विक्ना। ইতি সःक्षिधमाद्गः উণাদি বৃত্তিঃ।।

তৃপ্তঃ ত্রি ভৃপ্তিযুক্তঃ। ইত্যমরঃ। ভৃপ্তিঃ স্ত্রী ভক্ণাদিনাকাড্কানি-বৃব্ৰি:। তৎপ্ৰস্থায়:। সৌহিত্য : ২-তর্পণ ৩ । ইত্যারঃ॥ প্রীণন ৪ আসিভন্তৰ কিন্তিশন্মন্ত্ৰাবলী। ङ्भः भू मृंक। इंड्रागोमिकामः ॥ পুরোডাশ্মি ইতি স-ক্ষিণ্ডসারে: উণাদিবৃত্তি:।। তৃষ প শ প্রীণনে।ইতি কবিকরক্ষয়া

তৃফনা দ্বী ভিফলা শ্ইতি ভিকাও-শেষঃ॥

्ष। जी ज्या। इहा। कामकन्ता। ॥
हें अपन्द्रशावनी । वादानिकी
्क्षः। वे ७ अपनिस्ता।
्वाः जी द्राम। वे अपनिस्ता।

ज्वार क्री कवं। इंडि सप्टिन्द्रिका। इंडि सप्टिन्द्रिका। इंडि सप्टिन्द्रिका। इंडि सप्टिन्द्रिका। इंडि सप्टिन्द्रिका।

ভূষিতঃ তি ভূমা কং! তৎপর্যায়: "
। তর্ষিতঃ সভা ও । ইতি ত্রিকাঁওশেষঃ ।। ভূষানা গ্লী।।
ভূষিতোত্তরা জ্রী অশনপর্ণী । ইতি
শন্চন্মিকা।।

ज्यक वि नुद्धाः। है अभवः॥

ज्या की जनान्। यश्रीकातहा।

इंडि हजी ही कार्याः नात्याकी जर्छः।

शामा निया।। भार्तहा। हैंडि
भिषामा अन्हें हज्यं का है जान

ভ্ৰাক্ষঃ পু॰ শাস্তিঃ।ইতি হেম-

निर्घ छै।।

চন্দুং ।। পিপাসানাশক।।

তৃহ ধ উ শ হিংসে। ইতি কবিকট্ন

জন্ম: ॥

তৃক্ষ-গতৌ। ইতি কবিকলুজ্ম: ।।

তৃত্তরে ॥ অভিভবে ॥ পুত্যাণ ইতি

কবিকলুজ্ম: ॥

তে ব্য দ্বা। ইতি বিকাশ্যশেষঃ॥

যুশাহদ্দ্য ষধ্যা তব। চতুর্থ্যা

তুভ্যং। ইতি ব্যাকরণং॥

স্

তেজঃ ক্লী দীন্তিঃ।। পুভাবঃ ।। পরা-কনঃ।। রেতঃ। ইতি মেদিনী।। है॥ नवनीज ॥ अग्निः। इंडि एमहन्मुः॥ मूदर्गः॥ मङ्जा॥ शिडः । ইতি রাজনিঘণিঃ।। जनस्तर। व्यविकिशाभगानाहः भुगुक्तमा भारत यद। भागाजार भागहन उत्बद्धः ममुमाङ्ख ॥ ইত্যমরটীকাষা•ভ**রত:৷৷পঞ্চমহ**া-ভূভান্তগঁত তৃভীয় মহাভূভ। যথা । তৃতীয় জ্যোতি রিত্যাহ্ন ক্ষ্ রধ্যাত্ম মুচ্যতে। অধিভূত ততো क्न मूर्ग खूबाधिरमवड ॥ इडा-चरमिक्शर्व।। अमारवर्गाः। क्रान > দুবত্ব-২পুত্যক্ষোগিত্ব-৩॥ অস্য-खगाः। म्लब्द् र मः गा २ शतिमानः ৩প্থক্র-৪ সংযোগঃ ৫ বিভাগঃ পরত্বং ৭ অপরত্বং ৮ কপং ৯ দুবছ।
তিবোং ১১। অস্যবৈদ্যিত্তিক দুবছে।
অস্যাপদ উষ্ণা কপং শুদ্ধভাষর
। ইদংছিল। পরমাণু স্বক্ষণ
নিভ্যং। সাব্যব ম'নত্যং। অনিত্যং ভিষ্যা দেহং ইদিশে বিষয়ঃ।
ইতি ভাষাপারশ্বদং॥

(जबःकनः भू व्किति (नवः। (जब-कन इंडि जाया। उर्भर्यायः। नक्कनः र मान्यनी कनः ठ उत्क-कनः ८ (क्वकनः १ गक्कनः ७ कक्वेत्कः १। व्यम्प्रशः। कर्ष्युः। जीक्यः। मूगक्षियः। मीभन्यः। नाउ (न्याकि मानियः। नान तकाकत्वकः। ईंडि त्राबनिर्धकः॥ रज्बनः भू वःमः। इंडिप्रतः॥ मुखः

॥ ভদুমুঞ্জঃ।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

তেজনকঃ পু॰ শরঃ।ইত্যনরঃ॥

टिजनी जी मृर्व।। इंडिंग्स्याः क्यांकि-

মতা। ইতি শদ্রত্বাবলী ॥
তেরপত্র ক্লী স্থনামথ্যাতবৃক্ষঃ।
তৎপর্য্যায়ঃ। গদ্ধজাত ২ পত্র ৩
পত্রক ৪ ইতি শদ্ধি বৃদ্ধারলী ॥ অস্যত্বাঃ। কফ বাস্থা ইল্লাসাক্লি
নাশিব ইতিরাজবল্পতঃ তন্তন্ত্রোক ॥
পর্যায়া স্তৃকপত্র শন্তে দুইব্যাঃ ॥

তেলসঃ পু॰ কপিঞ্জলপদী। ইঙি রাজনির্ঘণ্টঃ!৷

(छन्नकतः जि (उक्तावृष्टिकातंक-मुवारः। इति विरार्कः।।

তেজষিনী স্ত্রী জ্যোতিমানী। ইন্তি শব্দরভাবলী॥ নহাজ্যোতিমানী। ইতিরাজনির্ঘণিঃ॥

তেজখী ত্রি তেজোগুক্তঃ। এথা। মহা তপদ্বী তেজখী বুফ্চারীচ সুবুতী । যুশ্মদ্বিধাক শাস্ত্রঞ্চ পাটড়ান্ডচ পণ্ডিতঃ।। ইতি যুক্ষবৈবর্ত্তে শিক্ষ জন্মখণ্ড ।।

ভেজিতঃ ত্রি তীক্ষীকৃতঃ। শাণান ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ানিশিতঃ ২ ক্ষুতঃ ৩ শাণিতঃ ৪ ই ভ্যনরং।।

(उद्योगाने जि (उद्यागुन्तः । यथा।

शक्तानी शुक्तमः नामक्ति उत्रमः

मक्ताना । (उद्योगमाः न द्यामाम वद्यः मर्जन्यमः गथा । ইভি वृक्ष-दैवदर्ज शिक्षक्षम् । ।

(उत्त्रामधः ।पू•्ग्निकान्निका। ইভি त्रञ्गाना।।

তে জোরপ (क्री तुका। मधा। मनतीतः विगुरु वृद्धिम्पुय वह छोल्प्यियः। यह-नाकि मर्दमाकि তে জোরপ ने मा-नारुः। ইতি বুক্ষবৈবর্তে ঞীকৃষ্ণ- 'दाष्यथलः॥

(उरबावजी जी शक्तिश्रनी। इंजि 🗸 শব্রহাবলী ॥ চবিকা। ইতি রহ্নাল। ॥ মহাক্যোতিমঞী। ইতি র।জনিঘণ্ট:।।

(उरकाव्कः पु क्रुानिगरः। ইতি वानिवर्षकः।।

তেন ব্য তক্ষেত্ন। সেই নিমিত্তে ইতি ভাষা। ইত্যন্ন টাকাষা। ভর্ত: ॥

(जनः भू॰ गानाक्वित्मवः।यथा। তেনেতি শব্দ স্তেনঃস্যাৎ নাক ল্যা-नाः भूमर्भकः। (उ भाषाताहाउ গৌরীন শব্দেনোচ্যতে হরঃ। তেন মক্লেকিশ্চাশ-শন্দ্ ডেনইতিম্তঃ । इंडि मङ्गोउपायापतः ।

তেপ খড় কম্পে॥চ্যুতৌ।ইতি ঁ কৰিকল্পজনঃ।।

তেमः পু॰ जानी जायः। ইত্যমর:॥ (इनन की वाद्वी कंद्रगणा वाक्षन ।इंडि (यमिनी॥

(उननो खो छ्जी छमः। ইडि , হেনচন্দ্ৰ: ৮

তেব্ ঋড় দেবনে । ক্রীউন ইতি ं यावट । इंडि कविकंत्रकमः ॥ उवन• द्वी (किनकानन•॥ की छा।

िंड (इम्हन्सः ॥ তৈজস• क्ली ঘৃত•। ইতি মৃতিঃ ॥

थाञ् पुरा । हेन्। मझः ॥

टिकमावर्खनी खी म्या। टिकम गनानमूही **इंडि ভाষা। ই**ত্যমর::। তৈতিল প্লী ববাদ্যেকাদ শকরণান্ত-ৰ্গত চতুৰ্থ কন্নণ। তত্ৰ স্কাত ফল। यथा। कनामुम्हका ननगा जिनावी সুমূর্ত্তি সম্বর্জিত কামদেবঃ ৷ বক্তা-**७**१क्कः समनः तूमीन एरेखिङ-गाथा करा शुत्रु हो ॥ इंडि কে। স্ত্রীপুদীপঃ।।

তৈতিলঃ পু॰ গওকঃ।ইতি নেদিনী॥ তৈভির• লী ভিভিন্নিগণঃ। ইত্য-नदः ॥

তৈভির: পু• তিভিরিপক্ষী।ইতি রারনির্ঘণ্ট: ॥ গওক:। ইতি (चिमिनी।।

रैङ डिब्रीयकः भू रैङ डिब्रीयी। যজু র্মেণীয় শাখা বিশেব বেভা।। टैडिंखिद्रीया खी यंजूर्दिमम्भाशा-विष्मयः । यथा। (स्वत्राञ जूउः সের্মপ ছপর্মব্বা যজুষা গণণ ভতো गाजाश्यम्नाया ममृ मु सान्यकूर्ग-ণান্।। যজু • বি তি জিরা ভূত্বা তলো-लूभ उया एमः। टेड बित्रीया है कि যজু: শাখা আসন্ সুপেশলাঃ।। ইতি শ্ৰিভাগৰত ।।

रैंडत्र शिक्षी क्षूष्णियः । उर् भर्यद्रायः । रेडत्र १ २ रेडतः ० व्यनीवी ८ त्रागमः १ व्यम्प ख्याः । निभित्रद्र । डिक्डद्व । त्रुप नामिद् । व्यक्षपत्रक्षम् । ইতি त्राज-निर्चिषः ॥

टिजन क्री जिङ्गकः। ইতিরত্ননালা।। **जिनामिका** जिल्हा । यथा । जिला-**कि निश्व वस्ता॰ तिह रेखन गूका** ছত•।ইতি ভাবপুকাশঃ॥ ডৎ পর্য্যাথঃ। মুক্ষণ• ২ সেহঃ ৩ আভ্য-ঞ্জন ওাইতি হেমচন্দুঃ।। অস্য গুণা । कवायद्वा मथु ब्रद्धा विष्ठाद्वा । উक्क्द्वा । ব্যবাধিত্ব•। পিত্ত কারিত্ব•। বদ্ধ-विग्रवद्वशास्त्रयावर्षक्षा महिवाछः विकात नानिष् । भिषात्रिष्ठ विक्र षुक्षा नािं ठेवा ८ भव्र किक्ट ভেষত্ব-মাক্তাপহ-। ইতি রাজ-निर्घण्डः।।

शाभाभक्षुत्राउन किनम् खपः। सर्मु गतुः। किकिन सरीनपृक ॥ दुरामः (याता मःकृ उ उँ वामा मर्ब-(द्राग नः भिद्ग-।। अवगाश्तगुकः তৈলস্য গুণঃ। শরীরবলকারিত্ব। निज्ञामुख ज्ञामकूल धमनी नाडी

দারা তৃপ্তিকারিত্বঞা। নিত্যু নন্তকে क्षिकरे उनमानगुगाः। भित्रः मृल् थानिङ भानिङ नामिङ् ो क्ष्यम् नमः मृष्ठा कातिवः । কেশস্যাপতন ঘনতা কৃষ্ণতা দীৰ্ঘ-कातिकः । इन्दिय भुमन्छा-शिम्बि कारिङ्क ॥ निडा कर्त टेडलः প्রণम् गूगाः । सन्। इन् मश्रादशहाः नुजि, वाधियं कर्गवाज्य রোগাজন করু:।। মর্দ্দনৈতৈল স্চুগুণঃ । क्ञाम्धे गुगगुरुष्। ইতিরাজব-লভাদিঃ ৠ পাতঃ বানে বুতে শান্ধে षाद्रम्पा गुरुष उथा। मन्यत्वभ मगःरेजनः जयारिङ्गः विवर्जायः ॥ ইতি কর্মলোচন ॥ ঘৃতঞ্চ गार्षभः टेडकः गटेडकः भूत्रवाभिछः । अपूष्ट भक्टें उनक रेडना जारक ह নি স্ত্ৰা: ।ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব-৷৷ 🗱 🛚 वान्नविष्मत्य रेडन गुरु १ कन । यथा। व्रक्षो र्षुागः भाग कीर्जिनानः क्रा मृह्यः वृद्ध भूजाशिः गुरतो वर्ष श्वानः मूरक माकः मानो मीर्घायः ॥ 🗱 ॥ व्यथनि विकारित टें उलगुइत (माव मास्त्रर्थ (मय मुवा नियमः। त्रवी भूद्र- भूदि मृशी कुरक ज्यिः 'শুক্রে গোম্বণ অন্য পুরাণ ব্থান

े चारक नृन पर जिल्हा स्थ की वि । के देवन शिव कि के कि वार्ज भूषि ्ना छण्ड (ज्ञाप (छो म मृजू (छविष्ठ) नामिष्क । ই छि ताक निर्मणेः ॥ भागि छवि छ शूरतो छार्श्यद**ा**कः । अस्तर्शवनी ॥ युक्त रिष्ठना छ। इन खनय गरा १ म्यर्र-(क शीर्वसः युः ॥ इंडि क्यांडिः-সারস গ্রহঃ॥ रेजनक क्षी जन्न पतिनागरे उन है जि

व्याकृत्यः !! रेजनकातः शुः कलितमयः। ७९ भर्त्रायशासककर २ जिनास् उ जिन्नहिष्णवकः e। यगः एतः । स्माल्युविद्धः। क्ष्रेषुः। डेक्प्रंः। বা ভাগনার বিষ শোফ নাশিত্ব• ৷ রসম্য বন্ধ নি হিত্ব । দেহ নি ছিল । তৈলপর্ণক প্লী প্রস্থিপর্ণক । ্কারিত্বপুষ্টাত রাজানর্ঘটঃ।। टिजनकाद्रः शृ॰ वर्गमङ्गद्रजान्धि-বিশেষঃ। কলু ইতি ভাষা। স কোটকন্ত্রাগর্ভে ল'ব্রুকারাম্ভাতঃ।

रिजवी 8। इंजि (इम्राज्युः ॥ रैठनिक्छे **द्वी रेडनगन । थनि** इंडि ি খ্যাত্ত•1তৎপর্য্যায়ঃ। পিণ্যাকঃ২

ইতি বুক্ষবৈবর্ত্তে/বুক্ষথও।। তৎ

शर्ग्रायः। श्नतः २ हाकिकः ०

र्नगङ हन्द्रक भू बगा छः। अर्थ हिन तः भू प्रभविष्मयः। इति ভিলটোরিকা **জ্রী তৈলগা**বি**কা।** इ जिल्ला हावनी।। रेजनामा जी क्षेत्रग्रंड मन्जनार्थ रेउन भूर्व काष्ट्रानि निर्मि**ङ भाव** বিশেষঃ ! ভতাবস্থি তিগুণাঃ। বাত ্রোগ ব্যাহ্মগুরোগ পত্ন বাধির্য্য িনিমিল গাল্প ধ**নুন্স ভালগৃষ্ঠ পুচ-**मनः ० कत्रवीतकल्यनः । । निष्याम गावकम्य कथाने ্ৰাৰভাগতত ক্ষম ক্ষিরভব ন্দক্ষু হস্তি রোগেয়ু শতর্• । हैं ज राजपत्र करा।

> ইতি ভাবপুকাশঃ॥ टेडलगर्निक ली इतिहन्सन । इंडा-মরঃ ।। চলনেবিশেষঃ । তলু তিল शर्व्ऋषाजः ध्वनः मुमीउनः। ইতি ভন্নতঃ।।:

े टेडवश्मी खी इन्स्न ।। श्रीवामः ॥ निष्टुकः। ३७ त्मिनी ॥ रेडनभा बी रेडनभाषिका। इंडि वाक्रिक्षः॥ थिनः ऽ देखन कनुष्ठः ८। यगा छ्याः। देखन भाषिक। खी. की देवित्मवः।

टिनालाकाइंडि यात्रभूना इंडिए " टिनां हो खी त्तुहे।। इंडि (इमहन्द्रः॥ ভाষा। তৎপর্য্যায়:। প্রোফী ২ । इंडानदः ॥ टेडनहोद्रिका 🗢 । ইতি শদর্মবেলী ॥ তৈল**প**।৪। हें जि ब्राइनिर्धकः ॥ टिनायुका ६ থলাধারা ৬। ইতি জীয়বরঃ॥ रें उन्दर्शनी विका खी शिशी विका (जनः। उट्यवंगयः । उन्नार কণিলান্ত্রিকা ১:ইতি রাজনির্ঘণীঃ!৷ रे उनक्षाः शु॰ इङ्गरी ॥ विभी अवः। ইতি রাজানর্ঘটঃ॥ रेडन जाविनी खी बाजी भूमत्क ইতি রাজনির্ঘণিঃ।। रे उन्मानी जी वर्जिः। ইতি শদ্মাना॥ रैं उनम्भाञा जी स्वाः जिनभारा-**२न्धाः यदायाः ना।इठि विक्**षि-স•গুহে অমর ভরতো॥ रैज़नाधन क्री गक्कनुवावित्सयः। काकना ইতি ভাষা। उৎপर्यायः

। कारकान २ (कालक ७ भन्न व्या-

প্ল ৪ ককেলেক ৫ কোষ্ফল ৬

रिजनमुर्विकः शुः क्नमितिः। इंडि

माशास्क । इंडि

। ইতি শद्यान्तिका ॥

(रुयहन्मुः॥

रेजनाएक जी

রাজনির্ঘণ্টঃ !৷

टिनामुका भ्री डिन्नशायिका। इंडि क्रोधितः॥ रेडिनिकः भू· डिनकादः । इंडि व्याक्रयाः॥ रेड़िनी जी कीर्यं हुई। उट পন্যায়ঃ। তৈলকীটঃ ২ বভ্নিস্তা ৩ एक्नाणनी 81 देखि बाजनिर्यण्डेः ॥ मनावर्ज्धः । इठि नदमाना ॥ रै जिनिमान। जी यखगृह । कनूत ঘর ইতি ভাষা। ইতি হেমচন্দুঃ।। रैजनी पु॰ जी रेजनकातः। इंजि হেমচন্দঃ ৷৷ তৈলসমুদ্ধিনি ত্রি ৷৷ रैं उनीन की जिनाक्ष्य । ইउ। मद्रशा তৈবঃ পু• পৌষমাসঃ। ইত্যমরঃ॥ তৈষী ত্রী পুষ্যনক্ষত্রযুক্তা পৌর্নানী । ইতি মুধ্ববোধ•॥ তৈক্যু• ক্লী তীক্ষ্বা। ইতি ব্যাকরণ• ।। তোক ক্লী অপত্যু । পুৰোদুহিতা চ । ইত্যমরঃ। তোন্ম ন্নী কর্ণনল্গ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ মেয়:। ইত্যদ্ধপাল:।। তোকা: পু॰ হরিনব:। অপকুষ্ব: । ইত্যনর: ॥ হরিদ্বর্ণ: । ইতি (इमहन्दुः॥ (उार्वेक जी दामभा**कत्रशामहन्तः।**  इन्तः मंद्य मुधेवारः॥ क्यः ।।

त्वाब॰ क्वी गवािक ठाउनमञ्डः। भाँवनी इंडि थ्याउः। उर् भर्यायः ... ্। প্রেন•২ তোদন• ৩॥ গ্রুস্য কোদনদঙাঃ তৎপর্য্যাবঃ। বৈণুক २ । इञ्जनतः ।: (वनूकः ७ । इंडि ভরতঃ 🏻

তোদঃ পু• ব্যথা। ইতি রত্নমালা॥ ভোদন জী তোত্র। ইত্যমর:॥ ব্যথা। ইতি মেদিনী॥

ভোনরঃ পু ল্লী ভাস্কবিশেষঃ। मावनी इंडि डाया। उट्मर्यायः। শর্বনা ২। ইত্যমরঃ॥ হস্তক্ষেপ্য সশল্য দণ্ডঃ । রায্বাশে ইভি <sup>ঁ</sup> ভাষা<sup>1</sup>। ইতি-মহাভারতট্যকা।। তোমরধরঃ পু• অগ্নিঃ।ইতি শব্দার্থ-क्वडकः॥

তোমরিকা স্ত্রী / সুবরিকা। ইতি मक्त्रवावनी।।

**रे**ठ्।य• क्ली ज़ल•। इंड्रनदः॥ তোयकामः भू भनिवाधः। बन . (বভষঃ। ইতি क्रोपद्भः॥ क्रमाङि-वाविनि वि॥

े इंकि-इ एका मक्षश्री ॥ অস্য বিবরণ তোষক্ছু । क्री জলমাত্রপানৰূপ বুতবিশেষ:। ইতি মিতাকরা।। ঠোড খ সনাদরে। ইতি কবিকল্ল- । তোযডিস্তঃ পু• ঘনোপলঃ। ইতি हाद्रावनी॥

> তোযদঃ পু॰ মেঘঃ॥ মুস্তক॰॥ খৃতে ক্লী। ইতি নেদিনী।। জলদাতরি ত্রি ভোষধর: পু॰ মেঘঃ। মুস্তা॥ সুনি-याक्षाकः। इंडि मिनि।। তোযধিঃ পু॰ সমুদুঃ। ইতি পুরাণা। टायिशिय॰ क्ली निवदः। ইতি व्यक्तिम्का ॥

তোলনিধিঃ পু॰ সমুদুঃ।ইতি শদ-ब्रहावनी ॥

ভোষপিপুনী জ্বী কাঁচডাইভি খ্যাভ कनक भाक (छमः। उৎপर्यायः। वाक्षोरभात्रही ७ मञ्चाहनी ६ । ইত্যমরঃ ।।

ভোষপুরী জী পাটলাব্কঃ। ইতি मक्रावा॥

ভোষপুসাদন জ্লী কতক। ইতি ভূরিপু<sub>হে</sub>যাগঃ ॥

(अाय भूमार न कन की क उक्कन। हेि बङ्गाना॥

তোৰ্ফলা জ্ৰী ইৰ্নকঃ। ইতি রাজ-निर्विः ॥

(जायवल्ली जी कात्ररवलः। উছে

ইতি ভাষা। ইতি রহমালা।। ভোষশুক্তিকা স্ত্রী জলশুক্তিঃ।ইতি द्राजनिर्घणः॥

ভোষস্চকঃ পু॰ ভেকঃ। ইতি नमार्थकनुष्ठकः॥

তোয়াধিবাসিনী জ্ঞी পাটলাবৃক্ষঃ। ङ्ञि बङ्गमामा ॥ कायाहिया**निन**्रः शि शाठेः ।

তোরণ ল্লী কদ্বরা। কণ্ঠী। ইভি राजावनी ॥

তোরণঃ পু• ল্লী বহির্দার•। ইত্যমরং! মূলদারাদাহাদার । ইতি কোর্টা-म्यः ॥ बाजार्ग् नियात उस्या क्शितिवष्कः नान। वञ्ज तञ्च। क्यियः ধনুরা কার বলক্ষ্য ভত্তোরণমিতি বহবঃ॥উপব্নিসুগাদিযুক্ত স্তম্ভাদি षय निर्मिक शुद्धानि वहि ष्वांत्र । ইতি সাঞ্জঃ।। বন্ধননালেভিখ্যাত• ইতি কেচিৎ। ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ ॥

তোল• ক্লী পু• ভোলক•১ যথা। এক তোল• দ্বি তোল• বা ত্রি ভোল• (वर (ठालक । ইट्याधिक नतः কৃত্বা পাৰশ্চিতীয়তে ধুৰ ।। ইত্যা-गयः ॥

তোলক জুলী পু শাণছন্নান । ইতি

ভৌর্য্য ত্রি

শহস্বা।। খুশীতির জি পরিহার। । তারু ধোডশ মাসকঃ বারবিভ র্ক্তি পরিমাণঞ। তোলা ইতি ভরি ইতিচ ভাষা।তৎপর্যায়ঃ । কোল ২ দুলুণ ৩ বটক । ৪ কর্যা 🗃 **८ : ই**তি नৈদ্যকণৱি ভাষা ॥ कर्षः ७। इंडि जीया जि॥

ভোষঃ পু॰ জুজি: "ভিন্নরূপি:।। তৌতাভিফ প্রি অ্রত ভিত্ত भावन्त्रया वि । तुन्य अवन्यं ५ न विकेष (अजा अस् कर्मनः। তত্ব•ত্যাত নলো ন শালি চ গিরা• ब्राहम्भाकःकादंबा। इंडि भूवाब-हरिनु भगः॥

(ञेञिक• क्वी गुक्ताहेञ्जिताप्रनिषंग्रेः ভৌতিকঃ পু॰ শুক্তিঃ। ইতি রাজ-निर्घण्डेः॥

जियं की ज्यं गुत्रकारि ज्व भन्द ৰূপে । ইভ্যনর টীকাষা ভরতঃ॥ छोर्गाक्क ही हुउ। भी उवामानिम् जन्मि उ॰ बय॰नहीं १४०। ইত্যনরঃ॥ নট মন্ত্ৰানি নৃত্য গীত বাদ্য মিতি-ভ্রয•।ইতি ভত্তীকা সারসুন্দরী 💵 ঞাবিষ্ণু গ্ৰেণীত বাদ্যন্ত্যকল• यथा। भाषन (यशुक्त विषे सम क्या পরাবৃণাঃ । তেরা ব্দ্র ক্ল

ज्ति मृत्व गर्डा नम ॥ यावडि काक्तद्वारार्द्रित शीयमारन यमस्रिमि। छावष्ववं मह्माि इन्दुलात मही-्या ।। क्षायान् धायान् मिषः সর্ববেদবিদায়র:। নিত্যুণ পশ্যতি दिव वज्रुभागि (एव न न न नर ।। मज्जु है फिर बार्य उ हे मुर्ताक भर्थ श्रिजः। मर्दकर्य स्पानुष्ठ खडाणि मम भूबकः ॥ इन्द्रेलाका ए भद्रि-ভুষো মম গীত পরায়ণঃ। পুমুক্তঃ मई मः मात्राचम लाकाय गहिं।। যম্ভ গায়তি সুশোণিকৌমুদ্যালৈ দ্বাদশীণা সর্বসঙ্গ পরিভ্যন্ত্য দম लाकाय गहाउ ॥ यस गायाउ शी डानि सम जागद्राय मना । गर्व " সক্তং পুমুক্তো বৈ মম লোকায ় গছতি গা এতাত্ত কথিত দেবি गायनम्। कन् भर्टः यम्। गीउमः निष्म ज्राद्ध म• मृति मागद्र•।।#॥ वाहित्रमः भूतकप्रीम उर मृगृष्ठ **'দে**বেভ্য: সমতা• স্বয়• ॥ সম্পং-काल भुर्याराग मिम्राउन वा श्रुनः । नव वर्ष मङ्गुाणि नव वर्ष **শ**ত্তানিচ ।। **স**বের ভবন গড়া भाषा देव यम्ह्या । अत्वत्र

## ভৌলিকি

ज्यनाष्ट्रश्चः सहन्त गमनानयः॥ मय्यामि छा**न मन्मारेड मॅम**-লোকায গছতি॥ #॥ নৃত্যমানস্য বক্যানি ভছ্ণুষ্ব বসুন্ধরে। মনুত্র। বেন গছডি ছিত্বা সংসার সাগরণ ॥ वि महर्य मह्यागि वि महर्य শতানিচ। পুষর দ্বীপ মাসাদ্য ষ্চুন্দ গ্ৰনাল্যঃ॥ ফল-প্ৰাণ্নোভি जुर्माि यम कर्ष गत्रायगः। क्ष वान्खगवान् भूतः भीववान् मूशाल श्चिः ।। म**ङ्क रे**फ्य **बा**रय**ङ** न नात्र भद्रिसाहिखः । 🕸 ॥ यस জাগরতো নিত্য• গীভ বাদ্যেন नर्खकः। कश्रुषीशः ननानाम्। वाक রাজস্ত জাযতে॥ সর্বন্দ সমা-युक्ता ब्रक्किका रेव महीनिक्टिः। মন্তক্ত শ্চৈৰ জায়েত মম কৰ্ম-পরায়ণ:।। ইতি বরাহপুরাণ।।। ভৌল॰ क्ली जूना।जूना भरव अर्थ कः॥ তুলারাশোপু •ভৌলী।ইভিজ্যোতিৰ• वर्त्रका भार्षवाद्यम् वा यन ॥ ठोनिकः भू विवकातः । ই उ **न**क्यांना ॥ ভৌলিকিক: পু• চিত্রকার:।তৎ भर्यायः। **त्रकाबीयः २** विबक्९ ० । ইভি হেম্চন্দু:।। ভৌলিক: ৪। हेि नम्माना॥

ख्राज्ञ,

ভৌবার॰ লী তুবার**লগ**। ইতি রালনির্ঘণ্ট: ॥

তৌক্ষিক: পু॰ খনুরাশি: । ইতি দীপিকা॥

ভ্যক্ত তি কৃতভ্যাপ। তৎ পর্য্যাখঃ।

হীন ২ বিধুত ৩ সমৃজ্বিত ৪

ধৃত ৫ উৎ সৃষ্ট ৬। ইত্যমর: ॥ বিনা
কৃত ৭ বিরহিত ৮ নিব্রহ: ৯।
ইতি ত্রিকাওশেব: ॥

ভাৰ ও হানে। ইতি কবিকল্ল সং॥ ভাৰন লী ভাগেঃ। বৰ্জন । ভাৰ-খাতো ভাবে অনট্ পুভাগঃ॥

ण्डर कि छ्टा (मई इंडि जाया। जम्ड भू विक की विक्राया क्रभः जाः म्हा। नईनाम स्वा १यः। इंडि यहां क्राया।

ভ্যাগ: পু· দান·। ইত্যমর: ।। বর্জন•
। ইতি মেদিনী ।। বিবেকিপুক্ম: ।
ইতি শহরহাবলী ।

लाकी वि माला। भूवः। इति मिक्ती ॥ वर्जनभीवः । यथा। यस कर्म कन लागी न लांकीलाः निषीयरः । इति नगवम्गीला।। लागियः वि लाकः। लागित निस्नमः। है जिनाकत्रभः॥ लाकाः वि लागर्यागाः। दर्जनीयः ৰপুগ

। यथा । जीत्र भुिक्ष खाँका खारका वर्ममा विक्यः । देखि भायकि बज्यः ॥

ত্রক ই ড গভৌ। ইতি কবিকল্লফম: !!

ত্রগ ই গভৌ। ইতি কবিকল্লফম: !!

ত্রদ: পু• ক্রী পুরবিশেব: । ইঙি

ত্রিকাণ্ডশেব: !!

ত্রদ ই চেষ্টে। ইতি কবিকল্পনা: ॥
ত্রপ নি উ ড ব 'ঘড়্জে। ইতি কবিকল্পন্স: ॥

विभा जी भू॰ विद्धा । ইত্যনর: ॥ विविधा ইতি मिस्त्र हातवी॥ विविधा ইতি শহরত্বাবলী॥

ৰপাকঃ পু• শুেছবিশেষঃ। ইত্যুণাদ্ধি-কোষঃ।।

ত্রপার গান্ত্রী বেশ্যা। ইতি জটাধর:॥ ত্রপিষ্ঠ: ত্রি অতিলজ্জিত:। ইতি নুঝাবাবে:॥

ৰপীয়ান ৰি ৰুগিচঃ। ইতিব্যাকরণ।। ৰপু শ্লী সীসক্।। রক্। ইতি মেদিনী।।

बगुः हो ब्रक्ष । इन्त्रगाहित्का हः॥ बगुक्क हो खी बगूरी। इन्जिन्ना ह-निर्वक्षः॥

बश्री जी ज्लागा है जित इसामा॥ बश्रा जी तक्रा है जि चत्र ज-

विश्वनी कुँठ दिवीशाकायः श बश्व॰ द्री\ इक्॰। ইভি ভরতক্ত-**দিক্পকোষ:।। ভ্রপুথীফল**। সসা ইত্তি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়:।কণ্টকি-क्व २ नूबावाम ० मुनी उव १ । े छल्लयू कल छगाः। नीलपुः। यल **ए**६ जुन मार शिख तकशिख नामिष् । श्रामुष् । भी उष्क ॥ **७८ न देक ल ७ ।। । ज मुख् ।** हेक खु । शिखनद्व• । कक वाक नामिद्वक ।। **७**ष्ट्र क्ला थाः। मृबलपुः। भी उपुः । কৃষ্ণ। পিতাসু কৃষ্টু নাশিবুশ। ইতি ভাবপুকाশः॥ অস্য সামান ख्याः। त्रामूष्। इक्षः। विश्वेश्विष्। भी डनपुर। मूर्थाभूरपुर। क्कपुर। অতিন্তলত্ত। ইতি রাজবল্লভ:॥ बणूबी जी कई है। इंडि (इनहन्तुः॥ मञ्जारञ्चाल भाठेः॥ ब यून की तक । इं ि ता ब निर्ध के ॥ बनुषी की यह मृतिक्री॥क्क्री । লিজাবিশেষঃ । সদা ইতি ক্লীরা ' ই डिচ ভाषा। उर भर्यायः। भी उ-भूझा २ का अलू: ०, बभूक क्री 8 . বহু ফগা ৫ কোষফলা ৬ তুন্দিল-क्वा १ कफेकीव उा४ जूरावामा २! षामा । क्षा विकास विकास

রত্ব। লিলিরত্ব। ধকত্ব। ভুম নিত্ত विपाहार्खि वाडि नानिष्-। वह-ম্বদত্বকাষোল্রিত্যবকটালু-त्रिशार्थः। इंडि त्राविनर्यणः ॥ ত্রগা লী দুর্গা। ঘনেতরদ্ধ। পাতল-**परे रेंडि ভाবा। रेंड्यब्र**ि**काया**• **जत्र अव्य विम्यावितामः ॥** वय॰ क्ली बारवयवः। जिन**हेलि ভावा** । ইতি মুগ্ধবোধ•॥ बयः भू वित्र था। जिन हे जि जावा। बि मदमा वङ्गठना छ काला १य॰। ष्मग्र जी निक्तीव निक्र्या क्ल

जिनुः बीनि । ইতি व्याक्रमः ॥ उदाहकानि यथा। कालः ३ व्यानः २ **ज्**रन २ गक्तामार्गः ८ निष्ठकः ८ खाः ७ ग्रीवाद्मधा १ कानिसाम्-कावा ৮ विवाः २ मङ्गा २० भूत्र >> शूक्रते >२ त्रामः >० विकृ: >8 অবপাদ: ১৫। ইতি কবিকল্ল্ডা।। ত্রিসংখ্যা বিশিষ্টে ত্রি। ইত্যমরঃ॥ #।।ভিন্তি। ভার্য্য ত্রিশালাক্ষ ত্রে। ज्ड्रांक वाक्रवाः । धुव विक् বিক্লমাণ্চ ন ছেতে মুকুলপুদাং॥ हैं वि तुक्तिवार्त्त शुक्तिचं थर ॥

वरी जी अक् नान रज्दिन। এउ-এি হব॰ । ইত্যমর: ॥ পুরদ্ধী ॥

मूमिकः। इकि विश्वः॥ (मामद्रामीवृक्तः। इकि मद्गाम्युकाः।
बयीजनुः भू॰ मूर्युः। इकि इक्षायुक्तः।।
बयीवर्षः भू॰ श्वाक्यः मान्नाः विद्यानः।
विद्यानक्याः इक्यमद्रः॥
बयीम्थः भू॰ व्याक्यगः। इक्यमद्रः॥
बयीम्थः भू॰ व्याक्यगः। इक्यमद्रः॥
बयामम् कि म॰श्याविष्मवः। ५०
(उद्ग इकि जावा। वक्यम्माखायः।
॥ उद्म १०१ व्याक्यः। ३०४मद्रः॥
उद्यापकः। ७। व्यक्यः। ३०४मद्रः॥
विद्यापकः। ७। व्यक्यः। ३०४मद्रः॥
विद्यापकः। ७। व्यक्यः। ३०४मद्रः॥
विद्यापकः। ७। व्यक्यः। १०४

ব্যাদশং বি ত্যোদশানা•পূরণঃ। ॥ তের্ঞি ইতগদি ভাষা। ইতি ব্যাকরণং।।

वर्गाम्भी जी जिथिविष्मदः। जा हिम्मुम् वर्गाम्भ कला किया क्षा वर्गाम्भ कला कियाकिष्य काल क्षा वा। इंजि जिथामिजवः।। जव बाजम् कलः यथा। क्षानिजः माजिक जाव होनः मुशी ह वाला बननी श्रियम्। ममालमः भिन्छरेग-कर्वजा वर्गाम्भो बन्च जिनि। येमि मग्राट। इंजि काश्रेणमीभः॥ इंग् धर्मम् जिथिः। इंजि वर्गाम्भूतागः॥ धर्मम् कथ्रा। गुर्म। निर्वर्थ। इंजि क्विक्नम्भः॥ बन है कि जानि। है क किंदि कन्नकाः॥ बन है १ ज्या है जि किंदिक न्नकाः॥ बन य ज्या है जि किंदिक न्नकाः॥ बन नी वन । है जि जिका अल्याः॥ बनः जि कन्नाः। है जुज्जाः॥ बनाः जि कन्नाः। है जुज्जाः॥ जानी है जिल्ला। जुल्लकाः। जन्नाः। गृज्यकेन । है जुज्जाः॥ जननः। ०। है जिज्जाः॥

। বসরেণঃ দ্রী সূর্য্যভার্য্যবিশেষঃ।
। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।

वनतिष्ः भुः विः भए भत्र साग्भिति-सागः। मगदाकास्तर्गात्र मृद्युकित्राण मृभ्युत्त । छए भर्युत्र । धुः भी २। यथा। बालास्त्र गत्र मृर्यु करत्र धुः भी विलाकात्र । बनरत्र गुस्र वित्तर्थ जिः भंडाभद्रसागू जिः॥ ই जिरेव मृद्युक्त भत्रिकावाः॥

নসূর: শুঁ ভীক্কং। ইতি সংক্ষিপ্ত সারে উণাদিব্ভিঃ।। বস্তঃ ত্রি ভীতঃ। ইতি লটাধরঃ।। শীঘু দ্লী। যথা। সবিরামণ ত্রিভা-লঞ্চ এক-শ্ন্য স্তথাপরে। শেষে বস্ত ত্রিভালঞ্দেবসার ইভীর্য্যন্ত

॥ इंकि मकी उनास्मानदः॥

<u> একুং 🗿 তাসশীলং। ইত্যমর:॥</u> ত্রতি পালনে। ত্রৈড পালন ইত্যব े रिकन्तिममीएमें वा भठाउँ। इंडि कमरीयद्रः ॥ इंकि किवक्कम ॥ होकाया॰ मूर्गा**नामः**॥

कान ही तकन ॥ वायमना कडा ॥ 'ব্লক্ষিতে ত্রি। ইতি মেদিনী।।

ত্রাণা ত্রী ত্রায়মাণা। ইতি রাজ-निर्घणेः ॥

ব্রাত্ত 📵 রক্ষিত । ইত্যুনর:॥ बक्रांग ही।।

व्याक्त्रणः॥

ত্ৰায়তী জী ত্ৰায়নাণা লতা। ইত্য-নরঃ।। ত্রাণক্রী হ।।

ত্রাঘ্মাণ ত্রি রক্ষ্যমাণ । ইতি ব্যাকর্ণ।।

ত্রায়মাণা জী বলা ইতি বহুলা इंडि ह भाजा। उर्भग्रायः। वार्विक २ बायकी २ वन छानुक। 8 । ইত্যমর: ॥ কৃত্রা ৫ ত্রাযমাণিকা , ७ वन जुना १ मूकामा ४ वार्विकी २ निविद्या ७० चनुका ७७ माक्नार्श ३३ (मववना >> शानिनी >8 खय-नामिनी १८ व्यवनी १७ तक्ती ११ वाना १४। इंडि ब्राकनिर्घणेः॥ ত্রিক

मृजुर्गाभी १३ जितुनाभिका २०। ইভিরত্বমালা।। অস্য গুণাঃ। শীতত্ব ৷ মধুরত্ব ৷ গুলা জুর ककाञ् जुम ज्का क्रय ग्रानि विव ছুদ্ধি বিনাশিত্বগ । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥ পিত্ত নাশিত্বং । ইতি রাজবল্পভঃ।৷

वानः भूः ভयः। ইত্যমরः॥ मृत्य-র্দোব:।ইতি মেদিনী॥

वामनायी वि चयनाजा। उट পর্য্যাম্যা **শন্তু রঃ২া ইতিহেনচ**ন্দু:।। ত্রাপুষ ত্রি ত্রপুষানিখিত। ইতি ত্রিংশঃ ত্রি ত্রিংশতঃ প্রণঃ। ইতি व्याकत्रगः॥

> ত্রি-শক্ষ ত্রি-ত্রি-শৎসমূহ। সমূহার্থে ডকপুত্যয়ঃ।ইতি সুপদ্মব্যাকরণ।। ত্রিশেৎ দ্রী সংখ্যাবিশেশঃ। ত্রিশ ইতি ভাষা। এক্বচনান্তো হ্য•। ত্রি-শন্ধ্যে ত্রি-শতৌ। ত্রি-শতে। ৰছত্ত্ব ব্ৰি-শতঃ। ইতি ব্যাকরণ ।। बि·मट् अब · ली अभूम · । ই खि मद-मान ।।।

ত্রিক • 🛒 পৃষ্ঠব • শাধর:। ইত্যমর:।। बर:। ইতি भिमिनी।। विश्य मः-স্থান•। ইতি হেমচন্দ্রঃ। ত্রিফলা।। बिक्द्रें।बिममः। यथा। एएही मात्र नःगुकाधिकवय नगन्यारः। वाङ

রক্ত-নিহন্ত্যাশু সর্বরোগ হ্রন্ত্য:॥ ইতি স্থবোধঃ॥

ত্রিকলং পুণ ত্রিকৃটপদ্রতঃ।ইত্য-শরঃ॥

ত্রিকটঃ পু• গোজুরকঃ।ইতি শব রত্রাবলী।।

ত্রিকটু ল্লী মিশ্রিভশুগীনরীচপির্ন্তঃ
। তৎপর্য্যাবঃ। ত্রুবেণ ২ ব্যোবং ৩
। ইভ্যমরঃ॥ কটুত্রবং ৪ কটুত্রিকং ৫
। অস্য গুণাঃ। দীপনত্বং। স্থাস কাস
ত্বগাম্য গুল্ম মেষ্ট কফ ছৌল্য নেদঃ শ্লীপদ পীনস নাশিল্পঙ্গ।
ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

ত্রিকট জী নিলিত কৃত্ত্যশ্রিদমনী
দুসুশা ত্রব কপ । তৎপর্য্যায়ঃ।
কণ্টকারীত্রয় ২ কণ্টকত্রয় ৩।
ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।

ত্রিকণ্ট: পু॰ গোক্ষরক:।ইতি শদ্রর্গবলী।। পত্রগুপ্তবৃক্ষঃ। তেকাঁটাসিজ ইতি ভাষা । ইতি শদচলিকা।। মৎস্যভেদঃ। টেম্বরা
ইতি ভাষা। অস্য গুণাঃ,। পিত্ত
কক্ষ নাশিত্ব । কক্ষত্ব । অগ্নি
দীপনত্ব । লগুত্বক । ইতি ব্লাজবল্লভঃ।।

ব্রিকটক: পু॰ শযুগর্গন্ৎস্য:। ইতি

ত্রিকাণ্ডশেষঃ। গোলুরক্স্ঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।।

ত্রিকা জী কুপোপরিস্পউপুান্ত ভাগঃ॥ ভূমিগ্রুপপউ॰ । ইভ্রেন্য ॥ কুপস্য সমীপেরজ্বারণার্থ- তিজি দাক যন্ত্রণ ইভিস্বামী ॥ ইভ্যমর টীকাষা- ভরভঃ॥

ত্রিকায়: পু• বৃদ্ধ: । ইতি ছেমচন্দু:।।
ত্রিকার্ষিক• ক্লী মিলিড নাগরাতিবিষা মুস্তা ত্র্য ক্লপ•। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

ব্কিলক্তঃ পু• বৃদ্ধঃ। ইতি হেমচন্দুঃ
। সর্বক্তি তি ।।

ত্রিকালদশী পু• খবিঃ । ইতি হলাযুধঃ ॥ ভূতভবিষ্যদ্বর্তমান-বেভরি ত্রি॥

ত্রিকালবিৎ পু• বৃষঃ। ইতি হলা-যুধঃ।। ত্রিকালজ্ঞে ত্রি।।

ত্রিক্ট• ক্লী সিক্সুলবণণ সামু**দুল**বণ । ইতি রন্থমাণুণ ॥

जिक्षः शु भे अवित्यसः। यरमाः भित्र वका। उर्ट भर्यायः। जिक्कृत् २। इज्यादः॥ मूर्यवः अ जिम्बरे ४। इज् रह्महन्तुः॥ जिम्बरः ६। विज्कृतिकः ४। ইजि सम्बद्धावनी ॥ कीरदार ममु जीद्र भर्वजः।

यथा। मेर्ड बङ्ग मयः खिमाम् बिक्छी। নাম পর্বতঃ। সূতঃ পর্বত রাজস্য जुरमदा किञ्चत मुख्यः ॥ कीदाम क्रववीह्या (यो जामन भिना जनः । উল্খি ডঃ সা গর ভিত্নাদেবর্ষিগণ সেবিতঃ ৷৷ অনুরোভিঃ পরিবৃতঃ ं श्रीयान् श्रुम्दगाञ्च । गन्नदिः ॥ किन्नदेव र्य टेकः जिष्क ठाव्रण श्रव्यदेगः ॥ विम्याद्रिः भूभक्तिकः अःयूरैज्ख তপহিভি:। मृग दीनि गर्डान्तु क বৃত গাত্রো হিরাজতে ॥ পুলাগৈঃ कर्निकारेत्रफ विद्यागलक भाष्ट्रेतः । षृत्र निष्ट करियम वन्तरी एक **हम्मरिकः॥ मारिन खारिन खमारिन**म्ह भवनार्ज्ञ न भिन्नरेनः। उथारेना र्वि-विरिष वृर्देकः मर्बकः मननकृष्ठः।। नाना शञ्जिकि एः मृत्यः भुभुविकः সমন্ততঃ৷ শোভিতো ক্চির পুথৈয় ক্ৰিভি ৰ্ব পৈশ্চ সানুভিঃ।। মৃগৈঃ শাথামূগৈ: সি-হৈ আঁতলৈক नमामरिकः। कीवछीवक नःवृद्धिकः-🔍 কোর শিথি নাদিকৈ।। তবৈস্ক **° কাঞ্ন• শৃঞ্চ সেবতে** যদিবোকরঃ । नाना भूत्र गमायुक्तः नाना शक्षाधि-বাসিত ৷৷ দ্বিতীয় ব্যাজত শৃক্ (महाउ यहिमाकदः । माख्याद्वर

সংকাশ• তৃষার চ্যসমিত •াবিজু मुनीन रिवर्ग्य (उरहा छ छ। म-यन मिनाः। তৃতीय व्यान मन जुक् क्षे मूक मुहमशाने छए क्उनाः भेगाऽ-ন্তি ন নৃশ•সা ম নান্তিকা:। নাতপ্ত ভগলো লোকে যেচ পাপ কৃডো-জনাঃ ৷৷ তস্য সানুমতঃ পৃষ্ঠে সরঃ কাঞ্চন পক্ষজ । কার গুব সমাকীর্ণ রাজহণসোপশোভিত ৷৷ গজোই-চল সংকাশো মদাচলিত লোচনঃ । ত্ষিতঃ পাউ কামোসাববভীণ भ्र उड़िन ।। म नीनः भक्क वान মূথ মধ্য গত শ্চরন্। গৃহীত স্তেন होतुन गुरह्गावाक मूर्जिना ॥ পৰ্ডছো জগমাথো লোকাধার ন্তপোধন। গ্ৰাহ গ্ৰন্ত গজেন্দ্ ত॰ ७क गुरं जना नवा दा। উक्तराता-প্নেযাজা তরসামধুস্দনঃ৷ ছল-ষ দার্যাসাস গ্রাই চক্রেণ নাধ্বঃ ।। বোক্ষযানাস নাগেন্দু- পাপিভ্যঃ শর্নাগভ । ইতি বানন পুরাণ ।। विकृष्टेगवन क्ली (मानी वनन । इंडि

ত্রিকোণ ক্লী যোনিং। ইতি শক্ষাথ-কর্মতকংগা লগ্নাৎ নবন পঞ্চন লগ্নে । ইতি দীপিকা।। ত্যাসু ত্রি।। जित्कांग वस्ति यथा। इनः )
भिवहक्षः २ कामाथा । वहि मखन ४ अकादः ६ वजुः ७ मृक्षां । १
भक्ति ५ (यानिः २। ই कि कविकन्नवा ।।

ব্রিকোণকল• ব্লী শৃঙ্গাটফ•।ইতি ॥ ভাবপুকাশঃ॥

ত্রিথ জী তপুর । ইতিশন্ চন্দ্র ।। ত্রিথউ জী থউত্রেয । তিন্দৃণা থউনো সমাহার:। ইত্যমর:।।

विथ्यो की विथ्ये । ইভামরঃ॥

বিগণঃ পু• বিবর্গঃ। ধর্মার্থকামাঃ। ইত্যমরটীকাষা• নীলক্টঃ।।

ত্রিগর্ত্ত: পু॰ দেশবিশেষঃ। লাহে রাথ্যদেশৈক ভাগঃ। তৎ পর্য্যয়ঃ।
কালন্ধরঃ ২। ইতি ক্মেচন্দুঃ।।
তদ্দেশছে পু॰ ভূরিনা গণিতান্তর॰
। ইতি নেদিনী।।

ত্রিগর্ত্তকঃ প্ ত্রিগর্তদেশঃ। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ॥

बिगर्डा जी युषु विकाश काम्याहरना । ইতি स्मिरनी ॥

ত্রিপ্রোগ:।।

রিগুণ দী সত্ত্ররস্থান দি। ইতি শ্রীভাগবতণা ব্যাণাণগুরুণে গুণুর্য यक्ति वि॥,

ব্রি**ও**ণাকৃত্ত বি বারব্যকৃষ্টক্ষেত্র। ইত্যমরঃ।।

বিজ্ঞাতক ক্লী মিলিত তুল্য বুণেলা-পত্রাণি। যথা। এসাদি বিভি কদিপ্তে বিজ্ঞান্ত বিসুপদ্ধিক। চাতুর্জাত সনাগন্ত ঘণ বাত কফ গহং॥ অপিচ। বুণেলা পত্র-কৈ স্থান্ত বি সুপদ্ধি বিজ্ঞাতক। নাগকেশর: সংস্কৃত চাতুর্জাতক মৃত্যতে॥ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ বিশ্ব ক্লী ত্ণ। ইতি শহরক্ষাবলী॥ বিশ্ব ক্লী ব্যং। ইতি বিকাপ্তশেবঃ ॥ বিশ্বক্ষা।

বিণাচিকেতঃ পু॰ যজুরেনিকদেশো-গুস্থ:।। তদ্বেদাধ্যায়ী। ইতি মনু:॥ বিতয় জী ব্যাগা পূরণ । ইতি ব্যাকরণ।।

ত্রিতক্ষণ ক্লী জ্রী তক্ষত্রয়ণ। ব্র্থাণাণ তক্ষাণাণ সনাহারঃ। ইত্যমরঃ ॥ ত্রিদণ্ডঃ পুণ সম্প্রাসাশ্রমঃ। বৃথা। যন্ত্রসংয়ত ষ্ট্রগ্রি, পুচণ্ডেন্দ্রির সার্থিঃ। জ্ঞান বৈরাগ্যরহিত ব্রিদ্ দণ্ড মুগজীবতিনইতি শ্রীভাগ্রতণ

বিদ্ভী পু বিদ্ভধারি বৃতি:। কায় বাহানো দুভ যুক্তঃ । ইতি जिमिन

ভিখানা

श्री जागव उशा या खु जा भवी उश ई जि त्वाक भू निष्धः ॥ जिस्ता जी (गाथा भरी न जा। दे जि करें । । जिस्ता जी प्रयोग की श्री क क्रिका जी प्रयोग की श्री क क्रिका ॥ जिस्ता भु॰ (स्वः। है जावाः ॥ जिस्ता भु॰ (स्वः। है जावाः ॥ जिस्ता भु॰ (स्वः। है जावाः ॥

विषणनक्षत्री खी जूननी। ইতি ताकनिर्विष्टः॥

(इयहन्मुः॥

ত্রিদশাযুগ নী বজুণ ইতি ত্রিকাও শেষঃ॥

जिनमातिः शू॰ श्रमूतः। **२७ म**फ-तन्नावनी॥

ভিদ্লালনঃ পু• স্বর্গ:।ইত্যমরঃ।।
সুমেক পর্ব জঃ।ইতি হলাবুণঃ॥
ভিদ্লোবাসঃ পু• ফ্র্য:।ইতি হলাযুধঃ॥

বিদ্যাহার: পু: অন্ত:।ইতিহলাযুধঃ।।\_\_\_

ভিদিনস্ক্ পৃ• তা্হস্পর্ণঃ। বথা।
ভিগ্তেছয় সেকো দিন বারঃস্পৃশভিগ্তেছয় তেত্বস্দিন•। ত্রিদিন স্ক্ দিন ত্রয় স্পর্ণনাদক্ষঃ।
ভিজ্যেতিবভব্তঃ।।

ত্রিদিব: পুণ ক্লী বর্গ:।ইত্যমর:॥

তাকাশ:।ইতি হেমচন্দু:॥

তিদিবা জী নদীভেদ:।ইতি

মেদিনী।।

बिन्दिनः शृ (एवः। ইত্যমরः॥ बिन्दिनाख्या जी क्रिन्ना। ইडि ताबनिर्दन्हेः॥

जिम्म भू निवः। ইতি एक्स म्मूः॥
जिम्म ने जित्रा । वाज निज
क्ष क्षा । ইতি রাজনির্ঘটः॥
जित्रा यकः जि जित्रा जित्रा । विश्वा । विज्ञा । विश्वा । विज्ञा । विश्वा । विज्ञा । विज्ञा । विश्वा । विश्व

ভিবাতুঃ পু• গণেশঃ। ইতি ভিকাও-শেষঃ। ধাৰত্ত্যে গ্লী।।

ত্রিবানা পু• বিষ্ণুঃ।। শিবঃ।। তারিঃ।।
নৃত্যুঃ। ইতি শহার্থকল্পতকঃ॥
ধানত্রবেক্লীজীচ।।

ত্রিপত্র

বিধারক: গু॰ শুগুত্ণ । ইতি রাজ-নির্ঘট: ॥ ধারকত্রযে দ্লী ॥

विधातम् ही जी मुहीविष्णयः। उट शर्यायः। वानुः २ धाहाम् ही १०। देख ताकनिर्धकः।

क्रियमनः श्रू॰ मियः। ইতি হলাসুখঃ।।
नवनकरम सी॥

জিনেত্রচ্ডামণিঃ পু• চন্দুঃ। ইতি ক্রিকাওশেষঃ॥

ত্রিনেত্রা স্ত্রী বারাছীকনা:।ইভি রামনির্ঘণ্ট:।। নেত্র ত্রয় যুক্তাচ।। ত্রিপত্তাক শ্লী রেখাত্রয়াঙ্কিতভাল।। ইভি হারাবদী।।

ত্রিপত্রঃ পু॰ বিলুগ ইতিরাজনির্ঘটিঃ॥

**जिम**धी

পত্ৰবে বিপ্ৰী !!

ত্রিপত্রকঃ পু• প্রাশ্ব্**ফঃ। ই**তি হেমচ্কুঃ॥

ত্রিপথ ক্লী ত্রিনার্গ । তেন্সাতাপথ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। ত্রিকং ২।ইতি হেন্সচল্যুঃ ।। শ্ন্যাগারে শ্রেণানে বা নির্জনে বা চতুল্পথে । বিল্ব পাত্রী ফ্রন্স্যান্ত ক্লিপথে বা ভল্লেলিশান ভবেৎ সর্হসিদ্দীশঃ নর্হবেদ্যবিদান্তরঃ।ইতি গুণ্ডসাধন-তক্ষণ।।

जिनश्रा की गका। ইত্যময়:॥ किन्ना की इंग्मनिवृक्तः। ইতি

राजनिक्षणेः॥

ত্রিগদিকা জী অর্চ্যার্থ ধাতু নির্মিত ত্রিপাদ যুক্ত শহ্বাধার: । ইতি তক্ষদার: ॥

বিপদী স্ত্রী গোধাপদী। ইতি রব্ধনালা ।। ছন্তিগাত্রন্ধ: । ইতি
হেমচন্দু: । বিপাদ যুক্তা ॥ গদত্র্যাই তির্যাকরণ ।। ভাষা কবিতায়াশুনের বিশেষ: । যথা । পল্প,
টিকান্তা যদি যুক্তান্ত ন্তুদ্ধি
পরিণত নাত্রা । কিমরগীতি স্তদি
ভি নিবীতিঃ স্যার্জ্ব সমাক্ষর গমতা
।। স্যাপদান্ত উদাহ্য তঃ। বৈধাসন্থী-

ভকে নিভ্যা নিবীতি: 'কিম্বা-থ্যিকা। সৈব স্যাৎ প্যাক্তে গানে 'ত্রিপদীভি পরিশুড়া ॥ ইভি কাব্যোদ্ধ:॥

ब्रुशः भू भू भू भू । इंडि जाम-निर्वाणः॥

विश्विका की कन्ति विश्विक्षः। उट शर्य । यह ८ श्रवा २ हिम्म पृष्टि -निका ७ कन्ता लृः ८ कन्त्व र ला ६ ॥ श्राम्विक्षी ७ विनाक हा न विश्वी । श्राम्य हिमा । मध्देष्ठ । भी छ्युः । श्राम्य काम विष्यु ग विना शिष्ठ । शिक्ष शुक्का श्रम्य न द्वा हि अध्या-निक्ष प्रदेश ।

ত্রিপণী জী শালপণী।ইতি ভাব পুকাশঃ॥বনকার্পাসী॥পৃশ্নিপণী-ভেদঃ।ইতি রত্ননালা॥

নিগাৎ পু • বিষ্ণু। ইতি ত্রিকা গুশেবং
।। জুরঃ। যথা। বিদ্যাবিতে ভূতগণে
কুরন্ত ত্রিশিরা দ্বিপাৎ । ইতি
শ্রীভাগবত ।। '

बिलापिका जी इ:नलशीयाजा। ইতি भूतानगिर्वाहे ॥

বিপিষ্টপ নী স্বর্গ: । ইত্যানর: ॥

ভাকাশ । ইতি শদর্ভ্রাবলী ॥

দ
বিপিষ্টপ্রং পু দেবতা । ইতি

হলাযুধ:।। বিপুটঃ পু: সভীলক:।। তীর:। ইভি নেদিনী ॥ হন্ততেদ:॥ তালক:। ইভিশয়রভাবলী।।গোক্সরবৃক:।

कवाह्य 🛚

॥ जिन्हा , जी मिलका ॥ मूरेश्वना ॥ बिव्या इंडि मिनिनी ।। कर्णसाहै। ॥ कूरेलवा ॥ ब्रक्डबिव्८ । हैकि त्राक्रनिर्घण्डः ॥ (मबीदिरण्यः। य**था** । क्षविः नरमाह्न तुन्ता गाय्बी দেবতা পুনঃ। বিপুটাখ্যা দ্বিককৈ रिष्ठ बी कि क्रकानि वर्षे कनार ॥ অদ্যা ৰূপ। ব্থা। পারিচাত ব্রে রন্যেনভগেনণিকুডিনে।রল্পি-হাসনে রম্যে পদ্মে বট্কোণ শো-ভিডে ।। **घ**पछाट **क**नूत्कना নিব্যা॰ দেবভা॰ স্বরেৎ । চাপ॰ भाषासुत्र अविकान्यसुष् भूबन বাণান্ স•বিভাূাণা• কর সরসিকৈ त्रद्राभोगी· जित्नजा•। रङ्गातू। ভा• ক্ষচভূর নতা বর্মজীর কাঞ্চী গৈু-বেয়া ন্য হিলসিত তনু ভাববে-ছ্ জিলাদ্যা ।। চালরাদর্শ তাব্ল कर्त्रथक ममृद्गकान् । वश्छी जिः স্চার্ডাভি দৃতীভিঃ পরিবারিতা• ॥ कब्नागृङ वर्षिना भनाकी

नाथकः मृणा।। ইতি তজ্ঞ সার:॥

जिश्ही शु॰ এর গুবৃক্ষঃ। ইতি শস্ক गाणा।।

ভিপুটী স্ত্রী ত্রিবৃতা। ইত্যমরটীকা-যাণভরতঃ ॥

ত্রিপুটীফলঃ পু• এরখঃ। ইতি ছারা-বলী।।

তির্গুণ ক্লী ভ্রাদিক্ ক কপাল হ তির্গুণুথা ত্রণ। যথা। বিনা ভ্রা ত্রিপুণুণ বিনা কদ্বাক্ষ নাল্য।। প্রিভোগি নহাদেবো ন স্যাভ্র-স্য কলপুদ:।। ত্র্যান্ত্র্বণ। ইতি তিথ্যাদিতত্বণ।। বুক্রাণ্ডপুরাণে।।।

कः। ইতি शातावनी॥

विशृद्धः क्री भगनानवनिर्मिष् भूद-<u>बय । भूता अभूता (एरेवर्निर्जिंजाः</u> मन्द्रः भाषिनाः भन्नगाष्ट्राचीः भयः শরণ মাযযুঃ স গমনগিমনে তাদৃ-मा। मुर्विङकी शहिष्टमा देशी রৌপ্যাযসীতি তিসু: পুরো নিমায (उपन्ता परमो एक व्यनुदा छानि পুরীভি রলক্ষিতাঃ পূর্ব বৈর नम्बत्र (मर्यतान् जीन् (बादान् নাশ্যাঞ্জু স্ততঃ সেখ্র লোকা হর উপাসাঞ্জিলে হরোমাটেত-क्षिकि मूतानुष्टार्य भन् व भन्न সন্ধাৰ পুরেষু ব্যযুক্ত তৈঃশরৈঃ म्भृक्षाः भूतोकरमा भूमा गुमनः সম্ভোনিপেতুঃ মহাযোগী মুখ স্থান-সুরানান য ত্রিপ্রস্থিত নিদ্ধান্ত রসকুপে ২ফিপৎ (ত ২সুরা স্ত-मुज- म्ब्रु मृष्णदीवाः मन छ बन्न স্তদা বিশ্ব গৌরুক্ষাচ বৎসো ভুত্বা ত্রিপুর পুরিশ্য রসকুপা-মৃত প্রেট অলুৱা বিশ্বু মায্যা মোহিডাঃ সভোন নাবেবন্তর। বিষ্ণুঃ স্বাদিঃ শক্তিভঃ শন্তো-যু জোপকরণ রখ নার থি ধ্রু র্যাণা-मिक·वादाय इंडः मासुः **नगरका** 

त्रा गाडान सत्र कत्पि सकाय

ু ু ্ ্ৰাগাব হ ৷ ৷৷ বিশুর रহনঃ लुं॰ শিবঃ। ইতি হারা-वनी ॥

विपूत्रचित्रं शे श्री श्रुष्ठक्विश्याः। রিশ্যান্তিকা ইতি খ্যাতা। তৎ পাঁৱৰ প্ৰেম্ম ২ ৷ ইতি ত্ৰিকাও-(ম্বায়ঃ II

बिश्वाहतः श्रु भिनः। ইতামরः॥ जिल्ली जी (मनविद्रमयः। दिशुता ইতি প্যাত্যা তথেগাঁ দেঃ : চেদ্বি-गनहीर। केठि (क्याञ्चरः।। জিপুৰা প্ৰী কৃষ্টিবৃৎ ; ইতি শন্ধ-ए जाका।।

ত্রিপৃষ্টঃ পু• রাজভেদঃ। তৎপর্য্যাষ্ট । । পুলেপ্লাপ্তাঃ ২। ইতি হেম্চন্দুঃ। बिकना जी निर्वित रवित्रकी विशे उक्रामनकी क्नानि। उৎ भर्यायः । বিফ্লী ২ ফলত্রয়- এফলত্রিক- ৪: । ইতি রাজনির্ঘণ্টা। অস্যাঞ্গাঃ। ' विष्ताव नामियः। नाकुष्यवः। मन ভৈদিব্ধা ইতি রাজবৃল্লভঃ॥ ত্রিফলা জী ত্রিফল। ইতি রাজ-

बिवनीक क्षी भागुः। इंडि (इसहन्मुः॥

নিৰ্ঘণ্টঃ 🍴

वेज श्री जी विव्जा। ইত্যনর:॥ মাধ্যক্র কালে ত্রিপুর দমাই। বিভদু প্লী সুরত। ইতি বিকাও-শেষঃ ॥

ত্রি ভুবন গ্লী ত্রিলোকী। ত্রযাণা•ভুব-নানা- সনাহারঃ। ইতিব্যাকরণ।। ভিন্নহঃ পু• মুস্তাচিত্রকবিডঙ্গানি। इिंड रेन मुक् ॥

विष्युः शु॰ वाश्योमकामणाः ॥ मधु বাভাদি খাক্ এয বেভা। যথা। ত্রিনাচিকেত জিমধু জিসুবর্ণ: বড-कृषिए। इंडि भड़्किभावन वर्गन-• भृतामः॥

ত্রিমধু ব্লী মিলিত সিত। মাকিক সপী • যি । তৎ পর্য্যায়ঃ । মধুরত্রয ২ মধুৰ্য• ৩ : ইভি রাজনির্ঘণীঃ।। বিমাণী ব্রী বিপথ<u>া</u>ত্রযাণা•মার্গাণা• नगाशाः। ইতি ব্যাকরণ।। ত্রিমুস্টঃ পু• ত্রিক্টপর্বতঃ। ইভি (इम्हन्दुः ॥

ত্রিম্থঃ পু• বুদ্ধবিশেষঃ।ইতি ছেন-**ज्ञाः** 

গ্রিমুখা বুজাদেবতাভেদঃ । नामायापियो। ७९ भर्यप्रायः। मात्री-চী ২ বজুকালিকা ৩বিকটা ৪ বজু-वातारी ६ भोती ७ भाजितथा १ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

ত্রিমূর্জিঃ পু• বৃদ্ধঃ ইতি ত্রিকাণ্ড শবঃ
। বৃদ্ধা বিশুঃ শিনাখ্য মূর্ত্তি ত্রা বান্
। যথা। ত্রিমূর্তি বংসগাঁহ ভিবিশ্য
কর্মাণি ভনুছে। ইতি গংক্শোপার্যায়ঃ।।

বিষ্ঠিঃ পু• কেত্রপর্গটি। ইতিরহ-নানা।।

बियामक की शाल । ই जिल्लामा ।।।
बियामा जी दाजिः॥ श्वीमा । ইত্যमद्रशायम् ॥ श्रीशी । कृष्ण बिद्र ।
। ইত্যাদিকোষঃ ॥

जिम्इः पु॰ किमनाभः। ইতি ছেন ठन्द्रः॥

ত্রিরাত্রণ ক্লী রাজিত্রণ। তিল্ণাণ রাজীণাণ সমাহারঃ।ইতি লিকাদি-স্ণুহ টীকাথাণভরতঃ।।

ত্রিরেথঃ পু॰ শহ্য:। ইতি হেমচন্দুঃ।।
ত্রিবণ ক্লী সৈদ্ধবং বিড কচকং
নিবিতৈভলবণ ত্র্যণ। ইতি রাজনির্বিটঃ।।

जिलाकी खी बरागा-(काकाना-नगङ्गदः। यथा। जूलाकः जुव-र्लाकः वर्लाकन्छ। ইতি निङ्गापि-न-गुरु होकाया- जबकः॥

जिल्लाकणः शुः सृर्ग्यः। **३७ ण**कः

| जिल्लावनः शुर लिवः। इंडामहः॥ विकाहना की तूपानवीर जनः। इंछि विकाउल्ययः ॥ मुनाष् ॥ जि:काठनी खी मूर्गा। है डि मूदागः॥ जिल्लाएकः ही मूद्रगःत्रअङ छामुः अ उद्या ठुक्य • । ইতিরাজনিষ্ট: ॥ किलोशे छी गुजाति स्मतः। यथा। व्यथ रिखाः (इठाथाय जिलाही মুদু নিক্প্তে। কোন ন্দর্গি-वाभाः मु र्वर्गा लोह जय छथा। রৌপ্য নিন্দুঃমৃত্যে হেন স্থ্য স্তান্ত্রে **् जान**नः॥ (लोङ् जागाः ममु प्रिष्ठे।ः चैतालाकत मःथाय।। তৈ लो रहः कात्रावसुम्। मगङ्गलिङ अञ्चलाः ।। এবু সরাঃ যৃতাঃসৌন্যাঃ স্পর্ণাঃ ষৌরাঃ मुखानगाः । वाराया ব্যাপকাঃ সর্ব্বে সোম সূর্ব্যাণ্নি দেব-ভাঃ ৷৷ স্বরাঃ বোডশ বিখ্যাতাঃ म्मां । उ भक्षवि भाषिः। व्यानका-म्म उ काम थन धर्म शुमायिनः॥ सार्थः सर्मुः सःबन्धः म्लूड्रा छाः জুহ্যাভতঃ। তস্যা• সম্পাত্যূ-गञ्जी नर्शिषा পূर्व मः थाया ॥ भिः-ক্ষিপ্যকৃষ্টে তা মুদ্রা মভিবেকোক্ত वर्जाना विषावाक् शृक्षरमञ्जी मुनहादि दिधान ३: ॥ जानिवह

् विनीसाय मन्तराखाः च्यिताः एकः ो हेन जुमा कृत्रतान विव क्य विना-मिनी । वडान छोत न्यानि छा त्रकाः कुर्वं दिरमवञ्डः। युष्ट विकः य गाःशाष्टि धातरन् मनुष्ट दतः।। नञ्ज निष्किकदीभुः माः চতुर्वगकः পুদা। ধার্যমানুদো নিত্য দেব-তুল্যো ভবেছবি ।।ইতিতজ্ঞ সার: ।। ত্রিবর্গঃ পু॰ ধর্মকানার্থাঃ। ইত্যনরঃ ॥ जिक्ना। विक्रो। वृक्षि **ङ्ग क्याः** ॥ ॥ সত্রগভন্ত । ইভি লেদিনী॥ न्नी कि:। इंडि निस्द्र इावनी।। বিবর্ণক প্লী গোক্সুরকঃ।। কিকলা ॥ बिकर्रे ॥ इंडि मिनि ॥ ত্রিবর্ষিকা জী ত্রিহাযণী। ত্রিবর্ষাণৌঃ । इंडि (इम्हिन्दुः।। ব্রিবিক্রমঃ পু• বিষ্ণু:। ইত্যনর:॥ ব্রিবিষ্টপ• ক্ল্রা ব্রিপিষ্টপ•। স্বর্গঃ।ইত্য-महिंवाया सामी ॥ बिच्च वन् ११॥ बिविष्ठेभमः भू• जिभिष्ठेभमः । ইতি হ্লাযুৰঃ ৷৷ জিল্বীজঃ পু॰ স্যামাকঃ। ইতি রাজ-নিৰ্ঘণীঃ ॥ ত্রিবৃৎ জী লভাবিশেষ; তেউডী इंडि जारा। उर्भग्रायः। मर्दान् ভূতিং সুবহা ৩ ত্রিপুটা ৪ ত্রিব্তা 🎚

e বিত<sup>্</sup>ণী ৬ রেচনী ৭। ইত্যে**নরং।।** সবহা৮ সর্ণা ৯ সর্গা:> ত্রিপুটী ১১ রোচনী ১২।এতে ত্রিবৃতা সা-মান্যে শুল্ল ত্রিবৃতাযামিতিকেচিৎ । इंडि छत्रडः ॥ माल्यिका 🕽 🤊 समृतीं ७३ लामा ७६ अपंतन्तु १७ तिम्बा ११ गरंगी १५ काविद्यिक १३ कालामधी २०काली २५ जितना ২২ ত্রিবৃত্তিকা ২৩। ইতি রাজ निर्घणेशः क्याराः शर्यायः। न्यामा ১ পালিদ্দী ২ সুষেণিকা ৩ কালা 8 सभाविष्णा ७ अर्ज्ञा ७ कानस्विका १ । हेट्यदः। शानिकी ৮ कालामिका २ ! इंडि ভরতঃ ৷ শ্বেভাষা: পর্য্যায়:৷ ত্রিবৃৎ ১ ব্ৰাফী ২ সুবহা ৩ ব্ৰিভণ্ডী ৪ विशृहे। c ।। अक्गायाः भर्यायः । ব্যান্থাদনী ১ স্টকণা ২ নিঃস্ভা ৩ ত্রিবৃতা ৪ **অকণা ৫ । ইতি র**লু-নালা।**[সামান**্ত ভিবৃতা **ভ**ণাঃ । কটুত্ব 🕯 উঞ্চত্ব । কৃনি শ্লেমোদরাহির क्ष क्षंधु तुन ना निद्धः। विस्त्रहत পুশস্তবৃক্ষ। ইভি রাজনির্ঘণ্ট:॥ व्यक्गवर्गविवृह्गुगाः। श्रामृष्यः। क्याः यवः। भृषुवः। (तहनवः। कि ऋषः। কটুত্ব-ংদৌৰপাকে পিত্ত ক্ফাপছ-

ত্রিল্ডা দি হ।। **ইভি রাজবলভঃ।।** त्य छवि वृह्नु १४३ : विस्त्र हमञ्जू । साहु-ত্ব<sup>া ট্রান্</sup>রণ বাবু কারিরণ কি**ক্তর**ণ ।পিত জুরশ্লেষ্য পিত শোক্ষাদরা-। পহস্ক ৷ কৃষ্ জিবৃতা গুণাই স্বেতা-क्वीन गुणपुर । जीतुषुर। विद्वारमञ्जूर मूही मार मन जानि क्छो ८ कर्या কারিত্বঞাইতিভাবপুকাশ:।।

ত্রিবৃংনয়ণ ল্লী ক্ষিত্যপ্তেম্বনাং मिन्नेविद्रभः। यथा । उठका जन ক্ষিত্ৰ: প্ৰেচ্বে দ্বো বিভক্ত এফ স্মিমর্জে ধে ওরবোর র্জারে প্রক্রি ene । इंडि बाक्य में हो कायाः नीनक्षेः॥

विवृৎপर्गे जो हिनामाहिक।। ३७ **अ**द्रम्कि॥

बिव्ञा जी बिव्ट। इंडामतः॥ जित्ती जी झानवित्मवः। युज्यक्या যমুন।সরস্বত্যে বিযোগঃ।সাদক্ষিণ পুरागः। उम्र मीमनिर्गर्भ यथा। शुमुग्नमा द्वार गामा मेत्रमङ्ग खर्था बरत् । उपक्रिंग भ्यागस्त প্রকাতো যমুনাগতা ৷৷ ইতি প্রায়-किंडजः ॥ देयः मूक्त्वीिंड कथाड भुयाम युक्तवनी ॥

षुक्षा राज्य । का जा अत्र भूगावि एउया । विषय वा जी विषय दिन । दिन विषय विषय बिलकुः १९ म्याद-नीम अक्षिक्षसः । সত্ ইফু কু বংশোত্র গৃথুরুলে প্রঃ: এব বলিউমাহ ঔহণ্যপ্রী-রেশ স্বর্গণান্ত গছেল বলিষ্ঠ এত-দশ শ্রমিন্ড্যান্থ ততো রাজা ভস্য পুরানুত্র সপরীরো মতের স্বাণ यशाम् या∙७था छङ्ग ७ वसि 'ेव फि: পরিভাক্ত ওদান্য ওক্ত মুগা দিয়ে বিশিষ্ট্রা ভেচ্ছা রাজান মূচু র্যাসায়ে ভাষান লাগজ্য হিতি ग्राह अवसाधिः तयः भकाः हारकावाह रहेम्म्प्र- शिः लिन ধ্যানি ভট্না থাগিপুতা রাজান• (मशुः च का छात्वा छवियानि তলণেরাভ্যা মাকী তা্যাণ্স চাণ্ডা**ল** দর্শনোভূত্বা বিশ্বানিত্র-শরণমায-(योविश्वामिबछःश्रीयनुरव्यनयाक्या-মাস্ত্যিন্ যজে দেবা ভাগার্থ• নাগছন্ ততো বিশ্বামিতঃকোধাৎ वाकान मन्तीर मया वान्तार পুভূতি যৰপ: কৃত তেন জ্ব দিল বুজ তদা রাজা সশরীরো দিব যথেঁী ভহি শক্ত মুবাচ ত্রিশক্ষো জু• ভূমৌ পত ততো হ্বাক্ শিরা: পতন্রালা পাছীতি কিখামিত্র

िणङ्कः प्∙ इद्रिकसुद्धाकः। हेि स्थिष्यः॥

विशक्षाकी शुः विश्वाधिवः। हे जि (द्यानकः॥

ত্রিশরণঃ পু• জিনঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শৈবঃ॥

বিশর্করা ত্রী নিলিড ওডোৎদারা • হিনোপা নগুরা। ইতি রাজ-নির্দ্ধিঃ।। •

বিশলদ জী বৃত্ত হ্যাত্বিশেষঃ।

'বাব্দ্যান্দ্রাভাট্তি হেন্দ্রা।
বিশাখপুরঃ পুন্বলঃ। ইতি রাজ-

নিষ্ঠিং।। ত্রিশিথং ক্লী ত্রিশ্লং।। কিরীটং। ু ইতি হেন্দ্রং।

ত্রিশিখা পু॰ রাজসবিশেষা। স রাবণপুঞাইভি হেমচন্দুঃ।। বিশ্বঃ ।ইতি রাজনিঘটা।।

विश्विष्य वा जी मायाकमः। ३७ ताक्षिपिशः॥

ত্রিশিরাং পুণ ক্রেরং। ইতিহেনচন্দুং

জুর্গন্যথা ত্রিশির তে পুসমেহি

ব্যেতু তেন নজুর জেক । ইতি

ভাগকত । রামণ পুল বিশেষঃ

। প্রেদেনাপতি:। ইতি রামাযণ ।।

ত্রিশীর্ষক লী ত্রিশ্রাণ ইতি হেন্দুং।।

ত্রিশ্ল লী অন্তবিশেষ: । তিৎ গর্য্যায়: । ত্রিশিখ থ । ইতি মৌর-নী ॥ শ্লণ ৩ ত্রিশীর্ষক ৪ । ইতি হেমচন্দু: ॥

बेम्बी प्रिम्बार । यथा। ब्राक्त १-एक हैं बिम्बी हैं वृष्ठ कृ गंशा देवाः । इंडि क्रम्र प्रदार नी किन्छे उद्याः । बिम्बार प्रिक्ति विक्रिमें हैं विक् मध्य प्रविश्व शिक्ति विकाम शिक्ति । व्यवस्थित होने जिम्बा अम्ब विकि ना संभावताः ॥ ত্রিশ্রী পু॰ রোচ্তন্ৎস্যঃ। ইতি শহাথকলতকঃ।।

जिहुने जी हर्ति। विश्वन । इंडि हर्ति। विश्वन विवत । हन्त-ज मार्य पृष्टे तर्रः ॥ जामगर शिख्य र्यश । जाना किया निकार करा गायजी ह द्वारा दिखाः । जिहुन् मा मार्य यु जा २ नृष्ट्रेन् खगळा हा भूका गांकः ॥ माजा । गांकि कर्मा तृष्ठी भूग (ठा २ ज्यर । इंडि क्षिणांग वर्षः ॥

তিসন্ধিঃ স্ত্রী প্রবিশেষঃ। তঃ
পর্যায়ঃ। সান্ধ্যকসুনা২ সন্ধিবল্লী
৩ সদাফলা ৪ ত্রিসন্ধ্যসসুনা ৫
কান্তা ৬ সুসনারা ৭ সন্ধিজা ৮।
সাংলিবিধা। রক্তা ১ সিতা ২ অসিতাচ ৩। অস্যা গুণাঃ। কফ কাস
হরত্বং। কচ্যত্বং। ত্রিদোষ শাননত্বক্ষা ইতি রাজনির্ঘণীঃ।।

बिमका की प्राञ्च मधाङ्गाणकाङ्ग कालः। इंडामदः। स्मा क्षणास्तः। बिमकी। इंडामदिशकाया स्तिकः॥ बिमम की ममबय । नम स्तिककी मागद्र एउ क्ष । इंडि द्राक्ष-मिर्यकः॥

विनवः शुः क्षावः। ইতি उरुगठन्तः॥

ত্রিস্বন• ক্লী ভিকাল•। ইতিপুণ্য ক্লিভভ্:।

बिमतनम् शि पू॰ विकालम् । हिंदि स्था । स्था । स्था ।

বিসিতা জ্রী ত্রিশকর। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ!!

जिमो छ। वि चात जग क्षे क्षा अः। इंडामदः॥

ত্রিপুগন্ধি ল্লী ত্রিকাতক । ইক্তি-রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥ '

ত্রিসুপণঃ পু• বস্থচানা• বেদভাসঃ।
ভূদুতঞ্চ। ত্যোগাৎ পুক্ষোপি
ত্রিসুপর্ণঃ। ইতিনানুটীকাবা•কুর্কৃকভটঃ॥

ত্রিক্রেতাঃ জী গঙ্গা। নদীভেদঃ! ইতি নেদিনী।।

ত্রিহ্ন্য । ত্রি বার্ত্রযক্ষ্টক্ষেত্র । তৎ পর্য্যায় । ত্রিগোক্ র ২ তৃতীয়া-কৃত ় ৩ ত্রিনীত্য ৪। ইত্যমরঃ ॥

ত্রিহারণী জী ত্রিবর্ষা গৌ:। ইন্ত্যনরটীকাষা রমানাখ: ॥ দৌপদী।
যথা। কৃতে যুগে বেদবতী ত্রেতায়া
জনকাত্ম জা ছোপরে দৌপদীছার্যা
তেন কৃষণ ত্রিহারণী।। ইতি বুক্ষবৈবর্ধে ত্রীকৃষ্ণ জন্মখণ্ড ।।

बिकादः द्वी काददयः। विधि उद्रिक्त

্বিকার যক্ষার টক্ষণকারাণি। ইতি রাজনিঘটিঃ।।

বিদ্ধার পূর্ণ কোকিলাজনুকঃ। অলেথারা ইতি ভাষা।ইতি রত্ন-মালা।।

জুট য লি ছিদি। ইভিকবিকল্পনঃ।।
জুট উক লিদি। ইভিকবিকল্পনঃ।।
জুটিং প্রী ফুটদুলা।। অপ্ন ।। সংশ্বঃ।
।। কালভেদঃ। শত মুখালার চত্তু
ভাগ গুড়গাতাকঃ। ইভিডৌকাবাংখানী।।

बु हितीकः पु॰ कहुः। ইতি नद्याना।।
खु हो बी बु हिः। ইত্যনর চী काया॰
ভয়তঃ।।

ত্বল । বথে। ইতি কবিকল্ফনঃ।।
ত্বল । শবংশ। ইতি কবিকল্ফনঃ।।
ত্বপ । বধে। ইতি কবিকল্ফনঃ।।
ত্বি । বধে। ইতি কবিকল্ফনঃ।।
ত্বি । বি । ইতি কবিকল্ফনঃ।।
ত্বি । বি । বি । বি । বি । বি ।
ত্বি । বি । বি । বি । বি ।
ত্বি । বি । বি । বি ।
ত্বি । বি । বি ।
ত্বি । বি । বি ।
ত্বি । বি ।
ত্বি । বি ।
ত্বি বি ।
ত্বি ।
ত্বি ।
ত্বি বি ।
ত্বি ।
ত্বি ।
ত্বি ।
ত্বি বি ।
ত্বি ।
ত্বি ।
ত্বি ।
ত্বি বি ।
ত্বি ।
ত্বি বি ।
ত্বি বি ।
ত্বি ।
ত্বি বি ।
তি বি ।
তি

সংস্ক । তেতাযুগ পরিনিত। কাণবিভিঃ পুকীর্ত্তিভা৷ ইতি বৃক্ষ বৈবন্তেপুকৃতিখণ্ডণাঞ্চা**তস্য ধর্ম** ৷ যথা । ত্রেভা মুগে সম্বাধা**তে ধর্ম**ঃ পাছে।ন তা•গতঃ। অল্ল ক্লেশাল্বিতা লোকাঃ কেচিৎকেচিৎ দ্যাশ্যাঃ ॥ বিকুধ্যান রক্তা শোকা যজ্ঞ দান পরায়ণাঃ। বর্ণাশুমাচাররতাঃ সুখি-নঃ সুস্চেত্ৰ: ৷৷ ক্ষা ভূমিশ্ৰ: **शृ द्राः न**र्व्व युष्त्रन (नविनः । युष्त्र-ণাশ্চ মহাল্লানো বেদবে**দাক্ত পার**-পাঃ। পুভিগুছ নিবৃত্তাক মত্যেকা জিভেন্দ্িা: ভগো বুভরতা নিভ্য-माजाता विक्रमविनः। कानवधी ভডিত্বা• শ্চ ব্রিয়ঃ **ন**র্বাঃগতিবুতাঃ॥ বসুর্রা চ শ্স্যাট্যা পুরা<del>ক্ষ্</del>পিতৃ সেবিনঃ ॥ ইতি পান্মে কিযা-যোগসারঃ ॥

ত্রেধা বা ত্রিধা। ইতি দুখনোধনা ত্রৈ ও পালনে। ইতি কবিকল্পন্যা। ত্রৈগুণু ক্লী ত্রিগুণধন্ম:। সন্ধুরজ স্থাস্থান বিষয়া। ত্রেগুণ্য বিষয়া বেদা নিস্তৈগ্রেণ্যা ভবাজুন। ইতি আভিগবদ্যীতা ॥ শৈত্য সোগদ্য নাল্যো ম্থান ত্রিগুণ্য ক্লিভৈশ্যাক্ নক্তিক্পবীজিতে

। इंडिनिवद्राजियु उक्था :: विভिः | क्षेत्रतक्ष ॥ देवधः वा बिदा। है जि गुक्ततायः ॥ ক্রৈপুরঃ পু॰ ত্রিপুরছেশ: । তং भर्यप्रायः । ডाङ्कः २. हिन्तुः ७ (हिमः ८। ইजि (२ महन्तः ॥ दिवाका ही बिलाकी। यथा। বৈজ্ঞাক্য **মেতদ্থিল-**-রিপুনাল- 🎚 নেন আত ত্বা সমর মূর্জনি তেপি হয়। ইতি চণ্ডী॥ বৈলোক্যবিষ্ণা জী ভঙ্গাভাড্ ইতি খ্যাতা। ইতি শব্দক্ষ্ম।। कितिनाः भू जित्रमञ्जः॥ जितिमा-विखा। यथाः । द्विवित्तरा रेश्जूक सकी रेनक्कां धर्मभाठेकः। वय-कामुनिनः भूर्व शतिष्टं माप्त ন্দাবরা। ইতি ব্যবহারতত্ত্ব• ॥ ভোটকী জী রাগিণীবিশেষঃ। ইতি इलायुद्यः॥

वाहिः जी हथूः ॥ करेकवना **१की ॥ मीन (७५:। इंडिस्मिनी॥** রোটিহতঃ পু॰ পফী।ইতি শব **हिन्द्**का ॥

वागे जी হোটি:। ইতি শ্ব-ब्रज्जावर्भी ॥

**ट्यांक क्री ग**रामि छाउनम् ७३। भाँ हिनी

इंडि थालः । **ए**०१स्**।**यः 🖟 পুজন ২ ভোদন ৩ পুৰ্যণ স্থা शक्रमा (काम पर ७०१ ७९ **अर्था**पुर्देश)। रिनपुक्त २ (वपुक्त ७०१ ইड्याब-ভরটো । লক।। ইতি দিয়ান্ত-কৌনুলগৰুনাদিব্**তিঃ** '। **আৰপ**-किया 🗎 न विस्थि**रः। ইভি স**্ লিগুমারে উপাদিবৃত্তিঃ।। টোক খড়-গভ্যা•। ইতি কবিকল্প क्यः ॥

ত্র্যকট্ট ক্লী-শিক্ষ্য ভদগ্গ। ধৌতাঞ্জ-नी ! इंडि (निधनी । क्रक्रः भू∙ (षोडाखनी। शिक्रस्डहः ॥ ঈশ্বঃ। ইতি হেম্বলুঃ।। बाधुमा खी महा। इंडि बिका छ **শে**বঃ !!

बाक्षन ही अञ्चन्त्रच्या यथा।कानाः ঞ্জন• পুন্নাঞ্জন• রসাঞ্জন• । ইতি **ब्राब**िवर्षिः॥

ত্র্যাসকঃ পু॰ শিবঃ। ইত্যসরঃ॥ ত্র্যক্রথং পু॰ ক্বেরঃ। ইত্যমরঃ॥ ব্যক্ষঃ পু• লিবঃ। ইতি ত্রিকাও**লেব**ঃ। ब्युक्तः भूः यहेकः विविविध (क्षवः॥

टाइलमाः 'शु बिभिनम्भक्। जिथि ं बयलाभायुक्तमहः। २ ७ (इ) जिक्ना

বশিষ্ঠা। একমিন্ সাবনে তৃহি
কৃথীনা বিভয় যদা। তদা দিনক্ষয় পুাক্ত ন্তৰ সাহস্কি কল

। কলমিতি বৈদিক কর্মপর ।।
ভাষমাসে দিন পাতে ধনুষি রবৌ
ভানুল বিতে মাসি। চকিনি সুপ্তে
স্বর্গালো মাজ্ল্য বিবাহক্ষেতি
ভীমপরাক্রমঃ ম দিনপাতে দিন
ক্যো । ত্রাহস্প্রাক্ত নাম বদেতদুক্ত ত্র্পুব্রঃ কৃতিভির্বিষয় ।।
বিবাহ যাত্রা শুভ পুষ্ট কর্ম সর্ব
ন কার্য জিদিনস্প্রে ভা। ইতি
ক্যোতিত্তত্ব ।।

ভ্যাহিকং ত্রি ভ্গীযে হিড্ডব:। যথা

। ঐকাহিক ঘ্যাহিক ভ্যাহিক
মত্র্থিক সতত জ্ব বিষমজ্ব
ইত্যাদ্যপরাজিতান্তোত্র•॥

ব্যুষণ ক্রী মিলিড শুগ্রী সিম্নলী নরীচং। ইত্যমরঃ॥ ক্রিকাষাং ব্যুষণ ক্লী ব্যুষণ। ইত্যমরটীকাষাং ুভরতঃ॥

ত্বং বি ভবান। তুমি ইতি ভাষা।
যুনাই দস্য পুথমৈক বচনান্ত ৰূপোইয়া লিক্কব্যে স্থানঃ । ইতি
ব্যাক্রণং॥

वः वि ভिषः। चनुः। ইত্যনরः॥ षुक् जी इन्मियदिष्णवः। यथा। भूई বিষিত্যভাদ্যকে দেহব্যাপি ত্বণি-निष्य । शागामिस महावायू शर्ध-ভো বিষয়ে মতঃ॥ উভূত সুর্শবদ্দু-ব্য·গোচরঃসোপিটভুটঃ। ক্পান্য: চুকুবো যোগ্য ক্**পমত্রাপিকার**ণ• ॥ দুব্যাধ্যক্ষে ত্বচো যোগো মনসা-জ্ঞান কারণণা ইতি ভাষাপরিছে দঃ ॥ वन्नन• ॥ ७७क्क् ॥ **हर्म। हे** डि सिनिनी । **(ग**रम् भर्गायः । **यम्** ধ্বরা ২। ইত্যমর**া। অস্থরা এইতি** ভট্টাৰা॥ হুচ•৪ বৃচা ৫ চৰ্ম্ম ৬ **ছলী** १ इली ৮। इंडि नेप्रकारनी।। प्रकृ । मात्रिकी देखि ভाषा। देखि त्राजनिर्घण्डः॥

पक्क अतः श्रु व्याः। ইতি हातावनी।। प्रक्षितः श्रु की ती सव्याः। की त क्षूकी ইতি ভাষা। ইতি तन्न भाषा॥

বৃক্পত্র: ক্লী ভডবুক্। ইভ্যমর:॥ তেলপত্র: ইভি কেচিৎ । ইভি ভরত:॥ ভৎপর্য্যামঃ। স্থকট : ২ ভ্রমণ ও বৃচ । ৪ চোচ । ৫ বরাক্ষ ক । ৬ । ইভ্যমর: । ।।

प्रग्वी जी हिन्नुभवी। उद्भग्रायः

ত্ত্বচ

। काबवी २ भृथी ७ वाम्मीका । जाकूतः भुः तामाकः। इंडि बिंगां कवती ६ भृशुः ७। ইত্যमद्रः ॥ তৎপত্রী ৰ। ইতি ভরতঃ।। ত্বক্শুস্থ ল্লী রোমাঞ্চঃ। ইতি ত্রিকাও-(मक्क्षा किणामन इंडि (इंबर्क्स्था দ্বক্পুরিকা স্ত্রী কিলাস 1 ছুলী ইতি ভাষা।ইতি ত্রিকান্তশেষঃ॥ দ্বক্পুরী ক্রী কিলাসণ ইতিঘটাবরঃ৷৷ खुक्त्रातः शु॰ यः मः। ইত্যমরः॥ च्छ इक् । इंडि मद्दिन्ता ॥ (भागवृकः ॥ त्रुवन्नः । हेडि क्राक्षनिर्घ छै:॥

जी क मह्हाहमा। इंडि क्राइनिर्घणेः॥

वृक्षाक्रछिमि जी कृपुर्वश्काः। क्ञि दाजनिर्चणेः॥

वृक्जूगद्धः भू मात्रकः । देखि ভাৰপুকাশ:॥

ত্বক্সুগদ্ধা জী এলবালুকনালগদ मुत्र । इंदि कर्रावदः ॥ 🐬

তুক্ষীরা স্ত্রী বংশরোচনা ইত্য-भद्रः ॥

खुक्कीती श्री दुक्कीता । इंडि द्वाक्रनिर्घणः॥

पूर्व है कष्ण।। मस्त्री हैं डिकवि-कत्म्यः॥

(कानः॥ जुगाकीती खी खगाकीती कर्ना त्नाहमा। इंडि कहे। ध्रः॥ ত্রানঃ পু মাগরস: াই জি রাজ-निर्घणेः॥

जुग्ब मी दान।। क्षित । है डि **त्राक्रियर्थः**॥

खुरप्रायः भु॰ ८काठेरत्रागः । ইতি দ্বাদ্ববির্ঘণ্টঃ।।

ব্ৰশ্বেৰাপহা জ্ৰী বান্ধটা। ইতি द्राकनिर्घणः॥

ত্বশ্লেষারিঃ শু হত্তিকদ:।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

ত্ত্বচ শ বৃত্যা। সমূরণ ইতি বাবৎ । ইতি কবিকল্লফনঃ॥

बुष्ठ॰ क्री वृक्षवित्मवः । मात्रविनी हेकि ভाषा। छट्मर्य्यायः। जुक् ३ ্ৰপ্ল•২ ভৃষ্•৩ বরাস্ব•৪ মুখ-(लाधन ६ लक्ष ७ जि इल १ ্ৰন্যক্ত সুৱস্ত কাম্বলভি ১০ उटकरें ३३ वङ्गक ३२ विकृत ্ৰত বনপূষ ১৪ বট পৰ্ণ ১৫ গন্ধ-वन् ५७ वद ३१ भी छ अ। जन अनाः। कृष्यः। भीउनपः। कक কাস বিনাশিত্ব। শুকাম শমনত্ব॰

्डेडि রাজনির্ঘটিঃ ॥ वन्न•॥ हर्षा। ७५व है। इंडि ध्वलिः॥ पुरा जी पुरु। ইতি भाषतञ्जावनी॥ জুচাগত দ্রী স্বন্পত্রণ।ইতি শব त्रवायनी ॥ चुिष्ठिः वि चुठीयान्। छाउँ भय ত্বিশিষ্টঃ। ইতি ব্যাকরণ।।। জ্বচিসারঃ পু• বু•শঃ। ইত্যমর:॥ खुिन्नूगका खी कर्पुवा। इंडि हाजा-

वनी ॥ ए॰ वि जिमः। इंडि को विदाः॥ ভৰতঃ ৷তোনাহইতে ইতি ভাষা । ইভি ব্যাকরণ ॥

ত্বনু উ ইতৌ। সভৌ। ইতি কবি-कन्नुक भः भा

ত্বনু উ ধ্ৰ,সংক্ষাচে। ইতিকবিকল্পসনঃ वृत्तीय वि ভवतीय दिंजिए।कत्रणा ত্ত্ব ঞিষ ড ন বেগে। ইতি কবি-কল্পজন: 11

দ্বরণ ক্লী ভ্রা। ইতি ব্যাকরণ।।। पूजा **जी (दगः । उ**ৎ পर्य्यायः <sup>।</sup> সম্ভন: ২। ইত্যমর: া। আবেগ: ৩ ত্বরি: ৪ তুর্ণি: ৫ সম্বেগঃ 🗞 । ইতি ं (इसहन्मः॥ चाविष्टः। ইভानत होकायाः मानी॥

। क्रिक्ष क्र वृष्ट । नधूनका । एदिः जी ध्रा । इंडि (इमहन्पुः ॥ वृति उ॰ ही भी घु॰॥ छिषिमा छै वि । ইত্যপরঃ।।

> ত্বরিভোদিত ত্রি শীঘোচারিতবচঃ। তৎ পर्यायुः। निज्ञ ७ २। ইত্য मद्रा।। দ্ব 🕏 ভন্ক্ত:। টাঁচা ছোলা इंडामि ভाषा । उर्श्यागः। **उध्रः २। ইउ/भवः** ॥

द्वेश भू व्यामि डावित्मयः॥ विश्वकर्षा । ইতি (इसहन्मुः।। वर्गमक्षत्रकाठि বিশেষঃ। ইভামরঃ।। অস্যপর্যায়ঃ कांश्वर् माय उँ शिक्त मृत्रधात भाष मुष्ठेव्या ॥

ত্বক উ কার্ল্যে: কূলকরণ ইতি যাবং। ইতি কবিকল্লফন:॥

🤏 ভ্রচোগুছে ॥ লম্বরণে । इंडिकविक्तुक्यः॥

দ্বাচপ্ত্যক বী পার্শজ্ঞান । मुव्यास्यः न्यामं दान्ना (वायः । থথা । অথ জ্ঞান নাৰে ব্ভানঃ :**স**ুংয়াগ**ন**্য খদি কারণত্ব তদা রাসন চাকুষাদি কালে ভাচ ्नुडाक मार कहेडि निवास भुकावणी।।

इन्द्रेः पूर्वशृतः। ইতি विकाय-रम्बः ॥

ব্বাষ্ট্রী ব্রী চিত্রানক্ষর । ইতি দেম-চন্দুং॥ সংজ্ঞানাম স্য্তপত্নী। ইতি শহরত্বাবলী॥ রথিকা। ক্ষুদুরথং। ইতি ত্রিকাওশেষং॥

ন্ধিট্ ক্রী শোভা ।! পুভা ॥ কাক্।
ইতিনেদিনী ॥ ব্যবসায় গাঁজিগীয়া
। ইতি বিশঃ ॥

विष के छ जाम। व्यवभूई (काश्य-निवास मान मीछो छ । इंडि कविकन्न क्याः॥

ত্বিবা জ্ঞা দীপ্তিঃ। ইভি শব্দরত্বাবলীত্বিবাস্পতি: পু॰ সূর্য্য:। ইভ্যনরঃ।।
ত্বিবিঃ পু॰ কিরণ•।ইভি হেনচন্দুঃ।।
ত্বর • ছদ্মগতৌ।ইভি কবিকল্লফমঃ।।
ত্বকঃ পু॰ থল্লমুপ্তিঃ।ইভ্যমরঃ।। তৎ
পর্য্যায়ঃ। মুপ্তিঃ ২ ভালভলঃ ৩
ইভি শব্দরত্বাবলী।।

## ર્થ

থ থকার: । সাব্যঞ্জন চতুদদ্শ বর্ণ:। ভবর্গদ্বিতীয়বর্ণন্ট । অস্যোদ্ধারণ হানং দন্ত:। ইতি ব্যাকরণ:॥ অস্য স্বৰূপ: যথা। থকার: চঞ্চলা-পান্ধি সংগুলী মোক্ষব্যপিনী। ত্রিশ-জি সহিত: বর্ণ: তিবিন্দু সহিত: সদা ।। পঞ্চদেব ময়: বর্ণ: পঞ্চ भूगावाक ग्रामा । अक ने किंडा महाण थका त भूगमामा हे ॥ हिल का मध्यम ज्ञान । अक ने किंडा मध्यम भूका ता यथा । अकिंडा मध्यम भूका वा ता यथा भूजा ग्रामा स्वाप्त क्रिया क्रिया ता यथा भूजा ग्रामा यथा क्रिया क्रिया क्रिया ता यो भूका भूका वा ता था भूजा ग्रामा यथा क्रिया क्रिया वा ता भी क्रिया वा ता भी क्रिया क्रिया वा ता भी क्रिया वा ता वा ता

थ॰ हो तक्षणः।। सक्ष्वः।। नाधुनः। इकि समिनीं।।

থঃ পুণ পর্বতঃ॥ ভ্যরক্ষকঃ। ইতি
নেদিনী ॥ ব্যাধিভেদঃ। ভ্যচিত্রণ
॥ ভক্ষণণ। ইতি শব্দরন্নাবলী ॥
থুড শি সংবৃতৌ।ইতিকবিকল্লফমঃ॥
খুণ কারঃ পুণ নিষ্ঠাবনত্যাগানুকরঞ্জ

थूर्व के वस्य। ইক্তিকবিকক্ষন: !!

थूथ् वर्ष निष्ठीवनज्यागानुकत्रगणदः ।

यक्षा। थूथ् कृज्य क्ष्य क्षित्रथ्य करेनकिंजि क्किक्याम् जः ॥

रेथरेथ वर्ष वाहरानुकत्रगणदिरणवः ।

इजिक्यो जमास्मामतः ॥

থোডন লী সম্বরণ । ইতি থুড থাডো ভাবে ২নট্পুত্যয়ঃ॥ দ দকারঃ। স ব্যঞ্জন পঞ্চদশবর্ণঃ

তবর্গ তৃতীয় বর্ণন্চ। অস্যে দ্বারণ
কান দন্তঃ। ইতি ব্যাকরণ ।।
অস্য স্বৰূপণ যথা। দকার দণ্
চার্বিক্ল চতুর্বর্গপূদাযক । পঞ্চ দেব ব স্বং বর্ণ পঞ্চপাণ ম্বং সদা।।
ভিশক্তি সহিত দেবি তিবিন্দুসহিত সদা। আত্মাদি তত্ম সংযুক্ত স্বাধারক বিদ্যুক্ত ভাকার দকার জিদি ভাবষ।
ইতিকামধেনুত্রেণা।

দ ক্লী ভার্য্য।ইত্যেকাক্ষরকোর ॥

দ: পু: অচল: ॥ দতঃ ॥ দাতা।

ইতি মেদিনী ॥ খণ্ডন । ইতি

শন্ধরাবলী ॥

स्रमः श्र कीर्हिति मिन्नः। प्राम हेि ।

हिन्न हिन हिन्न हिन

मः भकः शृ मः भः । ইতি হারাवती ।। मः भनकर्त्ति वि ।।

सः भनः क्री वर्षा। मलामनाथलनः ।

कामणान ज्वक्रीन हेल्याम ভाষা। ইতি ক্ষেচন্দু: ।।

দ॰শভীকঃ পু•ক্তী সহিবঃ।ইতি ত্রিকাওশেবঃ॥

দ॰শমূলঃ পু• শিশুঃ।ইতি রাজ-নির্ঘটিঃ॥

म॰ শिङ: बि विधिङ:।। मु**४:। ই**জি (इस्टन्यु:।।

দ•শী প্রী ফুদুদ•শঃ। ছেটিদাঁশ ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ॥

न•्ड्रे। खी एउति म्यः। उर्श्यायः।

पर्देका खी पारिका। ইভিছেম ह <del>पुः।।</del>

मिश्री पृ॰ जी मृकतः। ইতামतः॥

गर्भः। ইতি শক্র রাবলী ॥ म॰ द्रोविশিষ্টে জি। यथ।। म॰ द्रिज्ञिः मृक्षिভির্নাপি, হতা শুে ছেশ্চ ভক্ষরৈঃ।

यে রাম্যথে হতা যান্তি রাজন স্বর্গ

ন স॰ শযঃ॥ ইতি শুক্ষিতাত অগ্নি

ইতি মেদিনী ॥ থণ্ডন । । দেব । । দক । ক্লী জল । ইতি ত্রিকাপ্তশেষ ।।

মর্মা । সপক্ষত । ইতি বিশ্বঃ ॥ দক । ক্লী কল । ইতি রক্নালা।।

দক্তঃ । ইতি হেন্ট দুঃ ॥ দক্ষঃ ত্রি ভশীকতঃ । পোডা ইতিঃ

ভাষা। ভং পর্য্যায়ঃ। শুষ্টঃ ২ প্লুষ্টঃ ॥

৩ উবিভঃ৪। ইত্যুমরং॥ পেত্রাণা

মাম্বিং পর্নেঃ) গোর্বর্জ্য নামিবং

ফ্রীরং ফলেজ্মীর নামিবং। আনিবং
রক্তশাকঞ্চ সর্বঞ্জ দক্ষ নামিবং।।

ইতি কর্মলোচনং।।

দশ্বকাকঃ পু॰ দ্বোণকাকঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।

দ্ধার্থ: পু• চিত্রর্থগল্ব । ইতি নহাভারত•॥

দপাকহঃ পু• তিলকগৃক্ষঃ।ইভি রাজনির্ভণিঃ॥ '

मक्षरुष्टा जी मकावृक्षः। ইভি आक्रमिर्धिः॥

 मका

वाषाणासिनया द्रहेगी जाम्गूरा-यनस्या रंगायी कार्ज्कि माघरग र्वामणी। अम्याः भुवादः यथा। षि जीया भीन धनुरवा "एजू थीँ वृव क् भुरयाः । यात्र कर्ह्र हेरयाः अधे कन्त्रा जिल्लाक्ट्रेनी ॥ कण्यी বৃদ্যিক সিংহে দ্বাদশী মকরে তুলে। এভি যাঁভো ন জীবেভ যদি শাক্ত সংখ্যা ভবৈৎ ॥ জ্ঞা। অসা পুতিপুসবো বথা। বৈশাথে শুক্লা वधी देवारक कृष्ण हल्ली जायारह मुङ्गार्द्ध मी मानता दृक्षा यश्चे जात् भुक्ता प्रमाशी आधित क्काइशी কাৰ্ভিকে পূল্লা ছাদশী অগ্ৰহামণে क्का मनाभी लाख मुद्रा विशेषा मार्घ कृष्ण पामनी यालूत मूल চত্তথি ছৈত্ৰে কৃষ্ণা দ্বিভীযা। जात्रा श्रमाण यथा। यस मित्रल न्युण ग्लान् ग्रक धनुः ए कन-(नह भुक्षा। अनीत कन्यां वि मृगाम्य गीन वृदयम् कृष्णस्थिययः भूमकाः।। 🕸।। मिनम्का यथा। अविवास हाएभी भारत अकामणी मद्दल मण्यी মুধে তৃতীযা বৃহস্পতৌ বঙা শুক্তে शक्षमणी मानी मधनी। अन्। পুলাণ यथा। माना कृष्किला রামাঃ ষট্ পক্ষ সূন্য স্থা। দক্ষ্যে তিথয়ঃ সপ্তসূর্য্যাদ্যৈঃ সপ্তসন্তভিং॥ -ইতি জ্যোতিঃ সারসংপূহঃ ॥

ক্ষিণ জী দ্ধান্ত। পোডাভাত ইতি ভাষা। চাঁটা ইতি খ্যাতা ইতি ফেটিদিতি ভরতঃ।। ডৎ পর্যায়ঃ। ভিন্নটাই। ইত্যনরঃ।। ভিন্নিটা ও ভিন্মিটা ৪ ভিন্মিটা ৫ ভিন্মিকা ৬। ইতি তটাকা সার সুন্দরী।। দ্ধাব্যাঃ। ইতি রাজ-নির্ঘটা।।

म (क्षेष्ठका जी कागक । इंडि श्राजा-वनी।।

न्य ३ जाता। व्यवता ३ जि कदिकन्नकमः॥

দ্ব ন ঘাতনে।ইতি কবিকল্পুশ্ন:॥
দণ্ড ভক দণ্ডপাতে।ইতি কবি-কলুজন:॥

प्राप्त क्षाः। ज्ञान कष्ण क्षाः। ज्ञान क्षा

म ७: भु मनन । म ताद्धा छ्रार्था পায:। লচ ত্রিবিখঃ। বধঃ অর্থগৃহণ• বন্ধন ভাডনাদিশ্চ। ইভ্যনরটাকা সারসুন্দরী॥ তৎপয্যাযঃ। সাহস• २ मनः २। इंडानदः॥ 🕸 ॥ छेर्जु-স্থিতঃ। দাঁডান ইতি ভাষা। इंकि नात्रमुन्दत्ती ।। यू/इर**७मः ॥** পুকাৰ্ডঃ ॥ অশ্বঃ॥ কোণঃ॥ মস্থানঃ ॥ रेगन्यः ॥ कामः । घडी इंडि ভाষा॥ मान(७५:। काठी इंडि ভাষা॥ চণ্ডা শোঃপারিপার্শ্বিকং॥ ययः॥ অভিসানঃ। ইতি মেদিনী॥ गुरु छनः। इंडि (रुम हन्दुः॥ ইঙ্গাসরাজপুত্রঃ। ইতি পুরাণ।। 🕸 🛚 । कानरचम मधमा भूमान वया। বট্পল• পাত্র নির্মাণ• গভীর• **ठ** ठुद्रञ्जून । सर्गमारेवः क्**उ** हिष् क्रेडिक ठजूबक्रेनः ॥ यावब्हन পুত পাত তৎকাল দুওমেবচ । ইতি বুন্ধবৈৰৰ্ভে পুকৃতিখণ্ডণা 🗱 ।। বান্ধণ-পুতি দণ্ডোদ্যনে দশুনি-পাতনেচ দোষোযথা। বিপু দণ্ডো-ম্যনে কৃছু নতিকৃছু নিপাতনে। इंडि भागिकिङ्ज्व ॥ 🕸 ॥ (कोंहे-नाक्ष्य एथा यथा। त्यानास्या-हाज्यारियवार कामार कावार

7.3

থৈবচ। অজ্ঞানাদ্বালভাবাচ সাক্ষ্য বিতথ মুচ্যতে ৷৷ এবা মন্যতমে ञ्चात्व यः जाक्कार्यन् उत्र (४९) जजा দওবিশেষা স্ত পুৰক্ষ্যাম্যনুপূৰ্বশঃ ।। লোভাৎ সহসু॰দণ্ডান্ত মোহাৎ भूई छ माइमः। ভयाष्ट्री म्यामी मरखो रेमबाद भूबं ठळ्छं गः। কামাদশেশুণ পূর্ব কোধাজু ত্রি গুণ পরণ অক্তানাৎ দ্বেশতেপূর্ণে চাশিষ্যাহ্ত মেব্তু ॥ এভানাহ कोर्रेमात्कः (भाकान् मधामनी বিভিঃ৷ ধর্ম স্যা ব্যক্তিচারার্থ নগ্য 🍴 निधनायठ ॥ (कोर्डेमाक्श्र कुर्दा-शान् जीन् वर्गान् शामिरका नृशः। श्वामरयम् अयिद्वा वाक्ष्व विवा अरयर ॥ 🗱 ॥ मण्यम् ज्ञानानि यथा । मण्डानानि मञ्जा सनुः साराम्या १ वृती 🗠 । जित्रु वर्णवृ यानिमु। तकाला वृत्काणा वृत्कए॥ উপস্মুদর• জিহ্বা হস্তোপাদৌচ পঞ্চন। চকু নাসাচ কণে চি ধন॰ দেছ স্তথৈব চ।। জানুবন্ধ পরি-·জ্ঞায দেশ কালৌচ ভত্ব**ঃ**। मात्राभित्राक्षी हालाक्य मञ्जन छितु शाउरार !! # II অবিহিত দংগুষু क्षारया यथा। **यथर्ग म् अन** वाक्

যশোন্ন কী জি নাশন ৷ অস্বৰ্গ্যঞ্চ পরত্রাপি ভস্মাভৎ পরিবর্জ্জার্থ ॥ यम अगन् म अगनाका म अगः रैक्टवाभार खयन्। अयरणा मङ्गा-গ্লোভি नवकर्ष्क्ष्व गृहिं ।। 🗱 ।। म अन्य भित्र भर्यानियामा यथा। वायुड॰ सुबन कुर्य्याट विग्रुड० **उ**मनख्रः ॥ ज्ञीयः धनम् ७ छ वधमा अङः १ मृणा वाधनाशि यमा (ब्रुजाविश्रहीं कुण न मकुशार ॥ **उ**देरपु नर्व (भरेवड० भगक्षीक চকুষ্টৰ পঞ্জ। দণ্ডস্য ভেদা বলা। পণানা জ শতে সার্ভ্রে গ্রামঃ जारुमः मृष्ण भ्यामः शक्ष दि छ-যঃ সহসুদ্রেন চোত্রঃ 🗓 ঋণে **দে**বে প্ৰিক্তাতে গঞ্জক **শভ**ম ইতি। অগহবে ভদ্দি ভক্ত ভন্ম-(मात्रनुमालनः॥ 🕏 ॥ (मात्र विभिष्ठे कन्यामारन मरश्री यथा। यश्र (मावः বতী কন্যা মনাখ্যায় পুষছতি । उन्। कूर्याम्र्ला म् ७ वर्ष याविक भगान्॥ व्यकत्माक ह यः कन्ऽा॰ तुयारमृत्वन मानेवः। म व्यक्त भाश याम ७० उन्। (मार सम्म-यन्।। अवामीनाः चान्रा उक्ताः দণ্ডো যথা। পথি ক্লেবে পরিবৃত্তে

গুামান্তীযেথ বা পুনঃ। স পালঃ শত म शार्का विशालान् वात्राय शालून्।। 🐉॥ (कड़ाहि त्रीमा विवाद मंत्री যথা৷ক্ষেত্ৰ কুপ তডাগানা মারামস্য भृहमात । नामंख भुजारमा उद्धमः সীনা সেতু বিনির্ণशः।। সামস্তাশ্চে-নুষা বুয়ুঃ সেভৌ বিবদতা নৃণা। मर्खि मृथक् मृथग् आ हा छ। मधाम সাহসং॥ গৃহ•তডাগ মারান• কেত্র• ॥ वा जीयया इतन्। मजानि शक्ष म छाः न्यान्कानाम्बिल्जा प्रमः ॥ 🕸॥ বাক্ পাৰুব্যে দণ্ডা यथा। শত॰ वादागमाक्ना किखा पथम्बीछ। दिवामा। २ शास्त्रमे छ । एवा मृत्स वस मर्गे ॥ शकानम्याकारण म् ७% ক্ষতিধ্যুগভিশংস্বে। বৈশ্যে স্যা-एक्शकामहृत् इमिन्का मगः॥ अमे वर्ष विकालीना वारिश्व ব্যতিক্রমে। বাদে স্ববচনীযে গুতদে ব দিশে ভবেৎ ॥ এক ভাতি र्षिका छी • स वाठा माक गया कि शन्। किञ्चायाः भाग्नं याहिषः अधना भु-, ভবে। হি, স:।। নাম ক্লাতি গুহুস্তেৰ। मिल्पार्वे वर्षे । निःस्कर्णा .. १ (या मयः मक् ज्वं न स (म) म ना क् नः ॥ व्या शाम में मार्शन विश्वाना मना

वर्षे । उथमान हरये दिन वर्क শোতে চ পার্থিবঃ ॥ শুক্ত দেশক জাতিক কর্মশারীর মেব চ। বিভ-थिन तुतन् प्रशासानाः नाम्याना मस् ॥ काण्यामा थ्या यक्ष सनाया-नि उथा विष्। उत्थानानि तुत्न माल्या मञ्ज कार्याभगावद्रः ॥ मा-ভর পিভর জাযা ভাতর ভন্য **७क । आका**त्रयम् निष्ठः मानाः পস্থান চাদদ দরোঃ !' ব্রাহ্মণ ক্ষত্রি-या नास एकः कार्य्या विकान ना ব্ৰাহ্মণে সাহসঃ পূৰ্ব: ক্ষ বিষে ত্বেৰ गवामः।। विद् मृमुर्या (त्रव स्मव स-জাত্তি-পুতি তত্ত্বতঃছে দবৰ্জ-পুণ্যণ দ গুল্যেতি বিনিশ্চয়: 11 🏶 11 দণ্ড পাৰুষ্যে দণ্ডা যথা। যেন কেনচি-म्ह्य क्रिशाहिट (मुंड नडाकः। (ছ बर्गः **उब्रह्मराम्) उब्रामा इन्** भाजनः॥ शानिजुष्टम् म ७ वा शानि (इमन स्टिं। शासन शुरुद्रन् কোপাৎ পাদছেদন নহন্তি। সহা-मन मिल्पुर्यु क्टक्हेम्। शक्हेबः । क्ट्रा॰क्डाव्हाः निर्वानाः श्किष् वीम्यावक खरायः ॥ व्यवनिशेवाउ। मर्ना८ हारवारको एमरयम्भः। व्यव-মূত্ৰতো মেদু নবশক্ষতো ওদশ

।। रकत्मम् गृङ्ग (जा इस्डो स्हिन्यम-विठात्रयन्। शामत्या महिकायाञ्च श्रीवायाः ब्याप्यु ह ॥ वृत्युप्तकः अंछः म्राच्या (वाश्विम) जुम्मकः। মাংসভেত্তা তু বণ্ডিন্পুবাস্যন্ত্ৰি ॥ ভেদকঃ॥ বনস্পতীনা সর্বেষা মূপ-ভোগো यथा यथा। उथा उथा मनः কার্য্যে হি॰ সাযা মিভিধারণা।। মনু-व्यागाः शिण्नाक मृःशाय शुक्राज मिछि। यथा यथा सहस्रू: ५ ए ७ वर्गाख्या ज्या ॥ वकानाः भीषः ॥ নাযাক পুাণ শোণিতয়ে। তথা। সমুত্থান ব্যয়ং দাপ্য: সর্ত্তরখা-नि वा॥ मुव्यानि हिः म्यास्या यम् জ্ঞানতো হজানতো হপি বা । স ভদ্যোৎপাদবেভুপ্তি রাজ্ঞোদদ্যায় তংসম্যাচৰ্মচান্মিক ভাণ্ডেষু কাষ্ঠ लाडेमरायु ह । मृल्या १ भक्ष स्था म अः भूत्र मूल कत्वानु ह ॥ यान रेमाउ ভু যাতুশ্চ যানস্বামিনএবচ। দশাভি वर्खनान्। इंशाहर पार्य परका विधी-যতে।। ছিন্ননাস্যে ভিন্নযুগে ভিৰ্য্যক্ পুতিমুখাগতে। অক্কভকে চ্যানস্য চক্রভবে তথিবচ।। ছেদনে हैंव যজাণা॰ 'যোজু রশ্ম্যে স্তথৈব চ। व्यक्ति हाग्राशशिक्ति न म्खान्

রবুবীৎ ॥ যত্রাপবৃত্ততে যুগ্য-বৈত্ত ণ্যাৎ শ্ৰাদ্ৰকস্য তু। তত্ৰ স্বামী ভবে-क्राक्षा हिन्त्रायाः विमुक्त प्रमा। পুৰক শেচডবেদান্তঃ পুৰুকা দণ্ড मर्श्व । यूग्रहाः भावत्कनाश्व नर्विष्णाः मञ्जान ।। न रहलू शिष मःक्षः भमु जि दी त्रायन का। পুমাপযেৎ পুাণভূত স্তত্ত দণ্ডো বি-চারিতঃ ৷৷ মনুষ্য মারণে কিপুণ চৌর বং কিল্লেখী ভবেং। প্রাণ ज्रम्बर्यक् (गा गाता है इया-मित्रु।। कुमुकागाः शम्बाधः हिःगाः-याः विभाजा मगः। शकामञ् छद म् अः मृ (ভ यु মৃग भक्ति यु ॥ गर्फ ङ्ग काविकानाक म् ७:म् । ८ १ १ मा विकः ৷ মাবকস্ত ভবেদ ৩ঃ খ শুকর নিপাতনে।। ভার্তা পুঞ্চ দাসক শিব্যো ভূতো চ সোদর:। প্রাপ্তাপ-त्राधा खाउताः मृत्र त्रब्हा (वन् परणन वा।। भृष्ठे उस मही द्रम्य (ना स्मात्क कथकन। चाउ। १नाथा जु भुरत्रम् भूक्षः नप्राहित किन्दरः ॥ 🗱 ॥ रहोत्रमा मण विवि यंथा। यस ब्रह्मू घरे क्लाबदास्तिम्हाह यः लुवा । न मख॰ भाश यासाय॰ छह जिसन् नगर्त्र ॥ थानाः मण्डाः व्यक्त

ভ্যোহরভোভ্যবিক্ল বধঃ। শেবে-ः (भाकामम् खाः माभा उत्राह उषा া ভথা ধরিন মেযানা শভাদভ্য-वितक वधः। जूवर्ग ब्रह्मजानीना मुख-মানাঞ্ বাসন্তা ।। পঞ্চাশতত্ত্বভা ৰিকে হস্ত ছেম্ম নিষ্যতে। শেষেপ্যে-कामम खन ज्नाम ७ भुकन्तर ्।। भूक्यांगाः दलीनानाः नात्रीपाकः বিশেষতঃ। মুখ্যানা 'চৈব রত্নানা হরণে বধ মহজি া মহাপশ্না হুরণে শঙ্কাণামৌবধস্যচ।কালমা-जान्य कार्याक ताका म् ७ भूकन्नराय া গোসু বাহ্মণ সংস্কুস্কুরিকা্যা-क (जन्म । भण्मा रज्ञा दिव मराः कार्या १ वंशाहिकः॥ भूव কাপাস কিথানা গোম্যস্য শুড न्। प्रः कीत्रमा छक्रमा भानी-যস্য ত্ণস্চ॥ বেণু বৈদল ভাণ্ডা-ना नवगामा छरेथवह । मृभायाना : र्त्रा गृह्या अयन अवह ॥ सूट्र मुहा-नाः शकिशादिषय रेजनगढि च्जगडि भाग्मिं सथुन विक्रव यहाना राणुगञ्जवः॥ युद्धार्यादेश्व मानीनाः মহ্যানা মেদিনস্য চ। পঞ্চালানাঞ্ - সর্বেশ তম্ব্রাদ্ভণো 'দম: ॥ श्रीकृ रिविष्ठ शाना छन्। बली ॥

नागव्रा वानावित्रम् उत् म अः मार भक्ष क्कनः। भविभ्राज्य शान्त्रम् भाक मूल करणपूर ॥ निव्रम्य निज मणः नामस्य रूप-मठः मभः। मार मार्मः वृत्तयं वट भुम छ कर्ष यर कृष्ठ ।। नित्रमय ভবেৎ স্তেখ্ কৃত্বাপব্যব্যতে চ ব্ৎ । यंख्ञानु। भन्छानि पुरागि (खन-(यमद्र: ॥ छमान्तर म्खरम् जा यन्हान्निः (हात्रायम्गृहारः । (यन (यन যথান্দেন ভেনে। নৃষু বিচেষ্টভে।ভত্ত-'দেব'হয়েন্তন্য পুত্যাদেশায় পাথি-वः।। 🟶 ।। भन्नमात्र इत्राम् एका यथा । भवनावा जिमार्यवृ भुवृ जान् नृ सही পতিঃ। উদ্বেজনকরৈ দ্র্য থৈ শিচ্ছ বিত্ব। পুবাসযেৎ ॥ পরস্য পল্পা भूक्षः मः जावाः याज्यम् तरः। পূर्वभाकात्रिका कारियः भाग् याट পূর্বসাহসং॥ পরস্তিয়ং যোভিবদৈৎ जीर्ष १ तर्गु वरन शि वा ॥ नहीं ना-मिनि मः जित्त म मः गुरू न मानु याद । উপচার ক্রিয়া কেলি: স্পর্ন্দে ভূষণ वानकाः। जरु चहु। मनरेक्षव नर्हः गःगुरुष उथा।। जिय म्म्रामहामान यः न्म्राक्षी वा भर्वायख्या। भन्नम्मतः मान्या गर्भ मः मः मूहन मृत्र । चात्राक्षतः जःगुरुरा शुंशिष्ठः एख নহতি॥ ন সম্ভাষা পর্জীভিঃ भुजिविषः मगाठात्र । निविष्का ভাষমাণস্ক সুবর্ণ দণ্ডমর্হতি।। নৈৰ-চারণ দারেষু বিধি নাঁত্মোপ-बीविवू। मञ्जयिष्ठ वि रठनादी निंग्-চ। শ্চার্ষম্ভি চ ॥ কিঞ্চিদেবতু দাপ্য: স্যাৎস-ভাষা ভাভিরাচ-त्रन्। (या १कामा॰ मृष्यय एकन्। अ अत्मा यथ नर्शक ॥ अकामाः मृष्य • खला न दब • भाग या बड़ः कन्रा॰ छम्री बुटक्ष्टे॰ न किकिनिल माभायर ॥ कदनाः (भवनानास সংযতা। বাসবেদ্গৃছে। উত্তমা। (मवमानञ्च जनत्त्र) वश्व मर्श्छ ॥ मुन् पर्वाट (जवमानः जमामि-हि ८ भिजा यिन । अ जिमश जू यः कन्। अर्थ। पर्भा मानवः ॥ जग्राम् कर्खिनङ्गल्यो ए ७%।इंडि वर्षकः। मकाभाः मृययः खला नाकृति (हम भात्र याट्रा) विभाउन्ह मनः माश्राः शुन्नक विनिवृद्धस्य। करेनप्रव कनप्रान्या अर्थप्राट ्**छम्प्राः** मापिष्टा मगः। मृत्रक विधाः क्लिशिक्षिका टेक्टवायु याक्त्रमा। याञ् कब्रा॰ भुत्रक्रांट की ना नाम्य

भोश्र मर्शकः। शकुल्या द्ववह ছেদ থরেণোদ্বহন তথা 🛚 ভর্তার 🖰 नइयमा जु स्री छाजि ख्रामिनिन। **छा• श्रक्तिः शाहरमनुष्का न• ছानि** वक् मः इराज ॥ श्रुवाः मः माइरयद পাপ শ্যনে তণ্ড আফসে। অভ্যা-দধ্যুদ্দ কাপ্তানি ভব্ৰ দহেত পাপ-কৃৎ ।। সম্পরাভিশস্তস্য দুইস্য ছিল্লা দমঃ। ব্রাত্যবা সহ সম্বালে **ठा अवता छा वस्त्र जु॥ मृत्या छ**छ মগুপ্ত হা ছৈল। ত॰ বৰ্ণাবসন্। অশুপ্ত नक मदरेस खंख मर्सिंग कीयरछ॥ বৈশ্যঃ সহবি দণ্ড্যঃ স্যাৎ সম্বংসর निताश्वः। मङ्मु क्वित्या मर्थ्ऽ। মৌ গু নুৰেণ চাহতি ৷ বান্ধণী যদ্যগুপ্তান্ত গ<u>াছে তা• বৈশ্য পার্থিবৌ</u> रिवमार नक्षमं इर अर्यता कि कविरस সহসৃণ ॥ উভাবপি তু তাবেব ব্ৰান্ধণ্যা গুপ্তযা সহ। বিশ্ব তৌ শূদু-वष्टर्ख्यो प्रकरियो वा कठीशिना । সহসু বান্ধণো দণ্ড্যো ভপ্তা বিশাণ বলাঘুলন্। শতানিপঞ্দ গুঃস্যাদি-इन्डा नर नक्डः॥ स्मेखाः भाषा কো দণ্ডো ব্ৰাহ্মণস্য বিপ্ৰীয়ভোইত (त्रवास निर्मान एकः भागसिंकाः खरवर ॥ देवनारकर क्वियाः **ख**रु

्त्वात्र ७ क्र्याचित्राः विदि। जन्या । ए ७६तः भू यमः। हेडामतः। वाका

दिनगा ना क विष्यु वुष्कर। (या वुा-ं ऋगा मध्यागा जातूरको एथनईउः ॥ महनु , दु। या भा पु ७ मा ला। खास जू (उ वु झन्। मृ मुग्याः क्वियवित्माः जारुष्युः देव अदबस्यः। कवियाग न्छश्राया र दिस्मा शक्षेण्ट । प्रमः। ्रमूखन (मोक्षा मृह्ह कु क्रिब्रिया मण्ड-নেব বা ।। অগুন্তে ফ ত্রিয়া বৈশ্যে भू नुषा वाकारगा वुकन्। माठानि शकः म्खाः नहार मर्मुङ्ग्राक जिनः ।।क्षा अ द्वा • यव एक पारक प्राया याव प्र ব্ৰিক্ ত্যালেদিন। শক্তৰ কৰ্মণ্য मुष्टेक उत्या मंखः भउः भउः।। न ন্তা ন পিতান স্ত্রিন পুত্র স্ত্যাগ মহতি। ভারম পভিতানেতান্ রাজ্ঞা एछाः **म**ञानि वर्षे ॥ इंछि मनूः ॥ क्षा द अतु कल । यथा। द ७: न व न करा वर्षः उरेथवार्थः विधान छः। কাম সংক্ষাত ব্যাহ ত্রিবাগী দও উচ্চতে।। রাজদণ্ড ভ্যাল্লোকা: পাপা: পাপ॰ ন কুর্বতে। যুদ্দ ও . ভয়াদেকে পরলোক ভয়াত্তথা।। দণ্ড শ্চেম ভবেলোকে বিভন্ত সাধুসাপু ক্ষেপ্ৰে 'लान् वलवखदाः। यभद्राख्यमु जूभा-

করণাভ্যাৎ রাজা ভবতি কিদ্বি ।। विक्क मिन बन्ना मृजा म्छा ন ভূভ্তা। দৃত হত্তা তু নরক নাবিশেৎ সচিবৈঃ সহ।। বিপক वहनामरना ज्राजामध न हाई छि । विशक्क बहनाम् ७: स्वामिन न न क नरवट् ॥ इंडि वृक्तिकन्न इकः॥ म् ७कः भू• क्वी स्माकविष्मयः। हल्मा-ভেদঃ।ইত্যমর টীকা নারসুন্দরী।। जन्म विवतनः हन्मः मस्य पुष्टेवाः॥ ए अकनरकः शुः ध्रमीकनरः। **ই**তি द्राञ्जनिष्ठं है।। म् अकः ह्या बन्दान । म् अकातगुर । इंडि कि । प्रः॥ ए अकाकः भू (द्वागकाकः । इंडि (ह्यहन्तुः॥ म अप्रका खी वाम् रितामकः। मानीमा इंडि नागरा इंडिंচ जारा। छ९ न्यं।यः। नानी २ चरी ० यामनानी 8 रामकका ६ यामधारः ७। ইতি ত্রিকাওশেব:॥ দম্ম: ৭ দুলুভি: ৮ন্দুন্দুঃ৯ গভীব্নিকা ১০: ইতি শহ্-ब्रङ्गावनी ॥ দওঙামী ভী ভামীবাদ্য । ইতি **अक्तकावनी ॥** 

। ইতি কটাধর:।।লগুডথারকে ত্রি॥ म खबाबः भू• भृषीनाथः॥(भुजाबिभः ा इं जिमिनी ॥ मध्यद्र बि॥ দওনাযকঃ পু॰ সেনানীঃ। স চতুরক বলাধ্যক:। ইতি হেমচন্দু:॥ म धनी किः जी व्यर्थ गांज । इक्-मतः ॥ ७९ ठानकापि भूनी उ নীতি শাহ্রণ। ইতি ভরত:॥ তস্য बुऽ८ পত्তि यंथा । माखन नीयाज (চদ॰ দণ্ড॰ নযভি বা পুনঃ। मन्छ নীতি বিতি খ্যাতা নীলোঁকানতি-বৰ্ত্তে ॥ তह বুন্ধ কৃত শতসহসূ।-ধ্যায় পরিমিত•। তদ্বথা। ততো-ধ্যায় সহসাণা শতঞ্কে স্বৃদ্ধিত । यब धर्म खरेथवार्थः काम रेक्टवा-ভিবর্ণিভঃ॥ ত্রিবর্গ ইতি বিখ্যাতো গণ এব স্বযন্ত্র বা । চতুর্থো মোক हैर उर्व भृषगर्थः भृषश्च गः॥ आक्र-স্যাপি ত্রিবর্গো হন্য: প্রোক্ত: সত্ত্ব-त्रज्ञ खनः। झानः वृष्तिः क्रय रेफ्रव बिवर्गरेम्हव **ए ७ जः**॥ **आञ्चा (म न्न**म्ह কাল্ডাপ্ডপাযাঃ কৃত্য মেবচ। गहायाः कात्रभेष्य ब फ्वर्र्गा नी-जिकः युजः॥ वयी हानी किकी हिन বার্ত্তা চ ভরতর্বভ। দওনীতিশ্চ विश्वा विम्या खब निम्निंशः॥

অনাত্য লক্ষা পুণিধী রাজপুত্রস্য লক্ষণ । চারশ্চ বিবিধোপায়ঃ পুণিধেয়: পৃথপ্বিধ: ١৮ স্তাম ভেদ शुमानक अला मखन शार्थित। উপেका शक्ष्मी ठाव कार्फ्र्नुम সমৃদা হতা।। মৃত্রণ্ট ধণিতঃ কৃৎস্ন স্তথা ভেদার্থ এবচ। বিভ্রম্-ৈচৰ মন্ত্ৰম্য সিদ্ধ্যসিদ্ধ্যোশ্চ যৎফলং॥ সন্ধিশ্চ বিবিধাভিখ্যো शीता मद्य खर्थाडमः । ७४॰ সৎকার বিভাগ্য কার্যের পরিবর্ণিত।। যাত্রা কালশ্চ চত্ত্বার जियर्गमा ह विखदः। विकासा धर्म मुक्क उथार्थविषयक ह।। या मुद्र-रैक्टर विषय खया कार्ट मान वर्गिजः । जक्र १ भक्षवर्गम् जिदिश काज বণিত া পুকাশকাপুকাশক দঙো २थ পরিশন্তি :। পুকাশো २इतिथ खब खश्क वस् विखद्रः ।। बर्था नागा स्यारेक्ट्र भाराजा रैक्टर भाखर । विश्वि नीव क्टबा **. १७३ पिका है जि. हाईमः ॥** অহান্যেতানি কৌরব্য প্রকাশানি बनमाह । बनमाबन्भी (किंकि। म्हर्गर्यामा विवाहयः ॥ न्नाम চাভ্যবহার্য্যে বা পুগো-শু জিবিখঃ

মৃতঃ। অরি মি.র মুদাসীন ইত্যে-(उन्। न्वर्गिकाः॥ क्टरमा मार्ग खन কৈব ভূথা ভূমিণ্ডণাশ্চ হ। আত্ম-রক্ষণ মাখাস: সর্গাণা চাব্বেক্ষণ ॥ कन्नना विविधाकाणि नृ नाग রথ বাজিনা । ব্যহাশ্য বিবিধা ভিখ্যা বিবিধণ যুদ্ধ কৌশৰ্ল। উৎপাতাক নিপাতাক সুসুদ্ধ जुनवायन । नजाना नानन জ্ঞান• তথৈব ভরতর্বভ ॥ বল ব্যসন নিযুক্তি তথৈৰ বল হ্ৰণ । পীড়া চাপদ কালক পবিজ্ঞানঞ্চ পাণ্ডব ॥ তথা খাভ বিধানঞ য়োগ সঞ্চার এবচ। চৌরৈ রাট-বিকৈ শ্চোগ্রে: পররাষ্ট্রস্য পীডন ।। यशिर द्रमरे रेक्टर पुडिक्शक कात्रकः। (नुनि मृत्यप्रान कालन वीक्ष (मृहत्वन ह ॥ मृष्यान ह न।-পানা সাশকা জননেন চ। আরাধ-নেন ভক্তম্য পুক্তাৰোপাৰ্জনেন চ॥ मलाक्मा हवाबामा द्वामवृक्षी म-मक्षमः। मृ उ मामर्थ (यागान्ह दाहे-স্য চ বিবৃদ্ধনিশ অরিমধ্যস্থ মিত্রা--श्रक्तकार्क (ठाकः श्रंभक्षनः ॥ **व्य** नर्पः शुजीवाज उपारे हव वनीय माः । यावहातः मूम्बन्धः छथा कणक

(भाधन ।। भुत्मा वरायाम (यागक ভ্যাগো দুব্যস্য সংগ্ৰহ:॥ অভ্তা-নাঞ্চ ভরণ ভূতানাঞ্চাব্বেক্ষণ। व्यर्थमा काला मानक वाजान हो। পুসন্ধিতা॥ তথা রাজ গুণান্চৈব সেনাপতি <del>গুণা ক্চ হ্ ৷ কারণঞ্চ</del> ত্রি-বর্গস্য গুণ দোষা ত্তথৈবচ ॥ দুঙে শ্লি-**७क** विविधःषृखिरेन्धवानु कोविनाः। শঙ্কিতত্ত্বঞ্চ সর্বন্যপুমাদস্য চ বর্জ-म•॥ यनक नाट्या नक्तम् ७१ थ्य ह विवर्षन । शुनानक विवृष्तना পারেভ্যে বিধিবভ্রদা ॥ বিসর্গো ২ৰ্থস্য ধৰ্মাৰ্থ কান হেভুক নুচ্যুক্ত । চতুর্থ ব্যসনাঘাতে তहৈবাত্রানু-বর্ণিত ৷৷ কোধজানি তথোগাণি কানজানি তথৈবচ ৷ দশোকানি প্ৰক্ষেষ্ঠ ব্যসনান্যত্ৰ চৈব হ ॥ মূগ-যাক্ষা তথা পান ব্রিয়ক্ষ্ট ভরত-ৰ্যভ । কামজান্যান্ত রাচার্য্যঃ (भाकानीर वयस्या। वाक्शाकः ব্যু তথোগুত্ব দগুপাৰুষ্য নেবচ । নিগুহোথাতান স্ত্যাগ মর্থ দ্যণ भ्वष्ठ ।। यञ्जानि विविधातात्रव कियाखिराक वर्गिजाः। अवसर्गः **পুञेराजः (क**उनानाक जलन । रिज्ञक्रमावमृद्धाः त्राथः कर्याष्ठ

म अभा

नामनः ॥ উপস্কারোথ বসন ত্তথোপায়াশ্চ বৃণিতাঃ। প্রবানক শঙ্কানা ভেরীণাঞ্চ যু ধিষ্ঠির । উপার্জনঞ্জুব্যাণাং পরিমর্জিট তানি বট্। লক্ষাচ পুশ্নন अ अोक्षता जिल्लान ।। 'निष्कि রেকী ভারশ্চ দান হোম বিধিক্ততা । सक्नाम उन्हेंभव अंद्रीद्रम्। भु जिकिया। **याञ्ञ आक्रमें १**४व निक माखिका स्वा । धाकन ह প্রথেষণ সত্যত্ত্ব মন্ত্রাগিরং।। উৎস্বানা সমাজানা কিয়াঃ কেতনজা তথা। পুত্যক্ষাণ্চ পরো-का क महाविकद्र (१ वर्ष ॥ वृडि र्खद्र जाफ्र्न निड्रेष्ण्याहर्यक्राः । অদুঙ্গত্ব॰ চ বিশ্বাণা। যুক্ত্যা দুঙ্ নিপাতন ৷৷ অনুজীবি স্কাতিভেগ खरा जाक समुख्यः । त्रकारेकव পৌরাণা রাষ্ট্রস্ত বিবর্জন।। अक्षाह या विका बाबन् बाहन রাজিকা । দ্বাসগুভি বিধা চৈব শরীরস্য পুডিকিয়া। দেশ স্বাভি স্বানাঞ্ধ্যাঃ সমনু বর্ণিকাঃ।। थ्यां कार्यक कामक व्याक का बा नुवर्गिङः । উপাयन्त्रात्र निङ्गात विविधाः ज्विनिकितः ॥ यूनकृषी

ক্রিনাচাত্র মাথা যোগশ্চ বর্ণিউং।
দূষণ সোতসাঞ্চৈব বর্ণিউঞ্চ
ছিরান্ত্রসাল বৈর্দিশ্যায়ের্লোকস্ত
ন চলেদার্য্য বর্জানঃ। তৎ সরণরাজ
শাদ্রি নীতিশাল্লেষ্ বর্ণিউং।।
এতৎ কৃত্ব শুভং শাস্তং ততঃ স
ভগবান্ পুভুঃ।দেবানুবাচ সংজ্ঞঃ
সর্বান্ শক্রপুরোগনান ভিলকারায়
লোকস্য ত্রিবর্গ ছাপনাস্চ।
নবনীতং সর্বভাগ বৃদ্ধি রেষা
পুভাবিজ্ঞা। দভেম সহিতা ভ্রেষা
পোক রক্ষণ কারিকা। নিগুহানু
গুহ রতা সোকাননুচরিব্যুতি।।
ইতি মহাভারতে রাজধর্মঃ।

मध्याः भुनः शृः हाज्ञभानः। ই5ि भद्रतज्ञादनी॥

मण्डािशः शुः यमः। काणी मण्डा शाविष्यः। म शृर् उप्यक्षशुः श्रिकण नामा णिव माद्राध्य णिव-वद्रां काणाः मखनायक प्रवाध-वान्। यथा। जक्तम् श्रीद्रम्य उत्था-निष्यं में में स्द्राः वद्राणाः निकदः जन्न मुन्ना (क्ष्यम्य स्काम्य मम-श्रियम्य (ज) जनाशुना मखस्त्राः वद्राम्यम्। श्रिद्रञ्ज मन्यामि मृद्राष्ट्रः म् क्ष्यः मुनालकः श्रीकृत्राकः

দ গুণা ৰু ব্য জী রাজ্ঞাণ সপ্তব্যসনাস্ত ।।

গত ব্যসনবিশেষঃ। ইভি হেমচন্দুঃ
।। অঞ্চাদশ বিবাদান্তর্গত বিবাদ
বিশেষঃ । তত্ত্ব তাডনাদি । ইভি
ননুটীকাষাণ স্কল্লক ভটঃ ।।

॥

দ্ওপাল: পু অর্জশকরমৎস্য:।
দাঁডিকাঁ ইতি ভাষা।ইতি হারাবলী॥ দারপাল:॥

দণ্ডপালক: পু॰ শঙ্গলন্থস্য:। ইতি হারাবলী।।

দওভ্ পু পদ্ধকার:। ইতি কিকাওশেব:। দওধারকে তি ।। কিঞ্জাত্র- ত্রী দিগুরুষ:।। সংযান ।। - বর্ষাত্রা। ইতি মেদিনী।। দও্যান: পু ব্ম:।। দিন ।। অগস্ত্যঃ । ইভি মেদিনী।।

দেশুরী জী ডক্রীফল। ইভি রাজ
নির্ঘণীঃ।।

म खराही श्रू॰ मर्बर्टः । बात्रशानः ।
इंडि हात्रावृती ॥ म खरकति जि ॥
म खरालि चि श्रू॰ हरी । ইंडि नमत्रवावृती ॥

দণ্ডবাসী পু॰ ছারপাল:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেব: ॥ একগ্রামাধিক্ত-জন:। ইতি জটাধ্য:॥

দণ্ডবিষম্ভঃ পৃ॰ যত্ৰ শুম্ভাদৌ আক-ৰ্ষণাৰ্থণ বজুগ দণ্ডোনিব্ধ্যতে সঃ। বোলমণ্ডয়াখুঁটী ইভি ভাষা। তৎ পৰ্য্যায়ঃ। স্ঠবঃ ২। ইভ্যমরঃ।।

দণ্ডবৃ**ক্ষকঃ পু॰ সুহী। ইতি রাজ-**নির্ঘ**টঃ।**।

म अरुख श्री खगत्र शृत्र । रेखि दाज-निर्विष्टः ॥

म्खाबिन॰ ट्री भागेऽ। ইতি भन्। र्थकन्नुडकः॥

म आम खिँ वा मरेखक मरेखक गुङ्छा युष्प गुर्ख । नाठा नाठि इंडि जावा । हैं जि वाजित्र १ ॥

দণ্ডার: পু॰ বাহন ।। মন্তহন্তী ।। শর্যস্তক ।। সম্ভকারস্যাকে । ইতি মেদিনী ।। দ গুছত পু নি যোল। ইত্যমর:।।
দণ্ডিক: পু • দণ্ডধারক:। ছডিবরদার
ইতি আসাবরদার ইতিচ ভাষা
।। মংস্য বিশেষ:। ডানিকণা মাচ
ইতি ভাষা। অস্যগুণা:। কফ বাযু
পিত্ত নাশিত্ব । তিক্তত্ব গুযুত্বক।
ইতি রাজবল্পভ:।।

मिखिका खी श्राविष्मयः। ইতি कर्षा-श्राः ॥ त्रड्कः । यथा । व्यक्र्षणार-कर्यः मिखिकाः हिनि । ইতি जूशमावात्रक्रयः ॥ मिखिका त्रड्क् त्रिठि उष्टोकाकातः॥

मिखिः जि क्डम्थः। छ८ भर्यायः
। माभिकः २ जाबिकः ०। ইिक (इम्हन्तुः॥

দ্রী পু॰ জিনবিশেবং। ইতি ত্রিকা গুশেবং ॥ দমনকবৃদ্ধং । ইতি রাজনির্ঘটা: বিমং ॥ ঘাংস্থা। দণ্ড-যুক্তে ত্রি। ইতি হেমচন্দুং॥ চন্তর্থা-শুমী। বথা। জাতে জগতি বাদ্মীকে কবি রিত্যভিদীয়তে। ক্রবী ইতি তত্যে ব্যাসে কব্য স্থানি দিওনি ॥ ইতি কালিদাসং ॥

দণ্ডোৎপল• ক্লী বৃক্ষবিশেধ:।

ডানিপোলাইতি ডানসনিইতিচ
ভাষা। অস্য গুণাঃ। ফ্য শ্বাস

কাস নাশিত্ব । অগ্নিদীপনত্ব । ইতি রাজবল্ল জ: ॥ ডজু পীত রক্ত খেত পুল্ল ভেদেন ত্রিবিখুণ পীতস্য পর্য্যায়: । গোবন্দনী ২ গদ্ধবল্লী ৩ সহদেরী ৪ সহা ৫ ॥ রক্তস্য পর্য্যায়: । বিশ্বদেবা ১। খেতস্য । দণ্ডোৎপলা ১। ইতি রক্ত্রমালা ॥

प्रखादभना जी स्थलभू म्रहादी -भन्। इंडि बङ्गाना॥

म्खाः वि म्खनीयः।म्खिउयाः। जद्भर्यायः। म्खार्यः २। ইडि क्रोधितः॥

म् थ्र° मञ्जः। ইिंछ मद्यानमुका ।। अगऽवङ्वारम मञः॥

বজিত । কর্তা মনেদ কর্মেতি
প্রিলাভেছ্যা চ যথ ।। অপারে
পার মিতৃত্ব কার্য্যে চার্ম্ম সংহি
তে । যদন্ত স্যাদবজ্ঞানাথ তদদত্তমিতি মৃত । ইতিনি হাক্ষরা।।
দত্ত: পু রাজবিশেব: । স্থান সি হ নন্দ্র: । ইতি হেমচন্দ্র: ।।
বৈশ্যস্যোপাধি বিশেব: । যথা
শর্মা দেব দ্ব বিপুস্য বর্মা ব্রাতা চ
ভূজঃ । ভূতি দ্বিদ্দ বৈশ্যস্য
দাস: শৃদুস্য কার্যেথ ।। ইত্যুদাহতত্ত্ব ।। অধুনা কায়সাদেক পার্ষিক্ষ
।। ভগবদবভার বিশেব: । স্থার
পুর: দ্বারেযেতি নামা খ্যাত: ।
ইতি প্রীভাগবত ।।

मख्यभूबः शृ धाम्मविधभूबाछगंडभूबितिमदः। यथा। एए। आछ।
भिठा वीषः मभूद्धा एखक। छद्द
। ইতি याद्धवन् । ।। छ० भित्रगुरुगम्।
भुकाद्या यथा। मूक माणि अस्रवः
भूद्धा याद्धा भिक् निम्नख्यः। छम्।
भूद्धा याद्धा भिक् निम्नख्यः। छम्।
भूद्धा याद्धा भूद्धा माठा भिठद्यो भू छ्व छः।। नद्धकः भू बः मह्या ९ व्या भूदिन्
मान। खी भूवः न हत्या भूदिन् भूदिगृङ्गीयाद्या खन्य बानुक्का नाष्ड कूं ।। भूदः

প্তিগৃহীयान् वसूनाऱ्य तानि निरवर्ग निरवणनम् मरश्र वराङ् विভি হ'ব। পুৰিগৃহীবাদি**তি** । ইতি বশিষ্ঠঃ ॥ তন্য গোত্ৰ ধন পাুপ্তি ৰ্যথা। গোত্ৰ ঋক্লে সমষিতুর্ন रात्रफाड्निमः मुडः । शाबश्रक्षाम्-গ: পিণ্ডো ব্যগৈতি দদতঃ শ্বধা।। পিতুর্গোত্রেণ য়: পুর: সংস্কৃতঃপৃথি-বীপতে। আচ্ডান্ত ন পুত্ৰ: স পুত্ৰ-जा॰ या कि का ने प्रकार शा कू आप प्राप्त সংস্কারা নিজগোত্রেণ বৈ কৃতা:। म खान्छ। खनवा एक मूछ बन्छथा मान উচ্যতে ॥ ॐ क्रुं छ नक्ष्माष्ठ्रयाम-म्खाम्याः गुजा न्भ । गृशोद्या भक्ष-ववीयः भूरबिष्टः भूषमक्रात्र ॥ ইতুগ্ৰাহ তত্ত্ব ।। দত্তকো দ্বিবিধঃ। (करन मलकः मागूर्यायन मलकन्र ।কেবল দন্তকে। জনকেন পুতিপ্ৰ-হী এর্থ মেব দত্তঃ তলৈ যুবঃ। ष्णामूष्णायगञ्ज जनक পुछिगुशीज् ভ্যামাব্যোরব নিতি সংপুতিপন্ন: সউভযোর গিপুত্র:। ইতি নিতা क्ता।।

म्खार्तुमानिकः क्षी अक्षेप्तमिविवाम श्राह्यम् विवाम श्रम विरम्भवः। म्ख्नाऽ श्रूनद्वाष्ट्रद्वाः स्थिन् विवाम भाष छ । यथा ना त्रमः। मञ्जा मुत्रः भगग्रशः भून त्रामाञ् भिष्ट्राञ्ज । मखाभुमानिकः नाभ त्रत्र चात्रभमः हि छ ।। ज्यमभुगतिहि ज भार्गि। । ইতি नि जाक्य त्रा।।

দ্ভাত্ম। পু॰ পুত্রবিশেব:। যথা।
দ্ভাত্মাত স্ববংদত্ত:।ইতি কাত্যাবন:। অস্য বিবরণং। দ্ভাত্মাত
পুত্রোবোমাতা পিত্রিহীন স্তাভ্যাণ
ত্যক্তোবাতবাহংপুত্রোভ্রামীতি
স্ববং দত্ত উপনীত:। ইতি মিতাক্রমা ।।

দ্ভানপক্ষ লী দ্ভাপুদানিক। ইতিমনু:।।

मिं जो मान । ইতি भेपत्र प्रावनी॥ मिंख्यः श्रु॰ हेन्तुः। ইতি बिकाख-(भेयः॥

मम ए मान।। धृष्ठो। **ইতি क**वि-कन्नक्रमः॥

ममन॰ क्ली मान•। ইতি भदत्रक्रा-वनी॥

দক্ষঃ পু॰ রোগবিশেষঃ । দাদু ইতি ভাষা । তস্য ৰূপান্তরাণি। দর্কঃ ২ দুবুঃ ৩ দুবুঃ৪। ইতি ভরত ধৃত শব্দেছা। তস্য লক্ষণ যথা । সক্তু রাগ পিডক॰ দক্ষ মবুণ

मक्षकः भू॰ मक्षत्रागः। ইতি मन्-द्वावनी ॥

ष्ट्यः भू॰ ठकमर्प्यकः । ইত্যমরः ॥ ष्ट्रभाः जि ष्ट्रस्तानी । ইত্যমরः ॥ ष्ट्रमानिनी जी टेडिनिनिकीिः । ইতি রাজনির্ঘণীः ॥

দক্ষরোগী ত্রি দক্ষরোগ্বিশিষ্ট:। দেদুয়া ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। দক্ষণ: ২। ইত্যমর:।।

দক্র: পু॰ দক্ষ:। ইত্যমরটীকাষ্য। ভরত:॥

मनुषः श्र॰ मक्षः। ই जिल्लस्त्र क्षावली।। मनुषः वि मक्ष्यः। ই ज्यूत्रत् होकायाः त्रमानाथः॥

দথ ড দানে ॥ খৃতৌ। ইতি কবি-কল্লছমঃ !৷ . एवि क्री बीवामः ॥ वंगनः । इंडि **ग**पत्रवावली ॥ कीताखद्रावञ्चा ভাবः। দই ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাयः । क्रीवबः २ मक्नाः ० तित्रनः ४ । इंडि ताबनिर्घणेः॥ भयगु॰ ६॥ श्ति ठत्र एषि मुक्का । इंडामद्रः ॥ वान । खनाः। वामुद्रः। धन्द्रः। वा उ (हार ममनवुः। मःगु।हिवुः। म्वा-वरुष्।वनाष्। भाक ककार्ड)क्रा শননত্বণ বহিশোন্তিকারিত্বণ কাস খাস পীনস বিষমজ্ব শীতজ্ব হিতত্ব। রক্তোদেক শুক্রবৃদ্ধি কারি ত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। উঞ্জব্ধ मीलनव्या निश्ववः।कवावान्त्रमव्यः। शाक श्मुवः। भिन तमः भूमवः। নুৰ্চ্ছ পুতিশ্যাধাতীসারাক্চি কাশ্যের শন্তত্বঞ্চ। ইতি ভাবপুকা-भाः ॥ श्रामूष्यः। ऋम् । प्राप्तः। द्वाप्तनष्यः। মক্ল্যত্ব ইতি রাজবল্লভঃ।। 🗱।। व्यथ भक्षमूक्ष मधि खनाः। क्ठावृ॰ । निषदः। উভमछण्यः। शिडानिनाः **शह्यः। नर्वधावृशियलवर्ष्वनवृक्षाक्षा।** निः नात्र मुक्काम वि छनाः। न॰ गु। हि दु॰ । नीउनद्भः। वाउनद्भः। नघूद्भः। विष्ठेश्चिषुः। सीभनवः। क्ठावः। ्रीहरी (द्राग नानिष्क ॥ क ॥ वक्

**मिव खगाः । जू**ज्ञिकाज्ञ । स्थूत्रज्ञ । नाजिभिडकत्व्य ॥ 🕸 ॥ व्यर्कता সহিত দধি গুণা:। (শুগ্রু॰। তৃঞা **शिखान् मारु नामिजुक ।। 🗱 ।। ७**उ-যুক্ত দধি গুণাঃ। বাত নাশিত্ব॰। व्यापुर। व्रश्वापुर। खर्मापुर। खर्मपुक्ष ।ই ভি ভাবপুকা नः॥ 🕸 ॥ বা ভজতৃ 🎮 नाणिषुः। ইতি চকদ खः॥ 🕸 ॥ द्राखी मिव (मवरन विष्मास) यथा। ज्ञाबी দবি ন ভূঞ্জীত কিন্তু সঘ্ত শর্করণ नगुन्नमूशः नाकोम् । উकः नामनकः ভূঞ্জীত। রক্তপিত্ত কফোণ্যেযু বিকারেষুচ অদ্বৃত্তান্তি মপি দৰি न हिंउ।। 🗱 ।। श्वंड विश्वाद विधि নিবেধী। হেমন্ত শিশির বর্ষাসু দধি শন্ত॰ শরদ্ গ্রীম বসন্তেষু প্রায়শো विगर्हिङ।। 🏶 ।। चिविधिन। पिथि (मद-निर्मायः। जुत्राम्क् भिन्न वीमर्भ कुष्ठ भाषु चुन कामना (द्वाग भाषि: II # II व्यथ (गाम् विखनाः। वित्मवन्नामृद्धः। वनाजुः। कित्रुमजुः। शविबजुः। मीननद् । मियद् । भूषिकादिद् । वायुवाणिवः। जाणवनविभाष्य छना-विकव्य ॥ 🕸 ॥ माहित पविख्याः। সুনিধার । শ্লেমালত্ব । বাত পিত্ত नानिष्ण बामू भाकिष्ण अधिवानित्-

व्। ७ व व् । तक करु म्याव् क।। क।। ছानी मिर्व छगाः। উ छन्दः। गुाहिद् । बिरमाय नानिषुः। यामकामार्नः क्रम कार्त्मामु मखन्। मीभनन्न । ইতি ভাবপুকাশঃ।। 🗱 ॥ স্থাবিক मधिखाः। पूर्वाम कक वराधि भुका-পনত্ব॰।। 🕸 ॥ অশ্বী দধিগুণাঃ। বাত नानिवः। मीभनवः চয়ৄ ई उप् ॥ 🚓 ॥ 🗟 💆 क मिल्लाः। कात्रज्ञा অত্যন্ত্র । কটুপাকিত্বঞ্চ ॥ 🗱 ॥ क्छिनी पिष्णाः। वीर्यग्राकृष् । ক্ষায়ত্ত্ব ৷ কক বাত নাশিত্বঞ্চ ।। 🕸 ।। मानुष्य पश्चि खगाः । स्युत्रञ् । । বল্ডে । স্থিত্ৰ । সন্তৰ্গত্বক । ইতি ब्राक्रदञ्ज ७:॥ १ ।। यथ मधि (७ मा: । जात्नो मन्तर उठः सानू साहमूक ড়তঃ পর॰ অনুঞ্জুর্থ **ন**ত্যু**র• পঞ্চন**• पि शक्ष्या।। 🕸 ।। यन्तापीना॰ वक्ष-गानि खगान्छ । सन्तः मूक्षवमवाङ রসং কিঞ্চিদ্রন• ভবেৎ। মন্দে•স্যাৎ ग्रे विशूद (मायवय विमाश कृट।। यः नगाग् घनठाः याउः वाङः सामृत्रमः ভবে । साम्यमा खगाः **छियाः मामान्य मधियञ्जतिः** ॥ यक्तिवाशिक माध्यं विकास्यः তদুনুক । অনুত্ত দীপন পিত বৃক্ত

শ্লেখ্য বিৰদ্ধনিং॥ ভদত্যন্ত্ৰণ দস্ত রোম र्व क्रोहि मार्क्टा अउन्नः मीश-ন॰ রক্ত পিত্ত পুষ্টিকর॰ পরেশ। ইতি ভाবপুकाणः ॥ 🕸 ॥ नवन अधुत्र निर्देश क्षेत्रा मूम भाजी अनुसत्रन वि হীন বৈতদশভি নিত্য । নচশরদি वज्ञाल (नाककाल न द्राखी न मिश्र ক্ফবিকারে পিত্তদোষেপি নাদ্যাৎ ॥ ত্ৰিকটুকযুত মৃতদু। জিকা চুণনি শু॰ कक इत मनिलधः विक्रिमसूक्र गक्ष। তুহিন শিশির কালে সেবিতঞ্চাতি পথ্য • রচয়তি তনুদার্চ্য কাস্তি সত্ত্ব নুণা॰।। দধি মধুর মীষদন্নমাহিতঞ नाजुष्कः।याव यावस्युत्रः (मावरुत्रः তাবদুক্ষমিদ॰ ॥ केंछि द्राक्षनिर्घणैः ॥ 🗱 ॥ मिथि यथ सामू जत्ममः कका-ভিষ্যনৰ কারণ। দধ্যন্ন মৃতি যুদুক্ত म्याः कक भिडक्र।। विमाहि मृष्टे বিণ্যুত্ৰ মন্ধজাত। ত্ৰিদোৰ কৃৎ। मिविष्मातः क्षान्छ गुष्टि विद्वेश्चि বাতলং 🔢 পীনসে চাতিসারে চ শীতকে বিষমগ্রর। অকচৌমূত্র-কৃছে চ কার্শ্যেচ দধি শস্তে॥ ইতি वाकवल्लाकः ॥ 🗱 ॥ थात्रगक्रकति वि । ইতি মুখ্বোধ ।। मधिकृहिंक। जी व्यार्कामरकाकमा

प्रश्न मंथागा काठा । देखि किटि ॥ उक्षमू के प्रश्नमंश्वागा । काठा देखाना ॥ क्ष्म देखाना हिल्ला । भूष्टिया । क्ष्मपुर । पूर्व प्रदेश हिल्ला । द्राक्ष्य हाला ॥

मधिनोतः शुः मधिमथनम् ७:। ७८ शर्यायः : रिन्माथः २ ७कारेः ७ कत्र्घर्यः ८ । ই कि हात्रावनी ।। मधिन्न क्री नवनी ७०। ই कि तान-निर्घणेः ॥

पश्चिः शृ किश्यः। इछामतः॥
पश्चित्याधाः शृ मात्रमप्तः। त्मात्वान्
इि छाषा। इि त्रञ्जनात्मा॥
पश्चित्यः की प्रानार्थप्रधापिनिर्मिकाः
(यनः। यथा। पश्चित्याम्प्रदेशाक्षिनिर्मिकाः
विधानः मृत् नाम्प्रदेश। व्यन्नित्थः
स्रो छात्म त्यान्यन नत्नाधिन ॥
त्याप्तम नात्व जू भूनः भूतृभुकतः
त्याणित्व। स्रोम त्राष्ठीर्य त्रम्थाः
कृषाित स्रामाख्ताः॥ पश्चित्रश्चः
न्याणित्व। स्रोमाख्ताः॥ पश्चित्रश्चः
न्याणित्व। स्रोमाख्ताः॥ पश्चित्रश्चः
न्याणितः। व्याणानितः।
प्रविष्ठः॥ व्याणानितः।
प्रविष्ठः॥ व्याणानितः।
भूते ग्रामुखः श्विजाः। त्राम्यायः
स्रोनाय नाधुत्वाय धीमत्व॥।

क्रमामि ७१ यूकाय मम्मेखाः मि (धन्का॰। शृहरम्लाभिविष्ठेख मृष्-का कर्ग माबरेकः ॥ शामूरकाशान-(हो इक पद्मा मद्य मनुमादि । দধিকারেতি মজেণ দধিধেনু•পূদা-शरयर्।। वव र दिस्या (धनू र द्वा ভিঙেদপোচ न्পनन्तन ॥ यक्रमात्ना वरम् । बन् विद्रावक दिकालम । দীৰ্মানা পুপশ্যন্তি তে বান্তি পরমাণ গতি৽॥ যত্র ক্ষীরবহানদেয়া यब भायम कर्पभाः। मूनय श्रावयः সিদ্ধা নত্ৰ গছ জি পেনুদাঃ॥ য ইদ্দ॰ न्त्रावरव छ क्रा नृत्या हानि मानवः। रमाश्यानयकनः शामा विकृतनाक স গছঙি॥ ইতি বরাহপ্রাণ ॥ দ্ধিপুরিকা জী অপরাজিতা। ইঙ্কি व्राक्तिविषः॥

দ্ধিপুদ্দী জ্রী কোলশিদ্ধী। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

मधिकनः " गृ॰ किंशिय्य व्**कः। ই**ত্য-सङ्गा

দ্ধিমৃতঃ পু॰ মস্ত। মাত্ইতি ভাষা ।ইতির্হুমালা॥

দ্ধিমণ্ডোদ: পু• দ্ধিসমুদু:। ইঙি ভাগবত•।। मिन्थः शृ॰ वानवित्यवः। म मू- || श्रीव चण्वः छम्ड मधुवन शालकण्ठ । ইতি ब्रामायग॰॥

मिश्रिमानः भू॰ वानतः। ইতি जिका-७८मयः॥

मधिमकदः भू॰ कत्र भुः। मधुः भिकाः मकदः। महे हाख हेि जाता। हे गुन्न तः॥ निकाद क्विनास्था श्यः॥ मधिमात्र॰ क्वी नवनीष्ठ॰। ইভি হেম हम्मुः॥

पिरित्रकः भू॰ पिरित्रतः। उट्भर्यायः । नतः २ प्रथु उत्रगः ० कवृतः ८। हेडि त्रवृत्राना ॥

দ্ধিষেদঃ পু• ঘোল•। ইতি জটাধরঃ॥
দ্ধীচঃ পু• দ্ধীচিমূনিঃ। ইতি শত্ম-ভেদ পুকাশঃ॥

मधीि शृ॰ मृनिविष्णयः। न अथर्स मृत्न (त्रोत्रना कर्मन कन्यायाः णाडिनाम्याः काछः। वृज वथार्थः (परिव त्रन्याञ्चावजुः निर्मिछः। ইতি श्री जागवछः॥

দ্থীচ্ছে ক্লী হীরক । ইতি ত্রিকাও-শ্বেঃ ॥ বজুঞ্চ ॥

मध्क वि ध्रेः। ইতি विकाश्यानाः॥
मधः भू॰ यगः। ইতি मध्दद्वावनी॥
मध्यक्रदः भू॰ मधिममूदः । ইতি

मदार्थकन्न उंगः॥

प्रधानी जी मूर्णना। मूर्णन खन्धः

इंडि ভाषा। प्रथाय इंडि क्टिट्ट् । भूतां डि इंडि क्टिट्ट् । महन्म स् इंडि हिंगी ভाषा। इंडि तक्ष्मां ना॥

प्रधानित की प्रसिद्धः। इंडि मद्दि

मधुरखत्रग॰ क्ली मिश्यकः। ইতি রত্ন-नाना॥

मथुऽमः भू• मधिममूमुः। ইতি काठा-थदः॥

मनुः खी कमाप्रभानी। मा मक्कनगा मानव माजा ह। ইতি जिका खण्मवः मनुकः भू॰ चम्दः। ইত্যমরः॥ मनुक्रिके भू॰ (मदः। ইতি मद्यद्या-वनी॥

पन्त्रन्ः शृ॰ यमूतः। ইতি बढावतः॥
पष्ठः शृ॰ यद्विकदेकः॥ अक्षः।
ইতি নেদিনী॥ শৈলশৃষ্ণ। ইতি
ক্রিজাওশেষः॥ চর্বসাধনাছি।
দাঁত ইতি ভাষা। গর্ভহ্ন্য বঙেনাসি গৃহদন্ত পড্জির্ভবিত।ইতি
স্থবোধং॥ তৎপর্যাযः। রদনঃ ২
দশনং ০ রদং ৪। ইত্যমরং॥ দিশ্রঃ
৫ থকং৬। ইতি শদ্রজ্বিলী ॥।
রতিকী ডাযাণ তন্যা ঘাত স্থানানি

यथा। खनया र्ग अस्ता रेक्टर अस्त हिन छथा थात्र ।/मञ्जाघाजः भुक-र्खिताः कामिनीनाः मूथावशः ॥ कामभाष्ट्री # ॥ जथ में इतिगाना निमानीक श्रा (म) निज: म्डावाक्टाजा यम्। कर्माट भुवर्डाउ । पूर्वकीन म कृष्येगि भुक्तिमीन मृम्निष्ठ ॥ मस ॰ मानि भीर्यप्रस्त भवसि व भन्न ष्मात्र । भी आसा नाम म व्यादिः कक (मानिङ मञ्जदः॥ ५॥ म्छायाजि-यू वा यम्। श्रमणू कीयां महान्। म्डनुत्र है का नाम न वहा थिः कक तकः ॥ २ ॥ जुवन्ति भ्य कि विद्रः চলা দন্তা ভবন্তি চ। দন্তবেষ্টঃ স विरद्धारा मूळे (णाणिङ मञ्जवः।।०।। श्रयथु फंडम्लिषु कजावान् कक तकः। नानाम्।वी म विष्क्रियः (मोवित्रा नाम नामजः।। कण्मान् শৈশিরে। গদঃ। ইতিচ পাঠঃ॥ ৪॥ দন্তা শ্চলন্তি বেষ্টেভ্য স্তালু চাল্য-বদীর্য্যতে। দন্ত মা॰সানি পচ্যন্তে मुथक भित्रजूमाराज ॥ यस्मिन् न সর্বলোব্যাধি মহাশৌবির সংভ্রিতঃ Hक्षा मञ्जा नानि भी र्या छ यशि-न श्रीप्रिक्डि চাপ্যসূক্। পিরাস্ক্

ककला व्यापि एक यः भित्रमत्त्रा हि मः॥७॥ (वर्ष्टेंबू माहः भाकण्ड **जान्याः म्हा म्हनस्य ह। अन्त्राः** হতাঃ পুস্বন্তি শোণিত দম্ভ-(वहना। व्याध्यायस्य मुख्य द्रस्क मूथ 'পृडिष्ठ कायल ॥ यश्चिन् সোপসশো নাম পিত্ত রক্ত কৃতো-गमः॥ १॥ घृष्टेषु मञ्ज मा॰त्मयू न श्राया बायल महान्। ভवडि म्डाम्ह हनाः म रेवम्ह्यां २ जि-घाउनः ॥ ৮॥ नाक्उनाधिका माडा कायां जी वृत्यमनः। थानि-वर्षन म॰জ्জामो बाउ कक्ट भुमानप्रि ॥ त्र ॥ मरेनः मरेनः পুসকতে वागु मंड नमाण्डिः। क्यानान् विक्ञान् म्यान् कवा-लान न निषाडि॥ २०॥ ज्ञानत्तर পन्চित्म राष्ठ सङ्गन् (माथा सङ्ग-स्बः । नानामावी ककक्रा विष्कुयः (मारुधिमा॰नकः॥ ১১॥ দন্ত মূল গভা নাড্যঃ পঞ্চ জেবা यथिति जाः। मीर्यामाराश्विव कन्ना यम्। म्रिवं कायर ॥ मान्यानाम न वादिः नरागि निमिन्हः ॥ ३२॥ क्षाहिम् भव्यः मावी म न न दक्षा भशका । व्यविभिद्ध

म इथ्

ক্ষোবাভাৎস জেবঃ ক্মিদ্ভক: ॥ २० ॥ वर्ङ्। वर्क- ज्रवसम्। एस ভঙ্গত লাবতে। কল বা**ভ কুড়ো**-यहाबिः म **७क्षनक म**ेळ्ळ**ः॥५**८॥ শীত ৰক্ষ পুৰাতান্ন পাৰ্শানা ম-সহ। দ্বিদ্যা:।। পিত্ত মাক্ত কোপেন मरहर्यः ननाम जः ॥ ७० ॥ नाला দত্তগতো বস্তু কফ মাকৃত শো্বি-তঃ। শর্করেব খরম্পর্লা সাজ্জেয়া দন্তশর্করা॥ ১৬॥ কপালেন্দ্রিব দী-খ্যঁৎসু দন্তানা দৈব শর্করা।কথা লিকেতি পঠিতা সদা দন্ত বিবা-मिनी ॥ ७१ ॥ (या मृष्यामुन भित्सन मध्या मञ्जूष्मयुक्तः । म्मायकाः नीवजा वाशि गडः मभाव्रहरूः ॥ ५५॥ इंकि साध्वकद्रः॥

म् छकः পু॰ পর্ব जम्य ।। নাগদ্ভঃ। ইবিহেন্দুঃ॥

प्रस्कर्षणः भू॰ ह्रषीतः। ইতি শন্ধ-রব্ববেদী॥

দত্তকাঠ॰ ক্লী বিকল্পতকৃক্ষ:। ইভি রাজনির্বটঃ ।। দত্তধাবনার্থকাঠ: । ভন্দথা নরসিংহ পুরাণে। দন্তকাঠ ল্যু বক্ষ্যানি সমাসেন পুশন্তভা: । লর্ষে কটকিন: পুণ্যা: ক্লীরিণক্ষ্ট শশ্বিনঃ ।। মৃহাভারতে। তিক্তুণ

क्यायः कर्देकः न्याद्धिकण्डेकादि-कः। को ब्रित्शा वृक्त क्षन्दास्या **७क्र**रयम्र ४४१व र॰।। 🕸 ।। निविष काष्ठानि यथा। ध्वाक जान हिंडुा-नाड्या अंडी ह (कंड की विं क्रि मात्रिकलीह मेखिए छुनत् क्रिकाः না তৃণরাজ শিরা পত্রৈর্যঃ স্বর্যাদন্ত শাবন•। ভাবন্ডবভিচাওালে !ুযাব-ন্নকা॰ ন পশ্যতি।।ঞ্চ।। তস্যহে वि 🖯 शतिमागकाह विकः । कनिमागु সম• (ছাল্ড॰ সক্র্র<sup>•</sup> দাদশা-क्तः। भाउक् वाहयस्याक् जन (यफ् उधायक ।। अत्री हिः। बार-माकूनस विभागा कविसामा नवाकुषः। अक्षाकुषक देवनागनाः म्मृतास्ड वडक्वा ॥ ठव्हक्व मात्नन नाद्रीणाः विधि क्वाइएछ। **च**डत शुं ज्वानाक यखक्ल सूरा-হূত ।। ইত্যাহ্লিকতত্ত্ব ।।।

मस्काधक जी चाल्लाक्षः। इंडि बाबनिर्वणः॥

मसहमः शृ॰ ७४:। इंडि इनाय्यः।। मसहरमाथमा जी विषी। इंडि ब्राक्षः निर्यण्डः॥

मस्थावनः ज्ञी मस्भूषिः। छमः दिव र्यथा। भुष्ठर्रुष्ठात मृष्युः क्वाय

करूँ डिककः। चक्रायम् र भदनः म्बना नाग्यास्यन् ॥ 🕸 ॥ जन्य काष्ट्रानि यथा। क्रमाञ्च कत्रवीत्राम् क्रक्क वस्तानियान्। मञ्जाशार्थ में माजू महान् अचिकिता इज्जायः ।। श्रीनित्रम् कन्यम् कत्रक्षमः वहे-ঙ্খু। ভিন্তিড়া বেণুপৃষ্ঠঞ্চ আমু निद्वी उरेथव ह ॥ व्यथामार्गम्ह বিশৃশ্চ অর্কশ্চোডুম্বর তথা।এতে भुगंखाः कथिङा मस्यावन कर्यान ॥ 🗱 ॥ তল্য নিষিদ্ধকাণ্ঠানি যথা। ख्वाक जान शिष्ठान थर्ड्क्रियः কেতকী যুকৈ:। নারিকেলেন ভাড্যাচ ন স্ব্যাদ্যন্তথাবন ॥ 🕸 ॥ खम् दिएएएम म् जाम् ज कन ग्रा । मृजुः म्याप्रकिशास्त्रव शिक्ता-স্কে চাম্যঃ। পূর্বাস্যোভরা-সের সম্পাদো দন্তধাবনাথ।। 🛊 ।। তস্য তিথি বিশেষে নিষেধাে যথা । পুতिপদ में बड़ीवू नवरमाकाहः॥ শীবুচ। দন্তানা॰ কান্ত সংযোগো **मरु**ज्यानस्य विष्याः स्वा क्षिण मुख्या धर्यगानस्तर हमूः (महन यथा। म्डान्क् नाथा घृष्ट्रा भांजः नित्कह - प्रान ।, जाय भून भूथ एउन म् अभिन् भुनीम जि ॥ छ ॥ द्वाग-

वित्मार महका ह वर्डन । यथा। अफि **छो कर्गम्मीह म्र**ह्मांगी नवज्रती। শোষী কাসীচ মূর্ছার্ভো দন্তকাষ্ঠণ विवर्जाय ।। 🕸 ।। छम्र छना यथा । निरुन्डि वकु रेवत्रमाः बिखा मसा-শ্রিত মল। আরোগ্য কচিমাধ-ख नाम्या मस्यविष्माथन ॥ **इ**डि রাজবল্লভঃ॥ ৠ॥ কৃতশৌচ স্ততঃ शुक्तः वर्गाम् छम् शावनः । जिल्लाया गार्जनकाणि त्रमान इप-নাদিভিঃ॥ দক্ষিণাভি মুখো ভূড়া পশ্চিমাভিমুখ उथा। न দ स धावन वर्गाट वर्गाहिनात्रकी ভবেट।। मध्यानाभिकान्त्राक वृष्काकृष्ठन ह विकः। पष्टमा थायमः अर्गाए छर्जन्या न कमाठन॥ अथथ वर्षे विलानाः शाव्याः काष्टिक्या वृथः। न पष्ठ शावन॰ अर्य्याख्यम् मुन्नम् স্য চ॥ নিভ্যক্রিয়া ফল॰প্রেগ্নু স্ত্-র্যাদন্ত ধাবন । পুভাতে জকতে भुाकः मृंर्य्यापय विविद्धिंत् ॥ म्र्यापरय विकाम् । वर्षापर । ধাব্ন । নিত্যক্রিয়া ফল ওস্য সৰ্বনেব বিনশ্যতি ॥ যঃ স্থান সম-(य अर्थाए किमित्न मखवावन । **নিরাশাঃ পিতরো** বান্তি তন্যদেবা

म् छ्रश्

नुत्रवंगः॥ रडमा वार्तनः वर्गात्म। मधाङ्गाभद्राङ्गाः। उम्र भूष्रः ন গৃহান্তি দেবতাঃ পিতরো জনং।। न्नान कारन भूष्ठतिग्रा॰ यः कूर्य्याप्त छ-থাবন । তাবজ্জেয়: न চাঙালো যাবদ্গঙ্গা ন পশ্যতিনা ভগ-वज्रिक्ट म्र्या यः अर्याप्त इ ধাবন । তদন্ত কাদ্বী পিতরো-जुक्वा गहन्दि मुःथिनः ॥ উপবাস मित्न विश्रु भिङ्गु। प्र मित्न उथा। न ह ७९ कनमात्राजि मख्यावन क्षतः ॥ পুভাতে মার্ছবিদ্তান্, वाममा ब्रमनाः उथा। अर्याम्बाहम विर्मुन्द्र कलनानि करेन यूर्थः॥ উপবাসে পিতৃশাব্দে বিধিনানেন दिविभित्न। मस्यावनक्त्रार्जाः मःभूर्गः লভতে ফল॰॥ ইতি পাদ্মেক্রিया-যোগসার: 11

प्रथातनः श्रु॰ थित्तत्कः। धहकत्रक्षः। ইতি त्राक्रनिर्घः॥
वक्रमः। ইতি শদ্চিশ্কা॥
प्रथावः त्री क्षणः। ইতি শদ্বজ্ञावनी॥

म्डभञ्क॰ ही सन्तभूत्र•।ই**डिंभ**म्-চन्द्रिका॥

দন্তপুত্র॰ क्ली কতকফল॰।ইতি

, अब्ह निष्क म्डकन क्री क्ष्रकः। इंडि भदः हिन्द्का। महक्ताः शुः क्रिश्यः। इंडि ब्राज-निर्घणः ॥ रिङ्कना जी शिन्ननी। ই**डि्क**काः निर्घणः॥ **एउडागः शु॰ गजागु** जागः। 1्याव মুথ ডঃ ক্ষন্ধ পৰ্য্যন্তো যোহগুভীক স দন্ত সহিতঃ।ইত্যমর ভরতৌ॥ मस्यान की मस्नाः (क्रमः। खर्माः। খঃ। পুন্নিকা ২। ইতি হারাবলী।। मस्मृतिका जी मडीव्यः। इंडि नद्रवद्यावनी ॥ पचवच की ७४:। ই**डि र्मिन्मः**॥ एसवामाः भू॰ ७४:। ই**डि** बिका छ-(मयः॥ म्खवीन्नकः शू॰ माफिनः। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥

म्डमर्टः भू॰ म्डमर्टः । ইত্যনর-চীকাযা॰ নথুরানাথঃ ।।

प्रस्मितः भू॰ कषीतः। किर्णियः॥ कर्मात्रकः॥ नागतकः। ইতি (मिनी॥ यमः। ইতি (स्मिन्सः॥ प्रस्मिते जी जाक्ति। ইতি (स्मिनी ॥ कृत्नामिका। ইতি ताक्रीक्षिः॥ দন্তশর্করা ত্রী কফ বায়ু শোবিত || দন্তাবলং পু• দ্রী হন্তী।ইত্যমরং॥

দন্তগত মল•। পাথুরি ইতি ভাষা দন্তিকা দ্রী দন্তীবৃক্ষঃ।ইত্যমরঃ॥

য়ইতিনাববকরঃ ॥ অস্যা লক্ষণ• || দন্তিকা দ্রী দন্তিকা।ইতি শদ্দ
দন্ত শ্বে দুইব্যুদ্ধ বিশ্ববিদ্যা

मा की निक्कुन । मिकि इंकि ।। विकास का ।।

ा जो नागे। ইতি भद-निक्षित्वी।।

मिस्ट्रवः शु॰ मस्तागिति । इंडि भाषतकदः ॥ जामा नक्षा मस्र-भाषा मुद्धेवा ॥

म छ र्वकः भू॰ अश्वीतः। दे जि अतै। वृतः॥ म छ रुर्वणः भू॰ अश्वीतः। दे जि जिकाशः (भावः॥

দন্তাঘাতঃ পু॰ নিষ্কঃ। ইতি রাজ-নির্বটঃ।। দশনাঘাত কা। রতি জীডাগা। তস্য ছানানি দন্ত শব্দে দুইব্যানি।।

দন্তাযুধঃ পু॰ শ্করঃ। ইতি ত্রিকাও। শেষঃ॥

म उ व रि॰ की श्र॰ म खरतागर छ म । जर्भायः । म छ मून २ म छ । जर्भायः । प छ मून २ म छ । ज्या । ह । इ जि जा ज । विर्वाणः ।।

मर्डीषिका जी वन्ना। इंडि जिका छ-

দন্তিনী জী দভীবৃক্ষ:। ইতি রাজ-নির্ঘট:।।

मिडिसमः भू॰ इंडिसमः। ইंडि द्राकः निर्विष्टेः॥

पडी की यनामश्रा**छ**वृक्यः। ७८ পর্য্যায়:। শীঘা ২ শ্যেনঘণ্টা ৩ নিষ্ট্ৰী ৪ নাগফ্লোকা ৫ দন্তিনী ৬ উপচিত্রা ৭ ভদু ৮ ক্বন্দা ৯ রেচনী ১০ অনু ফুলা ১১ নিঃশল্যা ১২ চক্র-मडी ১० विनन्ता १८ मधुश्रुह्मा ১৫ **अंश्वक्ता ३५ ज्युगी ३१ अंब्र**ख-পত্রিকা ১৮ অণুরেবজী ১৯ বিশো-थनी २० ऋछी २३ डेडू यह नना २२ । ইতি রাজনির্ঘটিঃ ॥ নিস্কয়ঃ ২৩ দন্তিকা ২৪ পুত্যক্পণী হৈ উদু-ম্বরপণী ২৬। ইত্যমর: ॥ অস্যা ख्याः । करुष्यः । উक्षद्यः । **मृ**वाम ख्यावारमी वृशमात्री मन्द्रामाथन्तु॰ । मीयनवृष्यः। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ অগ্রীলিকাধ্যান গুল্মাদ্র নাশিত্ব । সারকত্বঞ্। ইতি রাজবল্লভঃ।। मडी गु॰ की रही। ইত্যনরঃ॥

महीवीतः ही अयभानः। ইडि द्राञ्ज निर्धः।।

म्ख्यः वि उम्बन्धः। (भँका है जि जाया।। उम्बन्धः। इकि स्मिनी ।। कम्। िम्स्छ्या मूर्थः कम्। ि-(ल्लाममः मूर्थी। कम्। ि खिन्स्ला पुःथी कम्। ि हुक्षना मुश्री। इकि मामूमुकः।।

इस्डब्हरः शू॰ वीज्ञश्रुवः । ইভি बाजनिर्घणेः ॥

দভোলুথলিকঃ ত্রি বানপুস্থ বিশেষঃ
। দস্তনাত্রেণ ছিত্বা যো ভক্ষতি সঃ।
ইতি শ্রীভাগবতং ॥

দন্ত্যঃ ত্রি দন্তো জবঃ। ইতি ব্যাকরণ।।
দন্দশৃকঃ পুণ সর্পঃ।। রাক্ষসঃ।
ইতি মেদিনী।।

দেৱ উন দন্তে।ইতি কবিকল্ফনঃ ।।
দেৱ ক ড় সংঘাতে। ইতি কবিকল্ল
ফনঃ।।

দন্ন ঔ দ শেনে। ইতি কবিকল্প জন্মঃ।। দভ ই ক নোদে। প্রেরণে। ইতি কবিকল্প জনঃ।।

प छ क (नार्ष। इंडि कविकन्नक्रमः॥ प छु॰ वि अन्न॰। इंडि अवः॥ नमूर्षु भू

। इन्ऽाहित्वायः॥ हम् इत्र ७ य ५ मामा भाडी नात्र ক্ মধ্যে

ইতি যাবং । ইতি কবিকল্পফন: ম मनः शु॰ मखः । इंडानदः।। मखना ज्ञका यथा। ज्ञानाम अनादे व তমাদ ও বিধুৰ ধাঃ৷ যত্ৰ শ্যান্ ক্রোহিতাকো দও করতি স্থির । পুদা স্তৰ ন নুহান্তি নেত্<sup>দকাঃ</sup> সাধু পশ্যতি ।। ইতি হাদ্ত भूतात ॥ उभः क्रम मिश्राव-ख्र भग्रायः। हास्टिः २ हम्पः ए ইত্যমর: ।। দমন । তভু বাছে-ন্দ্য নিগুহঃ। ইতি বেদান্তসারঃ।। বিষযাদ্যানৃত্তন্য মনসো যথেষ্ট ব্রিনিযোগযোগ্যতা। ইতি কেচিৎ ॥ एमना लक्ष्यः यथा। अट्नि छा९ कर्माण विशु यह हिख निवा-**द्र**न- । न कीर्खिटा ममः भुारेखः সমস্ত তত্ত্বদৰ্শিভিঃ 🛭 ইতি পাদ্মে-ক্রিযাযোগসারঃ ॥ কদ্ম:। ইভি (समिनी।।

मगकः वि मगनकर्ना **३७** वहाकत्रप्रशा

দমঘোষ: পু॰ চন্দ্ৰ•শীযরাজ-বিশেষ: । স চেদিদেশ পতিঃ শিশুপাল পিতাচ।ইতি পুরাণং॥ দমঘোষসূত: পু॰ শিশুপ্রালঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

हमथः 🎌 ममः॥ मर्थः। इंजूलामि-্ৰেষঃ॥ क्रिम् थः भू॰ म् हः ॥ म्यः । हेडि ॥ ्भिहिनी ॥ मिद्ध ही एउँ। यथा। वेड्रिइन्ड ॥ रमनी जी विश्वरमनी वृक्तः। इंडि ।। পুন মুচিতক শুভো শুত । ইতি छ० रिवदाई श्रीकृषकम् श्रथः॥ निष्मेन् भूष्वित्मयः। (माना इंडि र्चावा । जर्भग्रायः । भूत्रामद्रः ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেব:॥ বীর:॥ উপশाउः। ইতি শব্দর্গাবলী।। अन्तवृक्तः। ইতি त्राक्षनिर्घणेः॥ स्मनकः शुः वृक्कवित्नवः। साना हेि जावा। उट् भर्यायः। **मननः** २ हाउः ७ शक्कार्को ८ मूनिः ৫ ক্রটিলা ৬ দণ্ডী ৭ পাণুরাগঃ ৮ ব্ৰন্দৰটা ৯ পুগুৱীক: ১০ ভাপস-পৰী ১১ পৰী ১২ পৰিৰকঃ ১৩ (प्रवाणथंद्र: ) ८ जनभंदः ) ६ বিনীত: ১৬ তপশ্বিপত্ৰ: ১৭'৷ ইতি ब्राक्रनिर्घणेः ॥ मुनिপुदः ज्ञाधनः ३३ महारकिः २० तुक्ष बढ़ी २७ व्यवभूवकः २२। ইতি ভাবপুকাশ:।৷অস্য গুণাঃ। শীত-লম্ব । ভিক্তব । কবায়র । কটুব मधारीय द्वार विद्यान विद्यान

ট বিকার হরত্বঞ। ইতি রাজনির্ঘ-णैः॥ क्रापुः। वृष्युः। जुगिक्षपुः गुरुगामु (द्वर कर्ण् नामिव्य । देखि ভাবপুকালঃ ৷৷

द्राज्ञिवर्षिः॥ দম্যন্তী স্ত্রী ভদুনল্লিকা। ইতি मद्रभावा।। नव ब्राज भन्ने। ना विषर्छ (प्रभीय जीम ब्राज कन्या। ইভি পুরাণ।।।

দমিত: ত্রি দান্ত:। ইত্যুসর:॥ (क्रमगरमावः। ইতি ভরত:॥ ভার বাহনাদি ক্লেশ সহ:। ইতি সুভূহিঃ॥

मभी पु॰ ममनविनिष्ठेः। मस्मारम्या-ন্ত গীন্ পুত্যুয়েন নিম্ন ॥ मनुनाः मु व्यापः। ইত্যমরः॥ मुकाठार्याः। ইजुर्गानिरकारः॥ मम्नाः शृ॰ व्याः। इंडि मक्रजाः वनी ॥

দম্পত্রী পু॰ ভার্য্যাপতী। ইত্যনর:!! पञ्चः पू॰ कभिः॥ कन्नु॰॥ मार्छा-शाङ्क्षिः। **३७ि म**स्त्रज्ञावनी॥ म्(ञ्चानिः श्रु॰ वज्जु॰। ইভ্যমরः॥ म्माः भू॰ व्यन्तवाः। मञ्भाष ममन कालाशाः। हेलामदः॥ वनकान्।

ইতি রাজনির্ঘণিঃ।। দমনীযে ত্রি॥
দয ঞি ড পুহণে।। গতৌ॥ বধে।।
দানে অবনে। পালন ইতি যাবৎ
। ইতি কবিকল্লফমঃ।।

मयः भू॰ मया। हेि निद्यञ्जावनी ॥
मया जी करूना। अन्या निक्रने॰ यथा
। यञ्जामिन भव क्रिने॰ हर्नु॰ या
कृषि कायरङ। हेहा ज्ञिन्युवर्म्थः
ना मया भविकी जिला ॥ हेिं
भाष्य कियारयाणमावः ॥ जानि ।
जाज्ञवर नर्नेज्ञकु र्या हिजाय
मूलायह । वर्नेश्च न्युकः क्रिकेः
कियार्श्वा मया स्वा ॥ हेिं
सर्म्युवानः॥

मयाकृर्त्रः शृ॰ तुक्तः। इंडि (इमहन्मुः। मयालूः वि मयायुकः। उर्शर्याय । काक्गिकः र कृशालुः ७ मृत्उः 8 । ইত্যারः।।

पिछ॰ कि श्रियः। ইউ, महः॥
पिछः शृ॰ शिक्तः। ইिछ कि विश्वः॥
पिछः शृ॰ शिक्तः। ইिछ कि विश्वः॥
पिछा की जार्या। ইिछ कि सिप्ति।।
पित्रः ही महः। यथा। विक्॰ वत्म पत्र कमन को मान्यः। यथा। विक्॰ वत्म पत्र कमन को मान्यः। यथा। विक्॰ वत्म पत्र

मद्रः शु॰ क्री खरा।। गर्छः। ই छ। सदः

দ্বিদু

॥ কন্দ্রে পু॰ জী। ইভ্যমরটীকা॰

যা॰ ভরতঃ ॥

দরকণ্টিকা জী শতাবরী। ইভি
রাজনির্ঘটঃ এ

मह्मिः भू॰ कृत्व व्यः । जात्र नहे जि जाता। जर्भर्गायः। कृत्व हभः २। इति सम्बद्धावती॥ कृत्व ज्ञाः १। इति ज्विभुत्यागः॥

দর জী পুপার:॥ ভয় ।। পর্ব ত:। ইতি নেদিনী ॥ শেছকাতি:। ইতি লিকাদিস গুড়ে অনর:॥ হৃৎ ॥ তীর । ইতি নিদ্ধান্তকৌনুদ্যা নুণাদিক্তি:॥

मत्रम॰ क्ली श्रिक्यून॰ 1 ইতি রাজ-নির্ঘটঃ।।

দরদঃ পু॰ দেশবিশেষ: !! ভয়॰ !! শ্লেছকাতিভেদঃ । ইতি শদ্রহা-বলী !!

मितः श्री मती। इंडि म्प्सत्तात्वी।।
मिति दे वि की दे । इंडि (इन हन्पुः॥
मिति दे पु॰ निर्धनः। उर पर्यायः।
निश्चः र मृति यः उमीनः ८ मृज् उः ६।
इंडि को यदः॥ को कोः ७ मृजः १।
इंडि को यदः॥ का का का का का का विवास ।।
पन् पाय विद्यावाणि द्वीर्थाना

ৰভিগন্য চ। অদ্বা হেমধেনুণ্চ ।
দ্বিদ্যোজায়তে নর: ॥ইভিপাদ্যেভূথ ও॰ ॥ দ্বিদ্যে যন্ত্র্পন্ত ইঃ
ক্পণো যো হজিভেন্দ্রিং। ইভি
ভাগবত• ॥

मित्रम्। क व् मूर्गड्याः । ইडि करिकन्नक्रमः॥

मतिम्।यकः जि मतिमः । ইতি

मुक्षत्वाथण। •

मतिन्जिः वि मतिनुः। मातिनुऽयुकः।
मतिनुश्वाराजाः कर्डति कः।।

स्तिष्ठि। बि मतिषायकः। मतिषाः सरिजाः कर्डति जृन् शुरुरयः॥

मः त्राम्त्र॰ क्ली मृत्ताम्त्र॰। ইত্যম্র-টীকাযা॰ ভরতঃ।।

দরোদর: পু॰ দুরোদর:। ইত্যমর-টীকাযাঁ•ভরত:।।

मर्प्यतः शृ॰ भर्व जः॥ देव ख्या जाह्नत जि। ইতি (मिमिनी ॥

मर्प्यागः भू वाक्षनियामः। छ० भर्यायः। मीनामीगः। ইडि मद माना॥

मर्प्रवोकः ज्ञी वाष्ट्रः । इज्रुगापि-ं क्रायः॥

म् प्रतीकः शृ (स्वः॥ वाम्राज्यः। । जिकः। ইতি সংশিশুসারে উণা- हित्जिः॥ हर्फूत्र॰ क्री शुप्तकाल॰। ইভি भिहिनी॥

मपूर्तः शृ जी (जकः ॥ ইउप्रतः ॥ मपूर्तः शृ भ्याः॥ वाम्यजाखल्यः ॥ भर्त्वविष्मयः । ইতি মেদিনी॥ त्राक्षनः । ইতি न॰किश्वनात्त्रिणा-मितृज्ञिः॥

मणूर्वा खी ठि छका। ইতি मिनी।। मणूरः पु॰ मर्कादागः। ইতি मप-द्रञ्जवनी॥

দির্জঃ পুণ দকরোগঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ।।

पर्खाः १ ॰ চक्रमफ्कः। ই जि मद-त्रज्ञावनी ॥

দক্ষণঃ ত্রি দক্ষরোগী। ইত্যমর-টাকাবাণভরতঃ।।

দ<u>দ্রঃ পুণ</u> দজরোগঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ॥

मप्ति १ वि मक्ताणी। ইত্যমর-টীক্যা ভরত:॥

দ্রুরোগী ত্রি দক্ষরোগী। ইত্যমর-টীকাথা ভরত:।।

দর্প: পু॰ উছ্মুলত্ব॰।ইতি নীলক্ঠ:
।। কসুরী।ইতি মেদিনী।। উম্যা।
ইতি বিকাওশেষ:।। অহস্তিঃ।

उट्भर्गायः। गर्वः २ व्यक्तातः ० তাবলিপ্ততা ৪ অভিমান: ৫ মমতা ৬ মানঃ ৭ চিত্তোনজিঃ ৮ স্বায়ঃ ১ । इंडि (इमहन्मुः॥ 🕸 ॥ चहकात्र मह সর্বোণ পাপবীজ মনস্বল বুন্ধা-**ওেষুচ সর্বেষা॰ গর্বপর্যান্ত মুন্নতিঃ** ॥ (यया॰ (यया॰ ভবেদ্দর্গো বুন্ধা ণ্ডেযু পরাৎপরে। বিজ্ঞায় সর্ব সর্বাত্মা (তবাণ শাস্তাহ মেবচ ।। ফুদুৰাণাং মহতাক্ষৈব যেষাং গর্মে। ভবেং পিয়ে। এবং বি**ব ন**হং তেখাণ চুণী ভূত করেনে চাচকার मर्भ अझ क महावित्थाः পুরা विजुः । वुकानक उथा निकाः (भवनार শিবন্যচ ৷৷ ধর্যাস্যচয়নস্যাপি শাযু-न्। हन्मु म्यार्याः। शक्ष प्रमाह राष्ट्र **म्ह ख**द्रा मूर्वामम खथा ॥ (मोदा-রিক্স্য ভক্তস্য জ্বস্যবিজ্যস্যুচ । সুরাণানসুরাণাঞ্চ ভবতঃ কাম-**ण**करयाः ॥ वश्चात्रताञ्जूनत्रताति বাণন্যচ ভূগো তথা। সুনেরোশ্চ সমুদ্যণা বাথোক বৰণস্য ॥ नवस्त्राम्ह पूर्वायाः भन्नायाम्ह जू र खथा॥ नाविज्यारेक्टव शक्राया মনসাবা স্তবৈব চৰা প্ৰাণাধিষ্ঠাত্ (नव्याक श्रियायाः भ्रागरजानिक।

भागिषिकाया द्वावाया आत्रावा भिकाकथा।। इद्वाविक महिल प्रवादिका भूभावक हकाद मः ॥ इन्छ प्रकादिका देवराख श्रीकृष्णकम्म थए ॥ पर्भकः भू काम प्रवाद हिन्छ महिला।। पर्भग की हकः। इन्छ कहा बदः॥ मन्दी भन । इन्छ प्रथाद पर्भावाद पर्भावाद ।।

पर्भगः शृ॰ की क्षणपर्भगधातः।

याभि इंडि डावा। उर्थाग्यः।

यूजतः र याप्तमः १। इंडागतः॥

याजाप्तमः १ नगतः १ पर्मानः ५

शृंडिविषाउः १। इंडि मदद्र्ञाः

वनी॥ कर्कः ४ कर्वतः २। इंडि

करोधतः॥ यमा छनः। यागः

वी कातिद्रशानामान्यकः। इंडि

ताबवद्याः।।

म्भात्रसः भू॰ व्यष्ट्यात्रात्रसः। ७९ भर्यायः। यहेश्विः २। ইতি कहा-ध्रः॥

দর্বঃ পু॰ রাক্ষসঃ॥ হি॰সুঃ। ইতি স॰ক্ষিপ্তসারে উণাদিবৃত্তিঃ॥

দর্বীক: পু॰ ইন্দু:॥ বাযু:॥ বাদ্য-ভেদ:। ইতি সংক্ষিপ্তসারে উণা-দি বৃত্তি:॥

पर्विः पू॰ पखनामी। ইতি हातावली

पर्विः जी युक्षनापित्रावः। शांठा "
हेिं जावा। जर्भग्रीयः। किवः र
ंथाकाका ०। हें जानतः॥ पर्वी 8
क्षी ६ थाकाकाः ७॥ कृषा। हेिं
ं भमत्रद्वावणी॥
पर्विकः शृः पर्वी। हेिं हिन्नश्रकायः
पर्विका जी पार्विका। हें जुमतः
होकावाः त्रायमुद्धः॥ थाकाका। "
हेिं हिन्नश्रकायः॥
पत्री काः शृः नर्भः। हे जुमत्रद्वावणी॥
पत्री काः शृः नर्भः। हे जुमतः।।

খলাকাকারকে বি॥

वकृत नज मुळे वर्त्तः मर्वज्गानी छ গোভিলেন ভদ্যভিরিক্ত বল্লানাণ নিবেংখা বোদ্ধব্যঃ। শ্কানি ফল-পুর মঞ্জর্য্য স্তানি যেষাণ তৃণানাণ সন্তি তানি শ্কত্ণানি ইতি ভউ নারায়ণচরণাঃ। গোক্ণিমিতা विख्ठाक्रुश्वानानिका भित्रमाणाः॥ রত্নিপুনাণাঃ শস্তা বৈ পিত্তীর্থেন সংফ্তাঃ। উপমূলে তথা ল্নাঃ পুস্তরার্থে সন্দোন্তমাঃ।। ইতি বাযু-পুরাণে ॥ ৠ। বর্জাপুতি পুসবাবাই হারীতঃ। পথিদর্ভা কিতৌদর্ভা (य म छ। यक्त छू निषु। खत्र नामन शिए उषु व एर जीन् शिववर्षाय । পিণ্ডার্থ যে স্তৃতা দর্ভা যেঃ কৃত্ত পিতৃ চপণি । মূৰোছিষ্ট পুলিপ্তেচ ত্যাগ স্তেষা॰ বিধীয়তে ॥ ধ্তৈঃ কৃতেচ বিশ্নত্ৰে ভ্যাগ স্তেষা• বিধী-যতে । ধৃতৈ রিজুগলক্ষণেন ত্তীযা খুতৈ দভৈ ৰুপলক্ষিতেন शुक्रावन ॥ नीवी माध्य हाय मर्छ। বৃন্ধসূত্ৰে চ গে ধৃতাঃ। পবিত্ৰাণ छान् विकानीयाच्या काय ख्या হৃশা:।। আচম্য পুৰতো নিভ্যুণ পবিত্রেণ দিক্ষোন্তমঃ। নোছিইন্ত ভবেৰৰু ভুকশেষ বিবৰ্জবেৎ

॥ কৃত্ত সমাপিত মিত্যর্থ:॥ 🗱 ॥ 🍴 मर्ভबहुँ नक्रग माह রব্লাকরে গৃ**श**-नःगुरुः। উक्विक्ला ভবেषुका লম্বকেশস্ত বিষ্টরঃ: দক্ষিণাবর্ত্তকো বুক্ষা বামাবর্ত্তন্ত বিষ্টরঃ ৷৷ শান্তি मीलिकायाः। मश्रु निवं चि हालि नाष वि उय (विश्वेष्ठ । । ७ कारतरे । মত্ত্ৰণ দ্বিত্ৰ: স্বৰ্যাৎ স্পদ্বিত্ৰ ॥ নবভিরিত্যত্র পঞ্চভিরিতি কর্মোন भाषान्त्राः भावः। मर्ज्यन्थ्या বিশেষাভিধান ছনেরাগেতরপর ॥ यद्धवास्त्रनि मुद्धाः स्ट स्ट वुकाः বটো তথা। দর্ভ সংখ্যা ন বিহ্নিতা। বিষ্টরাম্ভরণেম্বুপি !৷ ইতি গোভিল পরিশিপ্তীয় বচনাং। ইতি শাদ্ধ-ভব্ব• ॥

দভটি॰ ক্লী নিভ্তগৃহ॰।ইতি ত্রিকা। ওশেষঃ

দর্ভপত্রঃ পু॰ কাশঃ। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ।

पर्ভाक्षयः 🐈 मृङ्धः। ইতি রাজ-নির্ঘণীঃ॥

हर्मः श्रु॰ व्यवावम्या।। ইত্যমূরः॥ व्यान्याश्वरः हन्त्र मृत्यो छू हर्मना-कृम উচ্যতে। ইতি নং न्युश्रागः ॥ व्यवाकनः। ইতি নেদিনী।।

পকান্তক্ত যাগবি**শেষঃ। স্থাগ**-वयात्रकः। यथा। आधाराशकाक शालिन्दु मरेष्यन्दुशया यागा ज्याया श्मावाम्यायाः मह यावन्त्रीवः कर्डः युः को छ्यायि कर्न्डत्या भाग সাধ্যক। ইতি মলনাসতত্ত্বণ।। नर्मकः पु॰ द्वात्रभानः। ইত্যমतः॥ मर्मिया।। भुवीयः। इंडि सिमिनी॥ रर्मे डः शृ॰ मूर्ग्यः ॥ हमुः । इंडि निकान्डकोनुरानुगारिव्दिः॥ मर्भान° क्ली नयन°॥ ख्याः॥ वृष्टिः॥ **ध**र्मः॥ উপলক্ষিः॥ দর্পণः॥ **मा**ञ्जः । ইতি মেদিনী॥ भाज्ञत्त य प्रिथः। বৈশেষিক ন্যায় মীমাণ্ডা সাহ্য পাৰঞ্জল বেদান্ত ৰূপণ। এতানি-**उ**ज्ज छ। नार्थः (वनान् विठार्यः) कशान গোত্ৰম জৈমিনি কপিল পতঞ্জলি विषयात्रारिश मू नियद्धैः क्ञानि ॥ इजा। इडाबरः ॥ वर्गः। इडि ত্রিকাওশেষ:।। চাক্ষুবজ্ঞান । (मथा इंडि ভाषा। उर्भर्गायः। निर्वर्गन॰२ निष्ठान॰ ७ जालाकनः ৪ ইকণ ৫। ইত্যমর:।। নিভা-जन॰ ७। इंडि कि शिक्षतः ॥ 🕸 ॥ भूगामभागि यथा। नन्त छेवाह। रायाक्षर मान भूगाः भाभक यमा

मर्गात । उर मर्द यम मर्दिम শ্ৰোতু কৌতৃহল হি মে ॥ এভগ-वानुवाह । जुनुाक्षणानाः जीर्थानाः रिक्यवानाक मर्भात । (मराजा भुकिमा मर्गां जीर्थमारी जरवस्त्रशा मूर्यामा দর্শনে ভক্ত্যা সতীনা দর্শনে তথা । मन्त्रामिना॰ यजीनाक उरेशव कुक्स-চারিণাণা ভক্ত্যা গবাঞ্চ বহুীনাণ গুরণাঞ্চ বিশেষতঃ। গজেন্দু। পাঞ্চ সি॰হান ে স্বেভাস্থানান্তবৈৰ চ।। भूकानाक भिकानाक थञ्जनाना छ- " रियत् ह। इ॰ नानाक मगूबागा॰ हाना-नाः भद्म शक्षिणः ॥ वर्त्रभुकु (धन्ना मथ्यानाञ्चरेथवह । शक्ति-পুত্রবভীনাঞ্চনরাণা তীর্থবাযিনা ॥ शुरीभानाः मूदर्गानाः मनीनाक विष्मवज्ः । मुकानाः श्रीव्रकागाः মাণিক্যানা॰মহাশন ॥ত্লসী শৃঙ্গ-পুরাণাণ দর্শনণ পাপনাশনণ, ফলা-নি শুক্ল পান্যানি ঘৃত দেখি মধুনিচ ॥ भूगत्रस्य नाजाक दारजन्तुः मर्गान कलाता भाषाक म्यूनगुनाना मृद्धा भूका नरजनत्था भारताहनाक क्रभूद्र॰ जल उक्त महावद्र॰। भूद्रा-म्रानन्त्र्वित्वव मृष्ट्री भूनाः वरञ्चदः ी। (मवान्युः इ॰ (मवघडे॰ मूगिक्तः भव-

न-उथा। भड़क दूनपुष्डि पृक्षा अस्तः भूगाः वा जमतः॥ मूक्रभक्ताः हन्त्र भीगृयः हन्तनः उथा। कलुत्रीः कुकूमः मृष्ट्रीननत्र भूगाः नाज्यद्रशा भजावा-नक्यवर्षे ७क (हरवाणि उ म् ७०। (मवानये॰ (मवथाउ॰ मृष्ट्री शूग्र॰ লভেন্নরঃ।। শুক্তি॰পুবাল॰ রজত॰ म्हारिकः अन्तर्वकः । शक्षागृहः र्म जाम मृद्धा भूगा माज बाब ।।। शूद्राण शूखक मूख नवोक विकु-यञ्जक । मिश्रमूर्वाक्र छ॰ त्रञ् मृष्ट्री পুণ্য-লভেমর: ॥ তপষিন- সিজ मञ्ज॰ नमूपु॰ कृष्णमात्रक॰ । यञ्ज॰ महारमयः मृष्ट्री मृश्रुगुः वास्टा নরঃ।। গোম্ত্র গোম্য দুগ্ধ গোল্-লি॰ গোষ্ঠ গোম্পদ । পকুশন্যানিত (क्का पृथ्व। शूग्रः न (छम्न : ।। क्रि-রা॰ পদ্মিনী• শ্যানা• ন্যগ্রোধ পরি-म धना । मूर्य न का भुवन न १० कि वर ভূষণ ভূষিতাণা বেশ্যাণ ক্ষেমস্করীণ गतः मर्बाक्ष उथुनः। मिषादः भन्नमाम् पृष्टे। भूगुः वास्त्रम् ।। कार्डिकी পूर्विभाषां का द्वाधिका शुटि-भाष्णु छार । भर्भुका मृद्धी नवात करताि अग्रथ अन ॥ शिक्ष्वावाः ज्यावैमामित्वमानि नित्उ भूटः।

मूर्गाभुडिया॰ मृष्ट्री करत्रां कि कयः थ छन ॥ निवदाद्यो कान्याक বিশ্বনাথস্য দর্শন । কৃত্বোপবা্স -পুদাঞ্চ করোতি জন্ম থ ওন ।। জনা-প্রমী দিনে ভক্তে। দৃষ্ট্রা মাণ বিশ্বসা-ধ্বণ। পুণন্য পূজাণ কৃত্বাচ করোভি बग्रथ ७ न ।। উপোষ্য বৃত্ত ভূমেচ ভा शेरत मान जीवत। मः भूबा तावा-নাকৈব করোতি জন্মথণ্ডনশা পৌষে মানি শুকু রাত্রৌ বত্র ভত্র ছলে নরঃ । পদ্মাধাঃ পুভিমাণ দৃষ্ট্রা করে।ভি জন্ম**খ**ণ্ডন ৷৷ সপ্তজন্ম ভবেত্তস্য পুত্রঃ পৌত্রো ধনেশ্বরঃ॥ উপোব্যৈ-कामभी॰ ज्ञादा शुकारक हामभी मित्न।। पृष्टे। का**ण्डा सञ्जूर्गः करता** " **डि बग्नथ ७**नः। मङ्गा विकु शरम शिख विकुः यण्ड भुभूक्रायर ॥ निज्नाः দ্বাত্মনশ্চৈব করোতি জন্মথণ্ডন । भुषारम मूखन॰ कृषा यम भिजून পু उर्भाय ।। উপোষ্য निमिवाद्रापा করোতি জন্মখণ্ডন । উপোষ্য পুৰরে স্নাত্ত্ব। কিন্ত্ব। বদরিকাশ্রমে॥ निश्का मृक्षा भारति करता हि बन-খঙন । সিদ্ধা ক্রাচ বদরী। खूड्ट वर्षिकाणुरम् ॥ मृक्ष्मे मर शुक्रिमा॰ नन्त करद्राजि बन्ना थलन ।

(मानायमानः रगाविनसः मृष्ट्री वृनसा-वत्न ह मा ।। मृक्ष्य अश्रुका नवाह क्रांडि क्या थ ७ न । जारमु मृष्ट्री ह मक्ष मात्मव मधुन्तन।। नःन्का ৰত্বা ভক্ত করোতি জন্মথণ্ডন । রথহঞ্জগন্নাথ বাে দুক্ষ্যভি কলৌ নরঃ৷ সংপূজ্য ভক্ত্যানত্বাচ করে।তি জন্ম থণ্ডন•। উত্তরায়ণ সংক্রাস্ত্যা• भुयात्म नान माठावर ॥ म॰ भृका नद्वा माम्बरकद्वाञ्ज बन्नथ्खनः। कार्डिकी भूर्निगायाक मृक्षा गर्भ তিমা• শুভা•॥ উপোষ্য পূজা• क्षाठ करताजि बन्धथ ७न । हन्तु-ভাগা সমীপে চ মায্যাঞ্ মা • নযেৎ न्दिः ॥ द्राष्या मह मा मृक्षु क्रांडि बचनः क्रयः। রামেশ্র॰ সেতুবদ্ধে আবাচী পূর্ণিমা দিনে।। উপোব্য দৃষ্ট্ৰ সংপ্ৰায় করোতি कग्रनः क्यः। मीननाथः मिनकद्रः লোলার্কে চোত্তরায়ণে ॥ উপোষ্য मृक्ष्ये। **ज॰প्**का करता कि कन्मनः **क्र**य॰ । ক্ৰিকোঙে সুবসনে কলবিক্ষে भूगञ्चात्र ॥ विमानमाक द्रावाकाश्व ननारक भूब्र जनुरक। भाई जी भुजि-মাণ দৃষ্টা কার্ত্তিকেষণ গণেশ্বরণ। नित्न • नक्ता मृक्षे। कात्राजि क्या-

नःक्रयः। विक्रिं मिनि ज्यु मिनि स्मान्धि निव्यो । नमुलायु निध ज्यान्ध ना॰ मुद्रे। मुक्तिमाशु याट । देजिनु क्रिवि विक्रिक क्रम्म थ थ ॰।। नर्मनीयः वि माना छः। ইতি यत्र निः ।। नर्मनस्माग्धः। ইতি व्याकत्र ने ।। नर्मयामिनी जी जिस्तु।। ज्यस्कात-द्राजिः। ইতি हमन्तुः।।

দর্শবিতা ত্রি দর্শকঃ।। পুতীহারঃ। ইতি ভরতঃ।। • •

म्मितिशः वि म्मिनः हेि हात्रावनी।।

मिनिः वि म्मिनः कातिः। उर

शर्यायः। शुकामिनः र व्याविद्यनः

९ श्किनः ४। हैि हि ह्म्मिनः।।

मन कि जिम्मि हैि कि विकन्नस्माः।।

मन के जिर्मा हैि कि विकन्नस्माः।।

मन के जिर्मा हैि कि विकन्नस्माः।।

मनः क्री जिर्मा विष्यः। सिन्धः।। सिन्धः।। स्मिन्।। हिन् स्मुत्रज्ञावनी।। स्मानभवः। हैि नीनावनी।।

मनकावः शुः सन्मश्रुव्यकः। हैि नीनावनी।।

मनकावः शुः सन्मश्रुव्यकः। हैि निस्माना।।

म्बिरियोकः शुः जूर्बव्कः। ইडि वस्माना॥

े मिननी की लाई । उजना देख

ভাষা। ইতি শ্বরত্বাবলী ৷৷ ভেদ-কর্ত্বরি ত্রি। যথা। সাদুর্গা ভবভী-তি রীতি শ্বনী লোকত্রয ত্রাযিণী ভ্যাদ্ব:পুতিপক্ষ পক্ষ দলনী বাঙ্গা কলোজ্লাসিনী ৷ ইতি বিশ্বযোদ-ভরক্ষিণী ৷৷

मननः श्र॰ वर्गः॥ नाजः। ইভূগা-मिकायः॥

मन्त्र शिक्त कि जिल्ला है जिल्ला कि जिल्ला कि

দলসারিণী স্ত্রী কেমুকঃ। ইতিরত্ন - নালা॥

प्रतिकृतिः शृं कषेकः। ইতিহারাবলী प्रतिकृता जी প্রশিরা। তৎপর্য্যাयः । साण्डिः २। ইতি হেমচন্দুः॥

प्यापिकः भू॰ अव्काउ िवः ॥
भूती।। रेग त्रिकः॥ रक्षितः।। था उकः
॥ नागरकणतः ॥ मङ्ख्यः। ই ि
स्मिनी ॥ अन्मः ॥ क्रिकः।।
णित्रीयः॥ वाउँ।। ই ि ह्या प्रमुदः।।
प्रमाणः भू॰ भक्ष कर्व हैः। प्रमुदः।।
प्रमाणः भू॰ भक्ष कर्व हैः। प्रमुद्धः।।
प्रमाणः क्षे मक्ष वक्ष कृषः॥ प्रमुद्धः।।
प्रमाणः क्षे मक्ष वक्ष कृषः॥ प्रमुद्धः।।
प्रमाणः क्षे मक्ष वक्ष कृषः॥ प्रमुद्धः।।
प्रमाणः क्षे मक्ष वक्ष विश्वावि।।
प्रमानः क्षे हुकः। ই ि त्रावि तिर्वि।।।
प्रमानः क्षे हुकः। ই ि त्रावि तिर्वि।।।

प्रतिः जी भू॰ (मार्डे॰। प्रमा ইতি (एना इंडिट ভाষা। ইতি শব্দ রবাবলী।। प्रतिक॰ जी कार्ड॰। ইতি (एमटन्पुः।। प्रतिज॰ जि भुक्छ॰। ইতি (एमटन्पुः।। थिउ॰। यथा। प्रतिज्ञाञ्जन भिष भूरक्ष ज्ञापि कमरी भिका।।

দলেগিন্ধিঃ পু• সপ্তপর্কঃ।ইতি ॥ ত্রিকাওশেষঃ॥

দল্য: পু॰ পুতারণা।। পাপ॰।। মুনি-ভেদ:। ইত্যুণাদিকোব:।। চক্র॰। ইতিসিদ্ধান্তকৌমুদ্যামুণাদিকুলিঃ।। দিনা: পু॰ ইন্দু:। ইতি হেমচন্দু:।। বজু॰। ইতি সিদ্ধান্ত কৌমুদ্য। মুণাদিকুলিঃ।।

দব ই গতৌ।ইতি কবিকল্পজনঃ॥
দবঃ পু॰ বন॰॥ বনাগ্রঃ। ইত্যনরঃ
॥ অগ্রিঃ। ইতি তউ)কাষা॰ নীলকপ্তঃ॥ উপতাপঃ। ইতি কেচিৎ॥
দবথুঃ পু৽ পরিস্তাপঃ। ইতি জটাধরঃ॥ চক্ষ্রাদিদাহঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

म्याप्तः भू॰ माधाननः। ইতি शिका-भक्तायः॥

দ্বিষ্ঠ: তি সুদূর:। অত্যন্তর্ব জী ইত্যনর:॥
স্

म् मवीयान् जि मून्द्रः। ইত্যন্তঃ॥ দশ ই ক দীগুৌ। ইতিকবিকলুফসং॥ দশ ই ক ড দশনে॥ দ•শনে। ইতি কবিকলুজনং॥

দশ ত্রি সংখ্যাবিশেষঃ। দ্বিশুনিতপঞ্চ ১০ । দশ বাচকানি যথা।
হস্তাঙ্গ্লিঃ ১ শুমুবাত্তঃ ২ রাবণ
নস্তক ৩ কৃষ্ণবিভারঃ ৪ দিক্ ৫
বিশ্বদেবঃ ৬ অবস্থা ৭ চন্দুৰ্থিঃ ৮
পণক্তিঃ ১। ইতি কবিকল্পলতা।।
বহুবচনাস্তোধ্য শ্বঃ ।। তৎসণ্ধ্যাবিশিষ্টঃ। ইত্যমরঃ।।

দশকণ্ঠঃ পু॰ রাবণঃ। ইতি শব্দ-রত্নবেলী।।

দশকর্মজিৎ পু॰ রাম:। ই**তি** ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

দশকররঃ পু॰ রাবণঃ। ইতিহেমচন্দুঃ
দশগুবিঃ পু॰ রাবণঃ। ইতি শব্দালা।।
দশতিঃ স্ত্রী শত॰। ইতি মহাভারতে
দানধ্যঃ।।

म्भवा वर म्भभूकातः। ইতিব্যাকরণ॰ म्भवः क्ली कवठः॥ भिश्रात पू॰। ইতি মেদিনী॥

দশনঃ পু॰ ক্লী দন্তঃ। ইত্যমর ভরতৌ

म्भनवात्रः क्ली ७४:। ইত্যমর:॥ म्भनाष्ट्रा क्ली हुकिका। ইতি শক্ ठिन्सिका ॥

म्मानाहिष्टेः शृ॰ नियानः॥ अध्यह्य-न॰। ইতি মেদিনী॥ দ্ভত্যক্ত ত্রি॥ म দ্শাস্ত্রিতাথয়ং পু॰ বৃদ্ধः। ইতি হেমচন্দুঃ॥

मणभूतः ही किन खो मूखकः। ইত্য मतः॥ म्हणस्य मनावादार णिक-चीखः॥ भूतस्व हो। ইতি मिणिती॥ मणभूतः ही मणभूतः। ইত্যমন होकायाः खतुरुः॥

দশবলঃ পু॰ বুদ্ধঃ।ইত্যমরঃ॥
দশভূমিশঃ পু॰ বুদ্ধঃ।ইতিহেমচন্দুঃ
দশভূমীশঃ পু৽ বুদ্ধঃ।ইতি ত্রিকা ওশেষঃ॥

मणाः जि मणानाः भूतपः। मण्डे हेड्याि ভाषा। हेडि व्याकतपः।। मणा जी डिथिविटणवः। ना हन्युन्य मणान कलाकियाक्तभा छन् भलकि छ कालभा वा। हेडि डिथ्याि हिड्युः ॥ न। नर्वामाः मिणाम् छित्या।। यथा। मणमी ह डिथिष्ठामाम् छीत् वस्यिडाङ्कर । छन्याः स्थाणता। यस्र मृतु डी ख्वर्ड नद्याः। छन्य भाभ क्ष्यः गास्त क्रविष्ठाः इत् न् भ। हेडि बत्राहभूताणः ॥ क्षा। छ्व काङ्माः कलः यथा। विम्याविद्यादी धनभूवं।।

युकः शुलम्न कर्छा महनाधिक द्याः।
छेराइहिन्छः मूगना ह्यानुः शुम् छि
कारन हणमो यहि म्हार । इछि
कारन हणमो यहि महार । इछि
कारन हणा । विम्नुकावका ॥
मन्नावका ॥ व्यक्तियान छन्न ।।
हिन्नानार्थ होकाया छन्न ।।
हिन्नानार्थ होकाया छन्न ।।
हिन्नानार्थ होकाया छन्न ।।
हणमी जि व्यक्तियक्षः । नवर्डक क्षि हण्मा । विकास मिन्न ।
हण्मा १ विक्रितायः। म नहेती कः
मन्नावका शुष्ठ ।। वृक्षः । मह
व्यक्तिवृक्षा नवर्डक श्रित वर्डमानः
। इड्रमन्न छन्न ।।
हण्मा कर्ना।।

দশনুখঃ পু॰ রাবণঃ। ইতি ত্রিকাঞ্জ-শেষঃ॥

म्मगूथाउकः भुः जीवामः। इंडि मस्वज्ञावसी॥

प्रभग् बकः क्षे श्रुष्ठ सहिर्वाष्ट्र गवाक भागायः गर्ण्ड सानुष सानुषीणाः प्रभागाः सृबः। ইতি রাজনিঘণ্টঃ।। प्रभागाः क्षे भाग्निविष्णयः। यथा। विद्य (भागाक गञ्जाती भाष्टेला गणि-कार्तिकाः। पीभनः कक वाड्यः भक्षम्न सिप्तः सहर ॥ मान्यभी भृज्ञिभा वृङ्जीवय (भाष्ट्रद्वः ।

वाज लिख इतः व्याः कनीयः भक्ष्म्बदः ॥ উভয**ः मम**म्बद्ध দলিপাত জ্রাপহ্•া কাসে **স্থাসেচ** जन्मायाः भार्यभूत्वर ममार**ा** श्रिनोह्र्ग त्रश्युक्क कर्थ इम्श्र नामनः। ইতি সুখবোधः॥ ष्ट्रमार्गागाच्यः शुः नःकात्रकर्याने नक्ष (वश्र विष्णयः। अयः थड्ज् त . (दक्षः । यथा । जिथ्यक्र (दरिमक-म्हणानवि॰म टेडकाम्भाष्टीम्भ বিংশ সংখ্যাঃ ইপ্টোডুনা সূর্য্যুতা-ভুনাচ যোগাদন্দেদ্শযোগভল্প: ।। अम्। १५६ : कर्यकानीन विवाह।-मुख् नक्षाक द्रविভूक नक्ष्या-क्राया (वार्ग यि अट अकाः मुह **छन्। मण्यागङ्गः म्हार्।।** धन्। न्छिनुत्रदा यथा। चाहा भार श्चि ज्यार्थं। जूबी बा॰ मं॰ विवर्कायं ৷ দ্বিতীয়স্থে তৃতীয়ক্ষ বিপরীত নতো হ্ন্যথা॥ইতি ক্যোতিত্তত্ব্ ॥ ष्णव्यः शुः इकाञ्चवः भीयवातः विष्मवः । न व्यव्याध्यादिशिकः। प्यानाटमिं रचा । मोत्राष्ट्र **(দশো**ডিব ভিকু নাম দ্বি**ল**পত্নী कलहा ज्ला गर गर्वरा कलहार মূতা পুেত্ত্ব গতা সা ক্লাচিৎ

**ज्यकी वर्ष मञ्जल म**ञ्जल कि कि मही। **७८मगीभगाग**ङ्य उष्पञ्च जुन् দীবারি সংস্গাৎপাপভাবে পরি-ভ্যক্স ভমুবাচ হেছিল'ম্বি কৃপাণ ज्य व्यर् कथः मुक्तिः <u>भ</u>्याम्याम धर्मन खाम्बाठ खीर्य नाम युडा-দিভিঃ পাপানি নশ্যন্তি চেবু তে-नश्रीकातः खन्नामाजन्य शर्ग्रहः यग्रया कार्डिक्यू उ॰ कृष्ठ॰ जगार्षा॰ पनामि देवृद्धि। जुनमीमिन्रिक জলেন ভানসেচ্বৎ ঘাদশাক্র লক্স নশু।ব্যম্ন ভতঃ সাদিব্য ক্পা षा छद ९ ७४। मा किया विमानम शम्य विकृत्रन भूगुमीन मुनीना ভ্যা॰ সা ভদ্মিনে আয়োহিতা ধর্মদন্ত ভদ্বিমান ভৌগণৌ চ দৃষ্ট্রা অতিবিষ্ফাৰেন ভূনৌ পপাত পুণ্য मीन मुमीलो उनुषामा भुममा ष्ठित्रयुः षु:**मङ**ब्बनारः ভार्य्या-ভ্যা॰ नश् विष्ठ शाम्यान । उड ৰহু সহসু বৎসরাণি ছিত্বা পুণ্য क्राय সূর্য্যব•শোভ্তব দশর্থনামা द्राज्ञा ভবিষ্ঠান অন্যা কলহ্যা সহ ভাৰ্যাত্ৰৰ যুত্ত বৃাণ বিষ্ণঃ পি ভূত্বেন স্বীকরিব্যতি। ইতি পাণ্মে **উ**खद्रथः॥

দশন্ত্রপভূথ পু॰ বিষ্ণুঃ। ইতি শবার্থ কল্লভকঃ॥

म् भवाकी पुर हन्मः। इति (इनहन्मः॥ " मणा हो जिंदशाः मीशवर्खः। বস্তান্তে বহুবচনাতো হ্য শকঃ । ইতি নেদিনী॥ তেতঃ। ইত্যক্ষ্ भानः ॥ अ ।। भन्नीत्रमः सम समा यथो। गर्जवामः ३ बदा २ दानाः ७ কৌমার ও পৌগ'ও ও যৌবন ও স্থাবির্য্য ৭ জরা ৮ পু। পরোব: ১ नामः :। ইভিনোক্ষর্যটীকাবাণ नीमकर्थः ॥ 🚓 ॥ कान्य मणा मणा যথা। চফ্রাণী স্তদনু ননসঃ সঞ্তি ভাবনা চ ব্যাবৃদ্ধি: न्या खरनू विष য খ্রুনতক্তে ভসে। ২পি। নিদু। हिम তদ্ৰু তৰুতা নিজ্ঞপন্ত্ৰণ তভোন্ आरि। मूंही जनगु सद्गा॰ मूर्र €नाः পুক্রমেণ।। ইত্যলক্ষারশাস্ত্রণ।।।। कलो नद्राणाः वत्थाकापृषः मृर्गाः ॥ দ্যপ্ত গুছ ভোগ্যাপ্ত ভাগ বিশেবঃ 1 उब नाक बिकी में मा यथा। यह ज्यंत्रा मना उद्याः मनिता मन পঞ্চ। অষ্টাবহুগরকে প্রোক্তা বুধে সপ্ত দশ স্তাঃ ॥ শনৈশ্চরে ुम्म (भाका धादा (द्राकानिव भ छि:। द्राष्ट्रा द्यारण वर्षाण ज्ला

রপ্যেকবি•শভিঃ ॥ ঞ্চ ॥ জন্মকা-লীন নক্ষত্ৰ বিশেষ ঘটিত গুহাণাং मना नियम। यथा । कृष्टिकाहि बर्य मूर्याः मानी (द्रोन् ठजूश्रेरय। ন্বাদি ব্রিভবে ভৌমো বুধে। হস্ত **ह**ञ्केर्य ॥ अनुताशाखरय भोति र्खनः भूर्व ठ जुडे (य। धनिष्ठा वि उ (य রাহাঃ শেষে শুরু শচতুষ্টযে।। 🕸 🛭 স্য্যোপপ্লৰ ভৌনাৰ্কি দশাতিকষ্ট मा नृगाः । छक् ठन्मु छ मुकागाः यर्था अक्रम् का प्राः।। म्माक्न सः। উদ্বিগ্ন চিত্ত পরিখেদিত বিত্তনাশ ক্লেশ পুৰাস গদ ভীতি মহাভি-ঘংকঃ। সংক্ষোভিত॰ স্বন্ধন বদ্ধ-विरयाग मुःरेथ जीताम् भा जवि কষ্টকরী নরাণা । ১ ।। সৌখ্য नि ভर्खि यत्र याहन यान त्रव की खि পুতাপ বল বীৰ্য্য শুভানিত্তক। মিট্টান্ন পান শ্বনাশন ভোজনানি চন্দ্রে দ্রাতি ধন কাঞ্চন ভূমি স॰য॰।২॥শঙ্কাভিঘাত বধ বন্ধ नातनम् भीछाः व्याङ्कद्रः विकलः ভাষ্ণ গৃহে করোতি। চৌরাগ্নিদাছ ভ্য ভঙ্গ বিপত্তি রোগ কীর্ত্তি পুতাপ ধনহাচ দশা কুজন্য। ৩॥ **रिवाइना वहनशक्ष्य वर्ष् शहरू** 

লীলা বিলাস শ্যনাসন ভোজনঞ। নানাপুকার বিভবাগম কোষবৃদ্ধিঃ ক্ষিপু ভবেছুধদশাসু হিতার্থ সি-किः। ८॥ नियाभवाम वस वसन कार्य्य इानि बां ८ मर्य्य युक् लिय मुथ-मुविरेन विशिनः। रेमर्क ह रेबत्रम्बि-বাঞ্তি বৈর যুক্তঃ কণ্ঠাসু পাপদ मनाज्ञ नरेनम्हत्रज्ञा ७॥ त्रज्ञाःगृरः সৌখ্য ধ্ৰ ধানা বিভূতিযুক্ত ধ্ৰমা-ৰ্থ কান সুখভোগ বহুপযোগ॰ যাব-ष्रुणां प्रमा भूकावा हि छावटः 15॥বুল্ব্যাবিহীন মতিনা**ল** বিযোগ मूःथ नद्रेश्विमिकि ভय छत्र विवार्डि রোগ•! সম্ভাপ শৌক পর্দেশগত° করোতি রাহোদ্দশা ভবতি জীবন সংশ্যায়। ৭॥ নম্ভপুভার বিশ্নঃ পুন্দা বিলাসঃ খেতাতপত ন্প পুলিও দেশলাভঃ। হতঃখ্লাভ ধনপূর্ণমনোরথঞ্গোকীদশা ভব-তি নিশ্চিত রাজলক্ষীঃ।। ৮॥ 🕸 !। রবেরস্তদ্শিশাসাঃ ৪ তন্য ফলং। উদ্বিশ্বচিত্ত পরিথেদিত বিভানাশ ক্লেশ পুৰাস গদভীতি মহাভিঘা-छान् । मूःथे भृत्यागं वश्च वक्क ख्यानि रेहव ভागार्मणा <u>भूक्कर</u> थलू॥

রালগীড়াং ৷ ১ ৷৷ সোমস্য মাসাঃ ১৯ ফল॰।গদ সক্ষট সংক্রাসং বেছ্া∽ হানি॰ মনঃক্তি। ভ্রকতে রজনী नात्था ভारनावडम् माभ्यरः । २॥ **मक्लमा मानाः ७ फिन॰ ३० फल**ा मर्दिमाः जिनाका जुदा मणि तन्न भुषानकः। भाषा डि धन धानानि ক্লবেরন্তর্গতে হ্রজে। ৩॥ বৃধ্ন্য মাসাঃ ३३ हिन् ३० कलः। व्यक्तिः मञ्जनः निङ्यः नर्बगाख विष्टर्षिक।। नन्धान्ति সর্বকার্য্যাণি ভানোরত্তগতে বুংখ।৪!৷ **শ**নেম্যান্ড দিব°২০ফ্রণ। সভাপ° বিভ নাশঞ বলুনাশ পরাজাব। भोतिः करबाछि विकन्। जानाः त्रक्रम्भा•गकः । १ ॥ **ए**तायंगः ४ रिन<sup>्</sup>२० कृत्र<sup>ा</sup> ष्यार्थ कान शिथाः नि बहाडि चित्रवाहिङ। अहारि वर्गीय इंडा ह जारनाः भाकमभा॰ গতঃ।৬॥ রাছে।মানাঃ ৮ কল॰। অশু ভানুভব॰ দ্বেষণ ব্যাধি ভীতি मुडक्रवान्। अक्ट निःहिका नृन् রবিপাকদশা গতঃ। ৭ ॥ শুক্রস্ वर्षः > भारमो २ कनः। (काश्र श्रीवा-मिद्धादाश जुदान् भृलाि मार्क्शान् । শোক করোতি ভ্ওজঃ স্থ্সগান্ত-फ्ला॰गडः।।। ।। वव॰वर्षाः ।। ।।

हन्तुमा ज्नामा वर्षाः १४ । जरेमा-वाडर्मणा वर्षा २ मात्रः ३ कनः। অৰ্থ্যদিভ্তি বরবাহন নাতপত্ৰ दक्तेशुक्ल वन वीर्या नमनिकान। নিষ্টাল পান শ্যনাসন ভোজনানি চাল্টাৰশা পুচুর কাঞ্চন ভূমিৰাত্রী ॥ ऋक्रमा दर्वः ३ मात्रः ५ मिनानि २० ফল্ড- িপিত্ত পোণিত পীডাঞ্চ क्टाइ.सीना॰ ज्यड्या । मक्षः হৃত্তে নিত্যু বিখে।রন্তর্দশাহ্রতঃ ।। वृक्षम् वरको २ मामाः ८ मिनानि ১০ ফলং। সরত্র দুব্য লাভিঞ্চ গজার্থ शाधनानि ह । हन्दुनः अकाउ (मोथ्यु॰ विरक्षा ब्रह्म नाम **डः ॥ ना**न वंबः ) मामाः । किनानि २० क्न । বন্ধু ক্লেশং নৃপাভীতিং ব্যসনং শোক जन्मरः। तिनानः अकटा (मोब्रि- " क्तम् गाउफं भाक् उः॥ खत्रा वंखीं २ मात्राः १ तिनानि २० क्वः। हान সৌখ্যানি সম্ভোগণ বন্ধালঙ্কার ভূষণ । **स**क्छ विवृक्षा ही र्यो । विरक्ष রভর্দশাঙ্গতঃ॥প্রাহো র্যঃ ১মাসাঃ ৮ कनः। विद्यः मञ् ७४॰ मृःथ॰ শোক বন্ধু ধন ক্ষয় । সকতে বাহ ब्राडार्थः हन्तु भाक ममाङ्गडः ॥ भूकमा वाको २ मामाः ३३ कमः।

भिवार**ङ वत्रनात्री छ नंद्रा नन्त्री**क বৰ্ততে।মুক্তা হার মণি প্রাপ্তি বিঁধো রন্তর্গতে সিতে।। রবে র্মাসাঃ ১০ कन । अभर्गा वह स्रोधा का वि नाम मृति क्षय । नृপতে । রবিঃ व्याः २० ॥ क्ष ॥ अक्रमः ज्वा मणा वर्षाः ৮। उत्रशाहर्मना सामाः १ দিনানি ৩।২০ফল । জুরাভিঘাত বধ বন্ধ ভ্যানি ধন্তে চিন্তাজ্ঞ: বিকল শ্ন্য গৃহাশুলঞ্চ। চৌরাগ্রি ভীতি ধন হানি নরেন্দু পীডাঃ व्यर्गाहिनाम निधनक हमा व्यक्त मु।। वूषमा वर्षः भागा । १०। कनः। **शद्रोतश्र**र्य मञ्जूल नानाविश्व मूथा-শুষ্ণ। করোতি সোম পুরুষ্ট किछिबारस्माक्षः॥ मानमानाः ৮। ২৬। ৪০। ফল । রিপু চৌরাগ্রি ভীতিঞ্রোগনন্তর সম্ত্র। মহা-জন কৃতো দেব: সজস্যান্তৰ্গতে শনৌ ॥ खरत्रार्वर्यः ५ । ८। २०। ८०। कनः भूब्र ध्भान बन्धोरित र्पव बुक्ति প্রন । নৃগত্তল্য মাণ্নোতি জজ-স্যান্তর্গতে গুরো। রাহোর্মাসাঃ ১০। २०। कनः। आञाकार्या अ मूखिनः বন্ধ চৌরাদি সাধুসং। সকতে

সি॰ হিকাপুরে: ভৌমস্যান্তর্দশাক্ত: ॥ मुक्तमा व्राः १।७।२०। कनः। धनवृधिः मुथामी ॰ म्ड नानाव**छ ॰ वत्र**-ব্রিবঃ। পাথোতি বিপুলাণ লক্ষীণ জ্জস্যান্তগতে ভূগৌ।। রবে র্মাসাঃ ৫। २०। कनः। नानातव्यक्तार्थाक ভূমিলাভ মথাপি বা । নৃপ পূছা भवाद्याञि स्क्रमुग्डर्गछ त्रवी ॥ (नामम्) वर्षः )। )। >०। कनः। ধনলাভ॰ সুথ•ভোগ• শরীরারোগ্য নেব্চ। লোকানভ্য ম্বাশ্লেভি ক্ষিভিজান্তর্গতে বিধৌ॥ এব•বর্ষাঃ 🍴 b॥ श्वा व्यमा ज्वामा वर्षाः २१। जगाउमंगा २ १४३०।२०। कन्। मिव्याक्ता यहन शक्क बहेशहज् जीना विनाज वद्राजाग मूर्शाहरक । নানাপুকার বিভবাগন কোৰ वृक्षि किथु भ्षिषु वरणा भुवनाक जिष्किः।। मारन वर्षः ১।৫।२७। ८०। ফল•। বাতশ্রেম কৃতাগীড়া বিরহে। वज्जुिः त्रर । विष्टम ग्रमनेष्टिव वृथम्याष्ठर्गां महानी ॥ खन्ना वर्षा ২। ১১। ২৬। ৪০। ফল । ব্যা 🗣 শত্রু ख्य डाङ्ग धनाराता नृभवल्लाः। লভেজায্যা সুপুত্ৰঞ্চ বুধস্যান্তৰ্গতে खात्री ॥ त्राष्ट्रा वर्षः ३। ७० । २०।

ফলং। বন্ধু নাশং ননস্তাপং দেশ-**छ्यागक्ष वस्तनः । करतान्ति वङ्**-मृः थानि वृधमाः सर्ग**्छनः ॥ শू**क-न्य वर्षाः २।२।२०। क्ल भूयन १५५ वज्ञु नुबक धर्मा वज्जुः धनागनः। ज्ञकः তে দানবাঢার্য্যে বু**ধপাক্দশাঙ্গতঃ** ॥ ब्राय सीजाः ১১ हिनानि २०। क्व॰ । लिया भद्रम्या यूटका शक याजि थनान्जिः। शुङाकदः करदाङ्याभू বুধ পাকদশাক্ষতঃ ৷৷ সোমস্য বযৌ ২।৪।১০।ফল•।ক্টকাদি পুবেশঞ্চ শৃঙ্গিভ্যে ভ্যমেব চ। নিশাকর: করোত্যাশু বুধগাকদশাস্তঃ।। व्यवमा वर्वः १।७।७।२०। कनः। কফ পিত্ত সমৃজ্তা শির: গীডা ভ্যাবহাণ ৷ মাহেয়: স্কৃত্তে শোকণ ১१ ॥ क्षा भागः ज्वम्मा वर्षाः ১०। व्यम्राङमं मामाः ১)। ०। २०। कंतः। भिथ्राभवाप वध वक्ष নিরাশ্যত্ত চৌরাদি ভ্পতি ভুক হ্দম ভীতি মুগা। আশা নিরাস यथ ठार्छन कार्य) शनि शक्तार्मा পুষ্কতে নিষ্ত নরাণা ॥ গুরো र्वर्वः २। २ । २ । एक । (ए व ) তানুরত শান্ত নানাপ্রান্তি করো-

তিচ। ত্তক সৌখ্য সনাযুক্ত পঙ্গো রন্তগঁতো গুৰু:।। রাছো র্বরঃ ১।১। े । कन । नुभाक्तय । जुन क्यक ধকতে শনে রম্বর্গত তথা।। শুক্রস্য वर्यः)। ))। १०। कनः। जुङ्घक्षु धरेनः পূর্ণো ভার্য্যা বিভ সমন্বিতঃ। স্বর্ণ সুথ্যক্ষনভতে দৌরস্যান্তর্গতে সিভে । त्रत्व र्यामाः ७।२०। कलः। भत्रना-ব্রাভিগমন• করোভি খন্নদীধিতিঃ। कीवनम्प्राप्त मत्मरू॰ मत्म त्रस्त्रम् मा-क्टः॥ (मामम् वर्यः )। १। २०। জীনাশ জক্ষিরোগঞ্চ কফ পিত্ত गम भागी। वसुरविष अवाङ পক्ষে র उদ्भाक्षः ॥ व्यक्षमा মাসা: ৮।২৬। ৪০। ফল॰। দেহ্-रैक्ग्पु॰ बृश्रात्राण॰ नानामूःथानि ज्भिकः। धननामक ज्रकालं मान त्रष्ठपर्वाञ्चः॥ वृषम्भवर्यः ১।७। २७। ४०। यन्त्र । चात्राग्रः विज्ञयः রাল্য বহুবিভানি সোমলঃ করোতি ত্বাদর লোকে শনে রস্ত र्म्भाक्ष् ।। अव वर्षाः ३०॥ 🕸 ॥ खाः इनम्मा वर्षाः १२ । छरेनाः वाञ्चर्यमा वर्षाः ३। ८। १। १०। कनः ি বিভাগেদ ওন্য বিভ বিলাস ভোগান্ পর্য্যান্ত সৌথ্য ধনধান্য नभाग्यक। विम्रा शुनाम वत्रतङ्ग সুথার্থ ভোগ নিজি॰দশা সুরগুরোঃ প্ৰক্তে প্ৰিয়ত্ব।। ব্লাছো ব্ৰেষ্ট ২।১ १ २० । कनः । वजुष्ववः स्वावादः हानजु॰मं॰ निद्रामुय॰ । कलह॰ कात्रयमुक्त र्खात्रा त्रस्थर्म नाक्षः॥ मूकना वर्वाः ၁1৮1701 क्न·। কলহ বন্ধুভি: নার্ধ বিত্তনাশ মনঃ ক্ষতি । ত্রীবিযোগঞ্চ সক্তে জীব-महाद्वर्गठः मिठः ॥ त्रत्व वर्षः 🦠 ফিনানি ২০।ফল•।বহু মিত্র॰বহু-धन• (जो जागा)• त्राबदल ७ । अक्ट ভाক्তतः भाष्ठिः खूदात्रप्रमाक्टः ।। সোমস্য ববে। ২। १। ২০। ফল॰ । (ভाগাচ্যে বহু ভাষ্যঃ স্যাদিপু রোগ বিবজ্জিতঃ। নৃপত্তল্যো-ভবেছৈৰ শুরো রম্বর্দশাক্ষ্ড:।। अबग्र वर्षः २।८।२७।८०। कनः। ভীক্ষরোবে রিপোর্হন্তা গলবন্ডীমদ-র্শনঃ। সুখ সোভাগ্য সংযুক্ত: লছে-চান্তৰ্গতে ভরো: ॥ বুখস্য বংষী ২ । ১১।२५ **न्डि॰।** कन॰। जूःङ्। **२** जूङः जुथी पुःशी मजुवृिकः शूनःशूनः। দেবার্ছনপরে৷ নিভ্য-জীবস্যান্তর্গতে वुष्या। भारत वंबः २। २। ०। २०।

कन । (वनातं बनान्याः (नोथाः ভবেদ্বিত্ত বিবৰ্জ্জিতঃ। লুগু নীতি मना निडा॰ एरता तहर्गाङ मानी ॥ वद॰ वर्षाः 🕽 ॥ 🗱 ॥ त्रारहाः जुनम्मा वर्षाः ३२ । जन्याज्यम्मा वर्वः ১। ९। कनः। ভार्याहि मृत्रः। নিদান বিবাদ বন্ধ শস্ত্রাভিঘাত ভয়হীন পরাক্রমন্চ। সপুাপ্ত সৌথ্য थन काक्षन मीनामाका द्वारामाना ভবতি बोवन मः मेराय ॥ भूकमः ॥ 🗝 বৌ ২। মাসাঃ ৪। শিরোরোগ॰ करम् क्यां जार्याक व्यवाः। বান্ধবৈঃ কলছো নিত্যু॰ রাহোরন্ত-র্গতে ভূগৌ।। রবে র্মাসাঃ ৮। কল । শিরো রেগে ভয় ঘোর মৃত্যু (भाकक माकन । वृह्मश्र इयः সর্য্যাদ্রাহো রন্তর্গতো রবিঃ॥ সোম-न्य वर्षः ३।४। कनः। जी भुव कनः

व विखनाण ननः करिः ।
करता कि द्वाण में अर्थ तार्थ देव ।
करता कि द्वाण में अर्थ तार्थ देव ।
कर्म विश्वः ॥ अक्रमं मानाः २०॥
२०। क्वा । विष णद्यां शि हो दिए छ।
नियं के पाक्ष । क्या । क्या है।
विश्व कर्म प्रमाण ज्या । क्या ।
वृषमा वर्षः १॥ २०॥ २०॥ क्वा । क्या क्या ।
क्या माना व्या ।
क्या वर्षः १॥ २०॥ २०॥ क्वा । क्या क्या माना ।
क्या माना व्या माना ।
क्या माना व्या माना ।
क्या माना व्या माना ।
क्या माना माना ।

। ज्डांभाजायू विषयः सर्वार পা ভান্তরে বুধঃ।। শনে বর্ষঃ ১। ১। २०। कनः। जी शूरेबः, कनरश निङ्यः বান্ধবৈ: সহ বৈরিতা। <del>ভবে</del>প্টু রইপা দুঃখ॰ রাহো রন্তর্গতে শনৌ।। গুরো र्वायो २। ३। ३०। व्याहि मुःथ ভरि **ख्याका (एव वृक्षिण भूक्षक:। कार्य)** নিজি ভ্ৰেদিষ্টা রাহোরস্কর্গতি গুরৌ ॥ वव•वर्षः ३२ ॥ 🕸 ॥ श्रुक्तमा ज् मना वर्षाः २३। उत्रास्त्रमा वर्षाः ৪ : ১। নত্রপুচার কচির পুনদা विलाम मेयान मान नृशश्कर কোৰলাভান্। হস্ত্যশ্ব যান পরিপূর্ণ स्तात्र**थक्ष (भोकी एगा मृ**ञ्ज जि निम्ह-व ताकविश्वीशद्भविर्यः । (पञ्छी वृ ব্ণকোন্ত ভীবুভাগো জ্বাদিভঃ। ज्जः महाद्वा**क्षरियः म**र्देब जीर्गवास्र-র্গতে রবৌ। সোমস্য ব্যৌ ২। ১১। সন্মান নাক্ষে। ব্লোগশ্চ কাৰ্য্যনা শশ্চ নি ভ্যশং। শুক্রস্যান্তগতে চন্দে জী-नात्मा निय उ॰ ভবেৎ॥ अ क्रमा वर्षः ১।৬।২০। উৎসাহী ধন ধান্যাচ্যঃ कन्रक मुमनाः मुधीः। ज्मिनारका ভবেছৈব শুক্স্যান্তৰ্গতে স্কলে ॥ वृषम् वर्षाः ১।১।२०। मर्द्रव वाजरण (मोथ्र॰ मानमक्ष्य जूनगः। जार्याः-

সুশীলভা মেডি ভার্গবান্তর্গতে বুংধ ।। मार्न वंर्यः ১। ১১। ১०। कल । माजू ক্ষয নবাগ্নোক্তি নিত্ৰ বৃদ্ধিক্ত কায়তে । होतेविकंगा वाजः मार मुक म्याञ्चर्याः भरनी ॥ ख्रात्रा वर्षाः ०। ৮ । ১०। कना त्राजभूका मुथ- भी जिः कनशाबननः (भवह । ভार्गवास्त्रर्गत्ड कीर्व (होत्राम्छक वाज्यात्र ॥ त्राहा र्वाची २ । ८ । कन । वन्न न वन्नू भूजोरिह र्वज्ञुनाला द्विशार्खय । শরীর• দৈন্যমাগ্নোতি ভূগো রম্ভ গভন্তম:॥ এব॰ বর্ষা: ২১। ইভ্যন্ত-र्मना कथन॰ ॥ क्षा व्यथ शुरुष्ड-म्बना। गुरुष्ठितः किन कृता यश्चि লন্ধ- ধুব॰ ভবেং। ধুবাণি গণযেন্ধী-মান্রব্যাদে: ক্রমতো যথা।। রবৌ **ट (वना विभव: भूक्षाल्मी अस्ब ह** বাণাঃ **শ**শিজে তথাকাঃ। শনাবৃত্ত र्मिक् ह व्रुग्गाली महामुश्री खत्रका ভ্ৰজে চ ৰুদুঃ ॥ গুছস্যান্তৰ্দশা মাসান্ দিনীকৃত্য গুণা হতান্। बाक नवा विकामीयाए भुजाब गुर वानतान् ॥ ইতিপুত্য समा। ইতি ক্যোভিভত্ব॰॥॥ যুগভেদে দশা-्रित्रिष्मया चथा। मञ्जू नर्गम्मा हिव বেভাষা হরগৌরিকা। দ্বাপরে

रगिनिनी हिन करनी नाक किनी मणा। इंडि मन्यान्ड ।। # !! मण्या मणा यथा। यानिनी व वार्यिकी २ नाक किकी ० ना गिकी 8 मूजनता १ वि ग्लाख्ता ७ कि ग्ला-ख्ता १ श्रुणाकी ৮ इत्र गोती २ मिनम्णा ७०। इंडि का खत्र छु ।। म्लाकर्यः श्रुणानाः। इंडि ह्म-हन्युः ॥

म्माकवी पूर् भुतीयः। ইতি हाता-वनी॥

দশাঙ্গুল লী ধর্জ।ইতিভাব-পুকাশঃ॥

मणाननः भू- त्रावनः। ইতি णयत्रः। वनी।।

मगानिकः पू॰ महीवृक्तः। ইতি मञ्

म्माक्श जी किवर्जिका। ইতি वाकनिर्घणः॥

मणार्गः भूः (मणविष्णवः। सविष्णः) भवंडमा भूवं मकिगमाः मिण वर्ड्डा। मनी विष्णव जी। ইडि मकार्थकन्नडकः।।

मणार्शः भुः वृष्यः ॥ यमुप्रमाः ॥ जप्पमारः भूः ज्या । ইতি विका-अप्मयः ॥ দশাবভারঃ পু॰ বিষ্ণঃ।ইতি ত্রিকা-ওশেষঃ॥ ভস্য দশাবতারা যথা। ন্ৎস্যঃ ১ কৃষঃ ২ বরাছঃ ৩ নৃগি হঃ ৪ বামনঃ ৫ জামদ খ্রঃ ৬ अभः १ क्षः ৮ वृषः २ कन्नी २०। इंडि दबाइ পুदाय ॥ व्यक्ति । धर्माञ्चाद्रायगम्। भः मः मः ज्र का-कृष २ इत । युद्धक युद्धियानानु (र्मवा देववश्रावश्रात ॥ श्रामूर्जाव ভত ত্তস্য ব্ৰহ্মা হ্বাসীৎপুরোহিত । यूगाथायाक जूर्याङ ज्ञानसम् जुदाधु रेव ॥ **ग•ङ्डः न नभूमु**रङः হিরণ্যকশিপো বঁখে। ঘিতীয়ে নর-भिः हात्था काष्ट्रा शामी श्रादा हिन: ॥ विन न शह्यू लाकियु .বেতাযাণ সপ্তমণ পুতি। তৃতীযে বামনস্যার্থে ধর্মেণ তু পুরোধসা॥ **थडा छिन्: य्डा छम्। हिन्**राः न • ज्उरमा विकाः। सान्याः मध যেংন্যে তু শাপজা স্তান্নিবোধত।। <u>রেতা যুগে তু পুথনে দ্বারে</u>য়ো বভূবহ।নষ্টেপ্রমে চতুর্পাণশে মার্ক-A धरा भूबः मदः ॥ शक्षमः भक्षमः **म**राञ्ज (व जाया॰ मञ्च जूद र। माक्षा-ত। एकदबी उ उत्माउथाः भूतः লরঃ ৷৷ একোনবিংশ্যাং বেভায়াং

পর ক্রাভ ক্ষিতুল জানদগ্য তথা ষঠো বিশামিত পুরংসর:।। চতু বিংশে যুগে রামে।বিশিষ্টেন্ প্রো थमा। मध्या द्वावनमार्थि फंडि मन्त्रथाञाङः ॥ ज्यष्टरम् दानद्र বিষ্ণু রস্তাবি•শে পরাশরা**ে।** বেদ ব্যাস তথা কছে জাত্কর্ণ পুর:-সরঃ।। ক ভূ • ধর্মব্যবস্থান মসুরা-গাং পুণাশন । বুদ্ধো নবনকে হজ্ঞে छत्रमा भूइदक्रमः ॥ (स्वक्रा॰ त्रमूप्तर्यन दिवशायन श्रृदः मदः । जिमासिव यूर्ण कीरण महा। निष्ठि ভবিষ্যতি॥ कन्दी विक्ष्यमा नाम পারাশর্য্য পুরংসরং। দশমো ভাব্য হস•ভ্তো যাজ্ঞবল্য পুর**সর:** ॥ ইতি নৎস্যপুরাণ।।।

ममार्थः भू॰ हन्द्रः। ই जिम्मदत्रङ्गा-वनी ॥

দশাস্যঃ পু॰ রাবণঃ। ইতি ভূরি-প্যোগঃ॥

দশাস্ত্রিৎ পুণ শ্রীরামঃ। ইতি ভ্রিপুযোগঃ॥

परमञ्जनः भूः भूषीभः। ইতি ত্রিকা-ওশেষः॥

मरणतः शुः शिः गुः। इज्रुशानिरकायः॥ मरणत्रकः शुः सकामणः॥ जामा े नाइ भू॰ ज्रा इंडि एम हन्तुः॥ फुल्मककः भू॰ मकापनः। इंडि ज्रिभाषाग्रः॥

हिना है ते ये छे छेट किरा । इंडि किर्दिक किरा ।। एन है के छाति। है डिकि दिक क्रिक क्रिक ।। एन है के छे हमारि।। ह॰ एम। इंडि क्रिक क्रिक क्रिक ।।

स्याः शृ॰ यद्यमानः ॥ होतः ॥ इता-व्यनः । इति स्मिनि । थनः । इति व्यक्तवानि ॥

म्भूः भु॰ होतः॥ त्रिभुः॥ मङ्ग्रा-इत्रिकः। ইতি শব্রত্নাবলী॥

দসু॰ প্লী শিশির । ইতি স • ক্ষিণ্ড । সংরে উণাদিবৃত্তিঃ।।

দসু: পু• থর:॥ অখিনীসূত:। ইতি মেহিনীঃ॥

দলৌ শু অশ্বিনৌ। ইত্যনর:।। দ্বিচনান্তোহ্য শব্য:।।

দুসুদেবতা দ্রী অশ্বিনীনক্ষর ।ইতি হেমচন্দু:।।

দসুস্: জ্রী সংজ্ঞা। সা স্থ্যপত্নী অথিনীজমার মাতা চ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেবঃ।।

पट्टे के की छो।। पार्ट्ट । इंडि क्विक्लक्षाः।। দক্রঃ প্ অগ্নি:। ইতি সিদ্ধান্ত কৌনুদ্যানুণাদিব্ভি:॥ দাবানলঃ। দহ্দ ক্লী দাহঃ। ভ্রমীকরণং। পোডান ইতি ভাষা। দহ ধাতো-ভাবে মনট্ পুত্যয়ঃ।।

দ্ভনঃ পু॰ অগ্নিঃ।। চিত্রকঃ।। ভল্লাতকঃ।। দুপ্তচেতসি ত্রি। ইতিমেদিনী
।। কপোতঃ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।।
দহনকেতনঃ পু৽ ধুমঃ। ইতি হেম
চন্দুঃ।।

परनिश्या जी श्वारा। ইভি ত্রিকা-গুশেবঃ॥

मह्नाडक ही माहाडक। इंडि दाब-निर्घकिः॥

पर्नादाजिः शु॰ जलः। ইভি दाख-निर्घणः।।

पहनीयः जि पाशः। पहनाईः। पह-शाखाः कर्षागुनीय गुळुऽयननित्रमः पहानाननः शृ॰ সूर्यऽकास्त्रमाः। ইखि (हमहम्पुः।। पहानाभाषानानाः।। पहतः शु॰ मविका।। स्रतः।। स्राह्मा।।

দহর: পু॰ মৃবিকা॥ স্বলু॰॥ ভ্রান্তা॥ বালক:। ইতি বিশ্বমেদিন্যো॥ স্পানতে য অবিবর্জাসু কুর্পাদৃশ: প্রিসর পদ্ধ-তি॰ হাদ্য মাৰুণযোদহরণ। ইতি ভাগবতণ।। मकः शु भुद्धाशिविदिश्यः। म वुऋगामिकगाङ्गशङ्काछः । उउः পুভ্তি মৈথুনেন পূজা জাতা यथा। नदीदानथ वक्त्यामि माञ् श्रीनान् भुवानाराः। अकुशास्ति-পাদ कः পুৰাপতি ব্লাযত।। যথা नमज रिवारमी जरेशव मृगु छ विकाः । यहा ज् मृबङ खमा हिवर्षि गण পদ্যান্।।ন বৃদ্ধি মৃগ্মল্লোক স্তদা रिम्थन (यागठः। मकः भूव मरु-সু।ণি শতপঞ্চ মন্ত্ৰীৰন ।। ইতি মৎস্যপুরাণ।।। অস্য ভার্য্যা স্বায-ञ्जूब मन् कन्। भुम् जिः । जम् रवाष्ट्रम केन्या यथा। मुका ३ रेमबी २ प्या ७ मास्टिः ८ जुटिः ५ পूरिः ৬ কিবা ৭ উন্নতি:৮ বুদ্ধি: ১ মেধা ১০ বৃর্ত্তি: ১১ ভিতিক। ১২ হী: ১৩ ষাহা ১৪ মধা ১৫ সভী ১৬। তস্য

मक्क कना जी मूर्गा। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ॥

দক্ষরা স্ত্রী দুর্গা। ইতি হেমচন্দুঃ॥ দক্ষরাপতিঃ পু॰ চন্দুঃ। ইতি হেম-চন্দুঃ॥ শিবশ্চ॥

मक्त नाविर्धः भू॰ नवभयनुः। श्रियन् यनुष्ठात श्रव ज्ञाना ज्यवस्व जातः । मुख नामा हेन्दुः। भात्र स्त्रीति गर्जाम्या (स्वाः। मूर्य समाम्याः मधर्षयः। ज्यक त्र मीश्रियक पूज्-ज्या यनुभूवा ज्विग्रिष्ठ। हेन्डि श्रीजागवज्या। मका जी शृथिती। ইতি মেদিনী।।

मकाध्रधः मक्ट श्रुः मितः। ইতি

हनागूधः॥

हनागुथः॥ मकागाः भू॰ गकउः॥ गृथुः। ইতি निकाष्ठ कोमूम्या मूर्गाम वृत्तिः ॥ मिक्न जि मिक्रिया कुउः॥ नद्रवः ॥ भत्रक्रमानूवजी ॥ व्यात्रामः । **३ँडि (मिनि)।। ४ कः।। अशम**वऽ॰। ডাহিন ইতি ভাৰা। ইতি হেন-চন্দুঃ ॥ চতুর্ধা পত্যন্তর্গত পতি বিশেষঃ। তস্য লক্ষণ যথা। সক-न नायिका विषय अभ अङ्बान्-द्राभः। অস্যোদাহরণ यथा । অন্তস্থার স্কুরতি পদাদৃশা সহসু गक्ति हर केथ्य अब नित्व निरामि। हैज्याकनया नयनाचूकरह निभीना রোমাঞ্চিতেন বপুষা ছিত মচ্যু **छिन ॥ इंडि दममञ्जूदी ॥ # ॥** मिक्षिण्ड्डाशुमात्म (मार्या यथा। मकर्खाभुगाजा ह मर्गन्ह मक्षत्र-**মসু। ততো** ভবে**দ্বস্ত** ছীনো মান-ৰশ্চ ভতঃ শুচি:।। ইতি বুদ্ধবৈ-बर्ख পुक्षियं ७ ॥ 🗱 ॥ मिकन राउभुविगुरहा यथा। अकात्र मूह-ंत्रन् शुष्ट्वा मुविगः मङ्क् स्मामनः। भ्शीयाम किए। इस्ड उपस्य बिङ कीर्डाय । इंड्राविंड्य गूर्ताणः।।
पिक् गकानिका जी व्याप्तामिकः।
यथा। উष्कृ वास्त कृशाणः कर्तः
क्रमण्डल हिस्रमुखः उथायः मत्यः
गानी र्व्यक विज्ञणप्रच रहा पिक्तः।
कानिक । इंडि उज्जनातः॥
पिक्षण्डः वर पिक्षणमाः पिक्षणः।
हेडि वर्राकरणः॥
पिक्षण्डां जी शूर्वपिक्षणकाणः।
हेडि वर्राकरणः॥
पिक्षण्डः शूरु मात्रथिः। इंड्रावरः॥

**छन्ड विह्डिमान । ना यक्त भन्ने** ॥ शिक्ष मिक्षाः म ज्ञा। यथा। कार्खिको भूगियागान्छ ज्ञारम ज्ञादा महादायाविज् अपिका-मार कृष्का (उन मिक्गा। सः।। एकिनाया अनारन छन्। वृष्टि र्यथा ৷ যত্তো ছিফিণ্যা সার্ভ্ত পুত্রেণ চ कल्पन छ। कर्मिणः कनराजा क्टाडाव॰ (वनवित्ना विदुः ॥ कृत्रा कर्चाः उदेनान कुर्नः मम्याह मिक्नाः । তৎকম কলনাগ্নোভিবেদৈ ৰুক্ত बिह्॰ गत्न ॥ दर्खा कर्यानि भूनं ह ख कर यहि मकिशा। न मन्ता-ছুলেণেভ্যুম্চ বৈবেৰাজ্ঞানতো হুথবা।৷ মুহুর্ত্তে সনতীতে তু বিশুণা না ভবেদ্ধুর । এক রাত্রে ব্যতী ত ভু ভবেৎ শতগুণা চ সা। ত্রিরাত্তে তত্মশ গুণা সপ্তাহে বিগুণা ভড়ঃ৷ লানে লক্তণা প্রোক্তা বান্ধণা-নাঞ্চ বন্ধতে॥ সন্থৎসরে ব্য গ্রীতে-लूना जिलाहि खगा जरद्या कर्य তল্জনানানা সর্প্ণ নিয়ুল ভ (वर्। मह दुक्तश्राभशाती न कर्या-र्झा श्लुि नंतः ॥ मतिरानु निराधि যুক্তক তেন পাপেন পাতকী। ভদ্গৃহামাতি লক্ষীক শাপ দ্বা

जुराकन• ।। भि**उदा निव शृ**ङ्क् डि उल ड॰ मुक्त उर्भग । धद॰ मूतान्त ভংপূঞা॰ তদ্ভান্মগ্ন রাভ্তি॰ াঞাদাতানদীবতে দানি গৃথীতা চনবাচতে। উভৌভৌনরক যাত-শ্বির রজ্জু র্যথা ষ্টঃ ॥ নার্পযেন্**র**-মানশ্চেমাচিতারঞ্ছ কিণাণ। ভ-तिषुभवाभश्वी अञ्चीभाकः दुरेकः कृत ।। वर्व नक वरम बब यमन তেন ভাডিতঃ। ভতো ভবে**ং স हा शाला ग्राधियुक्ता महिम्कः ॥** পাত্যেৎ পুৰুষান্ সপ্ত পূৰ্ব। "চ मश्रहन्मनः । इंडि द्वादिवरखं পুক্তিখঙা। ৠ। না বিকা বিশে-ষঃ। যথা। যাগৌরব॰ ভয়॰ পুর जाछायः भूत्रं नायरक। नगृक्षकाना সক্তাপি সাজেয় । দক্ষিশা বুধিঃ।। 'তি বিষ্ণুপুরাণ টীকাষাণ স্বামী॥ मिकिनाशिः शु यक्ताशिविष्णयः। ইত্যমরং॥ দক্ষিণস্যা দিশো ংগ্নি র্দক্ষিণারিঃ। ইতি ভরতঃ॥ অস্য नामकात्रग॰ यथा। एखानू एकिगा স্বাদৌ তৃপ্লি ভূলা যতো হমরান্। ন্যসে দক্ষিণা ভাগত দক্ষিণাগ্নি স্ততো হভবৎ।।ইতি বরাহপুরাণ मिक्गावनः शुः भनगमर्गः। ইতি ं रहमहन्तुः॥

मुक्तिगाहातः शुः आहात्विष्णवः।
यथा । स्थ्यनित्राका ज्वा शकः
छात्वन शृक्षायर । म अव मिनाहात्रः नित्वा ज्वा निवाः याकर ॥
इन्छाहात्राजम जळः ॥
मिक्तार वा मिकानाः निना हेन्डासंत्री कायाः द्वायमुन्देः॥

জ্ঞিণাপথজনা পু

ত কাডিবিশেকঃ।

যথা। দক্ষিণাপথজনানঃ সর্বেনর

বরান্ধকাঃ। গুহাঃ পুলিন্দাঃ শবরাঃ
চুচুকা মৃদুপৈঃ সহ ॥ উভরাপথ
জনানঃ কাভিযিক্যানি ভানপি।

যৌন কাখোল গান্ধারাঃ কিরাতা।

বর্ধরৈঃ সহ।। এতে পাপ কৃত স্তাত
চরন্তি পৃথিবী নিমাণ। ইতি নহাভারতেংমাক্ষ্মাঃ।।

क्किगान्थः वि क्किगित्र्यः। यथा। अनाज्ञानः गयान्यकः क्कि-गान्थ (जाक्षनः। न कीवर भिज्कः व्योद कृष्ड ह भिज्ञा ज्वर।। हेडि डिथाकिड्न।।

क् किनायन की मूर्यामा किनागितिः । मा भावनाकि वहेत्र्यात्म्य जवि । है जामद्रः ॥ क्षा जब काजमा क्व वया। यामावत्व यमा जवि भूम्-

তিঃ শঠঃ কঠোরঃ গিশুন স্বভাবঃ। **ठ** तुझ राष्ट्राः कृषिमान इ॰ यूर्वाठा म-मारता मनुबः পুতाशी ।। ইতি (काष्टी पुरी नः ॥ अ। कर्क है न का डि:। नृथा। मृश कर्कते मःकाशी দ্বেতুদশ্লিশাঘনে। বিষুবভী ভূলা (मर्व (भानमस्या ख्यानदाः ॥ इंडि डिब्धानिखदुः ॥ 🕸 ॥ व्ययन চক্র॰ যথ।। চক্র॰সার॰ বিলিখ্য শূহ্পতি র্যনে সংক্রমঞ্চেৎ করো-তি ব্যায়কে তদৃক্ষণ নরণ ভ্য করণ म्लम्ल निष्धार। उर नम्हा-দার পূলে বিবিধ ভ্যকর শূল-भार्य १र्थ वा जः तोथा भाइक গভে বিবিধ মুনি নত বিদ্ধি বান ক্রনেণ।। ইতি জ্যোতিষ্ণ।। मिक्तिगाकः शृ॰ व्याधक वृ क मिक्त-गाक्रवृणिक मृगः। इंड्याबः॥ मिक्शार्टः जि मिक्शारयाग्रः। अङ्गा-न्य पक्षिया गर्राठ यः। ইতি **७३७:। ७९ शर्यशय:। मकि गेय:** 

२ मिक्गाः २। ইত্যমরः ॥
मिक्गावर्जकी जी वृण्ठिकालिः ।
हेजि द्राविनर्घण्डः ॥
मिक्गाणाशिकः शू॰ यमः । हेजि
स्मिन्नुः॥

দাডিম

मिकिनीयः वि मिकिनार्शः। ইত্যমরः॥
मिकिनिन व्य मिकिनिमि। ইতি
রাষমুস্টাঃ। मिकिनिভাगে। यथा।
मिकिनिन इति॰ काम्। गाविनम मिकिनियतः (यानम॰ इति तीमञ्ज॰
(उतम मिकिनि) १६काः॥ ইতি
मुकावार्थः।

मिक्कारामां शु॰ वहासमताघाडाए मिक्कार्य वृश्यक मृगः। उट्शर्याः यः। मिक्कार्यः २। ইত্যमतः !! मिक्काः जि मिक्कार्यः। ইত্যमतः !! मा मारा। ইতি কবিকল্ল स्माः।। मा पू क नि मारा। ইতি কবি-कल्लमः॥

मा व न्तो। ই कि कि विकल्लक्ष्यः॥
मा जी (भाषनः॥ मानः॥ (ह मः॥
उत्रेजानः॥ त्रक्षा। ই कि सिनिती॥
माकः भू॰ यज्ञमानः। ই जूऽभामित्कायः॥ माजा। ই कि मिक्बाउदकोमू
मुजामूभामिवृज्ञिः॥

माजकः १० मञ्चः। ই जिमामार्थ-कन्न उक्शा

माजिमः वि थना। हेि स्मिनिनी ॥

कन्नवृक्षितिस्मयः । उर्भर्गायः ।

कन्नकः २। हेड्यमग्रः॥ भिष्मुञ्जः ७

माजिमः ८ भर्बम्हे ६ साहमः ७

পি গ্রীরঃ ৭ ফল শাডবঃ ৮ শুক-বলভঃ ৯। ইভি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ রক্তপুষ্ণ:১০৷ইতি রত্নআলা ॥দাডি~ মীসার:১১ কডিম: ১২ ফলসাডবঃ >० मूर्कन्य यमस्याणि। त्रक्वीबः १८ मुक्नः ১৫ र खरी बकः ১৬ मधुरी बः ১৭ স্বচফল:১৮ রোচন:১৯ মণিবী-बः २० कन्द्रकाः २७ वृख्यनः २२ मूनो**लः** २० नील পदः २८। यम् গুণাঃ। মধুর স্লব্ধ। কবায়ঞ্জণ। কাস বাত কফ শুম পিক্ত বিনাশিত্ব। गु।हित्रः। मीभनत्रः। मधुत्रः। উक्षत्रः । भी उनदु॰। कि माञ्चुः । ইঙি রাজনির্ঘণ্টঃ।। হৃদ্যত্ত্ব । অনুত্র । স্থা-সাৰুচি ভৃষ্ণ নাশিত্বণ। কণ্ঠশো-ধনত্ব॰। কফ পিভাবিরোধিত্বগ ।। 🕸 ॥ দ্বিবিধ॰ তত্ত্ব বিজ্ঞেন॰ মধ্-রক্ষামুনেব চা মধুর ও তৎ ত্রিদো-ব্যু মন্নু: বাভ ক্ফাপহ্ণ ৷৷ ইতি রাজবল্লভ:।। তাপহারি মধুর॰ লঘু পথ্য । ইতি রাজনিঘট:।। **उ**ट् कन जिविष सामू साम्रः কেবলান্নক•। তত্ত্ব স্বাদু ত্রিদে যিয় ज्रुमा**र जुत नामन॰ ११ वृ**८ क्छे মুথরোগর তর্পণ শুক্রল লঘু। कवायानुबन भूष्टि निकः (भरहा-

বলাবহণ।। স্বাদ্ধন দীপন কচ্যণ কিঞ্চিৎ পিত্তকরণ লঘু। অনুস্ত পিত্তজনক মন্ত্ৰণ কফাপহণ।। ইতি ভাবপুকাশ:।।

দাডিমপুয়কঃ পু॰ রোহিতকবৃদ্ধ:।
রোহডাইতি খ্যাতঃ।ইত্যমরঃ॥
দাডিমপিয়ঃ পু৽ শুক্রপক্ষী।ইতি
শুদ্রজ্বলী॥

षां जिस चक्षणः भुः की द्रभक्षी। इंडि भक्तानुका॥

काडिनीमाद्रः भू काडिमः। इंडि द्राजनिर्घणः॥

षािज्ञः श्रू॰ पािज्ञः। ইতি विका-श्रुष्णवः॥

पाठा जी पछिति (भराः। उर्श्वरायः। ए॰ ध्रे १ क्युः १ इंडि (रूमहन्मुः। भूष्ना॥ मम्हः। इंडि मदार्थ-कन्नु उक्तः॥

काष्टिका जो मूथावयवविरम्पः। काष्टि इंडि ভाषा। उर्भग्रीयः। कर्धुका २। इंडि (इस्टन्दुः॥

षाञ्जाबिनिकः वि षर्कः। ইঙি (रुमहन्मुः॥

দাত বি ছিম। ইত্যমর:।।

শাতা বি দানকর্তা। তৎপর্য্যায়:।

শিকাৰ:২ মুচির: ৩। ইতি বিকাপ্ত

শেবঃ 11

माज्र इं शू॰ खी शिक्ष विष्णयः पाउँक इं जि जाया। जर्श या गांग विष्ण विष

माज्योहः शुः जी माज्यहः। ইতি मदत्रवादनी॥

मावः क्ली अद्वित्मयः। मा देखि काल्या देखिए जावा। देखि ज्यवः ॥ जर्भागः। निविज्ञः । देखान्यः। ॥ श्लीकः ०। देखि मस्यवावनी॥ माजी जी मानकजी। देखि व्याक्रयाः। माजः पुः माजा। देखि निकालको-मुम्यामूगामिवृद्धिः॥

माधिक॰ बि मधिम॰क्ठवस्त्र। ইতি (इमहन्दुः॥

मान् क आर्जात्। श्रृकत्रग इंडि यावट्॥ हिमि। इंडि कित्कन्नक्रमः॥ मानः क्री शक्रममः॥ भाननः॥ हमनः॥ भूषिः। इंडि व्यक्ति॥

व्कत्वाहेत के हैं व सपू। यग्रस्थाः। कक्द्रः। मीभनद्रः। कक् हर्षि (सर ना निवृक्ष। ই डि ब्राइवल छः॥ (५ व-वु।कागः ति मन्त्रुतानक पुव्यसाहन । ভংপর্যায়ঃ। ভ্যাগঃ ২ বি**হাপিত**॰ ৩ উংন্ত্ৰি॰ ৪ বিস্ত্ৰিণ ৫ বিশা-ণন ৬ বি তর্ণ ৭ স্পর্মন ৮ পুতি-প্রাদেশ ৯ পুরদেশন ১০ নির্বপণ ১১ অপবর্জন ১২ অ হ তিঃ ১৩। हेड(भद्रः॥ मायः ১८। ইভি विका-**'अरमायः ॥ शुकानः अद कहनः ३५** विभुवन ३१ हिन्ह ३५ व इने ३३ উৎসর্গ: ২০ অভিনর্জন•২১ স্পর্ল: २२ विमर्गः २० क्षानाः २८ शुष्ट्रणनः २०। इंजि मद्द्रज्ञावनी ॥ 🕸 ॥ जम्र वक्षनारि यथा। वर्थाना मुनिएड शाब मुख्या शुक्तिशाहन । हान নি হ্যভিনির্দিষ্ট ব্যাখ্যান তস্য वक्ष्याः राष्ट्रीयान सङ्गाभारक দুব্য ত্যাগে: দানমিতি॥ৠ।দাতা शुंडिगुरी जाठ मुकारमंग्र वर्षायुक् । (र मकालो ह मानाना सकात्र-ভানি ৰঙ্িদুঃ। ননসা পাত্ৰ মুদ্দি শ্য ভূমৌ তোষ বিনি:ক্ষিপেথ বিদ্যতে সাগরস্যান্তো দানস্যান্তো ন বিদ্যু-তে।। পরোক্ষে কল্লিড॰ দান॰ পা-

ত্রাভাবে কথ ভবে । গোরজে ভ্য ख्या प्राट छम् जात्व र्मा वक्षुव् ॥ यमा जून मझनाः महाभव मयिक वाक्षवाः प्रमार्थकां जिल्लान उम् ভाবে २ भ् मु निः कि । भ मानु শুদ্ধে সমে দেশে গোম্যেনোগলে-গিতে। বসিত্বা বসন শুক দান मन्त्राट जमकिनः॥ 🕸 ॥ वकाःगाः दम्थमं हाट दम्बनाइ शा**म**जी। শত गर्मु फ्रांट गर्मु वर् शाबनः।। गुामाम क्रमि गुाम मर्थि-ভ্যঃ किन्न मीयट । ইहामूक्ता दि-ভবঃ কদা ক্স্য ভবিষ্যতি ॥ অপ-রাবাধ নক্লেশ • পুযন্তেনাজিত • ধন • चन्नः वा विश्वनः वाशि (एय गिज्रः ভिधीया ॥ 🏶 ॥ विक्रयरेक्षव मान-क्ष न (नशाः भू तिह्दः। मृत्राः भू-वाक महत्र मांचात्रित ह याज्ञयर ॥ আপৎকালে চ কর্ত্তব্য দান বি-ক্রয এবচ। অন্যথা ন পুরন্তেত ইতি नाजार्थ निक्तयः ॥ क्षः॥ यख्वा मानः তপোজাপ্য শুদ্ধিক সুরপ্রন । যর **লাযা় কৃত সর্ব কোটি কোটি ভ**ণ-ম্ভবেৎ।। শিবস্য বিষ্ণো রশ্নেষ্ঠ স-विश्वी पछ नक्षा भावगाम भिन्। -যত্ৰ ভত্তীৰ্থ- যোজন ছয়-।। ভত্ত দা-

মঞ্চ হোমশ্চ কোটি কোটি গুণস্তু-(वर् ॥ यस ब मूर्वा 5 ॰ मूना ॰ यसिन् कालिनि वा भूनः। मानारशे (मन-कालो (डो म्याडा॰ (मुक्ती न हान्य-থা।। 🕸।। পাত্রেভ্যো দীয়তে নিভ্য बनलकः भुर्याञ्जनः। (कवनः धर्मतु-क्ता यक्तर्यनानः भूषकार्छ॥ मह्मू **७**19 ड॰ मान॰ ज्रावन्त छ॰ युवामियु। कर्पम्।कानिकरिक्व उथा मनुद्रता षित्रु।। #शा वाहाद॰ रेस्थुन॰ निम्।• नक्षा काल विव र्बायटा कर्य हाथाय-नरेक्षय उथा मान भुजिगुरहो ॥ 🕸 ॥ " তানসেন তু যক্তেন দানেন তপসা **তথা। नि**त्रस्य कवा (हफ्टाजू व् क्वि॰ वि- न मात्नन उপना उथा। नित्रय दर्गत्या র্জন ক্র রাজ্য শ্রিযা সুত্রণা সাল্পিকে-न जू राउद्धेन मार्यन जनमा उथा। (स्वराह्म धुव वारमा (स्वनागृद्ध) भिवह ॥ # ॥ भन्ना यम्हीयर**ङ** हान॰ **७**रने छ कन म् छ । मह्मू खनमाङ्य याहिट उनक्षंक ।। आभा नदा श्रुनाञाद्र॰ मानकाल नित्रधक । দত্বা সম্ভপ্যতে যম্ভ ভর্মাত্ বুলি-ষাতক ।। যোহসড্যঃ পুতিগৃহাপি

সংক্ষণ কৃত্বা পরাণ স্তার্যতে হি সঃ ॥ 🗱 ॥ यम्। यम्हीयत्त्र वज्ज मनकात्रा-पि किक्षन! **তেবा॰ দৈবত মু**हार्य कृत्वा (भाका भ्कान। छेट मृष्ठा मृत म জেन পুতिनामा निर्वत्रय्था (या-টিভঃ পুভিগৃহাভি দদ্যাদটিভ নেব বা। ভাবুভৌ গছভ: স্বৰ্গণ নরকংক विशर्य ।। इंडि मूक्ति उद्ग ॥ 🕸 ॥ দান ভিবিখ সাজিক রাজস তাম-সঞ্চ। সাজিক• যথা। দাতব্য মিতি य मान॰ मीयरङ नूशकात्रिरा। सरम কুলে চ পাৰেচ ভদান সাত্ত্বিক म् उ॰ ॥ त्राबन॰ यथा । यबु भुकुर-लकात्रार्थः कलमू फिला वा भूनः। দীযতে চ পরিক্লিষ্ট•। তদান• রাজ-न॰ विष्टुः॥ जानन॰ यथा। जाहन काल यमान मशाखन्यक मीयाउ অসংক্তমবজ্ঞাত॰ ভৰামদ মূদা-হাত ।। ইতি নিভগবদ্ধীতা।। 🛊 ॥ रुडाख॰ गा समझार सि मुकारि কাঞ্চন•। পরে।ক্ষ• হরতে যস্তু প \*ग्राम् । न• भ्रवहाजि।। न मगहाजि देव-স্বৰ্গ-দাভারে। যত্র ভাগিন:। অনেন কর্মণা যুক্তাঃ পচ্যম্ভে নরকে হ্রমাঃ ।। ইতি মৎস্যপুরাণ ॥ গ্লা নিত্য-र्नुनः मण्डाः भुषष्ट् । यात्रानः । रेनिमिलिकारि (अरहन उह्रजूर्विषः

যথা। নিভ্যুণ নৈমিত্তিক কাম্যুণ ত্রিবিধ দান মৃচ্যতে। চতুর্থ বিম न श्लाक नर्ननानान्या ज्या অহৰ্যহনি যথ কিঞ্চিদীয়তে নুগ-কারিণে। অনুদ্দিশ্য ফলন্তৎস্যা দ্রাহ্মণায় চ নিত্যকশা ইন্তুপাপো-পশাস্ত্যর্থ॰ দীয়তে বিদুষা॰ করে। रेनिमिडिक जमूफि है मोन मिछ त्रन्डम्।। व्यथ्डा विकरियर्ग्य सर्गा-र्थ॰ य८ भूमीयत्छ। मानस्ट कामा माथाङ मृविভि धर्मिष्ठिष्ठेकः ॥ यमी अब भी गमार्थ वुकावि न् भू দীষতে। চেন্তুসা ধর্মাগুক্তেন দান॰ ভিদ্মল শিব।।ইতি কুর্মপুরাণ **দানপতিঃ পু∙ সভতদাতা।ইতি**জটা- ∥ ় ধর:॥ অক্রঃ। ইতি জীভাগবতণা कानवः भू॰ अभूवः। ই छ। भवः॥ भ मक्कन्या मनूगर्छ कन्या आक्राङ একবণ্ডি সংখ্যক স্তেম্বন্তাদল পুধা ना (उषाः नामानि यथा। विमूर्का > माचतः २ व्यतिष्ठः ७ रुगगीतः ८ वि-ভाবসুः ৫ অযোমুথঃ ৬ मङ्गिताः ० म जानुः ৮ किनाः २ व्यक्गः २० भूरनामा ১১ व्वभर्बा ১२ এक हकः ১০ তাপন: ১৪ ध्रमु (कमः ১৫ विक-পাক্ষঃ ১৬ বিপুচিত্তিঃ ১৭ দুর্জ্জ্যঃ

अने हैं कि क्या जायह ।।

हानवादिः भू रेवणाः। हें कि भूताणः।।

हानवादिः भू रहवा। हें का अतः॥

हानजीतः कि हां का कि र्यापः।व हानजीतः कि हां का कि रूपांगः।व हानजीतः कि हां का कि रूपांगः।व हानजीतः कि वह भूहः। हें का अतः॥ हानीयः कि अस्भूहान । हें कि मूक्ष्र (वादः॥

मानुः जि माजा॥ विकासः। ইতি

गिमिनी ॥ भर्मा॥ वायुः। ইতি

ग॰किश्वमात्र উपामिवृद्धिः॥

मासः वि जभःह्मभमशः॥ मनिजः।

हेज्यतः॥ माजा। ইতি म॰किशः

नात्र উपामिवृद्धिः॥ ममनकवृद्धः

भिक्षित्र वृत्य চ পू॰। ইতি রাজ
निर्यग्रेः॥

मासिः की जभः द्भिण हिक्कु छ। छ ८ भर्य । प्रमाश्च प्रमाश्च । हिल्ला प्रमाश्च । इंडि ज्ञान । इंडि ज्ञान । इंडि ज्ञान । इंडि ज्ञान । प्रमाश्च । इंडि विपारितामः ॥ मासिज मुन्य । इंडि नयनानमः ॥ मासिज इंडि भार्य । हिल्ला हिल्ला । हिल्ला हिल्ला । इंडि का विष् । इंडि का विष् निष् भूकु (स्राहर स्रो॥ मान जी जी यर्जक मिन् वर् पुण्र यूक अपनक गाया वष्ठा छ छ । माउन इंडि मिना इंडि ह जाया। छ ८ शर्यायः। मनरान २ । इंडि मजः ॥ त्रक्तुः। इंडिमासाम त्रमर्मना ८।। मान शर्व जी मन मन छन्नि थिः। मा दिज मूक हजू मनी । इंडि छिथा मिन ज्वः।।

पामनी खी शण्यक्षनत्रक्षः। ७८-शर्यायः। शण्यक्षः १। इ उप्ततः॥ पामनिश्वः क्षी कत्मानिश्वत्यः। इठि (इमहम्पुः॥ पामा खी पाम। इठि उत्रजः॥ पामाक्षनः क्षी व्यथात्मः शामवक्षन-त्रक्षः। इठि (इमहम्पुः॥

দ্যোঞ্চল ক্লী একশফাল্লুবন্ধঃ। অশ্বাদি পাদ বন্ধন রজ্জুং। ইতি হারাবলী।

मारमामतः शृ॰ विकृश हे उप्रमतः ॥

ज्ञाह विष्णाः। हे जि रहम हन्तुः॥

मास्रिकः शृ॰ की वकशकी। है जि

त्राज्ञ निर्यक्षः॥ मं सुयु कि कि ॥

माय थ उ मान। हे जि कि विकल्ल क्रमः॥

रायः शृ॰ (यो ज्ञामि (मय प्रन॰।

क्रमामान काल कामा के मिर जातु-

ততিকাদৌ ব্ৰাহ্মণাদিভাক বন্দু-

वा भीवा छ । हेि जब ।। छ भारति । हत्यः २। हेडा मद्रः ।। मान्छे जावाः ।। विज्जवाः शिक्ष्वाः । मानः। हेि मिन्नी ।। हानः।। थेखनः। हेि मद्रवाः वनी।। नयः। हेडा बर्यानः।।

हायकः वि हाङा। यथा। इञातिगिङि हायक इङि ङक्तित्रमाम्डिमिन्नः॥ हायवक्तः भू॰ ज्वाङा। इङि सद्गत्रङ्गा-वनी॥

" हारा जारा: शू॰ अविकाराद्य अधिक ধনবি ভাগঃ। পূর্বদুব্যস্বামিসমৃদ্ধা-धीन॰ उৎयाम्। भन्नरम यब मुत्र चुः ७व निकाला मायमय छम्। विज्ञागः। अकाममग्राठीमाव जू হিরণ্যাদাবুৎ পদ্ধশ্য স্বত্ত্ব স্থাবিনি-গমনা পুমাণাভাবেন বৈশেবিক व्यवशासानर्रं उपा १वर्गि इन् **ওটিকাপাতাদিনা ব্যঞ্জন•। অথ**বা বিশেবেণ ভন্তর স্বত্ত্তাপনমা : यब है कि॰ मात्री गवामिक॰ वङ् সাধারণ তত্রাপি ভত্তৎকাল বি-**्भिय वर्ग (मार्ग कालन अवु॰** वाकारङ ॥ 🗱 ॥ व्यथ मायाधिकात करम भू " धनाधिकात्रिनः। जनारिन म्डमान जित्रमणुबम्याविकातः ।

ভদভাবে পৌত্রস্য। ভদভাবে পুণৌত্ৰস্য। মৃত পিত্ক পৌত মৃত পিতাসহক পুপৌ রফোঃ পুরে**ণ সহ** ∦ তুল্যাধিকারঃ। এদামভাবে পত্নী ধনাধিকারিণী। ভরাব॰ বিশেষঃ गद्यो धन॰ जुक्षीठ এव नजू जम्य मानाध्यन विक्यान कर्नु गर्रा किस ভ दु (तोष्ट्र (पश्चिकियार्थः मानामि-কলপ্যনুম**ত**া বৰ্ত্তনাশক্তৌ আধমন-ম্প্রন্তি তদশক্তৌ বিক্রব্ণম্পি । जब्रीक्रिं हिक कियार्थ मथानू ক্লণ ভৰ্ সপিও ভৰ্ ওক ভৰ্ দৌহিত্র সন্তান ভর্ভাগিনেয ভর্ भाकुलाज्या मन्द्रा । এতে दा मजार স্বপিতৃ কলে দদ্যাথ। পদ্ধভাবে দুহিতা। ভ্রাপি পুথম স্মারী। ष्यवायः वित्नवः कन्ता सा अश्विकात्रा পশ্চাৎ পরিণীতা সতী অবিদ্যমান পুত্রায়দিমৃতা তদাত**্রপিতৃদায়ে স**্ পুত্ৰায়াঃ সম্ভাবিত পুত্ৰায়া ভণিন্যা-স্থন্যবিকারঃ। স্ব্যার্য্যভাবে চোঢ়া-याः भुबवज्याः मञ्जाविजभुबायाम्ह বে অন্যাধিকারিণী। এত্তযোরভাবে लि वक्ष्य। शुक्रहोन विश्ववरण। नाशि-कातः। नर्वपृश्विचाद पोश्वि

न্যাধিকার:। তদভাবে পিতুর্ধি-কার:। ভদভাবে সাতুরধিকার: .। তদভাবে সোদরস্যাধিকারঃ।সো-দরাভাবে সম্বাতীয় বৈমাত্রেযাধি-कातः। उरजाय (भारत जुाक्भू-वागामधिकावः । मन्मर्ग्रमः मर्थि সোদর ভাতৃপুত্রেরু সংসর্গি ভ্রাতৃপু-ূ ত্রস্যাধিকারঃ। এবং সংস্গ্রসংস্থি বৈমাত্রেযভ্রাতৃ পুরে সতি সংসর্মি বৈমাৰেষ ভ্ৰাতৃ পুত্ৰস্যাধিকার: 1 যদা ব্ৰসংসগী সোদরভাতৃপুত্র: সং नगी **हात्मारत्र**जुञ्जूब छरा छः যোয়ু গপদ ধিকারঃ। यদা পুনঃ সো-দর বৈমাৰেয় ভাতৃপুত্রো সংসর্গি-ণাৰসংস্থিলো বা ভদা উভয়থৈৰ সোদর ভাত পুত্রস্যাবিকার:॥ ভুশ-ভূপুরাভাবে ভাূত্পৌরস্যাধিকার: । অত্রাপি সোদর বৈমাত্রেয ভ্রাতৃ পুত্রবৎ ক্রমো বোধ্য:। ভ্রাতৃপৌ-बाजारव शिक्राहिबनाधिकातः। অত্র সোদর ভগিনীপুত্র বৈমাত্তেখ ভिगिनी भूबरया खन । विकादः। शि-তুদৌ হিত্রা,ভাবে পিতামহস্যাধি-কার:। পিতামহাভাবে পিতা মহা অধিকার:। পিতামহ্যভাবে পিতৃ:্ वामाधिकातः। छर्जाद निज्वा

পুৰস্যাধিকারঃ। ভদভাবে পিতৃব্য- लोबम्याधिकाइः। शिज्वप्रलो **ভাবে গিতামহদৌহিদ্র** স্যাধিকার: । পিতাম্ছদৌহিব্রাভাবে পিতৃব্য-(मोहिबम्याधिकातः। उन् ভाবে পु-**शिडामहत्र**राधिकायः । उपचारि পুপিভামহ্যা অধিকার:। তভঃ পিতামহ ভাতাধিকারী। ভদভাবে পিতামহ ভাতৃপুত:। ভদভাবে পিতান্হ ভূ৷ত্পৌর: 1 ততঃ পুপি जानहान् हिट्टा १ विकाती । उठः পিত।মহভাত্দৌছিত্রে। ধিকারী। छम्ভार्य याजायहः । छम्ভार्य माञ्चः। उर जार्व माञ्च मोयः। छर्नाव माजूनभूवः । छर्नाव মাতৃলপৌত্র:। এষামভাবে সঙ্গল্য: । সঙ্গলেপেপি দ্বিবিধ: অধন্তন উদ্ধৃ-তনক্ষ ভত্তপুপৌত্ৰ পুত্ৰা বধযোহধ-खनाखयः वृष्वभुभिजामशामि वय উक्षृ उना उडाम्यामावध्यनानाः म-क्लानाः क्याधिकावः। (उदा-मजात्व के क्व जनानां कत्म गाधिकातः । এवश्विथ जञ्जनाजात् जमारनाम-काः। उरजात जाहार्युः। उर-ो्र्वि मिष्ठः छम्ভावि महर्विमाः খ্যায় বুক্ষচারিণ:। ভদভাবে গ্রাম

হাঃ সগোত্রাঃ। তদভাবে তথা-विधाः जनानभूवताः । উक भर्या-खाञाव **उन्गामहा देख विमादा**-**मिछ** पयुक्ता वृाक्षणा धनाशिकादिणः। এতে যান্ভাবে ব্ৰাহ্মণ খনবৰ্জ গা-काश्विकात्री। व्याञ्चन धनमा जू खन-ব্দুাক্ষণপর্য্যভাতাবে ব্রাক্ষণান্তরস্য গ্রামান্তর্ছস্যাপি অধিকার: ৷ বান-পুছ যতি বুক্ষচারিণা প্ন ধর্ম जुः वृ निह्या हार्या गृहीयः। उन-ভাবে চৈকৰবাসী একাশুনী বা গৃ-ঁ হ্লীযাৎ। বুক্ষচারী চ ছিবিধঃ নৈষ্ঠিক **উপস**र्वाणक छव रेनिष्ठक धरन **চार्य्यत्राधिकादः । উপস্বর্धाণ**স্য তু ধন পিরাদিভিরেব গাুছে। ইভি शुः धनाधिकात्रिगः ॥ 🗱 ॥ व्यथ जी ধনাধিকার ক্রমঃ। তত্র স্বমারীধনে পূথম পোদরভাতাধিকারী। ভদ ভাবে মাক্তা ভদভাবে গিতা। বর-**म्ख धानवात्राव्धकात्री ॥ # ॥** অথোঢান্ত্রী ধনাধিকারক্রম নির্বপ-ণাৰ্থ॰ ভ**দ্ধ**ন॰ নিৰূপ্যতে। বিবাহ कालः नज्ञ॰ योजूकः धनः ১ ভর্ নীয়মানা পিতৃ মাতৃ সলাৎ যদ্দন **লভতে তৎ ২ ভত্ত্**দ**র**• ৩ ভ্রাতৃ দৰ ৪ পিতৃদৰ ৫ মাতৃদৰ ৬

া শাবভা

किजीव विवाहार्थिना পूर्विष्टिय भा-ब्रिएश्विक यम्स्ड छ८ १ समा-हामन ৮ व्यवहार २ श्रांति क-ক্ষিক্স শিল্পি স্বভর্ষারেণান্যেবাণ गृशामि निद्रामनामूरका विषया श्ताराज्या यह्नन वहार उट् २० शूबर मख॰ ১১ माजूनामिमख॰ ১২ विवा-हार भव्रजः भिवाहिना ভर्जाहिना क यम्दर २०। छर्न्छ शावज्ञानि-विकानात्मर**्या॰ धनाना॰ जी माना रिक॰ कर्नु मर्शन्ता #11 जरहरू जी थत निक्लिए उन्छा॰** म्डाया॰ **उद्य**नाथिकाद्गा निक्न भारत । उड (योजुक धरन क्यार्यताः भुश्यमिश-ৰুনিঃ। ভদভাবে বাণুৱাবাঃ ভদ-ভাবে চোঢায়া: পুত্ৰবভ্যা: সম্ভাবি-छ পুबायाण यूगणमधिकातः। उन-ভাবে व क्षा विष्वया स्वा स्वा वस्य कात्रः । তত্র স্মারী বাশ্ব। জাতাবিকারা-নম্বর• পরিণীতা সত্রী পশ্চাছন্ধ্যা-(ज्नावष्डा भूजमन्द्रभारेम् उव विषवा ভ্তা বা ভদা তদ্যা• মৃত্যাযা• ভ<্ স•ক্রান্ত মাতৃধনে ভন্ডগিন্যো: পুত্র-বতী সম্ভাবিত পুত্রযোর ভাবে বন্ধ্যা विषवयात्रभाष्ट्रकातः । मर्बनुहिज-ভাবে প্রস্যাধিকার:। পুরাভাবে

(मोहित्बा १ विकाती (मेरिबाकोर) ्लोबः। उर्जाद गुलोबः। उर ভাবে সগন্ধী পুৰঃ। তদভাবে সগন্ধী পৌত্র:। ভদ ভাবে সপদ্বীপুপৌত্র: **এ** उर्गर्श जात्यु क्रियार्थ ग দ্বৰ্ণাজাপভ্যাখ্যবিবাহ পঞ্কলন্ধ যৌতুকধনে ভর্ত্তিকার:। ভর্ত্তর-ভাবে ভাুতু:। তদভাবে মাতাধি-কারিণী। ভদভাবে পিতা। সপত্নী পুপৌর পর্য্যন্তাভাবে আসুর রাক্ষস रिममाहाथा विवाह जिक सम योजू क धरन जू शुथमः माजूत्रधिकादः। তদভাবে পিতুঃ।পিতুরভাবে ভ হু : ॥ # ॥ व्यथार्थाजूक जी धनाधिकात्रि কনং। ভত্ত বিবাহ পূর্বাপর কাল **পিতৃरंख (योजूका छा। मिछित्रिक खी** ধনে কন্যা পুত্রযো যুগাপদধিকারঃ । তথোরেকতরাভাবে অন্যতরস্য তত্মন• তথোর্ঘধোরভাবে উঢ়াবাঃ পুৰ্বত্যাঃ সম্ভাবিতপুৰাযান্চ তু-**न**ऽवम्थिकातः। अञ्चारत्रक् खत्रा-ভাবে অন্যস্যা অধিকার:। এভ-যে। র্ঘারভাবে পৌত্র:। পৌত্রা-ভাবে দৌহিত্র:। ভদভাবেপুপৌত্র: । তদভাবে সপত্নীপুত্র: তদভাবে मभन्नीरभोजः । उपचारत मभन्नी

পুপৌর্ক্রৌধিকারী। ততো বন্ধ্যা\বিধ-वा ह जून । वरिकातिया। वर्णेक् রেকতরাভাবে চান্যতরস্যা:। বন্ধ্যা **পু**ৰিখবাপৰ্য্যন্তাভাবে যৌতুক বং ব্ৰাু/ नामि विवाह शक्क विवाहिजाया খনে ভৰ্ ভ্ৰাতৃ মাতৃ পিতৃণা• কম-শে। হধিকারঃ। বিবাহ কালে তং পূর্বাপর কালে বা জীয়ৈ যন্ধন পি-ত্রা দত্ত॰ তত্র খনে পুথন॰ কুমার্য্যঃ। তদনন্তর মূদযোঃ পুত্রবর্তী স ম্রাবিত शूबर्लीः । তদनञ्जनः वन्ना विधवर्षाः শ্চাধিকারঃ। সর্বদুহিত্রভাবে পুত্রা-(म यो जुक धना उत्र व< करमणा धिन</p> কারঃ। ততো বান্ধাদি বিবাহ পঞ্চ-ক লব্ধ যৌতুক খনেষু পিতৃ পর্যন্তা-ভাবে আসুরাদি বিবাহ ত্রিক লব্ধ যৌতুক ধনেষু চ ভর্ত পর্য্যাভাবে দেবরাদে রবিকারঃ। তদভাবে দে-বর জুত্ খশুরযোঃ সূতানা যুগপ-দধিকারঃ। এতেষা মভাবে অসপি-ণ্ডোপি ভগিনী পুৰুঃ। তদভাবে ভর্ত্ ভাগিনেয়ঃ। তদভাবে ভ্রাত্ সুত। उरजात जानाज। जामाञ् भर्य खांळात मिश्रामचर्या कर्मण येणुत ख्रुक् चनुतारीनाः मिश्रानामि कातः। मिल्राजात् मकुन्ताः म-

माताहकाः मरगाजाः मर्गान भूव-त्राण्ड शुः श्नव क्या भाषिकातिनः। এতং সৰ্বাভাবে ব্ৰাহ্মণী খনে ৰুগা-म्भावियाम इथिकाइः। क्वियानि ধনেরাজ্ঞ এবাধিকারঃ৷ইতি দ্রীধনা-ধিকারিণঃ॥ 🟶 ॥ অথ বিভাগানধি-কারিণঃ। শ্লীব পতিত জাত্যন্ধ জন্ম-বধির উমাত্ত জড মূক পঙ্গু পিতৃ বিট্-নিরিন্দুযৌপপাতিকাচিকিৎস রো গার্ত্তাঃ। পতিত বর্জ•এতে ভরণীযাঃ। পতিত পুত্ৰবৰ্জ মেতেষা পুত্ৰা যদি निर्फायाः जमा नागिनः। क्लीवामी-ना॰ অপুত্র। ভার্য্যাঃ यिन সদৃত্তা छन। ভর্তব্যাঃ। এষা॰ দুহিতরো বিবাহ পर्यप्रसः ভরণীयाः॥ ৠ। अथाविकाङ्गा বিভাগ্যধন নিৰ্ণয়ঃ ৷ তত্ৰপৈতামহ• পিত্রজিত সাধারণ ধনোপবাতে-নাৰ্জ্জিতঞ্চেতি ত্ৰিবিধণ ধনণ সৰৈরেব বিভাজ্যণ কিন্তু তত্ৰাৰ্জকস্যদ্বাবংশৌ অন্যে মেকৈকা শঃ সাধারণ ধনা-न्भवार्जन स्मोर्ग्रभुष्ट धन वर সাধারণধনাৰীপাখাতেনার্জিত বিদ্যা थनः . शिज् शिज्वापि शुनापापिना লন্ধ: খন: ভাৰ্য্য পুষ্ঠি কালে লন্ধ: ধন নিত্তা পাুগু ধন আর্তিজ্য পৰা পতান্যবিভাজ্যানি। বিদ্যা

ধনস্ত সম বিদ্যাধিক বিদ্যেভ্যোদেয় এব॰ যদি বিদ্যানভ্যস্যতো ভ্ৰাতুং কুটুম্ব মপরো ভ্রাতা মধন ব্যব শরী-রাগাসাভ্যাণ বিভর্ত্তি তদা তদ্বিদ্যা-র্জিত খনে মূর্থ স্যাপি অপর ভ্রাতু-রংশিত্বণ স্বকুলাংপিত্রাদিতো লব্ধ-বিদ্যাৰ্জিত খনে তু সংৰ্বাণ মূৰ্থা ॥ मृथीना मः मिञ्च। विम्रा धनः यथा। यि ভবাन् ভদুনুপন্যস্তি তদা ভব-তে এতাবদ্ধন দাতব্য ইতি পণিত তত্র ভদ্যোপন্যাসেন যৎপণিত ধন লব্ধ তং ৷ অধ্যাপিত শিষ্যান্বল্লব্ধ ' । ঋত্বিক্ কর্মা করণেন যজমানা দ্বিক-शामिकशः लक्षः धनः । यथकिकिर বিদ্যাযাঃ পুশে কৃতে তত্ৰ সম্যুগুত্ত-রেণ পরিভোষাদপণিত মেব কিঞ্চি-স্ধন দদাতি তং। যে ুহা বিন্ শা-खार्थ मन मः भग मंगनगठि उरैम সুবর্ণানিক মিদ দাস্যামীত্যুক্ত छम्। म॰ गय भभनीय यहातः। वाहि-**नाः कु विविधा निविध्य अस्मारः निर्धाय** করণার্থ মাগতযোঃ সম্যাভ্যাৰপণে-न यल्लकः। भाजाित्यु मञ्जानः शुका-भा। পुं जिगुशामिना यहासः। उथा ত্যর্থ বাদাদ্বাদ বিচারে বা পর নির্জি-छ। य**लका। अकि मिन् (म**रिय वस्ति वस्-

नाः द्वी ऋगानाः नमूत्थात यन शुक्ष र्जिपमधीला यहासः । চিত্রকর সুবর্ণ-কারাদিভিঃ শিল্লিভি মূল্যাদধিক यल्लकः। দূ্যতেনাপি পর • নির্জিত্য य-ল্লব্ধ । এতানি অবিভাজ্যনি ॥ 🗱 🏗 कभारख्यागळ पुरा मत्यन ऋळ-যদি দাযাদামা মনুমত্যা তেষা মেক-তরেণ সাধারণ ধনানুপঘাতেন ইত্ র ব্যাপার নৈরপেক্ষেণ চধন মুদ্ধরতি তদা তদ্ধন মুদ্ধার করু রেব। ভূমিস্ত যদি অন্যৈ হৃতা একেনোজ্তা তদা-স তুরীযা•শ•গৃহীত্বা অবশিষ্ট ভাগ ত্রয়ণ অন্যৈঃ সহ সমণ বিভরেৎ। অ্য নিঃ ব্ভক্তেনাবিভক্তেন বা माधात्रग धनान् श्वाराजनाशत वता-পার নৈরপেক্ষেণ্যেন যদক্ষিত ত-দৰ্জক সৈ্যব নতু তদ্বিভাজ্য মিতরৈঃ । किन्छ विम्रानिक धननाव्विविश्नयः সচপুাগে বাভিহিতঃ৷ অঙ্গবোদ্ধিত वज्रमलकातः अशामि वाहनः लङ्क-কাদি কূপবাপ্যাদিগত পিত্রাদি স মৃদ্ধিজল• দাসী ব্যতিরিক্তা দ্রী গো-পূচারঃরথ্যা এতানি নান্যধনবদ্বিভা-জ্যানি কিন্তু স্বব্যাপারেণ তদ্গৃহী তব্য এব স্বস্থ ব্যাপারোপযুক্ত শ্ব নভোজন পাত্রাদি ন বিভজনীয় যেন

**मायञा**े . प्रगृशिक छउरिमात। शुक्र कछ मेर्थिन / গ্রাছ॰ কিন্তু পণ্ডিতেন তদন্তর্গত ধীং न जून। मुवाउतः म्नारमव वा मन् গৃহীতব্য এবং শিল্পিনা শিল্পোপ-ফুক দ্ব্যা নাশিলিনা ত্রাপিপুত্তক বন্ধ্রহা। পিতরি জীৰতি যদিন্ বা-প্রৌযেনগৃহোদ্যানাদিক কৃত তস্যুন বিভাগঃযদ্যপরেণাপি বাস্তৃন্তরে তথা কৃত ।। 🕸 ।। অথ সংস্প্ট বিভাগ ক-गार्थ गाप्ति मः मर्ला निक्राउ । পিতৃ ভ্রাতৃ পিতৃব্যানা মন্যতরেণ সহ বিভক্তঃ সন্ পুন রন্যোন্যেছ্যা পূৰ্কৃত বিভাগ মপেক্ষ্য যত্ত্ব ধন তমমধন যমম তত্তবাপীতি ব্যব-স্থা একগৃহি ৰূপত্যানস্থান সং সর্গঃ।। অথ সংসৃষ্ট বিভাগঃ। অত जुाठ्गाः ज्ञात्रयाः जुन् मम्बिनाः वा मः मर्ग्यमः मर्गिगाः मरश्य मः मर्गि ণামেব পূথম • মৃত স • সর্গি ধনে • ধি-কারঃ। তদভাবে তথাবিধা **স**•সর্গি-ণামিতিক্রমঃ।। #।। এব॰ यদা পিতা পুত্রান্ বিভন্ত্য যথা শাল্ত ভাগণ গৃহীত্বাপুত্রৈঃ সহাসংস্টএব পুত্রা-· खत्र मू < शान् । मृ उद्यन विভागान खत्र ক্যাত পৰ তদ্ধনাধিকারী নপূর্ধবিভক্তঃ এবং পূৰ্ব ভ্ৰাতৃ বিভাগেপি বিভক্ত

बना नांभिष् । यिनजू यन कन চিৎ পুত্রেণ সংসৃষ্টঃ সন্ পিতা মৃতঃ তদা তদ্ধন সংস্থ বিভক্তজাভ্যা সম• বিভাজ্য• যথা ধনে তথৰ্ণে**পি।** ষদ্যবিজ্ঞাত গৰ্ভাযামেব ব্ৰিষাণ পুত্ৰা বিভক্তা স্তন্গর্ভজাতো বিভক্তদুব্যাণ্যে-কীকৃত্য পুনৰ্বিভদ্য স্বা:শংগৃহীযাৎ নতু বিভক্তজেন সহ পিতৃ দুব্যে **२•শিন্ত্•॥#॥ অথপিতৃক্ত বিভা-**গো নি ৰূপ্যতে। যত্ৰ পিতৃকৃত বিভা-গ স্তত্র স্বোপার্জিত ধনে পিতুরি হৈব 'নিযানিকা। পিতানহ ধনে তু মাতৃ রজোনিবৃত্তি সহকৃতা তদিছা নিযা-মিকা ৷ সোপার্জিত ধনে পিতা ইছ-या धन- गुरीजू- माङ्गाजि करेंबिहिम-थिक करे मि हिम्रान मा जूगई जि। रेश-তামহ ধন বিভাগে তু পিতা শ্বয় মণ্-শ ঘ্ৰ- গৃহীত্বা পুত্ৰেভ্য একৈকা-শ-দদ্যাৎ। কিন্তু পৈতামহ মণি মুক্তা भुवालामियू भिजृश्माह नर्। स्मिन-वक्ष हिन्नान उठाय न सह महा भारति-ত ধন বিভাগে পিত্রাঅপুত্র পত্নীভ্যঃ ধনণ ন দত্ত• ক্ৰী ধনে দত্তে সতি অৰ্ধ• দেয । পুত্র কর্তৃক বিভাগে ত বিমা जू व॰माञावः ॥ # ॥ मृमुमा नामी

मायङ। भूरवानि निज्तिह्या भन्निगीउ जी জাত পুত্রেণ সহ তুল্যাধিকারী মৃতে পিতরি তদ-শার্দ্ধাধিকারী। তথা বিধ ভাৰভাবে দৌছিৰে চাসতি <del>গি</del>-তু: সর্বধনাধিকারী সতি দৌছিত্তে তেন সহ তুল্যাধিকারী ॥#॥পিত-রি মৃতে মাতরি জীবন্ত্যা পুত্রাণা विजारगा न १ बर्गाः यि की वस्ता भा-তরি বিভাগণ কুর্বন্তি ভদা মাতাপি পুত্র তুল্যাংশ ভাগিনী। বিমাত্ রং শাভাবঃ কিন্তু সা গ্রাসাহাদনাদিনা ভর্ত্তব্যা। এবং পিতামহ ধনে পৌক্রৈ বিভজ্যমানে পিতামহ্যঃ পৌত্র তু-**ল্যা॰শ**ভাগিন্য: ॥ 🟶 ॥ ঔরসেন **म्**डकारीना॰ विভागে ঔরস্স্য **ছ্য**ণশিত্ব সবর্ণ দত্তকাদে রেকৈকা -শিত্ব ৷ বিভাগস্ত পিত্রাদে র্ধনিনঃ খণ পরিশোধ্য তদবশিষ্ট ধনস্য করণীয়ঃ৷ উত্তমর্ণেছ্য়৷ বিভন্ত্য বা ত দৃণ পরিশোধনীয়। একেন ভাুাত্রা-দিনা বহুপোষ্যত্র্যা যত্রাধিক ভুক্ত তত্র ন বিভুক্তাংশে। বিভাগ মধ্যে পুবেশনীযঃ। কিন্তু ভুক্তাবশিষ্টস্য विरामान धनरेमाव विजागः कार्याः ॥ 🟶 ॥ অস॰ফৃত ভুত্ত ভগিনীনা

পৈতৃক ধনেন সংস্কারঃ কর্তব্যঃ।

नायान

বিভাগ কালে কেনচিমিছ্লতদ্য প্রশাহ পুরিষ্ঠ সমভাগঃ কর্ত্তব্যঃ । ভুগানিনা ক্তাশাদ্রীয় বিভাগ ধনস্য পুনঃ শান্ত্রীয বিভাগঃ কার্য্যণ 🛚 🗱 🛚 অথ বিদেশাগতস্য বিভা গঃ। বিভক্ত হা দশাখা• দেশান্তর-গতস্য চিরকালানম্ভরাগতস্য স-প্তম পুৰুষপৰ্য্যন্ত তং সন্ততে রূপি भोन मामलामिना वा यकाशन शू ৰ্বক কনাগত ধনাং যথা শাস্ত্ৰ ম শভাগিত্ব মিতি স্থিত প্ৰবা ব্যবস্থা বিদেশা গত বিষয়িণী দেশ ছ বিষ-যেতু ধনিনশ্চতুৰ্থ পৰ্য্যস্ত এৰ তদ্ধন বিভাগার্হতা। সাধারণ ধনেপি স্বা॰শ দান• কর্ত্ব্য•। ইতি 🖺 কৃষ-**ত**र्कानकात्रक्ठ कर्मम॰गुरुः॥ 🗱 🔢 দেশস্য জাতেঃ সংহস্য পর্মো গ্রাম-স্যয়ে। ভৃষ্টঃ। উদিতঃ স্যাৎ স তেনৈব দায়ভাগ• পুরুদ্রবেৎ ॥ ইতি দায়তত্ত্ব ॥

नायविजागः शू॰ नायजामः। यथा। কি দায়স্য বিভাগো বিভক্তাব ্যবত্ত্ব-। ক্লিম্বা দাযেন সহ বিভাগো **২স•যু**ভত্ব•। ইতি জীমূতবাহনঃ।। मायामः भू जिल्हा भूवः। इकः मदः ॥

रायारी जी कन्या। हेि नेपार्थकन তৃকঃ ৷৷

দাযিতঃ ত্রি দাপিতঃ। ইত্যমর-টাকাযা•ভরতঃ **॥** 

मायकः शुः शुद्धः। इंडि रहमहन्मुः॥ वानकः। ইতি अमिनी॥ मानकः। ইতি শদার্থকন্নতকঃ॥

দারকঃ ত্রি ভেদকঃ। ইতিমেদিনী ॥ ্র গ্রাম্যশূকরঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। দারকর্ম শ্লী বিবাহঃ। ইতি ত্রিকাও (नियः॥

দারণ॰ ব্লী কতক। ইতি শব্দন্দ্রকা ॥विमात्रनः। यथा। माकमात्रनगरेथः ममारुज । ইতি नीनावजी ॥

मात्रमः शू॰ मत्रमामाख्यविषर्छमः । ইত্যনরঃ॥ পারদঃ॥ হিঙ্গুল । ইতি মেদিনী ॥ সমুদুঃ। ইতি श्रावनी॥

मात्रतिवञ्च शृ वक्शकी। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

मात्राः गुः कार्या । वश्ववनात्काश्यः । ইত্যমরঃ।।

मात्रा की माताः। ইত महिंगिकायाः ভরতঃ ৷৷

कन्नजबः ॥

मातिका जी कन्ता। इंछि अधारतः॥ मात्रिजः वि कृष्मात्रभः। ष्टशर्यप्रायः । ভিন্ন: ২ ভেদিত: ৩। ইত্যমর:॥ দারিদুর ল্লী দরিদুতা। যথা। পুণীয-দারিদুর দরিদুতা। নৃপঃ। ইতি নৈ-यश् ॥ निर्यकाद्वाखाश्रद्ध ॥ দাৰু ক্লী পু• কাধ•। ইত্যমরভরতৌ।। माक क्री प्रवसाक।। शिखन । ইতি

मानः वि मिन्नी ॥ मातकः। इंछि ধরণী ॥ দাতা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ দাৰুক প্লী দেবদাৰু ৷ ইতি রাজ-निर्धण्डेश

व्यक्ति॥

দাৰকঃ পু• ত্ৰীকৃষসারথিঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥

मानकम्बी की वनकम्बी। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

मानका जी काध्ययजी। कार्छत भू-जून इंजि ভाषा । उৎপर्वतायः । পুত্রিকা र দাৰ জী ৩ শালভঞ্জিকা **8 मानज्ञी ६ मानाभी ७। ই**তি ्र भयत्रदात्रकी ॥ मामशू विका १ कू-**কণ্টী ৮ শাক্সার্ভা ৯ । ইতি হারা** वनीभा । अस्तर कर हा

साजिः की विसाजकः। इंडि मकार्थ- प्रारम्भा की ठीए। नाम शक पुराः े रेजिकानिसंदे।।

माब इ

माक्गर्छ। जी माक्यमुखी। ইতি श्वावनी ॥

मास्कः भूः भर्मनः। ইতि भरत्रः। ॥ वनी॥ काष्ठनिर्मिए जि॥

দাৰণঃ পু• চিত্ৰকঃ।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ ভযানক রসঃ॥ ভয়ংইতৌ বি । ইত্যমরঃ ॥

माक्निमा क्री माक्स्तिमा १ है जि तक्षाना ॥

मारुभवी की रिक्रूभवी। ইতিরাজ-निर्घण्डेः ॥

রাজনির্ঘণ্টঃ 11

দাৰপুত্ৰিক। জ্ৰী দাৰকা। ইতি হা-त्रावली ॥

দাৰ নুখ্যান্ত্ৰ জী গোধা। ইতি রাজনির্ঘণীঃ ॥

দাক্ত্রী শ্রী দাক্কা। ইতি ত্রিকাপ্ত-শেযঃ !!

नाकर्तिना जी सनामश्राज्यक বিশেষ্ঃ। তংপর্য্যায়ঃ। পীতকঃ ২ পচল্পচা ৬ পর্জনী ৭। ইত্যমরঃ॥ পীতিকা ৮ পীতদাৰু ৯ ছির্ন্নাগা **२** कामिनी ३३ क**ंड**कर्एकी पर शब्दन्या २० शीजा ३८ मा समिना ३०

**मार्साया** 

কাদীয়ক ১৬ কামবতী গৰ্ণ দাৰু-भीज >> वर्कांगी भाग वनग्र ন্ডণাঃ। তিক্তন্ত্ব॰ । কটুত্ব॰ । উষণ্ডব॰ । বুণনেহ কণ্ডু বিসর্প ব্রণ্মেষ বিষ-. কর্ণাক্ষিদোষ নাশিত্বঞ্চ।ইতিরাজ-নিৰ্ঘটঃ॥ কফ পিত্ত শোপ নাশিত্ব॰ ৷ বিশেষেণ কফাভিষ্যন্দ নাশিত্বঞ্চ । ইতি রাজবল্লভঃ ॥

नाक्रयकः शुः कांश्रेनिर्धिण्रयः। কাঠের হাতা ইতি ভাষা। তৎ পर्यायः। जर्म्ः २। इज्यतः॥ माकशीला की माक्रिति । इंडि मार्चमवः वि भीर्घमव यात्म छवः। ইতি পিদ্ধান্তকৌমুদী॥ मार्गः क्षी मृष्ठा। मृष्टमका ए जावार्थः क्षु शुजुरयन निश्च म॰॥

> मामू ति की मिक्कणावर्ख महः। बजु ॥ - बन । इंडि भरार्थकन्नु कः ॥ मम् त्रथर्गन्छ॥

> দার্বট শ্লী চিম্তাবেশ্ম। ইতি হারা वनीं॥

> माई ७३ : श्रु गयूतः। ইতি मदार्थ-কল্নতৰুঃ ॥

मार्वाघारः शुः भाउशबकशकी। का ঠঠোকরা ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ॥ नार्वायाञः श्रु॰ नार्वायार्रभकी। ইতি नद्रवावनी॥

দিৰি না স্ত্ৰী সাথো ভবতুথ ।। গো-জিম্বা। ইত্যনরঃ।।

দার্থিপত্রিকা দ্রী গোজিস্থা । ইতি রয়্মালা।

দারী জী দা ক্ছরিদা।। গোজিন্সা। ইতি নেদিনী।। দেবদা ক।। হরিদা। । ইতি বিশ্বঃ।।

দারী ক্বাথো ভব শ্লী রসাঞ্জন । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ কৃত্রিমরসাঞ্জন । ইতি রহুমালা॥

मार्यमः बि मृय छवः। ইতি সিদ্ধান্ত कोनुभी ॥

माल की वन्त्रभु। इं जिम्मसार्थक क्ष ज्यः ॥ इन्द्रनीय म्याकात मृद्य-निक्षितार श्रमः वृष्य कार्रताष्ठत ज्वः भर्षा व्यमप्रद्याः । कर्रुवः । क्षायजः । अञ्चजः । मध्तवः । शिख्रमाय कार्तिवृष्यः । इं जिज्ञाज-निर्यण्यः ॥

দালঃ পু॰ কোদুবঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ দালবঃ পু॰ ছাবরবিষভেদঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥

माना की महाकानः। ইতি ভাব-পুকাশঃ॥

দালিকা জী মহাকালঃ। ইতি ভাব-পুকাশঃ॥ দালিমঃ পু• দাডিমা । ইত্যমর । টীকাথা• ভরতঃ॥

मानी की (स्वमानी नजा। इंडिं जाकनिर्घण्डः॥

দানুঃ পু• মুনিবিশেষঃ। ইতি*দাই<sup>দি</sup>* ভারত• ॥

দাল্মি: পু• ইন্দুঃ৷ ইতি ত্রিকাওশেষঃ৷
দাবঃ পু• বন• ॥ বনবহিঃ ৷ ইত্যমরঃ
॥ অগ্নিঃ ৷ ইত্যমর টীকাষা• নীলকণ্ডঃ ৷ উপতাপঃ ৷ ইতি ভরতকৃত
ির্বাপকোষঃ ৷৷

नावाग्निः भू वत्नाख्नवाग्निः। उर भ र्याग्नः। नवाग्निः २ नानाननाः १। इंडि नम्बद्भावनी॥ नवः ६ नावः ६ । इंडिअवः॥

मावाननः श्र॰ मावाणिः। ইতি नप-बद्यावनी ॥

দাবিকঃ ত্রি দেবিকান শীসম্ভবঃ । ইত্যমরঃ।।

मामा न त हि॰ मत्। ইতি কবিকল্ল-क्षमः॥

माण अ था क माता इंजि कविकन्न-क्याः ॥

দাশ ঋঞ দানে। ইতিকবিকর ক্রমঃ।।
দাশঃ শু॰ ভ্ত্যঃ ইত্যের টীকাবা॰
রমানাখঃ ।।

দাশপুর : द्री দশপুর; । ইত্যমর-होकाया श्वामी॥

मान्यवं भः बद्दावनी।।

सामतिषुः शुः वितामः। ইতি एम-ठन्पुः ॥

मानारः भू॰ विकृः। इंडि एश्यान्मुः॥ म्माई(म्मज्ञम्ह।।

দাশেরকঃ পু॰ মালব দেশঃ। ইতি <u> विकाश्रम्बः ॥</u>

मायः वि माञा । ইতি জটাধরঃ ॥ माथान् वि मखवान्। ইতি मूथारवाथः। माम जन जता इंडि कविकन्नक्रमः॥ দাস ঋঞ দানে।ইতি কবিকল্পঞ্জমঃ॥ দাসঃ পু॰ শূদুঃ॥ জ্ঞাতা আ।। ধীবরঃ া ইতি মেদিনী॥ দানপাত্র•। ইতি विषः॥ मृषाणाः नामाञ् शुरमाकाः 🛾 পদ্ধতি বিশেষঃ। যথা। শর্মান্ত ব্ৰাহ্মণস্য স্যাৎ বৰ্ষান্ত ক্ষত্ৰিয়স্য

विमार्भृष्याः॥ इन्त्रवाशन्त्रवा मामाद्रक मीयरक यरेया महा ठाकत रैंजि जाया। जर्भर्यायः। ज्जुः ২ সানেরঃ ৩ দাসেয়ঃ ৪ গোপ্যকঃ

D। एथ मात्राञ्चक नाम शुन्छ ।

क्रिकेन्द्र ७ निर्वाकाः १ किन्द्रतः ৮ পুর্ব্যঃ ৯ ভুম্মির্যঃ ১০ পরিচারকঃ

শ্রীরাসঃ। ইতি শব

১১ । ইতনেরঃ॥ প্রেব্যঃ ১ই প্রেবঃ ্র ১১ পুৈষঃ ১৪। ইতি ভরতঃ॥ পরি-কর্মা ১৫ পরিচরঃ ১৬ সহাবঃ ১% উপস্থাতা ১৮সেবকঃ ১৯ অভিসরঃ २० व्यनूगः २३। म शक्षम्म विधः। যথা নারদঃ৷ গৃহজাত স্তথা ক্রীতো नत्त्व। नायापूर्णागजः। जनाकान **ज्ञ खबनाहिक: यामिना ह** यः ॥ নোক্ষিতো মহতশ্চর্ণাৎ যুদ্ধে প্রাপ্তঃ পণে জিতঃ । তবাহ মিত্যুপগতঃ পু বুজ্যাবসিতঃ কৃতঃ 📗 ভক্তদাস-শ্চ বিজ্ঞেয স্তথৈব ৰডবাকৃতঃ। বিক্রেতা চাত্ম নঃশাস্ত্রে দাসাঃ পঞ্ দশম্তাঃ ॥ অস্যার্থঃ। গৃহজাতে। माम्रामू भारः । मायामुभागजः क्रमागठः। यमाक्षण्यः मुर्ভिकः পোষিতঃ স্থানিনা আহিতো বন্ধকী-কৃতঃ ৷ মোক্ষিতঃ ঋণমোচনেনা-শীক্তদাসঙ্গ। তবাহ মিতুপোগতঃ कन्राभामानः नन् स्यः मानादन দত্ত ৰূপঃ। পু বুজ্যাবসিতঃ সম্যা-न जुरै:। क्ठः (कनिष्टिमिनिस्छन अजाबर काम गर्गहर जवाहर माम ইতি কৃত সমযঃ। ভক্তদাসঃ সুভি-किर्ग उकार्य महीवृत्र मान्।ः। বডবাকৃতঃ বডবা দাসী কলেয়ভা-

मदी कृष माग्रः। इंडि बीक्ष-্তকালদারকৃত ক্রমস•গুহঃ॥তন্য 🏢 कर्म यथा। कर्माशि विविधः (ज्ज्य मणुं भूं अभि । अभुं ७ मान কর্মোজি• 'শুভ• কর্মকৃতা• মৃত• ॥ গৃহদারাশুচিস্থানরথ্যাবন্ধর শো-ধন-। গুহাক স্পর্নাছি বিগুত্ত গুহণোজ্ঝন· ॥ অ**শুভ• কর্ম** বিজ্ঞে-য॰ শুভ মন্যদতঃ পর•৷ ইতি মিতা-क्रवाया नात्रमः॥ विशुग्र किहता ভূপা বৈশ্যে ভূপস্য ভূমিপ । मर्खिया॰ किह्न ताः मृमु। वाक्रानगु। শথও ॥

मामनिक्ती जी मठावर्छी। ইতি मदत्रञ्जावनी ॥

रामशृत<sup>्</sup> न्ह्री किवडी मूखकः। इंडि **न**मज्ञावनी

मानिका जी मानी। ইত্যমরটীকাযাণ ভরতঃ ॥

मानी खी जुिंबगा। इंजियमिनी॥ তংপর্যায়ঃ। কর্মকরী ২। ইতি मुक्षात्वाश्वा माजन्यर्ग्य नदाः जी-लिक्ट **अम**्राः भर्यत्राया ভविष्ठ ॥ क्रकबद्दा ॥ नीवामानः ॥ नीविषणी । ইতিরাজনির্ঘন্তঃ ॥ পীতবিদ্টী ।

ইতি রয়মালা॥ বেদী। ইতি বিশ্বঃ ॥ শুদুপত্নী কৈবর্ত্তপত্নী চ।। नामीमञ॰ ङ्गी माम्याःम**ञा। ই**ত্য-मदः ॥

मारमयः शु॰ मानः। इত्यातः॥ কৈবর্ত্ত: । ইতি শদরত্বাবলী।। দাসোৎপন্নে ত্রি।।

দাসেয়ী স্ত্ৰী সত্যবতী। ইতি ত্ৰিকা-ওশেষঃ ॥

॥ দাসেরঃ পু॰ দাসঃ॥ ইত্যমরঃ॥ কৈ-বর্ত্তঃ। ইতি শবরহাবলী।। উষ্ট্রঃ॥ দাসিকাপত্যে ত্রি। ইতি মেদিনী।। বিশেষতঃ॥ ইতি বুন্ধবৈবর্জেগণে- । দাসেরকঃ পুণ উছুঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ माभीमुळः। इंजि शातावनी॥ দাস্য॰ ক্লী দাসস্য ভাবঃ। দাস্ত্ব॰। यथा। अहंनः वन्तनः मञ्जाकाशः **मियन भियह। यह १९ की र्खन॰ मैर्य-**स्गून भुवन नीक्निज् ।। निविसन॰ यम्। मामाः नवधा ভক্তিলক্ষণः। ইতি বুদ্ধবৈবৰ্জে পুকৃতিখণ্ড।।।

**मारुः शु॰ महन•। ভশীকরণ•।। অ**থ **म**वनार विधिर्यथा। गठशुग्न छ। ३१ পুতাদিঃ সাত্ত্বা অন্ত কৃত্বা স্থাপথে ! ততোগতপুাণ-শ্লাপযিত্বা বাসসা সর্ব **मत्रीत माहाहग्रिशीर्ग कूमायाः** ज्-क्रीसिक्शिनित मः ज्ञाशिय । जल

ষ্তেনাভ্যন্ত্য ওঁগ্যাদীনি চ তীর্থানি যেত পুণ্যাঃ শিলোচ্যাঃ। কুৰক্ষেত্ৰঞ্চ পঙ্গাঞ্চ যমুনাঞ্চ সরিদ্বরা ।। কৌ-শিকী চন্দুভাগাঞ্চ সর্বপাপ পুণা-শিনী· । ভদাবকা**শা** গণ্ডক্যা সর-যূ॰ পনসা- তথা ॥ বৈণবঞ্চ বরাহঞ্চ তীর্থ পিণ্ডারক তথা। পৃথিব্যা খানি তীর্থানি সরিতঃ সাগরা স্তথা ।। ইতি চিত্তবিত্বা পুনঃ স্নাপযেৎ 1 বন্দ্রান্তর• পরিধাপ্য উপবীত মুক্ত-दीयक रदा ठन्सनारिताशनिश्र केर्न নাসিকা নেজ্বই মুখান্মকেষু সন্ত<sup>্</sup> " ছিট্ৰেষু সপ্তসূৰ্বৰ্ণ খণ্ডিকা স্তদভাবে কা•স্যাদি খণ্ডিকা নিঃক্ষিপে**্ত**তো বস্ত্রাস্তরেণা হ্লাদ্যবহেযুঃ। বহনকালে षाग्नावद्यः जनमार्नः यद्यार्षिः ত্যজেৎ অৰ্দ্ধণ পিণ্ডাৰ্থ মবশেষযেৎ। ডতো ২গ্নিদাতা পুত্রাদি শ্চিতা ভূমৌ গত্বা তদমার্দ্ধণ তিলসহিতণ পিণ্ড-मानिकर्खवाज्या उँ म्हाल । मा यथा गानियाना निष्ठायाः ज्यो পাতিত বাম জানুঃ প্রাচীনাবীতী কুশন্লেন ওঁ অপহতা সুরারক্ষা 'সি বেদি সদ ইত্যনেন দক্ষিণাগু রেখা• कर्गार उर्शित कूमानाखीर्ग खँवहि পুত সৌম্য গম্ভীরেভিঃ পর্যিভঃ

পূৰ্বিণেভি ৰ্দেশ্বন্ত্য দুবিণেছ ভদু• इियक्षनः **म**र्वितः नियह इठ्या-বাহ্য সতিল জলপাত্র বামহস্তা-फक्ति श्राप्त गृशीया अँ अम्यामूक গোত্র প্রেতামুক দেব শর্মাবনেনিক্ ইত্যবনে জযে । ওঁ অদ্যামুক গোত্ৰ প্রেতামুক দেবশর্মনেতত্তে ২ন মুপ-তিঃতা॰ ইতি বানহস্ত গৃহীতান शाबारमः मिणवः मिक्का रुखन ग्रीजा कूरणाशति एम्रार्। शिख-পাত্রপুক্ষালন জলেন তদুপরি পুত্র-वत्मान ज्यो गद्दारिमान जान-গেতরেষাস্ত নাবাহন নিতি বিশেষঃ । ততঃপুত্রাদিঃ দ্বা হ্বা চিতা বিরুদ্ধি হ্বা তর দাক্চয় ক্র্যাং। তদুপরি বস্ত্র-দ্বয় সহিত দক্ষিণাশিরস সামগ माधामुथः भूमाः मः नप्रमः । नार्यप्र স্ত্রান দে**হয়• সা**মগেতরেষা• উত্ত-রাশিরন্ত্রণ। ততো দেবাশ্চাণ্নি মুখাঃ সর্বে হুতাশন গৃহীয়া এন দহন্ত ইতি মনসা ধ্যাত্বাগ্রি গৃহীত্বা ওঁ কৃত্বা তু দুম্বর কর্ম জানতা বাপ্যক্রেতা। মৃত্যু কাল বশংপ্রাপ্য নরং পঞ্চত্ত্ব মাগতং ।। পর্যাপ্র সমাযুক্ত লোভ মোহ সমাবৃত । দহেয় সর্বগাত্রাণি দি-वरान् लाकान् नगहजू॥ इंडि शिट

দ্বা বিঃ পুদক্ষিণীকৃত্য দক্ষিণামুখঃ ত্যেবপাঠঃ ন নারী মিতৃগ্ছঃ । ততো मारक् व्राक्ष शुापमा शुमानाः मधका-ধিকা গৃহীত্বা চিতাম্লি সপ্তবারান্ পুদক্ষিণীকৃত্য সম্ভকাণ্ডিকা একৈক ৰুদেণ চিতাশ্ৰৌ পুক্ষিপেৎ। ততঃ " কুঠারেণ কব্যাদায় নম স্কভ্যমিতি || ম**ন্ত্র পঠি**ত্বা চিতাস্থ জ্বল-দাৰপরি সপ্তপুহারা দেযাঃ তমগ্রি नशनातिक बीमा वर्खन ग्राकुः नभी গন্তব্যানাঃ শবংন দহেৎ শবসম্বন্ধি বক্সানি শাশানবাসিচাগুলাদিভেগ দদ্যাং।সূতিকাংরজম্বলাঞ্চ বক্তান্তরা বৃতা সতিল পঞ্গব্য জলপূর্ণকু মুণ আপোহিঃ বানদেব্যাদিভি রভি মক্র্য স্নাপ্রবিদ্ধা দহেদিতি বিশেষঃ। গর্ভবত্যাস্ত গর্ভ নিঃসার্য্য স্থানা-खदा निःक्रिभा उमा मारः कार्यः । ততো জলসমীপ॰ গত্বা পুত্রাদ্যঃ शुर्याण माना छिङ भाग वका मिक , প্রার্থয়েয়: । উদক করিষ্যাম ইতি তেন চ কুৰুত্বং মাচৈবং পুন রিত্য শতবর্ষে প্রেতে কুম্ধ্ মেবেতর-ক্রিন্ ইত্যুত্তরে দত্তে বৃদ্ধপুরঃসর মব তরণ জলে। ততঃ পরিহিত বস্ত্রণ

পুক্ষাল্য তদেব পরিধায়পুাচীনাবী-তিনো দক্ষিণামুখাঃ ওঁ অপনঃ শো-শুচ দঘ মিত্যনেন মন্ত্রেণ বামহস্তা নামিক্যা অপ আলোড্য একবন্ধাঃ मक् विभाष्ण्रा सक्त प्राचित्र प्रक्रियामूथा ন্তর্পযেযুঃ । ততঃ ওঁ অনুক গোত্রণ পুত্ত মমুক দেবশর্মাণ তর্পযামীতি जामगानाः शुर्यागः यजुर्विनिनास অনুকগোত্রপুতানুক দেবশর্মনেতত্তে जिल्लामक ज्भारत्रजिभकाञ्जलिमान নাবশ্যক• অঞ্জলিত্রয় দানে ফলাতি-भयः। ততঃ शूनः माना जनाम्यान॰ বাল পুরঃসর•কার্য্য: । ততঃ সাদ্ধলে छेशविणा नानूरवा करनी उष्ठ নিঃসারে সার মার্গণণায়ঃ করোতি স अभूषा जनतुषुम अभिष्ठ ।। शक्षश म मुञ्कारमा यमि भक्ष मागञः। কর্মভিঃ স্বশরীরোগ্যৈ স্তত্র কা পরি-प्तिना।। गञ्जी वमूमजी नाम मुम्बि দৈবতানি চ। ফেনপুখ্যঃ কথ-নাশ मर्ज्याका न याम्या ॥ (न्या न বান্ধবৈ মু ক্তাপুেতো ভুছক্তে যতোহব नः। अला न त्राप्तिजवुः हि किया कार्या विधानजः ॥ इंजि विखिया গৃহদার• সমাগত্যনিম্পত্রাণি দরৈঃ थ्ययदा भगीभाभः भगयदि

भगी म्पृक्षे। जान्यविश्वता ज्यामः इंडान्यान भनाम्पृक्षे। जाय नं भर्य यह जू इंडि जानि म्पृक्षे। व्यक्त हाग या ग्रंथा हिंद्या श्चाणिकि माज्यम वाविभाम्पृक्षे। यान्य मुनक गोत नर्यभाष्ट म्पृक्षे। यान भूतः नता गृहः विस्मयः। निवाहिष्णाह समा तात्वो शुप्तम्यः तात्वो हिंदम। निवरम। जनको वान्यभानूमिकः गृहीद्या कान भुजीकन विना भूति इंदाः। ইंडि मुक्तिञ्दः।।

দাহকঃ পু॰ চিত্রকঃ॥ রক্তচিত্রকঃ।
ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ দাহকর্ত্তরি ত্রি॥
দাহন॰ ক্লী ভশীকরণ প্রেরণ•। দাহ
করাণইতি ভাষা।ঞ্যন্ত দহ ধাতো
রনট্পুত্যযেন নিম্নম•॥

দাহসরঃ পু॰ শাশান । ইতি ত্রিকা-গুশেষঃ।।

माश्रुवा। विमुका।

माराख्य क्षी मूगिक्षमुद्यावित्यवः । তথপर्यायः । मारुनागुक २ मारु-काष्ठः ७ ध्लागुक ८ रिज्ञागुक ६ शृतः ७ वनवञ्च ७ १। यम् । गूगाः । कर्षुषः । उक्षयः । क्ष्मवर्षनयः । वर्गादः क्ष्माराय नानिषः । मञ्ज দাক্ষিক

সৌগন্ধ্য বিস্তার করিবৃঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।৷

माक्क की मकागा मम्हः। इंड्र-मत्रिकाया त्रायमूक् हैः॥

प्राक्तायि। जी अविन्ताप्त (वित्र कर्णः मधिवः अविन्ता है जाताः। है जाताः। है जाताः। है जाताः। है जाताः। है जित्र क्ष्मा विश्व है कि स्वार्थः। प्राप्त है जाताः। है जित्र क्ष्मा वात्र है जाताः। वात्र है कि स्वार्थः। वात्र है जाताः। वात्र है कि स्वार्थः। वात्र है जाताः। वात्र है है कि स्वार्थः। वात्र है जाताः। वात्र है है कि स्वार्थः। वात्र है जाताः। वात्र है कि स्वार्थः। वात्र है जाताः। वात्र है जाताः। वात्र है कि स्वार्थः।। प्राप्त वात्र है जाताः। वात्र है जाताः।।

माक्रायगीপिउः शुः हम्मुः। इंडिः विकाश्रम्भयः॥

माक्रायगीत्रमणः श्रूण हन्मुः । इंडि ह्वायूथः ॥

দাক্ষায্যঃ পু: গৃধুঃ। ইত্যমরঃ।।
দাক্ষিকস্থা স্ত্রী বাল্লীকেষুপুামস•জ্ঞা।
ইতি নপু-সক লিক্ষস•গৃহ টীকায়া
ভরতঃ।।

माकिगाजुः वि मिकगमार्भाख्यः। ইতি শবার্থকল্পতকঃ ৷৷ নারিকেলঃ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। माक्रिग्र॰ क्ली अनुक्वजा। **ই**जि रूम-চন্দুঃ॥ দক্ষিণার্ছে ত্রি ইত্যমরঃ॥ माकी शुक्तः शुः शानिनिमूनिः। इंडि ত্রিকাওশেষঃ। माक्षयः पु॰ भागिनिमूनिः। ইতি व्यवन्तुः ॥ माकाः क्षी मक्का। निश्वा । मक मपार जातका शुज्यः॥ भिक् बी अवकाम नमाजिया। जः-পर्यायः। ककुश् २ काश्व ७ जाना ৪ হরিং ৫। ইত্যমরঃ।। নিদেশিনী ৬। অস্যা ব্যুৎপত্তি র্যথা। কৃত্বৈব মবধি॰ ত আদিদ॰ পূর্বঞ্চ পশ্চিম॰। इंजि (मा) निमिलाज य्या मा দিগিতি সূতা।। 🗱 ॥ তস্যা বাযো-र्खनाः। विश्वगृत्यु बनागुष्य अनुगिनाः ॥ निक्ताय क्या **मर्अर्जु निन्मत्का र**ङा ক্ত্যোৎপাতপুরঃসর্গাইতিরাজ-विकास कि।। ना मनशा यथा। भूती > जाएगी २ मिकना ० तिश्र जी 8 शिक्या **६ वायवी ७ উ**ख्डा १ . बेमानी ৮ डेब्रं ॰ २ जश्ड २०॥ 🛊 ॥ ॥ তাসা উৎপত্তি যথা। মহাতপা

উবাচ। শৃণু রাজন্বহিতঃ পুজা-भाव कथा निमा·। यथा निमाः সমুং পরাঃ শুোত্রেভ্যঃ পৃথিবীপতে ॥ वेक्रानः मृह्याः मृद्धि मारि मार्ग সমুত্থিতে। চিন্তা ভূমাহতী কো মে পুজাঃস্টা ধরিষ্যতি ॥ এব • চিন্ত-যত স্তস্য অবকাশ বুজব্বিহ। পাদু বভূবুঃ শোুত্তেভ্যে দশ কন্য मश्राश्रुजाः ॥ श्र्वीष्ठ पिक्तिग देव পুতীচী চোত্তর। তথা । উদ্ধাধ এব ষ্মুখ্যাঃ কন্যাহ্যাস• স্তনা-নৃপা। তাসা॰ মধ্যে চতসুস্ত কন্যাঃ পরনশোভনাঃ। যাঃ পশ্যন্ত্যে। মহাভাগা পাষ্ট্রীর্য্যেশ সমন্তিঃ ॥ তা উচুঃ পুণ্যাদেব প্রনাপতি মকশ্মৰ । অবকাশন্ত নো দেহি দেবদেব পুজাপতে ॥ যত্র তিগ্ন-মহে সর্বা ভর্ভিঃ সহিতাঃ সুথ• ৷ পত্যশ্চ মহাভাগ দেহিনোৎব্যক্ত সম্ভব ।। বুন্দোবাচ। বুন্দাওনেতৎ मूर्णागुः भजरकाि भुविखतः । তস্যান্তেশ্বেছ্যা তুষ্টা উষ্যতা• নাবি वश्रा ७ वृं भारत वः श्रुयहानि मृह्य क्रिमिता १ नयाः। यत्यः गग्राजाः प्राची यम् । या ज्ञाव्य श्रुना ।। **पवमूकान्ह जाः म**र्श यत्यहै शृयमू

গুদা। বুকা সমর্জ তুর্ণ তান্ লোক | शालान् गरावलान् ॥ मृक्षे जूलाक পালাণ্ড তাঃ কন্যঃপূন রাস্ত্যন্! विवाह॰ कात्रवामान वुका लाक গিতানহঃ॥ একানিন্দুয়ে সপুদা-म इत्य २ न द्रा॰ यमाय ह । निश्च छाय ह **ে**বায বৰুণায নহা মনে।। বাযুবে धनतमाय केमानाय ह मृत्ठ । खिष्तु - चयगिषि शय मियायाया वा वा স্থিতা । এবং দহ্বা পুনবু ন্ধা তিথিং शुकार किमांश्यूनः। क्मभी छर् নাশুস্ত অর্ছানাশোদনঃ পুভুঃ॥ ততঃ পু ভৃতি তাদেব্যঃসেন্দ্রাদ্যাঃ পরি-কীর্ত্তিতাঃ। ইতি বরাহপুরাণ ll # II न्रायम् व विम्राः **मर्श** गठद् १ পরম মহ্রুপরিনাণ। দূরাভিকারি " धीरङ्जू ३॰ । निज्य ३॰ । अकर इलि উপাধি ভেরাংপুাচ্যানি ব্যপনে काल्य । अमृत्र खनाः मःथ्याः > পরিমিতিঃ ২ পৃথক্ত্ব : ০ স ংযোগঃ ৪ বিভাগঃ৫। ইতি ভাষাপরিছে দঃ॥ क्तिशिक्तिः भू॰ दिगधीयदः। उत्यथा। পুাচ্যধিপোরবিঃ৷ অশ্রিকোণাধিপঃ শুকঃ। দক্ষিণাধিপঃ কুজঃ। নৈশ্বত কোণাধিপো রাহুঃ। পুতীচ্যধিপঃ भनिः । वायूकानाधिभन्दनुः ।

निक्ष्

উত্তরাধিপো বৃধঃ। देशानकाना-ধিপে। পুৰুঃ। তস্যপুনাণ যথা। সূর্য্য: শুকঃ ক্ষমাপুরঃ সৈংহিকেইঃ শনিঃ শলী। সৌম্য জিদশম্প্রী চ প্রান্যাধি দিগধীখরাঃ।। ইতি গ্রোভিত্তরণ।।

मिक्शानः श्रु श्रां मि में मिन निर्माः शानः । यथा । श्रं जाः मिन निर्मा हेन्द्रः। विद्या विद

तिकन्ण क्री पिण्णित गमति निविष्व योजाः । यथा। शिक्तियोगः भूक तवी। উख्तमताः वृथ मक्ति। । श्र्रमताः भनि मान्ति । पिक्तिने मताः वृक्षणिः । उथा प्रभूका-पिठापित न वोक्ष पिणः न एक कृष्व काख्ताः मन्दिल्लाक पित न भक्ककूछः योमताः गुरती न

. बुरबर । भूगानी छि विवद्य याडि ় মনুজায়ে বিত্ত লাভাশযা ভুষাশাঃ পুন রা সতরি যদিতে শকেণ তুল্যা অপি 🛭 ইতিজ্যোতিঃসারসংগৃহঃ ॥ কেষাঞ্চিমতে । বৌধে পুরৌ-मिक्या । देगान कुनल रिव নৈশ্বতি মাৰুতে তথা।ন গন্তব্য मूताहार्यं भु जीहता दिव मूकरवाः ॥ ইতি সুথবোধঃ ॥ रिहः शुः करें छः। इंडि मदत्र शवली॥ रिद्धाः भू व्वा। ইতি नाष्ट्री नाष्ट्र-रकायः ॥ निक्रती की युवजी। इंडि एक्स हन्मुः॥ নিগায়রঃ পু॰ শিবঃ ॥ ক্ষপণঃ॥ ন্মঃ ॥ जनः। इंडि मिस्नी॥ रिणयती खी पूर्ण। पिणयतमार्भा । ইতি চুলার্ণবঃ॥ নথ্নে ত্রি। ইত্যনরঃ॥ निगुजः भू• निग्रुडी।यथा। **अं**ता-বতঃ পুণ্ডরীকো বামনঃ কুমুদো-**২%**নঃ। পুরদন্তঃ সার্বভৌনঃ সুপুতী কশ্চ দিম্বজাঃ ॥ ইত্যমরঃ ॥ এতে क्यावश्रहीए। हे पिनाः इ खिनः॥ भः शुः विवाकवानः। ज्रः शर्यत्रायः । লিপ্তক: ২। ইত্যমরঃ ॥ শ্বেহঃ ॥ र्षाः। इंडि ह्महनुः॥ शुवकः। ইত্যজ্যপালঃ ॥

निकः वि निक्ः। ইতি मिन्नि॥ तियानोः श्रुः निवः। ইতি एकन्तुः॥ नए। बि॥ निशिज्ञ शु विन्धा युष्क्रन वा निशा বিজয়ঃ।যথা শঙ্করদিগ্রিজয়ঃ পাও-বদিশ্বিজয় ইত্যাদি॥ तिकः शुर षेटकूर्गाष्ठ**ञ्चः।** ইভि**मदा**-র্থকল্পতকঃ।। নিত॰ ত্রি ছিম। ইত্যমরঃ॥ নিতিঃ স্ত্রী দৈত্যমাতা। সা দক্ষকন্যা কশ্যপপত্নী চ ॥ খণ্ডন• । ইতি भितनी ॥ त्राजिति**न**ार शू॰ इंडि শदार्थकन्नउकः॥ मिजिङ: शू· रेनजुः। ইতি হেনচন্দুः॥ नििंच पूरः भू रेन्डाः। इंडामद्राः॥ पिठाः **श्र•े** पिठाः। ইতি मदार्थ-কল্পতৰুঃ ॥ मिनूर< बि मीश्विविभिष्टेः । ইতি मुक्रताथः ॥ मिथियानाः श्रु जातानि उदकुः। **ইতি সিজান্তকৌ সুদ্যানুণা দিবৃ** ভিঃ॥ দিধিযুঃ পু• দ্বিকঢাপতিঃ। ইত্যনরঃ ॥ द्विकणयाः श्री। इंडि भन्द्रश्ना-वनी ॥ निधियः जी विकार। वात्रवयविवाहि-ा जी। उद्भर्गायः । मिथीयुः र

পুনভূঃ ৩ দিধিষুঃ ৪ ৷ ইতি শব-র হাবলী।। বিবাহিতাযা কনিষ্ঠা-যা॰ সত্যা• অবিবাহিতা জ্যে ভिগिनी। यथा। (कार्श्वाया॰ विनार-भानायाः कन्ता या गुरुहा श्नुजा। नाठार्गु निधिवृद्धिया श्र्वी हि पिष् মৃতা॥ ইত্যুদ্ধাহতত্ব॰॥ দিধিৰূপতিঃ পু॰ দ্বিকঢাপতিঃ। দিধিৰূ ৰ্দ্বিকা তস্যাঃপতিঃ স্বামী ॥ দিন॰ ন্নী পু॰ কালবিশেষঃ। তৎ পर्यत्रायः। घमुः २ जरुः ० निवमः ८ বাসরঃ ৫। ইত্যমরঃ॥ ভাস্বরঃ ৬ দিবা ৭। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ বারঃ৮ অ•শকঃ সু্্রে ত অ•শক•১১।ইতি শবর জাবলী।। ততু মনুষ্য মানেষ্ঠি দগু যুক । পিতৃমান ৌণচান্দু भागाञ्चकः। एवामूत भाग वर-সরাত্মক । বুক্ষমানে দিব্যদ্বি সহ-त्रु यूगाञाक । मन्या मात बुक्क (१) দিনস্য সংখ্যা । ৮৩৪০০০০০ । ইতি পুরাণ ৷৷ তদেব মনুষ্যাণা সৌর সাবন চান্দু নাক্ষত্র ভেদেন ठञ्बिप यथा। **मावन म् ७ व्या** त्र इं चनाथगुनाः नाएत खरेमन ञ्चत्य । )। উपयात्मापया ज्ञातना ভৌৰ্যা সাধন বাসরাঃ। ২। তিথি- रेनरकन किवन कान्युमान शुकीरिजंश १। जायुक्तीय मृज शुकित
निक्रं यि निक्रं । १। कीमृज
वाहन मर्ज्जु मूर्ग्यकितगाविष्ट म
क्रूर्यामण्ड ।।
क्रिक्त शु मूर्ग्यः। ইভি एमक्तुः
क्रिक्त श्रा जी यमूना। ইভি ह्वायुक्षः ॥
क्रिक्त शु शु जिन्न विश्व ।
हिनक्त श्रा शु जिन्न विश्व ।
हिनक्त श्रा जी यमूना। ইভि ह्वा-

मिनरके नवः शुरं अक्षकातः। इणि नवत्रज्ञावनी।।

দিনজ্যেতিঃ শ্লী আত্রপঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ!৷

मिनमूःथिठः शूः क्वी हकवारः ! ইতি
भवत्रक्षावनी ॥

দিনপুণীঃ পু॰ স্ঠ্ঃ। ইভি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ॥

দিনবলঃ পু॰ পঞ্চন ষষ্ঠ সপ্তমাষ্ট্ৰীন-কাদশ ঘাদশ রাশহঃ। ইতি জ্যো-তিষ॰।।

দিনমণিঃ পু: সূর্য্যঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।।

हिनगृद्धी श्रु॰ পূर्वादिः। উদযাচলः। ইতি ত্রিকাওশেষः।।

" দিন্ত ক **ড সংঘাতে। ইতি ক**ৰিক্<sub>ন</sub> জমঃ !!

मिना॰ मेः शु॰ श्राह्म नधाहाशताह ृ সাবাঃাদিঃ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ मिनामिः शुः शुजाउः। ইতি রাজ-निर्घ है।। हिनान्तः शु॰ नायः। हिवावनान•। ইত্যমরঃ॥ দিনান্তকঃ । পু॰ অন্ধকারঃ । ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। **দিনাবসান॰ গ্লী দিনাস্তঃ। ইতি হেন-**ठन्मः ॥ े दिनिक। श्री अक दिन क्उ कर्य मून्। कि में समान।।। कियमपुथः क्री शुजाठः। इंडि इनायुदः॥ । ইতিক্বিকল্পদ্মঃ ।।

দিবশ্বতিঃ পুং ইন্দুঃ। ইত্যমরঃ ॥

দিবশ্বতিঃ পুং ইন্দুঃ। ইত্যমরঃ ॥

দিবশ্বতিঃ প্রার্থিবেরী স্ত্রী রোদসী। স্বর্গ-। ইতি ক্বিকল্পদ্মঃ॥ কল্প নঃ।১ বিলীপঃ পু॰ স্ব্যবংশীযরাজবিশেষঃ
। স অংশুনতঃ গুত্রঃ ভগীরথ পিত।

त्रामाद्रः ॥ भिनीशङ्ग शृ॰ निनीशङ्गाङः। ইতি 🗕 ত্রিকাপ্তি শযঃ॥ দিলীর ল্লী শিলীকুক ়াইতি হারা-वनी॥ ित्य छ जिनीयागः ॥ इहायाः ॥ পণে। ব্যবহারকরণ ইতি যাবং।। দুতৌ ॥ কীডাযা•॥ গতৌ। ইতি কবিকল্পদ্ৰমঃ॥

দিব ক ড পরিকূজনে। ইতি কবি-क्लुक्गः श

" रिव क व्यन्ति। ইতি কবিকল্লक्षमः॥ দিব প্লী স্বৰ্গঃ ॥ আকাশ । ইতি त्मिष्मी ॥ पिया ॥ वन• । इंकि एक्म-हन्मुः॥

| रिवमः श्रु॰ क्ली रिन॰ । इन्जानः॥ দিবস করঃ পু॰ সূর্য্যঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।।

ज्लाते । विवहनात्वाश्यः । देखि হেমচন্দুঃ॥ দিবা ব্য দিন•। ইত্যমরঃ॥

हिता शृ॰ দিন•। ইত্যুগাদিকোষঃ।। रिबाक्तः भु• मृर्याः ॥ अर्कवृक्तः ॥ ইত্যনরঃ॥ কাকঃ॥ পুন্নবিশেষঃ। ইতি শব্চন্দ্রিকা॥

দিবাকীর্ত্তিঃ প্• নাপিতঃ॥ চণ্ডালঃ ॥ উলুকঃ। ইতি হেনচন্দুঃ ॥ দির ই প্রীতৌ। ইতি কবিঁকল্লজনঃ।। দিবাটনঃ পু॰ কাকঃ। ইতি শবার্থ কল্পতকঃ।।

দিবাতনঃ ত্রি দিনভবঃ। যথা। সায স্থনী তিথিপুণ্যঃ পক্ষজানা দিবা তনী ৷ কান্তি কান্ত্যা সদা তন্যা স্থেপবভী শুচিনিতা। ইতি ভটিঃ॥ দিবাকঃ পুণ পেচকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-

শেষঃ ৷৷ দিবান্ধাঃ প্রাণিনঃ কেচিদাত্রাবন্ধা স্তথাপরে ৷ কেচিদিরা
তথা রাত্রো প্রাণিন স্তল্যদৃষ্ট্রযঃ ৷৷
ইতি চণ্ডী ৷৷

हिराका जी वन्छना शकी। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।।

मिवाक्तकी जी हूड्नाती। इंडि श्रुवागः॥

पिराजीजः शृ॰ উल्कः ॥ कूमूमाकतः ॥ क्रोतः। इंजि स्मिनी ॥

দিবাভীতিঃ স্ত্রী পেচকঃ। ইতি শব্দ-রহাবলী।।

निदानिः शृ मूर्यऽः। इंडि नम्तइः। वनी ॥

দিবানখ্য স্ত্রী মধ্যায়ঃ। ইতি হেম-

मिवाश्वाशा क्षी वन्छना शकी। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

দিবিঃ পু চাষপক্ষী। ইতি শব-

रिविजः क्रि यगी यः। ইতি **म**ंकिश

मातः ॥

निविषटे श्रू॰ (पदः। ইত্যমর:॥ १ निविष्टः ि सर्गर्ः। ইতি **স॰कि**श्ट-मातः॥

দিবী স্ত্রী উপজিব্রিকাকীটঃ 1 ইতি হারাবলী ॥

দিবোকাঃ পু॰ দেবঃ!! চাতকঃ। ইতি মেদিনী॥

দিবোদাসঃ পু• কাশীরাজঃ।স চন্দ্র ব•শীয ভীনরথ রাজপুত্রঃ। ইতি পদ্মপুরাণ•॥

দিবোন্ডবা দ্রী এলা।ইতি শদার্থ কল্লত্ৰুঃ॥ দিবিজাতে ত্রি॥

দ্বোকাঃ পু॰ দেবঃ । ইত্যমরঃ॥ চাতকঃ। ইতিমেদিনী॥

দিব্য লী লবক । ইতি মেদিনী।।
হরিচন্দন । ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।।
শপথঃ। তভেদা থথা। ধটোংগ্রিকদককৈ বিষণ কোষণ্চ পঞ্চন ।
বিষপ্ত তওুলাঃ প্রোক্তাঃ সপ্তন ।
বিষপ্ত ততুলাঃ প্রোক্তাঃ সপ্তন নবন পর্মান মৃত । দিব্যানির্তানি সর্বাণি নির্দিষ্টানি স্বয়নুবা।।
ইতি দিব্যতত্ত্বে বৃহস্পতিঃ।। এষা দিবরণ তত্ত্ব দে কেষাঞ্চিৎ পরীক্ষা শদে চদুষ্টব্য ।। #।। গলাজল

স্পান পূৰ্বক শপথ ন্তৰ মিখ্যা র এনে দোষ চ যথা। বৃহ্ণণো বচন শুক্র জ্ঞানেশে। জ্ঞানিনাম্বরঃ । গঙ্গাতোয় করে কৃত্বা স্বীকারঞ্চ চকার সঃ। গঙ্গাতোয মূপস্পা निथ्रा युनि वरमञ्जनः। न याञि कालमूजक यावरिव तुक्राण वयः॥ ইতিবুদ্দবৈবর্ত্তে পুকৃতিখণ্ড•॥#॥ গঙ্গাজলাদি স্পর্শ পূর্বক শপথে দোষো যথা। তথা গঙ্গোদক े তানু• গোময• গোরজ তথা । **/শ**ত্যু॰ কা যদি বাসত্যু॰ যদি দিব্যু॰ করোতি যঃ॥ কর্ত্তাচ রৌরব॰ যাতি ।তথা কারবিতা প্রিযে। উভযোঃ भून द्वावृद्धि नंद्र रयानियू नास्टि रेट ॥ তস্যান্তি পুন রাবৃত্তি ব্যাঘু শ্কর যোনিষু । দিব্য করু: কারবিতু ॥ ৰ্জপ পূজা বৃথা यथा ॥ গায়ত্ৰী রহিতস্যাপি নর**কঞ্চোত্ররো**ত্তর**া** ইতি গায়ত্রীতম্বে পঞ্চম পটলঃ॥ कियुः वि भारता छः ॥ किविखवः । क्षा हिनी ॥

त्रिः शृ॰ यदः ॥ गूगगृहः । इठि त्राजनिर्वण्डः॥ ভाववित्मयः। यथा। मृंग् ভावज्यः प्रिवि पित्रं वीत्र श्रम् क्रमार् । पित्रुस प्रवद् श्रारमा বীরশ্চোদ্ধত মানসং॥ সত্যব্রেতাদ্র্র পর্যন্ত দিব্যভাব বিনির্ণবং।
ব্রেতা দাপর পর্যন্ত বীরভাব ইতী
িতে ॥ মদ্য মংস্য তথা মা সং
মু দ্বা দৈথুনমেবচ। শাশান সাধন
ভব্নে চিতা সাধন মেবচ ॥ এতত্তে
কথিত সর্ব দিব্যবীর মত প্রেরে।
দিব্যবীর মত নাস্তি কলিকালে
মুলোচনে। ইতি কালীবিলাস
তম্ব ॥

দিব্যগন্ধ॰ শ্লী লবসং। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

দিব্যগদ্ধঃ পু॰ গদ্ধকঃ। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।৷

দিব্যগন্ধ। জ্ঞী স্থূলৈলা।। মহাচঞ্চ শাকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

रिवार्गायनः शू॰ गन्नर्वः। वर्गगायकः। इंडि नेप्रवार्गायकी॥

দিব্যবন্ধঃ পু: মর্কটঃ। ইতি শব্দনা-লা॥ সুগরুভেদঃ॥ অন্ধে সুলো চনে চ ত্রি। ইতি মেদিনী॥ চসনা ইতি খ্যাতশ্চ॥

দিব্যতেজাঃ জী বান্ধী।ইতিরাজ নির্ঘটঃ।।

দিব্যদোহদ॰ ত্রি উপবাহিত । দেব দেয বস্তু । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ যদীয়তে তুদেবেভ্যে ননোরাজ্য স্য সিদ্ধয়ে। উপযাচিতক দিব্য-দোহদ তদিদু বু পাঃ।। ইতি হারা ধনীয়া

हिरामक्षाम् उ॰ क्ली मिनि छगर। किं गर्भिय गर्भीत माक्षिक मर्क त्रा क्षि । ইতি ता क्षिकिः॥

দিব্যপুরঃ পু॰ করবীরঃ।ইতিরাজ-নির্ঘন্টঃ॥

দিব্যপুত্রা ত্রী মহাদ্রোণা। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥

দিব্যপুদ্দিকা স্ত্রী লোহিতবর্ণার্কর্ক্ষ... । ইতিরয়মালা॥

দিব্যরত্ব॰ ক্লী চিন্তামণিঃ।ইতি শদা-র্থকল্পতকঃ॥

पिवार्त्रथः शृ॰ वितासयानः। एत्य विसानः। ইতি শদর ज्ञावनी।।

দিব্যরসঃ পুশ পারদঃ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

দিব্যবন্ত্রঃ পু॰ সূর্য্যশোভা । ইতি
শদরত্বাবলী ॥ সুন্দরবন্ত্রযুক্তে তি
॥ সুন্দরবন্তে দিবিভববন্তে চত্রী ॥
দিব্যলতা স্ত্রী মর্বালতা। ইতি রাজ-

দিব্যলতা **দ্রী মূর্বালতা। ইতি, রাজ**-নির্ঘণ্টঃ ॥

मिवक्रातः शू॰ भावन्कः। इंडि ज्ञानिर्यणः॥ দিব্যা জী ধাত্রী। ইতি নেদিনী।।
বঙ্গাককোটকী ॥ শতাবরী ॥
মহামেদা॥বুলনী॥ সূলজীরকঃ॥
শেতদূর্বা॥ হরীতকী॥ পুরা। ইতি
রাজনির্ঘটঃ॥

निवर्गानिवर्ग खी उपानवीविष्णमः। इंडि मदार्थकन्नुडमः॥

सिर्वाप्रकः क्षी आकाण बनः। उद शर्यायः। थवाति २ आकाणमानि-नः प्रात्माप्रकः ८ अख्ती क्ष्यकाः

६। अगुप्राः। विस्ताय नाणि ५ ।

श्रुत्रदः। श्रथुप्रदः। श्रंत्मकाः

भ्युत्रदः। श्रथुप्रदः। श्रंत्मकाः

व्याप्रदः। व्रथा गुम्म स्मार्थाः

व्याप्रदः। व्रथा गुम्म स्मार्थाः

व्याप्रदेशः। व्याप्तिः गुम्द्रकः। व्या-व्यम् उम्र गुम्हः। मृद्रवाः प्रदि-नाः विस्ताय क्षमक्षः। मृद्रवाः प्राय्व ध्रम्य उम्र गुम्हः। क्ष्युष्ठः। प्राय्व प्राय्व व्याः। व्याप्त्यः। प्राय्व व्याः। न्युद्रः। सहप्रः। श्रथुदः। सामुद्रः। म्यायस्यकः। हित्रस्थि जम्मुप्तः। म्यायस्यकः। हित्रस्थि जम्मुप्तः। म्यायस्यकः। हित्रस्थि जम्मुप्तः। म्यायस्यकः। हित्रस्थि जाक्षनिर्यकः॥ सिर्विश्वभान्नकः। वि प्रविचाः। हेळ्डा-मृद्रः॥

দিব্যোঘঃ পূ• গুৰুবিশেষঃ। যথা।
নহাদেবো মহাকাল ব্ৰিপুরশ্চৈব
ভৈরবঃ। দিব্যোঘা গুরবঃ প্রোক্তাঃ
সিদ্ধোষান্ কথ্যামি তে।। ইতি

শক্তিরহাকর তঙ্গ ।। অপিচ ।। व्यथजात्रागुकन्वत्कः पृष्टोपृष्टेकव-शुरान् । छक् किला विश्वमाक्ता नीवकरके। व्यथ्वः ॥ दिस्तीयान সিদ্দিদান্ বংস শৃণুদ্বাবহিতো সুদ। । अशिष्ठ। भूगुव - म महाराव गू बन् \_ मूर्गा नम् छेवान्। शतमा श्रा भनाः नन्तः शतस्त्री भूजान्यः॥ कृषः ্কালঃ কলানাথো ধিবেরীষা ভৈর-বাদিকাঃ। ইতি তল্পনারঃ।। দিশ শ ঞ ঔ ওচে। ইতি কবিকন্ন-किन: 11 ७० इंक् मान मा काभनमा ম্পনেপ্যথ। ইতি ততীকাবাণ দুর্গা-ामः ॥ দিশা জ্রী দিক্। ইতি ব্যাকরণ ॥ निनाः जी निक्। ইত্যमत जीकायाः मधुद्रानाथः ॥ দিশ্য জি দিশুববস্তু। ইত্যমর: ॥ দিই ক্লী ভাগ্য । ইত্যমরঃ ৷৷ উপ-দিঙে তি। ইতি ত্রিকাওশেব:।। **पिष्ठेः भू• कामः। इ**ज्जित्रद्वा। माक-िर्द्रित् । देखि **नप**माना ॥ **]** निश्वास्तः भूग मत्रगणा इन्छ। मत्रा मिकिः जी र्वः॥ शतिमानः। इंडि व्यक्ति ॥

मिडेश का व्यानन्तः। ইত্যাतः ॥

ভাপে,ন। যথা। দিইগ্রন্থতে কুক্সিগ-उक्षतः भूमान्। ইভি এভাগবভना हिक्यः जि राउ।। हेक्रुगाहित्कायः ॥ मिर् क व छ विश्वत। रेंछि कवि कन्नक्रमः ॥ मी ७ ड य करा। इंजि कविकन्नक्रमः॥ भी मितिः शुः ही अमः। इंडानदः॥ वृह गाजे शुः। इंजि स्मिति ॥ मीमितिः जि उपिछः। ইकि मस्त्रश वनी ॥ দীধিতিঃ জী কিরণঃ। ইত্যমরঃ ॥ भीक्षी त उक्त नू (स्वत्न।। भीक्षी। ইতি কবিকন্নদ্ৰমঃ॥ मीन· क्ली जगतभूम·। ইভি রাজ-निर्घण्डः ॥ **दीनः कि दित पुर्ध हेळ (प्रदः ॥ छी**ळः । इंकि (मिरिनी।। मीना जी मृतिक**जी। इं**जि सिमिनी॥ मीनातः श्रु वर्गज्या ॥ मुमु। इज्रु शामिरकाष्ट्रः ॥ निक्रशतिमागः । **३७ अतः ॥ मूर्यातर्यप्रयः । ३७** তউীকা সারসুন্দরী ॥ সমগ্রেব-राजार्थः मानवन्तु ॥ लोकिकः ॥ ষাত্রি-শনুত্তিকাপরিমিত কাঞ্চন । ইতি ভরত:।। मीश में ड स् श्र मीशत। इंजि कवि-

## कन्नजगः॥

रीभः भू वर्षिष्ठक्षवरिमिया । ত शर्वायः। गुतीभः र एक् माः ० দীপকঃ ৪ ক জ্লাক্লঃ ৫ শিখাতকঃ ৬ গৃহমণিঃ ৭ জ্যোৎসাবৃক্ষঃ ৮ দশেশ্বনঃ ৯ দোষাতিলকঃ ১০ দো-षामुः ১১ नयतार मदः ১२। ইতি नद्रवावनी ॥ 🗱 ॥ कार्जि न्यारम দীপদানস্য মাছা ব্যু । খ্ৰু-मीभगुभाश बारु कार्जिक हर्नि-शिय। यम्। भूवन माजन मी शनाम মতি ভবেং।। সূর্যগুহে কু ৰক্ষেত্রে नर्मरायाः मिन्युरः। जुना मानमऽ यः भूगाः उपूर्व्ह भीभमानजः॥ ঘূতেন দীপক• যস্ত তিল তৈলেন বা भूनः । ज्ञालययम् नि भाष्म् न अथ-নেধ্ৰে তৃষ্য কিং।তেনেষ্ঠ কবুভিঃ সর্ব কৃত তীর্থাবগাছন । দীপদা-न·क् उ·यन कार्जिकक्मवागुजः॥ তাবন্নজ্জিপাপানি দেছে যিমুনি-**স**ভম। याव<कार्खिकमात्मन मीপ-দান কৃত ভবেং।। তাবন্বর্জন্তি भूगानि ऋर्ग मर्ला तमाउ**ल** । যাবৰু দ্বলতে দীপঃ কাৰ্ত্তিকেকেশ-ৰাগুঙঃ শুষতেত্রাপিপিতৃভিগাঁথা-গীতা মহামুনে।। ভবিষ্যন্তি কুলে

**२**गाके कराहित्व ज्ञा जूवि 1 कार्जिक भीभमोरेन व्यं जायनियाछि কেশবণা অপি নত্তে ভবিষ্যন্তি কুলে मू रहिडा ग्रेमः। मील रानः, का र्डिक-रय माम्य इति ज्रिक्ष ।। गयाया शिखरात्मन क्ठ॰ न श्रीतन भूटि । रैयफालि कार्जिक मर्खा मीन रुद्धि करता रुरतः॥ मीशः मात्राज्ञियं भूबा सुर्रेश চক्षाणिनः। कार्जिक रेज मू निर्मु अन्त्रं का मुख्छ। वय॰ ॥ मञ्ज-शीन कियाशीन मुक्तिशीन जना-र्मन। वुछः मन्त्राः याज् का जित्र मीनमानजः॥ अत्तित् हि महन्त मील म कन्नत्यम् त । मधुम्मन जुडुं -র্থ- কার্ত্তিকে মুনিপুস্ব।। ইতি পামে উত্তরথঙঃ॥ #॥ অপিচ। দাস্যত্ত (स्वरम्वाय भीश भूज्ञार्नुत्लशन । व्यित्र मः म कूल ज्यातिकारभागः जिए्। नदः ॥ कदिवऽज्रुभवामङ সর্বপাতক হানিদ• ৷ ইম্বণ পিতৃণা• वहनः गुज्ञा न्পिङ मखनः ॥ मरमो ह मीशान् विधिवः विकासाय अनविकः । সুगक्र डिल मः न्यूरीन् मीशान् मघ्ड रिञ्चकान् । नर्यभम् मूरिञ्चन मधु কাতসি সম্ভবৈঃ ॥ দীপ পুদানাদ্র-কানন্ধতানিশু সংজ্ঞকান্ ॥ তীর্বা

সভার্য্যাবুন্ধন্ বিষ্ণুলোক মগাত্ত-ज़ः ॥ इं ि वामनপूत्रांग ॥ <a>॥</a> शिश लाष्ट्री दिश्व हम्मं कद्रान स्नारवा यथा। मील॰ न्मृक्षे जू त्या पिति सम কর্মাণি কারবেং। তস্যাপরাক্তি ज्य भाभः भाराजि मानवः॥ उह-\_ শুষ মহাভাগে কথ্যমান মহান্যে। জাগতে ষষ্টিবর্ষাণি কু চীগাত্র পরি-শু তঃ॥ চাণ্ডালস্ গৃহে তত্ৰ এব মেব न मः भयः। वयः जृद्दा जू जः कर्म 'পন ক্ষেত্রে মৃত্যা যদি।।ম ভক্ত শৈচব ীবৈত শুদ্ধে ভাগবতে গৃহে। প্রায-শিভত পুবক্ষ্যামি দীপস্য স্মর্শনা-জুবি ।। তরন্তি মনুজা যেন কই। চাণ্ডাল যোনিয়। যস্য কস্যাপি মা-जन। मूझलंकि व हारभी ॥ वजूर्व ভক্ত মাহার মাকাশ শযনে স্বপেং। দীপ দ্বাপরাধাদৈ তর্ভি মনুজা-ज्वि।। भूठि ज् इ। यथान ताय॰ मम कर्म পথে স্থিতঃ। এতত্তে কথিত দেবি भार्मना< मीशक्त्र जू॥ **म**॰मात -শোগনকৈব যৎক্রা লভতে শ্ভ•। ইতিবরাহপুরাণ•॥ #॥ পুক্ষস্য ' मील निर्वालान सारवा यथा। भील निर्वाशनार श्रांभः क्यां ७ (इ मनार जियः। अविदर्शनवं कात्वन वः भः

নাশো ভবে জুবণাঞ্চাদেবার্থ কল্পিড मीलमा निर्दालन माया यथा । रेनव निर्द्वाभाय मीभः प्रवार्थ मूभ कन्निज्भ मील इंडी ज्यहिकः काणा-নির্বাপকো ভবেং 11 ইত্যেকাদশী তত্ত্বে কালিকাপুরাণ ৷৷ ৠ৷৷ কার্ত্তিক क्क ठञ्चर्मभागः नत्रकनिव्खरय भीभ मान यथ।। नत्रकाय शुमाजवा দীপঃ সংপূজ্য দেবতাঃ । ইতি তিথিতত্ব ধ্ত লিঙ্গুরাণ ॥ 🕸 ॥ श्थिवता मीला न मःशालाः । यथा। मर्बन्महा वमुमजी महत्ज निवृत्त हयः। जकार्येऽ शाम्याउक দীপতাপ স্তথৈব চ ॥ ইত্যেকাদ-শীতত্ব ধৃত কালিকা পুরাণ ।। मी शर्के की वाक गणकातः ॥ मीखि-কার্কেত্রি। ইতিমেদিনী ।। কুন্ধুম॰ । ইতি **শহ**রহাবলী ॥ **# ॥ বাক্**য়া-लकातमा लक्ष्य यथा। भगर्थानाः পুস্ততানা মন্যেষা বা যদা ভবেৎ

। একধর্মাভি সম্বন্ধঃ স্যাত্তদ। তুল্য যোগিতা ॥ অপুস্তত পুস্ততযো **मी পকন্ত निगम्याः । रथा मायि।** वना वल भार धूनाभि भृई व পুসাধ্যতে তেন জগক্তিগীযুণা । সতী চ যোষিৎ পুকৃতিশ্চ নিশ্চলা

भूमा न मर्ज्यकि जनस्ति हिल्।। रेठि नाहिज्यमर्गः ॥ चनिष्ठ । कां जिया गून मुव्र वाहरकुन शाम-न जू। अकब वर्खिना मई वाक्रार्था দীপক দ্ভবেৎ। যথা। ভুমন্তুমর अकात शुः स्काकिन कन धुनिः। **নন্দ চন্দ্র বাতোপি হরন্তি ছদ**য় নৃণা ।। ইতি কাব্যচন্দ্রিকা॥ मी निकः भू॰ यमानी। इं जि तक्षमाना॥ लाठमङकः। ইতি भद्दद्वावली ॥ দীপঃ ৷৷ যেন পক্ষিণান্যে পক্ষিণা গৃহ্যন্তে সঃ। বাজ্ইতি শিকরা ইতি চ ভাষা। ইতি হেমচন্দু:।। 🕸। ज्ञागितिस्भवः । व्ययः इन्नमरञ यजुरगयु विजीयतागः। সूर्यप्रनजा-দিৰ্গতঃ। অস্য জাতিঃ সম্পূৰ্ণ। गृरुख राष्ट्रक्यतः। गान ननगस्र সুীশক্তে সধ্যায়ঃ। অস্ত্রকপণ্যথা । वर्णात्रकः । वज्रः भाष्टेनवर्गः । यन ভূৰণ বৃহনুকামাল্য। মতহন্ত্যা-करा १य॰। वह जी भतिवृज्छ। कम्राविद्याल । व्यक्त्या मीश्रनिर्दा-পনেना क्रकात यय गृह क्षा जी जी ब्रम् । ष्यम् द्रागिगुः शक् यथा । **(एमी ) कार्याम् २ न** ० क्लाद्र। ८ कानता ६ कार्गाणे ६। পুबान्हा हो

যথা। কুন্তলঃ ১ কনলঃ ২ কলিকঃ ৩
কলিলুঃ ১ চন্দাকঃ ৪ কুসুমাঃ ৫ কুসুমাঃ
৫ রামঃ ৬ লহিলঃ ৭ হিমালঃ ৮
তরতমতে অন্য রাগিণ্যা যথা।
কেদারা ১ গৌরা ২ গৌও ৩ গুজারী
৪ কদু গৌ৫। তন্ধতে পুরা যথা।
কুসুমঃ ১ টকঃ ২ নটনারামণঃ ০
বিহাগরাঃ ৪ কিরোদন্তঃ ৫ রহ্মমহলা ৬ রভস্মকলা ৬ মহলাইকঃ ৭ অডানুঃ ৮ আডানা ৮। ইতি
তহকতোলহিন্দাখ্য সংগীতশাস্ত্র
সংগুহঃ ।।

দীপকিউ· শ্লী দীপজাত কচ্ছ্ল 🖟 ইতি শদার্থকল্পত কঃ ।৷

দীপক্পী দ্রী দীপবর্ত্তি। শলিত। ইতি ভাষা। তথপর্য্যায়ঃ। তৈল-মালী ২ দীপখোরী ৩ বিদাহিক। ৪1 ইতি শহুমালা।।

मीन(थाती जी भीनक्नी। इंकि.

भीभधुडः भू ही कब्बून । इंछि कोभद्रः॥

দীপন প্লী তগরস্বা ইতি রব্ননা বা ৷৷ কুছুম ৷ ইতি ত্রিকা ওশেষ্ণা দীপন: পু মধ্রতিখা ৷৷ ভালিঞ্ শাকঃ ৷ ইতি সম্চন্দ্রা ৷৷ কাস- मीभानि

নদাঃ । পলা খুঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ 11 দীপযিতরি ত্রি ।।

मेर् भनी जी मिथिका॥ भागे॥ यवानी । इंजि जाजनिर्यण्यः॥

मीशनीयः श्रुः यवानी। इंडि ताक-निर्घ हैः॥ मीशनयाण्याः वि॥ ॐयद वर्शविष्मयेः। यथा। शिक्षणी शिक्ष-नीगृनः हवः हिक्क नागतः। मीश-नीयः श्रुः वर्गः क्कानिन गमाश्रः।। इंडि हक्फ सः॥ .

न्भिनामनः श्रु मीनवृकः। ইতি
।শুক্ষার্থকল্পতকঃ॥

. দি পিপুরঃ পু• চ**প্সকর্কঃ। ই**ভি রাজনির্যণ্টঃ ॥

मीं गर्कः श्रुष् मी शाधातः। शिवामुक इंडि प्रवृक्षा इंडिंग जाया। उट शर्यप्रायः। मी शेडिकः ट प्राट्या-वृक्षः ७ । इंडि जिका ख्रान्यः ॥ मी शशामशः ८। इंडि न मार्थकन्न-उकः॥

मीशिनिथा जी कक्वः। ইতি नमा-\_र्थ्कन्न उकः॥ भूमीश्रज्ञाना ह ॥ मीशिम्इना जी मीशानी । ইতি महावनी ॥ मीशान्जा जी मुश्रहात्मुनान्विनम्

णोगठालुन कार्डिकम्यामावाम्याः

**मीशिका** 

। यथा। (यय भीभादिका दाङन् খ্যাতা পঞ্চদশী ভূবি । তদ্যা॰ দদ্যান্তেন্দ্ত্ত পিতৃণা বৈ মহা-नत्य।। তত্ৰ कर्मानि यथा। शुप्ताय সন্যে লক্ষ্মী॰ পূজ্যিত্ব। যথা ক্রম॰। मीभवृक्षा खथा कार्यत छकत (हव গৃহেম্বপি ৷৷ চতুম্লথে শাশানেষু नहीं भईं जानूषु । द्क्रमृत्वयू গোঙেষু চত্ত্বরেষু গৃহেষু চ ৷৷ বজৈঃ পুষ্ণৈঃ শোভিতব্যাঃ ক্রয়-বিক্রয ज्मयः । **मीशमाना शतिक**रि পুদোকে তদনন্তর ।। বুলেশান্ ভোজবিত্বাদৌ বিভাজ্য চ বুভুক্ষি-তান্। অলঙ্গতেন ভোক্তব্য নব वर्ष्णाश्राणिना ॥ शिष्म मूं रेष विंगरेषण वासरिव ज्ञेकः मर । ইতি তিথিতম্ব• ॥

मीभानी जी मीभगाना। उर भर्यत्रायः। मीभण्ड्ना २। इंडि स्रातावनी॥ मीभादिजामावामता। स्र्रभर्यत्रायः। यक्तत्राद्धिः २। इंडि जिकाश्रामयः॥

দীপিকা জ্রী মহিস্তাপনীয় শ্রীনিবাস কৃত জ্যোতিগু স্থাবিশেষঃ। যথা। অন্ত: গতবতি মিহিরে ংতিমলিন দোষাকুলে চ গো বিভবে। উদ্বাহা- पित्र मुक्षिगुरुगर्थ ही शिका किय-एड ॥ এত জिना जूदन ठ छ जाउक मुक्ताित ही शिकाः मिर्छा। ताशिशी वित्मयः । मा हिल्लाल ताशमा शही। जमा शान यथा। शुक्तिय काल श्रमण्युविहा शुक्तिश रहा विताल मान वजा । मीन छ मिन्त् विताल मान मूत्र क्याला। किल विताल मान मूत्र क्याला। किल विताल मान मूत्र क्याला। किल हिल्लाह की क निर्माण । जमा शान कालः माराहः। हे जि मही जितासाहा। भू हा निकारा कि।।

रीপিঠা ত্রি দীণ্ডিকর্ত্তা । ইতি ব্যাকরণ ॥

দীও স্নী স্বৰ্ণ।। হিন্তু। ইতি রাজ নির্ঘণ্টঃ।।

शिश्वः श्रु निष्कः॥ त्रिः १३ हिंड ज्ञाकनिर्यण्यः॥

দীপ্তঃ ত্রি নির্ভাসিতঃ॥ দখঃ॥ জ্লি-তঃ। ইতি মেদিনী ॥

দীপ্তক শ্লী ৰণ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। দীপ্তজিন্তা জী পু উন্থাস্থীশৃগালী। ইতি হারাবলী।।

मीश्रिक्षः पू जि॰ इः। ইতি রাজ-নির্যণ্টঃ।।

দীগুরসঃ পু• কিঞুলুকঃ। ইতি শব-চন্দ্রিকা।। रीश्वरकाहनः भू• বিভা**ল:। ইতি** রাজনির্ঘণ্টঃ।।

দীগুলোহ• ক্লা কা•স্য• 1 ইতি রার্ছ-নির্ঘণ্টঃ।।

দীপ্ত। ত্রী লাক্ষণিকার্কঃ । ইতি রঃমানা !!জ্যোভিম্যতী !! সাতলা । ইতিরাজনির্ঘটঃ !!

मिश्राप्तिः शू॰ या छाः। ইতি विकास-শেयः। ठीक्कठेत्राननगुरक वि॥

मीक्षाकः शू॰ , सग्रः। **इंडि भपर**का-यनी ॥

भीक्षाकः शुः विज्ञानः। इति भाष-त्रदावली।।

मीखः जी मीलन । उर्गर्शायः ।

शुं व र कक् ० किः ६ विहे ६ वा

७ वाः १ हिवः ৮ मूर्र ३: ৯ क्राि ६:

० लाि ६: ১० । इं ० जावः ॥ वाग

विगम् जीवुका॥ जिया व्यव्ज्ञां १।

१ हे इ इ क्रिन्दुः ॥ काि इत्व वर्षा

जिला एक काल स्गामिकः ।

उद्योगिकाि विस्नातः शुं । शाहिकः ।

उद्योगिकाि विस्नातः शुं । शाहिकाि वाका।

वाका ॥ का मार । है जि जान
विद्रिः ॥

मीखिकः श्रु॰ मूक्षभाषापत्कः। इंडि . ज्ञानिवंकः॥ मीखाननः गुः म्यंकासमितः। ইতি -द्राजनिर्घण्डः॥

भी পाः পू॰ यामानी ॥ जी तकः। ইতি রাজনির্ঘটঃ।। ন্যুরশিখা। ক্রুউটা ইন্তি খ্যাতা। ইত্যমরঃ॥

मीभाकः द्वी अङ्गारा॥ वगानी॥ বৰ্হিচুডা । ইতি মেদিনী॥

मीलाकः श्रुः व्यवकातः॥यमानी॥ লোচমন্তক: । ইতি ভরত ধৃত রভসঃ॥

দীপুঃ ত্রি দীন্তিবিশিষ্টঃ।ইতিব্যা-क्वराः ॥

. मीर्च वि वायठ । इंडामतः॥ मीर्यः शुः वजानाववृक्तः॥३८विषः। ' ইতি রর্মালা॥ রামশরঃ॥ উঙ্কুঃ । इंकि त्राजनिर्घण्डः ॥ भक्षम वह मश्रम्धेन द्रामयः। यथा। वृन्धिक কন্যা মৃগপতি বণিজো দীৰ্ঘাঃ৷ ইতি জ্যোতিষতত্ব• ॥ দ্বিমাত্রবর্ণঃ । তদ-था। जा हे है स व वे के ।। खहर्ना । ইতি ব্যাকরণ ॥

দীর্ঘকণা জ্রী পৌরজীরকঃ। ইতি त्राक्रनिर्घकः॥

प्रीर्घकण्ठकः पूर वर्तः। इंछिताब--নির্ঘণ্টঃ ॥

रीर्घक्छेकः पुः वक्लको । ইতি

भद्ठिमुका॥ मीर्यकन्तक· क्री म्लक·। इंडि क्राब-নিৰ্ঘণ্টঃ ॥ मीर्घकितिका जी मूवनी। देखि द्राज-

निर्घकः॥

नीर्घकक्रतः शुः वकः। ইতি **ताब**-निर्घण्डे ॥

मीर्यका ७: श्रु॰ ७ ७ ३ १ । ই छि द्वाब-निर्घण्डः॥

भीर्चकाञ्चा **जी भाजानगज्**दी**नजा।** ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

मीर्घकीनः शु· व्यक्ताठेव्कः। ইতি त्राजनिर्घण्टः ॥

नीर्यकीनकः पु॰ व्यक्तित्रवृक्तः। ইতি জটাধরঃ ॥

रीर्यकृतक॰ क्ली द्राष्ट्राम॰। ই**छि** द्राब-निर्घणेः॥

দীর্ঘকেশঃ পু॰ ভল্লুকঃ। ইন্ডি রাজ-निर्वचेः॥ वाग्ठकक वि॥

नीर्वाकाका जी नीर्वाकारिका। ইত্যমরটাকাযা• ভরতঃ॥

**नीर्यकाविका जी विशायिका। विशृक्** ইতি খ্যাতা। তংপর্য্যায়ঃ। দুর্নাদা ২ । ইত্যমরঃ॥

मीर्घगिः शू· উद्धुः । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ 11

गजिभा है । इंडि॥ मीर्वगृष्टिः शूः त्राष्ट्रियिकः ॥

नीन(कोषः। इंजि ताजनिर्घकः॥ भीर्घराविकः शु॰ উद्धः। इंडिमस्याना॥ मीर्घ**बङ्गलः शु॰ जङ्गानमञ्**नाः। ইতি नक्यान। ॥

मीर्घकद्वः शु॰ वकः। ইতি विकाख-শেষঃ ॥ উষ্ট্রঃ । ইতি জটাধরঃ ॥ আযতজানুযুক্তে ত্রি।।

मीर्घि ञ्चः शु<sup>भ</sup> मर्भः। ইতি হেমচन्द्रः॥ भीर्य**ङः পু॰ তালঃ। ইতি শ**দার্থ-कन्नजरः॥

मीर्याञ्चा को ककी। इंकि **म**द-माना॥

দীর্যসুপা জ্রী চুচুদ্রী।ইতিকো-याउन ॥

मीर्घज्गः भुः भिन्नवारः। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥

भीर्षर७: शु॰ अत्र धृकः। ইতি ভাব-श्कामः॥

गीर्यम् ७कः भू॰ अन्न ७ वृक्तः। ইতি किटाध्यः ॥

नौर्घर औ भातकी। ইতি রাজ-निर्घकः॥

मौर्चमणी पूर পণ্ডिजः। इकामदः॥

गृथुः। ইতি नम्बङ्गावली ॥ उल्रुकः। ইতি রাজনিষ্ট্রা দূর দর্শকে खि:। मीर्चभीवः शु॰ উष्टुः। इंजि एस्मान्युः॥ मीर्चमृष्टिः शु॰ मीर्चनमी । इंकि रनागुषः॥

रीर्घकः शुः जालक्कः। इंडि नपः ठिन्द्रका ॥

দীর্ব কনঃ পু॰ শালালিঃ। ইতি রাজ निर्घक्तः ॥

मीर्घनामः शू॰ मङ्गः । **इ**छि রाজ निर्घण्डः ॥

**मीर्घगान** क्ली में রাজনির্ঘণ্টঃ॥

नीर्यनानः पु॰ वृज्ख्खः॥ यावनानः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ मीर्चनिम्। जी मृजूः । इंजि रूमहन्मुः ii **रीर्यभागिका जी नजाकनियमिय** । পুঁদুল ইতি ভাষা। অন্য গুণাঃ। প্রিশাহণ কটুরণ বিষ্টস্তিত্বণ। শুকরণ । বাযু পিত্ত শ্লেখ্য কচি ভেদ কারি-ব । মধুরত্ব । শীতলত্বঞ্চ । ইতি রাজবল্পভঃ॥

मीर्चभवः भू• ताजभना थुः ॥ विषु कनः ॥ इतिमर्जः ॥ कुन्सतः ॥ **ञानः। इंछि রাজনির্ঘটঃ॥ কুপী**ः লুঃ। ইক্তিভাবপুকাশঃ॥ भीर्चभावकः भूः त्रकनमूनः॥ वत्र ७:॥

্ক্লিজনা। বেতসঃ। ইতি রাজ-ৈ নির্ঘণ্টঃ ॥ করীরবৃক্ষঃ। ইতি শব-ঁ ছিন্দুকা।। জলজমধ্কঃ। ইতি জটা-ধরঃ॥ লশুনঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ रिर्विপতা দ্রী চিত্রপর্ণিকা। চাকুলি-वालितः ॥ दूबकरूः । ইতি ররমা-লা।। গন্ধপত্রা।। কেতকী।। ডোডী-কুপঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ দীর্ঘপত্রিকা স্ত্রী খেতবচা॥ যৃতস্ব-भाती ॥ नामशर्गी । ইতি ताम-)निर्घण्डः ॥ দীৰ্বপত্ৰী প্ৰী পলাশীলতা।। মহা-চঞ্চশাকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ यीचननी हो नृत्निनी । ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥ দীর্ঘপল্লবঃ পু॰ শণকৃক্ষঃ।ইতি রাজ-নিৰ্ঘণ্টঃ। শোষত ছদে শ্লী তম্বতি ত্ৰি।। मीर्घभाट भू॰ ककभकी। ইতি मद-त्रज्ञावनी ॥ দীর্যপাদঃ পু॰ কম্বপক্ষী। ইতিছেন-क्नुः॥ मीर्घनामनाः भूग खानः॥ भूगः। ইতি तुर्विनर्यकेः ॥ দীর্ষপৃষ্ঠ: পু॰ সর্প:।ইত্যমর:॥ দীর্ঘকলঃ পু॰ আর্থধৃকঃ। ইতি क्राजनिर्घणः ॥

मीर्यात्र। मीर्यक्तकः भू॰ व्यगत्राज्ञाः। इंडि রাজনির্ঘণ मीर्यकना खी जजूका।। कशिनमुक्ता । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ मीर्यमारुवः भू खी रूडी। इंछि ত্রিকা ওপেকঃ। দীর্যমূলঃ পু॰ মোরটলতা।। বিশান্তর-বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। मीर्घम्ण ही नामन्जक । ইতি রাজ-निर्यकः ॥ मीर्यम्यक॰ क्री मृगक॰। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥ रीमम्ला जी नागाना ॥ नान-পণी । ইতি রয়ুমালা।। रीर्वभूमी जी **मुत्राम**छ। ইতি **শ**र याना॥ দীর্ঘরদঃ পু• শ্করঃ। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ॥ আযতদন্তে ত্রি॥ मीर्घत्रमनः शू॰ मर्शः । ইতি **अ**प-म्बिका॥ नीर्यतामा जी इतिमा। ইতি রাজ-निर्घक्तः ॥ দীর্ঘরাত্র ব্লী চিরকাল । ইতি विका ওশেষঃ॥ দীর্ঘানিশাচ॥ नीर्यात्रामा पु॰ छल्ल्यः। इति मनार्थः কল্পতৰ: 11

শীর্বরোহিষক লী কভ্নভেদঃ। সুগনির্ভাবিশেষঃ। বডরোহিষ ইতি
ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। দৃঢকাও ২
দৃচহদ ৩ যক্তেই ৪ দীর্ঘনাল ৫
তিক্তসার ৬। অস্যত্ত্যাঃ। তিক্তত্ব । কটুর । উষ্ণর । কফ বাত
ভূত্ত্যুহ বিষ নাশির । বুণ ক্ষত
বিরোপণর্ক্ষ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।
দীর্ঘব জঃ পু নলঃ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ। আযতে তৃণগুজে ললেচ।।
দীর্ঘব জঃ পু জী হন্তী। ইতি শ্বনালা।।

मीर्घविष्ट्रका खी कृष्टीतः। ইতি শব্দ-र्थकन्नु उत्तः॥

मिर्घव की बी भएन मुवा की ॥ भाठा-व गक्डी ॥ भवाभी । इंडि ताब-निर्घन्टः ॥ आयठाव छ। ॥

नीर्घवाणा जी ठमती। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

मीर्घवृष्ठः श्रुः स्माताकवृक्तः। इन्छा-भवः॥

भीर्घव्षकः श्रूर त्मातागकः। ইতি नय-गाना ॥ त्माताकशुरुकः । ইতি ज्ञाकिपर्यकः॥

नीर्घवृष्ठा की इन्मुहिर्डिं। इंडि जाकनिर्घण्डः॥ **बीर्यम्** 

रीर्घवृष्टिका जी भ्रेमाश्री । इंडि

नीर्घ**मतः प्र** यावनानः । ইতি त्राकः निर्मणेः॥

रीर्घमाथः श्रु॰ भगक्कः। ইতি রাজ-निर्घकः॥ भागव्कः। ইতি भद-চন্দ্রি।।

पीर्यमाथिका जी नीनामीकृषः। ইতি जाजनिर्वण्यः॥

দীর্ঘশিষ্কিকঃ পু• ক্ষবঃ।ইতিরাজ-নির্ঘটঃ॥

नीर्घण्कक॰ श्ली जाजामः। ইতি जाज-निर्घण्डः॥

रीर्घमङ्गः जि रीर्घाकः। ইতি वताक-त्रगः ॥

निर्ममिक क्री भक्षे । इंडि वर्राक्र १ ।। निर्ममिक क्री यक्कि विद्यापक ।। जीर्थ-विस्मयः। इंडि भक्षाध्यक व्यवस्था। निर्मम् विक्र क्षेत्र क्षेत्र व्यवस्था ।। निर्मम् विक्र शिक्षमिक ।।

मीर्घमृवः वि वितिकियः । ইত্যमतः ॥ श्रीर्घमृत्रक छत्यः मर्बक्समृ शा-र्थितः । मीर्घमृत्रम् मृष्ठाः कर्य् दा-वितः । मीर्घमृत्रम् मृष्ठाः कर्य् दा-वित्र कुत्वः छत्यः ॥ त्रारम् स्वरूपः स्वर क्लार्ट् भारभव कर्याण । अभित्य रिव कर्ल्य । भीर्घमृत्रम् भाम्यः ॥ ইতিমং স্থাপুরাণ।। বিস্তেজভৌচ।।

্বী তি দীর্ঘস্তঃ। ইতি হলা- ॥

ব্যুধঃ।।
দীর্ঘস্ক নঃ পুণ তালবৃক্ষঃ। ইতি রাজ-

দীর্ঘক্ষাঃ পু• ভালবৃক্ষঃ। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।।

मीर्घा की शृनिभगे । इंडि ताज-निर्घकः॥

দীর্ঘাধৃণঃ ত্রি লেখহার:। ধাউডিযা ইতি ভাষা ॥ উট্টে পু'। ইতি নেদিনী॥

শীর্ঘায়ঃ পু• শাল্মলিক্ষঃ।। কাকঃ।। জীবকক্ষঃ।। নাকণ্ডেযঃ।। চিরজী-বিনি ত্রি। ইতি মেদিনী।।

मिर्चायुथः शु॰ कृष्ठाजः। ইতি जिका ख-(भवः॥ भ्कतः। ইতি भक्तभावा॥ मिर्चायुष्ठः शृ॰ (धठमन्मातकः। ইতি ताजिश्वंगः॥

रीवानकं भू (यज्यनात्रकः। इंडि त्राजनिर्वकः॥

বীর্ষিকা জ্রী ত্রিশতখনুঃপরিমিতর লাশফ । দীঘি ইতি ভাষা। তৎ পর্য্যায়: । বালী ২ । ইত্যনরঃ ॥ জিলা শুণাং । শুকুরু । কটুরু । কারত্ব । পিত্রলম্ব । কফ বাত নাশির্ক ॥ হিলুপত্রী। ইতি রাজ-নির্যাটঃ ॥ मीर्चर्वाकः शृ उक्ती। इंडि ताज-निर्वण्डः॥

দীর্ণঃ ত্রি বিদারিতঃ। ভীতঃ। ইতি মেদিনী।।

मीबिः श्र॰ किकीनिविः। ইতি **भद**-गाना।।

मूं वेऽ निर्विथः ॥ मूःथः ॥ निन्ता ॥

चवरक्रभः । ইতি मूर्गामाम भ्रु भूकरवाज्यसम्बद्धः ॥

দুং ব্য দুঃথভাবন ॥ কোপঃ। ইতি দুর্গাদাস ধৃত মেদিনী॥

দু • গতৌ। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ ॥
দু টু ওন অনুতাপে। ইতি কবিকল্পদুমঃ ॥

मुःक्षः श्रुः চোরनामशक्षमृवऽः। ইতি ब्राजनिर्घण्टः॥

দুংখ ত ক দুংখক্তৌ। ইতি কবিকন্ন-জনঃ ॥

मू:थ॰ क्री मः मातः। ইতি जिका ख-শেষः॥ মনোধর্মবিশেষः॥ न।य মতে আয় গুণ ভেদः। তং অর্থর্ম জন্যং সচেত্রসাং পুতিকূলং। ইতি ভাষাপরিছেদ:॥ তং প্রর্যায়ঃ। শীড়া২ বাধা ১ ব্যথা ৪ অমানস্যং প্রস্তিজ ৬ কষ্ট ৭ কৃ ছু॰ ৮ আভিল ১ । ভীল ১ । ইত্যমরঃ॥ অর্ডিঃ ১০

चार्जिः ১১ भीष्ठन• ১२ चवाधा ५०वा-थन॰ ७९ जामनमा ७० जामानमा ७५ विवाधन २१ भी फिंड > ३५ विष्ट्रेन ১৯। ইতি শবর গ্লাবলী॥ 🛊 ॥ সুখ॰ मुःशंक इर्घक लाकक नक्नानय । यया म् डक उइक या शिनाम नि मूर्च-ভ॰।। ইতি বুদ্ধবৈবর্ত্তে ঐকৃষ্জন্ম-थ७ ।। क्ष्मा मुश्यामवः भुवकामि ত हृ पूत्र व সুন্ধরে । উচিতেনোপচা-जिन मुःथ॰ भाक विनामन॰ ॥ **ज**र-ক্ষার কৃতো নিত্য নরে। गোহেন চা-বৃতঃ। যে মা॰ নৈব পুপদ্যন্তে ততো দুংখতরমু কিং।। সর্বাশী সর্ববিক্তেতা ন্মকার বিবর্জিতঃ।যেচমাণ ন পুপ-'দ্যন্তে ততে। দুঃখতরনু কিং॥ সর্বামা-নি তু সিদ্ধানি পাকভেদন্ত কারযেৎ। অবৈশ্বদেব নরো হশুন্তি তত্র দুঃখ তরমু কিং॥পুাধকালে বৈশ্বদেবে দৃষ্ট• ষতিথি মাগত । অদহা তস্য যো ভুদ্ধকে তত্র দুংথতরমু কি॰ ॥ অসম্ভষ্ট स्र दियरमऽ भन्नमान्नाज्ञिमर्पकः । পরোপতাপী মন্দান্মা তত্র দুঃখ जब्रम् कि ।। अक्द्रायू ईव कर्म गूर् সম্বসতে নরঃ। মৃত্যুকাল বশংপু। প্র छव पूःथजतम् कि॰ ॥ इस्राय तथ यानानि शह्यानानि शक्या छ। नरेव

তস্যাসূতঃ পৃষ্ঠে উত্ত দুঃখতনীৰ কিং ৷৷ অশুস্তি পিশিত কৈটিৎ ঘৃতপা লি সন্বিতং। শুঞ্চান্ধং কেচিদশুভি ত্র দুংখতরনু কিং ॥ বরবজাবৃত্তাং শ্ব্যাণ স্বাসেবন্তি ভূষিতাঃ ৷ কেচিং তৃণেষু শেরন্তে ততো দুঃখ তরমু কি॰ ॥ বিদ্বান্ কৃতী ভণজ্ঞ । সর্বশান্ত বিশারদঃ ৷ কেচিমূকাত্র দৃশ্যন্তে তত্র দুঃখতরমু কিং।। বিদ্যমা-নে ধনেকেচিৎকৃপণা ভৌগবর্জিতাঃ ৷ দরিদুো জায়তে দাক্ত তত্র দুঃশ্ব **उत्रमू किशाशूक्षम**ाद्धर उत्या রেকা**ণ পুশ'-স**ফে**।** একাপি দুর্ভগা তত্র ততো দুঃখতরনু কি॰॥ লক্ষা জ্ নানুষী সংজ্ঞাং পঞ্ভূত সমন্তি । । गामित न शुश्रम् प्रस्तुः क्रिका मुःथ-তরমু কি ।। লব্বা ব্রাহ্মঞ্ ভাবস্ত बया वर्गाः मूमश्रम । भानिकर्मतका হাস স্ততো দুংখতর দু কিংয়া এতত্তে कथिउ॰ उत् पुश्थ कर्म वि नेक्य । সর্বভূত হিতার্থায় যদ্ব্যা শরিপ্ছ ১-তো৷ ইতি বরাহপুরাশ্যা 🗱 🗓 দুঃখ-मानि यथा। शात्रञ्जुर ३ जाविहर ব্যাধিঃ ৩ মানচ্যুতিঃ ৪ শবুঃ ৫ क्छार्या ७ निःवः १ क्यामवानः + ष्ट्रश्वाभित्यवनः २ वङ्कन्राः ४० वृष्ट्

मुल्ला

পরগৃহবাসঃ ১২ বর্ষাপুরাসঃ

তি ভার্যাদ্য ১৪ প্রভৃত্যঃ ১৫

দুর্হলকরণককৃষিঃ ১৬। ইতি কবিকল্পলতা ।।

দুংথদোহ্যা জী দুর্দোহণবী । তৎ
পর্য্যায়ঃ করটা ২ । ইতিহেসচন্দুঃ।।

দুঃথিতঃ ত্রি দুঃখী । দুঃখ ধাতোঃ ॥

কর্ত্তরি ক্তপুত্যয়ঃ ।। দুঃখ জাত্যস্যেতিইতপুত্যয়ে দাপি।। ভাবেক্তে

দুঃখ তত্র ল্লী ।।

पूर्शी जि पूर्थानिकः। पूर्थं विष्ठाक श्राजार्थं निन्धुकायः॥ पूर्वगम् वा निन्धनीयः। क्रिश्मायः। निःषगं र गर्हाः ०। ইতামतः॥ पूर्वमः जि सम्माक्षमः। ইতি जिला-खान्याः॥ पूर्वमः। पूर्वमः। पूर्वमः। पूर्वमः। पूर्वमः। पूर्वमः। पूर्वमः।

मूः माधी शुः/सिवादिकः । ইতি नदः गावा ॥ मूः माध्यः बिमूः थनिज्ञाम् ॥ पूः थन-

नाध्राक्र विद्रान्त्रिक यः ॥

দুং ছি দুর্গতঃ ।। মূর্থঃ ।। দঃখেন ॥
তিষ্ঠতি যঃ । ইতি নেদিনী ।। লুকঃ ।
ইতি শবার্থকল্পতকঃ ।।
দুঃস্পর্নাঃ পু দুরালভা । ইত্যমরঃ ।।

मुख

লতাকরঞ্জঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ !!
খরস্পর্শে ত্রি। ইতি নেদিনী !!
দুংস্পর্শা ত্রী কপিকছুঃ !! আকাশবল্লী !! কণ্টকারী !! দুরালভা !
ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ !!
দুংস্টোঃ পুশ শক্তভেদঃ। ইতি হেমচন্দুঃ !!
দুক্লণ ল্লী কৌমবন্তা !! সূক্ষবন্তা !
ইতি নেদিনী !!
দুগুলণ ল্লী দুক্লণ ! পউবন্তা ! ইতি

व्यक्तुः॥ দুঁশ ল্লী জ্রীজাতিস্তননিঃস্তদুব্দুব্য विल्मियः । मूथ ইতি ভাষা । তৎ পর্য্যায়ঃ। ক্ষার > প্রায়্য • ৩ উপ-স্যুণ ৪ স্তন্যুণ ৫ পথঃ ৬ অমৃতণ ৭ ৷ इं 🗗 রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বালজীবন ৮। ইতি ভাবপুকাশঃ॥ অস্য সামান্য खनाः । सामूब्रमञ्जा त्रिकाद्गः। ७ हाः কারির•। ধাতুবর্দ্ধনত্ত্ব•। বাতপিত্ত रुतञ् । द्यु (द्वु । (भूषा च ज । ७४-दः। भी उनदः। भिष्ठेकारहेख्य खक इक ॥ अ॥ (गा मू अखनाः। भूगन थाद्रकद्गर वनागुः शूम्यव मूक কারিহণ। দেব্যহণ। রক্তপিভরোগ वायू नान्तिवः। तमायनद्यकः॥ 🤏 ॥ **ছात्री पूषल्पाः। मधुतद्वः। मीठद्वः।** 

মলুবদান্নি কারিত্ব। রক্ত পিড় বি-কার স্বাসকাস সর্বদোয নাশিত্বঞ্চ ।। 🟶 ।। (गयी मुख खनाः ॥ खकन्नः। স্বানুত্বণ রিশ্বরণ উষ্ণত্বণ কফ পিত্ত नामिज्यः॥ अ॥ नाहिय मूथः खनाः। অতিরিধ্বর । নিদ্যুকারির । অগ্নি नानिद्ध ॥ 🕸 ॥ उड्डी मुक्त खगाः। ককরণ। উঞ্চরণ। শোথ বাত কক मानिद्वाक्षा अयो हुम अवाः। मनवगर्व । मधुत्राम्यतमद्व । नियुद्ध । ।। क ॥ रुखिनी मुक्करणाः। मधुत्रवः। শুক্র কারিত্ব । ক্যাথানুরসত্ব । खकवृक्ष ॥ क्षा मान्य पूर्व खनाः । পুাণধারকর্ণ। শরীরহিত কারিত্ব॰ । বৃ•হণত্ব•। তৃপ্তিজনকত্বঞ্চ ।। 🕸 ॥ পুত্যে কালে গো দুখা পান গুণাঃ। अक्ष १। विश्वे शिद्धः। मूर्जत द्वः। छ माट मूर्यत्रस्याट शतःयानः यानाम् নেব বা উত্তীৰ্য্য পয়ে৷ গু৷ ছং । তং ११४९ मीशन वघु ॥ 🕸 ॥ विवयमा वानवर्गानाः शयः (नायनः । अक বৰ্ণ বৎস গো দু'শ্ব শ্বেতবৰ্ণ কৃষ্ণবৰ্ণ গো দুগঞ্ পুশস্ত ৷৷ 🍇 ৷৷ ইক্ষু ভক্ষক মাৰ পণভক্ষকোজ্ব শৃঙ্গ গো দুখা পিকুমপক্ষা হিত কারক ।। # ॥ পয়ুর্গ বিত দুক্ষণ্ডণাঃ। গুরুত্ব•। বিষ্ট-

खिद्र-। पूर्कत दक्ष ॥ #॥ जान मृत्र स्थान । श्री विषय विषय । श्री विषय विषय । श्री विषय विषय । श्री व्याप विषय । श्री व्रायय । श्री

तः व्हानाः मृजनी ज नाहः ।

(माहास्त्री जः निहसी श्रान्ताः गवादः
धारतासः निहः शुनसः। । क्षा व्हारः
व्ः हा निह वर्षनकतः श्राह शिकः
श्राह निह वर्षनकतः श्राह शिकः
श्राह निह नः। वालाः वहिकतः
वर्षा निह नः। क्षा निह न्याः
वर्षा निह स्वरः

विखाशमः नामू विजः मनानाः 🗯 ॥ जीर्ग ज्ञात करक कीरा कीत মুনাদন্তোপম। তদেব তুৰণে গী-ত॰ विषवषास्त्रि मानूष॰ ॥ # ॥ ऋीत ক্বাথ গুণঃ। চতুর্থ ভাগ• সলিল• निशाय रञ्जाचनावर्जिज मुजम॰ ७९। यर्वानयः वन शृष्टि काति वीर्र्श्युरः क्रीत मिल्युमाउ॰ ॥ # ॥ गराउ॰ भू बीह् काल गुरामभन्नाव्ह खू गी-হিন্ । ক্রার সশ্কর পথ্য যদা-का बाद्ध महीना ॥ 🗱 ॥ क्वीत म जू গ্ৰী ক্ৰমপাত্ত তত্ত্ব নৈতন্ত্ৰ ণেন নার্ছে । পিপ্তান্ন সধানক নাষ मूद्ग का गाउकी कन्म कला मिरेक मह।। তথাচা মৎস্য সাণ্স গুডমুদ্দ মূলকৈ সংমাবহার সেবিত পশঃ। শাক জামবরস্থাদি সেবিত মার্যত্যবুধ मामु नर्भ १ ।। क्षा निका मीठ छक क्रीतः मक्कालः न (अवरयः । मीश्वर-नि अक्ष मन्ति मन्ति मन्ति नर्द्राम्य ह 11 # 11 নি**ট**্যন্তীবৃাগ্নিনা সেব্যু সুপত্ন गाहियः श्रायः । श्रूप्रां विश्व वाजवः मार्व ब्रह्म के विवर्षन ।। # ।। की तः गवाः ारम मध्राः कातः नवंशुम्ञानाः 1 ৰুক্তঞ্চ পিত্ত নাহ্ করোতিরক্তানয় প্রক্তে।। # ।। মধুর বিদোষ শমন

क्रीत्र भश्र भू मृजाना । लवन मधूद्र ক্ষীর॰ বিদাহ জনন॰ চিরপুস্তানা॰ ॥ खनहोन निःनात सीत पुरम शुमृजानाः । मध्य वयमाः तमायन मूक निष्ठ पूर्वन उद्याना ।। जामा गाम वर्ग ह्या ॰ छिर्दिशीनाक रूट शयः । তন্দাহি লবণ ক্ষীর মধুর পিত্ত **(मा**षङ्८॥श्रा मुकानुः मी उत्तः सार् ব্ষ্যু বর্ণকর ওক। বাত পিত্তা**পহ**ণ ৰুচ্যু বৃ•হণ বলবৰ্দ্ধন ৷ ৷ ইতি রাজ-নির্যন্টঃ॥ 🗱 ॥ সথ ভাবপুকাশোক্ত मागान। मुक्ष खनाः। मुक्क मुगद्दत নিশ্ব॰ বাত পিত্ত ইর॰ সর॰। স শুক্রকরণ শীত সাত্ম্য সর্শরীরি-गाः ॥ जीवनः दृःहगः वनाः स्मराः বাজীকর পরণ ব্যঃস্থাপক মাগুষ্ড সন্ধিকারি রসায়ন ।। বিরেক বাস্তি বস্তীনা তুল্য মোজো বিবৰ্দ্ধন ৷ জীৰ্ণ **ज्रत गर्नाताल लाय गृही जुरग**-ষুচ।। গুহন্যা॰ পা গুরোগে চ দাহে **ञ्**षि रूपागंख। শ्लापावर्ड छल्पयू বভিরোগে গুদ্বুঙ্কুরে ৷৷ রক্তপিতাতি नात ह यानिताल मुत्न क्रम । गर्ड স্থাবে চ সতত হিত গুনিবরৈঃ মৃত ।। বাল বৃদ্ধ কত ক্ষীণাঃ কুদ্যবায **কৃশাশ্চ যে।তেভ্যঃ সদাতিশযিত**॰

হিত মেতদুদাঙ্**ত ।। ইতি ভাব-**পুকাশঃ॥

দুখঃ ত্রি পুপ্রিতঃ। ইতিমেদিনী।। क्ञलाङ्क ॥ (नाङ्व क्ली ॥ मुक्ककृशिका जी शिष्ठकविष्मयः। यथा তণ্ডলচ্ন বিমিশ্রিত নষ্টকীরেণ जान्मुलिष्ट्रिम। मृष्क्लिकाः विमर्गा-ভাঞ্চ পচেৎ সর্পিষা সম্যক্।। অথ তা॰ করোতি মধ্যা॰ ঘনপয়সা পূর্ণ গর্ভাঞ্চ। শউক মূদ্রিত বদনাণ তগু মৃতেন পক্ষদনাঞ্চ। অতিপাণ্ডু খ-ওপাকে সুগয়েৎ কপূরি বাসিতে ब्रम्बः ॥ अमेत्रखनाः । अथ मूक কূপিকা সা বল্যা পিত্তানিলাপহা ব্ষ্যা শীতা গুৱী শুক্রকরী তর্পণী क्ठा। विस्थािक काय शूष्टि॰ मृष्टि॰ । দ্রপুসায়ণী সুচির ।। ইতি ভাব-

मुक्कानीय॰ क्ली मुक्कागुः॥ क्कीतरकनः । ইতি भिरिनी ॥ पूथागु॰ । ইতি হেন্চন্দুঃ 11

পুকাশঃ 11

দুগ্দপাচন ল্লী দুগ্দপ্তাকপাত। ত পর্য্যায়ঃ। বজুক ২। ইতি হারা-वनी ॥

্গোলা ইতি ভাষ। । তংপর্য্যায়ঃ । । े কবিকল্পলতা ॥

म्भागागकः २ मूकामा ७ की ही ह (गारमसमिजः ६ वज्जा उः ७ मी ५ कः १ पूर्वी ৮ कीत्रक्वतः २। यहा खनाः। कठादः। देवमूकदः। इत-পিত্ত হন্তোগ শূল কাসাধ্যান বিনা-मिज्य । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

पृष्कपृही जी वृक्षविष्णयः। मुक्षाशया ইতি খ্যাতা। তৎ পর্য্যায়ঃ। সেব-कालुः २ निमा ७ जका ८ नगहती ৫। ইতি শদচন্দ্রিকা।।

দুখাফেনঃ পু• ক্ষীরহিগুরিঃ। তৎ-পर्यत्रयः। भार्कतः २। इंछि त्राज-निर्घ छै: ॥

मुक्षाकनी जी कृपुक्रशिविषयः। उ পर्यक्रायः। शयः किनी २ किनमूका ३ প্রবিধনী ও ল্তারিঃ ৫ সুণকেত্রী ৬ গোঙাপণী १। অস্যুত্ত भार। কটুত্ব। । তিজ্জ । শিশির রূপ। বিষ রুণ নাশিত্ব । কচ্যত্ব । যুক্তক্রেসায় ত্বঞ্চ। ইতি রাজনিষ্টঃ।

पूर्ववीका की यावनानाम अक्ञा उछ তপুল চিপিটঃ । অ্স্ট্রা সুনধুর द । पूर्ध द द । वीय श्रिके দাতৃত্বঞ। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

मूक्षभाषाः भू॰ तृक्षिविः भषः। भित्र- मूक्षािक्ष उनयं। जी लक्षीः । इंडि

দুক্ষাশনা পু॰ দক্ষপাষাণঃ। ইতি र्त्त्रीकिनिर्घणेः॥

দুক্ষাকঃ পূ॰ উপলবিশেষঃ। ইতি नदार्थकन्नुउकः॥

चूषिका जी वृक्कवित्नवः। मूथी मूथा क्रीतर हेि 5 जाय।। उर्भर्गायः । श्रापुननी र की दावी अकी दिनी ८। जन्म अनाः। डेक्द्रः। अन्द्रः। ৰক্ষৰ । বাতলক। গর্ভকারিব । बाहूकीबद्द । करूँ दु॰। তিজ दृ॰। মল মূতাৎসর্গকারিয়ণ পটুরণ। बामूद्रेशे विश्वे सिद्धाः वृष्ठ द्वः। कक হ্ব গ্রুমি নাশি বৃঞ্চ। ইতি ভাব পুকাশঃ॥ বৃক্ষভেদঃ। গদ্ধিকা ইতি थाज। उर्भर्गायः । উउना २ युग्मकना 🛊 উख्मकनिनी ८। ইতি त ३गा**लभा** 

দুষ্ণিনিকা 🔃 রক্তাপামার্গঃ। ইতি রাজনির্যক্ষণা

मूकी की लीतानी। इंडियारिनी।। দুপাৰ 👣। ইতি রাজনির্ঘটিঃ।। मूहकः शुर्भाता नाम गन्न मुवारा विहा ক্ষাইতিমেদিনী॥ 🕆

पूर्णिः जी पूजिः। कह्नी। ইত্যমর प्रैकाया॰ क्रोममू**क**हेः ॥

मूक्ष्णः श्रृ॰ पृक्षु<del>ण्यभाः। हेवू</del>ानामि

मूक्तमः शु॰ इति १ शना खुः। इठ । भनः॥ मुन्प्रमः शुः, पून्मु जिः। ইতি भपत्रशा-

দুনদুঃ পু॰ বসুদেবঃ। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ॥ मृन्मू ভिवान १ । ইতি नमः त्रश्वनी ॥

पून्मु जिः शु॰ वृष्ट्यकृ । उर्शर्गा विः। ভেরী ২ আনকঃ ৩। ইত্যমরঃ॥ वक्षाः ॥ देवजारजनः । इजि स्मिनी ॥ রক্ষোভেদঃ॥ বাদ্যভেদঃ। ইতি भदत्रश्वावनी ॥ विषः। ইতি इन-ठन्मुः ॥

দুন্দুভিঃ স্ত্রী অক্ষঃ। পাশকঃ। ইত্য মরঃ॥ অক্ষে পাশক বিষয়ে দান-বিশেষো বিভি ইতি খ্যাতঃ। ইতি क्टिंट ॥ अक विन्मू विक परे । ইতি রভসঃ।। বিন্দৃত্বিত চতুল্লার্থ . স্বর্ণ কাদি ময় দুয়তোপকরণ পা-🗆 শটী ইতি খ্যাতা। ইতি কেচিৎ 🛭 ইঙ্গি ভট্টাকাযাণ ভরতঃ।।

पृनम्भातः श्रृ श्रृक्ष्मातः। इठि भदा-र्थकन्नठकः॥

्रकः वि पूर्विष्यः। ইতি भदार्थ । पूत्रम्थे क्षी पूर्वागाः। ইতি স্তিতক্ষে।

मूत्रकः शुः अभयः। ইত্যমরः॥ मूत्र छिगुरुः शुः अभाभार्गः। ইতি ता जनिर्य हैः ॥ मूःथगुरश् वि ॥ पूर्विणुका जी किंगिकहुः॥ पूर्वा नजा। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। দুরাকঃ পু• শ্লেছভেনঃ। ইতুগোদি-কোষঃ 11 नुताहातः शुः विकलाहत्रगः। यथा। शास्त्र किंगूर्ग चात्र मद्राः भूग्र-বিবর্জিতাঃ। দুরাচার রতাঃ সর্বে রাগায়ণ ৷৷ নিন্দি ভাচারবৃতি ত্রি ॥ मुतावर्षः शुः भोत्रमर्वभः। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥ अथर्गीय वि॥ मूत्राथर्या खी अहि यिनी वृक्षः । इंजि त्राजनिर्घण्डः॥ मजाकशः भू विकः ॥ नादिकवः। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ॥ मुताकश जी थ जूती। ই**डि द्रा**ज-निर्घण्डः ॥ मुतारतारः भू जी भविः । इंडि त्राजनिर्घण्डः॥ पूर्शात्रार्गाय कि॥ मूताताश जी भागानिवृक्षः। ইতি विश्वाखलयः ॥ विवन्नी । देखि द्राजनिर्घणः॥ **ৰুৱালভা জ্ৰী ৰনামখ্যাত ৰুটকযুক্ত** 

## দুরাস

क्रुवृक्ववित्ववः॥ त्रववात्रभूत्अतः । হিহুষা ইতি খ্যাতা। তৎ পৰ্য্যায়: । नूताल मा २ शत्यानः ३ जानुम्ला 8 कहूता c मून्तर्भा ७ वरी १ धर्-यवानकः ৮ भुवाधनी ३ मुखनका > বিৰূপা ১১ দুর্র**ভিগুহা ১**২ দুর্ল-ভা ১০ দুঃপুর্ষরা ১৪ । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥ যাসঃ 🗶 য্কাসঃ ১৬ मूब्रम् ११ व्यामकः १५ (बामनी १३ অনন্ত। ২০ সমু দুগন্তা ২১। ইত্যমরঃ ॥ गन्नात्री २२ कवागा २०। ३% ভাবপুকাশঃ॥ অস্য গুণাঃ। সার-मञ् जुन्न हर्षि (न्नाम भि उ विमर्भ रविषया बालिइक । इंडि ब्राज-বলভঃ॥ কটুৰ•। তিজ্ঞ বৃ•। উপ বৃ• । कात इ॰। अनु इ॰। ब्यूत इ॰। वाउ গুল্ম পুমেহ নাশি বৃষ্ণা ইতি রাজ-नि**र्घण्डः ॥ स्वामम**्र छैंग खन्त्र বুধৈ ককা দুরালভা 🎗 ইতি ভাব-भुकामः॥ दूतान छनीए। वि ॥ प्राम्या जी प्राम्खा ई है जि ताब-निर्यक्षः ॥ मुत्रामानः गूर गानिः। देखि भेदार्थः কণ্ণভৰঃ ৷৷ मूत्राममः जि मूत्रामाः। यथा। मूत्रा-गरा पूर्वियरहा ज्ञानाः न यज्वर ।

্ ইতি শ্ৰীভাগবঙ ॥

হুরিত লী পাপ। ইত্যারঃ 11 তব্তি তি।।

দুরিতদমনী জ্রী শমী। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ।। পাপনাশিনী চ ।।

দুরিষ্ঠঃ ত্রি অতিমন্দঃ। অযমনযো রেষা বা অতিশ্যেন দুঃ নিনিতেঃ। ইতি ব্যাকরণ ॥

দুরীষণা জ্ঞী শাপ্তঃ। ইতি শবার্থ-কল্পতকঃ॥

দুরোদর॰ ক্লী দূত্তভেদঃ। পাশক-ক্রীডা। ইত্যনরঃ।।

मूरतारतः पु॰ मृज्क् ॥ भगः। इंजि
यामिमी॥

্ ১৯১ অধ্যায়ঃ।। র্গঃ প॰ অসরভেদঃ । য**ুহুদ্রা**।

मूर्गः भू॰ अमूत्र जिलः । य॰ हदा हिलिकार्या मूर्गिक नामाक्ट । इंकि
काश्रीथल ॥ ख्युष्ट । इंकि त्राज्ञनिर्यक्ति ॥ पूर्गिम जि । इंकि त्राज्ञनिर्यक्ति ॥ पूर्गिम जि । इंकि तिनि ॥
मूर्गिम जि । पूर्गिम जि । इंकि
मदमाला ॥ पूर्गिम जि । इंकि
मदमाला ॥ पूर्गिम जि ।
मूर्गिकः जि मित्र । इंकि ।
मूर्गिकः जी नत्रकः । इंकि ।
माति पूर्ग । इंकि (मिनि । ।

्र्जिशिनिनी जी पूर्जा। यथा।
दुक्ता अविक्रयम् प्राम्य कवरम् अपुकाशिव्धः। विविक्षयम् क गायजी एवी
पूर्जिनानिनी । इंडि दुक्तिवदर्ख गरामथ्छः॥

দুর্গ র॰. ক্লী সৌব**র্চলল**বণ । ইতি হেমচন্দুঃ।।

> দুর্গদ্ধী ত্রি দুর্গদাযুক্তঃ। ইত্যমর টীকা-বাণ রাযমুক্ষটিঃ।। দুর্গপুরী ন্ত্রী বৃক্ষবিশেষঃ। কেশপুর। ইতিখ্যাতা। তৎপর্য্যায়ঃ। মানসী

২ বালাক্ষী ৩ কেশধারিণী ৪। ইতি गद्रामुका॥ দুর্গনঃ তি দুর্গঃ। দুঃখেন গমনীয হা-्र नामि। इंडि भद्रभावा॥ 👙 मूर्वद्वनः श्रुः जी उद्वा इकि एम-े हन्दुः ॥ दूर्वञ्चनीत्य वि ॥ দুর্গসঞ্চরঃ পু॰ সংক্রমঃ। সাঁকো ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ॥ দুর্গসঞ্চারঃ পু॰ দুর্গসঞ্চরঃ। ইত্যমর-**होकाया॰ बामी ॥** पूर्या जी नीनी। इंडि यिष्नि ॥ অপরাজিতা। ইতি শব্চন্দুকা।। শ্যমোপকী। ইতি রাজ নির্ঘণ্টঃ।। श्यानय कन्ता । मा निवजार्यता। গণেশ कार्ভिकरयामाञा ह। ७९ পर्यायः। উमा २ काठायमी 🗢 গৌরী ৪ কালী ৫ হৈমবতী ৬ই শ্বরা ৭ শিবা ৮ ভবানী ৯ ৰুদুাণী ১০ नर्वागी >> नर्वमञ्ज्ञा >२ व्यन्ता ১০ পাৰ্বতী ১৪ মৃডানী ১৫ চণ্ডিকা ১৬ অদ্বিকা ১৭। ইত্যমরঃ ॥ नातना १५ मधी १२ मध्वजी २० **छ** २३ हखनायिका २२ नितिका ২৩ মঙ্গলা ২৪ নারাযণী ২৫ মহা-**गाया २७ विक्वती २१ महिश्वती २৮** मशास्त्री २२ विश्वी २० वेश्वी १०)

কোউবী ৩২ ষষ্ঠা ৩০ মাধবী ৩৪/ नगनिसनी ७२ जगडी ७७ जागंदी ৩৭ রম্ভা ৩৮ সিংহরথা ৩৯ সতী ৪০ मिर्मि ३० एवं इम्रजननी ४४ जाविजी-82 क्क शिक्ष वा 85 व्याक शावी 89 লম্ব। ৪৮ হিমশৈলজা ৪৯ কার্ত্তি-क्यिश्रुमूः ৫० जाम्ता ६५ निउत ६२ বিদ্যা ৫৩ শুভঙ্করী ৫৪ সাত্ত্বিকী ৫৫ রাজসী ৫৬ তাষদী ৫৭ ভীমা ৫৮ नन्दनन्दिनी ७२ महामायी ७० मृत्न-ধর। ৬১ সুনন্দ। ৬২ শু ম্রহাতিনী ৬১। ইতি भद्दश्वावली ॥ श्री ७८ পर्वज-রাজতন্যা ৬৭ হিলালযসুতা ৬৮ মহেশ্বরবনিতা ৬৯। ইতি কবিকল্ল-লতা !৷ সত্যা ৭০ ভগবজী ৭১ ঈশানা १२ मनाउनी १० महांकानी १८ শিবানী ৭৫ হরবল্লভা ৭৩, উশুচণ্ডা ११ हानु छ। १४ विधाबी १५ जानका ৮० महामाजा ४) महामू मा १२ माक-রী ৮০ ভৌমী ৮৪ কল্যাণ্ ৮৫ কৃষ্ণা bo मानराजी be महालम्। ५b मा-निनी ४२ ठावंकी २० वानी ३५ रेगा ৯২ বলেশী ৯০ জুমরী ৯৪ ভূষ্যা ৯৫ काल्लुनी २७ यजी २१ वुक्तगयी २५ जाविनी ३३ (मवी :०० अहिडा ५०)

बित्वा २०२ बिग्वा २०० ठर्ठिका . २०८ ठीतु। २०८ निस्नी २०७ नन्स ১০৭ ধরিত্রিণী ১০৮ মাতৃকা ১০৯ **हिरानन्त्यक्रिणी ১**७वन्यिनी ३३३ महारमवी ७४२ निमुक्ति ७४० छवा-निका ১১৪ তারা ১১৫ नीलमत्रवर्षी ১১৬ কালিকা ১১৭ উগুতারা ১১৮ कात्मधनी ১১৯ मुन्सनी ১२० छिन्नवी ১২১ রাজরাজেশ্বরী ১২২ ভুবনেশী >२२ वृद्धिज >२८ महामन्त्री >२€ ब्राजीवलाहनी १२५ धनमा १२१ वा-गीयती १२४ विश्वता १२२ जाना-मूथी ১०० वंगलामूथी ১৩১ निष्वि-हत ७०२ व्यमभूना २०० विभाजाकी ১০৪ সুভগা ১০৫ সন্তণা ১০৬ নির্ভণা ১০৭ ধবল, ১০৮ গীতিঃ ১০৯ গীত-वाम् अर्थे । १८० व्यक्तिमानी १८१ অউউহানিনী ১৪২ ঘোরা ১৪৩ প্রেমা 788 वर्षः धर्मा 780 कीर्जितः 785 বুদ্ধিদা ১৪৭ অধীরা ১৪৮ পণ্ডিতা-লযবাসিদী ১৪৯মণ্ডিতা ১৫০ সমূৎ नद्रा २८% कृषक्षा २०२ विविश्विया ঠুঠে ভমুলা ১৫৪ কামিনী ১৫৫ কাম-ৰ্গা ১৫৬ পুণ্যদা ১৫৭ রিফুচকধরা ' ४६५ शक्या ७६२ वृन्तावन वक्तिनी १७० गायाया निभनी १७१ मायावजी > > अश्वीम् उदमन। > > सगद्याप्य व भिनी ७७८ कृं डिवमना ७७৫ वियामा ১৬৬ बमलार्जूनी ১৬৭ यामिनी ১৬৮ यत्नामा १५२ यामवी ११० जगजी १११ কৃষজায়া ১৭২ সত্যভামা ১৭০ সুভ-पुका ১৭৪ **ल ज**ना ১৭৫ দিগম্বরী ১৭৬ পৃথুকা ১৭৭ তীক্ষা ১৭৮ আচারা ১**৭১** অক্রা ১৮০ জাহ্নবী ১৮১ গণ্ডকী ४५२ (बाया ४४० क् सुनी ४४६ (मार-नी २४६ विकाता २४५ व्यक्तत्वामिनी ১৮৭ অংশকা ১৮৮ পত্রিকা ১৮১ পবিত্রিকা ১৯০ তলসী ১৯১ অতলা १८८ हानकी १२० वन्त्र १२८ काम-না ১৯৫ নারসি•হী ১৯৬ গিরীশা १२१ माधी १२४ कन्यानी १२२ क्यना ২০০ কান্তা ১০১ শান্তা ২০২ **ললা** ২•এবেদ্যাতা২**০৪ কর্মদা-২•৫ সন্ধ্যা** ২০৬ ত্রিপুরসুনরী ২০৭ রাসেশী २०५ मक्य छ विनामिनी २०३ व्यन छ। २७ धर्मायती २०५ ठरकयती २०२ थञ्जना २७० विषया २७८ ऋतिका २७६ विवार ७५ मूलिया २७१ 🗸 🛴 २४४ ताका २ ४२ शुक्का २२० अधिन। ২২)তাপিনী ২২২ তপা ২২০ সুমন্ত। ২২৪ দুতী ২২৫। ইতি তস্যা: गহসু नामाडर्गङ ॥ 🗱 ॥ अस मुगानादाः

ব্যুংপত্তি र्यथा। দুর্গো দৈত্যে মহা বিয়ে ভববদ্ধে সকর্মণি।শোকৈ দুঃ-খেচ নরকে যুন্দণ্ডে চ জন্মনি॥ মূহা-ভবেতিরোগেচাপ্য। শবে। इस्वांह-कः। अञान् इत्स्रुव या (नदी ना पूर्गा পরিকীর্ত্তিতা॥অপিচা দৈত্য নাশার্থ ব্যনোদকারঃপরিকীর্ত্তিতঃ৷ উকারো বিহুনাশস্য বাচকোবেদসমতঃ॥রে-কোরোগয় বচনোগত পাপয় বাচকঃ । ভয় শত্রুর বচন শচাকারঃ পরিকী-র্ভিতঃ।। মৃত্যুক্তি শুবণামস্যা এতে-নশ্যন্তি নিশ্চিত। ততো দুর্গা ছরেঃ শক্তি হরিণা পরিকীর্ত্তিতা।। দুর্গতি দৈত্যবচনোপ্যাকারো নাশ বাচকঃ । पूर्नः नामयि या निज्यः मा पूर्ना वा পুकीर्डिञ ॥ विপত্তি वाচকে। দুর্গ শ্চাকারো নাশ বাচকঃ। ত॰ ননাশ্ পুরাতেন বুধৈদুর্গা পুকীর্ত্তিতা II # II অস্যাঃ স্বৰূপ• যথা। নন্দ• পুতি ত্ৰী कृष वाक १। जार १ ना वा वा निकः সৃষ্টি স্থিত্যন্ত কারিণী। করোমি চ यया मृष्टि॰ यया तुकाि (नवजाः ॥ यया अयि विश्वक यया मृष्टिः भूजा-यं । यया विना जगन्ना छि भया पछा-**णिवाय गा ॥ न**या निमु ह क्कूबृश्चि ভ্না শুদ্ধ। ক্ষমা ধৃতিঃ। তুঙিঃ পুঙি

তথা শান্তি ৰ্লক্ষাধিদেবতা হি সা।! বৈজ্ঞে সামহাসাধী গোলোকে রা-ধিকা সভী। নর্ত্যলন্ধীশ্চ ক্ষীরোদে पक्क कन्। जर्जी ह मा। मा पूर्गा स्वन-का कन्त्रा रेपन्त पूर्गिक नामिनी। वर्ग लक्षीक पूर्णा मा मकारीना॰ गृहरू গৃছে।। সা বাণী সাচ সাবিত্রী বিপ্রা-विश्वाकृष्मवठा । वरहो मा माहिका শক্তিঃ পুভাশক্তিক ভান্ধরে ॥ শোভা শক্তিঃ পূর্ণচন্দ্রে জলে শক্তিশ্চ শীতলা। শস্পুসৃতি শক্তিক ধার-ণাচ ধরাসু সা।। ব্রান্ধণ্যশক্তি বিপ্রে-ষু দেবশক্তিঃ সুরেষু সা। তপিষনা॰ তপস্যা সা গৃহিণা গৃহবেদতা।। মুক্তিশক্তিক মুক্তানা মাধা সা-সারিকস্য সা। মন্তক্তর্নাণ ভক্তি मिकि गींग ভिक्ति भुमा गमा॥ नृशा-ণা॰ রাজ্য**লম্বী**শ্চ বণিজ্ব। লভ্যৰ-পিণী। পারে সংসার সিমূনা ত্র্যী দুত্তরতারিণী।। সৎসু সদুদ্ধি ৰূপাচ নেধাশক্তি স্বৰূপিণী।ব্যাপ্ন্যাশক্তিঃ শুতৌ শান্তে দাতৃশক্তিক দাতৃষু।। ক্ষত্রাদীনাণ বিপুভক্তিঃ পতিভক্তিঃ সতীযুচ। এব • ৰূপা চ যা শক্তি ৰ্যযা ় দত্তা শিবায় সা।। 🛊 ।। অপিচ । শঙ্গপুতি পার্হতী বাক্যং বৈস্থে

पूर्गा

<del>१হ॰ মহালন্ধী</del> গোলোকে রাধিকা 'ষ্বয়'। শিবাহ' শিবলোকেপি বুক্ষ-লোকে সরগতী॥ অহ॰ নিহত্যদৈ-ত্যা॰ক দক্ষকন্যা সতী পুরা। বৃদ্ধি-नत्या भूता ठाङ्गा माठारः रेनव-क्नुका॥ त्रक्रीक्रम् गूष्क ह कानी ह মূর্ত্তিভেদতঃ। সাবিত্রী বেদনাতাহ॰ সীতা জনক কন্যকা॥ কন্মিণী দার বত্যাঞ্চ ভারতে ভীম কন্যকা। সুদায়ঃ শাপতো দৈবাং ব্ৰভানু मू जायूना ॥ धर्मभ द्वी ह क्षमा भूरा वृन्तावत्न वत्न ॥ # ॥ जानात्रकः। কৃষ্ণ পুতি পাৰ্বতী বাক্যা। একাহণ রাধিকা ৰূপাগোলোকে রাসমণ্ডলে 1 রাস শ্ন্যঞ্গ গোলোক পরিপূর্ণ অৰু পুড়ো॥ পরিপূর্ণতমাহঞ্চ তব-বক্ষঃস্ল স্থিতা। তবাজ্ঞবা মহা-লন্ধী রহ বৈষ্ঠ বাসিনী। সরম্বতী চ তাঁত্রব বামপার্ম্বে হরে রপি।। ত-বাহ•মনসাজাতাসিদ্ধুকন্যা তবাক্ত-या। मृपविजी (स्वमाजाइ॰ कवाया বিধ্যু সঁমিধৌ ৷৷তেজঃসু সর্বদেবানা• পুরা সত্যে তবাজ্ঞয়। অধিপ্তান• কৃত তত্র ধৃত দিব্য শরীরক ৷৷ শু-खारयण्ड रेरज्याण्ड निरुव्यण्डावली-লযা। দুর্গ নিহত্য দুর্গাহ ত্রিপুরা

ত্রিপুরে বধে।। নিহত্য রক্তবী 🚓 ব্ৰক্তবীত্ৰ বিনাশিনী। তবাক্তবা দক্ষ কন্যা সতী সত্যস্বৰূপিণী ॥ যোগেন ত্যক্ৰা দেহঞ্চ **শৈলজাহ॰ ত**বাজ্ঞযা। ত্থা দক্তা শঙ্করায়গোলোকে রাস-মঞ্জল।। বিষ্ণুভক্তি রহণতেন বিষা-भाषा ह दिक्क्वी ॥ नात्रायगम् भाषा-ছ॰ তেন নারাযণী স্তা। কৃষ্পুাণা-ধিকাহঞ্চ প্রাণাধিষ্ঠাত্দেবতা। নহ-षिक्षाक द्वारम स्व बननी ताथिक। স্বয় ।। তবা জ্ঞথা পঞ্চধাহ • পঞ্পুকৃ-তিৰূপিণী।কলাকলা॰শ্যাহঞ্চদেব পত্নের গৃহে গৃহে ॥ 🟶 ॥ অথ তসরঃ পূজা পুকাশ:। পুথমে পূভিতা সা চ क्ष्यन भवना श्र ना। वृन्ता वतन ह नृष्टे ११-দৌগোলোকেরাসমগুলে॥মধুকৈট-ভ ভীতেন বুক্ষণা সা দ্বিতীয়তঃ। ত্রি-পুর পুেষিতেনৈৰ তৃতীযে ত্রিপুরারি-११॥ जुड्ढे निष्या मरहरन्तृ १ माश्रा पूर्वी-সসঃ পুরা। চতুর্থে পূজিতা দেবী ভক্ত্যা ভগবতী সতী ৷৷ তদা মুনীন্দুঃ निष्कतिनु परं रिक्ट मनू मानरिवेः। श् জিত। সর্ববিধেষু বভ্ব সর্বতঃ সদ।॥ তে अः मू मर्दापवाना माविङ् छ। भूता मूल । मर्ख एता एमू छरेमा मजानि ज्यगानि ह।। मूर्गामयक रेमज्राक नि-

হতা দুৰ্গবা তথা। দ'ভ শরাজ্য দেবে ভ্যো বরঞ্চ যদভীপ্লিত ।। কালান্তরে পুজিতা সা সুর্থেন মহাস্মনা। রা-क्का (यथम निष्युप मृप्ययुग्ध मित्र-ন্তটে ॥ মেষাধিভিশ্চ মহিষৈঃ কৃষ্ণ-मारिक गर्थकः। हार्य भी रिनक হ্বমাঞৈ পক্ষিভি বালভি মুন।। বেদোক্তানি চ দবৈবসুপচারাণিযো **उन्।** ध्वा ठ कवठ॰ ध्रावा म॰প्रा চ বিধানতঃ ।। রাজা কৃত্বা পরী**হার**° বর॰ প্রাপ যথেন্নিত । মুক্তি স পুাগ বৈশ্যন্ত সংপূজ্য চ সরিভটে ॥ जूक्षाव बाजारिकारक मानुम्बः शूरा-ঞ্জলি:। বিসমর্জ মৃথাযীন্তা॰ গভীরে निर्माल जला।। मृध्यी॰ ज्नमयी॰ मृक्षे। कलार्थाञाः नदार्थिभः। स्दाम ज्व रिका १ ठठः ज्ञाना अतः यायो ॥ ত্যকা দেহঞ্চ বৈশ্যণ্চ পুষরে দুয়রণ তপः। কৃত্বা জগাম গোলোক पूर्गा-(रवी वरत्र ह।। त्राजा यर्यो अत्राज्यक পূজ্যে। নিষ্ণটক বলী। ভোগঞ্চ বু ভূ-জে ভূপ: ৰঙি বৰ্ষ সহসূক।।। ভাৰ্য্যাণ स्वालः मःन्त्रमः भूत्व म काल (ग्राग-তঃ। মনু ৰভি্ব সাবণি স্তথ্য চ পুরুরে ॥ তপঃ।। ইত্যেব কথিত বৎস সমা-रमन यथागमः । पूर्णायतानः मूनित्नुक

কি ভ্যঃ শ্বোত্মিছদি ॥ ইতি বৃশ্ধ-रैवर्जभूतान ॥ # ॥ जय पूर्गाभूका বিধিঃ। শরৎকালে মহাপূজা ক্রিয-তে যাচ বার্ষিকী।শারদীয়ামহাপূজা চতুঃ কৰ্মন্যী শুভা॥ তা॰ তিথিত্ৰয गामाम्। सर्येता खळा विधान जः। हजूः কৰ্মন্যী শ্ৰপন পূজন বলিদান হোম ৰূপা সাচ পুতিবৰ্ষ কৰ্ত্তব্যা ॥ দ্বিশ-রীরে চরে চৈব লগ্নে কেন্দুগতে রবৌ। বৰ্ষে বৰ্ষে বিধাতব্যু স্থাপনঞ্চ বিস-र्जन ॥ या भाराप्यवानम्याप्यवीः দুৰ্গাণ্মহোৎসবে।নপূজ্যতিদম্ভাদ্বা দেষাদ্বাপ্যথ ভৈরব।। কুদ্ধা ভগবতী **उन्र कामानिश्वामिश्व दि । वी**श्वा অকরণে পুত্যবায় শ্রুতেন্চ সাঁ পূজা নিত্য। বিধি সমভিব্যাহ্নত ফল্ট্র-তেঃ কাম্যা চ। যথা। কৃত্বৈর্বণ পরমা-मत्ना त्रि मना रिवाः कार्याः भुभूबः ন ।। বিভূতি মতুলা লবু চতুৰ্গ **পु**रायकः । काम्याज्या भूक्त कृत्ज পুসকাদিত্য পূজা সিদ্ধি:। তত্ত্ৰচ-नाट क्कनवमग्रि भुजिभमामि वः क्षाित मध्याित महा द्वेमाित क्वल भश्रभी (कवन भश्रानवभी भूजाकं-পাঃ কল্পা উদ্দেশাঃ। তদনন্তর মন্দোচ-

गिन भुजिवक्षकः॥ 🗱 ॥ मा भूडा ত্রিবিধা। যথা। শারদী চণ্ডিকা পূজা ত্রিবিধা পরিগীয়তে। সান্ধিকী রা জসী চৈব তামসী চেতি বিশু,তিঃ॥ नाविकी जभ यङ्गिरेम्। निवित्रमाण निवानितिः। नाहा ग्राप्ट ज वा वा जान শুরাণাণিকু নির্ভিত ।। পাঠন্তস্য জপঃ **९** इन्हें भाके प्रवी नना ख्या ॥ (रवी ॥ সূক্ত ভাগতৈচৰ ৰজ্জা বিশ্বি যুভপণি।। " द्राडभी दिवारिंग रेनल्रेम्ड मा-नियं छथा। मूदा मानमा अहित र्झभ यो छ विना जुरा॥ विना गरे च স্তাদ্যমী স্বাৎ কিরাতানান্ত সম্**তা।** वा जरेनः कविये वि लाः म्रेन् त-পূজ্যতে সর্বদস্যুতিঃ। স্বয়ণ বাপ্যন্য-তো বাপি পূহ্বেং পূজ্বেত বা ॥ অৰ্ছকস্য তপোযোগাদৰ্ছনস্যাতিশা-যনাং। আভিৰূপ্যায় বিশ্বানাং দে- " वः मात्रिभुः मृह् जि ॥ 🕸 ॥ जैथ नव-**ম্যাদিকল্লঃ। ইবে মাস্যমিতে পক্ষে-**।। कन्तात्राभि ग्रह्कः त्रस्वो । नवन्ता प्या-शराप्त दी॰ की जा को जूक सक्रेलः ॥ জ্যেষ্ঠানক্ষত্র শুক্তাযাণ বৃষ্ঠ্যাণ বিশ্বাভি मजा। मध । ग्लयुकाया शवि-কাশাঃ পুবেশন ॥ পূর্বাষা যুতা है:

ম্যা॰ পূজা হোমাদুপ্রপাষণ । উত্ত-রেণ নবন্যান্ত বলিভিঃ প্রুযেছিবা॰ ৷৷ শুমণেন দশম্যান্ত পুণিপত্য বিস र्जारा । পু তিবর্ষণ কন্যার্কে কর্ত্তব্যস্ত্রা-নুপপত্তেঃ সি•হার্কেপিবোধন• তুলা-र्किश इंग्निना फिक किया छा मुक्-**ত্যद्वार्क कर**गतक यनगाम न उनाद-ভ ९ उ यदि शृबंदात**कः** छमा सनमा-(मिलिशृहा(एयी गार्श ग्रा) शाटी फिक्॰ পুত্যर कर्खदारनव॥ शावक् वीयू রा-কাশ জল বিলিশ শি গুহাঃ৷তাব্চ চণ্ডিতা পূজা ভবিষ্যতি সদা ভুবি॥ তত্র কৃষ্ণনবম্যাওদেবকৃত্য: ন পূর্বা-ह्य (वाथनः। উভय हित्न शूर्वाहः न-वभी नारज्भू र्विषत या द्वार्य जू পূর্বাङ्ग विना ििवा नात्व युग्पानतः বিনাপি পরদিনে বোধন উভয়দিনে প্রাহে नवग्रापा नाज প्রদিনে वानन यूग्रा ।। कन्तानि भीनभर्यऽ-ন্ত যত্র সংপাপ্যতে শিবঃ। তর-ताथः भुकर्न्दरा (मवता ताडा॰ मू-**ज्युमः।।(वाधन मस्त्र। यथा। ইरम मा** স্যানিতে পক্ষে নবন্যানাদু যোগতঃ। শ্রীবৃক্তে বোধয়ামি দ্বাণয়াবৎ পূজাণ करताम । व तारगम वंशार्था य तामगान् गुराय ह। अकाल वुकाग रवारक्षा (मयता खुवि क् जःभूता ॥ ष्यर-नभावित्व जन्द वाष्यानि मूलबाती l **শ**ক্রেণাগিচ সংবোধ্য প্রাপ্ত রাজ্য সুরালযে ৷৷ তমাদহ• হা• পুতিবোধ-যানি বিভূতি রাজ্যপুতিপত্তিহেতোঃ ।। যথৈব রামেণ হতো দশাস্য স্তথৈব শত্ন্ বিনিপাত্যামি ॥ খণ্ঠা বোধ নেত্র অহমপ্যাখিমে ষধ্যাং পাযায়ে .वाथ्यामाञ इंजि <del>श</del>ठेनीय ॥ 🟶 ॥ অথপুতিপদাদিকল্পঃ। আখিনে শুক্ল-পক্ষেত্ত কর্ত্তব্য নবরাত্রকণ।পুতিপ-मामि कत्परैनव यावह नवभी ভবে<॥. পুতिभमामि जङ्खिथियू क्ठामार ভবিষ্যে। কেশ সংস্কার দুব্যাণি পুদদ্যাৎ পুতিপদিনে। পউডোর॰ ছিতীয়ায়া কেশ সংযম হেতবে। দর্পাঞ্চ তৃতীযাযাণ সিন্দ্রালক্ষকণ তথা।। মধুপর্ক চতুর্থ্যান্ত তিলক। निज्ञ ७ नः। शक्ता गक्ता गक्षः 🎮 -क्रानङ्गत्रानि ह। यश्याः विष्ठतो বোধ সায় সন্ধ্যাসু কার্যে । সগু-माः भा उतानीय गृहमाया भुगृह्वाय ॥ উপোষণ मथा द्वेमरा महेमरकः भू-शृजनः। नवभा मूग्रेष्णाया उद्यापाया-ईनः रिवा॥ পূজा ह विवासन्थ उद्य-माजूः भुभूकत्य । जमाती भूकनीया

ह ज्यनीया ह ज्यरेनः ॥ मन्म्बर्**भू**ब-१० वर्षाः मणगाः भावाताः गरेवः। व्यानन विधिना यस प्रवीः श्रीनयएं नतः ॥ कन्त वर् भानयङ्ख (पवी সর্বাপদি স্থিত। পুত্র দার ধনজী না সংখ্যা তস্য ন বিদ্যতে। ভুক্ত্বেছ পরনান্ ভোগান্ প্রেত্য দেবীগণো ভবেং ॥ 🛊 ॥ व्यथ मध्यामिकन्नः। বোধবেদ্বিল্ব শাখাযা॰ ষষ্ঠ্যা॰ দেবী• ফলেবু চ। সপ্তম্যাণ বিন্নশাখান্তা भार्वे भुविश्कारे ॥ भूनः श्का॰ उथाडेम ता॰ विस्माखन नमाहत्त्र । জাগরঞ্চ স্বয়ণ সর্ব্যাৎ বলিদান ম-श्विमि ॥ भुज्ज विमानक नव्यान विधिवहददः। भ्रायम् नज्ञा॰ दिवी॰ मूर्ग। माञ्चन भूडायर ॥ विमर्जन मन म्या अवर्या दि भावताः निर्देशभूनि কর্দম বিক্ষেপৈঃক্রীডা কৌতুক নঙ্গ-रैवः ॥ ভग विका जिथारेनक जग निक्रुगीउरैकः। छग निक् किया-**जिक्र अर्याह मणभी फिला। #11** नवनी (वाधनामामर्थि) ब्रह्मा मायः বোধন॰ यथा। ৰঙ্যা॰ বিশৃতরৌ বো-**धः** जायः जंक्राज् कात्रस्ट । यष्ट्राः বোধনানত্রণ করণেপি পত্রী পুবেশ भू इंदिरन गाय वश्रे जाख अकरेर:

বোভয করণ যদা তু পূর্বদিনে সায় मधीलाजः भत्रस्ति गायः विना यश्ची चां छम। भृदिन् द्वांधम॰ भन्नमित नायमागञ्चन । यहा ज्ञय हिता नायः মধী লাভ স্তদা পরেহি মধ্যা বা- ॥ थनः। উভयनित मायः यक्ष्रजात পূর্বাহেপি যধ্যাংবোধন ।। আম স্থা भञ्जल । भिक् मन्द्र देवनाम हिम-বছিথরে পিরৌ। জাতঃ ঐকলবৃক্ষর ন্দ্রিকাষাঃ সদা প্রিয়ং,।। **এশৈন**-শিখরেজাতঃ শ্রিফলঃ শ্রীনিকেতনঃ। নেতব্যেসি ন্যা গছ প্জ্যে দুর্গা স্ব-क्ला ।। भार॰ यक्षा इ कर्ववा॰ পাৰ্হত্যা অধিবাসন । ষষ্ঠ্যভাবেপি कर्ड्वा मधनामि नात्रम् ॥ 🗱 ॥ অথ সপ্তন্যাদিকল্পঃ। আখিনে শুক্ল-" পক্ষে তু সন্তন্যানি দিনত্রযে। তত্ত পূজা বিশেষেণ কর্ত্তব্যা মন মানবৈঃ া বিশেষ তত্ৰ বক্ষ্যানি শৃণু পুত্ৰক নমত । সপ্তন্যা প্রিকা প্রা রম্ভাদি নবভিত্বতা।। মহীমধী চ मृर्डि (मं পুতायू र्धन वृष्काय। अन्नेभी সামহাপুণ্যা তিথিঃপুীতিকরী মম।। সর্য্যান্তর নহান্নান পঞ্চগব্য যুতৈ তথা। গায়ত্ৰীভিঃ কষায়ৈক গন্ধানৈ । ন্তীর্থ বারিভিঃ॥ ওমধীভিশ্চ সর্বা-

ভি ভ্<sup>′</sup>कारेतः कनरे**म खथा । পু**न्न রহাদি তৌবৈশ্চ গলৈ র্মলয়কৈ স্তথা ॥ গীত বাদিত্র নাট্যেন সাপয়েনাঞ্চ ভক্তিতঃ। পূজা সদুপহারৈশ্চ নৈবে-रिरुफ मत्नाहरेतः॥ विन्तरिक य् का-ক্রৈণ্চ তিলধান্যাদি সংযুক্তিঃ। ছুহ-या क्वित्व वाहरी उन्। भूगा क्व॰ শূণু।। সংসারে যানি সৌখ্যানি কা-म्यानि नत्रश्रक्त । भीर्यमायू र्यभाः भूवः বিপুল• ধন ধান্যক• ॥ লভতে নং-शुमालन অस्त मम शूतः वुराब । বলি ন্তত্ৰ বিশেষেণ দেখে। মং প্ৰীত্ত্যে नरेतः ॥ जातन विधिन। यस नवनी মতিবাহ্যে । ভুঙ্কে চ বিপুলান্ ভোগানন্তে শিবপুর• বুঙেৎ ॥ ততঃ मधग्रा॰ मृत्युकाया॰ कवनाया॰ वा পূর্বায়ে পত্রীপুবেশ উভয়ত্র পূর্বা-इ मध्मी नाष्ड भव्रज्ञ ॥ युगाम्त वर्षवृष्तिण्ड मधमी भाई जीश्रिया। इत्य ৰুদ্য মীক্ষন্তে ন তত্ৰ তিথি যুশ্মতা।। श्र्वाः नवशविका भूं जकती मर्दार्थ সিদ্ধিপুদা আরোগ্য ধনদা করোতি বিজয় চণ্ডী পুবেশে শুভা। মধ্যাহে জনপীতন ক্ষযকরী সংগ্রাম ঘোরা वहा नायाद्भ वश्व वन्ननानि कन्नह॰ সর্গকত সর্বদা।। সন্তম্যামন্তগাযা।

যদি বিশতি গৃহ• পত্ৰিকা শ্ৰীফলা-ঢ্যা রাক্তঃ সপ্তাঙ্গ রাজ্য জনসুথ মথিল হিন্ত নূলানুরোধাৎ। তমাৎ সূর্য্যোদযন্তা॰ নরপতি শুভবা॰ সপ্ত भी॰ भागा (मवी॰ ज्भावा (वन्य ত্তা॰ সকল জনহিতা॰ রাক্ষসর্ক॰ विशय ॥ विश्व हा॰ शृज्यसम्बी॰ ম্ওল্ছ। তথৈব চাপু ওক্ছা সহ। त्रिंश भारिक शुक्तिमात्रूष्ठ । हिट्य ए विभित्य थात इन्ब्राक्षा का शृद्धाय -॥ রারা যথাবিধি বিখেত করাননা-ড্যু রাচম্য সম্পেন্ম ব্য ক্রন্তঃ शुभागतना धनमिय स्तार वाशिवका गाना गणनिष्ध छन् क न ्।। वन्त भिष्ट त्रावीत्म मुङ्गाष्ट्रेम् १९ शुश्रु যেৎ। সোগবাসো নিশার্দ্ধ তু মহা বিভব বিস্তরিঃ ৷৷ পূজা॰ সমারভে-দেব্য নক্ষত্রে বাকণেপি বা। পশু ঘাত क কৰ্ত্তব্যে গবলাজ বধ স্তথা।। উক্তবচনে পশ্যাতক কর্ত্ব্য ইতি नु. तुः । अष्टम् तुः कि विदेश मा रिगः ञ्जूर्यभ्यः जुगिक्षिष्ठिः। পূष्रयम् इका-जीरेयर्वनिভिर्ভाङ्गतैनः শिदाः।। इंजि कालिकाभुतानाह । अञ्चन्तरा विमा নেন পুত্র নাশো ভবেদ্ধুর : ইতিদেবী পুরাণীয় সদ্ধিপূজা বলিদান পর ।

তৎপূজায়া উভয় তিথি কর্ত্ব্যত্ত্বেন তন্বলিদানস্য নবম্যা সাবকাশ্ वाट । उट्मूबा विधानस कालिकी পুরাণে বচনাত্তর । অপ্তমী নবমী স দ্ধৌ তৃতীয়া খলু কথ্যতে।তত্ৰ পূজ্যা-ত্বহ-পূত্ৰ শোনিনীগণ সংখৃতা ॥ উ-পवासः तहा हेन्। भूववात सन्। ह-ति । गया जिया भू जो शा वुछी पर वी॰ पुश्रात्यः। म्यानन श्रु जिश्राह्य-ক্ত বর্তা হল্ডী পুরুধা দুবিধাষ্ট্রম্যা মূপ াম নংযত বিশা ভক্ত্যা সনারা-श्रुष्ठ। नानालालुक मङ्बनाल्य क दिहेह कृदा नवगृतः विषः नक्षवः भूवतः তিথিঞ্চ দশনী সংগ্রাপ্য সংপ্রেব-(यः ॥ # ॥ ७ भव छ तः शुर्दभां नि विनर्गाञ्चाण याः कियाः। विधातूनय गामिन्ता मही खाः कात्रयपृथः ॥ অত্রোদ্য কালীন ঘটিকা মাত্র তিথৌ সন্যক্পূজনাসামর্থ্যেকালিকাপুরা-१॰। भगार कल्लामिजाः शृहाः यमि কর্তু॰ ন শক্তে। উপচারা॰ স্তদা দা হু• পঞ্চিতান্ বিতরেভ্দা ৷৷ গন্ধ• शूङ्गक धूशक भीशः नित्रमातम ह । অভাবে গদ্ধপুদ্ধাভ্যা॰ তদভাবে চ ভক্তিতঃ ৷৷ সংক্ষপ পূজা ক্থিতা তথা বস্ত্ৰাদিক পুনঃ॥ পুাতরাবাহ-

हुर्गा

ষেদ্বী পুাতরেব পুবেশ্যে পুাতঃ পুাতক সংপূজ্য পুাতরেব বিসর্জযেৎ ।। অত্ৰ পুতঃ পৰ পূৰা হ পর ॥ ॥ वु जी शुश्रृहत्यत्म वी अश्वभागि मिन ত্রযে। দাভগ়• চতুরহোভি র্বা হ্রাস न्बियणाजियः॥ #॥ अश्वम्यामूशः ৰাসঃ পুত্ৰবতো গৃহস্ত্স্য নিষিদ্ধঃ। यथा कानिका भूता १ । উপবাস॰ गराष्ट्रेगाः शूजवाम नगाव्रतः। যথা তথৈক প্তান্না বুকী দেবী ॥ शुल्काय ।। नवम्राण विनानख কর্ত্ত ্রেবথাবিধি। ভপে হোস্ঞ विधिवः काँग्राड्य विज्ञत्य ॥ ज्ञ নবাগ শো শুতেঃ প্রাষাতা युकाहेम् ११ श्रा श्रामपूरभाषन ইতি শুতেক উভয়ত্ত একতর্মিন্ वा श्वासः नात्रन्ताः भूकावा नवमता भित्र रिकिशारिया।। अ II अथार्डेम्जा-मि एववल ग्राडेमी (क्वल म्यानवनी कन्न। यथा । ভरुकानी॰ পটে कृदा তত্ৰ সংপ্ৰযেৎ বিজঃ। আধিনে শুকু পক্ষস্য চাষ্টম্যা নিয়ত স্ততঃ ৷৷ উ-পোষিতো দ্বিতীয়েই পূদ্যেৎ পুন-রেব তা॰। ইতি বিষ্ণু**খ**র্মোত্তর•॥ यखुकमा मथाह्रमाः नवमाः वाथ नायकः। शक्तव्यक्ताः (पवीः नक्

ভাবেন চেত্ৰসা।। ইতি কালিকা भूत्रानः ॥ # ॥ मूर्गाया धानः यथा। জটা জুট সমাযুক্তা মৰ্চ্ছেন্দু কৃতশেথ-রা । লোচন ত্রয় সংযুক্তা পূর্ণেন্দু সদৃশাননা ।৷ অতসী পুল্ল বৰ্ণাভা সূপুতিষ্ঠা সুলোচনা । নবযৌবন সম্পন্না॰ সর্বাভরণ ভূষিতা৽॥ সুচাৰু দশনাণ তত্ত্বৎ পীনোলত প্যোধরাণ । গ্রিভঙ্গ স্থান সংস্থানা । মহিষাসুর गर्मिनी ।। गृगानायञ म मन दान् जगनिजाः। जिन्तः मिक्ता পাণৌ খন্ন চক্ৰ ক্ৰমানধঃ ॥ তীক্ষ বাণ তথা শক্তি দক্ষিণে সন্নিবে-শযেৎ। থেটক পূর্ণচাপঞ্চ পাশ মস্কু-শমেব চা। ঘণ্টা বা পরশু বা পি বান-जः मित्वभाष्यः । अवसाम **हिष**॰ তত্বদ্বিশিরক • পুদর্শহেৎ॥ শিরশে-দোক্তব॰ তম্বদানব॰ খন্নপাণিন॰। क्रि म्रावन निर्ভिमः निर्यम्ख विजू-বিত্ত ৷৷ রক্তর্কীকৃতাক্ত্প রক্ত বিন্ধুরিতেক্ষণ । বেষ্টিত না গ পা-শেন ক্ৰন্সটা ভীষণানন ॥ সপাশ বামহন্তেন প্তকেশঞ্চ দুৰ্গযা। বৰ্মজ-थित वं कुक एम वताः जि र पुष भागिए ।। (मर्त्रास्त्र मिन्निंगः भामः भामः भागः পরি স্থিত ।। কিঞ্চিদ্দ্ধ • তথা বাস-

মঙ্গু মহিষোপরি। শত্রু ক্ষ্যকরী। **एती॰ रेन्छ। मानव मर्श्राः॥ शुमा** वननाः (नवीः नवं मान कलशुनाः। তুষমানঞ্ ত্রুণ মন রঃ সমিদেশ-। तिर ॥ क्रेग्रेश्वा श्रेष्टदा ह हरकार्या **ह**खनायिका। हुछ। हुअपूर्वी हैहब हुछ ৰপাতিচভিন্দা।। আভিঃ শক্তিভি রষ্টাভিঃ সতত্ত পারিবেঞ্চিতা । চিম্ভ-যে জ্ঞগতাং ধাত্ৰীং ধর্মকামার্থ মো-ক্ষণা । ইতি ধ্যাত্বা মহামান পূৰ্বক ঘোডশোপচারারিনাবলিদানাদিভিঃ পূজযির। আবরণ পূজ্যেৎ ॥ 🛊 ॥ ত্বাথ দশনী কৃত্যে। সংপ্রা প্রেষণ व्यक्तामाणगानः भावतार्भे नरेवः । पिती या बाकारण निर्मण्न विधि माह পূজারত্বাকরে দেবীপুরাণ। ভক্ষ্যা शिक्षे भुनीभाषि। कृ जायव्यापि भः ह्मदिः। अयवीजिन्छ स्मध्याजिः मई-वीरिक र्यवामिष्टिः ॥ नवम्याः भईकाः লে তু যাত্রাকালে বিশেষতঃ। যঃ कर्या भुक्या वीत्र एवता नीताजन नदः॥ भाइ छ्यापि निन्दि क्वर स्विक्ष शृहिकः। यावरका पिवनान् ৰীন্ন দেবৈ। নীরাজন কৃত ।। তাবৎ कान महमानि पूर्ना लांक महीयरङ । यह सर्यप्राथ श्रुनीत्मन सूर्यप्रकारक

মহীযতে॥#॥তদিনে অপরাজিতা পূজন কথা। আধিনে শুর্পক্ষ मन्मग्राः श्रुब्बयुद्धथा। वकामन्त्राः न भ बी ज পूबनकाभवाङ्गिष्ठ ॥ 🗱 ॥ जिस्त बाजा याजाः वर्गाः यथा। দশ্মী॰ বং সমুভ্যু পুস্থান সকতে নৃগঃ৷ তস্য সন্ধূৎসর রাজ্যে নহাপি বিজয়ে। ভবেৎ ৷৷ স্বয়সশক্তৌ প্রাদি याजा कर्जवता यथा। कार्यत्रनाः स्य-মগমে ভূভরুঃকেচিদাহ রাচার্য্যাঃ ছত্রাযুধাদ্য নিষ্ঠ বৈজ্যিক নির্গমে अयंग्रं ।। # ।। थअन मर्भन कला नि র্যথা। হস্তাগতে তু মিত্রে যথা দিশা श्रक्षन याउ॰ नृशः भागाः। उया পুযাতস্য ক্ষিপু নরাতি র্শমুগৈতি ॥ कृदा नीताजन ताजा वल कृष्का যথা বলং। শোভনং খঞ্জনংপশেরে জলগোগোষ্ঠ সন্নিধৌ॥ অব্লেষু গো-ষু গজ বাজি নহোরগেষু রাজ্যপুদঃ ঙ্গশলদঃ শুটি শাদ্বলেয়। ভষাছি কেশ নথ লোম তুষেযু দৃষ্টো দুঃখ দদাতি বহু শঃ খলু খ্জুরীটঃ।। ष्राणुकः थञ्जनः मृद्वीरमय वा सन् शृहनः । मान अबी ज मर्गाह ज्ञान मरबी यथी करेनः ॥ 🗱 ॥ व्यथ वित्रर्जनः । नो यारेन नंत्र यारेन **दा नी दा उगव**ी॰

শিবা । দ্যোতা ভলে পুকিপেযুঃ कीछा को ठूक मन्द्रेलः ॥ श्रोत मी-ক্ষিপতে বস্তু পরণনাফিপতে তু यः। र्ज्य कहा जगवजी भाषा मन्त्राट সুদাৰণণ ৷ ইতি তিথ্যাদিত হ দুৰ্গা-हाज्य ।। विमर्द्धन गत्त्र। यथा। मूर्ल দেবি জগন্মাতঃ স্থান গছ পূজিতে াসংবৎসরব্যতীতে তুপুনরাগমনায বৈ ৷৷ নিমজা মুসি দেবি দ্ব চণ্ডিকা প্তিমা শুভা। পুত্রায়ুর্ধন বৃদ্ধ্যর্থণ হাপিতাসি জলে ন্যা। 🕬। বিসর্জ-নানস্তর গৃহ্যাগত্য অন্তিদুবিধারণ कृ दाधि इ जरणन अञ्च माँ दि सं विज्ञान मिलियाक्ट। यथा। उँ উ विश्व वृक्षा ল্পতে দেবা যজন্ত ন্তেনহে উপ**পু** যন্ত মকতঃ সুদানবে ইন্দু প্রাযুর্ভবাসচ। ॥ ওঁসুর। জ্বা মভিষিঞ্জ রুক্ষ বিষ্ণু নহেশ্বরাঃ। বাসুদেবো জগলাথ স্তথা जहर्यनः शुद्धः ॥ शुरुष्ठणनिक्षः छ ভবস্ত বিজয়ায়তে। আখণ্ডলো ৎগ্নি र्छगदान् गमादि नियं उ खथा। वर्ष-गः প्रवनरेक्ट धनाध्यक उथा निवः॥ तुषाण महिजः त्याया रिक्शालाः পাস্ত তে সনা ॥ কীৰ্ত্তি ৰ্লন্সী ধৃতি र्भिषा शुक्षिः भुका क्रमा मजिः। वृक्षि विका वश्रः भाषि सक्षिः काष्टिक

নাতরঃ॥ এতা ত্বা মভিবিঞ্জ ধর্ম-পালাঃ সুসংযতাঃ। আদিত্য कन्দु-মা ভৌমো বুধ জীব সিতাৰ্কজাঃ ॥ গুহান্তা মভিষিঞ্জ রাহঃ কেতুশ্চ তর্পিতাঃ। ঋষযো মুনযো গাবো দেব গা দৈত্য ক্ষানুরসাংগণাঃ। অন্তাণি সর্বশস্তাণি রাজানো বাহনানি চ।। ঔষ্ধানি চর্ত্বানি কালস্যাৰ্যবাশ্চ যে। সরিতঃ সাগরাঃ শৈলা স্থার্থানি जनना दुनाः ॥ एत मानव भन्नदी যক্ষ রাক্ষস পমপাঃ। এতে দ্বামভি-यिक्छ धर्म कामार्थ निषाय ॥ इंज़ि বৃষ্মনিদকেশ্বর পুরাণ পদ্ধতিঃ॥ 📽 ॥ व्यथ पूर्णानाम माहाबाउः। তবर्शनऽ তৃতীযোণঃ পঞ্মন্বর সংযুতঃ।কব-গ্স্য তৃতীবোর্ণো বহি স্তস্যেগরি ছিতঃ।। দ্বিতীয় মন্ন সংযুক্তণ নামেদ পরিকীর্ত্তিত। আরোগ্যস্য চস-স্পত্তে ৰ্ক্তানস্ব্যচ মহোদ্বে !! না**নেদ**• शद्रमा एक्ट्रमू क्रिय छवमत्रिनाः । কলিকালে বিশেষেণ মহাপাতকিনা मिलि। निखात वीक विरक्तय नाम সম্মরণ পূথে। পরদার রতোপি স্যাৎ পর্যুব্যাপহারকঃ ॥ সোপি পাপাৎ পুসুচ্চ্যে বদি স্যাদতিপা-

ভকী। বুদ্ধহত্য সুরাপান স্তেয खईक्नाणमः ॥ अञ्चानि विमू চ্যেত যদি নামশরেৎসুধীঃ ৷ ইতি ৰুণুজামলঃ।। দুৰ্গা দুৰ্গেতি দুৰ্গেতি দুর্গানাম পর• মনু•। যো জপেৎ স-তত॰ চণ্ডি জীবন্যুক্তঃ मं **मानवः** ॥ महारभाउ महाताल महावि পদি मङ्ग है। सङ्ग मुश्य गङ्ग नि गराज्य ममूर्थिष्ठ ॥ यः मात्रः সতত দুর্গাণ তলেৎ বঃ পর্মণ মতু । मजीव लात्मा (सरविभ नीनकथे इ मान् वार्।। ইতি मू अमाना उद्या मुर्गाधाकः शुः मुर्गतककः। তगा लक्षण यथा। अनारार्याण मृत्रक उथा शा छः घटना इउः। पूर्गा शेकः मृत्ठा ताडि उपुकः मर्वकर्ममू॥ ইতি মৎস্যপুরাণ ॥

पूर्णानवनी जी कार्जिक मूझ नवनी।

ग। विजानुगाम्। । जब जगमावी

शृजाकर्जवा। यथा। याणिनी जर्ञ

। कार्जिक श्रममश्रम जुनवमाकः

विकायः । शृगमाकः जगमावीः

शृजायफीशमानया॥ जन्नान्नरताः

विकायः शृजायम्पूर्णाः मनूर्विकाः

करत्र । नाना विक विधानन

गीज वाम्। शृज्ञान्नरः ॥ कार्जिकमा

जिए भक्त नवनशंध वित्नवजः। कृदेवन नाधकल्णुरहा वाख्याका भक्केक ।। अद्विका अखा कार्जिक मुक्लभाक्त जू नवस्ता क्रिका । पूर्गा॰ भूभृहरयख्ङ्रा धर्म कागार्थ সিদ্ধয়ে॥ শক্তিসঙ্গমতন্ত্ৰ। কাৰ্ডি-কন্য সিতে পক্ষে নবন্যা" জগদী-শ্বরী । ত্রিকাল নেক কালম। বর্ষে वर्स भूभृज्ञस्य ।। निर्माग भूजिमा শক্ত্য জন্মাত্র্য বিধানতঃ। পূজ-্বিদ্বা পর্নিনে পুতিমাণতা• বি**স**্ खराय ।। १४० हु। ठकव को छर्दर সাধক সভনঃ! পুত্ৰ পৌত্ৰ ধনৈশ্বৰ্য্য সংযুতাস্য ভবেৎ পুরী ॥ দাস मानीगरेन यू रक्ता मूकः नतर नान সকটাৎ। বিশেষতো বসুযুতা॰ नवभीः शाला मायनः। शृङ्खिषा মৃমানী তা লভতে বাশ্ভি কল ॥ ভবিষ্যো সাসৈ শুক্ত ভিন্ধ পুণ্য । বিধিনা পুল্য চাওকা । তৎ ফল লভতে বীর নবন্যাণ কার্ত্তিকস্যুত ॥ ইতি তিখিতত্ত্ব 👊

मूर्गासः श्रुः ज्ञिकछशुनुः । ইতি রাজনিঘণীং ॥

मूर्यायः श्रुः की जङ्ग्यः। ইতি রাজ. নির্ঘণীং॥ নিন্দি তর্বলা তদ্তি ত্রি॥

**मूर्व**न

দুর্জনঃ ত্রি থলা। ইত্যনরঃ ।। দুর্জনঃ

গরিহর্তব্যাবিদ্যথা লহুতোপি সঃ

া মণিনা ভূষিতঃ সর্পঃ কিমসৌ ন
ভূষ্যঃ ।। ইতি চাণক্যং ।।
দুর্জযঃ । ইতি কুর্মপুরাণা ।। দুর্জেয়ঃ
। দুংখেন জীযতে হসৌ। তত্র ত্রি ।।
দুর্জার জ্রী জ্যোতিম্যতী লতা। ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ ।। দুর্জার ত্রি ।।
দুর্জার জ্রী ব্যসনং ।। অসমপ্রাতে ত্রি
।ইতিনেনি ।। অসমপ্রসং । ইতি
ত্রিকাওশেষঃ ।।

मुर्गछः श्रु॰ कन्न हः ॥ वट्म छतः।
इकि ज्ञाक्ष निर्मण्डः॥ क्या छ कि ॥
मूर्णिन॰ की भ्रमण्डः॥ क्या छ वृद्धिः। प्रणा। यना क्या छ वृद्धिः। प्रणा। यना क्या छ क्रम्छः।।
मूर्णिन॰ पृष्टिः। प्रणा। यना क्या छ क्रम्णाः छ व मूर्णिन॰ पृष्टिः। प्रणा। विमृश्य है कि माखाः॥
मूर्णिन॰ पृष्टिनिः विमृश्य कर्षाः छ व ख्या छ क्या छ लगाः माधुः कर्षाः ।
स्वा क्या क्या छ क्या विमृश्य क्या छ क्या क्या छ क्या छ

मून्किः श्रु॰ नाखिकः। ইকি क्री-

দুদ্বিতা জ্রী লতাবিশেষঃ। ইতি টাধরঃ॥

मूर्कगः शुः इति शना थः । ইতি त्राजनिर्घणः॥

पूर्वाः श्रु॰ नत्रकितिभवः ॥ श्रावानि यथिः । इठि भिनिते ॥ श्रात्रमः ॥ जन्नाजकः । इठि त्राजनिर्वण्टः ॥ महिषामृत्रम् भागाशि विष्णयः । यथा । पूर्वातः मुग्र् थएका जो नित्र यमक्षयः । इठि हश्री ॥ पूर्ध्य थार्या वि । इठि हश्री ॥ पूर्ध्य

দুর্থবা দ্বী নাগদমনী।। কছারীবৃক্ষঃ।
ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ দুংখণ্থবণীযে ত্রি
দুদ্ধু কিটঃ পুণ যুক্তিমিনা গুক্তবাক্ত্যমনন্দানঃ। ইতি তত্ত্ববোধনী॥

দুর্নাম ক্লী অর্শোরোগঃ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

দুর্নাসকু শ্লী অর্শেরোগঃ। ইত্যমরঃ॥
দুর্নাসা পু জ্রী দীর্ঘকোষিকা। স্পিনুক্
ইতি ভাষা।ইত্যমরঃ॥

দুর্নামারিং পু শ্রণঃ । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

मूर्नाती जी मूर्नामा। इंडि भमत्रवा-वनी॥

দুর্বলঃ ত্রি কৃশঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। অ-নাংসঃ ২ ছাতঃ ৩। ইত্যনরঃ। ক্ষান্তঃ ৪ শাতঃ ৫ শিতঃ ৯ অবলঃ ৭ । ইতি শব্যায়বদী ॥

দূর্বণা ক্রী অপুশিরীবিকা। ইতি ভাবপুকাশঃ॥

দুর্ভগা জী পতিরেলর হিতা। দুযা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। বিরক্তা ২। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ।। বিবৃজ্জাত নিস্বা ৪ সৌভাগ্যরিহিতা ৫। ইতি শদরবাবদী।।

मूर्जिकः श्ली जिक्राया अशुाखिकानः।

यकान इठि जावा। यथा। मूर्जिक् क्रमणः स्त्रपः वित्राय। इजूरुकिः॥

जिक्रायाः शुाया नियुन्द निज्रायायीजाव समासः। यदम्दम् यद् काता जत्मम जदकान याग्र स्रातिकः न जायत् जत्मामः

मा याव्यान मृत्रानाजाद मूर्जिकः

जाजिनिक त्रविद्याल मिजितिज्ञ म्र्मनाः वि विद्यामित्रास्नविद्यः।

দুর্মনাঃ ত্রি চিন্তাদিব্যাস্থাচিতঃ। তং পর্য্যাষঃ। বিমনাঃ ২ অন্তর্মনাঃ ১। ইউন্নয়ঃ॥ শতাবর্ষ্যা প্রী। ইতি রাজনির্যাটঃ॥

দুর্মরা জী দূর্ব। ইতি জটাপরঃ ॥ খেতদূর্ব। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

দুৰ্থঃ পুণ বানরবিশেষঃ। নাগভেদঃ

3 ইতি নেদিনী।। অসঃ। ইতি হেম-

हन्तुः ॥ निक्षामुत स्मानि वि-लगः। यथा। हुर्कतः हुम्मू शक्षाकी भारत नित्न यमक्षः। ইতি हुई।।। हुमू थः जि अशिषनारी। उट शर्मप्रायः । मूथतः २ अवक्षम्थः । ইত্যাক शु-मूर्म्म व्यः ती महार्घः। ইতি লোক शु-निकः॥

দুর্মেধাঃ ত্রি মন্দ্রমেধাঃ। ইতি ব্যাক-রণে ॥

দুর্ম্মোহঃ পুং কাকতুগু। ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

দুর্ব্যোধনঃ পু॰ স্বনামখ্যাত স্ক্রনংশ ভব রাজবিশেষঃ। স ধৃতরাষ্ট্র জ্যেষ্ঠ পুত্রঃ স্ক্রপাণ্ডব যুদ্ধে ভীনেন হতঃ । তৎপর্য্যায়ঃ। স্ক্রনাট্২গান্ধারে যঃ ৩ সুযোধনঃ ৪। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ ॥

मूर्लाङः जि मूझाशः। ইতি मिरती॥
श्रातिश्वाशः। ইতি मदत्रद्वावती॥
श्रियः। ইতি হেনচम्पुः॥ मूर्लाङ
श्राकृङ वाका मूर्लाङ क्राकृष्ट
मूर्लाङ मर्मी ভार्या मूर्लाङ
सक्तः श्रियः॥ ইতি চাণকা ॥ मर्ना इत्रवाल ग्राति ह्या माना मर्ना म्रातिश्वाशः॥ व्याप्ति ह्या म्राति ह्या मूर्लाङ
स्वा मूर्लाङ। विस् साति म्राति ह्या माना मर्ना मूर्विय

मुर्लाङः शृ॰ का इशाइ जिस्मिनी।।

कह बहे जि वाजनिर्धण्डः ॥

पूर्व जो जी (यठक ठेकावी।। नुवाल्खाः

बिज वाजनिर्धण्डः ॥

पूर्व के वर्ष। इजि कितिक प्रक्रमः ॥

पूर्व के व्राव्धा वर्षा । यन्य ।

व्राव्धा जा किता गिर्धि के विव्या । येकि व्याव ।

पूर्व के जी वज्य । इजि कि व्याव ।

पूर्व के जी वज्य । इजि कित्म के जी वज्य ।

पूर्व के जी वज्य । इजि स्मार्ट्स ।

पूर्व के जि क्या । इजि स्मार्ट्स ॥

पूर्व के जि स्मार्ट्स ॥

मूर्वामः शृ॰ स्रिकुर्वकपूर्वामः । इठि स्रोधितः ॥ निम्स् च वाक्षः ॥ म मूर्वामाः शृ॰ मूर्निवित्मयः । म स्रवि मूर्निश्वः मक्ष्राः मक्षाः । इठि श्रीकागवज् ॥ उ० भर्यायः । क्रमाः द्रिश्द । इठि विकाश्रम्यः ॥ उम्राः कार्या हेर्वम्निकन्या कन्मनी । इठि वृक्षविवर्षं श्रीकृष्णक्षम् थश्रः ॥ मन्स् विद्रारक्ष वि ॥

मूर्विशः वि महिनुः । इठ्यमहः ॥ थवाः मून्धिक र

। इंडि रामिनी ॥ मृर्यः । इंडि णद-ब्रञ्जावनी ॥

দুর্দ্বিনীতঃ পু॰ অবিনীতাখঃ। তৎ পর্য্যাযঃ। শূকলঃ ২। ইতি হেনচন্দু ।। অবিনীত্যাত্রে ত্রি।।

पृद्ध जि पूर्जनः। यथा। पृद्ध ज्ख
णननः তব দেবি भी नः। ইতি চণ্ডी

प्

पृद्ध जि भजूः। ইত্যনরः॥ দৃষ্ট-

চিন্তে ত্রি।। দুর্জ্বয়ঃ ত্রি দুষ্টান্তঃকরণঃ। ইতি শদা-র্থকল্পতকঃ।।

मून क উৎক্ষেপে। ইতি কবিকল্প-জনঃ॥

मूनिः शू॰ सूनिविष्मवः।। क्यर्रेतः श्री
। ইতি गिनिनी ॥

দুলী জ্রী দুলিঃ। ইত্যমরটাকাযাণ ভরতঃ॥

শ্বরঃ পু॰ শ্বন্তঃ। ইতি হারাবলী ।। ভল্লুকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।।
দুর্গমে ত্রি।।

मुन्हर्या श्रु॰ चशुन्वरमृद्धः। यथा।
मून्हर्या धक उन्नगः। इति सृजिः॥
उद्दर्शरायः। चिनग्रकः २ हथः ०
निशिविष्ठेः ८। इति ह्महन्मुः॥
काठे द्वागः। इति ताक्ष निर्वरेः॥
मून्हिकः भी नग्ना एक् वियनग्रः। यथा

। थ॰ मित्रुवश मान्त्रमः भमनाख्याः भिव मेखपुरान मृत्रकाशि मूक्षम्शृष्ट् जु सित्रुकः शाजाय माद्धाशि ह। पुन्धिकाः महत्व दम्खि नुनाया विद्यः जाजाबाएग् यहत्कानः विश्वमन्तिः वा नवम (ज जामाः विकानः श्वमः ॥ ইতি দীপিকা॥

দুশ্চ্যবনঃ পু॰ ইন্দুঃ। ইত্যারঃ॥
দুশ ইর য ও বৈক্তে। অশুদ্ধীভাব
ইতি যাবং। ইতি কবিকল্লদ্ধনঃ॥
দুশর॰ লী আকাশণ। ইতি শদার্থকল্লভন্মঃ॥ দুঃখেন করণণ॥ দুয়েণ
ক্রিয়নাণে ত্রি। ইতি মুধ্ববোধণ॥

मुक्स की शाश । यथा। मुक्क का नृगा ।

ता गाया खिरित कमा ८ मम । करेल विकास माना करेल कमा ६ माना करेल क्या है जिल्ला कर्म कर्म कर्म विशा कर्म विशा कर्म विशा कर्म विशा कर्म विशा कर्म विशा कर्म ।

पूर्वीनः श्॰ कातनाजगन्नपुराः ইতি
भपत्रद्वावनी ः पूज्रवाख्य वि।
ইতি भपार्थतन्त्र उकः ॥

मूक्क की भागः। इंड्रिनतः ॥
मूक्क की भागः। इंड्रिनतः ॥
मूक्क कि महार्दः। यथा। की द्वा मृ
व्यानयामुवाः नू क्कि जनात् करी
। विद्मान्यः भूजित्यस् जिमानवाः
क्रितिकान्।। इंडि भूषिक्व जद्व

দুর ব্লী দু: খ । ইত্যমরটীকাষা

ভরতঃ ৷৷

नात्रमः ॥

मूद्रमितः शृ थिमित्रवृक्षाख्मः। ७२ भर्यायः। कास्त्राकी २ कालककः ७ गात्रिः ८ व्यमत्रकः ६ भव्यकः ५ वर्षमातः १ मात्रथिनतः ५ महा-मातः अकृष्यिनतः २०। व्यम्प्र ख्याः । कर्ष्युः। देखनः। विक्रवः। त्रक वृत्याय प्रायक्षं कृषि विष वीमर्शद्व करिशकार क्व नामित्रः। इति ताक्रनियंगेः॥

্<sup>্</sup> শ্লী সং<sup>8</sup>। সড ইতি খ্যাত । ইতি শদচন্দ্ৰিকা॥

দুষ্টঃ ত্রি দুর্বলঃ ॥ অধনঃ। ইতি বিখঃ॥
দুষ্টবৃষঃ পু॰ শভোপ্যধূর্বহঃ। গড়া
গৰু ইতি ভাষা ভংপর্যায়ঃ। গলিঃ
২। ইতি হেনচন্দুঃ॥

मुश्रे की शू॰कवी। ইতি শদর রাবলী।।
मुश्रे वर्र निन्छ। ইত্যমর: ॥
मुश्रे वि অবিনীত:। ইত্যুগাদিকোৰ:॥
मुश्रवः शू॰ চোরনামগন্ধ্র্য । ইত্যমর:॥

দুয়র্শঃ পু॰ দুরালভা।ইত্যনরটীকা-যা॰ভরতঃ ॥ দুঃখস্পৃংশ্য ক্রি॥ দুষ্থুথর্শা শ্রী দুরালভা॥ থব্দুরী। দুহিতা

ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

দুরুপর্যণী জী বার্ত্তাকী।ইত্যমরঃ ।।

দুরুপর্যণী জী দুরুপর্যণী।ইত্যমরা

কাষা ভরতঃ ॥ কণ্টারা ।ইতি
রাজনির্ষণ্টঃ ॥ বৃহতী।ইতি ভাবপুকাশঃ ॥

দুষ্কুবেশা জী কন্থারী বৃক্ষঃ। ইতি ।
রাজনির্ধন্টঃ।।

দুব, তঃ পুণ চল্টুবণ্ণীয় রাজবিশেষঃ।
স ঐতি পুতঃ। তস্য পুত্রো ভরত
রাজ্যন্তবি গিল্পীশঙ্গলা। ইতি
ভিন্তাগ্যত্গা

দুস্থঃ পু॰ কুকুরঃ। স্ট্ঃ। ইতি শ্রাথনিয়তকঃ।।

पूरु व क छ पूरि। (मास्त इंडि यादः । इंडि क्वित्वक्रमः॥

দুহ ইর এসর্দনে। বধ ইতি যাবং। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ॥

দুহিতা জী নন্য।ইত্যনরঃ॥ কন্যা
দান পাত্রাপাত্র-যথা।কৃত্বাপরীক্ষাণ
কান্তম্য ব্লোতি কামিনী বরণবরায
কান্তম্য বৃদ্ধায় জ্ঞানিনে তথা।।
দরিবায় চম্থাম যোগিনে কুৎ সিতায় চাহ্মত্তরে লাগ্যুক্তায় চাত্যন্ত
দুর্মুখ্য চা। পাপলায়াক্ষ্মীনায
চান্ধায় ব্রিরায় চ। জড়ায় চৈব

দুহিতা

मूर्थाय ज्ञीवजून त्रय शाशित ॥ वुक-হত্যা• লভেৎ সোপি যঃ স্বকন্যা• দদাতি চাশাভাষ গুণিনে চৈব ফুনে চ বিদুষেপি চ II বৈশ্ববায সূতা • দন্তা मण वाशी कन नाउट ॥ # ॥ कन्तर विकस्य भारमा यथा। यः कन्तर পালন• কৃত্ব। করোতি বিক্রয• যদি । বিপদা খনলোভেন সম্ভীপাক স গছতি ৷৷ কন্যা নূত্ৰ পুরীযঞ্চ তত্র ভক্ষতি পাত ही। কৃষিভি দ্•শিত कारेक याविषमुग्नान्ठवूषंम ॥ मृजन्ड ব্যাধ্যোনৌচ **স লভে**জ্ঞ**ন্ম নিশ্চিত**॰ িনিকীণীতে মা**ণ্স** ভারণ ব**হত্যেব** দিবা নিশ•া৷ ইতি বু : বৈবৰ্ভেপুকৃতি थं ७ ॥ 🛊 ॥ कन्यामान क्व वया। দশ বাপী সমা কন্যা দীয়তে ব্ৰাহ্ম-ণায তৎ। বেদক্তায় পবিত্রায় চাপু-তিগুহ শালিনে ॥ সন্ধ্যা যক্ত বেদ পাঠকারিণে সত্যবাদিনে। অস্মৈ পুদত্তা কন্যাচ দশ বাগী ফলপুদা।। ত্রিসন্ধ্যাক্রারিণে সত্যবাদিনে গৃহ-मानित्। (यह ज्ञाय ह विश्वाय ह लार्ख ফলদাযিনী ॥ পুতিমুহ গৃহীতায नक्रार्शनाय निज्रमः। नृथाय मखा कन्। ह ना हजूःकननायिनी ॥ পর-দার গৃহীতায় যাত্রকায় দ্বিজায় চ।

F.S

भठाय मक्तारीनाय वारशुक कनमा সুতা॥ সৰ্বসন্ধ্যা স্থান্যত্ৰী বিহীনাৰ শঠায চ। বিপ্যোক্তবায দত্তা যা বাপ্যন্ধ ফলদা সূতা ৷৷ পাপিনে শূদু জাতায বি**পুক্ষেত্রোন্ড**বায় চ। দত্তা ठाखान जूनतय कनत मा नंतक शुमा ।। বিষ্ণু ভক্তায বিদুষে বিপ্ৰায সত্য-বাদিনে ৷ জিতেন্দ্রিযায় দক্তা যা বিণ্-महानीकन्युना ॥ यश्चित्र जर्जुानि দিব্য ৰূপণ বিধায় চ। এবমূভায় দন্তা চ নোদতে বিষ্ণুমন্দিরে ॥ দত্ব। कन्ताः त्रूमीलाक्ष रुताय इत्रयथया। মারায়ণ স্বৰূপঞ্চ ভবেদেব শুতৌ সুত্ত ।। বিষ্ণুভক্তো যদা কন্যা দদাতি বিষ্ণুপুতিযে। স লভেদ্ধরি দাসঞ্চ ধুব• বিপ্রোক্তবায চ ॥ 🕸 ॥ বিবাহা-নম্ভর• কন্যায়। ভত্গৃহ গনন সমযে পিতাদীনাং রোদনং শান্ত সিদ্ধং। যথা দুৰ্বাসনা সহ ঔর্ব কন্যায়াঃ कम्मला विवार । कन्ता ममर्शक क्वा भाशांदूरिह क्रांतर ह। मृहाम-বাপ সমুনিঃ স্বকন্যা বিরহ্যাতুরঃ।। অপত্যভেদ শোকৌঘঃ সাত্মারাস ন মুঞ্চতি। ক্ষণেন চেতনা॰ পুণপ্য বোধ্যামাস কন্যকাণা মূৰ্ছিতা•ভাত বিছেদান্তদন্তী শোক সংযতা ৰ 🌡 ইতি বৃন্ধবৈধৰ্ভে পুক্তিখণ্ড শ্ৰীকৃক জন্মথণ্ডে !!

দুষ্ঠিতুঃপতিঃ পু॰ জাসণতা। ইত<u>ুম্</u>র টীকা সারসুন্দরী ॥

मूश् क्री (मारुनयागाऽ । (माश् । इंडियाक्रवा ॥

দূ ওড় য খেদে। ইতি কবিকল্পজনঃ।
দূডাশঃ ত্রি পীডাযুক্তঃ। দুংখেন দাশ্যতে যঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ॥
দন্তসান্তোপি॥

দ্ডভঃ ত্রি ব্যসনপ্রাপ্তঃ। বিপাশুক্তঃ।
দুঃখেন দভ্যতে যঃ। ইতি সক্ষিপ্ত সারঃ॥

দূচ্যঃ ত্রি অধনঃ। দুষ্ঠ ধ্যাযতি যৃঃ। ইতি সিদ্ধান্ত কৌমুদী॥

मृगामः वि पृःरथननद्वेः। पृःरथन नामाउ यः। ইতি मिष्कान्यकोगूपी।।
पृठः পु॰ वार्जाह्यः। তৎ পर्यायः।
नात्महत्वः २। ইত্যनतः।। निम्हें
कर्षकः १। ইতি मदत्रवावनी।।
তস্য লক্ষণ यथा। यथाकवापी
पृठः স্যাদেশভাষা বিশারদः।
विভাগবিৎ। विজ্ঞাত দেশকালদ
पृञ् गांৎ न महीक्षिणः॥ वकानयनाउ यः काल महूल। नृপতে ভবেং।

ইতি মৎস্যপুরাণ ॥ অপিচ। गियावी वाक्णपूरे शुर छार भविष्डा-शुक्रकः। शिद्धा यथाक्रमानी ह ় এব দূভোবিধীয়তে। ইতি চাণকদা। অন্য । পরে হিত জঃ পরবার্য্য-य्यार्थम्यार्थि छङ्दि । मानादेशम् মতিধীরো দৃতঃ স্যাৎপৃথিবীপতেঃ ।। मृज्यका शुक्रही ज नर्मा जित শারদ° । ইঙ্গিত,ক্ত° তথা সভ্য• **५**क॰ मध्यनम ग्रुवः ॥ यनुत्रक শুচি দক্ষঃ মৃতিসান্দেশ কালবিৎ । বপুমান্ বীতভী বামী দূতো রা:: ক্তঃ পুষ্পারতে॥ দূত এবহি সমজে। ভিনত্ত্যে হি সঙ্গতান্। বিম্**ষ্যা** র্থোনিতার্থক্চ তথা শাসন হারকঃ ॥দূতাব্রযোমাত্যগুণঃ সমৈঃপাদা-क्ववि दिन्नः। विम्यु। यं कार्यावना ८ শাসন ন করোতি যঃ 🛭 মিতার্থঃ कार्यामाखाङो न वर्यामुख्याख-त्र । यथा कवारी **मत्नर महा**न्तिन লেখহারকঃ।। তত্ত্র দূতো বুজদেব চিন্তবেদুভরোভর । বার্ভা বিশেষ ভূপায ঝটিচিত্যঙ্গ বেশ্মনি।। দূতো হি ন লিখেৎ কিঞ্চিৎ নির্ণেতা বিনি-ज्ञान्य । शृह्याताशि न द्भार यामिनः दाशि विभनः ॥ इंडि युकि.

कन्नज्क्था 🗱 ॥ जल मृत्ज वर्गनीयानि 1 নিজপুভুতেজঃ জীবিক্রমৌমত্যকর িবাক্য > শতুক্ষোভকরচেষ্টা ः व्यथर्यनीयञा ० मक्ष्ण । । मिर्छयद् ৫। ইতি কবিকল্পলতা ॥ म्ज्यी को कम्यश्रुही। इंडि नद-्र हिन्दुकाना मृजिः जी मृजी। इंजि मदत्र नावनी॥ দূতিকা দ্রী দূতী। ইতি শদরত্বাবলী দূতী জ্রী সারিকা। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।। দৌত্যকর্মণি নিযুক্তা স্ত্রী । জ্রীপুণসোঃ সন্দেশপু। গিকা। তৎ পর্য্যায়ঃ। সঞ্চারিকা ২। ইত্যনরঃ ।। দূজিঃ ৩ দূতীকা ৪ দূতিকা ৫ । ইতি শবরত্বাবলী।। দৌত্যব্যাপার িপারস্থা। তস্যাঃ সংঘউন বিরহ निर्वरनारीनि कर्याणि। इंकि तम मक्षती ।।

দূতীকা স্ত্রী দূতী। ইতিশদরত্নাবলী।।
দূত্য শ্লী দূতকর্মা। দূতস্যভাবঃ।
ত্যমরঃ ॥ দূতসভাবঃ। ইতিমেদিনী ॥

দূনঃ ত্রি অধাদিনা শুগন্তঃ। ইত্যমরঃ॥ উপতপ্তঃ। যথা। পিত্তেন দূনে রসনে সিতাপি তিক্তায়তে হংসজ্লাব-তংস। ইতি নৈষধণ॥ म्णुः वि वनवान्। ইতি স'किश्रमादत উपादिवृद्धिः॥

मृतः वि अनिकिः। अमिक् हेः। उट शर्यायः। विभुक् हेः २। इज्यादः॥ मृत्रमर्भनः शृः गृथः। इजि ताक्षनिर्यक्तः॥ मृत्रमर्भा शृः शिख्यः। इज्यातः॥ मृत्रमर्भा शृः शिख्यः। इज्यातः॥ गृथः। इजि विकाश्यमयः॥ मीर्य-मर्भाक वि॥

मूत्रम्के भू॰ পণ্ডिতঃ। ইতি भाषतङ्गा-वनी ॥ गृशुः । ইতি হেন্টেন্দুঃ ॥ मीर्यमर्भिक जि॥

मूत्रगृणः भु भूक्षञ्ः। ইতিরাজ নির্ঘণ্টঃ॥

मृत्रत्वधी वि मृत्रनिक्षभगञ्च । उट भर्यग्रायः। मृत्राभाजी २। इंजि स्म-ठन्मुः॥

দ্রেরিতেক্ষণঃ ত্রি কেকর:। ইতি শব্দালা।।

मूर्येऽ॰ क्री विशाइिक मदद्रज्ञावनी।।
मही। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

দূর্বা দ্রী স্থনানখ্যাত হাসং। তৎ পর্য্যায়ঃ শতপর্বিকা ২ সহসুবীর্ষ্যা ০ ভার্গবী ৪ কহা ৫ অনন্তা ৬ । ইত্য-মরঃ ।। তিক্তপর্বা ৭ দুর্ঘরা ৮ । বহু-বীর্য্যা ৯ হরিতা ১০ হরিতালী ১১ कह्करा २ ॥ मूझायाः भर्तायः ।
मजरीर्या १ गणानी २ मजनाक्षकः
० शारनामी ८ । इंडि कर्राप्तः ॥
मजभर्ता ६ मिजनूर्वा ७ मिजा १ ।
इंडि त्रज्ञाना ॥ जम्मा ७१० । इक् भिख क्षू द्रामय नामिष् । इंडि ताजवल्लाः ॥

मृनिका जी नीनी। ३७ मध्यक्ताः ा वनी।।

म्मी की नीकी। ইতি मपत्र तावनी।। म्मार की म्यर विक्षण्ड । ইত্য तन विकासात्र मुस्ती॥

पृयकः जि सार्याट्शापकः। उट् शर्यायः। शाःगनः २। ইতি जिला-एट्यायः॥

,, দূষণঃ পু॰ রাবণ ভ্রাতৃ খরসেনাপতিঃ াইতি রামাবণং ॥ দেরেষে ল্লী।।

দূষণারিঃ পু॰ জীরাসঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

मृकिः जी मृषि मा । ইতি मम त द्वावनी मृषिका जी भिजननः । शिवृद्धि ইতি ভाষা। ইত্যারং ॥ তথ্পর্য্যায়ঃ । शिक्षाफक । २ मृषिः ० मृषी । ইত্যা मत दोकाया । ভরতঃ ॥ मृषी । । । शिक्षिष्टे । शिक्षि । । ইতি मय-त्रश्चावनी ॥ जूनिका। इতি । । स्विता। म्विजः वि शाक्षः रोषः । उৎ शर्यायः । অভিশব্যঃ ২ বাচ্যঃ ৩ ক্ষারিতঃ ৪

...। व्हें इस्मान्युः॥

म्विजा जी म्यनशुराक्षा कन्ता। उट शर्यतायः। मस्यमा २ धर्यकातिनी ० शुभामिका ८। ইতি सम्बद्धावनी ॥

দ্বী জ্ঞী দূষিকা। ইত্যার টাকাযাণ ভরতঃ॥

म्यीका जी म्यिका। ইতি শবরহা-वनी :।

म्वीविषः क्ली खंबशादि अवीर्यः विषः। ইতি হেমहन्दः।। আদি-গৰাৎ দাবাদ্যি বাযু রৌদুশোষিত विषः। ষভাবতো গুণ হীনং বিষং। অস্য গুণঃ। উদররোগ প্লীহ গুল্ম সঙ্গ পুনেহ নাশিবং। ইতি রাজ-বল্লভঃ।। যথা। জীণ-বিষদ্বোবিধিভি হৃতয়া দাবাদ্যি বাতাতপ শোষিত-ষা। ষভাবতো বা গুণ বিপুহীনং বিষংহিদ্বীবিষতা মুগৈতি।। ইতি মাধ্বকরঃ।।

म्याः क्षी वजः॥ वज्रग्रः। इजि त्यानिते॥ श्या इजि त्यानमुः॥ म्याः जि म्यायः। इजि त्यानिती॥ म्याः जी रिकक्षतः कृः। कान्निक इजि ভाषा। ज्यार्गायः। कक्षा २ **मृ**द्गांग

বরতা ৩। ইতি হেমচন্দু: ॥ চূষা ৪। ইত্যমর:॥

দ্ ড স আদরে। ইতি কবিকল্লফসং॥
দ্ ড শ আদরে। ইতি কবিকল্লফসং॥
দ্ক জী চক্ষুং। ইত্যমরং॥ দর্শনং॥
বৃদ্ধিং। ইতি নেদিনী॥

দৃক্ ত্রি বীক্ষকঃ। ইতি মেদিনী।।
ভাতা। ইতি শদরত্মাবলী।।
দূক স্নী ছিদু•। ইতি সংক্ষিপ্তসারে
উণাদিবৃত্তিঃ।।

म्कानः शृ (पृक्षानः। ইতি তাজकः॥
मृक्ष्मः शृ मर्गः। ইতি হেমচন্দुः॥
मृक्ष्मः शृ (पृक्षानः। ইতি জ্যোতিষ।॥
मृक्शुमाना को जनवा।॥ जनवा।
पृक्शुमान को जनवा।॥ जनवा।
मृक्शुमा की लाज। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

मृक्नु जिः भू॰ मर्भः। ইতি হলायुधः॥ मृगध्यकः भू॰ मूर्गः। ইতি समार्थ-कन्नुञ्यः॥

म्यानः श्रुः थर्भानाङ्गं र्गान विष्णयः। यथा। थय्डिक ठायः यद्धिक ठाष्टः कीनको कृषा उरगाः रशाजः न्नथः मृद्याञ्चः कार्यः उर्ध श्रृत्रं खङ्कः किक्षिम् नः कार्यः यथा थर्गानाञ्च प्रभित्रं यर्गाक अव गुरू

मृष्रनी

(गान उरिकरम्ब मृद्य अन्। (य) (य) পুংহা বত্ৰ বত্ৰ বৰ্ততে তস্য ত্ৰয়ো-পরি পরিক্রাম্যেদ্রেব বিন্যুস্য मृशु। मञ्चामिकः मर्मनीयः। ज्यवा शृथक् शृथशास्त्री मृद्या खनानि इहरय । তত্রাপ্টম॰ বিত্রিভলমুস্য তহু দৃক ক্ষেপ মণ্ডলং তম্মিন্ খংগালে পুর **ष्टिङ्गरयार्निका**षय॰वष्द्रा उम्मिका-**धात्राम्य थरिमाला प्रिः तक्रूल ज्या** ন্তরে দৃগ্নোবা রচযেৎ। কথিতৈঃ থগোল্ট্ৰ ৰক্ষ্যমাণৈ ভগোল-বৃজ্ঞৈ ক্রান্তিমগুলাদ্যৈ যে নিব-ধ্যতে স দৃগ্নোলঃ। যতোগ্যা কুজ্যা-ৎপম সম শঙ্গাদ্যক্ষ কেত্রাণি দ্বি-গোল জাতানি ভ গোল বৃত্তানি খগোল বৃক্ত মিলিতানি উৎপদ্যন্তে গোলবন্ধে সম্যুগ্নেপলক্ষ্যত ইতি मृशानः कृञः । ইতি সিদ্ধান্ত-শিরোমণিঃ !! गेयः पुर नागः। इं ७ व्हिमहन्तुः॥ ॰ क्ली लोइ॰। इंडि स्पर्तिमुका।। অতিশযঃ। ইত্যমরঃ॥ ः ত্রি স্থা। অতিশযঃ।। পুগাচঃ ॥ वनवान्। इंजि स्मिनि ॥ कॅठिनः॥ ইত্যমরঃ ॥

আঁকড়া ইতি ভাষা। ইতি শবচন্দ্রকা।।
দ্টকাণ্ডণ লী দীর্ঘরোহিষক। ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ।।
দ্টকাণ্ডঃ পুণ বংশঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥
দ্টকাণ্ডা জী পাতালগৰুডীলতা।
ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ॥
দ্টগাত্রিকা জী নৎস্যপ্তী। ইতি
শব্দন্দ্রকা॥
দ্টগুছিঃ পুণ বংশঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

দীর্ঘরোহি
রাজনির্ঘটঃ॥

দৃত্তকঃ পু॰ ধবক্কঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

দৃতত্ণঃ পু॰ মুঞ্জত্ণ৽। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

দৃতত্ণা জী বল্বজা। ইতি রাজনির্ঘটঃ

দৃত্বক পু॰ যাবনালশরঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

অতিশয়: । ইত্যমর: ।।

দ্দেশকঃ পুশু জলজন্তবিশেষঃ ।

হ বি সূলঃ ।। অতিশয়: ।। প্রগাচঃ

হাস্তর ইতি ভাষা । ইতি শুদার্থকল্পতকঃ ।।

ইত্যমরঃ ।।

দ্দেশকঃ পুশু জলজন্তবিশেষঃ ।

কল্পতকঃ ।।

দ্দেশকঃ পুশু জলজন্তবিশেষঃ ।

কল্পতকঃ ।।

দ্দেশকঃ পুশু জলজন্তবিশেষঃ ।

কল্পতকঃ ।।

কল্পতকঃ পুশু জ্বুফলক বৃক্ষঃ । ধল
রাজনির্ঘটঃ ।।

দূচপত্রঃ পু॰ বংশঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ
দূচপত্রী খ্রী বল্ডা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ
দূচপ্রদা জী যবভিক্তা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ 11

দৃদপাদী স্ত্রী ভূম্যানলী। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ॥

দূচপুরোহঃপু• প্লফ্রফঃ। ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

मृष्यकाः श्रू॰ नान्निक्ववृक्षः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

দূতবন্ধিনী স্ত্রী শ্যামালতা। ইতি শ্বচন্দ্রিকা॥

দৃদ্দুষ্টিঃ পু॰ খঙ্গাদিঃ॥ কৃপণে তি। ইতি বিখঃ॥

দৃঢ়নূলঃ পু॰ মুঞ্জত্ণ ॥ মন্থানকত্ণ । ইতি রাজনির্ঘণীঃ ॥ নারিকেলঃ । ইতি শহার্থকল্লতকঃ॥

দৃদরকা দ্রী মুটা। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।
দূদলতা দ্রী পাতালগৰুড়ী। ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ।৷

मृह्यामा थ्रं जी म्का १ हेडि मपहिन्द्रका ॥ कठिन लामयू क वि॥
मृह्यमूनः थ्रं लक्ष्रः॥ श्राः हिडि
बाजनिर्दे ॥

मृत्वना जी अश्वष्ठा। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ
मृत्वीकः পু• চক্রমদ্বা। বদরঃ।।

বৰ্রঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

দ্টস্কিঃ ত্রি নিশ্বিদুঃ। তৎপর্য্যায়ঃ।

সংহতঃ ২। ইত্যমরঃ।।

দ্টস্ত্রিকা জী মূর্বা। ইতি শব্ব
চন্দ্রিকা।।

দৃঢক্ষরঃ পু• ক্ষীরিকাবৃক্ষঃ। ইতি জটাধরঃ।।

দৃদক্ষুরা জী বলজা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ
দৃদাস্ব লী হীরক । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ
দৃতঃ ত্রি আদৃতঃ। আদরার্থ দৃধাতোঃ
কর্মণি ক্ত পুত্যযেন নিয়মঃ।

मृठा खी जीतकः। ইতি भन्दिन्ति।।

मृठिः পু॰ हर्ष्यभूदेकः॥ मट्नाः। ইতি

मिनि॥ পুথনস্য পর্য্যাযः। सङ्गः

२। ইতি হেমচন্দুः॥

দৃতিধারকঃ পু॰ বৃক্ষবিশেষঃ। আকন পাতা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাযঃ। আনন্দী ২। মৃষিকারাবৃঃ ৩ বামনঃ ৪। ইতি শব্চন্দ্রিকা।।

দৃতিহরিঃ পু॰ সক্ষরঃ। ইতি মুখা: বোধব্যাকরণ•॥

দৃন্ ব্য হি॰সা। ইতি মুধ্বোধ টীকাষা॰ দুর্গাদাসঃ ।।

मृद्धः श्रा क्रिश्म। ইতি কবিকপ্পদ্ধ ।।
मृद्धः श्री मर्भः॥ ठकः। ইতি मिनी॥
मृद्धः श्रूः वृष्धः॥ मूर्यऽः। ইতি হেমচন্দুঃ

 श রাজা। ইতি শদর্থাবলী।।
 অন্তকঃ। ইতি সংক্রিপ্তসারে উণা-দিবৃত্তিঃ।।

দৃপ শ বাধনে। ইতি কবিকল্পন্ধনা।
দৃপ কি সদ্দীপনে। ইতিক্বিকল্পদ্ধঃ
দৃপ ঞি য উ ই র হর্ষে।। গর্বে।
ইতিকবিকল্পদ্ধঃ।

দৃপ্তঃ ত্রি গর্বিতঃ। ইতি ধরণিঃ।।
দৃপ্তঃ ত্রি দৃপ্তঃ। ইতুগোদিকোষঃ।।
দৃক প শ শ্লেশে। ইতি কবিকল্লভ্রমঃ।।
দৃক্তঃ ত্রি পুথিতঃ। ইত্যমরঃ।। তীতঃ
। ইতি ভ্যার্থ দৃভ ধাতু দর্শনাৎ।।
দৃভ শ ই কি ভ্রমে। পুথন ইতি
যাবং। ইতি কবিকল্লভ্রমঃ।।

দৃভ দ কি ভবে। ইতি কবিকল্পদ্ধনঃ।।
দৃশ্য ক ভ ঞ সংঘাতে। রাশীকরণ
ইতি যাবং। ইতি কবিকল্পদ্ধনঃ।।
দন্তঃ জী সর্পঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদ্য

দৃষ্ণ স্ত্রী. সর্পঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদ্যা মুণাদিবৃত্তিঃ॥

मृक्षः खी मृत्ः। ইতি निकासकोगूम्ता मूर्गामिवृद्धिः ॥

দৃশ ইর ও পুেক্ষণে। চাক্ষ্যজ্ঞান ইতি যাবং। ইতি কবিকল্লফনঃ।।

দৃশৎ জ্রী পাষাণঃ। ইত্যমরঃ।। নিপ্লেষণশিলাপউণ। ইতি মেদিনী দৃশদ্ভী জ্রী নদীবিশেষঃ। সা আর্য্যা- वर्जमा भूवं भीमा ॥ काजायनी ।
इंडि सिर्मि ॥

मृन्मा की कक्षः । इंडि नक् विनिष्ठा ॥

मृन्मा काएका ॥ श्री श्री न । इंडि नक् 
क्रिका ॥

म्मान क्षी जिति । इंडि सिमिनी ॥

म्मानः भू विद्याहनः। इंडि सिमिनी

॥ जाहार्यतः । इंडि शामित्वादः ॥

लाकभानः॥ द्राक्षनः॥ उंभावत्रयः

। इंडि म किश्वमाद उंगामिक्डिः॥

मृणिः } जी विक्रुश है जि मसत्वादनी ॥ः मृणी } मृणाशमः क्री त्यद्यमाः । है जि मसः

विमुका॥

मृणाः वि मर्गनीयः। पृष्ठेवाः। ই जिः वाकत्रभः॥

দূষ এত্তী পাষাণঃ ॥ নিপ্লেষণশিলা । ইতি মেদিনী ॥

দ্বৎ সার গুলী মুগুলবস । ইতি রাজ-নির্মণটঃ ।।

म्हे॰ क्षी स्रशाहक का ज्यः। इंड क्षा द्वा विश्व विष्ठ विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विष्य

দৃষ্টরজাঃ জ্রী পুগগুরজক্ষা। তৎ পর্য্যায়ঃ। মধ্যমা ২। ইত্যনরঃ।। প্রৌচা। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

मृड्डोडः शू॰ উपार्त्रगः॥ माजः॥ মরণ । ইতি মেদিনী ॥ मृश्चिः क्री म्यूः। इंडामदः॥ दुषिः॥ দর্শনণ ইতি মেদিনী॥ #॥ পুহাণা॰ मृश्चि कथनः यथा। ত্তीयगृह्ह म**म**ग গৃহে চ শনেঃ পূর্ণাষ্ঠ রন্যেশং भाममृष्टिः । शक्ष्मग्रह नवमग्रह ह গুরোঃ পূর্ণদৃষ্টি রন্যেষান দৃষ্টিঃ। চতুৰ্থগৃহে **অপ্তনগৃহে চ কু**জস্য शृर्गमृष्टि द्रानामाः जिलाममृष्टिः সপ্তন্গৃহে সর্বেষা পূর্ণদৃষ্টিঃ। পঞ্স পূহে সপ্তমে নৰমে দ্বাদশে চরাহোঃ পূর্ণ দৃষ্টিঃ। দ্বি তীয়ে দব্দনে চ ত্রিপাদ দৃষ্টিঃ। তৃতীয়ে ষষ্ঠে চতুর্থে অষ্টমে हार्ष्वमृष्टिः ॥ 🗱 ॥ शुरुगगाः मृष्टेऽভाव নিৰ্ণযো যথা। ছি তিভব্ৰে একাদশে চ রাহেছে ই।ভাবঃ। ছিতিভবনে দ্বিতীযে ষষ্ঠে একাদশে দ্বাদশে ठात्राराः म्केडावः॥ 🕸॥ अवाः शुनान यथा। ত्তीय मनानं देव भारम् है कपाश्ठा। वर्षत् हिक नवरम भक्ष्य ह भुकीर्जिजा। हजूर्थ চাষ্ট্রনে চৈব পাদোনা পরিকীর্ত্তিতা । সপ্তমে পরিপূর্ণা চ ফলনেব॰ **পু**इन्नार्ड ॥ তৃতीय मन्यावार्किः পশ্যন্ পূর্ণফলপুদঃ। ত্রিকোণগান্

ध्वरिक्त ठजुर्था है मनान कुछः।। नुज मन नवार अभू निर्देश नुदाद यू नन एसम द्राली निर्देश जा जवार्यः। महज दिश्र टजूर्थ ब्रह्डरम टार्क्ष निर्देश विज्ञिन मूना छ। नेत प्रमाः हि द्रात्यः।। प्रकानक विजीयक यह रमका प्रमाह था। वाप्तमा थाः न नमाः वि (स्वः नमाः वि (ज्युक्तः।। के जि का जिव ज्वा

দৃষ্টিকৃৎ ক্লী স্থলপদ্ম । ইতি শব-চন্দ্রিকা।।

'मृष्टि ह्उ॰ क्ली **इलश**क्य • । **इंजि मद**-तदावली ॥

मृष्टिखनः शुः वानामिनकाः। ইতি
निक्याना॥

দৃষ্টিবন্ধঃ পু॰ থদ্যোতঃ। ইতি শব-রত্নাবলী।।

দৃষ্টিবিক্ষেপঃ পুণ কটাক্ষঃ। ইতি হলাযুধঃ!!

দৃষ্ঠ বুদ্ধো।ইতি কবিকল্পন্ন

দৃহিতঃ ত্রি বৃদ্ধিপুাপ্তঃ। দৃহধাতোঃ কর্ত্রি জেন নিয় মঃ।।

দু ম ভযে। ইতি কবিকল্পজনঃ।।
দু য গি বিদারে। ইতিকবিকল্পজনঃ।।
দু গি ভযে। ইতি কবিকল্পজনঃ।।

দে ত পালনে। ইতি কবিকল্লফনঃ।। (मही भागानः जि भूनः भून द्रिज्यायन বা দীপ্যতে यः । অতিশয দীপ্তি বিশিষ্টঃ। ইতি ব্যাকরণণ।। (দय॰ बि माजवारः। मानीयः। ইতি ব্যাকরণ ।। দেব ঋ ড দেবনে ৷ ক্রীডন ইতি যাবৎ । ইতি কবিকল্পদ্রমঃ॥ (एवः क्ली इन्तियुः। इजि (मिनी।। দেবঃ পু॰ দেবতা। নাট্যোক্তৌ রাজা। ইত্যনরঃ ॥ রাজা ॥ মেঘঃ । ইতি মেদিনী ॥ পারদঃ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥ বুা হ্মণানামূপাধি ভেদঃ। यथा। (पव शृक्षः नद्राथाः जारा भर्मा वर्मापि मःयुजः। ইजि मृजिः॥ কায়সাধীনা পদ্ধতি বিশেষঃ। তস্য বিবরণ কাযস্থ শব্দে দুষ্টব্যং॥ **দেবकः शू॰** यमूव॰भीय त्राक्रविरभयः। স ঐকৃষ্ণ্য্য মাতানহঃ৷ ইতি ঐ ভাগবত ॥ ( दक्फंगः शृं भूशिक्षुवाविष्णसः। স ত্রীথণ্ডাগুৰু কপূর সন্ধুম সংমি-শ্রিতৈ র্ভবতি। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ দেবকামজা জ্রী দেবকী।ইতি শব-बङ्गावणी ॥

দেবকাষ্ঠ• भ्री भिवनाय । ইতিরত্ন-

भावा। (मयमाक भुष्डमः । उट. भर्यायः। भृष्डिकाष्ठः २ जम्काष्ठः ३ मूकाष्ठकः ८ म्यूकाष्ठः २ जम्काष्ठः ३ मूकाष्ठकः ८ म्यूकाष्टकः ८ म्यूकाष्टकः ८ म्यूकाष्टकः १ जिक्दः । जिक्दः ।

দেবকিরী জী মেঘরাগস্য ভার্য্য।

যথা। ললিতা মালসী গৌরী নাটী

দেবকিরী তথা। মেঘরাগস্যবাগিগ্যেভবন্তীমাঃ সুমধ্যমাঃ॥ অস্যাঃ
স্বৰূপংযথা। ভুমন্তী নন্দনে শ্যামা
পুত্মপুচ্য তৎপরা। খ্যাতা দেবকিরীছেষা করার্পিত স্থীকরা।।
ইতি সঙ্গীতদামোদরঃ।।

प्रविशे की दिवक ब्रांबकना। मा
वमुप्तवभन्नी श्रीकृष्णमाञा। उद भर्यायः। देनवकी २ कृष्ण्वननी ० प्रविश्वाबाध। ইতि भरतनावनी॥ हेयःकणाभभन्नी श्री श्रिक्ष काञा। यथा। प्रविशे व्याहिनी ह्या वमु-प्रविश्वाबि (विकी श्रञ्द । ইতি महाजावत् हितविश्वा ॥ श्रीका कणाता वमुप्तवण प्रविभाञा ह प्रविशे श्री व्याहिनी श्रावा ।

ोक्क श्रम्थ ७°॥ (एउकीनम्पनः शु॰ बीक्कः। ইতি मुक्तकावनी।। দেৰকীসূনুঃ পু॰ ঞীকৃষঃ। ইতি হেম-म्बुः ॥ 'लिवक्रल' क्री विनामूथ'। पिउन इंजि ভाষা। ইতি शातावनी ॥ व्यमऽ বিবরণ । চৈত্যশব্দে দুপ্টব্যং ॥ प्तवस्वया जी महापुरागा। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ॥ **(मवस्रमूम॰ क्ली नदस्र॰। ইত**্रस्र क्षः ॥ **দেবখাত শ্লী** দেবখাতক । ইত্যন্নর-টীকাথা• ভরতঃ ॥ দেবথাতক শ্লী পু॰ অকৃত্রিমজ্লা-শযঃ ৷ অপৌৰুষেয়ণ দেবজও মি-**छ** जारी। इंडि मूर्ज् िः ॥ नागामि জ্ওনক্তিনমিতি সামী ॥ তৎ পর্য্যায়ঃ। আখাত २। ইতি ভরতঃ | ॥ অথাত ০ । ইত্যমরঃ ॥ দৈব

विनिर्मिज १८। ইতি मदत्र द्वांवनी।। <del>গুহা। ইত্যমর টাকাবাণ ভরতঃ।। ।।</del> দেবথাতবিল॰ ক্লী 'ধহা। ইত্যমরঃ॥ ( दिनाका जी महासमा। इंकि ब्राज-निर्घणः॥ (एंवगाक्षाती जी विदार्गमा जार्गा।

**औक मा**तवी। तामकीर्य (भ तार्गिण): **এরাগস্যপ্রিয়াইমে ॥ ইতি সঙ্গী**-তদামোদরঃ ॥ অস্যা গানসম্যঃ শিশির ঋতৌ তৃতীয পুহরাবধি রাত্র্যন্ধ পর্য্যন্ত ॥

দেবগায়নঃ পু॰ গন্ধরঃ। ইতি হেন-ठमुः ॥

দেবগিরী স্ত্রী রাগিণীবিশেষঃ। ইতি হলাযুধঃ।। সা সোমেশ্বর মতে বসন্ত রাগম্য ভার্য্যা বসন্তথতৌ সদা গেয়া। ভরতমতে হিন্দোল রাগপুত্র নাগধৃনি ভার্য্যা ॥ সঙ্গীত দর্পণ মতে তু নটকল্যাণ ভাষ্যা। অস্যাঃ স্বৰূপ যথা। অত্যতি-রাম ঘনশ্যামতনুঃ উত্ত্রন্ধীনস্তনী হারকণ্ঠভূষণা দ্রীপড্কিমধ্যস্থা मखहरकातनयना मुख्क हि অস্যা গানসম্যঃ হেমন্তে দিবা চতুর্থ পুহরাবধি রাত্র্যন্ত্রপর্য্যন্ত ॥ দেবগুৰুঃ পু• বৃহস্পতিঃ৷ ইতি পুরাণ• **(म्वगृह क्री ज्**र्य) हन्मु । मीना र क्रांजि-र्या उलानि । यथा । मनुख्यत्रयू मर्स्ययू क्षक मूर्य गुरामुयाए। जानि प्तव গৃহাণি সুঙ্গ স্থানা খুণুনি ভবন্তি হি ॥ ইতি মৎ সংপ্রাণ ॥ দেবালয় চ यथा। गाञ्चात्री (मवगाञ्चात्री मानव | (मविविद-मत्को भू । अधिनीममात्त्री

। ইতি হ্লাবুধঃ।। ঘিবচনাস্তো হ্য ।। দেবছনঃ পু॰ হারবিশেষঃ। স শত ষষ্টিকঃ। ইভ্যমরঃ।। অষ্টোত্তর শত ষষ্টিকে। হ্য মিতি কেচিৎ। ইতি ভরতঃ ।।

দেবজন্ধ• ক্লী দেবজন্ধক•। ইতি হেম-চন্দঃ।।

দেবজধাক ক্লী কন্তৃণ । ইত্যনরঃ ।। দেবটঃ ত্রি শিল্পী। ইত্যুগাদিকোষঃ ॥ দেবটী ক্রী গঙ্গাচিল্লী। ইতি হারা-বলী।।

দেবতৰং পু॰ মন্দারঃ॥পারিজাতঃ॥
সন্তানঃ॥ কল্লবৃক্ষঃ॥ হরিচন্দন•।
ইত্যমরঃ॥ চৈত্যবৃক্ষঃ। ইতি
ত্রিকাওশেষঃ॥

प्तिवा जी प्रवि मृति की प्राश्चा ज्ञा जिया। उट् शर्यायः। ज्ञम द्वाः निष्क् द्वाः ० प्रवाः ८ विवृशः ७ मूदः १ मूश्य । ৮ मूमनाः ৯ विषि-विषः ० । पितोकाः ১১ আपित्यः ১२ पिविषट '১० त्वथः ४८ अपि जि-नन्दनः ४८ आपि ज्यः ४७ अजुः ४१ ज्य द्वाः ४৮ ज्ञम् ज्ञां ४० अणुः ४१ ज्य द्वाः ४५ ज्ञ जुज्जू रू २ शीं वां । २० पानवादिः २८ वृन्दा द्वाः १८ पित्र १८ । इज्य मदः ॥ या शाजूक्

२१ मनुजविहे २৮ मू । यथ २० (म ) यथ ৩০ স্বৰ্গী ৩১ শৌভঃ ৩২ নিলিম্পঃ ৩৩ সুচিরায়ুঃ ৩৪ স্থিরঃ ৩৫৭ইতি नद्रवावदी॥ 🗱 ॥ उन्ताः रःथा खयंखि॰ ने (कार्रयः। यथा। मनाता বিবুধাঃ সংখ্ স্বানাণ স্বানাণ গণৈঃ সহ। ত্রৈলোক্যে ত প্রযন্তি শৎকোটি সংখ্যা যথা তব !৷ ইতি পাদ্মোত্তর-थुः ॥ 🛊 ॥ , जनस्व व व व । আদিত্যা স্তবিতা বিশ্ব সাধ্যা ভা-ষর নাক্তাঃ। মহারাজিক কুদুা-**শ্চ বসবো গণদেবভাঃ।। আদিত্যা** দাদশ প্রোক্তা ভবিতা ক্রি-শদেবাই । বিখেদেবা দশ প্রোক্তাঃ সাধ্য দ্বাদশ কীর্ত্তিতাঃ॥ আভাষরা শুতুঃ विश्वे वी जाः शक्षामम्नकाः । भश রাজিক নামানো ছেশতে বিংশতি उथा। कृषा এकामम (शाका वन्तवा **ংগ্রী সমীরিতাঃ।ইতি শবর**্বাবলী ॥ 🗱 । ( তবा॰ চত্বারো বর্ণা যথা। আদিত্যাঃ ক্ষৃত্রিয়া স্তেষা্ বিপশ্চ মৰত তথা। অখিনোচ মৃতৌ শুদৌ তপস্যুগে সমাছিতৌ। মৃতান্তাক্ষ त्रमा (एवा वृक्षिण हैं) निक्रयः॥ इंटि । उद भर्त एवाना । हाजूर्वर्ग । भू-.কীর্ত্তিণ। ইতি মহাভারতে মোক-

थर्यः ॥ शादिकवानाः शक्रवका यथा ॥ । यब यब मुद्राः शृङ्गा गलमाम् । ख कर्मिगाः । विक्इंटन उठ उठ दिक्वा-নাং হি বৈশ্বাঃ ৷৷ বিশ্বক্সেনং স স-नकः मनाउने मेजःश्रद्गः। मनमः मन সমারঞ্চ পঞ্চিব শুক্ষযেন্ততঃ॥ ইতি পান্মে উত্তরথঙে।। # ।। দেব্যট্ক॰ यथा। (भाक्ष मित्नक्ष विक्र विक् শিবং শিবাং। দেবমট্কঞ্ সংপূত্য নসস্ত্য বিচক্ষণঃ !৷ ইতি বুন্ধ বৈবৰ্ত্তে " পুক্তিখঙা মাপচ। আদিত্য গণনাথঞ্চ দেবী॰ ক্সু॰ যথা ক্রম॰। नातापन विमुखाधा मा क क দেৰতাঃ॥ ইত্যাহ্লিকতত্বু ॥ # ॥ ব্যক্তি-বিশেষস্য উপাস্যদেৰতা যথা াযাযস্যাভিমতাপু•সঃসাহি **তসৈ**্ব দেবতা। কিন্ত কাৰ্য্য বিশেষেণ পূজি-তा एष्ट्रेमा नृगाणा वित्मवाद मर्बमा नाय॰ नियमा शनार्था नृशाः। नृशाना॰ দৈবত বিষ্ণু ভথৈব চ পুরন্দরঃ॥ বিপাণামগ্নিরাদিত্যে বুহু টেচব পি-নাকপুক্।দেবালা দৈকত বিষ্ণু দান-বাৰাণ ত্ৰিশ্লভূত ৷৷ গন্ধৰ্যাণাণ তথা লোনো যক্ষাণা মপি কথ্যতে।বিদ্যা-श्रांगा॰ वाएवी माध्यानां जगवान् ছরিঃ ।। রক্ষসাং শক্ষরে। ক্রুঃ কিন

त्रालक भा**र्ब**जी। सवीनाः रेमवजः बुता सहास्तवक मूबद्ध ॥ सन्ना॰ স্যানুমা দেবী তথা বিষ্ণু: সভান্ধরঃ । गृरुष्टानाथः मर्खिमू दुका वि वुमाहातिगां ।। विथानमामस्विका म्रा-মতীনাঞ্চ মহেশরঃ। ভূতানা• ভগ-वानु पुः अगा क्षानाः विनायकः॥ भ-র্বেষা ভগবান্ বৃক্ষা দেব দেবঃ পুজা-পতিঃ৷ ইত্যেব ভগবান্বুকা ষ্য দেবে। ভ্যভাষত ॥ ইতি কূর্মপুরাণ• ॥ 🗱 ॥ जायान (८६ व घडेन फिन व यथा। তত্তাক্ত নক্ষতাণি। উত্তরফ্লুণুজ-রাষাটোত্তরভাদুপদ্যেহিণী চিত্রানু রাধামৃগশিরোরেবতীপুষ্যোৎশ্বিনী হন্তা শতভিষা শুবণা স্বাতী পুনর্থসু র্ধনিষ্ঠা। তত্র তিথয়ঃ শুভাঃ। তত্র চন্দু ख्ठीय मणन मधन ब्रोचकामण्डः শোভনঃ।। ৠ।। অথ সামান্য দেব পুতিধানিনণ তত্র মাসাঃমাব ফালুন চৈত্র বৈশাখ জ্যৈষ্ঠাঃ হরিশ্যনাত श्रविगायाण है।। उज नक्ष जानि धनि है। में जिया द्वारा भा भून विश्व विश्व ভরণী কৃত্তিকা বিশাখা ভিমান ॥ তক্ৰ তিথয়ঃ শুভাঃ॥ তক্ৰ লগানি বৃষ निथून कन्तर धनुमीन म क्रकानि॥ তত্ত চলুঃ শোভনঃ ৷৷ লগাপেক্ষ্যা

বৃহস্পতিঃ কেন্দুছঃ শোভনঃ লগ্না-পেফবা শুক্র স্থভীয় ষষ্ঠেকাদশস্থঃ শোভনঃ ॥ ইতি জ্যোতিষ• ॥

দেবতাডঃ পু॰ বৃক্ষবিশেষঃ।দেতাডা
ইতিখ্যাতঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ।বেণী ২
খরা ১ গরী ৪ জীমৃতঃ ৫। ইত্যমরঃ
।। অগরী ৬ খরাগরী ৭ পরাগরী ৮ ॥
। ইতি তড়ীকাষাণ ভরতঃ। দেবতা
ডী ৯ আখু বিষহা ১০। ইতি জটা
ধরঃ।। আখুঃ ১১ বিয়জিহ্বঃ ১২
মহাছদঃ ১০ কম্মঃ ১৪ খুক্তাকঃ ১৫
দেবতাডকঃ ১৬। ইতি রত্মালা।।
রালঃ।। অগ্নিঃ। ইতি মেদিনী।।
হোষকলতা। ইতি বিশ্বঃ।।

দেবতাডাঃ পূ॰ দেবতাডঃ।ইতি রল্পালা॥

দেবতাবিপঃ পু<sup>°</sup> ইন্দুঃ। ইতি শব-রত্বাবলী॥

দেবত্ব° শ্লী দেবত্য°। দেবসাযুজ্য°। ইত্যমরঃ ।! দেবস্য ভাবঃ কর্মা রা । ইতি সংক্ষিপ্তসার ব্যাকরণং ॥

(দবদণ্ডা জ্রী নাগবলা। ইতিরাজ-নির্ঘটঃ।।

দেবদত্তঃ পু• বৃদ্ধানুজঃ। ইতি ত্রিকাশু-।।
শেষঃ।। অজু নশঃঃ।। শরীরবাহ্য পঞ্চবাযুম্ভর্গত বায়ু বিশেষঃ। ইতি

मदार्थकन्न उकः ॥ विज्ञान एव-एकः मूक्त दिक मिन्न । इंडि मात पाठिनकि ।। म॰ क्लान्स्मिनः । यथा (प्रविद्यापि म॰ क्लान्सम्) मर्व-निम्न जाकि वाजावाद क्ला कि मान् याजि। इंडि पूर्णामामः ॥

দেবদন্তাগুজঃ পু॰ বুদ্ধঃ। ইতি হেম-চন্দুঃ।।

দেবদানী দ্রী ঘোষকাকৃতিঃ। হস্তি ঘোষাইতি ভাষা। ইতিরত্নমালা॥

(एवराक क्री वृक्कवित्भवः। उ প্রর্য্যায়ঃ শক্রপাদপঃ২ পারিভদুকঃ **৩** ভদুদাৰ ৪ জ কিলিম•৫ পীতদাৰু ৬ দাৰু ৭ পূতিকাধ ৮। ইত্যনরঃ ॥ जूतराक > माकक > > जिल्लाक >> अमहामाक >> निवमाक >> श्राञ्चर॰ ४८ ज्ञश्राज्ञ २८ ज्वनाक **)**७ जुरू २१ हेन्द्रशक २४ मस-माक १२ मूतज्बरः २०। ইতি ভাবপুকাশ: ॥ সুরাহ্ব ২০ দেব-काष्ठ २२। ইতি রহ্মালা॥ অস্ত গুণাঃ। তিক্তব্ব॰। ৰক্ষব্ব॰। শ্লেমানি-ল ভূতদোৰ নাশি বৃঞ্চ। ইতি রাজ-निर्घण्डशा मघुष् । निष्कष् । উकद् । কটুপাকিত্ব। বিবন্ধাখান শোর্থাস उन्द्री हिङ्गा ब्राजु शुरम र भीनज

শ্রেম খাস কণ্ড় সমীর নাশিবঞ। ।
ইতি ভাবপুকাশঃ ।। তস্য লেপন
তাঃ কান্তিদত্ব । আনদোষ বিবদ্বার্গঃ পুমেহ জ্ব নাশিবঞ্চ। ইতি
রাজনির্ঘটঃ ।। জ্ব কক্ষতাংলক্ষী
রক্ষোবিন্ন নাশিব । ইতি রাজবদ্বাভঃ ।।

দেবদালী শ্রী লতাবিশেষঃ। যঘর-বেল ইতি খ্যাতঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। জীমূতকঃ২ কণ্টফলা ৩ গরা ৪ গরী ৫বেণা ৬মহাকোষ্ফলা ৭ কট্ফলা ৮ যোরা ৯ কদস্বী ১০ বিষহা ১১ কর্কটী ১২ সারসূষিকা ১৩ বৃন্তকো-मा 78 वाथू विषदा २० मानी 79 রোমশপ্যত্তিকা ১৭ তুরঙ্গিকা ১৮ সু তর্কারী ১৯ দেবতাতঃ ২০ ৷ অস্যা গুণাঃ। তিক্তবৃণ। উঞ্চবুণ। কুটুবুণ। পাণ্ডুকফ দুর্নাম খাসকাস কামলা ভূত নাশিত্বঞ্চ ॥ তস্যাঃ ফলস্য खगाः। जिङ्कष्। कृमि (प्रमा समा শূলার্শোবাত নাশিত্ব। সুণসনত্ত্বঞ ॥ পীতা গরা খরস্পর্লা বিষয়ী গর-नामिनी। ইতি क्राङ्गनिर्यण्टेः ॥ দেবদাসী জী বনবীজপুরকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। বেশ্য । ইতি শাদা-র্থকল্পতকঃ ॥

(एवरीथः भू॰ लाठन॰। ইতি **भद**-त्रञ्जावनी॥

(एतमून्यू जिः शृ॰ गद्दशनामः। म त्रकः जूनभी। ইতি রত্নমালা॥ (एताना॰ पुन्यू जिन्युक्ष।।

দেবদূতী গ্রী বনবীজপ্রকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

प्तराप्तवः भू॰ भिकः॥ दुक्ता। ইতি भद्रज्ञावनी॥

'দেবদুোণী জ্ঞী দেবযাত্রা।ইতি হারা-বলী।

দেব্দু । ইত্যমর: ।। দেব সমী-পগন্তা। ইত্যমর: ।।

(एवशन १) की शान विष्णियः। (एशन इंडि ज्या। (जाजात इंडि हिन्ती ज्या। उट अर्य) गरः। यदनानः २ (गाननः ० जूर्गा ख्यः ८ (जाजाना ६ विक्रम् ज्ञिका ७। इंडि (हमहन्दुः।। (एवशभः १९ व्यानाः। इंडि व्याप्ताः।

দেবধূপঃ পু॰ গুগুলুঃ। ইতি রত্ননালা॥ দেবন• ক্লী ব্যবহারঃ॥জিগীবা॥ জীডা 1 ইতি মেদিনী ॥ লীলোদ্যান• । ইতি ত্রিকাওশেষঃ ॥ পদ্ম•। ইতি শদ্চন্দ্রিকা ॥ পারিদেবন• । ইত্য-মর টীকাষা• ভ্রতঃ ॥ দু্র্তিঃ ॥ স্কৃতিঃ।। কান্তিঃ।। শোকঃ। । দেবপুত্রিকা দ্রী পৃহা। ইতি রাজ-ইত্যমর টাকাযাণ মথুরেশঃ॥ দূরত । ইতি স্বামী।।

দেবনঃ পু॰ পাশকঃ। ইত্যমরঃ॥ (स्वनन्दी भू॰ हेन्द्रुवात्रभावः। ইতি र्मिन्मुः ॥

(एवननः शू॰ ननाजिपः। उৎপर्यतयः। (मर्यनानः २ मश्नननः **३** वनः ४ नलाखमः ৫ ज्वनावः ७ ज्व-म्खः १ मूत्रनामः ৮ मूत्रक्यः २। অস্য গুণাঃ। অতিমধুরত্বণ বৃষ্যত্বণ नैयर क्यागङ्ग । ननामिक वीर्याङ्ग । । রস কর্মণি শস্তত্বঞ্চ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥

দেবনা ক্ৰী ক্ৰীডা।। সেবা। ইতি শদ-ब्रञ्जावनी ॥

(एवनानः भु॰ (एवननः। ইতি রাজ-निर्यकः॥

দেবপতিঃ পু• ইন্দুঃ৷ ইতি হেমচন্দুঃ৷৷ দেবপত্নী স্ত্রী মধালুক। ইতি ত্রি-काश्रमसः॥ (प्रवानाः ভार्यत ह ॥

(मदश्रव: शू॰ (मदाना-श्रष्टाः। उ পর্য্যায়ঃ ছায়াপথ: ২ সোমধারা ৩ নভঃসরিৎ ৪।ইভি ত্রিকাওশেষঃ।।

দেবপর্ণ স্লা সুর র্ণ । ইতি রাজ-नियंकः ॥

निर्घणैः ॥ দেবপুক্রী ক্রী পৃঞ্চ। ইতি জটাধর:।।

দেবপৃষ্ট জ্ঞী অমরাবতী। ইতি জ্ঞান

(मवश्राः शुः शुरु नक्षजीमि घढिउ জিব্দাসা৷ তৎপর্য্যায়ঃ॥ উপশু,তিঃ ২। ইতি হেমচন্দুঃ॥

**(मविश्रुयः शू॰ शीउँ ज्ञानः॥ व**क-পুষ্ণঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

प्रविचा जी अहरम्बी।। जाग्याना । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥

प्रविव हा छः भूः भूमा गर्मः। इत्राम दः (मत्तृका े পू॰ नात्रममूनिः। ইতি হেम-**ठन्मुः** ॥

দেবভবন ক্লী অশ্বত্থঃ ৷ ইতি শদ **इन्द्रिका ॥ दर्शन्छ ॥** 

(দবভূঃ পু॰ (দবঃ।ইতি শবর ক্লাবলী।। चर्गण्ड ॥

(एव ज्िः की नन्ता किनी। इंडि न्यमञ्जावनी ॥

(रवज्य क्री (रवद्गा (रवनायुक्त) । ইত্যমরঃ ॥

(एवमिनः पूर जुर्गः ॥ को खणः ॥ व्ययस्त्रामावर्कः । इति त्यमिनी ॥ (ए वयु

জন্মদা। ইতি দাজনির্ঘণ্টা।।
দেবসাজা জী অদিতিঃ। ইতি ত্রিকাতেশেবী।।

দেবমাত্কঃ ত্রি বৃষ্ট্যবুসম্পদ্রীহিগালিত দেশঃ। ইত্যমরঃ॥
দেবমানকঃ পুং কৌত্তভদণিঃ। ইতি
শন্বমাবদী॥

(मन्यामः भू गर्जम्याद्वेसमामः। ख्रः शर्यग्रायः। गर्छाद्वेसः २। इति विकाश्रः स्वरः॥ (मनानाः गामः। सगन्यग्रास विः स्वरं व्यवः॥ (मनयकिः भू (मनभूकतः। मृनिः। यथा खार्या विकान् (मनयकीन् निरुगः। इति ভरिः॥

लंबय ज्रः श्रू श्वाः। इंडिस्मिन्सुः॥ मिवयाजा जी मिवयमनः। उट्श्वर्यायः सिवरमानी २ । इंडि हाजावनी ॥ मिरवाद्मिन हो।

(स्वयान॰ क्लिं स्विवियान॰। (स्वत्रयः। इंडि मदार्थक्ट्राउंकः।।

(स्वयानी खीं भूकाठार्य)कन्ता । मा यथाठि बाजभन्नी । ইতি श्री जाग-

দেবয়ুঃ ত্রি ধার্মিকঃ।। লোক্যাত্রিকঃ । ইতি মেনিনী ।। দেবে পুং। ইতি শুদ্রক্লাবলী ।। (पवद्रा

(एवर्यानिः शृ क्षी (एवश्व योनि निरानञ्जा यम् मः । उपथा । विराधताः ) अन्नतमः २ यकाः ३ त्राक्षमाः ६ गक्षवीः ६ किषताः ५ शिषाहाः १ ७ स्काः ५ शिषाः २ ज्जरनः २० । ইত্যমतः ।।

(मवतः भू भनुः किश्र्वाणा । (मध्य इंकि जाया । ज्यम्पंत्रायः । (मवा२ । इंक्त्रप्रतः । (क्रिश्च यमुत । इंकि जन्नजः । ।

দেবরথঃ পু॰ দেবানাণনিনানঃ। ইতি হলাযুখঃ।। সচ পুয়কাদিঃ।। দেবরাজঃ পু॰ ইন্দুঃ।ইতিত্রিকাশু-শেষঃ।। তস্যনামানি যখা। ইন্দুঃ

 বহিনঃ ।। আখণ্ডলো হরিহযো
নমুচিপাণনাশনঃ। বৃদ্ধশুবা বৃষ্টেশব
দৈত্যকর্পনিস্দনঃ ।। ষট্চত্মারিংশ
লানানি পাপানানি বিনিশ্চিত ।
ইতি বৃদ্ধবৈবর্ত্তেরন্মথণ্ড ।।
দেবরাতঃ পুং পরিন্ধিৎরাজা। ইতি
শ্রিভাগবত ।। সারসপন্ধিবিশেষঃ
। ইতি শ্বার্থিকল্পতকঃ।।
দেবরিঃ পুং সুর্বিঃ। তৃদ্ধানারদঃ
১ অত্রিঃ ২ নরীচিঃ ১ ভরদ্বালঃ ৪
পুলস্ত্যঃ ৫ পুলহঃ৬ কতুঃ ৭ ভৃশুঃ৮
বশিষ্ঠঃ ৯ পুচেতাঃ ১০ । ইত্যমর
টীকাসারসুন্ধরী।। তুলুক্ব ভরতাদিঃ
। ইতি তিটীকাষা ভরতঃ। কণাদা
দিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।।

प्रवनः श्रु॰ (एवाडीवः। जीविकार्थ॰
(एवान् गृहीज्यान्। शृङाति वामन्
हेिं जाय।। हेज्यतः।। (एवाशः
जीवङीवी। यथा। (एवाशङीव जीवे हे एववण्य श्रुकीर्खिजः। हेिंजि
तुकादवर्खश्रुताणः।। हिकिट मकान्
(एवलकान् माण्य दिक्यिण स्था।
विभागन ह जीवास। वर्जाः श्रु ईव्य कव्यया तिजिमनूः। (एवलः श्रुजिमा भित्रहात्रकः वर्जनार्थां दिन्यदिन रुव्या कर्वाण १२० निर्धाः नस्व श्रुमीर्थः। एवरकारवाशकी वि नाना एव
वाका ज्यि कि एवन वहना ।

इं जि जो कारा क्रम्क जो शाकाः

थार्थिकः। इं जु अपि दिका वहना शामान निवास ।

मूनिः। इं जि विका अप्यास । एवतः

। इं जि मदत्र वावनी।। धर्ममा क वका

मूनि विष्य । इं जि ज विका अप्यास ।

म जि जि वृक्ष विका अप्यास ।

से विष्य । इं जि जुक्ष विवर्ष कि विका विका ।।

से विद्या विज्य । इं जि वृक्ष विवर्ष कि कि वृक्ष विवर्ष के ।।

দেবলকঃ পু॰ দেবলঃ। ইতি জটাধরঃ॥ দেবলতা জী নবমল্লিকা। ইতি শহ-চন্দ্রিকা॥

(प्रवणाङ्ग्रणिक। जी वृन्धिकाणिः। इंडि जाजनिर्घणेः॥

(मवरनाकः भू॰ सर्गः। ইতি ভিদাও-শেষः॥ सभिन्। ভূর্কোকো १থ ভূব-র্লোকঃ মর্লোকো १থ মহ র্জনঃ। তপঃ সত্যঞ্চ সপ্তৈতে দেবলোকাঃ পুকী-র্ভিতাঃ॥ ইতি সৎস্যপুরাণং॥

(मयवकु॰ क्ली जारिः। ইতি सम्हिन्तिका !! (मयाना॰मूर्थकः ॥

দেববর্জকিঃ পু বিশ্বকর্মা। ইতি হেমচন্দুঃ॥

(एवर्कः शृ॰ मध्यर्वकः॥ मन्त्रात्र . वृक्षः॥ ध्युवः। ইতি मिनि ॥

व्यवनिश्वी (स्वज्यः भारतः पुष्ठेवारीः ॥ দেববৃতঃ পু॰ ভীমঃ। ইতি ক্রিকাও-**एल्लिकः ॥ (नवानाः वृज्यः।**। দেবশেখর: পু<sup>\*</sup> দমনকঃ।ইতিরাজ-निर्घिष्टः ॥ (स्वाना गडक्थ ॥ त्तवनुञ्कः शू॰ वेश्वतः॥ माञ्च॰॥ नातरः ।ইতি শদার্থকল্পতকঃ॥ रिवर्णनी की गृती। ইতিরাজনির্যটিशा দেবদভা ত্রী দেবানা•সমাজঃ। তৎ পর্য্যাবঃ। সুধর্মা ২। ইত্যমরঃ॥ দেবসভ্যঃ ত্রি ক্রীডাসভাস্থ:1 তৎ পর্য্যায়ঃ। সভিকঃ২।ইতি ত্রিকাও-শেষঃ ৷৷ দেবসামাজিকশ্চ ৷৷ (मरमर्यभः भूः र्क्षभुष्डमः। उৎ भर्यत्रायः। व्यथाकः २ वनतः ० तकः মূলকঃ ৪ সুরসর্যপকঃ৫ সৃত্মদলঃ ৬ निक्कंत्रमर्भभः १ अत्रताङ्किः ৮। अग्र खनाः। कर्ष्ट्रवः। উकदः। कक ङङ (नाव त्रकामय नामिव्न । क्ठाद्वथ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ (एवजरु। की एएअ९ शत्नोबधिः ॥ ভিক্ষাসূত্র•। ইতি বিশ্ব: ॥ দেবসাৎ ব্য সকলজনাদেবভাবাপু্যাঃ ॥ (५वाधीन ।। (५वरमय ।। यथा। जार्कन प्रधीन दार यार्थ्यं जा मः পূর্বপদ কৃ ভূ ধাত্তমু পরেষ্ণুচসাৎ

পুত্যযোভবতি।দেখে १थि প্রিক ংগাত্তমু পরেমু ত্রাচ্ পুত্রযো পি। यथा (मवाय (मय॰ करतां जि (मववा করোতি। ইতি মুধ্ববোধ ব্যাকরণ দেবসাযুজ্য শ্লী দেবত্ব। ইত্যমরঃ॥ (एवमृष्टे। जी यम् १९१ विञ्चनम्पुः॥ (एर्क्स्ना की इन्द्रुकन्ता। त्रा वही॥ দেবানা সেনা। ইতি হেমচন্দুঃ॥ (एवरमनाभिजः भू॰ कार्खिक्यः । इंजि भदत्र शावनी ॥ **एवस• द्वी एवस्डाल्मिएस-। यथा। तुषायक श**रहार्म् वा । स्वयक हरहजु

যঃ। কন্যা॰ দদাতি শুল্কেন স প্রেতো কাগতে মৃতঃ ॥ ইতি মহাভারতে পঞ্জোতাপাখ্যান ॥

দেব। পু॰ দেবরঃ। ইত্যমরঃ॥ রণ্ডা-পতিঃ ইতিসংক্ষিপ্তসারে উণাদি-বৃত্তি: 11

দেবা দ্রী পদ্মচারিণী॥ অশ্বনপণী। इंडि भद्रहिनुका॥ (एवाजीवः बि. (एवनः। ইত্যনরः॥

দেবাজীবী ত্রি দেবল:। ইত্যমরটী काया अभागपः॥

(एकार्रेक्ष व्यक्त इति इति कवि । यथा। यहा नमती मूर्वाशां विश्वास्त्र शुक् স্থা ছিত্তবান্ তদ্দিনাদেব ক্ষেত্র। হরিহরাত্মকংশা দেবানা মটলটোব। দেবাট ইতি সংক্রিতংশ ইতি বরা-হ পুরাণংশা

मिता श्री श्रूष्ण व्यवस्था है जिल्ला । इनित्रका ॥

দেবানাম্পুয়ঃ পু॰ খ্রী ছাগঃ। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ॥ ক্লাল্মঃ। ইতি হেন চন্দুঃ॥

দেবাপিঃ পৃ৽ পুতীপরাক্তঃপুত্রঃ।

স সুমেক সমীপে কলাপ গ্রামে
বোগী ভূত্বা আন্তে স কলো লুগু॰

চন্দু বংশং পুনঃ সত্যযুগে ভাবিধি
ব্যতি। ইতি প্রভাগবতং ॥ স চ
স্কন্ধী পুজাভি রপধ্যাতঃ। ইতি
মৎস্যপুরাণং॥

দেবাভীগ্ৰা জী তাদূলী।ইতি শদ-চন্দ্ৰিকা॥

(एवायजन क्ली (एवाणयः। यथा। न (एवायजन गहिए कमाविषा १ शुम किन । न भी एउपचा वज्रानि न (एवा-यजन चुनि ।। इंजिक्स भूजान ।। (एवाषुध क्ली भक्ष मूं । इंजि (एम-

हन्तुः॥ (त्वानामक्षणः॥ (त्वार्ट्कः मूर्त्रेणर्गः। ইতিরাজনির্বেটः॥ ॥ (त्वार्ट्या, की नर्ग्यवीणञा । ইতি । क्षाक्रिक्जिः हाः

(रकामयः क्षीः वर्षः अः (रक्ष्यः । ইতি भक्तर्थकञ्च अकः ॥

(रक्षाम् जी व्यापिनी विष्णतः । ইতি

हनायुद्धः ॥

स्वावामः भू• व्यथ्यव्यः। ইভিं विकाওশেवः॥

प्तवाधः शूः हेम्पुरवादेकः। উद्देश्भुवाः । ইতি ह्वायूभः॥

पितिका जी निर्मिति । इंडिं मेप्-त्रज्ञावनी ॥ जम्राः भितिमान यथः ॥ व्यक्ष (योद्धन विखाता । भक्ष (योद्धन मायजा ॥ वजावप्य विका माह प्रविष्ठं भितिष्मिति । । इंडि भाष्य ज्ञिथका ॥ शूख्तः । इंडि जार्थ-काषाः ॥ पर्वमयक्षिति जिः।

पिताः विश्वाभितः। हेनुशापितायः पिताः विश्वाभितः। हेनुशापितायः पिता विश्वाभितः। हेनुशापितायः पिता विश्वाभित्याः। हेनुशापिताः। पितामान्यायः। हेनुशाहित्या। प्रतीनाः पितायायः हेनि कृतिः।। व्याप्ताः। विवासायायः। हेनुशाहित्यः।। प्रतिनाः। पित्राप्त्याः। हेनुशाहित्यः।। प्रतिनाः। पित्राप्त्याः। हेनुशाहित्यः।। দেবীকোটঃ পু॰ বাগপুর•। ইতি \_ ত্রিকাওশেষঃ।।

্রেনেক্য:- পু॰ বৃহস্পতি:। ইতি শব-রত্নাবলী।।

(मर्वर्धः शू॰ महास्ममा ॥ अग्नुनः। ইতি त्राक्षनिर्यण्डः॥ (मर्ववाण्ड्रिक वि ॥ (मर्द्धः। जी वनवीकश्त्रकः । ইতি त्राक्षनिर्यण्डः॥

(सरवाम् तान न्द्री (स्वाना दन । उपवा । বৈত্যাজ ।। নিশুক।। শিধুকাৰণ ॥ চৈত্ররথ•। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥ দেশঃ পু• ভূগোলভাগবিশেষণা ইতি जिकाउमक्षद्री।। जनशर बनशर ममूकारक कम्लोककार मजन নির্জল স্থানমাত্রে চাইত্যমরটীকা-যাং ভরতঃ ॥ স ত্রিবিখঃ। জাক্লঃ अन्भः ज्ञादाद्रगन्छ। उৎभर्गायः। क्रनभरः ) नीर्८२ विषयः अःउभ-वर्खन । इंजि ब्राह्मनिर्यण्डा। भूरम-भः ৫ हाङ्के ७। ইতি **भद**त्रद्मावनी ॥ 🕸 ॥ अथ प्रत्म तर्ननीयानि । ऋष् ্ৰপনিঃই দুৱ্য: ৩পণ্য:৪খান্য:৫ক-রোভবঃ৬ দুর্শগাুমঃ ৭ জনাধিক্য ৮ ननीमाठ्कजारिज्ञ। 🗱।। ज्यान वर्गनीयानि। शन्। ३ वाठा २ त्कः ৩ সরঃ ৪ পশুপুঞ্চি ৫ ক্ষেত্র ৬

व्यवष्ठः १ (करातः ५ गात्मवीर्म्भः २ ৰিভুনঃ :০। ইতি কবিব দ্বৰতা।। #:1 जब मध्य प्रभीय जनभरा यथा। তাৰিমে সক্পাঞ্চালাঃ শালা কৈব সজাস্লাঃ। শ্রসেনা ভদুকার। বো-धकाः मर्श्रोदेहवाः॥ मू मृताः विद्राजाः चन्त्राफ चड्यः কান্তি কোলনাঃ। আবস্তান্চ ভুলিকান্চ লোকান্ডৈ-वान्नतिः तर्।। मधुरम्भा इनश्रमः পাুযশঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ।। 🛊 ॥ অথ উদীচ্যাদেশা यथा। वाङ्गीकावादेश-নান্চ আভীরাঃ কালতোযকাঃ।। পরস্তুটিকব শূদ্রাক পরবাক্যাত্মথ-खिनाः॥ गामात्र। जवनारैकव निमू भोवीत गमुकाः। **म**का स्थाः भूति-न्तान्त्रभाद्रमा हात्रमूर्खिकाः॥ ताम्रठाः कश्रेकाताक क्किया (राममानिकाः । क्विरयाभनिरवनाक देवना मृषु अ वानिक ॥ व्याख्याभः ভद्रषाङः পুরুবা: সমশেরকাঃ। লম্পকা স্তল-गानाक टेननिकाः त्रहः त्राक्टिः ॥ এতে দেশা উদীচ্যান্ত পাচ্যান্দেশা-बिद्वांष्ठ ॥ 🕸 ॥ जय भाहत ५ मा যথা। অঙ্ক বঞ্চা মন্তর্কা অন্তর্গরি বহিণিরাঃ৷ তত<del>্</del>ণপুবস্থানাতস্থানল-या नवयर्खकाः हे मुख्या हताः भूदिः

जगार्जार्यय मानवाः। भारतुग-তিয়াণ্চ পুঞ্জান্চ বিদেহন ভাত্রনিপ্ত-কাঃ ॥ শাল্লা মাগৰ গোমর্মা পুচ্যে जनभाः गृजाः।। । वश प्रिणा-नेश (रामा यथा । उथान सं जेमनीरा मकिनामयं वाजिनः। शास्त्रांक क्रिवारिकवकालाः अला अस्थिव ह য় সেতুকা মুখ্যকাল্ডেব জপদাচার-वानिकाः । नवताष्ट्रा नाहियका किन्दिक्त अर्द्धभाः ॥ दशरवद्गाण्ड गरेहवीरेक तार्रवाः भवता ख्या । भूलिका विकार म्योका विकर्ण मख-किः मर ॥ जनीयाक नितानाक ৰূপসা স্তাপসৈঃ সহ ৷ তথা তৈত্তির-কাশ্চৈব সর্বে কারক্ষরান্তথা।।ন্যসি-कान्त्रान्द्रयहारन्ध्यरेहवास्त्रनर्यानाः। जानू कहाः नगारस्याः नरु नात में ज खथा।। कहीयाक मूत्राष्ट्राक ज्ञानर्छा-শ্চার্নু দৈঃ সহ। ইত্যেতে অপরান্তাশ্চ **मृ**गु (य विकारवा जिनः।। #।। वार्थ विकार वामि एमा यथा। भागवान कन-ষাশ্চমেকলাশ্চোৎকলৈঃসহ।উত্ত-মাসাদশার্ণাশ্চভোজাঃ কিন্ধিরিকৈঃ সহ ৷৷ তোষলাঃ কোশলান্দৈব ৰৈ-भू द्वादि फिका छथ । जू यू द्वा समू द्वारेन्ड व शहुमाबियरेषः गर ॥ अनुभा छ- ভিকেরাক ধীতিহোত্রা **অবভ**াঃ ম এতে জনপদা: খ্যাভা বিশ্ব্য পৃষ্ঠ নিবাসিনঃ ৷৷ 🏶 ৷৷ প ৰ্বতাপুৰি দেশা যথা। অতোদেশান্ পুবৰুদ্যমি শৰ্ব-তালুবিণত বে া নিদারা হত্য-বুৰ্ণান্ট জগথা অগথা: খশা: 11 अथशुवतनारेन्डव अर्गाम् जाः नम्ह-কাঃ। ত্রিগর্ম্ভা মণ্ডলাক্তিব কিরাতা-শ্চামরৈঃ সহ।। ইতি মৎস্যপুরাণ 11 # # 11 खिशिह। দেশব্যবস্থা দে-বেশি কথ্যতে শৃনু তৎপরা। বৈদ্য-নাথ সমারভ্য ভুবনেশান্তগ শিবে ভাবদকাভিথো দেশো বাত্রাযাণ নহি দুষ্যতি ॥ রত্নাকর সমারভ্য বুক্ষপুত্রান্তগ॰ শিবে। বন্ধ দেশো নযা (शुक्तिः गर्वनिष्कं शुक्त्रंकः ॥ जग-माथार भूर्वजागार क्काजीवाउगः नित्। कनिक एमः मःश्राद्धा वाममार्ग भन्नायणः ॥ कलिक एम মারভ্য পঞ্চাষ্ট যোজন শিবে। সক্ষিণস্যাণ মহেশানি কালিকঃপ-রিকীর্ত্তিভঃ ॥ সুবুদ্ধণ্য সমারভঃ यावर्ग्स्ता बनार्णनः । जावः रक-রল দেশঃ স্যাৎ তথাধ্যে সিজকেরলঃ ।। त्रात्मचेत्राध्युक्रिकाथ्क्ञित्वन नाम्सः। चनल्या गात्रज्य्यादः

माप्रदाप॰ भाषा ॥ जीवध मार्चेन মাসা তু এরবলঃ পরিক্রিভিড: । শ্মৰদানত নামত্য দকুনাদ্বি তটান্ত-कः॥ जावः कान्यीत्र सम्माराजारोः शकानायाजनाष्ट्रकः । कारनध्रः খেতগিরি॰ ত্রৈপুরি॰ নীলপর্বত•।। कामक्रशाजित्वा (मेर्टमा गर्टम शित्र मुर्वानि । विश्वकृष्क नमात्र ज नार्वा চোজ্জবিনী **भिख ।। गार्**कात ठीर्थ॰ রাজেন্দুকোলাপুর নিবাসিনী। তাব-प्यामा महाताष्ट्रः कर्गार्रे शामि (गा-**ठतः ॥ जगमाथानुक** जाग महीक् শী ভুনরা শ্বিকা েতাবদন্ধা ভিধে দে-भाः भोताष्ट्रे भृत् मानतः॥काक्रना পশ্চিম• তীর্থ• সমুদু পুান্তগোচর•। रित्रू वाकाष्ठका (एवि एण याकन एमणः ॥ स्नोताष्ट्रे एएमा रेग्स्विम **जमानू चर्क्ता** जिथा । हिल्लास সমারভ্য চোলেশামধ্য ভাগতঃ।। रेजनक (मर्गा (मर्विम क्यानीक्यम তৎপরঃ। সুদায়িকা সমারভ্য মল-यामुख्यः नित्व ॥ मनयानाजित्था (मर्मा मञ्जिमिक शुवर्खकः। क्रामनाथः नमात्रका श्रीत्रकाङ विकासित।। <del>্কর্ণাট দেলে। দেবেলি সামূাজ্য</del> खागरावकः। जामुननी नमानाम्

শৈলাৰ শিখরোৰ্ তঃ। অবঁটা সং -জ্ঞকো দেশঃকালিকা উত্ত ভিণ্ণভি । जिनुकानी महाभूर्य तामपूर्णाहरी कि-मा भी विषर्छ। जिल्ला किला विषर्छ। তত্র তিষ্ঠতি। গুর্জ্জরাৎ পূর্বভাগে जू बात्रकांटा हि पिकला। गर्क দেশো মহেশানি উদ্ভৌৎপত্তি পরা-যণঃ। ত্ৰীকোৰুণা দধোভাগে তাপী-তঃ পশ্চিমে পরে। আভীর দেশো দেবেশি বিদ্ধ**ৈশলে** ব্যবস্থিতঃ। অব-**छीजः পूर्वजारम स्मानमर्वता सर्था**-ख्दा । गानवार्था महाम्तला धन थान। भरतियाः ॥ मुविष रिजनकर्या र्याक्षा होनातमः भूकी विष्टः। नम्-কর্ণান্চ তে প্রোক্তা হডেদো বার্ত্তরে ভবেৎ ॥ সক্ষেত্ৰাৎ পশ্চিমে তু তথা চোত্তর ভাগতঃ। ইন্পুপুছা-अरहणानि मण रगाजनक श्रंय।। भा-काल (मत्मा (मर्विम स्मोन्सर्व) गर्ब ज्विजः। भाकान एम मात्रका द्व-हाफिकिन भूबिछः ॥ कारमाङ (एर्मा रररविन वाकि ज्ञानि भज्ञायमः। दैव-मर्छ (मणामूच क इन्तुन् इक्तिन ॥ मक्रिणां भूबिंगांग रेवजांकः পরিকীবিতঃ। কার্যোজাদ ক ভাগে 'वू रेपुत्राह शिक्ति ॥ शालु

(एक्ट्रा) मर्मानि महाण्यप् कात्रकः । গণ্ডকী তীর মারভ্য চম্পারণ্যন্ত कः निवि।। विष्कृष्ट्ः ममार्थाका छि-রভুকা ভিধঃসভু ৷ কাম্বোজদেশমার-ভ্যমহামেছাত্ত্ব পূর্বকে। বাহ্নীক দে-শো দেবেশি অখোৎপত্তি পরায়ণঃ ॥ তপ্তমণ্ড॰ সমারভ্য রামক্ষেত্রা-ন্তক॰শিবে। কিরাত দেশো দেবেশি বিশ্ব্য শৈলেবতিষ্ঠতি॥ করতোযা• नमात्र इंट्रिकाङास्टरः नित्र। মুলতান দেশে। দেবেশি মহামেছ भन्नायनः ॥ हिक्कीर्वः समान्ने मङ्गाउ॰ महम्बद्धि । थुतामाना ভিথোদেশ। ट्राइमार्ग भन्नायगः । তমধ্যে চোত্তরে দেবি ঐরাক: পরি-কীর্ত্তিতঃ।কাশ্মীরস্ত স্মারভ্য কাম-ৰপাৰু পশ্চিমে। ভোটান্ত দেশো (एरविनागतानाः एकिता। मानता भाष् क भूर्व हीनएमः भुकीर्निजः। কৈলানীর॰ সমারভ্য সর্যু-পরিতঃ পরে ॥ অমরগা মহেশানি মহা-**हीना** जित्था जत्य । ऋष्टे यद्गः मना রভ্যযোগিন্যন্ত নহেশ্বরি ৷৷নেপাল (मरणा (मरविण णिलक्षे मृत्रिय । गराथतः ननात्रज्य गरहामध्रु जगः भित्।। भिन्दे है। जिस्सा (रणः शर्ब-

ভেতিঃতিপ্রিযে।বহুদেশ সমারভ্য ভুবনেশান্তগ• শিবে ॥ গৌড দেশঃ नभाष्याणः नर्वविष्या विश्वासः! গোকর্ণেশাৎ পূর্বভাগে আর্য্যারক্তান্তু চোত্তরে।। তৈরভুক্তাৎ পশ্চিমে ভু मश প्र्याण नर्व :। मशाकायन त्मक मूर्यक**म भ**त्रायणः ॥ व्यारम-শ্বর•সনারভ্য তপ্ত **ল**ণ্ডান্তক: শিবে। নগধাথের মহা দেশে। বা বাবা নহি मुयाजि॥ माका उत्रक्तातिक कमार कीकर मागर्सा । हत्रगानिः समात्र छ गृषु हृहो उक् नित्व ॥ जाव कीकहे रिनः म्याउर्ड गीगर्था ज्या । জগমাথ পান্তনেশ শেচাৎকলঃ পরি-কীর্ত্তি হঃ ॥ কামগিরি॰ সমারভ্য দারকান্ত মহেখনি। খ্রীসন্তলাভি-(था (मराना रून न्पृण् नरर अति॥ काम-গিরে দ্কভাগে মকদেশা ত্রপোত্তরে । रून(रृक्षः मनाथ)। जः मृताख्व त्रम्खि চ ৷৷ অথাভ্যস্থ সমারভ্য কোটি-(मन) मध्रग। नमू मु भाखरम् मा-হি কোম্বণঃ পরিনীর্ত্তিতঃ ॥ বুক্ পুতাৎ কামৰূপাৎ মধ্যভাগে তু কৈকৰঃ। মাগধাদক ভাগে তু বি-क्रां शिक्यं भित्।। (जोक्रां भाग जिस्म (नमः मृर्ग्यतःम भुकामकः।

দেশকা

श्खिनाभूत मात्रङ। जबल्कवाह . मिक्कित्।। भाष्मान भूर्वভाग् जू अक रम्भः भुकी खिं छ। मक प्रमार भूर्व-ভাগে कामापुर्विकलिलाया मि॰इ-লাখ্যে৷ মহাদেশঃ সৰ্বদেশোত্তা ত্তসঃ। শিলহটাৎ পূৰ্বভাংগকান-ৰপাত্তথাভরে॥ পুলব্রি দেশে। **फिर्तिम नत्रनात्रा**चनः शतः। गराम्य-রাৎ পূর্বভাগে সমুদাদুত্তরে শিবে। वह रामः ममाथाजः मूक्तमः मृगू गारतः । श्रू निन्ता रूखः त ভारा क-हाइ शिक्टिंग मिर्वि। मूल्मा (मणः मनार्थाराजा मध्मा बाज् ना का बकः । विद्रा भाष्य्राया ग्रीक्षा भृत एक कलिन जू ॥ यह एमः मगान्तराजा गारीश তब जिक्षति। मृतरमना९ পূর্ব ভাগেশগুক্রসঃ পশ্চিমে শিবে !! भोवीक परामा एएवमि वर्वसमा-ধ্যাধনঃ। অবভীতঃ পশ্চিমে ভু रेवरजामाभाषात्र ॥ नाव त्रमाः সনাখ্যাতো বর্ধর শৃণু পার্ধতি। भागाभूतः भगात छ। मधन्याखर्था-ন্তরে !!ব ররাখ্যো মহা দেশঃ সৈহক **ग्**तृ कारतः। वका शुक्तम नावछ। নহীন্ত পরমেশ্বরি ॥ সৈদ্ধবাথ্যে। महारमणः भर्ता किष्ठि शिए।

এতে ষট্পঞ্চাশদেশা ময়া পৌ্জা नहिश्वति ॥ এতন্মধ্যে १ नि एएट-শিদেশভেদ। হ্যনেকশঃ।কোটিশঃ সন্তি দেবেশি এতে মুখ্যাঃ পুকীর্ত্তি-তাঃ॥রহস্যতি রহস্যঞ্গোপ্তব্য শ্যাকটে। ইতি সংক্ষপতঃ প্রো-क किराग (भाजू मिइनि॥ इंजि শক্তিসঙ্কম তন্ত্রে ৭ পটলঃ !৷ िमः विमाला। ইতি হেন্চन्দुः॥ जनाती जी तामिनी वित्नवः। ्नूमऋउ मिघ त्रागमा ভार्या । অস্যা জাতিঃ সম্পূর্ণঃ গৃহ বজুম্বরঃ গানসমযঃবর্ষভৌ নিশান্তঃ৷অস্যাঃ স্বৰূপণ বৃন্দরন্তী তিলযুক্তাননা कमन्यवाकी मार्डिगरुनी भौता-की विस्तानी मुकारातकनी कर्न्त **इन्सन विश्वाकी जावकाता नाय-**কেন সংহাপবিশ্য হাব ভাব কটা-কান সর্বতী। সঙ্গীত দর্পণ মতে অস্যা শানসমযঃ প্রাত বৈরাটী तारिन्ता मह। जनतः स तराः नाय-কেন সহ কেলি চৌতুক রতা শ্যানক্ষেতারা জিতশরৎপ্র্চ-न्त्रानना अनद्भवाक्तिजाकी काक्षन কল্স্যুতিহারিজ্চা ক্ষলন্যনা ্দুভাষিণী। বৃতি সঞ্চীতশান্ত।।।

দেশৰ্মণ শ্লী উচিত। ইত্যমরঃ॥ **तिणाथी जी जा**रिगी विष्णवः। इन्-মন্মতে হিন্দোল বাগস্য দ্বিতীয রাণিণী। তস্যা জাতিঃ বাডবঃ গৃহ॰ गाक्षात्रवतः गानमगरः वमछरखो - 'পৃরাহঃ'। অস্যাঃ স্বরূপ সুর্বপা ানারী চন্দুবদনাক্রোধনা কলহপ্রিযা রোমহর্বানিছোষ করবালকরা মল্ল ॥ वर्ष्ट्रावर्षिठ वाजवकाः वनम র্মিত কক্ষন্থাপিত শত্রপক্ষা সর্বদা -**ৰস্মীপভাপিত** নাযকা চ। রাগ-ৰীলা মতে ভূতিস্যাঃ স্বৰূপণ মল্ল বং পরশার মলকীভাষা নিযুক্ত। मा कीषा मन्नकारिः एक भग भुष त्रोपूरखालम ज्ञि लूथेमामि कशा। কলনাথমতে বসন্ত রাগস্য তার্ব্যা। সঙ্গীতদর্পণ মতে অস্যাঃ জাতিঃ সংপূর্ণঃ৷অস্যাঃম্বরপ কপূরাদ্পি कमनीयाशी कमलता डिज्यमा इ-র্যযুক্তা রসিকা অতিধীরা কিঞ্চিৎ अक्रुंटिक। मीर्येजुडा मन्नमूरिक स्मान চিনী চ। ইতি সঙ্গীতশান্ত ।! দৈশান্তর- ক্লী সুফেকলক্ষয়ো র্মধ্যব্রেখা ৰ্কপ <u>দেশ</u> ৰদেশযোরভর যোজন **ा ३**७ि निषास्त्रहरू।। य উদया-उत्र कर्मणा न्यामा (मोरियका गुरा

জাতা তে দেশান্তর কর্মণ। **ৰপু**রো-मियकाः त्रुरः । जह मिविधः अकः প্রাপর দ্বতীয় যামে প্রবং তার मः क्रमूकः । यथा । ययन निका-मय कालिका एउ प्रभाखदान **य**शू-त्तामत्य मूरः । **एमा** बतः शुगगनतः ज्यानार यात्माखन जहन नः ज মুক্ত ৷৷ ইতি সিদ্ধান্তশিরোমণিঃ ॥ 🗱 ॥ प्रभाइत भित्रज्ञायां वृष् মনুঃ। বাচে। যত্র বিভিদ্যন্তে গিরিহা ব্যবধায়ক:। মহানদ্যন্তর যা তদে শান্তর মুচ্যতে ॥ দেশনাম নদীভে-দানিকটোপি ভবে অদি 1 তত্ত্ব দে-भाउत (পुङ् स्यत्भव स्यम् वा ॥ দশরাত্রেণ যা বার্ত্তা যত্র ন শুয়তে ংথবা ।। বৃহস্পতিঃ। দেশান্তর বদ ন্ত্যেকে **বস্তি**যোজন মাযত । চত্বারি -শদ্বদন্ত্যেকে ত্রিংশদৈকে তথৈব চ ॥ ইত্যুদ্বাহত इ॰ ॥ সুনি দ্বয় বচনোক্ত বাগাদি যোজনাদি ভেদ সামঞ্জস্যার্থ মেব ব্যাখ্যায়তে ত্রিতম বৈশিষ্ট্যে ক্রি-শংশান্তনাভ্যম্ভরেদ্বিত্যবৈশিষ্ট্যে তদুপরি এক বৈশিষ্ট্যে চত্ত্বারি শেমা-कत्नाभित्र वागी गित्रि महामम् उछित-তত্বভেদাভাবেপি বঞ্চি যোজনোপরি বৈশেশ্য মিতি শুন্দিচিস্কামনিং ম

দেশিকঃ পু॰ পথিকঃ। ইতি ছেম-চন্দুঃ॥ গুৰুঃ। যথ।। দেশিকো মূল মজ্জেণ-ইত্যাগমঃ॥

पिनी जी जर्जनी। ইতি শবর্জা-বলী॥

দেশী জী রাগিণী বিশেষঃ। হনুম-মতে দীপক রা দদ্য ভার্য্য। অদ্য জাতিঃ যাডবঃ গৃহণ ঝ্য ভয়রঃ গান नगरः भी याखी मध्राहः। अन्तरः चनशः मूनशानाती रुतिष्यन। খলস্কৃতা যৌবন মদেন কামা স-ক্তা সতী নায়ক শ্যনাগারনাগত্য নিধুবন রতা চ। ভরত মতে ভু মেঘরাগস্তরাগিনী। সোমেশ্বর মতে বসম্ভ রাগস্য পত্নী। সঙ্গীত দর্পণ মতে হিন্দোল রাগস্য ভার্য্য । তস্যান সম্বঃ যাম্যুগল । **তস্যाः सक्तभः । नि**मुगुक्तमयना वानमायुका श्रियां जियू थी नाय কস্য নিদ্রা ভঞ্জনার্থণ মনোরঞ্জন তান•গাবভী রহুণেছ্যা রচিত্রে=া ভূষণগণশোভিতা গৌরাষী পরি-হিতহরিদর্শগাটকা। ইভিসদীত नाड ॥

দেশ্য শ্লী পূর্বপক্ষঃ। ইতি শব্দরশ্লা-বৃদ্যী।। দেশয়র্হে বি ।।

দেকুঃ ত্রি দাতা।। দুর্দ্দমঃ। ইতি হেম-চন্দুঃ ।। রজকঃ। ইতি সংক্ষিপ্তসা-রোণাদিবৃত্তিঃ।।

(एकः भू क्री मत्रीतः। इंड अतः॥ ন্যায়মতে পৃথিব্যা দেহ যোনিজ অযোনিজঞ্চ। যোনিজ জরাযুজ म ७ बक्ष। व्यानिक प्रमाकि मानिकः। नात्रकिणाः भन्नीत्रमश्र-श्रानिक । कनीय । एक न्यानिक বৰণ লোকে পুসিদ্ধ । তৈজসংদে হ ग्यानिङ भूर्यातात शुनिकः। বায়ে।র্দেহ্মযোনিজ তদেব পিশা-চাদীনা। ইতি সিদ্ধান্ত মুক্তাবলী া। 🗰 ॥ অথ নরক ভোগ দেহ বিব-রণ। তত্র যম• পুতি সাবিত্রী পুশঃ । সদেহে ভশসাভূতে বাস্তি লো-**কা**ন্তর• নরাঃকেনদেহেনবাভোগ• ভুঞ্জতে চ শুভাশুভ ৷৷ সুচির : ক্লেশ ভোগেন কথং দেছে। বিনশ্যতি। দেহোৰা কিম্বিংখা বুন্ধন্ ভন্মে ব্যাখ্যাতু মর্হসি॥ যমস্যোত্তর । मृगु (स्ट् विवज्रगः कथ्यामि यथाः গন । পৃথিবী বাযু রাকাশ তেজ खाय मिछि सू हे ।। एहिना एह -वीडक जुड़े: मृद्धि विश्वा श्रद्धः । श्थिवतामि श्येष्ट्रेष्ठ स्थिति स्थिति (मरुधि

র্মিতো ভবেৎ॥স কৃত্রিমো নখরশ্চ ভমসাই ভবেদিহা৷ বৃদ্ধাৰু ৪ পুনা-ণঞ্চ যো জীব পুৰুষ: কৃতঃ। বিভৰ্ত্তি 🔏 সূত্র দেহস্ত ত দ্রপণ ভোগ হেতবে।। न (रहान ভবে छ म क् न रही यभा-वाय। जलन नाष्ट्री (मरी वा शुरात সুতিরে কৃতে॥ ন শস্ত্রে চ ন চাত্ত্রে চ ন তীন্ন কণ্টকেতথ।। তগুদুৰে তপ্ত লৌহে তপ্তপাৰাণ এবচ ॥ পুভপ্ত পুতিমালেষে প্যত্যুদ্ধ পতনেপি চ । নচ দধ্যে। ন ভগ্নন্চ ভুঙ্ক্তে সন্তাপ নেব চ ॥ **কথিত**॰ দেহ বৃত্তান্ত काরণঞ্চ यथागमः । इंडि गुन्म-বৈবর্ত্ত পুরাণ ॥ 🕸 ॥ ঈশ্বর দেহস্য পুমাণে যথা। হয়ে গুহাতম । দেহ। সর্বগণ তত্ব দর্শিনঃ। পুবিষ্ঠা মম সাগুজ্য লভন্তে যোগিনো ংব্যয়ণ॥

इंडि कृष्णे गुर्ता १ ।।

(महरकायः शुर शकः। शाथा इंडि

ভाষা। इंडि भप विस्तृ को ॥

(महपः शुर शार्तमः। इंडिता कि चिकेश।

(महथातकः नि जी जोहि। इंडि

(हमवन्दः॥

দেহবিঃ পূ• পক্ষঃ। গাথা ইতি ভাষা।
। ইতি শহচন্দ্ৰিকা।।

(एंश्व

(पर्ष्के भू वायुः। इठि मद्यामुका॥ (पर्ञ् भू जीवः। इठि (रम्प्नुः॥ (पर्याजा जी यमभूतीगर्मन विदः

॥ (ভाজनः। ইতি মেদিনী॥

पर्वा खी सम्। ইতিশব द्विभागः

पर्वाः भूः पर्वी। ইতিশ पर्वाः

वनी॥

দেহলী স্ত্রী গৃহাব পুহণী। ইত্যারং।।

হারপিতিকা।। দারাপুহান । ইতি
কেচিৎা। হাতিনা ইতি প্রতেইতি
কেচিৎা। অব উত্মরণ তৎশিলাফা
আবা নাক পাষাণোবা।ইতি স্বাদী
।। ইত্যারতীকামাণ ভরতং।।

দেহসারঃ পু॰ মজা। ইতিরাজ-নির্ঘণীঃ।।

(मङ्क्यः श्रु॰ রোগঃ। ইতি শব-

দেহারাবারী ত্রি চার্রাকঃ। ত্যেরেও নতং। শরীর নেবারা।। পুদ্ধনিত গ্লাৎ মপুত্রও পরিত্যভাগি দেশ্য নির্গন দর্শনাৎ হালোহও ক্লোহর নিত্যনু ভবার। অত্র পুলাওও দেহ নাত্রও চৈতন্য বিলিপ্ত সায়ে তিপ্রাক্ত।। ক্তাঃ।ইতিশারীরিকস্তভাব্যে।। অপিচ। আত্রাস্তি দেহার্যাভিত্রিক মূর্ভির্ভোকা সলোকান্তরিতঃ কলা-নাং। আশেষ মাকাশ তরোঃ পুস্-নাং-পুনীবসঃ স্বাদু কল পুস্তৌ।। ইতি পুবোধচন্দ্রোদযঃ।।

(महिका जी की वित्रामयः। उट्पर्या-यः। विदेश २ जेमानिकः २। इंडि विकाक्ष्मयः ॥ जेमिकिका ८ जेट्मानिका ६ जेम्म हिका अमिथी १। इंडि हाद्वादनी॥

तर्ही कि मनीती। भूगी। जन्म खनायथा। वृक्तामि यह्क अण्यामि পঞ্চক ভাবনা তথা ৷ ধর্মাধ্যৌ গুণা এতে আয়নঃ সুত্ত কতুদ্দি ॥ ष्य रेन्द्रियाम् विश्वाचा भूगः भा-পাশুযঃ। জ্ঞান সুখাদি যোগতো নানস পুত্যক্ষ বিষয়ঃ। পরদেহা-भी भुवृज्जाि न। श्नूरम्यः। जह-মিত্যাকার পুত্যযা**নু**য়া মনো মাত্র-স্ত্ৰোচরঃ। বিভূঃ পরম মহত্ৰান্ । ইতি ভাষাপরিছেদ:॥ তথা চ। (तरी निज्र मक्ख्या १व १तरह **मर्ब** স্য ভারত। তমাৎ যুদ্ধান যুক্তান रिननः भाभ मवाक्रामि ॥ अभिक्र । मिहिताश्विन् यथा परह 'कोबाद्र' योवन बना। उथा तराउन शासि

वित्र सकत मृक्ति ॥ के कि कि कि मान्य निश्वा ॥

रेम भ भाषान । के कि कि कि मान्य मा ।

रेम अप कि जा कि अप कि अप कि ।।

रेम अप कि मान्य कि कि ।।

रेम अप कि मान्य कि कि ।।

रेम अप कि भू कि मान्य कि कि ।।

रेम अप कि भू कि । के कि कि कि ।।

रेम अप कि भू कि । के कि कि ।।

रेम अप कि भू कि । के कि कि ।।

रेम अप कि भू कि । के कि कि ।।

रेम अप कि । के कि कि मान्य । के कि कि ।।

रेम अप कि भू कि । के कि कि मान्य ।।

रेम अप कि ।।

দৈত্যনাতী জী দিতি:। ইতি বিকাশুশেষঃ।। দৈত্যপরিনাণ কর্ত্তরি বি॥

দৈত্যনেদকঃ পুণ ভ্নিজগুলুঃ। ইতি
রাজনির্বন্টঃ।। পৃথিবরণ জী। মধুকৈটভ মেদ জাভ হাৎ।।

বৈত্যবুগণ ক্লী কৈত্যানাশ্যুগবিশেশ:।
তথ্যকৈ পরিমাণেন দাদশ সহসু
বর্ষাণি।মনুষ্ঠমানেমচত্ত্রপুগসংখ্যুণ
। ইতি শদার্থকস্মতকঃ।।

रिस्छा जी मूबानानगन्नपुराः। इछा मदः॥ हर्ष्टामधिः। इडिस्मिनीः॥ सम्। इडिजि हार्श्टम्बन्धः॥ रेम्छा ভাर्या ह।। দৈত্যারিঃ পু॰ বিষ্ণুঃ। ইত্যমরঃ।। দেবতা। ইতিমেদিনী।। रिरठ्याः श्रावाः श्रू रेम्ड्यानाः पिवा নিশাণ স ননুষ্যমানেন ব্যৈকসংখ্যঃ । ইতি শদার্থকল্লতকঃ॥ रिमन॰ क्ली मीमजा।। मिनमञ्ज्ञिनि जि॥ रिनिम्मन वि मित्न मित्न खन्।। श्वार्थ-ক্ষেপুতিদিন•৷ইতি নিপাতনসাধ্য• रिननिसन्भुवयः भूः भुवयदिर्णसः। यथा। इडफ्रं मन्द्राविहस्त्र वुकरण নিমুচ্যতে। তাবতী বুন্ধণো রাজিঃ ना ह वुष्की निषा नृभ ॥ कानद्राजिः क मा (ऋगा (याम्यू भद्रिकीर्खिङ।। এব পশু কল্পজীবী সার্ক গুেষো মহা-जिंशा वृक्षाका का स्थः मार्क्स लाका দক্ষাক ভত্ত বৈ । উন্থিতে নৈব जरुम। मक्षर्य मूथाप्रिना ॥ हन्तुः क् বুন্ধপুত্রাণ্ড বু কলোক গতা হৃত। বুন্ধরাত্রে ব্যতীতে তু পুনশ্চ সঙ্গজ विश्वः ॥ जम् द्राकी निमायाक ফুৰুপুলৰ উচ্যতে। দেবাক মুন্থ-শৈচন তত্র দক্ষা নরাদ্বঃ।এবং ত্রিংশ-দ্বোরাত্তে বু ক্ষণোমাস এব চা৷ বর্ষণ कारण गरिन क वुक्त मश्रक्ति रेठविर । ্প্ৰ- পঞ্চশাংক চগতে চ বুক্ষণো न्भ ॥ रिनिनित्तन शुलाया (याप्यू रिम्भ वि भीभगयिक । मीभागाम-

পরি নীর্ত্তিতঃ। অহে। রাত্রিক সা প্রোক্ত।বেদবিভি: পুরাতনৈ:।। তরু जर्र भूगक्षा क ठन्या की मिनिशी खताः । আদিত্যাবসবো ক্রু। মহিন্দু। মা-नवारयः॥ अवःया मूनय रेक्त गन्न द्वा রাক্সাদ্ধঃ। নাক**্ডযো লো**ম<del>শ</del>-শ্চ পেচ ফ শ্চির জীবিনঃ।। ইন্সুদুগুরুশ্চ নৃপতি শ্চাকূপারশ্চ কছ্পঃ। না-ডীজন্মেৰ কলৈ বসর্বে নস্তাশ্চ তক্রবৈ াাবুকলো ভাদধঃ সর্বেলো চা নাপা-ল্যা স্তথা। বু দলো ह॰ য্যুঃ সর্বে বু দ্ধ-त्वा हामय खथा ॥ गटि रेमनिम्स्न বুন্ধা লোকা শ সমূজে পুনঃ ৷ এবং म जायुः भर्गाञ्चः भव्यमायुक्त वृक्ष गः॥ ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে পুকৃতিখণ্ড।।।

,দৈনার• ত্রি দীনার নিত স্বর্ণজাতবস্তু । मीनाःत ७४ मीनात्रकारुतस्त्रिक পুত্যুষঃ ৷৷

रिनिकी जी रिनर्ज्िः। এहर्निष कर्मभूला । ইতি भद्याना ॥ দৈন্য স্নী কার্পণ্যণ। ইতি ছেমচন্দুঃ। , हीन जा । यथा। का ह् कारे हन ५ भन्ना 🗫 यन। कलरागांख गिथ छ्॰ वृगु द॰ वृद्धि িত্যভিতো মুখানিস দশগুীবঃ কথ কথ্যতা । ইতি মুরারিনিশু:।।

্নিত্যৰ্থ ক পুত্যৰ:11 रेन्क्यं क्री मीर्चव । उट्भर्गावः । আষামঃ২আরোহঃএাইত্যমরঃ।৷ আরোহ স্থানে আনাহ ইতি ভরজ रिक्लीभिः भू॰ विनीभन्नाङभूजात्रयूः। । দিলীপস্যাপত্যমিতিফিপুত্যবঃ। रिमव॰ ही रावजीर्थः। उৎमक्रिंग रखा कन्। भूवर्ति। इंछ। भवः॥ (त्य मञ्जू নি ত্রি। যথা। পুনীতৌপিতরৌ যস্য त्तर सम्ता मूहि ज्वा नाशि रेमर ৰবা পিত্যু বাবৎ পূর্ণোনবৎ সরগ। ইতি শুদ্ধিতত্ব।। বিবাহ বিশেষে পু:। ইত্যুদ্বাহতত্ত্ব।। অস্য বিবরণ উদ্বাহ শবে দুপ্তব্যা। দিবিভবে ত্রি॥ দৈব॰ ক্লী পু॰ ভাগ্য•।ইত্যমরঃ॥ 🛊॥ বৈবাধীন জগৎ সর্বণ জন্ম ক ৃশুভা সংযোগাক বিযোগাক নচ रिनेवाट भन्न॰वन ।! कृष्णयुक्क छ-`দৈব°সদেবাৎপরত স্ততঃ৷ কজস্তি সতত সন্তঃ পরমাত্মান মীধর ।। रिषयः वर्ष्वियञ् भकः क्रयः कर्जुः यनीनगा। न रिन्दं वस खखक का বিনাশী চনির্ভণঃ॥ইতি বুক্ষবৈবর্ত্তে गानमथ्डः।। #।। भनुक्वाह। रेमस्व পুৰুষকারে চ কি জ্যায় ভুদুবীছিনে ৷ অত্ৰমে সংশয়ে দেব ছেজুমৰ্ছস্য-

(भवठः ॥ 🛊 ॥ मू न प्र उवाह। स्मिव कर्या रेनवाथा विषि एक । खता बिर्ज ত । ত মাৎ পৌৰুষ মেবেহ শেু । মা-হু র্মনীষিণঃ॥ পুতিকূল॰ যথা দৈব॰ পৌৰুষেণ বিহ্ন্যতে। মৰ্লাচার यूकाना॰ निज्य मूर्यान भीविना॰ ॥ विचाः भूईक्छः कर्य मादिकः मन् জোন্তম। পৌৰুষেণ বিনা তেবাণ (क्रवाधिष्मृण्डाउ क्लः ॥ कर्मना পাুগ্যতে লোকে রাজসম্য তথা क्ल-। क्र्हुन कर्मना विकि जान-ন্দ্য তথা ফল ৷৷ পৌৰুষেণাপ্যতে क्राजन् नार्णिठवाः क्षणः नदेतः । দৈব মেব বিজানম্ভি নরাঃ পৌৰুষ বৰ্জিতাঃ ৷৷ তুমাঞ্ৰিকাল সংযুক্ত रिस्त्वन जकनः ভবেৎ। পৌब्रवः रेषत्र मन्भ ब्रा कारनकन्न जिभार्थिय॥ দৈব পুৰুষকার চ কাল চ মনুজো ত্তম । ত্রয় মেব মনুব্যস্য পিণ্ডিত• म् अर्थ क्लावर ॥ क्रव वृष्टि ममा-योगार म्मुरङ कवनिकरः। जास काल भूम्भारक निवाकाल कथ-क्ष्म II ज्यार मरेमय कर्खवाः मध्याः পৌৰুষ নৃভিঃ। এবন্তে প্ৰাণু বন্তী হ शत्रातारक कवा धुव ॥ नावजाः श्रा वस्त्रशाम ह रिन्द भन्नायगाः।

রহাবকী ॥ দৈবগভিতে তি ॥ व्यामा भिन्न र्याचा । एक कुन्न থনাপহারী ধুনাম্ব নরক ভুক্তা শত জন্ম মূষিক নানাবিধ পক্ষি কৃষি কৃষ্ণ ভাৰ্ব্যা বশ্শ হীন ব্যাঞ্চি युजः भवत्र वर्गकात्र मूवर्गविगिश्चवनः मिव विश्व वाञ्चनभगका ज्वा रेमव-জ্ঞোপন্ধীবি বিপ্ৰে। ভৰতি ॥ 🛊 ॥ जिना नाका लाहा कि वृत्रभाती রসাদি বিক্রথী চ যঃ। সংযাতি নাগ विश्वभारित्र विश्विक श्रव है।। बरत्र च लान मानाप ठेडिव नाग ह॰-**निकः। उ**द्या अत्वर् म गगरका देवः मान मध्यम्।।(मानाक वर्षकाः রক্ষরন্ধকার ভতঃশুচিঃ৷ ইতি বুন্ধ

বৈবর্ত্তে পুকৃতিগণ্ড ॥
বৈবর্ত্তে পুকৃতিগণ্ড ।।
বিবক্তা জী দৈর জভার্ম্যা ।। পুশা
বিকাশ কাল্ড জালা । বাকাণা দিন।
শৃত্যাশু
বিকাশ কাল্ড বাকাশিকা গণ্ড ইত হোৱা

বিপুশ্নিকা ২ দিক্ষণিকা গাইত গোৱা: দৈক্তঃ

देश की क्षण्या । क्यूरहवश्यी । विज्ञा क्षण्या विज्ञा क्षण्या । क्यूरहा के किष्ण क्षण्या क्षण्या क्षण्या क्षण्या क्षण्या क्षण्या । क्षण्या क्षण्या क्षण्या क्षण्या क्षण्या क्षण्या । क्षण्या क्षण्या क्षण्या । क्षण्या क्षण्या क्षण्या व्याप्त व्याप्त

দৈবযুগ ল্লী দেবানা যুগ । তা দেব-নানেন ছাদশ সহস্বৰ্ষ । মনুধ্য পরিমাণেন চতুরু গমান । ইতি শদার্থকল্পতকঃ ॥

रिवनकः भू (छोठः। ভূতসেবकः। ইতিহার।वनी।।দেবলসম্বন্ধিনিত্রি रिवरणथकः भू নৌহুর্বঃ। গণকঃ। ইতি ত্রিকাওশেকঃ।।

দৈৰবাগী জী আকাশবাণী। অমানু-বী বাক্। তৎপৰ্য্যায়ঃ। চিত্তোকিঃ ২ পুরাশকটী ১ দৈবপুশুঃও উপশুডিঃ ৫ এ ইতি ত্রিকাওশেষঃ ॥ সংস্কৃত কাগরাপ্যাতা মহর্মিভ রিতি দঙী 📑 দৌকাদা श भीवीय यानी मस्य मूजना जः । हिम्लिक विशंतमञ्ज्ञीक। कीर्डन (कड्यूडिय॰ हि लाटिक मूमूट क भिजिस्तामामनाः।।

रिषदाक्षिः अनु अफ्रिः॥ यमः॥ यम् नायाः जीव्यालमा नूना रङ्गः यंबा। সম্পৃতি দৈবাকরিতঃ পরেমিতাশরি ডাকুণ কল্পিডঃ নোম্ণ কোপি বিশে মঃ হাছিত রাশি বলাভদুশেবঃ १৮ ইতি কাৰ্যোদ্য গ্ড गৰী ডক ।। रेक्ट्रांट् या इंग्रेट्स्यंपा।रेक्यामेशाक बनन किन बामवज्ञाः । देनि क्यावग्राष्ट्र ।।

দৈৰাকোরাত্রঃ পুত দেবানা নেক দিব मा । मानन्व । भागमा नम् नमहां हैं जि न्यार्थक्कुठकः॥

रेग्रिकः क्रि अब मध्यकी ग्रेटेग्रावज्येः। াঃ পদরকার ভাই

देत्वी क्षी ध्वव मद्यक्तिनी । यथा । जुंदका -পাস্য নিভিশ্নক

्रिक्षित्राम्बकोन

, भवता रेपती नका सकता। इंडि ् स्वित्राह्म । हिनिष्या वित्रायः। स्माभ्याग्री गानुकी रेक्नी क्रिक्ट मा मिनियामका। ब्रेजिरेवएकः॥

-माका । यथा । जन्हुक नाम रेश्यी || देश्या न्ह्री हैस्य । काना हैकामन

**लु**छ्रायम निष्य ॥ नेयुक्दिर्लियः । শৰ্প।কাল ভাৰধেশঃসধনীতি সূত্ৰ ভাৰঃ সভু-জা বিবিধ কালিক · দৈশিকাঞ্চতি কারক চাঁজে ভবা**নদ** সিজান্তবাগীল: মাদেশ ইনণ্ঠ বিশে-য়ণতা। ইতিবৈশাযিকাঃ॥

रेन्डिकः भू॰ निरक्षेत्र खदः। खरग्राधीन काउः ॥ कालप्रकाठः। इंडि न्ता-ः कद्रगः ॥

रिहिक जि एरसम्बद्धाः एथा। छी-ৰশা ভৈরবাণা ভবতি সুবিহিতা रिक्ति (गालिजाई)। ইভি क्रिं-का जरङ २ हर्या गः॥

रना य एएरर। इंजि कविकन्नकमः॥ ্দো: পু॰ বাকঃ। ইত্যমর:॥ দো:শিথর° শ্লী ককঃ।ইতি রাজ निर्घण्डः ॥

माःमहमुङ् भूः काङ्ग्रेग्राङ्क्तः। . इंडि रमञ्जूशा वावसाँका है।। माथा शुः वार्था शक्वी विकित्सा मर-ं नः ।।-रत्राभाषाः । इति स्मित्री ॥ গোহন কর্ডান্ত ক্রি ম

দোশ্ৰী জী গৌঃ। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।। रमापूर्वाभागः जि. श्रुतः श्रून प्रजिमदिन 🦟 বাদেশলন বিশিষ্টঃ৷ ইতি ব্যাকরণণা (मायः पु (गायर मः। यथा। स्व ্ সদোধ কুদুমুতলছ জ্বির তাবক नाम शक्ष (मा कर्ष छः नमू विविर्गम কালে মন্ত্র মপি কণমেব্যতি যোগ ॥ ইতি ছন্দোনঞ্জরী॥

रताथकः भू इत्मादित्मयः। यथा। খাদ্য চতুর্থ মহীন নিতম্নে সগুমকণ ममन्भ उथाड्ड । यज चन शुक्रे শার রাগে তৎকথিত চবদোধক ্ব্র-মাইতি শুতরোপ: মা

দোখ্যমানঃ বি পুনঃপুন রভিপদেন वा कुन्तु विनिष्टेश । यथा । नख रहा-मक् छरयद नाष्ट्री । रराध्यमाना বড়ভী পতাকা॥ ইতি কু**ম**ঞ্জরী ॥ পুলবেপি দোধ্যমানাঃ প্রমাণর " ভিষ্ঠি। ইতি শিরোমণিঃ॥

रमात्रकः भूः ,जी वीगा उच्चकनत्रक्रूः । ইতি मदार्थ रुद्र उक्: ॥ নোর্গড়: পু- ছাঠতহন্তঃ। তৎপর্ব্যা-यः। सम्भः २ वार् सर्थः ०। ইতি **ःक**हाषत्रः ॥

मार्ग् सः वि वनवान्। उर भर्गायः। क्त्रिका २ कामः २। ইতি हाता-

া বলী ॥:ভূ<del>দ্রস্য গুহুণ তস্যব্যথা চন।</del> ति। वं छ जे हैं सिष्ट् क्रम एका प्रमा। उराई एक नत्या बहा कि क्रांत शु-ৈত্যক বিশু: ৰথ ৷ ইত্যুত্ত গৈ 🖟 · দোর্মধ্য প্রান্ত্রমধ্যভাগঃ বালু ুইতি ভাষা। **ইন্ডি শদা**র্থক**ন্নত**ক্ষা। দোস্ল ক্লী কক্ষঃ। বগৰা ইতি ভাব। ৰ ত**ে**পৰ্য্যাৰণ ভূজক্লেট**রঃ২ খণ্ডি**-्यः ० कका ८। ইতি द्श्यम्पुः ॥ (कान: भू॰ कानन॰। पूनःशाःका छा

न्यक् शुक्रायन निज्ञमः ॥ शिक्करा याजा विस्नयः। जम् भूमान-यथा। वित्नवञ्चः किन्यूरग स्नातनार नाता বিধীয়তে। ফাল্লুনে চ*চতুর্মশ্*রাস-क्षेत्र यान मञ्जलका। अथवा भौर्न-ন্যান্যান্ত প্ৰতিপৎ সন্ধি সন্মিতৌ । म्बारविविचक्का क्ष्नुहेर्न कर् ূর্বে ধ্য়ে ॥ সিত রকৈ গৌর পীতে: क्श्रामि विभिन्तिकः। इतिम् क्षांत त्यागाइ **त्रक्**तरेग्र र्यत्वा स्टेतः श व्यक्ति की क्षेत्र ब्रीमान श्रीगरेट পারবৈশ্বর । একাইশ্রিশ সমারভি नक्याहर नयानायर्।। नक्षाश्वीन व्यारानिमुहार्यालार नत्वा विषीयत्ड । मिल्गाजियू १० क्या राज थान नक्षताः॥ द्राभनाष निर्देष भू जा

্তে নাত প্রশাসঃ। ইতি পান্মে গা छानश्रुष्ट । यानिह। रेजिसिनि क्षार। कांग्रान मानि वदीं उत्ती मातार्गम् मूहमः। यम की पिकिरणाः वित्तरा लाकानुगुरुगाय दि ॥ शुक्र हां प्रवास्त्र (भविन्ता था इन म्रायदा भागारः भूत्रकः सर्वताद्वा एम उम्रह्ण ॥ इड़त्रू हजूपार ब्र॰ मख्यः विविकान्तिः। हाक हन्तुः তৃপ-মান্য চামর মূজ, শোভিত মা ভদ্মদন বেদিকায়া গ্রীপূণী ব্রাপ্ত নির্মিত। কল্গ্ৎসর পুরুষী তপ্ত क्षारानि बाराणि या॥ 🛊 ॥ काब्रुनराः भू र्वाण विश्वा कडू पंचा तः विश्वामूर्य । बर् १८ मवः शुक्त ही उ दिश्वमण्डश . शूर्व ३: ।। ५७९ मर्ब शुक्र वी छ साक माउन न्द्रः। रनाविमान् ग्रीक्र याजानः उर्भुकीर्डिङः॥ बाहार्रः निर्माश्ता छवन ।

ज्ञि न म्हा विविद् ज्यानि सहाद्वि ॥ नणण् कात्रविद्या ज् तिह जि विविद्याला महित्य विवानन स्था विविना हर्न्य ॥ श्री विवर ग्री विवर विश्व विवर । श्री विवर ग्री विवर विश्व विवर । श्री विवर ग्री विवर विवर विवर ।

गबंदिः गावमाना मुग्नाभारक ।। सः।। नांख यात्म हंजूपमाता लाचिनर भु-**िम् मूर्जाः ॥ वाजयिद्। इदि इत्यु** न्बर्यं भूकरवाउम । उनावा-वैनि हैस भुजाई। गणि भूकायट ॥ ততো বর্ক বসন্ নালাক দিলসভ भाः। अहायाः विन्राम्बद्धः शद्रः ৰ্জ্যোতি বিভাবযন্।। তত্তক পুতিমা भाका बाया शुक्रवीखर्श ब्रा 'भिराणिकया जा॰ रेव नरबर्ध गानगुर मन खन्।। नाना जूर्य निनिर्देशन भूतः मतः । कय निष् स्था खारिकः পুল্লকৃষ্টিভি রেব চা। ছুত্র পুত্র পতা मीनिकां छि छथा क्यी बार्किट नवा। चागहिं जिना (प्याः शिकांगह भूता र्गमाः। पृष्ट्र गृविगीतः मार्चः लावि-मर्ग। मरहार मरा। जम्मामान द्विवा-रेमान भूजायपूर्णहार्कः শ্বানস্থ বিধিনাপুপন্ তস্যুকারবেং। পঞ্চামৃতিক সর্বৈ বৈতেষা মন্য ত मन व। द्वानात्र गक्ता एव कि मृत्क नाजित्वहरस्य ॥ मण्लाकः प्राव-ष्ट्रिं वजानकात्र्भाग्रिकः। नीता-विष्या मः भूवा श्रामापः भित्राव्हे-रिन्। मस्य वास्त्रां (नवः राज मञ

भान्या नत्त्वा मुन कृत्वाता नद्भाषा পতাকাতোরপাদিভিঞা স্থাপন্তার্থ मखन कः मखला च्रामसा का क् (नत्म भूनः मश्र स अत्य (ति स्वार मि ।। या वादमात्न्रभूत जुर्भायाप्रकृतिः শতি ৷ইয় লীলা ভগরতঃ পিতামছ भूर्थित्र जा ॥ ॥ ता किर्यन मुगुरुप्तन কারিতা প্রনেব হি ৷ ফল পুয়াব-নীনুস্পাথাভিঃপরিকরিতে।। বৃদ্ধা वन्। इत्र त्रां मंख्याद्रम वादिशि। किर्ि वान मध्य नाना शक् ग्र-शार्कत्व । नाताभाषा जात्रहित्व का नां एक मुंधू शिष्ठ । পुकूझ (कठकी-येथु गङ्गीत्रादि मिगछात्र।। मिल्ला-শোক পুৰাগু চুল্পুকৈ ৰূপাশাভিত । उरकाननाम मिएउ मुख्स्य ज्ञान जित्रण। जुनि ज्ञान । युगन हाम्देव क्श माजिए। त्रु थ्रा स्माबिका यो र् अमेरिया वा नर्यर शुक्र ॥ व्यवस्र बैंड विटिंड के अला का निज कुछि। निव्यवहात | त्रैक्षनं ॥ विकर्ण के मुश्रकः विश्व-शाबा लिया युउला नाउँ ठक गरा शाम वादिरं वनमा निनं ।। जून्जन जूना-भाष्यं शीन दर्शः इति। इति। भूति। त्यांम शिक लिति तु कारिनं। ज्ञ

क्रमोद्यः ॥ क्ष्मश्रकि श्रुटि । जन्म ध्य भरोप विश्वकूष्ट । शक्तव वद्गारा जिल्हा क्रिक्टिन्नः निष्कानम् देवः ॥ श्रास् क्रुम्क्किंकः जदत्र-शिवा गायतिः । जर्ं नृर्किया द्वा गीउ यास्य কারিডি:॥নেবাবুজ সহসৈক্তপ্ত্য-मान भूरादिष्ठिः। विक्रिक्षां छः जर्ब-निक्गक्तकत्त्रक्षा उन्तिन्। च (गाविन्सः भ्जरपपू भागतिकः। वस्त्री वृत्रमश्रञ्च कम्बञ्च म्बानः॥ शाय-शाना विवारिमक की उमान वनासंद्र । याभी जिल्हा (गाभारे नी ना-म्माणिकया मग्गा हि खिराष्ट्रा खनका व• विकितित्व पृर्विकः। नक्श्रीत त्रक भी जनूरिक्ष मिक्नु भगें छटः॥ भिरंबा बेरिक र्मिया गोलिए मिया गरिकः मुष्र देकः। क्षेत्रवारक्ताम्त्न नीतः विजिल्ह भगहिक्नी वात्माम्य एका निका कि में धरी देशि भरिकः भरिकः। उपान শ্যন্তি শৈ ক্ৰিণ মুক্তি ঠিকাণন সংশযঃ ते। वृष्यरंज्यानि भाभानाः श्रकानाः मन्मर्या ज्या । विवात पानाय-अष्टक अर्द नानां नरमा एका नु गुरुकान् जार बुकि गुर्क कि नाइ लो की करिकार किए में में के बिमें ने एकें। 

निवर्डक । भगान् षिठीय इत्रि (गार्ड)ामू, भभाजक ॥ किलार्ड-শেষপাপানি তৃতীয় নাত্ৰ সংশ্যঃ। मृक्षे। (माना क्रिङ (मव **मर्ब शारिशः** পুমুচ্যতে॥ আধ্যাত্মিকৈ রাধিদৈবৈ রাধিভূতৈ বিনুচ্যতে । ইনা॰ যাত্রা॰ কার্যিত্ব।চক্রবন্ত্র ভবেদৃপঃ।। ব্রাহ্ম- !! ণস্ত চতুর্বেদী জ্ঞানবান্ জাযতে ধ্ব• । ইতি ক্বান্দে উৎকলথণ্ডে দ্বিচত্ত্বা-রিংশো ২ধ্যায়ঃ॥ৠ॥ তঁস্য সংক্ষেপ व्यवस्था। यहा अक्लाह्य काल পৌৰ্ণমাসীলাভ স্তবৈব দোল যাত্ৰা। উভয দিনে অৰুণোদয কালে পৌৰ্ণ-मानी लाए भू ईिप्ता नक्ष मध्य इ কাল ব্যাপিত্বাৎ ত্রি**সন্ধ্য ব্যাপিত্বেন** जित्थ ईम वज्जाह। यहा जिथि कय বশাদৰণোদ্য কালে ন পৌৰ্ণমানী **लाञ छन। कनाहि॰ महाव ভा**विन ठजूर्मभापतः। এতেन भृर्विपति व्य क्लाप्य विना भूबाङ्क (भौनेनाजी । লাভঃ পরদিনে মুহ্রান্ত্রন তিথি नाज उना कन्गृरं नवः भूदिनित যুণ্মবচনানুরোধাদিতি নিরস্তণ উভয **दित कर्मायाग्र भुगउकान भार** ় তিথি সন্দেহএব যুগ্মবচন পুৰুত্তঃ। এবং পঞ্চনী পর্য্যন্তাসু তিথিষু তৎ

क्द्रां अनरेयव मिनाव प्रवाहन समय । इंडि रिनामयाबाज्यः ॥ 🛊 ॥ हिटब मानि (मानमा भूमान गाक्छ । চৈত্রে মাসি সিতে পক্ষে দক্ষিণাভি-মুথ হরি:। দোলা রুট সমভ্যর্চ্য भाम मान्मानायः काली॥ उन्निज् তাচ পদাপুরাণে। উচ্জে রথ মধৌ নোলা শাুুুুবণে তন্তু পর্বচ । চৈত্রে মদনকারোপ মঙ্গর্ভাণো বুজত্যথঃ ৷৷ বিষ্ণু দোলা স্থিত দৃষ্ট্বা ত্রৈলোক্য-স্যোৎসবো ভবেৎ। তম্মাৎ কার্য্য শত ত্যক্ত্বা দোলাহে উৎসব প্ৰফ্ ॥ অথ দোলোৎসব বিধিঃ। চৈত্রস্য শুল্ল দ্বাদশ্যাণ প্রাতঃ কৃত্যুণ সমাপ্যচ । निउ भूषा॰ विशायाय अर्यप्राप्ता-**ला**९ मद• दुंजी ।। जमर्थक दिरमारमः। रैनविष्ठाष्ट्रिक मर्श्रयः । मःमान्य दैव-क्या रेखक भीज न्जाहि कात्रय ॥ মহানীরাজন॰ কৃত্ব। পুক্ষিপোদ চুऽ-তোপরি। গন্ধানুলেপ চূর্ণানি বিচি ত্রাণি বিভাগশঃ॥ সম্ভোষ্যবৈঞ্বা॰ रिख क भी उ न्छा पि फिः शुकुः। नद् ভার্থ্যা २ পুমতঃ সন্দোলা মারোহ-যেहु ভা॰।। নীত্বা বহি র্বে, দিকাযা মু-चुर्रायाः यथा विधि । अভ्यर्ह्यान्ताः লথেৎ কৃষণ সৰলোকাবলোকিত।।।

भव मङ्ग्रहंयन् यात्म यात्म वात्मतालयन् श्रृङ् । महा भ्यत्न गम्यः
प्रिनः त्राजिक यञ्जः ॥ भवः कागत्राः कृदा विकरिः मह विकरः ।
श्रुषम् श्रुष्णं निर्माः कृष्णः सालयः
मानयः ॥ ॥ हित्व मानि निर्णः
शक्ष ज्ञीयायाः त्रमाश्रिः। द्राः
लाक्षः ममञ्जे मानमात्मालत्यः कलो॥ यः काल्युनम् त्राकामावृज्जाकल्युनी यमः। जमा दिलाः
मवः कार्यः छह श्रिश्कर्वाज्यः॥
हैं इति इति जिल्विवामः॥

किनी। उप्तानिष्य की की निनी। उप्तानिष्य की जार्थ का का कि निनी। उप्तानिकः । एं हमा हिंछ जाया। वाश्यदे।। जूनी हें छ जाया। ज्या श्वा । र्यु श्वा २ । हें छ प्रवः। का विकाश । क्वा श्वा विकाश । रिम्हा नि विकाश । रिम्हा नि श्वा । रिम्हा नि श्वा । रिम्हा नि श्वा । प्रविकाश । रिम्हा नि श्वा । प्रविकाश । रिम्हा नि श्वा । ज्या विवा । रिम्हा नि श्वा विकाश । ज्या विवा । रिम्हा नि श्वा विकाश । ज्या विवा । रिम्हा हिंछ शिका विवा । ज्या । ज्या विवा । ज्या । ज्या विवा । ज्या । ज्या

**(मानायमानः जि (माननविभिक्टः )** 

्यथा। प्रावासमान शादिकः सक-इ स्थुम्हन । ज्या वासन मृद्धाः श्रुनर्जस न दिहार ॥ ट्रिंट् क्व-थथः॥

मानिका जी हिन्माना। इंडि हाजावनी॥

দোলী স্ত্রী দোলা। ডুলী ইতি ভাষা। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

मायः शु॰ म्यतः ॥ शाश्रः। ইতি মেদিনী। ধাত পিত্ত কফাঃ। ইতি শব্চন্দ্রিকা।। গোবৎসঃ। ইতি मदत्रञ्जावली ॥ काव्यख्राज्यः। म ह त्रनाम् अकर्यकः। यथा। मूर्थार्थ क्ि प्लीरवा त्रमक मूच्र उपाक्ष्या-बाठ्यः। তত্ত शम्रामाया यथा। मुष्टे॰ পদ॰ শুতিকটু চ্যুত সংস্কৃত্য পুযুক্ত মসমর্থ । নিহতার্থ মনুচিতার্থ নিরর্থক মবাচক ত্রিধা শ্লীল ।। निम्य मभुजीज गुामा त्यार्थ मथ ভবেৎ क्लिष्टे•। অবিমৃষ্ট বিধে-যাংশং বিৰুদ্ধ মৃতি কৃৎ সমাসগত भिव ॥ 🛊 ॥ वाक्रामाया यथा । পুতিক্ল বৰ্ণ মুপছত লুগু বিসৰ্গ• বিসন্ধি হত বৃত্ত। নূ,নাধিক কথিত পদ পতৎ পুকর্ষ সমাপ্ত পুনরাত্ত ৷৷ অৰ্জান্তরৈক বাচক মভবন্মত

साव

যোগ মনভিহিত বাচ্য । অপদই। , अम ममामः महीर्गगिङ्कः शुनिषि হত ।। ভদু পুক্রন মনত পরার্থঞ্চ वाका भव॰ उथा।। 🗱।। वर्षामा यथा। यार्था २ शू क्षेत्र करहा वताइ उ शूनक्क पूषत शुम्राः। निम्ताका निर्द्धः भुभिषि विष्ठा विक्षकः ॥ অনবীকৃতঃ সনিষ্মা নিষ্ম বিশেষা বিশেষ পরিকৃত্তঃ৷ সাকাড্ক্নো ২পদ-যুক্তঃ সহচর ভিন্নঃ পুকা**শিত বি**ৰু-नः ॥ विश्रन्तारायुक छाक भूनः बीक्তा श्लीनः ॥ 🕸 ॥ तमराया যথা।ব্যভিচারি রস স্থায়ি ভাবানা॰ **म**फ वाठां । क्ट्रे कन्नन्या वाङ्कि রনুভাব বিভাবযোঃ 11 পুতিক্ল বিভাবাদি গুহে। দীপ্তিঃ পুনঃ পুনঃ। व्यकार अर्थन एक निवस्त्र महाभागि वि ख्**जिः ॥ अकि**रना १ननुस्रकान भु কৃতীনা॰ বিপর্য্যঃ। অনস্কৃদ্যাভি-ধানঞ্জ রসে দোষাঃ সুত্রীদৃশাঃ ॥ উक भमामि मायाः ज्ञान वित्नस्य ক্ষচিদ্ধুণা ভবন্তি। ইতি কাব্যপুকাশঃ ॥ 🕸 ॥ (मार्य विष्णवा यथा। यजः পুভবতিকোধ: কামোবা ভরতর্বভ। শোকনোছৌ বিধিৎ সাচ পরাসূত্রঞ छवर ।। क्लांका माट्यां भीर्यात

बर माम्या क्ला खरे। ইতি রাজ-थर्याः ॥ 🗱 ॥ त्राष्ट्रमनः विना 😇 कर्ष দোরাভাবো যথা। মধুপর্কেচ সো-मि ह जार्गमा ह जक्ता कन मृत तिकृष्ट न ताय शुार वि मनुः॥ ইতি কুর্মপুরাণ ॥ 🗱 ॥ দাত্রিশেৎ शुकाता (लाया यथा। यारेन बी भा-দুকৈ ৰাপি গমন ভগবদ্গৃছে ! र्एरवा नवाम्यस्या ह अथुगाम उपगुजः ॥ উहिष्टि रेव्य वालीक ভगवद्यनातिक । এक इस्त भुगा-मस उथा टिक भुनिक्ष ।। भान পুসারণঞ্চাণ্ডে তথা পর্য্যক্ষ বন্ধন । শ্যন ভক্ষণঞ্চাপি মিথ্যা ভাষণ মেবচ॥ উদ্বৈর্ভাষে। মিথোজদ্মোরো-मनापि ह विशुरः। निगुरानु गुरहो চৈব জ্রী যূথ ক্র ভাষণ ।। কশালা-বরণ ক্ষৈব পরনিন্দ। পরস্তুতি: । গুরো মৌন নিজ স্তোত্র দেবতা निम्तन उथा ॥ जनजाश उथा বিষ্ণে দাবি শৎ পরিকীর্তিতাঃ। ইতি পান্মে পাতালখণ্ড•।। 🛊 ॥ व्यमाजा व न्यासायन कर्यासायापः রিদুর্তা। উন্মাদোমাতৃদোবেণ পিতৃ **(मार्यिप मूर्थ)।। इंडि हापक्रः।।** (मायकः भू॰ (गाव<्मः। ইতि मद-</p> ब्रज्ञावनी ॥

(मायगुष्टी जि (मायगुर्वकर्छ। उट् भर्यायः । चनः २ भूत्राकागी ० विविद्धः ४ मट् मती ६। ইতি हला युषः॥ विमृद्ध्य मूर्भवाद्याम् द्याम् गृहि माथवः। (मायगुष्टी द्या ज्यागी जाननीय हि मूर्द्धनः॥ ইতि भूत्यागः॥

দোষজ্ঞ: ত্রি পশুভাঃ। ইত্যমর:॥

চিকিৎসক:। ইতি হেমচন্দু: ॥ ॥

দোষ বিষয়ক জ্ঞানযুক্তশ্চ॥

দোষত্রয° ক্লী বাত পিত্ত কফাঃ। ইতি রাজনির্যণ্টঃ।।

प्राया जी जाविः॥ जूकः। ইতি प्रिकती॥

मिया वर्र नक्छ । त्रक्षतो इंडर्र्थः । इंडर्मतः॥ निमामूथः। ইंडि इम-हन्दुः॥

দোষাকরঃ পু॰ চন্দুঃ। যথা। মূল ত্রিকোণ নিজ মন্দিরগোথ পূর্ণো নিত্রক্ষ সৌম্য গৃহগো হথ তদী ক্ষিতোবা। যানিত্র বেধ বিহিতা-নপহত্যদোষান্ দোষাকরঃ সুথ-মনেক বিধি বিধত্তে। ইতি জ্যোতি-স্তর্ণ।। দোষাণানাকর কা। रित्रावाद्मणी जी वनवर्दत्रिका। इंटि त्राजनिर्घण्डः॥

দোষাতনঃ ত্রি রাত্রিভব:। ইতি ব্যাকরণ ।।

দোষাতিলকঃ পু• পুদীপঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

मित्रा ।। व्यक्तिका ।।

দোষিকঃ পু॰ রোগঃ। ইতি **শব**-চন্দ্রিকা।।

(मार्घी वि (मार्ययुक्तः। अभवाशी॥ (मार्य असाम्ख्यार्थ इन् भुज्यसम निव्वमः॥

(मिरिकम्क जि (मिर्ममाजम्मी श्या ख्वः ठुक्ः (क्वनः (मायः स्व शम्)-जि मः। (मार्य এकश्चित्व क्कानः यमऽमः। ইতি ভরতः॥ उৎ পর্যাयः । পুরো ভানী ২। ইত্যনরঃ॥

দোষঃ পু॰ ক্রীডা ॥ ক্রীডকঃ ॥ সেবা ॥সেবকঃ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ দোঃস্থিতে ত্রি ॥

(मारुः भु॰ (मारुनभाव॰। ইতি भद्र-চন্দ্রিকা॥ দুখ॰ (मारुन। क्षिठि तुष्ट-পত্তি जंब॰।।

(मारुक की मुख । इंडि मदार्थ-

प्राचिकः । जिल्लाविष्यः ।

प्राचिकः जिल्ला विष्यः ।

प्राचा इिंठ ज्ञाता। इिंठ ज्ञानः ।

नाइनः की हिं।। इञ्जितः।।

प्राचनः श्रुः की गर्डिगुज्ञिनायः।

प्राचनः श्रुः को गर्डिगुज्ञिनायः।

प्राचनः श्रुः को गर्डिगुज्ञिनायः।

प्राचनः श्रुः को ज्ञानमा । उद्भर्गायः।

प्राचनः । जर्डिनः । इञ्जि जञ्ज्ञः

प्राचः ॥ गर्डिनः । इञ्जि जञ्ज्ञः

प्राचः ॥ गर्डिनः । इञ्जि जञ्ज

নোছনলফণ ক্লী বয়:সন্ধিঃ। গর্ভঃ। ইতি সেদিনী।।

पांक्रवेजी खी अम्रशानि पृत्य दिस्मवा कि । यवेजी गर्खवेजी । के के कर ।। उट अर्ग्यायः। भूका-खुः २ । के जानदः ।। का ।। गर्खिनी कर्वद्याकर्ख्याः यथा । कि जा- गर्खः । यथायद्य कम्माप्तः भूगः जा- भूनः । ख्वा यद्या विधा जत्या अध्यन् गर्छः नतानतः ।। मञ्चद्यंत्र मज्युक्तं म-निक्ष्य ज्यायत्व । मक्तायाः निव ॥ खाङ्क्याः गर्खिन्। व्यवनिनि ।। न काङ्क्याः गर्ख्याः वृक्षम् स्वाव मर्ब का विधा ज्यायः व्यक्तम् स्वाव मर्वे काङ्क्याः न गर्ख्याः वृक्षम् स्वाव मर्वे का विधा ज्यायः विधा ज्यायः । मक्तायाः निव ॥ काङ्क्याः गर्ख्याः वृक्षम् स्वाव मर्वे का विधा ज्यायः । महान्याः । मर्वे ।। न

থলাদিষু।। জলঞ্চ নাবগাহেত শ্-न्तागात्रक वर्द्धाय । वन्तीत्कवू न जिर्देश न का बिश मना ज्व ।। विविधिष नीथ ज्ञि॰ नामाद्रिग न ভयन। । न मेशामूः मना जिरह्म्।-यामक विवर्काख ॥ न जूयाकात जमाहि क्लालियू नगाविष्णः। वर्द्धाय कनर लाक गांब उनक वर्ष्क्तरयः ॥ न मुक्करकणा जित्रेञ नामुिकः मा९कमाहन । न मयीछा-ত্তর শিরা নচাপরশিরাঃ কৃচিৎ।। ন বস্ত্রহীনা নোদ্বিশা নচাদু চরণা সভী। नाशाक्लां वर्षां विष्यां ने विश्वान धिका ज्व ॥ वर्गाः एक भूत्राः নিত্য মঙ্গল তৎপরা। সরৌ যধীভিঃ कारकन वार्तिना ज्ञान गाहरद्र ॥ क्ठ क्रका मुভ्या ह वाङ्ग्बन उ९-পরা। তিঙেং পুসন্ন বদনা ভর্তুঃ পুিুুুুুহ্হতে রতা ॥ দানশালা তৃতী-याया॰ भाईजा नक, माहरद्र । ইতি বৃত্তা ভবেমারী বিশেষেণ তু গব্ভিণী।। যস্তু তস্যা ভবেৎ পুঞ শতায়ু বুদ্ধি সংযুতঃ। অন্যথা গঞ্জ-পতন ম্বাণোতি ন সম্পৃধঃ।। ত-माजु मनया वृज्ता गर्ह्ह श्रीमन् यञ्च-মাচর। ইতি মৎস্যপুরাণ।।।

দৌত্য

দোহদার্কিতা দ্রী দোহদবতী। ইতি হেমচন্দুঃ ॥

নোহন ল্লী স্তনা দুখা নিঃসারণ ।
দোযা ইতি ভাষা । দুহ ধাতো |
ভাবে ২নট পুত্যযেন নিম্নম ।।

(मार्नी जी (मार्निशावः। उৎ शर्या-यः। (लशनः २ श्राती ७ (मारः ४ (मार्ने ६। ইতি भद्यापनी ॥

(हाइनः श्रृ॰ (हाइनः। ইहा। ইভি শদার্থকলভকঃ।।

(मार्विकी जी (मार्विकी। ইতি मदार्थकन्युकः॥

দোহলী স্ত্রী অশোকবৃক্ষ: 1 ইতি রাজনির্ঘণ্ট: 11

দোহাপনযঃ পু॰ দুগা । ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ ॥

(माहीयान्

(नाहि भदाभीयमू शुठ प्रव निष्ण मः।।

(नाहनीय प्

ব্যং। ইতিব্যাকরণং-11

দৌঃসাধিকঃ পু॰ দাঃস্থিতঃ। দার-পালঃ। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ ॥

(मोकृषः वि पूक्रावनाव्य तथापि। इंडामत होकायाः जतवः॥ (मोडाः क्री पूडाः। पूजमा जावः॥ (भोर्यान

দূতস্যকর্ম । ইত্যনর দীকানঃ ভরতঃ ॥

দৌরা মা ১° ক্লী দুরা অনো ভাবং । দুরা আনং কর্মা। দুর্নিনিদত আন্ধা যত্ত্বঃ ধৃতিঃ বুদ্ধিঃ স্বভাবঃ শরীর• বাষস্য স দুরাআ। তস্য ভাব কর্মার্থে ক্ষ্য পুত্যয়ঃ ।।

দৌর্গ্য॰ ক্লী দুর্গবৃত্তিথর্মঃ। দুর্গসম্বন্ধি।
দুর্গস্য ভারঃ দুর্গস্যেদ মেত্যর্থে ক
পুত্যয়ঃ॥

দৌৰ্জন্য॰ ব্লী দুৰ্জনত্ব॰। দুৰ্জনস্য ভাব ইদন্বেত্যৰ্থে ষ্ণ্য প্ৰত্যবং ।।

(मोर्बन्) श्री मूर्बन्छ। अञ्चरण ३०।

मूर्बन्ग । ज्ञार हेड (र्ष के १ शुंड ) वशा

(मोर्जा गित्न थः भू॰ मूर्ज गालू थः। हेडि

क्षत्र ज्ञार की ॥ उन्ह । केन । सो

ज्ञार कि

मिर्जार्गः क्री मूर्जगमः मूर्जगाया वा जावः । मूर्जगदः । यथा । जूका भिर्गृष्ट् नाद्री जूड्रक सामि गृष्ट् यप्ति । पोर्जागः कायर जमाः भगिष्ठ कवाप्त्रजाः। हेजि काजि-खदः ॥ पूर्जागः प्रत्य पोर्जागः। हेजि सार्थ कः श्रुज्यः॥

দৌর্মনস্য প্লী দুর্মনসোভাবঃ।। দুংখ নিবন্ধন চিত্তাবসাদঃ। ইতি চণ্ডী

व॰मजाउः। मुङ्ग् मनारः जवायनः

টীকাযা• নাগোদ্ধীভউঃ ৷৷ रोबी न जी इंडेशन ॥ मूर्वात्रमः। ইতিমেদিনী ॥ लोर्ज्य की इहा। पाइम । इंडि । হেমচন্দুঃ।। मोलयः शू॰ **कद्दशः। ই**তিহেমচन्दुः॥ मिनाः श्रु<sup>•</sup> हेन्द्रः। इंडि नदार्थ-कन्नउकः ॥ स्रोवातिकः श्रु बात्रत्रक्रकः। उट भ्यायः। हाः इः २ कुछ। ० हु । বেত্রধর: ৫। ইতি হলাযুধ:॥ পুতী-হার: ৬ পুতিহার: ৭ দর্শক: ৮ भारी ৯বেতালঃ ১০ দার পালকঃ ১১ **(मो:माधिकः >२ वर्खक्राः >० गर्बा**गः -১৪ দণ্ডপা•শুলঃ১৫। ইতি শবর্ত্তা-বলী ॥ দ্বাঃস্থিতঃ ১৬ বেত্রধারকঃ ১৭ বৰ্ত্তকঃ ১৮ দণ্ডবাসী :৯। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ তস্য লক্ষণ যথা। शुः भुः भुकला एकक शुरवादीन চোজ তঃ। চিত্তগুৰ্ভ সৰ্বেষা পু-তীহারে। বিধীয়তে ॥ ইতি মৎস্য পুরাণ ॥ ইঙ্গিতাকারতত্বজ্ঞো বল-वान् श्रियमर्भनः। अश्रमामी जमा দক্ষঃ পুতীহারঃ স উচ্যতে ৷৷ ইতি घानकाः॥ भोडलयः जि मुद्दलाख्यः। निमित्

ষ্ণেয় পুত্যয়ঃ।। सियां अ: पूर्यस्ताक्रम्बः। न पू ভরতরাজঃ। ইতি ত্রিকাওশেবঃ।। নৌহিত্র: পু: জ্রী দুহিতুরপত্য: ইতি ह्महन्मुः ॥ उৎপर्यायः। अञ्चाः ২। ইতি শদর্ভাবলী॥ 🗱॥ बीণि শাুদ্ধে পবিত্রাণি দৌহিত্র পতুপ ত্তিলাঃ। দৌহিক ধন্ন মিত্যাহ রপত্য দুহিতু खिलाः॥ कशिलाया ঘৃতক্ষৈব দৌছিত্র দিতি চোচ্যতে। ইতি মার্কণ্ডেয় পুরাণ• ॥ পৌত্র দৌহিত্রয়ো র্লোকে বিশেষো নাস্তি ককন। তথোহি মাতা পিতরৌ সমূতৌ তস্যদেহতঃ॥ ইতি দায-ভাগ: ৷৷ দৌহিত্রোপি অ্সুত্রৈন সম্ভারবতিপৌত্র বদিতি মনুঃ।। म्प्रावाम्बिरवरी की वर्गम्बिरवरी । ইতি হেমচন্দুঃ॥ म्यावाञ्यते जी वर्गभृथिति । इंडि (रुमम्बु: 11 म्यायाक्य जी वर्गशृथित्यो। इंडि व्यवन्तुः॥ षिवहनात्वायः॥ দু । व অভিসর্গণে।ইতিকবিকপ্লন্ধনঃ द्री मिनः॥ गगनः॥ वर्गः। इंडि

मुक्षः भूरः अभिः। इंडि मिरिनी ॥ मूर्गः भू॰ भक्षी। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। দুগোৰঃ পু আহর্গণঃ। তস্যান্যন্মাছ া কৰিত কল্লগতো হৰ্ক সমা গণা सहरेन গুণিত ন্তিথি সংযুক্তঃ পৃথ शस्त्र १६क माम ममार्जाट ॥ রবি দিনাগুগতাধিক মাসকৈ: কৃত - मिरेनः अक्रिजा मूर्जाता विरक्षाः । भृथगञः भठिजायम मण्डणाहिषू দিনাধ গতাবম বঙ্কিতঃ।। ভবতি 'ভাক্ষর বাসর পূর্রকো দিন গণো রবি মধ্যম সাবনঃ ৷ অধিক মাস रिन क्रय म्याङा मूर्व घरेकारिक মত্র ন গৃহতে ।। ইতি সিদান্ত निदायिक ॥

দ্যুত ৯ও দীপ্তৌ।ইতিকবিকল্পদ্সঃ।। দুৎে পুণ কিরণঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।। দ্যুতিঃ দ্রী দীপ্তিঃ।শোভা ইত্যেরঃ

॥ রশ্মিঃ। ইতি মেদিনী॥ দ্যুতিকরঃ পু• ধুবঃ। ইতি ভূরিপুযো-গঃ॥ দীন্তিকারকে তি ॥

দুৰ্যতিক বি দীপ্তিবিশিষ্টণ দ্যোতিক । ইতি মু**খ**বোধ ব্যাকরণ ॥ ' मुन क्री नगाएमधनवानिः। ইতি **জ্যোতিন্ত**্ব• ॥

দুর্গনশ প্লী অহোরাকঃ। ইতি ব্যা-করণ । যথা ৷ ভবতি কি দুর্নিশ দু,নিবাসিনা । ইতি সিজাত শি त्रामिनः॥

দ্যুপতিঃ পু॰ সূর্য্যঃ।ইতি হেমচন্দুঃ॥ हेन्द्र कि ॥

मुप्रिशिः शु भूर्यः॥ वक्क्षः। ইত यवः ॥

पूर्मियी जी विश्वकर्षकन्ता। मा नूर्यर-পন্নী। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥

দুরে॰ ক্লী ধনং। ইত্যমরঃ॥ বলং। ইতি व्यक्ति ॥

मूर्ता श्रु मूर्यीः। इंज्रुशामिरकाराः॥ দেরীঃ। ইতি স°ক্ষিগুসারে উণাদি-বৃত্তিঃ ৷৷

দুস্বৎ পু॰ দেবঃ। ইতি ত্রিকা ওশেষঃ ॥ गुरुः। ইতি গোলাধ্যायः ॥

पृज्यः शुः क्री **भागका** सिकिय। यशा-ণি করণক ক্রীড়া। ছুখা ইতি জাসা। তৎ भर्गायः। व्यक्तवर्धी र देवज्वरः ० পণঃ ৪ । ইত্যমরঃ ॥ 🐞 ॥ সূত্ত नमी ख्यरिक्र नाजा नाडु। विवर्द्धय

र्जिश দ্যুতকারঃ ) নি দ্যুতকার্যিতা। সদ্যুতকারকঃ) হিযার ইতিখ্যাতঃ। ইতি ভরতঃ॥ তৎপর্য্যায়ঃ। সভি-কঃ ২। ইত্যমরঃ॥ সভীকঃ ৩। ইতি मम्बद्भावणी ॥ मृज्रक्ट वि मृज्यकाः। व्यक्तकी प्रकः। ইত্যমূরঃ ॥ দূতপূর্ণিমা জী কোজাগরপূর্ণিমা। ইতি ত্রিকাঞ্জাবঃ॥

मृज्लोर्गसी जी मृज्भूर्गमा। इंडि ভূরিপুযোগঃ 11

দ্যতপুতিগৰ জী কাৰ্ত্তিক শুক্ল পুতি-**প**<। जाह कोमूरी। यथा। जूकेऽर्थ॰ কার্ত্তিকেতস্যশুদ্ধা যাপুতিপত্তিথিঃ । বিষ্ণো দ্তা মহী তত্ৰ কৌমুদী সা স্থতা বুধিঃ।। জ শদেন মছীজ্ঞেযা मूमा रखं ह रेव विका। शाजूरेकः नर्व শদক্তৈ: সাচ বৈ কৌমুদী মৃতা॥ ইতি পান্মোত্তরখণ্ড• 🛚 🏶 🖛 অত্র जिरथी विव रिन्जु शृक्षाि कार्युः। তম্ব। কামন পুরাণে কার্তিক শুঙ্গপক্ষ মধিকৃত্য বলি•পুতি ভগ-বদাক্য । বীর পুতিপদা নাম তব ভাবী মহোৎসবঃ। অত্র দ্বা নর শাদ্ল হাষ্টাঃ পুষ্ঠাঃ ৰলক্তাঃ ॥ ल्झ रीण शुरातन श्क्यिव १ दि

। রাজান্ত করণাবেতৌ ছৌ দোষৌ •পৃথিবীক্ষিতা॰।। পুকাশ মেতত্তা ऋर्याः याप्तवन नमाञ्चायो । उत्या ্রনিত্য পুতীযাতে নৃপতি র্যন্তান্ स्टावर ॥ मूरङ ममा ख्रास्क्व यः व्यर्गाए काइएक वा। कान् गर्बान् याज्यमुका भूमाः क विक्रितिक्नः ।। অপু।ণিভি র্থ- ক্রিয়তে জল্লোকে দৃতে মুচ্যতে। প্রাণিভিঃ ক্রিযতে যস্ত্র ॥ न विष्क्रयः नमात्रयः॥मृज्ञाज् भूता कल्ल मृष्टे॰ रिवतकत्र॰ नरू८ । তমাদ্যত নসেবেত হাস্যার্থ মূপি वृष्किगान्॥ इंडि मनुः॥ 🛊 ॥ क्इ উবাচ। কিস্তে দূরতেন রাজেন্দু বৃহ-**स्तिर्यभगनम्। एक्ट्राव्यक्तिया** স্তমাতৎ গুরিবর্জ্জবেৎ ॥ শুত স্তে यनि বা দৃষ্টঃপাওবো হি যুধিষ্ঠিরঃ। न ताकाः नुमरू ग्रीजः ज्राकृःक বিদশোপমান্।। দূতে হারিওবান্ সর্ব॰ তম্মাদ্যত• ন রোচযে। ইতি মহাভারতে বিরাটপর্ব॥ দ্যুতকর: তি দ্যুতকর্তা। সুগারী ইতি ভाষा। उৎ भर्य गयः। शार्डः २ श्र्डः **े अक्र**श्र्कं ८ अक्राप्ति ८ पूरता एत ৬ দূ্যতকৃৎ ৭ কিতবঃ ৮ কৃষ্ণকোছলঃ

১। ইতি শব্রত্বাবলী।।

যানবাঃ। অত্র মন্তঃ।বলিরাজ নম ন্ধভ্য॰ বিরোচন সূত প্রভা। ভবি ষ্যেন্দুস্রারাতেপ্জেয় পুতিগৃহা-তা না বৃন্ধপুরাণে তু বলিরাজেতি भञ्जभाष्ट्रकः। मञ्जासन् तार्कमु সমন্ত্রী সপুরোহিতঃ। ইত্যর্দ্ধ । পশ্চাদপি ৷ এবং পূজাং নৃপঃ কৃত্বা রাত্রৌ জাগরণ চরেৎ। ইত্যুক্ত।। পুন বু ন্ধপুরাণে ৷ শঙ্করণ্ট পুরা मृज् गमर्कं मूगता इतः। कार्खिक শুক্লপক্ষে তুপুথমে ধ্হনি ভূপতে।। জিতশ্চ শব্দর স্তত্র জয়ণ লেভে চ পাৰ্বতী। অতোর্থাছকরো দুঃখী গৌরী নিত্য সুখোষিতা ৷৷ তন্মাৎ ্দৃ্তে পুকর্ত্ব্য পুভাতে তত্র মান-বৈঃ। তন্মিন্ দূ্যতে জয়ে। যস্য তস্য সম্বৎসরঃ শুভঃ।। পরাজযো বিক-। षाण वाका नामा करता ज्या । ভবিষ্যোত্তরে। যো যো যাদৃশ ভা-বেন ভিপ্নত্যস্যা যুধিধির ৷ হর্ষ দৈন্যাদিনা তেন তস্য বর্ষণ পুষাতি হি॥ মহাপুণ্য তিথি রিয় বলি-त्राक्ष श्वकिनी । त्रान मान भान ং গুণ• কাঁর্ত্তিকে ২স্যা• তিথৌ ভবেৎ 🕯 ইতি তিথিতঃ ॥ ী নীজ শ্লী কপদকঃ।ইতি ত্রিকাও-

मेक শেষঃ ॥ দূত্তস্য কারণঞ্চ ॥ मृत्र भी नगा अन तामिश रथा। ধীস্থান পঞ্চম জ্ঞেষ বানিত্র স-গুন॰ স্ত॰। দুনে॰ দূনে॰ তথাস্তাখ্য यहें (कांग किश्रमन्दित ।। इंजि জ্যোতিস্তত্ত্ব• ॥ रिर् न्यक्तव्या इंजिकविकन्नक्रमः॥ দ্যেতঃ পু॰ পুকাশঃ। আতপঃ। ইত্যমরঃ মা **(म्राजन क्ली मर्मन । ইजि (इग**ठन्द्रः ।। পুকাশন । ইতি দ্যুত ধাতো र्ভाव १ नरे शुट्या ।। দ্যোতনঃ পু॰ দীপঃ৷ ইত্যুণাদিকোষঃ॥ দ্যোতিত তি দ্যুতিত। দীগু। ইতি মুশ্ববোধ ব্যাকরণ ।। **(म्रा**जृंगिः शु॰ शकीः। ইতি **भ**द-চন্দ্রিক।।। স্বর্গপৃথিবের।ঃ জ্রী দ্বিত্বে।। (ए प्रायु थे पर एक्श इं जिम्म देश विशा দ্যেঃ স্ত্রী স্বর্গঃ। আকাশ । ইত্যমরঃ।। দ্যোত্রণ ক্লী জ্যোতিঃ। ইতি সংক্ষিপ্ত-मात्र উगारिवृक्तिः॥ দুগডঃ পু॰ বাদ্যবিশেষঃ। দগড ইতি ভाষा। তৎপर्यत्रायः । পुতिপञ्र्यतः ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

मुकः वि भूती। ইতি रूपम्मुः॥

मुवन्

मुह्मिन भी जिनकः। ইতि भदमाना

' ॥ उट भ्रायः। कानः २ वर्धेकः ०
कर्यार्षः । हिंठि विद्युक्त भिति ज्ञायः॥

मुह्मिन भूः मृह्या। मृह्म्युज्ञावः। ইতि

'ইमन् भूजुर्यन माधुः॥

मुह्मिः जि मृह्यान्। यय मनया

दियाः वा व्यक्तियान्। यय मनया

दियाः वा व्यक्तियान्। इत्युर्थ

क भूजुर्यन माधुः॥

দুগ্ন্য জী ধনেতরদ্ধি । ব্যাদই ইতি ।।
ভাষা । ইত্যারঃ ।। অস্য জপান্তরাণি । দুগ্ন ২ দুগ্ন ও অগ্ন্য ৪।ইতি
তউীকাষা ভরতঃ ।।

দুন গতৌ। ইতি কবিকল্পজনঃ।।
দুবঃ পু॰ পরীহাসঃ।। পলাযন•।

তৈয়নরঃ।। রসঃ।। গতিঃ। ইতি
বিশ্বঃ।।বেগঃ। ইতি শদরক্ষাবলী।।
দুবজঃ পু॰ গুডঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥
দুবজাত বস্তু মাত্রঞ্চঃ।

पुर्वाः श्लो गमनः ॥ क्यानः ॥ अनुञाभः ॥ इंजि कथा (जार्जाद १ नर्षे भुज्यः ॥ पुरुषः श्ली पुरुषः जादः । जिन्न विश्वः यथा । माः मिष्किकः पुरुषः माः देनिमिखिक मूनाक् छः । माः मिष्कि-क्ष मिल्ल षिजीयः किजि (जष-त्माः ॥ शर्माः । ब्राल निज्यमन দুবিণ

তো ইনিত্য মুচ্যতে। নৈমিত্তিক'
বিহি যোগাত্তপনীয ঘৃতাদিষু ॥ দুবত্ত্ব- গ্ৰুকি ভাষাপরিছেদঃ॥
দুবৎপত্তী- ক্রী শিম্ডীবৃক্ষঃ। ইতি
রাজনির্ঘটঃ॥

पूरवि की नही। ইতি मदत्र द्वार नी ।।

गृविक भगी । गृवाका गी हि । ইতি

ভো অনী ইতিচ हिन्ही ভाষা। তৎ

পর্য্যায়ঃ। শম্বরী ২ চিত্রাত ন্যু গুণী
৪ শতমূলিকা ৫ পুত্যক্শুেণী ৬ ব্যা
চণ্ডা ৮ পত্রশ্রেণী ৯ আখুকর্ণিকা ১০

गৃবিককণী ১১ প্রতিপর্ণশিকা ১২

সহস্মূলী ১০ বিকান্তা ১৪ । অস্যা
গুণাঃ। মধুরত্ব। শীতত্ব। রস

বন্ধকারিত্ব। ভ্রাক্রিমি নাশিত্ব।

শূল শমনত্ব। রসায়নত্বঞ্চ। ইতি
রাজনির্ঘণীঃ।

पुरवत्रमा जी लाका। ইতিরাজনির্ঘণীः॥
पुराधातः পু॰ চুলুকঃ। ইতিশবার্থकল্পতকঃ॥ দুব দুব্য রক্ষাপাত্রঞ্চ॥
पुरिषी जी রাগিণী বিশেষঃ। ইতি
হলাযুধঃ॥

দুবিণ জী ধন ।। কাঞ্চন ।। বল । ইত্যমর মেদিনীকরো ।। দুবিণনাশন: পু শোভাঞ্জনবৃক্ষঃ। দুবিণোদাঃ পু॰ অগ্নিঃ। যথা। দুবিণ॰ বল নিত্যুক্ত॰ ধনঞ্চ দুবিণ॰ ততঃ। দদাতি তভবানেব দুবিণোদান্ততো ভৰ॥ ইতি বরাহপুরাণণ।

দুবীকরণ ক্লী অদুবস্যদুবকরণ । গলান ইতি ভাষা। ইতি দ্বিপুত্য-যেন সাধ্যং॥

मुवा क्री शिखन।। विख् ॥ शृथि-ব্যাদি ৷৷ বিলেপন• ৷৷ ক্লীব• ৷৷ ভেষ-জ ॥ ভব্য ॥ জনবিকারে ত্রি। हैि (मिरिनी ॥ अजू ॥ विनयः । इंडि इ्महन्दुः ॥ यम् १ । यथा। म শব • ন পিবেদুব্য • ৷ ইতি জলার্ণব-তন্ত্র: 11 # 11 ন্যায় মতে তন্ত্রব বিধ বথা ৷ ক্ষিত্যপ্ তেজাে মৰু-ष्ट्राम काला पिरपृहित्ने मनः । তেষা॰ সাধর্ম্যাদি যথা। ক্ষিত্যা-मीना॰ नवानास पुराव खग वानि-তা। किं जि बंग जथा जिन्नः भव-ना भन वक ॥ भन्नाभन्न मूर्खंइ कियादगानुया अभी। काल शाबा **मिणाः मुर्बगाउदः श**त्रमः मह् ॥ ক্ষিত্যাদি পঞ্ভূতানি চত্তারি স্প-র্শবন্তি হি । দুব্যার স্ত শত্রুর্ স্যাদ-

मुथ

थाकाम भंद्रीदिगा ।। অवराभार বৃত্তিঃ ক্ষণিকো বিশেষ গুণ ইষ্যতে। ৰপ দুবৰ পুত্যক যোগি স্যাৎ পু-থম•ত্রিক•১াগুকণীদ্বে রসবতী দ্বো, र्निमिखिका पुरः। षात्राता जुञ বৰ্গাশ বিশেষ গুণযোগিনঃ॥ইতি ভाষাপরিছেদ: ॥ # ॥ मुद्राङ्ख जक्रनामि (मायारमारयो यथा। उद्दा-वठाम भार्म्यु मुंबा श्रखा ভবেमतः। जूमो निःकिं उपुरा माठमा-ভুগ্ৰুবেৰু তৎ॥ তৈহ্বস॰ বৈ সমা-माय यमु (हिट्टें। ज्यिक्टः । ज्यो निःकिशः उपुवः माठमः। जूःकरयः खू उट्या यम मुवा ममानाय जत मूरह्यभादिजः। जानिशायजङ्गपुर् মাচান্তঃ শুচিতা মিযাৎ।। বজ্ঞাদিষু विकन्नः म्रोख् म्रृष्ट्वा नाम्याप्ति । অরণ্যে পনুদকে রাত্রৌ চৌর ব্যাহ্রা-ছলে পথি।। কৃত্বা মূত্র পুরীষ॰ বা मुवा शाखा न मुवाछि । ইতি कूर्य পুরাণ ॥

पु। व श्रद्भा। भवायत । देख्य कवि-कन्नकमः॥

দাক্ ব্য ক্ষত । শীয়ু । ইত্যমরঃ ॥ দাখ খ শোষে ॥ অলমর্থে । ইতি কবিকল্ল দমঃ ॥ দাব প ড ভূমে। আয়ামে। শক্তো া ইতি কবিকল্লন্দমঃ॥

দুাঘিনা পু॰ দীর্ঘত্ব । দীর্ঘস্য ভাব ইত্যর্থে ইনন্ পুত্যুয়ে দুাঘাদেশেন , সিদ্ধঃ। ইতি ব্যাকরণ ॥ ভূশোল স্য দীর্ঘতা । ইত্যাধুনিক জ্যোতি বিকাঃ ॥

দু বিষ্ঠিঃ ত্রি অতিদ্বিষ্ঠা ইত্যমরঃ ।।
দু তে অ ড বিভেদে । ইতি কবিকল্লদনঃ ।।

मुगः वि मृथः॥ शवायिजः। ই जि मृग शार्जाः कर्डविक शुक्तुर्यम निम्नमः॥ मृगः शुः शकः॥ व्याकाणः॥ कशमी ॥ मृथः। ই जिणमार्थकन्न जकः॥ मृगिवः शुः ठानक । मृगिवः। ই जि स्मिठनमूः॥

मुनिः श्रु॰ गमनः।। मुनिः।। अनुजाशः
। ইতি क बाजा जीव घटः शुज्यः
मुनिकः क्षी मिक्षकः। ইতি রাজनिर्धाः।। भीर রোগস্য ঔষধ বি
শেষঃ। अস্য বিবরণ মহানুনক
শব্দ দুষ্টব্যং।।

्रावकः शृ॰ शुखत्रात्नमः॥ विम्यः॥ भावनः। ইতি भिन्नी॥ भिन्नः। ইতি भक्तेना॥ तुरुखनः। ইতি শদরত্বাবলী ॥ হৃদযগুনহী ॥ দুব-কারকঃ। ইতি ধরণিঃ॥ দুবককন্দঃ পু• তৈলকন্দঃ। ইতি

রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ প্রকরণ কী কোন্ট্রাস্থ্য । ইতি বাস

দ্যাবকর॰ ক্লী শ্বেতটক্ষণ । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ।।

मावन क्ली कठककन । निर्मानी देखि जाया। देखि तक्षमाना।। विमुधिनक माविका क्ली नाना। देखिमम् तक्षावनी माविषः कि मिनिश्मियकाठः।। मन्धालिमः।। विश्वमूर्थाः। देखि यमिनी।। कर्र्तः। देखिताकनिर्यण्यः। ।। भक्षमाविषाः यथा। मृविषः । कर्नाहः २ खब्कताहः । महाताष्ट्रः ॥ कर्नाहः २ खब्कताहः । महाताष्ट्रः ॥ खब्कता ताङ्ग्वामिनः। चाक्षाम् मा-विषाः भक्ष विक्रा मिक्न वामिनः।। देखि क्षनम्भूतानः।।

দাবিডক শ্লী বিড্লবণ । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ।।

मृतिष्ठकः भू॰ (वश्रम्थाकः। किँवाव वशे हेि ভाषा। हेर्जामतः॥ मृतिष्ठ्रिकः भू॰ मृतिष्ठकः। हेि भक्तज्ञावनी॥ मृतिष्ठि की अना। हेि ताक्रिमर्यकः॥ मृतिष्ठि की अना। हेि ताक्रिमर्यकः॥ मृतिष्ठि की अना। हेि ताक्रिमर्यकः॥ ক্ষরণীয় ।। অবশ্যানুতপনীয় । ইতি ক ধাতোরবশ্যম্ভাবার্থে ব্যণ্ পুত্যয় ।।

দাহ খ ড জাগরে ।। নিঃক্ষেপে । ইতি কবিকল্পদ্রমঃ ।।

দুাক্ষ ই কাঙ্কো। ঘোরকতে। ইতি কবিকল্পদ্ধনঃ।।

দুক্ষা ত্রী ফলবিশেষঃ। দাখ ইতি কি**শ**মি**শ** ইতিচ ভাষা। ত**ুপ**ৰ্য্যা-यः। मृषीका २ (गास्त्रनी ७ स्राप्ती ८ মধুরসা ৫। ইত্যমরঃ।। চাৰুফলা ৬ কৃষা ৭ প্রিয়ালা ৮ তাপসপ্রিয়া ৯ . গুছফলা ১০ রসালা ১১ অমৃতফলা ১২। অস্য গুণাঃ। অতি মধুরত্ব•। অনুৰু । শীত পিভার্ত্তি দাহ মূত্র माय नामिवः। क्ठापः। व्यापः। সন্তর্পণত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ রিপার । শীত বল কারির । হৃদ্য-দ্ব•। তৃষ্ণা বাযু রক্ত পিত্ত ক্ষত ক্ষী-ণতা নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ।। ব্দু সুতৌ। গতৌ। ইতিকবিকল্পদ্রমঃ।। ষ্ণ নর অনুতাপে। ইতিকবিকল্লুজনঃ मः পু॰ বৃক্ষঃ। ইত্যনরঃ॥ গতৌদ্রী। ইতি শব্রগ্লবলী।। ফকিলিম॰ ক্লী দেবদাৰুবৃক্ষঃ। ইত্য-

मद्रः ॥

क्षाः भू मूहतः। ইত্যাतः॥ मृजः शातामि मूहताकात लोरमयाज ज्याः। ইতি ভরতঃ॥ युक्ता। क्यांतः । ইতিমেদিনী॥ ভূমিচম্পকঃ। ইতি শ্বচন্দুকা॥ দন্ত্যনান্তোপি॥

জড মজ্জনে। ইতি কবিকল্পজ্ঞমঃ।।
জড শি মজ্জনে। ইতিকবিকল্পজ্ঞমঃ।।
জণ শ অটিলীকরণে।। গতৌ ॥ বধে।।
ইতি কবিকল্পজ্ঞমঃ।।

দ্রণণ লী ধনুঃ। খড়ঃ। ইতি ছেমচন্দুঃ।।
দ্রণঃ পুণ বৃশ্চিকঃ।। ভূঙ্কঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।। পিশুনঃ। ইতি শব্দমালা।।
দ্রণমঃ ত্রি দীর্ঘনাসিকাযুক্তঃ। ইতি
সংক্ষিপ্তসার ব্যাকরণণ।।
দ্রণহঃ পুণ খড়পিধানণ। ইতি হারাবলী।।

দ্রণা ক্রী জ্যা। ইতি হেমচ্ন্দুঃ ।।
দ্রণঃ ক্রী দ্রোণী। ইত্যমর টীকাযা•
ভরতঃ ॥

দ্রণী জ্রী কর্ণজলোকাঃ।।কছপী।ইতি লিঙ্গাদি সংগ্রহে অমর ভরতৌ ॥ কাষ্টান্থবাহিনী।ইতি দ্রোণী শব-টীকাযাণ ভরতঃ॥

क्छ॰ बि , काजमुती ভাবঘৃতসুবর্ণাদি। তৎপর্য্যায়ঃ। অবদীর্ণ ২ বিলীন গ্র বিকৃত ৪। ইত্যায়ঃ ॥ শীষু ॥ विद्वान । ইতি মেদিনী ॥

कठ की न्ज विषयक भीषु गमन ।

जट পर्य । उद्यः २। ইত मदः ॥

भीषु वयः । ইতি मदः ॥ न्ज जी जा
दिने प्रविष्ठ गह षि ममू नाय गिक भु
देने नार्थ के द्वान या है कि क द्वान । मार्क । क्वाम थ , यह कि क द्वान । मार्क । क्वाम थ , यह कि क भूषा गार्थ के प्रथम । भिष्ठा । मून द्वाधार्थ विविध्व का ममा हिद्व ।

श्वाधार्थ विविध्व का ममा हिद्व ।

श्वाधार्थ विविध्व का ममा हिद्व ।

श्वाधार्थ विविध्व का ममा हिद्व ।

কতঃ পু॰ পলাযিতঃ।। হৃনঃ।। ইতি ধরণিঃ।।

ব্দনথঃ পু• কণ্টক•। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ।।

জনঃ পু॰ বৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ॥ পারি-জাতঃ॥ জবেরঃ। ইতি মেদিনী॥ কমনখঃ পু॰ কঁণ্টক॰। ইতি হারাবলী॥ কমব্যাধিঃ পু॰ লাক্ষা। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

জ্মরঃ পু॰ কণ্টকং।ইতি হারাবলী।।
ক্লী সাউ্মভেদঃ। যথা।
কপিশীর্যু জ্মশীর্যু তথা চাথোট
। ইতি সাউ্মভেদাঃ সুঃ
শাদিকৈঃ সমুদাহতাঃ ॥ ইতি
শদ্রন্থাকী।।

कन(मुंधः भू॰ जोनवृक्तः। ইতि में शार्थ-

कन्नज्यः॥ वृक्षानुष्ठणः॥
क्रमामयः शृ॰ लाक्षा। ইত্যमतः॥
क्रमामयः शृ॰ रखी। ইতিরাজনির্ঘণীঃ॥
क्रमानुयः शृ॰ সরটः। ইতি রাজনির্ঘণীঃ॥ वृक्षानुज्ञमात्वयू वि॥
क्रमार्थतः शृ॰ তালবৃক্ষः। ইতি
भदार्थकन्नज्यः॥ ठन्दुः। ইতি
হরিব॰শः॥
क्रमार श्रवः श॰ কর্ণিকাববক্ষঃ॥

জনোৎপলঃ পু• কর্ণিকারবৃক্ষ: । ইত্যমর:॥

क्वय॰ क्ली शिवानाः। ইত্যমরঃ।।

क्रमल्लकः शू॰ शियानवृक्तः। ইতি

क्षमत्रञ्जावनी।।

क्षष्ट्र य ॐ ৯ किशालमा व्यक्ति हिस्तन

ইতি যাবং । ইতি কবিকল্পকাঃ।।
करः পু॰ পুত্রঃ। ইতি শবার্থকল্পতকঃ॥

ফহণঃ পু• বুকা। ইতি ভরতদিক্প-কোবঃ ॥ । ।

महिनः भु• वुका। इंड्यानः॥ मही जी मुश्जित। इंडि मदार्थ-कन्नउकः॥

म न क ग वर्षा गर्डो। ই डिक्वि-क्यूक्यः॥

पः श्रु वर्गः। इंडि जिक्कांडकोगूम्। गुणानिवृद्धिः॥

(स्रानम्

দ্বনঃ পু॰ জঘনঃ। ইতি ভরতদ্বিকপ কোবঃ। সংক্ষিপ্তসারশা। দ্বনঃ পু॰ জনঃ। কৃশ্চিকঃ। ইতিশদার্থ-কর্মভকঃ॥ দ্বেক পাড খনোৎসাহে। ইতি কবি-কল্পকনঃ॥ দ্বেকঃ । লগ্নভূতীবভাগেকভাগঃ।

দুক্ষঃ । লাতৃতীবভাগৈকভাগঃ।
দুক্ষাণঃ পু যথা। স্ব পঞ্চ নবমানা।
যেরাশীনা মধিপা গুহাঃ। তে দুক্ষা।
গাধিপা জ্যো দুক্ষাণা স্ত্রয় এব হি
।। ইতিজ্যোতিস্তর্ণ।।

मानाः भू क्षे वाहकभित्रमानः ॥

प्राणः भू क्षे वाहकभित्रमानः ॥

प्राणः प्र क्षे वाहकभित्रमानः ॥

प्राणः हिं विभिन्न मानः ।

ए भर्गायः । यहः २ कनमः ०

हेमानः ८ नमः १ विश्वासः । हिं विभावः । हिं विभावः

बनाभव उद्गारम्यनायकः। यथा।

वियु उ भाक वर्ष जू ठ छ छिः भिन्न
जः क्रमाट। जावर्छः विकि मर्बर्छः
भूकतः पुगि भयू पः।। जावर्छा निर्जन्

ला भिषः मय्र्छण व्रष्ट्रपकः। भूकरः।

पूष्ठत बला पुगिः भम्भ भूगृतकः।

देख काजि छ द्वः।। य्यञ्चन कृत्

भूत्र वृक्ष विष्णयः। यनयमिया देखि

र नकमिया देखि छ जावा। यथा।

वृक्ष विक् भिवामीनाः पुग् भूद्वः

मता भूतः। जर्छ पूर्ण भूयहामि

भवि बर्छ मूर्या यदि ॥ देखि सार्छ

क् पूर्णा हो भूरगणः।।

(मुगकाकः श्रु वनकाकः। माँउकाक हेि जाया। ज्यार्ग्यायः। काका-वाः २। हेज्यातः।। (मुगाः ० जात्रगु वायमः ८ वनवामी ६ महाशुगः ७ क्रातावी १ शवाशुगः ७। हेि ताजनिर्वाः।। काकवः २। हेि व्याप्तावानी।।

দ্যোণগন্ধিক। জ্রী রাসা। ইতি কটা-ধরঃ।।

पुगिषा की पुगिन्या। शैंक अप-हिन्द्रका॥

जुनमुक्त जी मानकी जाने हें उन्हरून

पुर्विकारों की कुर्विकादिक्षित । ज्यानिकाद । कुर्विकाद । कुर्विका

पुरिष्मि जी कुर्कुशिविष्येः। ग्रा ইতি খ্যাতা। তৎপর্য্যায়ঃ। शैर्ब-পত্ৰা ২ জন্তুযোদিঃ ৩ জৰুদ্বিকা ৪ চিত্রাক্ষ্ণিঃ ৫ অক্ষা ৬ সুপুরা ৭ চিত্রপত্রিকা ৮। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ দ্ৰোণা ৯ ফলেপুদ্ধা ১০৷ ইতি ভাব शुकामाः ॥ अमृत खनाः । करूषः । উষ্ণর । ৰচ্যত্ব । বাত কফাগ্নি-মান্দ্য পক্ষবাত নাশিবৃঞ্চ। ইতি त्राक्षिमिर्यः ॥ १ क्षेत्रः । सामूत्रः । कार्यवेरावै । श्रीमूशीकिवे । खिन-কর্ণ। আম কামলা শোপ তমক খাস জম্ভ দাশিবৃঞ্চ। ইতি ভাব शुकानः ॥ 🗱 ॥ शानीर्यकर्मः । ঘলঘসিয়া ইতি ভাষা। ইতি রত্ন-भावा ॥ अमा खनः। ककार्नः ক্লিলা ক্ৰিমিশোৰ্থ নাশিবৃ•।ইতি রাজবল্পভঃ ৷৷ स्वापमानां के दुग्गमूया। इंडि नम

विसुका।

দ্যোগমুখ দ্বী চতুঃশতগ্যামনখ্যেননো হরগামঃ। ইতি হারাবলী ।। দ্যোগস্চঃ ত্রি দ্যোগসরিমিত বস্তুপাক কর্ত্তা। ইতি মুখবোধ ব্যাকরণ ।। দ্যোগা ত্রী দ্যোগপুদ্বী। ইতি ভাব-পুকাশঃ।।

দ্রোণি: জ্রী দ্রোণী। ইত্যমরটীকাথাণ ভরত: ॥

क्षणंद्र । यां जिल्ल कातिष् । ज ॥ (मानिका जी नीनीवृष्णः। ইजि भप-कात्रनवनद्वरा बांमुशाकिष्र । एक्स- त । यनी ॥

पृशी जी प्रभविष्मयः ॥ काश्चाष्ट्रवाहिनी ॥ गवापनी । इंछि प्रमिनी ॥
नीली वृक्तः । इंछि भ्यत्रवावली ॥
रेभवाज्यः॥ रेभवायाः मिक्तः । इंछि
रूमप्रमुः ॥ इन्मुहिर्जिही ॥ प्राणीलव्षः । इंछि त्राजनिर्यहः ॥ निर्मा
विष्मयः। इंछु त्राजनिर्यहः ॥ निर्मा
विष्मयः। इंछु त्राजनिर्यहः ॥ निर्मा
विष्मयः। इंछु त्राजनिर्यहः ॥ विम्म
भित्रमाषः। १२२৮ स्मत्र इंछि ভाषा।
ज्यम्ग्रीयः । वारः २ (गाणी ७।

पुगिनिकः भूः किउकीभूत्रः। ইতি हात्रावनी ॥

দ্রোণীমুখ ক্লী দ্রোণমুখ । ইতি ভূরি-পুযোগঃ।।

पुानी वन निः हिन कर्ना है पिन निः । उट्न विश्वा विष्य । उट्न विश्वा । उट्न विश्वा । उट्न विश्वा । उट्न विश्वा । विश्व । विश्वा । विश्व । विश्

पुष्टः भू किया ना। व्यक्तिक्षितः। उट्भर्यादः। व्यभक्तिया २ । इंडि स्मिन्नुः ॥ कः॥ प्रविद्याश्वाद्याः पूर्वा इः कार्षि कार्षि खगाविकः। इंडिक्यंभूद्रागः॥

प्राक्षिक्षनः क्षी भन्नानिश्वेष्ठिक्ष। उट भर्ग्रायः। वंश्राभामः २ं। इन्त्रमन्नः॥ ॥ प्राक्षाः भूः गाथा शुर्त्वमः॥ मृग न्वकः॥ विषानवृत्विकः। इनि भिन्नि॥

पुरि भू॰ पुरुकः। भन्नानिष्ठेष्ठिसकः। यथा। निब्रुप्ति क्ञन्त य ह

## (मेनि

বিশাস্থাতকাঃ। তে নরা নরকে যান্তি থাবচুন্দু দিবাকরে।।। ইতি সসেমিরোপাখ্যানং॥

ট্রোণাযনঃ পু॰ জম্মথানা। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥

पुरिः भू॰ व्यथभागा। ইতি स्पर-त्रशावनी॥

দৌণিকঃ ত্রি শোণপরিমিতবীরবপন যোগ্যক্ষেত্র• ৷ ইত্যমরঃ !৷

लिशनी भी संशहताककन्ता।उट পर्यत्रायः । भाष्मानी २ कृष्म ० रेन-ব্লিদ্রী ৪ নিত্যযৌবনা ৫ বেদিভা ৬ যাজ্ঞসেনী ৭। ইতি হেমচন্দুঃ ॥ অস্যা: পঞ্সানি কারণে ব্থা ৷ विक्रिकदार । भृगु ताम महाजाग সীতা সংগোপন অৰু। সপ্তাহা-ভ্যন্তরে চৈব রাবণো দুষ্ট রাক্ষসঃ॥ मूर्निवार्याः शुक्तिन कानकीक হরিষ্যতি । রাম্উবাচ । সীতা॰ गृहीदादः गह हायादिव जू जिक्रजू। कनज वर्क्जन॰ कम्म महिंचां क कुछ-न्निजः॥ त्रीजाः गृश्या शुगयो ৰদন্তীক হতাশন: । সীত্ৰ্যাঃ अपृन्ते हाया जस्ते श्री द्वाम अहिरकी ৷৷ সাঠ ছায়া ছতা পূৰ্ব রাবপের वनीयमा । मेर् ४५ इ.ठा द्राता

निरुठा ७ जवाकव ॥ वरहा भनी ँका कार्ल **ह** हारा रङ्गी विद**न** ह। व्यान गुरायक मन्त्रका महिन तामाय कानकी ।। माठ हाया उभ महत्क নারায়ণ সরোবরে। তপ ক্ষকার-বিব্যঞ্পত বর্ষঞ্প্লিনঃ।। বর॰ द्भुष जुनु प मूबाठ महत्र ा । উবাত সা শিবং ব্যগ্না ভর্তু দুংখেন **पूः** थिजा ॥ পजित्सिरि भक्षा ना বর• ববে ত্রিলোটন•া সর্ব সম্পৎ भूम स्थे खरेगा भर्दा वदः माने ॥ गशास्त्र डेवाह। जाशि दः शक्ष्या ব্রহি পতিনেংখীতি ব্যাহলা। প-কেন্দ্রান্ট হরের·শা ভবিষ্যম্ভি প্রি-যা তব।। তে চ সর্বেচ পঞ্চেন্দা "চা-**थूना शक्ष**शाखवाः। जारु हाया सूरे পদী চ যজ্জ ও সমুদ্রবা।। কৃতে ॥ যুগে বেদবতী ত্রেতাঘাণ জনকাত্ম-का। बाभरत (द्रोभभी हाया उन কৃষণ ত্রিহাদণী।। বৈষ্ণবী কৃষ্ণ ভক্তা চ তেন কৃষণ পুঞ্চীৰ্ত্তিতা। ৰৰ্গ লন্ধী র্মহেন্দ্রাণা সাত পশ্চাভবিষ্যতি

मानिकानुनाय कन्ता वाक बर्मादा । ललुह माजतः वीदा वस शुन्धः महाधूना ॥ जनुवाहं वियः माजा द्वार जुन्हिल्ला । मास्ता वीदार भूर्वभ भराव माजू हाख्या। (हो भाः मृतः स्वामन खन एकूमा भकः भाखवाः। म्जूर्यभानाः निम्नुग्गाः भाक्षमुः शक्षभाखवाः ॥ ইতি वृक्षरेववर्ष्य श्रीकृष्य क्षमा थएव शकः मुमाधिक भाजरवाधायः॥

षन्तः क्षी निथूनः। ইতিশদরङ्गाननी॥ षन्तः क्षी त्रश्राः॥ वज्यसः॥ निथूनः॥ यूग्नः। ইতি নেদিনী॥

हन्यः श्रुः ताशिविष्णयः ॥ ममाम (जरः। ইতি भवत्रश्नावकी ॥ मजू जिल्लार्थानाः भरानाः नमामः। वा-शर्मवनाम् । मन् मन् । वा-श्रेष्ठत्वत्र व्याग मनादात्र (जर्मन श्रिश जवि । ইতরেতর श्रुक्ता । अव श्रुक्तश्रुक श्रम्भुश्चानाः । श्रिषः वद्यः प्राण्डाक श्रमभाषानाः । श्रिषः वदः प्राण्डाक श्रमभाषानाः । श्रिषः वदः प्राण्डाक श्रमभाषानाः वाक्ष्मः जवि श्राणः ममाद्यातः वाक्ष्मः । अव मः श्राणः ममाद्यातः वाक्ष्मः । अव मः श्राणः ममाद्यातः वाक्ष्मः । अव मः श्राणः । प्रक्रवावः। ইতি एम-। ।

ৰন্তানী পুণ চক্ৰবাকঃ। ইতি দিকা-ওপেৰঃ।। सन्तृजः शृ॰ घिरिनावस्तरागः । इंडि निमानः।। कनशब्दाजनः।।

ছব॰ শ্লী দ্যাত্মক। দুই ইতি ভাকা। তথপৰ্য্যায়ঃ। উভৌ ২ দ্বৌ ত যুগল। ৪ দ্বিত্য ৫ যুগ ৬ দৈতে ৭ যম। ৮ দ্বন্ধ ১ যুগ্ম ১০ যমল। ১১ যামল। ১২। ইতি হেমচন্দুঃ॥

बगागिः भू॰ वृक्तालमः। त्रा॰ हिला इति लाया। जद्भर्यग्रायः। भागि २ || बुबागिः ०। इति स्महिन्द्रका।। बगाजिगः वि त्रक्ष स्टामा स्व स्नारः। अस् स्व युक्तः। इत्यात्रः।।

ৰা: জী ৰার । ইত্যনরঃ।। উপাযঃ। যথা। জ্ঞান দারা ভবেশুক্তি রিতি জ্ঞান শাজ ।।

बाः इः পু॰ ছারপালঃ। ইতি শদ-রত্নাবলী।। নন্দিকেশ্বরঃ। ইতি ভূ-রিপুযোগঃ।।

দাঃস্থিতঃ ত্রি দ্বারপালঃ। ইত্যমর-কোষ শদরত্বাবলের ॥

দাঃছিতদর্শকঃ ত্রি দারপালঃ। ইত্য-মর টাকাযাণ ভরতঃ।।

चाः ছিতদশী ত্রি ছারপালঃ। ইতি ক্ষাত থত রভসং রমানাথক।। বাচবারি শুও জী ছিচবারি শুও। 8< বেয়াল্লিশ ইতি ভাষা। ইতি ব্যাকরণা।

वाकिः मर जी व्यविक विः मर मंश्री। जरमार्था यका । व्यविक विकार में जावा । यथा । वाकि मर भूमार नार्या कज्जि भारत मृंग मिन्यां कि जाविस्त्र ।।

দাত্রি•শদক্ষরী পু॰ গুস্থ:। ইতি ত্রিকাওশেষ:।।

দাত্রি-শল্পক্ণোপেতঃ পু • মহাপুৰুষঃ । ইতি শব্দার্থকল্পতকঃ।। তল্লকণানি यथा। त्रागः मश्रम् इड यह्यभि শিশো রক্ষেল ভুক্তা বিস্তার ব্ৰিষু থৰতা ত্ৰিষু তথা গঞ্জীৱতা চ जियू। रेमर्घा अक्षम् किक शक्षम् সথে সংপ্ৰেক্ষ্যতে সৃক্ষতা দাত্ৰিংশ-बत्र वक्रनः कथ्यामा (गालियु म-ম্ভাব্যতে॥ ইতি শ্রিহরিভক্তিরসা মৃতসিষু:।। #।। রাগ ইতি সীমদু-क्षित्रतः भुष्टि क्नाहिट नवगरमा গোপস্য বাক্ট্রিদ। সপ্তসু নেদ্রান্ত भाम कर उन जान्यती है स्था निर्ध्य यहिनू विकाशका नथ नीनिकी करि मुस्ययू। वियु करि क्रमारियकः । (कहिंद कि इनल् नितः भवैडि।

পুন জিবু গীবা জহ্ব। মেহনেরু । পুন জিবু নাভি ষর সংবৃষ্ । পঞ্চ নাসা ভুজ নেত্র হন্ জানুবু । পুনঃ পঞ্চসু ত্বক কেশ রোম দ্ভাঙ্গলি পর্যসু । লক্ষণে সামুদুক

गुष्ट भूमित्यः । बाविः मधनानि ভड़ स्मानि श्रित्र । श्रित्र श्रित्युः श्रीन वक्षणानि श्रित्र मः गारिष्यु कथिमिठि ভगवनवजानानिश्रित्र । जान्म बामुवणानिठि ভावः । ইতি श्रीकीव गामामि विन्निठा मूर्गम गक्रमनी नान्नी होका ।।

हानमं वि हाधिकानमः। ३२ वात हेि जाया। हानम मन्था उट मन्थाग्नः। व्ययः निठावह वन-नाडः। विविद्ध ममान कभः। हेि वाक्रत्राः। हानम वाक्रकानि यथा। मूर्याः भामः २ तामिः २ मः काडिः ८ खह्वाहः ८ मातिकाष्ठः ५ छह-नवः १ ताक्रम खनः ৮। हेि क्वि कन्नुवाका।।

ক্লন্দ ত্রি দ্বানশানা প্রণঃ। বারঞি ইত্যাদি ভাষা। ইতি ব্যাকরণ ॥ বাদশকরঃ পুশ্রহম্পতিঃ। ইতি বিকাপ্রশেষঃ॥ কার্ত্তিকেয়ক।। দাদশপত্ৰক স্নী যোগবিশেষঃ। যথা । পিতামহো **ংপি ত॰ পুত্র॰ সাধ্য**॰ महिनए तुष्ठः। मन मगातः (भाः বাচ যোগ• ভাদশপত্ৰক• ॥ শিখা সংস্কৃত্ত ওঁকার• মেষো ৎস্য শিরসি ছিতঃ। মাসো বৈশাথ নামা চ পুথম• পত্ৰক• মৃত• ৷৷ নকারঃ শিরসিপ্যোক্তো ব্যো ২স্য শিরসি ছিতঃ। জ্যৈষ্ঠ মাসক তৎপত্ৰ॰ দ্বিতীয় পরিকীর্ত্তিত।। মোকারো ভুজযোর্ শাং নিথুন তত্র সংস্থিতঃ। নাস আষাঢ় নামাচ তৃতীয় পত্ৰ-ক মৃত।। ভকার । নেত্র যুগল কর্ টস্তত্র সংস্থিতঃ৷ মাসঃ শ্রাবণইত্যুক্ত • हजूर्थ• भवरः म्जः ॥ भकातः ছ্দয প্ৰাক্ত সিংহা বসতি তত্ৰচ । মাসো ভাদু তথা প্রোক্ত: পঞ্চন॰ পত্रकः मृजः॥ वकातः कवनः विम्ता কন্যা তত্ৰ পুতিষ্ঠিতা। মাস শ্চাশ্ব-যুদ্রো নাম বঙ্গ তৎ পত্রক শৃত ।। তেকার মন্ত্র গুামঞ্চ তুলা রাশি क्ञानुयः। भामण कार्डिका नाम बछमः পত्रकः मृठः ॥ वाकातः নাভিসংযুক্ত স্থিত স্তব্ৰচ বৃশ্চিকঃ। মাসো মার্গলিরো নাম বৃষ্টক পত্র-ক॰ युउ॰॥ সুকার॰ জঘন॰ প্রোক্ত॰

**ভত্রহ** क धनूर्धद्रः । পুষ্ঠে গদি তো भारमा नवमः भदिकीर्खिठः ॥ দেকারশ্চোক যুগল মকরোপ্যত্র সংস্থিতঃ। মাঘো নিগদিতো মাসঃ পত্রক: দশন: মৃত: ॥ বাকারো জান্যুগল• সম্ভ ত্ত্রাপি স•স্থিতঃ । পত্ৰক॰ ফাল্পুন• প্ৰোক্ত• তদেকা-म्म मूख्यः ॥ शासी यकाः ही-নে। হি স চৈত্রে বসতে মুনে। ইদন্ত দ্বাদশংপোক্তং পত্ৰংবৈ কেশবস্য शि ॥ कामनात ख्या ठकः यमाजिः षिजूबडथा। विवृष्ट खुक मूर्खिक তথোক্তঃপরমেশ্বরঃ।।এতত্তবোক্ত• দেবস্য ৰূপ দাদশপত্ৰক । যক্ষিন্ **ক্তাতে মুনিশুেষ্ঠ ন** ভূযো মরণ ভ বেং ॥ ইতিবামনপুরাণে ২% পঞ্চা-শত্তমো १४९१यः॥

দ্বাদশলোচনঃ পু॰ কার্ত্তিকেয়ঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।:

দ্বাদশাংশুঃ পু॰ বৃহস্পতিঃ। ইতি ভ্রিপুযোগঃ॥

षाम्भाष्यः शृ॰ तृषः। ইতি जिका ७-শেषः॥

बामगाञ्चनः शुः विञ्खिः। इञ्जातः॥ बामगाञ्ची शुः मूर्यः॥ व्यक्षकः। ইত্যমরঃ॥

দ্বাদশাযু: পু• স্কুর: 1.ইতি শ্ব-মালা !!

দ্বাদশার্চিঃ পু• বৃহস্পতিঃ। ইড়ি হেন্ডসূঃ॥

দ্বাদশাক্ষঃ পু• কার্ত্তিকেষঃ॥ বু**দ্ধঃ।** ইতি হেমচন্দুঃ॥

हानमाकत्रमञ्चः श्रूः हानमवर्गाञ्चक विकृ विषयक सञ्च वित्मयः। दथा। नत्मा जगवत्ज वामूत्रवाद्याकात शूर्वकः। भरामञ्च निमःश्राह छत्न-का हानमाकतः॥ हेजि भाष्म कियायागमातः॥

न्नी ६ रेवमाथी कानम्युषाम्मी ७ জৈঙী রাম্বান্দী ৭ আবাটী কৃক-बारमी ৮ भागी वृक्कारमी २ ्ञामी कविषामनी २० जाश्रिनी भग्न-ने ज्हारमी >> कार्डिकी नातायण हाहभी ३२। এতাসা॰ नाम ध्रनी বুত । এতৎ করণে নহাফন । ইতি वज्ञारभूजातः ॥ 🗱 ॥ व्यथ भिभी-**७क दाम्भी । नात्रमीव्य । देवनात्थ** ुक्रभक्ष जु बारमी तिकवी जिपिः ৷ তস্য শীতল তোমেন শ্লাগয়েৎ কেশব শুচিঃ। ইবং পিপীতক দা-मभी । अब । यही मामजा कर्बद्रा मंखनी नाईभी गुठा। পতকোপाम-नाराष्ट्र यष्ट्रानाङ् करभारगः॥ वका-मन्त्रा॰ शुक्रदेखि उभयाम-मनीविनश উপাসনাय बाल्ना १ विष्या र्यविषय তথা।। ইতি ভবিষ্যপুরাণেন একা-म्मूरभवामान्डद्गः चामम्ताः विक्शाः সনাযা উক্তত্বাৎ৷ অত্রাপি তথা ব্যব হরম্ভীতি নাত্র যুশ্মাদরঃ৷ দ্বাদশী ক্ষযে তুপুৰালনিত্তৰ্য্য বিনাপি প্জেতি। र्वेष भूदिवहत्नाका यष्ठीयूठा मधनी ॥ व्यापाद्मि बानभीयू भ्यनामिकः li #।। जथ मुदेग हामभी। मा छा पूज् गुरुणअस्वयं मञ्जयि । ভবিষ্যো

ন্তরে। দাদশী শুবণোপেতা সর্বপাপ হরা তিথিঃ। বুধবার সমাযুক্তা ততঃ শত গুণা ভবেৎ 🛭 তামুপোষ্য সমা-ণ্নোতি দাদশ দাদশী ফল। উভষ দিনে তল্লাভে তুএকাদশী যুতৈবগুগছা । দ্বাদশীচ পুকর্ত্ব্যা একাদশ্যবিতা বিভো। সং। কার্য্যা চ বিশ্বন্ডি বিঁকু ভক্তৈক মানবৈঃ॥ ইতি ক্ষান্দাৎ॥ যদাত্ত্বেকাদশ্যামেবশুবণা ভদা তামু-পবসেৎ। তথাচ নারদঃ। যাঃকাन্চি-व्यियः (शुक्ताः शून्ता नक्कव (या ग**ः** । তাম্বেব তদ্ভুত• স্বর্য্যাৎ, শুবণ দাদ-শী বিনা ৷৷ ভবিষ্যোত্তরেপি ৷ একা-দশী যদাতু স্যাৎ শুবণেন সমন্বিতা। বিষয়া সা তদা প্যোক্তা ভক্তানা॰ বি-জ্ব পুদা ॥ তিথি নক্ষত্ৰ সংযোগে উপবাসো যদা ভবে**ে।** তাবদেব ন ভোক্তব্য বাবদৈকস্য সংক্ষ্যঃ।। বিশেষেণ মহীপাল শুবণ বৰ্দ্ধতে यि । जिथि क्या (जाक्या काम भी रेनव लहरय ।। जिल्न करमन একাদশী তিথিক্ষয়েণ ভোক্তব্যং দ্বা-দশ্যা পারযেদিত্যর্থঃ। অত্র হেতু র্ছাদশী মিত্যাদি।যদা বেঁকাদশুপে-वामित्ति भृवंश नास्त्रि श्रद्ध कित्न द्वार-শ্যা শ্বণ তদোপবাস দ্বমাই বুন্ধ रिवर्कः। अकामभी मूरभारेवाव साम-শী সমুপোষ্যে এন চাত্র বিধিলো-পঃস্যাদুভযো দেবতা হরি:।। অত্র चममाशि बुर्छ भू वि निव वर्षा पुरा স্তর মিতিস্থতে:।। পারণস্যাকরণেন भूर्त्वाभवामाममा**क्षाव्भवामा**बस्ड বিধি লোপো ন ভবেদিত্যৰ্থ: হেতু मार উভযোরিত্যাদি। উভযো ক भवामामामर्था जू भुवनवामरणाऽ-বোপোষ্যা। তথাচ মৃতিঃ। বরমে-कारमी जुका बारमी अमू शायत्य । প्रदीभवामकः भूगाः मर्दः भू।-**भाग्रमः ।।** উপোষ্য हामभी॰ পুণ্যা॰ বিষ্ণুশক্ষেণ সংযুতা । একা-দশুগদ্ভব॰ পুণ্য৽ নরঃ প্রাণ্নোত্য স॰-भय·॥ द्वारम्। श्वारम्। अवामः काम्। उपाष्ट मार्क्र(अय श्रुतान । क्वानम्य गुश्रवा-त्मन मुक्ताचा नृश नर्नमः। ठकवर्षि দ্ব মত্তল সংপ্রাণ্নোত্যতুলা শূষ্ণ !! ॥ 🛊 ॥ कार्खिक भूक्ष घानभी मन्डता। তথাচ ভবিষ্য মৎস্যযোঃ। অশ্বযুক্ मुद्ग नवनी बाम्भी कार्जिनी उथा । ইত্যাদি বচনাৎ। ইতি ভিখিতত্ব• ।। 🗱।। अगुहायन मूद्र बामनी अथ ७ षामभी। তত্তোপোষ্য विकु भम शुारि कात्मारथ अवामना प्रः विकुः भूविविद्

ইতি সংকল্প পঞ্চগব্যেন লাপযিত্বা বথা শব্ভুগেচারেণসংপ্রা যব ব্রীহি भूर्नभावः गृशिषा। ७ मश्रवसम् य८, खु८ भुमारान जम्थे भिरास दिशी यथा २४७ जग८ मर्ब द्वायव भूक-ষোভ্য। ততো পথিলান্যখণ্ডানি <u> बुञानि मम मस्र वि ॥ ইতি প্রার্থ্য</u> मिक्गा॰ मम् १९८। इंडि क्डाइन्द्रिका ॥ 🗱 ॥ रेजिमी शत्र बारमा 🕫 यहे जिला চরণ । যথা বিফুখর্মোভরে । মৃগ-শীর্ষে শশধরে নাঘেমাসি পুজাপতে । একাদশ্যা সিতেপক্ষে সোপবা-(मा जिटिन्दुयः॥ द्वारम्ताः वर्जि-লাচার॰ কৃত্বা পাপাৎ পুমুচ্যতে । जिनदारी जिलाहरी जिलाहारी जिल्लामकी ॥ जिल्लम् पाञास्<del>चाका</del> **চ य** एं जिल्ली नावनी पि ।। नक्लू यर् তিলী ভূষা সর্ব পাপৈঃ পুমুচ্যতে॥ वि**॰म** वर्ष जरुजाि वर्गलाक नरी-यछ ॥ 🗱 ॥ व्यथः गाविन्ह द्वानमी । कालुत मूक्र शक्तार भूया कि हामणी यि । शाविन बान्नी नान शाउक नामिनी ॥ ख्र<sub>य</sub> शकाया∮ भग्नभूतानीस्य अञ्चर्धः यहाभाउक সংজ্ঞানি যানি পাপানি সন্তি নে । स्मितिम बारमी शुनि छानि स्म इत जाइ वि॥ इंडि छिथा मिछपः ॥ क ॥ अथ बारमी जाउ कनः। वज्ञ शुक्कः मर्बजनानू वाशी ज्ञान-मान्य ज्ञिथिशियः म्याट । छट भारमी यम्य जनम्य मृत्जे भुवाम दीत्ना व्यवशात मक्तः॥ इंडि काशी भुरीशः॥

षाशतः शृ अत्मरः॥ यूगविष्णयः। ইত্যমর: ॥ তদুগপরিদাণ যথা। অঙ্ঠো শত সহসাণি বর্ষাণা নারু यानिञ्। इज्इविश्व महत्रानि वर्गानाः দাপর যুগ ॥ ৮৬৪০০০॥ উস্ত श्रामा यथा। यङ हेब् ॰ भूपका ग्रान ছাগরস্য বিধি পুনঃ। তত্র ত্রেতা-যুগে দীণে দ্বাপর পুতিপদ্যতে ॥ ঘাণরাশে পুজানান্ত সিদ্ধি জ্বেতা-যুগে তু যাপেরিবৃত্তে যুগে তমিং শুতঃ সা বিপুণশ্যতি।। ততঃপুবর্ততে ভা-সাং পুজানা দাপরে পুনঃ। লৈতো ভ্তিবিণিন্যু**জ**॰ ত দ্বানান্বিনিশ্চয়।। পুরুত্স তৈচৰ বর্ণানাও কর্মণাঞ্চ বিপ-र्यभित्र गर्छ वशः भरमा भरका मारना দপ্রক্ষাবলণা তথারজভ্মোভ্য भुव्रिक्षाभाव भूमः। जात्म क्रि ্দৰশো ২ডি সহেতায়া পুৰ্বৰ্তিতঃ ৷

দাপরে ব্যাসলো ভূষা পুণশ্যভি कत्नी भूनः । वर्गानाः षाभात शुःभः म की गरंख जथा नुमाः ॥ देवस मूर-পদ্যতে চৈব যুগে ত্রিন্দু,তৌ মৃতৌ ।। বিধা শু.ভিঃ মৃতি শৈচব নিশ্চযো नािं मुर्छ ॥ अनिकर्यािश्रम-नाषार्य जलु॰ न विष्ठाउ। धर्मजलु श-বিজ্ঞাতে মতি ভেদন্ত জায়তে।। পরমুর বিভিমে তৈ দৃ স্টানা বিভুনে-ণ ভূ। ততো দৃষ্টি বিভিন্নৈ স্তৈঃ কৃত॰ শাড়াঙ্গল দ্বিদা। এক বেদ হিবৈ ব্যাসঃসংহত্যত্ত পুনঃপুনঃ।। সংক্ষ-পা रागुयकिय দৃশ্যতে দ্বাপরেবিহু। বেন্ট্ৰণ্ডক কতুৰ্বাতু ব্যস্যতে দ্বাপ-রাদিবু ৷৷ খবি পুত্রৈঃ পুন র্ভেদান্ডি-म्यास्त्र मृद्धि विजुत्मिक्षा गञ्ज वृत्तिन विन्द्रारेगः सत् कम विश्वर्यरेशः ॥ न॰ হিতা ঝাজুঃ সানা সহিতা তৈঃ শুতর্ষিভিঃ । সামান্যাদ্বৈকৃতাদ্ধৈব मृष्टि छिरेमः कृष्टिए कृष्टिए ॥ युष्मिनः कन्न म्बानि ভाষ্য विन्ता खरेशव ह। অনে চতুপু ছিতা স্তে বৈকেচিন্ন প্ৰত্য-বহি তাঃ॥ দাপরেষু পুবর্তন্তে ভিনা-रिषी रिखः मूमन रेनः। अवसाध्यंप्रवः शूर्व मानी रेष्ट्रंषः उठः शूनः॥ नामानऽ বিশরীভার্থিঃ কৃত শাত্রাঙ্গল দ্বিদ

१ चार्यर्गतमा शृक्ति र्यञ्था वराम-**নী**শৃত । তথৈবাথৰ্বণা সামাণ বি करेन्नः चम् मःकरियः । व्याक्ता দ্বাপরেম্বর্থঃ ক্রিয়তে ভিন্ন দর্শ নৈঃ।। ৰাপরে সন্নিবৃদ্ধা তে বেদা নশ্যন্তি বৈ কলো। তেষা॰ বিপর্য্যযোৎপন্ন। **ভ**वश्चिषाभारत्रभूनः॥ अवृश्चिमत्रगरेकव ज्येव ब्राशूश्रम्वाः । वाद्यनः कर्यः **जि पूरिस निर्दित। कायर** जाउः 11 নির্বেদাক্ষায়তেতেবা দুঃখ দোক বিচারণা। বিচারণাযা বৈরাণ্য दिवाशप्राप्ताय मर्णन ॥ हायानाः रमनाहित खाना शिखक कागरज া তেবা মেধাবিনা পূৰ্ব নাদ্যে ৰা যমুবে হস্তরে। উৎ পদ্যন্তীহ শাদ্রা-ণা॰ দাপরে পরিপছিন:।। আযুর্বেদ বিকন্নাশ্চ অস্থানাণ জ্যোতিষ্ক্য চ । অর্থশান্ত বিকল্পান্চ হেতু শান্ত বিকল্পন ৷৷ পুক্রিয়া কল্পসূত্রাণাণ ভা ষ্যবিদ্যা বিৰুল্লন•। স্থৃতি **শান্ত পু**-ख्माक शृक्तानि शृथक् शृशक् ॥ ছাপরেস্বভিবর্ত্তে মতি ভেদা তথা न्गा । मनमा कर्मना वाहा कृह्यमार्खा পুসিখ্যতি ॥ शानतः नई ভ্তানা কায ক্লেশ পুরস্কৃতঃ। লোভে। ভৃতি र्विग्यूष स्वाना मविनिष्ठयः॥ विम

भाक मुगयन वर्षागा महत्र उथा।
वर्गामुग भित्रधु मः काम हिर्दे ।
उर्षित हा। भृति वर्ष महत्यु हि भद्रमायू उद्दा नृगाः। निः स्मिद्द हाभद्दि ।
उर्षित उम्र महत्र व् भाव ।।
उर्षित उम्र महत्र व् भाव ।।
उर्षित महत्र भाव ।।
उर्षित महत्र भाव ।।
उर्षित महत्र भाव ।।
अत्रात् २२० व्यक्तायः।।

भातः श्री निर्गमनः ॥ अनुशायः ।
हैि मिनि ॥ आन्त्रमः भर्यायः ।
भाः २ भूजीहातः ० । हेळ्यातः ॥
वात्रकः ८ । हेळ्णमत् त्रावनी ॥ ॥
गृहिणाः भूजनः न्नातः भूगकात्रमः
गृहमः ४ । न मथः मिष्म कर्वतः
किक्षम् नाशिक भूजः । हेळि तुक्षविवर्ष श्रीकृष्ण्डम् थएः ॥

বারকঃ পু• দারকা। ইতি শবরণ্না-বলী।।

बात्रकंग्रेकः शू॰ कवारे॰ 1 इंडि नम्-त्रजावनी ॥

कात्रका जी मनानश्राउभूती। उट भर्यप्रायः। बात्रावजी २ बान्नव्जी ३ वनमानिनी ३ बात्रिका ६ चिक्निगेती ५ बात्रकः १। इंडि भक्त बावनी॥ छम्रा निर्माण श्रुकार्ता यथा। श्रिक्क

উবাচ।হে সমু দুমহাভাগ ছবঞ্শত ্যোজন । দেহি মে নগরার্থঞ্চ পশ্চা-माम्यानि निन्छि ।। नगतः अस र কারো ত্রিযুলোকেষু দুর্লভণ রমণীযঞ্চ गर्दियाः कगनीयक यायिजाः ॥ वा ক্তিঞাপি ভক্তানা বৈষ্ঠ সদৃশ পর•। সর্বেবামপি দুর্গানা৽ পর•পর-নভীন্নিত া দিবা নিশ খগাশুষ্ঠ স মিধৌ বিশ্বকর্মণঃ। স্থিতি সক্ মহা-ভাগযাবনিশাতি দারকাণ বিশ্বকার ৰুবাচ। দ্বারকাঞ্চ কিমাকারা কলো-মি জগতা• বিভো ৷ কথ্যস্ব মহাভাগ निर्माण कम भी थत्र ॥ छगवानुवाह। শতযোজন পর্য্যন্ত নগর সুমনোহর i भग्नजारेग र्वज्ञकरेज जिन्मुनीरेण ज-नुखरमः॥ कहरैकः भाविखरुक भा-नरिकम् मञ्जूखिकः। गङ्गरेक गानिया रिक्व हम्दुकाञ्जामिन्छ उथा। সূर्यका-ন্তাদিভিশ্চৈব পুৰৈশ্চ মটিকাকৃতৈঃ ।। হরিছপৈশ্চ মণিভিঃ স্যামৈ গৌর বুৰৈন্চ বৈ। গোরোচনাভৈঃ পীতিন্দ माफिय वीज कर्लोकः ॥ भगवीज निरिज्येक्टवं नीरिवः कमन वर्गरेकः। নিণিভিঃ কদ্ধলাকারৈ কদ্দুলৈশ্চ প রি**ছতৈ**ইয়া <del>খেত চম্পক বর্ণাতৈ গুপ্ত-</del> কাঞ্চন সমিভিঃ। স্বৰ্ণ মূল্য শত হণ্ডৈ

রীব্দুকৈশ্চ ৰূপকৈঃ া শার্ষিষ্ঠশ্চ वितिष्ठ निर्मुष्टिक भृषििकः।यथा বিধান যমোগ্যংয়ত্র ফ্রন্থ মীব্লিত• । মণানা হরণীকের যক্ষ সংবাহিনা-नगर निकानिन कत्रियां स्विन वियान भूबेक ॥ योकक मधि ल-কৈঃ হবের প্রেরিতৈ রপি। বেডাল वरिकः अन्याक वरिकः नक्त्र ह्या-জিতৈ: মাদানবৈ বু করকোভি: লৈ-न कन्। निरंगाकिछिः। असं पिक्ष পত্নীনা সহসাুণাঞ্চ বোড়শ ( অন্য পত্নী জনস্যাপি চীঠাৰিক শতস্য চ ৷৷ শিবির• পরিখা যুক্ত মুক্তৈ: প্রাকার বেষ্টিত । যুক্ত দাদশ সারক্ষ সি॰ হ দার পুরস্ত ।। যুক্ত চিত্রৈ বিচিত্র-क क्बिरेमक कवाइरिकः। निविष বৃক্ষ রহিত পুসিদ্ধৈত পুরস্কৃত।।। मूनकन रम्दिय श्रामनक उरेश्वर । यम्ना मान्त्रमः दिवाः किन्न त्रागान्तरेथ-বচ।। সর্বপুসিজ। নিল্য মৃপুসেমস্য ভূত্ত:। আশুন সর্বতোভদু বসু-(मदन) गए शिवुः ॥ कथिकः लाक णिकार्थः इक कार्रः विना भूती। मू-जक्षामा अध्या गह बट्य यथा मूच ।। विश्वणी इति गद्दा अंशायशकिया गर्। गम् पुत्र) जभीशक विभूषा में

নোহরণা সুস্থাপ তত্র নক্তঞ্চ কাৰ্যণ্ড शिक्षणा मरु । बद्धा बाह्रव छी । हम्प्राः मान भ्रक्ष उथा।। यटकिक्ट क ্**থিত** কাৰুঃ কৃষ্ণেন প্ৰৱন্যাল্মনা · उत्तव वक्का॰ गर्ब॰ नक्ष्मानशास मूत्न াকাৰু হসন্তি ৰণ্নেচসৰ্বেতেশিল্প काबिनः। गक्ष गक्षाकान। वन वञ्चण भिक्ति ।। युक्ता एमर्भ गरूए। বিশ্বকর্মা চ লক্ষিতৃঃ৷ অতীর দার-কা॰ ন্নম্যা॰ শত বোজন বিকৃতা-॥ ্ বুক্ষাদীনাঞ্চ নগর• বিজিত্য চ বিরা-জিতা । তেজসা हाहिত। সূর্ব্ রত্নানাঞ্চ পরিষ্কৃতা ।। বাসুদেব উবাচ। পৈতৃকী তীর্থতুল্য সা কি তীর্থ• দারকাপর•!৷ সর্বতীর্থ পরা-**শ্রেষ্ঠা দ্বারকা বহু পুণ্যনা । যস**্যাঃ भुत्वन माखन नजाना॰ ङग्रथछन॰ ॥ मानक बातकाराक माजक पर পূজন । চতুর্গুণঞ্চ তীর্থানা গঙ্গা-**मीनाक्ष ज्यिश ॥ इंजि तुक्षरिवर्**ख ोक्कडमथ७॰॥

দারকেশঃ পু॰ প্রীককঃ। ইতি শদ-রহাবলী।।

ৰারদাতুঃ পু॰ বরদাতুঃ। ভূদীসহ বৃক্ষঃ। ইতি ভাবপুকাশঃ।।

कात्रभागः विकासम्बन्धः। पत्रवान्

विज्ञानमा काषा। उट्शर्यायः।
भूकीकातः २ काःषः ० वाःक्विः ८
पर्मानः ६। ইত্যातः ॥ त्वधातकः
५ काःमाधिकः १ वर्जककः ৮ गर्बाहेः
२ प्रधानी २०। ইতি किकाशः
लिषः॥ वात्रकः २२ क्वा २२ वात्रं
शानकः २० क्विवातिक १८ विकी
२६ उट्गातकः २५ क्वि २१। ইতি
हमहन्तुः॥ जमा विवत्य १० क्विवा
विक भाष दुईवाः।

षात्रभागकः शुः हात्रभागः। इंडि नम्तुक्षावनी ॥

দারপিণ্ডী স্ত্রী দেহলী। ইতিজটাধর।। দার্বস্থ ক্লী তালক । তালা ইতি সলুপ ইতিচ ভাষা। ইতি হেন-চন্দুঃ।।

দারবতী দ্রী দারকা। ইতি ত্রিকা গু-শেষঃ।।

षात्रविवाङ्क् श्रु वकः। ইতি विका-अस्थियः॥

॥ **ছার্ছঃ পু॰ ছারপালঃ। ইতি ছেম-**চলুঃ।।

ছারাবতী জ্ঞী দ্বারকা । ইতি হেমচল্টুঃ। অযোধ্যা মথুরা নাযা কালী
কাঞ্চী অবন্তিকা। প্রী ধারাবতী
চৈব সভৈতা মোক্ষ দায়িকাঃ ।।

এতান্তপৃথিবী মধ্যে নগণ্যন্ত কদাচন। পুরী দারাবতী বিক্ষোঃ পাঞ্চ
জন্যোপরি ছিতা।। মুক্তিদা এতাঃ
সর্বাণ্চ একত্র গণিতাঃ সুরৈঃ। যানি
যানি চ ক্ষেত্রাণি কাশীপ্রাপ্তি করাপি বট্।। ইতি ভূতশুদ্ধি তম্রণ।।

দারিকঃ পু॰ দারপালঃ। ইত্যমর টীকা সারসুন্দরী॥

দারিকা জী দারকাপুরী। ইতি শ্বরত্বাবলী॥

ৰারী ত্রি দারপালঃ। ইতি শদরত্না-বলী।।

দাবি॰শতিঃ জ্রী দ্যবিকবি॰শতিঃ। বাইশইতিভাষা।ইতিব্যাকরণং॥

ষাসপ্ততিঃ জ্ঞী দিসপ্ততিঃ। যথা। দ্বাস-প্ততিক্ষৰন্ধ্যায় মিতিক্ষ্যোতিস্তত্ত্বণা

षात्रः পূ॰ দারপাল:। ইত্যার টাকা-যাণভরতঃ॥

ষাহিতঃ পু॰ দারপালঃ। ইত্যমর টীকাযাণ ভরতঃ॥

ছাস্থিতদর্শকঃ পু॰ দৌবারিকঃ। ইত্য-মরটা কাঘা•ভরতঃ।।

দ্বি: ব্য দৌবারৌ। ইতি সূচ্ প্রত্যযেন সাধ্য শি। দ্বি শদস্য পূশস রূপণ দৌ। ব্রিষা ক্লীবেচদে। তদ্বাচকানি यथा। शकः ) निक्ल र अपिकात्रा २ ताम भू थः ८ हकः ८ छनः १। इं कि कि कि त्र त्र त्र त्र व्या । स्र हत्रो यथा। इन्मु ग्री १ ना त्र न्भ र्व छो ।
२ अपिनी अभारतो १ जार्म भ र्व छो ।
इं कि महा जात्र छ वन भ र्व ।।
कि के त्र विका । यथा। अभी छि जान ।
कि के भ छ वा गृहात्मी न छ विक थे ।
कि के भ छ वा गृहात्मी न छ विक थे ।।
कि के भ छ वा गृहात्मी न छ विक थे ।।
कि के भ छ को कि ।। को कि ।।
कि के भ के कि ।। को कि । इं छि ।
कि की ।।

দ্বিককারঃ পু॰ কাকঃ। ইতি শদ্রত্ম-বলী।

দিকলং পু॰ উট্টুঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।।

দিশুঃ পু॰ ষট্ সমাসান্তর্গত সমাস

বিশেষঃ। সতু সংখ্যা পূর্ব পদানা॰
সমাসঃ।বোপদেবেনাস্যগ সংজ্ঞা
কৃতা। সচ ত্রিবিধঃ। তদ্দিতার্থঃ ১
সমাহারঃ ২ উত্তর্গদপরশ্চ ১।
তদ্দিতার্শ্বোপি দিবিধঃ। তদ্দিত
পুত্যে মাত্রস্য অন্তাদে ইসাদের্বা
অর্থে বিষয়ে ইত্যেকঃ। অপত্যার্থ
ক্যাদিক ত্যক্তা অন্তাদে শুদ্দিত।
স্যার্থে বাচ্যে ইত্যপরঃ। তদ্দিতার্থ

বিষয়ে যথা। দ্বো নাজে। রপত্য ॥ विगाजुतः। शकानाः नाशिजाना নপত্য• পাঞ্চনাপিতিঃ॥ তদ্ধিতা-র্থ বাচ্যে যথা ৷ পঞ্চতি পোভিঃ ক্রীতঃ পঞ্চন্ডঃ ।। সনাহারো যথা। এয়াণা স্থানা স্মাহারঃ ত্রিস খে । সমাহারে অদন্তানা জীব। পাতাদেন্ড ক্লীবত্ব•া৷ উত্তর পদ প রো यथा। शक्षगाया धनः यमः म পঞ্গবধন ইত্যাদি । ইতি নুধা-বোধ টীকায়া দুর্গাদাসঃ॥ -ভ্যা॰ ঘাতঃ। ইতি দীলাবতী ॥ দ্বিগুণাকৃত॰ ত্রি বারদ্বয় বৃষ্ট ক্ষেত্র•। দোচসা ভূঁই ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ षिडाः शुः मःकृ ठ्या ऋगः। यथा। जन्मना ব্রাহ্ণণেজ্বেং সংক্ষারে দিজ উচ্য তোইতি মৃতিঃ॥ ক্ষবিযঃ॥বৈশ্যঃ। ইতি নেদিনী ॥ দস্কঃ ॥ অণ্ডঙ্কঃ । স প্লক্ষি সর্প মৎস্যাদিঃ।ইত্যনরঃ॥ जुषूक्वृक्षः। ইতি রাজনির্ঘণীः॥ দ্বিৰ্জাতে ত্ৰি ॥

দ্বিজন্পতিঃ পু॰ শ্লেমান্তক বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ শব্দালা চ।। দ্বিজদাসঃ প॰ শূদুঃ। ইতি রাজ

নিৰ্ঘণ্টঃ॥ দ্বিজানা দাসে ত্ৰি॥ षिक्यो शु॰ वाक्राः॥ मन्डः॥ शक्ती। इंजि मदत्रञ्जावनी ॥ कवियः ॥ বৈশ্যক।। দ্বিবার জন্ম যুক্তে ত্রি।। দ্বিজপতিঃ পু• চন্দুঃ। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ ॥

षिष्णुभा जी जानवान । उৎপर्या-यः। তল্ল°২ বিল্ল° ৩ তল• ৪। ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ না

দিজপ্রিযা স্ত্রী সোমলতা । ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ দিউস্য প্রিয়বস্থনি ত্রি দিশুণ ত্রি দ্বাভাগ পূরণ । অকদনা । দিজরাজঃ পু চলুঃ । কপ্রঃ । ইত্য-নর: ॥ অনভঃ ॥ গৰুডঃ । ইতি विहिनी।।

> দ্বিজলিনী পু॰ ক্ষতিয়ঃ। ইতি ত্রিকা গুশেষঃ।। ব্রাহ্মণ বেশধারিণি তি।। षिक्रवश्रुः পু॰ অব্যাহ্মণঃ। স ভট দৈব-क्छा पिः। यथा। खी मृ मु विकवस्नाः ত্রধীন শু, তিগোচরা। ইতি মৃতিঃ।। षिज्युः श्रु मञ्जायू मः। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥

দ্বিজবুবঃ পু॰ ব্রাহ্মণবুরঃ। সচ জাতি মাত্রোপজীবী ব্রাহ্মণঃ। ইতি হেম-**ठन्द्रः ॥ यथा । अस सर्वाञ्च**रण मानः দ্বিভণ ব্ৰাহ্মণবুৰে। অধীতে শত

সাহসু মনস্ত বেদপারগে ॥ ইতি সৃতিঃ॥

দ্বিজসপ্তঃ পুং রাজনাষঃ। বরবটী ইতি ভাষা। ইতি শদ্চন্দ্রিকা।।

खिजारनकः श्रू मृदुः। ইতি मदतज्ञावनी ॥ जिवर्गरमना कर्जत जि॥
खिजा द्वी तत्र का नाम गक्षपुर्व १ । ইত ।
नतः ॥ जानी । ইতি मिहनी ॥
शानकी। ইতি मदन्मुका॥
धिङाकी खी कर्जूका। ইতি রাজ-

দিজাতিঃ পু॰ ব্ৰাক্ষণঃ। ইত্যনরঃ।।
অওজঃ। ইতিনেদিনী।। ক্ষত্রিঃ।।
বৈশ্যঃ। যথা। শূদু দিজাতিভি
র্জাতোন ভূমে ভাগমইতি। ইতি
স্তিঃ।।

निर्घण्डः ॥

षिकायनी खीँ यद्धां भवी छ । इंडि भवत्रावनी ॥

षिजानयः श्रुः (कार्वतः। ইতি. मप
हिन्तिका।। विज्ञानाः गृहकः। ইত্য

विज्ञानः जि मर्भः।। मृहकः। ইত্য

नवः।। थनः। ইতি मप्तवाननी।।

हिज्ञानुः श्रुः वृष्टि मप्तवाननी।।

हिज्ञानुः श्रुः वृष्टि । ইতি हना
यूथः।।

দিট্ পু॰ শবুং। ইত্যনরং॥ দেইরি ত্রি
দিঠঃ পু॰ বহিজাযা। সাহা॥ বিসর্গঃ
।ইতিকেৎকারীযতক্র॰॥ ঠকারদ্বয়॰
দিত্য॰ ক্লী দ্বয়•। ইতি হেমচন্দুঃ॥
দিতীয়৽ ত্রি দ্যোঃপূরণ•॥ দ্বয়•। ইতি
হেমচন্দুঃ॥

দিতীয়ঃ পু• পু¤ঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।।

विञीया भी गिहिनी। ভार्या। ইত্য মরঃ ।। তিথিবিশেষঃ । সা চন্দুস্য বিতীয কলা ক্রিয়া ৰূপা। শুরুপক্ষে ২ কৃষ্পক্ষে ১৭ এতদম্ব বোধিতা। ইতি জ্যোতিষ•॥ 🕸 ॥ সাচ অ-বিনীজনারযো র্জনতিথিঃ। যথা। বুক্ষোবাচ। ৰূপ• কান্তি রনৌপম্য• ভিষক্ত্র॰ সর্ববন্তু । সোমপত্তঞ্চ লোকেষু সৰ্বমেতভবিষ্যতি॥ ম-হাতপা উবাচ। এতৎ সর্বণ দ্বিতী-যাযা মশ্বিভ্যা॰ বুন্ধণা পুরা ৷ দত্ত ৰশাৰত তেষা তিথীনা নু<del>ৰু</del>মা তিথিং৷৷ এতস্যাণ ৰূপা কামস্ত পু-ষ্লাহারে**। ভবেন্নর: । সংর**ংসর° শুচি নিত্য সুখৰপী ভবেননঃ॥ **অখিভ্যা• যে গুণাঃ প্রোক্তা ন্তে ত**-স্যাপিভবন্ধিচ।ইতি বরাহপুরাণ ।। 🗱 ।। অত্ৰ জাত্কল । নিথিল গুণ

गजीता मानमीत्ना मसानुः सवन क्रमूम हन्मुः ब्रह्हित्छ। २ जिम्द्रः। निक ভুজ বল গৰাছাদিতারাতি বর্গো ভবতি বিপুল কীর্ভির্যো দ্বিতীয়া পু-সূতঃ ॥ ইতি কোষ্ঠাপুদীপঃ ॥ 🚓 ॥ অথ রথ দ্বিতীযা। স্কন্দ পুরাণে। আবাঢ়স্য সিতে পক্ষে দ্বিতীয়া পুষ্য সংযুতা। তস্যা রথে সমারোপ্য॥ রান॰ না॰ ভদুষা সহ।। যাত্রোৎসব॰ भुवृज्जाथ श्रीनरयह विकान् वर्न्। পক্ষাভাবে তিথৌ কার্য্যা সদা সা भीजरवम्य।। मायाजा। मा॰ जगमाथ॰ ' ॥ 🗱 ॥ অथ मतात्रथ विजीया। ना শাবণ শুক্ল দ্বিতীয়া।মনোরথ দ্বিতীয়া मा॰ दिवा वामूप्तवाईन । ताबी व्यमु। मर्यर्श्य नक्क जाजनामिक । यथा বিষ্ণুধর্মোত্তরে। দেব মভ্যর্চ্য পুরিস্ক भूभो ही भानुत्वभरेनः । উन्नह्रेज्क वारवान्सा मंग्रीमर्घाः ननाहिजः॥ নক্ত ভুঞ্জীত চ নরো যাবভিষ্ঠতি চন্দুমাঃ। মান্ত গতে ব ভূঞ্জীত বুত छक् इंडियामतः ॥ ♣ ॥ व्यथ जुाठ् षिতীযা। লিঙ্গপুরাণে। কার্ত্তিক তু विञीयायाः मुझायाः जुाञ् भूक्रनः । या न वर्ग्राविनमाहि जाउतः मध জন্মনি ।। তদ্যা ইতি শেবঃ।। মহা-

ভারতে। কর্তিকে শুদ্রপক্ষে তু দিতী-वायाः यूथिष्ठित । यस्म। यमूनया भूई ভোজিতঃ य গৃহে स्य॰॥ তস্যা॰ नि-জ গৃহে পার্থ ন ভোক্তব্য মতো বুধৈঃ । যত্নেন ভগিনী হস্তান্ডোক্তব্য• পুষ্টি বৰ্ষন ।। দানানি চ পুদেয়ানি ভগি-নীভ্যো বিশেষতঃ। তথা। যুদ্ধ विज्ञास्थ यमम् ७१० भू काराय । অর্য্যকাত্র পুদাতব্যে য্নায় সহল षरियः॥ मरक षरिय र्जिभी जाञ्जिः॥ অর্ঘ্য মত্রঃ। ওঁএছে হি মার্ভওর পাশ-হস্ত যনান্তকালোক ধরামরেশ। ভ্রাতৃ দ্বিতীয়া কৃতদেব পূজা গৃহাণ চার্য্য ভগবন্ধন रह।। পুণান নত্রঃ। ওঁ ধর্ম वाब नगरुजा नग एउ रमूनायुक्त । भारि मा॰ कि है दिः मार्सि मूर् । भूव नमाञ्च ত ॥ यगूनाक नःभृष्ठ नगः कूर्यता । उँयम सम नंगरउस यमूरन লোক প্ৰিতে। বরদাভবনে নিত্যু **जूर्य्य भू** थि नामाञ्च ७ ॥ यश पदा পঠতি। ভাত তথানুজাতাহ ভুড্ক ভক্ত মিদ•শুভ•াপ্রীত্যেয্নরাজস্য যমুনায়া বিশেষতঃ৷জ্যেষ্ঠা তবাগুৱা-তাই মিতি বদে । তথা যম দ্বিতী-यायाः बाबायाः भवनः जत्र ।। 🛊 ॥ ্অনধ্যায় দ্বিতীয়া যথা ৷প্লেকোচৈ চা

দ্বিধাতু

দ্বিতীবা ভাঃপ্ৰেতপকে গতে তুবা। বাচ কোজাগরে জাতে চৈত্রাবল্যাঃ পরেপি য়া। চাতুর্নস্যে সমাপ্তে চ দিতীয়া যা ভবেত্তিথিঃ৷পরাম্বেতা ষনধ্যায়ঃ পুরাশৈঃ পরিকীর্তিতঃ।। ত তিখিতব । পক্ষযো মাষ गाममः विजीयाः श्रविवर्द्धायः ।

ইতি বিষ্ণুপুরাণণ ॥ षि जीयाक् छ॰ जि वासवयक्ष्ठेरक ज॰। দোচসা ভূঁই ইতিভাষা।ইত্যমরঃ দিতীযাভা দ্রী দাক্ররিদা।ইতি गद्राम्युका ॥

দ্বিত্রাঃ ত্রি দ্বৌবা ত্রযোবা ইমে ।ইতি সং ক্ষিপ্তসারঃ!!নিত্যবহু বচনান্তোধ্য बिहन् जि. मञ्जूषयुक वृषाहिः। ইতি (इंगठन्तुः ॥

षिमात्री खी तब्बूबययुक्तालोः। ইতি নুঞ্বোধ ব্যাকরণ ॥

ছিদেহঃ পু॰ গণেশঃ। ইতি ত্রিকাঞ শেষঃ !!

দ্বিধা ব্য **দিপুকারণ। ইতি মুক্ষবোধণ।।** দ্বিধাগতিঃ পু॰ **সম্ভীরঃ। ইতি হেন**-চন্দুঃ॥ দিপুকার গতিযুক্ত তি ॥ দ্বি**ধাতুঃ পু• গণেশঃ। ইক্তিপদ্রত্ন**া-नमी ॥ शाजूषरगङ्गी भः

िनाट्

দিবাত্মক প্লী জাতীকোৰ । ইতি **नद**ठिम्कि।।

षियाम्बद्धः शृ॰ विखानवृक्तः। देखि क्राजनिर्यण्याषिशुकात्र (नथनीरयवि षिनः कः भू द्रूक्तमा। इजिल्मा मुः॥ দিপঃ পু॰ জী হন্ডী। ইত্যমরঃ॥ নাপ কেশরে পুং। ইতি রত্নমালা।।

দিপথ ক্লী পথ্যৰ ৷দোমাতা পথ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাকঃ। চাৰু-भव्ह २ । ইতি एम्प्रमु: ।। होन शानी सद्बजुर्धि वि।।

विशमः श्रु॰ की सन्य हा। एकः।। ु शकी ॥ त्राक्रमः ध्यम । विशरम् शि চতুর্ভেদা নু দেব পক্ষি রাক্ষসাঃ। ইতি পুরুসারং॥

विभनता**न्दः शू**॰ निश्न•॥ जुना॥ व मु ॥ कन्ता ॥ धनुषः भृतीर्षः । यथा। निथून ठूला घर कन्ता हिन-দাখ্যা শ্চাপ পূৰ্বভাগশ্চ টেভি জ্যেতিম্ভত্কু ॥

षिभगमः भू॰ इस्तिममः। ইতি बाज-- निर्म्भेः ॥

দিপণী জী বনকোলী। ইতি রহ बाला॥ शर्भवय बुद्ध कि ।।

बिशादेशीय स्वीत्रासी रेगा महा गाम-

विवार्षि

ह्मयुक्तः। इंडिम्स्याधवराकतणः।।
हिलामरः ही हिन्द्राम्यः। इंडिम्स्यः। इंडिम्स्यः।
हिलायी श्रृः इकी। इंडिम्स्यावनी।।
हिल्हेः श्रृः ताकाजमः। उद्भर्यरायः।
विक्रम्यदः २१ इंडि इ्नम्सुः।।
हिनाज्ञः श्रृः गलमः। इंडि इम्मि

षितृशः शृ॰ द्राबनर्भः। ইতিহলारूषः ॥ तृथवर युक्त वि ॥

विम्था जी कर्कती। गापु इंजिजाया
। इंजि स्प्राम्यका ॥ जलाकाः ॥
(काँक इंजि जाया। इंजि ह्वायूथः॥
विम्थाहिः भू॰ मर्भविष्मयः। नाँथिनी इंजि जाया। ज्य भर्यत्रायः। जाशित्रावः २ ताजाहिः ० ताजमर्भः ६ विस्थः ६ मर्भज्क ७। इंजि इवायुथः॥
विम्थादगः भू॰ ताजमर्भः। ईंजि

विम्र्यः वि मलकवयगुरुः। ইতি म्य-

জটাপর: ॥

দিরদঃ পু॰ জী হন্তী। ইত্যমরঃ।।
দিরদান্তকঃ পু॰ সি॰হঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

ছিরশন স্রী বার্ছযভোজন । বথা মুনিজি ছিরশন প্রোক্ত বিপ্রাণাণ মর্ত্য বাসিনা॰ নিত্য । অহনি চ তসম্বিন্যা সার্দ্ধ পুহর বামান্তঃ। ইতি তিথ্যাদিতত্ব ॥,

ছিরসনঃ পৃ• সর্পঃ। ইতি হারাবলী।। ছিরাপঃ পৃ• হন্তী।ইতি শদ্মালা।। ছিক্কঃ ত্রি ছিবারক্ষিতঃ। যথা। ছিক্ক যক্ষাদীছিঃ। ইতি মুক্বোধ লক্ষণ•।।

ছিক্জিঃ স্ত্রী ছিবার কথন । ইতি সংক্ষিপ্তসারঃ ॥

विकान की विवादिवारिका। उट् भर्यायः । मिथियः २ भूनर्ज्ः २ । इंजि. स्म्हनुः॥

দ্বিৰূপ: পূ• দ্যাকার শ্বাদিঃ। যথা
। দ্বিৰূপকোষাদিঃ ॥ দ্বিবারগুছাবৃত্তিঃ। বথা। দ্বিৰূপ চণ্ড্যাদি পাঠঃ
।। ৰূপদ্বয় যুক্তে ক্রি।।

ৰিরেকঃ পু॰ জী ভুমরঃ ।। বর্ধরে জি। ইত্যমরঃ ।।

ছিবর্কা জী দ্বিছাবনী। দ্বিবর্ববযক্ষা-্গৌঃ। ইত্যমরঃ॥

দিবর্ষিকা স্ত্রী দিবর্ষাদৌ: । ইঙি হেমচন্দুঃ।।

षित्रवी १६ जि षितार्विकः। षित्रवंत्रकः । इंडि शागिनीय त्राकद्रभग् ।। षितार्विकः जि षित्रवंखतः। दृश्यद्र ৰ্য জাতঃ। ইতিব্যাকরণণ।। ছিত্রাহিকা জী দোলা। ইতি শব-মালা।।

विविषः श्र वानत्रविष्मयः । ইতি

ह्मिन्मुः॥ म श्रितास्मार्णः॥ ॥ ।।

मम्मुरम्गास्त छीत्र विविष्यः नाम

वानतः। बेकार्ट्रिक वृतः रहि छम्।

नामान्नीर्छनार। ইতি ह्या जिवः॥

विविमता जी लघुत्रथः। उर भर्यायः।

गश्री र लघी शहे हि हातावली॥

मिनः वा हो हो। ই जि वीप्नार्थ हमा
म् भुज्यः॥

বিশকঃ পু॰ দিখুরপশুঃ। যথা। গৌরজা মহিষঃ কষ্ণঃ শুকরো গবযো

ক্ষাঃ। দিশকাঃ পশবক্ষেমে অবি
ক্ষান্ত সন্তমঃ॥ইতি জ্রীভাগবতণা
দ্বিদ ল এ ও বৈরে। ইতি কবিকল্পক্ষাঃ।।

দ্বিবতীতাপ: ত্রি দ্বিতী তপ্তি য: 1 জ্রী শত্রুতাপক:। ইতি সংক্ষিপ্ত-সার ব্যাকরণ: ॥

ছিষন্ ত্রি শতুঃ। ইত্যমরঃ ॥ ছিষত্তপঃ ত্রি শতুত্তপঃ। শতুতাপ-জনকঃ। ইতিসাকিপ্তসারব্যাকরণণ ছিষ্টণ সী ছাষ্টণ। তানুশ। ইত্যমর চী-

का नात्रमून्सती ॥ स्वयदिवस्य जि॥ विष्ठः जि बरवा खिष्ठिष्ठ यः॥ উভवण्णः ॥ यथा ॥ मन्यागम् । विष्ठञ्यि जनमीणः॥

ষিসপ্ততিঃ দ্রী ষ্যধিক সপ্ততি:। १२ বাওবাওর ইতি ভাষা । ইতি জ্যোতিকা।।

विजर्जाकः भू व्यन्डस्यः। ইতি एर्निम्पुः॥

দিসীত্য নি বারদ্বযক্ষ্টকেন । বো
চসার্ভ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:

१ দিশাকৃত ২ দিতীয়াকৃত ৩

শন্ধাকৃত ৪ সন্ধাকৃত ৫ দিহল্য
১। ইত্যমর ভরতৌ ॥

विश्विमान की निष्ठां कुन । यथा ।
विश्विममन शृथ्य म्द प्राप्त । यथा ।
विश्विममन शृथ्य मुक प्राप्त । विष्म ।
विश्विममन शृथ्य मुक विश्वान । विश्विम यथा ।
विश्वा कुम जिल्ला वस्ती भूव ।। इंडि
वुक्त वर्ष वुक्त थए ।।

बिरुवाः बि बिशंकडेरक्यः। ईंडा-मृतः॥

विशे प् रखी। ইতি भक्तज्ञावनी ।। विशेषनी खी विवर्षाणीः। ইত্যমরः।। की जित्रशास्त्र भू स्थान जू मन्धारि मश्च द्वेष जुरु क्कार रथा। मन्धारित भन्नका छ। पूर्व (जुरु এवह। এতে जू बी जित्र गुन्ह। अथ न्यू जिल्ह मदकाः। देखि ভाषाश्रति। हरिः।।

দ্বীপ॰ ক্লী ব্যায়ুচর্ম। ইতিদ্বীপি শব টীকাবা• ভরতঃ॥

দ্বীপঃ পু॰ ক্লী বারি**নধ্যতা॰। জল** বেপ্তিত ভূমিঃ। তৎপর্য**গ্রয়ঃ। অন্ত**-রীগংহ। ইভ্যনরঃ॥ দ্বীপোৎপত্তি र्यथा। मूर्य ५ मूरमकः भुनकि न क र्यम् अर्थाः शृथीः श्रुकामयि अर्षाः তমসাআবৃণোতি। তদা ভগবদুপা-সনোপচিতাতিকান্ত পুৰুষ পুভা-ৰঃ পুিযবুতো রাজা সূর্য্য রথ সম বেগেন জ্যোতির্মধ রথেন রজনী ম-পি দিন• করিষ্যামীতি পুতিজ্ঞা• क् इ। मधवात विजीय मूर्य। हैव मूर्य। মনুপর্য্যক্রান্থ। অস্য র**খ্চর**ণনেমি পরিথাতাঃসপ্তসিদ্ধকআসন্। যৈ-রেব সিমুভিঃ পৃথিব্যাঃ সপ্তমীপাঃ क्ञाः। खबस् ) अक्र माना वि ० सम ৪কৌঞ্চ শাক্তপুষর ৭সংক্রকাঃ। তেবা॰ পূৰ্বস্য যদিন্তারমাণ উত্তর ত স্ততো দিওগেন বিস্তার নাপেনঞ্চ- तिमानः। एवं मिन्नूरक्ता विष्टः ममन्ति। स्था मिन्नूरक्ता विष्टः स्था मिन्नूरक्ता विष्टः तिक्कः, त्या बीभाः अवः बीभानामभि विष्ट्रः मिन्नदः। म श्विय पुष्ठः विश्वयक्ति मर्वे जानमुग्वाना मानान् व्यापिर्वृद्धकिः व्याप्ति विष्ट्राक्तः व्याप्ति विष्ट्राक्तः व्यापिर्वृद्धकिः व्याप्ति विश्वयक्तिः विश्व

यारखुरव श्रुद्ध शृर्व नाम् (ब्राजयूर्ग जमा। श्रियवुज्म श्रुद्ध रिष्ठः
रागिकः याययुनमाञ्च । श्रिय वुज्ञाद
श्रुक्षावर्द्ध। वीताद कामगान्यकाय
। कन्ता मा जू महानागा कर्मममा
श्रुक्षावर्द्धः। कर्मा १ व्याप्त
ममाद विकास बर्धायाय भतायगाः।
काजियन महानागा न नाकाय मन्
राम मद्द्रः। श्रियवुर्द्धा श्रुक्षावर्द्धाम्
माह मश्रम् लाधियान्। द्वीरशर्व्द्धाम्
माह मश्रम् लाधियान्। द्वीरशर्व्द्धाम्
माह मश्रम् लाधियान्। द्वीरशर्व्द्राम्
सर्मा होतान्यक्रम् विरवाद्दरम्। स्वर्

খীপে তথাগ্ৰীধ্ৰু রাজান কৃতবান্ শিতা মেধাতিমিঃ মৃতঃ।। শাদ্দে তু ব্পুমন্ত জ্যোতিমন্ত সশাস্থায়। ক্ৰৌঞ্চ দ্বীপে দুৰ্যতমন্ত হব্য শা-কাপ্তযে সূত ।। পুষরাধিপতিঞৈ-ৰ সবন কৃতবান্ সূত ৷ ইতি মাৰ্ক-ख्य পুরাণ· ॥ 🕸 ॥ ভূমে র**র্জ**- का-র সিন্ধো কদক্স শজদুদ্বীপণ প্রাত্ত-द्राकार्य। वर्षाः। वर्षः १नामिन् ही-প ফটক্স্য যাম্যে ক্ষার ক্ষীরাদ্য ষুধীনা॰নিবেশঃ ॥ শাক॰ ততঃ শা-শাল মত্রকৌশংকৌঞ্ঞগোমেদক পুষরে চ। দ্বো দ্বো রম্ভর মেক भिक नमू मुखा ही श मूमाइ ब्रिश ইতি সিদ্ধান্তশিরোমণিঃ ॥ षी भक्श्रकः शु ठीनकश्रकः। इंडि - त्राजनिर्चिष्ठः ॥ बीनथञ्च्रतः क्री महाभारतवा दिवि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ षीপङ॰ क्री **मश्राभावित्र । इ**তि ताजनिर्घण्टः॥ षी भवजी जी निमा ज्निः। इंडि भिमिनी ॥ मीश्वान शुः समृदुः ॥ ननः । इंडि

व्यक्ति ॥ দ্বীপশত্রঃ পু॰ শতাবরী। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ ॥ দ্বীপিকা জ্রী শতাবরী। ইতি রাজ-निर्घकः ॥ मीिनयः भु• वतानयः। ইতি রাজ-নিৰ্ঘণ্টঃ ॥ দ্বীপিশত্রঃ পু॰ শতমূলী। ইতি क्रोध्यः ॥ দ্বীপী পু॰ চিত্ৰকঃ।। ৰ্যাঘুঃ। ইতি ় রাজনির্ঘণ্টঃ।। দ্বীপঞ্জ ত্রি দ্বৈপঞ্জ। দ্বীপেভব ইত্যর্থে क्षु शुद्धायः ॥ স্থানে। সংসরণ ইতি যাবং। ইতি কৰিকল্পজ্মঃ।।বরণে। স্বীকার ইতি যাবৎ। ইতি গোবিন্দভটঃ॥ দেধা ব্য দ্বিপুকারণ।ইতি বুগুকরণ।।। ष्वसः भूः भव्वा। उৎभर्गायः। दिदत २ विदत्राधः ३ विष्मृषः ८ ष्विषा ৫। ইতি শদর্বাবলী।। অস্য কা রণ দিষ্ট সাধনতা জ্ঞান। ইতি जायानितिरहरः ॥ ष्वमः क्री ष्वयः। ইতি শবর্গবলী॥ ছেষ্শঃ তি শকুঃ। ইত্যমরঃ।। स्वरी वि भवुः। इंडि एमहन्दुः॥

<u>ৰৈতবা</u>

ছেই। ত্রি বিদ্যেকর্তা। ইতি দিব থাতো স্তণ্ পুত্যকো সাধ্যঃ।। দ্বেষ্ট ত্রি দ্বেষবিষয়ঃ। বিদ্যেষার্হঃ। তং পর্য্যায়ঃ। সাক্ষিপতঃ ২। ইত্য-নরঃ।।

ছৈগুণিকঃ ত্রি কৃষ্ণ্যান্তীকঃ। ইতি ছেম-চন্দুঃ।। দ্বিগুণ গৃহ্মাতি ফঃ ইত্যুর্থ ক্ষিক পুত্যকঃ।।

দৈত নী দ্বা । ইতি হেমচন্দু ॥ লোকাদিৰূপ । একাঘনোসাবিতি শ্লোক ব্যাখ্যায়া প্ৰীধ্যমামী॥

বৈত্রাদী তি জীবেশরযোর্ভেদ্বাদী।

ইশরাতিরিক্ত জীব বক্তা। তস্য

নত- যথা। পরমাত্মনো জীবাত্মা
পৃথক্ তন্মধ্যেকেষাঞ্চিন্মতে পুকৃতির
দৃষ্টনাত্রে পর্য্যাসিতা এবং জীবক্ত
পৃথক্। অত্র পুনাণং। জন্ম কর্ম
নরণানাং পুতিনিয়নাদ্যুগপৎ প্রব্রেক্তাপুক্ষ বহুত্বং সিদ্ধং কৈওণ্য
বিপর্য্যাহ্রৈর।। ইতি সাম্ব্যনতং॥
ত্রেশরঃ সর্বক্তঃ পরমাত্মা এক
এব। জীবং পুতি শরীরং ভিন্ধং বিভূ
নিত্যক। ইতি গোতন্মতং॥ ইত্
বৃন্ধণো জীবেতরত্ব পুতিপাদ্নাৎ

হৈপায

জনা রবৈজ নাভিনত । নেতারা প্রপাতে ভেঁদ ব্যপদেশা দ মৃত্যে প্যস্প্য ব্যপদেশা দাকা শোর্থা নির আদি ব্যপদেশা দ্যোগ মাত্র সাম্য লিছাছে তি সূত্রৈ র্মোক্ষেপি জয়ে। কৈ নির্মণাচা । ইতি পোবিদদ ভাষ্যেত ।। যতো দৈতমতে কুজি রেব পুমাণ যুক্ত্যা যথ ফলতি ত-দেব সর্বাধ্যাত্মবিদ্যা পুতিপাদক শ্রতীনা তাৎপর্যাপ ।ইতি রামানুজ মতঞ্চ ।।

বৈতীয়ীকঃ ত্রি দিভীয়:। যঁথা। দৈতীয়ীকত্যা মিতো হয় মগমন্তস্য পুবন্ধে মহাকাব্যে চাকণি নৈম্থীষ চরিতে সর্গো নিসর্গোজ্জ্বলঃ। ইতি নৈম্বধা।।

দৈশে ব্য দিপুকার । ইতি ব্যাকরণ ॥ একেন সন্ধি রপরেণ বিগ্রহ: ইতিনৌ পুকারৌ দৈশ নিপাতিত। ইত্যমর টীকাষা ভরতঃ॥ বিবাদঃ
। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥

দ্বৈপঃ পু• দ্বীপিচর্মাব্তরথঃ।ইত্য-নরঃ। দ্বীপসমৃদ্ধিনি ব্যামুচর্ম স-মৃদ্ধিনি চ ত্রি।।

रिष्णायनः शुः वतानः। ইভি एएमहन्तुः

दिनाः विकीणमञ्जि। वीनमदाः विकार्शकः

ব্যাকরণ ॥

दिन्। खतः पु॰ गल्मः। इंड्रमतः।।

कता नकः। इंडि मिनी।। विभाज्

क वि इंडि इंस्मिन्नः।। वर्षा प्राका त्रमेडुः। इंडि मूक्रवाधः।।

दिन्नाज्कः पु॰ नि नृष्टि कर्लाण्ड्याः

दिन्नोषा की नागवल्ली जिन्हाः।

दिन्नोषा की नागवल्ली जिन्हः। इंडि

नाक्रिक्षः।।

स्रकृतः वि अकृतिष्यशितिग्राणः।
यथा। अर्काकृताथ म्हान् काशे
स्रकृत मृतिका। मङ्ग्हाया छत्वव छहायाः शतिकन्नस्य । इंजिस्तानि मम् इंजि वृद्धः भन्ता निक्षः। द्यातकृ स्वाः मनाशातः। इंजि वास्कृ अकृ ति ह्य मात्व क्षी। इंजि मुक्तवायः॥ स्रक्षतः वि अक्षित्वस्थातिम् ।। स्रक्षतः वि अक्षित्वस्थातिम् ।। स्राक्षती शतिमान मम् । इंजि वृद्धः शन्तः। इंजि वास्कृ अक्षित्वस्य मा-वाक्षी। इंजि वास्कृ अक्षित्वस्य मा-वाक्षी। इंजि मुक्तवायः॥। स्राकृतः क्षी शतमानुममस्यक्षुत्रः।

পরমাণুদ্রযাত্মক। তচ পুত্যকাদি

१ बार्कारिस বুন্ধাণ্ডান্ত উদা**হতঃ। তস্য গ**রি-मान मनिज्या यथा। यनिज्य हात् कारो जू मःथ्याबन्यः मूमाङ्खः । ইতি ভাষাপরিছেদঃ। দ্যন্যঃ ত্রি দ্বাভ্যামন্যঃ। ইতি পঞ্মী ত श्वा ।। (इ जान वन्। रेडि वस् वीविः॥ द्वातन्त्रताः नमारा-রঃ। ইতি বাব্দ্যে ল্লী ॥ हार्थः जि वर्षस्य युक्त सदामिः। वामा भूगाण तास्य भाखवीयारि गुष्ट मुश्चेवार ॥ ছাষ্ট্রণ ল্লী তাসুণ। ইউসেরঃ॥ 💍 🦠 ष्ठाइः शुर अर्ह्यरा । एवं अरूनी सम् হতে। ইতি পু<sup>•</sup>লি**দ স**্পুক্তে ভুৱতঃ ष्ठ्रकात क्री वर्शपर ॥ चरवार्वकात ।। ्यक्तब्रम् मुङ्ग्नेमासी विशा 🤫 ष्ठाञ्चकः श्रु॰ विश्रून कन्त्रः शन् की न तान्यः। यथा । ठत व्यत्र बतात्राक नामरध्या (भया-मर्या २मी कम्भः পুদিষ্টাঃ। ইতি জেটাতিবকু।। দ্যাহিকঃ ত্রি দিনম্বভব্ঃ ক্রিছেভব্

ধ থকার:।স তবর্গ চতুর্থোবর্ণো ব্যঞ্জ-নোনকিংশক। অস্যোচারণ স্থানং

इंडार्थ किक शुंडायः।।

দন্তঃ। ইতি ব্যাকরণ ।। অস্য ধকপা যথা। ধকার পরনেশানি অগুলীমোক্ষ কপিণী। আত্মাদি তত্ত্ব
সংযুক্ত পঞ্চদেব নয় সদা।। পঞ্চ
প্রাণনয় দেবি ত্রিশক্তি সহিত সদা
। ত্রিবিন্দু সহিত বর্ণ ধকার হাদি
ভাবয়।। পীত বিদ্যুল্লতাকার চতু
র্বর্গ পুদাযক। ইতি কামধেনু তত্ত্ব
।। ত্রিকোণ কপ রেখায়া ত্রয়ো দেবা বসন্তি চ। বিশেশরী বিশ্বমাতা
বামতঃ ক্ষতঃ ছিতা।। ইতি বর্ণোদ্বার তত্ত্ব ।।

थ॰ क्री थन॰। ईंडि भिरिनी।। थः भू॰ दुका।। क्रवितः।। धर्मः। ईंडि स्कृति।।

शक के नामात । इंकि क विकन्न क्रमः॥
श्रेटः थू॰ जूना। जन्नाजु इंकि शाण
इंकि जाया। इंजिमनः॥ जूनानामाः। यथा। मि॰ हा त्यम्म त्मम्म
कन्ता श्री श्रिता घरः। अकारीना॰
किकानानि मूनानि नाम्यः क्रमा॰
॥ इंजि ज्ञाजिखनः॥ जूना भनीका। इंजि भनीका उन्।। ज्ञा

ষ্টকঃ পু চতুদশ বল্ল পরিমাণ। দিচজারিণশ দুক্তিকা। ইতি লীলা- বতী।। টাক্তী চীরবক্ত•। ইতি মেদি

ধটা জ্ঞা চীরবজ্ঞ । ইতি নেদিনী ।
কৌপীন । ইতি ত্রিকাঞ্চশেষঃ ।।
ধটাদান লী গর্ভাধানানন্তরজ্ঞীসম্পুদানক চীরবজ্ঞদান । যথা। মূল শুবণ হস্তেষু পুষ্যাদিত্যুক্তরাসু চ। মৃগ
পৌকে ধটা দেযাসোম্য বারে শুভে
তিথৌ। ইতিক্যোতিঃ সারস গুহঃ।।

ধণ ধ্বানে। ইতি কৰিকল্পদ্ধনঃ।।
ধত্রঃ পু॰ ধুস্তরঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।।
ধন রবে। ইতি কৰিকল্পদ্ধনঃ।।
ধন লি র ধানেয়। ধান্যমিহ ধান্যকিয়া। ধান্যেৎপাদন । ইতি
কৰিকল্পদ্ধঃ।।

धनः क्री (ज्ञह्माकः। ইতি मम्द्रक्षावनी ॥ गाधनः। ইতি मिद्रक्षाः। पृत्रुः
विखः अवाभाज्यः । उट् भर्यप्रायः। पृत्रुः
विखः अवाभाज्यः । उट् भर्यप्रायः। पृत्रुः
विखः अवाभाज्यः । हित्रपुः । पृत्रुः ।
पृत्रः ) व्यथः ) ताः । विखयः
) । ইত্যমরः॥ काक्षनः ) ह नक्षाः
। विश्वागुः । धन् ज्ञानिता प्रायः
निर्द्राः ॥ धन् ज्ञानिता प्रायः
निर्द्राः ॥ धन् ज्ञानिता प्रायः
निर्द्राः ॥ धन् ज्ञानिता प्रायः
। स्तु वामन थङ्गानाः क्षीवानाः

পুত্রিণামথি। উন্নতানা তথাকানা **अ**न्नजारंगा न विष्ठाउँ ॥ **भ**यश्चन शान माक हाया ठाव पूर्वि किया। क्ञावमीयराजीमा अन्य जाग रहा। ছি তে।। ইতি বামন পুরাণে १৫ व्यथ्रायः ॥ अस्य व्यथ्ना यथा। व्यय् বাধনা রাজন্ ভার্ত্যা দাস তথা সূতঃ । যত্তে সমধিগছন্তি যুস্য তে তস্য **७६न'॥ ইতি মাৎস্যে ৩) অধ্যাयः** ॥ अ॥ धनमः भागतनः ज्ञानतनः मूकः यथा। বদেতদুবিণ নাম প্রাণা এতে বহি-भ्वताः। म जम्र इत्राज श्रानाम् या यमा इद्राठ धनः ॥ इंडि क्लार्य चर्त्रायः॥ 🗱 ॥ अनदावाथ महन्त्र-भूयाञ्चनार्किछ । धन । बन्न वा बर्न বাপিদেয মিত্যভিধীয়তে ৷৷ অপরা বাধ পরপীড়া ব্লহ্নিত। অন্তেশ। পাৰ ক্লোজনক । জি । তাম্স ধন যথা। পাৰিক দৃত চৌৰ্যান্তিপ্ৰতি-कशक मार्टेमः। यहारजामाणिकं उ यञ्च उर क्या ममुमाञ्चा नार्षिकः शान्याया रह्यां । बाद्या शत्र ংপীডয়া। পুতিৰূপেশকৃত্তিম রত্নাদি ॥ नो । नार्रमन नमुम्यान मिर्यतिहा-रमितिगाद्याद्वव वाक्रनर्वामन मुक्ति। क्ष॰ जाममः॥ 🛊 ॥ बाहिमः

धन• यथा। क्जीर क्यि वासिक णूड़ গানানু বৃত্তিভিঃ৷কৃতোপকারামাগুঞ ब्राजन नमूराइउ।। चनूर्ख्या म-वया॥ 🛊 ॥ जाज्ञिक धनः यथा। भुञ् लोर्य उन्हें क्नेत्र निवा याका द्वार ্পত্ত ধন সপ্ত বিধা শূক্ষা মুনিভিত্ন अभूमाञ्ज्या। द्वीरजनाथ प्रारान । स्थी-র্য্যেশ ক্রবাদিনা । তপসা জপহোম (स्वाई। हिना। कन्याग**ङ कन्या म**-शागज यमुतार नंबन नियागज ध्य मिनामिमा। याह्यागठः चा-র্ব্বিজ্য লব্ধণ। অপুযাগত দাখাদে-ভ্যোলনা শুদ্ধ সাত্ত্বিশ ইতি শু षिठाषु रमयण नात्रामी ॥ 🗱 ॥ धन भूरगाग नक्तजानि यथा। अधिनी। भूनसभूः। भूष १३१ ७ खत्र कल्लुनी । रखा । भूबीबाहा । উखुत्राबाहा । भूवना । धनिशा मञ्जिता। उत्तरं जापून्या । ইতি ছৈয়তিব।। 🛊 ॥ वन नुरंगान निरम्ता । जाड यमिष्यम् महिजयं क मकदय वाज्यूशः नी इमारा कार्या। न किर्क्यू थन भुरयान लिम्म्रिनारा गुम्स म्नन्तरम् इजि जिम्य भूतिमाः ॥ अर्थ भूमाना यशा जैर्थिकाथ भुवृत्क छाः मन्व-ভেড়া গুড় গুড়া। কিয়াঃ সর্বাঃ পু-

বৰ্জন্ত পৰ্যতেভ্য ইবাপগাঃ৷৷ অর্থে-ন হি বিমৃক্তস্য পুৰুষস্যাল্লটেতসং৷ বিছিন্যন্ত কিয়াঃ সৰা প্ৰীয়ে সস রিতো যথা।।সোঁযমর্থণ পরিউট্টের সুথকানঃ সুথৈবিতঃ গাপ মাচ-রতে কর্তু • তদা দোষঃ পুবর্জতে ।। यम्प्रार्था ेखम् । यम्प्रार्था छम्। वास्वाः। यम्। बाः म भूगान् लाक यम्राशाः मह शिष्ठः ॥ यम् रार्थाः मह विकासा यम्रार्थाः मह वृषिमान्। यम् प्रथाः म महाबाङ র্যস্যার্থাঃ সন্তণাধিকঃ। অর্থ সৈত্রতি পরিত্যাগেদোষাঃ পুর্যুক্তা ম্যা । त्राज्य मु र मृज्ञ । श्रीत यन दुष्कि স্থা কৃতা।। যস্য়র্থা ধর্ম কামার্থা उम्र मर्बः शुरक्षिकः । अक्षतनार्थ कार्यन नार्थः भक्रः विविन्न जा। इर्नः कानक मर्गक वर्षः काथः महा म्यः। अर्थाएकानि महानि भुव র্ভন্তে নরাধিপে।। যেষা॰ নশ্যভায়॰ থমাচারিণ

खिन मृष्ण रह मूर्मित्यू यथा गुड्याः।
हेि जामायण युष्मकार्ण श्रीज्ञामः
श्रीज श्रीनम्बनवाकाः ॥ # ॥ वर्ष निन्ता यथा। वर्ष मनर्थः जावय मि जाः नाहि जाः मूथलाः मजाः। পুপ্রাদিশি ধনভাজা তিতি নর্ব বৈষা বিহিতা নীতিঃ ।। ইত্যাদি মোহনুররে দুষ্টব্যা ।। জ্বা । অনুগ্র-হার্থ ভগবতা ধনহরণ যথা । রাজন্ যমনুগৃহানি হরিষেত্তজ্বন শিনঃ । ততো হথন ত্যজন্ত্যা বজনা দুংখ দুংখিত ।। ইতি শ্রী ভাগবতা।

ধনকেলিঃ পু॰ জবেরঃ। ইতি ত্রিকা<del>ঙ</del>-শেষঃ।।

ধনচু: ত্রী করেটুপক্ষী। ইতি ত্রিকা ওশেষ:॥

श्रनक्षरः शृ व्यक्तिः ॥ विक्रकर्कः ॥
इंज्यतः ॥ व्यक्त्तिः ॥ नागर्लिः ॥
त्रव्यक्ति । व्यक्ति न्वर्याः । इंजिल्यिनी ॥ व्यक्ति न्वर्याः । इंजिल्यिनी ॥ व्यक्ति न्वर्यः । इंजिल्यिनी ॥ व्यक्ति न्वर्यः । इंजिल्यिनी ॥ व्यक्ति न्वर्यः । इंजिल्यक्ति व्यक्ति व्यक्

त्रवावनी ॥

धन्न -धन्तारी भू । अशिः। इंडि भवत्रः। **रिवी।। धनमा छात्र वि।।** श्नमाकी हो वजाक्त्रक्षः। इंडि क्राकनिर्घणेः॥ থনদদে। দ্রী বৃদ্ধশক্তিভেদঃ। ইতি ত্রিকাওশেবঃ॥ श्वनशिक्तः भू भरवतः। ইতি धनक्षयः ॥ অস্য উৎপত্তি র্যথা। মহাতপা উবাচ। শৃণু চান্যা বসুপতে ৰুৎ-পত্তি॰ পাপনাশিনী । যথা বাযুঃ भद्रीतरका धनुमः मः वर्ष्ट्व र ।। या-म् भद्रीद्रः यखिम् वागू द्रष्ठ श्रि-তো ভবং। পুযোজনামূর্ভিমন্ত্বমা-मिनन् क्वाप्य जाः ॥ जवाम् र्जमः বাযোম্ব উৎপত্তিঃ কীৰ্ত্ত্যতে মযা ৷ তা॰ मृत्य ग्राভाग कथा माना॰ मया नव ॥ वृक्षणः मृखजः मृष्टिः मूथाहायू विनिर्ययो। शुरु भक्ता वधी उ॰ तुका भुजातक्षर ॥ मूर्खा जनम শান্তক তত্রোক্তো মূর্ত্তিমান্ ভবন্। अरर्बगोरक्षव (एवाना॰ यिवङ॰ कन দেব চ।। তৎ সর্বণ পাহি যেনোক্তণ उंगाकनशिं जित्र । उन्। तुका माने जुडे खिथि (सकाममी शुजुः॥

जन्मिन्तिभक्तामी रा जरविषयुकः

मूहिः। जनास धनारित खडेः मर्ब-भुषहिशा अवाधनभाउ म् र्डिः मर्ब किन्ति नामिनी। यथा • मृग्या-खका भूक्यः भठेउमि वा।। मर्ब-काम मदार्गाठि वर्गत्वाकक गहर्षि । ইতি বরাহপুরাণ ।।

श्वनित्रभाविका जी श्वनामा। उट शर्यत्रायः। ज्या २। इंजिङ्गत्रावनी।। श्वनिभावी जी ज्या। धनत्वाजः। इंजि विकाश्रमयः।।

धनिश्वा खी काकब्रम्। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

খনবতী দ্রী খনিষ্ঠানক্ষত্র । ইতি জটাধর: ॥

थनवान् वि थनविश्विष्ठः। थनी। ইতি रुवायुषः॥

धनम्प्रकः श्रुः (ग्राक्कृतः। इंडि मप-চन्द्रिका॥

धनरती जी कात्रनोभगकपुरा एट शर्यायः। त्राक्रमी रे क्ला ० क्रमः ८ मूझकः ६ गणहामकः ७। ইত্যबतः ॥ धनरात्रक देनसः वि॥

খনাধিপঃ পু॰ জবেরঃ। ইত্যমরঃ।। অস্য খ্যান• যথা। জবেরঞ্চ পুব-ক্যামি জওলাভ্যা মলকৃত•। হা- म्बर्भे मिछ। मिछायत थतः मुखः

। भरायतक कर्ड्याः वतरः मूक्टाः

निजः । वत्रयुक विमानसः स्मर्यः

वाशि कात्रयः ॥ वर्णन शीजवर्णन

ख्योकः शित्रवातिजः । मर्हापतः

महाकायः शक्याके ममिष्ठः ॥ खः

योक व्राव्यः कः धनवाः गुक्रेत खशा

। ইতি मर्नाश्रुवाः।।

सनाश्चाः शृ अत्वतः। ইতি हलायूथः ।। धनाधिक्छः । जहिलकात
हेि धाकाकि हेि ह जाना। जमु
नक्षणः यथा। लाह वक्षाकिनाहीनाः त्रञ्जानाक विधानविद्याविक्षाण
क्षुमाताण मनाहार्युः भूहिः महा
।। निश्रण काश्चमज्ञक धनाध्यकः
शुकीर्जिणः। जायबात्तयः मर्व्यू धनाधुक्ममा नद्राः ।। वुष्यबात्तयः छथा कर्जव्याः शृथिवीक्षिण । हेि
मद्मपुतार्ग्यम् अध्यायः ॥
धनामा जी धुनलाजः। यथा। कीर्युष्ठि

कीर्गुर्डः किमाम्स कीर्गुरिक कीर्गुर्डः १ थनामा कीविजामा ह कीर्गुर्डाशि न कीर्गुर्डि ॥ ইতি विकुश्रुताय-॥ यनान्धः की ताशिशीविष्मयः। धाननी ইতি ভাষা। इन्मेग्राउ कीताशन्य তৃতীय ভার্য্য। অস্যা काতিঃ বাড ধনিকঃ পু॰ ধন্যাকণ ইতিমেদিনী।।
অমিমথে ক্লীব মিতি রাজনিষ্টঃ।।
ধবঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।।
ধনিকঃ ত্রি সাধুং॥ ধনী।ইতিমেদিনী
ধনিকা ত্রী সাধুনারী।ইতিমেদিনী
।। বধুঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ যুবতী।
ইতি শব্রত্বাবলী।। পুরস্কুর্কঃ।
ইতি শব্রত্বাবলী।।

ধনিষ্ঠা জী অখিন্যাদি সপ্তবিংশতি
নক্ষরান্তর্গত ত্রংযাবিংশ নক্ষরং।
তৎপর্য্যায়ঃ। শুরিষ্ঠাই।ইত্যমরঃ।।
বসুদৈবতা ৩। ইতি জ্যোতিষং।।
অস্যাঃ মরূপং যথা। মন্তক্রেপরি
সমাগতে ধনে নদলোক্তিনিপ্রঞ্জানিরে তারকে। যান্তি কাভিমতি মের লা
মতঃসারসাক্ষিরসহাসু লিভিকাঃ।।

ধনীকা জী যুবতী। ইতি শবর্ত্বাবলী ধনীযক শ্লী ধন্যাক। ইতি শবর্ত্বা-বলী।।

शुनुः शुः शियाणतुकः॥ शुनुर्शतः जि। इंजि मिनि।॥

বৃত্ত প্র শর্নিঃকেপ্যস্ত । ধনুক ইতি ভারা। তৎ পর্য্যায়ঃ। চাপঃ ২ ধর ৩ শরাসন ও কোম ও ও কামু-কেন্দ্র ইয়াস ১ গংইত সেরং।। ছাবরণ

তৃণতা সং বিণতা সহাইতি বিকাপ্ত **म्मयः॥ अञ्चन्त्रे** धन्द्रियः इंडि छो।-थतः।। का। जन्र नक्नाः यथा। शनुस দ্বিবিধ পোক শার্ক বান্দ তথ্বৈত াকোমল রর্ণ দৃততা তথো র্থণ উদাহ্ন<sup>দ</sup> তিঃ ৷৷ সুখ সম্পত্তি করণ সমমুষ্ট্যা-वजन्यनुः । विनासना मुक्तिदिवस्म । जन-त्र जन भावत्र ॥ इंजि युक्तिकन्न-छकः ॥ 🗱 ॥ धन्रैर्तिन नत्र छ मिन । यथा শেনি ভৌম বুধান্যের বারের সুতি-श्यो रही। भुवुष्य ठाभ विद्यायाः অরিক্তঃ শুভদে। মতঃ।। ইতি জ্যো-তিঃসারসংগৃহঃ ॥ বিদ্যারস্থাক नकवानि ठव मूर्जीम ॥ 🗱 ॥ ठङ ইন্ত পরিমাণে। কাঠা ইতি ভাষা। यथा। इन्हेरिन्माङ्ग्रामी इस सहस्वद्र 'বনু: মৃত্তা ইতি ইনী নিত্ত ।। জ।। মেধাদি ছাদশ রা**শ্**যন্তর্গত নব্ম রা-भिः। उद्भर्गायः। रेखेकिकः २। ইতি দীপিকা৷তাস্যদেবতা পূর্মার্ক अनुच प्रकातः स्थायाकाता अनुभा-ती शूक्यः। मः मृलाः श्रीवाणा ममू रात्या जन्मा नाए शुध्य भारत्य ज्वि । मह भीर्याख्यः भीजः सर्वर्गाः वा

यात्री मृताकः काकः कविस्वर्गः जेत्राः পিতপুক্তি রিত্র অগ্নসম্বানঃ व्यव्यक्षिका अभिवासिका का अव मानिकाउ कृतः स्था। काशी कुछ বাক্ পুণ্যমতিঃ শুচিঃ পুৰুতঃ সুখী সৰ্ব লোকালাপী চ। ইতি জাতক **ठिनुकाम्यः ॥ # ॥ अभि** । दङ् कला जननः श्रवला भशन् विभ লতা কলিতঃ সরলোকি ভাক্। শশধরে হি ধনুর্ধরণে নরো ধনকরো. न करत्राि धनवऽयः ॥ 🗱 ॥ जन्नः কাত কলং যথা। ধনুর্লগ্রে সমুৎ প मा नीजिमान् धनवान् मूची। इन मरश्र भुशानक भुाकः सर्वम् । १११ ষকঃ।। ইতি কোষ্টাপুদীপ:।।

थनुः श्रु हारुः।। त्राणिविष्णयः।। शियालवृक्तः। इंडि निकास्तकोमू-म्रामुणामिवृष्टिः ॥

थनुः भेटः भूं भियानवृकः । इंडि अपिष्किका ॥

अनुःभाशा जी मूर्वा । इंडि अब-**हिन्दुका**॥

**३**जि बाजनिर्यकेः ॥

शर्व जिन्नः स्वामा प्रकृतः शूर्व दिक् । धनुर्थना जी सूर्वा। इंडि मक् निक्षा। भनूक मा भू त्या । ই जित्राक निर्वर् श्मूर्थज्ञः जि श्नूर्थार्को । जित्रान्याज इंडि ভाषा। उৎ भर्यायः। भन्ने र वनुत्रान् ३ वानुदः ६ निवकी ७ खजी ७ ज्नी १ धनुर्ध् ८ । इंजि रहम्माः ধনুধারী তি ধনুধরঃ। তস্তলকণ यथा। भूत्रक दलयुक्क क गकाम तथ काबिमः। धनुषात्री ज्वमुख्यः नर्व ল্লেশসহঃ শুচিঃ॥ইতিমৎস্যপুরা-(१ ७४२ वर्गियः॥

श्नुर्ट् श्रु श्नुर्वद्रः। देखि एरमहन्तुः॥ **धनुर्मध्यः क्री ठाशमध्यागः। छट**् পর্য্যায়ঃ। অন্তকঃ ২। ইত্যমরঃ ম भृयां वा जी गृता । इंडि मफ-**চ**न्प्रिका ॥

थनूर्यामः श्रु थन्यामः। मूत्राला । ইত্যমর টীকাযা॰ রাযমুক্টঃ।। धनूर्वा भी मामवन्नी। ইতি दाब-निर्घणः॥

श्नुव्कः भू भन्नव्कः ॥ वःभः॥ ভলাতক:।। অশব্য:। ইতি রাজ-नियंग्डेश।

श्नुरंत्भुषी 'जी मूर्वा । मत्रमुवाकपी। | शनूकाः भूर शानूका वनुक्रवा यगा देखि व इधिकंत्र १ वस् दी हि नवामः॥

शनुष्ठाः श्रृः शियान कृष्णः। इज्यानः॥ श्रृपान श्रृः श्रृवतः। इज्यानः॥ श्रृः जी श्रृः। इजि क्रिष्यः॥ श्रोन्यः ज्ञाकरा श्रृषि ह श्रृः। इजि ज्ञाक्षिः जातानापित्रिक्तः॥ श्रुत्यकः ज्ञी श्रिशंकः। इज्यानक्षीका-

যা॰ভরতঃ ॥ খনেশ্বরঃ পু॰ স্বেরঃ।ইতিহেমচন্দুঃ॥ ধন্যঃ পু॰ স্বাধকর্ণসূক্ষঃ।ইতি রাজ-

निर्घण्डः ॥

ধন্যঃ ত্রি পুণ্যবান্। সুকৃতী। ইত্যমরঃ ॥ # ॥ बनामा श्रृकरवा धनः शिक् ॥ नामा ह मथुमः। अथरमा जुाज्मामा ্চ মাতৃ নামাধমাধমঃ॥ ইতি গো-यी हन्मु ध्उ शहुः॥ #॥ धनुङ्क-थन यथा। जन क्यांत्र हैवाह । বিত্তীৰ্ণ বালুকা মধ্যে কছপঃ শত যোজনঃ। ভীতশ্চ কম্পিত ন্তত্র দৃষ্টো দুংখী চ শুষ্কিতঃ।। নিঃসারিতো রা-ববেন মীনেন চমহাত্মনা। ধন্যে **সীতি ম**যোক্ত**ণ্চ** নাহ্• প্রন্য উ্বাচ সঃ৷ কীরোদ সাগরো থন্যে জন্তবো-यज मिष्याः। ऋवाम् थरब्रानि की-विश्व (ज्ञानका नाज्ञ भिक्त)। नमूक्या (नदी यहेबद कक्ष मानवाः

। धनशामि समूख्युक्ति नार्त्यक्रुश वार्ग मा। धरम्या स्नाला समाधातः क्कारमा नागन्नाष्ट्रिष्ट्रः । स्त्राजी-कुरकः भन्नत्मा चल्या नार मूवार मः॥ ধন্যক্ষ ভ্গবান্ বুন্ধা বিবাতা **জগতা** মপি ৷ ধন্যোসি তত্র ধাজা চ ধন্যো नारु मूवाह नः॥ धन्ता मर्द्रच्याः (ए-वा यागीन्त्राणाः खदार्थकः। श्रान्तरा সীত্যুক্তঃ শত্তুক্ত ধন্যে নাহ মুনাচ সঃ॥ ধন্যে গণেশব্যে দেবো দেবানা शुरदाः भद्रशास्त्रवे शत्रा मान्तरामी ्रवृत्रका गमभिक्ति गया।। नार्थ्याना মুনিশুেষ্ঠ সন্মিত শেড্যুবোচ সঃ ধন্য বেদাশ্চ চত্ত্বারঃ কর্মাণি যন্ত্রবছ্যা।। তমান্ধন্যাশ্চ তে বেদা গছ তত্ৰ মনী-विनः। य्य धन्ताक सान्तारक्ष्रुका विमा मया उठः॥ अहु त्य न वदः धन्त যক্ত সংঘশ্চ মাশ্বিতং বিষণ ব্যবস্থা कर्जातायखोगः कुनमः स्व १ उपा षम् । प्रवामि शहेताह ग्रामूल ॥ পন্যোপি বজ্ঞসংযোপীভূকে তত্ত্ব ম-या विरक्षा। उडू एक न ववः धन्। धन्। कर्यभूक मुला। भूकक्यानि धना प् नारः का मूनार छर। श्रीकृषः भन्न-ৰাত্মা চ ধরের দান্যক্ত নিশ্চিত ॥

পদ্যে সীতি সবোক্ত দক্ষিণীতিঃ সহেতি চ ৷ ইত্যুক্তা, ভগৰতাপ্যত कथिक गर्बकात्र १ । इंजि वुक्तरेव वर्ष ् निकृष जमश्राप ৮१ जधारः॥ भुनार्युज् श्ली धनजनकृतुज्वित्रायः। अरवतः श्रं भू मु आती ८ এउ हुउ । ্কুত্বা ধনপাতি রভূৎ। ইতি বরাহ-.পুরাণ ॥ — शनता जी त्रामनकी। इंजि सिरिमी।। थनाकः। ইতি स्मान्तुः॥ ধন্যাক ক্লী ধনিয়া ইতি খ্যাত শস্য । তৎপর্য্যাयः। ছত্রা ২ বিজুমক ৩ **সম্বাদ ৪। ইত্যম**রঃ।। খান্যক ৫ थनाः ७ थनिकः १ थनीयकः ৮ व्यक्तः षूत्री के धानजाक >० जूबूक >> **थ**न्। ४२ जूबूकी ४० धत्नयकः ४८ । ইতি ভরত ধৃত কোকান্তর ।। शा-नकः १६ क्षान्। १५ क्षात्मयः ११ यनिका ७৮ इज़ांशाना ३३ जूगकि २० नाक्रयां भीऽ २० मृज्यभव १२२ बनिन्य २०थानावीक २८ वीकशा न्। २० विषकः २५। ইতি রাজ-निर्चकः ॥ जन्मी २१ (धनिका २६ ধন্যক ২৯ ধানা ৩০ থানেয়ক ৩১। इंडि ভारशुकामः॥ वमारशाः।

मधूनप् । जीउप । क्यायप् । भिन्न बुद्र काच ज्या हिए कक की नियः। मीशमप्रका हिंछि ताज-निर्वाचे: ॥ जिस्का न्याप्तः। मूर्वन-ष्'। वयूष्'। जिक्कष्'। करूष्'। ্বীর্য্যকারিত্ব। পাচনত্বশ্র রোচনত্ব । গ্রাহিত্ব•। স্বাদু পারিজ্ব•া তিদে।-य पार यांनामार्गः कृनि नानिष्य ॥ 🗱 ॥ चार्षु छ जुल्ल सानू विल्क ষাৎ পিক্ত নাশন । ইতি ভৰিপু-कामः॥ #॥ मिलायाः माशु मः পিষ্ঠ পান্যক বস্ত্র গানিত। শর্করোদক সংমিশু-কপ্রাদি ু-**निष्कृत्रः ॥ नदीत्म मृ**ग्राय काः व স্থিত পিত্ত হর পর্ত্যাইতি রাজনিষ্ণীঃ ৸

थर्न ही थनुः॥ इनः। इकि मिनिने॥ थर्नः ही थनुः। इक्तानकी हार

11

ধ্বকঃ পূ• ধ্বনবৃক্ষঃ টেডি ভাব-পুকাশঃ।

ধরদুগণ ক্লী নির্জলদেশঃ। ইতি সহা-ভারতে রাজধর্মঃ।। ধরনঃ পুশ বৃক্ষবিশেষঃ। ধার্মনি ইতি

. ভाषा दिनित्रदेशा ना । एट श्रेमी एश

ब्रक्त त्र्याः २ धनुर्वाः ३ महावनः

के क जा गरः ६ शिह्निकः ५ ककः

चानुकन् १। जन् छनाः । करूपः ।

छेकपः । कवायदः । कक नानिदः ।

मार लाव कत्रपः । गुहिदः ।

कक्षेत्रय समनद्कः । इति जाजनिर्यण्यः ॥

ধরন্তরিঃ পু॰ দেববৈদ্যঃ। স ভগবদ-वजातः। यथा। धनु छति न छ गवान् अयागव की र्जिनीया नृगार श्रुक्क डा॰ ৰুজ আশু হন্তি। ৰজ্ঞে চ ভাগ मग्ठामु त्रवावकक्ष व्यापुष्ट विन मनुभाखाव ीर्य (नारक ॥ स रेव ভগবতঃ সাক্ষাৎ বিষেধরংশাংশ সম্ভবঃ। ধরন্তরি রিতি খ্যাত আ যুর্বেদ দৃগিজ্যভাক্॥ইতি জ্বিভাগ-বত । বারায্ণাংশা ভগবান্ खन धरु इति यदान्। भूता रासू मू नथान ममूखाङ्गो नार्गनाथः॥ मई বেদেষু নিকাতো মন্ত্ৰ তন্ত্ৰ বিশা রনঃ। শিষেপ্র স্থিবৈনতেয়স্য শহ-রস্যোগশিষ্যকঃ।।ইতি বু**ন্ধ**বৈবর্ত্তে **बिक्कबम्यराउ ८३ वाद**तारः॥ 🕸 ॥ অন্য চালাপুসা কালিরাজঃ তস্য मीर्घ भाः भू वाज्रा । भन् छति छ रीर्यजगरमाज्या निह म॰ मिषा कार्य

কারণঃ সকল সমূতিয়দৌৰ জ্ঞান-বিন্দুগবতা নারাযণেন চাতীত স-ফুকৌ তথৈ বরে। দতঃ। কাশিরাজ গোত্রেবতীর্য্য ত্ব মষ্টপা সম্যুগাযুর্বে-দ শক্রিষ্কো। যজ্ঞভাক্ত্ ভবিষ্ সীতি। তস্য চ ধন্তক্ষেঃ পুত্রঃ কেতু-মান্ কেবুমতো ভীমরথঃ। তস্যাপি लिया तामः। इंडि विक्शुद्राणः॥#॥ অস্যার্গঃ। সংসিদ্ধ কার্য্য কারণঃ জ-রাণি রহিত দেহেন্দ্রিয়:। সংযত নেহেন্দ্রি ইতি বা। সকল সম্ভূতিষু সর্বেগ্নপি জন্মসু। অশেষ জ্ঞানবিৎ সর্বশান্ত বিং। অতীত সমূতৌ कीताको जन्मनि। चडेषा चडेाक् नागुर्वन । जनुक वयुवायुर्ह । काय यानगुरहाकांक भना एक्ट्रा बता বিষণ অপ্তাবসানি তস্যাহ্ছ শ্চিকিৎ-স। েয়ু ব•স্থিত্ৰেতি। ইণ্টি তট্টাকা-यान्यानी॥ # ।। भिरतानामः। इंडि তি লাওশেষঃ।। বিজ্যাদিত্য রাজ-ল্য নবরত্বাভর্গত রত্ন বিশেবঃ। যথা। ্বরভরি ক্ষপণকামরসিংহ শকুবে-তা্লভউ ঘটকর্পর কালিদাসাঃ। খ্যাতৌ বরাহ মিহিরৌ নৃপতেঃ मञाया॰ तज्ञानि रेव वतक्ति नंव বিক্রনস্যা। ইতি,নবরত্ন° ॥

শাস্তরিগুভা জী কটুকী।ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।।

ধ্বযবাস: পু॰ দুরালভা। ইতনের টীকাযাণভরত: ॥

ধর্যবাসকঃ পু॰ দুরাজভা। ইতি রাজনির্ষণ্টঃ গা

भन्नगमः पुः मूजाना । ইত্যমনः॥ भन्न पुः गकरम्भः। ইত্যমনः॥

ধ্বী তি ধনুর্ধরঃ। ইত্যমরঃ।। বিদক্ষঃ
। ইতি বিশ্বঃ।।

श्ती भू॰ मूत्रालजा ॥ अच्चू नवृक्तः॥ वद्यलः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ পার্থঃ । ইতি বিশ্বঃ॥

খন থানে। ইতি কবিকল্পদ্ধনঃ।। সৌত্রো হয় পাতুঃ।।

ধমঃ ত্রি অণ্রিসংযোগকর্তা।। শব্দ কর্ত্তা। ইতি ধম ধাতোঃ পচাদিত্বা-দন্ পুত্যযেন সাধ্যঃ।।

খনকঃ পু•ু কর্মকারঃ। ইত্যুগাদি কোবঃ।।

ধ্যন: পু॰ নল: । ইত্যমর: ॥ ভক্তাখ্যাপকে ক্রেচ তি । ইতি মেদিনী॥

ध्यतिः जी ध्यनी। ইতি नम्त्रवावनी।।

वगनी औ नाजी। रंजेविनानिनी।
इंजानाः ॥ रित्र मा श्रीया। इंजि
स्माननाः ॥ न्याभी । इंजि
ताजनिर्यणेः॥ निका। इंजि छातभूकामः॥

ধথিকা: পু॰ সংঘতাঃকচাঃ।থোপা ইতি ভাষা। ইত্যময়ঃ ॥ अসুম গর্ভো মৌক্তিক পদ্মরাগ লতিকা-দিনা বহিঃ সংঘতো বদ্ধঃ কেশ কলাপঃ। ইতি ভরতঃ॥

भूतः शृ शर्वजः ॥ कार्शामञ्चकः॥ कृर्यत्राजः॥ वजुर्ज्जाः इजि स्मिनी भूत्रा क्री सानर्जमः। मञ् हञूर्विः म-जित्रक्तिका कशः। इजि नीनावजी ॥ शन हमसाः मः। इजि विह्यकः॥ भात्राः। इजि स्मिनी ॥

ধরণ: পু• অদুপতিঃ ।। লোকঃ ॥ ন্তনঃ ॥ ধান্য• ॥ দিবাকরঃ । ইতি হেমচন্দুঃ ॥ সেতুঃ । ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ ॥

थत्रिः जी शृथिवी। ইত্যনतः॥ थत्रिनथतः शृश्विकः। ইতি হলायुधः॥ थत्रनी जी शृथिवी। ইতি মেদিনী॥ भान्यित्रकः। ইতি শদ্চিন্দ্রনা।

नाजी।। कनिविष्यः। उर्भर्गायः ী ধারণীয়া ২ ধীরপত্রী ৩ সুকলকেঃ ८ कन्ताशुः ৫ वनकन्तः ७ कन्ताम्रः १ ए७कम्(कः ৮। अग्रा ७५ः। भ्यूत्रष्। कक भिडाभय त्रक मात्र ষষ্ঠ কণ্ডৃতি নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজ-निर्घफेः ॥

**ध**त्रगीकन्मः श्रू॰ धत्रगी नाम मृत्र दिल्म-यः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

थत्र शकी वकः शृ श र्जः। ইতি **भय**-त्रज्ञावनी ॥

ধরণীধরঃ পুণ বিষ্ণুঃ।ইতিহেমচন্দুঃ।। কছপঃ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ পর্বতঃ ়। যথা। যো জাতো ধরণী ধরেন্দু **छन्या नाथा**हि भार्थाक्श जरू इंड्राहि शाशीनाथ उकां हार्युः॥ **थत**्रीशृतः शू॰ ममूपुः। इंडि भय-ब्रङ्गावनी ॥

ধরণীপ্লবঃ পু• সমুদুঃ। ইতি বিকাও-म्बः ॥

ধরণী ধরঃ পু॰ শিবঃ। ইতি শবরত্বা वनी ॥

খরণীসুতা স্ত্রী সীতা। ইতি হেমচন্দুঃ वता जी भृषिवी। इंडामद्रः॥ गर्छ। । महिवानन भूदंकः॥ मुह्नमान्यास्त्र

रानित्रभरः। उम्या । यथाउः जिं भूतक शिम धरा मान मन्खम । পাপক্ষ কর নূণা মমঙ্গল্য বিনা-**मनः ॥ का**त्रयट् भृथिवीः रेहमीः कव्बीभानु कातिनी । भर्यप्रामा शर्बङ বতী মধ্যে মেক সমন্বিতা ৷৷ জো-ক পালাইকোপেতা নব বর্ষ সমা-চিতা ৷ নদী নদ শতোপেতা সপ্ত সাগর বেপ্তিতা ॥ মহারত্ন সমা-कीर्भाः वसू बमुक् मःयूजाः ॥ तस्त्रः পল সহসেূণ তদৰ্জেনাথ শক্তিতঃ । শতত্রযোগবাসর্য্যাৎ দ্বিশতেন শতে-न वा। सर्वता शक्षभनाम्म् मना-ক্তোপি বিচক্ষণঃ॥ তুলাপুৰুষ বৎ अर्यप्राक्तार्कणावारुनः वृषः। अदि দ্মওপ সণ্ভার ভূষণাহাদনাদিক ।। বেদ্যা কৃষণজিন কৃত্বা তিলানুপরি विन प्रम् । ज्याहामम थान । त्रमाण नवनामयः ॥ उथास्त्री भून कलमान् ममञ्जाद भन्निकन्नरयद् । वि जानकथ को लाय का नि विविशा-নিচ।। তথা শুকানি রম্যাণি শ্রী খণ্ড শকলানি চ। ইত্যেব রচফিল্বা তা भयः ॥ त्मनः । ইতি मिनी ॥ ﴿ यतः भूका जून जूनिकः। शुमकिनः नाजी। हेि ब्राक्षनिर्यण्डः ॥ महाः | े ७७: कृषा ग्रीठ क्रमूमाक्षानः ॥

'পুণ্য' কাল মথাসাদ্য মজান্তেতানু मीत्रराथ। नमरल मई रमवाना॰ खरमव ভবন যতঃ।। ধাত্রী চ সর্হভূতানা মতঃ পাহি বসুষরে। বস্ন্ ধার্যসে यमाम्रम्याजीय निर्माणः ।। वसूमता ততো জাতা তমাৎ পাহি वाट । हरू प्राणि नागाह बया पड **७**वाहरम ॥ अनजारेय नम सम्बद्ध शाहि मः मात्र कर्पनाटा जुराय नन्त्री র্গোবিন্দে শিবে গৌরীতি সংস্থিতা ৷৷ গায়ত্রী বৃহ্মণঃ পার্ম্মে জ্যেৎসা हत्यु इत्वो शु छ। वृद्धि वृ रुग्याजी খ্যাতা মেধা মুনিষু সংস্থিতা৷৷ বিশ্বণ ব্যাপ্য স্থিতা যমাত্ততো বিশ্বস্তুরা ছিতা। ধৃতি: ক্না ছিরা কৌণী পৃ-থী বসুমতী রসা।।এতাভি মূর্ তিভিঃ পাহি দেবি সংসার কর্মনাৎ। এব मूहार्ये जा॰ (मवी•्रेवाक्स (१९७८) निरव-দেশে ।। ধরার্দ্ধণ বা চত্তর্ভাগণ ধরিংব ुश्विभारतं । (नवंकिताथ अपि) गुः शुनिभाजः विमर्द्धारा ।। जान् ्विधिना यस मन्त्रा प्रदी । ध्वा व्र्थः। भूगाजाल जूम भा ध म भर गाउँ देवस्व व ।। विभारननार्क वर्णन किसिनी बालमालिना। नाताया श्रूबः गर्दा

কল্লব্য মথো বসেশা পিতৃ পুত্ৰ পু পৌত্রা•শ্চ তারফেদেকরি•শতি•ী১ ইতি গঠতি য ইত্থা যা শ্ণোতীহ নিত্য গত কলুৰ বিমানৈ মুক্তদেহঃ সমস্তাৎ। দিব সমর বধূভি যাতি সংপ্রার্থ্যমানঃ পুর মমর সহসৈুংসে-विज हमुत्नीतः ॥ इजि मूट्मु-भूतारग २०४ व्यथायः ॥ थवाकरयः शुः थाताकस्यर्कः। इंजि हातावनी॥ पताजातः भू॰ मक्लभुरः। ইতি (र्गम्यः ॥ ধরাধরঃ পু॰ বিষ্ণুঃ ॥ পর্বতঃ। ইতি व्यक्ति॥ थतानतः शु॰ दुष्याः।यथा।रेयर्न मुज्ञ॰ ভাগবত পুরাণ নারাধিতো যৈঃ शूक्यः भूतानः। मृत्य इउ रेय न ध्रा মরাশা তেষা বৃথা জন্ম নরাখ্না-না ।। ইতি পৌরাণিকাঃ।। ध्रिजी जी পृथिवी। ইত্যারঃ॥ ध्रतिमा भू॰ करां। इज्रुपाहित्कायः।। जूना । यथा । ज्या ४तिन ग्रामाना॰ শতাদ্ভ্যধিকে বঞ্চ। ইতি মনু:।। श्वाः श्रुः कुका ॥ यर्गः ॥ नीत्रः ॥

সমত । ইতি নেদিনী ॥

श्रुवंदाः वि श्रीतिश्वाः शा शाख्याः ॥

अवनीयः । ইতি ध्धाः कर्याः कर्याः ।

उदाः श्रुवंद्रायन माधाः ॥ जादा क्षी ॥

इवं क्षी शृष्टः । ইতু। पिरकायः ॥

कर्वः॥ धर्यः। ইতি मः किश्रमात्राः ।

शास्त्रिकः॥

वर्षः शुः क्री मुजाम्हे । उৎ भर्गायः । भूगुर २ (मुयः ७ मूक्उ ८ व्यः ৫ । ইত্যনরঃ ॥ नগ্রয়ং ॥ স্বভাবঃ ॥ আচার:॥ উপমা॥ কবু:॥ অহি॰ मा।। उनिवद् । इंडि मिन्ने।। मानामिक क्ली। ইতি एमहन्द्रः ॥ वर्मः श्रु धनुः॥यमः॥ (जामशः। ইতি भिषिनी।। जर्जदः॥ वर्रन्। इंडि व्याप्त । श्री (क्या विकास विकास । স বুন্ধণো দক্ষিণ স্তনা জ্জাতঃ৷ তদ্য ভार्या। एकुमा व्यापम कन्।ः। তস্য চতুর্দশাপত্যানি যথা। প-গুন শুদ্ধাযা পত মৈত্ৰ্যা পুসা-मः २ म्यायाः व्याज्यः **३ मां**स्ट्राः मूथ 8 जूडेत गूट ६ भूडेत गर्बः ৯ ক্রিযাযাণ যোগঃ ৭ উন্নতৌ দর্পঃ ৮ বুদ্ধ্যা অর্থ: ৯ মেধাযা মৃতিঃ ১০ মূর্ব্যা॰ নরনারায়ণৌ ১১ তিতি<sup>-</sup> कायाः (क्रमः १२ क्रीमः जायाः भू-ট্ৰুখঃ ১০। ইতি শ্ৰীভাগৰত ।। # 11

অপিচ। শুদ্ধা লন্ধী ধৃডি স্বাইঃ পুঠি মেধা তথা কিযা। বুদ্ধি লক্ডা वशू: भाषि: निषः कीर्खि खयारभी ॥ भन्नार्थ भुजिबगुार धर्मा माका-যণীঃ পুভুঃ॥ বিষ্ণুপুরাণ সতে সিদ্ধি **স্থানে ঋদ্ধি রন্যৎ তুল্যণ ॥ তাসাম-**পত্যানি যথা ৷ শুদ্ধা কামঞ্চ 🕮 দৰ্পণ নিয়ম পৃতিরাত্মজ। সভোষঞ্চ তথা তুঙি র্নোভ পুঙি রস্যত ৷ মেধা नुज्ञ किया म्ख नय विनय स्मवह । বোধ वृष्ति खथा वङ्जा विनय वशु-রাত্মজণা ব্যবসায় পুজজে বৈকে মণ শান্তি রস্থত। সূখণ সিদ্ধি র্যশঃ কীর্ভি রিভেপ্রত ধর্ম সুনবঃ ॥ কামে। ननी जुल इर्ष धर्म लोख मजूरड ॥ 🗱 ॥ व्यवस्य वर्षा यथा। हिन्सा ভার্য্যা ত্রধর্মস্য তস্যাণ জক্তে তথা নৃতণ। ফন্যাচ নিকৃতি স্তাভ্যাণ সুতৌ (६) नव्रकः ভयः।। भाषा विक्ना देव শিপুন ধ্ব মেত্যোঃ। ভ্যাজ্জক্তে ( ৭থ বৈ মাণা মৃত্যু ভুতাপছারিণায় বেদনা স্বস্তঞ্গপি দু:খ॰ জক্তেথরৌ-বাৎ। মৃত্যোর্ব্যাধি জন্নাশোক তৃষ্ণাঃ 'काथक जिल्ला। मुरथा खताः म्ठा मर्ख ठाथमं नक्षाः। रेनयाः গোঁজিপুৰোবাসৰ্বেতে হৃদ্ধু রেড-

धर्म

मः ॥ इंडि मार्काख्य श्रुतानः॥ 🗭 ॥ श्रापाट्रशिख र्यथा। व्याथाट्रशिखः পুবক্যামি ধর্মস্য নহতো নৃপ। মা-হাত্ম্যঞ্চ তিথিকৈব ভন্নিবোধ নরা-्रिश्र ॥ नर्बः वुकाव्यः भूक श्रीमः পর সংক্রিতঃ। স সিস্ফুঃ পুরাস্থা रनोभाजनक्षव्यक्तिस्य ।। उभ्यक्तिस्य ত सुत्राम् किनाह्य वरनः। नापू ৰ্ব ভূব পুৰুষঃ **খে ত**নাল্যা**নুলেপনঃ** ॥ **७**• मृष्ट्वीवाठ **७** गवा• म्ह ख्राट म्राट কৃতে যুগে। ত্রেতাযাণ ত্রিপদশ্চাসৌ দ্বিপদো দ্বাপরে ভবং॥ কলাবেকেন' शास्त्र **भु**काः शानयः भुङ्गः । य-ন্নেহো ব্ৰাহ্মণানা স ত্ৰিধা ক্ষত্ৰে ব্য-বঙ্হি তঃ॥ দ্বিধা বিশ্যেকধা শূদুে ছিতঃ সর্বগতঃ পুভুঃ। গুণুব্য ক্রিয়া ক্রাতি **म्जू**द्वारः शुकीर्खिजः॥ विम्**र्ला**जी স্তোবেদে সসংস্কৃতপদক্রমঃ৷তথা **व्याम् । अध्यात्र विश्विताः मध र उरान्** ॥ উদাত্তাদি ত্রিভি বৃদ্ধ এব ধর্মে, ব্যবন্ধিতঃ। বুক্ষোবাচ। অদ্য পুভূ-। তি তে धर्म তिथि तस बरगामणी 🗗 যন্তা মুপোষ্য পুৰুষো ভবন্ত সমূপা বর্ত্বেথ। কুরা পাপ সমাচার ত্রা-মুঞ্তি মানবঃ॥ ইতি বরাহপুরুসা ॥ 🗱 ॥ उरा भूवा यथा । धर्ममर्

ভार्या १हि॰ माथा ठर्मा॰ भू १ हछ-द्रेय-। जन्मु। छ- गूनि मा पू व (या)-শাস্ত্র বিচারক ॥ জ্যেষ্ঠঃ সন্ৎস্কমা-রো ভূৎদ্বিতীয়ক সনাতনঃ। তৃতীয়ঃ সনকো নাম চত্তর্থক সনন্দনঃ ॥ সা-খ্যবেত্তার মপর- কপিল- বোঢ় মাসুরি । দৃষ্ট্রা পঞ্চ শিখ দুষ্ট যো-গ যুক্ত• তপেঃনিধি• 1' জ্ঞান যোগ• নতে দৃদ্য ৰ্জ্যাশাংসাপি করীয়সাং ॥ ইতি বামনগুরাণ ॥ 🗱 ॥ धर्म লক্ষণ বথা। পাত্রে দান নৃতিঃ ক্ষেমাতা পিত্রোশ্চ পূজন । শুকা বলিপ্বাংগ্ৰাসঃ বিশ্বিপ ধর্ম লক্ষণ ॥ ইতি পাছোত্তরথত ।। 🗱 ।। ধর্মা-द्यानि यथा। दुक्तहर्ष्युग मर्ल्युन छन সাচ পুবর্ত্তে। দানেন নিয়মেনাপি क्रमा (भौराम वज्जाना। अहि॰मरा সুশাভ্যাচ অন্তেয়েনাপি বর্ত্ত ৷ ঐত দশিভি রকৈন্ত ধর্ম মেব পুস্-চযেৎ ৷৷ ইতি পাদ্মভূমিখণ্ড ৷৷ 🗱 ৷৷ शर्म गृन यथा। अपुष्ट भागारना-ভশ্চ দমো ভূত দ্যা তপঃ ৷ বুন্দচর্য্য ততঃ সত্য মনুকোশঃ ক্ষমা ধৃতি:। সনাতনস্ ধর্মস্য সূল মেতদুরাসদ° ।। इंडि मट्म्रभूतान ।। # ।। करण मेनजङ्जुवर्वात्वधर्मानत्वा स्तः भरः

गिन्य जिया। भानगुरमा इत्र म् जि ক্র্যান্নাথশ্চ ভারত । কলে দশ সহ-**जा**रि गरो ठाका हरतः भरा। गर्य থর্মণ সত্যঞ্চ বেদাশ্চ গ্রানদেবতাঃ। ব্ৰুক্ত তপ শ্চানশন্ত যয়ু জৈঃ সাৰ্দ্ধ নেবঢ়া। ইতি বৃন্ধবৈবর্ত্তেপুকৃতিখণ্ড ।। # ।। धर्माथात इनानि यथा। বৰ স্থান ত্বাধারো ৰবানি স্নয়তা विच्छा । रेवकरवयूष्ठ गर्बयू यिख्यु तृष्क চারিষু ॥ পতিবু তাসু পুাক্তেষু বান পুষেষু ভিক্ষুষু। নৃগেষু ধর্মশীলেষু **স**ৎসু সদৈশ্য জাতিষু 🖟 দ্বিজসেবিষু मूर्पुषु न मन्मर्गरिख्यू ह। এयु वुः সম্ভত॰ পূর্ণো ধর্মারার বিরাজসে॥ ৰুগে যুগে ত্বাধারা এতে পুণ্যতমা জনঃ ॥ 🚓 ॥ অপিচ অশ্বয় বট বিশ্বেষু তুলসী চন্দনেষুচ !৷ দেবাৰ্ছে-ষুচ পুল্লেযু বিদ্যমানোসি শাথিষু। দেবালযেষু তীর্থেষু সতা শেখদুগৃহে-यूठ ॥ (वन (वनाक मुवन ज्ञातमूठ म-ভাসুচ। श्रीकृष धन् नामाक मु. जि গীতছলেষুচ॥ বুত পূজাতপো ন্যায यख नाकि इलियु हामीका शदीका শপথ গোষ্ট গোষ্কদ ভূমিবু ৷৷ গবা ग्र्ह्यू (गारिष्यू विमुत्राता हि भण्ड-

इत्तयूष्ट्र ॥ क्षा धर्मा गम् इन्नान यथा। এতদন্যেयू कृष्णा यमगणा अ उ८ मृगु। भू-कनीयु उएग्रव्यु ग्रस्यु নরবাতিনা ।। নরবাতিবু নীচেষু মূর্খেবৃচ থলেবৃচ।দেবতা গুৰু বিপ্রেবৃ भानपाना॰ धनशातिषु ॥ व्यनमातिषु ধ্রেরু চৌরেষু রতিভূমিরু। দুরোদর मूताशान केलशाना इल्यु । ना-লগাম সাধুতীর্থ পুরাণ রহিতে বুচ। पम्रुगुरखष् परविषु **जान**हाया**म् ग**-विश्व।। यिननीति मनीकीति (प्रवन गुामया ि मू॥ वृषया इन्दर्गकांत कीव-शिःरमाभकी विषु ॥ ७५ विन्ति ७ नातीयु जीजिएक् ह शुः मू ह। मीका-সন্ধি বিষ্ণুভক্তি বিহীনেষু দিলেষু চ ॥ बाक् कन्तरिक्यितृ बरगाविषि-ক্ষিয়থ। শালগাম সুর গুছ ভ্মি বিক্ষিষু পুভো মা গিত্রদ্রোহি কৃত-দুৰু সত্য বিশ্বাস্ঘাতিৰু। শরণাগ তিহীনেষু আশ্বিতমেষু তেষু চ। শশ্ব-নিথ্যেকি শীলেষু তথা সীমাপ-शातिषु।। कामार काशाख्या ला-जिमिथा माकि भुवंपियू। भूगा -कर्म विशेष्ति भूगा कर्म विद्राधियू।। रे इंद्रिश्च निरम्त व् नाधिकात्र सव সি। কৃশতা তেন ভবিতা ধর্মৈতেবু পুভো है ইতি বুন্ধবৈবর্জে প্রকৃষ্

कत्रभाख हर जयात्रवः ॥ 🗱 ॥ पिवा मीना॰ थर्म्या यथा । मूर्किनक्दार । কি লক্ষণো ভবেজর্মঃ কিমাচরণ সৎ कियः। यमाणिुठा न जीमिश्र (मदा-**म्रास्ट** जनूर ऽञाः।। अवय উहुः। (मवा-नाः भव्रत्या थर्यः जना यद्धां निकाः ক্রিযাঃ।। স্বাধ্যায় বেদ বেভৃত্ব• বিষ্ণু প্ৰারতিঃ মৃতি:।। দৈত্যনা বাহ भाविषु भाष्मर्यं युष्क निष्किया। বিন্দন নীতিশাজাণা হরশক্তি **ৰদাহতা।। সিদ্ধানা মুদিতো ধর্মো याग**युक्ति त्रनुक्तमा । त्राध्राय• दुक्त-বিজ্ঞান ভক্তিৰ্ছাভ্যা মপি ছিরা॥ উৎকৃষ্টোপাসন জ্ঞেয় নৃত্য বা-**দ্যেষু** বাদিতা। সরম্বত্যা• ছিরা ভ-कि गीम्नर्ता धर्म डेठारङ ॥ विम्राधन ष মতুশ বিজ্ঞান পৌৰুষে মতিঃ। বিদ্যাধরাণা•ধর্ম্মোংথ ভবান্যা•ভ-कि तिवछ। गामर्व विम्तादिक्षि ভক্তি: স্থাণী তথা স্থিয়। কৌশল্য॰) সর্বশি**ন্নেযু ধর্মঃ কৈম্পু**ৰুষঃ মৃতঃ 📭 वुष्कवर्य्य भगनिष् यागा ज्यानत्रि र्ण। गर्वव कामठातिषु श्रामा ११०) পৈতৃক: শৃতঃ।। বুদ্দচর্য্য বতাশির্দ্ধ बन्ध कानक ताकन। निर्मा थर्म

र्विनिष् भार्यः थर्यः शुहक्तरे ॥ शा-श्रायः वुकाठर्गक्षमानः यजनस्मविः। অকার্পণ্য মনাযাস দ্যা হিংসা क्रमानयः ॥ जिल्लिनुयदः भौठक भाक्षा ७ ७ कि का । भेक्र ভান্ধরে দেব্যা• ধর্মো ২য• মানবঃ মৃতঃ ॥ ধনাধিপত্য ভোগানি साध्रायः भक्ताईनः। अश्कातमः শৌচঞ্চ ধর্মো 'হয়ণ গুছাকেশ্বিতি ৷৷ পরদারাভিমর্ষিত্ব পরার্থেপি চ লোলুপা। স্বাধ্যায় ব্র্যম্বকে ভব্কি র্থমো থে রাক্ষসঃ মৃতঃ।। অবি-বেকতাথাক্তান শৌচহানি রস-ত্যতা। পিশাচানা ময় ধর্মঃ সদ। চানিষ গৃপুতা।। यোনयञ्च हामरेल-তাঃ সহ ধর্মান্চ রাক্ষ্স। বুন্ধণা কথিতাঃ পুণ্যাদ্বাদ্দৈব গতিপুদাঃ ॥ ইতি বামনপুরাণে ১১ অধ্যাযঃ ॥ 🗱 ॥ अर्था दर्भ टाक्र १ । यथा । অহি•সা লক্ষণো ধর্মো হি•সা চা ধর্ম লক্ষণা। ইতি মহাভারত ॥ বেদপুণিহিতো ধর্মো হুধর্ম স্তবিপ-পর্য্যঃ ৷ ইতি 🖺 ভাগবত• ॥ বি-হিত ক্রিয়ালাখ্যে ধর্মঃ পু•সা• ঙণো মতঃ। পুতিবিদ্ধ ক্রিয়াসাধ্যঃ

স গুণা **ংখর্ম উচ্যতে ॥ ইতি ধর্ম** দীপিকা॥

श्यंकर्य ही श्यंकार्याः भूंडाम्डेश्डि शामकिका। यथा। यम भूंशिक्डः श्यंकर्य उन्नक्षः भरः। ইতি तुका-रेवरर्ड शुक्डिथ्डः। श्यंकारः शुः तुकः। ইতি जिकार्ड-শেষः॥ श्यंकीणः शृः गामनः। त्राक्षः। मामनः।

ইতি প্রবর্গে ক্রিকাওশেষঃ ॥ ধর্মকীলকঃ পু॰ বুদ্দশাসন॰। ইতি পুরবর্গে শদরত্বাবলী॥

ধর্মাকেতুঃ পু॰ বৃদ্ধঃ । ইতি শব-রত্নাবলী।।

धर्माठकः शृ॰ वषः। ইতি भरत्र शावनी धर्माठक ज्९ शृ॰ जिनः। ইতি धर्तिः॥ धर्माठातिनी खी जाया। ইতি भर द्वावनी॥

ধর্মচিন্তা দ্রী পুণ্যভাবনা। তৎ পর্য্যায়ঃ । উপাধিঃ ২। ইস্ত্যমরঃ ।।

ষ্মতিন্তন লী ধ্যতিন্তা। ইতি হেম-চন্দুঃ॥

ধর্মজ্ঞ: ত্রি ধর্মজ্ঞানবিশিষ্ট:। যখা। ধর্মজ্ঞশ্চ কৃতজ্ঞশ্চ হুনিরেকী দৃদ বুজঃ। ইতি বিক্লাটপর্ব।। थर्पं भू

ধর্মণ: পু॰ বৃক্ষভেদ: । ধামিনিয়া ইতি ভাষা।। সর্প বিশেষ:। ঢেমনা ইতি

ভাষা। ইতি মেদিনী !৷

ধর্মত্ব ক্লী বৃত্তিমত্ব ৷ আধ্যেত্বমিতিযাব ৷ ! যথা। গগণাদে বৃত্তিমত্ব

শক্ষণ ধর্মত্বাভাবাদিতি জগদীশঃ
ধর্মদুবী জী গঙ্কা। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ
ধর্মধাতুঃ পুণ বুদ্ধঃ ৷ ইতি ত্রিকাগুশ্বা

ধর্মধৃন্ধী ত্রি নীবিকার্থনটাদিধারী।
তৎপর্য্যায়ঃ। লিক্ষ্ব্ভিঃ২। ইত্যা
মরঃ॥

ধর্মপত্তন শ্লী মরিচ । ইত্যমর:।।
ধর্মপুরী। তৎপর্য্যায়ঃ। শুবস্থী ২।
ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

ধর্মপত্র• ক্লী যজ্ঞোডুম্বরঃ।ইতি শব্দ চন্দ্রিকা।।

শ্বস্তুঃ পুত যুধি গ্রেরাজঃ। ইতি বিকাওশেবঃ।। নরনারাযণাবৃষী। ইতি পুরাণ'।। ধর্মতঃ কৃত পুত্রঃ। ধরমবেটা ইতি ভাষা। যথা।। গাবজুর্জাটি ধর্মপুত্র পরশু কুরাখিল ক্রিয় শ্বেণী শোণিত পিছিল। ব্যুমতী কোস্যা মধাস্থ পদত। বিলোক্যাভ্য দান দক্ষিণ ভূজা- वश्चेश्च निर्त्यामरया मिता १य॰ निन कृष्य करेनक जिन्नका न श्राज्यविष्ठ स्मिन ॥ इंजि महानावेक॰ ॥

ধর্মভাণকঃ পু॰ ভারতাদিপাঠকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

ধর্মানুঃ ত্রি ধর্মবিশিষ্টঃ। ধার্মিকঃ। ইতি ধর্ম শন্দেস্ত্যথে যু পুত্যযেন নিয়মঃ।।

পর্ম বৃক্ত ত্রি পর্মযুক্তঃ। ধার্মিকঃ। ধর্মণ যুনক্তীত্যথে ক্বিপ্ পুত্যযেন সাধ্যঃ। ধর্মারাজঃ পুণ জিনঃ।। যমঃ। ইত্যমরঃ ।। নরপতিঃ।। যুধিষ্ঠিরঃ। ইতি শব্দ-রজাবলী।।

धर्मवान् वि धर्मविषिष्ठः। भूगुवान्। इं ि भक्त ज्ञावनी ॥

ধর্মবাসরঃ পু॰ পৌর্ণনাসী। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥

ধর্মবাহনঃ পু॰ শিবঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ॥ ধর্মস্য থানে ক্লী॥ ধর্মশান্ত্র॰ ক্লী মহাদিপুণীতশান্ত্র•। তৎ পর্য্যাযঃ। মৃতিঃ ২ ধর্মসংহিতা ৩। ইতি হেমচন্দুঃ॥ ধর্মশান্ত্র প্র যোজকা যথা। মহত্রি বিষ্ণু হার্মীক যাজ্রবঙ্ক্ব্যোশনোজিরাঃ বর্মাপক্তর

সন্থৰ্ত্তাঃ কাত্যায়ন বৃহস্পতী ॥ প্ৰ-রাশর ব্যাস শহ্ব লিখিতা দক্ষণো-তমৌ। শাতাতপো বশিষ্ঠশ্চ ধর্ম-শাত্র পুযোজকাঃ॥ ইতি স্তিঃ॥ এতে পুধানানি অন্যে হপি সন্তি।। অমিন্ দেশে পুচলিত ধর্মশাস্তাণি ষথা।মলিমু চে দাযভাগে সংস্থারে শুদ্ধিনির্ণযে। পুাযশ্চিত্তে বিবাহেচ তিথো জন্মাষ্টনী বুতে।। দুর্গাৎ সবে व्यवज्ञादकाम्नामि निर्गय। उ-ডাগ ভবনোৎসর্গে বৃষোৎসর্গ ত্রযে বুতে॥পুতিষ্ঠাযা•পরীক্ষাযা•জ্যো-তিবে বাস্তুস-জ্ঞকে। भीकाया ना-হ্নিকেক্ত্যেক্ষেত্রে শ্রপুক্ষোত্তমে ।। সামশানে यङ्गान मृपुक्ठ। বিচারণে। ইত্যপ্তাবি শতি স্থানে তত্ত্ব॰ বক্ষ্যাদি যত্নতঃ ।। ইতি রঘু-नत्त्व छष्टाठार्युः ॥

ধর্মশীলঃ ত্রি ধার্মিকঃ। যথা। ধর্মশীলো বদান্যক বৃদ্ধক সুমহাধনঃ
। ইতি বিরাটপর্ব ।।
ধর্মসংহিতা জী মৃতিশাজ্রং। ইত্যমরঃ।
ধর্মসাবর্ণিঃ পুঁণ একাদশোমনুঃ। অমি-

<sub>'</sub>শারন্তরে ধর্মাসেত্রব্তারঃ। বৈধৃত इन्द्रः। विरुक्त कामगमान्ता (मवा 1 जक्नारयः मधर्ययः। मञ्रधर्मा দযো মনুপুত্রা ভবিষ্যন্তি ৷ ইতি ভাগবতং॥ৠ। ভবিষ্যধর্মপুত্রস্য সাবর্ণস্যান্তর• শৃণু। বিহত্বনাঃ কা-মগনা নির্মাণ রত্য স্তথা।। ত্রি পু-কার। ভবিষ্যন্তি একৈক ব্রি॰শকো-गणः। गाम वूर् फिरमा यिख निर्माण রত্য স্ত তে !৷ বিহস্পনা রাত্রযোথ मूर्डाः कामरमा गनः। इत्मु। व्या-খ্যো ভবিতা তেষা• পুখ্যাত বি- 🛭 ক্রমাঃ ৷৷ হবিন্মাণক ধনি ষ্ঠক্ত ঋষি-त्रना उथाक्षिः। निम्हत म्हान्य-শৈচব বৃঞ্জি শচান্যে মহামুনিঃ ॥ সপ্তর্যযো হন্তরে তমিন্নগ্রিতেজাক সপ্তনঃ। সর্বানুগঃ সুশর্মাচ দেবা-নীকঃ পুৰুদ্ধ ।। হেমধনা দৃঢাযুক বিভানু স্তৎ সূতা নৃপাঃ ৷ ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণ ॥

थर्ममूजः भू॰ यूधिश्वताङः । इजि. भमत्रवादनी॥

थर्पम्: श्रु ध्मऽिषकी। इंडि नम्-तज्ञावनी॥

धर्माक्व की अक्तकंव । यथा। तुक्

বেদিঃ স্ক্লেত্রপঞ্চরাম হুদান্তরণ
। ধর্মক্ষেত্রণ স্ক্লেত্রণ দ্বাদশ যোক্রনাবিধি।।ইতি হেমচন্দুঃ॥অপিচ
। তরস্কলারস্ককযো র্যদন্তরণ রামহুদানাঞ্চ মচকুকস্য চ। এতৎ স্ক্লেত্র সমস্ত পঞ্চকণপুজাপতে ক্তন্তরবেদি ক্চ্যতে।।ইতিভারতপাদ্মে
।। ধর্মাধারে ত্রি।।

थर्माजा श्रु थर्मनीनः। यथा। मर्घ র্ভগবান্ ব্যাসঃ কৃত্বেমাণ সংহিতাণ পুরা। শ্লোকৈশ্চত্তুর্ভি র্ধর্মাত্মা পুত্র মধ্যাপয়ৎশুকং॥ইতি মহাভারত• गांधर्मभतीकन क्री भतीकावित्न-यः। यथा। अधूना मः भुवक्तामि ধর্মাধর্ম পরীক্ষণ । হস্তুপা যাচ-यानानाः शुायन्त्रिखार्थिनाः नृगाः॥ রাজত• কার্যেৎ ধর্ম নধর্ম• সীস-কাযস। লিখেৎ ভূর্বে পটে বাপি ৴ ধর্মাধমৌ সিতাসিতৌ।।অভ্যুক্ষ্য **११४गत्तर्भ गन्नमस्वरः ममह**र्ये । সিত পুস্নতু ধর্মঃস্যাদধর্মো ৎসি-ত পুষ্পধ্ক ॥ এব॰ বিধাযোপ লিখ্য পিওযো ভৌ নিধাপযেৎ। গোম-যেন মুদাবাপি পিণ্ডৌকার্য্যে সম-স্তঃ। মৃত্যাওক উপজ্তে সাপে গ্র

চানুপলক্ষিতৌ ৷ উপলিপ্তে শুচৌ দেশে দেব ব্ৰাহ্মণ সদিখৌ।। আবা-হ্যেৎ ভতো দেবান্ লোক পালা क भूई वट् ॥ श्यावाहन भूई छ পুতিজ্ঞা পত্ৰক বিখেৎ । यদি পাপ বিমুক্তো ২হ ধর্ম স্থাযাতু মে করে॥ অশুদ্ধ শ্চেন্মমকরে পাপ মাযাতৃ ধর্মতঃ। অভিযুক্ত স্তযো-ৈচক পুগৃহীভাবিলম্বিতঃ।। ধর্মে गृहीर मुक्तः महामध्यांख म शीय-তে ৷ এবং সমাসতঃ প্রোক্ত ধর্মা-ি ধর্ম পরীক্ষণ ॥ ইতি মিতাক্ষরা॥ ধর্মাধিকরণ ক্লী রাজ্যেবিচারস্থান । यथा। धर्मनाजानुजादान वर्षनाज নিৰূপণ । যত্ৰাধিক্ৰিয়তে ছানে ধর্মাধিকরণ হি ত ।। ইতি বীর भित्वाप्रत्य का जुडायन वहनः॥ 🗱 ॥ ুপুৰুষান্তর তত্ত্বজ্ঞাঃ প্রাণশব স্চা-भारतामुभाः। धर्माधिकद्रां कार्गी জনাস্থানকরানরাঃ॥ ইতি মৎস্য-शूत्राण २५३ व्यक्तायः ॥

धर्माशुकः नक्षणः। यथा। नगः माजो চ भित्र ह नर्सम्बद्ध विभाजनः। विभुत्र्युः सनीनम् धर्माधिकत्राणा ज्ञास्यः॥ इंडि म न जुन्ना ति कि स्था विकत्त वि नि धर्मा विकत्ती जु धर्मा विकत वि नि देश यक् इं े इं ता की जाया। उद भर्मायः । धर्मा ध्रकः २ धार्मिकः २ । इंडि स्मिन्दुः ॥ शुन्ति वाकः ८ यक्ष पर्मकः ६। इंडि म्हा ॥

ধর্মাধ্যক্ষঃ পু॰ ধর্মাধিকরণী। ইতি হেমচন্দুঃ ॥ ৠ॥ জল শীল গুণো-পেতঃ সর্ব ধর্ম পরাবণঃ । পুরীণঃ প্রেবণাধ্যকো ধর্মাধ্যকো বিধীয-তে॥ ইতি চাণক্য॰ ॥

ধর্মারণ্য ক্লী পুণ্যবনবিশেষঃ। তস্য নাম কারণ যথা। স ধর্মঃ পীডিতঃ সর্থ সোমেনাজুত কর্মণা। তারাণ জিঘৃক্ষতাপদ্নী ত্বাতু রাঙ্গিরসম্যুচ ।। সোপ্যযা ভীষিত তেন বলিনা জ্ব কর্মণা। অরণ্য গহন ঘোরণ পুবিবেশ তদা পুভুং।। ঝুক্ষোবাচ। যহারণ্য মিদ ধর্ম ব্যাব্যাপ্ত চিরণ বিভো।। নামা ভবিষ্যতি হেতছ-র্মারণ্য মিতি পুভো। ইতি বরাহ-পুরাণা।।

थर्मा मन क्री विहास मन । विक इंडि इ.साबी जाया। यथा। धर्मा मम वि-. श्रेष मधी जाकः मन हिल्हा शुन्म १ লোকপালেভ্যঃ কার্য্য দর্শন সার ভেন্য ইতি মনুঃ ।।

थियी दी तिन्का। इंडि ताजनिर्यणः धनी वि धर्मनान्। शुगुनीनः। ইंडि मदद्रदाननी ॥

थार्याशामकः भूः एकः । ইতি । (रुमहन्दुः ॥

ধর্ম্য: ত্রি ধর্মাননপেতঃ। ধর্মযুক্তঃ।

যথা। ধর্ম্যান্ধি যুঁজাৎ শ্রেমান্যৎ

ক্ষবিষস্য ন বিদ্যতোইতি

গবদ্ধীতা।। ন্যুনাধিক বিভক্তানা
ধর্ম্যঃ পিতৃ ক্তঃ স্তঃ। ইতি দায়
ভাশঃ।।

ধর্ম্যবিবাহঃ পু॰ বিবাহবিশেষঃ।
সচ পঞ্চবিধঃ। ব্যাহ্ম দৈবার্য গাছার্ব
পুাজাপতঃ ক্ষপঃ॥ অধর্ম্য বিবাহ
জ্ঞিবিধঃ। আসুর রাক্ষস পৈশাচ
কণঃ। যথা। ধর্ম্যেরেব বিবাহেষু
কাল পরীক্ষণ নাধর্ম্যেষু । ইত্যুদ্বাহতঃ।।

धर्यः भू॰ भूगगनुऽ।। अमर्यः॥ मकि वन्ननः॥ मः रुजिः॥ हि॰ मा। इजि ध्र थाज। जीत ९० भुज्रत्यन माध्यः॥

धर्यकः वि मुद्रेः। ইতি भएत्रवावनी ॥

धर्वकातिनी जी मृतिठाकना। इंडि मफत्रवावनी।।

श्वरंगः ती श्रिज्ञ ।। प्रिलः । ইতি

मिनि ।। धर्य मदार्थाश्रव ॥

श्वर्गः जी वक्षकी ॥ व्यवः । ইতি

मर्गक्रिश्रमात्रागानिवृद्धिः ॥

श्वर्गा क्षी स्विंगे। अम्ञी । ইত্যমর

गैकीया अत्र ।।

श्विंग जी श्रुण्यनी। ইত্যমরঃ ॥

ধর্ষিত শ্লী রতিঃ। মৈথুন । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। কৃতধর্ষণে ত্রি ।। ধর্ষিত। স্ত্রী অসতী। ইতি শব্দ রত্নাবলী।।

 প্রথাক্ষন্য । শীতবং । পুনেহার্পঃ ।
পাঙ পিত্ত কফাপহত্বং । মধুরত্বং ।
ভূবরত্বং । তিজ্জ্ঞা ।। তক্ষেত্বং ।
ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ ।। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ ।।
ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ ।। বৃষ্ণ্টেষ্টং ।। শুরুঃ ।। সুন্দরে তি । ইত্যুণান্দ্রকাবঃ ।।
পেতত্তণ যুক্তে তি। ইত্যুনর্দ্ধান্থেত
মরিচে প্লী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।
রাগবিশেষঃ। ভরতমতে হিন্দোল
রাগস্যাপ্তমপুত্রঃ । ইতি সংস্থিতশাত্রং ।।

ধবলগকঃ পু॰ হ॰সঃ। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ।। শুদ্ধগকক ।। ধবলগাটলী জী সিতপাটলিকা। ইতি রাজনির্ঘটঃ।। ধবলমৃত্তিকা জী খটিনী। ইতি রাজ-

निर्घक्ता।

धवनयायनानः भू यावनानविष्णयः।
छ । भर्यायः। भाष्ट्रयः २ जात्र छ वृतः ६
० नक्ष्यकाष्टिविखातः ६ वृतः ६
गोक्षिक छ थूनः ७। जन्य । जन्यः।।
१ भाष्ट्र । वन्य । वृत्य । वृत्य । क्ष्यः।
पुषष्य । भर्या । विष्णा ।

धवनी । जी मूझारगीः। ইত্যातः ॥

ধবলোৎপল স্নী সমুদশ ইতি রাজ-নির্ঘটঃ।।

ধবাণকঃ পু॰ বায়ুঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ॥ ধবিত্র; ব্লী মৃগচর্যব্রচিতব্যজন । ইত্যুমরঃ॥

ধা ডু লি ঞ ধারণে॥ পুঙৌ ॥ দানে । ইতি কবিকপ্লক্ষঃ ॥

भाः शृ वृक्षा । भातकः। ইতি मिनिनी।। वृह्ण्यक्तिः। ইত্যেকাক্ষরকোষः
भाकः शृ वृषः ॥ आहातः । हेर्जुःगानिकाषः ॥ अषः ॥ उद्धः। ইতি
সংক্ষিপ্তসারে উণাদিবৃত্তিঃ॥

থাটী জী শতুসংস্থাসন । তৎ পর্য্যায়: । পুপাতঃ ই অভ্যবন্ধনং: এঅভ্যাসাদন ৪। ইতি হেমচন্দুঃ থাণকঃ পুণ দীনারভাগঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ ।।

शांकि जी भूज्ञितिरमयः। शांहे कृत हेकि ভाषा। उर भर्यायः। यहि-भूजी २ जामुभूजी अधावनी ६ व्याप्ति-कृति के मूक्ति। अधावनी ६ व्याप्ति-कृति के मूक्ति। अधिक्री १ वह-भूजिका ४ समूपा असीष्भूजी सक्षदा ১১ सम्प्रा

थाजू

্ঠত সম্ঘপুদ্দী ১৪ রোখুপুদ্দিনী ১৫ ठीं तुड़ा मा ३५ वड़ि मिथा ३१ मर् পুরা ১৮। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ ধাতৃ-পুশ্নী ১৯ ধাতুপুশ্নী ২০ ধাতৃপুশ্নিকা ২) ধাত্রী ২২ ধাতুপুদ্মিকা ২৩। ইতি नबत्रवावनी। अन्तर खनाः। करूपः । উঞ্জু•।মদকারিজু•।বি**বপু**বাহি-কাতিসার বিসর্গ বুণ নাশিত্ব। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। শীতত্ত্ব । রক্ত পিত্ত নাশিত্ব। ইতি রাজবল্পভঃ।। শাতা পু• বুন্ধা। ইত্যমরঃ॥ বিষ্ণু:। ইতি হলাযুধঃ।। পালকে ত্রি। ইতি মেদিনী।। ধারকঃ । ইতি ধরণিঃ॥ ख्छमूनिপूबः। उम्र जार्गा मिक কন্যা **আ**য়তি:। তস্য সূত: মৃকণ্ডু: তস্য চ মার্কণ্ডেয়ঃ। ইতি শ্রীভাগ-বত ॥

थाजुः शृ॰ भंतीत्र शांत्रक वस्ति ।
जन्या । ककः ॥ वाजः ॥ शिखः ॥
भंतीत्र प्रगात्माचा मिन्नी कतः
गामनाः । शात्रगासाज्य (छ मू
र्वाज शिख कका ज्ञयः ॥ इति
देवर (कः ॥ त्रमः ॥ त्रकः ॥ मान्मः ॥
त्रमः ॥ जहि ॥ मुकः ॥ मुकः ॥
नश्ज्ञानि । जन्या । शृषिती ॥

बन ।। তबः ॥ वागुः ॥ चाकानः ॥ जुनुगा यथा। गद्यः ॥ त्रमः ॥ क्रिं ।। न्त्राष्ट्रः ।। नाषः ।। इन्हिं-यानि। यथा। हजूर। (जुाब ।। युनि ।। जिस्ता ।। पुक्।। चन्द्राविक्षिः। माजू रेगतिक मनः भिनापि ॥ नर्-रयानिः। जाठ जाबू भय शुक्षिः। **ज् अठ अठ अ्ड्डिः ॥ यगिरिः ।** ইত্যমর ভরতৌ ॥ 🗱 ॥ নবধাতবো যথা। হেন ভারার নাগাশ্চ ভানু বহেচ তীশ্বক । কা॰স্যক • कास्र-লোহশ্চ ধাতবো নব কীর্ত্তিতাঃ ॥ ইতি সুখবোগঃ॥ 🗱॥ अञ्चेशाञ्जा যথা। হিরণ্য রজত কা স্য তামু সীসক্ষেব চ। রহুমাযস রৈত্যঞ ধাতবোষ্টো পুকীর্ভিতাঃ।।ইতি দান-मागद्रः ॥ चिनिष्ठ । मूर्यन- प्रबन्छ॰ जामु : बोर : स्नाध शावम । वस्क সীসকক্ষৈব ইত্যপ্তৌ দেবসম্ভবাঃ ॥ हैि देन हो। 🗱 ॥ मध्या जत्या বথা। ধর্ণ কপ্যঞ্চ তামুঞ্চ রঞ্চ। यमम्पाय ह। भीमः लोर्क मरिस्ट ষাত্রবো গিরি সম্ভবা: ॥ ইতি ভাব-**পुकानः॥ 🛊 ॥ जामामु**ऽद्शिख र्यथा । मृत् उत्तन म जूम कथामान-

'ধতুরা

भयानत्व। अकागुः हिन्छ भाषाय त्यन তামু•মম প্রিয•॥ পূর্ব• কমল পত্রা-ক্ষিণ্ডডাকেশো মহাসুরঃ৷ তামুৰপ 👊 সমাদায় মহৈযবারাধনে রতঃ ৷৷ তঞ্চ **দৃষ্টা ম্যাপ্রো জ**ণপুদর্যেনান্তরাত্মনা। ভডাকেশ মহাভাগব্রহি কি**·ক**রবা-ণিতে॥চক্রেণবধ মিছামি ত্বামুক্তে-ন কেশব।বৈশাখন্য তু মাসন্য শুঙ্ল পক্ষে তু দাদশী ।। মন তেলোময **ठक॰ वाध्ययाज्य अन्य । ज**ार व চক্রেণবিপাটিতোসৌ প্রাণ্ডোপি না ভাগবত পুৰানঃ ৷৷ তাসুস্ক তন্মা•স गमृक् मूयर्भ मङ्गीनि क्रा प्रवृक्षा उव-শ্চ। রঙ্গঞ্জ সীসং ত্রপু ধাতু সংস্থ কা-স্যঞ্চ রীতিশ্চ নলস্ত তেষা া৷ এতভাগবতৈঃ কার্য্য নম প্রিয়ক্তিঃ সদা। এব॰ তামু॰ সমূৎপদ মিতি म ताहरं हि उटा। इंडि प्ताइ भूताप॰॥ # !! हति जान हति वी र्या वन्त्री वीर्ये भनः निवा। भावनः निववीर्याः मां १० गन्नकं भावं जी तकः ॥ ইতি বৈদ্যক ॥ 🛊 ॥ সপ্তোপ ধাতবে যথা। নাক্ষিক তুথিকা-**ज्रि** नीवाक्षन निवाबकाः। त्रमक-শ্চেতি বিজ্ঞেয়া এতে সপ্তোপধাতবঃ ॥ 🛊 ॥ भन्नीत्रञ् मध्याजू ভव

माछाभधाउता यथा। उना महर्क ।
नाजी । काल उनकि गहर्क ।
भूक मा म उनः ज्ञाहा यः मा म ने की र्छाउ नमा ॥ व्यक्ता पर्वा एवा
रक्षा खेथरना क्षम मछा एवा
रक्षा खेथरना क्षम मछा मछा । इंडि
था उना क्षम भाव मुख्या भाव मछा भाव ।
था उन्हि मूथरनाथः ॥
था कुकामी म ही का मी म । इंडि
रहन हमुः ॥

ধাত্ম দ্রী কাঞ্জিক । ইতিহেমচন্দুঃ॥ ধাতৃনাশন দ্রী কাঞ্জিক । ইতি ত্রিকাঞ্জশেষঃ॥

शाजूनः शृ मतीत्र शृष्ण शाजुः।

त्र विश्वा । इिंग् मदानित्तः।

शाजूशृत्तिका सी शाज्शृत्तिका। शावे

यूव इिंग जा। हिंग मदावावनी

शाजूशृति सी शाजकी। हेिंग जाने

शाजूशृति सी शाजकी। हेिंग जाने

शाजूशृति सी शाजकी। हेिंग मदावा

वनी।। शाजूशायक वि।।

शाज्ञांकिक की नाकिक। हैिंग ताकिका। हैिंग साक्षिका।

शाजुमातिनी सी निक्किका। नाहाना

हैिंग जाना। हैिंग मदानितृका।।

शाजुनातनी सी निक्किका। नाहाना

हैिंग जाना। हैिंग मदानितृका।।

शाजुनातने सी तिजः। हैिंग मदानितृका।।

हिमुका ॥

ধ্যুত্বল্লভ প্লী টকণ । ইতি রাজ-নির্বট: য

शाजूतारी भू कात्रक्षमी । इंजि हात्रावनी ॥

ষাতুবৈরী পু• গন্ধকঃ। ইতি শব-চন্দ্রিকা।।

ধাতুশেখর পি কাসীস । ইতি হেমচন্দুঃ।।

ধাতৃপলঃ পৃ• কঠিনিকা। ইতি হারাবলী।।

षाज्भूबः भू॰ जन श्रमातः। ইতি
भदत्वावली।। दुक्र गः मृज्याबकः।।
धाज्भू ज्ञिका श्री धाजकी। ইত प्रतः॥
धाज्भू ज्ञी श्री धाजकी। ইতি भद

ধাত্র॰ ক্লী ভাজন । ইতি সংক্ষিপ্ত-সারোণাদিবৃত্তিঃ।

ধাত্রিকা জী আনলকী। ইতিব্রাজ-নির্ঘট**ো** 

धाजी जी माजा। उँचमाजा। किंकिः
। पामनकी। इंठि मिनि।। के।।
व्यथभाजानु ८ পত্তি काद्रगः। क्ंमा
मनगाजुषमाऽ विका मोहाभानामाय कपुवाकामानाः मेकिः द्वनः

তো দেবান্ পুতি সা আহ। অহনে-ত্রপ্রিবাভিন্না তিষ্ঠানি ত্রিবি**ং ওণেঃ** । গৌরী **লন্ধীঃ স্বধা চেতি রজঃ সত্ত্ব** তনো গুণৈঃ ৷৷ তত্ৰ গত্বা তথা কাৰ্য্যণ বিধাস্যন্তে চ তাঃ সুরাঃ। তা তথা তান্ সুরান্ দৃষ্টা পুণতান্ ভক্তবৎ-সলাঃ।। বীজানি পুদদু স্তেভ্যে বাক্যা-नि जगमु उपा। ইमानि (पवा वीजानि বিশু ৰ্যতাবতিষ্ঠতি ৷৷ নিৰ্বপশ্ব॰ ততঃ কাৰ্য্য ভবতা সিদ্ধি মেষ্যতি। কি-প্তেভ্য স্তব্ৰ বীজেভ্যোবনস্পত্যঃস্ক্ৰিযো **প্ভবন্॥পাত্রীচমালতী চৈব তুলসী** চ নৃপোত্তম ৷ ধাত্রুদ্ভেবা সৃতা ধাত্রী মা ভবামালতী মৃতা।।গৌরী ভবাচ তুলসী তনঃ সত্ব রজো গুণাঃ।স্ত্রী ক্-পিণ্যে বনস্পত্যে দৃষ্টা বিষ্ণু স্তদা-নৃপ।। উত্তেখী সম্ভুন। ভূননাৰপাতি-यथा। শृतू प्रधाञी नास्त्र जाऽ मर्बनान হর শুভ । যৎ পুরা হরিণা প্রোক্ত विशिष्ठ भुजि नात्रमः ॥ शाकी वट्म নৃণাং ধাত্রী মাতৃ বৎ স্কৰতে কৃপাং। मन्त्रामायुः भयः भानः नानारेष वर्ष मक्राधा वाच्यी नामन मार्गा श्राष्ट्र

निर्दाण (मवछ। विद्यानि निव कायरह शाबी ज्ञातन रेव मृगा।। जना ए पु জ্ব বিপেন্দু ধাত্রী স্নান হি যন্নতঃ। প্রুয়াস্যাস হরের্ধান দেবত্ব প্রাপ্য নারদাযেত্র যত মুনিশুেঃ থাত্রী স্নান• मगाहरद्र । जीर्थ वानि गृह वानि তত্ৰ তত্ৰ শ্ৰিযঃ স্থিতাঃ॥ ধাত্ৰী স্নাতা-नि पिवरम यम्राभीनि करनवात । शुकाविजानि विश्वमुन म मामर्ज मञ्जदः ॥ शाबी कलन विल्नुमु যেষা॰ কেশাশ্চ রঞ্জিতাঃ। তে নরাঃ किनव॰ याखि नानयिद्वाकरन स्वनः।। ধাত্রীফল মহাপুণ্য স্থানে পুণ্যতর • মৃত । পুণ্যাৎ পুণ্যতর বংস ভক (१ मूनिश्रक्त ॥ न शका न गरा श्रात न कामी नह शूइतः। এकिव ह यथा পুণ্যা ধাত্রী মাধব বাসরে॥ কার্ত্তিকে भामि विर्णुन्तु शाबीत्रानः मगाहरत्र ৷ যক্ষ তজ্জল মন্নীয়াৎ সো ংশমেপ भवानु याद्या शाबी कनः स्वातन्त्र म रित्र मूनिमंखन। शुंश्विमनि क् छा ८ পাপাৎ মুচ্যতে নাত্ৰ সংশয়ঃ ॥ সং মরেশস্ত ধাত্রী•তা নহন্যহনি মান-বং। মৃচ্যতে পাতকৈঃ সর্বৈ র্মনো বাক্ काय मञ्जरेवः॥ शाजी कनान जाता-न्त्रा महेमी नवमीयू ह । ब्रविवाद्म ह সংক্রান্তৌ সংশ্বরেশুনি পুসর।। यम्ऽ গেহে মুনিশেষ ধাত্ৰী তিষ্ঠতি সৰ্বদা 🔻 তস্য গেহণ ন গছন্তি পুেত সন্মাও वाकनाः ॥ शाजी नात रुवनीनि জাগরে হরিবাসরে। জন্ম বন্ধো বিন-শ্যেত হ্যমেধাযুত কল ।। স্বাধা-मामलेक र्यस कार्खिक एत्रिव**्मण** ৷ পরিতোষণ সমাবাতি তস্য বৈ মা-थवः स्रयः ॥ श्वीहायाः स्रामान्ड वर्गाए मान्न (या मूत्र। मूकि भु-যান্তি পিতরঃ পুসাদান্তস্য বৈ হরেঃ ৷৷ মৃদ্ধি পাণৌ মুখে কণ্ঠেদেহেচ মুনি সত্তম।ধত্তে ধাত্রীফল শ্বস্তু সমসাত্ম। সপুণ্যভাক্॥ধাত্রীকল বিলিপ্তাঙ্গো ধাত্রীফল বিভূষিতঃ। ধাত্রীফলকৃতা-हाता नता नाजायला ভविट्या यः কশ্চিষেফবোলোকেশ্বভেগাত্রীফল• মুনে। প্রিষো ভবতি বিষ্ণোঃ স মনু-वतागाक का कथा।। थाजी कनानि যো নিত্য বহুতে কর সংপুটে। তস্য नाजायां परिता वज्र भिकः भुगहि ॥ शाबीकनः म भाकवाः कनाहिष् ক্র সংপুটাৎ। য ইছেছিপুলান্ভো-গানম্ভেয়ে। মুক্তি মিছতি।। ধাত্ৰীকল কৃতা॰ মালা॰ কণ্ঠছা॰ যোবহেন্বছি। স বৈশ্বোন বিজেবোবিষ্ণুভক্তি 😽

থাত্ৰীফ

রোপি চ॥ ন ত্যাজ্যা তুলদী মালা ধাৰী মালা বিশেষতঃ। তথা ৰুদুাক মালাপি ধর্ম কামার্থ মিছতা।। যাব-**झू**ठेि कथे हा थानी गाना नवंग्र हि a তাবন্মনসি হুৎছোপি সদা লুঠতি কেশবঃ ॥ যাবদ্দিনানি বহতে ধাত্রী মালা॰ করে নরঃ।তাবন্দুগ সহস্যাণি বৈঙ্গপ্তে বসতি ৰ্ভবেৎ ৷৷ সৰ্বদেব মথী शाबी वामूरस्व मनः श्रिया। आरहाश-ণীয়া সেব্যাচ সেচনীয়া সদা বুধিঃ ।! এতত্তে সর্বনাখ্যাত ধাত্রানাহাত্ম্য মুত্তমণ। শ্বোতব্যঞ্চ সদা সন্তি শত্তু-র্বর্গ ফলপুদণা ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে ১২৭ অধ্যাযঃ॥ #॥ অপিচ। তুলসী বৃক্ষমাশ্রিত্য যা যা স্তিষ্ঠন্তি দেবতাঃ। সামলক্যা সপিপুাক্ত তাস্তাএববস-ষ্ঠিচ।। অশৃত বা শৃত বাপি বৎ कर्पामलकी जला। कियरज मानरिव र्विशु ভবেङ मई मक्सरे।। भविव न् जिनः भवि थां बता यः भू अपिकति। স মুক্তঃপাপজালেন সাযুজ্যণ লভতে रतः ॥ थाजी ह जूननी एती निज-ষ্টেমত্র জৈনিনে। স্থান তদপরিত্র न्याम्य भूग्र किया करन्य।। शाक्रा रीन॰ ज्लमा ह निवय॰ यमा ज्मूत । শেলদীঃ পাতক সর্বণ কলিক তেন

তোবিতঃ॥ ধাত্ৰী কাঠস্য মালাঞ্চ या वर्ष्मिञ्मामतः। उर्म म-ক্ষয় প্রোক্ত শুভ বাশুভনের বা।। यस धाजी कनः जूएङ्क मानता श्थिन उप्रिट्। उत्प्राज्य স্থাযি সর্ব• পাপ• বিনশ্যতি ॥ ধাত্ৰী ফল ম্যী মালা বছতে षिकमखभः। युवीमि **मृ**त्भाकाचार সর্বপাপ হর পুড ।। শাশানেপি यह। মৃত্যু স্তস্য স্তাদৈব যোগতঃ। গঙ্গামরণজ পুণ্ড স প্রাণ্নোতিন সংশযঃ॥ নিত্য গৃহাতিযোধাত্রী जूनजी ज्न कर्पन । फिल फिल লভেৎ পুণ্য সো ংখমেধ শতো-ন্ডব । ধাত্ৰী তৰুঞ্চ যে। হন্তি সৰ্ব দেব গণাশুয় ॥ সু দদাতি হরের-**কে** বাত• নাৰ্ন্ত্ৰ সংশযঃ। সৰ্ব-**प्तर गरी शाजी विस्मवा** किमव প্রিয়া।। সম্যাকুণ গুণণ তস্যা বুন্ধ-ণাপি ন শক্যতে।ইতি ক্রিযাযোগ नात २० ज्या गरा ॥ ধাত্ৰীপত্ৰ• ক্লী ভালীশপত্ৰ•। ইতি त्राजनिर्यण्डेः।। **यामनकी**मन**कः।।** পাত্রীপুত্রঃ পু॰ নটঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ উপমাতা সৃতশ্চ ॥

णागमकी। रेडि

थाजीकन जी

कर्राथवः ॥

शायि श्री शायिका। ইতি श्रावी

गदा (करा के भ भू जार्यन निश्रमा।।
शायिका श्री शायी। शार्वे दें जि

जारा। यथा। भर्यकार्यिका राने

का भू भू गुर्था वाभू प्रसूर्यः। ইতি

हजूथी भू कंत्र (१ जिथिजदः।।
शानकः श्री धनाकः। ইতি ता कि निर्ध केः।
शान श्री ज्रेष्ठ ।। धनाकः। श्री निर्दे केः।
शान श्री ज्रेष्ठ ।। धनाकः। हर्गमक्तिः।
दें ज्रिक्ति। ज्रिक्ताः।

शानाः छी ज्ष्ठेयवः। दछ्वहनारश्चायःभयः। ইত্যনরः॥ यवास्त निद्ध्या
ज्ष्ठाः स्ठा थाना ইতি জিयाः।
शानाः न्य पूर्कता कका छ्रेश्वता
खत्रवणः जाः॥ ज्था स्माः करु हर्षि
नामन्यः संभुकी खिंजाः। ইতি ताक्षनिर्वण्डः॥

शानाकाः जी शानाः। निज्जवङ्वहता-खार्यः भद्गः। ইতि भद्रतङ्गावली॥ शानाहृर्गः क्षी ज्क्षेयवहृर्गः। मक्वदः। ইতি ছেমहन्दुः॥

থানী জী পীলুবৃক্ষ:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।। আধার:। ধীযতে ধার্যতে হত্র আধারে অনট্ টিত্বাদীপ্। বুঝা। সংস্থানী রাজধানী। ইত্যাদি ভরতঃ ।।

থানুষঃ ত্রি থনুর্ধরঃ। ইত্যনরঃ ।।

থানুষা জ্রী অপানার্গঞ্জঃ । ইতি

শব্দন্তিকা ।।

থানুষ্যঃ পু॰ ব॰শঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

থানেয॰ ক্লী ধন্যাক॰ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

ধানেযক শ্লী ধন্যাক। ইতি জটাধরঃ॥ ধান্ধা জ্ঞী পৃথীকা। এলাইচ ইতি ভাষা। ইতি শহচন্দ্রিকা॥

ধান্য শ্লী চতুন্তিলপরিনাণ। ইতি শুভদ্ধরঃ॥ ধন্যাক ।।পরিপেল ।। मञूषञ्थूमारि। धान ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। ভোগ্য ২ ভোগাই• o अझ 8 अरु ९ ६ कीवमायन b ন্তম্করিঃ ৭ ব্রীহিঃ ৮। তত্র শুক **খান্য গুণঃ। ত্রিদোষ শমনত্ব॰ তে-**জा वनाञिमय वीर्य्य क्षि माञ्च्य ॥ 🛊 ॥ শনী খান্য শুণাঃ। গুৰুত্বু॰ । श्चित्रद्व । विवक्षमाञ्च्य ॥ 🗱 ॥ তৃণ ধান্য গুণঃ। বাতাত্মকত্ব• । नि-শিরত্বক। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ !! 🛊 🛚 ৷ শ্বান্য ত্রিবিধ । হেমন্তোন্ডবঃ শা-निः > शीपाजः वश्चिकः २ शुक्रि কালভব আশুঃ ৩। এতেষা• গুণা **खब्द भरम मु**ष्टेवताः ॥ सः ॥ वाभिज् बान जिला धक्य । 🕸 ॥ अयोशिज थाने अना वाशिष्ठवाना खना कि कि भीनः ॥ 🕸॥ द्वान्याजिद्वान्य थान्य ্ ওণাঃ। লঘুরু। শীরুপাকির। ওণো-खत्रव । जनाहिव । (नाम इत्रव । ्रवण्डा मृज् विवर्षने दश्याः 🕸 ॥ नदः शानाः अञ्चित्रानित्। मःदर-সরোথিত পান্য সমু।। সংবংসর ্ছযাদৃজ্ব পান্ত বা ত ভূফোপন कंक॰ मधुखत न् नु वृश्विति ।। नून थान्। भभी थानाक रहे जहा हुन्द् भुमंख ।। मभी थाना वर्षापकी उ বাতকৃৎ ৰক্ষণ 11 অভিনৰণ তং शुष्टित इक ॥ नवा यव भाक्ष नाव তিলা হিতাঃ। পুরাণা বিরসা कका न उथार्थनदाः ॥ यनार्खनः ব্যাধিহত অপর্য্যাগত অভ্নিত্র नवक शाना न स्ववर ॥ अकाल জাত ধান্য বিরস সর্ব ধাতু পুদু-यनका । २७ बाजवझङः ॥ 🗱 ॥ ্ৰুতাদৌ অন্ত্যাগে বৰ্জনীয় ধান্যানি यथा। अकारमा वित्नस्य स्म মাত্র পরিত্যজে । কল মূল ত नारीन किष्णुक्ताः शुक्नारयः॥ नमञ्जभाना म मु उ॰ गिनि ख यि छ। মুতি শোন্যানি বিবিধানী হ জগতগ্ৰু

मृग् यङ्गजः ॥ महाम मार्व मम्बीन्ह धान। (कामुव नर्यभाः। गूडेका ताज-गायाण जुमूरता झुमत ख्या ॥ यव গোধ্ম মুনাশ্চ তিল কলু জলপকাঃ । গবেধুকাশ্চ নীবারা আডকশ্চ কলাযকাঃ।। সাঞ্কো বজুকোরকঃ কীচকো ৰডক স্তথা। তিলকা স্টণ-कारप्राम्ह थानप्रानि कथिजानि देव ॥ এডকান্য সমুজ্ত **নম•ভবতিশো**-ভনে ৷ অনত্যাগে বুতে ভক্ষ্য মেত বেব বিশহ্মবে !৷ ইতি পান্মোত্তর-थंखः॥ अ। व्यथं योन्। हिन्नं हिनः। ত্তর তিথ্যঃ রিক্তাতিরিক্তাঃ। বারাঃ রবি শুক্ত সোম বুধ বৃহস্পতীনা । নক্ষ গণি কৃত্তিকা ভরণী অন্মেষা পূ-वं जापू भर शनिष्ठा श्रूनियाण (कार्ड) চিত্রা উত্তরকল্পী উত্তরাখ্যাল উত্ত-রভাদুপৎ-এতানি ৷ তব চন্দুঃ (भाजनः। नमानि वृष ति इ वृन्हिक बस्य मिथून ज्वा कन्। धनुःश्रवीर्ष यकीय बन्नवा नकत मण्डकानि া। 🕏 ।। অথ পান্য স্থাপন দিন"। তত্র नक्षकाल । जन्भी जानुश क्खिण विशाशा श्र्वकत्नुनी श्र्वी-ৰাতা পূৰ্বভাদুপৎ জ্যেষ্ঠা মহা ভি-নানি। তক্ত বারাঃ শুভ গ্রাণাং k

मशानि मकत वृष मि॰ ह वृष्टिक क्रिष्ठ मिश्न कन्डा थ्यू भी न म॰ छक्तिन । क्रिश व्यथ शान्डा कि वृष्टि कान किन॰ । क्रम नक्ष्ण शिन्द्रिश व्यक्ति क्रिश व्यक्ति विष्टिश विष्टिश विष्टिश क्रिश निवार्थ के उत्तक हुनी के खत्रा वाण के उद्यक्त पृष्ट (द्वाहिश दिन वजी भूनर्व मूं श्री श्री क्रिश । है कि क्रिश किश ।

প্রান্যক॰ ক্লী স্থান্যকে। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ।।

ধান্যকোষ্ঠক॰ প্লী ধান্যবৃহ্ণ।
গোলাইতিভাষ।।ইতিহ্লাযুধঃ॥
ধান্যচনসঃ পু্ চিপিটকঃ। ইতি
ত্রিকাণ্ডশেবঃ॥

शान्य शान्य शान्य शान्य विभिन्न विभिन्न विभिन्न । यथा । विद्युत हायत वाशि कार्डिक ग्रांख विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास शास्त्र विश्वास शास्त्र विश्वास शास्त्र विश्वास शास्त्र विश्वास शास्त्र शास्

त्वन निर्वाय त्रक्रेनः ॥ अख्यायाम् ६ (बन्ध महास्मात्म काणि हेपुटेरियः । मध्या ह जराबन विज्ञाहाः न का-রযেৎ ৷৷ চতুর্থা-শেন ধেনাবৈ বৎসন্ত পরি কল্নযেৎ। কর্তব্যে কন্ম শৃকে তু রাজত কুর সংযুতা।। গোকংঃ পূর্বদ্যুগণ <del>মগুৰুঞ্চলনে ভথা। মুকা</del> ফলমখা দন্তা মৃত ক্ষৌদুময়ণ মুখণ 11 পুলন্ত পত্ৰ লুবিণা কাংস্য দোহন-कानिजा। इक्ष्यिश्वाः शानाः क्लोन श्रृह अमित्रिजा II नाना **कव ज**रमा-পেতা রত্নগর্ভ সমন্বিতা ৷ পাদুকো-পানহৌ ছগ্ৰে ভাজন তৰ্পণ তথা।। ইত্যেব• রচযিত্বা তা॰ কদ্বা দীপার্চ-नारिकः । शुग्रकानकः मःशुन्धः मा-ण्डः मुङ्गाञ्चरत्रा गृशी। बिः शुप्तकिन **मा**-वृত্য मञ्जगातमं की खंरय । उर বিপু মহাভাগ বেদ বেদাক পারগ॥ বা মেতাঞ্চ মযা দক্তা গৃহীয় ত্ব জি-জোত্তম। প্রীথতা• মম দেবেশো ভ-গৰামধুসূদনঃ॥ ব্নেকা লক্ষি পো-हिल्म बोही या চ বিভাবসোঃ। শকে শেচীতি বিখ্যাতা মেধা মুনিযু সন্তম ॥ ज्याद गर्बमयी (मवी शान) कालग न ছিতা। এব মুহার্য্য তা ধেনু पुरक्ताय नित्वस्य ॥ मङ्ग श्रीर

थान, भायः शु॰ थान, विक्यी। इंडि न कि धनात्र वताकत्र १।।

ধান্যবৰ্জন জী বাৰ্জুব্য: । ধানের বাড়ী ইতি ভাষা । ইতি ত্রিকাও-শেষঃ ।।

थान जा जः शृ॰ यवः। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।।

बानावीकः जी बनाजिकः। श्रास्त्र क्राबा निर्यण्डः॥

यानाजीतः शू॰ मायः। ইতি ताल-निर्यकः॥ वाना भी वंक की धाना मा की की । धार्मित শীৰ ইতি ভাষা। ইতি জটাধরঃ।। थानप्रकः ज्ञी धनप्रकारहे जिल्हे मह मुर्गा थान ग्राहकः श्रू नानार्थ धानं। निर्मिত भर्वजः । जम् दिशानः यथा । भूषसा धान्रिभवः जामिजीया লবণাচলঃ। ভড়াচল ভ্তীয়ৰ চতু-র্থো হেম পর্বতঃ ॥ পঞ্ম ত্তিল-रेणवः जा८ यष्टः कार्याम शर्बेणः। সপ্তমো ঘৃতলৈলক রব্ন লৈল ভথা ষ্টমঃ ।। রাজতো নব্যত্তীক্ষ্মীমঃ শকরাচলঃ। বক্ষ্যে বিধান নেতেবাং यथा बमनूश्र्वणः ॥ व्ययमि विष्रुतः পুণ্যে ব্যতীপাতে দিনকযে। শুদ্ধ-পক্ষে ভূতীয়ায়া মুপরাগে শশি-कर्य।। विवारहार् ग्रन-परक्रवू वाम-मात्रभवत श्रुनः । मुद्रायोः लक मण्डाः स भूगप्रक वा विधायका ॥ , बाने दे लिया है स्वाः भाज विकानजा। जीए वार्यजन वाभि भारत वा उवनाक्ता। नथ-ण॰ कात्ररिक्का ठकूत्रम् त्र्रम् ो। ग्राब्धक प्रवनः छहट श्राद्मेयक विधाने छः । रगामयनान् विश्वायाः **ज्यावाडीर्वा दे मणान् ॥ उत्राध्य १६७ मर्ग्याविष्ठ शर्वजीदिउः।** 

ধান্য দুেরা সহস্তেণ ভবেদ্দিরি রিছো-खमः॥ मध्रमः शक्ष्माञ्जिकः कनिष्ठः স্যাঞ্জি: শতৈঃ। নেৰ মহাবীহি-भगस गत्था भूवर्ग वृक्तकर भ्रायुक्तः न्तार । পृर्द्ध मूकाकन रक्षु यूका यात्मः ह स्थातम्क शुद्रवारेगः ॥ शण्ठाइ गाक्याञ् नी नत्रेषः स्नोद्धाः न रिवर्ग्य माता जनारिंगः। श्रीथ अथरि अ রভিতঃ পুরাল লতাবিতঃ শুক্তি শি-नाउनः नप्तरः ॥ वुकाथ विकुर्छग-वान् भूत्राद्धिः र्पिवाकरताभाव हित-শ্বয়ঃ স্তাশ্ব । মূর্দ্ব ব্রব্দাগত মৎস त्रिंग कार्याञ्चलक ह भून विद्वीषाः ॥ চত্তারি শৃকাণি চ রাজতানি নিতয় ভাগেম্বপি রাজতঃ স্যাৎ। তথেফু বংশাবৃত কেরেন্ত যুত্যের পুসুরণ-क रिकृष भूते स्ताप्युपतावणी मार भ्रवंग बीवानि इ म्किरान्। वानाः निभक्ताम्थकव् तानि तकानि চৈৰোত্তরতো ঘনালী।। রৌপ্যাম-(इन्द्रु भूमूथानंथाक्षे मंश्राभः ला-, काश्रिभाडीन् करम् । नाना कवानी ্চ সমস্ততঃ স্যাননোর্মণ মাল্য বি-লেপানঞ্।। বিতানক্দোপারি পঞ বৰ্ণ করেনি পুষাভরণ সিতঞ্চ।ইত্থ निर्वेभगम्ब भाषाम् । त्याना च वि-

इस्र गित्रीन् करम्।। जूतीय जारगन **हर्जुर्फिणक मन्डाशरर शृह्म-शिल-**भनाष्ट्रान्। शृद्धि मन्तत्र मत्नक कल। वनीजि यू कि॰ यदिः कनक जुनु कनम हिट्टिशा कार्यन काळन्मर्यन वि-রাজমান মাকার্যেৎ সমুন বস্ত্র বিলেপনাচ্য । ফীরাকণাদ সর-সাথ বনেন চৈব রৌপে গ্রেশক্তি ঘটি-তেন বিরাজমান ।। যাম্যেন গন্ধ महनक नित्तक्तीरया रशाश्म ज्रक्ष्य নশঃ কলবোতজো বা। হৈনেন ৰক্ষ-পতিনান্ত নাসনেন বক্তৈশ্চরাজত বনেন দ সংনুতঃ স্যাৎ। পশ্চাত্তিলা-টাল ননেক সুগন্ধি পুষ্ণ সৌবর্ণ পিল্ল-च हित्रभय रूप्त युक्त । आकात्राय-দুজত পুন্ন বনেন তদ্বৰজ্ঞান্বিত দধি-সিতোদ সর স্তথাগোগ্রাস স্থাপ্তত विश्व देणन मर्था उत्तर देनन मू-भार्थग्मि मायमयः मूवद्धः। भूदिन्नः হেন বঁট পাদপ শেখরন্ত নাকারয়েৎ क्नक (धनू विज्ञाजमान ।। माक्कीक ভদুসুরুষ্ণ চৰনেন তদ্বদ্বৌপেরণ ভা-यक्ष्वज ह गुङ्-तिथाम । स्थान তুর্ভি রথ বেদ পুরাণ বিক্তি দাঁজৈ র-নিন্দ্য চরিতাকৃতিতি দিকৌন্দুঃ গ্র পূৰ্বেণ হস্ত মিত মত্ৰ বিধায় মুঙ

कार्य। खिल येव घ्राउन मिय क्रिक । त्रें को हं जागत मनुष्ठ गीठ ज्रेंग्र त्रावारेनक कथरामि निलाहयानाः ॥ दः नई (म्वगंग भाग नित्ध विकक्ष নমদ্ গৃহেম্বর পর্বত নাশ্যাশু। ক্ষেম• বিধৎ স্ব হৃক শান্তি মনুত্তমাণ 'নঃ সংপ্রজিতঃ পরম ভক্তি মতা ম্যা হি।। ত্বনেব ভগবানীশো বুদ্ধা বিষ্ণু र्षिवाकतः। मृखीमृखं जगवीज दः नः পাহি সনাতনঃ॥ यत्राङ्घः লোক शानाना॰ विश्वमृर्<mark>खिन्</mark>ठ मनिरद्गः । ৰুদাদিত্য বস্নাঞ্ তমাছান্তি· পু্য-इ म ॥ ययामम्न अमदि नाती छि-শ্চ শির শুব। তমানামুদ্ধরাশেষ দুঃখ সংসার সাগরাৎ।। এব নভ্যট্য ज॰ जिक् नन्त्र क्षािल्ड्स्ट । যমাট্রের রথেন ত্ব॰ ভদ্যুম্থেন বিশে-ষতঃ॥ শোভসে মন্দর ক্ষিপু মত स्रिष्टे करत्। ভব। यमाह् जाग्नि अंषू-बील दु॰ गक्तमारन।। गक्क ई दन ला-ভাবানতঃ কীর্ত্তি দ্ ঢাস্ত্রনে। यमाङ् मञ्मालन रेवज्राखन वरान वा ।। হির্মধাশ্বথ শির তমাৎ পুষ্টিপু वास ता । उँखेतः मक्खि रंभाए नावित्वन वत्वन ह।। मूना र्व ताकरम 'নিতানতঃ 🔊 রক্ষাস্ত গে। এব 🏻 मामख्रजान् नहीन् शुठार्छ विभरण भूनः ॥ नाषाथ खत्रत मन्त्रासप्रमः পৰ্বতোত্তন•। বিষষ্ট পৰ্বতান্দ্যো-मृज्युः कमाना मूल ॥ भान पर्। इज्विं भामथवा मन नांत्रम। माकिजः मध वाष्ट्री वा शक मुन्नी म्मकियान् ॥ একাপি গুরবে দৈয়া কপিলাথ প্ৰয়েমী ৷ পৰ্বতানা মশেষাণা মেষ এব বিধিঃ সৃতঃ ৷৷ তএব পূজনে মস্তা স্তএবোপস্করা মতাঃ। গুহাণাণ লো-क्लानाना वुकारीनाक मर्वरा। अ-শব্দেশৈব সর্বেষু কোমঃ শৈলেষু প-ঠ্যতে ৷৷ উপৰাসী ভবেন্নিত্য নশক্তৌ নক্ত নিষ্যতে। বিধান সর্ব শৈলানা ক্রমশঃ শৃণু নারদ।। দানুক্রালে চ যে ম ব্ৰাঃ প**ৰ্ভেষ্**চ মুহ্কেল। অম∙ বুন্ধ যতঃ প্রোক্ত মৃষ্ট প্রাণাঃ পুকীর্ত্তিতাঃ ॥ অমার্ডিবন্তি ভূতানি জগদমেন ব-র্ত্তে। অমনেব ততে। লক্ষা রমনেব জনাৰ্দনঃ।। খান্য পৰ্বত ৰূপেণ পাহি তমানগোত্তম। অনেন বিধিনা যক্ত पन्ताकानाग्य शिति ।। सन्बत **म**ठ मानुः प्रविचारक महीवरछ। अन রোগণ গন্ধবৈ রাকীর্ণেন বিরাজতা।। विमातन पिवः शृष्ठ मायाणि मूत সেবিতঃ। ততঃ কর্ম ক্ষয়ে রাজ্য মুহ

গ্লোতীহু ন সংশযঃ ।। ই**তি নৎ স**্ত পুরাণ ॥ ধান্যাম লী কাঞ্জিক। ইত্যমর: 11 ধান্যায় •শালিচুৰ্ণানা কোদুবাদি কৃত॰ ভরেৎ। ধান্যায়॰ ধান্য যো-निदाट श्रींगन वघू मीशन।। अय-চৌ বাত রৈনেগ্রু সর্বেশ্বাছাপনে হিত•। ইতি ভাবপুকাশঃ॥ ধান্যারিঃ . পু॰ মূষিকঃ । ইতি রাজ-নির্ঘণীঃ ।। ধান্যস্য শত্রো তি ।। थात्तराखमः शृ॰ मानिधानरः। ইতি ॥ রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ थान ही शृरु ॥ (परः ॥ विद् ॥ ় পুভাবঃ । ইত্যমন্ত্রঃ ॥ রশ্মিঃ ॥ স্থান-থা জুন্ম। ইতি মেদিনী।। ধানকঃ পু॰ নাম্কুপরিমাণ। ইতি বৈদ্যক পরিভাষী ৠ थामनिषिः शुः म्यं । इंछि करि। ध्रः।। यामनी जी थमनी। इंडि नय-विमुका॥ ধামার্গবঃ পু॰ অপামার্গঃ। ইত্যমরঃ ।। ঘোষকঃ। ইতি মেদিনী।। পীত-ষোষা। ইতি রন্ত্রমালা।। থায়ঃ ত্রি ধারণকর্তা। ইতি মুখবোধ

व्याक्रवंगः ॥

शायाः वि शावनकर्वा ॥ शायनकर्वा যথা। ভ্রসি ভূমি রস্যদিত্রিরসি विश्वमुधाया। इंज्यार्धियाममञ्जः ধায্যঃ পু- পুরোহিতঃ।ইতি মুশ বোধ ব্যাকরণ ॥ शायत जी चारी मिमकार्थे थक्। অগ্নি পুজালন মন্তঃ। ইত্যমরঃ॥ शांत्र क्री वर्षाच्छव कुन । তिष्दिविशः। गावः ) जार्य मुक्ष २ । यथा। यमा-महामित्न मानि मूर्यहः साठी वि भाश्याः। जमायु जनरि मूकः गाक मूक॰ मनीविज्ञिः ॥ जनप्रा मृगनीयानि नकत्वयु यमशूरेमः । অভিনৃষ্ট মিদ॰ তোয• সামু দু মিতি म·क्किन ॥ जरगर्सनः । गा**क** डःवः सामू मूनी उनक कि शुनः পিত্ত কফাপহঞ্চ। নির্দোষ মিষ্ট॰ লঘু তচ নিত্যু গুণাধিক ব্যোল্ল गृंशीज माइः ॥ मामू मु मिलनः শীত কক বাত কর ওকা চিত্রায়া , <del>সাথি</del>ৰে উচ্চ গুণাঢ্য গা**ক** বন্দ-বেং ৷৷ পতিত ভুবি তত্তোৰ গা **জ• সামুদ্র মেব বা বস্বাপুর বশান্ধ**-(इमन)मन् पुनामिकः । ইতি রাম-निर्घणः ॥

ার: পু॰ গুাবান্তর ।। খণ । ইতি মেদিনী ।। জলধরাসারবর্ষণ । ইতি হেমচন্দু: ।। পু। ভঃ ।। গদ্রীরঃ। ইতি শদরবাবলী ।।

शातकः भू• कनम् । ज्यमा ८ भन्ता हि अर्थ[। पुरकारोह। उँ८ शिक नक ণ নান কথবানি মহামুনে। ধার काः कनमारिकद एन लाक शुकी-र्खिजाः ॥ अम्र्लं मथ्रमात्म जू मर्ब (सरेवः नमानरेवः । गृंष्ट्रानः नम्स्त्रः কৃত্বা নেত্ৰ• কৃত্বা তু বাসুকি•। উৎ-পদ নমৃত তত্ত্ব নহাবী ঠ্যুপরাক্রম । তস্যায় ধারণার্থায় কলসঃ পরি-कीर्जिजः॥ कनाः दनाः गृशीया বৈ দেবানা॰ বিশ্বকর্মাণা। নির্মিতো **২**য• সুরৈ র্যমাৎ ক**লস ন্তেন** উচ্য-তে।। কলসস্য মুখে বুন্ধা গ্ৰীবা-যান্ত মহেশবঃ। মূলে তু সংছিতো বিষ্ণু মধ্যে মাতৃগণাঃ স্থিতাঃ ॥ শেষান্ত দেবতাঃ সর্বা বেষ্টয়ন্তি ठजूर्षिणः। बरको जू मागताः मध नथ बीभास न जिलामनक्वानि गुराः गर्द जरेषव जनभद्रीकः। হিমবান্ হেমকুটশ্চ নিষ্ধো মেৰু **द्भव ह ॥ द्यारिखा भाग्र वस्क** সূর্য্যকান্তিক পর্বতাঃ। গলা সর-

चर्जी मिन्नुः मूखना यभूना नहीं ॥ थै-तावजी मजुरा जयारेवजतभी मरी। (गानावती नर्यता हमशी नाम सर्।-नहीं।। अक्षक्व भुयागक्वक र् म পृथ्रकः। अमात्रश्वतः में अंतीकः ग का मागत अवह ॥ श्रृथिवता यानि তীর্থানি কলসে নির্বসন্তি তে ৷ গুহাঃ भाष्डिक शृक्षिक श्रीजि शीयबि द्ववह ।। यादारा १थ यजूर्वमः माम (वम ন্তথৈব চ। অথর্ব বেদ সহিতাঃ সর্বে কলস স•স্থিতাঃ ৷৷ নবৈব ক<del>লস</del>াঃ পুণ্যাঃ শন্তুমূর্ত্তি সমুক্তবাঃ ৷ গো-ভ্যোপগোভাগ गक्टः सम्म তথা পরঃ।। মনোহরঃ খলু ভদুঃ পঞ্চ-भः পরিকীর্তিতঃ। বিরজ उनुमूयक ষষ্ঠসপ্তমকাবুভৌ।। সম্ভ্রমিন্তি নিদুযো-পেতো नवस्म विजयः भ्रजः। नरवव কলসুঃ প্রতীতা অধিদেব নিবোধত ৮ শৃণু বৎস যথা তেবা॰ দিশা॰ ন্যা-সো ব্যবস্থিতঃ ৷ নব্মো বঃ সমাখ্যা-তো বিজ্ঞবো নাম নামতঃ ॥ শিক্ खब हिणः माकार महंशाश रहाः मूज: । किजीन्त्रा काई कवरमा দ্বিতীয়ো মল সম্ভবঃ॥তৃতীয়ঃপবন শৈচৰ চতুৰ্যন্ত হতাশনঃ। পঞ্মো यक्रमान्छ বপ্তস্তাকাশ সম্ভবঃ।। সো-

ধারণী

মস্তমগুমঃপ্রোক্ত আদিত্যক তথা-श्रेमः। এতে চোৎপাদিতা দেব্যা শিবেনাধিষ্ঠিতাঃ পুরা ॥ ইন্দুস্য मूर्खय कारही मूर्यप्राष्ट्रा नवमः निवः। कि जीनुः भूर्वरा नामाः शनित्म জল সম্ভবহুঁ৷ বাষবের বাষবো ন্যাস্ত আশ্রে ইংলি সম্ভবঃ। নৈশতে যজমানস্ত ঐশীন্যাকাশ সম্ভবঃ ॥ সৌম্য মুত্তরতো যোজ্য সৌরণ **एकिंग**(जो न्याम) न्यान्य कल्या-**नाङ्ग्रं**क्षभःविज्ञ्छिख्टा।क्**न**मानाः भूर्थ नुष्का श्रीनायाः निष्ट्रतन हि। मक्षु माञ्गनाः मर्द्ध (मन्द्रा (पर्वा-শ্চ পদ্নগাঃ।। জক্ষো তু সাগরা खियाः मश्रद्वीभा ह (मृति । निया हिन ज्यामाह गक्त दी प्रवय ख्या।। পঞ্চত্তা স্তথা ধারা সেবা সবক্তাঃ ছিতাঃ । পূর্ণাঃ প্রেন্তা্যেন সিন্ধাস্ত্রেকান্ততোমুনাে। সরিৎস্রঃ नथाতन তডाগেन इलन व।। वाशी क्ला । दिर्दान मामू (मृं भ्रमा । विका ॥ সর্বন্ধল মাক্ল)।ः गर्व किल्वि नामकाः। अভिष्यत्व जमा शुक्राः क्लमा हर्माः मुजाः॥ याजा विवा-र काल-वा भुविधा यख्व नर्यति। (याजनीया दिः नास्य गर्सकान शु-

সাধকাঃ ॥ পুহান ধার্যতে বমানু মাতরা বিবিধা স্তথা। দুরিতাংকি মহাঘোরাংস্তেন তে ধারকাঃ মৃতাঃ ॥ একৈকান্ত কলাং মৃত্তা ক্ষিত্যা-দীনাং যথা ক্রমং। সংহত্য সংস্থি-তা যমান্তেন তে কলসিঃ মৃত্যুঃ॥ হৈমরাজত তামা বাস্ম্যা লক্ষণা বিতাঃ। পঞ্চমাসুল বৈপুল্য মুৎ-সেধঃ বোডশাসুলঃ॥ কলসানাং পুনাণম্ভ মুখ্যমন্তালুলং ভবেৎ॥ ইতি দেবীপুরাণং॥ #॥ ধারণ-কর্ত্তরি ত্রি॥

ধারণ° শ্লী বিধারণ°। ধরণ ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী॥

शात्रण की तृष्तिः। ইতি ताक्षनिर्यण्डः।
नागां भवश्चितः। उद्भगां गः।
मः इ। २ मर्गामा क इिनः ।
ইতানরः॥ याणाम विष्मयः।
ইতি মেদিনী॥ সতু অদিতীয় বস্তু
नाग्नं शां यात्रणः। ইতি বেদান্ত
मातः॥ याद्रपि दिनमा हिन विकास मातः॥ याद्रपि दिनमा ।
विकास मात्रणः। क्रिका मान्य विष्क्रया मुक्ति स्वात्रणः। हिन विक्रभूताणः।
वात्रण की नां दिका॥ वृष्तिक मान

भावाक

्राजितः। इंडि निरिनी ॥ (मुनी । " इंडि. इंसा हमुः ॥ भारतीया जी धर्मीकमरः। इंडि त्राज-निर्वणेः॥ धार्य्य जि ॥ धार्रिकी जी श्रिवी । इंडि मप-ब्रह्मार्व्णी ॥ धार्रा जी जायाना शक्षाणिः ।

তনথা। আস্কন্দিত ১ ধৌরিতক ২ রেচিত ৩ বঙ্গিত ৪ শ্লুত ৫। **इ**े छात्रवः॥ रेमना श्रिमक्यकः॥ घटन **रिहिर्•॥मङ**िः॥ मुवम्। शुभा उः ॥ খলাদেনিশিতমুখ॰। ইতি মে मिनी ।। উৎ कर्यः ॥ तथहकः। इंछि হেমচন্দুঃ ॥ যশঃ ॥ অতিবৃষ্টিঃ ॥ **भग्रः। ইতি শদ্**রত্বাবলী ॥ ঘনা সার বর্ষণ ॥ সদৃশঃ। ইতি বিশ্বঃ॥ দক্ষিণ দেশস্থ পুরীবিশেষঃ। ইতি বিক্রমচরিত ।। 🏶 ।। অথ জ্বরাদি শান্ত্যর্থ• শ্রীনরসি-হাদি মৃধ্রিজল-ধারা পা তন বিধিঃ৷ তথা নহাঁজুর-<u>পু</u>ন্তে ধারা• দেবদ্য মূ<del>র্ত্</del>ধনি। সম্ভতা• नात्रिनिः इन्। वर्गाक्षा कात्रस्यः वि-किः ॥ रहानक खाडनरेक्टव **उरे** (मायः भुमागाजि। ইजि नृति-इ-श्रुवागः ॥

। । । कित्र कर संव्यक्त पुरस्तः ।

धात्रिशी

কেলিকদম্ ইতি ভাষা। তথপর্য্যায়ঃ। পুরেষ্যঃ ২ পুলকী ও
ভূসবল্লভঃ ৪ মেঘাভঃ ৫ পুর্যকঃ ৬
নীপঃ ৭ পুর্যুবেণ্যঃ ৮ কলম্ব কঃ ৯।
ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।। থার্মুক্ট মুকঃ ১।
ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ

ধারাকুরঃ পু॰ নাশীর্র:॥ শীকরঃ॥ ঘনোপলঃ। ইতিমেদিনী॥ ধারাকঃ পু॰ তীর্থ•॥ খঙ্গঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥

ধারাটঃ পু॰ চাতকঃ ॥ মেঘঃ ॥ তুরস্কঃ

। মত্তহন্তী। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥
ধারাধরঃ পু॰ মেঘঃ॥থন্তঃইতিমেদিনী
ধারাফলঃ পু॰ মদনবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্মণীঃ ॥

ধারাবনিঃ পু• বাযুঃ। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ ॥ ধারাবিষঃ পুশু থয়ঃ। ইতি ত্রিকাও-

(श्रवः॥

श्रातामणाठः श्रूप महावृष्टिः। उद शर्यायः। जामातः २। इत्यातः॥ श्रातात्र् ही जी जिशातत्र् ही। उत्याति। श्रित हित्विचाया। हित्य ताजनिर्विः श्रातिशे जी श्रती। हित्य स्पत्रः। वृत्ती॥ साम्यानिक्षः। हैति सम्बन्धः

व्यक्ति ॥

ধিক্বত

ओ

কণ্টকারিকা। ইন্টি

धार्त्तब्रेशमी जी इ॰ त्रभमी। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

ধার্মিকঃ ত্রি ধর্মশীলঃ। তৎপর্য্যায়ঃ । দেবযুঃ২। ইতি জটাধরঃ॥

शार्यं वि शाति । यथा। शाणानु ताथ वमू भूषा विनाश रखा हिट्या-खताश्विभवना मिखित्वव जीयू। जन्म-क्र बीन तथ मूक मिता ए मवाती शार्यं । नव वमने की श्वत विभु जूडो।। देखि मन्यभूषी भारे हैं।

4.

থাব উ উ জবে। শীঘুগতৌ ॥ মৃজি।
শুদ্ধীকরণে। ইতি কবিকল্লফনঃ।।
থাবকঃ ত্রি থাবনকর্তা। শীঘুগমনকর্ত্তা। থাউডিয়া ইতি ভাষা। ইতি
থাবপাতোর্ণক পুত্রবেন নিল্লয়ঃ।।
থাবন লী গমন ॥ শুদ্ধিঃ। ইতি
মেদিনী।।
থাবনিঃ ত্রী পৃশ্লিপণী । ইত্যমরঃ।।

রত্ননালা।। ধাবনী স্ত্রী পৃশ্নিপণী। ইতিনেদিনী ।। কটকারী।। ধাতকী। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

ধাবিতঃ ত্রি গতঃ॥ মার্চ্জিতঃ হৈতি ধাবধাতোঃ ক্ত পুত্যুযেন নিয়মঃ॥ ধাসাঃ পুণ পর্বতঃ। ইতি বৈদিক পুযোগঃ॥

ধি শ ধ্তৌ। ইতি কবিকল্পদ্ধনঃ।।
ধিক্ ব্য নির্ভন্ন নিং।। নিন্দা। ইত্যনরঃ
ধিক্লারঃ পু॰ ধিক্। তৎপর্য্যাযঃ।
নীকারঃ ২ অবহেল ৩ অমানন ৪
ক্ষেপঃ ৫ নিকারঃ ৬ অনাদরঃ ৭।
ইতি শহরত্লাবলী।।

ধিক্তঃ ত্রি নির্ভন্ধিতঃ। অসৎ
করণাদিনা ধিগিত্যস্য করণ ধিক্লারো নিন্দা ধিগিতঃ ধিক্তঃ ধিক্
ত্বা॰ ইতি ভদ্ধিতো ধিক্ত ইতি
যাবং ।ইতি ভরতঃ।। তং পর্য্যায়ঃ
। সপদ্ধর্গঃই।ইতিপ্যানিবর্গে অমরঃ
র্থা নিন্দিত মাত্র॰। কৃত ধিক্লারস্য
প্যানিবর্গোক্তস্য পর্য্যাযান্তর নিদ্
অপ্যানিবিষ্যার্থ॰। ধিগস্ত ত্বা॰ ইতি
কৃতঃ শনিতো ধিক্তঃ। ইতিভরতঃ

ĺ

👔 उट्भर्गामः। जवबीनः २। इंडि 🛙 वित्यवर्गिन्य वर्ण अनतः॥ थिक्किया औ किया। इंकि एक्स हम्मुः ধিশ্বণঃ পু॰ বর্ণসক্ষরবিশেষঃ। তস্য व्यकार्वा । य**ब्** वासनामाया-প্ৰব্যাঃ জাতঃ । ইতি মনুঃ ॥ षियाम्मि छिः भू भूई जिनवित्मवः । মঞ্জুযোষ ইতি খ্যাতঃ। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ ॥ আঁত্মা। ধ্যাত এব ধিযাম্পতি রিতিপুযোগদর্শনাৎ॥ বিব ই ন পুীতৌ ॥ গতৌ ॥ ইতি কবিকল্পদ্ধসঃ।। ধিষ লির রবে। ইতি ক্বিকল্লজ্মঃ॥ ধিমণঃ পু॰ বৃহস্পতিঃ। ইত্যনরঃ।। **थियना जी वृक्तिः। ३७**५मद्रः॥ **धिष्ठेऽ॰ क्ली इस्न॰॥ गृह•॥ नक्क**ा॥ অগ্নিঃ। ইত্যমরঃ।। শক্তিঃ। ইতি विषिनी।। षिष्ठीः शु॰ यशिः॥ मूकारार्याः। ইতি **পু॰कार७ २**मत्रमखः ॥ **धिक**ुः क्री धिष्ठेऽ । इंडें अत्रहीका्याः ভরতঃ হেমচন্দুশ্চ ॥ शिक उ जन्तील।। क्लान्।। जीत्। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ ৷] शी उर ७ जातायः। जनामता

इंडिकविक्यक्रमः॥ ধী জী বুদ্ধিঃ। ইত্যমরঃ॥ ধীতঃ ত্রি পীতঃ।ইতিধেধাতেঃ ক পুত্যয়েন নিম্নমঃ॥ ধীতিঃ দ্রী পিপাসা। ইতি ছেমটন্র शीना जी कन्त्रा। मनीया। इंडि र्मिष्टमुः ॥ श्रीनिष्य ही ज्ञातिनिष्या उपया। मनः ) (नव र ल्यांक ० वर्ष 8 রসনা ৫ ঘ্রাণ ৬। ইত্যমরঃ॥ शीमान् श्रु वृहम्मिजिः॥ मिखिष्ठिवि । इंजि त्मिनी।। धीमजी जी वृष्तिमजी। ইত্যमतः॥ थीतः ही **अकू**मः। इंडि मिन्नी।। ধীরঃ পু॰ ঋষভৌষধিঃ!ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ ।। বল্লি রাজঃ। ইতি শব্দ-त्रवातृनी ! बि रिथर्गानिजः॥ रेयदः॥ পণ্ডিতঃ। ইতি মেদিনী।। বলযুতঃ। इंडि मदत्रशावनी ॥ मनाः । इंडि ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ বিনীতঃ। ইতি न् किथ्नाता गारिवृद्धिः ॥ वीत्रपः ही बीत्रण। यथा। भागत्ही-দার্য্য মাধুর্য্য শোভা ধীরত্ব কান্তবঃ । मीखिफायज्ञजा ভाव राव रिणार জ্রিযোকজা:।। ইতি হেমচন্দু:॥

ধীরপত্রী জ্রী ধরণীকদঃ। ইতি त्राजनिर्घण्डः ॥ थीत्रककः शू॰ महियः। ই**তি ए**म-े हिन्दुः ॥ है भीत्रा जी कांकानी॥ महास्त्राजि-শ্মতী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ মানাব-স্থাণ মধ্যা পুগল্পা নাযিকা ভেদঃ । অস্যা লক্ষ্ণ। ব্যক্ষ্য কোপ পুকাশা ধীরা। মধ্যাযা ধীরাযাঃ কোপ ব্যঞ্জিকা**ীঃ।** প্রোটা ধীরা-, **খান্ত** রতাবৌদাস্য• ৷ সা দ্বিবিধা ৷ জ্যেষ্ঠা কনিষ্ঠা চ।। মধ্যা ধীরা যথা । লোলালি পুঞ্জে বুজতো নিহঞ্জে श्राता र जुद्रः नुभ वाद्रि धाताः। पर সমীছে ভুবতে বিধাতু ধীর স भीतः निवनी मरवार्।। (श्रोणशीता यथा। ता उन्नः जन्नरम ने जन्नमि সুধাধারা নুকারা গিয়ো দৃক্পাত• কৰ্ষেন্বা পরিজনেকোপ প্রুদাশ হলাৎ। ইথা কেতক গর্ভ গৌরি দ্যিতে কোপস্য সংগোগন কিং न्तारमव नरह भूनः महहती कूवी उ সাচিমিত ॥ ইতিরসমঞ্জরী॥

बीताबीता की मानावसायाः मधा

धीवजी \ भूगता नायिका (छेमः । **अने**प्रा-वक्रनः। व्यक्ताव्यक्तः (क्रान्नः शु-कामा । मध्याया धीताधीर्वायाः काभ वाक्षिक वहन क्रिका প্রৌঢা ধীরাধীরম্বা রতাবৌদাস্য তৰ্জ্জন তাডনাদিচ কোপস্য পু-কাশক। সাছিবিখা। জ্যেষ্ঠা ক-निष्ठा ह ॥ नध्यवीताधीता यथा। কান্তানুরাণ চত্রোসি মনোহরো-সি নাথোসি কিঞ্চ নব যৌবন ভূষি-তোসি। ইप्थः निगम् । सूम्भा वम्त প্রিয়স্য নিঃখস্য বাস্প লুলিতা নিহিতা দৃগভাঃ ৷৷ প্রৌঢাধীরাধীরা যথা। তল্লোপান্ত মূপেযুবি পুিष-তমে সাগীকৃত গ্রীব্যা কা**ন্ন** ব্যা-वन वाि गाि रिंग कुर्ड कल्भान भिया। इस नास करत भून म् गम्भा नाकात्रम कानिज्लोशी পুেষ্ঠ মফুখ সাৎসলকচো বিস্থারিতা म्थ्रेयः ॥ ইতি রসমঞ্জী ॥

।। । हिःसी-मुश्छ

धीर्वी श्रुः ही धीरतः। यथा। यह धीरती दृष्धीरा। इति मुखदाधः॥ धीरतः श्रुः दिन्दर्छः। इत्यातः॥ धीरती की धीरतशङ्गी। दिन्दर्खी। वुश्र

है जि तू करवातः ॥ मध्यप्रविनी हे जुरुगरित्कावः ॥

शिणिकिः जी वृद्धिमामर्थाः। उट शर्यायः। जिङ्काः २। इजामतः। मामञ्ज्या। यथा। मून्यसः मुद्देश्यः गुरुषः शादपः जथा। उद्यासार्थः विकामः जवकानकं श्रीस्थाः।। देखिनका

श्रीमधः शृ मखी। ই ि एम हम्पुः। श्रीमितिः शृ मजी। ই उप्ततः॥
श्रू क न करमा। ই जिक्कि क्षिक प्रमाः।
श्रू की कम्मनः। ই তে कि महारगयः॥
श्रु कि जुल्हः॥ विभूजः। दे जि

ধুনিঃ া নদী। ইত্যারটীকাষাণ তরতঃ॥

ধুনী জ্ঞী নদী। ইত্যনরঃ ॥
ধুনীনাথঃ পু॰ সনুদুঃ। ইতি রাজনির্যন্টঃ॥

ধুন্ধনারঃ প্ জবলবাধরাজঃ। নতু বৃহদশপুঞঃ। ইতি পদ্মপুরাণ ॥ শক্রেপঃ॥ গৃহধ্যঃ॥ পঢ়ালিকঃ । ইতি মেদিনী ॥

পুরন্ধর: পু॰ ধবকৃক্ষঃ। ইতি রব্নালা ।। রপ লাক্লাদি ভার বোঢা। তৎ পর্য্যাবঃ। পুর্বহঃ২ খুর্ণ্যঃ ১ ধৌরেবঃ थुख्

৪ পুরীণঃ ৫। ইত্যমরঃ ॥ পুর্বাহ্ব মাত্রে জি॥

ধুরা **দ্রী ধুং। ভারং। ইত্যমর**ীকা-যাণভরতঃ।।

প্রীণঃ ত্রি ভারবাবঃ।ইত্যমরঃ!।
পুরীতঃ পুণ সমস্থান্ট ইতি রাজনির্মটঃ!। ভারবোগ্যে ত্রি ।

পুর্ব্যঃ ত্রি পুর্বরঃ ইত্যমরঃ ॥ **খব** তেলিখে অন্তু**হি চ পুং । ইতি** লাজনির্ব**টঃ ॥** 

ার্ব ই হিণসে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ।।

গুব**া জ্রী পুরকা। পুরাইতি ভারা**।

ইত্যানিকোষঃ।।

धूवनः श्र् अप्निः। ইতি निष्णाष्ठ-कोमूरी ॥

ধুবিত্র॰ শ্লী যত্তা বি জাল্পার্থ মৃগ চর্ম রচিত ব্যৱন : ইত্যমর: !! রঃ প্রকৃত্ত । ইত্যমরটীকাষাণ

`তর্বতঃ গ

युज्रः शृ क्षां भित्यः। युज्रा हेि जाया। उट श्यां । उधादः २ किउदः अपूर्वः । क्वां च्यः । भा-जूनः । भानः १। हेठामतः॥ युक्तः ৮। हेि (हमहन्तुः॥ भ्यां भाजू-नकः ) नामः ) भिवानयाः । । युक्तं द्वः ) काह्नाश्राः । । थनः ३६ कर्षकनः >७ मिन्नः २१ कन्न छः
३৮ मङः >३ मिनः २० दिन ताननिर्यन्तः ।। प्रिनिका २३ ज्ती २२
महात्माही २० मिनिशुषः २८ ।
जम्म छनाः । सप्त वर्गा निका तुन प्तम प्रमा वर्गा निका तुन प्तम क्ष्म वर्गा निका तुन प्तम क्ष्म विष नामिषः । क्षा यदः ।
मधुतदः । जिळवः । उष्म प्रना कहेवः ।
मधुतदः । जिळवः । उष्म प्रना कहेवः ।
का छिकातिषः । प्राम थर्म जुम नामिष्यः । हिन ताक्ष । हिन ताक्ष निर्यन्तः ॥
मूह् । कातिषः । विश्व नामिष्यः ।
प्रमा कातिषः । विश्व नामिष्यः ।
प्रमा कातिषः । विश्व नामिष्यः ।
प्रमा हिन ताक्ष । हिन ताक्ष नामिष्यः ।

ধুক্ষ ড সন্দীপনে।। ক্লেশে॥ জীবে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ।।

ধ্ঞ ধ্নগি ধ্লিক ক্লেগ। ইতি কবিকঃ ধ্নঞগি

ক্লেগ।

পূঁ ত্রী যানমূপ । রপাদেরগুভাগঃ। ।

ইত্যমরঃ।। ভারঃ।। চিন্তা। ইত্যেকাক্ষরকোষঃ।।

ধ্ক: পু॰ বাযু:। ইত্যুণাদিকেয়ৰ:॥ পূৰ্ত:॥ কাল:। ইতি স•ক্ষিণ্ডসা-রোণাদিবৃত্তি:॥ ধুতঃ ত্রি কম্পিতঃ। ভব্নি তঃ। ইতি মেদিনী ॥ ত্যক্তঃ । ইত্যমরঃ ॥ তর্কিতঃ। ইতি ধরণিঃ ॥ ধূনঃ ত্রি কম্পিতঃ। ধূধাতো ক্রঃ শ্লাদি ত্বাত্তস্য নাদেশঃ। ইতি সংক্ষিপ্ত-সারব্যাকরণং॥

ধূনকঃ পুণ বহি বল্লভঃ। ধূনা ইতি
ভাষা।ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।
ধূননণ ল্লী কম্পনণাকাঁপান ইতিভাষা।
ইতি এই এ ধূ ধাতো রনটা সাধ্যণ।।
ধূনিঃ ত্রী কম্পনণ। ধূ ধাতোঃ জিল্লানি লাদিছোমিঃ।ইতি কবিবল্লান্দ্রা হিলাকা ক্রিনানাং।।
ধূপ ক দীভৌ।ইতি কবিবল্লান্দ্রা।

জত্ত লঘু পত্ৰ বিশেষাঃ । বক্ৰ বিব-॥ জ্রিত বারিজ মুদু ধ্পবর্তিরিহ সু नेत्रि छपु।। जुन्। मह। मधु मूख घृठ गिक्ता खर्रीना ७३ रेगन ६ । मत्रन সিহ্ন সিদ্ধার্থ দশাঙ্গে ধূপ উচ্যতে ॥ 🕸 ॥ रवाउमात्का यथः । खशुन्॰ जत्नन मारू शब भन्य गञ्जव । ट्री-বের নগুৰু হুট গুড় সাজরসং ঘনং 🔪 🛚 !৷ হরীতকী প্রকী গোকা প্রটামা 🕞 नीक रेनवङ । साउनाक विरू ध्रा দৈবে পিত্রের চ কর্মণি ॥ ইতি তন্ত্র-সার: ॥ 🕸 ॥ কেশবার্চাহাণ যোড-भान श्रभा यथा ॥ गुलक खुशुनुः क्ष्टं कश्रवः भनत्याख्यः। (मव-माक बहागा॰ भी बा जी का यक वा-লক।।মুরানাণসী হৃগুৰুক• বৃগুলী-রঞ্চ কেশর•। এলা তথা তেজপত্র• সৰ্বনেতদ্যূতাক্তক•া৷ ধূপো হয•ষো-ডশাকঃ স্যান্নোবিন্দ প্রীতি কারকঃ ॥ 🕏 ॥ द्वारणाञ्चा यथा। खशुन् শ্চন্দন পত্ৰ সংক্ষাগুৰু সন্ধুন। জাতীকোষঞ্চ কপূরি জটামাণ্সীচ वानकः।। दुङ्मीत्रकः शूला श्लो यात्मादः श्रुकीर्खिङः ॥'#॥ ममा-यथा।। कल तः अरु मध्य एशुन् ।

র্যলযোক্তব । কেশর বালক পত্র ত্বগ্লাতীকোষ মুক্তম ৷৷ সৰ্বমেতদ্-ষ্তযুত• দশাকো ধুপ ঈরিতঃ॥ 🕸 ॥ অষ্টাঙ্গো যথা। গুগ্লুনুগুৰুক• তেজ-পত্র• মলয সম্ভব•। কপূরি• বালক• ছ'ঃ নূতন জন্ধুম তথা।। অষ্টাকঃ কথিতো ধূপো গোবিন্দ প্রীতিদঃ मुजः ॥ 🛊 ॥ शकाका यथा। ठन्मनः बक्रम॰ नृष्ड॰ कर्ग् त॰ ख्युत्वा १७ व । ধ্পো ংয় ঘৃত সংযুক্তঃ পঞ্চাকঃ সমুদাহতঃ।। # ।। মুসনদ श्रभ वर्ड्स-नीय पुरु । यथा। अक्कर भाग निर्या-সং পামকং সরলঞ্জু। বচা মধুরিকা তৈল গন্ধকান্ত কলম্বক ॥ গন্ধক ऐक्प । जान शिक्रु नक्ष मनश्मिना। क्द्राण भ्यत माही गन्नमानी तमा-**धनः ॥ अश्वर्गः मधी मिनाजि**-मक् जन्मनः। जन्मूक त्रगुकः त्रामाकः भीना শতপুদ্ধিকা।। হরিদুা জীরক॰ वृक्षकीत्रक त्रकानस्न । कर्ह् द्रकः भक्षवक॰ यवानी गुष्टिकडणा। देशवाडा॰ ধাতকী পুদ্ধ নখী মোচরসাদিক।। मुजन भूरभ प्रवर्ष मर्द्राम छिवर्द्ध-বেৎ।।ইতি পান্মোত্তরগড় ।।#।।ধূপ मान विधिर्यथा। मध्याना मिका छप्रख

मूल मधुलर्वि एकिकः । जन्ह्रार्गुन क्तिरविभि भृजा भूभः निरंबरदि ॥ भूभ शान नम्बार्ड उद्यान वागया-প্ৰান্থ গুপ ভাজন নতেণ প্ৰোক্ষ্যা कार्य ज्लानू ना। पेकार्य मुक्तिनर्याङः यकाः वाम किलि क्रिजाः ॥ नाक्यन् वाम एटडन म्यन इस्डिन ठार्शायण ॥ ইভি ভদ্রসারঃ॥ 🛊 ॥ পদ্ধ নাল্য मन्त्राध्यनात मार्या यथा। अन्दा **গন্ধ মাল**্যানি যো দে খূপণ পুৰছতি। **দ**ণপো জাষতে ভূমে যাতু্ধানো ন नः नयः ॥ वर्षानि रेज्कदिः भानि অযক্ষার নিবাসকঃ। ভিচতেত্র মহা ভাগে এবমেতগদংশবঃ ৷৷ ইতি वतारभूतान ।। # ।। विवन्न भूरभा यथा। मकुः नर्छातमारभठः मर्यभा । **এলবালুকৈ:। সু**বর্ণা তক্ষরতরোঃ ममूरेन बर्ज्ज्नग्रज् ॥ श्ला वाम গৃহে হন্তি বিয় জাবর জন্ম । ন তত্ত কীটা न বিষ । न দ हु র সরী সূপাঃ।। न क्उत कर्मन छ ३ धूरभा ९४॰ यव मश्उ ॥ क्षा मर्गनिर्धाहन श्रुणा " यथा। कार्शामाञ्चि जूबक्ना उंथा निर्स्मारमः छव्द । त्रश्रं विर्मारता श्राः भुगढः गळउ॰ ग्रह ॥ इंजि । धूनः श्रू॰ जार्मु कनशुख्यः । श्रूँया इंजि

मद्रमानुदार्ग ३३२ व्यवतायः॥ धूशनः श्रु॰ लाह्यक्किनिशंकः। श्रा इंडि ভाষा। उट्नर्गायः। मान-(वहै:२ मर्जन्म: ० विद्विवर्गिण: 81 इंडि नक्याया॥

ধূপবৃক্ষঃ পু॰ সরলবৃক্ষঃ ় ইতি ত্রিকাওশেষ:॥

ष्भव्ककः भू मङ्ग्यम् । ६७० भक्तज्ञादकी अ

**थ्**भारूम हो • नारायम। इ**ि नाज**-निर्गिष्ठः ॥

ধ্যাকঃ পু• এবেটঃ। ইতিরাজ-निर्केश

धूभागिजः वि अव्धः। अश्वापित्।-শাভঃ। ইত্যমনভরতৌ ॥ দভ্রপ गृशिषि। यथा। भूतील शतिनी-পিতে বিবিধ ধূপ ধূপাবিতে। ইতি **उब्रश्**यामः ॥

थ्लार्र्भ क्षी कृषाएक। ইতিরাজ-निर्घणेः॥ धूशरयारगऽ बि॥ ধূপিতঃ ত্রি সম্ভাপিতঃ। অপ্নাদিনা ্শাস্তঃ। ইভ্যনরভরতৌ ॥ দত্তপূপঃ এ যথা। যবানিনা পোহদ ধুপিতো क्रमः। इं उ वृक्षायूर्वमः ॥

<del>ৰুমকে</del>

ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। ভদ্রঃ ই নক ভাষাঃ ৩ খতনালঃ ৪ শিখিধু দঃ ৫ অগিবাহঃ ৯ তর্রা ৭। ইতি ক্রিকাণ্ড শেষঃ ॥ অস্য গুণঃ। বাত পিত্ত বৃদ্ধি কারিত্ব । ইতি রাজবল্লভঃ॥ সচ মেষাঞ্জনযোর্জনকঃ ॥ ধুমকেতনঃ পুণ অগিঃ॥ কেতুগৃহ। ইতি মেদিনী॥

ধুমকেতুঃ পুরু অগ্নিঃ 🛭 উৎপাত বিশেষঃ। স ধূসাভা তারকা। ইত্যমন ভরতৌ॥ গুহভেদঃ। ২তি বিশঃ ৷৷ 🚸 ৷৷ কেতবশ্চ শিখাবস্থি জ্যোকী বিস্কান্যুৎপাত ৰূপাণি । जनूमरय कालान्यि यंथा। धूमरक-॥ তৌ সমুৎপদ্ধে গুহুণে চন্দু সূর্য্যযোঃ । গুহাণা॰ সঙ্গরে চৈব ন স্বর্যায়য় ল কিংশ । উল্লাপাতে চ কিদিন্ ধুনে পঞ্চ দিনানি চাবজুপাতে দি-নঞ্চৈক বৰ্জ্জয়েৎ সৰ্বকৰ্মসূ ৷৷ ইতি গর্গবচন•।ভোজরাজঃ। গুহে রবী-নে ধরণী পুকম্পে কেত্রমোলাপ-তनामि (मार्य। तुर्छ मणाशानि বদন্তি তজ্জা স্রযো দশাহানি বদ-ভিকেচিৎ॥বজুকেতৃর্নোৎপাতে गुर्ल हन्तु मूर्यहराः। भूयान्छ छन জেৎ ক্র: সপ্তরাত্র মৃতঃপর ।।।

ব্ৰাহ্মণঃ ক্ষত্ৰিয়ো বৈশ্য স্ত্যক্তেই ক-र्भवितावकः। भृषु छऽङ्गे हिकतावः मईकर्म ममाहाद्र ॥ इंछि गवमान তত্ত্ব-।। 🕸 ।। অথ কেত্না- স-স্থান- 🕽 শত মেকাধিক মেকে সহসু মপ্রে বদন্তি কেতৃনা । বহুৰূপ নেক নেব পাহ মুনি নারদঃ কেতু ।। তথা চ পরা**শ**রঃ। শতমেকোত্তর কেতৃনা ভবম্ভি তেৰা• ষোডশ মৃত্যু নিশ্বা-সজাঃ । দ্বাদশানিত্য সম্ভবাঃ । एक पक्ष नथ विवायान क्षृत्काश्वाः । मछ रिभाजामहाः। शक्षमण वर्ष বৌদ্দালিকস্য পুত্রাঃ। সপ্তদশ ম-त्रीिं कन्। न न न न न । अक्ट পুরাপতি সহজাঃ। ব্রয়ো বিভাব-मुकाः। ध्रमाख्योग्यकः। ठजुमंग ন্থ্যনানে ংগ্তে সোমেন সহ সমু-তাঃ। একন্ত বুদ্দকাপদ্ধ ॥ 🛊 ॥ গর্গাদযঃ সহসু॰ বদন্তি। তথাচ গর্গঃ । অনিত্যেদেয চারণো নশুভানাঞ্চ मर्भनः। जागज्ञाः ज्ञूनः जाम्गु-शाना जनित्वाथ मा ।। नात्रमार्था 'সুনিরেক মেব কেতু বহুরূপ পুছে। ্যথা ৷ দিব্যম্ভরীক্ষ ভৌমস্থ একঃ কেতুঃ পু ীৰ্ত্তিতঃ। শুভাশুভ ফল लाक ममाजाखन्यामय ॥ # II

তত্ৰ ধ্নকেতু লক্ষণ । উক্ত বিপ-॥ রীতৰূপোনশুভকরে।ধূনকেতুৰুৎ পন্নঃ। ইন্দ্রাযুধানুকারী বিশেষতো দ্বি ত্রি চূলো বা ॥ হুরতনুঃ পুসন্ন ্ইত্যমাদুক্তাৎযোবিপরীতোবিশে-ষতঃশক্রচাপৰ্পকেন্তৰ্ৎপন্নঃস ধূমকেত্তঃ সচ ন শুভকরঃ পাপ• ক- <sub>।।</sub> রোতীত্যর্থঃইন্দুধনুঃসদৃশোনশুভ কর এব তথা দ্বিশিখ ব্রিশিখশ্চ বিশেষতঃ পাপ ফলদঃ ৷ তথাচ সম্য সংহিতাযাণ। অচির স্থিতো-তি वृष्टे खुष्ठभिजः त्रिथमूर्खि कम्ख-**रिजः। द्रुतज्ञः शुजनः (कछ र्लाक-**স্যাভাবায় ন <del>শু</del>ভো বিপরীতো মি-শেষতঃ শক্রচাপ সঙ্কাশঃ । দ্বি ত্রি চ ख म्ह्राला वा प्रक्रिश अ• इ॰ म मृजूऽ-করঃ।ইতি ভটোৎপল কৃতবরাহ-সংহিতা টীকা ॥ ধ্নগন্ধিক স্নী রোহিষত্ণ। ইতি ভাবপুকাশঃ ॥ 'ধ্নজাঙ্গজ' ল্লী বজুক্ষার'। ইতি রাজ-निर्चण्डेः ॥ ধূমধৃজঃ পু॰ অগ্নিঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।। ध्मश्रु जा खी ध्माक्ष का त्र न त्र के । इं जि

(र्भिन्दुः॥

भूममहियी जी असूषी। इंडि

ত্রিকাগুশেষঃ।।

ধূনযোনিঃ পু॰ মেহঃ।। মুন্তকঃ। ইত্যা

মরঃ।।

ধূনলঃ পু॰ কৃষ্ণলোহিতবর্ণঃ।। তদুর্ভক

ত্রি। ইত্যমরঃ।।

ধূনসংহতিঃ জী ধূনসমূহঃ,। ইতি

হলাযুধঃ।।

ধূনসী জী রোটিকাবিশেষঃ। যথা।

মায়াগাং চাল্য জোয়ে জাপিতা

ধ্নসা জা রোটকাবিশেষ:। যথা।
নাষাণা দাল্য ভাষে স্থাপিতা
ভ্যক্ত কঞ্কাঃ। আতপেশোবিতাঃ
পাত্রে পিপ্তা ভাষ্মসী মৃতা।। ধ্নসারচিতাসৈব প্রোক্তা ভূর্তুরিকা
বুধিঃ। ভূর্তুরী কফ পিত্রনী কিঞ্চিঘাতকরী মৃতা।। ইতি ভাষপুকাশঃ
ধ্মাভঃ পৃং ধুমুবর্ণঃ। ইতি শদ্মালা
।। তদ্বতি ত্রি।।

थ्मावजी जी मन्मस्वादिन ग्रस्थं उ विन ग वित्नवः। अमा धान ग्या। विवर्ग हक्षणा मुद्धा नीर्घा ह सणिना-यदा। विस्क अस्रणा कक्षणा विश्ववा विद्या जिल्ला । काक्ष्म द्रथाकणा विणयि अत्याधदा।। मूर्भ इस्राजि-क्षणाका ध्रुक्स वदानिन।। भुव्स वाना ज्रुक्म स्टिला स्टिलिक्सना ।। क्रुष्भिनामार्षिन। निन्द स्वर्म-क्षा स्वाप्ता।। ज्ञुल्थ- क्ष्म ह्यूर्स- শ্রেণ পুরশ্চরণ রিশ্বযে ॥ ইতি তমসার: ॥ ধূনিকা জ্রী ক্তুক্তিকা। ইতি ত্রিকাও-শেব: ॥

ধূনোপণ ন্নী বজুক্নারণ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

ধূমোর্ণা জ্রী যমপত্নী। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ॥

ধূমোর্ণাপতিঃ পু॰ যমঃ। ইতি হার। বলী।।

ধ্ম্যা দ্রী ধ্নসমূহ:।ইত্যমর:॥
ধ্ম্যাটঃ পৃ• পক্ষিবিশেষ:। ফিঙ্গা
ইতি ভাষা।তৎপর্য্যায:।কলিঙ্গ:
২ ভৃঙ্ক: ৩।ইত্যমর:॥

ধূমু: পূ॰ শ্যাম রক্ত নিশুত বর্ণ: । তৎ পর্য্যায: যু থ্নল: ২ কৃষ্ণলোহি-তঃ ৩ ।। তদ্বতি ত্রি । ইত্যমর: ।। তুক্স: । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।।

ধূনুকঃ পুণ উষ্টুঃ।ইতি জটাধরঃ।।
ধূনুপত্রা জী ক্ষুপবিশেষঃ। তৎ
পর্য্যায়ঃ। ধূনুস্থা ২ নুলভা এ শ্বয়ফুবা ৪ গৃধুপত্রা ৫ গৃধাণী ৬ কৃমিন্নী
৭ শ্রীনলাপহা ৮। অস্যা গুণাঃ।
রসে ভিক্তবুণ। শোক কৃমি কাস

नानिष्रा উकष्। क्ठाष्ट्रा । जारी ही-

পন কারিজ্ঞ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।।
ধূনুমূলিকা জী শ্লীতৃণ । ইতি
রাজনির্ঘণীঃ।।

ধূমুলোচনঃ পু॰ কপোতঃ । ইতি
রাজনির্ঘণটঃ।। শুস্তাসুর সেনাপতিঃ
। যথা। হে ধূমুলোচনাশু ত্ব॰ ম সৈন্য
পরিবারিতঃ। তামান্য বলাদুষ্ঠা॰
কেশাকর্ষণ বিস্থলা॰।। ইতি মার্কও্বেপুরাণং।।

ধূনুবর্ণ: পু॰ তুকয়:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:

।। কৃষ্ণ লোহিত বর্ণ যুক্তে তি।।
ধূনুবর্ণা স্ত্রী অগ্নে: সপ্তজিস্থান্তর্গত
জিস্থাবিশেষ:। ইতি জটাধর:।।
ধূনু। স্ত্রী শশাপুলী। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

ধূন্ত্রিক। জ্রী শি॰শপাবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

ধ্র 🏂 ড য বধে।। গভৌ। ইতি কবিকল্লফমঃ।।

श्र्कां है: भू॰ भिवः। इंड्यं प्रजः ॥ श्र्वं॰ क्षी विज्ञवं विश्वं । इंडि जाक्ष निर्वं हैंः ॥ ब्लो हिक्ये॰। इंडि ह्या हन्तुः॥ श्र्वंः भू॰ श्रुव् व् क्षः। इंडि व्यक्ति ॥ हात्रकः। इंडि जाक्ष निर्वं हैंः॥ श्रुवंः वि मृज्क् ह्या वक्षकः॥ ब्यं का

- **अ**र्यप्रशः। मायी २। ইতি **रिमम्पु**ः ॥ বিটঃ ৩। ইভি মেদিনী॥ शूर्खकः शृ॰ मृगालः। इंछि मदत्रः।-वली।। शृक्षणा

शूर्वकृष्य भू भुख्तः। ইতি भन्नभावा ॥ वश्रक काइतक जि ॥

बूर्डबढ़ः भू॰ मानूयः। ইতি भद **हिम्दिका** ॥

श्रृज्यान्या जी त्रात्रा। ইতি भप-**চन्प्रिका** ॥

शूर्य तः পূ॰ পুরন্ধরঃ। ইত্যমরটীকাযাং त्रमानाथः ॥

श्र्वरः वि धूत्रमतः। ইত্যমतः॥ श्री जी त्रथागुङागः। उৎপर्यत्रायः। यानमूथ २ वधः । इ जिल्म हन्दुः॥ ধূলক ন্পী বিষণ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। ধুলিঃ দ্বী পার্থিব ূর্ণণ ধূলা ইতিভাষা । उट्रश्वाग्रहारत्रपुः २ ना म्युः ३ तक ৪। ইত্যমরঃ।। ধূলী ৫ পা•সুঃ ৬। ইতি ভরত:।। রঞ: १ किতি কণ: ৮ कोषुः २ हुर्गः २० ज्यः २२ महीपुरः ১২।বাতকেজুঃ১০নভংকেজুঃ:৪ফণা २६ कि छिक्ना २७ : इंडि मसंत्र्वा-वनी॥ 🛊 ॥ मील थर्रः उन्हाया हि- রেণুক হম্ভিপুণ্য পুরাকৃত।। ইতি কর্মলোচনঃ 🐧 অজরজঃ প্ররজ ख्या मणाक्किनी बद्धा जियः शाम त्राका त्राकन् भकामिश श्रव ्रिय॰ **।। ইতি লর্দ্মা**চরিত্র• ॥

ধূলিকা জ্রী জজুটিকা। ইতি শ'দ ब्रञ्जावनी ॥

॥ धूलिकिरातः भू॰ वनुः। किंव॰। ইতি ত্রিকাণ্ডাশ্যঃ।।

भू विश्हतः श्रु॰ शहदामतः। क्लुर् । ২তি বিকাওশেষঃ।।

খুলিধুকঃ পৃ॰ পবনঃ। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ !!

ধূলিপুষ্কিকা স্ত্রী কেতকী। ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ !!

श्नीकमभः भू नीशः॥ जिनिमः॥ বৰণবৃক্ষঃ। ইতি নেদিনী ।।

ধূলীকদম্বকঃ পুণ নীপণাইতি জটাধরঃ श्नीभद्रेनः शु॰ উद्वीयग्रानश्नीमग्र्इः । যথা। ধূলী পটলে ধূমত্ব ভুমে তত্রা-मठा धूमाद्वन । ইত্যानि मामान् ় লক্ষণাযা। শিরোমণিঃ।।

ধূশ ক ) কান্তিকৃতৌ। শোভাযুক্ত ধূষ ক ) করণ ইতি যাবং। ইতি भरकण नथापितः । अब भाजात । धूम क 🕽 कदिकन्नकनः ॥

ধূসরঃ পু॰ ক্রমৎপাপুরণঃ।। তদ্বতি ( ত্রি। ইত্যমরঃ।। 🕏 🎉ः।। গর্মভ:।। ুপাতঃ। ইতি পাজনির্ঘণ্টঃ।। তৈ নার: · ইভি **হেমচন্দুঃ।। 🟶 ।।** ध्मन दर्ने रथा। धृणिः > न्छा २ করজ্ ৩ গৃহগোধিকা ৪ কপোতঃ ৫ মূবিকঃ ৬ রহণ ৭ কাক্কও: ৮ 🐃 দিং ৯। ইতি কবিকল্পলতা।। ধ্সক্ষা দ্রী খেতবুর্।।ইতি রত্ন म्बा।। ধুনরপ रेका ही হন্তিশুগুকু 🕆 । ইতি রাজনির্ঘণঃ ৷৷ ধুসর। স্ত্রী পাণ্ডুরফলীক্ষ্পঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ ধূসরী স্থী কিম্নরীভেদঃ। ইতিমেদিনী ধ্রুরঃ পু॰ ধুসূর্বৃক্ষঃ। ইত্যারটীকা-र्गः अवदः ॥ পূদ অবধৃংস। পতন ইতি যাবৎ। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ !! ধ 🐗 / হিতৌ ॥ ধৃতৌ । ইতি ত্ শ ড) কবিকল্লজনঃ॥ ধ্ক ধৃত্যা। ইতি কবিকল্পন্সাঃ।। ধ্জ • ' গতৌ। ইতি কবিকল্পদ্ধঃ ॥ "

প্তঃ ত্রি ধারণবিশিষ্টঃ। ধ্রা ইতি

ভাষা ।। অবধৃত্ত: । পতিত ইতি যাবং ॥ ছিতঃ। ইতি গৃ ধাতোঃ কর্মাণি কর্ত্তরিচ ক্ত পুত্যযেন নিয়মঃ श्जताष्ट्रः श्रु मूर्य्याधनिश्ठा । म् শান্তনুপুত্রঃ বিচিত্রবীর্য্য ক্ষেত্রে ব্যার্ন সাজ্জাতঃ। ইতি মহাভারত•॥ সু-রাজা।। নাগভেদঃ। ইতি মেদিনী।। পক্ষিভেদঃ।ইতি বিশ্ব হেমচন্দ্রৌ।। ধৃতরাষ্ট্রী স্ত্রী হংসপত্নী। ইতিমেদিনী वृज्धिः शू॰ इक्षिः। इजि मिनि ॥ প্রতিঃ জ্রী তুঞ্চি: ॥ যোগভেদঃ ॥ ধৈর্য্য ॥ ধারণ । ইতি মেদিনী ॥ সুথ । ইতি হেমচন্দুঃ।। যোডশ মাতৃকান্তৰ্গত ত্ৰযোদশ মাতৃকা। ইতি ভবদেবঃ ॥ অস্ট্রাদশাক্ষরা-वृक्ति इत्मा भाव। ३७ इत्मा-মঞ্জরী।। #।। ধৃতি যোগ জাত ফর্শ- যথা। ধৃতি যোগ সমুৎ পন্নঃ शुक्तिः मण्ड्रे मानमः । वावम्कः मञायाक मूलीत्वा विनयादिजः॥ ইতি কোষ্ঠাপুদীপঃ॥ ধ্বরী জী ভূমিঃ। ইতি সংক্ষিপ্ত-जांद्राणा दिवृज्धिः ॥ वृज्ती शृ॰ वर्माः ॥ द्विशुः ॥ अमू पुः ॥

अड़रीकः ॥ (मेर्वावी ॥ विकृः ।

इंडि न कि अना दागा दिवृष्टिः।। ধৃষ উ স•হতৌ।। হিণসে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ ।। পুৰ ঞি আন পুগাল্যে। ইতি কবি ् कन्नक्रमः ॥ পৃষ ক ড শক্তিবন্ধে। শক্তেবন্ধন ইতি যাবং। ইতি কবিকল্পদ্ধ।। ধৃব আ কি অমর্বে।ক্রোধ ইতি যাবং ।। অভিভব ইত্বি ভ**উমল্লঃ।** ইতি কবিকল্লফ্রম স্তডীকাচ।। ধৃষু: পু॰ দক্ষ:। ইত্যুগাদিকোব:।। সংঘাতঃ॥ পুগলঃ। ইতি সংক্ষিধ-সারোণাদিবৃত্তিঃ।। ধৃষ্টঃ ত্রি পুগলুঃ। ইতি মুখ্ববোধ ব্যা-

ইঃ ত্রি পুগলুঃ। ইতি মুখবোধ ব্যাকরণ ।। নির্লজ্জঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ।
ধৃষ্ণক্ ২ বিষাতঃ ৩। ইত্যমরঃ।।
ধৃষ্ণঃ৪ দধৃক্ ৫।ইতি ত্রিকাগুশেষঃ
।। চতুর্বিধ পত্যস্তর্গত পতিমিশেষে
পুণ। তস্য লক্ষণ যথা। ভূষো নিঃশঙ্কঃ কৃতদোষোপি ভূষো নিবারিতোপি ভ্যঃ পুশুষপরাষ্ণঃ। ইতি
রসমঞ্জরী ।।

ধৃষ্টা জ্রী অসতী। ইতি শদরত্বাবলী জ ধৃষ্ণক্ ত্রি নির্লজ্ঞঃ। ইত্যমরঃ॥ ধৃষ্ণিঃ পু• কিঞ্চীঃ। ইত্যমরঃ॥ मूकः जि श्रेः। ইতি जिका अप्ययः।।

किकिकायाः भू। ইতি क्विक्यक्रमध्यः।।

एकः भू- ममुद्रः। ইতি हिम्म हर्मुः॥

नमः। ইতি মেদিনী।।

एका जी मनी।। ভারতীভেদঃ। ইতি

यमा ज्या मना ११ छ। त्रजा छ। छ। छ। (हमहन्तुः ॥ धनिका की धनायकः । केवि स्मार

ধেনিকা জ্রী ধন্যাক• । ইতি ভাব পুকাশঃ॥

ধেনুঃ জ্রী নবপুস্তাগৌঃ। তৎ পर्यऽायः। नवक्छिका २। ইত্যনরः॥ নবপুস্তিকাত। ইতি শবরব্বাবলী ॥ 🕸 ॥ मानीय मम्भः (धनरवा यथा । या 🗷 পাপ বিনাশিন্যঃপঠ্যন্তেদশ ধেনবঃ ৷ তাসা শ্বৰূপ বক্ষ্যামি নমামি চ धनाधिन ॥ भूषमा ७ उरधनुः जा-म्घ्ठाधनु त्रथानि वा। जिनाधनु স্ত্তীয়া চ চত্তথী জলস-জ্ঞিকা।। ক্ষীরধেনুশ্চ বিখ্যাতা মধুধেনু तथानि वा । मध्मी मर्कत्रारधन् र्मिष्रियन् त्रथाडेमी ॥ तमस्मू क नवनी मन्त्री नत्र सक्षणाः ॥ **জ**ন্তাঃ সুগু দু'ব ধেনুনা মিতরাসান্ত রাশযং॥ সুবর্ণধেনু মপ্যত্র কেচিদি-इंडि मानवाः। नवनीर्जन जिल्लन

ধেমু

कथात्म जू महर्वयः।। अञ्चल विशा-व् नता खबरवा शक्तीः गृजाः। मजा-वीर्न मणुक्तः राभर्विण भविषा। খীথা শাদ্ধ পুদাতব্য ভুক্তি মুক্তি क्ल भूमाः। ७५(सुन् भूमाव्यन मर्बा ন্তৰ মৰোদিতাঃ॥ অ**শেষ যক্ত ক**-লদাঃ সর্বপাপ হরাঃ শুভাঃ। রুতানা मुख्या यमाहित्माक हामभी वुछ ।। **जनकाद्य हिमार्ज ७५ ५५ अ.स.** স্যতে। অয়নে বিষুবে পুণ্যে ব্যতী পাতে १थ বা পুনঃ ॥ গুড়ধেনা-मर्या (मया खुशज्ञा गांपि शर्जमू। इंडि ॥ बर्नाश्रुवाल १७ वर्षायः॥ 🕸 ॥ शूर्वाक (४न्ना मान विधय छउए भारत पुष्ठेवताः ॥ 🕸 ॥ व्यथ किना-থেনু দানাদি ফল•। হোতোবাচ। অথাতঃ সংপুরক্ষ্যামি কপিলা ধেনু মুত্তমা । যৎপুদানান্বরো যাতি বিষ্ণু লোক মনুভম॰।। পূৰ্বোক্তেন বিধা-त्न पर्ाष्कृ भव भका । भर्बा লক্ষার সংযুক্তা সর্বরত্ন সমন্বিতা ।।। কপিলাযাঃ শিরোগুীবে সর্বতীর্থানি ভানিনি।পিতাম্ছ নিযোগায় নির-সম্ভিহি নিত্যশং॥প্রাত্তশ্থাযযো-गर्जाः किंगना गन मुखकार। हु उन्ह ভক্ত্যা পানীয় শিরসাবনতে শুচিঃ

यन

॥ मराजन भूगारकारयन उटकामस्य-কিবিষঃ৷ ত্রি॰শঘর্ষ কৃত৽ পাপ৽ দহ-ত্যুদ্রি রিবেন্ধন ।। কল্য মুম্পাব যো मर्जाः वर्षाज्ञामाः शुप्तिनः। शुर-ক্ষিণী কৃতা তেন পৃথিবী স্যাৎ ধৃসু सात।। भूपिकारणन रिटरकन भूषा मुख्य তৎক্ষণাৎ। দশভ্য কৃত। পাপ। जन। नन। जात्रभाष्यः।। किनावास মূত্রেণ স্নাত্বা চৈব শুচিবুতঃ। স গঞ্চা-দিযু তীর্থেবু স্নাতো ভবতি মানদঃ ॥ তেন স্নানেন চৈকেন ভাবমুক্তেন বৈ নরঃ। যাবজ্জীব কৃতাৎপাশাৎসুচ্য-তে নাত্র সংশযঃ॥ গোসহসূত্ত যো **एक् अप्रकाश्य किला॰ नृतः। मम म्य** তৎপুরাপ্যাহ বুন্ধালোক পিতামহঃ ৷৷ গবা মস্থি ন লত্ত্বেত মৃতেগদ্ধে ন দূৰ-যে । যাবজ্জিঘুতি ত॰ গন্ধ• তাবৎ পুণ্যৈক্ত পূর্যতে ৷৷ গবা ৽ কণ্ড্যন শেষ্ঠ • তথাচ পরিপালন। তুল্যা পাে শত দানস্য ভয় রোগাদি পালনে॥ তৃ-(गामकानि या मम् तर मूर्विजानाः গবাহ্নিক ৷ সোখনেধ ফল দিব্য **मञ्ज भागत्वाज्यः ॥ विभारेन वि**-বিধৈ দিবৈয়ঃকন্যাভি রভিরদ্বিতঃ। भ्यानक गन्नदेव मी भारता यथा-गुयः ॥ %॥ अकारम शुकात्र किना

वक्रन यथा। मूर्वनकिंशना भूई॰ দ্বিতীয়া গৌরপিঙ্গলা। তৃতীয়া চৈব রক্তাকী চতুর্থী গুডপিঙ্গলা ॥ পঞ্চমী বহুবৰ্ণা স্যাৎ ষষ্ঠী চ স্বেত-পिक्वा। मध्यी (४० शिक्वाकी षश्ची क्ष्मित्रवा ॥ नवमी भाषे-**ला उद्ध्या मन**भी शृहिशिक्त ना। এका-দশী খুরখেতা এতাসাণ সর্ব লক্ষণা ॥ मई लक्ष्ण मःगुका मदीलक्षात সুন্দরী। ব্রাহ্মণায় চ দাতব্যা সর্ব-मुकि शुरायिनी। जुकि मुकि शुरा-তেষा॰ विकु नार्ग शुमायिनी। इंडि কপিলা মাহত্ম্য ।। 🗱 ।। অথোভব मूशी (यन् मानामि विधान। (हार्छा-বাচ। অতঃপর• মহারাজোভ্যমূ-थ्राः मभामजः। विधानः यद्यताता-**হেধ**রণ্যঃ কথিত•পুরা॥ তদহ•স•-পুবক্ষ্যামি তব পুণ্য ফলঞ্চ যথে ধর-गुर्वाठ। यंड्या किनना नाम भ्रेमूट পাদিতা পুভো ৷৷ হোম ধেনুঃ সদা পুণ্যা স: ছেয়া কতি লক্ষণা। কিয়-স্ত্যঃ কপিলাঃ প্রোক্তাঃ স্বয়নের স্বয়-खुवा॥ भुम्य माना नातन कि॰ भुगु॰ न्तराह माथव। এउ निहाम रहः ल्या जूः বিস্তরেণ জগদুরো॥ 🖺 বরাহ উবাচ।  ধেনু

। य॰ শুক্রা সর্বপাপের্ভ্যে মুচ্যতে नी-व जः भयः ॥ किलना जाग्निरहावार्ध যজ্ঞার্থেচ বরাননৈ উক্ত্যু সর্বত-জাণস বুহ্মণা নির্মিতা পুরা ৷৷ প'বি-ত্রাণা পবিত্রঞ্ মক্লানাঞ্চ মৃত্রল । পুণ্যানা পরম পুণ্য কলিলাচ ব-সুন্ধরে ৷৷ তপস স্তপ এবাগ্যু পুতানা वुठमूखग॰। मानाना मूखन॰ मान॰ निधीना । एक उ मक्क यः शृथिवता । यानि তীর্থানি গুহান্যুতনানিচ। পবিত্রা-ণাঞ্চ পুণ্যানি সর্বলোকেষু সুন্দরি॥ হোতব্যান্যগ্নিহোত্রাণি সায় পুাত-ৰ্দ্বিজাতিভিঃ।। কপিলাযা ঘৃতেনেহ पद्मा की दिन वा शूनः ।। जूक्र क् शून-रशाजानि मरिजन्छ विविदेशः मना। পূজফাতিথী °ৈচৰ পরা ভাক্ত मूभागजाः॥ তে यार्रापिका वर्तन्त বিমানৈ ৰিজ সন্তমাঃ। সূৰ্য্য মণ্ডল মধ্যে বৃহ্মণা নির্মিত। পুরা ॥ क्लिना या लिझनाकी मर्वाभेश शुरायिनी। त्रिकि तृकि करी पंची किशनानष्ठकिशी॥ भूरवीक। याख कृशिकाः मदलक्षण लक्षिजाः। अजा म्माः नगाथाजाः किनना एउ वता-ননে।। সর্বা হেতা মহাভাগা স্তার-यि न मः भयः । मक्तियू भुणका ह

नई भाग भुगानिकी ।। व्यशिभूहा-विश्व विश्वामा १ननशुका। उपीदिशी मेंना पिती मूर्वनाथा भूव-र्खंउ॥ 🛊 ॥ मृमुष् किना भुजि गुरह (नारवा यथा। गृहीका किनना॰ मृपुर कामजः बेह्रमा ভदर । भ-**তি**ज्ञः म बिबाजीनी हा थान मन्त्ना हि मः ॥ न जमारः পुजिगृङ्गीयार শূদাদ্বিপুঃ পুতিগুহ: । দুরাত্তে পুতি र्खन्ताः यि खन्ता हेनाशृत्त ॥ गर्बकाला हि गर्ब देव बिर्क्का । भि ज् দৈবতৈঃ। অসম্ভাষ্য ংপুতিগ্ৰাছাঃ শুদা তে পাপ কর্মিণঃ।। পিবন্তি যাবৰ্ কপিলাণ তাবত্তেষাণ পিতা-मराः। जूम र्यनः नममुखि बायख विष्जुष कित्रभाक्षा मृ पुत्र उक्तिवा ক্ষীরাদি পানে দোষো যথা৷ তাসাঁ৷ ক্ষীর ষ্ত বাগি নবনীত মথাপি বা। উপজীবন্তিবে শুদুান্তেষা গতি নথো मृगु ॥ किनवा जीविनः मृमुः क्रा गहन्ति (त्रोतवना (त्रोतव जू महाद्रोति বর্ষকোটি শতংধরে।। তত্তোপি মুক্তাঃ কালেন খানযোন্যা বুব্ৰস্তিতে। খান বোন্যা বিমুক্তন্ত বিশ্বাযাণ জাযতে কিনিঃ।। বিধাছানেৰু পাপিধা দুৰ্গ-কিবুচ নিত্যশঃ৷ ভূযো ভূযো কাযমানা

শেনু ন্তাভার ন বিন্দতি॥ ব্রাহ্মণ শৈচন নো বিদ্বাদ্ সর্য্যান্তেষা পুতিগুহ । তেওঁ পুত্ত্যমেধ্যান্ত পিতর ন্তম্য

শেরত। ন ত বিপুদ্ধ সম্ভাবেদচৈ-বৈকাসন বিশেৎ॥ স নিত্য বৰ্জনী-

যো হি দূরাত্ত্ব বান্ধণোপ্বরে। য তেন সহ স•ভাষেত্তথাচৈকাসন•বুজেৎ॥

পুাজাপত্য চরেৎক্ ছু তেন শুধ্যতি

স দ্বিজঃ ৷৷ ৠ ৷৷ অথাসন্ন পুসব কপি-

লা দান ফলাদি। একস্য গো পুদা-নস্য সহস্থেণ ভূ প্র্যুতে।। কিমনৈঃ

র্বহুভি দানৈঃকোটি সংখ্যাত বিস্ত-

देतः। শোভিযাय मित्रमाय मूत्राय।-

হিতাগ্রে।। আসন পুসবা পেনু

मानार्थः शु जिलानार्यः । कलिनार्ष-

পুসূতা বৈ দাতবঁয় চ দ্বিজন্মনে ॥ জায-

मानम् दर्मम् मूथः याना नुष्-

भार्ति। जावएमा भृषिवी (कंगा गाव-

ন্নত নমুঞ্জি। ধেনা যাবন্তি রোনাণি সব্ৎসাযা বসুরুরে। তাবতের বর্ষ

কোট্যস্ত বুন্ধবাদিভি রহিতাঃ৷৷ বস-

डि उन्नालाक रैंव एक रैंव किशना

शुनाः। त्रुवनं मृत्री यः कृषा त्रीभा

मुकार्त्रा उथा। तुम्मनम् कत्र पदा

'मूर्वर्ग द्वीभाद्यका किमिनाया छमः

शृह · द्राञ्चणमा करत नारमधा छेरक

করে দদ্যাদ্বাচ্যা শুদ্ধ্যা দিতে। স সমুদাৰ্তা তেন স শৈল বন কাননা া রব্ন পূর্ণা ভবেদরে পৃথিবী মাত্র जः मरः । शृथिवी मान जूला न स्ति নৈতেন বৈ নরঃ।। নন্দিতে। ভারি পিত্তি বিফ্লাখ্য পরম প্রদং॥ বুন্ধব্যরী গোল্ল ড্রন্হা পাপদে-হকঃ॥মহাপাতক্যুক্তোপি বঞ্কো वुक्रमृषकः। निनहका वुक्रिशनाकः তথা কর্মোপদূষকঃ ৷৷ এতৈঃ পাতক যুক্তোপি গবা॰ দানেন শুদ্ধ্যতি। यु শ্চোভযমুখী দদ্যাৎ পুভূত কনকা ব্বিতা ।। তদ্দিন প্রযাহারঃ পায সেনাপি বা ভবেৎ। সুবর্ণস্য সহস্রেণ उरर्ष्ट्यनाथि जानिन।। जमराभार्ष-শতেনাপি পঞ্চাশচ তদৰ্জক ৷ যথা শক্তি পুদাতব্যা বিভ্রশাঠ্য বিব-र्ब्बत्य । हैना॰ गृह्मा ज्यमू भी मूज-यव भारमाञ्च देव। सम व॰म विवृक्तार्थ॰ সদা স্বস্তিকরী ভব 🛭 🗱 🛭 গোশরীরে দেবতা নিবেশে। যথা। দম্ভেষু মৰুতো দেবা জিস্থাযান্ত সরম্বতী। খুরমধ্যে जू गक्रवीः थूतार्गुयु जू शक्रशः॥ मर्व मित्रयू माधान्ह हन्मुक्ति छो जू ला-চনে। कञ्चिम गई नक्षव नात्र्रा ধর্ম আশুতঃ॥ অপানে সর্বতীর্থানি

शुमात जारोवी नही। नाना बील नगकीनी मन्त्राद्वः मागदा खथा।। শ্বযোরোনকূপেনুগৌনবে পদ্ধ রিণী। রোনযু-সন্তি বিদ্যাশ্চ ত্বক্লে-শেষ্যন দ্বাং। ধৈৰ্য্য ধৃতিশ্চ ক্ষান্তি-क शृष्टि वृ कि उद्भिव ह। सृ जि र्मश তथा वृद्धा तुश्रः कीर्वि खरेथव ह ॥ বিদ্যাশান্তিশৃতিশৈচৰ সন্ততিঃপর मा ज्था। गहन्नी मनुगहन्ति अजा গা•বৈনসংশ্যঃ।য়ত্ত গাবোজগত্তক দেবদেব পুরোগমা। যত্র গাব স্তত্র লক্ষীঃসাংখ্যধর্মণ্চশাশ্বতঃ॥ সর্ব-ৰূপেযু তাগাব স্তিষ্ঠন্ত্যভিমতাঃ সদা ॥ गावः পविजा मञ्चल । एत्वा नामिश দেবতাঃ। য স্তাঃ শুশুষতে ভক্ত্যা স পাপেভ্যঃপুমুচ্যতে॥ ইতিবরাহ-পুরাণ ॥

(প্রক

(धनूकः शृ॰ अमूति (भवः। म क्री
कृष्णिन रुठः। रेठि ब्री जागत् उ०ः।।
रवा उभ त जित्रका छर्ग ज वा प्रभा तकः।
रवा। मूछा । जिय॰ मना विक् प्रवः।
मूछा त्रायः श्रुनः। व्यू विक् • है। वरवस्य। त्रकाय॰ (धनूकः मृठः।।
रेठि तं जिमक्षती।।

ধেনুকস্দনঃ পু॰ প্রীকৃষ্ণঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। ধৈবত

' (धुनुका खो इंडिनी 11 (गीः 1 ইंडि ' मिनि !।

(ধर्मन्य क्री চিভিটঃ । ইতি রাজ নির্ঘণ্টঃ ।। গোদ্দীরঞ্চ ।।

ধেনুদুধানরঃ পু॰ গৈজরিঃ। ইতি রাজ-নির্ঘণটঃ।।

বেনুষ্যা স্ত্রী বন্ধকে স্থিতা গৌঃ। ইত্য-মরঃ।। বাংবন্ধকেনু দত্বা অর্থং নীত-বান্ সা।গৌ র্মান্থবী রায়া দুগ্ধ বন্ধ-কে স্থিতা সা বেনুষ্যেতি বৃদ্ধাঃ। ইতি ভরতঃ।।

ধৈনুক॰ ক্লী ধেনুসমূহঃ। ইত্যমরঃ ॥
ধৈর্য জা ধীরতা। ধীরস্য ভাব

ইত্যথে ক্ষ্যপুত্যয়ঃ ॥ তস্য লক্ষণ

যথা। ছির চিত্তোমতি ধা তুত্তি ।
ব্য মিতি কীর্ত্তিতে। ইত্যুজ্জ্বলনীল
নণিঃ ॥

বৈবতঃ পু॰ সপ্তম্বরান্তর্গত্মস্থ্ররঃ।
সতু, নারদ মতে অশ্ব মর তুল্যঃ।
তানসেন মতে ভেক মর তুল্যঃ।
অস্যোচারণ স্থানণ ললাট়ে। ব্যাক্রণ মতে দস্তঃ। অয়ণ ক্ষত্রিযবর্ণঃ।
অস্য জাতিঃ যাডবঃ। অস্য তানণ
৭২০ পুত্যেক তানং৪৮ সমুদাযেন
১৪৫৬০ ভবন্তি। ইতি সংগীতশাক্রণ
।। গত্মা নাভে রধ্যে ভাগা বন্তিণ

পুাপ্যোর্দ্ধ গঃ পুনঃ। ধাবনিব চযো যাতি কগুদেশ স ধৈবতঃ॥ অস্ত শ্রুত্তয স্তিসুঃ। ইতি সংগীতদামো-দরঃ॥

(धाउः श्रु॰ मर्शिविष्मयः। (धाउ। ইতি
ভाষা। তৎপर्यत्रायः। त्रािक्षनः २
पृथुङः ० मृथुङः ८। ইতি मपत्रः ।
वनी ॥

খোর খ গতি চাতুর্য্যে। ইতি কবি-কল্লজমঃ।।

খোরণ ক্লী সর্বাহন। হস্ত্যশ্বরথ দোলাদি। ইত্যমরঃ।। অশ্বপুথম গভিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। খৌরিতকং ২ খৌর্য্য ৩ খোরিতং ৪। ইতি হেম-চন্দুঃ।।

খোরণিঃ দ্রী পরম্পরা। ইতিজাটা-খরঃ॥

খোরিত• ক্লী খোরণ•। অশ্বপুথনগতিঃ । ইতি হেমচন্দুঃ।।

খোরিতক• শ্লী খৌরিতক•। ইত্যমর-টীকাযা• রমানাথঃ।।

খোত॰ ত্রি নার্জ্জিত । খোষা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। নির্নিক্ত ২ শোধিত ৩ সৃষ্ট ৪ ক্ষালিত ৫। ইতি হেমচন্দুঃ।। #।। ইয়জোত । ত্রিয়া খৌত য়জোত রজকেন চ। ধৌরিত

আধীত তৰিজ্ঞানীয়াদশা দক্ষিণ পশ্চিমে ॥ ইতি কর্মলোচন ॥ ধৌত ক্লী কপ্য । ইতি রাজনির্ঘটিয় ॥ ধৌতকটিঃ পুণ সূত্রর চিতভাও । ধৌকডাইতি খ্যাতঃ । তৎ পর্য্যায়ঃ । স্যোনঃ ২ স্যূতঃ ৩ পুসেবকঃ ৪। ইতি জটাধরং ॥ স্যূনঃ ৫ স্যোতঃ ৬ । ইতি ভরত ধৃত কোষান্তর ।। ধৌতকোবজ ক্লী পত্রোর্ণ । ইতি শদ্রত্বাবলী ॥

থোতকোষেয় গ্লী প্রোর্ণ। ইত্যমরঃ

। কোষেয়মের থোত পুক্ষালিত
প্রোর্ণাথ্য বট লম্বচাদি প্রেমু
কিমিভি কর্ণাযাঃ কৃতত্বাৎ পত্র
সমন্ধিনী উর্ণা অত্রেতি প্রোর্ণ।
ইতি ভরতঃ।।

থোতশিল• ক্লী স্থাটিক• ৷ ইতি ত্রিকা-শুশেষঃ।।

থৌমকঃ পু• দেশবিশেষঃ। ইতি ় কেচিৎ।। •

থৌর: পু• ধববৃক্ষ:। ইতি ভাব-পুকাশ:॥

থৌরিতক স্নী অস্থানা পঞ্চবিধ গত্যন্তর্গত গতি বিশেষঃ। ইত্যমরঃ ।। তব্র সম্যক্ গতি রাক্ষনিতে গাম ইতি খ্যাত ততো ৎধিক। थाइन

চতুরা গতিঃ। ইতি ভরতঃ।। থৌরেয়ঃ ত্রি রথবাক্ত লাদিভারবোচা । ইত্যমরঃ॥ অনডুহি কু। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

(धोर्डिक वि धृर्डिम प्रश्विम ) ভावः । इंडि धृर्ड मदा किक शुड्या निम्नम ॥

ধৌর্য্য ক্লী অশ্বস্ত প্রথম গতিঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।।

**খা • অ**ণ্নিস•যুতৌ ॥ ধ্বনৌ । ইতি কবিকল্পক্ষমঃ ॥

**धाका**तः পু॰ লোহকারকঃ। ইতি ইতি হলাযুধঃ।।

খাছু: পু কাকঃ॥ মৎস্য ভক্ষক পক্ষী। ইত্যমরঃ॥ তক্ষকঃ॥ ভি কুকঃ। ইতি নেদিনী॥

খ্যাঙ্কুজন্বা জ্রী কাকজন্বা। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।।

খ্যাত্ম জঁষ্ঃ জ্ঞী কাকজষ্ঃ। ইতিরাজ-নির্ঘটঃ।।

থাঙ্কুতৃপী স্ত্রী কাকনাসালতা। ইতিরাজনির্ঘন্টঃ।।

খ্মাঙ্কুদন্তী জী কাকতুণ্ডী। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

धाष्ट्रनथी जी काकजू शे। इंडि त्रास्तिर्घणः।। ্থ্যান্ত্রনারী জী কাকোদুঘরিকা। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।

খ্যাঙ্কনাশিনী স্ত্রী হপুষা। ইতি ভাবপুকাশ:।।

খাছুনাসা ) কাকনাসা লতা।
খ্যাছুনাসিকা) ইতিরাজনির্ঘটঃ॥
খ্যাছুপুষ্টঃ পু কোকিলঃ। ইতি
হারাবলী॥

খাছু, নাচী জী কাকনাচী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

খাঙ্কুবল্লী জী কাকনাসা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

ধাঙ্গাদনী জী কাকতুণ্ডী। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

धाङ्काরাতিঃ পু॰ পেচকঃ। ইতি । হলাযুধঃ॥

খাঙ্ক্রী ক্রী কক্নোলিকা।ইতিমেদিনী।। খাঙ্ক্রোলী জী কাকোলী।ইতি রাজ-নির্যণ্টঃ।।

খ্যামা পু॰ পরিমাণণ। আলোকঃ।। খ্যানণ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদ্যামু-পাদিবৃত্তিঃ।।

খ্যাক ই কাছে 11 যোরক্তৌ। ইতি কবিকল্পকমঃ।।

ধ্যাত ৰি চিভিত। যথা। ধ্যাত

বিত্ত নহর্নিশ নচ পুন বিকোঃপদ শাখতমিত্যাদি শান্তিশতক ॥ ধ্যান ্দ্রী চিন্তন । ইতি ধ্যৈ ধাতো-र्ভात्व १ निष् ॥ शाद्रशा विषय अक পুত্যয় সন্ততিঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।। অদ্বিতীয় বস্তুনি বিছিদ্য বিছিদ্যা-স্তরেন্দ্রিয বৃত্তি পুবাহঃ। ইতি (वहास्त्रातः॥ 🕸॥ जनुश शुज्रत्य-বৈক সম্ভতি শ্চান্যনিস্মৃ**হা। তদ্ধ্যা**-नः भूषरेग तरेकः यक्ति निद्वाम् (उ न्भ ॥ अम्रार्थः । তदुभम् । भारता সিদ্ধস্য বস্তুনঃ পুত্যুয়া যুস্যা• সস্ত-তৌ সা একাবছিন্না সম্ভতিঃ। অন্য निम्ण्हा विषयाखद्मगाव।वधीयमा-না। ৰিজাতীয় পুত্যযান্তরিতঃ স-জাতীয় পুত্যুয় পুৱাহো খ্যান মি-ठार्थः। **उह भूष्यम र्यमानि** धांत्र-ণাস্তৈঃ ষষ্টিরকৈ নিষ্ণাদ্যতে। ইতি বিষ্ণুপুরাণ তউকৈ। চ ॥ 🏗 🕮 কৃষ্ণ উবাচ। সর্বে দেবাঃ পুাকৃতিকা যা- , বস্তো মূর্ত্তি ধারিণঃ অহমাত্মানিত্য (मर्री ७७ ४) ानानु(त्राथण: ॥ ইতি तुंकरिवदर्ख जन्म था छ॰ ॥

ध्रानस्मागः भू॰ ध्रानक्शर्यागः। यथा

। विविकत्मवी वद्यां ना यजवाक् काय

मानमः। श्रानर्याम भारता निकृतः॥ ভগবন্নীতাযা ১৮ অধ্যয়: 🗓 म्राभल कि। ইতি स्मिनी।। ধ্যামক ল্লী রোহিষতৃণ। ইতিরাজ-निर्घण्डः ॥

ধ্যামা পু পরিণামঃ॥ চিন্তাযা শ্লী। ইত্যুণাদিকোৰঃ॥

(थ्रयः बि थ्राज्यः । श्रानीयः । চিম্ভনীयः। यथा। (४)यः সদা সবিকৃ मखन मध्रवजी नातायनः मतिमजा-সন সমিবিষ্টঃ। ইত্যাদি জ্বীনারায়ণ थ्यानः ॥

থ্যৈ • চিন্তনে। ইতি কবিকল্লছনঃ।। পুজ ই । গতৌ। ইতি কবিকল্পদ্ধনঃ॥

পুণ • থ্বানে। ইতি কবিকল্পক্ষমঃ।। ধুস গ উ উদ্বে ইতি কবিকল্লছমঃ।। . ধুস ক উৎকৈপে॥ উদ্ধে। ইতি কবিকল্পকনঃ ৷৷

शुर्थ प मार्य।। जनमर्थ। इंडि किविकन्नसभा ॥

ধাৰ পড় পক্তো।ইতি কবিকল্লফমং॥ পুাকিঃ জী বাতালিঃ। যুরণ বাতাস

ইতি ভাষা । ইত্যুগাদিকোষ: ॥ বৈরাগ্য সমুপাশ্রিতঃ।। ইতি 🗐 খ্রাড খ ড শীণৌ । বিভেদ ইতি যাবং। ইতি কবিকল্পক্ষঃ ॥ श्वामः द्वी ममनकवृक्षः॥ गञ्जक्ं।। अशुक्तिः पूर भूत्रहयः। ইन्युगिमितकायः ধ্রাক্ষ ই কাছে ॥ ঘোরকতৌ। ইতি কবিকল্পক্ষমঃ ।৷

ধ্রিজ ০ পতৌ। ইতি কবিকল্পফনঃ 🛚 ! थु नि रे इर्या । मर्भाग । इंडि धु कि रेकविकन्नक्रमः॥ ধুব॰ ক্লী নিশ্চিত।। তর্কঃ। ইতি

মেদিনী ॥ আকাশ। ইতি হেম-ठन्पुः ॥

ত্রি সম্ভত।। শাশ্বত। ইতি নেদিনী ॥ ছিরণ ॥ নিশ্চিত । ইতি হেমচন্দুঃ॥

धुवः श्रु॰ मक्रुः ॥ रुद्रः ।। विक्रुः ॥ विहः॥ উত্তানপাদজः॥ বসুভেদः॥ याग-**(७**नः । इंजि मिनिनी ॥ **इ**।गूः । े ইউন্সর: ।। শরারিপক্ষী । ইতি ত্রিকাওশেবঃ৷৷ ধুরকঃ৷ ইতি সঙ্গী-जनामा । 🗱 ॥ शुरुका कार्-় পত্তি ৰ্যথা । প্রিয়বুতোভানপাদৌ मताः, बार्य्युवम् । ज् i को भूत्वी **जून हा वीर्यों) वर्षाको कविर्छो उव** ॥ তर्या क्लानभाषमः मूक्टा

মুত্তমঃ সূতঃ। অভীপ্রায়া মভ্ দুক্ষন্ পিতু রত্যন্ত বলভং।। সুনীতি নাম या ताडा सम्जा ज्यारियी विजा স নাতিপ্রীতিমাণ শুস্যাণ তস্যাশ্চা-ভূজুব: সূতঃ॥রাজাসন স্থিতস্যাক॰ পিতু জু তির মাশ্রিত । দৃষ্ট্বোত্তমণ পুর শ্চক্রে তমারোচু মনোরখা।। मभन्नी जनगः मृष्ट्री जमकात्राहरणार-সুকাপুঞপিতৃত্তথাৰ্চ পুৰুচি বাক্য मवृवी ।। এতদাজাসন সর্ব ভূভ্ সংশ্ৰুষ কেতন । যোগ্য নমৈব পু এস্য কিমাত্মা ক্লিশ্যতে দ্ব্যা ॥ উৎস্জ্য পিতর বাল স্তৎ শুত্রা মাতৃ ভাষিত । । জগাম ছপিতো মাতু নিজায়া দ্বিজ मन्दितः॥ ७ मृश्वे अभिज भू धनीय পুরু রিভাধর:। সুনীতি রক্ষমারো-প্য নৈত্রেষেদ মভাষত।। বৎস কঃ কোপ হেতুত্তে কশ্চ ত্বা॰নাভিনন্দত্তি । কোবজানাতি পিতর• তব কন্তেপ-রাধ্যতি।। **ইত্যুক্তঃ সকল**• মাত্রে ক-थयामात्र जमशा। त्र्किः शुार ভূপাল পুত্যক মতিগর্বিতা ॥ সু-নীতি কবাচ। সুক্চি: সত্যুমাহেদ। ৰন্নভাগ্যেসি পুএক। নহি পুণ্যব-**णः वद्म मभरित्र त्रव मूठ्राउ।।** यिन

চেদ্যুংখ মত্যর্থণ সুক্চ্যা বচনাস্তব। उৎ भूरिताभाइय यद्भः अस मर्स कन भूष ॥ भद्रामद उँवाछ। निर्ज्ञाम গৃহামাতু রিভুজ্যে মাতর পুরঃ। পুরাচ নির্গম্য তত স্তদ্বাহ্যোপবন य्यो।। म एएम मूनी खब मध शृही-গতান্ ধুবঃ। নিৰ্ৰুগাম বনাভ্ৰমাৎ পুণিপত্য সতান্ধীন্।। মধু সংজ্ঞ নহাপুণ্ড জগাম যমুনাতটি । যবৈব দেব দেৰস্য সামিখ্য হরি মেখস:॥ সর্বপাপ হরে তিমান্ তপ স্তীর্থে চ-কার সঃ৷ পদাকুষ্ঠেন সংগীড্য যদা চ বসুধা ছিতঃ। তদা সমস্ত ৰসুধা চ-চাল সহপৰ্বতি:।।ভগৰানপি বৰ্বা-ত্মা তন্ময়ত্বেন তোষিতঃ। গদ্ধা ধ্রুব মুবাচেদণ্চতুভু জ বপুর্হরিঃ॥উভান-পাদে ভদুম্ভে তপসা পরিতোবিভঃ ৷ वहरमार मन्भारका वह । बहर मृब्ङ ॥ धुव डेवाह । जगवन् मई जूरजम मर्बम्यारस ख्वान् इति। किम्छा छः. **उर सागिन् गनमा समाराष्ट्रिछ ।। रेन**-ভদুাজাসনং যোগ্য মূজাতস্য মুমো-দরাৎ। ইতি গর্বাদবোচনাণ সপত্নী माजू क्हरिकः॥ वाशात ज्ञ वगजः गर्दवा मुख्याखमः। शुर्थवासि

পুভোস্থান-র্ৎপুসাদাদতোব্যয়ণা **এভিগবানুবাচ। ত্রৈলোক্যাদধিকে** স্থানে সর্বতারা গুহাশুয়ঃ। ভবিষ্য-তিন সন্দেহো মৎপুসাদাভ্যান্ ধুর।। সূর্য্যাৎসোমাৎ তথাভৌমাৎ সোম পুঞাৃদৃহস্পতেঃ। সিতার্ক তন-यानीना॰ नईकांगा॰ उथा धुत॰ ॥ मश्रवी ना मत्नवाना विष्ठ दिमा-নিকাঃ সুরাঃ। সর্বেষামুপরি স্থান॰ তব দত্ত•মযা ধুর।।ইতিবিষ্ণুপুরাণে >> अथायः॥ 🗱 ॥ धुरस्याग काउ कनः यथा। नदीनर्खिवाशी मना वर्कु পদ্মে চরীকর্ত্তিকাব্য বরীভর্ত্তিব-দুন্ । ধ্রবাথ্যে পুস্তি ধ্রবা তস্য কীৰ্ত্তি দিগন্তে নিতান্ত ভবেচাৰু মূর্জি:।। ইতি কোষ্ঠাপুনীপ:।। #।। ধ্রবগণো যথা। উত্তরফল্লুণী ১ উত্ত-त्रायाण् २ डेखत्र जामुश्रम् ० त्राहिशी 8। ইতি জ্যোতিষ• ॥ ৠ॥ তারা বিশেষঃ। যথা। নেরো ৰুভয়তো মধ্যে ধ্রবতারে নভ স্থিতে। নিরক্ষ দেশ সংস্থানা মুভ্যে ক্ষিতিজাশ্রি-তে॥ ভচক ं धुत्रया र्वक माकिश्व॰ भुवशानिताः। পर्य्याज्यानुः जनका गुरुकका यथाकम ॥ इंडि मूर्या-

जिकारि >२, विश्वायः ॥ ধ্রকঃ পু॰ স্থাণুঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ গীতাক বিশেষঃ। পুথা ইতি ভাৰা । जम्र नक्षा वथा। উखमः ब्रह्-পদঃ প্লোক্তো ম্ধ্যমঃ পঞ্চমঃ মৃতঃ । কনিষ্ঠশ্চ চতুর্ভিঃ স্যান্ধ্রনকে। १व॰ भरया रिजः॥ উক্ত विश्व सूर्गुाः ह দ্বিথ'ণ্ড॰ ধুবকে মত॰। ততো দ্বিথ'ণ্ড॰ মাভোগে তাল মান রসৈঃ সহ।। আভোগে কবি নাম স্যাত্তথা নাষক नाम ह। उर् गुर्र शुक्म भी दाधुव গায়েন্ডতঃ পর• ॥ ততোম্বরা ধ্রুব স্তব্যাদাভোগ ধ্রুরকৌ ততঃ। উদ্-গুৰিঃ পুথনঃ পাদঃ কথিতঃ পূৰ্ব সুরিভিঃ॥ গীত্বা পূর্র পদ • ন্যাসো যত্র স ধ্রকো মতঃ। যুক্তির কবি নাম স্যাৎস আভোগ ইতীরিতঃ॥ ধ্রুর कार्मियु गर्सियु ज्याप्तिविष्यः कमः। ্ সকু যোডশ বিধঃ। যথা। জযন্তঃশে थाता ( गार्को मधुत्र। निर्मल खथा। अ उनः कमलिक्त माननः कन्मुरक थतः॥ त्रूथमः जगूरमा कायी कन्त-পো জয়মহল:। তিলকো ললিত শ্চেতি প্রকাঃ বোডশ মৃতাঃ।। একাদশাক্ষর পদাদেকৈকাক্ষর

বর্দ্ধি তৈঃ। থতে প্র্নাঃ বোডশসুঃ
বিদ্বিত্যক্ষরাবিধি।। দিওণৈ রক্ষ
রৈ রেব পদনেক নিহেষ্যতে। উদ্গ্রাহ প্রকাভোগৈ রিঅ॰ বট্পদ
নির্বাঃ। পঞ্চপাদে তু প্রকে পদে
নৈকেন্ তন্ত্রাঃ। চতুয়াদে তু প্রকে
প্রশান্ত্যেব তন্ত্রাঃ। ইতি সহীত
দামোদরঃ।।

ধুবকা দ্রী ধুবকা। ধুবা ইতি ভাষা॥ সংজ্ঞা। ইত্যুণাদিকোষঃ॥

ধুবা স্ত্রী জুহু: । বটপতাকৃতি যজ্ঞ-পাত্র- । ইত্যমর: ।। সূর্বা ।। আটা: শালপণী ।। গীতভেদ: । ধুয়া ইতি ভাষা । ইতি মেদিনী ।। সাধীস্ত্রী । ইতি শদরত্বাবলী ॥

ধ্রেক খা ড খনে।। উৎসাহে। ইতি
কবিকল্পদ্ধনঃ ।। উৎসাহে। বৃদ্ধি
রৈতি চন্দুঃ ।। উন্নত্যমিতি ক্ষীরস্বামী।। স্বনেন উৎসাহঃ স্বনোৎ সাহি
ইতি কেচিৎ ।। তন্মতে শবেনোৎ
সহতে ইত্যর্থঃ । ইতি তটীকাষাণ
দুর্গাদাসঃ ।।

ধ্রি • তৃপ্তো। ইতি কবিকল্পদ্মঃ ।।

শুসঃ পু• নাশঃ। যথা। জন্যাভাবত্ব•
শুসত্ত্বনিতি সিদ্ধান্তমুক্তাবলী।।

ধৃ-সন স্নী ধৃ-সঃ।। গমন-॥ অধঃ-পতন । ইতি ধৃদ্বধাতো ভাবে ২নট্ পুত্যয়ঃ।।

ধৃ-সী পু- পর্ব তসম্ভবিশীলুবৃক্ষঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী।। ধৃ-স বিশিষ্টে ত্রি।।
ধৃ-সী ত্রী ত্রসরেণুপরিমাণ-। যথা।
জালান্তর গতে সূর্য্য করে ধৃ-সী বিলোক্যতে। ত্রসরেণুস্থ বিজ্ঞেয় ত্রিংশতা পরমাণুজিঃ। ইতি বৈদ্যকপরিভাষা।।

প্রজ ০ } প্রজ ই } গতৌ। ইতি কবিকল্লন্ডমঃ ॥ ধৃজঃ পু॰ শৌণ্ডিকঃ। ইতি নেদিনী।। ধুজঃ পু॰ ক্লী পতাকা॥ খট্টাঙ্গ•॥ बिद्धु ॥ हिङ्का १ इंडि सिनिनी ॥ গর্বঃ॥ দর্পঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ পূর্বদিশোগৃহ। ইতি ছেমচন্দুঃ।। পতাকাদণ্ডঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। কেত-ন•২। ইত্যনর টীকাযা• ভরতঃ॥ #॥ ধুজ যুক্তি যথা। সেনা চিহ্ন ॰ ক্ষিতী - • শানা॰ দণ্ডো ধৃজ ইতি মৃতঃ।। স পতাকো নিম্পতাকঃ স জ্ঞেয়ো দ্বি-বিধোবুধৈঃ॥ পতাকা সাৰ্দ্ধ দৈৰ্ঘ্যে-ণ দওৰ পৃথিবীভুজা । সপতাক धृजमात्ग्रायमा इखः शतिनातमः।।

জয়হন্তো খুজো নাম নৈন সামান্য মহতি ৷ বংশো ২থ বাজলঃ শালঃ शानाम म्हाम्भक खथा ॥ निर्मा निया २थवा म् ७ उथा विज्ञा जवाजनः । जवकारिक मञ्जानाः वर्ग कश शुकानिजः ।। मर्दियास्थित वः**न**स् দণ্ডঃ সম্পর্ত্তি কারকঃ। অ ক চ ট ত প যশাঃ৷৷পুতাপায় পতাকান্তু অষ্টা-বেব পুকাশিতাঃ৷ পঞ্হস্তাযতা হস্ত পরিণাহা জয়াভিধা ৷৷ জয়াচ বিজয়া ভীমা চপলা বৈজ্যন্তিকা ৷ দীৰ্ঘা বি-**भा**ना लाना ह छिया श्रेषक वृक्षि-তঃ৷৷ পরিণাহে পাদ বৃদ্ধি রথ বর্ণস্য নির্ণয়ঃ । রক্তঃ শ্বেতো ২ৰুণঃ পীত **म्हि**जा मीला २थ कवू तः ॥ कृष শ্চেতি পতাকানা বৰ্ণ ৰূপ পুকা-শিতঃ। অবদ্ধাদিক সংজ্ঞানা মঞ্চানা मञ्जेक वयः ॥ कलामा मर्भाग महन्तुः পদাকোষো যথা ক্রম। বুন্ধ ক্ষতিয विदे भूमु जांजीना॰ मंभुकाभिजः॥ গজাদি যুক্তা সা প্রোক্তা জ্বস্তী नद्भक्षा। शबः नि॰हा ह्या षीभी ठजुर्ना॰ भृषिवीजुङा॰ ॥ इ॰-সাদি যুক্তা বিজ্ঞেয়া রাজ্ঞাণ সৈবাপ্ত भक्षा। इंगः किकी मूक काला

तुक्तामीना॰ यशा कमः ॥ **ठाम**तानिः সমাযুক্তা সা ছেয়ে। সর্ব বুদ্ধিদা। চানর \*চাসপক্ষাণি চিত্রবন্ত্র\* তথা সিত ।। চতুর্ণা বেদ নয়ন পক্ষেন্দু গণিত ক্রমাৎ। তদগুে যদি বিন্যন্ত॰ পতাকা দ্বিত্য• ভবেৎ 💵 ইয•হি সর্বতো ভদু। পতাকা চক্রবর্ত্তিনঃ। **उद्यर्शः** भूवं व ब्रुख्डियः भूमागः विधि বোধিত ৷৷ কানক রাজত তামু नाना शाञ्चय कमार । ऋग्राप्तिक পুশ সন্তি পতাকাগ্রে মহীতুভা ।।। তত্রা শিরত্ন বিন্যাসো বিধেযোরাজত कमः । চভুর্ভি मंकज्ञान्यारिम् युक्ता एट अईमिकिन। ११ जना (न्यक्रिकी নান সা পতাকা বিভাষতে। মকরো **ea গলঃ সি**•ছো ব্যাঘ্রা বাজী মৃগঃ শুকঃ ৷৷ শুচি স্চেতি সমৃদিষ্টে মাদিত্যাদি দশ। ভুবা । ইতি প্রো-ক্তঃ পতাকানাণ নিৰ্ণয়ঃ পৃথিবীভুজাণ ॥ 🗱 ॥ অথ নিয়তাক ধৃজঃ। পূৰ্ব-फ्र ७ नियम खब फिर्चा विष्णवनः। দণ্ডঃপক্ষাণিপদ্মঞ্চ ব্ৰম্ভাগ বিহুগো মণিঃ ৷৷ নিষ্পতাকো খুজো রাজ্ঞাণ ষম্ভি রেতৈঃ সুস-ছিতৈঃ। ক্রয়ঃ কপালো বিজয়ঃ ক্ষেত্ৰ ভত্ত শিবঃ

क्रमाट ॥ রাজঃ পুরুষ নানেন দও- ॥ সান্তপুনীর্ভিত । উদ্বাধিঃ ক্রমযো-গেনতদ্পুৰ্ণিক মুচ্যতে ৷৷ কেকী চা-সো মৎস্যরন্ধ স্ত্রিবিধানা মহী-जूडा । श्रुडा (गुरु वित्ययानि शकाणि শূি্যনিষ্কৃতা ।। পামঃ अग्रुक विহুগো মণি শৈব যথা ক্রমাৎ। উপযুর্প রিতোধেয়ো নিয়তাকে মহীভুজা॰ ৷৷ অষ্ট ষোডশ দাত্ৰি•শচ্তুঃষষ্টি দলা- ॥ मुकः । वृद्धान्ते भिगतिनगागः षस्रः সম্পত্তি কারকঃ ৷৷ হংস শাসঃ শুকঃ কেকী পক্ষিণশ্চ যথা ক্রমণ ৷ বভুঞ্চ পদ্মরাগশ্চ নীলো বৈদ্র্য্য মেবচ ॥ বুন্ধ ক্ষত্রিয় বিট্ শূদু জাতীনা স্যা-মথা ক্রম॰। কনক॰ রজত॰ যুণ্ম॰ দ্বি বিধানা মহীভুজা ৷৷ নিম্নতাক थुजाद्वामि निर्माण याग इवाउ । পতাকা যদিহান্ত্যেকা সর্বাণ্ডেযোগ্য वर्ति ॥ व्यरः धुः विभाननात्थरी বিজ্ঞেয় শ্চক্রবর্ত্তিনঃ। তত্রৈব চামরে (यारग्र विरक्कियाः मर्बमम्भरः॥ ইতি রাজ্ঞা•সমুদ্দিষ্টমন্যেবা•ধৃজ উচ্যতে ানোজ্ব বিশতি হন্তেভ্যোনচাৰ্বাক্ मण रखकाए।। रख रखिक मध्या খুজো দশবিধো মতঃ। সহস্যাধিপ मात्रज्य यावर महामयूजाधिभः॥ न

সহসাধিপান্তনো ধৃজ ধারণ মহতি। অপি কোটিপতে ক্রেযো ধ্বজো বি•-শ্তি হস্তকঃ ॥ তত্রাপি বন্ধ বর্ণাদি নিৰ্ণয়ঃ পূৰ্ববন্ধতঃ ৷ ছিবতা চিত্ৰতা চেতি নিম্নতাক ধ্বজে গুণুী।। যদেত-দুভয় চিহ্ন মুভয়ো সিণপুকাশিত । তৎপুমাণ ধ্বজে জ্ঞেय মপুধানে ন নির্ণয়ঃ।। নিষ্পতাক প্বজোদ্দেশঃপ্রো-ক্তো १४॰ ভোজ ভূভুজা। এতদ্বিমৃষ্য মতিমান্ চির• সুথ মবাগু যাৎ।।যো-দম্ভাদপ বা জ্ঞানাদ্বিলম্ব্বুযতি মানবঃ । স বিধীদতি নশ্যেত তস্য কীৰ্ভিঃ **সল॰ বল•।।ইতি** যুক্তিক**ল্গতৰুঃ।।ঞ্ছ।।** মাৎস্যোঘণ্টা বিতান বরতোরণচিত্র যুক্ত॰ নিত্যোৎসব পুমুদিতেন জনেন मार्षः । यः कात्रयः नूत्रगृरु विश्वि-বজ্জাক্ষণ শ্ৰীস্তণ ন মুঞ্চতি সদা দিবি পূজ্যতে চ।। #॥ थुजयक्षेत्रां मिन-भार स्यमीर्य शक्षत्रावः ॥ श्रुकत्•मः পুকর্ত্ব্যে নিবুণঃ সঞ্চণো দৃচঃ। ত-मृष्वं • जामुङ ठक • मृष्यं अर्यामिन জোভন ॥ পুাসাদস্য চ বিস্তারো गान प्रथमा की खिंछ । श्रुक्य हि एवं ग्रह विभानता दिनि एनिरेकः॥ ञ्चाभनीयाथ वायत्वर मान्युङ धु मुह्य । शष्टे कार्भाम को मारिष्य व

**স্ব**ৰ্য্যাৎ সুশোভন•।। এক বৰ্ণ• বিচি-ত্র•বা ঘণ্টা চামর ভূষিত । কিঙ্কিণী ল্লালকোপেত বহিপত্র বিভূষিত । भूक्रांकि वर्षे विश्वािकः कमाचा का त्राय थुज नी मकागाष्त्र नी गाव श्खिकः विखरिते । जू। महाधुष्ठ वि-খ্যাত সৰ্বকাম পুদ শুভ ॥ শ্বজেন রহিতো বিপু প্রাসাদস্ত বৃথা ভবেৎা भूजा रहाना दिक मर्ब जिंगा गृह कृष्ठ नेदि ॥ 🕸 ॥ भिव नई सि । एरव-ভ্যক্ত গৃহ দদ্যাদ্বাহনৈ ৰূপশোভি-७॰ । जूबक्ष्यन मूर्यामा इतमा वृक् চিহ্নিত।। বিষধে গৰুডাক্কন্ত দুর্গাবৈ সি-হচিছি ত ৷ কাৰ্য্য প্তৰ পতা কাচ্য मन्।। न कथ्यन।। अ।। शक्उ नक्त भार नातम्भक्तात्व। उरममुन्ता-পুতঃ পক্ষী ভডাকেশঃ কৃতাঞ্জলিঃ। সব্যজানুগতো ভূমৌ মূৰ্দ্ধাদৌ মণিম-ণ্ডিতঃ ॥ পক্ষি জঙ্গে। নরা দ্ভি শ্চ তুক নাসে। নরাঙ্গনঃ। দ্বিবাহঃ পক্ষযুক্তশ্চ কর্ত্তব্যে বিনতাসুতঃ॥ #॥ বিষ্ণুধর্মো-ख्रा भुठिभान्। विका मन्। ५ थुङ ত্রিদশ বেশ্মনঃ। নির্দহত্যাশু পাপা-নি নহাপা ত কজান্যপি।। ইতি পু-তিষ্ঠাতত্ব•॥#॥ স্থ ধৃজচিত্ন বিধিঃ । नि॰ शक्ता थुड़ यगा न्लमा दिलू

হা উমা। দারস্থা প্রতে বৎস ন তস্য রিপুজ ভয়।। কপি সুস্থা ম-राभाषा नदमञ्जू विवालिनी । वृष यत्विञ्च मम्बाद कवान त्मृय उखन ।। হণ্সে বিদ্যার্থ কামন্ত বর্হিণে সূত মিষ্টদা। গৰুজাগা মহামাঘা সর্ব রোগ বিনাশিনী। মহিষস্থা মহামা-রীঃ শনহেৎ ধৃজ সংস্থিতা। করিণা সর্বকার্য্যেষু নূপৈঃ কার্য্যা তিশ্লিনী ॥ পর্ছা চর্কিন রৌপ্যা ধর্ম কানা-र्थभाकता। (शुष्ठहा मई छएहा नि-ত্য পশু নিপাতনাথাপূজিতা দেব-রাজেন্দু নীলোৎপল করাবরা। ভ বতে সিদ্ধকামস্য চিহ্নাণ্ডে সংব্যর্-ছিতা।। গন্ধ পুষ্লাৰ্চিত॰ কৃত্বা বন্ধ হেন সুচৰ্চিত । ফল শালি যব সূচি-বৰ্জনান বিভূষিত া৷ শোভনে উছু-যেল্লগ্নে পতাকা॰ বা মনোরমাণ। চা-**ঘর•ক্রলস• শ**ন্ধ মাতপত্র• বিতানক• ll ভবতে সিদ্ধকামস্য নৃপস্য ফল-मायकः। नमा वित्यश्रती मूर्ण नामूर् **ए अहा ति । धुंब म्यू हु विवृत्रामि**क मार्थाद्राः मुथादराः ॥ 🛊 ॥ जथ श्रुकमान विधिः। विश्वयन छवा । যদ্যেক সামহাভাগা বৃদ্ধ বিষ্ণু পরা পর। তদহ প্রাত্নি হামি প্রমান

বিশানতঃ।। অগন্ত্য উবাচ। যথা ত্ব॰ পৃষ্কদে বৎস তথা শক্রেণ বুন্ধণি। পৃষ্টঃ পূর্ব তথা তেন শস্ত্রগীত পু-কাশি হং ৷৷ শুক্ষ্য ভাব যুক্ত্স্য তদ-श्ख गराज्यनः। तृथयानि यथा न त्राय श्वनानः भश्यकः॥ भूकडेवाछ। দেব্যা ধ্বজ পুমাণন্ত বিধি দত্তস্য লা कुन । भीयां ह यथा नाथ जनामय ৰুবীহি নঃ।। ঈশ্বরউবাচ। অওজ ক্মিজ বাপি ধৃজ কেশ বিবজ্জিত । नव॰ जमक भूक्क श्रामानाम ७ व-र्षि उ।। मगः भक्षः गृहः भ्युः निन বা ধাতুজ হি বা ।। তন্মিন্ পটে লিখেৎ সিংহং সর্বলক্ষণ লক্ষিতং ৷ রোচনা সহ চন্দ্রেণ হেম লেখাদ্য দূ-र्या॥ श्रामाना मान मान कि তি॰ বিস্তরতঃকর॰। ধর। পাদেন ক-र्ख्वा पर्नायफिक् एत्वजाः ॥ मर्वा বাহন লাঞ্চেন লাঞ্চিতাঃ সহজেন চা কিন্ধিণী চামরোপেতা ঘণ্টা দর্পণ শোভিতাঃ।।হতংহামা মহাপাুক্তঃ সহকার দলাবিতান্। মহামঙ্গল मत्दन (मव्याः अञ्चान भुभृहरय ।। সুগন্ধপুত্ন নৈবেদ্য যথা বিভব বিস্ত-রৈঃ৷ কন্যকা ব্রাহ্মণান্ ভোজ্য দবি भायमभर्क देतः ॥ ज्ञानास विनः म

ত্বাতথা তমুপরোহযেৎ॥ সর্বকামা-ন বাশ্নোতি বিদ্যাধরপতি র্ভবেৎ ॥ নোদতে বিবিধান ভোগান্ সর্ব বি-म्हार्थ भातगः। अथ्वा टेश्न क्रा बा वार्कः भार्थिव रे**नवेडः ॥** कात्रय-মৃগরাজন্ত মহাকরি দ্বাপই। মহা नथ करता ८ था । मुकाकन भन পুর•। এব॰ বিধ• ততঃ কৃত্বা নবম্যা• श्रुक्ष यहिवाः।। स्माशवानः भू वि मंकः সর্ব সঙ্গ বিবজ্জিতঃ। কন্যকাঃ পূজ যিত্বা তু বিপ্যান্ বেদ বিদ স্ততঃ॥ দেব্যা ভক্তাঃ সদাচারা স্ত্রিকাল হ-বন রতাঃ।তে যথা শক্তিতস্তোষ্যা थुकारतारुन कर्यान ॥ कन्ता रम्द्रा ষবং প্রোক্তাঃকন্য রূপা তুশ্লিনী। यावरक्षञ वानी म्याखावरक्रवी मू-রারিহা।। দ্বিজা বুক্ষা শিবে। বিষ্ণুঃ मकीय वुछ भानकः। भूक्तिक रेखः मना मुक मर्स्राया भूकि जाः॥ भी নান্ধ ক্পণানান্ত অন্ন দেয়ন্ত শক্তি-তঃ। যথা সর্ব গতা দেবী তদুদ্দিশ্য-ক্ষ্য ভবেৎ ৷৷ নানা ভক্তাক্ষত দুখি मूर्वी <u>उ</u>९ क्षिकाद्विछः। विनिर्देव **मर्ब** ज्उज्जा मन मिक्क निखम्य ॥ বজুযোগা তথা জপ্তা অষ্টবিংশাক্ষরা-পি বা। সি॰ হ॰ স্তম্ভে সমারোপ্য সর্ব

মক্ল শব্তি ।। বেদগুনি মহানত্ত কালিকা চণ্ডিকাপর । ন্যস্য সি হ পর भारायाम्म भूई कल्लि ।। এবস্ত বস্ত্র সম্বীতে সর্বাভরণ ভূষিতং । (मव्या मङ्गद्कः न्या (भवागामिन विनारमेट भारतम विकिन्त कपारा সোম সূর্য্য दिखोकना । धुक मान गहामान अर्ब माताखन गङ ॥ যাবন্ধো দীয়তে শুক্র ধুজঃ প্রাসাদ ্বুজভন্বঃ পু॰ ক্লীবত্ব জনক রোগ-মূর্দ্ধনি। তাবজুন ভবেদ্বৎ সপ্রাসাদে। रित्वाक्षिजः ॥ भूग्र धुकः मरा ज्जा নানা গন্ধৰ রাক্ষসাঃ। বিদুবস্তি মহা-জ্বানো নানা বাধাঞ্চ হ্বর্বতে ॥ তহ্মা-দ্দেব গৃহ দ্বার পুর পর্বত পত্তনে। উ-ট্টিতাঃ শান্তি কামায পুজাঃ শুক্র সদা হিতাঃ ৷৷ নহি চান্যন্ধুজদানাদুত্তমণ ভারতে হুচিৎ। দান নিইঞ্চ পুইঞ্চ দেব্যা দীপ खरेथव हा। ज्ञानन दिधिना यस थुज॰ मूक निदिमरय । সई कामा-নবাংগ্রাতি স্ নরঃ শিবৃতা বুজে ॥ তস্য দর্শন সম্ভাষাদপি পাপরতা নরাঃ।বিমুক্তাঃ সর্ব পাপেভেতা দিব॰ যান্তি ন সংশ্যঃ। রাজ্ঞা চানেন বিধি-না দেবী লাণ্টুন ব্লঞ্জিতা ।৷ শন্তু চক্র বৃষভার্ক হংস বর্হিণ বারুণেঃ।সাচা-রো ভক্তি মাস্থায় পুল যঠি সমু ছু

যেখান তস্য সঙ্গরে শুক্র ব্যাথবা नह रिवर्तिगः। निव শঙ্ক दुग शीज ভবেছা॰ न नम् हुरद्धा शेंछ परवी श्रुवाणः ॥

थ्रकम्भः शुः जानृत्रमः॥ माउत्मः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

ধ্বজপুহরণঃ পু॰ বাযুঃ।ইতি **শহ**-बङ्गावनी ॥

বিশেষঃ ৷ তস্য নিদান যথা ৷ অত্যন্ন লবণ ক্ষার বিৰুদ্ধাশন ভোজনা
। তথা

पूर्णाना

विषय পিষ্টান্ন গুৰুভোজনা থা। দধিক্ষীরা-न्भ मा॰म मिवनाष्ठ्राधि कर्चनाट। কল্যাণী গমনাচাপি বিযোনি গম-नामि ॥ मीर्घात्रामी॰ हित्ता ८ मृ-ষ্ঠা॰ তথৈব চ রজম্বলা॰ । দুর্গন্ধা॰ দুষ্টযোনিঞ্চ তথৈব চ পরিস্কৃতা। अन्नी॰ भुगना॰ माश्र यनि गह-তি মানবঃ॥ চতুঃপদাভি গমনাছে-ফস শ্চাভিঘাততঃ। অধাবনাচ নেটুস্য শব্দ দন্ত নথক্ষতা ে৷৷ কাঠ পুহার নিয়েষ শ্কানাঞ্চ নিষেব-নাৎ। রেতসক পুতীঘাতাৎ ধৃজ-ভব: পুবর্তে। ইতি চরক: ।। # 11 जन। विद्रा<sup>•</sup> यथा। मुरक विद्राप

পুষিচ্যেত শুক্রণ শেষণিত মেব বা । তোদোত্যর্থ বৃষণযো মেঁচু ধূপা-যতীবঁচ ॥ ইতি বাভটঃ ॥ 🟶 ॥ অপিচ। তৈত্তৈ ভাবৈ রষ্ট্দ্যক রির সে। র্মনসি ক্লতে ৷ ধৃঙ্গঃ পত-ত্যধো नृगा द्विवा महाः शुकायत् ll ভক্ষৈ্য রশ্লোঞ্চ লবণৈ রতি মাত্রো-পসেবিতৈঃ। সৌন্য ধাতু ক্ষযাদুষ্ঠঃ ক্লৈব্যু তদ্পর মৃত ॥ অতিব্যবা যশী লা যো নচ বাজিজিয়া রতঃ। ধৃজ ভঙ্গ ম্বাণ্নোতি স শুক্র ক্ষয হেতুক• ॥ অসাধ্য সহজ দ্লৈব্য गर्माहामा जवक यट । जनावतानाः विभिष्ठाना॰ कार्य्या वाजीकरता वि-ধিঃ ॥ 🕸 ॥ তস্য চিকিৎসা यथः। সুবর্ণা সুবৎ সা শুভা ধেনু ধন্যা ঘৃত বোগ বোগে পুশন্ত সপুস্। মৃদৌ বা দরাগ্রৌ পচেৎ পাক শূর স্তদা তে-জপত্র হরিদ। সুপিষ্ট ॥ বিধী শুদ্ধি হেতৌ সমুস্ত সুপিষ্ঠ বিধেয় नुगक्षाय वृष्काशामा । नमृनाय-गक्का मशुष्ट विहूर्न मुख्यादि पद्भा-গুণ বেদ যুক্ত।। यहा শেষ ভূত তদা যোগ যোগে পচেৎ পাক-विष्का जृनः पर्वि होना । शह

রাবি দুখা গ্তস্যাপি জ্ল্য থিকা-রী সপুস্থা তথা তেন বৈদ্য ।। তথা শাশ্মলী তোয দত্ত সপুস্থ বিতার্য্যাবতিষ্ঠে মুক্ত যোগরাজঃ। ইতি বৈদ্যক ।।

ধুজবান ত্রি কেতনমুক্তঃ। ব্রিক্ষণো ব্রাহ্মণ ঘাতবিত্বা উস্তৈর শিরঃ क्लान मानाय जीर्थान्यम्बद्धार । यथा। निजः कशानी शुक्रवान् जिकाशी कर्म (वस्यन्। तुकारः। षामभादानि भिजज्र मुक्तिगानु যাৎা৷ ধুজবান্ কৃত্বা শব শিরোধুজ-মিতি মনুষ্মবণাৎ অন্যহিরঃ কপা-লন্দগুগুসমারোপিত ধ্বজ শন্দ বাচ্য॰ গৃহীযাদিতি মি**তাক্**রা ॥ ध्विनी जी (नना। इंड्रागदः॥ প্ৰজী পু॰ ব্ৰাহ্মণঃ॥ পৰ্বতঃ॥ রথঃ॥ সর্পঃ ।। যোটকঃ । ইতি মেদিনী ॥ মযূরঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শৌ-ত্তিকঃ। ইতি ছেমচন্দুঃ॥ ধ্বজোত্থান ল্লী শক্তোৎসৰঃ। ইতি विकालममः॥ वंड ए छार मूक দ্বীদশ্যা ভবতি। ইতি মৃতিঃ য়া ধ্বণ • ধ্বানে। ইতি কবিকল্পঞ্চনঃ॥

ধুন মি রবে। ইতি কবিকল্লফমঃ॥

ধুন এক শব্দে। ইতি কবিকল্পদ্রমা।
ধুনঃ পু॰ শব্দঃ। ইতি ভরতদ্বিৰূপকোষঃ।।

थ्नत्माभी भू क्रुमतः। ইতি भपतंत्रा-

श्रुतिः श्रृ भूदः । इंड्रामतः ॥ श्रृत का पि भदः । यथा । भदा श्रुति के वर्षक स्वापि ख्य श्रुतिः । क्ष्रे म्रामा क्याता वर्णा का प्रया मुजाः ॥ इंडि ভाषा श्रुतिः ॥ উखनकाव । । यथा। इंप्रमुखन श्रुतिः ॥ উखनकाव । । यथा। इंप्रमुखन श्रुतिः वृ रेषः कथिङः। इंडि का व । इंडि बिका खन् । इंडि बिका ख

ধ্বনিগুহঃ পু॰ শোৰে•। ইতি ত্ৰিকাণ্ড-শেষঃ।। শব্দক্তানঞ্চ।। ধ্বিতঃ তি শব্দিকঃ। ক্ৰেয়ন মদ

ধ্বিতঃ ত্রি শব্দিতঃ। কৃতস্বন মৃদস্থাদিঃ।ইতি ভরতঃ।। তৎপর্য্যায়ঃ
। শ্বনিতঃ২। ইত্যমরঃ।। ধ্বনিকাব্যযুক্ত বাক্যাদিশ্চ।।

श्विनाना जी वीगा। (वगूः। काश्नः। देखि (मिनी।।

ধুনিবিকারঃ পু॰ কাকুঃ।শোকভ্যা-দিনা শদ বিক্তিঃ। ইতি হেন-চন্দুঃ॥

ধ্য উড় ৯ গতৌ।। ভুংশ। অধঃ-

পতন ইতি য়াবং ৷ ইতি কবিকল্প-क्यः ॥ ध्यः वि চুऽত। गिनिठः। ইউঁ। महः॥ नड्रेक्ष् ॥ थानः श्रु॰ मदः। ইত্যমরः॥ ধান্ত॰ শ্লী অন্ধকারঃ। ইত্যুসরঃ॥ প্বান্তবিভঃ পু• খদেগ্ৰতঃ। ই**তি শম**-রত্বাবলী।। ধান্তশাত্রবঃ পু॰ শ্যোণাকবৃক্ষঃ। ইতি नदहिनुका।। मूर्य। हन्नु। ११ वर्ष।। ধ্যন্তারাতিঃ পু॰ স্র্য্ঃ।ইতি হেন-हन्दुः ॥ हन्द्राशीह ॥ श्वाखात्मयः श्र्॰ थाम्राजः। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥ ধৃ ৽ কৌটিলের। ইতি কবিকল্লছনঃ॥

• नकातः। তবर्ग পঞ্চন ব্যঞ্জন वि॰म वर्गः। অস্যোচারণ স্থান॰ দন্তঃ
। ইতি ব্যাকরণ॰।। তৎ পর্য্যায়ঃ।

মেষঃ ২ দীঘা ৩ সৌরিঃ ৪। ইতি

বীজাভিধান॰।। জ্ঞা। তৎ স্বৰূপ॰

যথা। নকার॰ শৃণুচার্বস্থিকোটি বিদ্যু

স্লাকৃতি৽। পঞ্চ দেব ময়॰ বর্ণ॰ স্বয়॰
পরমন্ত জ্বী।। পঞ্চ পুণণাত্মক॰ বর্ণ॰

হুদি ভাবয় পার্বত। ইতিকামধেনু- তত্র•॥ #।। বামতঃ সঙলী রেখা
। বিং ক্রমতঃ হিতা। চন্দুস্ব্যায়ি
কলী সা নাক্রা বাণী পুকীর্ত্তিতা।।
ইতি বর্ণোদ্ধীরতত্র•॥

न वर्र निरम्भः ॥ উপमा । ইতি

मिहिनी ॥ जाहरमर भर्यरायः । निर्

२ व्य २ त्ना ४ व्य ठावः ६ । ইত स्त्रः ।।

गा व्यना ५ ना १ । ইতি स्त्र उः ॥

नक्ष्यं ह ॥

नः श्रु मुगठः॥ वकः॥ दित्रशः॥ स्रुठः। इंडि भिनि ॥ तदः । इंडिऽ काक्षत्रकायः ॥ दिञीया, ठेजूशी यशे वक्ष्यत्नासम्बद्धमाः मास्र कालायकः॥

नःकूपुः बि कूपुनानिकः। ইতি र्विन्युः॥

নংশুকঃ ত্রি নাশকঃ। ইতি সিদ্ধান্ত কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ।।

নংখ্রী তি নাশাশুষ্য। ইতি নশধাতো স্থানি পুনাগ্যম নিগ্লমঃ।। নস্কটি শ্লী নাসিকা। ইতি শক্ষালা।।

নঙ্গলঃ পু॰ জন্তবিশেষঃ। নেউল।।
ইতিবেজী ইতিচ ভাষ।। তৎপর্য্যাযঃ। পিঙ্গলঃ ২ সর্পহা ও বজঃ ৪।
ইতিহেম্যন্ত্রঃ।। সূচীবদনঃ ৫ সর্পা-

तिः ७ (काहिजाननः १। जम् मान्म ख्याः । शिहिलद् । वाज नालिद् । श्याः शिख काति द्याः है जि त्राक्ष-निर्विष्ठः ॥ शाशु त्राक्षम् प्रजूर्थ श्रूथः । म नापी गर्छ व्यथिनी स्मात काजः । है जि महाजात्र जः ॥ श्रूथः । है जि लक्षमाना ॥ लिदः । यथा युधि छत-मह्माना ।। लिदः । यथा युधि छत-मह्माना ।। लिदः । यथा युधि छत-मह्माना ।। हिन्दः । यथा युधि छत-मह्माना ।। हिन्दः । यथा व्यक्षित्र । श्रुक्षिण महस्त्र विवाहिणा । श्रुक्षिण महस्त्र विवाहिणा । स्वार्थः । हिन्दे स्वकृष्टि विवाहिणा ।

নঙ্গলাচ্য ন্ত্রী গন্ধনান্তলী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

नक्की की क्कृष्टी।। भागनी। इंडि भारती।। भाईती। इंडि ध्वरिषः।। क्कृप्र-। इंडि इ्यहन्द्रः॥ इकावः। इंडि वीजाजिधानः॥ नक्कमऽ जार्या ह॥

नक्नीणः भू रेज्यविद्यायः। यद्याः नक्निणः कानिनीत्रे मक्कभामाक्र्-नी मम। इंजिभीठेमाना॥ इकायः। भारतः

পুরণা হকুশঃ পুরে ৷ মহেশে।
নহলী চৈব বরাহো গদশ রবিঃ।।
লিক্ শ্নেরা মহাশ্ন্যঃ প্রাণক

नक्रमू

পরমেশ্ববি। ইতি হকার পর্য্যাযে বীজাভিধান ৷৷ नञ्चलक्षे। जी तामा। इन्डामदः॥ बङ्क क नाम्बल। हेि क किक क्रक महिशा मकः े वृऽ क्रकारो। ইত্যমরঃ॥ मक् क्षी दां विशा नक्ष गया नक्र युज्। যথা। উপৰ্বাসাৎপর• ভৈক্ষ• ভি-ক্ষাপর ম্যাচিত ৷ অ্যাচিতা ৎপর नकः जमान्नाकन वर्ज्यया । परिवस्र ভুক্ত পূৰ্বাহে মধ্যাহে ঋষিভি তথা । অপরাহে পিতৃতি ভুক্তি সন্ধ্যা যা গুছকাদিভিঃ৷৷ সর্ববলামতি-ক্রম্য নক্তে ভুক্ত মভোজন । বামা-চারো মহাদেবো নক্তে নৈবোদ্ধরে-মৃণা•।। ইতি দেবীপুরাণ•।। নক্তকঃ পু- কর্পটঃ। ন্যাক্ডা ইতি ভাষা। ইত্যনরটীকাষাণ ভরতঃ॥ नक्छाती<sup>म</sup> भू॰ विजालः॥ (शहकः। 🗗 ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ রাত্রিচর-মাৰে তি ii बक्कद्रः शू॰ द्राक्रमः। ইতি হলা-यूथः ॥ रुष्टुनुः । ইতি क्रोराथतः ॥ চৌর:॥ পেচক:॥ রাক্ষস:॥ নক্তমালঃ পু॰ করঞ্জবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ॥

नक्रमूथा जी ताकिः। ইতি रुनायूथः॥

নজ্ৰুত স্নী দিৰাজ্যেজনাভাব বিশি-🔰 রাত্রি ভোজন । যথা । হবিষ্য ভোজন•স্থান•সত্য নাহার লাবব ৷ অগ্নিকার্য্য মধঃশর্য্যাণ নক্তভোজী বডাচরেৎ।। ইতি ভবিষ্যপুরাণ।। नका जी कनिकाती। देशनात्रवा ইতি ভাষা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। नक॰ क्री अगुराक !! वागकार्य इंजि ভाষ।।। नात्रिका। ইতি মেদিনী।। नकः পু॰ अंडीतः। ইত্যমরः॥ नकताकः भू॰ जनजस्रित्मधः। श्रांत्रत हैि जाया। उट्भर्यतायः। शारः २ जनिकतारिः ७ जनारिकः ६। इंडि हाद्रावनी॥ নকা দ্রী নাসিকা।ইতি শব্দরত্না-वनी ॥ সর্পণে। ইতি কবিকল্পদ্ধনঃ।। नथ॰ क्ली श्रु॰ जाष्ट्र लीक फेक शन इंडि

नथ

হিন্দী ভাষা। তত্তু উপধাতুবিশেষঃ গর্ভস্থ বালকস্য ষষ্ঠ মাসে ভবতি। इंडि मूथरवाषः॥ उৎ भर्य ग्रयः। भून র্ভবঃ২করক্ছ:৩নখরঃ৪। ইত্যমরঃ ॥ कामाक्रूभः ৫ कद्रबः ७ भाषिकः १ অঙ্গুলীসমূতঃ ৮ পুনর্বঃ ৯। ইতি व्राक्रनिर्घण्डः ॥ क्वागुकः >० क्वक

केंकः >> महाकूनः >२ हिन्द्रशः
>> कत्रहन्मः >६ कत्राकूनः >६ ।
इंडि नम्त्रज्ञावनी ॥ ॥ तिङ्कीछाया॰ नथीचा ज्ञानानि यथा ।
नथाघा जः श्रुरा ज्ञावता यथा इनानि
कर्मामू । शार्श्वाः स्तरा रैक्टव

ो চৈব নিতম্বকে॥ কক্ষন্থলে চ কর্ণাম্ভ কপালে বাহুসূলকে। গ্রীবা-যা• কণ্ডদেশে চ নথাবাত• সমাচ-রেৎ।৷ তথা সর্বশরীরেষু নথ দ **ए**त्रं भरेनः भरेनः। ইতিকানশাস্ত ।। 🗱 ।। न नरेथ विनिध्यक्तिः गाक अर्षिभरिष्वश्चि ॥ न स्रास्त्र नथवाम्। रेव क्रयंत्रमाञ्जलिना भिरवट् । ইতি কুর্মে উপরিভাগে ১৫ অধ্যায়ঃ॥ नथ की जी मूर्गिकुर्दावरणयः। नथी इंडि थेऽाउः। उৎপर्यऽायः। শুক্তিঃ ২ শদ্ধঃ ৩ খুরঃ ৪ কোলদল ৫। ইত্যমরঃ ॥ করজাখ্যঃ ৬ অস্থ-थूतः १ नथः ५ वतात्त्वनथः २ नथी रे०। षिक्षा मञ्जनथायज्ञनज्ञ मुक्जायज वनत्रीह्नः। इंठि त्रज्ञनालाः ॥ कतः करः ১১ मिश्री १२ मकः १० इनः १८ কোশী ১৫ कब्रजः ১৬ হनुः ১৭ नाग-हनुः ১৮ পাণিজঃ ১৯ বদরীপত্রঃ ২০ ৰূপ্যঃ২১ পণ্যবিলাসিনী ২২ সন্ধি- 🛚

नानः २० भागिकरः, २८ । ইতি वाजनिर्घण्टः ॥ व्याष्ट्रायूषः २० ठकः कातक २५॥ सम्भनथमा अर्यायः। नथी > इनुः २ इউविनामिनी ०। তযোর্ধণাঃ। **গৃহশ্লেম** বাতাসূত্ত্বর-क्ष नाणिष् । वयूष् । ऎक्षद् ।। मुकलद्भा वर्ग्यद्भा सामूद्भा तुन विवानची मूथानीर्गका नामिष् । পাক রসযোঃ কটুত্বঞ্চ। ইতি ভাব-পুকাশঃ ৷৷ কণ্ডু ভূত বিনাশিত্ব৽ ৷ रेि ताजनियंगेः ॥ तकामुष् । ইতি রাজবল্লভঃ॥ 🗱 ॥ শৈল্ৰহ• व्राघुनथः रुनू र्रे है विवासिनी। सूरि-त्राक्षनरकभी **ह** क्लाजाह्नु नेली थूतः ॥ यद्मभव खुरमो मुक्ति र्यती वनती हमा। गराः खुरमो भाइनथः শদ্ধাথ্যো গন্ধসারণঃ ৷৷ ইতি ভরত ধৃত বাচস্পতিঃ॥

নথঃ' পু॰ খণ্ড॰। ইতি হেমচন্দু ।। নথস্ক উঃ পু॰ নাপিতঃ। ইতি ত্রিছা-ণ্ডশেষঃ।।

नथनित्रावः श्रु नित्रावी (छिनः। छ८ शर्य) यः। अङ्गु लिक्न ला २ वृद्धनिङ्गा-विका ० गुगगा ८ नथक हक ला ६ गुगग किन ज्ञावी ७ नथक लिनी १। श्रुजा छ लाः। क वायदः। मधु तदः। क्षेण्किक्यप्रशासिश्वः। शिनन-पः। कठिकातिष्कः। ইতি त्राक्ष-निर्धकः॥

নখপণী জী বৃশ্চিকাজুপ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

नथপूड़ी की পृक्ष। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। नथमूठ॰ क्री थनुः। ইতি সাক্ষপ্তসার

वंशकत्रभः ।। नथम् (भावति वि ।।
नथमः भू नी नथः। इंछ (भावः ।।
नथमः भू नी की नथहमना क्षवित्मयः।
नक्ष इंछि ভाषा । यथा । जनस
व्याभास वादिषी मनदातिभी ।
भूनर्जवहमकती गरम्य नथन्न स्थानी।
इंछि हार्था स्कृतिकावाः।।

नथत्रायुषः श्रु जिः सः ॥ व्यायुः ॥ अक्टुरेः । इंजि तासनिर्यणः ॥

नभंतासः शृ॰ कत्रवीतवृक्तः। ইতি ॥ त्राक्षनिर्धण्डः॥

नथरी जी नथी। ইতি भक्तांना।।

कुम्नथी। ইতি কাচিদুর্নালা।।

नथर्कः शृ॰ नीलर्कः। ইতি রাজনির্ঘন্টা।।

বধশন্তঃ পু॰ কুদুশন্তঃ। ইতি শব-রত্নাবলী।।

नथाकः क्री वृत्राचुनथी। ইতি শব-व्यावणी।। नथाकः त्री नली। ইতিकाहिनुद्रमाला नथावृथः श्रू॰ व्याष्ट्रः । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥ সি॰হ জ্ফুটো চা। নথালাঃ পু॰ কুদুশর্রঃ । ইতি শন্দ-চন্দ্রকা ॥ নথাশুণী চ ॥ নথালাঃ পু॰ নীলবৃক্ষঃ । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥

नथाभी भू॰ (शहकः। ইতি विकाख-(भवः॥ नथजंककमादा वि॥ नथी जी नथनामशक्ष्रवाः। ইতামরः ॥ मि॰ (इ इनडः शू॰। ইতি রাজ-निर्धणेः॥ विनात्रगक्षम नथ युक्त श्रम् माजः। यथा। नथिनाक निर्माक म्विगाः भज्ञशानिनाः। विश्वासा रेनव कर्लवाः जीयू ताजवालम् हः॥ हेणिहानकाः।

नगः शृ॰ शर्ब जः ॥ वृष्णः । ইত্যমরः ॥ नगङः शृ॰ रखी । ইত্যমরটীকা সার-সুন্দরী ॥ পর্বতজাত বস্তু মাত্রে ত্রি নগজা জ্ঞী কুদুপাষাণভেদা । ইতি রাজনির্ঘটঃ ॥

নগণা জী লভাবিশেবঃ। নথাকট্কী ইতিভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। পারা-"বতপদী ২ পিণ্যা ৩ মু টবন্ধনী ৪ জ্যোভিমভী ৫ প্তিতৈলা ৬ ইসুদী ৭। ইতি রক্ষনালা।। नगननित्नी जी पूर्ण। इंडिअप्बार्शः वनी ॥

নগপতিঃ পু॰ হিনালযপর্বতঃ। ইতি ত্রিকাওশেষমা চন্দুশ্চ ॥

নগভিৎ পুণ পাষাণভেদনঃ৷ ইতি রাজনির্ঘটং॥ ইন্দুক্তাঃ

নগভূঃ পুঁ॰ কুদুপাষাণভেদা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। পর্বতজাতে বিঃ।।

नगतः ली नगा इत्शामानात्यः मिष्ठियव । भरत देखिलाता। जन्मर्गायः। भृःर পুরী এপুরি:৪পুর ৫ নগরী ৬পত্তন • পপউন ৮প উনী ৯পুটভেদন ১০পট **ভে**नन•১১ इनिय•১२ निगमः১**৩।ইত**ऽ-মরভরতৌ।কেচিজু নগর পত্তন স্থা-বীযানা ভেদনা হঃ। তত্র পুরাদিত্রয পুরে।পত্তনাদি দ্বয় পত্তনে। স্থানী -यानि षय॰ इननीरय। ইতি मनप्रस्थ। যক্রাপ্তশুলীয় ব্যবহার হানং मध्यविष्ट नगदः। यव द्राष्ट्रा उट পরিচারকাশ্চ তিপ্তস্তি তৎপর্ত্তনশ্। श्राकात्राप्तिना पूर्ण याजन विर्छीर्ण " নগর স্থানীয় । কেচিজু পুর নগর যো রপি ভেদ মাহুঃ৷ বহু গুামীয ব্যবহার স্থান পুরুষ ত্র পুধান ভূত- নগর• ৷ ইতিভরতঃ॥ 🗱 ৷৷ অথ নগর নির্মাণকালঃ৷ ছিব্র বাশি গতে

ভানৌ চন্দ্রে চ ছিরভোদ্যযে। শুলো কালে দিনে চৈব নগর কারবেদৃপঃ ॥ 🛊 ॥ তস্য : লক্ষণ ভবিষ্যোত্তরে । দীর্মদা চতুরসুদা নগরণ কারযেদৃপঃ । তব্ৰুসু-বৰ্ত্ব ল॰ বাপি কদাচিদপি कात्रयः ॥ मीर्यः भारिकशुनत्रश्रः তুরসু॰ সমোচিত । ত্রিভিঃ পাদৈঃ मम कार्म वर्ज् न वनगाक्**छि॥** नीर्यः न्याप्तीर्यं कालाय नृथ नम्माखः হেতবে। চতুরসুণ চতুর্বর্গ ফলায পৃথিবীভূজঃ ॥ ত্রাসুশ ত্রিশক্তি না-শায বন্তু ল॰ বহুরোগ ক্ৎ। রাজঃ: **यः हरेल ५ंग**ी द्राह्महरू উদা**ञ्**र ॥ त्राबर्खिक म्मञी त्राबम्खः উদাহতঃ৷ রাজদধ্রৈশ্চ দশভী রা-জহুণ সুদাহত ।। রাজহুণে<del>ত</del> দ**শ**ভী রা**র্ত্ত** উদাস্তঃ। রাজ-কাণ্ডেশ্চ দশভী রাজপুৰুষ উচ্যতে ॥ রাজধানী তু কথিতা দশভী 🖣 জ-शृक्रेयः। ताज्ञथानी मण ख्या तावे কেত্ৰ:মুদাহত ॥ সপ্তিব পরিমা<sup>ন</sup> ণানি প্রোক্তানি পুর পত্তশৈ। ভযতা ভোগসম্পত্তি মর্ত্যুকীর্ত্তি সুখার্থি-না'বাজ ক্ষেত্রেগ নৃপতিঃ পুরপত্তন मात्रख्या कची ईरःक्या मिथ्र পঞ্জু ভঙ্গ একতা ৷৷ সমৃদ্ধি বিত্ত'

नानक मञ्ज्लक वल क्यशनभू कर ভোগ সম্পত্তি রিতি যোড়শ কীর্ত্তি-তাঃ।।যথার্থ স•জ্ঞা নগরা মুনিনাতজ্ব रिविना । ইতি युक्तिकन्नठकः॥ #11 অপিচ। নৃপাবাসঃ পুরী প্রোক্তা বিশাস্থার মপীষ্যতে একতো যত্র তু প্রামো নগরঞ্চৈকতঃ স্থিত ।। মিশুন্ত चर्ब है॰ नाम नहीं शिवि जनानुय । বিপ্যাশ্চ বিপুভ্ত্যাশ্চ যত্ৰ চৈৰ বস-ম্ভি হি॥ সতু গুাম ইতিপ্রোক্তঃ শ্দু-ণা॰ বাস এবচ। পণ্য ক্রিয়াদি नि भूरि का वूर्वर्ग जरेन यू उ॰ ॥ अस्नकं জাতি সম্বন্ধ নৈক শিল্প সমাস্ত্রণ ৷ সর্ব দৈবত সম্বন্ধ নগরম্বভিধীয়তে <sup>1</sup> । ইতি বিশুপুরাণ টীকাযাণ শ্রীপর-স্বামি ধৃত ভৃগু বচন•॥ 🕸 ॥ অন্যह । নগন়॰ সর্বতোভদু• কর্ত্তব্য• রোধক• হিব।। স্বস্তিক সধ্যগ কার্য্য সমারী পূৰ্মেৰে বা ৷৷ চতুষ্পথ চতুৰ্যুক্ত সৰ कांग जुशावङ् । ছिमकर्ग विनाजक मुः क्षि छ । कृष्ण मूर्वन ।। नगत न शुष्ण -সন্তি প্রতিধিক বিভেদিত । অগুতঃ স্মলুপানাদ ছিন্নঘুণ বিদু বু ধাঃ।। দ্বিমুখণ কৰ্ণহীনন্ত কৃশ্যধ্য কৃশণ বিদুঃ। দুঃ স্থিত নিম্ন্যাম্যন্ত নৈশ ত॰ थन पूर्वल ।। (जोग्रः नर्वनूथाङ्गाप

পূরিত বাৰ্ণে বশ। যাম্য মাযুঃ शुमःश्र्नं नगतः शुीि वर्षानः।। जेम-वामव मः भूनं महीता ग्रम्थं भूमः। মধ্যঞ্জুল্লথোপে**র্জ** নচ ত॰ পীড-বেৎ ক্বচিৎ। বুক্সস্থান হি ত বিপু শিব স্তত্র সদা ছিতঃ। চতুর্বি•শতি নাড্যস্ত হস্তান্যপ্ত শতং পরং॥ অত্র मधाः भूमः मिख्या एक्टे विविद्धिः তণঅথ কিষ্কুশতান্যপ্তৌপুাহু মু খ্যুণ নিবেশন াা নগরার্জঞ্চ বিষ্কয়ত থেটি গ্রাম• ততো হর্দ্ধতঃ৷ নগরান্দোজনং **. १थे छै॰ (थे छो म् शुास्मार्क्क** (यो जनशा वि-ক্রোশ পর্যা সীমাক্ষেত্র সীমাচতু-র্থনুঃ। ত্রি॰শজ্বন্•িষ বি গ্রীর্ণো দেশো मार्गञ्ज किः क् जः॥ विः सम्बन् गुर्म मार्गः मीमामार्गा मरेनव ज् । थन् वि मन विखीर्नः 🖺 मानु। ज नथः क्उः॥ ন্ বাজি রথ নাগানা মসয়াধঃ সুস ঞ্বঃ।ধনু•িষ চৈব চত্ত্বারি শাখা র-খ্যান্ত নির্মিতাঃ ॥ ত্রিকরান্চোপর-थ्रास दिक्ताभू। भद्गिका। बद्दा-পথ শতভ্রাদ জিপাদস্যগৃহান্তর• ॥ व्जीनाम सुर्वानामः भाष्या-পাদক: মৃত:।।ইতিদেবীপুরাণ।। নগরঘাতঃ পু• হস্তী ৷ ইতি সংক্ষিপ্ত-नात्रवृशक्त्रंगः ॥

নগরী জী দ্লী নগর । ইত্যমর:॥ নগরীবকঃ পু॰ কাকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড শেষঃ॥

নগরোত্থা জ্রী শগরমূস্তা। ইতি রাজ নির্বণ্টঃ।।

ननरतोयिथः जी कंपनी। इठि मद-ठिन्मुकी।।

নগাটনঃ পু॰ বানরঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ॥

নগাধিপঃ পু• হিমালয়প র্বতঃ। ইতি অটাধরঃ।।

नगानुयः श्र॰ হস্তিকন্দঃ। ইতি রাজ-নির্ঘণীঃ।। নগবাসিনি ত্রি।।

নগোকাঃ পু॰ পক্ষী। ইত্যনরঃ।।
সরভঃ॥ সি॰হঃ। ইতি নেদিনী॥
কাকঃ। ইতি শব্দিন্দুকা॥ নগবাসিনি ত্রি॥

नगः जि विवजः। (नक् हे दे हि जाया।
जल পर्यत्रायः। व्यवासाः २ मिगञ्जतः
०। दे छ ज्ञातः॥ ॥ जिथा छ द् छ ।
विकत्का १ नू ज्वतीय क नगः कावज्ञ जव
वा। (भी छ सार्छ छ था कर्मन नगः
किछ (यम् शि ॥ विकक्कः शतिथाना
सन् क कहः। छथा ह (याशि या छ विकाश शतिथाना
क विजा । शतिथाना हिः केका निवका
सामूती छ (वट्। मृष्टिः। वास्म श्रिष्ठ

তথানাভৌকক্ষত্রয় মুদ্যুদ্ধত । এভিঃ ককৈঃ পরীধত্তে বো বিপু: স শুচিঃ মৃতঃ॥ বৌধায<del>়নঃ। নাভৌ ধৃতঞ্য</del>-षक्ष गाहापयि जानूनी । व्यक्तियं পুশयः जनाइम मूज्या ख्याः ॥ আচারচন্দ্রিকাযা। দ্বিকছঃ কছ শৈ-यन्ह मुक्क वह खरेथवह । এक वाना व्यवामान्ह नगः भक्षविषः मृठः ॥ ইত্যাহ্নিতত্ত্ব<del>ণ II # II ন নগ্নাণ জিয</del> गीत्क उ शूक्ष वा कराइन। नह मूब भूतीय वा नरेव अभ्मृष्ट सिथून ॥ নোहिष्ठेः निव्यत्मितिष्ठाः न नगः नान गारुदा । न गाह्मशारी वासि नरेंहव স্বশিরঃ স্পৃশেৎ !! ইতি কূর্মপুরাণে উপরিভাগে ১৫ অধ্যায়: ॥ # ॥ পারিভাষিক**ন**গাযথা ৷ যে**ষা॰ জলে** न (वरमांखि नं भाजः रेनवह वुंडः । তে ন্মাঃ কীৰ্ত্তিতাঃ সন্ধি স্তেষামূর• विभिर्हितः॥ इति मार्कत्थ्यनुताल महाठाताश्रायः ॥ 🕸 ॥ अग्रेकः সাম সংজ্ঞেয় এথী বৰ্ণাবৃতি ৰ্দ্বিজ 🕻 এতা নুদ্ধতি যো মোহাৎ স নগং পাতকী মৃতঃ॥ यस স•ত্যন্ত্য গা र्रर वानशुर्श न जायर । भनि-ব্রাডপি মৈত্রেয় স নগ্রহপাপক্ষরঃ ॥ ইতি বিষ্ণুরাণে ১৮ অধ্যাयः॥

नगः पृ॰ वसी ॥ कलनकः । इंजि
विश्व मिति ।। (व्यक्त प्रश्व प्रायः ।
नग्न किः २ निग् इकः २ जम्सः ।
नग्न कः १ नगः। नक्ष ज व्यक्त उ इंजि
नग्न कः पृ॰ नगः। नक्ष ज व्यक्त उ इंजि
नग्न कः भ नगः। नक्ष ज व्यक्त उ इंजि
नग्न कः भ नगः। नक्ष ज व्यक्त उ इंजि
नग्न कः भ नगः। नक्ष ज व्यक्त उ इंजि
नग्न कः भ नगः। निज नः भनी या निज्ञ ।
व्यक्त गः सार्थ कः। इंजि व प्राक्त व ।
स्वा । नग्न किमान को व्यक्त ज व ।
स्वा । नग्न किमान को व्यक्त ज ।
स्वा । नग्न किमान को व्यक्त । इंजि.
जागवज स्थानक्त कः।।

नग्रह की नग्रह्भ है जि जत्र प्राम-त्रमाना ॥

নকিক। জী অপুণ্ডর জন্ম। তৎ পর্য্যায়ঃ। গৌরী ২ অনাগতার্ত্তবা এ।। বিষক্তা তৎ পর্য্যায়ঃ কোউবী ২কোটবী এ কোটরী ৪। ইত্যমর-স্তুড়ীকাচ।।

নজ ও ড ঈ ছিমি। ইতি কবিকল্লডমঃ নঞ ব্য অভাবস জ্ঞকণ সমাসে ছি-ত্তস্যাস্য সানে স্বরে পরে ৭ন্ ব্যঞ্জ-নে পরে অকায়ে বিকল্পেন ভবতি৷ यथा। व्यनस्रः नाष्ठः। वाहुरवः नहुरवः ॥ अन्तर्रार्थाः वर्षे। नाम्नरः > यथा অব্ৰাহ্মণঃ। অভাবঃ ২যথা অপাপ• ॥ অন্যত্ত্বং ৩ যথা অঘটঃ পটঃ ॥ **अन्नदः ८** यथा अनुम्त्रीकन्ता ॥ अः পু।শন্ত্য ৫ যথা অকেশী।। বিরো-ধঃ ৬ যথা অসুরঃ। ইতি মুখবোধ **ठीकायाः पूर्जानाजः ॥ 🗱 ॥ नवा** <del>ৎভাবে নিষেধে চ স্বৰূপাৰ্থেপ্যতি-</del> कत्म। देवमर्थः व नाम्र्यः। जिन क्ष उपन्ययाः॥ इंजि मिसनी॥ नकात्रक ॥

নট ০, নৃত্যো। হিশস। ইতি কবিং কল্লদ্ৰমঃ।।

নট ক ছুণুশা। বিবি। ইতি কবি-কল্লদ্ৰমঃ।।

निष्टः शूः लिप्रागाकवृक्तः॥ नर्छकः।

तिर्वृ व देखि जावा । उ< श्रवं । व</p> े रेश्नेवाली २ रेम ल्यः ० जायाजीयः ८ ক্ষামী ৫ ভরতঃ ৬। ইত্যমরঃ ॥ সর্ববেশী ৭ উরতপুর্গকঃ ৮ ধারী-পুণ্রঃ ৯ রঙ্গ জীবঃ >০ রঙ্গাবতারকঃ ১)। इंडि (इंग्रह्मुः ॥ जामाक-• व्कः। इंजि सिन्।। किंगू शर्वा। नन इंडि ভाষा। ইতি क्रीयतः ॥ বর্ণসঙ্কর জাতি বিলেষঃ। যথা। শৌচিক্যা• শৌণ্ডিকাজ্জাতো নটো বৰুড এবচ। ইতি পরাশরপদ্ধতিঃ ।। वृाजावा॰क विषाद्धा उई जिमनूः 11 # 11 श्नूमका भी भक जागमा রাণিণী। অস্যা জাতিঃ সংগ্ৰা। गृशः यज्ञ अतः। ग्रीपात्ने मिव-সান্তো গানসম্যঃ । রাগ্যালাযা-मन्त्राः यक्षत्रः बक्रवर्गा नाती नव যৌবনা সালস্কৃতা অস্থাৰ্চা পুক্-यव श्रिति छ व जन। निष्माय केंद्र . वानः ध्वा भव्याक्यमाना । इंडि मक्रीज्याद्वः ॥ नारभूदान मरज গ্রিরাগস্যপুশঃ ৷৷

নটন জী নৃত্য । ইত্যনর: ।।
নটনারায়ণ: পা রাগবিশেষ । হন্
নমতে নেররাগস্য তৃতীয় পুগ্র: ।।
ভরত মতে দীপক রাগস্য তৃতীয়

शृधः ॥ स्मार्भित्र मर्छ कलनाथ मरा ह पद्मागानाः स्मित्र त्रागः । जम्र जार्गाः यहे। यथा। जार्विनी देविज्ञी २ शृद्धी २ शासात्री १ वेर्ते। जार्थ मित्र महात्री १ ॥ स्मार्भित्र मराज्ञ जम्र त्रागिराग्रयथा। कामना २ कल्यानी २ ज्ञाजीती २ नार्वि १ मात्रकी ६ नहिस्मीती १ । त्रागिर्भिज्ञः महाम्य हिमलो नामम्यः। इंडिं मही उना ज्ञाना छ।

ন্টভূষণ॰ ল্লী হরিতা**ন•।ইতির<del>র</del>-**নালা।।

নটমণ্ডন॰ ক্লী **হ**রিতা**ল•। ইতি** হেসচ**ন্দুঃ।**।

নটবরঃ পু॰ নটশেষ্টঃ। যথা। বর্হাপীড॰ নটবর ব ুঃ কর্ণনোঃ কর্ণিকার মিতি শ্রীভাগবত•।

निष्ठ निष्ठ कि शृ शार छाथ। इति जान । इति जिका छा निष्ठ ॥ निष्ठ । निष्ठ कि जी निष्ठ।। इति हातावनी। निष्ठ जी निष्ठ । इति क्षेत्र का वनी।। । यो । इति क्षेत्र का वनी।। निष्ठ भी ह ।।

নটে ষ্বাঃ পু॰ শিবঃ। ইতি হেন্চল্টুঃ।।
নড ক ভু॰শো ইতি কবি দল্লদ্মঃ।।
নডঃ পু॰ নলত্ন॰। ইত্যমরঃ।। জাতি-

ভেদঃ ৷ ইতি পু॰ নপু॰সক স৽গুছ টীক্ষাযা• মথু রশঃ ৷৷

निक्रीयः जि नवसम्हास्णः। ইতি

न्छशुरिः वि नन्यव्हनप्तभः। उट शर्यप्रायः। नफकीयः २ नङ्गन् २ नङ्गः ४। ইতি হেনচনুঃ॥

मजनीनः शृ हिलिहिन्न ए मानिन्न मानिन्न का निक्ति का निक्

भर्यायः। नष्ट्रारा इंड्रामतः॥ नष्ट-मक्ष्यः ३। इंडि मदत्रज्ञावनी ॥

ন্ডহঃ ত্রি কাস্তঃ। ললিতঃ। ইতি ভূরিপুযোগঃ।।

निष्ठा खी निष्ठमगृरः। ইত্যমরः॥
निष्ठनः जि निष्ठविष्ठ । ইত্যমরः॥
निष्ठान् जि निष्ठविष्ठ । ইত্যমরः॥
निष्ठान् जी क्रिक्टाः। ইতি एकि

नशब्दः छी क्रियः। ইতি जूति-नुरंगागः॥

সূর্ত শ্লী তগরপাদী। তগরমূল । ইতি নেদিদী॥

নতঃ পু॰ জন্মনাডিকাৰিশেষঃ। তদ্য।
। অসকৃৎ কর্মণা যেন যান্তি দৃক্তুল্যতা॰ দিবি। নতোমতৌ ততঃ
সাধ্যে ভাবাঃ থেট বলানি ষট়।।
দিনাৰ্দ্ধান্তরিতা জন্মনাডিকানত না-

ডিকা। পূর্বাপরার্মে কাতম্য প্রাক্ পরাথ্যা দিনে ভবেৎ।। রাক্রের্মত-ঘটা শেষঘটা দিনার্ম্ম সংযুক্তা। পর পূর্বাভিধা জ্রেয়া প্রজন্যা বত না-ডিকা।। ইতি কোপ্রাপুদীপঃ।। তঃ ত্রি ফটিলঃ।। নমুঃ। ইতি

(यिनी ॥

নতজ্ঞা পু• অতাশাল: । ইতি রন্নমালা।। •

নতনাসিকঃ ত্রি অল্পনাসিকাযুক্তঃ। শ্রাদা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। অবটাটঃ ২ অবনাটঃ ৩ অবভূটঃ ৪। ইত্যমরঃ ॥

নতাকী জী নারী।ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।
নতিঃ জী নমন । নমুতা। যথা।
নীতি ভূনিভূজা নতি গুণবতা
ত্বীরক্ষানা গুতি দিশত্যাঃ শিশবো গৃহস্য কবিতা বুদ্ধেঃ পুসাদো গিরা । লাবণ্য বপুষঃ মৃতিঃ
সুমনসঃশান্তি বিজস্জনা শক্তস্য
দুবিণ গৃহাশুনবতা বাহ্য স্তা
নগুন ৷। ইতি নবরত্ব ।।

नम हूँ है ज॰वृधि। जानमस्यूकजाता। इंडिज कविकन्नकमः॥

নদঃ পু• পু•বাচকাকৃত্রিম থাতাবছিন্ন জল পুবা**হঃ। সচ** সিন্ধুভৈরব শোণ मात्मानत वृक्षभू श्रानिः। उट भर्गा-वै: । भूनवंदः २ जिन्द्रः ७ उन्द्रः १ नेत्रसन् देश हैं जिन्द्रः ॥ जर्हे-यहिस् जीयानि ननान्त नम कार्रयः । ইजिभाग्तां ज्यात्मिन जस्त्रायः॥ नन्नः भू भ्याः। ইजुर्गानिकायः॥ निः हो। ইजि मदनावा॥

नहीं जो अक्षेमञ्जूषन्त्रन् नव । अराजा মোচ গঙ্গা যমুনা সরস্বতী কাবেরী গোদাবরী পুভ্তিঃ। তস্যা লক্ষণ भार ছल्लागशिति निहे। धनुः मर-সাুণ্যপ্তৌচ গতি যাসাণন বিদ্যতে। নতা নণী শব্দ বহা গর্জা স্তাঃ পরি-কীর্ত্তি ঠাঃ।। ইতি তিথিতত্ত্বু ।। তৎ 'পর্য্যাযঃ। সরিৎ ২ তরক্ষিণী ৩ শৈ-विनी 8 उदिनी ৫ कृतिनी ७ यूनी १ সোতৰতী ৮ দ্বীপবতী ৯ সুবন্তী ১০ নিমুগা ১১ আপগা ১২।ইত্যমরঃ॥ शुनिनी ४० धूनिः ४८ (मुजिसिनी ४० স্রেতোবহা ১৬ সাগরগামিনী ১৭ অপণা ১৮। ইতি ভরতঃ।। নির্ধ-রিণী ৯ সরস্বতী ২০ সমুদুগা ২১ क्लक्षा २२ क्लवजी २० रेमवा-निनी २८ तिकूः २० चमू पुक्रिश २७ मागद्रगा २१ क्कां २४ द्वा ध्यावजी २३ वाहिनी ७०। जब्बल

थगाः। बहुद्रः। वहुद्रः) मीशमद्रः। शाहनवः। क्ठावः। ज्वाश**रवः।** भथ्रद्धः। मधुत्रद्धः। देशमूक्द्रकः।। सः॥ नर्वा खरी शुर्यथी वाहिनीन ग्रामधी शकाषाहिनी निकायन । पर्ण् रित्म ज्रुता ना वित्मवारेषवाञ्चा गोत्रव नाघवक ॥ शुार्या मृन्वश खर्रित वर्डः भीषुत्राः स्ठाः । नराः भाषाग जिक्छा वाश्तिरा वि-भलामकुाः॥ हिम ४८ शुख्वा यान्ह बन जा स्राटाशम । विकार शाही পাচ্যবাচী পুতীচী যাচোদীচী স্যা-মনী সা কমেণ। বাতারোপ• শ্লেম পিত্তার্ত্তি লোপ পিত্তোদ্দেক পথ্য পাকঞ্ থত্তে ৷৷ পারিপাত্র ভবা যাশ্চ বিষ্যাখ্যপুভবাশ্চযাঃ। শিরে। ছদুো-গ স্বধানা তা হেতুঃ স্নীপদস্য চ ॥ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ 🗱 ॥ ভারত ব-र्व निष्ठा यथा। गक्ना जिक्कः जैत्रवजी শতফঃ বিতন্তা বিপাশা চন্দুঞ্গা नत्रगृः यगून। ইরাবতী দেবিকা बस्टू গোমতी ধ্তপাপা বাহুদা দ্বদ্বতী কৌশিকী নিম্বীরা গগুকী চক্ষুমতী লোহিতা। ইত্যেতা হিমবৎ পাদ নিৰ্গতাঃ ৷৷ বেদমৃতী বেদবতী সিশ্বুঃ অপর্ণা চন্দ্র। সদাচরা রোহিপ্যারা

িচর্মাণ্ডী বিদিশা বেত্রবতী বয়ন্তী।" ইত্যেতাঃপারিপাত্রোন্ডবাঃ।শোণা জে प्रजी तथा नर्यमा मूत्र मा मना किनी ॥ .দশার্ণা চিত্রকূটা তমসাপিল্ললাকর-তোযা পিশাচিকা টিভোৎপলা বিশা-না বঞ্জুকা বালুকা বাহিনী ভুক্তিমতী বিরজা পঙ্কিনী রিবী। ইত্যেতা শক পুস্তাঃ ৷৷ মণিজালা শুভা তাপী भाषाकी नीष्ट्रामा तका भाना वि তরণী বেদী পালা সমুদ্ধতী তোয়া " দুর্গা অন্ত্যা গিরা।এতা বিষ্ণ্য পাদো-फ्रवाः ॥ शामावती जीमत्रथी क्षा বেণা বঞ্জুলা তুঙ্গভদ্য সূপুযোগা বুন্ধ कारवती भञ्जाला তागुभनी भूय।-ৰতী উৎপলাবতী। ইত্যেতানলয-জাঃ।। ত্রিযাম। ঋবিস্বল্যা ইক্ষুরা ত্রিবিদাল। মূলিনী বংশবর। মহেন্দু-उन्या अयिका नुष्ठी मन्त्रगमिनी भन्भिनी। ইত্যেতाः मुक्तिमर् भू প্ৰবাঃ। এতাঃ প্ৰাধান্যেন অলপৰ্ৱত निम् ३१ (नियाः कृतनम् ३१) इंछि वत्रीह পুরাণে॥ #॥কৈলাস পাদ সমূত शुग्रः भीजबन् भूजः। मन्मारकः नाम मदः পयस्त দবি সলিত । i ত मा थु ७ ३८७ मिवता न ती नन्ता किनी ্ শুভা। দিব্যঞ্চন্দনন্তত্র তদ্যান্তীরে

**गर्हन ॥ श्रान्ड**ंत्रग किनाजाट দিব্য সৌগন্ধিক গিরি । সর্গাতু भयः स्वितः भवनः शईकः भुकि ॥ চন্দুপুভো নাম গিরিঃ সশুকো রত্ন সন্ধিভঃ। তৎ সম্পূপে সরে। দিব্য ম-हा रमाम विनु उ।। उमा भु उर्वे उ দিব্যা নবী ছাছো কো শুভা। তস্য ন্তীরে বন॰দিব্য॰ মহট্চৈত্ররথ॰ শুভ॰।। তিমান িরৌ নিবসতি মণিভদুঃ সং হানুগঃ। যক্ষঃ সেনাপতিঃ কুরৈ র্গুছকৈঃ পরিবারিতঃ॥ পুণ্যা মন্দা-किनी टिव नमी श्राप्तिका भूजा। নহীনগুলনধ্যে তু পুৰিষ্টেতে নহো-मिथि।। किनामामिकिन श्राहतः नि-व निः ही पिदि गिति । गनः निवा मय॰ निवार भवनः शईछ। शुक्रि॥ লোহিতো হোশৃসন্ত গিরিঃ সূর্য্য পুভো गरान्। उम्राभारि मर्सिव्यः ्लाहिङ॰ मृगइए मद्रः ॥ ज्याए পুঁভৰতে পুণেগ লোহিত্ৰ নদো সহান্। দেবারণ্য বিশোকঞ্চ তস্য-তীরে মহদ্ব: ।। তিমান্ গিরৌ নিব-সুতি যক্ষো মণিধ রা বলী ৷ সৌম্যৈঃ সধার্মি কৈ শৈচব গুছুকৈঃ পরিবা-রিতঃ ৷ কৈলাসাৎ পশ্চিমোদীচ্যাণ কঙ্গদানোষ্ধী গিরিঃ। কঙ্গদাতি চ

ৰদুস্য উৎপত্তি জি'কমণ্মতঃ।। ত मध्नन खिकस्म रेगल विकस्म भुि । **म्ह**्याञ्चय खब मूगश्रवपूर-তো গিরিঃ॥ কৃস্য পাদে মহদিব্য मानमः मिक्तमिकः। रमा পुज বতে পুণ্যা সরযুর্গোকপাবনী ॥ কৈ--नाजार शिक्ता गाना मिन्द्र म বৌ বধি গিরিঃ। অকণঃ পর্বত শেষ্টো ক্মধাতু বিভূষিতঃ। ভবস্যদ্যিতঃ গ্রিমান্ পর্বতো হেমগদিভঃ। তস্য शास महिस्तार मतः काक्षनवानुकः ।। তস্য পাদাৎ পুভবতি শৈলোদ• नाम ७९ मतः। उमार भुजवाज भुग्रा नहीं रेनलाहका मुखा ॥ जा .. বন্ধু শীতযো মধ্যে পুবিষ্ঠা পশিমে। मिये । अञ्चालात्र किनाम निय সম্বে বিধিং শিরিং॥ গৌরন্ত পর্বত-শুেষ্ঠ হরিতাল ময় পুতি। হিরণ্য . मृद्धः मुगशान् हित्योविध मर्गा भिः क्रिः॥ उम्र शाप्ति सङ्क्तित्रः मङ्ग काक्ष्मताज्ञक्श त्रमु श्विम् मत्त्रा नाम यक ताका जगीत्रथः।। गन्नार्थ मञ् রাজবি কবান বহুলাঃ সমাঃ। ত্ত্র विलयमा स्मी भूषम् भू कि छिला। मामकाराद भुम्ञामा मध्या भुजि ভন্ত। ভন্স্য সাহে গতিতা সং-

ৰন্ধা যোগমাযযা॥ তৰ্তে বিসৰ্জ্বা-মাস সপ্তসোতা সি গঙ্গা। ত্রীণি পাচী মভিমুখ পুতীচী জীপ্টথবচ॥ (मृं। जा· मि विभथायास भुजाभूमा अ मक्षरा। निवनी शामिनी रेठव शावी চৈব প্রাচ্যগা।। শীতাবঙ্কু শ্চ সিদ্ধুশ্চ তিসু স্তাবৈ পুতীচ্যগাঃ। সণ্ডমীত্বনুগা তাসাণ দক্ষিণেন ভগীরথণ ৷৷ তমা-खागीतथी मालि भुविक्षा मिक्तानान-**थिः। मरिक्षजाः न्नावयस्थिय वर्षस्रक्षिम**-মাশ্বয়ণ।। পুস্তাঃ সপ্ত নদ্যন্ত শুভা-विन्तूनाद्वाक्तवाः । जान् तमान् द्वावयस्थि द्वाह शुाया क मर्वनः॥ मिननाम् असुदाः भीनान् वर्वदान् यवनान् थमान्। मृत्यनाग्मः अन-আ শ অবলোক্যাবরা শ যান্।। क्षा दिया हिमवड॰ श्रुविश्वा मिक-(भारिष । ज्ञा हीन मक्ट्रेन्हर कानैकारेक्वर ह्नकान् ॥ जुबैकान् वर्वतान् कातान् शङ्कवान् शातमान् नकान्। अञान् जनभाग् वहु প্লাবশস্থ্যদধিংগতা।। বরদান কৃটজা॰ रैण्डव शाक्षात्रात्नीत्रज्ञान् अष्ट्न। भि-वरमोतानिमुनक्न वमाजीन् ममर्ज-क्रमा ॥ रेमक्रवात्र के कारवतान् अशः थान् कीमाबोककान् । भूनामूथाः

শ্চোদ্ধ নাধন সিদ্ধু রেতামিষেবতে।। शक्त बान् किन्नतान् यकान् त्रका वि-म्राध्द्रातिभान् । कनाभगुामकाः ৈশ্চৰ তথা কিংপুক্ষাল্রান্ ।। কিরা-र्न्डा॰क श्रुविनमा॰क अकन् वि छत-তানপি। পাঞ্চাল কৌশিকান্নৎ-স্যানাগধান্ত্রাণ স্তথৈব চারেক্ষোত্ত-রা·শ্চবহৃষ্-শ্চতামলিপ্তা·স্তথৈবচ। **এতান্ জনপদানার্য্যান্ গঙ্গা** তার্য-তে শুভা॥ ততঃ পুতিহতা বিস্ক্যে পুবিষ্ঠা দক্ষিণোদধি । ততন্ত হ্ৰা-मिनी शुन्ता शुाही मिल्यूथा यरहो ॥ প্লাব্যন্ত্যপকাণকৈব নিশাদানপিস-ब्रमः। धीवतान्यिकारेण्य उथा লীনমুখানপি॥ কেকরানেকবর্ণা॰ ক কিরাতানপি চৈব হি। কালনরোন্ বিবৰ্ণাণ্ড জম্পিকান্ স্বৰ্গভূমিকান্॥ সামুঞ্জে সমুদুস্য তিরোভ্রাতু স-র্দা:। ততন্ত পাবনী চৈব প্রাচীনেব ्रीम्म ग्रयो॥ अभयान् भावयञ्ची माहेन्द्र-मूर्न महा मर्जि। ज्या थड्न थ्या न्त-শান্ বেত্ৰ শক্তুপথানপি॥মধ্যেচো-क्जानक मक्न् अथ्यु।वद्गानि । इन्द्र ही भाट अमू पु॰ मा भूविद्रा वव-ণোদধি•া। ততন্ত্ব পাবনী পু:যাৎ পুাচী মাশা॰ জবেন ভু। তোমরান্

প্লাব্য**ভী সাহ** সমার্গান্সমূজকান্।। পূর্ণান্ দর্ভাণ্চ সেবম্ভী ভিত্ত্বা সাংবহু ধা গিরি॰। কর্ণপুবরণান প্রাপ্ত গ-তা সাখ্যুখানপি ম সিকতা পৰ্যত मकन् गद्या विष्ठार्षित्रान् यरयो। वामि নওলকোগন্ত সা পুবিষ্ঠা মৃহৎসর ॥ তাসা॰ নদুৎপনদ্যন্ত শতশো ধ সহসুশঃ৷ উপগছন্তি তা নদ্যেয়তো বর্ষতি বাসবঃ ৷ হেমকূটস্য পৃষ্ঠে তু সর্পাণা মূৎ সবঃ মৃতঃ। সরস্বতী পু-ভৰতি তস্মাৎ জ্যোতিশ্মতী তু যা ॥ অৰণাহেতোভয়তঃ সমুদ্ৰে পূৰ্ব প-किरगो। मद्भा विकुशमः नाम निक्रश পৰ্বতোত্তমে ৷৷ ডমাৎ দ্বয় পুভবতি গন্ধৰী নজলা চ তে ৷ মেরোঃ পা শ্বাৎপুভবতি হুদ শন্তপুভো মহান্ ।। जबूरेक्टव नही शून्त्र यम्ता काबूनहर मृजः। भारयाम् स दूरमा नीवः म मुजः शुख्दीक्वान्।। शुख्दीका शर्यामा ह **তমাৰৈ সণ্পুস্**যতে । সরস্ত সরস-শৈচব স্ত মুক্তর মানসং॥ মৃগ্যা চ মৃগকান্তা চ তমাদৈ সংপুস্যতে । ু হুদাঃ লৰুৰু বিখ্যাতাঃ পদ্ম নীন ল-লাস্ট্যাঃ।। নাম্না তে বিজয়া নাম দা-দশোদধি সন্নিভাঃ। তেভ্যঃ শান্তা চ भाषी ह व नार्ती मः भुम्य छः ॥ इंडि

मले मार्भुद्रारम २०२ व्यथायः ॥ #॥ অৰু সিপ্যাদি সপ্ত নদুছেপত্তি কার-१९ । अवस् विवा श विश्विव सोवर्ग মানসাচলে i আৰুৱতী বশিষ্ঠস্ত নোদ মাপ তথা স্কুয়াতত্র যৎপতিত তোय॰ गानजाञ्च कन्मद्भावियाहाव-च्थार्थायं भाष्ट्रपः वज्ञ्या क्छः॥ वृक्ष विषु महारम्व भा विज्ञिमन् शित् छ । তত্তোয় সপ্তবা ভূহা পতিত মান-माठवाट ॥ (इनार्युः जनतत्र मानो সরস্যাঞ্চ পৃথক্ পৃথক্। তত্তোয় পতিত সিপ্তেদেব ভোগ্যে সরোব-রে।। তেন সিপ্রা নদী জাতা বিফুনা পুরিতা ক্ষিতি । নহাকোষী পুপা-তেচ यद्दाরিপতিতন্ত জৈয়।কৌষিধী ॥ নাম সা জাতা বিশ্বামিত্রাবতারিতা৷ উমা ক্ষেত্ৰে হ**ৎ** পতিত তোয়ণ তেন মহানধী !৷ কাবেরী নাম সা জাতা তদাকাবের স•স্তা। মহাকালে স**্** র: শুেষ্ঠে পতিত তব্জল গিরেং।৷ হিমাদেঃ পার্শ্ব ভাগে তু দক্ষিণে শস্ত্রু সন্বিধৌ। গোমন্তি নাম তৈ জাতা নদী গোমত্যুদীরিতা ৷ মৈনাকো না-म यः भूयः मिनदाबम् ६,र्रभुयः । যন্ত ভিমন্ সমুৎপন্নো মেনকোদর-🕒 পুরা ॥ ভত্তৰ পতিত তোয

ञ्याकाण महानती। अविकाशा মহাদেব প্রেরিতা সাগর পুতি॥ তত্তোয় সঙ্গত সর্ব্যা হস্তা বডব मित्रि। उनाज्८ मत्रगू नीम्रों निनी পুণ্যতমা শুভা ॥ যান্যস্তা**ণস মই**দ भार्य था खरात्र मिष्री। श्मिर् কন্দরে যামে। ইরীবন্ধুদ মধ্যতঃ॥ ইরাবতী নামনদীতৈস্ত জাতা সরিদ্ধ-রা ৷ এতাঃ সর্বাঃ স্থান পানাৎ ম্বরণৈ बाइवी यथा।। कनः हरि वर्जानाः मिक्कामिश्रीः जना। धर्मार्थ काम মোক্ষাণা বীজ ভূতাঃ সনাতনাঃ।। মহানদ্যন্ত সপ্তৈতাঃ সর্বদাদেবভো-গদাঃ।এব • নদ্যঃ সপ্ত জাতাঃ সদাপু ণ্যতমৌদকাঃ।। অকন্ধত্যা বশিষ্ঠস্য বিবাহে দেব সমিধৌ। ইতি**কালিকা**-शूतारा २० व्यथायः ॥ # ॥ बन्रामी-ना क्र हय यथा। नम् क्रिक् সর্বে দ্বিৰূপাশ্চ স্বভাবতঃ । ভোষ নদীনা॰ ৰূপন্ত শরীর মপর তথা।। স্থাবর• পর্বতানান্ত রূপ•কায তথা-পরঃ। শুক্তীনা মথ কছুনা• তথৈবান্ত-ৰ্গতা তন্ঃ।৷ বহি রস্থিষ্কপন্ত সর্ব रिनरं পुवर्व्हर्ण । जव कन इनवज्ञक नही পर्देजरंग खंशा ।। অন্ত दंगि কাযম্ভ সতত নোপপদ্যতে।

भागगाज सावादान भन्नीद्र भर्व-**७**म् जू ॥ जथा नहीना॰ कायस তোরেরাপ্যায্যতে সদা। নদীনা॰ কৃমিৰূপিত্ব॰ পৰ্ৱতানান্তথৈব চ ॥ জগৎস্থিতৈঃ পুরা বিষ্ণু: কল্পযা-मान युद्भ जः। (जाय शाली नही मुःशः জাযতে সতভ দ্বিজাঃ।। বিশীর্ণে **ছাবরে দুঃখ•জা**ষতে গিরিকাযগ•। ইতি কালিকাপুরাণে২২ অধ্যাযঃ॥ नरीकरमः श्र॰ महाभाविषका। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ নদীসমূহে রী॥ नरीकाषः शुः मगुपुः॥ इब्बल्कः ॥ সিন্ধুবারকঃ। ইতি মেদিনী॥ निरीकान्च। जी जमून्मः॥ काकजाङ्घी-ষধিঃ। ইতি মেদিনী॥ লতা। ইতি (स्यान्तुः॥

नितृत्विश्वाः शृ॰ कवादिङमः। ইতি कर्णाभवः॥

मनिकि क्षी (माराज्यक्षन । ইতি हम-हम्मुः ॥

निष्ठी श्रु विक्तू निर्वेकः। ইতি রত্ত্ব भाषा ॥ यावनाष्ट्रभादः ॥ विक्तिष वृक्षः । ইতি রাজনির্ঘণ্টः ॥ निष्ठी-काতে জি॥

नमीका की व्याप्तिष्ठ कृष्णः। ইতি त्राक्षः। नाम्यी क्षी नाम्यी । जूनिकष्टः। विर्योः।

নদীতরহান কী ঘটঃ। ইতি জ্রিপুষোগঃ॥ নদীভিমহানঞ্চ।
নদীনঃ পু সমুদুঃ। ইক্লি ত্রিকাওশেষঃ॥ বৰুণঃ। নুর্থা। অয় নদীন
ইত্যাদু্যন্তরনৈমুবঃ।।

निर्मावः भू॰ शन्तुः हरः उद् भर्यतायः। कर्तृनिञ्चादः २ कर्तृ तरः निर्माकः ८। जम्र छ्गाः। जिङ्कदः। कर्तृदः। जम्भूद्रमद्रः। छङ्कद्रः। वाज-वदः। करम्पद्रः। क्ष्मद्रः। क्षायद्रः । विष (माष नामिद्यः। इजि ताङ्क-निर्मितः॥

निर्माण्कः जि नम् प्रमणम् विश्वितः शामिज्यः श्रः वक्तः। वाक इंजि जाया। इंजि भयमाना।। नमीवितः श्रः विश्वेषकः। इंजि ताकः निर्माणः।।

निष्धः जि नम्द्रगारुनम्बाः। निष्ठी

त्रान अन्यवः। ইতি ভউটী विद्याः

शूखतीकाबः।। निष्ठाः। ইতি शूकर्षाख्यः।। यथा। ততো निष्ठान्

श्यिकान् गितिक्छानिज्याम् ভङ्गिः

निष्ठी की नार्ष्याः ভ्रिक्षः।।

ইতি শ্বচন্ত্রকাः।।

नकः जि वकः ॥ उष्टः । इंडि मिनि ॥

नकी जी हम्बङ्धः। ইত্যারঃ।।
नम्यामुः शृ व्याप्तिका वृक्षः । ইতি
রাজনিষ্টাঃ।

ननमा की जुड़ जिनि। ननम इंडि • जाया। जुड़ भर्यग्रायः। ननामा। २ निम्ति। ० नमा ८ প्रजियमा ६। इंडि मफ्रस्नावनी।।

नगन्ते ची ननन्ता। **इंडि न**स्तज्ञा-वनी॥

नन् या श्रुमः। शृहा।। व्यवधात्रः।।
निम्हरः।। व्यनुक्ता । व्यनुक्तः।।
व्यन्दः। माद्यनः।। व्यामव्यः।
माद्याधनः।। व्याः श्रुक्तिक मूहाहतः
गानि यथा। श्रुम्म नन्नत्थ्यम्। माह्यः।
व्यथात्रता नन् गहामः। व्यनुक्तायाः
मोद्यं नं कृत्यायवाः। व्यनुक्तायाः
मोद्यं नं कृत्यायवाः। व्यनुक्तायाः
मोद्यं नं कृत्यायवाः। व्यनुक्तयाः। वितिगुहः।। व्यनुभूमः।। श्रुक्तिः।। वितिगुहः।। व्यनुभूमः।। श्रुक्तिः।।
व्यथिकातः।। स्वुन्निः।। वितिगुहः।। व्यनुभूमः।। श्रुक्तिः।।
व्यथिकातः।। स्वुन्निः।। वितिगुहः।। व्यनुभूमः।। वितिगुहः।। व्यनुभूमः।। वितिगुहः।। व्यनुभूमः।। वितिगुहः।। व्यनुभूमः।। वितिगुहः।। व्यन्तिः।। स्वुन्निः।। वितिगुहः।। व्यनिक्तिः।।

भक्त पुतः नृतः किया शारियानू विद्या ह। नन् नान हि हानीनि उँ ८ (भूका ় ব্যঞ্জকানিচা। ইতি ব**াব্যচ্ন্দ্রিকা।।** ননুচ ব্য বিরোধোকিঃ। ইত্য**র্বরঃ।।** ননুচেতি সমুদিত বিরোধ বীষর न्नू भाषा विद्वार्थां की ठकाता द ননুচেতি বা। ইতি ভরতঃ।। नन्तः श्रु विकुः। यथा। श्रानत्नता मन्द्रतानमः। ইতি শান্তিপর্র।। নর-পতিভেদঃ। স তু महानृन्दि मुजः ক্ষপ্রিয়ব•শান্তঃ !৷ গোপভেদ**ঃ। সচ** बैक्ष्भिजा ॥ जानमः॥ निधि বিশেষঃ। ইতি পুরাণ শবরত্না-्वत्वते ॥ नन्दः भूता पुान नामा वमू द्राभी १। यथा। (मुाला वम्ना॰ ্পুবরে। ধরষা সহ ভার্য্যা। করি-यामान जाएनान् वुक्त उन्नाह र ॥ काउरगानी महारारव जूनि-বিশেশরে হরৌ। ভক্তিঃ স্যাৎ প-রনা লোকো যথাঞ্জো দুর্গতিস্তরেৎ ।। यञ्जी वृहकः म जगवान् बुद्ध (दुर्गाणा महायमाः। ज्ञास्क्नम् हे विश्वाराजा য়শোদা সা ধরা ২ভবৎ ৷৷ ইতি ঞ্জিভাগবতে দশমস্বন্ধে ৮অধ্যায়ঃ ॥ # ॥ विनुवित्लवः। यथा। मस्

नमा छथीन(मा विकास) १० कवर्छथ। १ हजात উर्जभा यःगा माजक मूनि मण्डार

मीम वकाममाञ्चलः। ইতি সঞ্জীত দানোদরঃ।।

নন্দকঃ পূর্ণ বিষ্ঠ খন্নঃ। ইত্যাসরঃ।।
ভেকঃ। ইতি ত্রিকা গুলেষঃ।। হর্ঘকে
জলপালকে চ ত্রি। ইতি নে দিনী।।
কৃষ্ণপিতা ।। আমন্দিঃ।। আমনদ কারকশ্চ।।

শন্দকিঃ দ্রী পিপ্নলী। ইতি শন-, চন্দ্রিকা।।

नन्तकी श्रुः विष्कृः। यथा। भङ्गज्ञ नतकी ठकी भार्अश्वागनाधवः। इंजि भारित्रम् ॥

নন্দগোপিতা জী রামা।ইতি শহ-চন্দিকা॥ নন্দ গোপ জন্মভূম্যা-দিশ্চ॥

नन्त्रथः পू॰ जानन्तः। ইতি भवत्रञ्जाः वनी ॥

नन्तन की इन्मुवन । इन्जान ।। इर्वाक वि। इन्जि मिरिनी ॥

नम्पनः श्रुः श्री मूजः। ইতি मिनी
।। ভেকঃ ॥ ইতি भदत्रद्वावनी ॥
धानम्पनात्रकः॥ विकुः। यथा। आन-

न्मानमात्ना पण इंड्या मिणाई स्व नम्मानक क्री इतिहन्मन । इंडि शक-निर्यण्टः ॥ इर्यका छ वि सं

नन्तनम्बः शृ बिह्यः। इंडि नम् রহাবলী ।৷ # ।। (১স) লীলা সম্বর-ণান্তে তন্মহিষীণা দস্য হস্ত গতন্ত্ৰ কারণ যথা। ব্যাস উবাচ। কঃ मुम्ब्याट म गाक्यान् इन्राखुः नर्व कौव्रवान् । वाजीत्वज्रम ভবতঃ কঃ শুদ্ধ্যাৎ পরাভব ।। भार्थिं उट मर्ब ज्उमा शत नी न। বিচেপ্তিত ৷ ত্ব্যা য়ৎ কৌরবাগ্বন্তা 'বদাভীরৈ র্ভবান্ জিতঃ।। গৃহীতা দস্যুতি যাশ্চ ভবতা শোচিতাঃ 'দ্রিয়ঃ। তদপ্যহ॰ যথা কৃত্ত• কথ-থানি তথাজুন।। অষ্টাবকঃ পরা 'বিপ্যোভলবাস রতোভরে<u>ং। বহূ</u>নন गनान् भार्थ गृनन् तुका मनाजनः ॥ জিতেম্বসুর সংযেধু মেৰু পৃষ্ঠে মহো-ৎসবঃ৷ বভূব তত্ত্র গছন্ত্যে দদৃশু স্ত वत्रजियः॥ त्रष्ठा जिलाख्याम्। च भज्ञा २० २ इन्नः ॥ जुद्देत् छ॰ নহাব্যান পূশশংসুক পাওব। আকণ্ঠ মগ্ৰণ সলিলে স্কটাভার ধরণ মুনি•া৷ বিনয়াবনতালৈচন: প্রণে<u>মু</u>

रखीं उट भनाः। यथा यथा भुजिली श्ली जुरू वृष्ठ ज्या ज्याश मर्दा खाः কৌরদ ক্ষেপ্ত বরিপ্তন্ত ছিভন্মনা। 🕮 ष्यद्वावक उवाह् । शुनत्वाह॰ महा-ভাগা ভবতীনা শ্ৰৈদীয়তে। মন্তন্ত-ष्ट्रियञाः नर्बः भुराम्याम्याञ्चूर्णञः ম শ্রিপরাশর উবাচ। রম্ভা তিলো-ভনান্য ন্ত বৈদিক্যে শুরুরসোবুর-न्। शुनाम च्यान्त्राधः किममाक মিতি দ্বিজ ॥ ইতরান্ত্রুবন্ বিপু शुनका जनवान् यहि । जिन्हामः পতি॰ পুাপ্তু• বিপুেন্দু পুৰুষোত্তম।। **শ্রিব্যাস** উবাচ। এব• ভবিষ্যতী-ত্যুক্তা প্রোত্ততার জলামুনিঃ। তমু डीर्नक पृम् विक्शः वक महेशा। **७**न्मृ शृ गृरुगानाना यात्रा राजः যু টো ভবৎ৷ তাঃ শশাপ মুনিঃকোপ मवाना अस्ननम्न ॥ श्रीषष्ठावक छ বাচ। যুমাছিল্প ল্প মা . মত্ব। হাসাবমাননা। ভবতীভিঃ কৃতা ज्यादिय भाभः महामि वः॥ मट्भु-সাদেন ভর্তার লক্ষা তু পুৰুষোত্তমণ 1 মহাপোপহতাঃ সর্বা দসুত হস্তঃ गमिष्रथ।। এবস্তম্য মুन्तः नीनाम-ষ্টাবক্রস্য কেশব । ভূর্ত্তার পুগের ण यांजा मनूर इस वदाक्याः ॥<sup>1</sup>

नगरी

छन्या नाज कर्डवाः स्मार्काद्माशि हि भाखत। छोनवीथिन नार्थन मर्वेष्ठपूर्भमः इंछ ॥ इंडिस्ट्रिश्नूज्ञा-रंग २৮ व्यथायः॥

नन्दननित्नी छी पूर्गा इंडि भरे त्रज्ञावनी॥

नम्तमाना जी क्क्जीिक्यानिका विष्मयः। यथा। ज्ल नम्तमानास अक्छ क्क विमान। एव कन्या वृद्ध ल किः मिन्यु क्रमायेक ॥ इंडि बातका माद्याप्र इति छक्कि विनाम वृद्ध विकुष्पणी खतः॥ नम्तमा जी पृद्धि। इंडि किंग्यतः॥ नम्तसः श्रू श्रृद्धः॥ त्राका॥ भिद्यः॥ इंडि मः किछमात्राभाषिकृष्टिः॥ नम्त्रसः जि जानस्क्रमकः। इंडि मिकास्कोमून्यम्भाषिकृष्टिः॥ नम्त्रसः श्रू व्यानस्क्रमकः। इंडि मिकास्कोमून्यम्भाषिकृष्टिः॥ नम्त्रभावः श्रू वस्तः। इंकि नदः त्रज्ञावनी॥

নন্দপুত্রী .গ্রী গার্বতী। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।৷

নন্দা দ্রী গৌরী। অলিজ্বঃ। নাদা ইতি ভাষা। তিথিবিশেষঃ। তাশ্চ উভয় পক্ষযোঃ পুতিপথ ষঠ্যেকা-দশ্যঃ। ইতি নেদিনী । ননানদা । ইতি শদরত্বাবলী। সম্পথ্য ইতি

त्रमहनेतुः॥ #॥ पूर्णाया नन्ता नाम কারণ বঁথা। এব মুক্ত্বা ভব• বুদ্ধা शुनामनी महाव्वी । व्या पित बेहर कार्याः कर्खवाक्षानामस्य नः॥ ভবিষ্য নৃহিষ্যুখ্যস্য অসুরস্য বি नामन् विव गुर्का ज्ञा वका मर्द দেবাশ্চ পার্থিব ৷৷ যথা গতা স্ততো জশ্ম র্দেবী স্থাপ্য হিমে গিরৌ। সং-স্থাপ্য নন্দিতা যমাত্রমাননা তু সা ভবেৎ ॥ ইতি বরাহপুরাণ ।। 🛊।। অপিচ। নন্দতে সুর্জোকে্যু নন্দনে বসতে ২থবা। হিমাচলে **মহাপুণ্যে নন্দা**দেবী ততঃ স্মৃতা ॥ 🗱 ॥ जम्रा माहाजाति यथा। यथा गक्ना निनास उन्जनात्व वात-স্থিতা। তদ্বন্দগবতী নন্দ। উত্তম-ত্বেন সংস্থিতা।। মাসে ভাদুপদে **प्रिति मूल्लभरक वुरब्ध मन।। जरम**ु-हा मांवनावार जन्या न कराइन ।। তেষাঞ্চ हन्द्र नागस्त शीडा॰ अ-र्य्याट मुलाइत । न गहाँ मूताः **निकाः कि॰ शूनर्या**नुयोदरः ॥ विष বাত হতাঃ কেচিৎ বিষ বাত পুপী-ডিতা:। বিমুহুন্তে নরা দেবি যান্তি **प्रवाह भुगानकः** ॥ इंकि तस्ती-श्रुवानः ॥

वनस्ति इक्षः । इं किष्ट । इक्ष्ट | इक्ष

निक्तः शृ नन्तीवृष्णः। ইতি শুদ্র রত্মাবলী॥ আনন্দশ্চ ॥ নন্দিকা জ্ঞী ইন্দুকীডাস্থানং। ইতি

भयगणा ॥ व्यक्तिक्षतः । इठि भ-भत्रञ्जादणी ॥ यष्ठोि जिथिः । यथा । कन्ता मण्ड त्रादी भक्त मुक्ता मात्रज्ञ निम्काः । इजि जिथिज्यः ॥ शुजि शामकारणाते ह ॥

निस्तिथतः श्रुः निवहात्रशानः।

ज्रुश्यायः। नन्ती २ नानकायनः

अञ्ज्रुशानकः ८ । ইতি किकाअल्पयः॥ नन्ती दतः ८ उकुः ७।

ইতিহেমচন্দুः॥ পুরাণবিশেষ ।।

नन्तिशायः श्रुः অজ্জু निम्रात्रथः॥ वनिम्हनशायः। ইতি নে निनी ॥

मक्ष्वशायना ह॥

नित्वकः श्रू॰ ध्वक्षः। ইতি ভাব-পুর্মশः॥ नित्नी জी উমা॥ गङ्गा॥ ननाम्सा॥ विष्ठिश्वनुः। ইতি মেদিনী॥ রেণু-

को। इंडिज्ञानियकः॥ अ॥ माठ (धर्नु: जूर्ज कि कन्ता। यथा फिली शं पुषि विनिष्ठ राकाः । भूता नक मूनक्षि তবোৰী • পুঁজি যাস্যতঃ। আসীৎ কল্পতক হাযা মণিশুতা সুরভিঃ পথি ॥ ইমাণ দেবী মৃত্যুয়াতাণ শুকা স-श्रापि मंद्रदः। शुपिक्त कियाजीज ন্তস্যাঃ কোপ মজীজনঃ।। অবজা-নানি মাণ যসাদত তেন ভবিষ্যতি। নৎ পুস্তি মনারাধ্য পুজেতি ত্বাণ শশাপ সা ॥ ইতি বাদিন এবাস্য **रहा** नु ताङ्जि **मा**धनः। जनिन्ता নন্দিনী নাম ধেনু রাববৃতে বনাৎ।। ইতি রতুঃ ॥ 🕸 ॥ তস্যাঃ পুভাবো यथा। विभिष्ठमहानुम शरः वृक्ष द्वान মনুভন । অংগশ্যজ্ঞয়তা শ্রেং। বিধামিত্রে। নহাননাঃ !! ততো ব-শিষ্ঠো ভগবান্ কথান্তে সুনিসত্তনঃ। বিশ্বাণিত্রমিৎস্বাক্যমূবাচ পুহুস হি म।। आडिया-कर्ल्याहामि वनगा न्। महात्वा । जब दिनां शुरू गरमा ॥ ৰথাই পুতিগৃহতা।। বাচ মিত্তেব गारक्रया विभिन्न भुकुतिक है। अव ' মুক্তো মহণতেজা বলিটো জপতা रदः॥ बांबूहाव ७७:श्री उःकन्यारीः

धूङकनायाः। ভোজনেন महार्दिन সৎকরি তদিধৎ য मे ॥ এব সুক্তা विभाष्ट्रिन भवना भवु जूरेन । विभाष विविधान् कामान् यम्। यम्। सार्थ-গ্লিতান্।। সান্তঃ পুরুজনো রাজা স वुक्ति भूरताहिं छः । युक्तः भत्रम-र्रार्थन विभिष्ठ भिन्न भवुवी ।। गवा॰ শতসহস্ত্রেণ ধীয়তা॰ শবলা মম। এব गुज्ञ जगवान विनिक्षा गूनि गउमः॥ विशामित्वन शर्माञ्चा भु-ত্যুবাচ মহীপতি । কারণৈ বহুভী রাজন্দাস্যে ননিংনী তব ৷৷ কাম-ধেনু বশিষ্ঠোসৌ ন তত্যাজ যদা মুনিঃ। ততো ৎস্য শবলা॰ রাজা विश्वामिव उपार्त्र ॥ उन्। इ-মারবাজ্ঞাতাঃ কাম্বোঙা রবি স মিভাঃ। উৎস শ্চাভিস-ভাতাঃ প-इताः मज भागयः॥ व्यानितम्भाष्ट যবলাঃশকৃ দেশোইকাতথা৷রোম-কূপেষুচ শ্লেছা তথা রাম কিরাতকাঃ ।। তৈ তামস্দিত । দৈন্য বিশ্বানি-্ৰস্য তৎকণাৎ। স প্ৰাতি গঙ্গ नीय न तथ तयूनन्त्र ॥ इंडि त्रामायरा जारिका ७ ॥ निस्ती उनवः श्रू॰ व्याष्टिमूनिः। सर्छः

ভিধান কারকঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।। নন্দিনীসূতঃ পু॰ ব্যাডিমুনিঃ। ইতি জটাধুরঃ/।

निम्बिनः श्रु भिवः॥ शकासः॥ श्रुवः। ইতিমেদিনী॥ भिवः। ইতি भक्तद्वावनी॥ श्रानमः वस्क्रम्छ॥ निम्बृकः श्रु नमीवृक्षः। ইতি भक्त द्वावनी॥

नन्ती जी पूर्गा। यथा। मूद्राः मूऽजिहन्ता (एवा नन्तिनी पून्पू जिर्मजा। उत्राक्ष वाहिनी नन्ती स्नाज्ञां जिन्हां भूदी।। ইতি (एवी भूद्रांगः।।

नन्ती श्र गर्णा अव्यक्तः ॥ विव्यकः ॥ हे कि सिदिनी ॥ सिद्धा त्रशानः । म सिवा स्था । जन्म कि शुक्तः । यथा । जन्म कि शुक्तः मि शुक्तः । यथा । जन्म कि शुक्तः । ज्ञ शुक्तः । त्री पित्रं । मन मुज ॥ ज्ञ शुक्तः । नि श्र । ज्ञान क्षा का प्रति मि श्र । ज्ञान क्षा का प्रति क्षा का प्रति का प्रति का प्रति का प्रति का प्रति का मि श्र । श्रा मि जि ज्ञ । माया युगा निक्ष । श्रा मि ज्ञा । व्या प्रति ज्ञा मि का प्रति । का प्रति का प्रति का प्रति ।

ेष्क्रव वश्रुवानिकः जनिकः॥ गर्छः নজাযতে জাত মমৈবারাধনে স্থি छः । अथ नन्ती शुरुम्।इ॰ महारा-वाऋय। मूनि॰।। উ खिक्ठ मूनिमाम् व **সফল एउ ग्**रात्र्रश्रीः। जुम्हिक्किशा**क्**। জ্ঞাতোমি পুগ্ৰন্তে শাধি মাণ পুভো ।। व्या जभः नमात्रक्ष भी श्रांत्रण नमः সূত । পান্ধগানীতি ততে। নহ-जम् । मार्गान न कन्छन ॥ विष्ठार्यं । ज्वाइ॰ विकालामि स्यामव हि । ইতি বরাহপুরাণ।। 🗱।। সৈব কল্পা-छात्र मिवाः मक्षिलामगू तः शूणः । यथा । अकाश कृषु मनिन यं ननी মহাগণঃ। পুতি স্তস্যমহাদেবো দে-ব্যা সহ পিনাক ধৃক্।। দত্বাচাত্ম স-भानपः मृज्रुवक्षन (भवह । अज़्र्विः नश्योजा मिनामा नाम श्यंवि ॥ व्यात्राध्यन् महारम्यः भूधार्थः वृष्ठ-পুজ'। তস্য বর্ষ সহস্যান্ত তপ্যমান-म् विषक् ।। मर्दः (मार्याच विष्ठा বরদোশীত্যভাবত। স ববে বর মী-শান• বরেণ্য• গিরিক্কা পতি•॥ অ-'বোনিষ্' মৃত্যুতীত তবা চৈবোমযা नमः। उथाख्रिजाह जगवान्तिया नह भरहचत्रशाशनाऽ खना विशुर्य-

नन्दी वृ রষ্টর্ধান গভোবিভু: ৷ততো যিযকু: ॥ चा ज्ञि भिनादा धर्म विखमः॥ हकर्य नश्वरनाता ही ' जिन्ना मृभाउ **मिनिः। मध्रक्ताननश्रशः जना**-तः शृहमनिव॥ क्रम नावन्। मन्मन **ত্তেরসা ভাস্যন্ দিশ•। স্নার** -তুল্যে **ংগু**তিমোমেষগন্তীর্যা গি-রা॥ শিলাদ তাত তাতেতি পুাহ ननरी श्रूनः श्रूनः । ज मृक्ष्मे ननिरनः জাত• শিলাদঃ পরিষয়জে॥ মূনি-**ভ**্যा हर्मयामामय उहानुम वानि-नः । ইতি कृष्मं ८० णश्रायः ॥ नन्ती गूथी जी जन्द्र।। इंजि एक महन्द्रशा नन्तीवृक्तः शुः काक्रगतमशुक्तिक मू-गिक्षिवृक्ष विष्मवः। उৎপर्यतायः। ত্ণীকঃ ২ তুণিকঃ ৩ ত্ণী ৪ পীতকঃ ৫ कह्नाः ७ नन्ती १ झरठेत्रकः ৮ कासः ৯। অস্য গুণা:। কটু ব্ব•। তিব্ৰুত্ব•। শাতত্ব•। পিত্ত রক্ত দাহ শিরোর্ত্তি (यम क्षेत्र नामिष्। मूगिक्षः। भूषि वीर्यं माञ्च्छ। इंडि त्राव्यतिर्घणः ॥ 🗱 ॥ अथथाकातः कीत्रवान् य-

নাম পুসিছো বৃষ্ণঃ। ইতি, তরতং

॥ जूँ र इंडि प्राप्ता वृक्त इंडि

किटि ।। उट्गर्यायः । जूनः २ ज-

(वज्ञकः ७ स्पिः ६ कहः १ कार्यकः ৬।ইত,মর:॥ তুণিঃ৭।ইতি ভরতঃ ।। निम्त्रकः ৮ क्षिः २ जूनः २० निस्कः ১১ निसर्क्ककः ১২। ইতি भन्दद्रवावनी ॥ 🗱 ॥ स्मर्ग्नी वृक्तः। ইতি রবুমালা॥ স্থালী-বৃক্ষঃ। ইতি ভাবপুকাশঃ॥ नम्तीनः भूः नम्ती। इंडि एम्प्रम्पुः॥ ভরতোক তালপুভেদ:। যথা। नि॰ इनम्बन नमीम हमुविष्य विजी-যকাঃ ৷৷ তস্য লক্ষণ যথা ৷ গোলঘু ली वीषुः भू उ खाल नन्ती यात्र मजाः। ইতি সঙ্গীতদামোদরঃ॥ নন্দী খরঃ পু॰ শিবঃ। ইতি শবর্ত্তা-वनी।। नन्तीमठानः । ইতি স की जनारमानदः ॥ भिवदादभावः। তস্য শিব পার্যদত্ত্ব কারণ যথা। **তত, ব্ৰেত। যুগে কালে ন<del>গ</del>্ৰী নাম** मरागूनिः। चातिताथियुः मर्व•उभ ख्रिश मूमारूगः ॥ ७७७ ७१दान् পুতি ঊষে বিপায় শবরঃ। উবাচ **চ वहः माका खम्यिः वत्रमः भुजूः।।** वक्षान् व्गी व विरमु स्वानहिम भरा मूत्। जा॰ एड मर्बान् भुयहामि मूर्व-ভানপি মারিব॥ ইত্যুক্তাসৌ ভ- '

शवका भारती मुमिशुक्त । (भारति वनमः (मवः शुक्र(क्षेमाञ्जना ॥ যদি প্ৰীতোসি ভগবৰ অমুকোশ-उर्या सम । अनुगारका करः प्रव र्ष्यावनाः जूदाविश ॥ यंशा नात्र ভবেক্তক্তি স্তৃথি নিত্য মহেশর। তথাহ• ভক্তি মিছামি সর্বভূতাশযে ত্বযি।। এতজু বচন শুক্তা নিদ্দনঃ স মহেশবঃ। পুহস্যোবাচ ত॰ প্রীত্যা ততো মধুর্য। গিরা॥ মন্ত্রপধারী ম-ভেজা জ্ঞাক: সর্ব গুণোভন:। ভবি-**ষ্যসিনসন্দেহে।দেবদানবপূ**জিতঃ। **অনেনৈব শ**রীরেণ ভরামরণ বর্জিতঃ । मुझालाय मवानाता (मरेव नात-শ্বরীগতিঃ।। পার্শ্বদানা বরিষ্ঠশ্চনা-भकाना॰ विद्यालय । नन्तीयत इंजि খ্যাতো ভবিষ্যসি ন সংশযংগা অদ্য পুভৃতি দেবাগ্যু দেবকার্য্যেষু, সর্বতঃ । ত্ব॰ পুভূ ভবিতা লোকে মৎপুসা मासूनी अत्र ना जात्मवा छ हिंग्क छि সর্বভূতানি সর্বতঃ। মতঃ সম্ভি-वाक्षः भूमाम शार्यमाधिश।। यद्या षिष्ठि म मा॰ षिष्ठि यख्नामनू ममा मन्। नावरय। ,तन्त्रवः किक्षिपञ्चतानिवरयाः ु जिन १। बाद्ध जू मिक्ता निज्य व्या

नश्भ

(इष-भगिषिभे। वात्मन विज्ना बीनि महाकात्वन सर्वता ॥ ইতি वजाह-भूजान-॥
/

नन्ती मर्तेः क्री इन्तुम्ति । इंडि नद्माना ॥

नमर्गावर्खः शृः केश्वत्रमध् वित्मयः।

इंड्रमद्रः ॥ उम्र नम्नगः वर्षा।

मिक्नगम्गठानिम वंदः रद्शिकि

मामूथः। शृजनीयाख्त्रहायः नमर्गावर्खः वम्रि उद्या इंडि विषः॥

मद्मुख्नः। उभ्रद्धः। इंडि विषः॥

मद्मुख्नः। उभ्रद्धः। मःभुनि

इंडि द्राक्षवस्रवः॥

इंडि द्राक्षवस्रवः॥

इंडि द्राक्षवस्रवः॥

नशुः नकः क्षी क्षीयः। शिक्षणं देखि ভाষা। ইত্যমরঃ।। তস্য কারণः यथा। উভযোবী জ সামান্যে জায-তে বৈ নপুংসকং। ইতি সুখবোধঃ ।। क्षा। नशुः সক গর্ভস্য চিত্রং यथा। নপুংসকং যদা গর্ভোভবের্গ্রভা হর্ব-দাকৃতিঃ। উষতে ভবতঃ পার্ষে পুরস্ত দুদরং মহুং।। ক্ষা। নপুংসক বিশ্বেশনাহ। আসেক্যক সুগন্ধি-শু জন্তীক শেষক স্তথা। অসী স শুকাবোদ্ধব্যা অশুকো ভুণ সংজ্ঞকঃ

॥ #॥ (ज्याः मक्तनानप्रक्। नि बाज बन्नवीर्याकारामकाः शुक्रामा ভবে**। म मूकः भामा ब**ज्ज যোনৌ জায়েত সহি সৌগদ্ধিকো े च्दर्भिष्टा र तुक्क विश्व कि की वृ **পুষ** পुतुर्ख्छ । म ब्राह्मीक इंछि किया अन यानिस म मृज्हा। मृद्धा वर्गान भरारुषा॰ वर्गारंग यः भूत-ं खंड। नेर्बाकः मञ् विख्लाया मृष्टि-यानिक म मृष्टः॥ भ। या जार्गा-্বা মৃতৌ মোহাদকনেৰ পুৰৰ্ত্ততে। ্তৰ জ্ঞী চেপ্তিতাকাকো জামতে শণ্ড ু সু:জকঃ॥ ইতি ভাবপুকাশঃ ম नष्ठाः सुर्भेश्री भक्तगुरशिक्ष्यु देव । बाजि িইতিভাষা ৮তথ পর্য্যায়ঃ পৌশঃ ২ সুতস্যসূতঃ ৩। ইতি হেমচন্দুঃ।। न्ध्री जी श्रु अकन (रयाः श्रुधी । ना-जिनी इंकि छामा। उध्वर्यग्रः। ্পৌত্রী ২ সুতার্জা ৩। ইত্যানরঃ ।। নপ্তা ও পৌ্ঞিকা ৫। ইতি রভসঃ ॥ मूजम् भूजाया का बाह्याया निश्ची পুরস্য পুর্যা ভাগত্যু পৌরী অত্ৰৰ পৌগোপি নপ্তা। ইত্যার निकास इन्द्राध

নভঃ পু॰ শাবণনাসঃ। ইতি শব-त्रञ्जावनी ॥ ন্ভঃ প্লী আকাশ । ইত্যমুরঃ ।। थुकामिक ममः नयः॥ ॥ यः भूकि । नक्षकाशी भू । मि । इति नयः याना ॥ নভংপ্ৰাণঃ পু• পৰনঃ। ইতি ত্ৰিকাও मियः। নভঃসং পু॰ দেবঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড শেষঃ !! নভঃসরিৎ জ্রী স্বর্গস্থা। ইতি ত্রিকা-ख्या यः॥ নভঃস্থিতঃ পু॰ নরকবিশেষঃ। ইতি ছেমচন্দুঃ॥ আকাশস্থিতে ত্রি ॥ नज्यमाः श्र् हन्मुः॥ विकाश्राः॥ रेनुबान । रेजि सिमिरी। नक्षण्डहार श्रृ॰ अक्की ॥ विक्रायतः ॥ भिषः।। वार्वः। ইতি, मिनि।। नज्का शु म्र्यः। इति मदनावा নভদ ব্লী আকাশ । যথা। নভ্স 🚧 ्र भिष्व प्रिशायम भिष्ठि निगमः ॥ নভসঙ্গনঃ পুশ্পকী। ইত্যনরঃ।। नजगः शुः जामुमाभः। इंडिमितः॥ नडमान् श्रु॰ तायुः। इंडाम्बद्धाः नजार शुरु श्रीयका नः ॥ व्हनः ॥ मातः ॥ वर्षाः ॥ विम्रज्यः ॥ भञासः ।

নভ্য

इंडि स्मिरिनी। शिवाजनीय । इंडि

নভাক দ্বী তনঃ। ইত্যুগাদিকোবঃ ॥ নভোগজঃ পুশ নেবঃ। ইতি বিকাপ্ত শেবঃ॥

নভোগতিঃ জী আকাশগমন । ফথা । পুডীনোত্বীন সংডীন ডবনানি নভোগতৌ । ইতি হেমচন্দুঃ ।।

নভাদুহঃ । ইতি শন্ধ-নভোদীপঃ পুশ্ নালা।। নভোদুমঃ

নভোনদী জী স্বৰ্গজা। ইতি ভূরি-পুযোগঃ ।।

नाजाभिक्षः भू न्यं । इंडि एम-हम्दः ११

নভোদুপঃ পু• চাতকপক্ষী। ইতি হেমচন্দুঃ॥

শভোরজঃ শ্লী অন্ধকারঃ। ইভি শস্ক মালা।!

নভোরেণুঃ জী লন্ধুটিকা। ইতি বিকাওশেবঃ॥

निक्षा शृ श्रमः। इकि निष्त्रद्याः वनी ॥

'নত্য' কি নভসম্বন্ধি। নতস্যেদনি-ত্যুৰ্বে ক্যু পুভাগঃ ॥ नगर्भा

नजुर्हे शू (तयः। ইতি रूपहेर्मुः॥ नगः वें। नजिः। ইত্যমরः॥ ত্যাপः

शः कर्डा हेर्जुणानिकार्यः ॥ नमञः भू॰ भूष्ट्रः ॥ श्रमः ॥ निः । हेर्जुणानिकायः ॥

नगमः भू वन्क्वः। ইङ्गारि-कार्यः॥

নমসিতঃ ত্রি কৃতনমস্বারঃ। প্রিতঃ
। তৎপর্য্যায়ঃ। নমস্যিতঃ ২ স্বার্হিতঃ ৩ অপচাষিতঃ ৪ অর্চিডঃ ৫
অপচিতঃ ৬। ইত্যমরঃ ।।

नमकातः शृ विवाद्यमः। इति नक् छिनुका ॥ निक्तिणः। छत् कत्र भित्रः मः रयागामि । त्राभकरं रवाध-क्षताभात्र विष्णवः। इति मुक्तिश्वाधः छोकावाः मूर्गामामः॥ आगर्वेष्ठाणि नमकुष्टं मर्वावकात्र मर्वमः॥ अ-छिवामरयिष्ठि अनुवृद्धो भद्धः। ना भूवछायाशुष्ठकः। इति मुक्किञ्दः ॥ द्वाया नमगा वृक्षाक व्यमा-भक्रात्रव छाः। इति मृज्यभातः ॥ कः॥ एतनः विशुः छकः मृक्षा न नस्मक्षत मञ्जूमारः। म काल मृतः वृक्षिण्यावहन्तु पिराकरत्रो॥ वाक्ष-वृक्षिण्यावहन्तु पिराकरत्रो॥ वाक्ष-वृक्षिण्यावहन्तु पिराकरत्रो॥ वाक्ष-वृक्षिण्यावहन्तु पिराकरत्रो॥ वाक्ष-

यानकीवन भर्ग्ड मन्दि र्यवानी विर ॥ इंडि कुक्वविवर्स्स है बच थर्थ<sup>2</sup> ॥ 🗱 ॥ स्वा विकास मुद्दी मृद्धा जुमिलन छवा। नगसात । न क र्यायः शुायिक्ति खेरवमद्रः॥ मछा-बा॰ यञ्जनावाया॰ मियञायञ्जनम् ह । পুত্যেক্স নমকারে। হন্তি পুণ্য भूताक्छ । उभिविमा माम मृाप् मीधायू का ऋता वैतर । न मृत्रा নরক যাতি ব্রাহ্মণো যাত্যধোগতি शक्षामृत्र**र•क्षणमश्रह•शावस•म**न-भिर्दिछ । क्विथवस्र विकानीयार नम-कांत्रक वर्द्धारप्ट ।। 🗱 ॥ शूझ रुखा " वादि रुख देखनाचादना बनाइजः। व्यानीः कर्डा नमकर्डा উভযো नंत्रकः **ভবে<।।ইতি कुर्यामा**ठन-।। 🛊 ।। माजूः পिजूः कनीया म न नत्म बयमाधिकः । नमकूर्गामुद्धाःभद्भी जुरकायाः विमाजद्र ॥ यमः। चिच्चाप्रयज्ञः পূर्व मानियः न পुराहितः। यमुङ्खः ভবেন্তস্য তমান্ডাগণ পুপদ্যকে ॥ बडीिं कुर्वाप व्याप बार्कानिं রাজনি। বৰ্জতানিতি বৈশ্যের শ্দে পারোপ্যমেবচ।। ইতি মলসাসভিত্ ॥ अ। एकमदी यूवर्जी ना जिना (ए) जामरयाः । भवी ७ वन्सनः

ज्या जरेगा वाह मिछि वुनन् ॥ बि-(পुष्य) भारगुर्ग मद्रक्षे छिर्वाहन ा एकरातियु अही ज जाण धर्म मनू-गर्नम्। অভিবাদনশীলঃ ग्रामिछाः वृष्मत् शर्मेजः। अनावश्खा नामिछि সম্যক্ পুণতি পূৰ্বক ।। আযুৱারো-ग्र मिक्रियं उन्द्रामि शतिविर्क्षितः। আযুদ্মান ভবসোন্যেতি বাচে গ বি-(श्रां जियानी ।। जकातका में) माद्रा ख वार्ठाः भ्वाकतः मुजः। यान .(वन्द्राजिवानम् दिनः भुज्राजिवा-मने ।। नाजिवामाः म विमूचा यथा मृषु खरेंचव मः। नवुख भागिना-कार्य) मूर्शन गुह्र खाः ॥ जारान नवा नुहेरवा पक्रियन जू पिक्ये । লোকিক বৈদিকঞ্চাপি তথাখ্যাত্মি-ক নেব বা ॥ আদদীত যতো জ্ঞান **उ॰ शूर्व म**िवामस्य । युं क्रिनान् क-ननः शृहर कव्यवक् गर्नामयः।। विना (क्या: नेमानम र्मृन् मीतिन) भिव जू ॥ 🗱 ॥ अ जिवासनीया अत्रत्या यथां ॥ उभाशायः भिज ब्लाका ভাতাতে महील जिशामा जूनः चेनुत ज्ञार्ज भाजामर भिजामरही ॥ वहु ष्मार्थः शिक्वानि भू तो एक ध्रावः মৃতাঃ। মাতা মাতানহী গুৰী পিতু

র্মাভূশ সেমরাঃ॥খন্রঃ পিতামহী ·ক্যেষ্ঠা খাত্রীচ শুরবঃ ক্রিযা• । ইতুল্জা ্থকৰৰ্গোয় মাতৃতঃ পিতৃতো দিচাঃ া**চজনু**বর্ত্তনমেতেষা• মনো বাক্ কায कर्षाजः। धन्नम् मृक्षे। ममुखिरक्षम् जि-वार् क् जाक्षा विः ॥ इं जि क् यं श्रवारा ১১ অধ্যাयः ॥ 🗱 ॥ অथ अश्रधा निज गक्तगानि । जित्कान मथ यहेत्कान गर्कान्तुः शुरक्तिनः। मखगडीक मृश्क সপ্তধা নতি লক্ষণ ॥ ঐশানী বাথ कोरवद्गी फिक् कामाथत भुभू जता। शुभड़ा र खिनाएकि नर्बम् खंड न-ब्रा । विकागानि वृत्रकाक यनि श्रवग्राथा गडिए। शन्तिमार नामु तीः गद्दा व्यवसाः निर्मित्यद्वना ॥ समाज्यामूथः कर्गाट माधका (मव ুপুত্ৰন ৷ তদা যাম গ্ৰন্থ বাযবগ্ৰ গৰ্ম इर्ग्रालू म इिंजि ।। मिक्क गाहायवी ,গড়া দিশ • তমাচ শাস্তবীণ ততোপি , দক্ষিণ- গড়া নমস্কার জিকোণবৎ ॥ ত্রিকোণোয়ে নমস্কার দ্রিপুরা পুীতি मायकः ॥ १॥ मिक्गाबायवीः शवा ৰাযব্যাৎ শাস্ত্ৰবী ততঃ ৷ অত্যোগি ু দক্ষিণ গড়া তা॰ ত্যক্তায়ৌ প্রবিশ্য ্চ। অগ্নিতো রাক্ষসী॰ পদা তত-काशुख्याः दिनः। উखत्राह उथा-

दायी॰ जुनन वि कि कार्यदः ग বট্কোণো যো কনস্কারঃ প্রীতিদঃ निव पूर्णत्याः ॥२॥ प्रक्रिगामास्त्रीः भका जमामान्जा मिक्श । भक्ष (यसनी नमकातः (नाक्ष्मकुः भूकी-र्खिङः ॥ ७ ॥ सक्ट शुरुकिक कृत्रा ববু লাক্তি সাধকঃ। দুমন্বারঃ ক-থ্যতে ংলো পুদক্ষিণ ইতি দিলেঃ ॥ ।। जुका स्थानन सान शका-इंज्या नगक्षिः। शुप्तकियः विना श কুনিপত্য ভুবি দওবে।। দওইভুর-**छ्या परिवः मर्बा**पद्योषस्मानम् अपना भूबंबप् ७ वर्ष्यो प्रिश्च क्रम्यूवन जू। हिंदुक्त मूर्थनाथ नामगाविन-क्निह॥ वुस्तर्क्त्वर्गाज्याः यस्ति न्यानन क्यार ए उन्हें हैं है (शुस्का नमसादा बनीवि जिः ॥५॥ शुरकिन वयक्दा माश्राका कहिना-कृष्डिः। कुमात्राकुण मः भाः विष्कृरिः म्। मम् क्लो। म उनु इंजि दिने-বৈ ক্চয়ত বিষ্ণু তুষ্কিদঃ।। পান্দানাণ मागरता याम्ग दिशमा वाकारा स्था ा नमीना बाङ्गवी सम्हराज्ञानानिव क्त्रभ्क्। नम्कात्रयु नार्वम् उद्देश द्यागुः शुन्तम् १ए७। किरकारारेषः नम-ক্ষারেঃ কৃতি বাব কু ক্ষক্তিতঃ ॥ চতু-

্র্বর্গ লভেন্ডকো ন চিরাদেব সাধ-কঃ। নমস্বারে। মহাযক্তঃ প্রতিদঃ সৰ্বতঃসদা।। সৰ্বেধানপিদেবানা-भत्म वामि छित्रव। यामावूर्या নসন্ধার: প্রীতিদ: সতত্ত হরে: ॥ महामाया श्रीठिकदः म नमकत-ণোন্তগং ॥ ইতি কালীপুরাণ ॥ नमकाती औं थमितिका नाकः। ना-জালু ইতিখ্যাত ইতিকেচিৎ। কিন্ত त्रज्ञान वता रकास नक्का नूः नम-ক। জলকারিকেতি খদিরিকাযা। । সঙ্কোচপত্রী লজ্জালুরিতি লজ্জা-नूकायाः गठिउ। अक्षनिक्र भ-व्यामक्षल नंभकात बाक्षकदार নমস্বারশীলেব নমস্কারী।ইত্যমর টীকাথা• ভব্নতঃ ॥ नमजुः वि नमकात्रयागुः।यथा। कित्या नमन्त्रा वृक्ताक क्यमा शजूर রেব তাঃ। ইতি মলমাসতত্ত্ব ॥ नगरा जी भूबा। इंडामद्रः ॥ 'ন্নসিঠতঃ কি'প্জিতঃ। ইত্যুসরঃ॥ ন্মিতঃ কৈ জাতন্মকারঃ ৷ ন্মো ংস্কাতইত্যৰ্থ ইতপুত্যৰ নিম্ন-वः। निमिक्ति यथा। व्यशःनातः ्यान । इन्ने क्रिक्टन । प्राप्त नवनाः न्यीः

कावा क्लेभी ज्ञिल नमिछ मूर्का न পিবতি ॥ইতি বিদপ্যনাধ্বনাটক।॥ नमूष्टिः श्रुः कन्दर्भः॥दिरज्जाजनः। ইতি নেদিনী।। স यथा। কশ্যপ্রস্য मनूनीय ভार्याजीषिक्षमत्वम । ত স্যান্ত দ্বৌ সুতাবান্তা॰ সহস্থাকা-ष्रवाधिको ॥ (ब्राप्तः भुम्न इंजि খ্যাতো নিশ্স্ক্তশ্চাপরো সুরঃ৷ তৃতী-বো নমুচিনীম সহাবল সমহিতঃ।৷ ্ইতি কামনে ৫২ প্লধ্যায়ঃ ॥ ममूरिषिष्ट्रे शु इन्मुः। यथा। विशृश् চকে नमू हि दिया वंशी य देश मन्त्रा इर महिंदि दिया है जि माधः।। नमू रिमूरनः भू इन्मुः। ইত্যमतः॥ नत्मकः श्रू कृष्टाकः। ইতি जृति-পুযোগঃ॥ সুরপুমাগঃ। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥ नत्माधकः भू नमकादिर्धकः। वाक्रनः । ইতি কাচিৎ শদরত্বাবলী।। নমু গভৌ ইতি কবিকল্পজনঃ ৷৷ न्मुः वि नजः। ইতি हलायुषः।। ন্মুকঃ পু॰ বেতসং। ইতি ভাব-পুকাশঃ॥ নতে ত্রি॥ নয় ও গতোঁ। ইতি কবিকল্লফমঃ॥ वयः नुः नीजिः। ७८ शर्यायः। नायः

হ। ইত্যনিরঃ। দূতে বিশেষঃ। ইতি ं व्यक्ति॥ रेनगर्गाप्ति। इंडि एईम-্ চন্দুঃ॥ ন্যায্যেনেতরি চ ত্রি। ইডি नमज्ञावनी ॥ 👚 🐪 नगन क्षी ठकः। इंज्यानाः। शानाः ा नी कशुरशाय इंज्रियां छात्व १नहे शु जावह ॥ नयनी जी करीनी। इंडिन यह निपुका॥ नगमार जवः शृ शुपीशः। इंडि भदत्रवावजी॥ **ठक्क ्यव**म्हे ॥ नयरनाशाः शुः प्रशाकः। इजि ताकिनिर्वन्छः ॥ नगतोषध क्षी शृज्ञकात्रीतः। ইতি (र्गम्पुः॥ नग्शीरो की अडेकाद्र । इक् इंडि ভাষা ৷ ইউি ত্রিকাণ্ডশেষ: ৷৷ नयदिनात्रमः शु नोजिनाज्ञकः। ্যথা। বাড্গুণ্য বিধি তল্পুজ্ঞোদেশ ভাষা বিশারদঃ। সান্ধিবিগুহিকঃ কার্য্যে রাজ্ঞা নয বিশারদঃ॥ ইতি गाटामा ४२ व्यक्तियः॥ নর॰ দ্লী রামকপূর্ত্ণ । ইতি (मिनि ॥ मद्रः भू॰ सन्यहा इंडाबद्राः। भूक्यः। इंडिजा जनिर्घणेशा विकृशा जास्त्र्वा नहा

हिं कि मिनी।। मनुः। हे जिनाः ব্ৰতীনা 🛊 ॥ অথ নরজন্ম কারণ ।। পিতুঃ শুক্রোন্তরোনরঃা অন্য 1 ् वियमायाः जिल्लो किछः वर्गाची-জন্ত কৰ্যকা•।সমাযা•পুৰুষ• নূন• কেচিদাহুৰ্মনীবিণঃ॥ইতিসুথবো-थः॥ 🗱॥ हजूतमी जि नुकारा रगा ক্রমা তৎপর নরঃ। 5তন্ত ব্রাহ্মণ শ্চস্যাদভব নাত্র সংশ্বঃ॥ ইতি शास्त्राखद्रथाख ४० ज्यायः॥ নরকঃ পু॰ দেবরাত্রিপুভেদঃ।ইত্যু-ুণাদিকোৰঃ ॥ দৈত্যবিশেষঃ। স পৃথিব্যা গর্ভে বরাহ দেবাজ্জাত:। যুপা। রজম্বাযা গোতায়। গর্ভে বীর্য্যেণ পোত্রিণঃ। যতে। জাত স্ত-তো ভূতো দেবপুগোপি সোৎসুরঃ 11 🗱 11 जन्य नाम काइन॰ यथा 1 মানুষ্ম্য শিব্ন তত্ত্ব মৃত্যু পুগপ্য वालकः। च भित्र छ्व विनात्रः कृषः खर्हो ऋग॰ जहा ॥ बद्रम<sub>ें</sub> सीर्ख म लिखा निधाय इंछवान् यछः। তথাত্তন্য মুনি শ্রেষ্টো নর্কণ নাম रिव व इशिष्ट ॥ 🛊 ॥ उन्तर प्राक्त । वशा া শ্রীভগবানুবাচঃকরতো্যালত্য গঙ্গা পূৰ্বভাগাৰৰি প্ৰিতা ৷ বাবল

বিভকাভান্তি ভারদেশ পুর বর। ॥ अब (एवी अङ्ग्लाम्ब (बाध निम् बग्ध शुमृः। कामार्था क्ल मानाय সদা তিষ্ঠতি শোভনা ।। অবাস্তি नस्तारका १य॰ ब्लोक्रिक्ता तुक्रमः मुजः। व्यक्तिव एम् रिक्शालाः स-ষেপীঠেব্যুবস্থিতাঃ।। অত্র স্বৰ সহ। अस्ता तुकारि।इक्ष्म ईमा । हन्मुः मूर्य।-শ্চ সতত বসতে ইত্ৰৈৰ পুঞ্জ ৷৷ সৰ্বে कीषार्थभाषाजात्हमऽपरमभूखमः! অত্ৰ শ্ৰীঃ সৰ্বতো ভূদাভোগ্যমত স দা বহু।। অতৈবহি ছিতো বুন্ধা পুাত্ন कवः नमर्कर। उठः शुरशुराठिया-থ্যেষ পুরী শক্রপুরী সমা দ্ব্রত্ত ত্ব-বস ভদুন্তে হৃতিবিক্তো ন্যা শ্ব্য-१ क् उराजः मश्मारिका जाना ज्वा नहावन ॥ 🕸 ॥ जन्य नहिरी माया যথা। ততো বিদর্ভ রাজস্য পুত্রী॰ गायाख्याः इतिः। भूभार्थं वत्रया-भाग नबक्त्र अभाग खेला ॥ जार् षार श्वीदिन समिन् भूत्रवात स्य॰ । **ত**या मभ॰ च जनय॰ ताकत्त्वनाञ्जरयः **हर ।। ಈ।। उन्। श्रृ**का यथा। श्रृज् मञ्जाक बायायाः कारवान नत्रवः के-गाए। जगरतः गरामीयः महत्वरः नुपानिन ।। ठञ्डा कन्यामान श

था छ। फ किए गुरु। महामदान् बङ्गवीर्गान् (स्टेनजरेन) प्रायमान्॥ इंडिकानीशुद्रारा ३३ वर्गयः॥॥॥ क्षेत्रकृष्ट्रानः। उद्भग्रायः। नात्र-়কঃ ২ নিরয়ঃ ৩ দুর্গতিঃ ৪। ইত্যমরঃ ॥ ॥ । नत्क जन्यता यथा। उत्पादम् নরকাঃশক্রেট্যঃপঞ্চাশ নানতঃ। চলারি শন্তি তেয়া পুধান ত্রি বোধত।।উন্মোদ্ধে পাতালেকালাগ্নি कपुना भूता एक ।। अवीहिः क्मिछ-ক্যুন্চ তথা বৈতরণী মহান্। কুটশা-न्मिन कहु। म यूग्र भई छ (दो दर्ग।। निक्हा गः श्रिमाः म उधनाका हि-ত জল। ককছেদ তথা পত্ত- কুঞ্চা-यम मुजाशिवः॥ भृजिभूवं ख्या सम স্তম্ভ কৃথির বসা। তামির স্থপ-তুওক তীক্ষাসিক্ষরপুংসকঃ।।লৌহ ভঞ্জ জিয়ে ভীমা অকার রাশিকো-পরি। মন্ত্রীপাকঃ কুরমের্ডঃ সঙ্গী-বন সূতাপন ৷৷ কালসূত্র মহাপদ্ধ শীতোক কুরদেবদা অমূরীক তথা কোর মহারৌর্থ সংক্রক: ॥ স্চী-मूर्थक्षकण रिजनः एश्वर्ग् रुवा। অসিপত্র তথা শত্র ভূমিরাগপ श्रातिका । इंजिएकी भूत्रान ।। 🛊 ॥ ब्रकामा भिरता युवा यस प्रवाह। नग-

इंडि नता यात्रान् वहरवा १४म निर्मि जान्।वंशा क मूबक् खबलाने विख् छ-পোধনা বিভরেণ তু তৎ সরণ ব্বীমি মুনি সভম। ব্ৰুযতা তক্ষহাভাগ नुजा हित्वाभिशात्रम् ॥ नानिहिष्णत्रकः यािज न मर्भुबी न ज्यिमः। भृत्रक भेजवरी ह (वनानरिक्ष्य भारत्यः ॥ পতিবুঁতান গছন্তি সত্যবাক্যাশ্চ যে ' নরাঃ। অজিতা শ্চাশঠাশ্চৈব স্থানি ভিকাশ্চযে নরাঃ।। তিল•গাশ্চ হির-ণ্যঞ্চ পৃথিবীঞ্চাপি শাস্থতী • ৷ ব্রাহ্ম-ণেভ্যঃ পুৰছন্তি ন গছন্তি ন সংশ্यः। बरात्र नित्रका माखाः शतनात विव-ৰ্ককাঃ। সৰ্ব ভূতাত্ম ভূতাক সৰ্ব ভ্তানুক পকাঃ।।ন গছন্তি তু ত দেশ পাপিষ্ঠ তম্পাবৃত্ত ব্যত্নাছান मःभूर्नः हाइ। भु उिड्य सनः।। ज्ञान-বন্তো দ্বিজাবেচবেচবিদ্যাপর গতাঃ া উদাসীনা নগছন্তি স্বান্যর্থেচ ইতা-নরাঃ ৷৷ নগছভাতে দীতারঃ সর্বভূত হিতে রতাঃ । শুশুবকা মাতৃ পিত্রো र्न गहुं डि नेंग नेवः ॥ व्यक्ति नेवा नेवा **ছিঙি বুন্দচর্য্যব্যব্ছিতাঃ। পতিব্রুতা** मानवंद्धा विज्ञञ्जाम ए नजाः ॥ काः मिल्ञिल्जातः भज्ञवृत्रकीपिनः स्थाक मक्याना हे जववाकिन व वह । त्यं क्यां में क्या त्य ह त्य विका

व्यक्तिश्यः॥ धक्तिखान् भागान् कृष्ठितात्मीनयक्तिजाः। निष्ठाचार्गा-यित्नामाञ्चाः मना मञ्जाम्हत्य नद्रीः॥ गानवान् भूबयस्य दि व्याचाजादन ভাবিতাঃ। অপর্ব মৈথুনা যে চ ৰগ-ছঙি ছিজোভমাঃ।। বান্ধণা অনরত্ব-क शानु विश्व न जन्मयः 🌿 नित्रामाः সর্ককামেভ্যো নিরাশার্ধ সুজিতেন্দ্রি-যাঃ ৷৷ ন গছন্তি হি ত ঘোর যত্র তে পাপকমিশ:। ইতি বরাহ পুরাণ ॥ 🗱 ॥ नज्ञकशामित्ना यथा। माज्रम **উবাচ। দু**इर्मान्। शि वक्तरामि नेतर्कः থৈঃ প্রয়ান্তি হি । সর্বেয়েব তু কা-র্যেরু দেব পূর্বেবু ভূমিপ ॥ হন্তি भूयान भण्न क्रमान वाकागाछि-कमः क्ञः। छईर्थः वा ज्याईः ।वा वर्द्धियुं। मशैभाउ । य १मृंउ क থ্যন্তিম তে বৈ নির্যু গামিনঃ। পু-পাণাঞ্চ সভানাঞ্চ সংক্রমাণাঞ্চ মা-রিব। জাগারাণাঞ্চ ভেন্তারো নর। নির্য গামিনঃ ৷৷ যে পরস্বাপত্রীরঃ भत्रवानाक नामकाः। मूहकाके भ-রেবাং হি তে নরা নরকানুগাং॥ সূচ-া অকৃতজ্ঞান্চ মিত্রাণাংতে বৈ দিরব भामिनः ॥ भावजा पूर्वकारेकव जन-

वानाक म्यकाः। (य शुज्रविश्वारिक তে বৈনির্যগামিনঃ।।বৃত্তিছেদ৽গৃহ-ह्रमः मानहम्यः शार्थित। भिवहमः তথাশাযাঃ কৃত্বা নরক ভাগিনঃ ॥ বিষম ব্যবহারাক বিষমাকৈব বু-कियू। लाउंबू वियमारेकव नता नि রয় গামিবঃ।। কৃতাশ কৃতনির্বেশ কৃতভক্ত কৃষ্টশুম• ৷ ভেদৈ থে ব্যপ-कर्यक्षि তে বৈ निर्देश गामिनः ॥ मृऽञ স•ব্যবহারাশ্চনিম্নরী**ক্ষাশ্চনানবাঃ** । পু।ণিহি•সা পুর্ত্তাক্ত তে বৈ নির্য গামিনঃ ৷ বেদ বিক্রযিণ কৈব বেদা-'নাঞ্চৈব দূষকাঃ। বেদানা কেথকা-শৈচব তে বৈ নির্য গাগিনঃ॥ কেশ বিক্রায় কারাজন্ বিষ বিক্রায়কা**ক যে।** ক্ষীরবিকাযকা শৈচব তেবৈ নির্য গা निनः॥ ठाजूतानुमा वाशाक नु जि-বাহুশক্ষেনরাঃ।বিক্শভিশ্চ জীব স্তিতেবৈ নিরয় <del>গামিনঃ ৷৷ ব্রাহ্মণ্</del>রানা∻ || গবাঞ্চিব কন্যানাঞ্চ মহামতে। যে-স্তর-যান্তিকার্য্যেষুতে বৈ নিরয়গামি - || नः ॥ भाजविकायका रैक्टव कर्खात्रक মহীপতে। শল্যানা প্ৰমাঞ্চিব তে বৈ নির্য গামিনঃ ৷৷ শিলাভিঃ শ্-স্কৃতি ৰাপি শ্বলৈ ৰামনুজৰ্মত।যে-নাৰ্গ মনুকন্ধতি তেবৈ নির্য গামিনঃ

৷৷ অগোপ্তারশ্চ রাজানে৷ বলিষ্ট্রাগ তন্ধরাঃ। সমর্থাশ্চাপ্যদাতারস্তেরৈ नित्रय शामिनः॥ भाषान् माष्टान् পুद्धान् नीर्घकाल সহোষিতান্। ত্য-জঙি কৃতকৃত্যা যে তে বৈ নির্য গা<sub>ি</sub> নিনঃ ॥ বালানামথ বৃদ্ধানা দাসা-नारिकद (य नद्राः। यमञ्जा ज्यम्यस्त्राः তে বৈ नित्रय भामिनः॥ ইত্যেত क्षिजः जाङन् धर्माधर्म विनिर्गयः। विगृष् शुक्षः कर्म धर्मामव नमाइ-রেৎ।। ইতি পান্মে স্বর্গথণ্ডে ৩৪ অ-थ्यायः ॥ 🔅 ॥ नत्रक विष्मेष भागि-शांशिता यथा। कृष्माकी उथा ज-ন্য সক্ষাতেন যো বদেশ। युका-ন্যদন্ত বক্তি সনরো যাতি রৌরব• ॥ जुगरा भुतर्खा ह भाषा क गूनि-সক্তন। যান্তি তে নরকেরোধে যশ্চো-हाम निরোধকঃ॥ সুরাপো বৃক্ষহা-হ ত্রাপুরর্ণস্য শ্করে। পুযাতি নর-কে যশ্চ তৈঃস•সর্গ মুপৈতি বৈ ৷৷ রা-জন্য বৈশ্যহা তালে উথৈব গুৰুতন্ন-গঃ। তগুসম্মে মসাগামী হন্তিরাজ ভটা শ্চ যঃ ॥ সাগৃী ৰিক্যকৃষ্ধ্য-পালঃ কেশরি বিক্যী। তপ্তলৌহে তু পচ্যমের বৃশ্চ ভক্ত পরিত্যরহা। কে-শরী অখঃ > শু ষা শুভাঞাপি গড়া

মহাজ্বালে নিপাত্যতে। অবনতা ও क्षा॰ या यन्त्राकाष्ट्री नंत्राध्यः ॥ विष्मृष्यिका यक्त विषदिकायककः यः। जगम्रा गामी यक्तम्राः ख याखि সবন•দ্বিজ্ঞা চৌরো বিনোহেপততি मर्गामा मृषक खथा। (एव धिक शिज्न দ্বেষ্টা রত্নুষ্যিতা চ यः॥ স বাতি কৃমিভক্ষে বৈ কৃমীশে চ দুরিষ্টকৃৎ। পিত্দেবাতিথীন্ যম্ভ পর্যাণাতি ন-त्राध्यः॥ वावाज्यकः म याजुरम् नत কর্ত্তা চরোধকে। পের্যক্রাতি পরিত্য: জ্যপাদৌ ভুডক্তে ) করেগতি কর্ণিনা যস্ত যস্ত খ্যাদি কৃষরঃ॥ পুযান্তি তে বিশসনে নরকে ভূশদাক্ষণে ৷ জ্যুৎ পুতিগৃহীতারো নরকে যাস্ত্রধোন্ন্থে ৷৷ অ্যাজ্য যাজক স্তত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্যানক্ষত্ত্ৰ সূ চকঃ। বেগা প্যবহক্তেকো যাতি নি क्षेत्रचूर्भवः ॥ ( दिगी नार्भकाती ) रू भारीन् वर्ड्डियदा अक्वव निष्ठाम-**ভূক্) वाका ना•म त्रमानाक जिला-**না॰ লবণস্য চ। বিক্রেতা ব্রাহ্মণো यः তি তদেব नत्रकः हिज्ञ। नार्ड्जात मकू हागान, य वडा इ विरुक्त्रान्। পাল্যমরক থাতি তমেব দিভসত্তম ।। त्रामा की दी रेक वर्जः वर्णामी ग-त्र र उथा। मूठी माहियकरैन्हव भई-

কারী চ যোছিজঃ ॥ং পত্যেরী জীবটি লারাজ্ঞাতঃ স্বস্তঃ তদম ভোগী ( नाहित्या नहित्वाभकीवी। यहा। মহিষীতুক্তাতে ভার্য্য ভগেনোপা-হ্রিত ধন্থ উপজীবতিয় স্তস্যা: স বৈ নাহিষকঃ মৃতঃ ৷৷ ইতি মৃতিঃ ৷৷ > ( शर्वकादी श्नामित्वकृष्टनाशर्वमू व्यमावाम्यानि किया नुदर्खकः) वा-গারদাহী মিত্রই শান্তনি গ্রাম যা-জয়ঃ। ক্ধিরান্ধে পতন্ত্যেত সোদ বিক্রীণতে চ বে ।৷ নধুহা গ্রামহন্তা চ ষাতি বৈতরণী• নরঃ। রেতঃপা-नारिकर्जाद्वान्द्र्यामारङ्गिनम्हरा॥ তে কৃষ্ণে যান্তঃশীচাশ্চ লহকাজী-বিনশ্চ যে। অসিপত্র বন যাতি বন-ए ति व्रिथव यः ॥ छे ब ज़िरका गृगवता-श्वा वश्किंगाल পত्रस्थित। यास्त्रप्राप्त ছিজ তবৈব যক্ষাপাকেষু বঙ্কি দঃ॥ वु उत्र (नाभरका यक श्रामुभाषिकृ उ শ্চ বঃ ৷ সন্দ<sup>্</sup>শ যাতনা নধ্যে গতত স্তাবৃপি ॥ বিবায়শুষু স্বন্তি যে নরা ব্রহ্মচারিণঃ।পুলেরধ্যাপিতা যে চতেপতম্ভি শভোজনেয়া এতে চা-ন্যে চনরকাঃ শতশো ২থ সহসুশঃ। যেৰু দুষ্ত ক্ৰমাণঃ পচ্যন্ত হাতনা গ-তা: ॥ তথৈৰ পাপান্যেতানি তথা

र्मानि जर्जुणः। जुङ्गाख यानि श्व-यि नेव्काष्ट्रत गाहितः ॥ वर्गामुम विक्षकि कर्ष अर्वे छि (य नत्राः। कर्मना মনসা বাচা নির্যেষ পত্তি বৈ ॥ व्यथः मित्ना जि मृ माउ नातरेक र्मिव (रवजाः। रिवा कारशाम्थान् न नान कर्मा हि नातकान्।। स्वत्ताः কৃনযো ব্রাশ্রপক্ষিণঃ গশাবা নরাঃ। ধার্মিকা ক্রিদশা তদ্বী নোক্ষিণক যথা কর•॥ সহসু ভাগপুর্থমা দ্বিতী-যানুক্ৰমা তথা। সৰ্বেছেতে মহা-ভাগ যাবনুক্তি সনাশুযাঃ॥ যাবস্তো শাপকৃষাতি নরক পুষ্যাকত প রাদুখঃ ৷৷ ইতি বিষ্ণুপুরাণে দ্বিতী-यि भा अथुरायः ॥ 🗱 ॥ अभिह । कथ्यामि विक्रिजानाः कर्मनाः विवि-ধা গতীঃ। তাঃ শৃণুস্ব মহারাজ যাঃ पुता (माक मानु याए ॥ शत्रविखः পরপেত্য কলত্র পারক্ত যঃ। হ্র-তে বৃদ্ধি মোছেন সোম্ভে মৃত্যু বৃশ• গতঃ ৷৷ কালপাশেন সংবক্ষো ব্য-দূতৈ মহাবলৈ:। তামিসে পাত্যতে তাবৎ ধাবদ্বধ সহসুকং॥ ভত্ৰ তাডন ष्क् यः व्यवस्थि यमिक इताः। भाभ ভোগেন সমাত্ত স্তংতা যোনিস্ত শৌ-

कती ।। তত্ৰ ভূজা महा दूः थः मान्यपः গনিষ্যতি ৷ ক্লোগাদি চিহ্নিত তৰ मूर्यः **न**। ज्ञानकः यकः ॥ ज्ञानुः हः বিধায়ৈব • কেবল • ৰস্ট্ৰক • ।পুকা-তি পাপনিরতঃ সোদ্ধতানিসুকে প-) তেখাবে নরাইহ জন্মা•বধ• দর্বন্তি 🦠 বৈম্যা।তে রৌরবে নিপাত্যন্তে খা-म् प्रस्त क्कि रिष्टः ॥ यः स्वानतार्थः ভূতানা॰ বধ নাচরতি সুটি । মহা রেরবসংজ্ঞে তুপাত্যতে স্বনাক্ত-्या ॥ त्या देव निजन्न जनकः यान्त्रनः (विश्वे भाभक्षा कालमूख महा-पूछि (याजनायञ दिख्टा ॥ याद्रि পশুরোমাণি গবাংদ্বেষণ করোতি যঃ ৷তাবন্বৰ্যসহস্থাণি পত্যতেম্ম কিন্ধ-রৈ:।। যো ভূমো ভূপতি ভূ বা দণ্ডা-যোগ্যন্ত দওয়েৎাকরোভিব্রাহ্মণ-मािशि (एक्ए ७ विलाल्यः। म भू-कत्र मूरिच पूर्रहेः शीउप्रज समकिक-दिः॥ शण्हामुद्धाम् (यानीयु जायर পাপ ভূক্তবে। ব্রাহ্মণান্য গবা । যে ভূ দুব্য• বিত্ত• তথাল্পক• ॥ কৃব্তি•বা गृङ्ख भाराञ्चलाञ्च व वनामताः ৷ তে পরতান্ধকূপে চ পাত্যন্তে চম-হাদিতা: ৷৷যোৰ্থ-ম্বযমুপাষ্ত্য মধু-त्रकाखि लानू भः। न प्रवाय न मूक्रफ

হদাতি রমনাত্রঃ ৷৷ স পততে ব নরকে কৃমি ভোজন **সংজ্ঞকে। অনা**-अपि नाहा यस हित्रगानीनशास्त्र ।। दुक्तसःवा महापृष्ठेः म मःग नद्राक शहर । यः सरमञ् भुभूकाि नानऽः কানাতি মৃঢ্ধীঃ।। মনসা কল্লিত॰ দুব্য বিদুষে যোদদাতি ন। সপুনান্ন-ंत्रक॰ याजि याविन्मुग्रमञूर्मम ॥ शन्त्रामुक्षाञ्च रयानीयू कायरा वर्ग-जरूतः। मानानि वाउरव म्ला शूनः শুদ্ধোঁ ভবিষ্যতি।। বাচা দত্ত মনো দত্ত মিতি নাছ বদেশদি। কম্পন্তে পিতর শুস্য নরকাষ সমুৎসুকাঃ॥ বাচা দত্ত মনোদত্ত দত্ত পাণি স্ব-**(भारक•। अउम्रल भरत• म्रा**८कि-बा मू ८ भा हेरय प्रमा ।। में या छ उत्तर তৈলতণ্ডে সম্ভীপাকেতিদাৰুণে । যো নগম্যা প্রিয় মোহামোষিদ্তা-वाह कागराए।। ত॰ তথা किन्नताः শূর্য্য পরিবদ্ধ**ঞ্চ ইব্তে।** যে বলা- <sup>॥</sup> षिम्भर्यतामा ज्लुम्मिखि स्वतामा जाः॥ তে বৈতরণ্যাং পতিতা মাংস শো-क्षा उथा शाईइ। माहत्तर।। भृत्या-দে বিপততে গ্ৰন্থ সমন্তিঃ। व मञ्जानानुमस्ड वि ध्र्वा (चाक्म)

বঞ্নে।। বৈশসে নরকে মূঢ়াঃ পত্রি যমতাডিতাঃ। যে সবর্ণা॰ ক্রিস্ভ সূচাঃ পায্যম্ভি মরেতসং॥ রেতঃ দিল্যাসু তে পাত্যা রেতঃ পানেষু তৎপরাঃ । य को इ। वहिना मुक्षा गतमा गुम **नु**ष्ठेकाः ॥ সার্মেযাদনে তে বৈ পা-ত্যন্তে পাতকাবিতাঃ ।/কূটসাক্ষ্য वरञ्जा भुक्षः भाभगम् जः॥ भा-র নীযম্ভ দুব্য যো রক্ষতি পুসভ• वनी। मा वीहि नद्राक भार्भ शः বায়ক্ত্রু পতত্যধঃ ॥ তত্র দুঃখ নহ-खुका भाभिष्ठा॰ यानि नावुद्ध । যো নরে৷ রসনাস্বাদাৎ সূরা • পিবতি মূঢ্ধীঃ।। তম্পায্যতি লোহস্য রসং ধর্মস্য কিঙ্করাঃ। যো গুরুনব্মন্যেত স্ববিদ্যাচার দর্পিতঃম সমৃতঃ পাত্য-তে কারসংজ্ঞকে ংগোমুখঃ পুমান্ । विश्वामघाठः ऋर्बन्धि (य नद्रा धर्म নিষ্কৃতাঃ ॥ শূলপ্রোতে তুনরকে পা-ত্যন্তে বহুয়াতনাঃ ৷ যে ন শুক্তা রাঘ **কথা ন পরোপ**কৃতিঃ কৃতা ৷৷ তেষা॰ সর্বাণি দুঃখানি ভবন্তি নরকাভরে। অত্র যস্য সুখণ ভূষ স্তস্য স্থগ ইতী-র্য্যতে। যে দুঃখিনো রোগযুতা নর-কাদাগতান্ত তে ॥ ইতি পাদ্মে পা ञानचर७ ८৮ अधायः॥

শস	de	19.4	
नंब्कत्र ७ की या	তনাহা	ন-। তম্পা। যম উবাচ। নরকাণাঞ্চ ক্রপ্তানি ।	ग <b>ङ</b>
নাম্বিধানিচ	। নানাপু	রাশভেদেন নামভেদানি তানিচ॥ বিস্তৃতানি গ	ভী
- त्रानि क्रमनानि	<b>ठ जी</b> वि	না। ভয <b>ন্ধরাণি যো</b> রাণি হে বৎসে সৎসিত	1नि
		নি সংযমন্যাঞ্চ সন্তিচ। নিবোধ তেষাং নাম	
		।। ইতি বুক্ষবৈৰর্ভে পুকৃতিখণ্ডে ২৭।২৮ অধ্যা	
তত্রনরকন্সগুৰ		পাপভেদাৎ কণ্ড বিশেষ গামিনঃ	
वश्चि ५	· >	কটুবাচা বান্ধক দঞ্চকুৎ	5
তগুঙ্গ খ্র- 🔪	<b>4</b>	ব্ৰান্ধণাতিথি ভোজনাপুদঃ	২
कात्रव ७	8	निविष दित विद्य कात मः याक्रवः	3
विहेम ७॰	8	' বুন্ধ বৃত্ত্যপহারকঃ	8
মূত্রস্থ্ত	œ	পরতভাগ॰ খ্নিত্বোৎসর্জ্জকঃ	¢
श्लियाञ्च ७॰	৬	একাফী মিষ্ট ভোজী	ঠ
গরহ্ব ও॰	4	পিতৃ মাতৃ গুৰু ভাৰ্য্যদ্যপোষকঃ	4
দূষিকান্ত ও॰	ь	অতিথি দৃষ্ট্ৰা বক্ৰচক্ষুঃকারী	<b>ቴ</b>
বসাসও•	۵	ৰিপ্যায় দত্তা তদ্মব্য মন্যমৈ দাতা	3
শুক্রস্ত্ত• .	>•	পরস্ত্রীগান্সী পরপু-গানিনীচ	30
অসৃক্স ও•	<i>&gt;&gt;</i>	গুর্বাদিতাডকন্তদুক্তপাতকারকন্ট	22
অশুক্ত ও	75	হরিসধীতে কদ্যাখ্যমদভক্তোপহাসবৃ এ	<b>)</b> 2
গাত্ৰনলন্ত ও॰	73	শখদশুদ্ধচিত্তঃ খলতাকারী	75
কৰ্ণবিট্ৰ ও	<b>38</b> :	বধিরোপহাসকৃৎ	78,
মজ্জসণ্ড•	<b>3</b> &	লোভাৎস্ব ভোজনার্থ• জীর হস্তা	<b>3</b> €
মাণসঙ্গপ্ত	70	অর্থ লোভাৎ কন্যা বিক্রাষকঃ	<i>35.</i>
নথজ্ঞ	79	Carrier and a service of the service	59'
লোমজ্ঞ-	24	পুৰোপবাসাদিযু সংযম ত্যাগী	74
কেশছণ্ডে	72	সকেশ পার্থিব শিবলি <b>ল চিকঃ</b>	څڏ

नद्रक		<b>শস্</b> প	
নরকঙ্গ শুনামানি		পাপভেদাৎ জও বিশেষ গামিনঃ	
অছিল্ও•	<b>२</b> •	বিষ্ণুপদে পিতৃপিণ্ডাদাতা	<sup>7</sup> २०
তামুঙ্গণ	२ऽ	শ্বরিশামী	२५
<b>लोइक्र</b> ७•	<b>२२</b> '	<b>ক্ষন্তপ্রসাতা ২বীরযো রমভুক্</b>	२२
তীক্ষকণ্টকৃষ্ণ ও•	২৩	কটুবাচা স্বামিতাডিকা <sup>`</sup>	২৩
বিষন্ধও	২৪	বিবেণ জীবন হস্তা	₹8
<b>घर्गञ</b> ७॰	<b>২c</b>	সঘর্মহন্তেন দেবদুব্য স্পর্শকৃৎ	20
তপ্তসুরা <b>ন্ত</b> ণ	২৬	শূদ্ানুক্তাতঃ শূদামভোজী	২৬
পুতগুতিল <b>দ</b> ণ্ড•	29	मरखन वृष्ठाफकः	২৭
ब्रुब्र्' ७°	२४	স্বন্ত কৌহ বডিশৈ জী বহন্তা	24
কৃমিঙ্গ ও॰	रु	মৎস্যা ভূণিপ্যো বৃথা মা শ স্থরের নৈবেদ্যন্ত্	ক্থ
भ्यञ्र ७.	90	भू पुराजी ত <b>्रभाष</b> सुक् उह्दमा शिष्ठ द्वाञ्च	1:00
जर्भ म ७॰	<b>3)</b>	শিকৃষ্ণ পদচিহ্ন মন্তক্স্য সর্গস্য হন্তা	2)
নশন্ত ও	<b>2</b> C	বিধি দত্বা ক্ষুদুজন্ত হন্তা	ું ૭૨
मः भन् ७	೨೨	विधि मेष्। कीव इंडा	೨೨
গরলঙ্গও•	28	মক্ষিকা হত্বা মধুগাহী	28
व्जुन•ध्रुत्रः	<b>SC</b>	वम्खा विशुरगार्मखक्ट	20
বৃশ্চিকৃষ্ণ ও•	<b>ల</b>	, অর্থনোভাৎ পুরাদণ্ডক্ৎ	83
শরস্ত্ত॰	90	atmost state and afairs afairs	99
मृतक्ष ७ •	<b>७</b> ७	শৈত্রপারী ধাবকঃ সন্ধ্যা হরিভক্তি হীনক্ষ ব্যৈক্ষণঃ	94
খ্যুত্ৰ ও॰	22	বুক্তিন প্র	22
গোলস্ও•	8•	यम्मात्वाया कात्रायाः भुकावम्रनकृष	8•
নক্ৰস্থ ড	82	क्षणामूर्णि जनकामि इस	82
কাককণ্ড•	۶۶	কামেন পরজী বক্ষঃ শ্রোণ্যাস্য দুষ্টা	82
সঞানজ্ঞ-	23	बर्गकोत्रः	23

• नेत्रक		नंत्रक		
नंद्रकश्वनामानि		পাপভেদাৎ স্বস্ত বিশেষ গামিনঃ		
वाडेक्ख॰	88	তামু লৌহ চৌরঃ	88	
বজুকণ্ড	8@	দেব দেবদুব্যযো শেচীরঃ	98	
<b>उद्यमामानम</b> ्ड•	85	দেব দ্বিজয়োরৌপ্য গোবস্তাণা চৌর:	85	
তীক্ষপাৰা শ্ৰুণ্ড	89	দেব দ্বিজযোঃ পিত্তল কা•স্য পাত্র চৌরঃ	89	
नानाव ७ }	84	বেশ্যামভুক্ তদৃত্তি জীবীচ	84	
मनीव ७५	82	सहरमवी मजीकीवीठ वृश्वितः	82	
ह्र्नञ्र ७॰	¢•	দেব দ্বিজযো: শস্য তাঘূলাসন চৌর:	¢.	
চক্তৰ্পণ্ড•	(2)	বিপু দুব্য হত্ত্বা চক্রকারী	دى	
বক্তস্ত্ৰণ	<b>৫</b> ২ '	বিপু বান্ধবয়ো ৰ্যক্রতাকারী	œ٦	
कुर्यञ्चलं ।	CD	হরিশ্যনে কুর্মমাণ্স ভুক্ ব্রাহ্মণঃ	CD	
জানাস্ত্ত•	89	(एव दिङ्या वृंठ ठिलाहि इंट	89	
ভষাস্থ্ত•	20	,	£Ĉ	
म्थ्र ७•	শ্ৰে	<b>দে</b> বিদ্বজযোধাতী শৃন্ধতৈ লদুব্যাণাম পহর্তা	හ	
उष्टम्मी अख॰	69	বল খলত্বাদিনা পরভূমিহরঃ	69	
অসিপত্রস্তু	<b>GP</b>	অর্থ লোভাৎ খন্নেন জীবিছেদী নরঘাতীচ	<b>C</b> b	
क्त्रभातक ७	¢9	গ্রাম নগরাদি দাহকৃৎ	<b>6</b> 9	
সূচীমুখনও	<b>%</b>	) शतकर्ण मूथ मच्चा शत्र निनरकः शत्र राम		
414,410		्रभाषी (यम युष्क्रिंग निनम्कन्छ	<b>5</b> •	
(गाधाम्थञ् ७	92	গৃহ• ভিত্বা বস্তু গো ছাপ মেব চৌরঃ	53	
নকসুথস্তত্ত	৬২	नामाना पुरा होतः	ઝર	
गत्र भाग ७	<b>33</b>	গজ তুরগ নর চৌরঃ	50	
গোমুখনও•	86	कणिवंद्भावात्रकः	58	
		(गा जी जिक् जुन तुक्तरा रगम गागी नीक		
শম্ভীপাকন্ধও•	pe.	नक्रा हीन डीर्थशुजिगाही गुामयाबी (एवनः		
		শুদুস্পকারে৷ ব্যলীপতিক	56	

नत्रकन्धन्रभानि		পাপভেদাৎ কণ্ড বিশেষ গামিনঃ	
কালসূত্র ও	৬৬	বেশ্যামভুক্ তৎ সংসগী চ	৬৬
অবটোদস্ত ও	ଧ୍ୟ	क्लिंगिरि येए(विन्त्राशानी विकः	৬৭
ञ्क्छम्भ ७•	34	চন্দু সূৰ্য্য গুহুণে নিষিক্ষকাল ভোজী 🖟	34
পা॰শুভোলন্ত্র	ふ	একমৈ বাক্ পুনত্ত কন্যায়া অন্তস্ত্র দাত	চা ৬৯
পাশবেষ্টস্ ও•	90	দত্তাপহারী	90
শূলপোতসও•	47	অভক্ত্যা শিবলিঙ্গ পূজকঃ	. 93
পুকস্পনন্ধ ও	92	বিপু দঙ্কৃৎ তৎকম্পকৃত্তযদাগ্ৰীত	92
উল্লামুখন্বও•	90	जरकाश्वरम्भ सामिनि करूपामिनी	90
অকুপস্ও•	98	শূদু ভোগ্যা ব্ৰাহ্মণী	98
বেধনঙ্গও•	90	বেশ্যা। সাচ পঞ্চ ষট্ পু গমনান্ডবঙ্জি	~. 9œ
<b>দ</b> ওতাডনঙ্গণ	95	যুষী। সাচ সন্তাষ্ট্র পু॰ গমনান্ডবতি	45
कालवष्ठ ७ •	99	भरावभागा भाषा द्वारिक शु गमना खर	তি ৭৭
দেহচুৰ্গ্বত	94	জলটা। সাচ পু॰দ্বয় গমনান্ডৰতি	96
<b>प्रतम्</b> ७•	92	সৈরিণী। ব্যলী। সাচত্তঃপু॰ গমনান্ডব	ত ৭৯
শোষণঙ্ক- ও	bo	ধৃষ্টা। পু॰শ্চলী। সাচ ত্রিপু॰ গমনাজব	
ক্ষস ও•	67	স্বর্ণ পরদারী	67
সূর্পজন্তু:	K	वाक्रगीगानी कविया दिनाउन	<b>b</b> 3
		विद जुननी वकाजन प्रविनाम क्	ত্রা
ক্রালামুখকও •	80	পুতিজ্ঞাক্তদপালকো মিখ্যাশপ্ৰী বি	
		দুৰ্গী বিখাস যাতী নিখ্যাসাক্ষ্যদেক	)  -  -
	øl		
জিন্দত্ত•	<b>b</b> 8	্ নিত্যক্রিয়াছীনো দেববাগনাস্থিকো মনে প্রাসীচ	•
<b>4</b>	,a		<b>P8</b>
यूगाहरू ७	PG	দেব বিপুথো র্ঘনহারী	ra
ना गरवडेन ब्रखः	64	्रे रिकड देखिकाती लाका लाइ व	<b>યા</b> -
•	. <b>t</b>	। यात्रा त्रभाषावक्याव्याक्षाः	by

নরক্তিৎ পু॰ বিষ্ণুঃ।ইতি নিকাও শেষঃ।।

नतक दिला की नित्यपियी। उट शर्या यः। अनकीः २ निश्विः ० कानश्वी ४। ইতि भपत्रज्ञावनी ॥ नत्रक्षा की दिल्जगीनमी। ইতি ह्मान्मुः॥ नित्यश्विरक्ष जि। यथा। नतकस्था शिष्ट विन शून छाकु मिह्छ। ইতি জ্ञागन्य ।।

नतकाष्ठवः शृ॰ वियुः। ইতिপুतापः॥ नतकाममः शृ॰ (भुजः। ইতি सम नतकाममः शृ॰ (भुजः। ইতি सम नतकीवनः। नितयत्तागणः॥ नतकीवकः शृ॰ ध्यमः। उ० शर्यायः । ध्यकार। ইতি হেম्চन्द्रः॥

नत्रानः शुः नवनक्षवित्मसः॥ उड्डाज इनः। यथा। इद्या साठि मृगाश्चिनी इति ६ वः शोकानुताधानि जि
कानु (ता हिनि का ज्ञानि ज्ञानी
भूतानि जानि व्याका हिन कि नाथ मृत वक्षा वस्रा कि ।
भाश मृत वक्षा वस्रा कि । म्हाः
विश्व मूनि र्थाक्य वनाएए
वा नता ताक्ष्माः ॥ इठि मीलिकाः
॥ अ। अम् क्वाः। मानुरस् मृतुः
वर्ष मह उ मनाः भीनानि ।। नतः
गुजः। इठि का हो भूती भः॥ नतः

সন্হশ্য।
নরকঃ পুণ বরগুকঃ। নরাকা ইভি
ভাষা ॥ নেহনে ক্লী। ইভুগোদিকোষঃ॥

नतरम्यः शृ॰ ताजा। ইতি হলायूथः॥ नवनातायां श्रुः यमि विश्वासी। (जो জ্ঞিকৃষ্ণার্নী। ইতি মহাভরত ।। তযো ৰুৎপত্তি যথা। অথ চিন্তয়ত **उস**ऽश्रांड• पद्मा जनार्मनः। उ**८ मर्द**• জ্ঞাপযামাস বরাহ বপুষো হিত ।। ততো দেহ পরিত্যাগ করু • সমভ-- বন্দা। তদা দ'খ্রাগু ঘাতেন নরসিং হ শহাবল ।। সরভোভগবান্ভ-র্গো দ্বিধা মধ্যে চকার হ। নরসিংহ দ্বিধা ভূতে নরভাগেন তস্য তু ॥ नव्यक्त मन्द्रभाषा दिवाक्षेत्री न হান্যিঃ। তস্য পঞ্চাস্য ভাগেন नातायग इंडि मुद्धः ॥ अख्वर म महारज्जा मूनिक्शी जनार्मनः। নরো নারায়ণ শ্চোভৌ সৃষ্টি হেতৃ गरामजी ॥ यरगाः भुजारता मुर्क्सनः শাত্রে বেদে তপঃসু চ ৷৷ ইতি কালিকা পুরাণে ২৯অধ্যাযঃ॥ #॥ क्झा जिए को धर्मभू को। यथा। धर्मगा मक मूहि ठर्ग किने इ मूर्वार

নারাযণোরর ইতি ম তপঃ পুভাবঃ
। দৃষ্ট্বাত্মনো ভগবতো নিযমাবলো
পা॰ দেব্য স্ত্রনঙ্গ পৃতনা ঘটিতু• ন
শেকুঃ।। ইতি শ্রীভাগবতে ২ স্কন্ধে
৬ অধ্যায়ঃ।।

নরপতিঃ পু• রাজা। ইতি শব্দরত্না-বলী।।

নরপূষঃ পু॰ নীলবৃষ্ণঃ। ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ।। নরস্য প্রেবস্তানি ত্রি।। নরভূঃ জ্রী ভারতবর্ষঃ। ইতি ত্রিকাগু-শেষঃ।। নরোৎপত্তিক।।

নরভূনিঃ স্ত্রী ভারতবর্ষঃ। ইতি শন্ধ-রত্নাবলী॥

নরমানিনী দ্রী শাশুসুক্তনারী। ইতি । ত্রিকাওশেষঃ।।

नत्रमानिक। जी नत्रमानिनी। ইতি भदत्रज्ञादनी॥

नद्रमाना की मनूष्य अभागा। यथा। विठिव थहाक ध्रा नद्रमाना विज्-

নরমালিনী জ্রী শাশুযুক্তনারী। ইতি হেমচন্দু:। নরমালাযুক্তা চ।।

नत्रामधः श्रू॰ नत्रवधात्राक यक्कविष्ण-' यः। जञ् करलो वर्ष्क्रनीयः। यथा। जमु मु याञा त्रीकातः कम अनु विश्वात्ताः । विज्ञाना ममवर्गाम् क न्याम्भयम छथा ॥ (स्वरत्ताः मु-তোৎ পত্তি मंधूभर्क भर्णार्वथः । भाग्माप्तः जथा मुक्ति वानभूछा-मुम छथा॥ स्छाया देन्त्र्वं कन्यायाः भूमपंतः वत्रेन्द्रात्तं विश्वातः वृक्ष-त्र्याः नद्रस्मान्द्रस्मार्थः जथा मथः । इमान् धर्मान्द्रात्त्रपूर्ण वर्ष्ण्यानाः भनीयिगः ॥ इज्याह्याह्यस्व वृह्मा-द्रभीयः॥

নরবাহনঃ পু॰ স্ববেরঃ। ইত্যেরঃ। থ পুক্ষ যান বিশিষ্টে ত্রি।। নরবিষ্ণঃ পু॰ রাক্ষসঃ। ইতি ত্রিকা-ওশেষঃ।।

নরসিংহঃ পু॰ বিষ্ণুঃ। ইতি শদরত্নাবলী ।। সতু হিরণ্যকশিপু বধার্থণ
ভগবদশাবতারান্তর্গত শততুর্থঃ পূনাবতারঃ । ইতি বরাহপুরাণণ ।।
নরশুেষ্ঠঃ। যথা। সুত্র কত্তরপদে ব্যায়ু
পুল্বর্বভ জঞ্জরাঃ। সিংহ শাদুল
নাগাদ্যাঃ পু৽সি শ্রেষ্ঠার্থ বাচকাঃ।
ইতি বিশেষ্যনিশ্বে অমরঃ।।

নরহরিঃ পু॰ নৃসি॰হাবতারঃ। যথা। কেশব হৃত নরহরি রূপ জয় জগ- मीम श्रा । ইতি গীতগোবিদাং॥
नরাধিপঃ পু॰ নরাধিপতিঃ। রাজা।
यथा । नরাণাঞ্চ নরাধিপঃ। ইতি
ত্রীকারীতা ॥
नরাভকঃ পু॰ রাজসবিশেষঃ। সত্র
রাবণপুএঃ ইতিরামাযণ॰॥
নরাখণঃ পু॰ ত্রীনারাযণঃ। ইতি শব্দরজাবলা ॥
নরী স্ত্রী নার্মাইতি ভটাধরঃ॥
নরেন্দুঃ পু॰ রাজা॥ বিষ্বৈদ্যঃ। ইতি
নের্দিনী ॥
দক্রিক॰ ক্লী নাসিকা। ইতি হেমাচন্দঃ॥

नर्खकः शृ॰ (शार्षशकः॥ हातः॥
ं (कलकः॥ नर्षः। उৎ शर्यप्रायः।
गर्बतमी २ लयालग्नः ७ ठालतः
हनकः ४। इठि मस्त्रज्ञावली॥
दिशः। इठि (इमहन्पुः॥ ॥ मृठाकर्जुर्लकः यथा। यामृणः नृठा
शाजः माम्नीजः (वाङाकः ठामृणः।
न्ठामा धाता शाजः नर्छकः शतिकीर्खिः॥ यशि ह। यमग्रकः
श्रुकाशी ह नमा जुन्नि उर्शतः॥
हाम शृहाम हजूद्धा वाहाला न्ठा
दिशिका इठि महीजमामान्तः

नर्खनी खी न्छाकारिनी। वाइ देखि

ভाষা। তৎ পर्यतायः रिलामिका २ ।

देछामतः ॥ लयপूजी ० नि इ

लमता ६। देखि सम्तद्भावली ॥ क
तत्पुः। देखि मिनी ॥ निलका नाम

मूगिक पूर्वा । देखि द्राजनिर्धणेः ॥

नर्खन क्षी न्छा । देखि किर्वक्षक्षमः ॥

नर्ष गर्जा। देखि किर्वक्षक्षमः ॥

नर्ष गर्जा। देखि किर्वक्षक्षमः ॥

नर्ष गर्जा। देखि किर्वक्षक्षमः ॥

नर्ष देखः की हर्माविष्णवः। छम

नर्फ हेक॰ ज्ली इत्मादित्यसः। उत्र ह लक्ष्मः । यथा। यमि उद्याज न क्ली ङ क क ला ध्यम् नर्फ हेक॰ । इंडि इत्मामक्षत्री ॥

নর্ম ক্লী পরীহাসঃ। ইত্যমরঃ॥ নর্মকীলঃ পু• পতিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ॥

नर्य है: श्रु॰ अर्श्वः ॥ সূर्य्यः । इंडि हाजावनी ॥

নশঠিং পু॰ চূচুক ।। বিদ্ধান পরিহাসরতঃ। ইতি শদরদ্বাবৃলী।।
নর্মদঃ পু॰ কেলিসচিবঃ। ইতিমেদিনী
ন্মাদা জ্রী পৃদ্ধা। ইতি হেমচন্দুঃ।।
্নদীবিশেষঃ। সা বিদ্ধা পরতাদিঃ
স্তা পশ্চিমে তম্সান্দ্যা পুবিষ্টা
। তস্যাঃ পর্য্যায়ঃ। রেবাং নেকল-

কন্যা ৩ সোমসুতা ৪। অস্যা জল खनाः। नघुदुशमी उनद्गः। मुशयादः । দাহ পি ह শমনত্ব॰। বাতদাত্বঞ । ইতি রাজনির্বণ্টঃ॥#॥ তস্যাজল॰ ममिक मारिम की यंत्रि । यथा । ত্রিভিঃ সারম্বত• তোব• সপ্তভি স্তৃথ यामुन । नार्मन मणि मीरेम भादः वर्षि बीर्याजि ॥ इंजि शुर्यिक्ज তত্ত্ব ৷৷ 🗰 ৷৷ তৃস্যা উৎপত্তি মাহা জ্যে যথা। নর্দ্র সরিতাণ শুেষ্ঠা क्षुरम्हाधिनिः मृठे । তात्रर् मर्व ভূতানি স্থাবরাণি চরাণ্ চ।। সর্ব-পাপ হরা নিত্য সর্বদেব নিত্তা। **স•ऋত। দে**ব গন্ধরৈ রণ্ধরোভি স্ত**ৈ**ৎব ह ॥ क ॥ उत्र । उत्र । व्या । ननः পুণ্যজ্ঞলে আদ্যে নমঃ সাগর গামি-নি। নম স্তে পাপশমনি নমে। দেবি व्यान्त ॥ नत्मास्त उ अधिनन मन्ध সেবিতে ন্যােস্ত তে শক্কর দেছ নিঃ সূতে। ননোস্ক তে ধর্ম ভূতা। বরপুদে নমোস্ত তেঁ সর্বপবিত্র পাবনে ॥ যন্তিদ পঠতে স্তোত্র নিত্য শুদ্ধ-মনা নর:। ব্রাহ্মণো বেদ মাগ্রোতি क्विया विक्रयी ज्या । विक्रांस শুভতে লাভ শুধু দৈব শুভা• গতি•

। अवाथी वज्र श्वार श्वार गार द নিত্যশঃ ৷৷ নর্মাদা সেরতে নিত্য स्यान्सदा ग्रहस्य द्वः। एवन श्रीग्रा নদীজেয়া বুদ্ধহত্যাপহারিণী॥#॥ नमाराया जलः शीदा अहि का वृष थुडा । मुर्ग डिक्ट् नश्रमा हिं जमा जीर्थ পুভাবতঃ ॥ এউড়ার্থ সমাসাদ্য यस शुगान् भविजादि । मर्बभाभ বিশুদ্ধাত্মা বুজতে 🚜 মন্দিরে ॥ कल शुर्वमा यः वर्षे । जिम् जीर्थ नता विशा ई॰म यूट्डिन याः न कपू लाकः न गहि ॥ यावहन् के मूर्यः শ্চ হিম্বাংশ্চনহোদ্ধিঃ। গঙ্গাদ্যাঃ मतिरा यावडाद श्वर्गभशिदा ॥ ञनानक यः अर्यप्राखिक छीर्थिनदा-थिन। गर्ज्याम जू द्वारहम् न भून ही-युक्त नदः ॥ इकि मार्ट्सम् ७५७ । ७५० विद्यायः॥ 🛊 ॥ मा ह शूक्ष्यः म ভার্য্যা। তস্যাঃ শ্বরণে বিষ নাশো। ভবতি। যথা। সকল পদ্দগ পত্ৰয়ক नर्गाराय वत भूः। यखनुमात्र भ সবেত নাম গৃহণ করিষ্ঠি ন তম্য সর্পবিষণ ভবিষ্যতীতি । অত্র চ। নর্মনাথৈ নমঃ প্রাত নর্ম-मारेय नाम। निर्मि। नामास्त नर्मास

তুভ্য ৰাহি মা বিষসপ্ত:॥ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৪ অংশ ৩ অধ্যায: ॥ নল দ বন্ধে ৷ ইতি নল শহস্য

बूऽः ननः जी निप्। इंक्रि जाजनिर्धणः॥ -स्वः शृ ज्विविधाः। जद्भर्यायः। ধ্মনঃ ই পোটিগুলঃ ৩। ইত্যুদরঃ ॥ नालः ८ ने ६० ६ कि बकुः ७ की ठकः १ मीर्घवः मः ৮ म्नामश्रः ৯ विভी-यतः > हिन्। छः १२ मृनुभवः १२ ূৰ্নশিপতঃ ১০ মৃদুছ্দঃ ১৪ নালবংশঃ ১৫। অস্য গুণাঃ। শীতত্ব: । ক্ষা-যত্বণা মধুরত্বণা কচি কারিত্বশা রক্ত ्शिक शुन्ममनष्। हीशनष्। दीर्ग्र क्किरद्वा । ইতি রাজনির্ঘটঃ।। #।। मृर्ग्य व॰ भीय निष्य ता ज्ञान्य १ । यथा াঅতিথিন্ত সশাক্তাজ্ঞে নিষধন্তস্য **ठाञ्च**ः। नवस्र देनवश् स्यामञ खमारकाय्छ।। #।। वीतरमनं ताङ भूधः। यथा। नत्नो हात्वर विश्वताः বংশে কশ্যুপ সম্ভবে ৷ ৰীৰ্নেন সূত তদ্বদৈষধশ্চ নরাধিপঃ॥ইতি गारमा ३२ व्यथायः ॥ #॥ हन्तु-बन्नीय नियथ ताङ्जू भः। यथा।

भग। किशानि कलिभुहि गुरा। ইতি দম্যন্তী পুতি নল বাঁক্য । ইতি रेनयथः॥ 🕸 ॥ वानत विष्णयः। अजू थाउधुक गूनि भाभाए वानत क्र ৰিশ্বকর্মণ ঔরসেন : ঘৃতাচ্যশ্ররসো গর্ভে গোদাবরী তীরে জাতঃ। ইতি বামনে ৬২ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ পিতৃ-(एवः। इंভि (मिरनी ॥ 🕸 ॥ रेएज)-বিশেষঃ। যথা। দৈত্য দানব সং-যোগাজ্জাতান্তী বুপরাক্রমাঃ। সৈ-হিকাষা ইতি খ্যাতা জ্রযোদশ ম-श्वनाः॥ व्यनः भन्यक वनवान् নলশ্চৈৰ তথা নলঃ৷বাতাপি ৰ্মমূচি শৈচৰ ইশ্বলঃ থস্ম স্তথা ৷৷ অঞ্জকো नद्रक टेन्टर कालनाज उटेशर है। नवमान खथा हिव मूजकन्न क वीर्याः ৰান্॥ইতি বুলপুৱাণে ২ অধ্যয়ঃ॥ নলক স্ক্রী শাপাছি।ইতিহেমচন্দুঃ।। नविनी की कहा। है जिल्स हम्मुः।! ननकीवः शृं जानू । इंडिं एमहन्दुः॥ नलक्वतः পু: অবেরপু এ:। ইত্যনর: ॥ স ভারা মণিগ্রীবেণ সহ বাফণী॰ পীত্বা কৈলাসোপবনে গঙ্গায়া জী करिनः की फिতवान् अपमृठ दाहो সুধাংশু বংশস্য করীরমেদ্মাং নি- 🛴 তৌ দৃষ্ট্ব। নারদঃ শশাপ তছাপেন

यमनाब्द्र्री ज्वा बिव्नावत আসতু দামোদরেণ শাপ নিমু-ক্রৌ ত॰ নুদ্ধা স্বগৃহ॰ জগ্মভঃ। ইতি শ্ৰিভাগবতীয় দশমস্কন্ধঃ !! ननर॰ क्री भूत्रदमः॥ उँभीद्रः॥ मा॰मी । ইতি মেদিনী।। নল দাতরি ত্রি।। পুযোগঃ ম ननमा जी करामान्त्री। इंडि एम-

ठन्पुः ॥

নলপডিকা জ্রী তলাচী। দর্মা ইতি ভাষা। ইতি হারাবলী।।

नवनीनः शृ हिनिहिममए मा ইত্যমূরঃ 11

निका जी नाजी।। मूगिक पुराउपः। নলী ইতি খ্যাতঃ। উত্তরাপথে পুদিছা পুবালাকৃতি: পঁঠারী ইতি क्विट 'भूजिषा । उट्भर्गायः বিষ্কমলতিকা ২ কপোতবাণা ৩ निवानी ८ निर्यायता ६ मूर्यिता ७ जा-थानी १ रुजा ५ ब्रक्क ना २ नर्खकी ১০ নটা ১১। অস্যা গুণাঃ। তিক্তত্ত্বণ । কটুত্ব-। তীক্ষত্ব-। মধুরত্ব-। কৃমি वाजानदार्ज्यः भूव नामिष्। य লশোধনত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ নলিতঃ পু॰ শাকবিশেষঃ। নালিত। ইতি ভাষা। অস্য গুণাঃ। মধুরত্ব• । পিত্তনাশিত্ব। শুক্রবর্জনত্ত্ব। ইতি দুব্যগুণঃ ॥

নলিন ক্লী পূদ্ম । ইত্যমরঃ।। নী-निका॥ इनः। क्रेंडि स्महन्द्रः॥ ननम्बुः পু॰ নিষ্বৃক্ষঃ।ইতি ভূরি । নলিনঃ পু॰ সারস্পকী (ইত্যমরঃ॥ কৃষ্ণপাকফল:। পুশীআমল।ইতি ভাষা। ইতি শবচন্দুকা॥

निनी जी शप्ययुक्तपम् ।। शप সমূহঃ॥ পদ্মলতা। ইতি ভিদ্নকার প্রমাত। ইতি রায্নুষ্টাদ্যঃ।। उৎ পर्यप्रायः। विभिनी २ शिचानी ७ ইত্যাদি। ইত্যারঃ।। বেরামনি**রুগা** ॥ কন্দলাকরঃ। ইতি মেদিনী॥ न-লিকা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ নারি-কেলসুরা। ইতি ত্রিকাণ্ড**শেবঃ**।। निवनीकृष्ट॰ क्री मृगावा। ইতি द्राक-

निर्घकः॥ दुक्ति शृ॰॥ নলিনেশযঃ পু- বিষ্ণু:। ইতি ত্রিকা-ওশেষঃ ॥

निकी जी समः भिना। ইতি বিশ্বঃ ॥ নলিকা। ইতি ভাবপুকাশ: ১৷ তৎ পর্য্যায়ঃ ৷ শুষিরা ২ বিজনলতা ৩ क्रिशाजिह्निः ८ नि ६। इन्डामद्रः॥ 🗕 নলোভনঃ পু• দেবনলঃ। ইতিরাজ- ॥ निर्घण्टः ॥

**নদঃ পু• কিষু**চতুঃশত•।চতুঃশত হস্ত পরি(মৃতদেশঃ।ইত্যমরভরতৌ॥ नयुरवारी जी काकाश्री।इंडि नय ্চন্দ্রকা।। নণ্ পরিমিত পথশা-মিনি ত্রি॥

नवः পू॰ खंक्षा इंजि मिनि॥ ब्रक्त-পুনর্ব।।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। নৃতনে ত্রি। ইত্যমরঃ॥

র্ব তি সংখ্যাবিশেষঃ ৷ ৯ নন ইতি " ভাষা ৷ বহুবচনাম্ভো হ্য ৷ ইতি वताकत्रभः ॥ नव वाहका यथा । अञ्च-·দ্বার• ১ ভূথও•২ কৃত্তরাবণ**নস্তকঃ** ৩ সুধান্বও ৪ ব্যাহ্যীন্তনঃ ৫ সে-বধিঃ ৬ অংশ । রসঃ ৮ গুহঃ ১। ইতি কবিকল্পলতা ॥

নবকারিকা স্ত্রী নবোটা। ইতি শব্ মালা ।। নৃতনঃ **স**ংক্ষিপ্তো বিবরণ শ্লোকঃ।। নবীন কত্রী চ।।

নবকালিকা জ্রী নবীন:।ইভি হারা-वनी ॥

नवगुराः भू भूर्गानया नव। यथा। নৰগুহ মথ কৃত্বা ততঃ কর্ম সমার

ন্য জায়তে বৃচিৎ।। ইতি ভিথিতত্ত্ব ॥ # ॥ তেষা সংস্থান । यथा। ज्ञ র্যোজন লক্ষে তু সৌর মৈত্রেয় ম-अंवः। वंत्क रिवाकत्रम्याभि मख-ল শশিনঃ স্থিত ৷৷পূর্ণে শতসহ-**ल्यु जू याक्रनाना** निमाक्दा । নক্ষত্র নওল কৃৎসু মুপরিষ্টাৎ পুকাশতে ৷৷ দ্বিলক্ষে চোভরে বু-ন্ধন বুধো নক্ষত্র মণ্ডলাৎ। তাবৎ পুমাণ ভাগে তু বুখস্যাপু<u>গ</u>শনা স্থিতঃ॥ অঙ্গারকোপি শুক্রস্য তৎ পুমাণে ব্যবস্থিত:। লক্ষদ্বযে তু ভৌমস্য ছিতো দেব পুরোহিতঃ।। সৌরি বৃহস্পতে শ্চোজ্ব দ্বিলক্ষে সমবছিতঃ। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ২ ञ'म १ अथ्यायः ॥ 🗱 ॥ उदाः त्रथारि यथा। याकनानाः जरुमानि ভाষরস্যরথো নব । ইশাদও তথে वान् दिख्ला मूनिमङ्ग ॥ नार्ष कािं खर्ग मेख नियुजाम भिकािन বৈ।যোজনানান্ত তদ্যাক ক্ষত্ৰ যুত্ৰ পুতিষ্ঠিত ৷৷ চত্বারিংশং সহস্থানি षिञीरयास्का व्यवस्थिः । अकान्या-নি তু সার্দানি স্যাদনস্য মহামতে ভেटा यनाथा कनमः भू मा॰ नका ॥ यमश्रमान मुखायाः भुमानः उम्मू-

गार्चायाः। द्रांचाक छन्यूगार्चन ध्र. वाधाता प्रथमः दे । विठीयक जू ত্তক সংস্থিত भानসাচলে॥ হ্যा-শ্চ সপ্ত ছন্দা•সি তেবা• নামানি মে শৃণু। গায়কী চ বৃহত্যুকি দ্বুগতী ত্রি-ষ্টুবেবচ।। অনুষ্টুপ পণক্তি রিত্যক্তা भून्ता मि इत्रया त्रतः॥ म त्रव्याधि-ষ্ঠিতো দেবৈ রাদিতৈঃ শ্ববিভি তথা। গন্ধবৈ রপ্নরোভিশ্চ গ্রামণী সর্প রা-करिनः॥ स्वरिष्ठ भूनगः मूर्यऽ गक्ति व গী যতে পুর:। নৃত্যন্ত্যশ্লরসো যান্তি স্ঠ্যস্যানু নিশাচরাঃ।। বহুভি পদগা यकः ক্রিয়তেভীযু স•গুহঃ। বাল-शिला खरेंपरेवन शतिवार्या जमान-তে ৷৷ সো ংয় সপ্তগণঃ সূর্য্য মণ্ডলে মুনি সত্তম। হিমোফ বারি বৃপ্তীনা॰ (হতুরু সমুপাগতঃ ॥ 🛊 ॥ রথ জ্রি চক্ৰঃ সোমস্য স্থলভোত্তস্যৰাজিনঃ া বাম দক্ষিণতো যুক্তা দশ তেন চর-ত্যসৌ ॥ 🗱 ॥ বায়ুশ্নি দুব্য সমূতো ॥ রথ কন্দুসুতস্যচ। পিশকৈ স্করগৈ যু কঃ সোষ্টাভি বাযুবেগিভিঃ ॥#॥ गवकथः मानुकर्या यूका ज् मंहरि र्হ থৈঃ। ধোপাসঙ্গ পতাকন্ত শুক্ত न्ताभि त्राथा महान्॥ 🛊 ॥ अड्डानुः 🎚

কাঞ্দঃ জ্ঞীমান্ ভৌমস্যাপি রুখো মহান্। পদ্মরাগাকণৈ র**ম্বে: স**•. युक्ति विश्वसार्थिः ॥ 🕸 ॥ व्यक्षानिः भा**खें**त्र यूं कि वाकि जिः काक्षत রথে। তমিং ভিষ্ঠতি বর্ষ বৈ রাশৌ तारमी वृहत्मिञ्डिः,॥ 🛊 ॥ व्याकाम সম্ভবৈ রশ্বৈঃ শর্শলৈঃ স্যদ্দন• বুত•। मनाकश्र भरेन यां जिन्मनाभी भ নৈশ্চরঃ।। 🕸 ॥ বর্তানো স্তরগা হৃষ্টৌ ভৃষাতা ধৃসর রথ । স্কুশুকান্ত মৈত্রেয় বহন্ত্য বিরতি সদ্মিক্তিয়া তথা কেতু রথস্যাধা অঞ্চৌতে বাং র•ছসঃ। পলালধূন বণাভা লাকা-রস নিভাকণাং ॥ # ॥ এতে স্যা गुरागा रेव जवाधताजा तथा नव । সর্বে পুবে মহাভাগ পুবন্ধা বাযু র শ্মিভিঃ ॥ ইতি বিষ্ণুপুরাণে ২ অ•-(म > । > । > व्यथ्रायः ॥ # ॥ পু্হাণা নশুভ পুতীকারঃ। রাজনা-र्खए । দোষো नम्तान्गुश्वा मिन শির কিরণে তামু মিনেন্টে শঙ্ক পৃথীপুত্রে পুবাল শশধর তনযে **भाञ्यस्यः** जूरङ्ग । দেবাচার্য্যে চ মুক্তা• মণি মসুর গুরৌ সীসক• সূর্য্য-जूनो ब्राह्मे लोर॰ जुनि के कम वड

্ৰবগু

তন্যে রাজগুউ বিভতুঃ ৷৷ শাত **জন্তু** সুবর্ণ। রাজগন্ত কপ্রাণীতি थ्राउ॰।। यशिष्ठ। वृषिशुकात्मः। जिम्मी कीविका मृन (गाजिसा व्यमातक । वृक्षयि निन्द्रभूही ্ৰাট্যাল চন্দন সিত। অশ্বগন্ধা क्याः व्यापन्यापारवाशणाखर ॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ॥ 🟶 ॥ স্বজন রাশ্যবধিনবগুহ শুদ্দি র্যথা।কেন্তৃপ প্লব ভৌমুমনদগতযঃষধ্য দ্রি সংস্থাঃ শূভা-কন্দাকাবপি তেচ তৌচ দশ মে। চন্দুঃ পুনঃ সপ্তমঃ। জীবঃ সপ্ত ন-ৰ দ্বি পঞ্চন গতো যুগ্মেষু সোনাত্মজঃ শুক্রঃ ষড্ দশ সপ্ত বর্জ মিতরে স র্বেপ্যুপান্তে শুভাঃ। ইতি দীপিকা ॥ द्रविहरू । ७ । ७० । ५५ । द्राम्पयः ॥ ॥ स्मामः १। ५। १। २०। २२ मुङ्ग शक्त २। ए। ३। जम्मक विद्धित जम्हनुः णुजः ॥ मक्जः **७ । ७ । ७० । ४०** ॥ बुधः र १८१७। ५। ५०। ५४। ५८॥ ब्रुगिजिः र १ ६ १ १ १ ३ १.५० ॥ मुकः भाराकाशासामाकाका रेराम् **म**निः ७। ७। ७०। ७५॥ दाङ्ः अन्तात्रहा त्रता (कर्जुः का भात्रहा ३) ब्रान्थः ॥ इ ॥ भुरागाः वानि

खान निर्वयः। यथा। इदि भी**न** नि नानाथः जभार रिवमस्यै । शक्वयः ভূমিপুত্রো বুখো ২ষ্টাদশ বাসরান্।। বর্ষমেক সুরাচার্য্য শচাষ্টাবিংশ দিন **ভূতঃ। শনিঃ नार्क वयुग्वर्यण वर्जानू**ः नार्कवद्भवः ॥ व्रविः > भाभः ॥ (मामः २।° मिन'॥ ऋतः ३৫ मिन' ॥ वूथः ४५ मिन ॥ वृष्टम्माजिः ५ वट-नद्रः ॥ भूकः २५ हिन ॥ भनिः २॥º वद्भवः ॥ ब्राष्ट्रः ५५ वद्भवः ॥ ্কেতু: ১॥" বৎসর:। ইতি ক্যোতিষ" ।। # ।। अब हन्तुमि वर्श्वशान मखान्य कानः। यथा। व्यथा-मयाख भगत्याः शतिक्वान शुकी-র্ব্যতে। দিবাকর করাকান্ত মৃত্তী না-মন্নতেজসাং॥ সূর্য্যাদপ্যধিকাঃ প "गिरुष बीवस्कार्ककाः। जनाः शुः গুদ্ধ: যান্তি শুক্তজ্ঞৌ বক্তিণোঁ তথা ।। অল্পা বিবস্থতঃ প্রাচ্যা মন্ত চন্দুক্ত ভার্গবাঃ। বুজন্ত্যভাষিকাঃ পশ্চা-मूनयः भीषु यायिनः ॥ अ ॥ এयाः कालाना यथा। এकारना गरतकार मा তিথি সম্ব্যাক্ত্রস্য চ। অস্ত্রান্সা ज्मिन्यमा मन मक्षाधिका खउः ॥ ्भागामस्यायाश्चाकि क्वयः शुद्धाः

इखगा। भागल उत्रवः शकानल्याः দশভি র্থাঃ।। এবং বুধো দাদশ-ভিশ্চভূর্দশভি রংশকৈ: বিক্র শীসু गञी हार्काट करता गुडम्यापापयो ॥ এষ্যাধিকৈঃ কালভাগৈ দ্ भाग न्रोन রদর্শনাঃ। ভবন্তিলোকে খচরাভানু-তা গুন্ত মূর্ভ্यः ॥ ইতি সূর্য্যসিদ্ধান্তঃ ॥ 🕸॥ (ज्या म्एः। एय हिन ऋ॰थऽ। क्कान । यथा। जुङाकि हन्द्रा ३२२ ক্রিদশাশ্চ ৩৩ দস্তা ৩২ বেদাচলা ৪৭ রাম কৃতে৪০জমেণ:ভৌনাদিকস্যা-স্ত দিনানি বক্তে বুধস্য ভূপা ১৬ কে ভाগবস্যा # II এवा॰ এক্সাদ্ভন यादूरयाचा অভুগ্রযান্ত জ্ঞান॰ यथा। তথান্ত বৃকাৎ সজতোন্ত বকে ভাত্য २२ २ बिष्ठ विरेष २० भिगि २० निक्त २२ মাসৈঃ। মহাস্তৰকান্ত বিধী খিতস্য ক্রমেণ ব্রুক্ত মবেন্দু মাসৈঃ ৯০০।। গুরো ক্দয্স্য পুরক্ পশ্চাৎ শুক্রস্য তু উদয বক্র মহাস্তানা পুাক্ পশ্চাৎ वाला वृष्क पिन उद्यान यथा। वृष्कः भूत्रखामूमयमऽभग्हा< वालम्हभ कः ৯৫ বচসা পতিঃ স্যাৎ। এব 'সিডঃ পঞ্চ দিনানি বৃদ্ধো বালো ভবেগ্রীণি मिनानि वत्क॥ वृष्यस्य शकः १६ जु

श्राका महारख वानः भून खब मना-হ মেব ম ইতি সিদ্ধান্তম্ঞ্ররী ।। # ।। অথ নবগুহ ভোত্র•। জবা-জসুন সকাশ কাশ্যপেষ্ সহাদু্য-তি । খ্বাস্তারি সর্বপাপর্ণ পুণতো-स्मि पिराकद्व॰ > १। पिरा भद्व जूरा-রাভ ক্ষীরাদর্শব সম্ভব । ননামি শশিন• ভক্ত্যা শদ্ধ্যে মুৰ্স্বট ভূষণ• ২ ৷৷ ধরণী গর্ম্ভ র্ক-মূত্রু বিদ্যুৎপূঞ্জ यमशुज्र । समात्र मुक्ति इसक लाहिजाकः नगामाइः ० ॥ शियुक् কলিকা**শ**্যান• ৰূপেণাপ্ৰতিম• বুৰ ' । मोन्रः नर्ब ध्यात्मञः नगानि শশিনঃ সুত ঃ ৷৷ দেবতানা মৃষী-ণাঞ্চ গুৰু কনক সন্দিভ । নাম্যভূত ত্রিলোকে**শ॰ পু**ণমামি বৃহস্পতি• ৫॥ श्रि बन्स मृगाना छ रेन्छ तना॰ পরমণ ওক।। সর্বশান্ত পুবক্তারণ जार्गव भुगमामाइ ७॥ नीवाक्षन চবপুথ্য রবিসূনু মহাগুহ ৷ ছাযা-যা গ্রহ্মস্তুত বন্দে ভক্ত্যা শনৈশ্চ-तः १॥ वर्षकायः भशासात्रः हन्ताः দিত্য বিমর্দক । সি ছেকায়া: সুত त्रोमु॰ ত॰ রাহু॰ পুণ**মাম্যহ**॰ ৮ ॥ পলাল ধুম সক্ষাশ তারা গুহ বিম- मंकः। त्रोपः स्पाद्यकः कृतः छ

त्क्ष्रः भूगमामग्रहः २ ॥ वग्राप्तत्वाक्ष्मिषः खाकः यः शर्ये शुर्यः
छः भूष्टिः । दिवा वा यपि वा त्राक्षो
भाष्ठि सम्भ न मः भयः ॥ केचर्यः
मञ्ज्ञकाशि आत्रार्गः शृष्टि वर्षानः
। नत्र नात्री श्रिग्ज्कः निख्ः ज्ञानः
शक्षायः ॥ क्ष्मिकः। क्ष्मिनः
शक्षायः ॥ क्ष्मिनः
शक्षायः ॥

নবচাত্রঃ পু॰ পুণম মধ্যবনে পুর্ত্তঃ।
নবীনবিদ্যাথী । তৎপর্য্যায়ঃ ।
কিশাকারঃ২। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।
নবতঃ পু॰ জথঃ। করিকয়লঃ। ইতি
হেমচন্দুঃ।।

নবতিঃ ত্রি সংখ্যাবিশেষঃ। ৯০ নৰৈ ইতি ভাষা। ইতি শব্দরত্বাবলী।।. নবতিকা জী তুলিকা। ইতি হারা-বলী।।

নবতিশঃ ব্য বহুনবতি। নবতি নব-তীতি বীপ্দাযা চশস্পুত্যয় ।। । নবতী জ্ঞী নবতিঃ। ইতি শদ্মপ্দা-ৰদী।।

নবদপ্ত॰ প্লী রাজ্ঞাংছত্র বিশেকং।
যথা। মনোহর॰ ত্রি ফ্নক দপ্তক
নবদপ্তক॰। ছত্রঞ্চ ত্রিবিধণ জ্ঞেয়ণ
ত্রিবিধানা•মহীভূজা•॥ ইতি যুক্তি
বল্পতকঃ॥ অস্য বিবরণ• ছত্রশদ্দে
দুষ্টব্য•॥

নবদল লী পদ্মস্যকেশরশ্মীপছদল ৷৷ পদ্মদীনা জটিকাকার নব
পত্র ৷ তৎপর্য্যায় ৷ সম্বর্দ্তিকা ২ ৷
ইত্যমর ৷৷ সম্বর্দ্তি ৩ সম্বর্জী ৪ ৷
ইতি ভরতঃ ৷৷ সামান্য নূতন পত্র 
৷ ইতি হত্বচন্দু ৷৷ দলমাত্র ৷ ইতি
নধু ৷৷

नवभीधिजिः शृ॰ म**क्लगुरुः। इंडि** करोधितः॥

नवम्र्गा जी नवशिक्त । यथा। शिक् क नवम्र्ग दे सहारित मराना द्राम। शृजा मिस्टा मर्ग्य द्राम मार्ग कि-प्राप्त ॥ इं ि वृहम निर्देश में श्वाप ॥ ॥ स्मादिका विम् र्विः २ कन्ता । व्या । स्मादिका । विम् र्विः २ कन्ता । व्या । स्मादिका । यथा। भेषा कि नवना मिका कन्ता । यथा। भेषा कि नवम मिका कन्ता । यथा। भेषा कि नवम मिका क्निता । यथा। कन्त्र भावाइयाम् १ ।। इंडि निर्ण-यिनकुः ॥

नवरमाना जी म्जन(भूद्धा। अम्रा विवत्न म्ड प्रमान मस्म मुद्देव हुन ।। जमादा स्मान स्मान यथा। উर्णुन्मू म्नाहि मिवाग्नि वर्ज मस्यम् जाता जिथि नग्न स्माना विद्धि क्रमा भूज स्मान वर्ज स्माना स्मिनादा हुन माम्र मिद्धे । ইजि ममयभू मीभः।। नवशा वर्ग नवभुका जः। यथा। जा-जादा विनस्म विम्रा भुजिष्ठा जीर्थ मर्मन । निष्ठा वृद्धि स्राभा मान नव-शा सन नक्षण ।।

नवना जीठक॰ क्री द्राख्डा नव नक्षक
युक्त वक द्राथा क्रया ज्ञाक ठकः। यथा
। ज्ञामानुः कर्म छट्डा शि मन्माः
नाःचा छिकः (का छन्छः। नमूम्य
मह्रोमन्छः विनान नःखः क्रया
विन्नः।। नाष्ठाः नूषः भक्षविन्नः
मानम (मवः नद्रः यष्ट्कः मृतः।
नव नक्ष्या मृत्र छिः म्रजा छि (मन्नाः
छिर्वकर्षकः।। ইতি (ज्ञा छिख्दः।।
नवनी खी नवंनी छः। यथा। व्यद्या
रिवक् वीनानाः नवनीनाः शद्रः मृम
। स्युकानाः नवनीनाः स्यिकाः

नाक गङ्गजः॥ इंजि तुक्तरेवर्जभूतात শ্ৰিকৃষ্ণ জন্মখণ্ডে ৪৫ অইনেয: ।। नवनी उ॰ क्ली गव। विष्णवः। भार्यन्हें उ ननी ইতিচ ভाষा। उंदश्रायः। নবোৰ্ত হ্। ইত্যমরঃ। সিরজ ০ मञ्ज 8 रियम्तीन १। इंजि.. রত্নমালা।। দধিজ ৬ সার १ रेहर-क्वीनक । जन्य मामान्य खगाः । শীতত্ত্ব । বর্ণ বর্লাবছত্ত্ব । সুমধু त्रवः। व्यऽवः। **मःशुःहरूषुः।** कक ৰুচি কারকত্ব•। বাত সর্বাস্থল*ুল*ু काम मुम नामिष्। मूथकव्रष्। कांखि शृष्टि शुन्दः। हक्क्यादः। সর্বাবাপহত্ব।। \*।। নবোদ্তব গব্য নাহিষ নব্নীত গুণাঃ। বাল-वृकानाः शुक्तखद्यः। वनकात्रिद्यः। বাতবৰ্জনত্বঞ্চাঞ্চা মাহিব নবনীত গুণাঃ। ক্ষাযত্ত্বণ মধুরত্ত্বণ শীতত্ত্বণ । क्षाप्तः। वलापः। गु।हिषः। शि-खन्नद्वश जूनरम्ब्दशाक्ष ॥ इत्रागन्द-নীত গুণাঃ৷ ক্ষযকাশ নেত্রাম্য কফ नामिषु । वन्रषु । मीशनषु स्।। আবিক নবনীত গুণাঃ। হিমন্ত্রণ। লঘুর ৷ যোনিশূলে কফে বাতে গুদ **म्**रल हिज्द्का #11 अंजक नवनीज

खगाः। ब्रिष्टेगमयः। भीजवादः । त्मधा नामिष्। खक्षः। शुक्रिक्रोन्। कात्रिवः। यन्तात्रि तीलनद्यः॥ 🕸 ॥ रुखिनी नवनीज रुगाः। कषायप्•। শীতলত্ব• ৷ লঘুত্ব• ৷ ঠিক্তত্ব• ৷ বিষ্ট-ম্ভিত্ব•। জম্ভ পিত্ত কফ কৃমি নাশি-पुष्णा 🗱 ॥ अशी नवनी उर्जाः । क्यायदः । कक वाज नानिदः । **टक्**यात् । करूद । उष्य । देव-षाजास्हातकद्वश्री। 🏶 ॥ गर्मजी ন্বনীত গুণাঃ। কৰাযত্ত্ব । কফ বাত नामिष्। वन्रज्भ मीशनष्। शाकः वयुव । मूब्राय नानिव्या #॥ পৃষ্টু নবনীত গুণাঃ। পাকে শীত-লত্ব• । বুণ ক্রিনি কফাসু বাত নালি-द्या 🗱 ॥ नाती नवनीज रूपाः । ब्हाजुः। शाक वयुजुः। हक्क्वाजुः। भीशनवः। সর্বরোগ বিষ নাশিবৃঞ্ ।। 🗱 ।। অথ সাধারণ নবনীত ভঁণাঃ। শীত কচ্য নবোদ্ত সুমধুর ব্ধ্ ঞ্চ ৰাতাপহ• কাসমু• ক্ৰিমি নাশন• কফহর পশ্রাহি শ্লাপহ। বল্য **পুষ্টि । র॰** তৃষার্ভি শমন• সভাপ বি-ছেদন চকুষ্য শুমহারি তর্পণ কর मध्राख्य शिखिष्ट ॥ # ॥ এका-

হাখ্যুবিত প্রাক্ত মুক্তরোক্তর গন্ধ-म॰। অक्टर्रः मर्दाद्वागांष्टरः मधिकः তদ্ধিত মৃত ।। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। # ।। অপিচ। গব্য নবনীত গুণাঃ। নবনীত হিত গব্য ভ্ষ্য বর্ণ মলা-থি কৃৎ। সংগ্ৰাহি বাতপিতাস্ক্ **ক্ষ্যার্শেদিত কাস হু**ে।! তদ্ধিত° বালকে কৃষ্ণে বিশেষাদমূত শোশাঃ ।। ≉।। মাহিষনবনীত গুণাঃ। নবনীত• भिष्याञ्च वाज भ्रम्मकतः खक्ः। हा-হ পিত্ত শুনহর মেদঃ শুক্র বিব-र्षन ।। #।। অথ প্যসো নবনী তস্য ঙণাঃ। দুম্বোত্থ॰ নবনীতস্ত চফুষ্যু৽ व्रक शिख नूट । व्या वना मिछ স্থিক মধুর পুনহি শীতল ।। 🕸 ।। **অথ সদ্যঃ সমুদ্ধ্**ত নবনীত গুণাঃ । নবনীতঞ্চ সদ্যক্ষণ স্বাদু গুৰ্ছি হিম লয় । মেধ্য কিঞ্চিৎ ক্ষামান্ন মी-ষত্তকা শ সংক্রমাৎ।। 🕸।। অথ **ठित्रस्य नवनीञ खगाः। म**क्काद कर्छू-कान्नज्ञाहरुषाः कष्ठकात्रवः। स्निग्ननः **. धक् स्मरम् अन्यनीज् ।** हिन्न छन्।।। ইতি ভাবপুকাশঃ 🔢 🐙 🔃 নব্নীত• नव व्या शाहि वर्ग वला मि क्टा , ठक्क्षा वृष्ट्ष विश्व गुर्गा वि

কার নুহ il ক্ষীরোশ্বিত হিমণ গুাহি রক্তপিতাকি রোগ নুহ ll ইতিরাজব**ল্লভ:** ll

নবনীতক শ্লী ঘৃত । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥

नवनी ज्राचित्रः की मानार्थ क्जनवनी ज ম্য ধেনু বিশেষঃ। যথা। নব্দীত भयी॰ (श्रनू॰ मृतू ताकन् भूयञ्ज ः। ষা• শুত্ৰা সৰ্ব পাপেভ্যো মুচ্যুতে নাত্র সংশ্यः॥ গোন্যেনানুলিপ্তা-বা॰ ভূমৌ গোচর্ম মাত্রতঃ। কৃষ্ চর্ম মৃগসৈত্র তস্যোপরি চখার-বেৎ ॥ সম্ভন্ত নবনীতস্য পুস্থ " भावमा शाहरायः । वर्षः ठजूर्थ ভাগস্য তস্যা উত্তরতো ন্যসেৎ ॥ কৃত্বা বিধানেন চ রাজসিংহ সুবর্ণ मुकी मुमूथी ह कार्य। 1 नित्व ह তস্যা মণি মৌক্তিকৈন্ত কৃত্বা তথা-ন্যছ গুডেন জিন্তাণ থেষ্ঠোচ পুষ্কেশ্চ करेनक म्साः शुकन्ता मानाक मि তৈশ্চ স্ত্রিঃ॥ নবনীত স্তনী॰ রাজ-मिक् भाराः भुकन्नरयः। जागुभ्धीः কা স্বাদাহা দর্ভরোম কৃত হ্বী H **বর্ণশৃক্তী** রৌপ্যথুরা পঞ্রত্র সমরিতা । চতুর্ভি ত্তিলপার্বৈশ্ব

সশ্যুতা সৰ্বতো দিশঃ৷৷ আছাদ্য বন্ত যুগ্মেন গন্ধ পুষ্মৈ রল কৃত । क्षिक् मीभा॰क शुक्रान। द्वाक्रगाय नित्वत्रवर्थः ।। त्वन त्वनाकः विमूरक আহিতাট্নি জিতাত্মবান্ । মন্ত্রা স্তএবজিগুৰ্গাঃ সৰ্ব খেনুষু যে মৃতাঃ ॥ भूता (एवा मूरेतः मरेर्तः मागतम्) তু মন্থনে ৷ উৎপন্ন দিব্য মম্ত নবনীত মিদ• শুভি•॥ আপ্যাযনঞ্চ ভূতানা• নবনীত নমোক্ত (ত ৷ এব-मूहार्ये जाः प्रताबुाक्यनाय कर्षिः ति ॥ (धनुषः पद्मा **সু**मूमाः সোপ-शाना॰ नरमः, इ॰ विशु वर्ष्यत्र ख्यः। হবিষ্যমেব সরসঞ্চোপভুক্ত্বাতিষ্ঠে फिन (धनून जीनि विशुः॥ यः शुन-শ্যভি তা॰ ধেনু॰ দীষ্মানা॰ নরে।-ত্তম। সৰ্বপাপ বিনিমুক্ত: শিব-সাযুজ্যতা पुरब्ध। পিতৃভি: পূর্ব-জৈ: সার্জ্বণ ভবিষ্যক্তিশ্চ মানব:। বিষ্ণুলোক বুজত্যাশু যাবদাহ্ত मः भूवः ॥ य हेरः मृत्या छक्ता मा-ব্যেদ্বাপি মানব:। সর্বপাপ বিশু স্ধাত্মা বিষ্ণুলোকে মহীয়তো৷ ইতি दबाह्यूबागः ॥ नवशार्वकः भू न्जनाध्राभकः। इंजि

निकाष्टकोमू ही ॥ बनेक निका खी नव ५ ॥ नव का उत्र-(काक्ना। ইতি मिहिनी॥

· নবনঃ ত্রি নবানা পূরণঃ । নয় ঞি ইত্যাদি ভাষা। ইতি ব্যাকরণ ॥ নবনজিকা জী নবনালিকা। ইতি শদরত্বাবলী॥

नवमानिका स्त्री नवमिक्तकालुम्नः।।

त्यानि इंजित्स्थ्यात इंजित छाया।

1 जद्धर्यायः। অভিযোদ। २ रेष्ट्रः

यो ० श्रीत्याच्छ्या ८ मधना ६ मु
स्माती ७ मृतिका ५ मुक्तिमिक्ति। ৮
मृशका ৯ निथिति। २० नवानी २२।

इंजि ताक्षितिथेते। २० नवानी २२।

इंजि ताक्षितिथेते। १० ज्यानी २२

त्वन्ना २०। इंजि नपतिनुका।।

गक्षिका २७। इंजि नपत्रम्वित।।

जम्रा ख्याः। अजित्नज्ञावनी।।

जम्रा ख्याः। अजित्नज्ञावनी।।

जम्रा ख्याः। अजित्नज्ञावनी।।

नुत्रस्या १३। इंजि नपत्रम्वावनी।।

जम्रा ख्याः। अजित्नज्ञावनी।।

नुत्रस्या १४। इंजि नपत्रम्वावनी।।

नुत्रस्या १४। इंजि नपत्रम्वावनी।।

नुत्रस्या १४। अजित्नज्ञावनी।।

नुत्रस्याः। अवित्नज्ञावनी।।

नुत्रस्याः। अवित्नज्ञावनी।।

नुत्रस्याः। अवित्नज्ञावनी।।

नुत्रस्याः। अवित्नज्ञावनी।।

नुत्रस्याः। अवित्नज्ञावनी।।

नुत्रस्याः। अवित्नज्ञावनी।।

নবমী দ্রী তিথিবিশেষঃ। সাক্রস্থস্য নবম কলা ক্রিয়া রূপা। শুক্রপক্ষে ৯ কৃষ্পক্ষে২৪ পঞ্জিকাকার সঙ্কেতে ন এতদক্ষ বোধিতা॥ অথ নবমী ব্যবস্থা। সাচাইমী যুতা প্রাহ্থা

युग्राए। ভविष्यु। भारित क्यूर्डि-र्यं भूगा विधिन। भूका विधिका । তৎ ফল• লভতে বীর নবম্যা• कार्खिक्म् । । 🛊 ॥ उथा ভবিবে ।। भाषा भामि जु या मूझा नवभी लाक প্জিতা। মহানদেতি সা প্রোক্তা अमानन्दकती नृगाः ॥ त्रानः मानः जः পোহোমোদেবার্চন মুপোষণ । সর্ব ত্রদক্ষব প্রোক্ত যদস্যা ক্রিয়তে नरेतः॥ 🕸॥ তथा कालिकाभूतानः। नवम् ११ नव वर्षा नि ताजन् निष्ठा नतन ভবেৎ। তস্য তুষ্টা ভবেদ্দৌরী সর্ব-কাম পুদা শুভা॥ অদ্যেত্যাদি নব-म्याज्ञियावात्रच्य नववर्षाणि यादर পুতি শুকু নবন্যা পিষ্টেতর ভোজন নিবৃত্তি বুত মিতি সক্ষল্পে বিশেষঃ। সৰ্বকান পুদ গৌরী তোবঃ ফল।। ইতি,তিথিতঞ্ব ।। জীরামনবমী ব্য-वस्। ज्याम मुद्धेवता ॥ # ॥ इयः দুর্গাডিথিঃ৷ তত্র তস্যাঃপূজা কর্ত্ব্যা यथा । वुष्कावाह । इस प्रनी वज्ञा-রোহা যা তু শৈল। হিমাচল। তত্র द्र न्यूद्राः अर्ब गङ्गा नन्तुस्र भावित्र ।। नवम् प्रक्ष महाभू कप्र इयः स्तवी ननः शिना । बद्रमा अर्व (वाकाना । ভবি-

**ব্যক্তিন সংশ্**यः ॥ নবন্যা শ্বশ্চ <del>সি</del>-श्रामी ভবিষ্যতি हि मानवः। नात्री বা তস্য সম্পন্ধ ভবিষ্যতি মনো-গত॰ ॥ ইতি বরাহপুরাণ ॥ 🟶 ॥ কার্ত্তিক শুন্ন নবন্যাণ জগদাত্রী পূজা भुमानानियथा। भुभूकत्य ब्ह्र गक्का वी॰ ॥ कार्खिक भूक्न शक्करक। मिरनामरय **চ मध्राट्स जायाट्स** नवस्य इति ॥ ইতি মাযাতন্ত্রে ১৭ পটলঃ।। ব্যস্ত **রাশি গতে** চন্দে নবম্যা কার্ত্তিক স্য চ । উবস্যর্জেদিতো ভানু দুੵ পামারাধ্য যত্নবান্।। পুঞারোগ্য ধন লেভে লোক সাক্ষিত্ব মেব চ তা তিথি প্রাপ্য মনুজঃ শনি ভৌ म दित यदि ॥ भूभृक्षयग्रहादूर्गाः ধর্ম কামার্থ মোক্ষদা ।। ইতি काज्रायनीजव्य १४ भटेनः ॥ का র্ত্তিকে শুক্ত পক্ষে তু ত্রেতাযাঃপুথ-भ इनि। बिमक्षाः भूकायाम्दरीः पूर्मा॰ मन्ने भुट्**ष**रंग ।। ইত্যুत्ततः कामार्थप्राज्यक ३२ भटेनः ॥ 🛊 ॥ অথ নবমী জাত ফল । বিরোধ কর্ত্তা সুজনৈ রগম্যঃ পরাপকারার্থ म्जि: मेनीनः । जातात्र शैनः क्-भनः करोत्रः भुग्ि काल नर्भी

যদি স্যাৎ॥ ইতি কৌষ্টাপুদীপঃ॥ नवरवोवना जी युवजी। उৎপर्यायः। भिक्रती २। **इंजि हा**तावली॥ जन्नी **्रस**्ट्बी ८। ইতি **শ**द्धावा॥ नवत्रकः जी कायक मूथा कलीनानाः পঞ্চদান চতু গু হণাত্মক হল বি-শেবঃ। ভদ্মথা। সনানে পুথম॰ দান দ্বিতীয়ঞ্চ কনিষ্ঠকে। ষড্ড্রা-তরি তৃতীযঞ্চ মধ্য শুেষ্টে চতুর্থক ॥ তেওজে গঞ্চন॰ দান**॰ হ**র্য্যাদেত-দ্বিধানতঃ। গুহণ জন্মনি সমে ক-নিষ্ঠেচ দ্বিতীয়ক ।। তৃতীয় জন্ম-নধ্যাংশে ভেওজেপি চতুর্থক । নবরঙ্গ মিতি প্রোক্তণ মুখ্যানাংহি মহাগুণ ৷৷ ইতি হলাচার্য্যকারিকা নবরত্ন: ক্লী নবপুকারমণবঃ।তদ্মথা। मुका मानिका विष्यी शासिमान् বজু বিৰুমৌ। পদ্মরাগণ মরকতণ मीनात्कि विषा क्रमाए।। इंडि তব্রসারঃ॥#॥নরগৃহদোষ শাস্ত্যৈ शार्याि नवद्रज्ञानि यथा । विनूर्याः शातरार मृर्या नीलक म्गलाकुन। আবনেয়েপি নাণিক্যু পদারাগ শশাক্ষতে ৷ গুরৌ মুক্তা ভূগৌ বরু मान्। बीचं विषू वृंशाः। बाखी

नवडा

हेनात्मकः वार्यः क्ला भन्नकः स्था।। इजिनीनिकः।। सः।। विक-मानिज्यनास मजाश्च नव मन्ध्रकः भाज्ञाः। यथा। थन्नस्ति क्ष्मणः कामनिन्दं मङ्गु विज्ञानज्ञे धर्मिक्ति कृतिकः मङ्गु विज्ञानज्ञे धर्मिक्ति कृतिकः मङ्ग्याः। ध्यार्जि वनाश्च भिश्ति कृतिकः मङ्ग्याः नद्भानि विवन्नकृति नव विक्रमम्यः।। इजि नवन्नकृत्।।

नवत्राज्भे क्षी जाश्विन मुद्र शुक्तिमा-**क्ति नवभी भर्याञ्च नव क्ति कर्खवा** मूर्गा बुज विश्नमः। जमताब्रसः। দেবীপুরাণে ডামরতত্ত্রে চ দেবী बहः। अभायुका न कर्खवा शुिकश **প্**জনে মম। सूर्क् मावा कर्डव्या षिठीयारि छ्गादिठा ॥ मार्काख्य पिरीशृद्धारयाः । शृ**ई**विका वृ या শুক্লা ভবেৎ প্ৰতিপদাশ্বিনী। নব-রাত্র বুত্র তস্যাণ ন কার্য্য শুভ মিছত। ।। অত্যোপবাশাদিক মুক্ত॰ स्मापुरे ভविष्र। अन्यः विकाता-সিন্যা॰ নবরাত্তোপনাসতঃ। এক. ভক্তেন নক্তেন তথৈবাযাচিতেন চ ।। প्रकीया बरन एर्स्यी स्टान स्टान भूष भूष । दारिजः ममूनिरेज र्हे है

वा बरेशः कथिय न् रिगः।। विलिह **म्रि** जिंक्युक (द्वे हि द्वेत) क मान-देवः ॥ समनद्राद्धः (मवीभूद्राराणि । कन्। नन्द्र ततो नक नूझा गात्रख्र निक्का ।। अभागी एथ विकामी नकाभी वाथ वायुमः। ज्यो भयीज **हामब**्र बमाती र्जाङ्गरासूमा ॥ বজালকার দানৈক্ত সভোষ্যাঃপুতি वामतः। बनिषः भुज्रहः पर्गापाः मन भाग भाग वटा। विकाल शृक ·যেদেবী জপ ভোত্র পরায়ণঃ। कात्म । भाजि ठाश्वयूष्क मुक्त नव-রাত্রে বিশেষতঃ। সম্পূজ্য নবদুর্গাঞ্চ नकः कर्गाए ममार्जः॥ नवज्ञाना ভিষণকর্ম নজবুত মিদ- মৃত। তিথি বৃদ্ধৌ তিথি হ্যাসে নবরাত্র মপার্থক ॥ अर्डेदाव्य न प्रायायः नवताव তিপি ক্ষয়ঃ।। 🗱।। তত্ৰ পূঁজাবিধিঃ। সাচ জয়ন্তীত্যাদি মক্ত্রেণ নবাক্ষরেণ वा कार्यता । यथा । जरून विभाग ঘটি সংস্থাপ্য তত্ত্ত দেবী মাবাস্থ বোডশোপচারেঃ পু্জযিতা মাক **७क विन अन्याशामि विन वा नि** विषय ॥ 🗱 ॥ उठः समादी भूका । তবুক হেমাদৌ স্বানে। একৈকা

भू जाराष्ट्र कन्त्रा (भक वृष्ट्या जरेश्व ह 1 ॥ দ্বিগুণ ত্ৰিগুণ বাপি পুত্যেক নৰ কন্ত বা ।। তথা। নবভি র্লজ্ঞতে ভূমি 📗 रिमयर्ग्र विख्यान जू। अक वृक्तां न ভেৎ ক্ষেম মেকৈকেন শ্রিয়ণ ব্যভেৎ ।। 🟶 ।। जथ अनाती निर्नयः। এक বৰ্ষ। তু যা কন্যা পূজার্থে তা॰ বিব<del>হর্</del>জ (यट । गक्र शृज्ञ कनारीना॰ श्रीिं ন্তস্যা ন বিদ্যুতে।। তেন দ্বিবর্ধ মার-ভ্য দশবর্ষ পর্য্যন্ত সমারিকা ১ विगृर्जिः २ कवाां । ७ त्राहिनी ६ কালী ৫ চণ্ডিকা ৬ শাস্ত্রবী ৭ দুর্গা ৮ সুভদুতি ৯ নব নামভিত্তাঃ পূজনীযাঃ । जामा भावाइन मखः। यथा। मखा ক্ষর মধীণ লক্ষ্মীণ মাতৃণাণ কপধারি-गी । नवपूर्गाजिका माका कन्त्र माना इराग्रह ॥ क्व म छाईन ल-र्या अनात्रीनाः भुयञ्चः। कक्रिक শৈচব বক্তিশ্চ গন্ধ পুস্থাক্ষতাদিভিঃ ।। নানা বিধৈ ভিক্ষ্য ভোৱৈ। ভোৱ যেৎ পায়সাদিভিঃ ৷৷ তাসা ত্যা-काइ गार । गुस्त्रु किंठ भीगांकी॰ রক্ত পূয বুণাঙ্কিতা। জাত্যন্ধা কে-করা কণী ছৰপা তনুরোমশা ॥ मञ्जरकापुरिंगी कन्तर स्नेजी

গর্ভ সমুক্তবা ।। তাসা জাতি বি-শেষে ফল বিশেষো যথা। ব্ৰাহ্মণীণ मईकार्य्य ह ज्ञयार्थ नृभ व॰मञ्ज॰। লাভার্থে বৈশ্য বংশোত্থা সুতার্থে শূদু বংশজাণ্য দাৰুণে চাস্ত্যজাতানাণ शृक्षरयिषिभिना नद्रः ॥ 🗱 ॥ व्यव (वन हा भारे छैकः। क्रुयाम्ला। পুসাদযে । তেষাঞ্চ বরণ কার্য্য বেদ পারাযণায় বৈ ৷৷ তথা ৷ একোত্ত-, ব্লাভি বৃদ্ধ্যা ভু নবদী• যাবদেব ছি। চপ্তী পাঠ জপেট্ৰেব জাপথেছা বি-ধানতঃ ॥ 🕸 ॥ অত্রাম্বতো ২শ পূজন মুক্ত। মদনরত্নে দেবীপ্রাণে । অশ্বযুক্ শুক্ল প্রতিপৎ স্বাতিযোগে मू (छ फित । প् ई म् बूहः भूवा नाम भुषम भिष भारतए॥ जमाए मा-খৈ ন রৈ শুত্র প্রেগ্রাসৌ শুদ্ধয়া সহ । शृक्षनीयाण्ठ जूत्रगा नवनीः यावापः विष् ॥ भान्धिः श्रेष्ठायनः कार्यप्रः তথা তেবা॰ দিনে দিনে। ধান্য॰ ভল্লাভক• কণ্ঠ• বচা সিদ্ধাৰ্থকা তথা ।। পঞ্চবর্ণেন সূত্রেণ গুছি ভেবান্ত বন্ধ-(य< ) वायरेवा वाक्रिः **मोरेतः मा**-कि र्भ रेजः म रिक्टिवः ॥ रिवयरम्रिव

खेशादाय रहामः कार्यता फिल फिल ॥ 🗱।। তত্র গজ পূজাপি। কন্নতরৌ **াজ্যেষ্ঠা যোগে পুরা তত্র গভ**িভাষ্টো महावनाः । शृथिवी मवहन् शूर्वः नत्मव दन काननाः॥ अमूरेपद्माव-**(ठो भगः भू**ञ्चमस्या २थ वामनः। मूनुजीका छाता नीन खमाजा छव भू द्वरय ।। 🛊।। यथ भु जिभना नियु वि শেষে৷ দুর্গভেক্তিতরঙ্গিণ্যা ভবি-(व)। किन मन्यात पुराणि भूम-म्sा८ शुजिनिम्ति।। नक्रेजन हि-তীয়ায়া কেশ সংখ্য হেতবে। **मर्भाक्ष ज्ञीयायाः जिन्म्द्रावकक** ত্তথা।। মধুপর্ক• চতুর্থ্যান্ত তিলক• निब मुखन । शक्षम् । मुक्ताशक **भक्रावह्र**तभानि ह ॥ यष्ट्रा॰ विवृ-**उद्गो (वाधः नायः नक्राम् का**त्रयः । मक्षम्याः शाज्जानीय गृहमाध्य शुर्वमय्य ॥ डेलायन मथोडम्रा माञा भक्ताञ् श्रवनः। नवमता मृत्रु-ठखायाः भूजाः अर्यप्रहिन ख्या । मःभूकातभाषनः वर्गाट मनागः भावत्त्राध्यादशा व्यतन विधिना यस দেবী প্রীণয়তে নর:। ক্ষমবৎ পাল (यापियो जः পूर्य धन की खिनिः॥ 🛊 ॥

वार्षिन भूत्र शक् गृत नक्ख नत-बजी ज्ञाभनः। यथाकः निर्गयाम्ख (म्दीनुद्रात्। मृत्वयु शाननः (म्द्राः श्रीयामांत्र भूजन ॥ উखतात्र व नि॰ प्रपाद भुवान विमर्द्धारा ॥ क्रुयामलि । मृत क्रक मुताथीम পূজনীযা• সরস্বতী•। পূজবেৎ পুত্য-रः प्तर यावरिषक्य मृक्ककः ॥ नाश्रा পবেষচ লিখেমাধীযীত কদাচন। পুস্তকে স্থাপিতে দেবি বিদ্যাকামো षिरकाखमः॥ #॥ खीनाक नवताख তাদ্লাদি চর্বণ ভবতি। তদুক্ত। वु उरहमार्भे गाक्ष । गन्नानकात তাধ্ল পুয়্মালানুলেপন । উপ-वारम न मूच्डि मञ्चावन मञ्जनः ॥ এতৎ সভত্ কোপবাস বিষয়।। 🕏।। (रुगापुरे) याधिन माघ रेवृत भुवरत-जिमाम हजूरेय क्षारेष्णामि भक দশরাত্র বুত মভিধায়। অথবা নব ताबक मेर्छ शक बिके दिवा। हेनूर कः। (प्रवीभूषात्। नवद्राक दुष्ठ १मक जित्राजिक ताजक । गुउक রতি বো ভক্ত স্তমে দাস্যামি বাঙ্কি ত ॥ 🗱 ॥ व्यथं नवत्राकः भावता नि र्गयः। नाठ मन्त्रमुरः कार्यत्र ॥ 🛊 ॥

দশন্যা বিশেষস্ত ভার্গবার্চনদীপি কাথা ভবিষ্যে। শনীযুক্ত জগন। থ॰ ভক্তানা মভবঙ্কর । অর্চযিত্বা भगी वृक्ष गईरयह उद्धः शूनः ॥ শমীমস্কঃ। স্কান্দে ছেনাদ্ৰৌ গো-পথবান্ধণে। অনক্লানা শন্নী भगनी॰ मूक्जमाह। मूःबन नामि नी॰ धन्ताः शुशामाइ॰ मनीः मुखा ॥ उथा ভবিবে। मभी मगराउ পাপ শমী শত্রু বিনাশিনী।। व्यक्त्ना धनूर्वाजी ज्ञामना शिय-বাদিনী। করিষ্যুমাণা যা যাত্রা যথা কাল সুখ মযা।। তত্ৰ নিৰ্বিদ্ন কৰী বৃণ্ভব জীৱানপ্ছিতে।। #॥ व्यथ वन नीत्राजन । कन्नतरङ्ग । **७** अ**वः। চ**ञ्जूकः वनः मश्रः निव्रनिष्ठे॰ वुक्षिक् ॥ मर्बक विकारगाः म्ब प्रभुनामार नूत्रचति।(गी-ডনিবন্ধে জ্যোতিষে। কৃত্বা নীরাজ-न द्रामा वस व्रेक्त वशा कम। শোভন• খঞ্জন• পশ্যেৎ জল গো-ष्ठेम्। मिष्यो॥ इंजि निर्गयमिष्टुः॥ नवताबिक जी नवताब । यथा। व्या भिरम्मूह शक्क जू कर्खवाः नव-बाबिक । शुजिनमामि करम्रेश्व

शावह नवभी खरवर ॥ ইতি छवि-विग्राखतः ॥

नववश्ः जी नत्वाछ। नवीनाভार्यतः । যথা। অসম্ভবন্ধনরসা শতালি গণ मिविछा । कत्र॰ न महर्फ ताजन् ভূমি ন্ববধ্ রিব।। ইতি ছার্থকাব্যু ॥ #॥ नववश्वागमनमिन॰ यथा। उत **अक्षेत्र मण्य वाम्य वक्ष** ठेळूर्थ वर्षाणि निविकानि। मात्रा मार्ग कानून বৈশাথা বিহিতাঃ। পাফ্রঃ শুলুঃ। বিহিত নক্ষত্রাণি পুষ্যস্থাতী হস্তা **ध**निष्ठाखत्राषाटाखत्रक्लुनु । बत-ভাদুপरा রেবতী মৃগশিরো রো-शिंगी भूनर्वम् भृवीयाणः। वाताः ৰ্হস্তি বুধ শুক্ত সোমানা।। जिथ्राया याजा भुक्तराभाकाः। क्रक्षाणं वाद्यवना रिक् म्नामीन् পরিত্যজ্য তারা চন্দু শুদ্ধৌ কাল শুন্ধী । কাৰ্য্য ॥ ইতি জ্যোতিষ ॥ अभिष्ठ । या जी भृष भून र्व म्खद्र-क्द्राः क्विबानुदाशाधिनी द्वाञ्गिः मुन्ना हितागम विस्ती भूषता धनिष्ठा তথা। ভর্তু র্গোচর শোভনে দিন-পতৌ কালে পুনঃ শোভনে মন্তা-জালি রবৌ শুভে শুভঙিথৌ বা-

कारि यात्वाहित्छ। विभाश मार्ग-भीर्से, हि काष्टुत हि भूछ त्रवो। नववद्या गम कर्ग्डाहन्ड मारम विव-क्लिंस्ट ॥ इकि मथुद्रम ठकवर्षि कृत मात्रम गुरुः॥ नववत्रिका की नवार्छ। इकि हात्रा-

নববল্লভ প্লী দাহাওক।ইতিরাজ নির্ঘণ্টঃ।। নবীনপ্রিযে ত্রি।।

वनी ॥

নৰবন্ত্ৰ• ক্লী নৰীনবসন•। নৃতন কাপড इंडि 'ভाষा। তৎপর্য্যাম্বঃ। অনা-হত ২ আহত ৩ অহত ঃ তত্ত্ৰক ৫ নিব্লুবাণি 🕒। ইতি শব্দরত্বাবলী ।। नवाञ्चतः १ । इंड्रामद्रः ॥ 🕸 ॥ অথ নববন্ধ পরিধান দিন । তত্ত্ব বারাঃ বুধ বৃহম্পতি শুকাণাং ! नक्रजानि द्वाहिनी म्गमिद्धा मधा-न्ताक्षा धनिष्ठा भूषा विमाया रखा চিত্রোত্তরফলুণুগুত্তরাবাঢোত্তরভা-मुश्रमाथिनी याठी शूनईमू (त्रवंड)ः ॥ धनिष्ठा जाहिंगी हरा दिमाथा চোৰরাসুচ। জ্যেঙা পুনর্বসূ স্বাতী চিত্রাখিনী চ রেবতী।। ইতি সার-সংগ্ৰহ: ॥ #ा। অপিচ। ধাজ-নুরাধ বসু পুব্য বিশাথ হস্তা চি-

वाङ्गि शि शवनामि छि दिव छी यू ।

हार्य अवनामि छि दिव छी यू ।

हार्य अवन विश्व हित्ना हुन विश्व छुट्टी

हार्य अवन विश्व छुट्टी

हार्य अवन विश्व छुट्टी

हित्स छित अहु । वृध मित ह छुट्टी

हित्स हित्स छुट्टी

हित्स हित्स हित्स ह छुट्टी

हित्स हित्स हित्स ह छुट्टी

हित्स हित्स हित्स ह छुट्टी

हित्स हित्स हित्स हुट्टी

हित्स हित्स हित्स हुट्टी

हित्स हित्स हित्स हित्स हित्स हुट्टी

हित्स हित्

नवम् जिका जी (धनुः। इंज्यातः॥ व्यन भूमवायाकः॥ नवाः भः भूः भिषादिषादमानाः।

नव जानः। यथा। हतानः न जिन्तानाः । यथा। हतानः न जिन्तानाः जहतान्। नवाः नकाः। देव कन्। देव कन्। देव कन्। व्यानाः मक्तानाः । व्यानाः । व्यानाः । व्यानाः । व्यानाः । व्यानाः ।। ज्यानाः ।। ज्यानाः ।। ज्यानिः।। ज्यानिः।। ज्यानिः।। क्यानाः ।। क्यानाः।। क्यानाः।।

নবাংশস্ত রাশীনাং বর্গোত্তম ইতি মৃতঃ। ইভি জ্যোতিস্তভ্বণ।। नवाक्। खी कर्क्रहेम्क्री। इंजि बाक-निर्वरिक्षाशाहन विस्मास् क्री।यूथा। विश्वाम् जाद ज्निसिः शक्षेम् नी मम-ি শ্বিতৈঃ। কৃতঃ কৰায়ে। হন্ত্যাশু বাত পিত্তোন্ডব॰ জ্বর॰॥ইতি বৈদ্যক॰॥ ় নবান্ধণ লী নৃতনান্ধণ ৷৷ তন্মিন্তশু। জণ । यथा । वदाश् छेवाह । अकृषा (या नवामानि सम क्यं भन्नायणः। ভুঞ্জন্তিযে নবান্ধানি পরৈঃ শক্তানি क्न र ॥ नारु लाजन हामि পুন র্ভোগেন সুন্দরি। অবশ্যমেব কর্ত্তব্য সম কর্ম পরায়ণৈঃ॥ ততো ভাগবতো ভূত্বা নবান্ন•যো ন কার-থেৎ। পিতর স্তস্য নাশ্বন্তি বর্ষাণি **मण भक्ष है।। ज**म्बु। यस चूक्षीड नवाद्यानि कथ्थन। न जन्य थ्रस्या বিদ্যেত এব মেতন্স-শযঃ ॥'অন্য-**ছ তে পুৰক্ষ্যানি যেন তত্ত্ব পুনুচ্যতে** । পুাযক্তিও মহাভাগে মম ভক मूथावरः ॥ উপবাসং विदावस তজ্ঞকেন বা পুনঃ৷ আকাশ শয-ন ক্রা চতুর্থ হনি শুধ্যতি।। এব তত্র বিধি কৃত্বা উদিতে চ দিবাকরে

।পঞ্চগব্য ততঃ পীত্বা শীব্র সুচে ত किन्तिराए ॥ य अर्डन विधालन शुायकिलं ममाहाद्व । मर्वमकान् পরিত্যজ্য মম্ লোকাষ গছতি॥ ইতি নবাদ ভক্ষণাপরাধ প্রাথশিচ ন্ত ।। ইতি বরাহপুরাণ ॥ 🛊 ॥ তস্য नियिष्क पिन॰ यथा। সূর্য্য চৈব বিশাখগে মর তিথৌ পাপে ত্রি জ-मान्तिष्ठ नन्तामन्त महीन कार्य দিবসেপৌষে মধৌ কার্ত্তিকে।ভেষ্-गुाहि निविषु विषु नग्न कृत्क শশিন্যপ্তমে শাুদ্ধণ ভোজনকণ নবান্ন विश्विक भूधार्थ नामभुम ॥ मूर्यी-চৈব বিশাখগে নাৰ্গশীৰ্ষস্য বিংশ-তি দণ্ডাধিক পুথম দিন ত্রবাবছিতে मूर्यं। सद्गिष्णे वर्यामन्त्राः । পাপে পঞ্চন তারা ত্রযে। উগুঃ পূর্ব। ত্রথ মধা ভরণ্যঃ। অহি রশ্লেষা। শিব আদু। ।। জ্যেষ্ঠা শেষার্দ্ধগে সূর্ষ্যে মৃগনেত্রা নিশাত্মকে। নবালৈ র্ভোজন-শাদ্ধ-জন্মচন্দ্রে তিথোন চ।। অন্নেৰা কৃত্তিকা জ্যেষ্ঠা মূলাজপদ-কেবুচ। ভৃগু ভৌম দিনে রিক্ত তিথৌ नाम्रामस्बोमन ॥ # ॥ जन्र विधि र्यथा । श्राभीयाम्स्य मःयूकः नवः

বিপ্রাভিমঞ্জিত। দীপিকাযাণ। ভেৰুগুণিহি শিবান্যেৰু বিভৌম শনি-वामरति। व्यम्भागन वर वर्षामवाम কল ভক্ষণ ।৷ অধিকন্ত। হস্তা স্বাতি পুনর্স্ ম্গশিরঃ পুষ্যানুরাধা তথা মূল্যযা• শুবণে চ রেবতি থনে চিত্রা-নলে বাৰুণে। ব্ৰাহ্মে শক্ত বিশাখ-যোশ্চ তুরগে সৌম্যেন্দু জীবাহকে চন্দে শোভন তারকে চ শুভদ• শাুদ্ধ নব্টিয়ঃ কৃত ।। ভোজরাজঃ। <u>बुक्ता विकु वृहम्माठी मामध्यता मार्खः</u> ণ্ড পৌঞ্চাদিতী মৈত্রে চৈব বিশাপ वायू थना मृना थि वाङ्गी उथा । শক্তে বাৰণ ঋক্ষকে শুভ দিনে শাুদ্ধণ নব॰ শস্যতে নন্দ। ভার্মব ভূমিজে-ৰু নভবেছ্যুদ্ধ নবামোক্তব ।। ইতি **জ্যোতি**गुङ्गः॥ 🕸 ॥ त्राधिनाधिका-রে। শুরুপক্ষে নবংধান্য জ্ঞাত্বা পত্ব मूर्णाजनः। गरहर किंबी विशासन গীত বাদ্য পুরংসর: ॥ ইত্যাদিনা वुक्षभूत्राणन भाक्षिविधानार। व्यनि-छ । শद्वनश्रद्धाः (किहन्वयञ्चः भुः চক্ষতে। ধান্য পাক বশাদম্যে শ্যা-সাকে। বনিনঃ মৃতঃ ।। ইতি মলমা-'সতত্ত্ব• ॥

नवायवः जी न्जनवद्धः। इज्जिन्द्रः। नवाहिः श्रु॰ मक्नगुरः। ইতি विका-ওশেষঃ।। নবশিখা চ।। नवाहः भू नवितनः ॥ भुजिभितिथः । ইতি বিশ্বঃ॥ নবিকা জী নবশব্যুকা। নব কায়িতি ইতিবৃৎপত্তি সিদা। ইতি দ্রীত্য शुक्तरण पूर्णामानः ॥ नवीन वि न्जन। इंज्यादाः॥ नर्वाण जी न्जनविवाहिज। उँ शंग्रायः । वश्ः २ जनी ०। इंडि क्रोधदाः ॥ नववित्रका ८ मिक्क्ती द नवरयोवना ७ । इंडि श्रादावनी ॥ मुक्षानायिकारजरः। उत्रता नकनः यथा। লব্জা ভব পরাধীন রতি र्नताण।। उम्रा छेना इत्रन यथा। বলাদীতা পার্শ্বণ মুখ মনু মুখণ নৈঝ अक्ट धुनान। मूर्खानः, किशेडिः वननः हुम्रन विरथी। इनि मुखः इन्डः ক্ষিপতি গমনারোশিত মনা নবো-ঢাবোঢার• রম্যতি চ সম্বাপয্তিঃ চ॥ ইতি রসমঞ্জরী॥ नवाक्ष् क्री नवनील । इक्रामद्रः ॥ মুতনোত্মিতে ত্রি॥ नव्रः जि म्छनः। इंड्रमद्रः॥

নব্যঃ পু॰ রক্তপুনর্বা। ইতি রাজ-নির্ম্বটঃ। স্থাতিঃ। গুল স্কতৌ ভাবে । অল্ নব শব্দাৎ সার্থে যে নিম্ননঃ।। নশাকঃ পু॰ কাকভেদঃ। ইত্যুগাদি কোষঃ।।

নশিতা তি নাশাশ্য:। ইতি নশ থাতোঃ কর্ত্তরি তৃণা নিম্লম:।। নশ্যৎপুসৃতিকা জী মৃতবৎসা। তৎপর্য্যায়:। নন্দু: ২ মৃতপুঞ্জিকা ৩। ইতি হেনচন্দু:।।

নশ্বঃ ক্রি নাশপুতিবোগী। দ্বংস যোগ্যঃ। ইতি নশ ধাতোঃ কর্ত্তরি বরপুত্যয নিষ্কনঃ।।

नहेः जि ज्ञानं निष्ठः । उट्यानं । यः। जित्राहितः २। ईत्यानः।। नामाणुकः। यथा। (यारमानहेः भन्न-स्था। हित्र ज्ञिजगदन्नीका।। नाम्म ज्ञी।।

नडेठनुः शृं भोत्रजापुरम्गाज्यंभरकः हज्यंग्रमृष्ठि कन्मुः। स्था। नडे क ल्मान मृण्ड जातुमानि निजनि रज। हज्यंग्रमृष्ठि जातुमानि निजनि रिका मनीविजिः।। हन्मु खाताश-स्त्रां कनक मिंड पूक्तः। जीम स्मार्ड रंद नन्म कामरा यहि श

শঙ্জি।। অকামতো নরো দৃষ্টা মঞ্চ भूजः जनः भिरदः । छरा मुख्याः **ज्यद**् अस्तु निष्कवाकी मही जल ।। সি হ: পুসেন নবধীৎ সিংহ। জাম্বতা হতঃ। সুসমারক নারোদী ন্তব ক্ষেব স্যামন্তকঃ ॥ ইতি মন্ত্রেণ পৃতঞ্চ জল সাধুঃ পিবেজুব ।। পুরা তারা গুরোঃ পত্নী নবযৌবন সং যুতা। রত্ন ভূষণ ভূষাত্যা রত্ন সূক্ষাম-রা সভী ।৷, সুশোণী সুমিতা রম্য मुन्दती मुमाना इता। यञीव कवती রমর মালতী মাল্য ভূষিত। ॥ मिन्द्र विम्ना भाकः हाक हन्तन বিন্দু জিঃ। কন্ত্রী বিন্দুনাধশ্চ ভাল भथ्य इलाब्जुना ॥ त्राञ्चमु मात्र निर्माण इंग्नाकीत त्रिक्षिण। मूवक व्याहना महाना मूहा क कब्बु व्याब्द् ना ৷৷ সুচাৰু চাৰু মুক্তাভ দম্বপঙ্কি भारता हुन । तब मखन यूर्यान ठाक गथश्लाब्द्रवा ॥ काभिनी गञ्जना वाना गर्डसु अन्तर भिनी। पूर्का-मना हन्द्रम्थी कामाराजा ह कामूकी ा। यर्गनमांकिनी जीति त्राजातिया-भ्रता वजा। ध्रायडी खक्शार सा बग्रः गम्ताम्थी ॥ मृद्रा जन्ताक

मक्षाक् भनक वाग भी फिला । जाए छजूर्यमभ्युष्ट बहात्र राजनः वृत्त ॥ खान करान मण्याभा तथरहा तः जित्का वनी। त्रच मात्रास्यामान করে ধৃতা চ তারকাণা কানোমন্তঃ काभिनीखाः नमान्तिय। हुत्य नशा म्-দার করু মুদ্যন্ত তমুবাচ ওক প্রিয়া ॥ তারকোবাচ। ত্যন্ত মাণ ত্যন্ত মাণ চন্দ্ৰ সুক্ৰেকু সভাপাণসক ৷ এক পত্নী বান্দণীঞ্চ পতিবৃত পরাযণাশা ওক পন্নী সদমনে বুদ্ধহত্যা শতংগভেৎ श्रिया सुर जवः माजार र रेशर्याः **स**र সুরেশর ।। বিক্ দ্বা॰ শুদ্ধা সুরগুক র্ভমীভূত•করিষ্যতি। **ওকপ**ন্নী বি-পুপত্নী যদি সা চ পতিবুতা 🗓 বুন্ধ-रुठा गर्मुक उन्ताः नक्षतः नः ভেছ। পুত্ৰাধিকক শিষ্যক পুিৰো अध्याभित्मा ज्वाम्।। यः धर्मः व्रक পাপিষ্ঠ নামেকনাতর "ত্যজ দেন नग्रामि कीवश जूज्य यपि मा॰ म॰ गु-স্বীষ্যাদি॥ বিলহ্ন্য তারা ৰচন তাঞ্চ প্রাকু মুদ্যক। শশাপ তারা। প্রেপেন নিস্থানা সা পতিবৃতা'।। मार अस्ता यम गुरुः भानगूका ज्यान जन। कनकी यन्त्रा गुरहा

**ভবিষ্ঠান न नः**শरः ॥ চন্দ্র মেবং **उमा** जूर्नः कामरहवः ममाभ ना । তেম্ববিনা কেনচিত্ত্বণ ভশীভূতো ভ विवामित्री हन्द्र खादा गृशिका ह কৃত্বা চ রুমণ বুজ। জোডে নিধায<sup>়</sup> পুৰবৌ ৰুদন্তী তাং শুচি মিতাং ॥ निर्द्धान निर्द्धान द्वारा देवाल देवाल मत्नारुद्धाः । ज्ञाः मृक्षाः १ मूद्र ७ वनः विन लिहा र नमा गठ ।। भुवम् नई मुख्ना ह हन्तु छ॰ भन्नशः यदयो। भूक छ॰ 'ৰোধ্যামাস বচন' নীতি যুক্তিতঃ।। भूक छेवाछ। भृत् वर्म भुवक्रामि ওরবে দেছি ভারকা । ভৰুপত্নী মাতৃপরা" ত্যন্ত মন্বচনাদিধে। ॥ ককলাল ক্যোলায় নিঘৃতিত ম-राकका। मठीमाः खक्भद्रीनाः पुर-णनविष्मिष्ठ॥ वृक्षरञ्जा मर्गुागाः পাতক লভতে জনঃ। স্মীপাকে পচ্যতে চ বাবৰৈ বুন্ধণঃ শত।।। বৃহম্পতিশ তেলধী ত্বাণ ভমী কভু মীশরঃ। ন চকার কৃপালু শেহ প্রিয শিব্যেণ হেতুনা । উতথ্য म्<del>क्षे म भूदा (द्रा</del>म मकामजः/। जर পতেঃ শাপতো হল্যের পরপুত্তা প্রিবা সত<sup>িন্ত</sup> পরতমির্মন্তরে বুক্সা বো

धरिष्। कविः विजूः। সমানীয় निषा | দাপ তারকা সহিত <u>বুজা। শম্ভো</u>শ্চ চরণাম্ভোজে চকার চ সমর্পণণা শস্ত্র-ন্ত পুতি যুক্ত চ বাস্যামান বিশ্বসি গ্রামন্ত্র তীয়ে পানরেণু• নিম্নাপঞ্চ-কার সংগদভাত মতকে হস্ত ক্পালু ॥ अञ्चन मरमो ॥ क्वीरबारम नामियद्वा ठ भूगगन्तिखन नक्तः। ठकात हन्तुः निम्नाभः वृक्षण महिङः मूहिः ॥ रयाराम हन्दुः रयानीतन्त्र विश्वअध চকার সং। ররক্ষার্জ- ললাটে চ সো প্যর্মণঃ পুরঃ।। অতএব মহা-দেবো বভূব চন্দুশেখরঃ। মৃগাকো चक्कि उद्धव कनकी स्व अभिना **বজ্জ**্যা**চ ৰ বোগেৰ দেহত্যাগ ঞ্চ**কা-द्भ मः। তৎ শরীরঞ্চ ক্রীরোদে বৃহ্ধণা क ममर्भिजः॥ बद्धानाविक कृभया भूठा कीर्तापरथ खर्छ। अर्ज न्ह्रकू ৰ্জন॰ তস্য পপাত চ জলে বুজ।। ত্যাস্থ্র চন্দ্র নিল্লাপো দেব সং-সদি। বুন্ধা চ ভগবান্ শভ্রু রভিষেক कर्में के ॥ डेवार र महारम्या निर्र्थ (रद मन्मि । महारहव छैदाह । ई इनि गह भुक द अक ब विवयः भूषा ॥ भण्डः ेश्रणुद्र भा-

्थन ग्रम्भृत्छ। छविष्ठा कि । ये। ध াপতিযুক্তা শালা কর্মীশী ঠ কো-জুবি।। মনাশিষা যত্ত্বণ ক্রপ্তিকা-রোভবিষ্যতি।বিশান্তাদুচতুর্থ্যান্ত অক্পত্নী ক্ডা ক্তা। তমান্তমি-निर्त्त वट्न भाश्रम्मप्रयूरगयूरगः মা ভুক্ত ক্ষীয়তে কর্ম কল্প কোটি **প্শ**তৈ র পি। অৰুশ্য মেব ভোক্তব্য কৃত॰ কর্ম শুভাশুভ ।। দেহত্যাগেন হে বৎস কর্মভোগো । নশ্যতি। পুৰ্য কিন্তান্নসন্দেহে হান্ত মেৰ ভবিষ্যতি ৷৷ তারাপহরণ কংস ৰলক শচন্দু মণ্ডলে।মৃগাকৃত বি-সাঃঞ্ ভবিষ্যতি যুগে যুগে॥ ইতি नुषारेवराखं व्यक्ष कमश्राप ৮०1 ৮) जश्रायः ॥

नहेरिहेण की शुन्यः। रेण्याः।।

त्माकारिना भित्रणम् नात्मा नहे

रिहेण छव भुन्यः भुनीयर् १८म

न भुन्यः नी छ य अ मिति जन्।

भुन्यः माजिकाज्यः मृह्ण्यः।

रेण मर्बरः। र्व त्माकारिक

तत्मव रिहा नामः भुन्य रेण्यः।

रेण जत्रः॥ वेश मृनुजा ह॥

नहान्निः भुः यम्रानिश्चावितः भुमा-

निर्माक का जगा छात्र ने वा जान में हैं।
निर्माण मान मान मान छिए अर्था पर ।
वीत्र स्था र । रेजा महा । उट अर्था पर ।
विश्व स्था र । रेजा महा । कि विष्ट शास्त्र कि ।
विश्व स्था । उट अर्था पर । वा खुर ।
र । रेजि राता विषी ॥
वाह्य न्यूक वा जी जरूर । रेजा मता भा जी ना निका । रेजि जिका ख-

**रखः পू॰ नामिका। ইতি শব্দালা।।** নসে ব্লী। ইতি রত্ত্বমালা।। পঞ্চবিধ নস্ত কর্ম্ম যথা। পুতিমর্কো হবপীড-শ্চ নস্য পুধমনম্ভথা। শিরো বিরে-**इन्हें इन्छ कर्य जु शक्या ॥ देय-**मृह् मना दारा या वान् वकुः शुभरः তে। নস্তে নিষিক্ত স্ত॰ বিদ্যাৎপুতি মৰ্ব পুমাণতঃ ৷ পুতিমৰ্বক নস্যা-র্থ• করোতি চ ন দোব ভাক্। শো-ধনঃমন্ত্রমুনস্কস্যাদবপীডো দ্বিধামতঃ ॥ व्यवशीष्ट्रा मीयत्व यन्नाम्यशीष ্ ভতঃ মৃতঃ। স্থেতার্থণ শূন্য শিরসাণ গ্ৰীবা ক্ষরেরসাণ তথা ৷বেলার্থণ 🛚 দীযতে সেহে৷ নন্ত শব্দো ৎত্ৰ বৰ্ততে ा नगुगु दिव्हिकम्याब स्वा सुर्छो ्जू विनावेः ॥ शुरुज्ञकरमा नसक्सा

নূণা মিক্তি বিশিশ্চয়ঃ দ ইতি বৈ-দ্যক পরিভাষা ৷৷ 🗰 💵 🦖 জিল্চ পাণি শুক্তিশ্চ মাত্রা ন্তিসুঃ পুকী-र्विजाः। द्वावि॰महिन्स्व निगव मुक्ति রিত্যভিধীয়তে।। ধিশুকী পাঁণি भूकिक प्रयास अनोटा ने देतः॥ বৈজন কফে চ বাতে চ কেবলো श्रवत्व वनाः ॥ मन्त्रामन्तरः नेना পিত্তে সর্পি মজ্জা• সমাৰুতে। খ্যা-भन दिहन हुर्न युक्ष गांख मूथ वायु-नाना वजकून विमूथया नाउन रखन-জ গর্ভথা। সহি ভূরিতর দোৰ ठूर्नद्वामशकर्या**छ ॥ भि**त्रा विद्रहेन पुरेकाः रहरू वा रिजः भुनाधिकः। **शिता वित्रवन मम्बार तिहास्मिर्य-**তেবু বুদ্ধিমান্ ।। গৌরবৈ শিরসং मृत्व जाए। बंहत्स्गवाचित्र । विशेष গণ্ড জিনি গুছি জন্তাপনার প্রীন্তি ৷৷ তোৰ মৃদ্য গর স্নেহ পীতাৰা পাতু মিহতা । ভুক ডক শির: ন্নাত ন্নাতুকান ন্যুতা স্কা•াণ নব-পীনস রোগার্ভ স্তিকা খাস কা-मिनाः। भूकानाः हत्त बङ्गीनाः उथा मार्चव पूर्णिया। व्यव्यान्त्रशिक माध्ये रेन्याः नगाः भुत्यांक्रस्यूः ।

म नगाः मून मक्षात्य बाजीजा भी-जि वद महा। बहान बामाम प्यः कवरण तान भक्षत्य । न भूषि मूर्ज नवरम नहाजिकास मक्षरको स्थान सम्र महाः भन्नः भुजिम्बंस बिस् वदः।। ইতি সারকৌমুদী।।

नहा हो। नामाक्उ कि मु । देखि निव्य नम होकायाः जतकः॥ न खाज्यन माशाजाः कर्न माशास् जित्तः। व्यक्तिमाशाकिकाशाजाः वस्य हान्यायनभातिमिक मृजिः॥ विकाः भू नामानिस्जित्रकृवनीः वर्मामि। नाक् क्षांजा वनम् देखि जामा। जर्माशायः। नामाजः ।। देखानाः। जर्माशायः। नामाजः ।।

নন্তোতঃ পু• নন্তিতঃ।ইত্যমরটী কাষা• রুমানাথঃ॥

नमाः क्री मानिका एक्य ह्नांहि। उद शर्यायः। नसः २ नादशः ०। ইতি इक्ष्मानाः।। 'दमनः (तहनः नमाः निक्रः कानुवामनः। एक्वयः शक् विषः कर्यमाना जमा भुवक्तारज।। ইতি देवपुक शिवज्ञाया।। नामायाः हिस्स केद्र भयक्षिनि ह कि।। शुगुरक् शूर्वे किद्र क्षित्र क्षित्र वात्र वात्र क्षाया।। वस्ता सी नामका। यथा/। युनाः भववस्त नामा नमानमता ह नामिन का। हेि ज्याज्य माहमानः ॥ नम्प्राप्तः भूः निष्ठः। हेज्यद्रः ॥ नहि रा निष्यः। यज्ञादः। उद भर्तादः। य २ ता ३ न ४। हेज्य् भद्रः॥ यन ६ यना ६ ना १। हेिं ज्याजः॥

নহবঃ পু॰ নাগভেদঃ। চন্দুবংশীয রাজভেদঃ। ইতি মেদিনী।। স চ পুরুরবসোল্ডেঃ পুএস্যায়ুবঃ সুতঃ । ইতি পুরাণং।।

नष्ट्याथा॰ क्री जगत्रभूष्ट्रशः। इजिता-बनिर्यकः॥

নহৰাত্মজঃ পু॰ য্যাতিরাজা। **ইতি** পুরাণণাঃ

नकवः क्री मुख्ता इंजि ब्राजनिर्धरंशा

जाता। जद शर्यायशा सकः २ छः ७

जातका ८ छेषु १ । इंज्यावशा।
जातकः ७। इंजि नायजः ॥ जातः

का इंजि व्याफिः ॥ नाकायग्रः ।
जावा। जाविमी ३ छत्री २ कः

जाना ७ जाविमी ३ छत्री २ कः

जाना ७ जाविमी ३ एवंक्यूनी ३ ।
जात्वा क्रम्या ३० गूर्वक्यूनी ३ )

উত্তরক্লুনী ১২ হস্তা ১০ চিত্রা ১৪ बाष्ट्रिकेट विष्याया ४७ जनुताया ४१ জ্যে। ४ म्ना ३३ भ्रांगाण २० উত্তরাষাদে ২১ শুবণা ২২ খনিষ্ঠা ২৩ শতভিষা ২৪ পূর্বভাদুপদা ২৫ উত্ত রভাদুপদা ২৬ রেবতী ২৭। ইত্যমরঃ **জ্যোতিষ্চ ।। এত। অভিজিত**। **সহ অষ্টাবিশ্বতি নক্ষ**ত্রাণি ভবস্তি ॥ 🗱 ॥ जानाः कत्मनावित्तवज्ञायथा । जिस्तिः अस २ म्हन ७ क्मना ८ শশি ৫ শূলভূ ৬ দদিতি ৭ জীব ৮ किंग र्रे किंग्डितः २०१ (यान्) ४२ २र्ग्या २२ मिनक् २० खुष्ट् 78 शवन ৯৫ শকাগ্নি ১৬ নিত্রাশ্চ ১৭ ॥ শক্রো ১৮ নিশ্ব তি ১৯ স্তোয়ণ ২০ ২৫ হরি ২২ র্বসূ ২৩

र्बक्गः २४। जनभाम २० १ हित्युः २७ भृषा २१ एक जी खता जाना गा ॥ ॥ जाना ग्रेगा यथा। छेगुः भृर्वनधा छ-काः १२ १२०। २०। २। धुन्ग्रम खीगु ज्वता गि सज् १२ १२०। २७ १८। बीजा मिळा इति वय प्रत्रभगः २०। १। २२ १२०। २८। भूष्या थि स्टा ५। १। १९। व्या कि वा निव मृगा छ। ७० १८। १९। १९। १९। स्मूग्रम छो छा ११६

क्षुनु युक् २। ७५३४। २२। मिल्नु ংগিঃ স বিশাথ ভঃ ৩। ১৬। শুভ कनाः गर्दा स्रक्छि गनाः॥ 🛊 ॥ व्यक्षित्र्थनकवानि यथा। व्यस्तर अ বহি ৩যম ২ পিত্ৰ্য ১৯ বিশাখ ১৬ যুক্ত॰ পূর্বাত্রয়॰ ১১। ২০।২৫। **শত**-ভিষা২৪ চ নবাপু,ড়েনি।এতান্যধো-মুখগণানি শিবানি নিত্য বিদ্যার্ঘ্য ভূমিখননেষু চ ভূষিতানি ॥ 🛊 ॥ 🛪 नक्ष वादि नक्ष वागा क्य मन्त्र मि . कथन यथा। जग्र मन्ने द्विनद (क्रमः প্রত্যরিঃ সাধকো বধঃ ৷ মিত্র•পরম মিত্রঞ্জন্মভাছ পুনঃ পুনঃ ৷৷ সর্ব মঙ্গ কার্য্যাণি ত্রিযু জন্মসু কার-থেৎ। বিবাদ শুদ্ধে ভৈষজ্য যাত্রা क्कोतानि वर्ड्करय् ।। याकायाः श्री ৰন্ধন কৃষিবিধৌ সন্থাৰ্থনাশো ভবেৎ ভৈষ্ক্যে মরণ তথা সুনিয়ত দাছো গৃহারম্রণে।ক্ষৌরে রোগ সমাগমো वर्रियः मुंहिक श्र्यनामं ख्या वारि বুদ্ধি বিনাশন স্থারিভয় প্রায়োত্য भा कग्राज्या 🗱 ॥ नक्तावादशम রোগেষু ভোগাদি वथा। जन्मधान নিধন ভে পুত্যরৌ চ দিপৎকরে। यनि वर्राष्ट्रः अमूद्शनः क्लमाय मत-

शायवाः। कृ जिकासू यहा व राधि न् नाष পুতিপদ্যতে ৷ নব রাত্রণ ভবেৎপী-ডা ত্রিরাত্র রোহিণীয়ু চ। মৃগশীর্ষে পঞ্রাত্র মাদুর্যিণ মুচ্**রত ংসুকিঃ**॥ পুনর্বসৌ তখা পুষ্ঠে সপ্তরাক্র বিধী-যতে। নবরাত্র• তথাল্লেষে নাস মে- ॥ कः भवाम् ह।। हो नामो भूईक्लुन्त मुखतामू जि भक्षकः। राख्यू मधाम নোক্ষ শিত্ৰাযামৰ্জ নাসক ৷৷ নাস ছয় তথা স্বাত্যা বিশাথে দিন বিংশভি ৷ মৈত্রে চৈব দশাহানি জ্যেষ্ঠায়া নৰ্দ্ধনা সকণা সূলে নজায়তে মোক্ষঃ পূৰ্বাষাঢে ত্ৰিপঞ্চক। উত্ত-রা দিন বিশ্বত্যা শুবণে দ্বৌচ মাস কৌ ॥ ধনিষ্ঠায়। মন্ধ্রমাসং বাক্ণ্যাঞ্চ मनाइक । नव जामुश्राम साक উত্তরাসু ত্রি পঞ্চক•।ব্রেবত্যা॰ দিন বিংশত্যা চাহোরাত্র তথান্ধিনী ৷ প্রাণৈ বিমুচ্যতে নিত্যু ভরণ্যা নাত্র স•শযঃ ৷৷ কৌশিকেন সদা দিষ্টা ন-ক্ষত্র ব্যাধি সম্ভবাঃ। নক্ষত্রে পুতি কৰ্ব্য নক্ষত্ৰ পথ জানতা।। 🛊 ॥ নক্ত্র্ভাগ বোধকানি চত্ত্বারি नामान्यक्षानि यथा। य उ इ ००। 

কু ঘডছ ১। কে কো হ হি 4। হু হে হো ড ৮। জি ডু ডে ১ডে ন। म मि मू (म २०१ (मा है हि हू >> १ हि ही भ भि ३२। भू यग ठे ३३। পে পোর রি ১৪। ব্ রে রো ত ১৫। তি তু তে তো ১৬। न नि नू (न ১৭। নো য যি যু ১৮। যে যো ভ ভি ১৯। जू १ क ए २० । (ज (ज) क कि २) । ৰু জে জো খা০ অভিজৎ। থি থু থে থো ২২। গ গি গু গে ২৩। (गा न नि मू २८। मिला मि रिए। मूथ या क २७। (म स्मा ह हि २१। इ कि का न । नि नू (न ला २। খা ম যুক্ত শ্চাকার যুক্তেন জ্ঞেয়ঃ। <u>क्रुश्चन मीर्घा (ख्वयः । তालवर</u> শকারেণ দস্ত্য সকারো জ্ঞেয়: । ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব• ॥

নক্ষত্রকান্তিবিস্তারঃ পু• ধবল যাব-নালঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

নক্ষত্ৰচক্ত ক্লী মন্ত্ৰ গুহণোক্ত ষট্
চক্ৰান্তৰ্গত চক্ৰ বিশেষঃ । তথাচ
বৃহদ্বীক্ৰমে । উত্তরাদ্দক্ষিণাগ্ৰান্ত
রেখা ক্ষ্যান্তত্বস্থী । দশরেখাঃ
পশ্চিমাগ্ৰাঃ কর্ত্ব্যা বীরবন্দিতে॥
অকারাদি ক্ষকারান্তান্দ্ৰি চন্দ্ৰ

विङ्क्षितकान्। ज्भीनम् ति विन्दुः। क अस्त्रवास्र थरगी लिए । विज् নেত্র নেত্র যুখ্মাণ শ্চেন্দু নেত্রাগ্নি চন্দু কান্। মঘাদি জ্যেষ্ঠ পর্য্যন্ত দ্বিভীয নব তারক ।।বিহ্নি ভূমীন্দু চন্দুা দে যুণ্মেন্দু নেত্র বহিকান্। বেদেন ভে-দিতা বর্ণা রেবত্য শগতাঃ ক্রমাৎ।। **নিবন্ধে।পূর্বো**ত্তরা ত্রবঞ্চৈব ভরণ্যা-দুঠি রোহিণী। ইনানি নানুষাণ্যাহ ৰ্ক্ষতাশি দ্ৰীযিণঃ ৷৷ জ্যেষ্ঠা শত-ভিষা মূলা ধনিষ্ঠাশ্লেষ কৃত্তিকাঃ। চিত্রাম্যাবিশাখাঃ সুগ্রারা রাক্ষস দেবতা: ॥ অশ্বিনী রেবতী পুষ্যঃ স্থাতী হস্তঃ পুনর্বসুঃ। অনুরাধা মৃগ-শির: শুবণা দেবতারকা:।। তথা। স্বজাতৌ পরমা প্রীতি র্মধ্যমা ভিন্ন काञिषु । त्राका नानुष्या नात्भा रिवतः मानव (मवर्याः ॥ गणाश्वाम মাহ গবাক্ষ তত্তে। পুণব জ্ঞাকরী भाषा (तृत्राम वृत्राशी यउक्षतः । প্রাসাদো বহুৰূপী চ সপ্ত সাধারণাঃ मृजाः ॥ भातनायाः। क्य मण्य ্বিপৎক্ষেমঃ পুত্যরিঃ সাধকো বধঃ ৷ মিত্রণ পরম মিত্রঞ্চ জন্মাদীনি পুনঃ श्रनः॥ जन्म जि शक् मश्रानि वक्तनी

यानि नक्कजानि। छथाह द्राघवछ ।

1 त्रमार्श्व नव छपुानि यूग यूग्य गछान्यिन । इंछतानि न छपुानि नक्कजानि। स नक्कजार न नक्कज गननीयन । उन्छान स्नामान्यक्त महिन नक्कजाप्ति गन्यकार । उथाह ।

श्वान क्किल्यन गन्य मानक्रक । उथाह ।
श्वान क्किल्यन गन्य मानक्रक महिन मुद्देश । इंछ उन्यमातः ।।

नक्कजनिमः श्रुन विकुश । यथा । नक्कज निम्न क्रिक्त क्रिम मुनाम ।। इन्पुः ।।

श्वा । दिव्य महम्माम ।। इन्पुः । नक्कजन भाजी हिव्य भावा । रिक्तः ।।

স ছিতা।। বিশাখা ভুজযো হস্তঃ ক त्रवय मुनाइजः। भूनईमू त्रथाकूला নথাঃ সর্ব তথোচ্যতে॥ গুীবা স্থিত। তথা জ্যেষ্ঠা শুবণঃ কর্ণযোঃ স্থিতঃ 1 মুথ সংস্থ তথা পুষ্যঃ স্বাতি দ্ভাঃ পুকীৰ্ত্তিতাঃ॥ হন্দ্বেবাৰণ শেচাক্তো নাসা পৈত্র,মুদাহত। পুলালাপত্যঞ নেত্ৰাভ্যা• ৰূপধান্নঃ পুতিষ্ঠিত• ॥ मित्रात्रोषु खथारिव नक्कवाक मिन॰ **₹**रतः । विधान• म•श्रुवक्कानि यथा যোগেন নারদ।। সংপ্জিতো হরিঃ कामान् विमधाि यथिक्किजान् । হৈতে নাস্যসিতাইন্যা বদা মূল-গতঃ শশী।। ভগবন্ত সহ লক্ষ্য পূজ্যে विधानजः। नक्षव अविधो मन्त्राहिर भुम्नु। य ट ज्ञाङन ।। ङ्गानुनी চাশ্বিনী যোগে পূজ্যেদথ ভক্তিতঃ। (रोहरर ह इतियाम शृक्विष्क ভোজন• ॥ আষাঢাভ্যা• তথা দ্বা-ভ্যা॰ द्वार्क श्रुक्ष राष्ट्र । मिलन শিশির• তত্র দোহদে চ পুকীর্ত্তিত• 11 क्तृनी दिउरा छश् भूजनीय॰ विष्करिनः। (मोहरम् ह श्राया शव्रु॰ দেয়ঞ্চ দিজ ভোজন ৷৷ কৃত্তিকাসু किः भूका लाभशोम बिलिक

रेयः। रत्यक्र रता इत्त विस्कारन्त्र गिक् अमृत्मापक ॥ शार्त्य ভाषुश्रदार्यः পূজ্যিত্বা বিধানতঃ। গুড় সশালি-क मन्त्रात्माइम मिव श्रीजिम ा দ্বে সক্ষীরেধতী যোগেদোহদে শুক মোদক। অনুরাধাসু জঠর• সলথা॰ ন্তত্ৰ দোহদে ॥ শুৰিষ্ঠায়া তথা शृष्ठः भावि छङ्क (माह्म । शृष्र) मूथ॰ शृह्या (माइप घ्उभायमः ॥ স্থাতি যোগে চ দশনান্ দে। হদে তিল শকুনী। ভুজ যুগ্ম• বিশাথাসু माइम भन्नामन ॥ इस्ड इस्डो उथा भूष्क्री यावकः (माहाम मृजः। भूनर्बमा वक्नु निम्ह भारतिनः छव দোহদে।। দাতব্য কেশব প্রীত্যৈ বান্ধণস্য চ ভোজৰ্ন ৷ হন্ শতভি-याया॰ देव भूकरयञ्जू भूयञ्ज छः । भूियकू त्रकः भान। मः (नार्मक मधुष्रियः। यघात्रु नात्रिका প्रक्रा नधु मन्त्राह ভোজन।। मृशाखरात्य नयत म्ग गाः नकः पाइपः । हिजा पारा ननारेक (मारहार ठाक (ভाজन॰॥ ভরণীষু শিরঃ পূজ্যা চাক ভক্তঞ্ (मारुषः। मण्डनीया विषक्ति तामा যোগে শিরোকহাঃ॥ বিপ্রাণ্চ ভো-

नाञनी

· बाराष्ट्रका माश्य ह खडामुंक । নক্ষ যোগেছেতেৰু সংপ্ৰ্যৱগতঃ পতিং৷৷ ততন্ত দক্ষিণাং দদ্যাৎ স্ত্ৰী 'পু'মো 'চাৰু বাসস'। ছগ্ৰোপা-नम्बूगरिक्त मध धानंत्रानि काक्षन॰ ।। वृज्भाजक गा॰ त्राक्षी॰ व्राक्षनाय नित्वरयट्। शुक्ति नक्कव त्यारगन পূজনীया दिजाजयः ॥ नक्ष बद्धाय विशाय श्थप्ताइ मिक्ता नक्क পুৰুষাঁখ্যু ছি বুতানা বুত মুক্তম ।। **७**व॰ विधाना तुन्नन् नक्षवाद्या बनार्फ्नः। পृक्ति ত। क्षत्रवादी यि रेखः পাুাণ্ডা চ সুকামিতা।। এতত্তবোক্ত\* পরমণ পবিত্রণ ধন্যা যশস্যা শুভ क्षाराय। नक्षव शुरमः शत्रमः वि-খান শৃণুষ পুণ্যা মিছ তীর্থ যাত্রা ॥ ইতি বামনপুরাণে ৭৭ অধ্যাযঃ॥ নক্ষত্রমালা স্ত্রী সপ্তবিশ্শতিমৌক্তিক কৃত হারঃ। ইত্যমরঃ॥ নক্ষত্র শ্রেণী চ।। # ।। সপ্তবিংশতি ৰূপাটেত ৰূপকৈ ৰূপ ৰূপকৈঃ। নৃত্যে নক্ষত্ৰ মালাস্যান্মকাবলি রিবোজ্জা।। इं ि मकी उनारमान दः ॥ नकरवणः शू॰ हमुः॥ दश्राः। ইত্য-

मद्रः ॥

না ব্য নহি। অভাবঃ। ইত্যমরটী-কাষা• ভরতঃ॥

ना भू॰ भूक्षः। इठामतः॥ नाकः भू॰ यर्गः। इठामतः॥ नाकनाथः भू॰ हेन्द्रः। ইতি ত্রিকাঙ

नाकनायकः शृ हेन्द्रः। यथा। म वऽठी छऽ वियम् छत्र गांधः नाकनायक निक्छन माशा हे जि तेन यथि ६ मर्गः नाकनायक शूर्ताहिछः शृ वृहम्म छिः । यथा। साय धर्म छनय मूज छिरछा नाकनायक शूर्ताहिछः मूछः। हे छि (জ্যাতি छञ्जः॥

नाकी पू॰ (एवजा। इंजि (इसहन्तुः॥ नाकुः पू॰ वन्मीकः। इंज्यानाः॥ मूनिविष्णयः॥ अर्बेजः। इंजि (स-फिनी॥

नाकूनः शृ नजनश्राः। ইতি जिला-खरकोत्रूपी शनजन अञ्चलिन वि ॥ नाकूनी जी जकूषोकनसः॥ तात्रा॥ हितका। ইতি भिरिनी ॥ यविका ॥ यिठ कफेकाती ॥ कन्मविरमयः । नाई ইতি খগতা। তৎ পর্যগ্রঃ। সূর্পগদ্ধা ২ সুগদ্ধা ০ রক্তপত্রিকা ৪ ইয়রী ৫ নাগগদ্ধা ৬ অহিতুক্ প্ সরস। ৮ সর্পাদনী ৯ ব্যাবাগন্ধা ১০ 1 অস্যা গুণাঃ । তিক্তত্বং । কটুত্বং । উষ্ণত্বং । ত্রিদোষানেকবিষ নাশি বৃঞ্চ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

नाग॰ क्री विक्"।। भीनकः॥ क्रा विश्नियः। इंजि शिक्ती॥ #॥ नाग কর্ণ জাত ফল পথা। নাগোড়বো নাগ ধনাভিলাষী বক্তোক্তি জালো নিতরা শ্বশীলঃ ৷ ক্রোধায়ি সম্ভা-পিত বন্ধুবর্গো ভর্গোপনঃ স্যাৎ কিল রহ্ম ভূমো ॥ ইতি কোষ্ঠা-शुपीशः॥ #॥ विष्ठाक त्राक् भी-সকে চ পু•। তয়োঃ পাক হীনযো र्माया यथा। भाक हीतो नाग-বকৌ স্বষ্ঠ গুল্ম কজা করোঁ। মেহ পাণ্ডু করৌ বাত কফ মৃত্যু করৌ भूनः ॥ তया मात्रनः यथा। जारेष विका वृक् हुर्ग व्यूर्था स्मन निः ক্ষিপেণ্। মৃৎপাত্তে বিষ্ঠতে নাগে लोह पर्वरा ह हा मार्य था यारिम रकन ज्य उच्चा उच्नाक मनः मिनाः। काञ्चिकन व्या निश्चा भारतपृत পুটেন চ।। স্বাঙ্ক শীতণ পুন: পিঞ্চা मिनया काञ्चिकन ह। भूनः भूरहे ছরাবাভ্যা মেব বঞ্জি পুটি মৃ জিঃ

। शा नागः जिन्तृत वर्गाः निया-उ नर्वकार्यं क्षा निज्ज नर्ब्द्रा नार्गा भूजा जविज जयनार ॥ प्रायुः कीर्जिः वीर्यं वृद्धिः करताजि राजवनार नम्। राज्यान रिष्ठ भूजा नार्गा वस्त्रपूर्ण कांत्रकः ॥ देखि सूथरवादः ॥

नागः थु॰ शहगः॥ इसी॥ क्द्रा-ठात्री ॥ स्वयः ॥ नागरकणदः ॥ श्रुमागः॥ नागरष्ठकः ॥ मुखकः॥ দেহানিলপুভেদঃ 🏻 উত্তরপদস্থি-তে শুেধঃ। ইতি নেদিনী।। উদ্দারে নাণ ইত্যুক্তোনীল জীমূত সমিভঃ। ইতি সারদাতিলকটাকা!৷ তাঘূলী ।! দেশভেদঃ। ইতি নানার্থটীকা-যা॰ ভরতঃ॥ নগে গিরৌ চন্দ-নাদি তরৌ বা ভবঃ ৷ ন গছতীতি অগঃন অগঃনাগঃইতি বা৷ তক্ক करकारि शुक्छि प्रनिर्यानि मन्त्रा-কারঃ ফণালাঙ্গুল যুক্তঃ।ইতি ভর-जः ॥ जर्भर्गायः । कामुत्वयः २ । इंजानद्रः ॥ नारगाएम जि र्यथा । স্কতা বৃদ্ধণা সৃষ্টি নরীচিঃ সৃতি কারণ । পুথম মনসা ধ্যাত ভস্য भूधन कमाभः॥ उना माकायभी

ভার্য্যকন্ধ নাম শুচিমিতা।মারীচো कनेयामान उंग्रा॰ भूशामहावनान् ।। অনন্ত॰ বাসুকি**ঞ্**ব কম্বলঞ্চ **মছ**।-বল । ককোটকঞ্চ রাজেন্দু পদ্ম চান্য সরীস্পং ৷৷ মহাপদ্মং তথা শহ্ব স্বলিক ক্ষাপরাজিত। এতে कमार्थ पायापाः भुधानाः भविकीः ব্ৰিতাঃ৷৷ এতেষাম্ভ পুস্ত্যা তু ইদমা-भूति उ॰ जगर। अधिवा शीन कर्मान खीक्षात्म तथ विखान्नाः॥ मृष्ट्रा म॰-म्भा मनुकान् छम सर्गुः कनाखुव॰ । नदगानी यथान्त्रामां मन्द्रामाः নরাধিপ।। অহন্যহনি জাযেত ক্ষ্যঃ रात्रम माक्पः। আज्ञानस क्य पृथ्वी **পুজाः मर्दाः ममञ्जूः॥ ज्ञाः म**र्रागुः শরণ পরস্ত পরমেশ্বর ৷ ইন সে-वार्थमू फिनाऽ পुनाः मदी महीभएउ ॥ 🕸 हुः कमलकः (एवः भूतांगः तुक्त मः क्छिउ । दिवा के दूर । दिव दिवा লোকানা• পুস্তিঃ পরমেশ্বর । ত্রা-हिन छीक् प्रधुर्छा जूबकानी गर्।-ন্মনা ।। অছন্যহনি যে দেব পশ্যে-वू कत्रगा मृणा। मनूष्र म्गग्रा वा ७८ नई • ज्यमाख्य ८॥ व्या म् डिः क्ञा (मव नीयाल मा जूबक्रिन: 1

**এ** ज्ञापा जू पूर्व ७ ० ० वन व মহামতে।। বুদ্ধোবাচ। অ**হ**• র**ক্ষা•** বিধাস্যামি ভবতীনা ন সংশ্বঃ। বুজধৃ স্বানি ধিষ্ট্যানি পুজাপালাঃ সসাধুসাঃ ॥ এবমুক্তাঃ পূজা তেন বুন্ধণা ব্যক্ত মূর্ত্তিনা। আগতাস্ পু-बाश्चाम् अनगर्य जूबक्यान्।। भ-শাপ পরমকুদ্ধো বাসুকি পুরুখাণ ख्या। वुष्कावाह। यत्त्रध्में ८ भूज-वानिजा कर नगा मानुवान् ॥ ভবান্তরে তথান্যমিন্মাতুঃ শাপাৎ সুদাৰুণা । ভবিতাতিক্ষয়ো ধো-ता नृन• श्रायञ्जूनाष्ठत ॥ अव ग्राकास বেপম্ভো বুন্ধণো ভুঙ্গোন্তনাঃ। নি-भठा भारत्या छमा इममूह ईड उमा।। नागा छित्रः। छगवन् अिता ল্লাতি রন্ধাক ভবতা কৃত্যা।বিষোদ্ गद्दक ज्तद्द मृक्षत्रद्<del>य</del> नसुरा ॥ मन्पाहित वृक्षा त्व इतानी नम यानु छ । बुल्कावार् । यनि माम न्या সৃষ্টা ভবস্তঃ কচিলাশ্যাঃ॥ ততঃকি মনুজাগিত্য ভক্ষবৃধ্ গভ ব্যথাঃ । नागा अदुः। नर्यप्रामा अस प्रत्य शानरेकव श्थक् श्थक् ॥ नागाना॰ बहन प्रजा (हरवा बहन मुब्दी८ ।

व्यक् करद्रामि दि। नागाः समय सन् जिः मर ।। তদেক মনসः সর্বে **শৃ**ণুধু॰ মন শাসন । পাতাল বিতলকৈব **मू उना**थाऽ ज्ञीयकः ॥ एखः देव वस কামানা গৃহ তত্র গমিষ্যথ। তত্র ভোগান্ বছবিধান্ ভুঞ্জধ্ব মন শা-मना ।। जिश्रवः मधमः यावृनाव्यः ম্ভন্তে পুনঃ পুনঃ। ততো বৈব্যুতস্যা-দৌ কাশ্যুপেয়া ভবিষ্যথা৷ দায়াদাঃ সর্বদেবানা সুপর্ণস্য চ ধীমতঃ। তদাপুস্ তির্ব: সর্বাভোক্ষ্যতে চিত্র- || **ভানুনা ॥ ভবতা॰ নৈব দোষে। २य**॰ **ভবিষ্যতি न সংশ**यः। यে देव क्রा ভোগিনো দুর্বিনীতা স্তেশানন্তা ভ विञा नान्रिथ एट। कानः भार **जक्यक्षः मन्यक्षः जथा भ**तान् ठाभा क्ला मनुष्रान्।। मत्वीषरिष्र गीक्ष मर्खेल क रोक मृष्टि। मानवारय हुत छि । তেষা• ভীতৈ ৰ্বন্তিতব্য• নচান্য-हिन्डा: कार्या: চান্যথা বৌ বিনাশঃ।। ইতীরিতে বুন্ধণা তে ভুৰন্ধা জগ্মঃ হান স্থাতলাখ্য হি সর্বে। তছু-র্ভোগান্ ভুঞ্জনানা: সমগ্রান রসাত-লে নীল্যা সংস্থিতা স্তো এবং শাপং তে जू नका भुजामक ठजूम् चार .i

**ज्डू: পা**जान निनय मूपिए नाः खदाखना। ७७८ मर्दक शक्रम्याः তেষা॰ জাত• মহাত্মনা॰। অত ব্যিণ তিথি ধন্যা সর্বপাপহরা শুভা।। এ-তস্যা• স•যতো যস্তু অন্নন্ত পরিবর্জ-(यट । कीदान मानविशाना उम्र यामुडि भिवला ॥ इंकि वतार भूदान• II # II এवा• निव ভ्वन भु-नान- यथा। वामूकतानतम्ह (य नर्शा यथाञ्चानक ए इतः। ভ्रयाककू ৰুয়ন্য শিরে। বাস্থাদিষু দ্রুত ।। ইতি कानिका भूतात निव विवार ১৮ व्यथ्रायः॥ 🗱॥ कञ्चला यञ्ज नागरयाः সরস্বত্যা গান বরপাণ্ডি র্যথা ৷ এর্ণ স্তুতা তদাদেবী বিক্ষো র্জিস্থা সরস্বতী । পুত্যুবাচ মহাত্মান নাগ মশ্বত-র° ততঃ।। সরস্বতুগুবাচ। বরম্ভে ক त्रव जाुं अयहाम्। त्रगाधिका । जपूः **ह**5डां• भुरामग्रीम याख मनिम বর্ত্ত।। অখতর উবাচ। সহায় **एहि एवि ए॰ शृर्ब॰ कञ्चल भिव भि ।** नगर प्रतमञ्च मूजरगाः मः भुगह ह।। সরস্ভুবাচ। সপ্তররা গ্রাম রাগাঃ গীতকানি৷ তাবত্য কাপি মূৰ্ছনা: 11 তামাকৈ

কোনপঞ্চাশতথা গ্ৰাম ত্ৰয়ঞ্চ যথে। अउट **मर्ब**॰ खबान् गाठा कम्र**न रि**क् তে সথা। জ্ঞাস্যতে মৎ প্রসাদেন ভুজকেন্দু পরস্তথা। চতুর্বিধণ পদণ তাল বিঃ পুকার লেখ ত্রখ ।৷ যতি ত্ৰয়<sup>•</sup> তথা তোদ্য<sup>•</sup> ম্যা দত্ত<sup>•</sup> চতু বিধ ।। এতভৰান্ মৎপুসা-मार भन्नरगन्तु। भन्नक यर । व्यम्ता-खर्गठ मानवः सद वुद्धनयान यू ॥ उरामयः भया एउः ७वठः कव बन्। यथा नानाना जूर्नाक পাতালে বাপি পদগ ৷৷ পুণেতারৌ ভবন্তৌ চ সৰ্বস্যাস্য ভবিষ্যতঃ ৷ পাতালে দেবলোকে চ ভূলোকে रिव भवागी ॥ हेजूका ना जना **(एवी अर्च किञ्चा अत्रच्छी। क्रगामा** मर्भनः मारा नागमः कनालक्षा।। इंडि मार्क(७४ भूतान ॥ # ॥ कालिय वन्म नाग इनत्न दिनारका यथा । ज्वन्भवाजान् मर्भाष्क इति र्या मानवायमः। वुकार्छा नमः 'গাপ' ভবিতা তস্য নিশ্চিত ।। মৎ 🍴 পাদ পদ্ম চিছে বঃ করোতি দঙ ভাতন। দ্বিভাণ বুদাহত্যায়। ভবিতা তস্য কিবিৰ ।। লক্ষী বাস্যতি তত্ত্বে-

श्राट नाम प्रजा मूहाकग । व नाय র্যশসাণ হানি ভবিতা তস্য নিশ্চিতণ ॥ ধুর বর্ষ শত কালসূত্র যাস্যতি मिखिया ॥ इंछि वृक्षदेववर्ड भूताए। बीक्कबन्धथा अञ्चर्तायः ॥ 🗱 ॥ वास नाग मुक्ति यंथा। वास भुमारान তু গাত্রকেণ বামেন শেতে থলু নিত্য কাল । ত্রিভিন্ত মাসৈঃ পরিবৃত্য পাৰ্যণ তণ বাস্ত নাগণ পুৰদন্তি সি-দ্ধাঃ৷৷ ভাদুাদিকে বাসব দিক্শিরাঃ म्यानार्गापित्कयु विषु याम्य मूर्वा । পুত্যক भिताः महार थन् कान्तुना मो कि क्षानि को त्वर निजाः न नागः ॥ মৃদ্ধি বাতে ভবেমৃত্যুঃপৃষ্ঠে স্যাৎ পুত্र ভার্য্যযোঃ। जवत्न १० क्य विन्ता मर्व मन्त्रखायाम् त ॥ वकः नारगाष्ट्र मः भूष्को एव हिम्दिकन शः ক্রিমে। ত্রি শাল পূর্বতো হীন স র্য্যাদ্বা সৌম্য বঙ্জিত ॥ কেচিদ্দ শিণ ভাগে जू वेपास्तुकः गृहः वृशाः। ন কোণেৰু গৃহণ জৰ্য্যানাপ্যন্তে নাপি मध्रजः॥ काल ह थन हानिः म्रा मस्य तिभू ७४॰ ज्या । भर्षा ह नर्वनामः न्याख्यारमञ्चित्रक्रत्य ॥ ইতি জ্যোতিতত্ত্ব ॥

नागकनरः भू' रुखिकनरः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ নাগলণঃ পু• রকৈরওঃ । ইতি রাজনিঘণ্টঃ !!

নাগকিজন্তু॰ ল্লী নাগকেশরপুয় । ২তি রাজনিঘটিঃ।।

নাগকুনারিকা ভী ওড়্চী॥ ম**ঞ্জিখা।** ইতি রাজনিঘণ্টঃ॥

নাগকেশরঃ পু॰ নাগকেসর বৃক্ষঃ। ইতি ভরতঃ॥

নাগকেসরঃ পু•ৃফ্কিকেশেষঃ। না-গেশ্বর ইতি ভাষা। ভৎপর্য্যায়ঃ। চাম্পেয়ঃ ২ কেসরঃ ৩ কাঞ্নাস্থ্যঃ 🞖 । ইত্যমরঃ।। কেশরঃ ৫ নাগকে-শরঃ ৬। ইতি ভরতঃ ॥ কিঞ্জুঃ ৭ नागिक अन्नः ৮ नाशीयः ৯ काक्षन ১০ সুবর্ণ ১১ হেমকিঞ্জল্প: ১২ ৰুক্ম ১৩ হেমৃ ১৪ পিঞ্জরঃ ১৫ ফণিকেসরঃ ১৬ পন্নগকেসরঃ ১৭। তৎ পুত্র গুণাঃ। সল্লোঞ্ডু॰। বঘূত্ব॰। তি-ক্তব্ব। কফ বস্তি বাতাম্য কণ্ঠ শীর্ষ द्रागना**णिष्क।** ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।

नागगन्ना जी नाजनीकन्तः। ইতি ब्राकनिर्यकः ॥

नागगर्ङ द्री निम्द्र•।ইভির্∤ञ-

নির্ঘণ্টঃ য়া

নাগছুপা জী নাগদন্তী।ইতিরাজ-निर्ह्यकः ॥

নাগজ॰ क्ली সিন্দূর॰। ইতি রাজ নির্ঘণ্টঃ। র্হণ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ নাগজাতে ত্রি ॥

नागिकञ्चा क्वी भातिया। अनुस्तृन । ইতিরন্ত্রনালা॥

নাগজিষ্বিকা জ্রী মনঃশিলা। ইত্য-মরঃ ॥

নাগজীবন শ্লী বঙ্গ। ইতি হেম ठमुः ॥

नागम्बः भू॰ इसिम्बः॥ गृहासर्गठः দাৰ। দাঁতিয়া ইতি দাখা ইতি চ ভাষা। ইতি মেদিনী।।

নাগদন্তকঃ পু• নাগদন্তঃ। ভিত্তিদাক-चय । उ भर्यायः। निर्वः २। ইতি জটাধরঃ॥

'नागर डिका जी वृश्यिका नी। विष्टिष्ठी ইতি ভাষা। ইতি রন্নালা।। नागम्यी की कञ्चा (वन्त्रा) बिक्टिनी । হাতিশুঞা ইতি ভাষা । ইভি मिनि ॥ (निषम् शर्य) वर्य। বিশল্যা২পর্বপুদ্ধী ০ বিবৌৰ্থী ৪ শুরপুরা ৫ ইভদম্ভাম্বা ৬ কাণ্ডেরী

नागनि

नागरमनी खी क्षू पुक्क शिवासाः।

ज्यागरमनी खी क्षू पुक्क शिवासाय छै। ठव्छ।

८ तक शुक्का ६ कामवी ७ मन में १

पूर्का ४ म्हरमहा ३। ज्यमा खनाः।

जिकास । उक्ष प्रशासाय मानिष् । किरा
रमासन काति प्रका । इकि त्राक
निर्मा है।।

नागम्ताभमः क्ली शक्षयकः। ইতি রত্নশালা।।

नागकः शुः সমস্তদুका। সিজ ইতি
ভাষা। ইতি শব্দ চন্দুকা॥
- নাগনিযুহঃ পুः নাগদস্তকঃ। ইতি
कोগদরঃ॥

নাগপত্রা জ্রী নাগদমনী ৷ ইতি ভাবপুকাশ: ॥ নাগপত্রী জ্রী লক্ষণা ৷ ইতিরাজ-

নাগপত্রী জী লক্ষণা। ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

নাগপদঃ পু॰ বোডশরতিবদ্ধান্তর্গন্ত দ্বিতীয় বন্ধঃ। তস্য লক্ষণ যথা। পাদৌ ক্ষদ্ধে তথা হস্তে ক্ষিপে-ল্লিক্স্ণ ভগে লঘু। কাম্যেৎ কামু-কো নারী বন্ধো নাগপদো মতঃ॥ ইতি রতিমঞ্জরী॥

नागलामः श्रु जीगा कत्र गः । वक्षायुदः । ইতি মেদিনী ॥ সাৰ্দ্বয়াवर्जनाजु नागलाम ইতি यूजः ।
वुक्र गृष्टि नथा प्रमामागलाम मथालि विजानमः ॥ विश्विष्टः नाग लामन जुक्र । जीवगानन मिजि (प्रवीलू जागीय शानः ॥

नागभामकः श्रु॰ त्रिविक्षितिस्मयः।
उम्रावक्षिणःयथा। सक्षद्वायक्षमध्याः
स्वाज्याः वात्रय्यः स्वाची। त्रानिः
स्वाजः कानी वक्षा १य॰ नागभा
सकः॥ ইতি त्रिक्षिक्षत्री॥

नाभभूष्मः भू भूषागवृक्षः॥ नाम-क्षितः॥ हम्भकः। ইতি মেদিনी। नाशभूष्मकना जी क्याओ। ইতি ब्राजनिर्यणः॥

नागशून्निका जी सर्ग्यी। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ।।

নাগপুষ্পী জী নাগদমনী। ইতি ভাবপুকাশঃ॥

নাগকলঃ পু• পটোলঃ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

नागवद्भः भू• अथथ्यवृक्तः। ইতি मद-**टिन्द्रका !! नागाना॰ वाश्ववण्ड !!** নাগবলঃ পু• ভীমসেন:। ইতি ত্রি-**কাণ্ডশেষঃ॥ হস্তিতুল্যবল**বতি ত্রিঃ। नागवना जी वनाशुर्खनः। (गातक् চাউলিয়া ইতি গুলশবরী ইতি ক-करी ইতিচ ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। গাৰেৰকী ২ ঝসা ৩ হুম্বগবেধুকা ৪ । ইত্যমর:।। গাক্ষেহী ৫ গোর-🕶তণ্ডুলা ৬। ইতি ভরতঃ।। ভদ্রে: मनी १ थर्मगन्ता ৮ ठजुःशना २ म-হোদ্যা ১০ মহাপত্রা ১১ মহাশা-था ३२ महौंकला ३० विश्वरहवा ३८ অনিষ্ঠা ১৫ দেবদণ্ডা ১৬ মহাগন্ধা ১৭ ঘণ্টা ১৮। অস্য গুণাঃ। মধুরা-इष् । कवायषं । एकद् । एकषं । কর্ত্তি লগ্ধ বাত বুণ পিত নাশি-व्या देखि दाजनियंकः॥ दिषद्रः

वागुवादः। व्यादः। शाहिदः। कृषु की। कय त्रार्थम् हिंउद्यः। हेजि त्राक्षवल्लाः॥

নাগভূৎ পু• ডুঙুসর্পঃ।ইতি ত্রিকা-গুশেষঃ॥

নাগমল্লঃ পু॰ ঐরাবতঃ। ইতি **শদ্**-রত্নাবলী।।

নাগমাতা দ্বী মনঃশিলা। ইতিছেমচন্দুঃ।। মনসাদেবী । ইতি শদ্ধরত্নাবদী ii

नागमातः श्र॰ किमाताकः। ই जि किराश्रम्भाः॥ शिख्यमात्रकि वि॥ नागगिः की श्रम्भातिगापि श्रिकका-श्रितिम्भाः। त्रहेकाठे हे जि जागा। ज्रथायः। नागाक्षमा २। हे जि कोगितः॥

নাগর॰ ক্লী শুগ্রী।ইত্যনরঃ॥মুস্তা। ইতি মেদিনী॥ রতবন্ধঃ। ইতি বিশ্বঃ। নাগরদেশীয়াক্ষরঞ্॥

নাগরঃ পু• দেবরঃ।ইতি ত্রিকাও-শেষঃ । নাগরকঃ।ইতি শব্দরত্না-বলী ।। বিদপে নগরোন্ডবে চ ত্রি। ইতিমেদিনী ।।

नागतकः भू॰ त्रिवक्षवित्यवः।यथा। ध्रम्भूत्वाभिति शिषात्याविष्क वयः वित । श्रीया॰ श्या कता जा क वस्ता नागतका मंजः॥ ই जित्र जिमक्षती॥ नागतका॰ क्री मिन्मृतः। ই जिल्मा-हन्मुः॥ नागमा (नागिजकः॥ नागत्रवनः श्र॰ नागतम्या। ই जि ताक्ष निर्मण्डः॥

नागत्रकः भू॰ वृक्ष विश्विकः। नात्रकी

त्वितृत्र गाष्ट्र इंडि ভाषा। इंडिंग्रदः

।। उद्भग्रीयः। नात्रकः र नार्यकः

काशतः ८ विज्ञावदः द नागः

क्कः ७ ठका विवानी १। इंडि स्वर्यः

त्वावनी ॥ उद्यक्षः क्वाविकः। जूतः

जिव्दः। विशादक क्ष्कद्दः। पूर्व्यत्रवः

। जार्यदः। देवस्यपूत्रवः। व्यादः

वार्य विनानिष्कः ॥ उद्य दक्षः। इंडि

तालवन्ना कार्यः। वार्यस्व व्याव्य हेंडि

तालवन्ना हाः।

নাগরসূতা জী মুক্তাপুভেদঃ।নাগর

মৃতা ইতি ভাষা। তৎপর্ফাযঃ।

নাগরোপাংনাগরাদিঘনসংজ্ঞকা

চক্রান্ধা ৪ নাদেখী ৫ চ্টালা ৬

পিওসূতা ৭ শিলিয়া ৮ ব্যথাদ্ধী

১ কছকহা ১০ চাক্রকসর। ১১

উছটা ১২ পূর্ণকোঠসংজ্ঞা ১০ কল্লাপিনী ১৪। অসার গুণাঃ। ক্রিক্র

ष्। কটুত্ব। কষাযত্ত্ব। শীতলত্ত্ব। কফ পিত্ত জ্বাতিসারাকটি তৃকা দাহ ভুম নাশিত্বক। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ।।

নাগরাজ: পু॰ শেষ:। অনস্ত:। যথা।
পাতালে নাগরাজ• ভুজগ যুবতযো
যস্য গায়ন্তি কীর্ত্তি•। ইতি করি-কল্মফমঃ।।

নাগরান্ত্র• ল্লী শুগ্ঠী। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

নাগরী জ্রী সু হী।ইতিশব্দ নিদুকা।। বিদক্ষানারী। যথা । হস্তাভীরীঃ শর্কু সাকথ সম্বতো নাগরীভিঃ। ইত্যুজবদ্তঃ।। নাগরপত্নী।। নগর ভবে ত্রি।।

নাগৰুকঃ পু॰ নাগরঙ্কঃ। ইতি শব্দ রত্নাবলী।।

নাগরেণুঃ পু॰ সিন্দ্র•। ইতি রাজ নির্ঘটঃ॥

নাগরেষকঃ ত্রি নগরসম্বন্ধী। নগর স্যাব নিতি ফেষ পুত্যযাস্তাৎ সার্থেকঃ।।

নাগলতা ত্রী লিস্থাইতি ত্রিকাও শেষঃ ।

নিসিল্।কঃ পু: পাতান্ত।ইত্যারঃ

নাগবল্লরী ত্রী নাগবল্লী। ইতি ভাষ-পুকাশঃ।।

নাগবল্লিকা জী নাগবল্লী। ইতি রহ্নালা॥

নাগবল্লী স্ত্রী। ইত্যনরঃ।। অন্যাঃ পর্যায়া স্তাগূলবল্পীশক্ষে গুণাশ্চ তামূলশব্দে দুপ্তব্যঃ॥ সা চ विवाहीस्वाहीि नाना शुभक्ष शान (छमाप्तव छिमा । अका लाउवा क्रम म्ट्या वित्मवामाना কার• যাতি কাষে গুণে চ। এবাটী মধুরা তীক্ষা বাত পিত্ত ককা<mark>পহা।</mark> রসাচ্যাচরসা ফচ্যা বিপাকে শি শিরা মৃতা ৷৷ স্যাদম্লবাটী কটুকাম্ল তিক্তা তীক্ষা তথোষ্ণা মুখপাক ক্তরী। বিদাহ পিত্তাসু বিকোপনী চ বিষ্টম্ভদা বাত নিবৰ্হণী চ :11 সপ্তনী নধুরা তীক্ষা কটু ৰুক্ষা চ भावनी। अन्यापताथान रता कि কৃদ্বীপনী পশ্ব। ॥ অন্যায়। গুস্থাগরে কণ্ডশিরা প্রসিদ্ধা তৎপর্ণ চূর্ণাতি রদাতিকচ্যা। সুগন্ধি তীক্ষা মধু-ज्ञािङ्ग्रा नंनीभनी भू खुक्ता ह वन्ता।। विद्यप्तमी वकु मूगिक काति भी ॥ नाङ्गा याञ्चनता मूजीक मृज्या

क्टा हिमा हार नू शिखापुक रहा मुरीशनकती वर्णा मूथाया हिनी । खी मोजागा विवर्षिनी महकती ख्डिया महा वहाजा ख्या थान विवस्तिह कथिजा मा माहा-वि जू खिजा। अस्त्रिश्व हिन्दा नाम क्यारगका कर्टू ख्या। महाशक्या कथेमा शिख हृद्वाक नामिनी ॥ दिवरीया कर्टू खीका हृहा ही हिर्मित्वा ह मा। क्य वाक रहा क्टा कर्टू हीशन शाहनी ॥ देख वाक निर्मिटेश

নাগবারিকঃ পু॰ রাজহ্বজন্তা। হক্তি-পঃ ॥ গণস্থরাজঃ ॥ গরুডঃ ॥ ন্যুরঃ। ইতি নেদিনী ॥ নাগবীটঃ পু॰ টাঙ্করঃ: ড্যাকরা ইতি খ্যাতঃ। ইতি ত্রিকাও শেষঃ॥

খ্যাতঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড শেষঃ।।
নাগবীথী জ্ঞী অখিন্যাদি নক্ষত্র ত্রষ্
ধাটিত গুহ স্থান ত্র্যান্তর্গতোত্তরস্থানস্থ পথ বিশেষঃ। যথা। সর্ব
গুহার্শা ত্রীণ্যের স্থানানি দ্বিজ্ঞসন্তন্দার। স্থান জারান্নবং মধ্য তর্থরাবত মৃত্তরং। বৈশ্বানরং দক্ষিণতো নির্দিপ্ত হিন্ত তত্ত্তঃ। তদেব
মধ্যমোত্তর দক্ষিণ নাগ্ ত্রবং প্র-

নাগাখ্য

তে कि विशे विश्व विश्व

নাগশুণ্ডী স্ত্রী ডঙ্গরীফল । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

रयाच्जायः ॥

নাগসম্ভব জ্লী সিন্দূর । ইত্যমরঃ ।। নাগসুগন্ধা জ্ঞী ভূজকাক্ষী। সর্পসুগ-ন্ধা। ইতি ভরত ধৃত স্বামী॥

নাগস্তোকক• ক্লী বৎসনাভঃ।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

ু নাগস্থোতা দ্রী দন্তী ।৷ নাগদন্তী । ইঙি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

নাগহনুঃ পু নথ নান গদ্ধ দুব্যু । ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

नागर्खी जी वक्षाकर्त्वार्की। इंकि त्राजनर्यकः॥

নাগাখ্যঃ পু॰ নাপকেশরঃ। ইতি

নাচিকে

ত্রিকাওশেষঃ।।

नागाक्ष्मा की नागग्रि: 1 हैि किंग्युत: 11

নাগাঞ্জনা ত্রী হন্তিনী।। নাগযঙ্কি:। ইতি মেদিনী।।

নাগাধিপঃ পু• অনস্তঃ। ইতি ছেম-চন্দুঃ॥

নাগান্তকঃ পু॰ গৰুডঃ। ইন্ত্যনরঃ॥ নাগারাতিঃ পু॰ বন্ধ্যাকর্কোটকী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

नागानातुः जी कृष्ठजुशी।ইতিরাজ-নির্ঘটঃ॥

नागाननः श्रृ॰ गरूजः। ইতি হারা-वनी ॥

নাগাস্থ• ক্লী হস্তিনাপুর•। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

নাগাস্থা স্ত্রী লক্ষণাকনঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

নাগী জ্রী নাগপত্নী।ইতি মুশ্ববোধণা। নাগোদ॰ ক্লী উদর্ভ্রাণ । ইতি

व्यव्युः ॥

नारगामतः क्ली जेतकानः। इंडि हाता-वनी ॥

নাচিকেতুঃ পু॰ অগ্নি:।ইতি ত্রিকান্ত-

নাটঃ পু• নৃত্য় । দেশবিশেষঃ। কর্ণাটক ইতি খ্যাতঃ। ইতি শব-রত্নাবলী।।

नार्धकः ज्ञी शर्श भर्श शुंक् छ। या भय शुष्ट विष्मयः । তৎপर्यत्रयः । মহারপক•২। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ ।। তস্য লক্ষণ যথা। নাটক খ্যাত वृतः म्यार পঞ্চান্ধ সমন্তি। বিলাসৰ্দ্ধ্যদি গুণ বৎযুক্তণ নানা বিভূতিভিঃ ৸ সুথ দুশ্ব সমুজূতি नान। तम मनविजः। शक्षां किका सम পরা ভত্তাকাঃ পরিবীর্ভিতাঃ ॥ পুখ্যাত বংশে৷ রাজয়ি খীরোদা-**खः পুতाপবान्। मिरवता २थ मिन्त्रा** দিবেয়া বা ওণবাদাযকে। মতঃ ॥ **এक এব ভবেদকী শৃক্ষারো** বীর **এব বা। অঙ্ক মন্যে রসাঃ সর্বে** কার্য্যণ নির্বহণে হজুত ।। চত্ত্বারঃ পঞ্চ বা মুখ্যাঃ কার্য্য ব্যাপ্ত পূ क्षाः। (गाभूषाग् नगागुक वक्षनः তদ্য কীৰ্ত্তিত। ইতি সাহিত্যদৰ্প-1º 11 # 11 व्यभिष्ठ । नाउंकः महाट পুকরণ ব্যাযোগো ২ক্ক তথা ডিমঃ **ा चैशाम्भः शुरुमनः जानः ममद्रका**-त्रकः ॥ धीषी जि जत्र जः श्राह नारहे 🛒

क् मण नंशकः। नाविका (शुक्रणरेक्द ত্যেটক শাক্ট তথা।। গোপ্ত সংলাপ শিল্পানি ভানী হল্লীশ রাস কৌ। উল্লাপক জ্বীগদিত পুস্থান নাট্যবাসক"। দুর্ব্বল্লিকা লাসিকা চ কাব্যঞ্চেত্যুগৰূপকণ স্যাৎসপ্তদশ সংখ্যন্ত লক্ষণ ন্তত্ৰ কথ্যতে॥ পুখ্যা তোত্তম নাথক রসময় রাজর্ষি ব্-**শো** खव• जाइ॰ जङ्ग ख्यानिज• वय-मग॰ তड्ड 'भूतानामुगः। जाया-বৈভব সুন্দর শুবিলসন্নানা বিলাস বলঘূতি ব্ৰাপ্ত মংশৰ সন্ধি সহিত मक्षाक् वद्यादिक ॥ जाता ह । एत তানা॰ মনুষ্যাণা॰ রাজ্ঞা• লোকে মহাত্রনা॰। পূর্ব্তানুচরিত। পু-খ্যাতোদাত্ত नायक ।। পুবেশ कवि বিষ্ণস্তাদিভিঃসন্ধিভিন্ননিত । ইতি-হাস কথোন্ত ত সুথ দঃখোদবৈযু ত• ।। यह न्यक मन मधा है नवारिक तनू-ज्विज । नाना विवा**न वीवा**जिः **गर्वमिषा** जित्र जन्म ।। नाना जार द रेम बाह्य नाहेक॰ मूबर्या विष्टुः । কিঞ্চিদ্ৰ বিহীনস্তন ত্যাক্য দাটক ক্চিৎ।। আরম্ভন্চ পুষত্ত্বঞ্চ পুষ্ঠিঃ मस्य व्यव । नियं । ह कनश्राधिः

कलायांग खथांभवः ॥ इंज्यब् भ-**११क े ऋ**ाष्ट्र नाठेरक कार्य) वखनः । সংস্কৃত পুাক্ত ভূত ভাষাপুড়-শিকা গিরঃ 11 নাটকে নিয়তাঃ শন্তা এষা ভাষা রসাবহা । ভাষা বিভাষা ভেদেন প্যাকৃতত্ত্ব চতুৰ্দশ ।। মাগধ্যবন্তিকা প্রাচ্যা শৌরসে-न् अर्वनागधी। वाङ्गीका मार्किगाज्या-শ্চ ভাষাঃসপ্ত চ পুাকৃতে॥শকারা-ভীর চাঞাল শবর দুবিডৌডুকাঃ। বনৌকসী বিজাতীনা বিভাষাঃ স ध कीर्खिञाः॥रिकरक्यी**लो**त्रस्मनी ह काकी भाकान मागशी। माविडी भा-ঞুদেশী চ ভূতভাষাঃ পুকীৰ্ত্তিতাঃ॥ বৈদভী সাগধী নাটা কাম্বোজীচোপ-না গরী। পাঞ্চালী ষ্ডপভু•শ ভাষাঃ मु (प्रम जिम्जः॥ (म्वज) म्मना छक कर्ज्वा नार्वक यूरेषः। ज्ञाजि मर्म নান্ত বা তেপি দেবৈঃ সম্ মৃতাঃ ॥ উদাহরণ । মুরারি করে রনর্ঘরা-**য**ব• ভবভূতে ৰুত্তরচরিত• কালি-**मान्**ग्राভिक्कान्यकुडन(क्षेठ्रानि । ইতি मेरिक नक्षा । ইতি मधीज-मारगामतः॥ नार्हेनः शुः कामार्थाञ्च शर्वछ (छन्ः।

यथा। वेशानाः नार्हें के रेशां स्ट्रें क्त्रमा नश्भूमः। निजाः वमिक ज्विश खासीना जू शार्तको ॥ इंजि का निकाशूताः।। नर्खक वि। इंजि वाक्रियां ।।

নাটাসুঃ পুণ তরমুজঃ ৷ তৎপর্য্যায়ঃ
৷ চেলালঃ ২ চিত্রফলঃ ৩ সুখাশঃ ৪
রাজতেমিষঃ ৫ লতাপর্নসঃ ৬ সেদুঃ
প ৷ ইতি ত্রিকাগুশেষঃ ৷৷
নাটারঃ পুণ নট্যা অপত্যং ৷ ইতি

मूक्षत्वाथ वताक त्रणः॥
नाहिका खी नाहिक विष्णयः। यथा।
देव निकी वृद्धि मः युद्धाना त्री भित्रखनाष्ण्या। ह्यू भित्र हीना ह नाहिका नृभनायका।। ह्यु भृष्णात वहना।
ठठः मत्रा देव निकी मयी। मृष्ठीयः
देव निकी वृद्धि नं मतामना त्रमा भुषा।
।। नश्क्षत कत्राघाठ माद्यः भद्धाठि
कन्ति। नामताः विहेः भीने मर्षः
मक्ष्या वामत मक्ष्यः॥ प्रष्ठः भूत्र
हता ताद्ध हैय दिएत। विम्यकः।
प्रव ভार्यत कित्रा ताद्धा विम्यकः।
प्रव ভार्यत कित्रा ताद्धा विम्यकः।
प्रव ভार्यत कित्रा ताद्धा विम्यकः।
कन्ताः (प्रवी वृद्धाः यियाम् विष्णः)
कन्ताः (प्रवी वृद्धाः यियाम् विष्णः)
कन्ताः (प्रवी वृद्धाः यियाम् विष्णः)

शिठः शुद्धः ॥ यूवा ख्रिशि शुया निज्ञः काम माठदि । कन्णा
भिरु शद्विषय विषयाः प्रविद्धाः
महियीः छान विद्याः । এक्जू ।
ठ्यु जिद्देश कट्शाम् । अक्जू ।
नायकः । यट् किनिकी द्रमशुप्यः
नायकः रमव नार्विका ॥ शूर्वकमामाठिक कमानुद्वावनी नार्विका । अव मन्राम्द्राः । इठि मन्नी उन्

নাটেযঃ পু• নট্য অপত্য• । ইতি " মুধ্ববোধব্যাকরণ• ॥

নাটেরঃ পু॰ নটাসুতঃ। ইতি হেম-চন্দুঃ!!

नाहें। क्ली नृज्य गीज वान्य । जल् शर्यायः। जियं जिकः २। इज्य नवः १। नहोनाः समूरः। इजि व्याक्त नः १। क्षा नाहेग्र स्र नक्ष जानियथा। स्र ना भा नाहेग्र स्र नक्ष जानियथा। स्र न्या भ धनिष्ठा २० श्र्यः ५ इस्र ५० हिं जो ४८ स्र छो ५८ स्त प्र । रे में जिया २८ स्त वजी २१। इजि स्म जिया २८ स्त वजी २१। इजि स्म जिया १। क्षा नाहेग्र क्षा यथा। स्व सिक् जियान श्र हित्र जान्य निक् स्मान्य स्ट स्न वाल्य कु निक जियम स्ट स्न नाम स्ट स्न वाल्य कु

। नै॰গীতাযুত চিত্ত বৃত্তি ভরণা বশ্যা ভবন্ত্যক্ষনা জ্ঞান প্ৰক্ৰির সে বযেতি কথিত নাট্য চতুৰ্গদ ।। যো য**স্য দ**ৰিতো ভাবঃ **স ত**• নাটে**্** নিরীক্ষতে। অতঃ সর্ব মনোহারি नार्गेऽ॰ कम् न ब्रक्षक॰ ॥ 🟶 ॥ ना-ট্যেৎগত্তি র্যথা ৷ ইহানুশ্রয়তে বুন্ধা শক্রেণাভ্যর্থিতঃ পুরা। চকা-রাকৃষ্য বেদেভ্যো নাট্য বেদ**ন্ত প**-क्षम ।। **উপবেদে। १**थः विमाण्ड ठ-দ্বারঃ কথিতাঃ মৃতৌ। তত্ত্রোপবে-দো গান্ধর্ব: শিবেনোক্তঃ স্বয়ন্ত্রবে।। তেনাপি ভরতাযোক্ত স্তেন মর্ত্যে পুচারিতঃ। শিবাব্ধযোনি ভরতা खमारम् **পু**याबकाः ॥ ইতি **म**-क्रीजनात्मामबः॥

নাট্যথর্মিকা স্ত্রী দর্শনার্থ শাস্ত্রোক্ত-নাট্যং। যথা। গীত বাদ্য নৃত্য ত্রযং নাট্যং তৌর্য্যত্রিকঞ্চ তৎ । সংগীতং প্রেক্ষণার্থে হিমিন্ শাস্ত্রোক্তে নাট্য-ধর্মিকা।। ইতি হেমচন্দুঃ।। নাট্যপ্রিয়ং পুং শিবঃ। ইতি /হম-

নাট্যপ্রিয়ঃ পু• শিবঃ। ইতি /হম-\* চন্দুঃ॥ নিট্নোলা জী পালাদ্বাৰ সমাপ্ত-

নিট্যশালা জী প্রাসাদ দার সমাপ-পৃহং। নাটমন্দির ইতি ভাষা।

यथा। नार्ट्रभाना ह कर्खवा बात- " मिन न्यान्या। ইতি गरू प्रवागः नार्टे । विकास का भू नार्टे । সতু অপ্টবস্থি পুকারা যথা। সিদ্ধি-র্মনোরথো ভুেশো নিৰুক্তিশ্চ বি-শেষণা গুণাভিপাত উদ্দিষ্ট বি-চারপাপ্তি নীতবঃ ॥ गेजिপুাবঃ পরীহারে। গর্হণানুন্যৌ তথা। অর্থাপত্তিঃ পুসিদ্ধিক দাক্ষিণ্য পূিবভাষণ ॥ অভিমানাখ্যান গর্ব। হর্ষ ক্লোভোদ্যনাশ্রযাঃ। প-শাভাগ: স্হাক্রনৌ কপটঞ্চ পুবর্ত্তন ।। উত্তেজনঞ্চ দৃষ্টান্তঃ শো-্ভোদাহরণে অপি। সম্পায়া १-ক্ষর সংঘাতো বিমলোক্তিঃ পদো-ह्रयः ॥ भरीवाता श्नुकिमिक वक्रमाध्यकायको । (भाष्माइ-न जूनाउकं উপপত্তान् उक्ता ।। निरवहनक जाश्याः साह्यं शृहाः । বিশোষণ । অভিজ্ঞান ধ্ সাৰূপ্য खनकीर्जन मुक्तयः ॥ विकर्मप्रय का-विশया ज्या एक निम्मन । माना লেশকর্স কেপ সমীহ। 🕮 বিসপ काः ॥ উল্লেখ উপনিষ্ঠা চেত্র বঙ্টি নিতা অমী। অলকারা নতা 🏳 রভ: ॥

निज्यः नांदेकाषियु सूत्रिजिः॥ इंदि मनी उपायापतः॥ नार्हितंकिः जी नार्हकं विषयक वहः। निहाना कर्य नाहें। उत्वाकिः ना-ট্যোক্তিঃ। ইতি ভরতঃ॥ তদ্মপা। वार्य्या कुष्य मार्थ । कि धिय मार्थ -রাজেতি। সথী হলেতি। নীচ হণ্ডে ইতি। চেটী হঞ্জেইতি। বা-भिन भाग्रेशू (अठि । दाक्रमानः রাষ্ট্রিযেতি। সমান হংহো ইতি। রাজান দেবেতি। সার্বভৌম ভ-উতি। ভণিনীপতি মাবুৰেতি मायाभाष्ट्र। इंडि मङ्गीजनामा-দর:।। গণিকাযা• অজ্জুকা। বিদ্বতি ভাবঃ। জনকে আবুকঃ। সমারে যুবরাজ ভত্রিরকৌ।রাজ্ঞি দেব ভটারকৌ। রাজসুতায়া**ণ ভর্দা**-ব্বিকা। কৃতাভিষেকাদা বাজ্ঞ্যাণ पिवी। ইতরাসু রাজ্ঞীযু ভঙ্টিনী। অবধ্যোক্তো অবুন্ধণ্য । মাতরি व्यश्व। वानायाः वामुः। व्यार्थः মারিষঃ। জ্যেষ্ঠাভগিন্যা• ऋतिकृ । निष्ठायाः निर्वरुषः। इञ्जब्रः॥ नाष्ट्रि जी नाषी। इंडामत हो करेंग

্যেড়িক• ক্লী কোলশাক•।ইতি ভাব-প্ৰকাশঃ॥

नाफिका जी बहेक्कनः। घिष । इंजि ভাষা। তৎপর্য্যাবঃ। সাধারিকা ২ ঘটিকা ৩। ইতি হেমচন্দুঃ ॥ 🟶 ॥ যটিকাজ্ঞানোপায়ে। যথা। নিমি-ৰোমানুষোথো ২য় মাত্ৰা মাত্ৰ পু-মাণকঃ। তৈঃ পঞ্চদশভিঃ কাপ্তা ত্রি•শৎ কাষ্টা স্তথা কলা।। নাডিকা তু পুনাণেন কলা দশ চ পঞ্চ। **डिमा**निनासुमः मा ठू भवानाई वर्यापन ॥ रून मारियः क्उहि मुां हर्जिक कुत्रकूरिनः। भागाधन शु-भारतन यक शृष्ट्य मः मृजः ॥ ইতি বিষ্ণুপুরাণ ৷৷ 🕸 ৷৷ নৈমিত্তিক লয• शुशक्षियाभित्रयामि कत्मन शु-থমাংশাক্ত মেব কল্প পুমাণ মনু-স্মার্যতি নিমেষ ইতি সগুভিঃ । गाविव गावः भुगागः यम्। একমাত্র লেম্ব্রুকরোচারণ কাল স্'মিতে৷ হি নিমেষঃ ৷ নিমেষ काल जुला। हि भाजालपुक्रत्रक ৺য়নীতি বুন্ধাড়োক্তেঃ ॥ নাডিকা-क्ट्रिर्नाभाग मार । उचात्तति भारती। अञ्चन उच्चातन रहे

যতে অনেনেভুগমান পাব। অ-ৰ্দ্ধেন যোগে ত্ৰযোদশ সাৰ্দ্ধানিশে-ত্যৰ্থঃ । উন্মান ৰূপেণ<sup>্</sup>ঘটিতানি जार्ष दारण পनानि जा नाडिका । সার্চ্চ দাদশ পল তানু নির্মিত পা-ত্রেণ সা নাডিকা জ্ঞাতব্যেত্যর্থঃ। कि॰ शुन्। वे जिल्लाब॰ कार्या **उ**-मार गोशायन भूगायन दनशृश्ख সংমৃত ইতি। সার্দ্ধ দাদশ পল कलन हि नागध (मण्युङ्ः शूर्य। । তং পুমাণ পাত্ৰ কাৰ্য্য মিত্যৰ্থাৎ সিদ্ধং। ননু তথাপি পাত্রেণ কথং নাডিকা জ্ঞান ক্রিয়াপরিছেদ্যত্ত্বাৎ কালস্যেত্যা**শ**স্থ্য ক্রিয়া **সিদ্ধ**য়ে পুস্থাদি বিশিনপ্তি হেমেতি। মাৰঃ পঞ্ভঞ্জঃ। হেশে। মাধৈ শততুর্ভি শ্চতুরঙ্গুলেন শলাকা ৰূপেণ রচি-তৈঃ কৃতি ছিদু।। এতদুক্ত॰ ভবতি সাৰ্ছ দ্বাদশ পল তামু ময় মাগধ পুস্থ সংখিত মৃদ্ধাবিত পাবে চত্ত-র্মাষ চন্তরঙ্গুল হেনশলাক্যা কৃতা-ধশি দু• জলে স্থাপিত তেন ছিদ্লেণ , शावञा कारणन भूग्रा इंगिन् कारना नाफिरकि । उथाव भूके भ धारणार्क्ष शालामानः हखिन्छ हु-

केक्ट्रेन्:। वर्गकारेयः क्जिह मु यात्रः ় পুছ নী গুত নিতি।ইতি তটী कायाः श्रीध्वसानी ॥ नाफिरकनः श्रु नातित्वः। इंछामत्र-রটীকাষা• ভর্তঃ ৷৷ साफिरीत सी निर्दिश्वन । निनी देखि ্জারা। ইতি হারাবলী। बार्डिकमः शु॰ सर्गकातः। ইত্যমतः॥ नाष्टिश्वयः श्रू जी नाषीशानकर्छ। ইতি মুধ্ববোধ ব্যাকরণ।। ৰাডিপত্ৰ ব্লী নাডীচ । ইভি नद भाना॥ नाछी स्त्री नानः॥ दुशास्त्रः॥ नित्रा ा। श्ख्रुद्धी ।। कुरु नव्यंता ।। बव्कन-কালঃ। ইতিমেদিনী।। ত**্স**র্য্যয়ং। ধননিঃ ২ সিরাএ। ইত্যার: দ্বাডিঃ 8 नाविः ६ नावीं अध्यनी १ निकार ।ইতি ভরতঃ॥ ধরণী ৯ ধরা 🔎 ড-ক্ষনী ১১ জীবিতজ্ঞা ১২ সিন্দ। ১০। ইতি क्राङ्गनिष्ठेः।। 🗱 ।। काय नाजी

বুকিবিধা। একা বাযুবহা। অপরা इ दम वास्नि। ज् শিহার বাহিনী। ইতি ভরতঃ না তুগর্ভহ বালকন্য মণ্ডভিঃ

নাডীক্রম মাহ। সার্দ্ধ ত্রিকোট্টের নাড্যে হি ছূলাঃ সূজাণ্ড দেহিনা। नां कि कन्त निवर्षां हैं। खिर्वार्ग्ष्वं मधः ছিতাঃ॥ দ্বিগুতি সহ্সুদ্ধ **ভালা**ণ **ज्नाः পुकी**र्खिजाः । দেহে धमनिता थन्त खाः भाष्यन्तिय स्नावशः। তাসাঞ্চ সূত্র শুবিরাণি শতানি সপ্ত मु । खानि रेव त्र मकृषम त्रमः वक्षिः। আপ্যায্যতে বপু রিদ । ছি নৃণা মমী-যা মৃ**ন্তঃ সুবন্ডি** রিব সিন্ধু শতৈঃ স-মুদুঃ॥ আপাদতঃপুতত গাত্র মশেষ भिया मामछकामिश ह नां श्रिश्नः **इ**टिन । **এতন্দক** हेत् इस्र हरून **নজ কায নৃণা নিহু লি**া শত সপ্ত-क्ति॥ 🛊 ॥ मथमाजानाः नारा हजू-র্মিকা বিশ্শতিঃ সুটা ভাসাং একা পরীক্ষণীয়া যা দক্ষিণ কর চরণ বিন্যস্তা। চতুরধিকেতি তদুক্ত°। তি-र्याक् कृत्या (पश्जाः नाजिपान वास्य वकुः उमा शृहकः वासा। উদ্বে ভাগে হন্ত পাদৌ চ বামৌ ভ-म्यापुष्टां में मिर्गा रही हैं। ।। बाकु नाजी धर जन्य शुरहे नाजी ।।। शक शक करत श्रेष्ट्र वाम रेग र्वि । इंडि मुचरवार्थः॥ 🛊 ॥ ितार्रें जागर्याः ॥ चेनाः मृद्ध

खरकि अकेम्या अव भाराम्य भारा मार मिक्तिपिकि शाक्षात्। श्रूक्या भुया। यहूकः। वात्म ভाग्य जिया 'रराजा माडी श्रुव्यकु मिन्सा हैंजि প্রোভো ম্বাদেবি সর্ব দেহেষু দে-हिना ।। 🕾 ।। नत्रु जरूमा जू जी ু .... রন্যতরাকার পুকটিতা ম-(शक्र) शतीका। मान्य नम्याप्त । কৃত্রিমৃস্য ভু পুকৃতিছতা। চরণেতি বামস্য তু দক্ষিণ গুছি পশ্চাৎ পা-শস্থা দক্ষিণস্য তু বামগুছি পশ্চাৎ भार्भ रेष्ट्र अपूर्णामण्या कत्रष्टा कु বক্ষ্যতে॥ 🗱॥ পরীক্ষাপুকার সাহ । সব্যেনরোগধৃতি **সর্পর ভাগভারা** পীড্যাথ দক্ষিণ করা**জু লিকা এযেন।** অনুষ্ঠ মূল মধি পশ্চিম ভাগ মধ্যে ৰাড়ী পুভঞ্জন গতি সতত পরী-क्ष्यः।। गर्वान करत्र। **। तानध्**जि র্গদধারণ মিত্ত্যাপীডনে**কে**তুঃ। রো-গানাণ বাতাদি পিশুন বাষ্নাণ ধার-ণ যথা স্যাত্তথা প্রীড্যেতি কশ্চিৎ । ভাঁগ ইতি সমুদিত ককোণি পর॰ অংকতি পরীকা কালে ৎপি তত্ত হয় ঠিতবে। আগীডেত প্রে क्रमहाश्रीवन बाठामि (श्रीबाभर्॥

বোধনায়। অথেত্যাপীড় নিজন न তু পরীক্ষা কালেপ্যাপীডন হিতিঃ । मिक्स्टि श्रायिक सनदीकाया गन्। वायि याग्रज्य। ठर्कनी न्यामानाभिका गुरुगः। **श**-न्हिरमञ्जूष्ट्र क्षेत्रप्रास्य ज्यागः। मृत्वि তদুক্ত (অঙ্কুণ্ঠস) তু মূলে বা ধন্নী बीवनाकिनी। ভন্যা গতি বশা-षिम् १९ सूथ मृश्यक (महिना ।। পু ভঞ্জন পতি র্যন্তেতি নাড্যম্ভর নি-রাসঃ। সতত মিতি সুস্থ দশাযা-নপি। তদুক্তণ। ভাবি রোগাভিবো-ধাষ সুস্থ নাড়ী পরীক্ষণমিতি॥ 🕸॥ পরীক্ষণীয়মাহ। বাত পিত্ত ক্ষ দ্বন্দৃ॰ সমিপাত স্তথেব চ। সাধ্যা-माध्य विविक्ष मर्बः नाजी शुकान-বেং।। সদিপাত মিতি সামান্যতঃ। সাণ্যাসাধ্য মিতি বিশেষতক্ষেত্য-र्थः। नदीमित्जुजनन्तः द्रागापिक-मिजू। भन शाहा । इंडि नाडी भु কাশে পুথমোদ্যোত: ।। 🚓 ॥ मेंच नाषीकान ममय मार्श्युर्डः क्ष नमाहातः क्जाहात शतिशुरः । तू भाजीनः जुथांजीनः भहीकार्थ मुङ्गा-मत्र ॥ शास्त्रिक शासिक मर्द क्र उस्कुं इंड्राइंड ॥ # ॥ निवि দ্ধকাল থাহ। সদ্যঃ স্নাতস্য ভুক্তস্য कृত্য়াতপ সেবিন:। ব্যাযামাকান্ত **(मह्न्य नम्)** इनाडी न तुष्रु छ ॥ **रि** माजाब ह मुख ह उथा है छान-नान्द्रतः। তथा न द्धायत्विनाषी यथा मूर्गज्रा नहीं ॥ मूरश्च निर्मा कारन ভোজনান্তর ভোজন নধ্যেভোজনা-वनान माख ह। वाछ म्हां कि क्लि क রোগে নায॰ विधिः॥ 🟶 ॥ अथ वाजिति बलाव कम भार । जामी চ বহুতে বাতো মধ্যে পিক্ত তথৈব চ ৷ অন্তে চ বহতে শ্লেমা নাডিকা बंग नक्रन ॥ जानाविजि करकानि পীডিত দিতীয় ফণে। ন বু তজ্জনী নিবেশ ছলে স্থান ভেদস্য স্ত্রাপ্য-वक्रमानवार ॥ ॥ मूच्छा छा-नार्थ मार । जूनजा गमन भागा सहा 'बाइ, प्रयी निता। भारति वास्-ল্যেন। স্বহা পরিতো জাডীস্থহিতা। ৰাস্থানী সুস্থতা ব্যঞ্জিকা চ। তথা । शुन्धः त्रिम मयी नाजी मधारह कृषिजादिजा। नायाद्व शायमान

भग्रामिकानारम्य ॥ स॥ विकासिनाः १ ক্ৰনেণ গতি মান্ধ্যবিভাদৰণতা नाजी हनना निख्वाहिनी। हिना শ্লেঘবতী জেবা মিশ্রিতে মিশ্রিতা **खदर्था वरक्रि वार्या खिर्यप्राम्मा**-ভিরো বহন্তীতি। এব তৎ পুর্কো-পাদিনাবার্ত্তাদি পতি রপি জ্ঞাতব্যা । हशानि वाझ कष् ज्ञानामृष् ह-'क्षमा। श्रिति किनगुनी गननाम-নুল্ণা। মিশিতে মিশুটিছা ভবতি। তেন দ্বিদোষজে উত্তয চিক্লা। সর্বন্ধে সর্বচিহেতি। চপলতা ছির্তযো: সমय (ভদেনা বিরোধঃ ॥ 🗱 ॥ উक् বকাদি সামান্যস্য কমেণ বিশেষ गार। मर्भ इत्नोकामि गणि वरिष्ठ বিবুধা: পুভঞ্জনেন নাডী। পিত্তে চ कांक बांवक एकामि गठि विष्टुः मू-वियः ॥ त्राखर् म मयूताना श्रीता-वक करभाकरमाः। कुंकूरोमि गर्डि॰ शर्ख धननी कंक मः क्जा। आहिन। বাতে বৃশ্চিক গড়ি গোলাৰিক্স णामि नापान शिखं किछिड़े कुणनि कामि अिं। करक गत्र वताक नारि ह दितापुर्ग विविद्धि ।। विवादि ।। विन्दु जगुरिश ।। वन्दु जगुरिश र क्रिजानाम्काया बाया त्रभूतिकः न- क्रिनिने । मूकः मा गर्कि नार्जाः

মুহ তেঁক গতিং তথা বাত পিত্ত ছ-যোজ্তা পুরদন্তি বিচক্ষণাঃ। ভুজ-পাদি গতিকৈব রাজহুণ্স গতিং ধরাং বিভিন্নেশ সমুজ্তা ভাষন্তে তদি-(म) बनाः॥ मथ्कामि गठिः नाजीः मग्रामि गठिः उथा। भिङ द्वारा **अमु**क्ठा॰ शुवपति महावियः॥ #॥ विरायका मन्त्रारः। उत्रापि वा वकारि इंगारीनाक विजुजी गमन वाङामीनाक नमः वसनी नम्ब স্নাধন্তে। সম মিতি নূনোধিকতা নি-द्रामः। कमगछ्रा जू नामाशृष्ः। তথা। লাব তিতিরি বার্ভাক গমন गिमिशाउठः। कमारियम्गा नाजी कराहिहीयुगा जत्वद्या जित्राय भुज-বে রোগে বিজ্ঞেয়া হি ভিষণ্টরঃ। পিত্তক্ষত্যাক্ছ্সাধ্যত্ব মসাধ্যত্ত্ঞ ।। 🛊 । जामानुष्ठः त्रूथनाशुष् मार । यहाय- शंजू भारताजि उहा नाडी छ्या-गण्डिः। छथाहि मूथ माध्य नाजी उद्यानन दूदारा ॥ व्यवस्थः। व्यवहारको नाडी वार्डावन शु-ৰম- বৃতি গতৈয়ৰ বছতি ভতো যথা श्री श्री वापि गडा नजु विस्ति । जिल्लाना विसरी क्ष विजिप्ति भन्। जनाम् निष्रेष्

ষ্যতিরেকেশ ব্যতিরেক:। পুরুষ্ট ম-নৈঃ। নাডী কথা কাল গতি স্কবাণাণ পুকোপ শাস্ত্যাহিভিরেক ভূবঃ॥॥॥ ज्यानाथ क्ष मार । मन्तः मन्तः निश्वित निश्वित व्याञ्चल व्याञ्चल वा ছिजा व्हिजा वहिंठ ध्यनी बाठि नामक र्षा। निज्यः ज्ञानार मनिज भून द्रशाक्रुनि॰ न॰म्म्रामा जारेव রেব॰ বছবিধ বিধৈঃ সনিপাতাদসা-र्गा। मन्तः मन्तः मूर्वन् कुरेः अशु-খর মিতি বাবং। শিথিলেতি স্থল মুতি **ৰূপ•।** ব্যা**ললে**তি ত্ৰন্ত ব্দিত-खठः। वा भयः मगूहरम्। हिद् ছিত্বেত্যাবৃন্ধ্য চ তদুপৈৰ গতিঃ। नाम नम्भन । शह् ि कमाहिमाडी ম্পান্দাপি ন সম্ভাব্যন্ত ইত্যৰ্বঃ। সূন্ধেতি যদি লভ্যতে তদা তথৈবা-निक्र श्रायः इति मन् । मृत्र मृत्र जनार মুলতি কাদি তত্ৰ ন স্পন্দত ইত্য ৰ্থঃ। তদুক্তং। হস্তি চ স্থান বিচ্যুতেতি কিঞ্চিৎ মুরভীতি জ্ঞাপি। গুন त्रभीिक कियहिनस्यन अनुनी मङ्ग िनी मृन (भव भिरंज)व को भे किई ভাগেপি শীতব্ শীতবে জা তা

निद्धाः नाना विध गठि रामः छमः म्जू। न भुष्णयः ॥ मरहजाभयाक्ष পিক্তাদি কৃত তাপ নিরাসঃ।শীতত্ব ইত্যাপি মহেতি সম্বধ্যতে। তথা । जिलाक नामाउ नाडी कालिशि निक्ता। निक्ता ज्लाम् नामान्याज्ञाववजी । वजीनाताती रुख शामामि (यमामिना निम्मान) बग्रा८॥ তথা। পূর্ব পিত্ত গতি। পুভঞ্জন গতি দ্বেঘাণ নাবিভূতী সম্ভান ভুমণ মুহু বিদ্ধতী চক্ৰাধি ৰচা মিব। তীবুত্ব দধতী কলাপি ণতিকাণ সৃষ্দ্র মাতবৃতীণ নোসা-भा भगनी वमि जूथिया नाजी गिठि छाःनिनः।। ययमर्थः। शूर्व मिठि ৰুম ৰিপৰ্য্যয়ে পিভাদি গতিমতী• বার বার মেব ক্রমেণ চক্রোপরি-ज्ञाम ज्ञाना भिष्। जथा जीवृष् मिछ-न्ययत्न । धवक कमारि अयुत्र देशस्त्राना । তথোজরোভর কৃশত। স্বাপাদয শীতি বিশিষ্টো হেতুঃ। তথা চান্যত্র যোতু ছোচ ছিক্নাত্যন্তা যাচেব মা'-म हास्टिनी या ह मृत्या ह वकाह उ

कमाविषि छित्र। श्रुनिधारनरेनेक गम्यान न्यन्ता ह। मा अवाहिनी মা সাহার ইব গতি মতী লভডপুা-যেতি। তদুক্ত না পেন লগুডাকুট্রিঃ । মাংসেৰ সমং বহতীতি ন যুক্ত তদ্ৰ-भ भित्रक्काभक भुकात्रम् । नुकद्राधा इयमिन विभिष्ठ (वाधनाय । या ह সূজা চ বক্কা চেতি পৃথগিৰ বাক্যা-স্তর মিতি।। # ।। অসাধ্যত্বাপবাদ-মাহ। ভার পুবাহ মূর্ছা ভয শোক পুনুখ কারণামাডী। সণমূর্ছিতাপি গাঢ় পুনরপি সা জীবিত ধরে ॥ চিরতর বহুল ভারোদ্বহনেনবাবিষ-त्वग शाजा वाशि कथित पर्मनापि कनिञ मूहरा वा बाक्तमाहि मन्दर्भ-नामि अयन वा शू आमि विवर कनिक শোকাতিরেকেণবাস•মূর্ছিভাপি অ-তিমিশীন্দাপি। গাচমিতি সূতরাণ कार्मापि यागिभी जुर्धः। भूनति जि माध्राजाः याजीर्थः। छातानाः तज्रा-দীনা পুৰাহ ইতি ন যুক্ত ভয শো-करगाः भ्यविधानारः। भुमूर्यक्रानम হেব্ডরাভিধান। তদুজনা শতিতঃ শন্যধ্যা বিদু বুধাঃ । অভুচে। ক্সিন্ধিতা ভেদী নষ্ট শুক্রণ গো নরঃ। ক্ষতোপুচেতরা পৃথগিবোন্নভা বা

নাড়ী

্কারণ ॥ পভিডঃ উচ্চাদি**তঃ সন্ধিতঃ** অস্থ্যাদি সন্ধানেন সংহিতঃ ভেদী षञीगातवान् निष्ठे भूटका यक्का दि-विधासा श्लासाज्ञानुमानः भागाजि নাবভরতি। কারণ পুশগুক্ত তত্ত-দেব। অন্যত্রাপি। তথা ভূতাভিস ঞ্চেপি ত্রিদোষ ব্**দুপন্থিতা। সমাঞ্চা** বহুতে নাড়ী তথাচ ন **ক্রম**•গভা 11 অপনৃত্যু ৰ' রোগা**স্থা নাডী তৎ স**-দিপাত বং।ভূতাভিষঞ্চে তথা ভূত সামান্যভিষকে চ দেবজুষ্টাদৌ না **টা সন্নিপাত ধর্মশালিনী উপস্থিতা** । আপাতত এব ভবতি ন তু তৎ ফলপুদা।ভেদদাহ। সমেতি বাত পিত্ত ক্ফ স্বভাবক্রম বতী তথাক্রম• ব্যতিক্রমণ ন গতা। তস্মাদের অপ-মৃত্যুঃ অপগতো মৃত্যু ধন্যাঃ সা তথা-পির্মার্থতঃ সদিপাত বদপি সন্নিপাত জন্যান স্যাৎ ইতি। তুদু-ক্ত'ায়স্থান খীনেশোকেচ হিমাকা-🕫 হ নিৰ্গদাঃ। ভবন্তি নিশ্চলা নাড্যো न कि शिक्त प्रेश गिणि। स्रान्हीन উहारिकः शत्रावा अक्षु ध मूल अक्ष्र ॥ वक्ष्यमा व इं दिनिष्ट्रान् मूंड स्वीति स्वामर्थः । निर्मरा हिल्मेद्रो 🖟

তিঃ নিৰ্গদা অপি নিশ্চলা ভুকুক্তি . দূষণ মসাধ্যত্ব ভুমঃ। আ্নৈড়োছঃ। **ভোক**ণ বাত কফণ বুষ্ঠণ পিত্তণ বহুতি मारूपः। शिख ज्ञानः विकानीया८ ভেষ্জ• তস্য কার্যেদিতি ॥ অ্य-मर्थः। वृष्ठ ककान्तरः नाजी किकि দ্বহতি ্ঠি॰ ক্ষীণত্বাধিকত্বাভ্যা মপি বিশেষ নুল্বণ পিত্ত বিষম বেগেন বহুতি তদা তৎ পুতিকারার্থণ ভেষ-জ• স্বৰ্যাৎ। অসাধ্যতা ন স্যাদিতি যাবং। অত্র কশ্চিং। স্বস্থান চ্যবন॰ যাবজনন্য নোপজাযতে। তাব্ছি-কিৎসা সত্বেপি নাসাধ্যত্ত্ব মিতি স্থিতি রিতি ।। তচ্চ প্রাথিকণ বর্জ্ধা ব্যভিচার দর্শনাৎ। হন্তিচ স্থান বি-চু্যুতেত্যত্র চকারস্যাযোগ ব্যবছেদ-কত্ব মিত্যূৰ্থঃ॥ ৠ শ শুসঙ্গাৎ কাল निर्गय नाह। ज्वा ज्वा ग्वा नाजी (एर्ग्रञ्ज्ञारा विमीर्ग क्रीनज्र!-यां ि श्रीमास्त्र भद्रग॰ ভবেৎ ॥ কদাচিৎ মহীলতা ধৎ কৃশা তদ্ভুতি বদতি মস্ণ বক্রগমনা চ ৷ কদাটিৎ 🥠 সর্পবৎ পরিপুষ্টা তদ্ধি বহুরুত্রর দশাতো ভেদঃ। ইত্থঞ্চ কদার্চিরল-

नाडी

**ফা্ডো**মতি কৃশতাঞ্চ যদা গছতি । ॥ নেহেতি পুদহক্রম মপেক্ষ্য তেন দে-हाशियमा दृनः भाषानिना कमा-চিচ্চ কৃ**শঃ** স্যাৎ তদা দ্বিতীয়ে মাসি ্ মূিযত ইতি। তথা। ক্ষণাদ্ম হৃতি বেগেন শান্ততা॰ লভতে ক্ষণাৎ। সপ্তাহার্রণ তম্য যদ্যকৈ শোথ বজ্জিতঃ ৷৷ ক্ষণাদিতি ফুঁত• দ্ৰুত• নতু করাটিদিতি। শান্ততা মন্প লভ্যনানত্ব•। শোথেতি তন্মাত্র স ম্বন্ধে ভূ নাচির• মরণায **চিরমেবেভ্**ড-र्थः। उथा। हिम विष्यमा नाजी ত্ত্বর দাহেন তাপিনা । ত্রিদোষ স্পর্শ ভন্নতা॰ তদা মৃত্যু দিন ত্রহাৎ ॥ य-দা নিরম্ভর• জ্ব দাহ তাপৌ শৈত্য প্:নাড্যাঃ ৷ ত্রিদোষেতি সদিপাত লক্ষণ সম্ভূএব ভবতি। তদা নিরীক্ষ্যা দক্ষিণে পাদে তদা চৈষা বিশেষতঃ -। মুখে নাডী বছেন্নিভ্য প্ৰভিন্ত দিন তুর্ব্যক•া। গতিস্ক ভুমরসের্ব্র বছেদেক দিনে ন তু। কল্ফেন স্পন্দতে নিত্যু পুন ৰ্লগতি চাৰুলো।। নধ্যে দ্বাদ শু-মাধাৰণি মৃত্যু ভ্ৰতি নিশ্চিত 🛊 পদ্দিণ ইতি পু·সঃ ৷ জিয়ান্ত বাস**্** 

क्कानार्थ। यि हा ज्यमी ७१भि मूर्थे পুরো ভাগে নিত্যু সদা বৃহতি তদী দিন চতুষ্ট্রয় প্রাপ্য ভুমরস্য পরি-ভুনণ ৰূপণ গমন মিব মুখএব যুহি বহুতি তদৈক দিনেন। কন্দে মূলে স্প-ন্দন স্থানে কদাচিৎ ন স্পন্দতে **ষল্ল•** ম্পন্তে ইতি সম্ভাব্যতে। নিত্য शुगाः भूनका मूली उम्राल कराशि লগতি তদা তমানারভ্য দাদশ পু-হর নধ্য এব মৃত্যু রিতি। তথা। ছিত্তা नाडी मृत्थ यम। विमुख्दम् गाँउ तिर्व-ক্ষ্যতে। দিনৈক ভীবিত• তস্য দ্বি-তীবে শ্রিয়তে ব্রুব ।। স্থিত্বেত্র গাব্রী श्चिषा शिषा विपूर्र मु, तन निव न कर्र-তে দ্বিতীয় ইত্যপ্ত পুইারাদৃদ্ধ মি-जुर्थः। उथा। यहान विद्वुजा नाजी यमा वहिं वा न वा। ज्ञाला ह इन्त्य তীবা তদা জালাবধি ছিডিঃ ৷৷ নবে তি ञ्रिषा जिएक प्रशः । इत्यक यह-नाश वक्षण मुक भवशामानभ्यान বিরছে সতি তস্যার্থ পূরেশো যথায়থ মার্য্য মতিভি রবগন্তব্য ইতি নিং পুতন্যতে পুছগৌরব ভর্মীখা মন্দ মৃক্ মিতি অনেন ন চ ভুল া গুসুনা-কথেতি করছেব বিশেষতো বিশেষ ক্রিডি বিশ্বপ্ততে তম লিভিক্তা-

निक नत्र विवयदार । नर्व जिम সর্বরোগ এব বেদিতব্য জ্বরমাত্রে জু जुम भरविछ । इंक्रिना डी भुकारण विजीयाति । । ॥ ।। व्यथ द्वारमञ् নিৰপণীযেষু পুখানত্যা পুথম জ্ব निक्रभगभार। उब ब्रुज्रभ्रं क्रि। **শব্ গুহেণ নাডীনা** ভবস্তি মন্থরাঃ व्यवाः । प्रवः भुवन्याः याजि वृत्र দাহোভিভূতযে॥ সাদিপাতিক ক্-পেণ ভবস্তি সর্স্থ বেদনাঃ॥ 🛊॥ জ্বর-ৰূপ নাহ। ভুরকোপে চ ধুমনী সো-🏞 বেগবতী ভবেৎ। উন্মা পিত্তাদৃতে नाखिक्दा नाखुणा विना। ऐका বেগ ধরা নাডী জুরকোপে পূজাযতে ॥ অন্যৰ চ। জ্বে চ ৰক্ষাধাবন্তী তথা চ মৰতঃ প্লৰে। ব্লমণান্তে নিশি প্ৰাত স্তপ্তাদীপ শিখাযথা।। 🛊 ॥ তত্তাপি বিশেষ নাহ। সৌম্যা সূত্রা ছির। भन्ता नाजी नहत्र वाउद्या। भूवा ह কঠিনা শীব্ৰা স্পানতে তীবু মাকতে॥ কতা চ সরলা শীয়া দীর্ঘা পিত্ত জ্ব ज्रविद् । भीषु मारुनन नाष्ट्राः का-विन्ता ज्या । यदा बीर्राना-তিত্রাণ সাদনে পুকীর্ত্তিত। না-जैपिक स्मा मना भीउना द्वा

रिरिना।। के।। वन्तुन गरि क्रिक्न जबना क्ना कठिना बा**उ** भिखका। बेसह म्मार्ड ज्याममान्तर (भूत বাতজা।। নিরম্ভর• খর• কক্ষ**•** ম**ন্দ** শ্লেমাতি বাতলং। ৰক্ষ বাত ভৰে তস্য নাড়ী স্যাৎ পিত্ত সন্ধিতা 🛚 স্ক্রা শী/তা হিরা নাডী পিত্ত শ্লেম্ব ममूखवारे। भुमकामार । महा कात वर्षमाडी यिन मञ्जाभित। धुवः । তবা ন্ন মনুষ্যস্য ক্লিরাপ্রিতা মলা:।। 🛊 ।। আগন্তক ৰূপ ভেদ **মাহ। ভূত জ্বে সে**ক ইবাতি বেগা ধাবন্তি নাড্যে হি যথাকিগানাঃ ৷ उथा। अकाशिकन कृतन शुन्त क <u> गांडभामा विषमञ्जूद्रमः। विजीयक</u>-ৰাপি তৃতীয় তুষ্যে গছন্তি তপ্তা ভুমি वद करमण।। #॥ अनुवानि। उस বেশ ধরা নাড়ী জ্বরকোপে পুজাযতে । উদ্বেগজোধকামে বুভয় চিঙ্কা শ্ৰমে ---यूर ॥ अप्रेट कीन गिर्ज ना जी ज्वाज-वता रिक्त अखरेमः ॥ शुभकाकार 🛴 ব্যাযামে ভ্রমণে চৈব চিন্তাযাং শুক শাকতঃ। নানা পুভাব গমনা হিরা गृहि विद्युत्त ॥ 🛊 ॥ अजीर्ग क्ला मार। मनीर्ष जू जतवाडी काळा

পারতো হতা। পুসন্না চ হতা শুদ্ধা ত্বরিতা চ পুবর্ততে ॥ 🛊 ॥ তত্র বি-त्मय मार्च। भक्षाकीर्त भूष्टिहीना मन्तः सन्तः दरमञ्ज्जा। अमृक् भूर्गा चत्र (चाका खर्व, जाना गई ॥ 🕸 ॥ ५ जवा एक ग ऋन नार। जूबि रिटन **ए**डाशांत ना एम ह न स्टाकृतिका कीरत ह खिया विशा ন্ুর তেক হাজেঃ।। র**স্তা গড বটা**-হ্যবে ৰক্ষ্ শুঞাদি ভোজনে : বাত পিকার্ভিক্রণেণ নাডী বহুতি নিষ্ণুম• ।। ।।। তাথ রস জ্ঞান॰। নধুরে বর্ছি শমনা তিকে স্যান্ড্রতা গতিঃ। অ-শ্লেকোশা প্লবদাতঃ ক্ট্ৰুকে ভ্**ন্স সমি**-छ। ॥ कपार्य कठिया ज्ञाना **नवरा** সরদা হতা। এবং দি ত্রি চতু র্যোগে नाना ६ यां वटी ९ जा। जथा। मुख १ ७ कठिना नाडी (कामला कठिनागतन। मुर मुरामा काकिना कान्य कि मालि ह।। क्लोपु भूथम् शुह्रित्व িষ্টে পুষ্টের জায়তে।। 🕸 ॥ অগ্নি-स्निए पाञ्कर वक्र नार। मन्त গ্রে: ক্রীণ গাতোক নাডী ম সভরা। प्रति । उपूक्त । भीग भार**ो** ह

তথা। মন্দেশ্নে কীণতা । যাতি নান্ডী --**হংসাকৃতি স্তথেতি**। অন্যেতু। **আ**-নাশুযে পৃষ্টি বির্দ্ধনেন ভবস্তি না-ড্যো ২গুভুজাভিব্তাঃ। আহার মান্দ্যাদুপবাসতো বা তথৈব নাড্যো ज्बगागुनानाः ॥ 🕸 ॥ शुजकाम्ती-প্তামি জ্ঞান মাহ। লঘ্বী ভবতি দী-ন্তাশে তথা বেগবতী মতা । 🗱 ॥ भुननात्युर्गी नभारः। भारत ह হংস গমনা করে মণ্ডুক সংপ্লবা । ্ভস্যাগ্নে র্মনতো নেংছ ত্বথবা গুছণী गरि ॥ उथा । তেদেন শান্ত। পুহণী গদেন নিবীর্য্য রূপাত্বতিসার ভেদে । विविधिकाया॰ প्रवंशा कमाहिमामा-ভিসারে পৃথুতা হুডা চ।। 🕸।। অপ বিস্চিকা জ্ঞান । নিরোধে মূত্র শ-ক্তো বিডগুহে দ্বিতরাশ্রিতাঃ। বি-স্চিকাভিজ্ত চ ভবঙ্কি ভেক ৰৎ कनाः॥ #॥ शुत्रकानानार ग्यक्षु জ্ঞান মাহ। আনাহে মূত্রফুছে চ ভবে-माजी गतिक्रजा। भा भ्यकान नार । বাতেন শ্লেন মৰুৎ প্লবেন স্ট্রব্ बक्री हि भित्रा वर्डी । क्रानामगी পিত্ত বিচেপ্তিতেন সাধ্যা ন শূলে নচ म्मादी नाडी कीन्डमा दुदः । भू भू क्ला ॥ ॥ अथ भू मान

्शुप्तरह शुन्हि क्या मा मूजशा जाम

मृष(१।। 🕸 ।। विच विश्वेस ७ न्य ज्जान

मान् । उर्गिरमूजभा विष तिष्ठिः

কাষা॰ বিপ্তম্ভ গুল্মন চ বক্ৰ কপা।

অত্যৰ্থ বাতেন অধঃ যু রম্ভী উত্তান

ভেদিন। সমাপ্তিকালে ॥ 🕸 ॥ ४ 🖭

विश्निय नार किन्द्रिश खलान नरमा

**২**থ পরাক্রমেণ পারাব্তস্যেব গ-

তি॰ করোতি।। 🗱।। অথ ভগন্দর

क्कान । दुरार्थ किंटन फर्ड श्रुवार्जि

পৈৰিক কম । ভগনরানুকপেগ

नाजीतुन नित्तमस्त ॥ शुराजि वा-

তিক ৰূপ নাড়ী পাবক ৰূপিণী

॥ 🦥॥ व्यथ वाद्यानि छ्यानः। वाद्यगु

শল্যাভিহ্**তস্য জন্তো বেঁ**গাবরোখা

জ্বলিভস্য ভূষঃ৷ গতি• বিধত্তে ধননী

श्रामु ग्रनाच मानिव दरकान्रान

॥ 🖰 ॥ জ্রী রোগাদিক মপি রক্তা-

पि ज्ञान करमा का उवार II कृष्टि

श्रु । त्राताद्मधार कृष्टिको विका मा-

ত্ৰতঃ। ক্বচিদ্দেশাৎ ক্বচিৎ কালাৎ

निक्शिन श्रम निर्नयः ॥ नाषी शतिहय

नाडीज

রাজ কতৌ নাডী পুকা**শে ভূঞ্জী**বো দ্যোতঃ ॥

नाष्टीकः श्रुः भाकिहिरभवः। शाह्-শাক ইতি নালিতাশাক ইতিচ ভाষা। उৎপর্যাশঃ। পউশাকঃ ২ नाडी नाकः २। यम् छनाः। तक-পিত্ত নাশিত্ব । বিষ্টান্তিত্ব । বাত কোপনত্বক। ইতি ভাবপুকাশঃ॥ नाडीकवाशकः शुः मशाकी। इंडि ভাবপ্কাশঃ ॥

नाजीक्नः शु॰ नातिक्नः। ইতি শবরত্বাবলী।।

नाजीहः शु॰ भाकदिर**भयः।** नानिठा ইতি ভাষা।তৎপর্ব্যাবঃ।কেচুক• ২ পেচুলী ৩পেচুঃ ৪ বিশ্রোচনঃ৫। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ 🗱 ॥ নাডীচ শাক দ্বিবিধ তিক্ত মধুর মেবচ। রক্তপিত্ত হরু তিক্ত ক্রিমি স্বষ্ঠ বিনাশন ।। মধুর পিছিল শীত বিষ্ঠন্তি কফ বাত কৃৎ। ইতি রাজ-বল্লভঃ ॥

নাডীচরণঃ পু॰ পক্ষী। ইতি ত্রিকাণ্ড-জ্ঞান প্রায়শা নৈব দৃশ্যতে। তেন। শেষঃ 11

थाई। गत्याक॰ यख मगाषय मू- मृ नाजीकड्डः शू॰ काकः। ইতি किका ७-क्रिक्ता ইতি ভীশকর সেনুকবি-/। (ग्यः ॥ मूनि विष्णयः । यशा

नाजीन

माखेल्हाः मृत्रस्य गृनि ईक्ति वृद्धिः त्रका नो मासाद्यको न मृत्न कनादी लोग गायो न लगना । इकि मन मामाज्य । वक विष्णयः । यथा । व्यात्रगाम च ज्वन पुत्र लगका । वक वाका मिराज पुत्र ना । वक वाका महाला जुका कर्मा । वक वाका महाला जुका कर्मा अभा ।। वक वाका विष्णा जिल्ला क्यां विष्णा विष्णा विष्णा विष्णा क्यां विष

नाजीञ्जद्रः श्रु काकानः॥ हिखकः ॥ तञ्हिखाः। इञ्जिमिनो॥ नाजीञ्जिः श्रु मिशानिष्यः। इञ्जि त्राक्षनिर्यण्डः॥

नाजीत्मरुः श्रु॰ जृङी। ইতি ত্রিকाः শুশেষঃ॥

জীনফত্র॰ ক্লী জন্মনক্ষত্রণ। তম্যাদশেম বোডশাস্তাদশ ত্রবোবিংশা
পঞ্চবিংশ নক্ষত্রাণি চপ্পথা। জমাদ্য কর্মা তভাে দশমভং সাংযাতিক বোডশভ । সমুদ্য মন্ত্রাদশভ দৌভ দিশ সংজ্ঞ ত্রেযাবিংশা।।
নাড্যঃ সুঃ পঞ্চবিংশ নানস মেবুং
নরঃ বড্কঃ স্যাৎ । নব নক্ষত্রো

नाडी गु

নৃপতিঃ স্বজাতিদেশাভিষেক**কৈঃ।।** ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ।। নাডীবিগুহঃ পু• ভূকী।ইতি **হেন**-চন্দ্রঃ ॥

नछी वृषः शुः अर्दाना शनाबुषः। नानी-ইতি ভাষা। ইত্যময়ঃ॥ তস্য নিদান যথা। যঃ শোথ মাম মিতি পত্ব মুপেক্ষতে ২জ্জো যো বা বুণ• পুচুর পৃষ মসাধু বৃত্তঃ। অভ্যন্তর॰ পুविশতি পুविमार्य। তস। स्नेनानि পূৰ্ব বিহিতানি ভতঃ সপ্যঃ ৷৷ ত-স্যাতিনাত্র গর্মনামতি রিষ্যুর্ভে তু নাডীব যদ্বহৃতি তেৰ মতা তুনাডী ॥ 🗱 ॥ বাতাদি দোৰ ভেদেন তস্য ৰূপাণি যথা। দোবৈ দ্ৰিভি র্ভবতি স। পৃথগেকশশ্চ সমূর্দ্ধি তৈ রপি চ শল্য নিমিন্তত্বেন্য । ত-ত্রানিলাৎ প্রক্ষ সূত্র দুখী সশ্লা किनान्विक मधिक जुवि कशी-मू ॥ शिंखा ख्वा कुंबकेंद्री श्रीतनाइ যুক্তা পীত সুবত্যখিক মুক্ত মইঃ সু চাপি। জ্ঞেয়া কফাদ্বহু ঘর। জু न शिहिलामा छक्ती मक्यूत कर्जा त्रक्ती अुत्का ॥ हार कृतं अनन 'মুৰ্ছন বক্সশোষা যস্যা ওইউঠিছ

नाथका

্হিতানি চ লক্ষণানি। তামাদি-শেৎ পবন পিত্ত কফ পুকোপাল্লো-রামসু ক্ষযকরী মিককালরাত্রি•॥ मायह्या ७ इंड वक्त मार्मानन তিসোগতী ব্যতিকর পুভবাস্থ বি-म्राष्ट्रा 🛊 ॥ भवा निमिख वक्षा यथा। नहे॰ कथिक मनुमार्ग मूमीति-তেবু স্থানেবু শল্য মচিব্লেণ গাতি• ৰব্বোতি। সাফেনিল্ণ নথিত মছ মস্থিমিশু মুক্ষণ করোতি সহসা সক্তঞ্ নিত্য ।। 🚓 ।। অস্যধ্য क्हुमाधाया लंकन यथा। नाजी बिराय भुजवा न जिस्थुर त्यवा শতসুঃ থলু যত্নসাধ্যাঃ। ইতি भाषवकतः ॥ 🟶 ॥ विषक जिक्ना কৃষণ চূর্ণ লীতে সমাঞ্চিক। হভি **व ४॰ क्**भीत्म ह नाडी दुन जरमाता ন্॥ ইতি গৰুতপুরাণ ॥

नाडीमाकः शु॰ नाडीकः। शार्माक ইতি ভাষা। ইতি ভাবপুকাশঃ।। নাডীয়েহঃ পু• ভৃষী।ইতি শদ-इञ्चावनी ॥

नाजिहिक् ही हिक्रु एकः। कवः ॥। १७ नामकः ११। इंडि व्यनहन्तुः॥ ्रार्पाः। शनाभाकः २ दख्याः। १ अञ्जिनिकेकः॥

রামঠী ৪ বংশগত্রী ৫ পিশুছা ও ज्वीर्या १ हिङ्गाि का ৮। जना গুণাঃ। কটুত্ব•। উষ্ণত্ব•। কফ বা-তার্ত্তিশান্তি কারিজ্বণ বিধানিবন্ধ-(मायानाक्मय नानिष्**क। ३**जि ব্ৰাজনিহণ্টঃ।।

नावक क्षी मूमुाहिङ्गिजनिङ्गानि । यथा। जूना भानन मानानाः गुरुक् भागकगार हा अভि क यायह छ। यः म माला एख मूजम ॥ ई छि मिछा क्रवायाः मारम भुद्रवधिय बाद्धः বল্পু বচন- ॥

नाव॰ क्षी विविवः॥ প্রস্তঃ॥ শিবঃ। ইতি **সংক্ষি**গু সায়ে। ণাদি বৃভিঃ।। নাথ ঋড দৰে। উপভাগে ইতি যাবৎ ॥ আশিষি ॥ ঐশ্যে॥ অ॰ র্থনে। ইতি কবিনম্পদ্দনঃ।।

नाथः भू• जेमायुज्यः। उ८भर्यप्रायः। ্ অধিপঃ২ ঈশঃ এনেতা ৪ পরিবৃঢঃ ৫অবিভূ: ৬পতিঃ ৭ ইন্দুঃ ৮ মানী ৯ আর্য্যঃ ১০ পুরুঃ ১১ তর্ভা ১২ ঈ-শ্বরঃ ১০ বিভুঃ ১৪ ঈশিতা ১৫ ইনঃ পতिहिक् द्रें ि हिन्ती जाया। एट | नाथवान कि शताथीनः। इक्राम्बः।

নাথহরিঃ পু॰ পশুঃ।ইতি মুখবোধ।
ব্যাকরণা।

नामः शुः नदः। ইত্যমরः॥ व्यक्ष চন্দ্রাকৃতি বর্ণঃ। সচানু স্বার বদুছা-र्याः। यथा वार्षात्रानुः। शनुसातः। इंजि जूरतभाकी माज क्षानमाः ॥ उट शर्यप्रायः। यार्षानमुः २ व्यक्तावा ० क्वातानी । मनानिवः द व्यन्हार्यत ৬ তুরীযা ৭ বিশ্বমাত্কলা**৮ প**রা৯ । ইতি বীজবর্ণাভিধানণা বৃক্ষ মক্স शाय विष्णयः। वथा। महिमानम বিভ্ৰাৎ সকলাৎ পদ্মমশ্বদ্লাৎ। আগীइकि खला नार समाहिन्तू मम् छवः ॥ नातः विनत्म वीङकः শ্ৰা ত্ৰিবিধো মতঃ। ভিদ্যনানাৎ পর। বিন্দাক ভবাক্সপ্রবোধভবৎ ॥ म तवः भुष्ठि मण्यमः भाषा वृका <del>९७</del>व९ भद्र•। मक्नामिकि गृखीए । नारमा रहायः। विन्मुः शुग्वः जह-ं वीषक मर्ददर्ग भुखनदार । उथाठ । সমাহিতাজানো বৃক্ষন বৃক্ষণঃ প-त्रदाष्ट्रितः । इति । क्षिति । क्षिति । বৃত্তি রেম্বাদিভাব্যতে ॥ তত্ত্বো ९ ज्ञिविदानकाता या १ व उ প্রভব: মরাট্। ইত্যার্ভ্য কর্তে: 🕆

क्त जगानाय मर्बख्णवानकः॥ টতি শ্রীভাগবত·॥ ইভ্য**লভা**র-को सज्मः विजीय स्ववः ॥ 🛊 ॥ নাভে বৃদ্ হিদ ছানামাৰতঃ পুাণ সংজ্ঞকঃ। নদতি বুন্ধরক্সান্তে-তেन नारः शुकीर्खिठः ॥ व्यनिष्ठ । আকাশাগ্নি নৰজ্জাতো নাভে ৰ ष् • সমুষ্রন্। মুখেতিব্যক্ত মাযা-তি यः স নাদ ইতীরিতঃ॥ সচ প্রা-ণি ভবো ংগ্যাণি ভব শ্চোভয় স-खवः। चार्डः कार ভरवा वीगारि **ভবস্ত** दिछीयदः ॥ ज्छीरयानि ह वःभापि छव इंग्यः बिक्षा मणः। यमुक दुलाः सान दुल गुसिक या मजः॥ उत्राद्य मंग्डि उः भुगः প্ৰাণাদ্বহ্নি সমুন্তবংগিবহি মাৰত म॰यागामामः ममूशकायउ ॥ न नारमन विना शीलः न नारमन विना -चतः। न नारमन विना त्राग खन्ना-मानायाक जगर । न नाएन विना ख्डान॰ न नारमन विना भिवः॥ नाम॰ क्र भद्र ख्रां जि में क्र भी शद्र रुतिः॥ इंडि मञ्जूष्मात्मामतः॥ नारमय॰ क्री रिमक्षवणदुगः। इंछि तक्षः ্মালা।।সৌবীরাজন । ইতি য়াক:

्र निर्यक्ति।। नशी नम अञ्चल्ति जनारमी । नानावर्णः श्रु॰ वरुविश्र श्रुक्तामि वर्णः। <sup>9</sup>वि । यथा। नन्त्रा नन्त्र, दा नीतः নানেয় নিতি কীত্তিত। অস্যুগুণাঃ । नारतय यूरक॰ कक्क॰ वाजन॰ नदू দীপান । অনভিব্যানির বিশদ ক টুক কফ পিত্ত নুৎ।।ইতি ভাবপু-कामाः॥

नारमयः शुः कामञ्गः॥ वानीतः বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্যন্টঃ।। नारमयी की अमूर्वजमः ॥ ज्ञिलपूका ॥ रेवजयस्विका । इंडामद्रः ॥ नाग-ः ॥ ब्या ॥ याष्ट्रधः । इंडिं श्चित्रिं॥ अधिमद्यः ॥ काकबद्रः। ইতিরাজনির্ঘটঃ।।

नाथ य क्रमार्थ। म्वामितियर्गार्थान ইতি যাবে ।ইতি কবিবল্পকঃ ॥ নানা -ব্যু হ্লনেকার্থণা। উভযার্থণা। विनार्थ। इंडि लिस्नी॥ নানাককঃ পু• পিঙালুঃ। ইতি রাজ-ु निर्देग्डः ॥ द्रष्ट्रमृत्यकः ॥ नानावृतिः शृ॰ काह्ना तिगुरीगापि শবঃ। ইতি হারাবলী।। নানাৰপঃ ত্ৰি অনেকপুকারঃ।তৎ পर्यायः। विविधः २ व**ष्ट्रविधः ० श्** 

পৃথিধঃ ৪। ইত্যমরঃ।।

ইতি ভরতঃ॥ তৎপর্য্যার্যঃ। চিত্রণ २ किस्रो द्वः ० कल्याकः ८ भदनः ৫ এতঃ ৬ করুরিঃ १। ইত্যেরঃ ॥ वाञ्चन क्वियामिक ॥

নানাবিখঃ ত্রি ত্মনেকপুকারঃ। **विविधः। यथा । उथा नाना**विदेधः शूरि मू रेव। वी तकमा हरेवः। इंछि হরিভক্তি বিলাসে ১৬ বিলাসঃ।। नानूरहरा वि अननूरहरा अकर्खवाः। ইতি ব্যাকরণণ ॥

नाषु॰ क्री खाब॰। ইত্যুণा দিকোষঃ :: नान्तिकद्रः श्रु॰ नान्तीकद्रः। ইত্যমর **होकाया॰ तमानायः** ॥

नानती खी नाष्ट्रेकान्त्राप्ते गक्षनार्था प्ति विकारीना गानीः। यथा। আশাৰ্ষদন সংযুক্তা স্তুতি ৰ্যমাৎ পুবর্ততে। দেব ছিজ मृপাদীনা॰ তৃষ্ণদান্দীতি সা মৃতা।। কেচিভু। ভেরীপ্রায়া নান্দী। ইত্যমর ট্রীকা-যা॰ ভরতঃ ॥ 🗱 ॥ নাটকে বিশ্ব বি-घाञायाको नाम्ती कार्यत । यहाङ् ভরতঃ। যদ্যপ্যস্থানি ভূযাণসি পূ र्ब तक्ष्मा नार्टे । जेथा भारत्मा कर्डवत नान्सी विद्य शुन्भाडेरय ॥

**ए**व विक न्शारीना मानीतार श

नानतेश्

রায়ণা। নন্দন্তি দেবতা যক্ষাত্তমা-मान्ती शुकीर्खिंग॥ अन्तरहा ५ द 1 नान्ती कार्या वूरेष ग्लामनकारतन স•যুতা।। গঙ্গা নাগপতিঃ সোমঃ मूथा नन्ता खयानियः। এভি नीम श-रिः कार्रा नान्ती धात्राजित्रक्षिजा॥ भुभख भर विन्तामा हन्तु मःकीर्ख नादिजा। जामी दीम, भन्ना नान्ती যোজ্যে মস্লাত্মিকা।। কাচি-म्म्ल्यमा नान्भी काहिम है शमा उथा । সূত্রধারঃ পঠেয়ান্রী । মধ্যম सর-মাশ্ৰিতঃ॥ ইতি মালতীনাধৰ চী-कः ॥ अ। अमृष्तिः । यथा। नानरी সমৃদ্ধি রিতি কথ্যতে। ইত্যুদ্ধাহ-তত্ত্বে বুহ্মপুরাণ ॥ নান্দীকঃ পু• ভোরণস্তম্ভঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড**শে**মঃ॥ मान्तीकद्रः वि मान्तीत्माकभाठेकाती । ज्लभर्यायः । नाम्तीवामी २। ইত্যমর: ॥ কেচিন্তু। ভেরীপুাযা नानती उद्गारनभीवः। अञ विष

क्त्यो 'वामनार्थाविज्राहः। इति

র্বরতঃ।।

नानीभिष्ठः शुः क्लापिन्थवक्रनः। **७८ शर्य** प्रस्ता सामित्र थः २ वीमा दः **७। इंडि-इ्स**म्बद्धः ॥ षिक नृशालीमा नाभी बंग्रन शूर्विका । नाम्सीमूथः शुः क्शालिमूथवक्षवः।

इंडि रूमहन्दुः ॥ वृक्षिनुष्य कूक् পিতৃগণঃ। যথা। নানদীমুখা পিতৃ-গণ॰ পূজ্যেৎ পুষ্তো গৃহী। ইতি বিষ্ণুপুরাণ ।৷ স চ পিত্রাদি ত্রিক মাতামহানি ক্রিঞ্চ। ইতি গো-जिन मूबर।। क्षिकुराम् भी। स्था। नानी मूर्थ विवाद ह शुनि जाम र भूर्वकः । अब नाक्तिभूथ भहनऽ শান্ধ পররে ইতু ছোক্তত্ত্ বিথনা-मन्। ब शुम्ब शत्र द्वा । जिनि जिन्छ-ব্যতা যথা। কুব্ৰ গোড়িলঃ৷ আথা-चुप्रयिक शुक्ति युग्रानामापरा शुनिका मूलनातः अञ्चादाः मर्जाः य-বৈ ভিলার্থ: সম্পদ্দিতি তৃত্তিপুন: দখি বদরাক্ষতাজ্য মিশুন্থ পিখাঃ मानरीयूथाः शिख्वः श्रीयसः मिडि रिहरव वाहसिद्धा नामतीमुख्य छाः शि ভূভ্যঃ পিতামহেভ্যঃ পুলিতান-হেছ্যে মাতামহেভ্য পুমাতান-হেভেন বৃদ্ধপুদাতামুহেভ্যুচ প্ৰী-যুক্তাসিতি সম্পাক পুৰুজীতেতি। नान्तीगू

অপিচ। স্বধ্যৈতি পদস্থানে পুষ্ট্যাশ-पः वरमिक्। भिज्निजि भमार भूर्वः वरम मान्तीमूथानि छ।। कर्मानियुष्ट সর্বেষু মাতরঃ স্বগণাধিপাঃ। পূজ-নীযাঃপুৰত্বেন পূজিতাঃ পূজ্যন্তি তাঃ া৷ পুতিমাসু চ শুভ্রাসু লিখিতা বা পটাদিষু। অপিবাক্ষত পুঞ্জেষু নৈ विराम भ्यविषः॥ मण् नगाः 'বসোধারা' সপ্ত বারান্ হৃতেন তু । कांत्रराष्ट्र शक्यातान् वा नाजिमीहा॰ नकाहिजाः ॥ व्यायुवंति व मान्तर्थः ৰপ্তা তৰ সনাহিতঃ। ষ্ড্যঃ পিতৃ-**ভ্য उपनु भाषा माने मूशकरम् ॥ व-**मिरिशाका विधिः क्टामा मुद्रेरवत १व নিরানিবঃ বিভাগের পুরক্রনি বিশেষ ইহ যে৷ ভবেৎ ৷৷ প্রাভ রান-ব্রিতান্ বিপুান্ যুশ্মান্ভয়ত ভথা। े छेशरवन्तर कनान् मम्रामृङ्ग्रीनव शि পাণিনা ৷৷ নিপাতো ন হি 'সব্যস্য জানুনো রিদ্যতে কৃটিৎ। সদা পরি-চ্রেক্তক্ত্যা পিতৃনপ্যত্র দেব বং ॥ পিতৃভ্য ইতি দন্তেষু উপবেশ্য জ-শেষু তান্। গোত্র নানভি রানভ্য लिज्नर्वाः भुमानरयः।। नावानमवा

नान्सीभू

बागाः भूतगामीनि रेम्राबरेनत् जूका-त्रस्य ।। *(জ্য*िष्ठाख्त क्तान् यूंग्यान् করাগাগু পবিত্রকান্। কৃত্বার্য্য স-ম্পুদাতব্য নৈকৈকস্যাত্র দীয়তে ॥ মধু মধিবি য স্তত্ত তি জপো পশিত্ মিছতা । গায্ত্রনম্বর সো ২ত মধু মজ্ঞ বিবজ্জিতঃ।। নচাশ্রৎসু জপেদৰ্ কদাচিৎ পিত্ সংহিতা।। जन् अव अभः कार्यः भाग नाना-रिकः मूछः ॥ य खब भूक्रामगः **जिन राग्य राज्य। । উहिन्हे म**निर्देश সোত্র তৃপ্তেযু বিপরীতকঃ ৷ সম্পদ मिछि द्धाः इ भून स्राप्त विधीयछ। সুসম্পন্ন মিতিপোক্তেশেষ মন পনিবে-मस्य ।। शुभगरभुञ्चय मर्ख्यू ज्यान । या-मख । भू वंबर। यभः कि भिग्र्न (मान **ং**বনে নিক্ষেতি নিস্তিলাঃ॥ দ্বিতীম্**ঞ্** ज्ञीयक सथातमानु तम्दाः । মাতামহ পুভৃতী-ম্ব এতেষা মেব-वामञः॥ महमारम मृष्ठ । वाकित-ৰূপসিচ্য চ। সংযোগ্য যব কৰ্কণু দ-विजिः भाषाय छकः। विवास जन-वट शिखान् रखा विन् भुमानकान्। उৎপাত कालाननाथ भून तम् । क्रवन न शिवा जीर्थ मियाजा शा विद्या पा उत्ता उत्त मातन शिलाना

मूख्रताख्तः । ভবেদখणाव्याप-(बाबः भाष कर्यम्।। उमार भाष-व् गर्दव् वृक्षिप्र विख्य है। मूल मध्राशु (मरमयू देवर गङ्गां क निर्व-পেৎ ॥ পদাरी मिक्किल ভূকী • তত षाठानयथ हिकान्। यथागु ज्ञि गामित्थर मुम्लाकिठ मस्ति।। শিবা আপঃ সম্ভিতি চ যুণ্মানেবো-परकन ह। मौमनमा मिल्छि ह श्रुष्ठ मान समस्त्र°॥ व्यक्तं उक्त ति\$ ঞ্চান্ত্ৰিত্যক্ষতানপি দাপযেৎ। অ-कारगोपक मानक वर्षा मान वरि-बाराजा। बरिश्वाव निजा जिल्लाम **ह**ुर्थ्या कमाठन । शुर्थनाम् शुठि প্ৰোক্তে সৰ্বায়েৰ দিকোত্তনৈ: ॥ প বিত্রাস্থর্হি তান্পিগুন্ সিঞ্চেদুন্তান পাত্র কৃৎ। যুশানেক স্বস্তি বাচ্যান-कूर्ड गुरुग नमा।। क्वा धूर्याना विभुः म्। भूगम्। नृबुद्धख्यः। कि। उमिमि-खानि येथा। विकु भूतारग किन्ता भू ध विवारह ह भूतित्य नव विभानः। नान কর্মণি বালানা চূড়াকর্মাদিকে তথা ॥ जीमखामयत रेठक भूशांकि मूथ म्मात । नानतीयूच शिक्गण शृक पिट भुवाका गृही।। मटना भूतात। " गिनिड .

অনপাশে চ সীমন্তে পুশ্রেশ পতি নিমিত্তকে। পু সবনে নিবেকে চ নবরেশ্য পুবেশনে।। দেব বৃক্ষ জলাদীনা পুতিষ্ঠায়া বিশেষতঃ। তীর্থবাত্রা ব্যোৎ সর্গে বৃদ্ধিশাদ্ধ পুনির্তিত ।। কূর্যপুরাণে। তীর্থবাত্রা সমারন্তে তীর্থপুত্যাগমের চ। বৃদ্ধিশাদ্ধ গুসরী ত বহু সর্গিঃ সমর্বিত ।। ইতি শাদ্ধতত্ত্ব ।। নানামুথী জ্রী সামণেতরবৃদ্ধিশাদ্ধ ভুত্যাত্গণঃ। ইতি যজুর্বেদীয় বৃদ্ধিশ্রাদ্ধ পদ্ধতিঃ।।

नानितारी वि नानित्नाक्नाठकाती

। नानित्रन्नीनः ॥ (जतीताहन
नीनः । इज्ञात्रहीकायाः जतुः ॥

नानिजः भूः वर्गमहत्रकािवित्नयः।

मजू निकार्याः स्वित्रित्मकाः।

इठि नितान्त्रभक्तिः ॥ मृनुषाः

कवियाक्नाजः । इकि विवानार्थन
रमजः ॥ जम्य क्लोतः कर्म । जल्लायः ॥ क्लोतः ॥ क्र्या । क्लोतः वर्षा । जल्लायः ॥ क्रिताः । क्रिताः । क्लोतः । क्रिताः । क्लोतः ।

নাভিব

श्री कहें। विकास से नाभिज्ञाना।
नाभिज्ञानिका से नाभिज्ञाना।
नाभिज्ञानिका से नाभिज्ञाना।
नाभिज्ञान । जर्र भर्या । यह कि । इंजि किका छाम्म सः ॥
वाजिः श्रू मूर्य न्भः॥ किम सुर्या।
कि विवाद । इंजि कि । ज्या प्राप्त ।
कि मा कि भा हि श्री । श्री युज्ञ ।
वाजिः श्रू से श्री भा हि । ना है इंजि ।
वाजिः श्रू से श्री भा हर भर्या । वाजि । इंजि किम हि ।।
नाजि । ज्या श्री । इंजि मा से इंजि ।
वाजी । इंजि किम हिनी ।। उर्थि भर्या ।
नाजी २ ज्या क्षी । इंजि ता क

সৈ তবতি।ইতিস্থবোধঃ।। অমিন্
হানে মণিপুর নাম দশ দল পদ্মমন্তি। যথা। তদ্দ্ধে নাভি দেশে তু
মণিপুরং মহৎ পুভং। মেঘাভং
বিদ্যুদাভঞ্চ বহু তেজাে ময়ং ততঃ
।। মণিবভিদ্ধা তৎ পদ্মাণ মণিপূরণ

নির্ঘন্টঃ।।সচ গর্ম্কস্ত সগুভি র্মা-

তথোচ্যতে। দশতিশ্চ দলৈ যুক্ত। ডাদি কান্তাক্ষরান্বিত।। শিবেনা-থিষ্ঠিত পদ্ম বিশ্বালোকন কারণ

।। ইতি তম•।। কন্ত্রিকানদে জী । ইতিনেদিনী।।

नाष्ट्रिक केंद्रः शु भावकः। (गाँउ

ইতি ভাষা। ইতি শবরত্বাবলী।। নাভিকা জ্রী কটভীর্কঃ। ইতিরাজ-নির্ঘন্টঃ।।

নাভিশুডক: পু॰ স্থীতনাভি:।গোঁড ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়: । গর্ভপ্তঃ ২। ইতি ত্রিকাপ্তশেষ: ॥ নাভিক-শুক: ৩ আবর্ত্ত: ৪। ইতি শব্দরত্থা-বলী ॥ গোপ্ত: ৫ নাভিগোলক: ১ । ইতি ক্রটাধর: ॥

নাভিগোলকঃ পু॰ নাভিশুডক:। ইতি জটাধ্ব:।। নাভিজঃ পু॰ বুন্ধা। ইতি ধ্বণি:॥ নাভিজনা পু॰ বুন্ধা। ইতি ত্রিকাণ্ড-

म्बिशः॥

नाजिनाना जी नाजिमञ्जिनिनाजी। जद्भर्यप्रयः। जमना २। इंडि जिकाश्रम्भयः॥

নাভিত্ঃ পৃণ বুন্ধা। ইতি হেমচন্দুঃ।।
নাভিবর্ষঃ পৃণ ভারতবর্ষঃ। যথা।
যোসৌমন পুঞা পুিষ্বুভো নাম সগুদ্ধীপাধিপতির্বভূব তস্য চাগ্নীপ্তাদযো দশ পুঞাবভূবঃ ত্রমঃ পু বুন্ধিতাঃ শিষ্টানা সন্তানা সন্ত দীপাঃ
পিত্রা দন্তাঃ তত্র জবুদ্ধীপাধিপত্তেশাগ্নীপুল্য নব পুঞাবভূবুঃ। না
ি

रकेश्युक्वरिकव रुतिदर्व रेनार्व्छः । ্ব্রন্যে হির্থয় কৈব অক ভূনাখ কেতুমান্ ৷৷ নব বৰ্ষাণিতেষা প্ৰা দ্ভানি বন পুরিশতা চাণ্নীপ্রেণ হিমাল্যস্যাধিপতে নাভে শ্বভ: পুথো বভ্ব খবভান্তরতঃভরতেন চিরকাল পর্মেণ শাসিতত্বাদিদ **्ट्रेडिन**।

नाजी द्यी नगजिः। ইতিশব্রহাবলী।।

৩০ অধ্যাय: ॥

न्त्रम "

नाजीलः ही नार्यप्रवङ्कनः॥ कृह्।।। গ**્રાં%** । ইতি মেদিনী ॥ नार्ভि-গান্তীর্য্য । ইতি ছেমচন্দুঃ।। নাভিসম্বন্ধি । ইতি ত্তি व्याक्रवणः ॥ नाम वर शुक्तिणरः ॥ मञ्जावना ॥ कारः॥ উপगमः॥ ष्ट्यनः। ইত্যমর: ॥ প্রাকাশ্যে যথা। হি-. भावत्या नाम नगावि द्राजः। हि-भागयः भुकात्मा शिजुनिक है-ত্যৰ্থ:॥ সম্ভাব্যে সম্ভাবনাযা• ইহ নান সীতা ভবিষ্যতি॥ ক্লোপে ম ं गानि नाम मनाननम् भरत ति ्र चरः॥ उनगमः माम्या श्लीकातः भूषा चामाच ॥ चर्मान कानामा

## नागक

ये गविजू करत्य सांभामन विष्र ा विभाष ह। व्यक्ता मान शिक्ति मा-রোহতি। ইতি তড়ীকাযাণ ভরতঃ ॥ विश्वयः॥ अत्रनः॥ विकन्नः। इंजि विषिनी ॥

नाम क्री नागरं पान्तानारं गएउ९। তৎ भर्गायः। जार्थप्र २ जास्ता ३ चिषान । हे नामर्थिय । हेर्ड जनदः ॥ जाचान ७ वक्न १ व वाशर न ৮ আহ্বয়ঃ ১ সংজ্ঞা ১০ গোরু ১১ चिर्विश्रा ३२। ইতি नेप्त्रवादनी ॥ विष् । उह मारि विভक्तरः শব:। তজু পঞ্চবিধণ যথা। উণা-मार्छ क्रब्र कि कार्क कि कार्य में मार्ग कर । मकानुकत्रवर्षकं नाम शक विश् म्ज ॥ इंजि भाषीवनुः ॥ 🛊 ॥ অবক্তব্য নামানি যথা। আত্ম না-य प्रदार्भाम नामानि क्षाना है। পুণোত্তে ংপি ন বক্তব্যু জ্যেষ্ঠপুত্ৰ क्नबर्याः ॥ इंडि क्यालाहनः ॥ । भक्तरा जी मक्तात्रविष्णयः । তত্তোক নক্ষজাণি ষ্থা ৷ অখিনী ১ রোহিণী ৪ মৃগশিরাঃ ৫ পুনর্বসুঃ ৭ উত্তরফল্লুনী ১২ ৰাতী ১৫ অনুরাধা ११ जेंडब्रावाण २२ मुन्ना २२ विन

ু ধা ২০ শতভিবা ২৪ উত্তরভাদুপদা ২৬রেবতী ২৭ ৷৷ তত্র লগ্ন• যথা৷ যল্ল-ूर्मा भूषम हजूर्य मधम म्मम सात শুভ গুহা ভিঙম্ভি তল্পণে নাম করণ कार्याः ॥ छव हिन नियुगः । हमा २० थकारम १२ हारम १२ मञ २०० **हि**-নানি। ইতি জ্যোতিঃ সারসংগৃহঃ।। সমুৎসরে বেতি গোভিলঃ ॥ এতা পুশন্ত তর তম পর পর কাল কর্মে তরপর•াএকাদশাহ ইতি মুখ্যঃ ক त्र देखितयूननरम् छ॰।। क्षा छम्नू क्षान॰। यथा। हमग्राज्यत वनु मर्मनाट शाह् माञा मूहिना वाद्य वसात माहाम्। जुर्जू मंकिनजः सिदा श्रुव-ছুত্যুদক্ শিরসং পশ্চিম দেশং গত্ত্বা উত্তরত উদগগেুষু জন্মেষু উপবি-শতি অতঃ গিতৈবাধিকারী। অথ জুহোতি পুূজাপত্ত্যে সমারস্য তি থ্যে নক্ষত্রায় । তিথি নক্ষত্রয়ে। র্দেবতাবৈ ভাষ্ট বুন্ধ ত্বষ্ট্ বিষ্ণু যম त्माम अमात् मूनि वमू शिमाह धर्म बमु तायू मृत्राये एक भिउतः भोर्न मान्तरः वित्यप्तयाः। वकाः स्ताम वित्मव गारु इत्मागभिति निष्ठे । नामाथरय गूनि वम् शिमाठा वह-

दर्जना। यकान्य भिज्ञा एका प्र-ষ্টব্যা জিথি দেবতাঃ ॥ তেन म्बुडा-দ্যো বহুৰচনাম্ভা হোত্ৰগ্ৰা: 1 ন-क्षानि अधिनामीनि। उपर्वजाक জ্যোতিৰে। অখি যমেত্যাদয়গ্ৰাম-ক্ষত্র হোমে ছন্দোগপরিশিষ্ট । व्यादायाम् १थ नशामः विभाषा-(म् । जरेथ्व् हु। यात्राहारम् । श्री श्रीरम् । अभिनाराह्य उरिषद ह ॥ **इन्हा**त्ना-**जानि वञ्चम्कागाः बू**ल्याः मरा । बन्द बय॰ बिवाइय सविश्वान्त्रेशकः ৰং।।তদ্দেৰতা হোমে বিশেষঃ।দেৰ তা অপি হ্যন্তে বহুৰ সৰ্গ বৰপঃ। নেবাশ্চ পিতর শৈচব দ্বিবদেবা খিনৌ उथा।। (एवा: वित्यस्वाः। कवर्गारि भक्ष ज्ञीयामि वर्शनाज्य वर्शामा-खत्र र य त न वाराना जग वर्ग सक्षा विश्व ह्या निष्य कृष्ट महाद्वादनाहर मीर्घ विमर्गाष्ठ ह नाम वर्ष्या । এउह सग्राक्ति १ भुमेख भद्रः। जल-দেবতা নক্ষত্রাভি সমৃন্ধ চনাম স্ব-ৰ্য্যা**্ৰতভ্ৰশ**দ্ধলিখিত ব্চনামানাম্বর ক্রণ ব্যবস্থারঃ। অত্ত মক্ষত্র সম্বন্ধেন নাম করণ শতপদ চক্রানুরোধাৎ बनक्रव शामानुगाद्गगाठणक कर

न्निज्ञ नूष ख्यान् शुग निर्मामाय अवार्षिषु वित्यवान् मध मूथ म-িকিণী নাসিকে কর্ণাবিভি। সাভি-মুখ্যেন স্শন্ কোনি কতমোসীতি ্ৰব্ৰ-জপেং!!#!!তচ নাম **শৰ্ম** বৰ্মা मूज्ञाना अप्यान कर्वव ४ । यथा। छ छ स নাম জৰী ত পিতৈব দশমে হনি। एत श्रव नताथा हि अर्थ वर्षािक সন্মত। শর্মেতি ব্রীহ্মণস্যোক্ত ব-র্মেতি ক্ষণ্ডসংশ্রুয়ণ। ওপ্ত দাসাত্মকণ नाम शुभरतः विभाः भू मुत्याः ॥ नार्थ ॥. হীন নচাশত নাপশৰ যুত তথা। ॥ नामाक्वा कु खु ५५ वा नाम कर्गार न्याक्तर ॥ नाठि मीर्यः नाठि दुषः नाजि खर्बकतानिजः। मूर्थाहार्यऽा-कतः नाम क्रयप्रह शुवनाकतः॥इिं विकुश्रद्भारत ७ जः स्म ३० जन्नायः ॥ পুরণাক্ষর• লফ্তরাক্ষর• ॥ ইতি ত ডীকাকারঃ ॥ # ॥ গোভিলঃ ৷ অযু-শ্মক দান্ত• তথা জীণা• ১মযুশ্মক• व्ययूगकतः। माउ मकाताउ। यथा यम्भारतज्ञानि ॥ 🕸 ॥ उन्र 🗐 . शूर्वकष्वः यथा । (एवः ७कः **७कञ्**।-' ন ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰাধিদেৰতা । সিদ্ধ क्तिताना कि श्रवभ्त्रमीत-

नामहारणी जी वुञ्वित्णयः। यथा। গৌরী কালী উমা ভদ্যা দুর্গা কান্তিঃ সরবতী। মঙ্গলা বৈশ্বী লক্ষীঃ **नि**वा नाङ्गायगी कमाए॥ मार्ग ज्-তীৰা মারভ্য প্রোক্ত লভতে कल । भूरबीक कल भागीि हा-म्य भारम क्याईमी वुठ कन•। व्यक्तात्रीयतः कृत् मथता उम न-इतः ॥ भूजयिषिधिवनाती न वि-যোগ মবাগু বাৎ। অথবা বিষ্ণু क (भग भूक्रायह अतः जन्। ॥ मक्तः বান ভাগস্থ সর্বক্র মবাশু যা**ঁ**। मार्गामहाए दुसंब नातायनमा · धंतान् श्काययः । श्रंभ रेजुनी शारिन s ৰূপোষ্য সংপূজ্যদক্ষিণাতিক না মভিঃ। **অখনেধ** নৃপদ্য বাজপেধ মতিরাত্র নক মথাগ্রিপ্টোমোপবাসনের। পুরুষমেধ সৌক্রামণি
পঞ্চযক্ত হোন গোলক সর্বম্থাভাপ্যান্তে নিত্যু মরণার্চনাত্রমান্না
। ইত্যাদের নামদ্বাদশী। ইতি দেবী
পুরাণা।

নামধেষ॰ ক্লী নাম। ইত্যমরঃ।। নামশেষঃ ত্রি মৃতঃ। ইতি ছেমচন্দুঃ ।। মরণে পু॰।।

नामाशत्रायः श्रु नाधु निन्तारि क्श দুরদৃষ্ট জনক ব্যাপার বিশেষঃ। যথা । শ্রীনারদ উবাচ। কে তে হপরাধা নিপ্রেন্দু নাম্নে। ভগবতঃ কৃতাঃ। বিবিন্দন্তি নৃণাণ কৃত্যুণ প্ৰাকৃতণ शानविष्ठ ए ॥ ७८ कथ्र**ा॰** म्हा-ভাগাপরাধ নাম্ম কেশবে।কেন কেন পুকারেণ ভবেদ্বৈ তজ্জনাদিযু ।। সন ्সমার উবাচ। সতা । নি-ন্দা নামঃ পরম মপরাধ বিতনুতে যতঃ খ্যাতি যাত স্তমুপ হসতে ॥ গহঁযতিচ মুক্তথা বিক্ষো রিষ্ট য ইহ গুণ নামাদি নকুল পিয়াভিন প শে এ প পলু হরিনামা হিতকর:।। ভরে। রবজ্ঞ। শুতি শান্ত নিন্দন। ज्ञथार्थ वारना इतिनानि कन्नन• । ¥

নানা বলান্দ্ৰস্য হি পাগবুদ্ধি ন বিদ্যক্তে তস্য শঠস্য শুক্তিগুল দিৰৌক্ষাণ গুরোঃ পিত্রো ভূসুরা **गाक गर्रनः। नानाशदातः** यखः अत दिष्यताना ज्या नृगा ॥ त्या अथ जूनमी शाबी न्'शाबिनहिं नाद्र**र**। नामाभद्राधी म ज्यवद्यान गाविन्स रिक्यान्या मर्वजीर्थान क्लानि চাবমন্যতি নিন্দাত। गङ्गा সর্মতী যানী কাপরাধী ভবেষরঃ !৷ জীন-স্ভাগবত মহাভারত ব্রাহ্মণান্ ও-**यः। ग्रञ्जः महाश्रुत्राम्यः या १**वगः ন্যতি নারকী ।৷ অবতারান্ হরে *স্ত* ত্তনান ভক্তা॰ক নিন্দতি। অবনন্য-তি দেব্যে নারকী স জনো १९भः॥ (गाविन्त्रजाईन • अर्यजास्वमन्जि বৈষ্ণবান্। নিন্দ্তীই চ নামানি স नात्माभाभवाषक्ट् ॥ वर्गाभुमानसः জা-শ্চ জাতি বুদ্ধ্যাবমন্যতি। বৈষ্ণ-वान् अकृत्छ निन्हा मशताधी नद्राधनः ।। विक्रवक्षुः जियः भूपुः क्रांठि ভেদেন বৈঞ্চৰ•। যেৰমন্যন্তি নিন্দন্তি তে বৈ नित्रय गामिनः ॥ चार्ह वित्याः नि-्लाशी र्थक्षु नव्रमिं रेविकर् कांजि वृष्ति सिका दी विकवाना किल है

म्बान भारठीर्थम् युक्तिः। विरेका ্ট্রিফালির নাম্মোঃ কলুষ দহনযো রন্য 'मामाग्र वृषि विष्णे मर्स्थरहर्ण छ-क्लिंज्ज अभवी यंग्र वा नाजकी अः॥ পূজ্যতে দেব সামান্য ক্ত্বা নারায-ণ নরঃ। নানাপরাধী স ভবেদ্বৈঞ-वान् या न स्ववं ॥ नात्रम उवाह। ন্যুন্পরাধা ছপরাঃ কুতি সম্ভিত-(१४६न। ७८ कथ्रठो॰ म अकन॰ যদি যোগ্যে ভবামি তে ৷৷ সনৎ স্ব মার উবাচ।বৈশ্ববে শঠতা॰ বিষ্ণৌ স্থরৌ পিত্রোশ্চ ভূসুরে । নিন্দা रः হৃকতে নোহাদপরাধী স নারকী ॥ ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে ১০২। ১০৩ **অব্যায়ঃ ॥ ৠ ॥ অপিচ । ধর্ম বুত**-ত্যাগ হতানি-সর্ব শুভ ক্রিয়া সাম্য মপি প্রাদঃ। অশুদ্ধানে বিমুখে-প্যশ্বতি যশ্চোপদেশঃ শিব নানা পরাধঃ॥ শুদ্ধাপি নাম মাহাত্ম্য यः প্রীতি রহিতো নরঃ। স্কাহ- মমাদি পরমোনান্নি সোপ্যপরাধ ক্থা। 🛊 🛚 ।। অপরাধ ভঞ্জন মাহ জাতে নামা-श्रदार्थि श्रुमारहन कथ्यन। त्रहाँ न कीर्जरमान जलक मत्रा छत्र नामाश्रदाथ युकाना %नामात्मात्म । नाय

হরন্তার । অবিশান্ত পুরুক্তানি তান্যেবার্থ করাণি চ।। নামৈক বস্য
বাচি স্মরণ পর্থগত শুোত্র মূল
গতয়া শুদ্ধ বাশুদ্ধ বর্ণ ব্যবহিত
রহিত তার্যত্যের সত্য । তচেদেহ দুবিণ জনতা লোভ পাষ্ড
মধ্যে নিক্ষিপ্ত স্যান্নফল জনক
শীষু মেবাত্র বিপু॥ ইতি শ্রহরিভক্তি বিলাসঃ॥

नामाश्राधी जि नामाश्राधक्ट ।
यथा । नात्मा जनाफंनम् । नामाश्राध्य
यः जक्छ १ निर्माण । नामाश्राध्य
क्त्वात्का या जि मज्य मर्थाण जिल्
॥ विनाणयं जि नामाश्राधी क्रम्
नामाजा जनः । नामाश्राधी क्रम्
मामाजान एक जि नात्रकी ॥ शावएक्षा पूर्जनः शाशी जत्वमात्मा हतः
थलः । नामाश्राधी मनु का मूल्य
जवि नात्रकी ॥ जश्राधामुक्यम्
मा विमृत्रयं जि नामा जिल्ला भूल
मा विमृत्रयं जि नामा जिल्ला भूल
मा ।। इजि श्राह्म स्वाधि वृद्ध । नामी ह

নাযঃ পু॰ নয:। নীতিঃ। ইত্যময়:। পুাপণ•। ইতি গী ধাতু দর্শনাং ।।

ना विका

नायकः श्रु निजा। (भुष्टः ॥ श्रात-मथ्रमिः । ইতি मिरिनी ॥ चार्गु সরিক:। নেনাপতি:। ইতি ত্রি-काखानवः ॥ भ्यात्रमाथ् हः। म ह ত্রিবিখ:। পতি ৰূপপতি বৈশিক শ্চেতি। বিধি বৎ পাণিগ্ৰাহকঃ প্र । अनुक्ल मिक्ष धृष्ठे म्रे ভেদাৎপতি শতুর্ধ। সার্ব কালিক পরাহ্বনা পরাত্মথত্বে সতি সর্ব-काल मन्तरका शन्क्लः। मकल নাযিকা বিষয় সম সহজানুরাগো **मिक्नाः। ज्**या निः **मकः** क्उरमा-ৰোপি ভ্যো নিবারিতোপি ভ্যঃ शुन्य अद्गाया पृष्ठेश कामिनी वि ব্য কপট পটুঃ শঠঃ । আচার হানি **হেতুঃ পতি ৰুপপ**ভিঃ ৷৷ বহুল বে-শ্যাভোগোপরসিকে। বৈশিকঃ। বৈশিক ভূত্তম নধ্যমাধ্য ভেদাৎ ত্রিবিধঃ। দ্বিতা শুমপুকোপে হপি উপচার প্রায়ণ উত্তমঃ। প্রিয়া-হাঃ পুকোপে যুহ পুকোপ নৰুৱাগ• বা ন পুকটথ্টিত চেইখা মনোভাব गृहाजि। नेश्नीश ख्य क्ला सङ्जा **म्**न्धः कान् की जाया नक्ठ क्ठा क्ष्रविषाद्या २४मः॥ 🛊॥ मानी व-

ভূরণ্ড শঠ এবান্তর্ভবভি চ্বাক্টেখ্রা व। क्। त्रभागम क्लूब्रः। श्राविक्त-তি ৰূপপতি বৈশিকণ্ট ভৰ্তি ৷৷ অনভিক্ত নাযকো নাযকাভাসএব ৷৷ তেষাঞ্চ নৰ্ম সচিব পীঠমূৰ্দ্দ বিট চেটক বিদূষকভেদা ভতুর্ধা। সপিত जी भूनारकः भीठेममः। नर्ममूकि বোপ গুনেব ৷ কামতত্র কলা কে !-विष्ता विदेश महान ए दून ८-एक्टिश व्यक्तामिः विक्रिज्य श्रीमुकाती विम्-**বকঃ॥ #॥তেবা ম**ষ্ট সাত্ত্বিক **ওণা** यथा। (यम खद्धा २० রোমाकः ষর ভঙ্গে। १थ বেপথুঃ। বৈবর্ণ্য মশু পুণযাবিত্যপ্তৌসাত্ত্বিকা গুণা:॥ 🛚 ॥ তেবা॰ দশাবছা যথা। অভিলাব ख्या विषा सृष्टि ए छन की र्डनः । ্উদ্বেগক পুলাপক উন্নাদে৷ ব্যা-थि (রব চ !) জড়তা নিধনান্যেব **দ**-শাব্ছাঃ পুকীর্ত্তিয়া। ইতি রস-मङ्बी ॥

नायकाधिनः श्रुः नित्रनुः। द्राका। इिंड मस्त्रज्ञावनी ॥ नायिका जी पूर्णामिकिः। मा ष्रदेश। यथा। उट्यार्थ नायिका (प्रवृत्र) दन्न-' उः भृति श्रुक्तयः । উगु्रुष्णाः

कांक व्हर्जानु। विकास विकास विकास ক্রমঞ্চ চামুখা চন্ডা চন্ডা তী ভথা । भाषा ठाई मार्न टिजाः भाषामि ক্ষত তথা। পঞ্চোপঢ়ারেঃ সংপূজ্য ৈ ভরবামধ্য দেশতঃ। ইতি পুত্তি-सल्ड ५२ व्यद्धायः ॥ मृकात त्रमा শস্থন বিভাব কপা নারী। সাচ किंद्रिया। श्रीया २ शतकीयार नामान्। বনিতা চেতি। তত্ত্ৰ স্বামিন্যেবানুর-का शीया। श्रीयाणि जिविशा मुका মধ্যা পুগল্পাচ। তথা অদুরিতযৌ-दना मूथा। मा ह उद्घा जरगोवना वा-क्टाउलीयना हारियय कमला नका **७** श्र श्राभीन दिन निर्माण । रेमव कारमा काउभुम्या विभुक्तनरवाण ॥ यनान ः ज्ञा यमना संश्रा । अटेयन চাতিপু খুমাদতিবিশু ধনবোটা।। প-তি মাত্ৰ বিষয় কেলি কলাপ কো রিদা পুনৱান মধ্যা পুগত্তে মানাব-স্থাণ পুত্যেশ ত্রিবিশে। ধীর। অধীরা ধীরাধীরা চেতি। ব্যস্ক্য কোপ পুকাশা ধীরা অব্যস্ত্যকোপ পুকাশা অধীরা। ব্যস্ক্যাব্যস্ক্য কো-প পুৰাশা ধীরাধীরা। এতে ধীরা: ॥ ्रा विद्या क्षिति ।

জ্যেষ্ঠা কনিষ্ঠা চ ।। পরিণীতত্ত্বে পর্তি ভতু রধিক শ্রেহা জ্যেষ্ঠা। পরিণী-**जर्द गाँउ जर्द न्। न (देश) कनिहा** ॥ 🛊 ॥ अभुक्ष भन्न भूकवानुतामा পরকীয়া। সা চ দিবিখা। পরোচা कन्यका है। एक्षा विषयों विकिठा वनही अनुभगाना मूक्ति। शुज्जीनाः পরকীয়ায়া মেবাস্তর্ভাবঃ ৷ হুন্তা ব্রি-থিধা। বৃক্ত সুরত গোপনা। বর্ত্তিব্য मान मूत्रेज माभना। वर्खमान मूत्रेज োপনা চ।। বিদ্ঞা দ্বিবিধা। বাশ্বি-দধা ক্রিবাবিদধা চেডি ৷৷ অনুশ্যা-না ত্রিবিধা। বর্ত্তমান স্থান বিষ্ট্রদেন ভাবি স্থানাভাব শঙ্ক্ষযা স্থানধিষ্ঠিত मक्षि इति जुर् र्गमनानुमातन ।। 🗱 ॥ বিভ মাত্রোপাধিক সকল शूक्या जिलाया नागान (निजा । এতা অন্য সম্ভোগ দুংথিতা। य-কোজিগরিতা মানবত্যক তিসে ভবস্তি। বক্রোক্তিগর্মিক্ দিবিধা। পুনগৰিত। দৌন্দৰ্জীৰিতা চা। गानवृत्री यथा। द्वित्र भूतिका किंडा मानः। ज ह नेर्द्रे मधीरमा एक শ্চেতি। অন্নাপনেয়ো নযুঃ। কষ্টা-भरनर्या वर्षा महामः । कडेकमो भरनस्य

ক্তি রব্সাভিঃ পুত্ত্যেক নপ্তবিধা। শ্লোষিতভত্কা খণ্ডিতা উৎকণ্ঠি ভাকলহাভরিতা বিপুলর। বাসক াসজ্ঞা স্বাধীনপতিকা অভিসারি কা চৈতি গণনাদপ্তাবি শত্যধিক শত ভেদা ভবতি। তাসা মুক্তম বিধ্যমাধ্য গণর্যা চতুর্ধিকাশী **ভি শতত্র্য ভেদা** ভবস্তি। তত্রা नाः पित्र अपित्र पित्रपित्र छ-(एन ग्रान्या विश्वकामामधिक म-ভ যুত সহসু॰ ভেদা ভবন্তি। ইতি त्रममध्यद्गी ॥ 🏶 ॥ कस्त्री वित्मयः । यथा। চূর্ণাকৃতি স্ত খরিকা তিলকা **তিলাভা কৌলখ বীজ সদৃশী চ** দ্লিখিকাখ্যা। স্থা তডঃ কিব-্ **हिय**े .किल शिखिकामग्राखम्गाक किक्मिर्भिकाणि ह नायिदेक्या ॥ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

নার॰ ক্লী নার্জানিক। ইতি ব্যাকরণণ।।
নর সমৃদ্ধি তি । থথা । মল মূত্র
পুরীবাজি ক্রিড়া ভূপানুহণ সচেলো জল
নারণ পৃষ্ঠা ভূপানুহণ সচেলো জল
লাবিশেৎ ।। ইতি সামান্য নিক্

শুকং ।। এতাং বোডশ অন্ত । নারঃ পুণ তর্ণকং।।জলণ ইতি মেদিনী জি রব্ছাভিঃ পুত্ত্যক নপ্তবিধা। নারকঃ পুণ নরকঃ।।নরকছ পুর্যানি শুরুবিভত্ত্ কা থণ্ডিতা উৎক্তি ত্রি । ইত্যমরঃ।।

> नात्रकी जि नत्रकणः। यथा। शर्तः। विश्विक कर्म सकरमं ि वरमह यः ॥ ज उठाउ दुक्षमा की सश्चानात्रकि नात्रकी ॥ देकि वृश्कर्म शृतात्म के-खत्रथस्थ अन् कामाकी हैः॥ सम्कामा-नात्रकी हैः श्रुष्ट कामाकी हैः॥ सम्कामा-

> বিহন্তা। ইতি মেদিনী।। নারস্থ শ্লী গর্জর 1ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ नात्रकः श्रुः शिक्षवीत्र मः॥ यमकशुःी भविष्टेः। ইতি यिषिनी ॥ कलवृक्त-বিশেষঃ। নার**ন্ধী ইতি** ভাষা। তৎ शर्यत्रयः। नागत्रकः २ मूदकः ७ ज्ञ-ন্ধঃ ৪ ঐরাবতঃ ৫ বজুবাসঃ ৬ যো-গারক: ৭ যোগরক: ৮ সরক: ৯ গ-স্কাচ্যঃ ১০ গদ্ধপত্রঃ ১১ বরি ৪ঃ ১২-। व्यंत्रा खगाः। मधुत्रद्रः। व्यम्नद्रः। अ-ৰুৰ্ণাণ্টকুৰণ।রোচনত্বণ।বাতাৰ कृति मूल मुन नानिष्। वन्रष्ः क्ठाज्य । इंछि द्राजनिर्घकः ॥ छ८ কেশর গুণাঃ। অত্যন্ন নীবন্মধুর ব্ৰ্য়ণ ৰাভ বিনাশন। ৰুচ্যু বা-ভ হত্তকৈৰ নাগৱন্ধস্য কেশৰী হি

ইতি প্লাজবঙ্গভঃ॥ अद्भरः श्रु प्रविवित्नियः। त्र जू कागाभी वुष्रमाभाष्ट्रभवर्शनामा गक्तर्वा ज्वा भून दुं का दीर्यता मृत् **भन्ताः काणः। यथा। त्यानक** ेवाह । नुक वीर्याह्म भङ्गाः गहार्वाका পবর্ছণঃ। জাভঃকেন পুরারেণ ত-्र छ्वान् वङ्ग् मर्राष्ट्रा क्रिके क्वाह। क्षेन् अब्दू हं (म्हिंहे सिन्दा शान ব্লাজকঃ।কলাবভী তস্য পন্নী বন্ধ্যা চাপি পতিবুতা।। স্বামি দোষেণ সা বন্ধ্যা কালে চ ভরু রাজ্ঞযা। উপস্থিত বনে ঘোরে নারদ কা-, भाजा मूनि ।। काममानक अक्ष क्वाउ॰ वुक्तवहंगा । जरङ्गे मूर्यणः क्षा ना ध्रानाडक मूतः भूतः ॥ উবাচ বিনযেনৈব কৃত্বা চ 🖺 হরি• क्षि॥ (गानिकारः विक 📆 ह क्रिवम् ह कामिनी । भूआर्थिनी **हागडाइ॰ उम्ब॰ जुङ्क बाउद**या॥ बीर्य्याशानः चक मिय जी नाल-क्ता रूप्रशिका। (किनीयमा न मा-बाव वर्हः नर्ब ज्वा यथा।। व्यकी कन प्रता हरकाश मूनि शूक्युः। व्यनी बर श्रव छाड़ी मुद्द करशेष्ठ-

তালুকা॥ এতি মন্তিরে তেন পথা-याम्याज स्मिनका । जम्या जिन्ह्न म्ह्री मू निवीर्यः अलां उर्।। अजूता छा ह व्यमी क्षा जलका भूमा। मा-বিপুগেছে সাধী চ সুসাব তনয় বরু । छश्र काक्षन वर्गाजः ब्रुवाहः वृक् ভেজসা। অনাবৃষ্ট্যবশেষে চ কালে বালো বভুব হ। নার• দদৌ জন্মকা-লে তেনায় নারদাভিধঃ ॥ দদাতি नातः जानक वानक जुन् वानकः জাতি**শরো মহাজ্ঞানী 'তেনায• না**-त्रनाज्यिः ॥ वीर्य्या नात्रन**रम**त्र व **ज्**व वा न का भूति। भूती न्यु भ ५ वरत्रे तव তেনায় নারদাভিধঃ। কল্লান্তরে বুক্ষ क्शेषज्ब वंश्ता नजाः । नजान्तान ভৎ কঠঞ্চ তেন তন্বারদঃ স্থৃত:।। ততো বভূব কালশ্চ নারদাৎ কঠ দেশতঃ। তজে। বুন্ধা নাম চকে নার-দশ্চেতি মঙ্গল ।।এত স্মিন্নন্তরে বিপুা व्याययू विश्व मिन्द्र भू निम्मवः शक वर्गीया महाएउडाब्रिमा यथा ॥ हजू-র্বেকো মুনি স্তব্যু ব্রুপাশ্চ কপাল वंश्युक्तशूधः मिणु का का विकन्धः मरने नुमा।। भक्षा द्वानी निक्षाका गकाकीत्र सत्गार्त । एक गावा

विश्र म्ड॰ विक्नियः स्वाभ गः॥ দিব্য বর্ষ সহসূঞ্ নিরাহারঃ কৃশো-मतः। मनर्भ वालाका ध्रात्न मिव्रः লোকক বালক ।। দ্বিভূত নুরলী **क्छ क्ष्मान** विविद्य । विद्य द्यान व শোকার্জো যদা যদুষ্টু মক্ষনঃ॥ क ज़िलाश्य मृत्न ह न मृश्वी वानक॰ শিশু:। বভ্ৰাকাশ বাণীতি ৰুদত্ত বালক পুতি॥ সক্ৰদৰ্শিত ৰূপ छरम्य नाधुना श्नः। शून पूरकाति গোবিন্দ জন্ম মৃত্যু হর হরি ।। ইতি **শ্রন্থা বালকশ্চ বিররাম মুদান্বিতঃ।** কালে তত্যাল তীর্থে চ তনু• কৃষ্ণ• । হ্রদি মরন্।।বভূব শাপ মুক্তিশ না-**রদস্য মহামুনে।** তরু ত্যক্তা স হী বশ্চ বিলীনো বুন্ধ বিগুহে ।। কতি কল্লান্তরে পভীতে সুষ্টু পৃষ্টি বিধৌ भूनः। मत्रीं वि मिट्यु मू निज्ः मार्छः **কণ্ঠাদ্বভূব সঃ।।** নারদক্তেতি বিখ্যা-তো मूनीन्दु (स्नू ह्र जूना ११ # ११ इंजि वुक्रतिवर्खि वुक्रिशुं ७ २०। २२ जधाः यः ॥ তস্য সর্বব্যু ভুন্ণ কারণ यथा । তা কাপিনিটান বিজ্ঞান পুথান **দক্ষ পুজাপ**কিঃ। ক্রোধঞ্জে**•**মহা ভাগ নারদ স শশাপ চ ৷৷ নারদ

नावा

শাপশ্চ প্রভাগবতাক্তম। তথাক্লোকেবু তে মূচনভবে বুনতাংগ্রহ
নিতি। ইতি বিষুপুরাণে ১ অংশে
১৫ অধ্যায় স্তটাকা চ।।
নারা দ্রী জলং। ইতি শব্দর ত্বাবলী।।
নারাচঃ পুং সমুদায় লৌহস্য বাণঃ।
তৎপর্য্যায়ঃ । পুন্দেতনঃ ২ । ইত্যানরঃ ।। লোহুনালঃ ৩ । ইতি শব্দে
রত্বাবলী।। দুর্দিনং হাত শব্দাশালা
নারাচিকা জী নারাচী।ইতি শব্দা
র্ব্বাবলী।।
নারাচী জী স্বর্ণকারাদীনাং নারাচাকৃতিলোহতুলা। নিক্তি ইতি ভাষা

তিৎপর্য্যাখ্যানারাচিকাং এবিণিকা

ত এবণী ৪। ইতি শদরত্বাবলী ।।

নারায়ণঃ পু॰ বিকঃ। তস্যু চত্বারো

ব্যুহাঃ। বাসুদেব সক্ষর্যণ পুরুষানিক্জাখ্যাঃ। ইতি মহাভারতং॥

বৈদাস্তমতে। শুজান্তর্যামি সূত্র বিরাডাখ্যাঃ॥ তমান বুড়ে পান্তি বর্ষাঃ। বামান বুড়ে পান্তি বর্ষাঃ। বামান বুড়ে পান্ত বর্ষা।

। সা রূপ্য মুক্তি বচনো নারেতি চ

বিদু বু ধাঃ। যো দেবো প্রানণ তম্য

'স চ নারাঘণঃ মৃতঃ॥ নারাশ্চ কৃত
পাপাশ্চাপ্যুনণ গমনণ মৃতং। বতোহি শম্নুণ তেবাং সো ব্রং নাই

शायनः म् जः ॥ ना दक त्याकन भूग नर्गन खानगी क्रिंड । जर्गा क्राने ভবেদমাৎ সো ২ন নারামণঃ মৃতঃ ।। इं जि जुम्मदेववर्र्ड निक्षकमधर् २०२. अर्थायः ॥ 🕸 ॥ आस्मा नात्रा ইতি প্রোক্তা আপো বৈ নর স্নবঃ। অখন তস্য তাঃ পূর্ব তেন নারায়ণঃ म्र्लं ना इंडि विक्ष्याण ॥ यशा। नात्रो ङाञीन उङ्गानि नात्रां नी जि वि मू वृ धाः। जात्न । वायन जन। जन। जन नातायनः स्टः ॥ उथा। यह किंकि-জ্ঞাৎ সর্ক দৃশ্যতে প্রতিগিকী। অন্ত বহিশ্চ তৎসর্বণ ব্যাপ্য নামা যাঃ স্থিতঃ।। তথা। পুন্তেঃ পর এ वागुः म नदः शंकवित्मकः। उत्मु गानि ह ज्ञानि नाता ी जि शुरुकरं া৷ তেৰা নগ্যয়ন ব্যাভিয়ালারাই-नः मृठः।। कृष्टिम्यन्यति नत्र नाम सं-. বে রপত্যতা গভঃ। ইতি নারায্যঃ া ইত্যার টা কাবাং ভরতঃ ii # ii भना इक्ली यथी। अक्कक विश ৰূপে। দ্বিভূজণ চত্ভু জঃ। চতুভু জণ্চ दिन्नरिशालाकि विज्वः स्य ॥ ह-**पु पूँ बर्गा म**ज़ी हम हा**वासी:** नत्रश्री । गदा ह जुननी हिन्द्रस्थी नोतायन

কিরীট মুখটো জ্বলং নিরাকারণ জানগম্য সালারণ নেইবারিণণা নিত্যানন্দে নিরানন্দ স্
ব্যামজন প্রস্থান নির্মানন্দ স্
ব্যামজন প্রস্থান নিরামন্দ স্
বার্মজন প্রস্থান হার্মানার নির্মান দেবেকিনিক্তি ভাল পুলাননে ॥ইতি কাকিনিক্তি ভাল পুলাননে ॥ইতি কাকিনিক্তি ভাল পুলান হার্মানার নির্মান স্কর্মান কল্ল লাত্র্মণ নিরাম্বানি
স্ক্রিণিথ ভাল মাতি গ্রাম্বানার প্রস্থান কল্ল লাত্র্মণ গ্রামান্দি
স্ক্রিণিথ্য লাতো ভবতি নিল্ভিন্ন।
ইতি ভাক্তি লাতে। ভবতি নিল্ভিন্ন।

ব্রিনী।তথাপি নরকেম্টাঃপতভীহ কিন্দুত ।।ইতিনহাতারত ।। 🛊 ॥ छम्। जूषि जनक कर्मानियशा है क्ष प्रवाह। कर्या दान विरशुन्तु जूडिस्य কুদি জায়তে। ক্রোধুক্ত ত**ে সমন্ত**॰ তে कथयानि यमान्य ३।। त्या मयानू षिं जामुक्ष गर्बज्ञ गर्बमा। अइ-স্কারেণ হীনশ্চ তস্য জুঃ ষ্টাম্যুহং স मा।। कर्म वर्ष्यात्रामर्थि या धर्म जिल नमदिजः। द्वां यथार्थं १६७ जन् जूरक्षेत्रग्रहः गरा॥ मिक्टेः वस मन्।-नाम्। मञ्जास याजि मानवः। मानाः প্রমান সদৃশ স্তস্য ভুষ্টোম্যহণ সদা ॥ সর্ব দৃত শরীরস্থ যো না॰ জানা-তি मानवः। शत्र हि॰ मा विशेषा य सम्बद्धामाइ मा। कर्मान ष्मक्তে यस সুবিচার্য্য পুনঃ পুনঃ। গোরান্ধণ হিতৈথী চতস্য তুপ্তোম্য্য-रः मना ॥ ﴿ विकक्तः वहनः यञ्चाः ष्यः भित्रभाक्तियः। भुभन्न भाजि यङ्गाम सुरु दे द्वाद्वीयार नम् ॥ मानान, पूर्णका तिर्छ। या ममाछि দ্বিজোক্তম। শবি চিত্ত সদাবিস্য ত-न्। जूदीयारः नमा ॥ कर्पना उन

তুঞ্জৈমি নিক্ত॰ তৎ স্মাসতঃ ॥ #॥ ভস্যরোষ জনক কর্মাণি <del>বর্ধা।</del> क्छोम्प कर्माया यन विश्व विद्य मृगूष ত ।। পর हि॰ সা রতো यस निर्फरः न ईबख्तु। थह्रश्रुः नर्दमा कूष्तः न-না বৰতি শতুতা ৷৷ অসত্য ভাষী ক্রশ্চ পরনিন্দাপরস্ত যঃ। পর ব-র্ত্তন বিধৃ সী মন্ত্রা নয়তি শ্রুতী ।। व्यम्डे मायो भिजतो क्षी जुार्ज् ज-গিনী স্তর্থা। মোহাত্ত্যজতি নূঢ়ো यः **স মা•ন**যতি শত্ৰুতা•॥ পিতৃ নিৰ্ভৎ-नानः यस बकारा मृष्यी नंतः। अर्द-বক্তাঞ্চ বিপেুন্দু সমাণ নযতি শত্ৰু-তা ।। দশত্যে র্ভেদন বস্তু হেতু नावि कनिए। वर्षा दुविन শুেষ্ঠ স মাণ নয়তি শত্রুতাণ। বিপুষণ रिवजा नुवार भन्न नुवार मानवः । হরতে যন্ত বিপ্রেন্দু স মাণ নয়তি শ-ত্র্তাঁণ। সারাম ছেদিনোযে চ জলা-**শ**य दिल्का शिनः। शुगननाम कत्रा य **ट उचा॰ क्रिम**्रङ् जना ॥ शत्र-ক্সিয় সমালোক্য বিবাদ যান্তিযে জনাঃ। শৃথন্তি পাপচর্গাণ যে তেষাণ क्रहोम्प्ररु॰ जना ॥ विवस्त्रताथ॰ (य म्हा वनावम् रत्रि व । विश्वाम

যাতিৰোঁ যে চ তেবা॰ ৰঙৌৰ্য্যই॰ 🕴 नार्।।(य ह भा वीर्य) रहादा व्वनी পত্যক বে। অত্বত্থ হাতিৰো বেক তেবা॰ কঠোক্যেহ॰ সদা।। बुका विकु সহেশানা মধ্যে যে ভেদকারিশ্ব! (तम निनता करा। य ह उच्चा॰ करही-मार्र मना।। वकारमारा जुङ्गा य মোঁড়াৎপাপথিয়ে নরাধাপরদারা-দূরকা যে তেয়া॰ কণ্টোষ্যক্ সদা।। পাপবুজিপুদাযে চ যে চ নিত্র হৈ। দ্বিদ্ধ। ধাত্ৰীতক 🕸 যে মুস্তি তেবা॰ काक्षामा १२० जना ॥ निवास नियुनः ए ह इसं काम माहिजाः। तकः মলা জিয যান্তিতে বা কু ছোমা হে • जना ॥ (य ह मृद्धाजूताः नातीः मारा-মুছন্তি সন্তম ব্রুতস্থাঞ্চ সদা তে মাণ নগম্ভি শত্ৰুতা ভুবি ৷৷ অমাবাস্যা তিথৌ যে চ **দৰ্**তে নিশি ভোজন<sub>়।</sub> ভোজন ঘ্য মেকাকে ভেষা কুষ্টো माह् नमा। वाभियं स्मिथ्न टेजन मयावामु। फिल्म विकाः। न स्य जुङ्खि विर्भुमु (ত्याः क्षीय)हः महा।। বহুনাত্র কিনুক্তেন সংক্ষেপাত্তে বদা-मारः। निम्हि देवस्यान् त्य इ.ता याः महोमारः नहामहिक किया

त्यागमात 🥦 व्यक्तियः ॥ 🗱 ॥ विकामिन भूयः। यथा। कान्यसङ्ख দিজ: কশ্চিদাসী পতি রজামিল: ! नामानक मनाजाता माम्ताः मःमर्ग দ্বিতঃ ।। তস্য পুৰ্যসঃ পুত্ৰা **দশ**-एउषान्त र्या १वगः। वाला नात्राय-ণো নামা পিৰোশ্চ দ্বিতো ভূশ।। म्रा की उनका गळ॰ भू ध॰ ना तायगा-खर॰। तावित्वन स्वादिशाहि तानू-श्वाक्तानुषः ॥ निमम् भिष्-मागमा मूथाला इति की उने । जर्ज नीम महाताज भाषाताः महना পতन् ॥ विकर्यत्वास्त्रईनियामानी-পতি মলামিল । ইতি প্রভাগ-वित्र यहकाक भूषमायायः ॥ 🗱 ॥ रेमन् विष्मयः। यथा। यथ मण्डनन जूनानाः (गाभाना मह्मः मह् । নারায়ণা ইতি খ্যাতা: করে সংগ্রাম (याथिनः ॥ मूर्य्याथनम् उर रेमन्र नर्व नावांत्रयखज्द्वात्रानाः नह-সুঞ্ধ বোধানা প্রাপ্য ভারত।।ইভুঁ **(माभभर्थित ५ ज्**षेत्र १ ॥ ॥ धर्म-भूवर्षि विष्णयः यथा । वर्षात्र एक मूरिंठर्ग कनिट मूर्खन नातायान नत ইতি মতপঃ পুভাবঃ। ইতি প্রভা-

्र ग्रुड विञ्चियकत्त्व १ व्यवग्रयक्षाक्रा। म् अङ्ग नाव्या नहा नाहास्या , ज्यार । इंडि राजिश्याः ॥ माबाबगरेज्यः ही अवश्र शह रेजन ्राञ्चरः। তथिविषः। सन्नः वृहर सर्ह। यथा। विदाधिमञ् व्यापनाक भारेना भारति जुनाः। भुनात्। শুগনা চুবৃহতী কণ্টকারিকা ॥ ব-লা চাতিবলা চৈব খনংখ্রা স পুন-नेता। এवा॰ मम शवान् जागान् हर्सा (१ २ सनः भारत् ॥ भार শেষ পরিসাব্য তৈলপাত্র প্রদা अयट । भेजश्रुवा स्वराक नाः नी रेन्द्रविषयः वहा॥ हन्द्रनः छगद्रः ্ষষ্ঠ এলা পণী চত্তইয় । রাম্। खत्रगणका ह रेमकव म भूनर्नव ॥ **এ**या॰ हिश्रालिकान् जागान् श्रय-विदा विनिः किराय । भागवती ्रत्रमाक्षव रेजन जूना श्राभाय ॥ णाज वा यहिंद्या गदाः कीवः हजा **हर्स्था॰ । के** दिशास वरसे उथा-ভাষে ভোজে চৈব পুশস্তে ॥ অখো বা বুঁতি সু ভগো গজো বা यरि वा नदः। शक्नुनः भीवेमभी ह তৈবেনারেন সিধ্যতি ॥ অধ্যেভাগে

क्ष दाजः निद्धानश्च शेषाने । । मम्प्राचाय नेवान रहा। युगा भूगाजि हैक्यान ११कि र्मम् ह विश्ववा। कीलिमुना महेनूका क्वकीणांक रव नहाः ॥ पश्चित्र वज्ञ-जिखानक मन्दरमध्य अवगा अञ्जू बाह या नाङ्गी, याह शर्छ न दिन्हि ।। वाजारखीं-वृज्ञानी रयवा मजुब्धिन माक्ना। अञ्चल घत्र छ्वा नाम নারাষণ মৃত।। ইতি সন্ন নারায়ণ তৈল॰ ১॥ 🛊 ॥ শ তাবরী চা-শুমতী भ्याभगी मधी दला। अत्रष्टमा ह मू-লানি বৃহত্যোঃ পৃতিকস্য চা৷ গবে-धूकमा भूवानि उथा महहत्रमा है। **এবা॰ न्यशनान्** छागान् इलानारा विभाइत्र ॥ भारत्भात्य द्वरमभूछ गर्छ रहन अनावरम्या भूनर्यदा यहा দাৰ শতাৰা চলনোতক। শৈলেয় তগর ভাষ্ট এলা মাংসী স্থিরা বলা মে व्यथा वात्रेक्स्य द्राज्ञा भगार्खा निक श्वरद् । गर्ता भग्नः शुक्ते की षात्रक श्रुमाशदर ॥ मठावदी दन शुरु रेजनशृष्ट् विशाहरये । 🐖 षमु रेजनमः मिषामः न्मृ वीर्यः নতঃ পরে শিক্ষানা কতিভানিং

নারায

ज्ञक्षत्रार्गः उथा नृनाः। रे**उन** मिउ९ পুথেক্তিব্য সর্ববাত নিবারণ।। আ यूयाः क नतः शीवा निकत्यन कृता ভবেৎ। গৰ্ক্ত মশ্বতরী বিন্দ্যাৎ কি• भून मानुकी ज्था ।! क्रह्नं भाष म् লঞ্চ তথৈবাৰ্দ্ধাবভেদক । অপচী পণ্ডনালাঞ্ড বা তরক্ত॰ হনুগৃহ• ॥ কানলা-পাপুরোগঞ্ অস্মরীঞ্চাপি নাশহেৎ। তৈল মেতন্তগৰতা বি-ষ্ণুনা পরিকীর্ত্তিত।। নারায়ণ মিতি খ্যাতংবা**তাম্ভ**করণেশুভণ **ইতি বৃহ**-मातायगरेजन भा 🗱 📭 विनाधाका वृद्जी चम है। (भागनाक वाष्ट्री नक পারিভদু॰। কুন্ ংঠিন্যাভিবলাগ্নি मञ्-मृनानि हिया नतनी युजाना ।।। মূল বিদদ্যাদৰ পাটলীনা পুত্ত্যক নেষা॰ পুৰদন্তি ভজক্তাঃ। সপাদ পু স্থ বিধিনোদ্ধ্ তাঞ্চ দ্বোণৈ রপামপ্ত ভিরেব পক্তা। পাদাবশেষেণ **রসে**ন তেন তৈলাঢ়কা ভগ্ন **সম সেব দুধ্ব**। ছালস্থাপদুৰ মেৰ তুল্য মেকত্ৰ मग्रिशिषाट मृतृषिः ॥ मन्त्रामुमः ধ্বৈৰ শতাব্রীণা তৈলেন তুল্যু श्रन रत्रव उठा तात्राश्रगका क्रम माक अक्ष भवी हजूका एक उनका सावि।।

नात्राय:

निकृष गा॰ नी त्र बनी. षयक रेमान-यक वन्सन शुक्रतानि। वना न यडी তগরাদ পত্র• ভূঙ্কাপ্টবর্গাস্ত বচা প-লাশ । ছৌণেয বৃশ্চীরক চোরকা-थ्राप्ति मनदे दिशन शुमारैनः। क्श्रं कान्यीत गृगा अजानाः मन्त्रा मूगकाय वर्षा किटि ॥ भूत्वर দৌগন্ধ্য নিবারণার্থ চূণী কৃতানা षिभव भूगां । जालां ५ मन् विधिविष्ठिभक्षः नातायणः नाम महह . रेजन ।। 🐉 ।। मरिनः भुकारेत विश्विव পুर्याका सथमा भूरमाः भवनार्ष्मि जा-नाः। य शक्षः भीठेवित्रर्भगाः व-কান্থহীনাৰ্দ্ধিত বেপমানাঃ।। বাধিৰ্য্য मुकक्ष्य भीषिजाम मन्त्रा इनुससु শিরো গদার্তাঃ। মুক্তা নরা তে বল বৰ্ণ যুক্তাঃ সংসেব্য তৈলং সহসা ভ-বস্তি ৷৷ বন্ধ্যা চ নারী লভ**তে চ পুত্র**ণ वीदाभगः मई ख्लाभभाः। माथा শ্রিতে কোষ্ঠ গতে চ্যুক্ত বৃদ্ধৌ বি-(धरा भवनार्ष्मिञाना ।। जिल्लानित्नु দন্ত গতে চ শ্ৰে ঔমাদ্ কৌৰে জ্ব কৰিতানা ৷ প্ৰাণোতি অসী পু-गना शिवदः जीवहितः ठानि छ्रा प्यूरवव ।। (एवाजूत युक्वत्त्र मभीक्र)

সাগৃন্থি ভগ্নানসুরিঃ সুরাং ক। নারাযণেনাপি স্বকৃংহণার্থণ স্বনাম তৈলং ॥
বিহিতন্ত তেষাং ॥ ইতি নহা নারাবণতৈলং ৩। ইতি সুখবোধঃ ॥
নারাষণপি্যঃ পুং শিবঃ । যথা ।
নারাষণপি্য মনস্থ নদাপহারং ।
স্বারাণসীপুর পতিং ভল্গ বিশ্বনাথং
॥ ইতি তৎক্ষোত্রং ॥

नातायगत्कवः क्री शक्राशुवाहावधि হস্ত চতুষ্টয় মিত নারায়ণ স্বামিক **ञ्चान । यथा । भुवाञ्च म**विध कृत्रा বাৰদ্বন্ত চতুষ্কৰ । অত্ৰ নারাযণঃ স্বামী নান্যঃ স্বামী কদাচন ॥ ইতি বুন্ধপুরাণ ।। #।। অত্র কিঞ্চিন্ন দদ্যা-ह সाक्षां शाखाय शूग्रवान्। यख পুতিগুহে রাজন্ বিক্রীতা জাহাবী ভবেৎ ॥ বিক্রীতাযাঞ্চ জাহ্ব্যাণ विकीला ज्ङ्जनार्यनः। इनार्यन চ বিক্ৰীতে বিক্ৰীত ভুৱন ত্ৰয় ॥ কোপি ন'দ্রাণ কর্ত্তাস্য নিঃসম্বন্ধ পু সক্তঃ।। 🛊 ॥ তত্ৰ কৰ্ত্ব্যানি যথা। मीकाक (मर्रभ्डाक डाभ गका उटि हात्र । भूइ वागः शिथायात्रि সাবিত্রী জপ মাচরেৎ।। শাুুুুরঞ্ তর্পণক্ষৈব পরোপকার কর্মচ। প

## নারায

রোদেশঞ্চ মনসা ত্যক্ত ইুব্যস্যদা-পনে। স্তব পাঠঞ্চ মৌনঞ্চ নীচালা-প বিবর্জন ।৷ কেবল বারিপা ক কর্ত্তব্য বুন্ধভাবতঃ। এতানি কিল कर्मानि किंद्ध नातायण ठात् ।। ইতি বৃহদ্ধর্মা পুরাণে ৪৫ অধ্যায়ঃ ।। \$11 व्यविष्ठिः शक्ना मत्म मुक्टेवरः।। নারাযণান্ত্র• ক্লী বিষ্ণোরন্ত্র ভেদঃ। তৎস্বৰূপ॰ যথা। তদা দান্য নাথেন युक्छ॰ नातायन॰ नातः। नात्र ठक गमा :হস্ত• খন্ন পৃষ্ঠ ব্যবস্থিত•॥ইতিদে-বীপুরাণ ॥ অপিচ। ততো হরি-इत्रः गुष्क मञ्चापु । स्पृः পাশুপতান্ত্রেণ বিব্যাপ হরি মো-कमा।। इति नीत्रायनास्त्रन कृषुः वि-ব্যাধকোপবান্ । নারাযণ পাশু পত মুভেঙ্কে ব্যোদ্নি রোষিতে॥ যুযুধাতে ভূশ• দিব্য• পরস্পর জি-ঘা স্বা। দিব্য বর্ষ সহসুদ্ভ তয়ে। যু দ্ধন ভূত্তদা।। তত্তৈক মুকটো দক। नृष्रं न । बहेबालकः। এकः शुक्षाशः যहङ्ख মন্য ডমৰুক শুভ ॥ এক **থান্ন করণ তত্র তথান্য দণ্ডধারিণ ।** এক কৌস্বভ ভীমান্ধ মন্য ভূতি विज्ञिन्या अवः गनाः जागगरः

দ্বিতী**শ** দণ্ড নেব চ। একঃ **শোভ**-॥ তি কণ্ঠস্থৈ র্মণিভি ভৃঙ্গিভিঃ পরঃ। এক পীতাম্বর তত্র দ্বিভীয় সপ মেথল ।। এবন্তো স্পর্দ্ধিনাবন্ত্রো ब्रमु नात्रयभाजात्को। जानानाजि-শযোপেতৌ তদালোক পিতাম-হঃ৷৷ উবাচ শাম্যতা মস্ত্রে শ্ব স্থ ভা-বেন সুবুতে। এবস্তো বুন্ধণা চোক্তো শান্তভাব॰ পুজগ্মতৃঃ ॥ তথা বিষ্ণু হরৌ বুন্ধা বাক্য মেতদুবাচ হ। উ ভৌহরিহরৌদেঝেলোকেখ্যাতি গমিষ্যতঃ ॥ ইতি বরাহ পুরাণ ॥ नातायनी जी मूर्गा। वक्तीः।। भठा-. বরী। ইতি হেমচন্দুঃ।। 🛊 ।। তদ্য বুৎপত্তি ৰ্যথা। যশসা তেজসা किल नीत्रायेग ममा खेलः। निक র্নারায়ণস্যেশ তেন নারায়ণী স্মৃতা ।। ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে পুক্তিখণ্ডে ৪,৫ व्यथ्रायः॥ व्यशिष्ठ। नादायगोर्काकः ভূতা তৈন তুল্যা চ ভেলসা। তদা তস্য শরীরস্থাতেন নারায্ণী স্মৃতা ।। ইতি শ্ৰীকৃষ্ণজন্মখণ্ডে ২৭ অধ্যা-यः ॥ 🕸 । शक्ता । यथा । शक्तिय विश्वमूर्थारिय निवाम् जारेय नाता-येगा नमः। इंजि जनका। मूहन

মুনি পত্নী। ইতি পুরাণ ।।
নারিকেরঃ পু• নারিকেলঃ। ইতি
শব্দর্ভাবলী।।

नातिरकवः श्रु सनामश्रुमिक कवन्क वि**ष्मगः। ७८ श**र्यज्ञायः। ना**त्र**नी २ । ইত্যমরঃ॥নারিকেরঃ ৩ নাডিকে**লঃ** ৪ নারীকেলঃ ৫ নারীকেলী ৬ নারি-কেরী ৭। ইত্যাদি ভরতঃ ॥ নারি-কেলিঃ ৮ সদাপুষ্ণঃ ৯ শিরংফলঃ 🎾 । ইতি শব্দমালা ।। नालिकের: ১১ রসফল: ১২ সুত<del>ৃহ:</del> ১৩ কূর্নলে-थतः ७८ मृष्नीयः ७৫ नीय उरुः ७५ মঙ্গল্যঃ ১৭ উছতকঃ ১৮ তৃণরাজঃ ১৯ ऋक्ष उरुः २० माक्षि गाउाः २১ मूत्राक्शः २२ **ब**्रम्बक्षकः २० मृष्ट-ফলঃ ২৪। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ কু-ৰ্দীৰ্যকঃ ২৫ তুকঃ ২১ স্বন্ধকলঃ २१ উद्दः २৮ मनाकनः २५ । ইতি ভাবপুকশিঃ ৷ অস্ত গুণাঃ ৷ গুৰু-ত্ব•। বিশ্বত্ব•। শীতত্ব•। পিত্ত না-শিত্বক ॥ 🛊 ॥ অর্দ্ধপন্বস্য তস্যু **खरो। ज्या स्माय मञ्जूनदः।** मुर्द्ध-**तप्षः ॥ क्षः ॥ वान**नांत्रिकेन जन গুণাঃ। লঘুত্ব॰ শীতলত্ব। রসপাকে মধুরত্বণ পিত্ত পীনস তৃষাসু বিদাহ

नाबी

जुनि लाव भगन ३०। मुथन यिद्ध ॥ #॥ भक्नातित्व कव ख्नाः। কিঞ্চিৎ পিত্ত কারিত্ব । কচিদত্ত । **अध्रत्रः । मीलनवः । वनक्रवः** । इक्ष्यः । व्यादः । वीर्या वक्षनद्कः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। 🗱 ।। নারিকেল कनः भी उ॰ मूर्डितः विख (भाषनः। বিষ্টম্ভি বৃংছণ বল্যং বাত পিতাসু .**দাহ** নুৎ ৷৷ বিশেষতঃ কোমল না-রিকেল নিহস্তি পিত্তগ্বর মূত্র দো-यान्। उत्पव कीर्नः ध्यः शिखकाति বিদাহি বিষ্টম্ভি মত ভিষণ্ডিঃ ॥ **७**मासः मीउनः इत्रः दीशनः ্শুকল লয়ু। পিপাসা পিত্তভিৎ यामू विख **णूकि क**द्ग॰ शद्ग॰ ॥ 🕸 ॥ তস্য মন্তিক গুণাঃ । নারিকেলস্য তালদ্য ,খজুরস্য শিরাণসি তু। कषाय तिश्व मधुत वृष्ट्गानि शक्ति ह ॥ इंडि जादर्शुकालेह ॥ 🕸 ॥ वालमा नातिरकलमा इनः भारा \_িবরেচন•। ইতি রাজবল্লভঃ॥ 🗱 ॥ কা•স্য প্যাত্তে তব্জল• মদ্য ভুল্য•। यथा। नातिरकेलामक का भारता মুপাত্রে স্থিত নধু। গব্যঞ্জ তামু भावस् मरा ज्ना घ्ठ विना ॥

रेिं कर्याताहनः ॥ नादिक्वभीती खी मिठागवरोक्र সংযুক্ত গোদুধ পক্ষ সূক্ষীকৃত নারি-কেল থও। যথা। নারিকেল। তন্ কৃত্য ছিম• প্যসি গোঃ ক্লিংছে । সিতাগৰ্যাজ্য সংযুক্ত তথপাচেন্য-मूनाग्निना ॥ जम्रा ७गाः । नाति (क-লোভবাক্ষীরী দ্রিকা ীতাতিপু-श्रिमा। अभी भूगशुरा द्या इकि श-ভানিলাপহা॥ইতি ভবিপুকাশঃ॥ नात्री खी नू नंतरा वा धर्माठादता-२म् ११ । मू नंत्रमा (वयः । एट পর্য্যাযঃ। শ্রী ২ যো হিৎ ৩ অবলা 8 याया ७ जीम छिनी १ वशृः । পুতीপদশিনী ৯ বানা ১০ বনিতা **>> महिला** >२। इंडें प्रमतः ।। अन्ता উৎপত্তি কারণ• যথা। নাভূ রংক্তা-ভরা নারী।। অন্যচ্চ । বিষ্মারাণ তिথो कि ७॰ **স**र्या बी ब ख कना काः । ইতি সুখবোধঃ।। #া। তস্যা শ্চ-**ত**्रमाङाउयः । यथा । প्राम्ति हि-ব্ৰিণী চৈব শদ্ধিনী হস্তিনী তথা। চতসো জাত্যো নার্যা রতৌ জ্ঞে-,या বিশেষতঃ।। ইতি রতিমঞ্জরী ।। #।। म। विश्व विश्व यथा। यात्रिज

জিবিধা, বুন্ধন্ গৃহিণা মৃত চ্তে-সা• । সাধী ভোগ্যা চ স্থলটা তাঃ महीः सार्थ उৎপत्नाः॥ भत्राताक ভয়াৎ সাগ্ৰী তথেছ য়**শসা**ত্ৰায়ঃ। কান স্নেহার সক্তে ভর্তুঃ সেবাঞ্চ **স**র্ম্বত• ১॥ 🕸 ॥ ভোগ্য ভোগ্য-থিনী শশ্বৎ কাম স্নেহেথ কেবলং। **ল্বক্তে পতি সে**বাঞ্চ নচ ভোগ্যা দ্ঢেক্ষণ ।। বন্তালন্ধার সম্ভোগ সু-त्रिकाशत मुख्य । याद श्राद्यां সা ভোগ্য তান্ত বশগা প্রিয়া ২ ॥ 🕾 ॥ अनाकाद मना नाही अन्छ। **সল নাশিনী। কপ**টাৎ স্বৰুতে সে-वा॰ मानिया गर जिल्ला ।। गराश्रू॰ लाग मान्यु मन्या मन्याजूता। व्याक्तान विदः जातः शुर्थयन्ती नवः " নব॰ !! জারার্থে স্বপতি॰ তাত হন্ত নিছতি পু•শ্লী ৷ তস্যা•যো বিশ্ব भिक्त भीवन उन्हें निक्क । । किथ তা বোষ্ট্ৰেঃ সৰা উত্তমাণ্ম মধ্য-মাঃ। খাত্মারানা বিজানন্তি মনসা-তা॰ ন পাঙ্জতাঃ ৩॥ 🗱॥ তস্যাঃ স্কভাবো যথা। হৃদয॰ ক্ষুরধারাভ महर् भाष्यादमदः मूथ्।। मूर्याः পন্ সুমধুর বচন স্থার্থ সিদ্ধার।

পুকোপে বিষতুল্য তদনূহ শীল बद्भिज ॥ मूर्क्किय जनजिशाय নিগ্ট॰ কর্ম কেবল। তদা তাসাম-विनयः भुवनः जाइमः भवः॥ एति कार्य) इनाट कार्य) भश्यमाया पूत्र-ত্যবা। পু•স শ্চাপ্ত গুণঃ কামঃ শশ্বৎ কামো জগদ্ভুরো ॥ আহারো দ্বিও-ণো নিত্য নৈষুর্য্যঞ্চ চতুর্গুণ ।কোপঃ পু•সঃ ষড্গুণশ্চ ব্যবসাযশ্চ নিশ্চি-ত ।। যতেমে দোষ নিবহাঃ কাস্থা তত্ৰ পিতানহ। কা ক্ৰীডা কি॰ সুখ॰ পুংসো বিণ্যুত্রাশুষ বেশ্মনি ॥ তেজঃ भुनक्षे माञ्जाश मिवानाल सभः ক্ষयঃ। ধনক্ষয় স্তৃতিপ্রীতৌ রত্যাস-ক্তৌ বপুঃ ক্ষয়ঃ ৷৷ সাহিত্যে পৌৰুষণ नहे॰ कलाइ मान नामनः। मर्दनी-শশ্চ বিশ্বাসে বুদ্দলারীযু কিং সুখ ॥ বাব্দ্ধনী চ তেজখী সহীক্ষা বো- 🕡 ग्राजं भाराभाषाती रमीकर्ज् ममर्थ खावरमव हि ॥ (माणियः नि-র্গুণ বৃদ্ধ যোষিদ্যাপেক্ষতে প্রিব । লোকাচার তথা তথৈ দদাত্যাহার मद्भकः ॥ ইতি तुष्मदिषर्खशूत्राण वु-ক্ষথণ্ডে ২০ অধ্যানঃ ॥ এ॥ অগ্ন্যা নাৰ্য্যে যথা। <mark>মাতা মাতৃত্বসা শ্ৰ</mark>

মতিলানী পিত্রসা। পিত্ব্য স্থি ॥ শিষ্ট্রী ভগিনী তৎ স্থী তথা॥ ভাগিনেগী তথা চৈব রাজপত্নী ত থৈব চ। তথা পুরুজিত। নারী ব-र्लाटक्ष्ठा जरेश्व ह ॥ इंछार्गमाञ्च 'নিদিন্টা ভাসাত্ত গমনে নরঃ। শিশ্ন-স্বেগ্ৰহকৰ্ত্বন কৃত্বা ততম্ভ বধ মৰ্ছ-তি।। ইতি মৎস্যপুরাণে ২০১ অ भागः ॥ 🗱 ॥ जनाः मूज वकःः ষথা। নিগৃঢ় গুল্লৌ পতিতৌ পদ্ম-কান্তি তলৌ শুভৌ। অন্তেদিনৌ মৃদু **उत्नो मध्माह मक्ता**किको ॥ वङ्गाद्व रुव हिस्ती ह माम्याः शामी ততো ২ন্যথা। জঞ্জে চরোন রহিতে সুবৃত্তে বিশিরে শুভেমঅনুন্বণ সবি দেশ॰ সম॰ জানু দ্বয় শুভ•। উৰু করি করাকারা বাযামৌ চ সমৌ শুভৌ ।। অধ্বংগ পত্র সদৃশং বিপুলং গুহা मुखमः। भागी, बना देकः खीता मुक क्र्यामण भूज।। ग्रा मिनिक भू-উদে। निजम्म एकः भूजः। विश्वीर्ग মাংসাপ্চিতা গম্ভীরা বিপুলা শু-**छा ।** १ ना छिः शुरु कि गावर्खा भेष्ठ ক্রিবলি শোভন। অরোমশৌ স্তনৌ ्रशीतो घनावविवयो भुष्ठो ॥ कठि

सायदाभ मूरता मृद् शीका ह क्यूजा। আরক্তাবধরো শুেটো মাণসল ব-र्जु व॰ गुथ॰ ॥ जन्मश्रु इ नमा म्स ভাষিত কোকিলা সমণা দাক্ষিণ্য युक्त ममठे॰ इ॰म मद मुथावर॰॥ नामा ममा ममश्रुहा खीगान्त क्रितः मुखा। नीला १ भव निख र हमू नी-मः नक्षो त नम्दि ॥ न भृश् वा**लम्** নিভে ভুবৌ চাথ ললাটক। শুভ ম-(र्सन्तू अ॰ सान मजूक राजा साम ४० ।। তল্। भना कर्नयूग सम गृषु समा-हिछ । प्रिका नीमा म मृहत्वा मूर्ज-জাঃ স্বঞ্চিত কজাঃ।। জীগা॰ সম॰ শিরঃ শুেষ্ঠ পাদে পাণিতলে তথা। বাজি লঞ্জর শ্রীকৃক্ষ মূপেষু যব তো-गरेतः । धृक ठामक मानाजिः मिन **হ্বওল** বেনিভিঃ॥ **শ**হ্বাতপত্র পদ্মৈ-**म्ह म**९मा रखिक मृत्यः। वक्करेन রস্কুশাদ্যৈক স্তিয়ঃ সূত্রাজবল্লভাঃ ।। নিগৃত মৃণি বন্ধৌ চ পদ্মগর্ভোপমৌ করৌ।ন নিম্ন• নোন্নত• স্ত্রীণা• ভবেৎ করতল শুভ ।।রেথারিতাম্ববিধবা হ্বর্যাৎ সম্ভোগিনী 'ক্রিয় । রেখা যা मिनियक्ताचा गठा मध्याकूनीः करत्।। গতা পাণি তলে বা চ যোগা পান তলে

नातीर

ছিতা। দ্রীণাণ পুণ সাণ তথা সাস্যা पाजायह मूथायह ।। कनिश्विका मूले \ রেখা সর্য্যাচৈব শতাযুষ ৷ পুদেশিনী মধ্যমাভ্যামম্বরাল গতা সতী॥ ঊনা ख्याग्र**ः ब**र्याापुथा ठाङ्ग् ४ ग्लगा । - বৃহত্যঃ পুত্রা স্তশ্যস্ত প্রদাঃ পরি-कीर्जिञाः॥ अञ्चानुत्य लघु हिद्दा भी-र्घा हिन्ना सङ्ग्युरव । भुज् ख नक्ष व জীণা প্রোক্ত বৃশুত মন্যথা।। 🛊 ।। তস্যা অশুক্ত লক্ষণ যথা। কনিষ্ঠিকা নামিকা বা যস্যা ন স্পূর্ণতে মহী।। অমুষ্ঠ•বা গতাতীত্য তৰ্জ্জনী মলটা চ সা॥ উদ্ব দ্বাভ্যা• পিঞ্জিকাভ্যা• জান্ধ চাতিশিরালকে। রোমশে চা-তি নাণসেচ সম্ভাকারণ তথোদরণ।। বামাবর্ক্ত নিম্নমল্লণ দুঃথিতানাঞ্চ গু-क्कः। श्रीवया दुश्रया निश्वा मीर्थया ठ क्ल क्यः॥ পृथ्लया भूठ ७१ क जियः সুর্গাত সংশযঃ। কেকরে প্রিক্রলে নেত্রে শ্যাবে লোলেক্ষণা , ২সভী-॥ সিতে কুপে গগুযোশ্চ সা ধ্রুব ব্যর্ভি-ठातिनी। **अ्वश्विन ननार्के ठ ए**नवत्र• হম্ভি চাকুনা।। উদরে স্বশুর হস্তি প্তি 'হন্তি বিচোর্ছবোঃ। যাতু রোমোভরৌধী স্যাদশুভা ভত্তু রেব

हि ॥ उत्नी मद्भामाव मुखी कली ह विषयो তथा। कजान विषया प्रखाः क्षिमान ह ज्यायह ॥ क्रीयंत्रम कृष्ट गाः नाम भीषा जर्जूम म्जारत। क्रवाम करिंग र रिख्क व्क काका मि निवादिकः॥ निदारिक विविधः भूदि বিত্ত হীনা ভবস্তি হি। সমুমতোত্ত-वाश्ची या कनरें क्**क किनि**वी।। জীযু দোষা বিৰূপাক যুক্তারো গুণ স্ততঃ।। ইতি গৰুড়পুরাণ:।। नातीकविष्टः शुः नूर्यावःभीय म्लक-রাজঃ। স চ অশ্মক পুত্রঃ। সৌদা-স পৌত্রশ্চ। যে। ২সৌ নিংক্ষত্রে স্মাতলে ধ্যিন্ ক্রিয়মাণে জীভি-বিবস্তাভি: পরিবার্ব্যরক্ষিত: তে-**७ स• नातीकवठ मूमार्बस्थ। ₹**७ि বিষ্ণুপুরাণেও অ॰লে ৪ অধ্যায়ঃ।। नादीक्वः भू । नादिक्वः । इंडि नात्रीरकनी औ र्भमत्रवावनी ॥ নারীচ প্রী শাক ছিপেব:। নালিত। ইতি ভাষা।। তদিবিধণ তিকণ ম ধুরঞ্ । তিক্তস্য ৩৭:। রক্তপিত্ত न्द्रवः। क्षि अप्त विग्णिव्या। मधूतमा खगाः। शिह्नियः। भीज ত্ব। বিষ্ঠম্ভি কক বাত কারিত্বঞ্চ।

ৃতি রাজবল্লভঃ।।

ग्वा।।

मात्रीपृष्यः क्री जीगाः (पायः। न व यिश्विशः। यथा। भानः मुर्व्छन जःजर्गः পত্যা চ বিরহো ২টন ৷ স্থায়ো ২ন্য (गर् वामन्ड नाजीगा मूरगानि बहे।। ইতি মনুঃ॥

নারী**গ্রা জী নলি**কা। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট: ॥

नार्याञ्चः भू॰ नागत्रकः। ইতি শद-त्रञ्जावनी ॥

नान क्री उर्भनामिष्णः। उर्भर्ता-यः। नाना २। इज्जितः॥ नानी ० **जान ।** ইতি साभी ॥ नत्न 🐠 । ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।

नालव भू : शु नलः। इं जि जाज निर्घण्डः ॥

नाना छी नान । डाँठी इंडिनाडा

नानिः छी नाडी। त्रिद्रा। ইতি हि-ৰূপকোৰঃনা

नानिकः পু॰, गहिषः। ইতি ত্রিকাও- রহাবলী ।।

त्रज्ञावनी ॥ नाती उत्रह्मकः श्रू॰ विद्वः। ইতি भद्र- । नानिका क्षी नाना। ইতি भद्रतङ्गा-বলী।। নালিতাশাকঃ। ইতি শব-माना।। हर्षक्षा। ইতি जहास्तः॥ रिडिक्गेरविधिका। ইতি राजाविधी नानिकाः भू॰ नातितः नः। इंडे हित्र **होकाया॰ त्रमानाथः ॥** 

> নালিঙ্কঃ পু॰ দুে প্ৰাণকারকঃ। ইতি श्वायनी !।

> नानिতा द्धी बनानश्राङ्भाकः। यथाः নানিতা পউশাকঞ্চ মিষ্ট পত্তে তু নালিকা। ইতি শব্দালা ॥ খস্য क्याः नातीत्र मत्य मुश्चेवताः॥

> নলো জ্ঞী শাক কডয়কঃ। ডাঁটা ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী॥ হস্তিকৰ্ণ বেধনী ৷৷ ঘটা ৷ ইতি ত্রিকাগুশেষঃ ॥ নাড়ী। ইত্যনর বিকাশা ভরতঃ ॥ भग्नः। इंडि भक्तज्ञादनी ॥

नानीतः भू भद्रशामन्त्रक्रा -ब्रह्मपुरक्षेत्री। इंजिस्मिनी॥ ইতি চ ভাষা। ইত্যমর ভরতো।। । नानी किनी क्षी পশ্মন্হঃ। ইতি

नद्रज्ञावनी ।।

मानी दुनः श्रु ना धी दुनः। इं जि मद

শেষঃ ॥ পদ্ম শ্লী । ইতি শন্দ- নাবিকঃ পূণ কর্ণধারঃ। ইত্যমরঃ ॥

नाम नावा कि नोकागमारम्यापि ₹ठ∫मतः॥ नव∫ष्र्थः॥ नामः श्रु॰ शनायनः ॥ निधनः ॥ ञनूशवसः। जम्मनः। ইতিমেদিনी ।।পরিধৃন্তিঃ।ইতিহেনচন্দুঃ।।#॥ र्जीवानाः नाम एव र्यथा। मना সংজাষতে কামঃ কামাৎ ক্লোখে **২ভিজাযতে।কোধান্ডবৃতি সংমা** হঃ সমোহাৎ মৃতি বিভুমঃ ॥ মৃতি जुःगावृष्क्रिनाःगा वृष्किनागाः शु ণশ্যতি। ইতি শ্রীভগবদ্দীতা॥#॥ ঙ্গল নাশ কারণ যথা। অনৃতাৎ भातमार्गाह उथा १७कामा छकः गाट। अरमोज धर्माहद्गाट किनुः নশ্যতি বৈ স্বলগা অশ্যোত্তিবে বেদ দানাৎ বৃষলেষু তথৈবচ। বিহি-**ट**ाजातशीस्तृ किथु॰ नभाउठि वि জল-॥ ইতি কুর্মে উপনিভাগে ১৫ ্ অধ্যায়ঃ ।। 🗱 ।! নশ্যতা শূৰ্ষক-পাণি যথা। অত্রি ক্রাচ। দশ্যতী পূৰ্বৰূপাণি জনানা কথ্যস্ব মে। নগরাগা তথা রাজ্ঞা বৃংহি সর্বণ विषया il नर्ग उवाह । शुक्या-

চার নিয়্মাৎ পরিত্যজতি দেব্তা

া ততোপরাগাদেরানা মুপর্কাঃ পু 🗏

नामा

वर्जा पित्रास्त्री कि (जो मक विविश् भित्र निर्विक । भुक्क रेतक्क 
पित्र मस्त्री कि पित्र प्रमा जिल्लापित्र मस्त्री कि पित्र भित्र कि । जिल्लाभारजा पिणा पा पा श्र भित्र रिण खेंचवह । भक्क नगत्र कि वृद्धिक विक्जाह या। विमामिति वाकि सिमाकिणाना विनिर्मित्य ॥ हतः
स्त्र ख्राणे ह ख्रुक मण्डा भि ख्रिमकः । कवा गयाना रेतक्जा (जो मण्डिन कि विर्वेक या रामा)
रुक्भ की खिंच ॥ है जि मार्मा १ २०० अक्षायः ॥

নাশী ত্রি নাশবিশিষ্টঃ। নাশ শবাদস্ত্যথে ইন পুত্যা নিয়্নঃ।।
নাসত্যো পুণ অথিনীসমারো।
নিত্য দ্বিচনান্তো ২বং।ইত্যমরঃ।।
এতৌ শূদুী। যথা। আদিত্যাঃ ক্ষত্রিয়া স্তেষাণ বিশক্ষ মকৃত স্তথা।
অথিনো চ মৃতো শূদুী উপস্যুগ্রে
সমাস্থিতো ।। মৃতা স্থাক্রিমা
দেবা বার্দ্ধণা ইতি নিক্ষয়ঃ। ইতি
মুহা ভারতে নোক্ষথমঃ।।

নাসা জ্রী নাসিকা। নাক্ইতি ভাষা
। সা তু গর্ভ্স বালকস্য পঞ্চি
নাসৈ তবিতি। ইতি সুখবোধঃ।।
তস্যাঃ শুভাশুভ লক্ষণ যথা। শুক্

মাসং সুথী স্যাह শুদ্ধনাসেতিজী বনং। ছিন্নাগু ৰূপ নাসং স্যাদগম্যা গমনে রতঃ ।। দীর্ম নানে চ সোভা-গ্যুণ চৌর আজ্ঞিতে নিদুরঃ । প্রী মৃত্যু কিপিটনাস ঝজু ভাগ্যবতাং ভবেৎ ।। অল্লিছিদু৷ সুপুটা চ অবকা চ নৃপেশ্বরে । কুরে দক্ষিণ বকা স্যাদ্ধনিনাঞ্চ ক্ষুতং সক্ৎ ।। ইতি গৰুড পুরাণং ।। য় ।। ছারোপরি ছিত দাক। ঝান্কাঠ ইতি কপালি ইতিচ ভাষা। ইত্যমরঃ ।। বাসক্ বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

নাসাছিমী স্ত্রিকাপক্ষী। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

নাসাদাক দ্লী দ্বারোজ্ব স্থিতকাষ্ঠ । কপালি ইতি ভাষা । ইভ্যমর টীকাষা স্বামী !!

नामान्द . शृ कर्कनर्कः । इंजि । भद्रान्त्रका ॥

নাসাসয়েদনঃ পু• কাণ্ডীরলতা। ইতিরাজনির্ঘটঃ।।

नामिकसमः वि नामिकाः भदाय-मानाः कद्वाजि यः ॥ नामिकया भद्रकर्जा ह ॥ नामिकाशशहार स्वा थाजाः थम् भुजुर्य स्नारम्भ নিয়ুদ্ধঃ। ইতি ব্যাকরণ ।।
নাসিকস্বয়ঃ ত্রি নাসিক্যা পিয়তি য়ঃ
। নাসিক্যা পানকর্তা। নাসিকোপ
পদান্দেট থাতোঃ খশ পুত্যয়ে শপা নিয়ুদ্ধঃ। ইতি ব্যাকরণ ।।

নাসিকা জী ঘুনেন্দুয় । নাক্ ইন্ডি ভাষা। তৎ পর্য্যায়ঃ। ঘুনাণ ২ গন্ধ-বহা এঘোনা ৪ নাসা ৫। ইত্যুনরঃ ।। শিদ্ধিনি ৬। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। নাসিক ৮ ৭ নস্যা ৮ গন্ধনালী ৯ গন্ধবন্ধা ১০ নকা ১১। ইতি শন্ধ-রত্মাবলী ।। তস্যাঃ শন্ধো ঘোৎ-কারঃ। যথা। শ্যান রাবণ দৃষ্ট্রা তল্পে মহতি বানরঃ। নাসা যথৈস্ত ঘোৎকারৈ বিশন্তি বাযুসেবকৈঃ।। ইতি নারসিংহে ৪৫ অধ্যায়ঃ।।

नामिकामन क्षी नामाञ्चित्रनः।
निक्नि इंडि ভाষা। उद्भर्यत्रयः।
निक्षानक २ मिड्डान ० मिड्डन १।
इंडि मेक्तज्ञावनी ॥ मिश्चान ६।
इंडि खत्र छः॥

নাসিক্ত শ্লী নাসিকা। ইতি ত্রিকা-গুশেষঃ।।

नामिकाक क्षी नामिका। इंडि मद-गाना॥ नामित्ने न्युः विश्वनिक्षाद्वी।

हिवहनात्वा १यः। ইতি हिनहन्मुः।

मानीतः क्षी नायकन्तार्गुमातिकारमना

॥ व्युमस्त थूः। ইতি व्यस्तद्भावनी

नात्वि वं व्यत्विद्धान्यवरः। व्यविर्माना । नाहे हैं कि काषा। हैं कि

नात्विका व्यत्विद्धान्यवरः। व्यविर्माना । नाहे हैं कि काषा। हैं कि

नात्विका व्यत्विद्धान्यवरः।।

यथा। व्यतिश्वि विक्षामाः कत्वदः॥

यथा। व्यतिश्वि विक्षामाः कत्वदः॥

वर्षा। व्यतिश्वि विक्षामाः कत्वदः॥

वर्षा। व्यतिश्वि विक्षामाः कत्वदः॥

वर्षा। व्यति वर्षि विक्षामाः व्यति।

हैं कि हानकाः॥

हैं कि हानकाः॥

नाखिकः भू॰ शावखः। द्रेश्वत नाखिद्व-वानी । विनाशामाग्यानी । उद शर्यप्रायः। वार्चम्मज्यः र हार्वाकः ० लोकायजिकः ८। ইजि स्महन्पुः॥ म ह विष्यः । भाष्यभिकः २ याभा-हातः २ (मोजाखिकः ० देवजाबिकः ८ हार्वाकः ৫ निश्चतः ७॥

माखिकजा जी कर्मकलाभवादक छा। न । তৎ भर्यतायः । मिथतापृष्टिः २। ইত্যমরः ॥ नाखि यद्ध कल । नाखि পরলোক ইত্যাদিক । কাযতি না खिकः সদসত্ত্বে অভি নাজীত্যব্যयं কৈ শব্দে ডঃ। নাজীতি মন্যতে ইতি ফিকো বা ভস্য ভাবো নাঞ্ডিকতা ত্বতৌ ভাবে ইতি তঃ। নাস্তি সুকৃত নান্তি পরলোক ইতি বুদ্দি নাস্তি-কতা। ইতি ভরতঃ॥

॥ অগুসরে পু॰।ইতি শব্দরত্নাব**ী । নান্তিদঃ পু॰ আমু**র্ক্কঃ।ইতি শব্দ-ন্তি ব্য অন্তিত্বাভাববৎ। অবি- চন্দ্রিকা॥

नामाऽ कि नामाया छव । यथा।

हिम्ननात्माऽ छिम्पूर्ण छिर्य क् शुकि

मूथा गर्छ । ज्ञक्क छक् ह यानमाऽ

हक्क छ क छैथव ह ॥ इकि मनः ॥

नाइः श्र वक्षन ॥ क्षे । इकि मिनी

नाइवः श्र दिमहन्मुः ॥

. इकि हमहन्मुः ॥

নাহুষিঃ পু• য্যাতিরাজঃ। ইতি ভূরিপুযোগঃ॥

नाक्ष्यः जी नक्ष्यमञ्जाक्षि। नक्ष्यः

त्रिप्त निर्णाणं भू । म व विविधः

निर्णाणं नक्ष्याञ्च वकः ।

यथा विष्ध्राणं ख्रा । नक्ष्य म्याः

ग्रियनानि (व्रन्तः) म्याः म्याः

ग्रियनानि (व्रन्तः) म्याः म्याः

ग्रियनानि (व्रन्तः) म्याः म्याः

ग्रियनानि (व्रन्तः) म्याः

ग्रियाः

ग्रिवः

ভৌম বার যোগে মনো দুঃখ দানে ॥ ह। यथा नीलिकायाः। जन्मन् यि जा जा वीस्री (जो म्रेनिक-রৌ ৷ স মাসঃ কল্মসো নাম মনো-मुःथ भूमायंकः।। 🗱।। विजीयः विष्ठे দুখাত্মক নক্ষত্ৰ ভোগ কাল ৰূপ দিন ত্রি•শদ্পজ্মকঃ। যথা সূর্য্যসি कारि । नाडी यष्ट्रेत जू नाकक म-হোরাত্র• পুচক্ষতে । তগ্রি:শতা ভৰেন্সাসঃ সাবনোর্কোর্দথৈ শুথা।। षिञीयमा अर्याजन आयूर्गननायाः । यथा। जायूनीय मृठः शुरिक नाक्रवः षश्चि नाष्ठिकः। ইতি मन মাসতত্ত্ব ॥ नाक्र विकः शृ॰ नाक्रवमानः। यथा।

नामाधिकः सूर नामध्यनागः। स्वाः स्वः स्वाः स्वाः

यथा । निर्देश: । निक्रयः । इंडि 🛚

ञ्च्रादाक हो काया मूर्जामा अः ॥

নিবেশঃ।। ভূশার্থঃ।। নিত্যার্থঃ।।

शिवस्थः ॥ (कशः ॥ किन्यः ॥ हेशवसः ॥ जानीश्वः॥ जानुयः ॥ मानः ॥ त्याकः ॥ जानुवः ॥ वक्षनः ॥ वान्यः ॥ जानुवः ॥ वक्षनः ॥ वान्यः ॥ विन्याः जः। हेि क्षिति ॥ वि विः व्याः निर्वः ॥ निर्विशः । हैिंड क्षिति ॥

निः यु निफ्यः॥ निर्विशः॥ माक्नां ।।

।। অতীত । ইতি নেদিনী ।।

निःकामिতः जि निक्कामिতः। विश्व
क्रेटः॥ म छू क थ भ फ फ दिल वि ।।

विश्वमा विमर्गम्य मकाना ।।

निःकामिटः जि निक्कामिटः। ইত্য
मन्नोका मानमून्ति॥

निःश्वाः जि निक्कं ।।

निःश्वः जि निक्कं ।।

निःश्वां कः । विर्वा ।।

निःश्वां कः जि निक्कं ।।

নিঃশবঃ পু॰ শবরহিতঃ। চুপ্ইতি ভাষা। যথা। নিঃশবং কার্যিত্বা

निर्घण्डः ॥

७८ नमी शाह महामूल সার্কণ্ডেযপুরাণ ॥ নিঃশ্কঃ পু• মুওশালিঃ। ইতিরাজ-निर्घण्डः ॥ निःश्मिषः वि **সমন্তः। मण्ण्**र्नः। ্রইত্যনরঃ।। শেষরহিতঞ্চ।। নিঃশোধ্য ত্রি শোধিত। মৃষ্ট। ইত্যমরঃ ॥

निः भूषणी खी का श्रविष्ठ (मानानः। কাঠেরসিদ্রী ইতি ভাষা। তৎপ র্যালঃ! নিঃশ্রেণিঃ ২ অধিরোহিণী এ নিঃশ্বেণী ৪ নিঃশ্বিণী ৫। ইতি भद्रवृत्वावली।।

निः भूषिनी जी निः भुषनी। इंडि नम त्रश्वनी ॥

নিঃশেণঃ জী অধিরোহিণী ॥ খর্জু-त्रीवृक्तः। इंडि (मिनी।।

निःरमुनिक। जी ज्निविष्यश निःरमुनी ইতি কোকণে পুসিদ্ধা। তৎপর্যগ্র-যঃ। শ্রেণিবলা ২ নিরসা এবনবল্লরী 8। अन्तरा खनाः। नित्रमञ् । उक्षञ् । পশ্নামবলপুদত্বঞ্। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥

निःरमुनी जी निःमुगनी। इंजिमकः क्कावनी ॥

নিঃসর

निः(भुयमः क्री भूजः॥ याकः॥ বি্দ্যা। অনুভাবঃ।। ভক্তিঃ। ইতি न पत्रकेष्वनी ग्र निःश्नुयजः शू॰ मक्तः। ইতিমেদিনী।। निःषमः वर् निन्ता। ज्र भर्यरायः। गर्ह्य २ पूर्वम ० । इंड्रामदः ॥ **लाकः। ইতি শদ**রত্বাবলী।। 🎚 নিঃসন্ধিঃ ত্রি দৃঢ়ঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-**म्परः॥ मिक्कार्शिकणः॥** নিশীথঃ। ইতি निःमञ्गाठः शुः ত্রিকাওশেষঃ॥ নিঃ সঙ্কঃ ত্রি মেলনর হিতঃ। যথা। ম্প্রান্তব্য বিশ্ব সূতা-দি রাগো মৃ্যিতোভিতেন। নিঃস-**হ্ণতা নু**জ্ঞিপদ• যতীনা• সঞ্চাদশে-ষাঃ পুভবন্তি দোষাঃ ৷৷ ইতি বিষ্ণু পুরাণে ৪ অংশে ২ অধ্যায়ঃ ।। ফলা-निजित्तिवनवान्। यथा । देतिक त्व अर्वाणा निःमः अभि उ भी यात ্র্টনৈষ্কর্য্য সিদ্ধি॰ লভতে রোচনার্থা ফ**ল**শুতি: ॥ ইতি मनगाসতां कु

**बिजागवरेजकाइमङ्गक्षव्हनः ॥** निः नर्तं १९ क्ली नद्ग १ । उत्रायः ॥ (गहारिमुथ॰।। निर्द्धां १।। निर्क्रमः । इंडि इंगठमूः॥

নিঃসারঃ পু॰ শাথোটবৃক্ষঃ।ইতি শব্দিকা ৷৷ শ্যোনাকপুভেদঃ ৷ ইতি রাজনিয় দ্বাসারকুহিতে ত্রি । यथा। मानुष्य क्रम की खग्न निः- । निःमुध्यः शृ॰ ভक्रतमः। ভक्रममु-সারে সার নার্গণ 1 যঃ করে।তি স সংমূদে জল বুদুদ সমিভে ৷৷ ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ৷৷ জগৎসর্বন্ত নিঃসার মনিত্যু দুঃখ ভাজন। উৎপদ্যতে क्रगाम् उदक्रभाम् उद्विभाग्र ।। যথৈবোৎপদ্যতে সারা মিঃসার• कगम् अना। शून खिमानिवीय छ मः হাপুলয সঙ্গনে॥ উৎপত্তি পুল-যাভ্যান্ত জগিনঃসারতা॰ হরি:। পতিঃ ৷৷ ইতি কালিকাপুরাণে ২৭ अध्रायः ॥

নিঃসারণ ক্লী নিঃসরণ। গৃহাদীনা। পুরুষনির্গনাদিপথঃ ৷ ইতি শব্দ-बङ्गवनी ॥

निः गाता भी करनी वृक्तः। ইতি द्रोज-নির্ঘণ্টঃ 🎵

পর্য্যায়: আবক্ষ্টঃ২ নিয়াসিতঃ ১। ইতি জটাপ্রঃ॥ সারাভাববাণ চ।।

সেহ কীটদ্ষিত মিত্যাদি স্তি:।। নিঃসেহা দ্রী অতসী।ইতি ত্রিকাও-শেষঃ॥

ভবনতঃ ৷ মাড ইতি ফেন্ ইতিচ ভাষা ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ আচা**ন্** মাসরঃ ৩। ইত্যমর হেম্চন্দ্রে।। নিঃমঃ ত্রি, দরিদুঃ। ইত্যমরঃ॥ তদ্য **लक्ष**नः यथा। সূপीकारतो विकल्की চ ব্কৌপাদৌ শিরালকৌ। স॰-শুষ্টো পাওরনথো নিঃম্বস্য বির-লাঙ্গুলী॥ইতি গাৰুডে সামুদ্ৰুক্॥ ক্তাতিরহিতশ্চ॥

শস্ত্রবে দশ্যানাস ভাবেন জগতা। নিঃক্ষত্রঃ ত্রি ক্ষত্রিযশূন্যদেশাদি। যথা৷ অবতারে ষোডশ মে পশ্যন্ বুন্ধজহো নৃপান্। ত্রিঃসপ্ত কৃত্বঃ স্পতি। নিঃক্ষত্রা মকরো মহী ।।। ইতি শ্ৰীভাগবত পুথমস্বন্ধঃ।। 'निक्रे॰ जि अमृत्र॰। उৎপर्यायः। सभीशः २ जासमः ७ समिक्षेः ४ मनीफ द। ইত্যারঃ।।

> ত্রি বহিষ্কৃতঃ। তে । নিকরঃ পু॰ সমূহঃ।ইত্যমরঃ॥ সারঃ ॥ नऽायरमयक्षन ॥ निक्षः । इंडि यिषिनी॥

निঃ সুহঃ ত্রি সুহশ্ন্যঃ। যথা। নিঃ- নিকর্ষণঃ ক্লী সন্নিবেশঃ। ইত্যমরঃ॥

নিসম্ভা

পত্তনাদিষু দিগাদি পরিছিম পু দেশঃ। ইতি ভরতঃ ॥ পূর্বদিগা দ্যবিছিম গৃহাণানপীতি কলিজঃ॥ পুরুগদে বহি বিহরণ ভূমিঃ। ইতি স্বান্যাদ্যঃ॥ পুনুষ্ণাদি সমিবেশঃ শইতি সারসুদ্রী॥ নিক্ষঃ পুঃ শাণঃ। ক্ষিপাতর ইতি

নিকষঃ পু॰ শাণঃ। কপ্তিপাতর ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ॥

নিক্ষা জ্রী রাক্ষসমাতা। ইত্যুদরং॥ সাসুমালি কন্যা বিশ্বুবসো ভার্য্যা চ।ইতি রামাযণণ॥

নিক্ষা ব্য নিক্ট । ইত্যমরঃ॥ মধ্য । া ইতি মেদিনী ॥

নিকষাত্মজঃ পু॰ রাক্ষসঃ।ইত্যমরঃ॥ নিকসঃ পু॰ নিকষঃ।ইত্যমরটীকাষা॰ ভরতঃ॥

নিকাম• ক্লী ইপ্ত•। যথেক্সিত•। ইত্য-মরঃগা

নিকাষঃ পু• লক্ষ্য• ।। সধর্মিপ্রাণি স•হতিঃ ।। স•হতানা•সমুচ্যঃ ।। নিল্যঃ।। পরমাত্রা। ইতি মেদিনী

নিকাষ্যঃ পু॰ গৃহ•। ইত্যমরঃ।। নিকারঃ পু॰ বিপুকারঃ। অপকারঃ ।। উৎকারঃ। খান্যস্যোজ্ব ক্ষেপণ॰ । ইত্যমরভরতৌ।। খলীকারঃ। ইতি স্বামী ॥ ধিক্লারঃ। ইতি শহ-নালা ॥

নিকারণ লী মারগণ। বধঃ। ইত্যমরঃ
নিকাসঃ ত্রি নীকাশঃ। ইত্যমরটীকা
নিকঞ্চনঃ পুণ পরিসাণবিশেষঃ।
সভবপাদঃ। স চ পুসৃত ইতি খ্যাতঃ। ইতি ভরত ধৃত সর্বস্থণ। বানীরবৃক্ষঃ। ইতি ভাবপুকাশঃ।।
নিকঞ্চিত লী অস্হারান্তর্গতশিরো
বিশেষঃ। যথা। আকম্পিত কস্পিতঞ্চ ধুত বিধুত নেবচ। পরিবাহিত মাধৃত মবধৃত তথাঞ্চিত
।। আক্ষিত পরাবৃত্ত মুৎ ক্রিপ্তগোপ্ত চতুর্দশ বিধণ শিরঃ।। ইতি
সঞ্চীতদামোদরঃ।।

নিজ্ঞ পু ক্লী জ্ঞ । ইত্যমর: ॥
নিজ্ঞিকায়া জ্ঞী জঞ্জিকাক্ক পুভেদ্
দঃ তিৎপর্য্যায়ঃ। জঞ্জিকা ২ জঞ্জবল্লরী এইয় গুণেঃ শ্রীবল্লীসদৃশী।
ইতি রাজনির্ষ্ঠিঃ॥

निष्ठाः श्रु ब्रुक्गंश्रुवः॥ म्डिका वृक्षः। इठि मिनि ॥ निष्ठाः श्रुवेषः की क्रुशानः। ইতি

রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

निष्काठकः भू॰ व्यक्षाठेवृक्षः। ইত্যমরः

নিকোঠকঃ পু॰ নিকোচকঃ। ইড্য-

নিসম্ভিত ক্লী নৃত্যবিষয়কাষ্টোত্তরশত করণান্তর্গত করণ বিশেষঃ।
যথা।করণানান্ত সর্বেষা সামান্য করো
বক্ষণ স্থিদ । প্রাযো বাম করো
বক্ষঃ স্থিতোন্যঃ পুরতোনুগঃ।। পাদাত্যা করণ জ্বেষ তদিহাপ্তোত্তরংশত । নিসম্ভিত পার্যক্রান্ত মতিক্রান্ত বিবর্ত্তক ।। বিদ্যুজ্বান্ত গজকীত ক্রান্তক গক্তপ্পুত ।
ইত্যাদি সঙ্গীতদামোদরঃ।।
নিসম্ভী জী দন্তীবৃক্ষঃ।ইতি রাজ-

নিষ্ট্রী জী দন্তীবৃক্ষ্। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ।। নিষ্কুর্যু জী সমস্থা ইত্যেবং।।

নিসরম শ্লী সমূহঃ। ইত্যমরঃ॥

নিক্তঃ ত্রি পুত্যাখ্যাতঃ। শঠঃ।

ইত্যমরঃ॥ বঞ্চিতঃ॥ নীচঃ। ইতি
মেদিনী॥

निक्जिः खी ७९र्मन ॥ किशः।
गठः॥, भाठे । इजि त्मिनी॥
रिन्न । इजि भक्तकावनी॥

নিকৃষ্টঃ ত্রি স্বাধ্যা: । ইত্যসরঃ ।। জা-ত্যাচারাদি নিন্দিতঃ। ইতি ভরতঃ নিকেতঃ পু॰ নিকেতন । ইত্যমর-টীকাযা ভরতঃ ।।

নিকেতন ক্লী গৃহ । ইত্যমর: ॥ পলাভৌ প । ইতি শদ্চন্দ্রকা ॥ মরটীকাষা ভরতঃ ।।

নিম্বাং পুং বীণাষা অন্যস্যচিকিমরাদেঃ

শবং । তথ্পর্য্যায়ং । নিম্বাবং ২
ক্বাবং ৩ কুবং ৪ কুবন ৫ । ইত্যাসরং

।। প্যাদে রপুগেসর্গাদু ভরস্য কুব
থাতোঃ পুকুবং ৬ পুকুবং ৭ ইভ্যা
দ্যং পুযোগা ভবন্তি । আদিনা

সুক্বাবং সুকুবঃ উপক্বাং

ইত্যাদি । ইতি ভরতঃ ।।

निक्षानः श्रुः निक्ष्मः। ইত্যয়ः।।

निথर्तः क्षी मण्यर्त मण्या। मण
मर्मुकार्रयः। ইতি की नायञी

रूमहन्द्रणः।। श्रुः निर्द्रा स्भायः।

यथ। तृन्दः थर्त्ता निश्र र्वण्डिं।।

निथर्तः कि तामनः। ইতি रूमहन्दुः॥

निथनः कि ममसः। ইতি रूमहन्दुः॥

निथनः कि ममसः। ইতি रूमहन्दुः॥

निथनः कि ममसः। ইতি रूमहन्दुः॥

निश्राः श्रुः क्षी रुखिनाः नाइमयः

भापत्रकाभकत्रभः। जामु ইতি मा
पुका ইতি ह थे। जः। ইতি ভরতঃ॥

उৎ পর্য্যাयः। শৃদ্ধলः ২ অन्मुकः ।।

देठामतः॥ रिखीतः ६ अक्षः ।।

देठामतः। रिखीतः ६ अक्षः ।।

निगर्षितः कि वृद्धः। ইতি रूमहन्दुः॥

निगरितः कि वृद्धः। ইতি रूमहन्दुः॥

নিগণঃ পু॰ হোনধূমঃ।ইতি কিকাও-॥ (निषः ॥

निगरः श्रू॰ छाष्यः। कथनः। छ८ **न**र्यतायः । निनामः २ । ইত্যমतः ॥ উहिर्जनशायका। निगरेख जोन र्यम्। ্ইত্যাপন:॥

मिगमः भू वानिकः॥ भूती॥ करेः॥ বেদঃ ॥ বণিক্পখঃ । ইউ ইতি गावद । इंडि मिनि ॥ निक्रयः ॥ वाशा । इंछि एमहन्पुः १।

নিগরঃ পূ॰ ভোজন•। ইতি রাজ-निर्घक्ति॥

নিগরণ ক্লী ভক্ষণ। ইতি মেদিনী II निमञ्जाः भू॰ गैनः। इठि मिनिते।। क्षित्रम्भः। **३७ भवत्रकावनी** ॥ निगापः भू॰ कथमः। ইত্যময়ः॥ निगाकः शूर निगद्गण । अभाग i ইত্যমূরঃ ম

मिगाताः शुः व्यथगम्राम्मः। इउप्राज्ञः मिगानवाम शू॰ जासः। ইতি नम हर्न्युका ॥

দিল্ডঃ পূ॰ নদঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডলেবঃ।। वनाः मूर्वना भाषा छः ।। विकर्ष विक मन्त्रिक्षमाद्गाना पिक्किः।। निग्एः भुः वनमून्ध। इति स्थारमुः॥ मिश्रुके द्वी मृहे । वायन १ है

**গু**ছে ত্রি। হথা। আন্তে বি**ধু: পরস** নিতৃ তএব **মৌলৌ শ**স্তো রি**ডি ত্রি**-জগতী জম চিত্ত বৃত্তিঃ। অন্তর্নিগৃচ नयनानन शुक्ष मारः जाना ि कः सय মৃতে বত শীতরশ্মেঃ।।ইত্যুক্তিটঃ।। নিগুহঃ পু॰ অনুগুহাভাবঃ। ইত্যমরঃ ।। वक्षनः।। छट्रजनः।। जीमा। इंडि (मितिनोकत (स्महान्तु)।। हिकि भा । ইতি রাজনির্ঘটিঃ ।। বিষ্ণুঃ। যথা। পুগুছো নিগুছো ব্যগ্রো নৈকশৃদো गरागुकः। ইতি তদ্য সহসুনাম।। निगुश्ः पूर निगुरः। यथा। निगुश् ত্তে ভূবাৎ। ইতি সংক্ষিপ্তসার-ब्राकन्नण ॥

निषः भू विश्वक्ममः। ममसा८ जुनाताइ भित्रपादः। ইउप्रद ভরতৌ 🛚 ।

निविष्का जी उनक्षमाः। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

निवर्षेः भू नागमःगुरः। इठि एसः\_ म्ब्रुं म

नियमः भू जाशादः। इउप्रदः॥ निवाजिः श्री (नाश्वानी । नोश्मय-मखः। इंजु।गामिकियः।-

भपत्रज्ञावनी ॥

निष्यः शुः थुदः। इजुःशिन्तिकाः॥
वायः॥ धदः॥ भागः॥ वदाहः॥
इठि नः किश्रनादाशिन्दिः॥
निषः वि अधीनः। इजुःभदः॥ अक
श्रवः। इठि नीनावजी॥
निष्यः शुः मम्हः॥ निष्यः। इठि
नामद्रवादनी॥
निष्ठिनी की निष्ठिकी। उज्जनार्शः।
इनुःभद्र होकायाः जुद्रञः॥
इनुःभद्र होकायाः जुद्रञः॥

নিচিত॰ ত্রি পূরিত। ব্যাপ্ত<sup>া</sup>ইতি. হেমচন্দুঃ।

নিচুলঃ পু॰ ইজ্জলর্ক্ষঃ। ইত্যমরঃ॥ বেতসুবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ নিচোলঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥

निहूनक श्री निकानक। इंडि शावनी॥

निकालः श्रु॰ यन मुर्डिनामुर्डिन वा वजास्त नाहाम्राठ । श्राकृषि इंडिश्रांकः । इंड्रानंतस्त्र प्रके ॥ स्थानिकः । विकृषः २ । देखतहमः ॥ अपुहम्श्रवेः ६ । इंडि एस्सम्मुः ॥ निकालकः श्रु॰ स्थानिकालंक्रि समाहः। उर्श्यागः। स्रशीमः २ वातवानः । क्षुकः ६ । इंडि

(रगान्तुः॥

নিছবিঃ জী তীরভুকিদেশীঃ ত্রিকোত্ ইতিভারা। ইতি ত্রিকাওশোষঃ ॥ নিছবিঃ পুণ বর্ণসক্ষর রাতিতেদঃ। ইতি ভটাবরঃ। তথা। বল্লো মল্লাদ রাজন্যান্ত্রাণ নিছিবি ক্ষের হা। নটশ্চ করণ শৈচব থসো দুবিত এব চা। ইতি মনুঃ॥

নিজ॰ কি ৰকীয়ণানিত্যণাইত্যমরা।। নিডীন॰ দ্রী পাক্ষিপতিবিদেশরা। শুনৈর্যান॰। ইতি জটাধরা।।

নিণ্ডিকা দ্রী কলাযবিশেষঃ ৷তেওডা

ইতিভাষা। তং প্রয়ায়: । সতীলা

३ তিন্টা ৩ । ইতি শব্চ ন্দ্রিকা ।।

নিতম্বঃ পু॰ জীকট্যাঃ পশ্চান্দ্রাগঃ ।

পাছা ইতি ভাষা । ইত্যমরঃ ।।

ক্রমঃ ।। রোধঃ ॥ কটকঃ ॥ কটিমাত্রণ ইতি নেদিনী ॥

নিতমিনী জী পুশস্তনিতম্বিশিষ্টা ।

নিভরা<sup>ন</sup> ব্য সুতরা । যথা। নাগো-ভবো নাগ ধনাভিলাসী বক্রোকি জালো নিতরা ভশীলঃ। ইতি কোষ্ঠাপুদীপঃ॥

ইত্যারঃ ॥ জীনাত্র• । ইতি রাজ-

निर्घण्डः ॥

নিতল ক্লী সপ্তপাতালান্তর্গর্পাতা-লবিশেষঃ ইতিশ্বরত্নাবলী ।। নিতান্ত ক্লী অতিশ্যঃ।। তদ্বতি ত্রি। ইত্যমরঃ।।

নিত্য ক্লী নিরম্ভরক্রিফাবচন । তুৎ পর্য্যায়ঃ । ষত্তত 🗢 অনারত 🔿 🛚 অশাস্ত ৪ সন্তত্ত অবিবক্ত ৬ অনিশং ৭ অনবরতং ৮ অঙ্গসুং ৯।৷ তদ্বতি ত্রি। ইত্যুসরঃ॥ পুত্যুদায জনকীভূত্যভার পুতিমোগি। যথা একাদশ্যা মুপোষণ নিত্যা ধ্রুপ পুাগভাবাপুতিযোগি।যথা গমণ ুনিভূত। অহরহ জাবনান । যুপা , निज्रः की एडि स्नाताः॥ यहतर ক্রিয়স্যণত্ত্বেন বিপ্লি ব্যেধিত । যথা मान जर्भगारिकः निज्रः॥ अनब्हिम পরস্পরাকঃ। যথা বর্ণা নিত্যাঃয়া । निष्ठाः वि कानवयवग्रभी। उ भर्यतायः। भाषकः २ धुतः ७ मन् छः ়নঃ ৪ সন্তনঃ ৫ । ইত্যেরঃ ॥ **जमूपु शूर। है** जि जाकिनिर्यक्तेः ॥

নিত্যকর্ম স্লী পুত্যবাষ জনকাভাব পুতিযোগি কার্য্য । ইতি মৃতিঃ ।। তদ্মথা । নিত্য নৈমিজিকঞ্চৈব নিত্য নৈমিজিকস্তথা । গৃহস্ক্স্য

ত্রিপা কর্ম তরিশান্য পুএক।। পঞ্চ-যক্তাশ্রিত নিত্য যদেত্র কঞ্চিত তব। নৈমিত্তিক তথাচান্যৎ পুঞ-ब्रग कियारिक ॥ निज्रोनिमिकिक । জেয় পৰ্যাদাদি পণ্ডিতঃ। ইতি मार्क्ष्य भूत्रान ॥ 😻 ॥ जन्तरान (राखा यथा। निक्रानाः कर्मनाः वि-পু তম্য হানি রহনিশ । অস্তর্বন্ বিহিত• কর্ম শক্তঃ পততি তদ্ধিনে।। পুায়শ্চিত্তেন নহতা শুদ্দি নাগ্নেত্য-নাপদি। পক্ষ নিত্যক্রিষা হানেঃ कर्जा सिरवय मानवः॥ मःवट्मद्रः ক্রিযাহানি যস্য পুশসা পভিজায়তে । जम्रावरनाकनार मृर्यंत्र निद्रीका जाश्रुजिः जरामान्त्र्राष्ट्रे मान् अक्टल-न्। मुक्तिरहजू मंहामूरन। भू पना छ-वि उरमहाका न मुखिः भाभ कर्मा া ইতি বিষ্ণুরাণে ৩ অংশে ১৮ व्यक्ष्रभ्यः ॥ 🛊 ॥ क्वजारम् निज्रकर्म করণ নিষেধাে যথা। জানুর্দ্ধে ক্ষতজে काटि निञ्जियं न हाहत्वरा निमिन्ति क्ष जन्मः भुव मुद्धा न ठाठात् ।। लाज्य ह नगूर भाग क्रुतकर्मान रेमथूरन। भूरबाद्गारत ख्या वास्त्रों निः ज्यकर्णानि मं जेर्डिंट ॥ मुत्या ज्रुक

वृज्ञीर्प ह रेन्द्र जुक्त है किक्न । कर्ष वर्गेतमात्रा मिछा मूर्ड कम्ड कि था।। भवः भूझके जाष्ट्रां छ व कर्षेन कन्निज्ञ। क्यांदि भिन्नवाडिक कन खुक्। न ठाँठात्र ।। खन महानि नद्र-শুেষ্ঠ ভোজনাক্তেষজাদৃতে ৷ নিত্য-किया निवर्त्वं मह निनि विकै मना।। जलोकाः गृष्धामक क्वि गञ्जनाहिकः। कानाष्ट्रास्य मः म्मा निजाम्मानि मण्डाहर ॥ বিশেষতঃ শিবাপ্রা পুনীত পি-' ज्रका विकः। गाववर गत्न भर्ग्ड॰ मनमानि निं हित्र ।। मेर्श खरे नि পাতে তুকান্য কিঞ্চিটাইরে । वार्षिका दुन्नरेकक मुक्तिः विक यूजक यट ॥ धक माकिना दिनुक পুক্তৈয়ে চ পাণিনা। নমর্য্যামিত্য কর্মাণ রেতঃ পাতে চ ভৈরব।। ইতিকালিকাপুরাণে ৫৪ অর্ধ্যায়ঃ॥ নিত্যগতিঃ পু• বাযুঃ। ইতিহেনচন্দুঃ॥ निजारा का अवना यथा। भूगाः নধুবন তত্ৰ সাদ্মিধ্য নিভাগা হয়েঃ । ইতি ঐভাগবৈতে ৪ কন্ধ: ॥ 🦈 निर्णान् श्रेन्श्रिकिकर्वग्रामः। · यथा । मिञ्रा स्मिनिङ्कं काण्रा

वित्रक्रं मान भीतिष् । जर्मार्थि यद कि किमीयां रु नृश्वकाति ।। जन्मिन किन कर्म जद मामुक्ति ।। जन्मिन कर्म कर्म जद मामुक्ति ।। विज्ञान । हिंछ गर्म भूमियां हर्म ज्वापां हर्म ज्वापां हर्म ज्वापां हर्म ज्वापां हर्म ज्वापां हर्म विवास किन किन । हिंछ विकृत्रतात कर्म विवास । हिंचा । हिंचा विवास । हिंचा विवास । हिंचा विवास । हिंचा विवास । हिंचा । हिंचा विवास । हिंचा । हिंचा विवास । हिंचा विवास । हिंचा विवास । हिंचा । हिंचा हिंचा । हिंचा हिंचा हिंचा । हिंचा हिंचा हिंचा । हिंचा हिंचा हिंचा । हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा । हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा । हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा । हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा हिंचा

निज्ययोगमा जी प्रोशमी। ইতিছেম-চন্দু: ॥ ছির্যৌবনে ত্রি।

निड्रित्वकेः भू विकाः शनिव-(भवः। यथा। उद्धं निड्नि मिन्न (क्षां निड्रित्वके अव ह। आजाका-भ माना निर्द्धा विक्रु कन्म विश्व-वेश के प्रतिह। ममुख्र जा निर्वक्य का नित्रा भूतः आकाभवर मुविखान का मृत्य का निर्माकः। उत्र नातायाः विनान वनमानी हजूद् कः। सभी मज्ञ विशे भना जुननी भिन्नि निवनः ।। यूनन नम समूर्ण भार्यका नि-ज्ञित्विकः। महिन्दिक्षणा

নিত্যান

ভক্তানুগৃহ কারক: ৷৷ ইতি বুন্ধবৈ-বর্ত্তে পুকৃতিখণ্ডে ১৫ অধ্যায়ঃ।। নিত্যক্ষোরণ প্লৌ বৈধেতরক্ষোরণ। ज्ञाश्रमुखि किनाहरन । यथा । हू-**छोमिछ जिथावृक्ष वृक्षिनम्। र्मि-**বসে নরঃ ! নিত্যক্ষোর পুস্বর্বী ত জন্মনাসে নতু স্বৃচিৎ ॥ ইতি জ্যো তিঃ সাগরসারঃ ॥ 🛊 ॥ রাজমার্ক ণ্ডে তু। न স্থান নাত্র গমনোৎসুক ভূষিতানা মভ্যক্ত ভুক্ত শ্বণ কাল নিবাসনানা । সক্তা নিশা শনি সজার্ক দিনেযু রিক্তে ক্ষোর পহিত প भुजिनक्कि निहानि विद्याः ॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব• ॥ 🟶 ॥ তত্ত নাসাঃ সৌরাঃ ভাদু পৌষ চৈত্রা নিষিজাঃ এখ্যাসোপি নিষিজাঃ তদিতরে বিহ্নিতাঃ ৷ বার**স্ভ ৰুধ**ণ সোমযো বিহিতঃ। সাম্<mark>গানা</mark>ণ गक्रवादाशि। তिथ्यक नम्ता तिका शूर्णभाभावामगृष्टभी जिमा বিহিতাঃ। নক্ষতাণি রেবত্যখিনী পুষ্যঃ ধনিষ্ঠা জ্যেষ্ঠা শুবণা স্বাতী হস্তা মৃগশিরঃ শতভিষা পুনর্ধসুঃ চিত্রা। রাজাদেশে দ্বিজাদেশে বি-বাহে মৃতমূতকাশোচে বন্ধমোকে यक्क कर्मा निर्मा का निर्मा का निर्मा का निर्मा का निर्मा का का निर्मा का निर्म का निर्मा का निर्म का निर्मा का निर्म का निर्मा का निर्म का निर्म

निज्य खी भार्वजी ॥ सनमाप्तवी ।

रेकि मदत्र ज्ञावनी ॥ मिकि विष्मयः
। सम्प्र मत्या यथा। वाग्यवं काम

विज्ञ निज्ञ क्षित्र मप्तो भुनः। मृत्य
विङ्ग वश्र्यत्या हाममार्गाय भीतिजः॥ ब्रानः यथा। सर्वनम् योनि
मक्षा ममताञ्चिनम् । मरम्राक्ष
भाम मृणि भूगं कभान रखा। विष्नवाः क्षार्यहित्मा वनिजाः मम विखनाकीः॥ देकि जञ्जमात्रः॥

निज्यानेश्वायः शृ सर्वथादक्तिये दिन्त्राठे कालानिः विश्वा । इसाहि-ज्य सन्धायाः नधीयात्म दिक्कि रयट । जध्याश्वरक्ष सर्वाभः लिय्या-भाः विधि शृर्वकः ॥ कर्भमृत्व २ सि ला तात्वो निवा भाः सु समृहत्य । -এতৌ এবা सिम्योग विद्या सङ्खाः পুচক্ষতে।। বিদ্যুৎ স্তনিত বর্ষেষু म-হোল্পানাঞ্চ সংগ্লবে। আকালিক সন ধ্যান নেতেষু ননু রবুবীৎ ॥ এতা॰ खु चूर्रात्कान् विम्राट् यमा शुमू म তাগ্নিষু । তদা বিদ্যাদনধ্যায মন্-তৌ চাভু দর্শনে॥ নির্ঘাতে ভূমি চল-নে জ্যোতিষাঞ্চো**পস**র্জনে। এতানা कालिकान् विम्तामनध्रायान्ञाविश ।। পুাদুষ্তেম্বামু তু বিদুৎ স্তনিত निश्वतः । मङ्गाि अगुमनश्रायः শেষে রাত্রো যথা দিবা ॥ নিত্যানः ধ্যায এব স্যাদ্গ্রামেষু নগরেষু চ। थ्यं निश्नुग्र कामानाः श्रृजिशस्त ह সর্বদা।৷ অন্তর্গত শবে গ্রামে বৃষলস্য **ठ मिल्लो : अन्ध्रा**र्या क्नुमान भगवाय क्रमभु ह ॥ उत्तक मधु ব্লাত্রে চ বিশূত্রস্য বিসম্ভর্নে। উছিষ্টঃ শুক্ত কুঁক চৈব মনসাপি ন চিন্তবেৎ " ৷৷ পুতিগৃহ দিলো বিদানেকৈছি-প্তস্য কেতন• i ত্ৰ্যুহ্ • ন'কীৰ্ভযেদু**ক্ষ**-রাজ্ঞা রাছোশ্চ সূতকে।। যাবদে-কানুদিষ্টস্য গদ্ধো লেপশ্চ তিষ্ঠতি। বিপুস্য বিদুরো দেছে তাব্দুকা ন कीर्खर्य ॥ - भयानः शोष्ट्रभाष- ह क्षा हेह्रसावमाक्षिका•) माधीयीठा-

নিব প্রপ্রভা সূতকাদাদ্য মেবচ।। নীহারে বাণ শব্দে চ সন্ধ্যযোরেব-চো ভযোঃ। অমাবাস্যা চতুর্দশ্যোঃ পৌর্ণমাস্যপ্তকাসু চ ॥ অমাবাস্যা গুৰু হন্তি শিষ্য হন্তি চতুৰ্দশী। বু **ন্ধাই**কা পৌর্ণনাস্কেটা তম্বান্তাঃ প-तिवर्द्धाय ।। भा भूवार्य मि भा मार रगानायु विकार जथा। च शाह्र চ ৰুবতি পজ্জী চ ন পঠেদ্বিজঃ॥ নাধীয়ীত শুশানান্তে গ্ৰামান্ত গো-वुष्किभि वा। विभिन्ना रिम्थून वामः শু। দিক পুতিগৃহ্ছ চ ॥ প্রাণি বা यि वाशानि यट किथिए भाषिक ভবেৎ 1 তদালভ্যাপ্যনধ্যায়ঃ পা-ণ্যান্সোহি দিজঃমৃতঃ॥ চৌরৈ ৰূপ-প্লুতে গ্রামে সম্ভুমে চান্নিকারিতে। व्योकालिक मनश्रायः विम्राट गर्बा-চ্চুতেষ্ চ॥ উপাকর্মণি চোৎসর্গে ত্রিরাত্রণ ক্ষেপণ মৃতণ। অপ্তকাসু দ্ব-হোরাত্র সূত্রসূচ রাত্রিবু॥ না-ধীথীতাশ্বমাৰটো ন বৃক্ষণনচ হন্তিন• । ন নাব॰ ন খর॰ নোষ্ট্র॰ নোরণছে। ন यानगः॥ न विवास न कवाह न ज-नायाः न मह्दान जुक्मात्व माबी-র্ণেন বমিত্বা ন সূতকে।। অতিথিঞ্চা-

ননুক্তাপ্য মাৰুতে বাতি বা ভূ**শ**। ক্ষিরে চ সুতেগাত্রাছন্ত্রেণ চ পরি कर । भान धुनातृश्यक्षी ना ধীৰীত কদাচন। বেদস্যাধীত্য বাপ্যন্ত মারণ্যক মধীত্য চ ॥ খ-श्वापा (एवं रेपवांडा) यकुर्वपंत्र ना নুষঃ। সামবেদঃ মৃতঃ পিত্র্য স্তমা-**उ**त्राम्हि संनिः ॥ এতদিদন্ত। বিদ্বা•স জ্বয়ী নিষ্কর্য মন্বছং। ক্রমতঃ পূৰ্ব নভাস্ত পশ্চাদ্ধেদ সধীযতে।। পশু म धृक मार्ज्जात य मर्भ नव्यना-খুভিঃ। অন্তরা গমনে বিদ্যাদন श्राय महर्मिंग ।। बादव वर्द्धय-. মিত্য মনধ্যাযৌ পুষত্নতঃ। **স্বাধ্যা**য ज्ञिकाण्या माजानकाण्ठि विदः ॥ ইতি সানৰৈ ৪ অধ্যায়ঃ॥ নিত্যানিত্যবন্ধবিবেকঃ পুণ বুক্মৈব নিত্য বস্তু ভতোন্যদ্থিল মনিত্য মিতি বিবেচন•। ইতি বেদা**র্ন্তসা**রঃ নিত্যুভৈরুবী জী তৈরবীবিশেষঃ। वामा धाराना दिकः यहिक्छ। रेज्यवी श्रानामि वट् ॥ श्रानः यथा। वान স্ৰ্য্য পুভা• দেবী• জবালস্থ্ৰ সন্ধি-जाः। मूखमानावनी व्रम्ताः वान-न्यं। नमाः भूकाः ॥ नूर्वः कनमाः

## **ৰিদা**ঘ

কার পীনোমত প্রযো**ধরা । পা-**শাস্কুশৌ পুস্তকঞ্চ তথা চ **জপ-**মালিকা ।। দপতী মিতি শেষ: ।
ইতি তম্মসার: ।।

-निर्मिना जी कार्यानकात्रियम्बः।

ठम् वक्षाः। अर्थास्त्र भुवृद्धन

किक्षिडः मृणः कनः। महम्साः।

किराह्ताः यथा। किस्यम्ब महिन।

शिद्यात्र स्वि भूषः। विन्विषित्

मृक्षीनाः कनः मूक्षम्भूषः। इनि

निनायः श्रृ श्रीयकानः ॥ উकः ॥ वर्षः। इंडं अत्र स्मिनीकात्रो ॥ नि-माख वर्गनीयानि यथा। भार्मेश्-त्र अखिकाशुद्धः २ जाशः ० जतः ८ श्रीयकामायः ६ वायः ७ त्मकः १ माङ्कः ४ श्रुशा असी ३० मृग्ज्या ১) सम्बाहिकन्शोकः रूरे । इंडि কবিকল্পলতা।।।

निमाधकतः श्रु॰ मूर्यप्रः। ইতি হার।-वनी ॥

निराधकानः शृ॰ शीगार्जः। मञ् जिप्रधाषाण मारमे। यथा। शुरुख मृर्यप्रः म्पृह्मीय ज्नुमाः महावगाह् कु वाति मक्ष्यः। दिनास त्रामा रुज्यमास मग्राया निराधकानः मगूर्भागाः श्रिय ॥ देजि अञ्-मार्थातः॥

नितान की आदिकाइन । इंड अव इः

। काइन ॥ वं अपनान । वि का विकास । इंडि कि कि । श्री कि ।।

उन्ना क्वा । इंडि कि कि ।। श्री कि ।।

उन्ना क्वा । के ।। अव मान । इंडि क्वा निर्मा । उट निर्मा । अव मान । इंडि विश्व ।। उट निर्मा । वि निर्मा । इंडि विश्व ।। उट निर्मा । वि निर्मा निर्म निर्मा निर्म निर्मा निर्म निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्म निर्मा निर्म निर्मा निर्मा निर्म निर्म

निषिष्र विलिशिषिनाद्रोक्टिंग छ९

পর্যায়ঃ। উপচিত হ। ইত্যমরঃ।।
নিদিক্ষা জ্রী এলা। ইতি শদচন্দুকা
নিদিক্ষিকা জ্রী কণ্টকারিকা। ইত্যমরঃ।। এলা। ইতি শদচন্দুকা।।
নিদিধ্যাসন ল্লী পুনঃপুনঃ মরণা।
অদিতীয়বস্তুনি তদাকারাকারিতায়া বুদ্ধেঃ ম্বজাতীয় পুরাহঃ।
ইতিবেদান্তসারঃ।।

নিদেশঃ পু॰ আজ্ঞা। ইত্যমরঃ।। কথন• ধ উপান্ত•। ইতি মেদিনী।। ভাজন•। ইতি ধরণিঃ।। নিদেশিনী স্কী দিক। ইতি বাজ-

নিদেশিনী জ্ঞী দিক্। ইতিরাজ-নির্ঘটঃ।।

निमातृ

জীর্ণাতিসারিণা- হিতত্বঞ্চা 🗱 🗓 वाजीनभूवनायिकाः उनविषः निमावनाएक्त्वायमान्मा अनः। अ-क्क दु॰। व्यविष्ठानित्वृथः॥ #॥ নিদুা সাত্ম্যী কৃতানা দিবা রাত্রৌ চ ৰপতা॰ জালুতা॰ বা দোষো ন ভবতি ৷৷ ইতি রাজবল্লভঃ ৷৷ #া নিদারহিতা যথা। সতে। নিদাদ-तिपुत्र। भद्र (भूष) कत्र म ६ । भन নারী পুসক্তস্য পর্দুব্য হরস্যাচ ॥#॥**म्थ**मुखाय**या।मृथ-त्रनिक**ः न्गवान् वंशिध् मुक्त मा नज्ञः। সাবকাশস্ত যো ভূড্কে যন্ত দারৈ-ৰ্ন শব্ধিতঃ।। ইতি পাক্তে নীতি-সারঃ 📭

मिनुनिः वि निनुनिकः। उद्भिर्यग्रमः।

मयकः २। इज्यादः॥

निनुन्नः वि निनुन्नीनः। जद्भर्यग्रमः।

(१। यद्मक् २ मयानुः २। इज्यादः॥

पिनुन्नः कीन्याक्यकी। यनवर्यदिका।

देजि दाक्रिक्रः॥ ननी नाम गक्कः

मुद्रः। इजि. मक्किनुकाः॥

নিদাব্কঃ পু॰ অন্ধকার: । ইতি শব-্নালা,11 নিধি

बाजा। त्रियप् । ज्हे **ण्ल हिट्डा** निमान जनन की (भूगा। इंडि मन-कीर्गाजनातिगा - क्लिप्था का ।। नाला ॥

নিধন স্নী নাশঃ। স তু অদর্শন মর
শঞ্চ ।। জল । ততু জলছাদ জল
মুখ্য চ । ইত্যমর ভরতো ।।

নিধনঃ পুণ ল্লী সরণণা ইত্যমরঃ।।
বধ্তারা। সা তু জন্ম নক্ষত্রাৎ সগুমী ভারণা যথা। জন্ম সম্পদ্ধিপৎ
ক্ষেমঃপুত্যরিঃ সাধকো বধ ইত্যাদি ।। পুত্যরৌ লবণণ দদ্যাদ্রিধনে
তিলকাঞ্চনণা ইতি জ্যোভিত্তত্ত্বণ।।
ধনহীনে ত্রি।।

निश्वनः क्षी निश्वः। इंडि (इनहमुः ।

जाश्वादः । यथा। निश्वन छ गठः

महः मर्बः नमिन्द्रिष्टु । इंडि जोनेगः॥ कार्यावमान भुतिन छ नः।

स्था। এতমানাবভারাণা । निश्वानः
वीक मवाधः। इंडि क्षी छा यवु छ ।।

सिशः भू निकानाम गद्भवाः। मन्

यू पुः। इंडि द्वाक निर्देश्वः॥ क्षीवरकोयशः। इंडि सक्तिमुका॥ क्षावादः।

यथा। छगनिशः। क्षणिनिशः। क्षणिनिशः। ई
छा प्रशः। हित्र भुग्धं सामिक छ्या छ 
धन विर्णवः। इंडि श्रीकः॥ करवत्रगः।

नवशः तक्ष विरणवः। उद गिर्देशायः।

শেবধিঃ ২। ইত্যুদরঃ ॥ সেবধিঃ ৩। ইতি ভরতঃ।। তন্ডেদা বথা। **পদ্মো** পুত্রিয়া: মহাপদ্যঃ শঞ্জা মক**র**-ক-্ .इलो। नूक्क कक नेनाक बड़ी ২িগ নিধ্যো নব।। ইতি হারাবলী।। মার্কণ্ডেয় পুরাণে তু বর্চ ইতি হিল্না অপ্তাবেব উক্তাঃ।ইতি ভরতঃ॥#॥ তল্লক্ষণ যথা। পদ্মিনী নাম যা विम्रा वन्त्री उम्राक्षित्वजा। जमा-थाता क निषय छात्य निगम् छः भृगू ।। তব্রুপদ্ম মহাপদ্মৌ তথা মকর कह्लो। मूझन गीलो ननाक मह ৈকবাপ্তমে। নিধিং॥ সত্যা মৃশ্ব্যাং ভূবন্ত্যেতে স্ভি: সহ ভ্রন্ত্যমী। এতে ছঙ্গে স্থাখ্যাতা নিংয স্তব কোষ্ট্রকে॥ এভি রালোকিত॰ চিত্ত॰ -মনুষ্যস্য মহামতে। খাদ্ক্ স্বৰূপণ ् उक्वि जिल्ला निगम् जः मृत् ॥ भारती नार्य निषः भृदः म यम् ७वि षिष । म् ज्ला उटमूरांनाक उट न्तिवानाथ मान्। त्रः शा का किन। मान ্ৰঃ পুৰুষ তেন চাৰ্বিষ্ঠিতে। ভবেৎ। সভাধারে৷ মৃহভিগে যতে প্রসৌ गांक्रिका निष्धि।। भूतर्ग हो भा छा-নুংকি বা তুন কে পরিগৃহ। করোত্য-

তিতরা পো ২৭ তেমাঞ্চ ক্রয় বিক্র-य ।। करता कि इ जथा वद्धान यें बिन নাঞ্পুয়ছতি। সম্পাদয়তি কানা শ্চ সরানেব বথাক্ষণ। সভা দেব নি-কেতা॰ শ কার্যতি ভন্মনাঃ। 🗱। সভা্বারে৷ নিধিশ্চান্যে মহাপঘ . ইতি শুক্তঃ৷৷ <mark>সত্ত্ব প</mark>ুধানো ভবতিতে-ন চাধিষ্ঠিতো বরঃ। করোতি পত্ম-तागामि तद्रामाक शतिगुरुः।। मरमी-জিক পুরালীনা তেষাঞ্চ ক্রয বিক্রমণ া দদাতি যোগশীলেভ্যন্তেষা মাব-नथा॰ उथा।। न कात्रगं ि उहीनः স্বেয়নের চ জায়তে। তৎপুসূতা স্তথা भीनाः भू ध (भोज कर्मन ह ॥ भूई-कि गावः मशामो शूक्याः क न मू-ঞ্তি। মহাপদাস্ত বিপাণা। যাজ্ঞ সমূপজাযতে !৷ 🗱 ৷৷ তামসো মক-রে৷ নান নিধি স্তেনাবলোকিতঃ ৷ श्रुक्रमा १० उमः शुग्यः मूनीलानि হি জাযতে ।। বাণ থল্প ধনুষা ठर्माक भेतिनुह - मण्नेनीमाक्य ৰুতে যাতে নৈত্ৰীঞ্চ রাজভিঃ।। দ-দাতি শৌৰ্য্য বৃত্তীনাণ ভূভুজাণ যে চ उट् भियाः। क्य विकय् म्डागाः ণান্যত্র প্রীতি মেতি চ।। একসৈয়ব

ভারত্রেষ নরসঙ্ব সূতানুগঃ প্রুরগার্থ ममूर्ण नामः मनगरम वालि मन्त्र क्ट्रिक्ष । महमात्या निविध्यात्मा নর ক্রেনাভিবীক্ষিতঃ তিমঃ পুথানো ভবতি যতে। সৌ তামুসো নিধিঃ॥ ব্যবহারান শিষ্টেশ্চপণ্যজাত করো তি চ। कमोञ्जानथिना रेम्हर न वि-খসিতি কস্যুচিৎ।। সমস্তানি রথা-স্থানি নিগৃহ্যান্ত হিক হপঃ। তথা-বস্তুত্য রক্ষানি তিপ্তত্যান্ত মানসঃ ।। ন দদাতি নবা ভুঙ্কে তর্মিনাশু ॥ ख्याञ्चलः । निश्वान सूर्वताः अ**क्ष** নিধিঃ সোপ্যেক পূৰ্যঃ॥ 🛊 ॥ রটে **७१मय क्षात्र भूक्तन्त नान (या नि** ধিঃ। নরোবলোকিত স্তেন তৃদ্ধুণে 🕻 " ख्वि दिक II वीना विनु भ्र**म**ामि গীত বাদ্য পরিগুহ•। করোতি বা-**म्राठा॰ दिख॰ नृ**ठ्य**ठाक्ष शु**यह्नि ॥ বন্দি মাগধ সূতানা বিটানা লাম্য शाठिनाः। मनाकुर्विमः जामान् इष्ट्राकरेक सः नगणिक।। जनिंगु-রতি শ্চাস্য ভবত্যন্যৈশ্চ তদ্বিধঃ। পু্যাতি সঙ্গ মেকঞ্চ স নিধি ভ্ৰভ্ৰতে नत्र। । इकः मञ्जूगय कात्रा न ন্দ্যে সাম মহানিধিঃ। উপৈতি শুদ্র

'মধিক্' নর স্তেনাব্**ল্যো**কিতঃ প্র**সম**স্ত थाञ् तञ्जानाः भग्रन्वोत्राहिकम् ह। পুতিগুহ• করোত্যের তথৈর ক্রয বিক্রয়ণ ।। আধারঃ মুজনানাঞ্জা-পতাভ্যাগতস্য চ। সহতে নাৰ্মা নোজি बन्ना मि महामूत ॥ खूर-নানক মহতী পুতি বগ্নতি বছতি । यः स्मिइञ्दि व कामः मृत्व मून-্বাতি চ্যা বধ্যে ভবন্ত্যস্য সন্ততি ামভ্যেতি শোভনা । সন্তল্পী সন্ত চ नतामिषि नंत्मानुवर्ल्ड भूवर्क-मातान् नत् मष्टेर्णान मेक्स । निर्घायुष्ठाक मर्बियाः शूक्यागार्भभू-ষ্কৃতি॥ বস্না মেচ্চু ভরণ থেচ দূর:-দুপাগতাঃ। রেষা॰ করে।তি বৈ नमः भन्नताक नेटाम्ङ्ः ॥ 🗯॥ ভবত্যস্ত নিট ব্লেছঃ সহবাসিমুক্তা-যতে। পূৰ্ব মিৰেযু শৈণিল্য প্ৰীক্তি गरेर क्षितां कि है। जरेश्व ने कुतं क नी यि विञ्रु मिन्नीनिषिः।। मनीन म खे छ मर्की नते उद्दीग उपन् ভবে । व्यक्तिभाग धानामि कन প্রপরিপুহ•ীপুক্তা বিজন শহুবানা मुक्तानीनां रिहामूत्न। काक्षानीन्। করোত্যেষ যহান্যজ্ঞল 🔻

क्य विकय सश्ज्या॰ नानाव वमाछ মনঃ। ততাখান পুষরিণ্যক তথা-রামান্ করোভি চাবে**ন্ধঞ্ সরি** তাণ বৃক্ষা॰ তথা রোপখতে নরঃ। অনু-লেপন পুষ্লাদি ভোগ ভুক্ বাপি ভাষতে ৷৷ ত্রিপৌৰুষ শ্চাপি নিধি (क्री (जा नामिक বিশুক্ত: । 🕸 । স্বজ স্তমোময়শ্চান্যঃ শহ্ব সংক্তো হি যো নিধিঃ ৷৷ তেনাপি নীয়তে বিপু তদ্ধু-ণত্নু- নিধীশ্বরঃ। একসৈ তবতে ত্ব নর নান্ত মুপৈতি চা। যস্য শহ্মে निर्वि उम्र मुक्तः कार्थेक मृत्। ৰ্থকএবাত্মনা মৃষ্ট মম ভুড়কে তথা<sub>ত</sub> বর"৷৷ কদম ভুক্ পরিজনো নচ শ্রো ভন বক্সভূৎ। नेप्रमाতি সুদ্ধ ভার্য্যা जूउ (भोज मुनि कि मु।। यशायनभावः শাল্পী নরে। ভবতি হ্বরদা। ইত্যেতে निध्यः श्राजा न्त्राना मूर्यरप्यजाः ो स्। मिणुक्तनाकित्न भिन् य ভাব ফল দুর্ঘিন:। মৃথ্য খ্যাতঃ ুৰুভাৰন্তভবত্যেক ব্যিকাকনাৎ॥ मर्दिया भाषिभरङ्गं हु-ञ्रीदियाः ু দ্বিজ পদ্মিনী ॥ শ্বাইতি সাকপ্তেয পুরাণে নিধি ক্ষণ ।। ানবিদ্যান্ত্র পুণ কবেরঃ। ইতি ত্রিকাও

निन्हा **(लब्:** ११ निधीलः अनिधीत्रकः। निधि-**পु**जूः । इंडेप्रस्यः ॥ निधुवन• ङ्गी भिथुन•४ ইত্যমর: ॥ नर्भाः। किलः। ইতি मुद्रद्वावनी ॥ कन्नः। इंजि स्मिनि ॥ निध्यान द्वी पर्यन । इञ्जातः॥ নিধানঃ পু॰ শদঃ। ইতি শদর্গা वनी ॥ নিনদঃ পু• শবः। ইত্যারঃ।। निनामः श्रुः भक्तः। ইव्यवहः॥ निन्तकः जि निन्ताकातकः। यथा। ন ভারাঃ পর্বতা ভারা ন ভারাঃ সপ্ত সাগরাঃ। নিন্দকা হি মহা-ভারা ভারা বিশ্বাদ ঘাতকাঃ॥ ইতি কর্মলোচন• ॥ निमरजनः बि निम्रिज्यसः। इंजि भदत्रञ्जावनी ॥ निन्मन क्री निन्म। इंडि नद्राद्वादली নিন্দা জী অপবাদঃ।। দুষ্কৃতিঃ। ইতি नम्बद्भावनी।। निन्तनः। उट्शर्याः ) यः। অवर्शः र जारकन्तः जिस्कर **৪গরীবাদঃ৫অপবাদঃ৬ উপকো**-मः १ जुख्या ५ वट्या २ गईन ३०। ইত্যমরঃ।। গর্হা ১১ রৎ সমূণ ১২ প-রিবাদঃ ১৩ সুভপুন: ১৪ অপক্রোশঃ/

अर्थे के करवारः भेरे इंडि ममनेनावनी । अर्चभ १८ थिक कियी। २३। इंजिएस्याज्युः॥ अ॥ स्र्वे (इ-अविकासि निन्तायाः प्रार्था यथा । হর কেশব্যে আক্র বিচ নিন্দন্তি भाभिनः। कृतिवान् वाञ्चणाः टैकव ষ শুৰু শচ পতিবুতাঃ ॥ যতি ভিক্ষু वुकाराति मृद्धितीकान् मूद्धाः ख्या। পচ্যান্ত কাল সূত্রে তে যাবচন্দু দি वाकरतो ॥ स्त्रचा मूब भूदीरवकु म् রতে তে ক্রিনিশ-। ভক্ষিতাঃ বী निकरेतः भयः कर्वस्रिकाजताः॥ নিন্তি চ্ বুকাণ- সুইার- জগতা: एक । निव मूर्ताना भुवद मूर्गा दुर्भरिवर्ख शक्तिश्रीमथए 80187 লন্ধী সরস্বতী ।। সীতাঞ্চ তুলসী বিশ্বব্যায় 🛊 🕦 🚒 ।। 🚓 ।। গঙ্গাণ বেদাংশ্চ বেদমাতর । বৃত তপস্যা প্রাঞ্চ মন্ত্র মন্ত্রপুদ গুৰু । তে পচ্যন্তে শ্বৰুগে ৰৈ চা-यूर्याक् विष द्राहा। जिक्ना नर्श मरेशक नदः **वर्त**ि मञ्जः॥ या নিন্তি ক্ষাকেশ দেব সাম্য বি-शाय है। विकुछिक्ति भूतिकव भूता १ क শুতেঃপর•াারাধা: তদ্কজাগোগী ব্ৰে ৰাপুণ্ড সদায়িতাৰ । তে প্চ্য-। एड १९वरि एन देशानु बायूका मान ।।

निन्ता जाशास्था उद्भ द्या नश्रामारवन्त বেষ্টিতাঃ ভক্তি বিকৃত্বিকারেঃ कीरिः गर्मः नगान्रिः ॥ यञीव কাতর৷ ভীতাঃ সাক্ষ সর্বন্তি সম্ভত• । त्याचा मृज शूतीयाणि धुत छक्छि क्वाञ्जिः॥ उन्नाः मर्गे क्ट्रीन् তন্মখে যম কিন্ধরাঃ ৷ ক্রিমন্ত্রিত-र्जन कृषा अर्देष्ट्रिस एठाएन ॥ अ-র্মন্তি মূত্র শৈকত পুহারৈ ভ্ষিত। ভি या। जमा कद्मारुष्त गुर्हु ग्रह्मेर भूष म भूनः ॥ (ज्या ज्या प्रश्निकात इंड्राइ कमर्जी ख्वः श्वितनित्रे वि-नामार विनिन्ता युगरम नेत्र । ईंडि मर्जान एक निन्तात्रजा कथा। विक निक्तात्र्जा रेक्द मनमाशि नै राष्ट्र ॥ वाजार भूम महा

ड्डं(यर्। यह निनहा (हर निनतः भूरोहन जिल्हाराट ॥ यर (एवा न्धी रे वेद्यार वा निक्ति हिं कः। न जने निर्वि पृष्टी नारक्षि र मूनीयबारेम निम्तिर्देश एक वर्ष स्वमः या त्यानिस्कृता केन क्योरि শত সাগৃ রৌরবে সচাত্রেরী

विन्ती ख

ज्या मानीतं निन्तायाः भे द्वयाट কিঞ্চিদুভর•়ি কণৌ পিথায় গম্ভব্য• न रेवनानवर्त्तीकरण्या नक्रियरिष श्रातवास श्रहम् यहेना दूधः । न नित्मत्याशिनः निकान् दुरिताया ं यञी॰ खथा। (দব তাযতন॰ পুাজে। দিবাল মাকুতি স্তথা মইতি কৌর্মে ্উপরিভাগে : ২্অধ্যায়ঃ া

निन्तास्टिः खी वरोञ्स्टिः। यथा । নিল্ল স্বতিভ্যা• ব্রাচ্যাভ্যা• গম্য-ख् रहा है निन्द्रयाः | निन्द्रया स्तृष्टि পুনি গ্রে বুপ্তিন স্থাতি বিভিচ বুং- বিপত্য প্রী বুজভূমিঃ ৷ ইতি মুখ-প্রেয়া ব্যাজন্ত তিঃ। ইতি নাহিত म्भाष्ट्र ॥ जीना हा यसि निल्मित ভৌত্<del>যিকু</del> প্রতি রপৌ মর্তা। 🔊 দাহুরুলাতাপসেনাপেরানেণ্জি-তেয় ভূতধারি। ব্যারাজ্ঞাপি ेु जातवः जिला, गाल्यम् खत्। ইलि मुखी ॥ 🕸 ॥ कथ भवनिश्र राजी व-विभाजानि त्रामा भी विज्ञम्बा • विषिया भीकृ ग दिशा नन उर ্ৰনিহতারে রপ্ত কিনীতা ত্রি ৯তাকে কুলভ

িইতি কাব্যপুকা**শঃ**।।

নিপাত

निमिर्देशीव विन्तिश्रृक्तः। उट्मर्राप्रः ী বিক্লুডঃই অসম্বত্তঃ নিউৎসিতঃ । ইতি জটাধরঃ ।।

निन्तुः भी मृठवट्माः निन्तुः है रे कार्यनार्भी निर्मिष्ट्रभाषा मि-ত্যাদৌ উগাদিক উপুত্যুক: । ন**ন্দু:** ইতিচ পাঠঃ । মথা নশ্য প্রসূতি-का नन्द्र ति ए सम्बन्धः ॥

নিপঃ পু ক্লী কলসঃ। ইত্যমরঃ।। क्षेत्र एक भूग इंडि नवर्गमुका নিপটঃ পু॰ পাঠঃ। ইত্যমরঃ।।

ংকাৰ টীকারা। দুর্গাদানঃ ॥ मिलार्टेः जुः लर्टनः हैं हैं छात्रतः॥ 'নিপাকঃ পু° পাকঃ।ইতি শব্দর্না-वनो ॥

নিপাতঃ পু॰ মৃত্যুঃ। ইতি ত্রিকাও-(भवः ॥ शडन । यथा । तन वा হর্ষ্যে বা সম কর নিপাতো হিম্-क्षेत्रः। इठ्रान्स्वर्ते।

নিপাতন স্লী খলীকারঃ। ইতি ভরতঃ॥অধোন্যন-।ইতিসর্বস্ব-॥ তৎপর্য্যাयः। অবনাযঃ २। ইত্যম-्त्रः ॥ नियाजन २। ইতি भयनान**म्**ह ।। प्राकत्र नक्तर्न्य शब शेष

নিপুণ

क्न । यथा। निया छन्। हिनिकः

१। देशकार्ग ना नुस्त्रिक उटे नर्ब नि

পাতন সিদ্ধ নিতি ভাষ্ট্য ॥ निकाइ अक्न रथा। वर्गामा वर्ग বিপর্য্যশত ক্ষেত্রাপরী বর্ণবি নার नारमी। शाला उत्थारिकायन যোগ স্তু চ্যতে পঞ্চিধ নিৰ্ক্ত ৷৷ इंजि शाकः। इंजि पूर्गानामः॥ छष्यथा। वर्गागरमा गरवञ्चारहेरिनः ह वर्ग विश्वर्यंप्यः। त्याउँ शासी वि कातः मोट वर्गनामः श्रहामरत ইতি কলাপপঞ্চী ॥ নিপান ল্লী কূপ সমীপ শিলাদি নি-্বদ্ধ পশু সানাৰ্থ কৃত কুপোজ্তায় হান। ইতি ভরতঃ॥ তৎপর্য্যায়ঃ । আহাবঃ ২। ইত্যমরঃ ॥ গো-দোহনপাত্র•। ইতি ত্রিকা ওশেষঃ॥ निপूगः वि कार्यक्रमः। उৎ পर्यप्रायः। পুথীণঃ ২ অভিজ্ঞঃ ১ বিজ্ঞঃ ৪ নি-ফাতঃ ৫ শিক্ষিতঃ ১ বৈজ্ঞানিকঃ ৭ কৃতমুখঃ ৮ কৃতী ১ লশলঃ ১০। **ইত্যমরঃ॥ স**ংখ্যাবান্ ১১মতিমান্ >२ ब्रुगागुगियमिकः >० कृष्टिः >८ विषुत्रीः १० वृषः १५ मकः ११ त्निष्ठः **> इक्** ज्थी: १० निश्चान २>

कृ उद्या २२ विद्वा गः देश विषयः २८ हर्युद्ध २० (भूटि २७ (वादा २१ রিশারদঃ২৮ সুমৈধাঃ ২৯ সুমতিঃ ०० जीकः ११ क्रिक्नवान् १२ विवृधः ०० विष्ने ०८। इंजि दाकनियकः।। ন্ত্ৰী জ্যোতিয়তী ৷ ইতি ভাবপুকাশ: ম निका की जार्कन । इंडिताज-নির্ঘণ্ট 🖏 निवद्यः भी भी उर्। इंडिश्नम् भीवनी निवतः शृ (याना हाता रेडिश गृहन। বৃত্তি: । ইবি হেমচ दः ॥ নিয়বুক: ा इंडिंट हो धतः ॥ वकत् प्यथा । रिक्त जन्म बिट्यानेकाय निवक्ताया-সুরী মতা। ইডিঞ্জী উপ<del>য়েলিতা।।</del> निवकन की एचजुः। है हि एक्सहमुः ।। উপनारः भिजु वीगा जर्जी निवे ন্ধনোদ ভাগঃ ইত্যমরঃ ৷ ব্রুবঞ্ নিবশ্বকর্তা। গুছকর্তা। निविश्वि 💐 दकः। निवक्ता २२। জাতঃ ইত্যুথিইতপুত্র নিম্নন্ধা निवर्श ही सम्बंध । इंडिंग्सर्

রন্ধবলী। নিভাল্যা স্নী কৈনিং। ইড়ি ত্রিকাও শেষঃ॥

নিভূত বি প্রস্তি। ভূতকাল:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥"

নিভূতঃ ত্রি বিনীতঃ ॥ নির্জনঃ। যথা।
বিনীভূত নিজ্ঞা গৃহ• গত্যা নিশা
রহসি নিলীগু বুসন্ত•। ইতি শ্রীজ্ঞা
যদেবঃ ॥

निमक्तिष्टः शुः भयनः। येथा। उत्तर कार्यक्षाः नाष्ट्रः भरनाहः विद्य-

निभक्कनः क्री ज्ञानः। श्वन्ताहनः व्या । नास्ति विन् क्रमक वर्णाहनः क्रिकः ना क्रिकः क्रिकः क्रिकः वः थले ज्ञान् व्यापाः। प्रिक्तिकः ना व्यापाः।

निमञ्चन क्री निश्वाक्षनिवद्धनिष्ट्र। अब यभा क्रिक्ट जुक्की जुन्तान् ।। यमा क्रिक्त शुकावाद्धनिक्षां क्रिक्त । स्वा क्रिक्त । इक्क्सची क ज्वान । स्वा क्रिक्त में क्रिक्सची क ज्वान । स्व क्रिक्त में क्रिक्सची क ज्वान । स्व क्रिक्त में क्रिक्त स्व क्रिक्त इंकि निमयः ( शुः विक्रिनयः। ₹ ७ प्राप्तः।। নিমিঃ পু॰ ইক্ষর্ভপুঞ্চতস্ निम्बर्व शिक्ष कात्रने र्या। निमि नाम तथः जीिं श्रह मुद्धे मही-ব্যত। তঞ্জমুরে ক্রাজগাম বলিষ্ঠো বুন্ধ সম্ভবং॥ তস্য পূজা মন্দর্গন্ত শশাপ সমুনি ন্প। বিরেতা স্তৃ। च्या विष्युत नाम्या भूनः॥ অন্যোন্য শাপাচ তথে৷ বিশরীরে বিচেতুলী।। জন্মতুঃ শাপ নাশায বুন্ধাণ লগতঃ পতিশা অথ বুন্ধণ আদেশাল্লোচনেষু বসমিনিঃ। নি-भियाः मु १ क लाकाना • उ विभागा-य नात्रम ॥ ইতি নই সঁত্রুরাণে ৫৫ অধ্যাय: ॥ 🗱 ॥ মতান্তর॰ যথা। নিমিঃসহসু সংবৎসর সত্র মারে ভে।বশিষ্ঠঞ্ছ হোতার• বর্যামাস । তমাহ বশিষ্ঠঃ। অহ মিন্দ্রেণ পঞ্চ বর্ষ:শত যাগার্থণ পুথমতরণ বৃতঃ। আগত শুত্রাপি শুত্রিব্রিষ্যামী-ज्राक मानि उर्दिन त्योगे গোতনাদিভি থাগ মুকরোৎ। স-भारत हामत्रभिक यारा द्वावान् विभिष्ठ जाजभाग। उद्यं कर् य । (गाउम्मा पृष्ठी व्ययः बिहर्रा

শ্বিষ্য ভাতি শাপং দদ্যে গ্রান্থ। ব শ্বিরং সদ্যোমৃত দিব উছো। য জ্ঞ সমান্ত্রে ভাগ গুহণায়াপতান্ দেবুর শব্রিজ উচুঃ। যজমান্ত্রের ব রোদীয়তানিছি।দেবুরু ছ নিতো নিমি রাহ। নছে তারতি জগত্যন্য দৃংথ মন্তি যদ্ধীরাত্রানো বিযোগে ভবতি। তদহ নিদ্বামি সকল লো-চনেষু বস্তং। ন পুনঃ শরীর গুহণং কর্তু মিত্যের মুক্তে দেবৈ রুসাবশে-ষ ভ্তানাং নেত্রেরাসাং কারিতঃ। ততো ভ্তানু লেষ নিনেষং চতুঃ ধ্ ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৪ অংশে ৫ অ-ধ্যায়ঃ।। ই ক্

নিমিত্ত শ্লী হেতুং।। চিহ্ন । ইত্য সরঃ।। শঙ্কনঃ। যথা। নিমিত্তানিচ পশ্যামি নিপরীতানিকেশব।ইতি শ্রীভগবদ্দীতা।।

নিনিত্তক প্লী চুম্বন । ইতি শব্দালা। ।। নিনিত্তক ।।

निमुक्तमङ्गरः क्री नगराधिकादगा होकाणः होते गमवाधिकादगान्ताः जिम्राज्ञी भदिक्तरा। य कादगः। यथा। घरे॰ शुक्ति स्वाब्यः मख हक मिवान मुकारि। ইতি ভা निस्मक् देशी

निमिख्य शुः काकः। ইতি রাজनिमिख्य शुः स्मिख्यः। गगकः।
हेठि (हमहन्दुः ।
विभिन्नः शुः विकः। यथा। निमिया
श्निमियः गुरी वाहण्णि कनात्रश्रेः
। ইতিবিকুসহসুনাম।। কালনি
यः।। हकु निभी लनः। ইতি মেদিনী
निभी लनः की मूज्यः।। निस्मयः। ইতি
(हमहन्दुः।।
निभी लकः की नुज्ञाः। हिक् नमः

রত্নাবলী ॥ ডিনীলজ্ম ॥ নিনেবঃ পূর্ণ নৈনেবঃ। পার্রাবন্ত?। ইক্সমেরটীকাষাণ জুরুতঃ॥

निरमकः भू भन्न क्रिक्ति। क्रिक्ति है जिल्ला क्रिक्ति क्रिक्ति है जिल्ला क्रिक्ति है जिल्

भव्यानाः!

निम्बिक्के (गून थान्त्राजः। ইजि

নিমুণ ত্রি নিজ্ঞান্ত্রা অভ্যাসঃ শীল মত্র তথা নিচু ইতি নাবাল ইতি চ ভাষা। তথপর্য্যায়ঃ । গভীরণ ২ গঞ্জীরণত। ইত্যমরঃ॥ গভীরক•৪ । ইতি শক্ষরত্বাবলী।।

নিমুগা জ্ঞা নদী। ইত্যেরঃ ॥ নীচ শামিনি ত্রি ॥

नियः भू वृक्षिविष्मेषः। निम् इंडि ज्या । ल्य्भर्यं । अतिहेः २ সর্বতো ভদুঃ ৩ হিন্তু নির্বাসঃ ৪ ম लकः ६। शिर्मियः ५। ইত্যমनः ॥ অক্সাদ্পঃ ৭। ইতি হেমচন্দ্রঃ 11 কৈটয়ঃ ৮ বর বৃচঃ ১ ছ দির্মঃ ১০। देजि दब्रगाचा ॥ পুভদুঃ ১১ পারি-**जिं**कः ३२ का<sup>्</sup>क्वः ३० कीरत्र क्षेः ১৪নেতা ১৫ ুননাঃ ১৬ বিশ্বর্ণপর্ণ ३९ यवरमञ्ज ३৮ भी मानावकः ३३ भी ७: २०। इंटि, प्राज्ञी नर्यक्टे: ॥ शिहूमनरः २**३ छिन्दरः २२ । ই**তि ্ভাবপুকাশ । প্ৰস্যু গুণাঃ। भी-ত্ব । তিকুর্ব । কিন শাফ শান্তি কারিব । বলা-

म क्विष शिख्र राय इस्य विराइ नामिद्व । इंडि ताजन्द्रिकः ॥ লঘুর । গুাহির । ক্রীপাকির । আই বাত কারিত্বণ অক্সংগ্রন্থ <u>ज़्र्य क्रे काम इज़ावारि इपि य8</u> ज्ञाम (गर्माणयुक्ष।। उट भव গুণাঃ। নেত্রহিত কারিত্বণ কৃমি পিত্ত বিষ সর্বারোচক অন্ত নাশি-ত্ব• । বাতলত্ব• । কটুপাকিত্বঞ্চ।। তৎ ফল গুণাঃ। রসে তিক্তত্ব॰। পাকে কটুত্ব॰। ভেদনত্ব॰। স্থিপত্ব৽। वयुद्धः। उकद्भः। ऋष्ठ खन्मार्भः ক্মি মেছ নাশিত্বঞ্চ। ইতি ভাব-भूका**णः** ॥ # ॥ ज्रेडन खगः । নাত্যুক্তবং। কৃমি জ্প্ত ক্ফ ব্শোষ বুণ কণ্ডৃতি শোফ হারিত্বণ। পিত্ত-ल पुष्ण । इंजि ताक निर्घण्डः ॥ 🗱 ॥ নিম্বণ পিত্ত কফ ছদি বুণ জ্লাস জ ঠ বুং 1 নিয়পত্ৰ• ইতি বা পাঠঃ ॥ 🗱 ॥ कत्रक्ष निश्वज कवा क्नि क्षे পুমেহ জিৎ ॥ 🗱 🖫 निश्वेउनर्छ অধ্বন্ধ তিক্ত ক্মি হর পর । ইতি রাজবল্লভঃ॥ নিম্বকঃ পু॰ নিম্ববৃক্ষঃ। ইতি ভূরি-

भूयागः ॥

নিশ্বতকঃ পু॰ মন্তারবৃক্ষঃ।ইত্যমরঃ॥ নিশ্বনীজঃ পু॰ রাজাদনীবৃক্ষঃ।ইতি রাজনির্ঘণীঃ॥

निष्कः, शुः वृक्षवित्नयः। क्राग्की-तिवृ इं ि आ्या।, लक्ष्मर्यप्रायः। ॥ অমুদ্রমীর: ২ বহি: ৩ দীপ্তঃ ৪ ব হ্রিবীন্ধঃ ৫ অমুসারঃ ৬ দন্তাঘাতঃ ৭ শোধনঃ ৮ জন্তমারী ৯ নিদূঃ ১০ রোচনঃ ১১। তৎ ফল গুণাঃ। তম্ম त्रमञ् । कृष्ट्र । ेक्ट्र । धन्त्राम-বাত কাস কফার্ত্তিকণ্ঠ বিছাদ ই রত্ব॰। অগ্নিবৃদ্ধি কারিত্ব॰। চম্কুষ্য ত্ব-। পরিপক্ষে অতীব ৰুচ্যত্ত্বঞ্চ। ইতি রাজনিৰ্বণ্টঃ ॥ পাচনত্ব• । ল-'ঘুত্ব। ক্মি সমূহোদর পুহ নাশি-ত্ব । তীক্ষর । বাত পিত্ত কফ শূ লিনে। হিতত্ব•। কষ্ট নষ্টকটি রোচ-নত্ত্ব । ত্রিদোষ বহিক্ষিয় বাত রোগ নিপীডিতানা বিষ বিশ্বলানা ম-লগুহে বন্ধওদে বিস্চিকায়াঞ্ পু-দেয•। ইতি ভাবপুকাশঃ॥ 🕸 ॥ ভাগৈক নিষুজ তোয় বড্ভাগ भक्तापकः। नवक् मतिहासिनुः शानकः शानकाखनः॥ निष् कल ভব• পান মত্যন্ন• বাত না**শ**ন• ।

বিরু দীপ্তিকর কচ্য সম্ভাহার
পাচক ।। ইতিরাজনির্ঘণ্ট ।।
নিযতঃ ত্রি দংযতঃ । যথা। কার্ত্তিক
শুল্ল পক্ষস্য দিন্নীর্যায়া নরাধিপ।
পুল্লাহারে বর্তমেক তত্রৈব নিযতাঅবান্ ।। ইতি ভবিষ্য পুরাণে দ্বিতীয় কল্পঃ ।। নিত্যঃ । যথা। অন্যথ
দিন্ধি শূন্যস্য নিযতা পূর্ববর্তিতা।
কারণর । ভবেত্তস্য ত্রৈবিধ্য প্ররিকীর্তিত ।। ইতি ভাষাপরিছেদঃ
নিযতিঃ ত্রী ভাগ্য । কৈব । ইত্যমরঃ ।। নিয়মঃ । ইত্রি
নিযতী জ্রী দুর্গা। যথী। মতিঃ সং

नियक्षिजः वि<sup>र्</sup> व्यवाशः। व्यन्ति । स्मिर्जनुः ... নিবসঃ পু• শৌচ• সম্ভোষঃ তপঃ साधायः स्थ्रेंद्रभूनिधानकः। ইতি विनाडमातः ॥ शुचिक्ता । यकी কার ইতি যাবে । ব্রিত । তাদাপ বাসাদি ॥ অনিতঃ নাগত সাধন কর্ম। ইত্যমরঃ।। মন্ত্রণা।। নিশ্চশঃ 1 ইতি মেদিনী II # II নিয়মাঃ পঞ্ সত্যাদ্যা বাহু মাভ্যম্তর দ্বিধা। **भोठ**• जूडि क मस्त्राय स्थारकिन्त्र्य निगृहः ॥ त्रान भोताभवासका ষাধ্যায়োপস্থ নিগৃহঃ। তপঃ ক্রো-খে গুরৌভক্তিঃ শৌচঞ্চ নিয়মাঃ মৃতাঃ ৷' যমাঃ প্রকাথ নিয়মাঃ **ए**। हिन्दिल भीतिछ । সম্ভোষ छ्लमा॰ रूनाः वामू (मवाईनः मन ।। ইতি গৰুডপুরাণ ।। 🗱 ॥ বুক্ষ-চর্য্য মহিংসাঞ্চ সত্যান্তেয়াপরি-शुरान् ! (मद्यर याशी निद्यासा दर्गाणा **स॰ पत्ना नय**्वा शाक्षा য় শৌচ সাহোষ তপ্য সি নিয়তা-चारान् : नशि जुन्दि। ज्या भन स्थिन् श्रुवन भन्ः॥ ७८७ यमाः म নিয়মাঃ পঞ্ছ প্রশ্ন পুকীর্ত্তিতাঃ ॥ হৈতি বিষ্ণুপুরাণে ১ অংশ ৭ অধ্যা ্ৰা ৠ৷৷ তপঃ সন্তেৰি আন্তিক্য

मान (मरम) भूबन्ति मिकाइ भूतन-रिक्षव ही भंडिक ब्रह्मा इन । मर्म-তে নিয়মাঃ প্যোক্তা হৈত্ৰশান্ত বি-শারদৈঃ।। ইতি তন্ত্রসারঃ।। ৪ঞ্ছা। कि विजा रियमाः। युना । वर्गस्य सम् প্যেত রিথমে। १थ পুদর্শ্যতে। ভূর্জ ত্বশ্বিনবত্যের মল্লেয়ে ছেব চন্দ্র-।। সামান্য বর্ণনে শৌল্যু॰ ছত্রাম্ভঃ **পুত্র বাসসা । কৃষ্ণত্ব কেশ** কাফা-हि भाषानिधि भाषामूहाः । त्रकः দ্বার বন্ধু নিবিদ্যান্তোজ বিবন্ধতা। । তথা বসন্ত এনান্যপুষ্টানা॰ কল-কুজিত ।। বর্ষায়েব মযূরাণা কত न्ठा 🗢 वर्गरष्ट् ॥ 🟶 ॥ नियन मा वि-শেষোথ পুনঃ কশ্চিৎ পুকাশ্যতে।। क्यवामक्पामाः कृष श्रित्छ। नीश मर्भाराः । भी ज लाक्ष्ठिएः सर्भ পরাগাগ্নিশিখাদিরু॥ চন্দেশ শৈ-वार्याः कामधुरक नकत मू मुरयाः। **দानवामुब देन छाना देन का दनवा छि**ः সমত ।। বহুক। ল জন্মনোপি শিব-চন্দুস্য বালতা। মানবা মৌলিতো বর্ণ্য দেবা ক্ষরণতঃ পুনঃ ৷৷ ইতি কবিকল্পলভাষা > ১ স্তব্বে বর্ণ্যন্থিতি ৰ্নাম তৃতীয় জনুম ।।

(नियुक

নিয়নণ ক্লী নিয়নঃ শৈথা। নতত্ত্বাভিথা নিষ্মনগত্ত্বস্থাঃ। ইতি কাব্যপ্ত কাশে প্রিতীযোল্লাসঃ ॥ বন্ধনং । যথা। বলে নিয়মন মিত্যুস্তিঃ ॥ নিয়মিতঃ ত্রি কৃতনিষদঃ॥ বন্ধঃ । কথা। ক্ষুদাঃ সন্ত্রাস নেতে বিজ্ঞ-হিত হরয়ঃ ক্ষুণ্ন শক্তেভ সম্ভাযুদ্ম-দেহেষু লজ্জা দথতি পরন্ধী শান্ যকা নিম্নতন্তঃ।সৌমিত্রে তিপ্ত পান্ ত্রণ ব্যপি নহি ক্ষাং নন্তং মেঘ-নাদঃ কিঞ্চিজ্জুভঙ্গ লীলা নিয়মিত জলধিং রাম মন্বেষ্যামি ॥ ইতি গহানাটকং॥

নিয়াতন শ্লী নিপাতন ইত্যার ট্রী নিয়া ন্যনানন্ত 11

नियामः श्रु॰ नियमः। ইতি শব্देशः वनी ॥

নিযামকঃ পু॰ পোতবাহঃ। ইত্য নরঃ। কর্ণধারঃ।। নিবস্তা। ইতি মেদিনী।।

नियुकः जि नियागिविभिष्ठः॥ श्रवधा-तिजः॥ श्राञ्जासः। यथा। जानानि थर्मा निर्वा श्रवृत्ति जीनाम् । श्रम निर्वा । द्या श्रवीतिभ श्रिति । द्या श्रवीतिभ श्रिति । द्या श्रितिभ श्रिति । द्या श्रितिभ श्रिति । द्रिति । द्या श्रितिभ

निम्ड॰ क्ली लक्कर । इंछ प्रावः ॥ यथा ।

**নিযোজ্য** 

स्निनाः नियु छ श्रामा मिनि नियु छ निका । इनि क्षेत्रं द्वानी ॥ मठ महत्रु मयू छ । नियु छ श्राक मान । मठ सहत्रु मयू छ । नियु छ श्राक मान । कि क्षेत्र मिनि क्षेत्र ।। इनि छ जिल्हा । विश्व कि महत्रु मयू छ छ ।। ए मन कि । यथा। कि मन मजिल्हा नियु छ छ ।। ए मन कि नियु छ छ ।। ए मन कि ।। विश्व कि नियु छ ।। विश्व कि ।।

नियुषा की वाल्यूषा दें जनतः॥ निया गः शृ व्यवधातः। देखिपूर्णा-मामः॥ व्याद्धा। देखि द्रमानम्,॥

নিযোগী ত্রি নিযোগবিশিষ্টঃ নিযুক্তঃ ৷ তৎ পর্বায়ঃ ৷ কর্মসচিবঃ ২
আযুক্তঃ এব্যাপ্ হঃ ৪ ৷ ইতি হেমচন্দঃ ৷৷

नियागाः ि नियागाईः। शृङ्ः। इंडि गुक्षाराह्ताकः ।।

নিযোজন লা নিযোগঃ। পেরণ।
যথা। ব্বৈত্ত ক্রিযতানিতি ক্রিযানু নিযোজন প্রেরণ।ইতি দুর্গাদাসঃ।।

িযোজ্য: ত্রি পুেষ্য:। কি**ই** ত্রিমর:।। নিরব.

পু॰ স্কুটঃ। ইতি রাজ 📊 निर्घकः॥ वेश्चिष्ककाती ह ॥ नित्रभूभः वि अनिवार्याः। वाशाण्ना । ইতি জটাপরঃ ॥ नित्रक्षना जी भूपिना। ইতি भाष-মালা॥ অঞ্জনশ্নের তি ॥ নিরন্তর • তি নিবিড । ঘন • । ইত্যমরঃ য়া অনবকাশঃ।। অনবধিঃ।। অপ-রিধান•।। অন্তধান•।। অভেদঃ।। **जिजा** हर्ण । अहिन् ।। कनाकी यक्षा प्राविना ॥ व्यवस्थि ॥ व्यनवन-इः॥ यमधुः॥ यनस्रतात्रा ॥ এতে 🖈 নি ৰুপুসৰ্গ পূৰ্ৱকান্তর শব্দার্থাঃ 🕦 নিমন্তরাভ্যাসঃ পু॰ স্বাধ্যাবঃ। ইতি (ব্রিকাঞ্পামঃ।। সততাবৃত্তিক।। নির্গএপঃ তি পৃষ্টা নিলজ্জঃ। ইতি জটাধ্রঃ !! নিরপেক্ষঃ ত্রি অনপেক্ষঃ। যথা। অভিধাতু প্রে ২ন্যামন নিরপে-ক্ষ রবা শু ঠঃ। ইতি নলনাসতত্ত্ব नित्रयः शूर्भनत्रकः। इंग्युन्तः॥ निवर्गनः वि क्रिजेनः ( अवाधः । ইত্যনরঃ॥ नित्रर्थकः वि निद्धनः। उৎ शर्यप्रायः। 🖊 माधिर। इक्स्यः॥ ্যাঃ পু॰ নীরবঃ। রবাভাবঃ। ইতি িপূর্ব ক থাতে। রলি নিল্লমঃ।।

অপালনক্ষ্ম

নিরবগুহঃ পূ॰ সত্তঃ।ইত্যারঃ॥ বৃদ্ধিপুতিবন্ধাভাবেক।! নিরবহালিকা জ্রী প্রাচীর•।ইতি শব্দাশা॥

নিরশন প্লী ভোজনাভাবঃ। অন-শনং। ইতি নির্পূর্য অশ ধাতো রনট্পুত্যবনিয়নং।।

নিরসঃ 'পূ॰ নীরসঃ । রসাভাবঃ । রসস্যাভাবঃ ইতি তৎপুৰুষ স-নাস নিয়মঃ ॥ তদ্বতি তি ॥

নিরসন° শ্লী পুত্যাখ্যান°।ইত্যনরঃ
। বধঃ।। নিষ্ঠাবন•।ইতি মেদিনী।।
নিরসা শ্রী নিঃশ্রেণিকাতৃণ•।ইতি /
রাজনির্ঘণ্টঃ।।

নিরস্তঃ ত্রি পুহিতবানঃ। ত্যক্তশরঃ।।
ব্রিতোনিতং। শীঘ্রোচারিতবচঃ।।
নিরাকরণবিশিষ্টঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ।
পুত্যাদিষ্ঠঃ ২ পুত্যাখ্যাতঃ ৩ নিরাক্তঃ ৪ নিকৃতঃ ৫ বিপুক্তঃ ৬।
ইত্যমরঃ।। পুতিক্ষিপ্তং ৭ অপবিক্ষাং ৮।ইতি হেমচন্দুঃ।। নিষ্ঠ্যতঃ।।
পুবিতঃ।। সংত্যক্তঃ।। পুতিহৃতঃ।
ইতি মেদিনী।।

नित्रक्रातमः श्रु व्यक्तारमः। श्रम
. ভाশ्न्यज्ञानः। म ज् श्रह्म ভृष्य
वर्ष यभरकाहिः। हिक्स्य ভाরত

বর্ষে লক্ষা। পশ্চিমে কেতুমালবর্ষে রোম্কঃ। উত্তরে অকবর্ষে সিদ্ধপু-রী। এতাঃ ভূবৃত্তপাদ বিবরাঃ অ-ন্যোন্যং পৃতিষ্ঠিতাঃ। তার্সামূপরি-তো বিষুবস্থো দিবার্করো যাতি। তাসু বিষুবদ্বাং। ধ্রুম্যোন্নতিক্ষ ন দৃশ্যতে। তত্ত্ব দিবামানং রাত্রিমানক্ষ ত্রিংশন্নাডিকাঃ। ইতি সূর্য্য সিদ্ধান্তম্বতং।।

নিরাকরণ শ্লী নিবারণ । নিরসন । ইতি নিরাকরিষ্ণু শন্দ টাকাযাণ ভরতঃ॥

निताकित्रकृः जि निताकत्रभौनः।
ज्राप्तायः। किन्नुः २। ইত্যमतः॥
निताकातः श्रुः भत्रप्रयतः। नृक्ता।
यथा! माकात्रक्ष निताकातः म्हणः
निर्छाः श्रुष्ट् । मर्वाथात्रक्ष मर्वकः
यहाक्षभः नमाम् १०।। अभिष्ठ ।
ठ्वाः स्कर्तभा जगवान निताकादा।
निताल्यः। निर्वाक्षा निर्छाः माकी
साजातामः भताष्ट्रभा शास्त्रायस्थि
यागिन एक स्निय मन्ति तिर्णः।
देक्यारेण्यं माकातः कमनीयः मताङ्तः ॥ किष्टि ज्ञूकः नाङः
निर्वाकारः मताङ्गः। निर्वाकारः मान्नः
निर्वाकारः मताङ्गः। निर्वकारः मान्नः
निर्वकारः । किष्ट ज्ञूकः नाङः
निर्वाकारः मताङ्गः। निर्वकारः मताः । विञ्चका
कमनीयकः किरनातः निराममून्तः।

শান্ত গোপাঙ্গনা কান্ত রব্ন ভূষণ ভূষিত।।। এবং তেজস্বিনং ভক্ত্যা সেবন্তে সতত মুদা । ধ্যায়ম্ভিযোগি-নো যুত্ত হত স্তেজস্বিন বিনা॥ অ-পিচ। যো •ির্গুণঃ স নির্লিপ্তঃ **শক্তি**-ভেগ নহি সংযুতঃ। সিস্কু রাশ্রিতঃ শক্তো নির্ন্তনঃ সম্রণো ভবেৎ ॥ যা-বন্তি চ শরীরাণি ভোগার্হাণি মহা-মুনে। প্রাকৃতানি চ সর্বাণি ত্রীকৃষ বিগুহ॰ বিনা।। ধ্যাযম্ভে যোগিন শুঞ্চ শুক্ত জ্যোতিঃ স্বক্লিণ্। ই স্ত পাদা-দি রহিত । নির্ত্তণ পুক্তেইপর ।।। বৈঞ্চবা স্ত: ন মন্যন্তে তক্তকী সূক্ষ দশিনঃ। সতাে বভূব তভ্রেগতি র-হো তেজস্বিনং বিনীয় জ্যোতি রভ্য-ন্তরে নিত্যু শরীর भग्रमসুন্দর । অতীবামূল্য সদুত্র ভূষণেন বিভূষি-ত ৷৷ এব তক্তাশ্চ ধ্যায়ন্তে শশ্বদু রণ সেবিনঃ। যোগিনে। যোগকপ্ৰ কালে ভক্তি বিসাকতঃ। জ্যোতি রভ্যন্তরে মূর্ত্তিণ পশ্যন্তি কৃপয়া পু-ভোঃ॥ ইতি বুন্ধীবৈবর্ত্তে গণপতি খ-(७०६। ११ ८२ व्यक्तायः॥ 🕸॥ उन्त षिठञ्जातिः नामानानि यथा। जगान्यानि রযোনি স্তু মনস্তো ২ব্যয় এবচারের তিঃ ম্বৰূপো হ্যান্যঃ স্থান্ महान् ॥ ভकानूरवाषाद्

নিরাবা

नित्राकाद्वा नित्रकृषः । नित्रं रहा
निथ्नाथादा निःश्वाका निक्शपुतः
।। निक्शाधिण निर्नाक्षा निर्नादा
निथ्नाखकः। बाजातामः शृनकादम
स्नित्यया निज्य अवह ।। यहामयः
मर्वरक्षः मर्वछनाश्वयः। मूथरा पूःथरना पूर्णा पूर्व्वनाखक अवह
।। मूज्या पूर्वरा वाणी पूर्वाताक्ष्य।
पूर्वज्यः। य्वर्रक्ष्यम् य्वनाक्ष्य।
पूर्वज्यः। य्वर्रक्ष्यम् यः शर्रेष्ट्र
। पृष्टं जिक्षः स्दर्भारम् वः शर्रेष्ट्र
। पृष्टं जिक्षः य्वः ।। इजि वृक्षयेव्यः
श्विक्षः व्यः ।। इजि वृक्षयेव्यः
श्वाकात्रश्वः वि।।

নিরাকৃতঃ ত্রি পুত্যাখ্যাতঃ। নিরস্তঃ । ইত্যমরঃ।।

नित्राक्िः की नित्रमनः। नित्राकतः। । ইত্যমतः॥ অनःकात्त অস্বাধ্যা-यह। वि। ইতি নেদিনী॥

নিরাচারঃ ত্রি অনচোরঃ। আচারশ্ন্যঃ
নিরাচারঃ ত্রি অনচোরঃ। আচারে যস্ত সং॥
নিরাতপা জ্রী রাত্রিঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥ আতপশ্নেত ত্রি॥
নিরাবাধঃ ত্রি পক্ষা ভাসবিশেষঃ।
ক্রীয় অপুসিদ্ধা নিরাবাধা নিরর্থা

्रिक्टिएगिंडन । अमाध्य वा विकास भ

নিরাহা

বা পক্ষাভাসং বিবৰ্জবৈ । নিরাং বাধং অমদ্গৃহ পুদীপ পুকালে-নাযং স্বগৃহে ব্যবহরতি। ইতি মি-তাক্ষরা।

नित्राभयः नि त्रागत्रहिनः। छ

পर्यप्रायः। वार्तः २ कन्यः १। इन्छ

भतः॥ नीक्षः ८ পहुः ६ উन्नायः ५

नयः १ व्यापः ৮ नित्राज्यः २।

जनाज्यः भि भाठेः। इन्छि तान्न

निर्यक्तः॥

নিরাম্যঃ পু• ইডিকুঃ। বনছগলঃ। ইতি মেদিনী॥ শূকরঃ। ইতি শব্দ-মালা॥

নিরামালুঃ পু॰ কপিত্থঃ। ইতি শব-চন্দুকা।।

নিরালয়া প্রী আকাশনা পী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

নিরাশঃ ত্রি আশাশ্ন্যঃ ৷ যথা ৷
ভূতাহে যে পুসর্বন্তি উল্ল: গুছ মচেতসঃ ৷ নিরাশাঃ পিতরো যান্তি
শাপ দত্বা সুদাৰণ ৷৷ ইতি তিথিতত্ত্বণ ৷৷

নিরাসন• শ্লী নিরসন•। ইতি নিরাজ্-পূর্বাসধাতো রনট্ পুত্যুব নিষ্ণন্ধ• ।। আসনাভাবক্ষ ।।

নিরাহারঃ ত্রি আহারর হিতঃ যথা। নিরাহারাক্ষ যে জীবাঃ পাপে যর্মে नित्रीकि

রতাশ্চ যে। ইনি তর্পণ পুকরণী-।

যাহিকাচার ধৃত বচনং।।

নিরিকিণী জী তিরস্করিণী। তৎ
পর্য্যায়ঃ। অবশুন্তিকা ২ পটি। ৩

যবনিকা ৪। ইতি ক্রিক্যুন্তশেষঃ।।

নিরিন্ধিঃ ক্রি ইন্দিয়শ্ন্যঃ। যথা।

অনংশৌ ক্লীব পতিতো জাত্যন্ধ বিব্রো তথা। উন্মন্ত জড ম্কাশ্চ
যেচ কেচিন্নিরিন্দিয়াঃ। ইত্যাদি
দাযভাগঃ।।

নিরীশণ ক্লী কালঃ। ইত্যমরঃ।।

ইশশ্নের নান্তিকে চ ত্রি।।

নিরীষণ ক্লী নির্রীশণ। ইত্যমর টীকা

যাণ ভরতঃ।।

নিরীক্ত পূর্ণ বিশ্বং। যথা। নিৰূপাথিশ্চ নির্নিপ্তো নিরীফো নিধনান্তকঃ। ইতি বুস্বাবৈবর্তে প্রক্রুক্তরম
থণ্ডে চলারিংশক্ষাম কথনে ও অধ্যাবং॥ ইহাশুনের ক্রি। নথা। নি
রীহস্য ত্ণশন্পঃ। ইল্যুডেটঃ।।
নিরীক্ষণশ্লী দর্শনশাযথা। দুবাত্তথাকালিশিসেবিভান্ন বিন্যুক্ত্যাভক্রম
নিশ্বান্ন। বাশ্বে বিকারান্ ভ্রমন্তি
দোবাঃ। ইতি মাধ্বকরঃ।
নিরীক্ষিতং বি অবলোধিতং। যথা।
নিরীক্ষিতং হাল্প ম্বীক্ষিত্ত দুশান্ন

নিৰুপ

পিবন্তী রভসেন তস্য। সমান মা-নন্দ নিয়• দধানা বিবেদ ভেদ• ন বিদর্ভ সুভ্রঃ॥ ইতি নৈষধঃ॥

निक्कः क्री (वराक्षणाञ्चवित्णवः।
यथा। णिका कत्त्रा वराक्रतः निककः ज्ञाि विषयः। इन्स्रण्डि
विषयः। इन्स्रणाञ्च वर्णा विष्टः॥
इठि भवत्रज्ञावणी।। वर्णागत्मा वर्णः
विशर्यर्थण इंडराहिना निक्रविनाः
कः निक्कः। इंडर्म्स निकायाः
छत्रज्ञा श्रम् छङ्गनः। यथा। श्रुखाः
वेख श्रुक्तराः निक्कः श्रम् छन्नः।
इंडि (इमहन्द्रः।। कथिए किः।
यथा। निक्का श्रम्हिं (र्ष्या। इंडि
क्राहीणः।।

निक्षक वि मः क्षः। (तां धिर्मिष्ठः।
इं जिन क्षं मक होकायाः ज्यञः
निक्ष्यागः वि निक्र गः। উष्पाणाः
जाव विभिष्ठः। निर्माण रेष्पाणाः
यस्तु वि वस्तु दि नमामं निम्न मः।
निक्ष्य वि उे शाउत हिनः।
निक्ष्य वे वि उे शाउत हिनः।
निक्ष्य वे वि उे शाउत हिनः।
निक्ष्य वे । (मोन प्रमिष्ठ जे वि वृत्ति।
विक्र स्वरं मुं से यादा। इं वि (क्ष प्रमिष्ठः)।
विक्र स्वरं मुं से यादा। इं वि (क्ष प्रमिष्ठः)।
विक्र स्वरं मुं से यादा। इं वि (क्ष प्रमिष्ठः)।

নিষ্ণানঃ ত্রি উপন্যরহিতঃ বিদ্ধান বিশ্বাস

निक् নিৰপুৰা তত্তাপি নাচাপুৰীত্যাদি शुद्धाक्रास्यः॥ নিৰুপেক্ষঃ ত্ৰি অনুপেক্ষঃ।উপেক্ষা-भूनाः। नाछि उलायन यमा मः॥ নিৰ্ভঃ পু॰ নিৰ্ভ লক্ষণাকঃশবঃ ৷ यथा। शृहिवानि नम्नवाशीन छ८ স্বামু/পরনে খত্র দুব্যে স্বত্ত্ব **তত্র নি**-कारा माय भक्तः। ইতি मायञागः॥ निकारणका जी मुक्तिवृष्टा का। यथा। নিক্ত লক্ষণাঃ কান্দিৎ কা-শ্চিমৈব্ত্বশক্তিতঃ। ইতি কাব্য शुकाम विकाश गरहरहः॥ निक्रा दी वक्षाविष्यः। यथा। · কাচিৎ লক্ষতাবছেদ*ীভূত* ত্ৰন্ত मुर्भि शृह शृहे शुक्रायक वाट नि कारा । यथा जासनग्रामि दुदारवन जराणुन पुरान् जातकदामकरामि পদস্যাইতি শদশক্তিপুকাশিকা निक्शनः की ज्यान्याकः॥ विठातः॥ নিদর্শন । ইতি নেদিনী ।।

নিৰ্কাপড়ঃ ত্ৰি কৃত্ৰিৰ্পণঃ॥ নি-যুক্তঃ। ইতি জীধরস্বানী ॥ रथा। নিৰূপিতো বালক এব যোগিনা॰ ্সুশ্ৰুষণে পুাবৃষি নিৰ্বিবিক্ষতা ৷ ইতি শ্রীভাগবতে ১ ক্ষন্ধে ৫ **অধ্যা**যঃ ॥ ्निकरः भू॰ वंखिएं हमः। यथा। विख , বিধানুবাসাথেয়া নিজ্**হশ্চেতি স**•-

क्टिनः। यः तुर्देनी ग्रंज म न्तरा-ल्यूदाम्य नामकः। क्याय कीत रेजेंब र्या निकश्ः म नियम् एउ ॥ इंडि माद्रकोगूनी ॥ छेरुमृत्रः॥ निक्छः। इंजि मिष्नी ॥ निगुरः য়া তর্কঃ। ইতি হেমচন্দুঃ ॥

নিরোধঃ পু॰ নাশঃ॥রোধঃ।ইতি নেদিনী।। নিশুহঃ। ইতি হেনচন্দুঃ নিরোদ্ধব্য ত্রি রক্ষণীয়া ইতি সহাভারতে রাজধর্মঃ ॥

নির্মতিঃ দ্রী অলক্ষীঃ।ইত্যনরঃ। অস্যা উপাখ্যান যথা। সমুদু ন-থনামানি রহান্যাপুঃ সুরোত্তমাঃ। শুেধক কৌত্তভ তেমু বিষয়ে পু-मनुः भूताः ॥ या सम्भी हकातासी অক্সী ভার্য্যর্থ মাক্সনঃ ৷ তাবদ্ধি-জ্ঞাপযামাস লক্ষ্মী স্ত চক্রপাণি-ন· ৷৷ লক্ষীৰুবাচ৷ অস·ফৃত্যু ৰুথ**·** জ্যেষ্ঠা॰ কনিষ্ঠা পরিণীয়তে ৷ তমা-অসাগুজামেতামলন্দী সধুসূদন॥ বিবাহ্যোদ্বহ মাণ পশ্চাদেষ থৰ্মঃ সন্তনঃ। তস্মাজ্বর্ম ব্যতিকাম্ণ ন পৰ্য্যা নধুসূদন।। সূত্উবাচ। ইতি তদ্বচন•শুত্ত্বাস বিষ্ণুর্লোক ভাবনঃ। উ**দাল**কায**মুনযে সুদীর্ঘ তপসে ত**-দা।৷আগুৰাক্যানুরোধেনভামল-श्री शाम किन। भूता ही भूद्यर- পাংবিৰূপা বিজুতী জনু ॥ সুরদা ব্ৰক্ত নৰ্না ক্ৰম পিক শিরোক্তা • ৷ স মুনি বিশ্বাক্যান্তা সঙ্গীকৃত্য अभागुरशायमध्नि मनायुका नान यामाम धर्माविट। एकामधूल मुनका-**ভ্যু বেদধ্যেষেণ নাদিত ৷৷ আশুন** ত বিলো দ্যাথ ব্যথিতা সা বুৰীদি-দ । জ্যেষ্টোবাচ। নহি বাসোনুধাপা <del>ং</del>য• বেদধুনি যুতো মন ৷ নাতাপমি-ব্যে ভো বৃন্ধন্ নযন্থান্যত্র মাণ থবণ ।। उपराण ह उवाह । कथः नायात्रि কিঞ্চাত্র বর্ত্ততে স্বনত• তব । তব বোগ্যাচবসতিঃকাভবেত্তবদশ্বনা ।। জ্যেষ্ঠাবাচ। বেদগ্রনি ভবেদ্দি भिज्योनाकः भूबंनः।यद्धः मानां मिकः যত্র নৈব তত্র বসাম ছে। পরস্পারানু-রাগেন দাস্পত্যু যত্র বিদ্যুতে ॥ পিঠ্দেবাৰ্চন যত্ৰ তত্ৰ নৈব বসাম্য হু । দানশৌচে ন বিদ্যেত পরদু-ব্যাপহারিণঃ ॥ পরদাররতা যত্র তত্র স্থানে রতি মান। বৃদ্ধ সক্তন বি-প্রাণাণ যত্র স্যাদপ্রমানন ।। নিধুরণ ভাষণ যত্ৰ তত্ৰ সম্যুসাম্যছ । সূত উবাচ। ইতি তচদ্বন শুত্ৰা বি-সন্ন বদনো ভবৎ।। উদ্দালক স্ততো " বাক্য ভামলন্দ্রী মুবাচহ। উদ্দালক উবাচ। অশ্বথ বৃক্ষ মূলেমিমলনীঃ

লুমতা কাণ্ড কান্ড-হানসালো-का यावनायान। २ श्रुनः । मूज्येवाह ।ইতি তা॰ তত্ৰ সংস্থাপ্য লগানো-দালকো মুনিঃ। পুতীক্ষণী চির॰ . छ**ङ यर। छ॰ न परर्भ ज्ञा ॥ छन। य**-েরোদ করুণ ভর্স্ত্যাগেন দুঃখিতা। তত্তস্যাঃক্রনিতে লক্ষ্যবৈদ্যগ্রভ-বনে ংশৃণে ে ৷৷ তদা বিজ্ঞাপযাদা-न विकृ गृषिय भानना। वन्त्री कराह । यानियकियनी व्हा शामि छा-গেন দুঃথিতা। তামশ্যেক্যিতৃ• याहि क्लाला यम् १२ भिक्सा मृज উবাচ। লক্ষ্যা সহ ওত্যে বিকুত্ত ত্রাগাৎ কৃপয়ারিতঃ। জাপাস্বাস্বন্ধ-नन्ती जागिम वोका मथावृदी शा विकृषकार । ज्ञान्यक्क नामान्। সদাপ্ৰস্থী: স্থিরা ভবান্সাংশ স-ম্ভবে ছেষ আবাস ন্তেম্যাকৃতঃ॥ गन्तवादा निमान्न निकी त्रवागिन-ব্যতি। সম্পূদের ৎসৌভবেত্তস্থা-মন্দবার• বিনা কিল।। প্রত্যন্দ ম-র্ঘব্যম্ভিতা জ্যেষ্ঠা গৃহ ধর্মিণঃ। তেন্বিয•্ত্ৰীঃ কনিষ্ঠা তে সদা তিষ্ঠ-वनामया ॥ इठि. शास्त्राख्त्रथए ५७७ व्यस्तायः ॥

मिनि।। म जू रेन १ उ कागाबि-পতিঃ। তস্য বিবরণ যথা। পূর্ব-महास मुकासमह तकक्रीस्वाया गि-রিঃ। যত্রান্তে সতত দেবে। নির্মতী রাক্সেশ্বরঃ॥ খন্নহন্তো মহাকা-থে। বানে চর্মধর স্তথা। জটাজূট সমাযুক্তঃ প্রাণ্শু কৃষ্ণাচলোপনঃ ।। দ্বিভুজঃ কৃষ্ণৰন্ত্ৰন্ত গৰ্দভোপরি नः इंडः। शुाखाभादी विम्नुमर्ग महिल्जी वाहिए इव ह ।। देनर्सकुर **কথিত: ব্রীজংতেন ত\*প**রিপূজ**ে**ৎ । त्रक्रक्षे नमाक्ष्य निर्वाउ ता-ृक्करमञ्जदः ॥ यः शृक्षरयिषधाः नन b-ভিকা• রাক্ষসেশ্বরী•। ন তস্যারা ক্ষসেভেগুন্তি ভিষ্ বাপি কদাচন ৷৷ রাক্ষ**সাস্চ পিশা**চাস্চ বেতালা गगनायकाः। उ॰ मृष्ट्रा शुक्य आर न **সৰ্ব দৈ**ৰ পুবিভ্যতি ৷৷ ইতি কা-निकाशुत्रारा ৮) अश्रायः॥ নির্খাথঃ পু• সামবেদঃ। ইভূ,গাদি-নিৰ্গঃ পু॰ শেশঃ। ইতি হেমচন্দুঃ!! নিৰ্গতঃ ত্ৰি নিঃশেষেণগৃতঃ ! বহিঃ-शुष्टिः। यथाः। निगठः सुसङ्ख्ब স্তাইক্য সন্গছত। ইতি দেবীমা-. হাৰ্য্য ॥ निर्गञ्च कि गञ्जमूनरः। यथा। कश

যৌবন সম্পন্ন। বিশাল কল দ্ৰবাংশ বিদ্যাহীনা ন শোভন্তে নিৰ্গন্ধ ইব কিম্পুকাঃ ॥ ইতি চাণক্য ।। নিৰ্গন্ধনি লী নিপুছন । মারণ । ইত্যমন্ত্ৰীকাষা বামী॥ নিৰ্গন্ধপুল্লী ন্ত্ৰী শাল্যলিবৃক্ষঃ। ইতি শ্বতন্দ্ৰ ।।

निर्श्वाः भू॰ मद्द्रक्ष स्था । माकाइक नि-क्राकाद्र॰ मक्ष्यः । यथा । माकाइक नि-क्राकाद्र॰ मक्ष्यः निर्श्वा॰ भू जू॰। मर्बाः थाद्रक मर्द्रक्ष स्वहाक्ता॰ नमामाद्र॰ ॥ ইতি বৃদ্ধবৈবর্ত্তে গণেশথপ্তে ১০ অধ্যাयः ॥ গুণভূলির্ভ্রণো নহান। ইতি বিক্ষুসহসুনামচ ॥ বিদ্যাদি-শুনো ভি। यथा । সভ্রণো নির্ভ্রণা বাপি সহাযো বল বভরঃ । তুষে গাপি পরিভুই স্তর্গুলো নাম্কুরায়তে ॥ ইত্যু ভালা।

নিষ্ঠী ত্রী নিষ্ঠি। ইত্যার টীকা-যাণ মধুঃ।।

निर्श्व को नीन(मकानिका।। वृक्त-विरम्पः। निमिन्तः हिं छाषा। उद्शर्यप्रायः। मिन्तुकः २ मिन्तुका-तः ० हेन्दु मित्रकः ६ हेन्दु क्रिका ६। इंड्यातः॥ मिक्रुकः ७ मिक्रुवातः १ इंन्युमृत्रमः ৮ निर्श्वो २। इंडि छ-तुष्या हेन्द्राभी २०। इंडि माखः॥ ल्गोंत्वामी >> नकानी >२ का न-नान्धिनी >>। ইতি রত্নকোষঃ॥ क রহাটঃ। ইতি বিশ্বঃ॥

নিগ্তিঃ পুং বৃক্ককোটরং ছৈতি শব-রত্নাবলী।

निगुष्टः পूर नग्रकः॥ निष्ठः॥ वालिणः । ইতি দেনি ॥ মূনিঃ। ইতি হেম-চন্দুঃ।। দ্যুতকারঃ। ইতি জটাধরঃ ॥ गुष्टिर्ভानिर्गठः॥ निवृक्त इत्य পুছিঃ। যথা। আত্মারামাণ্ট মুন-যো নিশুস্থা অপ্যুক্জনে ৷ ইতি ভাগবত শ্লোক টীকাথা-স্বামী 🛚 🗎 निग् इकः श्र॰ कश्राः॥ निक्काः॥ অপরিহৃদঃ। ইতি মেদিনী।। নিগু ছন স্লী মারণ। ইত্যনরঃ॥ निगुष्टिकः शुः कश्वाः॥ निश्रा शैल्फ वि। इंडि भद्यक्षावनी।। निर्यष्ठि॰ क्री वस्मानुषमकी पर्षे ! इंजि हातावली ॥ कत्रम्नाइरें। इिं नम्बद्भावनी ॥ घटन्न् अ निर्विष्ठेः श्रु॰ निर्विष्ठेन । निविष्टुः। गरा मःगुरः। गृष्टानाः मृहीि थाताः। यथा। धनुखदीय महनाहि इलागुधा मीन विश्वभुकाम। भवकाव मामव রাজান। আলোক্যলোক বিদিতাণ শ্চ বিচিন্ত্য শবান্দ্বগ্রভিধান গ १**मः भुरू अय मृद्धेः ।। निर्द्धना ल**क्ष्ण পরীক্ষণ নির্ণযেন নানা বিধৌষধ বিচার পরায়ণো যং। সো হথীত্য যৎ সকল মেন মবৈতি সর্বণ তন্মা-দয়ণ জগতি ভাতি নিষ্ণুরাজঃ।। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

নির্যাতঃ পু॰ বায়ভিহতবায় পুপতন জন্য শব্দ বিশেষঃ। যথা। বায়ুনা-ভি হতে বাথৌ গগণার পতত্যধং। পুচও যোর নির্যোধো নির্ঘাত ইতি কথ্যতে ॥ ইতি শব্দনালা।। অ-পিচ। যদান্তরীক্ষে বল্বান্ মাক্-তো মক্তাহতঃ। পতত্যধং স নি-র্যাতো জায়তে বায়ু সম্ভবং॥ ইতি জ্যোতিষ॰॥

निर्धायः भू भयमाजः। इज्यातः॥ निर्द्धनः जि जनम्नाङ्गनामि। वि-जनः। ইতি विविकापि मय होका-याः भातमून्द्रती॥

निक्तंत्रः भू एतः । इठानतः ॥ बतात्रहित्व वि । इठि प्राप्ति ॥ । मूथायाः क्षी । इठि मदत्रवादनी ॥ निक्कंत्रमर्थभः भू एत्रमर्थभवृक्तः । इठि ताबनिर्धाः ॥

নির্দ্ধর। জী গুড়ুচী। তালপণী। ইতিনেদিনী।।

निक्छनः वि जनम्नग्रहनाहि। ইতি नक् मन होकायाः छत्रजः॥ यहुकेः া সম্পাপ্তা দশম ধুজাদ্য গতিনা সংস্কৃতি নির্জনে তুর্যদাদশ বদ্দি-তীয় মতিসমেকাদশাভন্তনী। সা ষষ্ঠা নৃপগঞ্চমন্য নবমভ্রঃ সপ্তনী বিজ্ঞিতা প্যাশ্লোত্যস্তম বেদনাং প্র-থমহে তস্যা স্তৃতীয়ো ভব য়া ইতি বল্লালসেনঃ ॥

নিজ্জিতঃ ত্রি পুগপ্তপরাজ্যঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। পরাজিতঃ ২ পরাভ্তঃ ১ বিজিতঃ ৪ জিতঃ ৫। ইতি শর্ম-রত্নায়লী॥ বশীক্তঃ। যথা। ধ্যা-যক্ত শরণাস্তোজ্ঞ ভাব নির্জিত চেত্রসা। ইতি শ্রিভাগবতে ১ ক্লম্কে

৬ অধ্যায টাকাযাণ স্বামী ॥ নিৰ্জ্জিতেন্দ্ৰিয়ণানঃ ত্ৰি যতিঃ। ইত্য-মরঃ॥

নিজী বিঃ ত্রি জীবাত্মর হিতঃ।। প্রাণিশ্ন্যঃ । যথা । চিতা চিন্তা দ্বে।
মধ্যে চিন্তা এব গরীযসী । চিতা
দহতি নিজী বি চিন্তা দহতি জীবিতং ।। ইতি প্রাঞ্চঃ ।।

নির্মরঃ পুশ পর্বতাবতীর্ণজলপুবাহঃ
ইতি ভরতঃ ৷৷ সুত্রা অন্যথা রা
গিরৌ জল পুবাহঃ ৷ ইতি মধুঃ ৷৷
পর্বতাদ্বেগেন পতজ্জল ঝোরা
ইতি খ্যাতশা ইতি কোরুটঃ ৷৷ তথ পর্য্যায়ঃ ৷ ঝরঃ ২ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ নি श्रिती श्रीहिक अपन्न त्र विश्वास्त । अथा दि । स्वास्त स्थाः । स्वयुद्धः । अथा दि । मीअनद्धः। किस्त ना शिद्धः । इंडि साझेनसस्य ॥ अर्था (चार्षेकः । । जूषानमः। इंडि (निमनी ।।

নির্মনী জী নির্মনঃ। ইতি শব্দপ্রা-বলী য় নদী । যথা । জটা কটাহ সম্ভূম ভুময়িলিস্পনির্মনী বিলো ল বীটি বল্পনী বিরাজমান মূর্জনি । ধগদ্ধগদ্ধগদ্ধলাটপত পা-বকে কিশোর চন্দু শেখরে রতিঃ পুতিক্ষণ মম ॥ ইতি রাবণকৃত শিব স্তোক্ত ॥

নিৰ্বারী পুশ পর্বতঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ॥

নির্বারিণী জী নদী।ইতিত্রিকাওশেষঃ
নির্বারণ পুশ অবধারণ । তৎ পর্য্যায়ঃ
। নিশ্চয়ঃ ২ । ইত্যমরঃ ॥ নির্বারণ ৩
নিচয়ঃ ৪ । ইতি শদ্মরত্নাবলী ॥
বিচারঃ 1 তৎ পর্য্যায়ঃ । তর্কঃ ২ গুজ্ঞা ০ চর্চা ৪ । ইতি ত্রিকাওশেষঃ ॥
বিরোধপরিহারঃ । ইতিমিতাক্ষরা ॥ অধিকরণবিশেষঃ । যথা ।
বিষয়ে বিষয়শৈচব প্র্পক্ষ স্তথোভর । নির্বাহশেতি পঞ্চাকণ
শাজে ২ধিকরণ স্ত ॥ ইতি স্থতি নীনাণসা ॥ ন্যায়মতে তদ্দ-

ভাবাপুকারকবে সতি তথ পুকারক জ্ঞান । যথা । বহি মান পর্যত
ইত্যাদি বোধঃ । ইতি ভাষাপরিছেদঃ৷৷ তদ্ধর্মানছিম পুকার হান্য পুকার হানিক্পিত পক্ষতাবছেদ-কাবছিম বিশেষ্যতাশালি জ্ঞান । ইতি জগদীশঃ ।৷

নির্ণয়ন ল্লী নির্ণয়ঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

নির্ণয়পাদঃ পু• চতুল্লাদব্রহ্যরান্ত-প্ত ব্যবহার বিশেষঃ। তস্য ৰূপ• । মিলিতানা• সভাসদা• পরাজি-তো ২য় মিত্যবধারণ•। ইতি ব্যব-হারতত্ত্ব•।।

निर्नायन॰ क्ली भाउक्राशाक्रास्मः। ंड० शर्यप्रायः। निर्याणः २। इंडि भक्तक्षावनी॥

নির্ণিক ত্রি অপনীতমল। শোধি-ত । ইত্যমরঃ॥

निर्गी उ॰ कि क्उनिर्गशः। निक्यी-क्उः। यथा। निर्गा कि व्यवहारंत जू भूमान मकन॰ जदर । निथिज॰ माकितावाणि भूर्व मार्दिकि॰ नि हिर्देश अवाः। निर्गा के व्यवहाः भूगत्या अनाः। निर्गा के व्यवहाः त्रामाः भूमान मकन जथा।। ইजि व्यवहात्रज्वः।। निर्लंबकः शू॰ ब्रह्मकः। ইউ, महः ॥
निर्लं हेः बि श्रद्धाश्वामवामब्रकः॥ मयाम्नाद्धाः छोतुः॥ मञ्जः॥ निष्कृर्याञ्चनः। ইতি भवत्रञ्जावनी॥
निर्लंबः बि म्याभूनदः। ইতি बहाध्वः
निर्लंबः क्षी निर्ञयः॥ मातः॥ कठितः
व्यश्वत्रश्व बि। ইতি मिम्नी॥
निर्लंदः शू॰ जन्नाजकः। ইতি ब्राजिन्
निर्यं हैः॥ व्यश्निम्न प्रम्ह ॥

निर्फरनी जी मूर्वाणा। ই उ द्रद्र-माला॥

निर्फिकः वि वनी। गा॰ गनः। ইতি रम्बद्धः।

নির্দিপ্ত: ত্রি নিশ্চিত্:। যথা। নির্দিপ্ত
বিষয় কিঞ্চিদুপান্ত বিষয়ন্তথা।
অপেক্ষিত ক্রিয়ক্ষিব ত্রিপাপাদান
নিষ্যতে॥ইতি রামতর্কবাগীশঃ॥
নির্দেশঃ পু আজ্ঞা।ইত্যমরঃ॥
কথন ॥উপান্তঃ।ইতি মেদিনী॥
নির্দোষ: ত্রি দোষরহিত:। যথা।
নির্দোষ দর্শযিত্বা তু সদোষ যঃ
পুষছতি। সম্ল্যাদ্বিভাগ দাপেরা
বিনয় ভাবদেব তু॥ইতি মিতা
করা॥

निर्धनः श्रु॰ कत्रम् तः। इंडि मक्टिन्मुका। धनम् त्रिऽ जि। यथा। तुक्कशिनि नद्रः श्रुका। यमा दिश्वनः धन्। নির্থাত। ইতি চাণক্য । রিভ্যতে। ইতি চাণক্য । নির্থমাঃ ত্রি ধর্মারহিতঃ। যথা। সহা-পরাধে নির্ধর্মে কৃতদ্বে ক্লীব কং-সিতে। নান্তিক ব্যাত্য দাসেষু কো-শপান কিবজ্জবিং ।। ইতি মিতা-ক্লরা।।

निर्धातः श्रू॰ निष्ठयः ॥ क्रांठि छन कियानामू कर्सनाशकर्सन वा म-काठीया श्रीक्रनः (मुश्रः॥ गवा॰क्-नूयाना॰ व्यक्षनः (मुश्रः॥ गवा॰क्-कावर्षकीताः॥ अथुगाना॰ धावछः भीष्ठमाः। ইতি हुर्गामामः॥ था द्वत्रहिज्यः॥

निर्धातन क्री निक्यः॥ निर्धातः। यथा। निर्धातन यष्ठ्राः समारमा न स्त्रा-मिलि पूर्शामासः॥

নির্ধারিত তি কৃতনিশ্যঃ। যঞ্চ। কিন্তুনির্ধারিতৈকত্বানেকত্ববিশেষ-স্য। ইতি বিজ্ঞারক্ষিতঃ।।

নির্ধার্য্য তি নির্ধারণীয় । নির্ধারিত্ব তব্য । নির্ভারকর্মকর্ত্তা। ইতি বিক্ষেষ্যনিম্নে নির্বার্য্য শব্দ টাকায়া ।
রুমানাথঃ ।।

নিধৃতি তি শুণ্ডিত । পরিত্যক্ত । যথা। নিত্য নিধৃত বুদ্ধি পুবল রিপু ভয় বিত্তনাশক্ষ জাবঃ। ইতি

জ্যোতিকৃত্ব ।।
নিধোতি ত্রি পুকালিত । যথা।
তস্যাঃ পাটল পাণিজাকিত মুরো
নিদা কবাবে দুশৌ নিধৌতো ২ধর
শোণিমা বিলুলিত সুত্তসুজো মূর্ভ
জাঃ। ইতি শ্রীজযদেবঃ ।।

নির্বন্ধঃ পু॰ অভিনিবেশঃ। নিবনো-পি পাঠঃ। ইতি হেনচন্দুঃ।। অ-ভিলসিত পুণপ্তৌ ভূবা যত্নঃ। যথা। । শিশুগুহঃ।। শিশুরা স্বেচা কিশে-যঃ। আথটি ইতি খ্যাতঃ। ইতি কেচিৎ। ইতি গুড় শদ টীকাযা। ভরতঃ।।

निर्वर्शः क्री निवर्दशः। गात्रशः इंडा-मत्रियाः नीजक्थः॥

নির্ভটঃ বি দৃটঃ।ইতি বিকাপ্তশেষঃ
নির্ভাঃ বি ভ্যরিষ্ট্রতঃ। তৎপর্য্যায়ঃ
। অজানেয়ঃ ২৷ইতি বিকাপ্তশেষঃ
নির্ভার॰ নী অতিশ্বঃ। তদতি বি।
ইত্যমরঃ।।

निर्देश्व निर्देश स्था श्रीकातः ॥ श्रीकातः ॥ श्रीकातः ॥ श्रीकातः ॥ श्रीकातः ॥ श्रीकातः ॥ निर्देश्व ज्ञीन श्रीकातः ॥ निर्देश्व श्रीकातः ॥ निर्देश श्रीकातः ॥ निर्व श्रीकातः ॥ निर्देश श्रीकातः ॥ निर्व श्रीकातः ॥ निर्देश श्रीकातः ॥ निर्देश श्रीकातः ॥ निर्देश श्

इंडंड्रगतः॥
निर्मातः श्रू॰ कालवना निर्मातः श्रू॰ कालवना निर्मातः २।
इंडिड्रगतः॥ मन्न्रात् वि॥
निर्मात्रा क्षी निर्मातः। ইতিভাব-

নির্মন্থান ক্রী অরণিঃ। যজ্ঞে অনু এথাপনার্থ বর্ধনীয় কাষ্ট্রণ ইত্যনরঃ।।

निर्यान ही निर्याना ॥ श्रुष्ट्रकः॥ श्रनशान जि। इजिस्मिनी ॥ निर्यानाभनः भू ग्रुष्टिकः। इजि प्राक्षनिर्यकः॥

নির্মাণ ক্লি নির্মিতিঃ !৷ সারঃ ॥ সমঞ্জসং। ইতি মেদিনী ॥

নির্মাল্য প্রী ধেবে ছিপ্তদুব্য । যথা। অর্থকে বিসজ্জনাদ্দুব্য নৈ বৈদ্য সর্থমুচ্যতে। বিসজ্জিতে জ-গল্ল থে নির্মাল্য ভবতি ক্ষণাৎ।। ইতি গক্ত পুরাণ ।। ক্লা। ত্স্য স্থাপন ক্ষেপঞ্জ যথা। ঐশান্যা নিতি। বৈশ্বে তু ওঁবিশ্বক্সেনায ননঃ। শক্তো তু ওঁশেষিকাথৈ নমঃ। লোবে ওঁচণ্ডেশ্বরায় নমঃ। সূর্ব্যে উল্লিখ্য প্রায় নমঃ। সূর্ব্যে উল্লিখ্য প্রায় নমঃ। ক্রিকাদৌ उँ प्रेहिट्रेहा खालिरेग्र नमः। उथाह विष्ठानगरनिवस्त्र। मूर्य्यः भगशञात् গ্ৰে শাক্তে শৈবে ২থ বৈষ্ণবে। তে জশ্ও নথোছিষ্ট সোজ মুছিষ্ট প্-ৰিকাণ। চাণ্ডালী পোষকা চণ্ড বিশ্বক্সেন• ক্রমাদ্মজে**ে।। সোজো** গ रामः॥ इपय व वहि प्वी अमर्ग्र विधिवख उः। निर्मान । १६ मू (हो (मान নৈবেদ্য ভক্ষযেৎ সুধীঃ॥ তন্ত্ৰান্ত-द्धि । निर्माला भारत निर्माला । **१ हान् (नशन । रेन**(वह) (क्षांशजुः ঞ্জীত দত্বা তম্ভক্ত শালিনে। ইতি **उद्यमा**तः॥ श। উদকে उक्मूल् वा নিৰ্মাল্য তত্ৰ সংত্যজে । ইতি কা\_ विकानुदारा **৫৫ অধ্য**য় ।। 🐞 ॥ निर्मान। काला रथा। मनि मुका मूर्वभागः (एवएखानि यानि ह। न নিৰ্মাল্য দাদশাদ তামুপাত্ৰ ত रेथव ह ॥ भही भाजी ह. यथा म रेन বেদ্যু দ্ব্রনাত্রতঃ। মোদক কুশার ধ্বৈব যামার্জেন মহেশ্বরি 🛭 পউবস্ত্র• विमामक य**क मृ**वंड्र है: मृज । यात-**দम॰ अ**तिमुक्क भारताम खरेश्वं ह।। ই-ত্যেকাদশীতত্ত্বে যোগিনীত স্থাাঞ্চা 'শিব নির্মালে (বিশেষো যথা। স্থা-ন্দে। নিৰ্মাল্য খোহিনে ভক্ত্যান্দি-রসা ধার্যিব্যতি। অশুচি ভিন্ন ন-

র্য্যাদো নরঃ পাপ সমন্বিজ্যা নরকে যতে। বুন্ধহাপি শুচি ভূঁত্বা নিৰ্মা ला पस भावत्य ।। जमा भाभः মহছীঘু॰ নাশ্যিষ্যে মহারুতে 1 শুচিঃ স্থানাদিনেতি শেষঃ ৷৷ এবঞ্চ স্পৃষ্টা ক্দুস্য নিৰ্মাল্য সবাসা ণ অশুচি বিষয়। অনুপনীত বি-ষ্য মিতি শ্ৰীদন্তঃ 11 বস্থাচ গৃষ্ট-পরিশিষ্টণ অগ্রাহ্যণ শিবনৈবেদ্যণ পত্ৰ পুত্ৰ ফল জল ৷ শাল্যাম শিলাম্পর্শাৎ সর্বণ যাতি পবিত্র কা ।। ইতি তিথিতকু ।। নির্মাল্যা দ্রী পৃষ্ণাইতিশন্ধরত্বা-वनी ॥

নিৰ্মিত তি কৃতনিৰ্মাণ। গঠিত। রচিত । যথা। নিজ নির্মিত কারি-কাবলী মৃতি সংক্ষিপ্ত চিরন্তনোক্তি-ভিঃ। বিশ্বধীকরবাণি কৌতুকাৎ ননু রাজীব দ্যা বশাস্থ্য: 1 ইতি निकाउगुकावनी ॥

নিমিতিঃ ক্রী নির্মাণে। গঠন । রচন । যথা। নিয়তি কৃত নিয়ম রহিতা। হ্লাদৈক নথী মনন্য পরতন্ত্রাণ। নঁব রস কচিরাণ নির্মিতি মাদধতী ভারতী কবে র্ক্নয়তি ॥ ইতি কাব্য

পুকাশঃ 11

পচ্যতে ঘোরে তির্য্যগ্যোনৌ চজা- "নিমুক্তঃ পুশু মুক্তকঞ্চুকঃ। অচিরাৎ ত্যক্ত ত্বক্ সর্পঃ। ইত্যমরঃ।। ভ্য-ক্ত সংযোগে ত্রি। ইতিমেদিনী ।। নিমুটি ক্লী করশূন্যহউঃ। তৎপর্য্যা-यः। পণ্যাজি**র**°২ কচ**ঙ্গ ন॰ ৩। ইতি** नम्त्रज्ञावनी विका अल्यायो ॥ আগ্নু তঃশুচি রিতি কালিকাপুরা নিন্ টিঃ পু॰ বৰম্পতিঃ। অপুস্লর্কঃ। ইতি ত্রিকাপ্তশেষ: 11 সূর্য্য: 11 শ্ব-পরঃ ইতি হারাবলী ॥ নির্মোকঃ পু° সর্গত্বক্। তৎ পর্য্যাযঃ1 অহিকোবঃ ২ নিশু যনী এ কঞ্চকঃ ৪ 1 ইতি হেমচন্দুঃ॥ মোচন ।। ত্যা-কাশঃ॥ সমাহঃ। ইতি মেদিনী॥ निर्यञ्चल जि व्यवाक्षानिवर्गनः। উ দূর্ব । ইতি ভটাধরঃ।। निर्यामः क्ली यजानाकामः॥ (याकः ।। অধ্নিৰ্গমঃ। ইতি মেদিনী। । নির্যাতন॰ ক্লী বৈরশুদ্ধিঃ।শত্রপুতী-कार्तः ॥ मानः। छत्रगः ॥ नत्रना-প্রণণ ন্যন্তদুব্যস্য সমর্পণ। ইত্য-মরঃ॥ 'ঋণাদিশুদ্ধিঃ। ইতি ভরতঃ ॥ মারণ । ইতি হেমচন্দুঃ ॥ নিৰ্যানঃ পু॰ পোতবাহঃ। ইতি হেম-ठन्पुः॥ निर्यामः भू॰ कषायः। शृषः। इंडि

नदमाला॥ व्कापिकीतः। आहे।

इंजि जाया। जथ्मर्यायः। (वश्वेकः २। इंजि तन्नगाया।

নিযু জিক জি যু জির হিত । যথা।
নহি জিয়া রহিত বাক্য মন্ত্রীতি
প্রাচা প্রাদে। নিযু জিকরাদশু
জেয়াইতি শব্দ জিপুকা শিকা।।
নিযু ষঃ পু নির্যাসঃ।ইতিশব্দ নালা।।
নিযু হঃ পু শেথর । আপীড ।।
ছার ।। নির্যাসঃ। ছাথর সঃ।। নাগ্দ ভার আবলম্বনার্থ গেহাদি ভিত্তি
নির্গত কাষ্ঠ ছয় । ইত্যমর মেদিনীকরৌ।।

নির্লক্ষণঃ ত্রি লক্ষণহীনঃ। তৎপ র্য্যাযঃ। পাণ্ডুরপৃষ্ঠঃ ২। ইতি হেম-চন্দুঃ।।

निर्निष्ठः शृ॰ ञिकृष्टः। यथा। निकशाधिक निर्निस्छ। निज्ञी हि। निधनाष्ठेकः। ইতি বुक्तदिवर्द्ध ञिकृष्ट जग्रथण्ड १ व्यथ्यायः॥ त्नुश्रहতে ত্রি॥

নির্লেপঃ ত্রি লেপশ্ন্যঃ ৷ আসঙ্ক-রহিতঃ ৷ যথা ৷ নির্লেপঃ জ্বনগু
লোম্গদৃশা হারাবলী নির্গুণানেত্রাস্থ্যেক্ছ মঞ্জনেন রহিত নীরা - ,
গ মোধাধর ৷ ইত্যানন্দ্রম্পু গুম্থে
বিশ্বতি স্তবকঃ ৷৷ পাপশ্ন্যঃ ৷ যথা
৷ লোক বেদ বিক্ষৈ রিপি নির্লেপঃ

নিবঁচন লী নিক্জিঃ। নিশ্চযকথন। যথা। নাম নির্বাচন তস্য শ্লোক মেক সুরা জন্তঃ। ইতি শ্রীভাগব-তীয় নব্যক্ষরঃ।।

নির্বাণ ক্লী অন্তগম্ন । নির্বি ডিঃ।।
গজনজ্জন ।। সঙ্গমঃ।। অপবর্গঃ।
ইতি মেদিনী ।। বিশাস্তিঃ। ইডি
হেনচন্দুঃ ।। নিশ্চল ।। শ্ন্ত ।।

বিদ্যোপদেশন । ইতি শব্রত্না বলী ৷৷ নাভিদেশে জপ্য পুণব পু-টিত মাত্কা পুটিত মূলমন্ত্ৰ। যথা । अल्लुका॰ मृष्त्रि अ॰ जन। इति (अजू॰ विविद्याप्त। महारमञ्जू विमुख्य यू **रवाउणात अगुष**त्त्र ॥ गणिशूत ष्ठ्र निर्वाणः भशास्य अनिनी नयः ॥ স্বাধিষ্ঠানে কানবীজ রাকিণী মূ-किं मिंड उ॰। विविद्य विविद्य वि মূলাধারান্তিকাছিবে ॥ বিশুদ্ধান্ত॰ ্**শব্দেবি বিশ**তস্ক তনীয়সী°।দে-বীস্থান দিলিস্থান্ত মন্ত্ৰসূলাবৃত • मूरः॥ निर्वाण यथा। यथ वक्तानि নির্বাণ শৃণু সাবহিতানছে। পুণব **ঞ্ৰমু** ছাৰ্য্য মাতৃকাদ্য সমু ছৱে থা মাতৃকার্ণা॰ সমস্তাঞ্চ পুনঃ পুণব মুছরে । এব পুটিত মূলন্ত পুজ-পেমাণিপূরকে।।এব নির্বাণ দীশা-নিথোন জানাতি পামরঃ। কল্পকো-**টি সহসেু**যু তস্য সিদ্ধি ৰ্জায়তে।। ইত্যাগ্মতুভূবিল।সঃ।। निर्दानः वि मुकः। य्या। निर्दारा

न्धानः । व भूकः। यथा। निर्वारा। विद्धः
।। निर्वाः। यथा। निर्वारा। रखी।
देखि विर्ण्यं। निर्दारा। यभावः। वानस्नुम्ह ॥

নিষাতঃ তি বাযুরহিতঃ। ইত্যমরঃ॥

গতেবাথৌ পু॰ ॥

নির্বাদঃ পু॰ পরীবাদঃ। জনবাদঃ।

ইত্যমরঃ॥ অবজ্ঞা॥ নিশ্চিতবাদঃ
॥ বাদাভাবঃ। ইতি ভরতঃ॥

নির্বাপঃ পু॰ নিবাপঃ। পুেতভিন্ন মৃত
পিত্রদেশ্যক দানং। ইত্যমরটীকাষা তর্কবাগীশঃ॥

নির্বাপণ ক্লী বধঃ। ইত্যমরঃ॥ দার্মণ

। ইতি হলাযুধঃ ।।

निर्वार्यः वि সত্তসম্পদা সম্পতন

कार्य्यकर्त्तः । ইত্যমরঃ ।। ভ্যাবক্রম

व्यमनाভূয়বোদৌ নির্বিকারণ দনঃ

সত্ত্বং সম্পদা সম্পতন উদ্যমণ

কর্বন্ যো নিঃশক্ষো ভূত্বা কর্ম স্ব
কতে স নির্বার্থ্য উচ্যতে । ইতি ভ্রাক্রঃ ।। অবারণীয়শ্চ।।

निर्वामन क्री तथः। इठामतः॥
नगतापर्वश्चित्रत्रगण्डेिज्यंपिनी॥
निर्वादः श्रु निम्नितः। ममाधिः।
ग्रथा। यिज्ञा कर्मानिर्वाद्धः महाय
जादनाना जियानुभूदिमामुभवा
माम्राहद्रगकः। इंजि जिथिजकः॥
स्रीक्र्याखादम्थितः। जाधिकः
स्रीक्र्याखादम्थितः। जाधिकः
नृत्रजायाकः हारदं भन्नमार्थजः॥
इंजि जिक्नद्रमाम्जिम्सो नान्निय
भूतानः॥

নির্বাহণ ক্লী নির্বহণ । নাট্যেকৌ পুস্ততকথাসমাপ্তিঃ । ইত্যনরটী কাথা ভরতঃ ॥

निर्विकन्नक नी भुकात जाविरणेय जा नाभम सम्मानवंशा खं जीन्तु यखा । न । यथा । जल्भुमानाभुमानाभि ज्ञान यमिर्विकन्नक । भुकात जामि मृत्य श्रिक्त सम्मानवंशा दिल् ।। दे जि । ज्ञान समिर्विकन्ना था जिन् जीन्तिय मिया । दे जिन्न जामा-भति हिन्दे ।।

নির্বিকল্পকসমাধিঃ পু॰ জ্ঞাতৃজ্ঞানা- ।
দিভেদ লযে অদ্বিতীয় বস্তুনি তদাকারাকারিতাযা বুদ্ধিবৃত্তে রতিতরা মেকীভাবেনাবস্থান• । ইতি
বেদান্তসারঃ ।।

निर्विकातः जि. विकातम्न १: । यथा। तामः विश्वि পतः वृष्य महिमानमः-मवयः । जामनः निर्यातः भाउः निर्विकातः नित्रक्षनः ॥ ইত্যুধ্যাञ्च-तामायः ॥

নির্বিদ্ধ্যা স্ত্রী বিদ্ধ্যপর্যতনিঃ স্ত্রনদী বিশেষঃ। ইতি শ্রীভাগবতে ৫ স্ক-দ্ধে ১৯ অধ্যায়ঃ।।

নির্বিদঃ ত্রি নির্বিভিবিশিষ্টঃ। নির্বেদ যুক্তঃ। যথা। বদূর্যা নৎ কথা-দৌ জাত শুদ্ধস্ত বঃ পুনান্। ন নি- বিন্নো নাতিসক্তো ভক্তি যোগো হস্য সিদ্দিদঃ il ইতি ভক্তিরসামৃ-তসিষুঃ il

নির্বিষ জী তৃণবিশেষঃ। নির্বিষী ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। অপ-বিষাং নির্বিষী ৩ বিষহা ৪ বিষা-পহা ৫ বিষহন্ত্রী ৬ বিষাভাবা ৭ অবিষা ৮ বিষবৈরিণী ৯। অস্যা গুণাঃ। কটুত্বং। শীতত্বং। কফ বাতাসু দোষ নাশিত্বং। অনেক বিষহস্ত্বং। বুণ নির্ভ্ কারিত্বক । ইতি রাজনির্থা।

নিখিষ্টঃ ত্রি কৃতনির্দেশঃ।। পুরাপ্তঃ।

হথা । যত্র নিথিত্ত নরণ ক্তান্তো
নাতিনন্যতোইতি শ্রীভাগবত ।।
ছিতঃ। যথা । স্বনির্মাতে মু নির্বিষ্টো ভুছকে ভূতে মু ত্য়ুগান । ইতি
ভাগবতীয় ১ ক্ষমে ২ অধ্যায়ঃ।।
বিবাহিতঃ।। ক্তাণ্নিহোত্রঃ। যথা
জ্যেষ্ঠেহনির্বিষ্টেকনীয়ান নির্বিশন্
পরিবেতা ভবতি।ইত্যুদ্বাহতত্ত্বং।।
নির্বিজ্ঞা ব্রী কাকলী দ্বাক্ষা। ইতি

নির্বাজা জী কাকলী দাকা। ইতি রাজনির্ঘণ্টপা।

নিশ্বীর জি বীরশূন্য । যথা। না কৃষ্ট নচ টক্ষিত : ন নমিত নোত্থা-পিত স্থানতঃ কেনাপীদমহো ম-স্কুনুরীতো নিশ্বীর মুখী তলা ।

ইতি মহানাটক ॥ निहीं ता खी अवीता। পতिপু ध বিহীনা। ইতি হেনচন্দুঃ॥ নিব্ভিঃ জ্রী সুস্থিতিঃ॥ অন্তঙ্গন-॥ সুথ । ইতি गिषिनी ।। भाकः ॥ মৃত্যুঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।। নিবৃ ভিঃ তি নিষ্কনঃ। ইত্যমরঃ॥ निवृक्तिः खी निञ्चामः। তথাচ। यथा দুষ্টেন দোষেণ যথা চানু বিসর্পতা 🖔 । निवृं खि जामयम् ऽ। स्मृं खि র্জাতি রাগতিঃ!! ইতি মাধ্বকরঃ ॥ বৃত্তিরহিতে ত্রি॥ নির্বেদঃ পু॰ স্বাবমানন । ইতি হেম-**চন্দু:।। সতু ত্র্যক্তি•শ**দ্যভিচারি " ভাবানামাদিমঃ৷ শান্তরসম্য স্থা-বিভাবশ্চ। যথা। নির্বেদ স্থাযি-ভাবোন্ডি শান্তোপি নবমো রসঃ। ইভি কাব্য**পুকাশঃ**॥ **তস্য লক্ষণ**ণ यथा। जबुक्काना अभीय प्राप्त निर्दिनः श्रावमानमः॥ जनूनाइश्रगः। यथा।

মৃৎপি ও বালুকা রন্ধ্র, পিধান রচ-

नार्थिन। एकिगावर्ड मुखा २४ - इ-

ন্ত চূণী কৃতো নৰাং। ইতি সাহিত্য-

দর্শণণাপুরবৈরাগ্যণ। যথা। ততঃ

কেনাচিন্নিবেঁদানিরাকারাশ্রিতেনচ

। লোকতন্ত্রণ পরিত্যক্তণ দুঃখার্ভেন

ভূশ• ন্যা ৷৷ ইতি নোক্পৰ্যঃ ৷৷ বৈ- 🖟

রাগ্য । যথা । তদা পন্তাসি নিবেদং শ্বোতব্যস্য শ্রুতস্য চ । ইতি
শ্রিভগবদীতা ॥ বেদরহিতে ত্রি ॥
নির্বেশঃ পুণ ভৃতিঃ॥ ভোগঃ। ইত্যমরঃ ॥ ভৃতি বেত্রন ভোগঃ সুথণ
পালন মভ্যবহারো বা । ইতি ভরতঃ ॥ মূর্ছন । ইতি মেদিনী ॥
নির্পূর্ব বিশধাতু বিবাহার্থঃ ।
ইতি স্মৃতিঃ॥

নির্বেপ্টন• ক্লী নাডিচীর•। ইতি হারা-বলী।। বেপ্টনর হিতে ত্রি।।

নিব্যথন জী হিদু । ইত্যমরঃ ।।
ব্যথাভাবঃ ॥ নিশ্চযেনব্যথনঞ্চ ॥
নিব্যু চি ত্রি ত্যক্ত । ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ ॥ সমাপ্ত । যথা । অবদানস্ক
যৎ কর্মা নিব্যু চ মতিশোভন ।
ইতি জটাধরঃ ॥.

निर्द्रत की भवनारः। यथा। उन्र निर्द्रतानीनि मम्मात्त उन्र जार्गत । युधि छतः कात्रयिदा मुक्डं पृःश्वि-। उं २ जव ।। देखि मुक्कि जुः ॥ निःशासन इत्राक्ष ।।

নির্হারঃ পু॰ শল্যাদেকৎপাটন•।
ইতি ভরতঃ।। তৎপর্য্যায়ঃ। অভ্যবকর্ষণ•২।ইত্যম্বরঃ।। নল মুত্রাদি ত্যাগঃ। যথা। আহার নিহার,বিহার যোগাঃ সুসমৃতা ধর্ম

विमान् कार्या। इन्ताहिकन्नः। मारुः। यथा। यमि निर्द्यनिशुन् भूत्वानाकास्त्रानमः। ইनिम्निः। ।। यत्थक्षेतिनित्यामः। यथा। ने निर्मातः स्वातः ख्रियः स्युर्धः स्ट्रिया दल्मध्र-गाट्। स्रकामि ह वृन्नािक सम्र चन्नुं तमाद्धरा। ইन्नि समूः॥

নিহারী ত্রি নূর্গামিগদ্ধঃ।ইত্যমরঃ।।
নিহাদিঃ পুণ ধ্নিঃ।ইত্যমরঃ।।
নিল্যঃ পুণ গৃহণ।ইত্যমরঃ।।
নিল্পঃ পুণ দেবঃ।ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

নিলিম্পনিষ্ঠিরী স্ত্রী গঙ্গা। যথা। জটা-কটাই সমুমজুনন্নিলিম্পনিষ্ঠিরী। ইত্যাদি রাবণকৃত শিব স্তোত্র-॥ নিলিম্পা স্ত্রী স্ত্রীগবী। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ॥

নিলিম্পিকা স্ত্রী সৌরভেষী।ইতি । হেমচন্দুঃ॥

নিলীন জি নিঃশেষেণলীন । স্লাগণ 1 যথা। বনানি তোযানি চ নেত্রক-লৈঃ পুস্থৈঃ সরোজৈশ্চ নিলীনভূষৈঃ 1 পরস্পরা বিষ্যুষ্বন্তি লক্ষ্মী না-লোক্যাঞ্চকু রিবাদরেণ । ইতি, ভক্তিঃ ।।

निर्वशंन॰ क्षी शिव्युराष्ट्रणाउकत्तानः। इंजि नम्पत्रक्षावली।। নিবার

নিবরা স্ত্রী স্থারী। অবিবাহিতা। ইতি মিতাক্ষরা।। 🚜

নিবসতিঃ স্ত্রী গৃহ । ইতি শব্দ-রজাুব্লী।।

निवमथेः भू॰गुगमः। ইতি ह्महन्दुः॥ निवमन॰ क्ली गृहः। ইতি मदत्रज्ञावनी ॥ वज्रः। ইতি হলাगुधः॥

নিবহঃ পু• সমূহঃ। ইত্যমরঃ॥
সপ্তবায়ন্তর্গত বায়ু বিশেষঃ। যথা।
নিবহো যত্র বাতেশঃ কেষাঞ্চিন-

সুথপুদঃ ন পুচপ্তো নচ মৃদুঃ পুনাল দীচ পুভঞ্জনঃ ।। ইতি জ্যোতিষং ।। নিবাতঃ ত্রি. আশুযঃ । নিবাসঃ ১। অবাতঃ । বাতশুন্যঃ ।। শস্ত্রাভেদ্যাতে বিশ্বর্মা । শক্তিদ্যাতে যথ বর্মা কবচং । ইত্যমর্ভরতৌ ।।

নিবাতকবচঃ পু॰ দৈত্যবিশেষঃ।
স তু হিরণ্যকশিপোঃপৌত্রঃ স॰
স্থাদ পুত্রঃ। ইত্যশ্বিপুরাণঃ।।

निवाशः श्रेष्ट्र मृट्याप्त्र मांकमानः । তৎ পर्यतायः । পिতৃ मानः २ । ইত্য-मतः ॥ शिं क्ठर्भनः ७ । ইতি ছে-महन्तुः ॥ मान्मावः । यथा। यंठा. निवाशाञ्जनयः शिं कृनाः । ইতি ভंরতঃ ॥

নিবারঃ পু॰ নিরারণ•। ইতি নিপূর্ব বৃ ধাতো ভাবে ঘঞ পুত্যব নিম্নমঃ।)

निवृद्धि

নিবারণ দ্লী নিশ্চযেনবারণ। নিরা-করণ। মথা। যদাক্যতো ধর্ম ই-তীতর স্থিতো নমন্যতে তস্য নিবা-রণ জনঃ। ইতি শ্রীজাগবতীয পুথমস্কন্ধঃ।।

নিবারিতঃ ত্রি কৃতনিবারণঃ। যথা। নিবারিতা স্তেন মহীতলে হথিলে। নিরীতি ভাব• গমিতেতি বৃষ্টবঃ। ইতি নৈষধ•।।

निवामः भू॰ गृरु। ইতি एरगहमुः॥ ||
निवामी वि निवामविभिष्टः। निवा
मंकर्त्ता। यथा। তেতু कायत मन्निष्ठ
• एरवतः পতি क्ष्कला। धन्ताः का
नी नेभी जीत्त कान्यस्त निवामिनः
॥ ইতি काव्यामयः॥

নিবিড॰ ত্রি নিরবকাশ । তৎপর্য্যা-যঃ। নিরন্তর ও নিবিরীষ ও ধন ও সান্দু ৫ নীর্দ্ধ ৬ বছল ৭ দ্টে ৮ গাটে ৯ অবিরল ১০। ইতি হেন-চন্দু: ॥

निवित्रीयः वि निविष्ठः। ইতি জটাপরঃ

নিবিষ্ট তি নিবেশযুক্ত আবিষ্ট ।
পুবিষ্ট । যথা ডিডুগণ পরিবারো
নাযকোপো গ্রেধীনা মন্ত্রম্পারী
রঃ কান্তিযুক্তোপি চন্দুঃ । ভবতি
বিকলম্নি মঞ্জ পুলিও ভানোঃ
পরসদন নিবিষ্টঃ কো লযুন্ত ন

যাতি॥ ইত্যুক্তটঃ॥

নিবীত তি আছাদনবন্ত । উডনী ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। পার্ত হাকেপ্তলম্বিত্যজ্ঞসূত্রে স্লী। ইত্য-মরঃ॥ যথা। উপবীত ভবেন্নিত্য নিবীত কপ্তসজ্জন । ইতি কুর্ম-পুরাণ ॥

নিবীতী পুণনিবীতযুক্তঃ। কণ্ঠলমিটে
যক্তর্গ্রুবিশিষ্টঃ। যথা। কৃতোপবীতী দেবেভেগ নিবীতী চভবেক্ততঃ। মনুষ্যাণ স্তর্গর্যেক্তক্ত্য স্বামিপুপ্রান্ধীণ স্তথা।। ইত্যাহ্লিকতত্ত্বণ।।
নিবৃত্তণ ত্রি নিবীতণ। উডনী ইতি
ভাষা। ইত্যাহলীকাষাণ স্বামী।।
পরিবেষ্টিতণ। ইতি হেমচন্দ্রনা

নিবৃত্তঃ ত্রি নিবৃত্তিবিশিষ্টঃ । বিন্তঃ
। যথা ৷ নিবৃত্ত ত্রেষ্ঠ কপগীবমানাভবৌষধাছোত্র মনোভিরা মাৎ ৷
ক উত্তমশ্লোক গুণানুবাদাৎ পুমান্
বিরজ্যেত বিনা পশ্মাৎ ৷৷ ইতি
শ্রিভাগবতং ৷৷

নিবৃত্তাত্থা পু• বিষ্ণুঃ। যথা। অনি-বৃত্তী নিবৃত্তাত্থা। ইতি তস্যসহসু-নাম।।

নিবৃত্তিঃ জ্রী নিবৃত্তিঃ। অপুবৃত্তিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। উপরমঃ ২ বিরুতিঃ এ অপর্চিঃ ও উপরতিঃ আর্তিঃ काइंडि एकप्रमु: ।।

निर्दार की आर्दरन । दिखा शन्।

मन्तर्भा । यथा । भुद्रभः की उनः

दिखाः स्रद्रभः भागरमदन । व्यक्तः

दिखाः स्रद्रभः भागरमदन । व्यक्तः

विद्रभः स्रद्रभः भागरमदन । व्यक्तः

।। ইতি भुः भाभि छ। दिख्यो छ छि

भ्या निर्दार छ कु जिर्द्रम न । यथा ।

मया निर्दार छ कु जिर्द्रम न । यथा ।

मया निर्दार छ कि निर्द्रभ व्यक्त भूद्रभाभा ।

निर्द्रभः भुः दिन ग्रामः ॥ भिष्दि ।।

উष्वा इः। ইতি मिनी ॥ निर्द्रभनः

। ইতি শ্বর্ । वि

নিবেশন লী গৃহণ ইতি জটাধরঃ॥ ,, নগরণ ইতি হেমচন্দুঃ॥ পুবেশঃ। যথা। নিবেশনমস্য ব্যাহ্যতিভি হু ত্বেতি মৃতিঃ॥

নিবেশনীয় তি নিবেশনার্হঃ। যথা।
তৎ পুৰুষীয় সাধারণ্যাদি শরীরে
নিবেশনীয় ইতিনায় দোষঃ। ইতি
সব্যভিচারে গদাধরঃ।।

নিবেশ্যঃ ত্রি নিবেশনীয়: । যথা। পুতিৰন্ধকতায়া দিবেশ্যত্তাদিতি শক্ষ্যতে। ইতি বাধ ট্রীকায়া গদা-ধরঃ।

निषकः श्रु वनायकात् धः। यथा। वनायकात्राः निषात्रीत्राः को भूबावबनय । इंडि विकू भूता-ए १ व्याप १८ व्यक्तायः ॥

निम्मान की कर्मन ॥ मूदा । इंडि
कारिनी ॥

निमा की ताकिः। उर भर्यायः ।

ताकी २ तत्का कननी २ मज्ती १

गम्मा ५ का वि खाता ५ म्यामा १

याम्या ५ क्षाया २ जूकी २० व्होठी

१३ मठाकी २२ वाखवा २० प्रेया

१३ वामव्यी १६ जमा १५ निर्दे १४

१ इंडि विका अल्मयः ॥ व्यक्तिक्षा

नावि म्या मुद्देवतः ॥ इतिम्या मा-

क्रितिमा है जिसिनी ॥
निभाकतः श्रु॰ हन्दः। हेज्यतः॥
अकूषेः। हेजि भक्तकावनी ॥
निभागनः श्रु॰ क्राबित्रमृहः। उ९
शर्यायः। गणताज॰ २। हेजि हम-

निमाहतः श्रु॰ त्राक्रमः॥ मृगानः॥
लोहतः ॥ त्रश्रः। ইতি निमा।
हक्रवातः । ইতি मदत्रद्वावनी ॥
क्रुक्ष ইতি श्रत्र निः॥ ह्याद्रकः। ইতি
ताक्रिक्रिंश। क्रार्किहत्रभाव कि ॥
निमाहती जी अन्नो। ইতি भिर्मा।
भ क्रिक्ती नाम श्रक्तुवरः। ইতি
क्रिक्तिः ॥ त्राक्रमी । यथा। अन्निर्वि क्रिक्तिः ॥ त्राक्रमी ॥ त्राक्षितिः ।

হিতা নিহন্তি নিগমাগম সৃতি পু । নিশাপুষ্ণ প্লী উৎ পলং । ইতি রাজ-রাণ শাজোদিতা । ক্রিয়া তদ-रगा क्यान कार्रा द्वान । रक्षान ভূপত্রে ॥ ইতু্যক্তটঃ ॥

নিশাচর্ম ব্লী অন্ধকারঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ ।৷

নিশাজল ল্লী হিমণাইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ ৷৷

নিশাটঃ পু॰ পেচকঃ। ইতি হেনচন্দুঃ १। निमाहत्रक ॥

मिमार्किः शुः खशुनुः। ইতি রাজः ् निर्घण्डः ॥

নিশাটনঃ পু॰ পেচকঃ। ইতি হলা यूषः ॥ निनाठंत्रकः ॥

নিশাতঃ ত্রি শাণিতঃ৷ ইতি হেম-हिन्द्रः ॥

নিশাদঃ পু॰ নিষাদঃ। ইত্যমরটী-कायाः त्रमानाथः ॥ निमाज्क् छ ॥ নিশাদিঃ জী সন্ধা। ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ া

নিশান্ত ব্লী পৃহণ। ইওগুনরঃ॥ উদা ।। भारत बिं। हें कि स्मिनी ॥ নিশান্ধ। জ্ঞী, জতুকালতা। ইতি ताजनिर्यण्टः ॥ ताजात्कं वि ॥

निশाপতिः भू हमुः॥कभू तः। ইত্যমরঃ ॥

्रिम्धंकेशोः । व्यवस्थान न्गा अशी शहर अव विषा विभेख- निभावनः शु भिष्य विश्वन कर्इ है ধনু মকর রাশফঃ। ইতি জ্যোতিষ निमाजका जी मुक्षशूही। मुक्कश्या ইতি ভাষা। ইতি শবচন্দ্রিকা॥ নিশামশিঃ পুণ চন্দুঃ1ইতি ত্রিকাণ্ড-(শযঃ শ

> নিশানন লী দৰ্শন ।৷ আলোচন 1 ইতি নেদিনী ॥ শুরণণ। ইতি হেম-कन्दुः ॥

> নিশাম্গঃ পু• শ্গালঃ।ইতি শব্-बङ्गावनी ॥

> নিশারণ ্লী সারণ। ইত্যমরঃ ॥ त्रावियुष्तकः ॥ त्राविशासः शुः॥ নিশারত্ন: পু॰ চন্দুঃ। ইতিহেমচন্দুঃ॥ নিশাৰুকঃ পু॰ ৰূপকভেদঃ। যথা। দ্তঃ পৌতে। ২থ খচরে। বিভব ক-তুরকমঃ। নিশাৰুকঃ পুতিতালঃ কথিতাঃ সপ্ত ৰূপকাঃ ৷৷ 🕸 ৷৷ তস্য क्षक्र वर्षा। वयुष्ठन्तृ । खक्षक्तु তম্যাসতালকঃ স্তঃ। চতুর্বিশা-তি বুর্ণেস্ক রসে হাস্যে নিশাৰুকঃ ।। 🗣 ।। তালবিশেষ:। যথা। পু-বিশ্য নর্ত্তকো রঙ্ক বিকীর্য্য জসুমা-দিক । নিশাক্ষণে তালেনু কো-মল প্তামাচরে ।। ইতি সন্ধিত-

ं पानामतः॥ নিশাবনঃ পু॰ শণঃ। ইতি রাজনি-

ર્જેટ 11 मिनावृन्तः क्ली बाजियनः। वर्णतानाः। **ইতি শব**রত্বাবলী 🛚 ।

निणारविन शृ॰ अङ्गुष्ठः। ইতি एक ठमुः ॥ 😁

বিশাহসঃ পু॰ জমুদ৽।ইতি ত্ৰিকাও-শেষঃ ॥

নির্শাস্থা জী হরিদু।।ইত্যনর:॥ নিশিত শ্লী লৌহণ ইতিরাজনির্বণ্টঃ নিশিতঃ পু॰ শাণিতঃ। ইত্যমরঃ॥ নিশিপুয়া ত্রী শেফালিকা। ইতি॥

ত্রিকাপ্তশেষঃ॥

নিশিপুষ্পিকা দ্রী শেফালিকা।ইতি • भद्रज्ञावनी ॥

নিশিপুন্নী জ্রী শেকালিকা। নিশি রাত্রো বিকশিত পুষ্ণ মস্যা ইতি वु ८ शब्दा मध्यमालाभः मध्यम অলুক্চ ততো জাতেরতইতিইপ্ निनीयः भु वर्षतावः। ইত্যমतः॥ রাত্রিমাত্র•। ইতি মেদিনী।।

निणीयिनी जी दाविः। ইত্যমदः॥ निमीथिनीनाथः अर्॰ हन्द्रः। ইতি ्रह्नायूधः ॥

নিশাপ্য স্ত্রী রাকিঃ। ইতি ভূরি 🦿 পুযোগঃ॥

मिणु भुः वदः। इंडि एगरु मुः॥ मानवितिमयः। यथा। कमार्शिमा मनु नीम ভार्यामी पिन्न मखग। ज-म्। ख हो म्ञवाखाः मर्माकाः দক্ষিকৌ॥ জ্যে হা কুন্ত ইতিখ্যা-তো নিশুদ্ভিশ্চাপরাসুরঃ। তৃতীর্যো मगू ि नाम । भश्वन नम्बि छः ॥ ইতি বামনপুরাণে ৫২ অধ্যাयः।। निশুस्त्रन क्ली मात्र ११ इंटि इलायू ४ क्षा निम्खनिनी जी मूर्ग। हिंजिए समहन्तुः निषु सुभुसम्थनी खी मूर्गा र रथा। निमुख मुख्यमथनी पिती (वरम यु १) -যতে। ইতি দেবীপুরাণ ॥

निশु छी यू॰ वृषावित्ममः। তৎ পर्रोयः াহেরম্বঃ ২ হেফকঃ ৩ চক্রসম্বরঃ ৪ দেবঃ৫ বজুকপালী ৬ শশিশেখরঃ পবজুটীকঃ ৮।ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ নিশৈতঃ পু॰ বকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ !!

मिक्यः পৃ॰ निःम॰**म**य्कान॰। তৎ श्रयायः । निर्गयः २ । ইত্যমतः ॥ নির্ণয়ন এ নিচ্যঃ ৪। ইতি শবর্মা-वनी ११ # 11 जुमुकारा शुकारा श्री ন্তৎ পুকার তু নির্ণयः। ইতি ভা-.वाशक्रिष्ट्रमः॥

निकना जी नान्नेगी। इंडि इकि निर्वष्टुः ॥ शृथिती ॥ जहता वि ।

যথা। নিবস তু তব গেহে বিশ্চল সিমুপুত্রী। ইত্যাদুস্ভট: ॥ 🖟 निक्वामः शुः वकः। ইতি वाज निर्चन्द्रः ॥ शर्बजारमी स्थनमुद्रश्चि তে চ ত্রি॥ निकायकः वि निक्यकर्त्व। निर्नायकः। यथा। অনুপাধিত্ব নিশ্চাযক দর্শনত্বে নহেতত্ত্ব নিতি ব্যাপ্তিগৃহমাথুরী।। निकातकः शृ भूतीयक्रयः॥ वायुः॥ **यहनः।** ইতি मिनी ॥ নিশ্চিন্তঃ ত্রি চিন্তারহিতঃ। যথা। মূর্ধর্°সুদ্দভ• ভঙ্গম্ব সমতে মূর্থস্য চাঙ্কৌগুণা নিশ্চিস্তো বহুডো রকো-তিমুখরো রাতিন্দিবা সংগ্রভাক্। कार्यप्रकार्य। विठातनामि त्रशिष्ठा भानाभगात मत्म पद्म मईकनम् मृष्ट्रिं हत्रागे मूर्थ कित्र कीवजू।। इंज्रुष्ट्रहेः ॥ নিশ্চীয়্মানঃ ত্রি निण्ठय्विष्यः। যথা। বনু তথাপি এবকার ম্য नि कीयमानरेमात मार्थकदाखानाट মতঃপুক্তিকামিতি শৃৰশক্তি পু कानिका ही दाया आगळ पुः ॥ भिष्कृत्रण क्षी मुख्नीमः। भिर्मी इंडि ভাষা। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। নিস্টেঃ জি চৈষ্ঠারছিতঃ। নিশেচ। ই-

े छः। यथा। गनगुरु । निष्काक्षी रिष

ত্যে নিৰ্গত লোচনঃ ক্ষেব্যক্তরাবো ন্যপত শহবালো ব্যসু বুঁজে ।। ইতি শ্রীভাগবতে দশনঃ ।। নিশাসঃ পুশ বহিমু থখাসঃ । তথ পর্য্যায়ঃ । পানঃ ২ এতনঃ ৩ ৷ ইতি হেমচন্দুঃ ।।

নিশ্বাসসংহিতা জ্রী শিবপুণীক্তশাস্ত্র বিশেবঃ। যথা। এবনভাগিত স্তর্ভাহণ দিজ সভানাঃ। বেদ কির্যা সমাযুক্তাণ কৃতবানিমা সণহিতাণ।। নিশ্বাসাখ্যাণ তত স্তন্যাণ লীকা বা ভুব্য শাণ্ডিলাঃ। নিশ্বাস সণহিতাণ যাণ হি লক্ষ মাত্র পুনাণতঃ।। সৈব পাশুপতী দীক্ষা যোগঃ পাশুপত-স্যহি। এতুমাদেদনার্গাদ্ধি যদ-ন্যদিহ জায়তে।। তৎ ক্ষুদ্ধ কর্মবি-জ্ঞেষণ রৌদুণ শৌচ বিবজ্জিত।। ইতি বরাহপুরাণণ।।

নিষকঃ পু• ত্পীরঃ। ইত্যমরঃ॥ সঙ্গঃ । ইতিমেদিনী॥

नियद्शिः शृ नगानिकः। जानि-वनः। इनुभातिकायः॥ अनी॥ तथः॥ ऋषः॥ ज्ये ॥ जात्रिः। इनि ज किछनात्रभाविकृतिः॥ नियदीनः शृ धनुर्धतः। इनुभावः॥ नियदिः शृ नियान्यवः॥ इन्युक्तः गिकाया सामी॥

नियान

নিষ্দ্যা জী পণ্যবি ক্যশালা। ইত্য মরঃ॥হউঃ।ইত্যন্যে।ইতিভর-তঃ॥ ক্ষুদুখন্বা। ইতি ত্রিকাওশেষঃ नियषतः भू" कर्मभः। ইত্যমतः॥ निषष्त्री जी ताबिः। ইতি मिरिनी।। নিষ্ধঃ পুণ পর্বতবিশেষঃ। ইত্যমরঃ ।। म जू इंवाव्जम् मिल् इति-ু ব্ৰস্ত সীনাপৰ্বতঃ। প্ৰাগাৰতঃ। ्ष्यू उ याकाना (स्वयः । विमर्भु যোজন বিস্তীৰ্ণঃ। ইতি ঐভাগৰতে e ऋक्ष ७५ अथायः ॥ कठिनः॥ रमनित्ममः ॥ छरम्नीयताजः। ইতি নেদিনী॥ নিষাদম্বরঃ। ইতি (इमहन्दुः॥

নিষঃক' প্লী সুনিষঃক'। ইতি শব बङ्गावनी ॥

नियामः भू हञ्जानः। ইত্যমরः॥ বেণ শরীরোভব জাতি বিশেষঃ। যথা। নথ্যনানে ততো রাজ্ঞ স্তম্মি-নুরৌ পুজজ্ঞিবান্। হুষোংতিপক্-**यः क्ष उ ज्या ८ शाक्ष निः इ** जः।। তে गरेख विञ्चन पृथ्वा निषीपिका **२**वुदः छमा। नियाम वः नक्छी म व-् ভूব মুনিসভ্মাঃ॥ श्रीवङ्गानम्बन् बाशि (वंश कमार मञ्जवान् । (यं **हारन्। विक्रानिलगाः नव्का नाङ्ला** परः ॥ अथमं कारण (का. विरेख-

नान् (वन मञ्जवान् । ইত্যশ্বিপুরাণ ॥ 🗱 ॥ भाति ভाषिका खाला यथा । আশাকতু স্তুদাতা চ দাতুশ্চ পু-তিষেধকঃ। শরণাগত য স্ত্যজ্জিত म हक्षाला १४(मा नदः ॥ इंडि भाक (अयभूतान ॥ शीवतविष्णयः। ইতি নেদিনী।। # ॥ সপ্ত স্বরা<mark>ন্তর্গত</mark> শেষ ষরঃ। স তু নারদ মতে হস্তি-यत जून । यतः। जाम । हात्र हान हान । **लना**दे"। व्याक्त्रन में एक म्सः। अयुः े देवनावर्गः । महस्रतानाः मर्था উद्दः। অস্য জাতিঃ সম্পূর্ণ। অস্ত কুটতা-নাঃ ৫০৪০। পুত্তেক্তান ৫৬ সমু-कारयन २४-२: ४० खर्ब ।। अन्। स-ৰূপঃ গণেশ তুল্যঃ। কৃষ্ণখেত বৰ্ণঃ। शान शृक्षत्र<sup>ीशह।</sup> एवजा मूर्याः। बाबः गनिः। भनगः निनास्त ৮ দণ্ড ৩৪ পলানি। অস্য শুতিঃ উন্না (माजिनी हा गृहना गमस्त्र शास्त স্থা। মধ্যস্থানে অহন্ধৃতা। তার স্থানে লোচনা চা। নিবাদ বচ্ছিত। ब्राणिणी आंगावती गुनावी है।। ना-म्भूदानग्ठे। क्रिनंजाता १य ॥ বীণাযা , ধৈৰতাৰধি , বড্জ স্থান পর্যন্ত: পূথন সুপ্রক:ত্তীয়া:শুসু भिय अभूमाय वीर्ग उजी निवास হান ভথত। ইতি সন্ধাতশাস

शा कि ।। यङ्कानगः यएएउ १ व श्वताः गर्व गताङ्काः । नियोप्तिः यङात्नारक नियाप एउन कथ्याः ॥ ठञ्मः अक्षत्म यएक ग्रिश्याः भूज्या गुजाः । अयस्य स्वत्रः जिल्ला व गानाज नियाप्तक ॥ हेन् अकीन्नारमाप्तः ॥

नियानी भु॰ इछात्ताहशामाह**ँ** ইতি খ্যাতঃ। ইত্যনরঃ ॥ भिषिषा जि निष्यथित्यया । यथा १ তীর্থে তিথিবিশেষে চগঙ্গাযাণপু-ত পক্ষকে। নিষিজেপি দিনে স্বর্য্যা--ত্তর্পণ তিলমিশ্রিতণাইতি তিথি उद्भ ॥ # ॥ निविक्षकर्यानि यथा 1 মান্ধাতোবাচ। বুহি ধর্মান্ সু-(थानायान् अविधानाः সূথাবহান्। নিবিন্ধ মূপি যদেবাণ তদেব পুথ यः तम् ॥ नातम खेवाठ। जातकर्मनः শব্ৰনিবৰ্গঞ্ কৃষি বণিজ্যা পশু भानमंद्रा भूग्यग्राभा ज्यार्थ-হেতো রকার্য্য মেতৃৎ পরমণ ব্রাহ্ম-गर्जा के क्लिश्न किश्न कीव-नक विश्वपुरा किली हिन्दु कीन টोयक अन्त्रीमक विवर्क्कद्वर<u>्या भृत</u>्म -বান্ত্রক্ডিথ্যাপেতো দুরা-চরঃ। ব্ৰলী রমতে যন্ত পিশুনো नर्खन खथा।। गुाम(भुस्प्री विकर्ण।

চ যো দ্বিজ শ্চরিতাহ্যুতঃ। বেদান-পি জপন্ শ্ট্রেঃ সমঃ স পরিকীর্তি-তঃ ॥ কৃত্যেষু বৰ্জ্জনীযোসৌ বৈদি-কে তান্ত্রিকেপি চ। নির্মাধ্যাদে চা-শুচৌ কুরবৃত্তে হিংসাত্মকে ত্যক্তথ-**র্মে খ**র্ত্তে। হব্যঞ্চ কব্যঞ্চ নদেয**েন**ব। मानक एक विकवा गात्रम् ॥ 🕸 ॥ त्राजनताना क्रामान विनादेववाहिर क्ष यः। পুতিগৃহः न नित्म्। व श-त्रज ठानूथभुमः॥ मूरक्ष भनायनरेक्द তথা কাতরতার্থিসু। অপালন পু-জানাঞ্চ দামে ধর্মে বিরক্ততা ৷৷ অম-(वका बदाष्ट्रेम् द्वाक्यानाननामतः। অমাত্যানা লসমান তেষা কর্মা-নবেক্ষণ ৷৷ ভৃত্যানাঞ্ পরীহাসো निविष्तः क्वड स्ना ॥ अ॥ विन्त्रा-नाः धनत्वार्जन निष्ठानृन्तु भुका-শনা অপালন পশ্নাঞ্ অনিজ্যা বিভবে সতি ৷৷ ৠ দু দু ণাঞ্চ মহা बाज़ वृरेषव ध्य मक्षयः। **भूपार्याः** ক্তকার্য্যস্য ক্তসন্তান কর্মণঃ॥ অ-ভানুজ্ঞাত রাজ্যস্য শূদুস্য জগতী-পতে ৷ অল্লান্তর গতস্যাপি দশধর্ম ়গতস্য চ।। আশুমা বিহিতাঃ সরে বৰ্জবিত্বা নিরাশিষণ ইতি পুর্যন্দ্র-স্বৰ্গখণ্ডে২ণ অধ্যায়ঃ॥#॥ অপিচ্। যস্ত ভাগবতান্ দৃষ্ট্বা ভূত্বা ভাগবতঃ

শুচি:। অভ্যুথান ন সরী ত অহ। তেনাপি হি॰সিতঃ॥ यण কন্যা॰ পিতা দত্বা ন পুষছতি ভা॰ পুনঃ। অষ্টো পিতৃগণা স্তেন হি•সিতা নাত্র मःगयः ॥ ভार्याः श्रियमशीः यस সাধী হিণ্সতি নিঘূৰণঃ। নতে নৃতাণ পাৰ বন্তি হি॰সকা দুষ্ট যোনিজাঃ।। বুক্ষুণ্ট কৃত্যুণ্ট গোমুণ্ট কৃতপাপ-কাঃ। এতান শিষ্যান্ বিবক্তেত উ-ক্তাযে চান্য পরিতকঃঃ। শালপত্তে ন ভোক্তব্য ন ছৈত্তব্য কদাচন। অখ-त्था वर्ष्ट्रक्षक न हिख्दाती कमाहन।। न (इंखर्वा) विनृवृक्ष 🗓 पुस्त्र क कमा-**চন। कर्या**गारिक्द (य ्का न हिल-ব্যাঃ কদাচন।। যদীছে এপরমাণ সি-জি নোক ধর্ম সনাতন। ভক্ষ্য-ভক্ষ্যঞ্চ তে শিষ্য বেদিতব্যু তদন্ত-त्र ॥ कत्रीत्र में उपः में खः क्वारिं। ডুম্বরস্য চ। সদ্যে ভক্ষী ভবেত্তেন অভক্ষ্যাঃপৃতিবাসিকাঃ॥নভক্ষণী য বারাহ মা স মৎ স্যুস্য সর্বশঃ । अएक ।। दाक्रेन (र्रोड में किरेड र्हिन मः भयः ॥ शितिवामः न स्वी उ ন হিংসাং বা ব্ৰদাচন ৷ পৈশুন্যঞ্চন कर्खवुर रेखनां वाणि करावन ॥ च-जिथिकागज॰ मृक्षा मूत्राक्षानागम॰ স্বচিৎ। সংবিভাগন্ত কর্তব্যে যেন

কেনাপি পুথক। গুৰুপত্নী রাজপত্নী বান্ধনী বা কদাচন। মনসাপি
ন গন্তব্যা এবং বিষ্ণু: পুভাষতে।।
কনকাদীনি রত্নানি যৌবনছা চ
কামিনী। তত্র চিত্তং ন কর্তব্যমেবং
বিষ্ণু: পুভাষতে।। দৃষ্ট্বা পরস্য ভান্ধানি আত্মনো ব্যসনন্তথা। তত্র
মন্যু র্ন কর্তব্য এবং ধর্ম্মঃ সনাতনঃ
।। ইতি বরাছপুরাণং।।

निरमकः शृ॰ गर्छाधानः। ইতি निरमकारिक्ट सम् होकायाः छत्र छः॥ ॥।
निरमका झाछ छ भन्नी छक छंडी स्छा सुछः। मद्या सिद्ध मान्य मान्य मान्य प्रकृष्णः ।।
स्विकारिक्ट शृ॰ गर्छाधानारिकर्छा
। আरिना मीमरछा स्थनार स्याद्धविम्हा सानार स्व गृहनः छट कर्छा
भिजारि छंकः महाट । ইতहमत्रछत्र छो।

নিবেধঃ পুণ পুতিবেধঃ। নিবুজি:।
বিধিবিপরীতঃ। যথা। তিথীনা
পূজ্যতানাম কর্মানুষ্ঠানতো মতা।
নিবেধস্ত নিবৃত্তাত্মা কালমাত্র মা
পৌকতো। ইতি ভিতিত্ত্বা
নিবেবন স্নী সেবা। যথা। স্যাম্যহৎ সেববা বিপ্যাঃ পুণ্য তীর্থ নি-

বেবনাৎ। ইতি ঐভাগবতে ১ ক্ষ-**क्षि २ व्यक्तायः** ॥ निरुवद्ध वि (भवनीयः। यथा। म्रानमु े इव विकारमानियवाग हिन्नवानिव া**ইতি ভাগবতে ১কন্ধে ১২ অধ্যা**য় নিষ্ক ড ক সানে। ইতি কবিকন্নদনঃ নিষঃ পু॰ শ্লী সাষ্টশতসূবৰ্ণঃ॥ হেম া। উরোভ্বণ।। পল•।। দীনারঃ ।। यम् । होका यथा । माजीय (वा-**एम** गाम्क भविभिज सर्गः मूर्गः ভেষা- সুবৰ্ণানা- অষ্টাধিক শত•। ংকন বৰ্ণ মাত্ৰণ উরোভূবণ বক্ষে। रनकातः। भनः माखीय मान वि-শেষঃ। উরোভুষণ পলঞ্ছেমুঞ-বেতি কেচি**ে। দীনারঃ সম**্যখ্যব-চিত্তু দীনার ইতি পল ইত্যস্যবি-শেষণ । দীনারে পলে লৌকিক পলেনতু শান্ত্রীযে ইত্যাহঃ ধা শা-র্ত্তান্ত দাত্রি-শদুক্তিকা পরিমিত• का्क्षनः मीनातः। उथाहि। भीना রো রোপিক রপ্তাবিশ্শত্যা পরি-की डिट: । সूर्वेन मक्ष छिखा । ७१-গো রোপক উচ্যতে । ইতি বিষ্ণু -एउ: भ-नुवर्गि श्राह्मि পরিমিত কাঞ্চন তস্য সপ্ততি-, তমোভাগঃ সপ্তমাশাধিক ছেম

त्रिकाया (ताशकः छम्क्षं विन्मछ। वाकि ममूक्किका शतिन्छ (हम मीनात है जि शर्य प्रमुखी छ। इन्
भ मीनात है जि शर्य प्रमुखी छ। वर्ष
भ मीनात है जि शर्य प्रमुखी। वर्ष
भवा । है जि स्मिष्ट मुद्देश । कि जि है विम्रुक्श ति जाया। (या प्रमुखी । विकित्स । या वर्ष
मुम्र । (या वर्षा हन है जि जाया। है जि विवास की ।।

নিষ্ঠঃ পু॰ বৰুণবৃক্ষীঃ। ইতি শদ-চন্দ্রিকা।।

निष्ठर्यः श्रु॰ निष्ठयः। यथा। अकायः निष्ठर्यहेर्डाम् प्राथताहिक श्रुष्टामि वश्वहायाः नूर्थहा ॥

निश्रनः जि कलाम्नऽः॥ नश्चेवीर्यऽः। इंडि (मिनी ॥ जाधादा भूः। इंडि मद्गिका॥ तुक्ता यथा। विद्यय-मुशिक्षिणम् निश्रनम् जीविशः । उभामकानाः कार्यऽ। यं तुक्तशः ज्ञान कल्ला ॥ इंडिऽकाम्मी उर्व्यु कामम्युऽव्यानः॥

নিষ্কণা দ্রী বিগতার্ত্তবা। ইতি শবররাবলী॥ বৃদ্ধা। ইতি রাজনির্ঘটঃ
নিষ্কলী দ্রী পাতৃহীনা। নিবৃত্তর জন্মা।
ইতি শবর্রাবলী ii

 লোম কেশন যুতাভ্যক্তন চ কভ্রাণ্ডানিষালকৈ। যুতাভ্যক্ত ভণ্ডাণ্ডাভনতাতি বিজ্ঞাযতে। ইতি বশিষ্ঠ
মারণাৎ। ইতি নিতাক্ষরা।।
নিষ্কাশঃ পু॰ পুলাদাদুপস্থান•।
নাজাইতি বারাভাইতিচ ভাষা।
ইতি মহাভারতে রাজধর্মঃ।।
নিষ্কাশিতঃ ক্রি নিষ্কাসিতঃ। ইত্যানরঃ
নর টীকাষা• ভরতঃ।।
নিষ্কাসিতঃ ক্রি বহিষ্কৃতঃ। দূরীকৃতঃ।
ংপর্য্যায়ঃ। অবক্ষঃ ২। ইত্যমরঃ
।। নিঃসারিতঃ ৩। ইতি জটাধরঃ।।
নির্গাক্তঃ।। আহিতঃ।। অধিকৃতঃ
। ইতি মেদিনী।।
নির্দিত পেং মেন্ডানিস্কান্তঃ।

নিষুটঃ পু॰ গৃহসমীপোপবন। ইত্যনরঃ।। ক্ষেত্র॰।। কবাটঃ। ইতি
মেদিনী।। পর্যটোঃ। জানানামহল
ইতিপারস্যভাষা। ইতি হারাবলী
নিষুটোঃ জী এলা। ইত্যমরটীকান্
বাণ ভরতঃ।।

নিছুন্তঃ পু॰ দ্ভীবৃক্ষঃ।ইত্যমরটা কাষা রাষমুক্টঃ॥ জ্ঞুশ্ন্যে বি নিছুশ্মিতঃ বি নিছাসিতঃ। যথা। কাকৈ নিছুশিত গভঃকবলিত বীচাতি রান্দোলিত । ইত্যাদি বাদ্মীকি কত গৰা ভোকা।

নিমুহং পু: বৃক্ষকোটর । ইত নিরা।

নিমুহি: জী নিমু জি:। নিভার:।

যথা। বৃক্ষণ্নে চৈব নিজন্ম সুরাপে
ভর্তল্পগে। সর্বত্ত বিহিতা সন্ডি:
কৃতপ্নে নান্তি নিমৃতি:।। ইতি প্যান্

নিষুমঃ পু॰ ধীশক্তিঃ। ইত্যমরঃ॥ निर्गमः॥ पूष्क्षाः। ইতি मिनि ॥ निष्ठुमगमः स्वादः। यथा। अहत्। कारम नाम हजूर्थ गामि निष्कुमः । ইতি भवभाग ठाल् या छवन्।।। নিষ্কুমণ• ক্লী দশস•স্কারান্তর্গতস•স্কা-त्रविरमयः। जर्नुशानः यथा। जा-তে স্নারে জন্মবাসরাম স্ত্তীয়ঃ শুক্লপক্ষ স্তস্য তৃতীয়ায়া তিথো शुाजः क्रमातः माशियदाः मायःम-দ্ব্যায়া মতীতায়া চন্দ্ৰাভিমুখ: ক্-তাঞ্জলিঃপিতাতিং ধ্যেম্থ মাতা भू विनाव **छ । स्नात नाहो** हु। हिक्-**१म**ा॰ हिमि छर्जू वीम्रशास्त्रं श-किमाजिमूथी ज्य के उर्वे निवमः সমার পিত্রে পর্মপ্যতি। ততা माठा जुर्द्र: পृधारणन उँ उत्रम् १ मिनि गर्व। हन्तुरिक्यूभी ज्यानन मिक्किनभार्यं जिंहि । वर्षे भिड़ों জপতি পুঁজাপতি খবি রনুষ্টুপ্

ছन करमु। (मवठा अभाक्षमः) हन्तु मर्भात विनियागः। अयस्य मुसीत्म হৃদয় হিতনন্তঃ পুজাপতৌ বেদা-হ শ্নে তদুকা নাহ পোত্ৰমহ নি গা॰। ততঃ পুজাপতি শ্ৰবিরুষ্ট্প্ इन्त म्हत्मु। (५वछ। अभातभा हन्मु ॥ मर्भान विनियागः। ७ यट शृथिवता অনামৃত দিবি চন্দুমসি শ্রিত বে-দন্তস্যাহে নাম্মাহং পৌত্রম্ঘং ঋষ । ততঃ পুজাপতি ঋষি রনুষ্টুপ্ **इन्त** इन्तुानी (एवर**े इ**नात्रम) हे-न्तुमर्भान विनियागः। उ इन्तुानी শৰ্ম যৃহত পুৱাথৈমে পুৱাপতী যথায় ন পুমীয়েত পুণ্ৰো জনিত্ৰ্যা অধি। ইতি মন্ত্র ত্রমণ জপ্তা সমারণ চন্দু দর্শযতি। পিতা চন্দুায অঘ্য দদাতি চ। ততঃ পিতা তথা ভূত মেব সমার মুত্তর শিরসংমাতে দত্তা বামদেব্য গানান্ত কর্মকৃত্বছিদু মব-বার্য্য পৃহণ পুরিশেদিতি। অত উদ্ধৃ মপর শুদ্ধপক্ষ ব্যেপি তৃতীযাযাণ তিথো সাই एक्षा निक्रमा हन्द्रा-·ভিমুখঃপিতা জঁলাঞ্জলি· গৃহীত্বাপু-জাপতিপ্রিরমুষ্ট্রপ্ছন্দ্র-চন্দ্রোদে-न्यात्र केन्द्र मर्गान विनिया भः। अयममण्डम्यनि क्षण श्थिवता क्रयः भिुछः छम् इः विद्वां ख्र श्रा

নাহ পৌত্রন্য কর্মিতি পঠিত্বা कनाञ्जलि॰ जारबर्। वात्रहर्य॰ जू-की । ততো বানদেব্য भी पाहिन মবধাৰ্য্য গৃহ॰ পুৰিশেদিতি। এত निक्रुन् क्यां क् ज्ञ मू नी हर कर्य পত্নী পুশোপাদান বিরহার্থ পুরা-সিনাপি কর্ত্তব্যমের।ইতিনিষ্কুমণণ ইতি ভবদেব ভটঃ॥ গ্লা তত্ৰ বিহ্নি ত দিন' যথা। রিক্তাতিরিক্তা ক্তিথ-যঃ৷শনি মক্ল বাসরেতরে বারাঃ । আণু শ্লেষা কৃত্তিকা ভরণী মথ। विभाश भृइंक हुनी भृइं। या भृ-ৰ্মভাদুপৎ শতভিষাভিমানি নক্ষ ত্রাণি। কন্যা তুলা মন্ত্র সিংহ সং क्किनि नद्मानि । वानकम् । ठ्रुर्थ মাসি ভৃতীযে বা চন্দুাদি শোভৰে কর্ত্তব্য । ইতি ক্ল্যোতিষ ।।।

यः श्रृ कृष्टिः। (वजनः। ইতি

(क्ष्महन्द्रः ॥ वृष्टिः। वागः॥ नामर्थाः

। निर्माणः। ইতি माग्दीकाष्ठ वे

क्रम्छी ॥ शृज्भकातः॥ विनिमयः

। यथा। नमूर्धिक्षमन् यः शृथिवी

क्षात्रत्र स्त शृक्षनमा हकात स्

विनः। जनव्यातानि नुज। नमसुम स्याश्वाद्यस्य मूर्थन निस्यः।/ईणि

मायकाव्याद्यस्य मार्थन निस्यः।/ईणि

নিষ্ণান্তঃ তি নিপতঃ। যথা। ভুকটী

विविश्वन्य नगारे कनकानुः उः। काली क्रालेक्पना विविद्यानात्रि नामिमी॥ इठि हजी॥ निक्षिय की तुका यथा। निक्षिय नि র্ত্তণ শাস্ত নিরপেক নিরঞ্জন। ইড়িবেদান্ত সূত্ৰ ভাষ্য ।। ক্ৰিয়া-भूत्र जि। यथा। बहानानि यपि मिछ वर्नि (পुन तब्जु क् उ वक्षन नन्) । माक्जिम निश्रुलाशि यउद्दि नि-দ্ধিযো ভবতি পঞ্চজ বদঃ।। ইত্যু फ्टिः॥

विश्यः शः भागमिक्षयः। स्थान ইতি ভাষা। তৎপর্য্যানঃ।রসকঃ া ইতি হেমচন্দুঃ॥

নিষ্ঠ্যঃ পু॰ শ্লেছজাতিবিশেষঃ। ইতি হেমচন্দুঃ ॥

নিষ্ঠঃ ত্রি স্থিতঃ ৷ নিতিষ্ঠতীতি স্থাণ তো র্ড পুত্যুয় নিষ্কনঃ॥

নিষ্ঠা জী নিম্নতিঃ।। নাশঃ।। অন্তঃ ॥ निर्वरुष । इंड्रायतः ॥ साह्या। ইতিমেদিনী॥ ক ক্তবত্পুত্র্যৌ। ইতি কবিবল্লজন টাকাযাণ দুর্গাদা-मः ॥ धर्माक्षेत्रमुका । यथा । निष्ठ-्याहि পুর্তিষ্ঠা স্যাদদিষ্ঠস্য স্ত্রঃ জ্লা। শক্নোতি নৈধিকঃ স্বীয়ণ ধ ন্ম বাতু নচেতরঃ।। একস্য দেব-স্য বিহায মত্র মেক পরক্তেজ

তে পপি তস্য। তলা ভবেনাচ্যু র रेमिक क्वामिक्ष विशेषमा म क्याला সিদিঃ॥ ইতি বৈদ্যস্পৰতত্ত্বে ভন্ন-उमझिकः ॥ भाभाः। यथा। छन्न-বৃষ্ট হরি পাথে। ন ভর্জ্যাত্ম বি-ত্তমাঃ।তেবা মশান্ত কামানা কা-নিধা বিজিতাত্মনাণা ইতি প্রভা-গৰতৈকাদশক্ষৰ পঞ্চনাধ্যায় শ্লো-क होका वृत्रभूतावाः श्रीश्रव दात्री॥ নিষ্ঠান॰ ক্লী ব্যঞ্জন। ইত্যুমক্ত।। নিষ্ঠিত ত্রি নিত্র<del>া ছিত্ত ।</del> যু**থা** । দেবদ্বিশা নিপমবন্ত্র নিনিষ্ঠিতানা পূর্ভির্মযেন বিহিতাভির দৃশ্যত্র্ভিঃ ।লোকান্ মৃতাং মতিবিমোহমতি পুলোভ বেশ বিধায় বছভাষ্যত ঔপধর্ম।। দেবছিন্তা হৈত্যানা। নিষ্ঠিতানা নিতরা স্থিতানানিতি । ইতি এভাগবতে ২ রূদ্ধে । ব थ्याय श्रीध्वसामी ॥ निष्ठाविनिकेः ॥ निष्ठायनञ्चित्रका निष्ठीयः পू॰ निष्ठीयन । ইতি हिन्नन

কোষঃ ॥

निष्ठीवमः क्ली द्वारामिनाः मूर्थन वसमः াছেশইতি পুতু ইতিচ ভাষা।তৎু भर्यार्यः। निष्ठं वं र निकृष्टिः वर् (क्षेत्र- ८। इंज्रमंतः ॥ निष्ठित्। ६। নিষ্ঠেব ৬। ইতি তউীকা॥

নিধুর কি পাক্ষণাকিঠন । ইত্যমর: নিধ্যুত কি কিন্তু । ইত্যমর: ॥

নিষ্ঠুতিঃ জী

निष्ठियः बि निष्ठीयन । इञ्जन तः ॥

निरहरन की

নিষ্ণাতঃ ত্রি বিজ্ঞঃ। নিপুণঃ। ইত্য-মরঃ।। পার•গতঃ। যথা। বৈশ-স্পাযন এবৈকে। নিষ্ণাতো যজুষা-মুত। ইতি ভাগবতে ১ স্কন্ধে ৩ অধ্যায়ঃ।।

নিয়ন্থ ত্রি অতিপদ্ব্যঞ্জন দশমূলাদিন ইতি ভরতঃ ।। তৎ পর্য্যায়ঃ।
দ্বিথিত ২ ৷ ইত্যুসরঃ ৷! পদ্বতাশূন্যঞ্
নিয়ন্তিঃ জ্রী স্নাপ্তঃ ।। সিদ্ধিঃ ।
যথা। ক্রিযাযাঃ পরিনিয়ন্তি র্যদ্যাল
পারাদন্তর ৷ বিবক্ষতে যদা ত্র
করণত্ব তদা মৃত ৷ ইতি রান্তর্ক
বাগীশধৃত কারিকা ।।

নিম্নত্রাক্তিঃ গ্রী সপত্রাক্তিঃ।
অত্যন্তপীড়া। ইতি হেমচলুঃ।।
নিম্নত্রিকা প্রী করীরবৃক্ষঃ। ইতি
রাজানঘক্ষঃ।

निम्नमः वि निम्नखिदिनिष्ठः। गम्भमः। তৎर्यतायः। निषः २ निर्देखः ०। इत्यावः॥

নিষ্কাদন• ক্লী भिष्क জিঃ॥ নিষ্ক জিনিযু-জিঃ। যথা। ধাত্বৰ্থতানছৈদক কল নিহ্লাব

নিক্সাদকত্যা দদ্ধেত্যকুমতি পুকাশনেন কর্ত্রিছা মুৎপাদ্যদান
নিক্সাদনেনবৈতি কারক চক্রে ভবানন্দ সিদ্ধান্তবাগীশঃ 11

নিয়াদনা জ্ঞা নিয় ভিপ্তেরণণা যথা।

যদা নিয়াদনার্থ কৃষু স্তদ্ধ চৈত্রঃ
কট করোতি। যদা নিয়ভ্যর্থ স্তদা
কিষতে কটঃ স্বযমেবেতি। ইতি
রামতর্কবাগীশঃ!

নিমাদিত তি কৃতনিমাদন । যথা।
নিমাদিত দৈবক্তা মবশেষ প্রতীক্ষতে। ইতি ভাগবতে > ক্ষে
১০ অধ্যায়ঃ ।।

নিষ্কাদ্য তি নিষ্কাদনীয় সাধ্য । যথা। চেষ্ঠা ব্যাপারেণ ছেদনাদে নিষ্কাদ্য বাৎ সাধনত্ব নিতি রাম্ত তর্কবাগীশঃ॥

निश्चादः भू॰ थान्यामीना निवृचीक त्रा॰। दल्लीकद्रा॰। उৎপर्यायः। भवन॰ २ भवः ७। ইত্যমद्रः॥ भू-भवायुः॥ त्राक्षभाषः॥ कएक्षद्रः॥ मभीद्राः॥ मिश्चिम्।॥ निर्विकास वि। ইতি क्षिमिनी।। শেতশিশ্বी। ইতি द्रञ्जभाना॥)

নিদ্বাবকঃ পু• খেতশিদ্বী ৷ প্রসিৎ ভুষ্ট ফল গুণঃ ৷ মল্লবন্ধ কারিবু• ৷ গুরুত্বঞ্চ ৷ ইতি রাজবল্পভঃ ৷৷ निश्चादी.

निञ्ज्ञि खडः। कउः। देखि कोश्यःभः

নিষুত্তং ত্রি নির্বিদ্ধ:। যথা। নিষ্কৃত্ত মুপামহে ভগবত: কৌমোদকী লক্ষণঃ। ইতি মুরারি:।।

नित्रुकः जि भुजाम्नाः। निधित्रहिजः। छ८ भर्यापः। विभवः २ चाद्राकः २। इजानतः॥

निश्र्याजन कि भ्रायाजनग्रहिण।
यथा। जनप्रविधि महावाद्या नघ्नाम्भरमण्डः। खन्नाम्भरमणा हि निश्र्याजनजा नुरहर ॥ इंडि॰ भ्रायन्तिखंडुंगा

নুষ্ণা **তি উত্তৰি**মূক্ৰীস: বি ত্ৰ

বজ । ইতি হারাবলী ।। নিমুবাণি ত্রি নৃতনবজ । তৎপর্যাবঃ । অনাহত ২ তজ্রক ৩ নবামর ১ ৪ । ইত্যমরঃ ।।

निइनः वि कृष्णम्न प्रः । यथा। शृंगाः । विद्वाः । इठ्यादः ॥ विद्वाः । इठ्यादः ॥ विद्वाः । इठ्यादः ॥ विद्वाः । इठ्यादः ॥ वदः । वदः । विद्वाः । विद्

নিহুলী জ্ঞা নিহুল। ইতি শহরত্ম-বলী ৷৷

निमलाजः शू॰ निःमलाजः। नि-भोषः। ইতি मदत्रद्वावनी।।

নিসৰ্গঃ পু॰ সভাবঃ। ইত্যময়ঃ ॥ ৰূপ॰॥ সৰ্গঃ। ইতি মেদিনী ॥

निमिन्नः श्रृण् वृक्षवित्ययः। निमिन्नः
इठि ভाषा। उद्भग्रीयः। मिन्न् कः
र मिन्नुः अठाशिक्षः क्षण्यान् हेकः
व मिन्नुवादः ७ हेन्दुन् द्विषः १ निर्धजी ४ हेन्द्रानिका २ । इंडि मन्दहिन्द्रका ।

নিস্দন ক্লী নিঞ্ছিতসন । ব্ধঃ। ইত্যাসঃ ॥

নিস্তা জী ত্রিব্তা।তেউডি ইতি ভাৰা ৷ ইতি বন্ধনালা ৷৷ निमृष्ठ बि ন্যস্ত•। ইত্যমর:॥ नप्रक्र। ইতি विकाख्णमः॥ निमृष्टीर्थः भू॰ मृजवित्मयः। यथा। বিস্টার্থো মিতার্থক তথা কলেশ হারকঃ। কার্য্যপুষ্য দ্রিধা দূতো म्जुम्हानि उथा विद्या।। उल्लक्ष्यः यथा। উভযো ভাবসুদীय सय॰ वह-তি চোত্তর•। সুশ্লিষ্ট• সকতে কর্ম निम्डोर्थं म मृजः॥ ইতি माहि ত্যদর্পণে গ্রন্থারেদঃ ॥ নিন্তনী জ্রী বটিকা। বডি ইতি ভাষা । ইতি भद्रविद्युका॥ खनशीना व ॥ निखद्रगः द्वी উপायः॥ निखादः॥ **जर्न** । इंडि स्मिरिनी ।। निर्गमः । ইতি বিশ্ব:॥ निखर्रनः क्षी मात्रनः। ইত্যमद्रः॥ নিত্তল • ত্রি বর্ত্তুল । ইত্যসরঃ ॥ চল • । ইতি (मिरिनी ॥ छन । ইতি (ह-महम्मुः ॥ निखातुः भूः निखत्रगः। উषातः। য়থা। **জীণীত্**রি: সরিদ্তীব গভীর ্ নীরা বালা ব্যুণ সকল মিত্থ মনর্থ एकः। निखात्रवीक विनिधिये क्-रमारत्रीणा मुद्याध्य र्वनित्र मन्त्रु তি कर्गशातः ॥ हेजूरस्टिः ॥

निखातवीकः क्री मः मात्र जतप्रकार्यः। जयथा। यत्र गः की खंनः विद्याने विद्याने विद्याने । वन्त्र गः खन्न गः विद्याने विद्याने कि जान क्ष्म गः।। हत्र गामक भानक जया व क्ष्म गः जथा। हेनः निखात्र वीक्षक मार्चका भी द्विज् जन्ति व्याने विद्याने विद्यान

নিস্তিতীর্ষ জি নিস্তরিত্মিছ । যথা। তন্তঃ সন্দর্শিতো ধাত্রা দুন্ত র• নিস্তিতীর্বতা•। ইতি শ্রীভাগ-বতে ১ স্কন্ধে ১ অধ্যায়ঃ॥

निखरकीतः भू (गाव्मः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

নিস্তবরত্র॰ ক্লী স্কটিক:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।।

निस्विष्ठ॰ जि छाङ॰॥ वृषिशीन॰॥ वर्ष्ठ॰। ইতিমেদিনী॥

निरस्काः वि जिल्लाइहिनः। यथा।

हेम॰ कर्व मञ्जाद्वा कर्वानः श
क्रित्व यः। मर्ब॰ जम् क्था एति नि॰

खिल्ला नव मिस्तिः। हेि दुक्तजा
मनीय गायजीकवर्व धृजः॥

निज्जि॰ शः शृ थङ्गः॥ हेज्यम् अः॥ नि॰

फिर्य वि। हेिज प्राक्रिनः॥

নিজি শ্বারী বি **ধর্মারী।তল্প** 

यथा। मूक्त स्वतः शुःभू मृं छ्छ-

িজ: শলোচিত:। শ্র: ক্লেশসহ শৈচৰ শুরুধারী পুকীর্ভিত:॥ ইতি

माट्रा ३४३ व्यक्तायः ॥

নিজ্ঞিশপজিকা স্ত্রী সু হীবৃক্ষঃ। ইতি -রাজনির্ঘণ্টঃ॥

নিক্রেণশুল্লিকঃ পু॰ রাজধভ্রক:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

নিস্নেহফলা জ্রী খেতকটকারী।ইতি রাজনির্ঘণীঃ।।

্নিম্পন্দঃ পুণ্,স্পদ্দন•।ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ ॥

निम्मनः वि म्मन्द्रिकः। हैयर-कम्म्मृनः। यथा। कार्त्रती जीत-ज्नीकर जूजगतशृ जुक मूकाव-मिक्टः कार्नाही हीन शीन खन वजन म्मान्मान निम्मन्द्र मम्दः। ইতि विक्रमामिल्ऽद्राक्ष मजायाः त्राक्ष-म्मारः।

নিশান্তর । ত্রি একাস্তশান্তর হিত। যথা। স্ক্রে ঘনে নৈবধ কেশপাশে নিপত্য নিশান্তরী ভবভ্যা । তস্যানুবন্ধী ন বিম্মেচ্য গন্ত মপা-রি তল্লোচন থঞ্জনাভ্যা ।। ইতি নৈবধে ৮ সর্শা ।।

নিস্ই: ত্রি স্হাস্ন্টে। যথা।

দিয়্ই: সর্বকানেভেগ যুক্ত ইত্তু: "

গশ্নীভাষা

५ व्यथायः ॥

निमान्तः भू मान्तनः। क्रत्रमः। यथा
। नाकन्त त्रम निमान्त मून्ततात्तात्तः
कातिरा। भूवणानिस्नारवर्को वनिस्नाविव त्राक्षकः ॥ ইভি भूनवत्राववनार्धेरक भक्षभत्रभिभुः ॥

নিসাব: পু॰ ভক্তসমুদ্ধবমঙ:।ফেন ইতি মাড ইতিচ ভাষা। তৎ পর্য্যায:।মাসর: ২ আচাম: ওঁ। ইত্যমর:॥

शूर्णेनः । हेन्यमस्य।

निशानः । निःणपण ॥
निश्ननः जी मात्रणः । वधः । इठामतः
निश्वा वि श्ननकर्ता। यथा। निश्वा
देवतकाताणाः मठाः वस्कृतः मणा।
भात्रभविक ताममा भारक तस्कृतः
त्वा तत्या। इठि ज्ञिः॥
निश्वा जी गाविका। इठामनः॥
निश्वाः भूः निश्वाः। इठि भणत्वाः
विवी॥
निश्वः वि शान्तिः। इठि भणत्वाः
विवी॥
निश्वः वि शान्तिः। इठि भणत्वाः

यूषः ॥ यूषा । धर्मम् अङ्ग निर्देशे

**ध्हारो॰ महाबत्मा (रव गण्डः न** পছা:। ইতি মহাভারত ॥ निहि नेन जी मात्रगरे। हेछ अद्भाश निरीनः कि नीतः। गामसः। इतः यदः ॥ निह्न भू जनगानः। (वन वहन निङ्खा जः। यथा। श्रावयत्व न ধারবাদীতি। ইত্যমর ভরতৌ ॥ তৎপর্য্যায়ঃ। নিহুতি: ২ অপহু-ভি: এ অপহ ব: ৪। ইতি শদর্মী वनी ॥ निक्षिः ॥ व्यविभानः । इेडि (मिर्मि॥ एथः। इेडि मफ् ब्रङ्गावनी॥ निश्रुणिः बी निक्षयः। ইতি भाषा त्रजावनी ॥ निकृतः श्रू निक्ते। देखानदः॥ নিক্ষণ ব্লী চুম্বনং । নিক্ষ চুম্বনে ইত্য मापनिर्भुज्य निज्ञनः ॥ निका जी लिथा। ग्कः। निकी इंडि ভाষा । इंजू भारित्कायः॥ निकिथ वि उङ्गा उर्भागायः। পরিজিখঃ ২ নিৰ্তণ ৯ পরীত 8 পরিবেঙ্কিত ৫ ন্যন্ত ৬ নিস্ট ৭। देि बहायदः ॥ इंग्लिडयनानि । - यथा । निकिश्चेत्र धनाम् दिन भी-ত্যোপনিহিতন্য চ। রাজা বিনি-

र्गर वर्गार्किश्वाम शाहितः।

इंडि मन्ध्रमाथप्रयः ॥ নিক্ষেপঃ পু॰ কেপ্রণাড্যাগঃ।।সম-পিতৰৰ। গহিতদুৰ্য ইতি ভাষা। **७८. भर्यामः। उभनिधः २ न्यानः ७। इं**जि रहमहन्तुः ॥ यथा। बमुवऽण যত্র বিশুম্ভাগিকিপত্যবিশঙ্কিতঃ৷ निकाशा नाम उर (शुक्ति वात-হারপদ বুবৈঃ॥ অসম্গ্রাত মবি-জ্ঞাত- সমূদ্ৰ যদিধীয়তে। তক্ষা नीयापूर्णनिधि निक्कण गनिजः विषु ।। निरक्षणः वृक्षित्णवक करः বিক্রয় মেবচ। যাচ্যমানো নচেদ্দ-দ্যাঘৰ্ষতে পঞ্চক শত।।ইতি মি-**ाक्रताया॰ नात्रमः ॥ अ ॥ अन्याय** বৃত্তসম্পন্নে ধর্মাজ্ঞে সভ্যবাদিনি। गराशक धनिन १ रिंग निरक्त १ नि-কেপেছুধঃ।৷ আধিঃ সীমা বালধ-ন পিকেপোপনিধী জিবঃ। রাজৰ শ্রোত্রিয়ম্বঞ্চ ন ভোগেন প্রণশ্যতি ॥ बयत्मवज् रया मन्त्राम् छम्। भुज्-नस्तत । न म ज्ञाञ्जा जिरमाकांवत न निक्किश्च वर्ष्ट्रिकः ॥ या निक्किशः নাপ্যতি एकानिक्रिश्र शहरत। जावूरको को देवहार ते हो ना न हो वा . ७८ मम॰ मुम्मी। इंडि मनूः॥ नीकः भू व्कविष्णवः। वेजूभाहि-(कार्क ॥

नीकत्रिः शुः ন্যহ্বারঃ। ইতি শব-बङ्गावनी <del>१</del>। नीकां व जूनाः। छेनमा। इंडा भतः॥ निकारय श्रु॰। ইতি मिनिनी नीकः वि शैनका जिक्या। তৎপর্য্যা-यः। विवर्गः २ भागतः ७ भाक्षः ৪ পৃথগ্লনঃ ৫ নিছীনঃ ৬ অপসদঃ ' ৭ জান্মঃ ৮ কুরুকঃ ৯ ইতরঃ ১০। ইত্যমরঃ। অপশনঃ ১১ খুরুকঃ **५२। इंडि ७,इज्:।। नीवन क्रिक्ट** यथा। न ज़ीद्माजि जूथ किकि-बीठ मका बरानिश । (शुजनका न्महार्दिता नाम जिम्बिजः॥ शुदिमा निवयः नीहः खी धनापिक নিষ্যতে। শ্বয়ণ নেতু॰ ন শক্ষোতি তদা নায্যতি ধ্রুব ।। ছিতে খণে-भि नीवस यद्मां भाष भुभक्ता । किष्णिलु मदमामाम्। जमुक मार সনাতদণা সতাং শুক্তা গুণ নীচঃ <u> भाके मायाजि वश्वर । जजः मम</u> य योगामः शुकानगि उपनम्॥ म्मर्गाजाकः व्हरणाकः कृष्णानाकः भ-राजानाः। नममुन् बह्मानाः कं-र्षणानामूत्राचनाः । द्वि शास्त्रः कियारयागमात्र ए व्यव्याये ॥ व्य-, পিচা বুৰিশ্চ হীযতে পুণসাঁণ নী-हिंद नर नमागमादा मद्यांसम् । नीव्या जी नियंगा नियं। नियं ।

ধ্যতা যাতি শুেঠতা যাতি ৰিউ-भा ३७ मार्रेड गई।। क्षा व्यक्तः। **७८ न र्यप्र**यः। वामनः २ न्रष्ट् ७ थर्दः ৪ হুস্বং৫। ইত্যমর: ।। 🟶 ।। নিরুঃ । ধ্বা। **লৈত্য** নাম গুণ স্তবৈব প্ৰায়-জঃ ৰাভাবিকী ষচ্তা কি•ব্ৰুমঃ শু-চিতা ভবন্তি শুচযঃ স্পর্নেন যস্যা-পরে ৷ কিঞান্যৎ কথ্যামি তে স্ত-जिनमः वः कीविनाः कीवनः वं-ঞ্মীচ পথেন গছসি পয়: কন্ত্ৰাণ नियम् क्रमः ॥ इंडि नम्पापनः ॥ #॥ हातक नाम शक्त मृत्व। भू । ইতি রাজদির্ঘণ্টঃ ॥ ত্রি বামনঃ। খুরঃ। ইতি **"म**स्त्रज्ञावनीता নীচক। জ্রী নৈচিকী। উত্তমগবী। ₹**७**ऽमत्रहीकाया॰ **खत्र**७ः i। नीठकी पू॰ উद्देश उभित्र छातः। इंडि र्मायुषः॥ উভमगवीमाः क।। वर नीरेक्श नीरेकः नदनर **ढिः পূर्व क्**टिनाका निर्मेशः । यथा । फेट्टिक शिक्तांति ॥ নীচগ জ্লী জল। ইতি কোষান্তর ।। र्शिमद्र वि.। यथो। निर्हेशी महिना भागा हम्स्रेन मञ्जून निर्वर । ইতি ভূতভামরত 🖫 ॥

नीहणा जुनही नीहा नीहरणा नीहणः खंदुण। इंजि कायः ॥ अभिहा मुक् नयंजि विरेष्ठ्य नीहणा भि नद्रः म-दिः । ममू पृतिय पूर्व्वरं नृष्णः जाग्र नाजः भद्रः ॥ इंजि हिर्जाशास्त्राः॥ नीहर्जाकाः भूः भनाषुः। इंजि भप्रित्वा। भामद्रज्वा। नीहर्यकुः क्षी रिकास्त्रभिः। इंजि दाक्षिकाः॥

नी िकी की रेनिकी। इंड्रामब्रीका-या॰ ভরতঃ॥

নীচিঃ ব্য অল্ল । অনুচ । ইত্যমরঃ ॥
নীড়ে পু লী পক্ষিবাসস্থান । পাকিরবাসা ইতি ভাষা । তৎ পব্যাবঃ বিলাফ ২ । ইত্যমরঃ ॥
স্থান । ইতি নেদিনী ॥

নীডজঃ পু॰ পক্ষী। ইতি হেমচন্দুঃ।।

ডিজেন্দুঃ পু॰ গৰুডঃ। যথা। অন
কিত নীডজেন্দু বেগে কৃত নিবিডাসন মুজ্বতাষ পীডে। মার শমন তডিং কডার দৃষ্টি॰ মৃড মুডুরাডিব শোভি চ্ড মাডিড।। ইতি
প্রাচীন শিবস্তুতিঃ।।

-নীডোন্ডবঃ পু॰ পক্ষী। ইত্যমইঃ ।। নীত জি প্রাপ্ত । নেওয়া ইতি ভাষা । যথা। নীত যদি নবনীত নীত নী কিনেতেন। আতপ তাপিত ভূমো নাধ্ব নাধাব নাধাব। ইভূঁ্য-॥

नीजिः जी नगः॥ भाभगः। ইতি (मिरिनी ।। 🕸 ।। व्यथ नीजिनाजः লিখ্যতে। নয়স্য বিনয়ে। মূলু• 🍇 🕹 नयः भाज निम्हयः। विनय्यारशिन्तु-যজ্য স্তাহ্য কৰা বা নিছতি।। আ-ন্থান পুথম রাজা বিনযেনোপপা मरय । उर्जा १माज्यान् जरजा जृ-ত্যা স্ততঃ পুৰা স্ততঃ পুৰাং ॥ স-मानूत्रक्रपुक्षिः भुकाभागनउ८-পর:। বিনীতাত্মা হি নৃপতি ভূ্য-ষী শূষ মশু তে।। এব করণ সাম-র্থ্যাৎসংযম্যাত্মান মাত্মনা।নিধান-यनবিদ্যুত্ত। স্বন্ধী ত হিত মাত্মনঃ।। জিতেন্দ্রিয়স্য নৃপতে নী তিশান্তা-नुमातिगः। ভषर्ड्।ब्ज्विणा वन्त्रः কী ব্ৰয়শ্চ নভঃস্পঃ।। ইতি নীতি-भग्थ विजीय भुरयागः॥ #॥ मगत উবাচ। যথা নীত্যা পুযোক্তৰ্ব্যঃ সুত আত্মা প্রিয়া তথা। তেখা বিশেষে: नहिन नेताहात्र वस्य व ।। अर्थ উবাচ। क्राब्धे मृश्वारकम् यया नीः ত্যাবিযুক্ত আত্মাসূতো বা ভা-র্য্য ক্র তিদ্নিশেষ শূর্ষ মে ৷৷ জ্ঞান-वृक्षा अध्यावृक्षान् वर्षीवृक्षान् नूम-ক্ষিণান ।সেবেত পুথম বিপানস্যা

পরিবজ্জিতান্।। তেভ্যক্ষ শৃণুষা-मिछ्ड (वम्भाज विनिर्गयः। यमृहू उठ उ कार्याः भारिक रेक्ठ मृशकः त्र ।। \*।। भाषा निष्यानि भक्षाचाः 🍱রীর• রথ উচ্যতে। আত্মা রথী কশা জ্ঞান• সার্থি র্মন উচ্যতে॥ व्यथान् जूराञान् बदी उ नात्रि । 'ठाजााता वर्षः। वना ज्ल मृहा कार्यत শরীর ছিরতা তথা ৷৷ অদান্তা मगाक्य रेम्झवान् मान्सनी यथा। व्यथाना मिह्या गह्रमु ८ १२० शु जिन-**म्**ऽर्छ ॥ यजाव**मः मात्रथिस स्वह्या** (भुत्रयन् इयान्। नरयः भन्नवन म-ম্যক্ পূথিত বীর মপ্যুত।। যথে-सिर्याण न्भिंछ विषयाणा भित्र ছে। ৰবশ্যানি পুসৰী ত মনোজ্ঞা-न मूर जथा।। उद्धान मृत्र कमाया वा मृहायाः नृषमखम। मात्रथिः च व-**मा** माखारनीमः (भुतियिजू स्यान्।। অতে বৃপঃ ষে নিদু যানি বশে কৃত্ৰাম-मे उथा। ज्ञानमार्ग मिक्शाय शुक्र ही -তাৰ্মনে। হিত ।। #।। কেকিব্য স্বেই-যা ভূপোন কর্য্যদুর্পথেরতি। দু-इवा मिलि मुधेवार न मुंश्वाक स्वहरा ।। শোতব্য মিতি শোতব্য পাধিক। मुत्रा हार्वे । भाजक वृत्र्कं श्रीतः क्रिकिवामा। ভবেमहि।। এवः मानुः

বৃচ• বাপি বশ্বিক্ত্যেছ্যা নৃপঃ। স্বে-**ছ**বৈবোপভূঞ্জীত নোদ্দাম• বিষয়• बुष्डर ॥ १ वर्॰ यमि छरवमुङ्गा छमा म म्राङ्क्तिः विन्तुयः । बिरविनुयद् र्रेज्य माज वृत्काशामवन ॥ वर् দ্বসেবী শান্তজ্ঞানৃপঃশতুবশো ভ-বেং। তমাছান্ত মধিষ্ঠায ভবেদানা 'जिटिन्पुयः॥#॥ ष्**ठिः शु**ग्गसुऽ मू८-সাহো বাক্পটুত্ব বিবেচন । দক্ষত্ব ধার যিকত্ব দান নৈত্রী কৃতজ্ঞতা।। দ্ঢশাসনতা সত্য শৌচ মতিবি-নিশ্চয়:। পরাভিপা্যবেদিত্ব॰ চা-बिष् रेथ्य्यानानि ॥ क्लम थात्व मं-क्रिक एक (एव विकाईन । अनम् যা ইংকাপিত্ব গুণানেতীমূপোভ্য-(मर । कार्याकार्य) विভागक धर्मा-থৌ কাম নেব চ। দানস্য বিষয়ে সাম যোগ মেবোপলকতে॥ সত্ত পুঞ্চি यूष्ट्रं अर्याम्यमात्रि उद्ाे # 11 সাম দানঞ্চ ভেদশ্চ দপ্তশ্চেতি চতু-श्रेयः ॥ क्काद्वाभायाः स उटझात जानुभायान् भुरगाङ्गरार। नामुक्कवि

ज्या गर्गप्रः शतिकी विजः॥

मानेमा विवास माखा ज्यानः शति की विजः। माख्या विवास मान ज्यानिक स्थान की विज्ञान की

সতত জেম ভুল্তো ভেদ দও-रगाः ॥ जासा मानम् रु उथा जो-बन्धः याजि शाहद्व ॥ 🛊 ॥ कामः क्रिक्क लाखक इस्सं भाग मारी তথা। এতানতিশ্যানালা শৰ্নিব বিশাত্যেৎ ম সেব্যাঃ কালেয়ু যু-रेक्टारङ व्याङ गरबो विवर्क्सय । তেজ এৰ নৃপাণান্ত তীবু সূৰ্য্যস্য বৈ যথা।। তত্ৰ গৰ্ৱ- রোগযুক্তকা-यदञ्ख मः छारबंद । व्यारबंदिका क्को ज्ञीरमवा शान रक्षवाजान्यणः ॥ वाप्खरमाक भाक्ष्य अरेखेजानि विवर्क्करवर । भन्नजीषु विवरकामू সেবা মেকান্তত গুরেছে।। সতীুযু निकनातीयू (भुना क्यंताह (भुदन । রতি পুঞ ফলা দারা স্তা•স্তাইনকাড-ত ভ্যত্তে ॥ তযোঃ সিছৈ দ্রিয়ঃ সেব্যা বৰ্জ্কবিত্বাতিসক্ততা । মৃগ-याख भुषामानाः सानः निष्ठाः विव र्व्हारं १८ ।। अका ख्या न ब ही ज न्यकार्याज्ञकिनाननात् । व्यत्मः কৃতৃ কদাচিতু ষেবেত নাত্মনাচরেৎ ॥ अकार्यं कद्रांग वीजः क्छानाकः ्विवर्क्कन । अकारण मञ्जद्धिरि है क-वार गटक्जिक्रय।। वर्क्करयट्म जन छ भान भीठ मात्रण नामन । अ-র্থক্ষ্করণ নিত্যুণ ত্যজেছে বাজ্য দূর-

ণ ৷৷ 🛊 ৷৷ অভিশন্তেমু চৌরেমু যান্ত-কেন্বাততাথিবু। সতত পৃথিবীপা-लामखनाक्या मान्य ।। मान्य **म्ख्ना**क्ष्यः व्याम्नि जन्मः। वाक्शाक्ष्यास नर्बत रेनव नर्वाहरू कराठन ॥ ब्रक्कशीय॰ मरा मञ्डा म-ত্যমেক পরাষণ। ক্ষমা তেজৰি-ভাকৈব পুস্তাবাদৃপ আচরেৎ।। यो नामनाभुग दिवध मक्तरमा थिगुर खबा । অভ্যমেৎ ষড্গণানেতান্ তেষা॰ হ্বানঞ্চ শাখত ।। যঃ পুমাণ ন জা-नाठि ज्ञात कृष्को उथा कररा। का-বে জনপদে দভেন স রাজ্যেবতিষ্ঠ-তে ৷৷ কোষে জনপদে দণ্ডে চৈকৈকৰ ত্র্বণ ত্র্বণ । পুস্তাবাদ্বিনিযুঞ্জীত **র**-ক্ষেকান্তত ব্দুসান্।। নিব্দেশবা-वृहामीत भुजाव विद्यभीत्राय ॥ উৎসাহো বিজিগী ৰাখা পৰ্যকৃত্যে -हे वर्गरक ॥ भन्नीन याजा निर्वास् किरवे गठ७ ग्रेशः। मख्रानिक्य সমূতাং বুদ্ধি সর্ব বোজঞ্ছ ॥ অমাত্যে শাক্তব রাজ্যে পুঞ্ছের शूद्रम् ह ॥ अ। क्षि मूर्गक वाणिका ः थन्तरानाः कृत्रभाषनः।। जानानः हेन-न् कर्वदर्श संक्रन शक वाकित्नाः। भू-न् मेर्म्युश्वानाक योजिनः मज्जु करेनः ॥ भूभाषाभात्र म्यूना वक्ष

'ধ্ণেতি,চাষ্টন•। এতদন্তাসু ৰগেষু চা द्रान् मन् क् शुर्याब्द्य ॥ कार्याः कार्य। विजागाय ठा हेव्शां शिकाति-ा॰। अल्डो ठाजामियुक्कीयामञ्जयर्भः यू भार्थियः ॥ मन्यस्मार्यु यूक्षी छ क-এতঃ শৃণু তানিমে। স্বামী সচিব রা-ड्रेशि नि्ब॰ कारका वनस्था॥ पूर्गं ह সপ্তন জেই রাজ্যাক গুরু ভাষি-·ত । पूर्वयुक्तभी हेवार्ग हातः नाजानि (याक्षरयर्थ।। ज्यामिनानि (नयानि शक ठाउरभग्नि जू । मुकारस्टरश्व शृद्ध मुक् शृशासी महानाम ॥ भ-क्षाभीनरवारेन्डव वनावन विनिन्ड-যে। খাদৌ দশসু চৈতেষু চারানাজা পুৰোজ্যে ে!৷ ন যৎ পুকাশ জানী-যাৎ তত্ত্ব চারৈ নিৰূপণেৎ। নিৰ প্য তৎপু গী নার মবশ্যু ছিদুত শ্চরেৎ।। যথা নিযোগ নেতেষা या एग यदानाथा हरत् । उड़ाड़ी **उब न्श्रन्छा**रेत में खरम्हा निरमांकरण्ड ॥ हार्नाःस मिला मार्षः तरहमऽ मिश्रा न्भः। भूरमाय् म्यार्य भ् एडरानीत्मव **मा**ष्यप्र ॥ चनुत्व **চाथ मुद्यार एय द्रुकारी। गरानरम ।** निः का लान मध्या पा शृहिष-कालि मिलि।। अञान् हात्रोतु चरः দশে গুলাত মজিলা বিন্যাপীন গে

क मिला नार्छ निक्ता नुहिल् कन ।। निकृत्वमध्त नहात्ता निका নোঁৎসাহবৃদ্ধিতঃ। সংস্ততো নহি স্বিত্ৰ নাতি বীৰ্যোন বামনঃ॥ সতত न दिवाद्यन्ति न दिशाणी नाश्रवृष्टिमान् । নবিত্ত বিভবৈ হী নোন ভার্য্যাগুঞ্জ विद्धिजः॥ कार्ये भगति। नृश्विना গুছাতত্ত্ব বিনিৰ্ণয়ে আনেক বেশ গুছণ कनः ভार्यता मूरिज यू जः ॥ वह पम বচোভিজ্ঞ• পরাভিপায বেদক•। দূচভক্ত পুসৰী তি চার শক্ত মসা-, धुमः॥ अधिजिक्ष्टः स्वः ताडा क्वि माञ्च मरेम खथा। विनक् भाष ह मु-र्गामो (उर् नेका वियादार ।। य-उत्पूरत পिত्युवर्गन् शीनान् द्वामि-याकेल्ए। युक्षान् शक्षाः स्था व्-कान् डिरिंग यो वृष्ट्रि उर् शताः॥॥॥ শুकाउ शांत्र गुळीशाय किया वृक्षा ननीविभीश रेनकः बल्लः कुनाहित् বৈৰে। ভুঞ্জীত পাৰ্থিবঃ।।ইনকাকি-नीख गरीकी वुल्डेस्यवाय रेनककः। व्यमाज्ञान् नदा मुकान् छार्याः शू-वाश्योधक है। जुद्धर्गाट महरु जू भः बण्णार नमाहब्ब। धर्मार्थ काम व्यक्तिक भूष्टिक भूषितमाधिनः॥ উপেত। धीयराज्यम् भूभभाभाविकी-र्वित। यथ करिना गरा जाउँ का

কিক্পাল্ট কৈব ছার্ডঃ। পুত্রবিত্ব विवातन क्यं जूनः मूनाय याद।। ততো দুর্গ নৃপ: सर्गाद मुठेठ जय वृष्त्रय ॥ #॥ न वृष्ट्रभगार्ग निराहा छ। कराविषयमगढ्या अर्मुख्य म्राप्ताः বিপ্রান্ প্রেত্যের দুম্মভান্তবে । ন বিরোধস্ত তৈঃ কার্য্যঃ স্থানি তেষা নচাদদে ॥ কৃত্য কালেষু সতত॰ তানের পরিপূজহেৎ। নৈষা । निन्ता शुक्रहीं ज नाज्यम्याः जथा हाद्र ॥ 🗱 ॥ এব- नृष्णा महावृद्धि छक् মঙল সংযতঃ। অপুমাদী চারচকু র্গণবান সুপুষয়দঃ॥ প্রেত্যেহ মহ-তা পিদ্ধি পাণোতি সুখভোগবান रियर्श्वरेगर्साकिङकाचारिङ:भूका-निश (या ब्रायट्या नृशम 🕫 मृज्के दु॰ সতত স্ব॰ বিনা**শ**যে**ং। স্বর্তীজ্ঞো** ভূ প তনযো বিকার॰ যাতি নিশ্চয় ।। নির্বিকারায় সতত তমুদ্রৈঃ পরিপ্ জযে**ে।** ভাৈজনে শয়নে পানে পুক-ষাণাঞ্চ বীক্ষণে॥ নিযোজহৈৎ সদা-গারান্ ভূপঃ কাম বিচে**ই**নে। অ**ষত**-व्याः ज्ञिर्या निज्यः हान्रयं म॰ভव-ষ্ঠি হি ৷ তমাৎ জনায় মহিষী মূপ - शां क्यां श्रेतः ॥ (मा। यिवा नि-<u>मूळी ञ्</u>रयोवहाक् ग्रवताथरंगाः। **च छः** शूद्रभुर्तार्ग जू यज्ञेज निरंवशयर

॥ ज्लल्यमा क्रांग्स विहः मार्खं 
जरेषवह। जयः विश्वा । स्वा । स्वा । स्वा । स्व । स्वा । स्व । स

নীতিঘোষঃ পু॰ বৃহস্পতিরথঃ। ইঞি ত্রিকাণ্ডঃশ্বঃ॥ নযধুনিক।।

নীতিসারং পু॰ ইন্ট্ণপুতি বৃহস্পত্যুণ ক নীতিশান্ত বিশেষঃ ৷ অয়৽ চাণ গক্য সংগৃহমূলণ ৷ গক্তপুরাণে অভ ইামধ্যাযেরজি ৷ বাহুল্য ভিবাতে সমুদায়ণ ন লিখিত্বা অষ্টানা না ধ্যাযানাণ শাথ্যিকাষ্ট মোকা লি-থ্যন্তে ৷ যথা দু স্কিন্তিঃ সক্ষণ পুজ-বী ভ সিদ্ধিকামঃ সদা নরঃ ৷ নাসণ ডি বিহ লোকায় পুরলোকায় বা হিতংশান্ধ ৷ আপদর্থে ধনণ রক্ষে नंशि

क्रातानुक्कुति त्री । श्रीकानः সততপুরক্ষেদ্যরৈ রপি ঘটন রপি ॥ २ १ (या ध्वानि भविज्ञा व **প্রবাণি চ সেবতে। প্রবাণি তস্যন** শ্যন্তি অধুব নষ্টমেব চা। গা রাজ্য পালযতে নিউ্যুণ সভ্য ধর্মা পরা-यनः। निर्द्धिका शहरेमनानि कि **তि॰ शर्मान भी ना**य्य ॥ ८ ॥ ज्ञा বহুবিধা ঠেবা উত্তমাধ্য মধ্যমাঃ । नियाकवता यथार्थम् जिविरथ-ণেব কর্মসু॥ ৫॥ গুণবন্ত নিযুঞ্জীত खगरीमः विवर्द्धारय । भिखंउम् গুণাঃ সর্বে মূর্থে দোষাশ্চ কেবল II৬II ন কশ্চিৎকস্যচি**ন্মিত্র** ন ক-न्द्रिट कम्याहिष्ट्रिश्रुः। काइगारमव কাঁয়ন্তে নিত্রাণি রিপব তথা।। १।। পভার্য্যাঞ্চলমিত্র সরাজান স-त्नोक्रम । क्रिक्कुक अरममक मृत्र छः পরিবর্জনেৎ॥ ৮॥ ইতি গাকডে নীথঃ পু• নিষম্ভা।পুাপযিতা।ইতি সি-का अरको मूप प्रमूपा कि वृद्धिः ।। कल न्नी। इंजि ने किसनारता श्रीपर्विः नीषु की वजीक ॥ वन्द्री निकः॥ চন্দুঃ। রেবতীনক্ষত্র ইতি হেম-हम्मुः॥ नीत् मुनिनार्थः ।। नीताः भू क्रम्यवृक्तः। इउ प्रदेशः॥ भाजाकम्बर । इंडि जुड़्बानियंकः॥

नीत्र

वक्कवृष्णः ॥ निवारणाकवृष्णः । इंजि विविधी।।

नीयनान जि शुलातान । यथा। नीयमाना ने गहिए सिर्धी मन्ना॰ उम्राप्टिज का निकाश्वान ।।

नीत्रं क्षी जल। ইত্যনরঃ ॥ त्रगः । ইত্যাদিকোবঃ ॥ नीत्र অক্ষেপ-गीयानि यथा। निष्ठीवाम्क् मकृत्र्व विवाग्य न मः क्षिश्य । ইতি गः क्षत्रभूतांगः ॥

নীরজ প্লী কটোববিঃ।। পদ্ম । ইতি
'মেদিনী ।৷ মুক্তা । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ
।৷ জলজাতে তি ।।

নীরজঃ পু॰ উদুজন্তঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী। উপীরী। ইতি রাজ-নির্যন্টঃ ক্রে

नीत्रजः जि निश्र्विष्ण श्रृष्ठां ि॥

• অत्रज्ञकायाः जी॥

नीत्रजः वि दित्रजः। त्रमणाञ्चितान्।
यथा। दिन्नि दिन्नि नीत्रजत्रद्या नीत्रजत्रद्या गमानि इत्रयणः। जायाजाः जिथ दर्यदिकारिन याम् वायाजाः जिथः ॥ इज्रु फुट ब्रु थंना प्राः
नीत्रमः विश्व नीत्रदेशः यथा। निहिज्
थ मूल्य नीत्रदेशः विश्व होना इक्
यादनीत्रदेशः। इजिद्य कर्नतः । क्रु

<u> নীরাজ</u>

वि । यथा । जावाहर निवदस्था । विव्रहिवध्ना मृत्य मा द्वानि । क ब्रकामियन मत्नर निशेषिक नीव-रहा रही नि ॥ इंकु इन्हें ।। नीविधिः श्र मन्दुः । इन्हें मद-ब्रह्मावनी ।। नीविधिः श्र मन्दुः । इकि मद-ब्रह्मावनी ।।

नीत्रकुः वि चनः। ইতি एक प्रमुः।।

हिमुत्र हिन् । यथा। विभागिय छ

वार्क्कित्य कि विश्विद मुत्रमः

वाः हातः प्रिरिय छ राः। नीत्र कु।

वार्काक जा भिर्म जलाना छ।

भवत्वाक जा भिर्म जलाना छ।

भवत्वाक जिल्ला छ। स्टार्किकाः।।

हे कि का विमान ।।

नीतमः श्रु मार्डिमः। ইতি হারা-विद्याना तम्मृत्त वि। यथा। मृक्षा त्री हिट किरिकार्त जा छ॰ तमनम॰ जन्म मृक्ष हिम्मृक्षाती नीवम॰ मर्वामित छट। ইতি शुक्षः॥

नीताथः श्रृ उपुः। उषिणान इणि ভाষা। তথ পर्यश्रयः। अन्यस्त्रनः ३ बनिद्यानः ० कन्यतः। इणि श-श्रवनीशा उपुर्व कनाथः ७ नीत्रकः १ नोतनः ४)। ইতি सम्त्रदावनी ॥ নীরান

नीवाइन की वाहनायशास किं-नीजा कर्नी अही । त्नारमण कर्कनः यव मा नीतार्बना। नीतम् भाकु एकम् অজন কেপোযত সানীরভিনানা । ইত্যমর টীকাযা• ভরতঃ ॥ 🕸 ॥ ত विधान थया। नत् काल महा-ষ্টন্যা॰ দুর্গাযাঃ পরিপুদ্রন । নীরা-क्रन॰ मन्निमाख अर्विति वन वृक्षाय ।। विधिः नीताजनमें दिः मृत् भा র্থিব সত্তম।কৃতেন যেন চাখানা• গ্রানামপি চেষ্টন শ আখিনে শু ক্লপক্ষে যা তৃতীয়া স্বাতি যোগিনী । अभानता अभूतरेमत्व गृङ्गीयाए স্থান মুক্তন ।। নীরাজন ততঃ স र्यप्राप्ट मन्थुराख मिवरमञ्चरन। नीज्ञा-बनमा कानस शूर्वमूक्स उ मग ॥ 🕸॥ বিধান্ মত শৃণু নে কৃতক্-ত্যে ভবিষ্যাপ ত্রেক হয় মহা সত্ত্ব॰ সুমনোহর নেব বা ॥ পূজফেৎ नश्र रिवनान् गञ्ज शृङ्गारिकाः मुण्डिः 1 তৃতীযাদৌ **প্**জযিত্বা নযেত্ত• যক্ত मर्छे भर्भा अ।। (ठ हो। निक् भयः सम् জানীযার শুভাশুভ । পররাষ্ট্র বি मर्पः माप्रे सि यमि भनाया ॥ मियार श्वसंयि ठाम् निम् ां नीयभावा नेश्राहरहत्वश्रि

मन्तर दर्गा। ठरेंथव मूथ नामाकि

न्त्राज

नाम अर्गाष्ट्राकार्या चेकि। यूर् काश्चा-चिम्य्रेक्यंताख्यकाक्षाम्भेक्रियम्-श्रम् उर किना मिनार्गुल भन अस्था उदिय भूता। उसा कार्यं म মন্তা শ্চ নৃপতি বিজযেদিপূন্।। #11 शुा क नी ता जन अर्ग्याफ्रमन्या न्श नखम । जुन्भाखी जू बाम्मा • ज স্যা মেব সম্যুচরেৎ ॥ কার্ত্তিকে প ঞ্বশ্যাংকা তত্তা ভাবে তুপার্থিবঃ। वेनान्याः अभूतरम्याहि र्खनायन ষোডশ। দ**শ**হস্তম্ভ বিপুল সর্য্যাদ্বৈ তত্র তোরণ । দাত্রি শব্ধসমত্রস্ত इस्रायण विस्ठः॥ यक्कार्थः मखः भः अर्यप्रात्म(४) (विनि विनिर्शय 1 विष्ठा (का खत्र ज का श्रे विषि अर्येऽ। দ্ৰুভমাণ।। যত্ৰ সংস্থাপ্য চাৰ্ষণ্ট পূ-জিত্ব্যঃ পুরোহিতৈঃ। সর্জ্রোডুম্বর भाशाना मक्त्रिनम् राथ वान्भः॥ मर-স্য শত্ত্বাঙ্কিতৈ শ্চকৈ ধৃ<sup>°</sup> জৈ শ্চাপি বিভূষযেৎ। তোরণ কনকৈ রব্দ্ন खर्था नानाविदेश म्यं रिज्ञा। ভक्कांजिक• मांनि कर्षः मिषार्थः द्वित्तरमा जू। कथेरमा निवधीया श्रीष्ठ भाष्ठार्थ भारतक्षर्भ अवन कृष्वा हि-क्लाला कं नवगुरान्। विस्थर पर्वाः खब्द्रम् विष्यु मूर्थान् भूश्केत्र ।। जारिका खिलाक श्रीमिक सिञ्चिक्- नीवाज

ত্য পুर्द्गाहिङः । রবেস্ত यक्ने रिमार् পুজেশদ্য উমেব চা৷ পুৰুহ্তস্য বি-स्थान द्यान मेखार नाहरत । একৈকস্য বৈহসু বা অষ্টোত্তর শত ঞ্বায় স্থ্যান্তু পুত্যহ : হোম চতু-বর্গস্ত সিদ্ধয়ে। সমিধকাপি হো-তব্যাঃ পলাশ থদির তথা ॥ ঔ-ডুম্বরঞ্চ কাশার্য্য নশ্বঅঞ্চ পুরোহি-তঃ ৷ 🗱 ৷ সৌবর্ণান্রাজতান্বাপি मार्खिकान् वा यश्यह्या।। अर्यप्राजु कन-नानशिकन भन्नवयाजिजान्। कि-পেত্তেমু ঘটেম্বেব সনকা হরিতাল-कः ॥ ठनरनकः उथा जहः श्रियक्रकः मनः निवाः। অञ्जनक इति मुख्य त्य-जा• मञ्जी• जरेशव हा। **उद्यो**जकः भून কোষ: সহদেবাং শতাবরী । বঁচা সনাগ অসুমাণ সোমরাজী কভিন্তি का॰ ॥ जूर्यक कत्रवीत्रक जूनिनी हैं-ল মেব চা এতানি নিঃক্ষিপেরাখ্যে कवनानाः भूरदाहिजः।। कनरैक त्रषूरेक यंद्ध माक्षा मुक् मुक् তথা। কর্ত্তবেটা শান্তি কামেন নীরা कन विधि नृशां # 11 अव मधाई भागा भू भूका जि इंदरिन खथा। भू ৰোক্তান পূজ্যিত্বা তু নৃপঃ সপ্তাহ माठात्र ॥ यादमीतात्न अर् जिन वमुका ब्रह्मिश्रंह । ब्राह्म न् एक

क्षो जू निदरमहाद्वि मिहुकः ॥ ना-রোহযেতু তুরগ গজ বা তব পা-র্থিব: 1 যাবৎ সপ্তাহ পর্যন্তে যানে-नात्नान रेव वुरङ्धा का जिका मी-नाविरेष रेन्टव नषु शायम याविकः । त्याररेक द्वी विनः क्रयाहाम 🥹 क्षन मञ्जदेदः ॥ भूरत्वीकामाञ्च (मयी-ना॰ मधारु॰ यातमूखनः। मधामङ्कि **ভু রেমন্ড॰ পূ**জযেক্তোরণান্তরে ॥ স্র্য্য পুত্র- মহাবাহ-দ্বিভুজ-কবচোজ্জল-। ब्वाड॰ भूत्रवाजन किमानु मु थ। वा-সসামকশা বানকরে বিভুদ্দকিণস্ত कद्रः भूनः । जयनः नाजा दल्लायाः সিত সৈশ্বব ন-ছিত ।। এবিশ্বধন্ত त्रमञ्च शृष्टिमायाः यरहे शिवा। সूर्य পূজা বিধানেন পূজ্যেন্ডোরণান্তরে ।। 🗱।। পূজ্যবিত্ব। তু রেমস্ত ছিরদ । ভুরগভথা। আহতাম্বর সংবীত সুক্ **इन्ह**न समृदिञ्•॥ सूदर्शदक्क निर्द्धि•्र শ বিচিত্র কবচাদিভিঃ। যুক্তস্ত হোম সওস্য ঐশান্যা মখবেদিকা• । भूर्बः कृष्ः नरयम्थं गक्षभावः भृ থক্ পৃথক্। নীয়মানে গজে চাঞ্চে পূর্বোকঞ্চ নিমিত্তক ।। বরাদীক্ষত নৃপতিঃ ফল• চৈবাবধার্যে । হো-य क अरम्या खत्रम्याः देवदा यु हम्पि शिक्षः !! रेन्द्रविनिः श्रीतृम्। अहि-

তো রীশ্য সৈদ্ধব । নীতা্য তুরগা-याम्। जंदिन छी॰ मुगिक्षिति ॥ प मार भूता है उ उब मन्मखः भा-डि मखिकः। उरक्रगायां बिद्धः उरत्रीयाचा रयः मह ॥ उसा महाद সর্বকল্যাণ বিপরীত মতোন্যথা । **%। भा**था (मोडूबद्री मानुनि म**ब**-भाक घटि। एक । जिल्ला विश्वावर जूबगान् शकान् जूशक रिम्निकान्। त्रथा क म म्मृत्मग्रेखः मास्रिकः পৌষ্টিকৈ তথা।। সেত্যন্ সহিতৈ বি প্রৈ শতবুরক পুরোহিতঃ। দি-क्शालाना गुरानाक म्टिक्ट म-বৈষ্ণবৈঃ॥ বহুধা চাভিষিচ্যাথ ত-जः भोवर्ग मर्भगः। वीक्वयिदा म्श्र-**ঞ্**ত্বিক্ ততো মন্ত্রিণ মেবচ ॥ রাজ্র-পুত্রাণ স্তথানাত্যানন্যানলি চ পৌ-त्रवान्। कन्नयन् विक निर्मू वः नदी-त्व जू मर्भार्य ।। क ।। ठजूतक वन महानि कृरेद्व भाषि भौद्वित । মৃশ্যথ শাত্রব কৃত্বা ছ ভিচারক ম-ন্দকৈঃ।। ছবি শূলেন বিজ্ঞা ত॰ শিরঃ थाइन एक पराया क्षा आहार्याः कवि-কা• পশ্চাদভিম্ব্ৰ্য হ্যায় বৈ ৷৷ ঐ-रेन्द्रः शुाजाकरेत्र मं ट्यि नि । बालु म-यः भूनः। जम्दान जू माजा भ्रमाक्ष् नृश उरा ॥ गाइनुख्य भूवाङ विश्वः

नीवान में वर्षणप् ७:। अधिक भूताहिए। **हार्गाः गर्व** वर न्शरथा। यू तर्शा निमिजानि बालाक्यन्। 'বাদিএফাবৈ ন্তমুলৈ রাতপত্রৈ বৃত ख्या ॥ गत्हमीताज्ञत्न ज्ञाजा नाज्ञय-मिव यापिनी । मिष्य मुख्यापि ৰণ রবৈ গ্লন্থতং ।। কোশনাত্র ত তো পত্ন পূৰ্বদারেণ পার্থিবঃ। য भूतः भुवित्मिष्टिशु र्यकः यायादः भू রোহিতঃ।। তত্র গত্বা দক্ষিণান্ত হি-রণ্য• গা• ভথা তিল•। দত্বা পশ্চা-দ্বিজেভ্যস্ত দদ্যাদ্দানানি শক্তিতঃ!৷ **এব॰ नीताबन॰ कृदा वलानाक म**शी-কিতঃ ।পেত্রেই চ ন্তিরা॰ লক্ষী नृशिक्तिः भागु याख्या। #।। दमकाम्-ত সংজাত সাগরো ভব সৈশ্বৰাথেন সত্যেন বহুসে শ কু তেনেছ না বহু া যেন সত্ত্যেন রেমন্ত থেন সত্ত্যেন ভাক্ষর•া বহুসে তেন সত্যেন বিজ্ঞ যায বহৰমা ।। আভ্রন্ত নৃপান স ভ্যানখারোহণ মাচরেৎ। অ। कश्चा-ণুে মহিব্যান্ত শুক্ষান্তে লব্ধবেত্ততঃ।। गश्यित ज्ञा जुन भग्रकाभित म श्रिज । पूर्वाकरेजः मनिकार्रिशः खीिं नर नमहर्य ।। क्रंड जू . ভূমি গ্রহণে তৃতীযাযাণ নিরাজনে। ्रं ज्ञकः यमि बांदिक उनमुम्डिक- **নীবা**জ

বৰা । সূতকে মৃতকে বাগি পাৰি-वरे येथे ज्या। वल नीताकन म-र्याख्यां क् वित्नवं ॥ जर् **भ्योह• ७**(दुमुद्धा• वऽवशात वित्नी-ক্যা তথা বিবাসিতে যজ্ঞে পর রাষ্ট্র বিমর্দ্ধনে ৷৷ অযম্ভে কথিতো রা-জদীরাজন কমো ন্যা। ইতি কালি-কাপুরাণে ৮৬ অধ্যাব: ॥ 🛊 🛊 ॥ নির্মাণ্টন । আরতি ইতি-ভাষা। তত্ত্র পঞ্চ नीज़ाकन यथा। शक्क नीज़ाकन• कर्गा भूषम भीभगामय। विजी-' সাদকান্ত্রেন তৃতীয়**ণ বৌতবাস**-সা।। চ্তাপ্তথাদি পদৈত চতুর্থ পরি ীর্ভিত । পঞ্চন পুণিপাতেন সাষ্ট্ৰাক্ষেন যথা বিধি ৷৷ ইতি কা-লোভরতন্ত্রশাঞ্চাটতস্য বর্ত্তিকাদি शुगान यथा । ऋहूमा ७ कर्न्त ষ্ত চন্দন নির্মিতাঃ। বর্ত্তিকাঃ সম্ভ वा भक्ष कृता वनराभनीयक ॥ अ र्गाट मध शुरीत्मन नद्भ घणारि বাদ্যকৈঃ ৷ হরেঃ পঞ্চ পুদীপেন ব-হশে। ভক্তি তৎপুরঃ।। ইতি পা-प्याख्तथाथ २०१ व्यथायः ॥ क्षः॥ वर नीताजन माहावारः। कार्यः वुका नात्रम निधारम । वह्वर्खि नमाण्-क ब्रुवंड: (क्र वित्र अर्ग्डार्श-রাত্রিক । । । কর্নক টি । । । । । ।

कुश्रात जू यः वर्गा कुक्रो (कुन्य मूर्किन। व्याताबिकः मूनिए अपिन मिष्ठिकु गवायः।। ज्यानिजा मी ধ্বিমন্ত সকপূরি করোত্যারাত্রিক নৃপ। কৃষ্ণ স্গ্ৰ বসতে লোকে নপ্তক্-ল্পানি মানবঃ।। তত্ত্বে শিবোমা স্ব-श्वारि। गज्रहीन कियाहीन यटक् ত॰ পূজন• হরেঃ। সর্ব॰ সম্পূর্ণতা-মেতি কৃতেনীরাজনে শিবে॥ হরি-ভক্তিসুধোদযে। কৃত্বা নীরাজন বি-रका भी भावना। जूम्माया। उरमा বিকার• জ্যাত জিতে ডিমা• চ কো ভবঃ ॥ অন্যত্র চ। কোনৈয়া বুন্ধাহ-जाना मगुम्याग्न कार्रयः । **ए**र-ত্যালোক নাত্রেণ বিষণাঃসারাত্রি ক মুখ ৷৷ যচ দীপৰ্য নাহাত্ম্য **शृक् विथि** मिख उट् । पुष्ठेवा সর্বন্তাপি প্রাধেণাভেদতো ২ন যোঃ। অতঃ সাদর নুখায় নহানী-ब्राङमिब्द्रिन । दृष्टेवा र्माशव नरेर्ब र्जन्म। माताबिकक यह ॥ छमुक জীপুলস্ত্যেন , বিষুগ্ধর্মে। ধূপণ চা-রাত্রিক পশ্বেৎ ফরাভ্যাঞ্চ পুব-়স্বতে। সলকেন্নটিণ সমুদ্ত্য নাতি विष्णाः भद्गः भन्।। भृनागरम ह। द्रीत्। जन्त्र या भर्मपुर दुनव दिवम प्रकिशः। मेथ देशानि विभुश्यान्ति ह नीग

পরনং পদে ৷৷ ইতি হরিভজিবি-লাসমা শ্রম অবশিষ্ট পারাত্রিক শদে দুষ্টব্য ৷৷

নীরিন্ধঃ পু• অশ্বশাংথাটবৃক্ষঃ। আশ্বেওডা ইতি ভাষা । ইতি শ বচন্দুকা ॥

नीयक शृ खी तागाजायः। उट शर्यतायः। सास्तृ २ वार्ड ० जना-भयः ८ जातागाः द्या त्रायम्प्ताः वि । जट शर्यतायः । कृष्ट्रिः २ छिल्लायः ० वार्डः ४ कनाः द्या के जिल्लाः भीकाः भी स्रक्षेत्रधिः। के जिल्लाः ध्राः॥

नीककः वि त्रांगा ज्ञावतान्। यथा।
नामा १ शि खदबा जिन खदा नर्छाश्वाहनः। शृञाङ्गानीककः क्रियाः
खया द्वागा प्रियं क्वान्। १ जि नास्वाहा गाः।

নীৰপণ ত্ৰি ৰূপাভাববিশিষ্টণ যথা । নীৰপস্যাপি কালস্যইন্দিয়বে-দ্যব্যক্তিগুপগদেনতি বেদান্তপরি-ভাষা ॥

নীল গ্লী নীলী। ইতি নেদিনী।।
কাচলবণ ।। তালীশপত্র ।। বিষণ
।। সৌবীরাঞ্জন ।। তুপা । ইতি রা
জনিষ্ট ।। নৃত্যাকাঠোতর নিত্র ক্রণার্ডাক্ত করণ বিশেষঃ। ইতি, नीव

जेकीजनात्मामतः ॥ 🦈 নীলঃ পু॰ পর্বতবিশেষঃ। স্ভূইলা-বৃতস্যোত্তরতঃ রম্যক বর্ষস্থ সীমা পর্বতঃ। প্রাকাষত উভযতঃ की রোদাবধি দ্বিসহসু যোজন পৃথুঃ। িঅযুত যোজনোৎসেধঃ। **ইতি** ঐি ভাগব্তে ৫ক্ষেক্ষ ১৬ সধ্যায়ঃ॥ 🖟 ॥ মণিবিশেষঃ। নীলন্ ইতি পারস্য ভাষা। अम्याभिष्ठाञ्हरवं नानिः। ्था। गानिका मुक्ताकन विक्रमानि াৰুৱাত পুশ্লক বছু নীল ৷ গো-েদ বৈদূর্য্যক মর্কজ্ঞস্যু রক্ষান্যথো-क्त गृज्द मुवर्ण।। ই छि सू ब् विष्ठा निक्षा ७८ शर्यायः । मोतित्रः २ नीनाम्मा ७ नीता ८ शवः ४ ज्नेगु-री ৫ गरागीनः ७ मूनीनकः १। य न्। ७१ । जिल्ल्युः। उषयुः। क्य পিতানিলাপহত্ব• ৷ শরীরে শৃতে সৌরি র্ম**ক্ল**দে। ভবতি। ইতি রাজ निर्घण्डः ॥ 🗱 ॥ व्यथः इंस्तु नी नगरनः কৎপত্তি পরীক্ষাদি যথা 1 তত্তিব नि॰ इव वश् कर्मानवां मु वहां कृत वा-व वननी अभूग भुदारवा। (मर्देश পাত দিতিৱস্য নিতান্ত কান্ত প্রো **्रकृत्र** नीत्रज्ञ सममूर्ण त्व्यं यूग्पः ॥ **ত**ে পুৰ্ত্যবাদুভৰ শোভন বীচি ভাসা বিস্তারিণী অগনিধে অপকছ

ख्याः ॥ सृष्ट्रभाषाय भिना वज्रु कर्कता जान मःगुजाः । जिहुकाशहन
ह्यया मर्गरमारेषण मृषिजाः ॥ खडा धन् धन्
व हि बामर्छ गण्य खडा ज्वयः । भागेद्रः
मःरवाधिज थिय छान् शुभः नेहि ज्
त्रयः ॥ थार्यभाषमा १ त्य मृद्धाः भागदा।
या मार्यभाषमा १ वात्रणा मिन्द्रनी व्यम्भः
जात्वताद्वादि सामवः ॥ यथा ह भाग्या । स्वात्रणात्म काज् कृ ज्यः जत्व ।
हेन्द्रनी व्यक्ति ज्या मृद्धेव । स्वित्रण भद्मा वागः भत्नी का अल् ज्यः व्यक्ति भद्मा वागः । भत्नी का शृज्ये । व्यव भूज्या म्हो हेन्द्रनी व स्वत्र व जिल्ला क्रिया व्यव हर्षः क्ररमस्त्रीः भद्मा वागः भद्मा विश्वा । या वर्षः क्ररमस्त्रीः भद्मा वागः भद्मा विश्वा । या वर्षः क्ररमस्त्रीः भद्मा वागः भद्मा विश्वा । स्वत्र । हेन्द्रन

**নীলমণি ভষাৎ ক্ষেত সুমহ্তর**ণ ॥ তথাপি न भद्रीकार्थः खगाना म তিবৃদ্ধযে।মণি রগ্নৌ সমাধেষঃ কথ-ঞ্চিদপি ক্রুদ্রনা । অন্নিনাত্রা ২পরি-জ্ঞানে দাহদোধৈশ্চ দ্বিতঃ। সো **২নর্থায় ভবেডভু: করু: কার্ন্বিতু** ख्या ॥ कार्षाट्य नन कत्रवीत सुद्धि कार्त्रा इंट् वूरिक्षः मरवर्ग्यताः । कथि-তা বিজ্ঞাত্য ইমে সদৃশা মণিনেন্দু-তেষা নিত্যমেৰ বিজেয়ে 1 কাচা मथा वनुख्द विवर्षभाती विल्यस्य ॥ इन्द्रनीत्वा यमा किन्द्र विज्लान তানুবৰ্ণতা। রক্ষণীয়ে তথা তানু। कत्रवीरत्राष्ट्रभनावूरजो ॥ यम् । मध्य-গতা ভাতি নীলস্যেন্দ্রাযুধপুভা। তদিশুনীল মিত্যাহ মহার্য ভুবি मूर्सकः॥ यस वर्गमा ज्यसार कीरत শত ভটে। স্থিতঃ। নীপতা তন্নযেৎ **नर्द•** तरानीनः म উ*ण्डा*ठ ॥ य পদ্ম রাগস্য মহা খেস্য মূল্য ভ- " विद्याम ममूर्थिजम् । छिरमुनील-मा महारूपमा जन्म मन्या जूनि-তস্য মূল্য ।। ইটি ংকডপুরাণে ই-न्तुनीवश्रवीका । 🗱 ॥ यानद्राखदः। **₹**िञ्जिमिनी।। नोल्युनं:।। नील्लोयिथः ॥ নিধিবিশেষঃ।। লাপুদ্ধ। ইতি ছে-

महन्तुः॥ मञ्जूरवायः। ইতি जिर्काख-(णयः॥ वर्ष्ट्रकः। ইতি রাজনির্ঘন্তः ॥ नीलवर्षयुक्त जि। ইত্যমরः॥ ॥। नीलवर्षयञ्जि यथा। শুকः > रेणवा-ल॰ २ मृत्री ० वालज्भ । ८ वृथः ६ व॰ माङ्गदः ७ मदक्ताः । ইन्द्रनील-मिशः ৮ সূর্য্যাখাদীনি ৯। ইতি কবিকল্লতা।।

नीवक क्षी काठववन ॥ वर्ड्डवार्॥ অসনব্কে পুণ।ইতি রাজনির্ঘণীয়া नीनकथेः भु॰ मिवः॥ समृदः। इंडऽ-নরঃ॥পীতসারঃ॥ দাত্যুহঃ॥ গ্রা-মচটকঃ ॥ খঞ্জরীটঃ। ইতি ছেম-চন্দু:।। মূলকে শ্লী। ইতি রাজ-निर्यक्तः॥ #॥ विजयमभागाः नीव-कर्छ पर्णन विधि यथा। कृदा नीता-कन दाका वल गृष्को सथा वल। শোভন• খঞ্জন• পশ্যেৎ হল গো গোষ্ঠ সন্নিধৌ ৷৷ দর্শনানস্তর নম-স্কার মজোয়থা। নীলগুীব শুভগুীব मर्वदास क्वशुरु । পृथिवता भव-তীর্ণোসি এঞ্জরীট নমোস্ত তে॥ ত্ব॰ যোগযুক্তো নুনিপুত্ৰক স্ত্ৰমদৃশ্যতা মেৰি শিখোদ্ধমেন। ও দৃশ্যমে প্ৰা-वृषि निर्माणयाः वः शक्षनाम्हर्य। म-या नमास्य ॥ अ॥ पूर्व वित्मारवान-त्रिष्ट्रिं**७मऽ ७मऽ म**र्भेन कवा॰ यथा।

ीविभ

चातुषु रंगीयू शक्त वांकि गरिश तर्गयू ब्राज्यपुरः जनवरः मूठि नाद्यवय् । छमा हिं किन नथ लाम जूरवयू मृष्टे। मुःथः प्रेमाजि वस्मः थलू थ-क्षत्रीहेः ॥ 🛊 ॥ निश्विष्णस्य कवाः रथा। विखः दुक्ति कार्य मिषा म তুলা শক্তে স্থতা**শে** ভং• ৰাম্যা ম-ফ্রিভ্য পুরদিকি কলি লাভঃ সমু-मुनिध्य। दायवप्राः वत्रवक्कः यक्ष म লিল পিৰ্যান্ত্ৰাত ভিন্নে ইশান্যা मद्रा धुद्र निगरिक दिश्लक्ष र श्राम् ।। कः ।। यमुख्यक्षन मर्गन शुायिक्छ॰ यथा । **चण्छ शक्ष**न म्ही (मब वाकार शृहन । मान कर बी अ वर्गाइ ज्ञान भावी विभी क-े लैः ॥ इंडि डिश्प्रमिउत्यु मूर्गाः 'ৎসৰতত্ত্বণ ম

मिनक्छे।कः की कपुष्णः इठियाह-विश्वेशाः श्रिकारक जि ।! विश्वेशाः श्रिकारक जि ।! उद्भग्नीयः । जर्भाश्वाद्धः वन्याजी उद्भग्नीयः । जर्भाश्वादः वन्याजी उद्भग्नीयः । जर्भाश्वादः वन्याजी अ विश्वेत्रकाः छ महिसीवन्तर छ। व्यानाः अग्वेशः कर्मकृष्णः क्रिक् वाज्ञात्रय मुश्कारेश महिष्णः क्रिक् ठाव्रः। निज्ञा क्रीनाः महाजिक्

देखिशास्त्रिक्ष 'वर्णभ्वक्षा नीनकमन की नीनवर्गभग । एंट् भर्में । पेट्रेशन २ नीनशहरू ॐ नीनभग । ४ नीनातु । यम् । खर्गाः । भी उत्तेष्ण । याम्य । यूग-क्षिप । भिखना निष्. । स्ट्राप्ट । (प्रकार्ट । प्रकार । नीन-

मीनिक्षि

मञ्जाना ॥

कांत्र शकः प्र

*বিষ্ণুকান্তা* 

निर्घण्डः ।

क्षण भूण नीमकः। उद भर्गायश नीमाकः र दीर्यगीतः । अण्डिकामदः ८। ইতিরাজনির্বন্ধ।। नीमग्रीकः পूण महाप्तयः। ইতি स्टाम्प्रः भीमवर्ण्योगासु कि ।। नीमकः भूर अलिन्द्रमुक्षस्यापिकः नेमक्षः भूर अलिन्द्रमुक्षस्यापिकः सेज्ञासम्बद्धाः स्टाप्ति। क्रिक्शिक्षां स्टाप्ति। (क्रिक्शिक्षां स्टाप्ति। हिन्द्रिक्षां स्टिन्धां स्टाप्ति। स्टाप्ति। स्टाप्ति। स्टाप्ति।

नीलार्ग की महाने हैं जिसे हैं। निर्वारिका शिम्हा गिर्वारिका के शि नीला के ब्रिजी बेट्डिंग के गाँउ कि तांज-विश्वरिक्त शिम्हा कि जिस्सा नीला विश्वरिक्त शिम्हा कि स्वार्थ के शिम्हा नील विश्वरिक्त शिम्हा कि स्वार्थ के स्वार्य के स्वार्थ के स्वार्य के स्वार्य के स्वार्थ के स्वर नीमानि

वन्नम्मा २ वाना ६ वाषाः कानीः ।
२ कप्रार्थणना १ क्निगा व्याः ।
रुद्धः । जिस्त्वः । रस्रामय म्म्न वाज कप्र भाष त्राम द्वामय मान मिष्यः । होस्य वान्यं कः ॥ वीन जरुः भूः नादिकनः । हैरि

রাজনির্ঘণ্ট: ।। নালতাল: পু॰ হিস্তাল:।।ফ ক্লে:। ইতিরাজনির্ঘণ্ট: ।।

नीनम्बा जी हति उन्दा। उटलागाः
। हति छ। २ मा ख्रियो ७ मा ना छ
भी छ। ६ म उन्हिंका ७ सम् छ। १
क्रिया ३० म उन्हें हिः ३ सम्मा १०
क्रिया ३० मित्र छ। ३० स्क्रिया
३० मित्र १० महिन्दा ३० सम्मा
३० मोत्री २० मा छ। २० स्वर्धा
३० मोत्री २० मा छ। २० । उन्हें छ।
छन्। हिम्दा छिन्दा । नव्हें प्राप्त विभवा
विभवा । स्वर्धा । सम्बद्ध । नव्हें प्राप्त विभवा
विभवा । स्वर्ध । सम्बद्ध । नव्हें प्राप्त विभवा
विभवा । सम्बद्ध । नव्हें प्राप्त विभवा

ज्या हो ज्या किर्विष्टः ॥
नीववृद्धः श्रुष्ट क्या मृत्या हिन्दि कि ॥
निर्विष्टः ॥ नीव्यक्षः विविद्धः कि ॥
नीव्यक्षिः ॥ नीव्यक्षः विविद्धः कि ॥
हिन्द्यक्षिः कि नीव्यक्षिः ॥
हिन्द्यक्षिः श्रुष्ट क्या मृत्यक्षः ॥
नीव्यक्षिः श्रुष्ट क्या मृत्यक्षः ॥

नीक्त

इंकि त्राक्षिप्रकृष्टः ॥ क्षाक्र निर्या-राष्ट्र ॥

नोननकः जी शक्कातः। ইতি वि-काश्वाभवः॥ क्कवर्गक्रियम् ॥ नोननकः ज्ञी देग्रीवदः। ইতি भवः-नोनक्रिः

नीवश्वः शृः ७७७्गः।। अन्यउक बृक्षः॥ नीवामनक्कः॥ राजिनः। इठि नाकनिर्यकेः॥

नीवशरा॰ जी नीवकावः। ইতি नद्रुक्ति।।

ৰীকপিছ: পু॰ শেগ্ৰপক্ষী। ইতি ব্যাহনিৰ্ঘক্তঃ।।

नीममूनर्गता की क्कवर्गभूनर्गाणाकः
1 नीमगरक्राराजा हेकि हिन्हीकाषा । उद्देशकार । नीमा २
महामा ० क्काथहा नीमवर्षाकः ६
। व्यमहा क्याः । किक्या कह्याः
केक्या । ज्ञापनवः । इत्हामभाकः
केक्या । ज्ञापनवः । इत्हामभाकः
विक्या प्राम गाउ कक नामिष्कः ।
हैकि वाकनिर्वाः ।।

नीगगुत्रः त्री णुष्टिशर्गः इंडि छातः गुकाणः ॥ नीणवर्गस्त्रम्भः ॥ नीणगुत्रः शृः नीणज्यत्राकः॥भीः सोत्रानः । इंडि झासमिर्धकः॥ नीगगुत्रा जीः विकृद्धः दः इंडि छात्र-निर्धकः॥ नीमन् जिन जी स्वनी। ইতি রাজ-निर्मण्डः ॥ नीनी। ইতি রবুমালা॥ सिर्मभूत्री जी नीनवूद्दा। ইতি রবু-মালা॥

नीमकना जी कर्! हैं जि तां जिन्दं हैं:
तो नज्य तां कर में नीम वर्ग ज्य तां कर ।
नीम कम तिया है जि नीम जिन्दं कर तिया ।
है जिहा की मा एट भर्ग तिया । महाः ज्य । महाः ज्य । महाः ज्य । महाः ज्य । ज्य ।

नीजमितिः शृ बनामश्राजमितः । छट्शर्यप्रायः। ममातः २। इंडि हा नावणी।। षम्प्र विवत्तवः नीजणस्य पृक्षेत्रः॥

मीनमाधवः भू विकृश यथा। (भूवि-जार रित पुरे मकर नीनमाधवः । पृदे। यावट जुनाजिक वा क्षाः ति-वाभित्मानाहः॥ वेजूट वेजभावः नेव्यक्षायः॥

नीनमानः शृ वासमानः। ইতি वासमिनिः॥

भिष्ठमानिकः सूर अस्त्राउक्षा**व**ि

नीनम् जिन की भू वकानीम् म्हेडि दाबनियं है।। क्कर्याम्हः। नीनस्नारः की वर्ज्यारः। हैडि दाबनियं है।।

नीनत्माहिकः श्रान्तः। इत्यादः॥

कित्वानि जम्युक विधानः यथा

कित्वानि जम्युक विधानः यथा

कित्वानि कर्तवानि कर्याम्कः भी
क्रात्वो व रविद्यानी किर्वास्त्रः॥

किम्बन्धः न्यवित्रानी किर्वास्त्रः॥

क्राः वृज्यक्र म्यवित्रः॥

क्राः वृज्यक्र म्यवित्रः॥

क्राः वृज्यक्र वृज्यक्र म्यवित्रः॥

क्राः वृज्यक्र म्यवित्रः॥

क्राः वृज्यक्र म्यवित्रः॥

क्राः वृज्यक्र म्यवित्रः॥

क्राः वृज्यक्र म्यवित्रः॥

नीवावाहिज की स्विक्त हैं जिंखि व्यक्त । शिक्त ने क्षा नीवत्की टी बस्प हिल्ल व्यक्त ना ।। नीवर्वाज्य की हैं त्र सुवर्गन

वास्तिरंकः ॥ क्ष्ण्ण्यः । १६७ मानवनः भू भावन्त्रः । १६७ कानविष्यः भू दस्त्रामः। १६७ क्ष्मः । विषयः भू दस्त्रामः। १६७ क्ष्मः । विषयः भू दस्त्रामः। १६७ क्ष्मः । विषयः । विषयः

্ৰৈল পুৰ্মিকিন্তানি মথাা তক্ৰভ বিষ্যপুরাণ শৃণুম্বেতি নহাবাহে। बीबी ब्रङ्ग याद्रगे ए । वागरमा गग मामृल गम् एक, समाक् ए मुनः शा भावना विक्ना हिंद उष्रेख क्श-ৰীবনাৎ। পতিতন্ত ভবেছিপু ক্ৰি ि छि: क्रेड्ड विनुष्ठि ।। नीनी त्राकन च्या या कर्म अकरण हिन्दः। नाने माने छला (कामः काष्रायः **িপিত্তর্পণ**াাকৃ**ধাতস**ঃমহাকজা नीनी बज्जगुर्वादगाट्य नीनीतक• े**बरा विज्ञ करिक विश्व श**ोत्ररेय ।। ः बाबिछो ज्जा नक्गरवर া শুক্ত। ইদর্শজনে। জ্ঞানে তু े हैं इंडर्ड में ज़र्जिनियार श्रीनी जुड़ नूर्वादालकाः विणाः कीछार्थ याक्तिभाषमी ज्ञान भूगाजि। इजि में इंक्ट्रेन्स

বিনি, নাঃ পুশেদ্দিপুৰু: চইতি ত্রি-ক'পেশেষঃ II

नी सुबूद्धे । जी नी सब्द्धा । नी सबर्ग (बा-ना इंडि काशा राउद अर्ग (श्वः । व्य-काक्षी र नी सन्दर्भ का जिल्लामणा क्षा इंडि ब्रह्माहितना

नीलव्खक दी ज्ना हिन्द जान-निर्वाण शा

(मरः। उत्र हाक्का यथा। कार्किः उत्र वर्ष वर्ष क्या शृद्ध शृद्ध शाख्यः रिषठः श्र विषाणा छा न नी का व्य उठाउ ॥ इंड म्बिड्डः ॥ व्य उठाउ ॥ इंड म्बिड्डः ॥ व्य उठाउ ॥ इंड म्बिड्डः ॥ वर्षः भूता क्या ना इंच मित्राः रेक्ट म वि ने जिल्हाः मृद्ध ॥ उ त्या भर्ष ग्या मुखानि ज्वा क वर्ष यथा । कार्यत्र वहव श्रूणा यपा उत्या श्री ग्या बुद्ध ॥ यद्ध म वर्ष प्राप्त नी वर्ष व्य मूट्म द्ध ॥ इंडि (प्रवी श्राप्त ।। नी वर्षा की वार्खिने । इंडि ताक्का निर्य हैं।।

नीलवृक्तः शृ वृक्षभुर्यमः। उद शर्यप्रायः। नीलः र वाणातिः अस्। कनामनः ४ नत्रनामा ६ नथवृक्तः अ नथालुः १ नत्रशियः ৮॥ अन्य छनाः । कवृष्यः। कमायद्यकः उद्यक्षः । काल्याः सूष्यः। वालामस नानाः भयभू नानाः प्रकारिक ताकिमस्नाः। ।

নীলবুণে ক্লি ব্ৰুত্বিংশকঃ । কথা ।

যন্ত নীলে পেলং হৈনং শক্রা
পাত্র সংয়তং তেকান্তরিত নক্তাশী
সনংস্ত ব্ৰভং যুতং ৷ বৈক্ষৰং সং
পদং যাতি নীলবুত ক্ষিত্ৰ মৃতং ন্
ইতি সাৎস্যে ৮০ং মধ্যা মুগালী লং

नी गड़ा

ब्या किल तंत्रक है

শাভাঞ্জন:। ইতি

রাজান - -: ।। নীলসারঃ 'গু॰ তিন্দুকর্কঃ: ইতি রাজনির্ঘণ্ট', ॥

नील जिन्तू वादः शुः कृष्ण्यर्ग जिन्तू वाद वृष्णः। नील जिंदू जात देखि छात्राः। छ ८ शर्मः। या जिज्ञहा २ निर्छ्णी ० नीट जिन्त्र्यः ८ जिन्त्र्यः २ किश-का ७ ज्ञक्षी १ देन्द्राणी ৮ नी-लिका २ नील निर्छ्णी २०। ज्ञज्ञाः। छणाः। कर्त्रूषः। উष्ण्यः। जिङ्कद्वः। कृष्णः। कान द्वारा भाक न्रभी-त्रणार्खि शुरताधान ना निष्णः। देखि द्वार्क्षनिर्ष्णः।।

नीना खी नीनवर्गमकिका। इंड जिन्नः

11 नीनभूनर्गवा।। नीनी। इंडिजाकर्निर्णः।। मझात तागमा खी।
केंडित्रकर्मभूताए८८ अथापः।।
नीनाकः भू मातमभकी।। जामभक्षी। इंडि ताक्रिस्टः।।

नीवाकः श्रुः क्रिंगः। ইউ अहः॥ ভদ্ৰताग्राः की। ইউ अहिनी ॥ मुख्ति। ইতি बिन्हः॥

নীজাঞ্জন সী সৌবীরাঞ্জন । ততু উন্নত্ত্রিশেওঃ । তন্য ৬গাং । ক্টুরং । তেম সুধ্যোগ নের্য্নোগ

व्य नार नाणिए । किन् । प्रान्धित । विकास । वि

नीवाद्धः क्री नीवाद्दश्यः इष्ट्रभागाः नीनाञ्चतः क्षी जानीयश्वः। इङ्

त्राकिनिष्टेशः शिन्यक्रकः ।। नीनानुद्रः भू र व्या द्राक्रमः ॥ निम्ठद्रः । इति समिनी ॥ नीक वस्युक्ति विश

नीनायुक्त ही नीत्नाः शनः। हेकाः भूतः ॥ किताती है कि स्मित जारा। जिल्ला किताती है कि स्मित जारा। जिल्ला कि स्मित जारा। जिल्ला कि आर्जिश । मिनी र के प्रमा कि प्राप्त कि स्मित कि सामि प्रमा कि सामि क

ाज्यः भू कन्तराज्यः। जर्भर्यायः
। जिल्लिक् २ म्यामनान् कः ०।
न्यम् छनाः। मध्यक् वः। मीजवः।
निक्तः मारु मृत् मारिक्षः। इजि
क्रम् अनिवंकः।

्नामा<sup>म्</sup> शू॰ नीवमिः १७ द्राक-

नीवाजनः शृश् काजन्य वित्मवः।
शिया-रावश् का गण्यः अर्थायः।
गावशिकः २ न नगरः ३ जूनीवकः
८ नोवकमः १ ज्ञातः ७ नीविनवाजकः १। ज्ञातः ७ नीविनवाजकः १। ज्ञातः ७ नीविनवाजकः १। ज्ञातं विशः। क्ष्रेक्ष् एक
नाभिदः। भारकः। ज्ञातं विश्वनः

শেষ্টবৃঞ্চ । ইতি তিবন্ধ বিশেষঃ

রি ভি তা নারী শধগ্র-ভূত্বা পদ य । अपरय पछ एडा व वरका भी-লাসনো মতঃ।। ইংগেমরদীপিকা नी निका जी नी निम्मू वातः। इन्डि त्राजनियंगः॥ नीलि ग। एकालि-का। ইতি मिनिनी।। 🗱 🖟 नवस्त्राभ विष्नेतः। यथा। सार्य मृद्धान्ति **जिर्य**हरूक देव सम्बद्ध दिया। जिन মিরাখ্যঃ স বৈদোষ শ্চত্তর্থপটল गडः ॥ क्षि मर्दाका मृष्टिः निर्मः নাশ মতঃ পর•। অমিন্নপি তমে। **ज्रुं ना** जिक्राण महाशास्त्र ॥ हन्ता-দিত্যো সনক্ষত্রাবন্তরীক্ষেচ বিদ্যু-তঃ। নিৰ্মলানি চ তেজা সি ভারি-ফুনি চ পশ্যতি।। সঞ্জব লিক্ না-শস্ত নীলিকা কাচ সংজ্ঞিত: ! # !! क्पुरतागर्ভरः। यथा। कोशात्रात्र পুন্দপিতো বায়ুঃ পিন্তেন সংযুতঃ । নৃ**থ মাগত্য সহসা মণ্ডল॰** বিস্-बाक्रावः॥ नीकब॰ जनूक॰ माराव॰ उ॰ र्वाक भिन्नि निर्मात्मर । कृष्य भिवः खनः गात्व मूर्य वा नी निकाः विद् ।। हेिंज भाषवकतः ।। क्षा क्षान् कृतः। यथा। प्रमुख सकता हका हा कि ज़ित्रः बणना नी विक् इंडािन

नीनीजा

स्माहिত वृंज्या विजयत्रिक्ताः ॥ नीनिष्यः পु•्शिकः। ইত্যমतः॥ শ্রিমার্ক্রন। ইতি শব্দ সন্থাবলী ॥ অনমুখ্ন্য পদ্ম। ইতি বিষ্ণু পুরালে ৪ **শংশ ১৯ অখ্যা**যः ॥ रीनी जी किएकरः। नीतात गाष्ट्र ইভিভোষ্ঠা তৎপৰ্য্যায়ঃ। কালা**ৰ্** ब्री उद्भिका २ गामीना ४ मधुशनिका ৫ রঞ্জনী সঞ্জীকলী ৭ তুল। ৮ তৃণী ৯দোলা ১০ নীলিনী ১১। ইত্যমরঃ ॥ नीवा ४२ जुनी ४० (पुनि ४८ म-লা ১৫। ইতি ভরতঃ ॥ নীলপত্রী ১৬ রাজ্ঞী ১१ नीलिका ১৮ नील-भूज़ी के काली २० भगमा २३ **(मा**धनी २२ बीकना २० गुामत २८ 'ভুদা ২৫ ভারবাহী ২৬ মোচা ২৭ क्कार ४ वा अनिक भी रत्र महाकता ৩০. খাসতা ৩১ ব্লীতনী ০২ কেশী 'এঠ চারটিকা ৩৪ গন্ধপুদ্ধা ৩৫ শ্যা-भनिका ७७ त्रक्शवी ७१ महावना ০৮ ছিররন। ৩৯ রকুপুরী ৪০। वाना खनाः। करूषः। विकयः। উক্তত্ব॰। কেশ্যত্ব॰। কাস কক্স্-क्षिरवारत्वतावि चन्य कक वृत नानिष्कः। इंडि ब्रावित्रिंग्हेः । नीविकातागः। इंडि विभिनी।। শীলীরাগঃ বৃং হিরপ্রেম্পুক্ষঃ

**७८ भर्गायः । ज्ञित्राम्यक्तः २ ।** रेि (स्माप्नुरा। नामवर्गः। रेि नीलमञ्ज नानार्थ मदत्रवादली ।। নাযক নাব্ৰিকযোঃ পূৰ্বরাগ বি-**भियः।** युष्ट्रां िनी अंगुष्ठ मिक्ष-श्राः भ्रद्धांशाणि ह विशा । जल-क्रागराष्ट्रप्रा । नहाजि ल्या छाउ দ**্বলৈতি পোন্ন ন্**লোলত । নীলা-ারাগঃ স বিজ্ঞোবা যথা প্রীরাম শাতবোঃ ৷৷ ইতি সাহিত্যদর্পণা৷৷ नीलाएभन ही नीनवर्णाएभन। नीवमांभवा देख् ভाषा। उट भर्गायः। एटभनके अवस्त्र इन्तीवतः **४ कत्नताथः ৫**ें, क ७ मुगक ने बद्यान क । अति-তোৎপল ৯। অস্য গুণাঃ। অতি बाह्ब्याजी नत्। जूत्र जिव् "ल्यो-খ্য কারিত্ব। প্যক্রেলত্য ত্ব•। রক্তপ্রিভ হরখুঞ্চ। ই 🚐 নিষ্ঠঃ 🚻

नीरनार निष्ण मञ्जूरवार विकालामाः

नीरतः श्रु द्राह्मकः ॥ वास्तृः । इति व्यक्तिः किकः । इतुः पानि-कारः ॥ नीत्रुष्टि ॥ नर्कः ॥ हाल त्री। इति मक्ष्य मात्रागानिम् नीराकः क क्षाधारका प्रात्राकः

क्यानोदीमदाजिसदः ॥ जूनाधतः नाधिकार ।। क्याक्य र दश्या मृना থিক্য হেতো নিশ্চনে ন পরিছেদন । ইতি ভরতঃ ৷৷ তৎপর্য্যাবঃ ৷ প্রুবান **मः २। २७**९ हा ॥

मीवातः श्रु ज्यथान्, जनः। উजी-ार्गाप्तः । अत्रवासानाः २ ्लेबाः ॥ ন্য ৩ তৃণো দ্ভব ৪ অরণ্যশালিঃ ৫ । जम् ७११:। मधुत्रवः। त्रिकवः। পবিত্রবং। পথ্যবং। লযুব্ধং। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

नी कि जी शतिश्वा विविद्या मूल-ि १न॰ ।। त्राजमू भारत्वे सकः । ইতি সূভ্তিঃ।। জীকটী বজবন্ধঃ। কোঁডচী ইতি ভাষা। স্ত্রীভূপেল-हनः शुःक्षी नद्भवति । इंडा

ঢাকানা ভরতঃ ম তথাচা ১, বা বিলু স্য পরিহিত বন্তস্য गतक गुष्टि साहत्य बाह्मन ह वोधायनः । इति यजुर्दिन क्रक्षाण मुस्रिकामि माष (भाष्टिक वर्षन शांड मथुद्रिणः ॥ नीर्ध् श्रु अन्यस्थ हेळामतः॥ (इ पत्र वत का वर शकान मगद कामनाप्ति मधनावन स्ताउ ्रशाप अमृह्ह । इं ि उत्रवः ॥ नीकु की इपिःशुंडिकाशः। इंति ইতি ভাষা। তৃৎপর্য্যায়ঃ। বৃদীক र गरेन शाय । इंड महारा नीयु-। ইতি ভরতঃ ।। নে पेः ॥ हन्तुः ॥ রেবতী নক্ষত্রণ। বৃাণ। ইতি মে-मिनी ॥

थान ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ। তে 🍴 শীশারঃ পু॰ হিমানি লনিবানণপুা-বরণ । ইত্যমরঃ॥ হিং নিল প্রা-বর<sup>্</sup>্বন মহদক্র। ইতি রমা-नाथः॥ काञ्चातः। ইতি न्यनानन्तः ॥ মসারী। ইতি কৃশ্চিৎ।। কাও-পটঃ। কানাৎ ইতি কন্চিৎ। ইঠি ভরতঃ ॥

> नीशतः शुः वनीज्ञिमितः। उट পর্য্যায়ঃ। অবশ্যায়ঃ ২ তুষারঃ ৩ তুহিন ৪ হিম ৫ প্রালেষ ১ ম-হিকা 🕈 । ইত্যমরঃ ।। খজল ৮ নিশাজল° ৯। ইতি ক্রিকাণ্ডশেষঃ । अगु खाः। कक वायुव कं कृष् । ইতি রাজবল্পভঃ॥

न् उ विजर्कः॥ जभभानः॥ विकन्नः ॥ अनुनयः ॥ अञीजः ॥ भुनः ॥ रिजुः॥ यभारमः। इजि स्मिनी নুঃ পু॰ অনুষারঃ। ইতি বোপদেবঃ ।। यथा। न् वी शृद्धि नम्हाको मुत्नी जु भद्रगामित्नी। इंजि पूर्णनः म्था । नुष ्मि यस। है शिकविक्यक्रमा

নুত তি স্তত । যথা। ত বেদ শাস্ত্র পরিনিষ্ঠিত শুদ্ধবৃদ্ধি চর্মায়র সু রমুনীন্দু নুত কবীন্দু । কৃষ্ণজ্বির কনক পিদে জটাকলাপ তাস নমামি শিরসা তিলক মুনীনা ।। ইতি পুরাণ ।।

নুতিঃ জ্রা স্থাতিঃ। ইত্যেরঃ॥ পূজা।
। ইতি শবরত্বাবলী।।

নুক্তঃ ত্রি'ক্ষিণ্ডঃ।পুরিতঃ।ইত্যমরঃ॥
নুক্ষঃ ত্রি নুক্তঃ।ইত্যমরঃ॥
নুক্ষঃ ত্রি স্ততঃ। নূশি স্তবনেইত্যমাৎ
কর্মণিক্তপুত্যে নিষ্ট্রঃ॥

নূতনঃ ত্রি অপুরাতন । তৎপর্য্যায়ঃ

। পুত্রগুঃ ২ অভিনবঃ ০ নব্যঃ ৪

নবীনঃ ৫ নবঃ ৬ নূত্রঃ ৭ । ইত্যমরঃ

।। সদ্যক্ষঃ ৮ অজীর্ণঃ ৯ । ইতি ছেমচন্দুঃ ।। অভ্যগুঃ ১০ পুতিনবঃ ১১

। ইতি জটাধরঃ ।।

न्दः वि न्जनः। इज्जानः ॥

न्दः श्रृ वृक्षमाक्वृकः। इज्जानः ॥

न्नः श्रृ वृक्षमाक्वृकः। इज्जानः ॥

न्नः वऽ जर्कः। खेरः। यथा। एउजना

शि थण् नृन मन्नः॥ व्यक्षिक्यः।

व्यक्षात्राः। यथा। न्नः इडिम्म ताः

वतः। इज्जान ज्वरजो॥ मात्राः॥

वाक्रश्राः। इज्जिल्लाक्यः।

्रित शूर ही चरानशाव शामक्षायः।

भाराक्षर २ जूनात्कािः २ मञ्जी-तः ४ र नकः ६ भारक्षेकः ५ १ इंड्रामदः ॥ भराक्षर १ । इंडि भारत्वावनी हैः

न्त्रणती शुरं नर्तिमि श्वाव जातः। इंडि

্তঃ স্থা রাজবিশেষঃ ! যথা । নৃষ্ণে নাম নরেন্দে। ২ছ নি স্থাস তনযঃ
পুভো। ইতি জীভাগবতং ।।

न्हकाः श्रु॰ ताक्षमः। ইতি ह्महन्तुः नृहक्षः श्रु॰ मूनीधताङ्गश्रुवः। ইতি महाजात्रुवः।।

न्ट य नर्जाने हैं कि किवित सन्ति।
न्ठः जी नर्जनः। है कि निर्मा निर्मः।
न्ठः पुः नर्जकः। हे जुर्गोनिकासः॥
जूमिः। निर्मः !! किमिः। है जि
ग॰किश्वमारतागानिवृद्धिः॥
मृखः जी न्जुः। हे जे महिन्ने।
जत्रः॥

न्छ । की जानमानम्य माननागाक्ष विक्रिणः । नाह देखि ভाषा
। उद्भग्रीयः अस्मि ध्रवः र नहेनः ३
नाहि । ह नोम । विक्रिकः । हे हि ।
भवः ॥ नृखः १। दि जान नृष्यः । जानाः
भूयः नृखः । द्वान विवास् । द्

তরত:॥ নাটঃ ৮ লাসঃ ৯ লাস্যক॰ २० नृजिः ১১। ইতি भक्तकावनी ॥ 🕸 ॥ जम् नकना हे यथा। (ह्य ৰুচ্যা প্ৰতীতো য লাল মান রসা-भुयः। সবিলাসে। १क्विक्सिशान्-ত্য নিতৃ্চ্যতে বুধৈঃ ॥ 🛊 ॥ তাঞ্ বঞ্চ তথা লাস্যু দ্বিরিধ্ নৃত্যু গুচ্যু-তে। সেবলি র্যন্তব্যুপঞ্চ তাওা: দ্বি-विथ॰ गठ॰।। अक् विकल वाइन १९ তথাভিনয় শূন্যতা। যত্র সাপেবলি স্তম্যাঃ সম্বাদেশীতি লোকতঃ।। ছেদন ভেদন যত্ৰ বহুকপা দুখাব-**জী**। তা গুৰু বহু ৰূপ স্তদাৰুণাগল-্ কুর্ত ।। 🕸 ॥ ছুরিত থৌবতঞ্চেতি লাস্য ্ূ্ৰীৰ মুচ্যতে ৷ যত্ৰাভিন-यारिन अंदिव इति ब्राह्मिय हुस्रीमः॥ भागिका नायको इत् न्छाछ भु-क्रिजः हि ७६। मधुतः वषानीनाञ्चि িটি। ভি র্যত্র নৃত্যতে ॥ বশীকরণ বি-**দ্যাভ তদ্মাস্যংগৌবভ•মভ•॥#॥** গেযাদুভিষ্ঠতে বাদ্যং বার্নাদুভিষ্ঠ-কে লগ়্া লগ্ তা**ল স্**মার্শ্ব ততো न्जः भुवर्वरंगः ३ जि मङ्गीज मा-(म'म् :: 11 क्ष 11 क्ष्म् अन्। नृकाः वार्थः া যথা \ নৃত্যে নাল নৰপেণ সিদ্ধি শ্ট্যস্ৰপত্য চাৰ্ধিষ্ঠান বমৃত্যু ् ३६ मा । हि ए यन। । इ छि मुनर्क एवर-

भूत्रोग॰ ।। 🟶 ।। विकृश्र्य न्छ। यन॰ যথা। নৃত্যুম্নসম্ বক্ষ্যামি তছ্ণুম্ব বসুষরে । মনুজা যেন্ গছভি ছিত্তা সংসার সাগর ।। ব্রি:শদ্ধ সহ-সাণি ত্রিশদ্ধ শতানি চ। পুদ্ধ षील गानाम्। तामत्य रेव यम्हम া পুষরার পরিভুঠঃ ষুচান গম-नानसः। कनः शुर्शाठि मूर्णान नम कर्भ भरायनः ॥ दश्यवाम खन् বান্ শূর: শীলবান সুপথে স্থিতঃ। মুক্তকশৈৰ জায়েত সংসার পরি-শোচিতঃ ৷৷ ইতি বারাছে শৌকর মাহাব্যুঃ ॥ 🗱 ॥ দৃষ্ট্রা সংপূজিত॰ **प्रत॰ नृज्यातानुप्राप्त्यः ।** जन সংশয মতিঃ শুদ্ধঃ পরং বৃদ্ধ স গ-ছতি ॥ ইত্যশ্লিপুরাণ ॥ # ॥ अ-পিচ। দ্বারকা মাহত্ম্যে শ্রীভাগব-তে। যো নৃত্যতি পুছ্ঞাত্মা,ভাবৈ বহু সুভক্তিতঃ। স নির্দহতি পা-পানি জন্মান্তর শতেম্বপি ॥ হরি ভिक्रम्(भारत्य । वह्राक्षार्मार्ग्यार् হর্ষাদ্বিফুভক্তন্য নৃত্যতঃ। পদ্ভ্যাণ ভূমে দিশো ২ক্ষিভ্যা দোর্ভ্যঞা-मञ्च फिर: 11 विकुष्यां खात्र, 1 নৃত্যু দত্মা তথাগ্নোতি ৰুদুলোক यमः नयः । स्यः न्राहात मिः भूजेर् **उरि**ग दानूहाता जल्द ॥ जुन्जिहा

নারদোক্তো। নৃত্যতা• শ্রী পতে রগ্নে ভালিকা বাদনৈ ভূশি ৷ উদ্ভীয়ন্ত শরীরস্থাঃ সর্বে পাতক পক্ষিণঃ ৷৷ ইতি হরিভক্তিবিলাসঃ 11 न्रिकः शु॰ जाका।यथा। यमान माला বিপুলাতপত্রৈ দেঁবা নৃদেবাক্চ ভি-দাণন (ভঙ্গুঃ। ইতি নৈষ্ধে >০ সর্গঃ॥' न्धर्या भुं अत्वतः। ইতি एक महत्रः॥ নরংশযুক্তে ত্রি ॥ সুপঃ পু॰ নরপতিঃ। ইভ্যমরঃ।। তস্য লক্ষণ যথা। চতুর্যোজন পর্য্যন্ত ন ধিকারো নৃপস্যচ। যোরাজা তৎ শতগুণঃ সঞ্য মণ্ডলেশবঃ ৷৷ ভত্ত-দ্দশগুণো রাজা রাজেন্দুঃ পরিকী-র্ভিতঃ। ইতি বুক্ষবৈবর্ত্তে 🗐 কৃঞ-जमथए७ ৮७ व्यव्यायः ॥ 🕸 ॥ छ ८ शुम • भा यथा। अश्रू भार नृभः भूत्यां निर्धनमा धनः नृष्णः। यमा-তু র্জননী রাজা অতাতস্য পিতা-মৃপঃ 11 অমাথস্য নৃপো নাথো **ছ** ভর্ঃপার্থিবঃ প্রতিঃ। অভ্তাস্য নৃপো ভ্তের নৃপ এব নৃণা॰ সখা।। ্সৰ্বদেব নযোৱাজা তন্মান্ত্ৰা মৰ্থযে নৃপ। ইতি কালিকাপুরাণে ৫০ অ-श्रायः ॥ 🗱 ॥ न्शरणन भिन १ यथा। তত্র তিথ্যঃ শুভাঃ। বারাঃ শনি

মঙ্গল ভিনাঃ নক্ষত্রাণি উত্তরফ-

লুনু ্তরণবাঢ়োত্তর ভাদু**পদ্যোহণী** शूयऽाचिनी हरा हिजानुताथा ग्ग-निता त्रवं की रिक्ष भूवगाः । न-शानि भिथून कन्। धनु भी न व्यक নি হ স জ্বানি ৷ তত্ৰ চন্দুঃ শো-ভনঃ ৷ ইতি জ্যোতিৰ• ৷৷ , न्श्वनिः श्रु ताजश्वाषुः। इंडि त्राजनिर्घण्डः ॥

নৃপতিঃ পু॰ স্বরের:।। রাজা।ইতি भक्तज्ञावनी ॥

নৃপতিবল্লভঃ পু• ঔষধবিশেষঃ 1 নৃপবল্লভ ইতি খ্যাতঃ । যথা । काठीकवः चदकाद द्रामा हेक् वागरे । जीवक्ष यमानी ह सिंध रिमन्तव भवकः ॥ (बोर् नेष्ट्रः त्रमः গন্ধ তামু পত্যেকৃশঃ পল্। সরি-চ জিপল দ্বাছানী পুষেন পে-यरय ।। शाबी त्रामन वा लिहें-বটিকা**॰ হৃষ্ণ** যত্নতঃ। শ্রীমন্ত্রনা<sup>ট্রা</sup> থেন বিচিন্ত্য পরিনিশিতঃ।। বত্তেজসাচাৰ ব্রসোন্পতিশঃ।ইতি 1 अक्षामन विशे थार्ट भाववड म्यं पर्मकः॥ भौ। रुखि नन्द्राननः সর্ব নান দোব্ধী সূচিকাং । প্লীক্ खल्यामदाश्रीना यक्रे शारु श्नीमा क्।। इट्म्लं क्रिक्ष वक हिंद्र थ कामना । भित्रः गृहा निर्मि

মাঘাহ মোগুলুক ।। কাস খাসা मवाज्य भीशन त्याय मबू न। गनगर्भः गर्धमाना मम्ननिज्यः भ-र्फ्जी। किमि क्षानि मद्भिन वा-ত ব্ৰক্ত• ভগন্দব্ৰ•। উপদৃ•শ মতী-সার•পুহণ্যর্শঃপুমেহক•।। অশ্মরী• মূত্রকৃছুঞ অ্ভাঘাত মস্গর । ার জীর্ণজ্ব ক জ তন্দু। লস্য বিনি ভুমি• ৷৷ দাৰু বিদুধি হিক্কাশ্চ জড় গদ্দ মূকতাঃ। বাধির্য্য স্বরভেদঞ वृध्वक विमर्भकान् ॥ छक्छञ्जः রক্তপিত্ত• গুদভু•সাৰুচি• তৃষা• । ,कर्न नाजानू नाथा ॰ महादा गक শীনসং॥ ছৌল্ঞে শীতপিভঞ্চ স্থাবরাণি বিষাণি চ। বাত পিত্ত करकार्था॰क बन्तुकान् नावित्रा-তিকান্!! সৰ্রোগ চ্যান্ হস্তি চ ুপ্তা•শু রিব পাপ হা। বল বর্ণকরে। श्चिष व्यायुप्तता वीर्यत्रवर्षानः॥ नतः বাজীকরঃ শুেষ্টঃ পটুতা মন্ত্রসিদ্ধি मः। অরোগী দীর্মজীবী স্যাৎরো भी दिशाभ निमुक्षित ॥ त्रममहामह পুর্বাদেন সুবৃদ্ধি জাযতে নরঃ। ইতিরেত্বাবলী 🗓

প্রকাশ প্রতির জনির্ঘণ: ॥ রাজাদনী-প্রতঃ। ইতির জনির্ঘণ: ॥ পঞ্জি: পু: বেষ্ট্রপান: বেডুবান ইতি ভাষা। ইতি শদ্চান্দুকা।।

রাজপলাপুঃ।। রানশরঃ।। শালিথান্যং।। আনুং। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ
নৃপপ্রিফলা জী বার্ভাকী। ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ।।

নৃপপুিযা স্ত্রী কেতকী।।রাজখজ্জ্রী। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।

ट्रायम्बः श्रू॰ बाजवम्बव्यः। उद कला क्षी। इठि बाजनियंगः॥

न्श्रमन्दिः की जाकमहनः। उद शर्यप्रायः। (स्रोधः २। ইতি (इसहन्दुः न्श्रमाञ्चल) कः क्षी आ छ्ला प्रकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

ন্পলক্ষ লী রাজছত্র•। ইত্যমরঃ॥ রাজচিহ্নঞ্॥

ন্পলিক্ধরঃ পু॰ রাজবেশধারী।

যথা। নিজগুাহোজসা বীরঃ কলিও

দিখিজযে কৃচিৎ । নৃপলিক্ষরণ
শূদু॰ মন্ত গো মিখুন॰ পদা।। ইতি

ভীভাগবতে > ক্ষেতি অধ্যায়ঃ।।
ন্পবল্লভঃ পু॰ রাজামুঃ। ইতি রাজনির্মণীঃ।। রাজপুিয়ে ত্রি।।

নৃপবল্পভা জী কেবিকাপুয়•।ইতি রাজনির্ঘন্তঃ॥ রাজমহিষী চ॥ নগসভ• প্লী নৃপাণা•শালা স•ছতি র্বা।ইত্যমর ভরতো॥

भित्रा शुः (विश्ववः भारः (विष्कृतीम । नृशाचाक्षा की करूँ वृद्धी। केलि हक्

जाणा । जाजकन्ता । वंशा व्यवस्तर जीन नृशापाकामा मिणः शिक न शुवित्यम (भगः । ইতি নৈবংশ )० सर्वः ॥

নৃপাধ্র: পু<u>রাজসূব বরুঃ। ইতি</u> ক্রিকাপ্তশে<u>ব</u>ঃ॥

নৃপাদ নী রাজাছ দান থান্য । ইতি রাজনির্ঘটঃ । রাজ্ঞ ওদনক ।। নৃপাভীন স্ত্রী ভক্তত্র্য্য । রাজ ভোজনকালীসনাম প্রশেষঃ ৷ ইতি

ত্রিকাপ্তশেষঃ ॥

न्भागयः भू• काजयन्ताः क्यद्यायः। देखि द्राजनियंक्याः द्रारकारदायकः न्भावकं द्री द्राजावकंद्रद्रशः देखि दाजनियंकेः।

নৃপাসন শ্লী রাজাসদশ তৎপর্য্যায়ঃ ভেদুবিশ ২ কিংহালন হ। ইত্যা নরহনা

न्भास्य १ १ क्रांक्शका कृष्ट । इंकि क्रांकनिर्यक्तेः ॥ न्भानाया हः॥

नुर्लाहिङः शृष् , त्राक्यातः। इंडि त्राक्रनिर्यण्डः।। त्राक्यारगः कि ॥

न्यकः श्रुः अञ्जिष्टिन्या यथा। अक्षाश्रमः दुष्णयकः शिज्यक्षः जर्भाः। स्थापाः स्वतः वित्यक्षः जर्भाः। स्थापाः स्वतः वित्यक्षः जर्भाः। स्वाप्ताः स्वति विश्वनः।। देवि मन्द्रः॥ न्तत्राकः शू- वता र्त्तणश्यभवमव्या-্বিঃ। রথা। ন্বরাছস্য বসতি মহ্-ৰ্জোকে পুতিষ্ঠিতা৷ নৃসি-ছস্য তথা ् शुक्ति जनमारक महाजानशा मध्य বলে ধারী।যথা।শৌকর- রূপ মা-্ছার ছার্যস্থাও চ দুরাত্মনুঃ। ভরিদ ব্যাসি ন সন্দেহে। বুজ/শক ত্বরা বিতঃ।। ইতি পামে দৃষ্টিখন্তে ২৮ त्रवत्रायः ॥ 🛊 ॥ व्यक्तिः देवजुष्ट-্তো প্ৰৌন্বরাহ নাহৰে নিপাত-यानान वहा जुलडी । निकः रूप। বিৰুতে নাশু সঞ্জে পুৰ্বমাণাপি ं निक्षित्रमूरमध्यामे स्न्ताता (गम्-राजुरमयः (जाताहरेए छ। नृतद्रीहरू मृर्खिः। शुकामारा एक मिन् नि-হত্যবুক্তের কঃবৃত্তি যথা সুরেন্দ্র।। ইত্যগ্নিপুরাণ া।

নৃশাসঃ ত্রি কুর: । শরদ্বে হী। ইত্য-

न्ति दः श्रुः विष्ः। देखि विका उ भ्याः । विष्णा पंणावेखाता । या प्या प्रजूष्टः भूगीयखातः। या व्या निन्द्रमा स्वा वपनः मृत्रातिः महा क्ताणण मृत्रास प्रचः। या व वश्र वि मन्त्रमा कृताः । विकादः रह्ण श्रुक्ताः । विकादः भूताः। । या प्रवादः व विकादः।

িন্তৰ্গত নৰ্বন বন্ধঃ৷ ত*ৰ্য্য লক্ষ*ণ যথা এপাদৌ সংগীড়্য যোনৌ চ হঠা-क्लिक भूरवननः। इखरमा विश्वरम ানত বন্ধো নৃসিংহ সংজ্ঞক: ॥ া ইতি রতিমঞ্জরী ॥ নরশেষ্ঠশ্চ ॥ নৃসৈন- ক্লী ক্লী নৃণা সেনা। ইত্যমরঃ ग्लामः श्रु नत्रामुक्तः।।था। - তথেত্যুপ পৃশ্য পয় পরিব**ং সো**-स्ता**ख्याः मित्राला न्याम**ा গাহ ত্যানিগৃহীত শাপাৎ।। ইতি রযুঃ।। নৃহরিঃ পু• নৃসি•হাবতারঃ। यथा। , भारत न हिन्दु गयान मम भीन कूर्य किर्देश १ जन्मस्ति वामन यामन ু গ্ৰাঃ ৷ যো পভূষভূব ভৱতাপুত্ৰ কৃষ্ণ বুদ্ধঃ কল্পী সভাঞ্চ ভবিভা পুহরি-ব্যতে ৎরীন্॥ ইতি বোপদেব:॥ নু গি } বাতে। ইতি কবিকন্নজ্ম: ॥

ह भ त्बकः श्रृ जी निर्तिबकः। त्रबकः। यथा। भानमून कनाक भूत्क निक्रा- ॥ धानाः नि विककः । नव वानाः नि ना नास्त्रि निर्देशक वागएए ॥ इंछि मन्शा े न्ते वि পुजूः। हेज्ञानतः॥ निम्रवृक्तः

**ে ই**ি হাজনির্ঘট:। প্রাপবিতা চ

त्व दी क्रिक्शा जहा। जन्मूकः। इजामदः ॥ महत्वनः॥ वृक्तम्बनः॥ ্রথ: ॥ নেভরি ত্রি। ইতি মেদিনী ॥ নাডী। ইতি বিশ্ব: !। বন্তিশলাকা া ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ নেত্রছদঃ পু॰ নেত্রপিখায়কচর্মপুটঃ । চন্দুরপাতা ইতি ভাষা। ইতি বন্ধ नक्त्र) नानार्थ जमतः ॥ निवनग्री अः श्रु॰ ष्यभावः। ইতি ब्राजनिर्घण्डः॥ नयनाविष्ठक जि ॥ নেত্রপিওঃ পু॰ বিডার্গঃ। ইতি হারা-वनी॥ इक्र्मानकक।। जिंबश्हरा जी क्षुबर्गा देखि दाब-निर्घणैः ॥ নেত্রমীনা জী ব্বভিক্তালভা। ইভি त्राजनिर्घणः॥ *नि*वर्गिनः पृ॰ रेनुः। हेि नद्माः मा।। अविभावान्यविष्यः ।। निजब्रक्षन की कब्ह्रव । यथा। वद नौ কথিতো ধূপ: শৃণুতো নেত্ৰরঞ্জন । যেন তৃষ্যতি কামাখ্যা ত্রিপুরা বৈ-কবী তথা।। সৌবীর জাম্বল তুত্থ भग्त निकतः उथा। पर्सिका त्यसः নীলক অঞ্চনানি ভবন্তি বট্।। সুব-বুপত্ত সৌবীর॰ জামূল• পুন্তরন্তথা । भग्त अक्ट निष्क (भवनी वह रेड्रे बन ॥ वृद्दे। निगास रेडिंगनि निः 'रमञ्जूष्मा

नायां रेजबद्ध रथवां । मुप्पेरार भवरपरवर्जा रमवीकं उकालि भूडी क॥ वृज्देजना दियोगिन जानुरोती দীপবছি न। यह अने वायु उ দর্বিকা পরিকীর্ত্তিতা ॥ সর্বাভাবে তু তদ্দ্যদেবীভেগ দ্ৰিকাঞ্জন । मश्मारा कशकावी कामार्था ত্রিপুরা তথা।।আশু বৃদ্ধি নহ্বতো-य' यडि त्रि छि: अम्रेक्षितः। विश्वा नाक्षन॰ अर्यप्राच्यहामायार्थ मुख्यन १। नामरख पृक्षन• (मदी रेवकवी वि-ধবা কৃত ।। ন মৃৎপাত্তে যোজযেতু नाथका निजयक्षन । न भूका कल সামোতি মৃৎপাত্র বিহিতাঞ্জনৈঃ ।। চতুর্বর্গ পুদে। ধ্পঃ কামদ । নেত্র-त्रक्षन<sup>•</sup>। जन्मामृय मिन• नम्प्राप्त-বেভ্যে ভক্তিতা নর:।। ইতি নৌ-কথিতে। ধুপ স্তথোক নেত্ররঞ্জন । ইতি কালিকাপুরাণে ১৮ অধ্যাযঃ निवादांगः भू वक्दांगः। उन् निहान यथा। উकाভिउधम्। अ-नश्तमामृत्रक्गा चनुविभर्ये। याह । (बरामुरका धूमनिरवदमाह इर्ल्स विचाजाचमनाजित्यागाँ ।। দুবাতথানাদিলি সেবিভাই বিম্-ন বাত ক্রম নিগুহাট ী প্রসক্ত সং রোদন শোক কোপাছিরোভিযা-

শৈহাম

जार विमर्ग प्राप्त ।। उथा चज्-बाक विमर्ग (द्वापा जियाजार-

नोही वान्नेगुहार मूच नि-त्रीकगांह न्तरक विकातान् अवयिष्ठ (रावीः।। वाजां निखां कका-मुक्तान कि मुजन के जू विधः। भारतन জাযতে ঘোর: সর্বলৈজাম্যাকর: ॥ क ॥ उन्। जन्मि हि यथा । नि-रखारेन उद्धन क्रानिश्च गण्यर्गा-ক্ষ্য শিরোভিতীগাঃ ৷ বিশুস্ক ভাষঃ শিশিরা ভূতা চ বাতাভি भारत नगरन जर्वा । मार भुभारकी निनिवाछिननिधृमायन वास्त्र म म् हुमक । जिकानुका भीजव दाव-তাচ শিক্ষাভিপদে নীপন ভবস্তিয় **ेका जिनेन्से। <del>एक</del> जो किरन थि**: क-जुगल्हावि भोउँ है। मुखा वरः शिहिन अते गाणि कर्का छिन-মে নবনে ভমন্তি ৷ ভাষাপুতা লো-হিত নেত্ৰতা চ বাহু: সম্প্ৰাধাত-विश्विक । जिल्लाहिन मि যানি তানি রকাঞ্জিলেই হলেই বন্তি।। ইতি **মাধন্তর:** দূত

নেত্ররোগহাঁ প্ ইন্টিকালী বৃদ্ধ: ।
ইতি রাজনিকটঃ ।। চক্ত্রোগ না
শকে বি ।।
নেত্রাম্যঃ পু চক্রোগঃ। ১সঃ

ART.

कान यथा। वाकाद शिकाद क कारका पिका का का किया शा रणम काया का का का लाग्या काः ॥ के किया के जानका । रनका की व्यक्त के किया के किया के का की क्या किया मिल का किया । या का की का किया किया किया किया की का किया । या का की का किया किया किया किया की का किया । या का की किया किया किया किया किया की ।

द्वाश्रीयम् । श्रु क्वाश्रीकः । त्रात्रायः । व्यव्यान् । व्यव्यान्यान् । व्यव्यान् । व्यव्यान् । व्यव्यान् । व्यव्यान् । व्यव्यान् । व्यव

কৃতি ভারা। ইতি বন্ধনালা।। নেদিই কি অভিনেত্রণা অতিনিকট । ইতমের: মা নিপুণ । ইতি রাজ-নির্ঘণী: মা সাক্ষেত্রির্কে পুণ। ইতি ক্রিমর্মনা

विनेत्राम् विलिक्षिक्षे । चनु जनगीशः द्विजिक्किस्तिः ॥

तिशः भूगः ज्यानिष्ठः ॥ उपकः ।

दिवः अश्विक्षकात्वाणानिक्षिः ।।

नक्षणः जीन्यपः । देखानकः ॥ च
पक्षणः । विकानिकः ॥ च
पक्षणः । देखानकः ॥ च
पक्षणः । देखानकः ॥

राष्ट्रा स्वानिक्षकः ।

विकानिकः ।

विश्व क्रिक्षेत्र । द्रिक्ष विश्व । यह शर्य प्रयोग । देश शाला । यह शर्य प्रयोग । देश शाला । यह श्रे क्रिक्ष । देश शाला । यह । विश्व विश्व विश्व । विश्व विश

त्मः शृ कातः॥ व्यविद्धः । शृकातः॥ देवज्यः। देवज्यः। देवज्यः। देवज्यः। देवज्यः। व्यवः। व्यवः।

हेनभूगा े

स्थारमुः ॥

নৈছিকী জ্রী উত্তমা গৌঃ। ইত্যমরঃ॥ निक॰ वि निक्षमञ्जिति श्रीयः। यथा। বুন্ধান্ত্ৰস্ত বুন্ধান্ত্ৰ বায্ব্যস্ত চ পাৰ্বত । আগ্ৰেযস্য চ পাৰ্জন্য নৈত্র॰ পাশুপতস্য চ 🗐 ইভি 🗐 ভাগৰতে ১০ স্কন্ধে বাণযুদ্ধ ।।

रेनकें। की निज्युन। निज्यमा जाव ইত্যৰ্থে ক্যু পুত্যুয় নিষ্ণা ।।

रेनभावः भू॰ त्रुभावनियः। इंडि वाजनिर्वकः ॥ तिभाव (मण ज्ञाव-ন্ধিনি ত্রি।

নৈপালিক॰ শ্লী তাম-। ইতি রাজ-निर्घकः ॥

रिनशाची जी नवगत्निका॥ मनः भिना ॥ त्मकानिका। इंडि सिमिनिः॥ नीनी। ইতি শব্রজাব্দী।।

रेनशून क्री रेनशून्य । यथा। शुक्छा-न् शि रेनशून सहर शत वाह्यानि চিরায় গোপিতু । বিপরীত মথা-वारना खनान ज्ञ मारकोनन मार्थ চেতসা॥ ইতি নায়ে ১৬ সর্গণ্য

লৈপুণ্ড প্লী নিপুণ্ডা। নিপুণসঙ্ভাব इंडार्थ की शुंडाय निष्ठां है यथा। व्यक्ताः जरुना द्वां क् जारवा स्वा-ष्ट्र भन्नम्। देव। ज्यः च जोदिनी

क्युः ॥ । उनिभव्कः । नथुत्रारहो ॥ तैनिकः क्री शाःभितारमः। हेजि তিনাশ ইতি খ্যাতঃ। ইত্যমরঃ।। নেমিচকঃ পু॰ পরীক্ষিদ্ধ•শঙ্কঃ অসী-् मक्षमा शूखः । म श्खिना नगात नम्राञ्चल कोनाम्नाः भूर्यताः द्वाः জাসী । ইতি প্ৰভাগৰত ।।

নেমী পু• 'তিনিশবৃক্ষঃ। ইত্যমরটী-কাযা• ভরতঃ ॥

नियो जी नियः। ইত্যমরটীকাযা। ভরত: 11

নেষ্টা পু॰ ঋত্বিক্। ইতি সংক্ষিপ্তসা রোণাদিবৃত্তি ভূ রিপুষোগশ্চ ॥ बि निक्रवेचि । यथा। ব্যুতীন ব্যালদীপান্তঃ সুত্রঃপরি-शृजयन्। शर्यद्याग्रहातृतेक द्वारे নৈক্টিকাশুমান্।। ইতি ভক্তিঃ।। निक्छे । किक्छे चुर्ग विक्छे म । ज्यान इंडार्थका भुडाय निम्ना ।। निकृष्टे-ভৰে ত্ৰি॥

निक्टिनः वि উद्दावनः। व्यत्नकशुः কারঃ। ইত্যমরঃ॥

रेनकरवयः श्रु॰ निकवाश्रुवः। ताकंत्रः ा **३**তि रुनायुषः॥

निगमः पुः जिनिष्या। विश्वत्।। নাগরঃ। ইতি মেদিনি শৃন্তর্ত্তাব-.**मिर्रो** ॥ नयः॥ **पं**जिक्त इन्डि (इम-न्युः ॥ नियम अधिकिनि जि ॥

ইতৈষ্টের্নপুণ্ড গাশ্যতা ভূশং॥ইতি লঙ্কাকাণ্ডে ১৭ সর্গঃ॥

रिमिखिकः वि निमिखकनाः। यथा।
रिमिखिकानि कामानि निभाविष्ठ
रेगिमिखिकानि कामानि निभाविष्ठ
रेगिमिखिकानि कामानि निभाविष्ठ
नाव केन्नः विहानस्य ।। ইতি गुरुयागविष्ठे ।। माम मन्य मनाकि कर्व्या
कामाहिएक निमिखिक मुक्कािमा यथा।
निवाद निमिखक मुक्कािमा यथा।
निवाद निमिखक मुक्कािमा यथा।
निवाद निमिखक मर्गाद भुष्ठ ।
निवाद निमिखक मर्गाद भुष्ठ ।।
निवाद निमिखक मर्गाद ।
निवाद निमिखक मर्गाद भुष्ठ ।।
निवाद निमिखक मर्गाद ।

तिनिखिकेकिया छी निनिखनिक्य-वह धिका तिकर्खन अर्था। यथा। नि-उताः निनिखिकीः कामताः कियाः भूभा मान्यवः। ममाथा हि बि-क एके मर्वाखा रामि म मेवः॥ उत्त दिवा । यह उन्नुकः जव जानि-उत्त निम्पूरेयकमना ममा। का उ-निर्मान म्पूरेयकमना ममा। का उ-मा का उक्यां हि कियाका अ मान्य प्राची प्रमा मुद्दी जिनिक मुन्दी भा के प्रमा मुक्ता । है जि विकृत्यान (१० व्याप्त ) व्यक्षा गरे।।

रेनिविकिंगान ही निविक्तिक्यवनः

। ধিকারিকর্ত্ব্যদান । যথা। যুকু পাপোপশাস্ত্রের দীয়তে বিদুষাণ করে ৷ নৈমিজিক তদুদিষ্ট দীন সন্ডিরনুষ্ঠিত ।। ইতিগৰ্ভপুরাণ रेनिमि खिकनयः श्रू॰ श्रुवयविरमयः,। যথ্য চতুর্গ সহসুত্তে ব্রুকো নৈ-মিত্তিকো লযঃ। অনাবৃষ্টিশ্চ কল্লা-ভে দা্য**েশত** বার্ষিকী॥উত্তিষ্ঠন্তি जना दोमा पिति मक्ष पिताकताः। তে তু পীয়া জল সর্বণ শোষ্যন্তি क्रगण्यः ॥ ज् जूदः म मंहरलाक नः इ। या छ जनः जनाः। कर्मा ज्या ত্বসৌ বিষ্ণুঃ পাতালানি দহত্যখঃ 1। विकुर्म (इ शिलाक क गूथा स्मिशान् সূজত্যল । বর্ষস্তে চ বর্ষশত । নানা বৰ্ণ। মহাঘনাঃ।। বিফ্ৰাস্যজঃ শত वाठि वर्षागाः वायु बर्ड्क्उः। वि-মুংরেকার্ণবে পীত্বা সর্ব বুন্ধ স্বৰূপ পৃক্।। শেতে খনন্তাসনে বিষ্ণু নঙ্কে-ছাবর জহমে। সূঞ্বা যুগ সহসু• স ক্রগন্ডুয়ো ৎসূজন্ধরিঃ॥ ইতি গৰুড **श्रुवान** ॥

নৈমিভিকন্নান নী নিমিভ নিশ্যে বদ্বিকারিকর্ত্ব্যুন্নান । যথা । চা
ভাল শব ফুপাদি স্পৃষ্ট্য ন্যাতা র্
জন্মলা । নামার্হন্ত যদা নাভি নান
নৈমিভিক হি তথা ইতি গক্ত

পুরাণ ॥ निभियात्रगु॰ क्ली जनगुवित्मयः। তস্যেৎপত্তি যথা। তেন চ্কেন **७८रिमनऽ मामूत्र॰ (मोर्ब्ब्य॰ क्रांगं८** ्। निभिवास्त्र भावित सम्बद्धश কৃত ॥ এব কৃত্বা ডতো দেবো মুনি পৌরমুখ তদা। উবাচ নি-भिष्यानमः निष्ठः मानवः वलः ॥ অরণ্যেমি• শুত শুেব• নৈমিযার-ণ্য সংজ্ঞক । ভবিষ্যতি যথার্থ रेव वुष्माना विष्णवा ॥ इंजि বরাহপুরাণেগৌরম্থ•পুতি ভগ-বদ্বা ক্যু॰ ॥ ঋ ॥ অপিচ। দেশ॰ বঃ जः भुवक्तामि यिवास्तरम हतिष्रथ । উক্তাননোময় চক্র স সৃষ্টা তানু ব্রাচ হ।। ক্ষিপ্ত মেতশ্মযা চক্র মনু-বুজত মা চির•। থক্তাস্য নেমিঃ শী-র্য্যেত্র স দেশঃ পুৰুষর্যন্ত ॥ ততো মুমোচ তছক তে চতৎ সগনু বুজন্ । তস্যবৈ বুজতঃ ক্ষিপু॰ যত্র নেমি' त्रभीर्ग्रेष ॥ स्निभिषः ७९ मृष्ठः नाना পুণ্য সৰ্বত্ত পূজিত। সৈদ্ধ চারণ সংকীৰ্ণ যক্ষ গন্ধৰ্ব সেবিত ।। স্থা ভন । অত্র দেবাঃ স গৃদ্ধরাঃ স य কোরণ রাক্ষসাঃ।। তপ স্তপ্ত। পুরা

कोर्स्स ४० व्यक्षारय बहुक्कीयान् शुं जुक्क वाकाः ॥ रेन्यराश्व की नार्शीयकन । इंडान् मतः ॥ नार्शाय काउ व्यक्षाकि । इंडिताशर तामा कर्वाशिका। रेन्यक्व कि नाक्क्रम्भका उनक्षाकि । हेडिताशर तामा कर्वाशिका। रेन्यक्व कि नाक्क्रम्भका उनक्षाकि । हेडिताशर त्वामा उर्ववाशिका।। रेन्यायकः शुं नाग्यत्वाशिका।। रेन्यायिकः शुं नाग्यत्वाशिका।। रेन्यायिकः शुं नाग्यत्वाशिका।। रिम्यायिकः शुं नाग्यत्वाशिका।। रिम्यायिकः शुं नाग्यत्वाशिका।। रिम्यायिकः शुं नाग्यत्वाशिका।। रिम्यायिकः शुं नाग्यत्वाशिका।।

৯৭ অধ্যায়ঃ ॥

ন• ভগবতঃ শস্তো রেতদৈনিষ মুভগবতঃ শস্তো রেতদৈনিষ মুভগবতঃ শস্তো রেতদৈনিষ মুভগবতঃ শস্তো রেতদৈনিষ মুক্ষেত্র রুভিন্থের থক্স ঠঃ ন ডঃ
ক্ষোরগ রাক্ষ্যাঃ। তপ স্তথ্য পুরা
ক্ষোরগ রাক্ষ্যাঃ। তপ স্তথ্য পুরা
ক্ষোরগ রাক্ষ্যাঃ। তপ স্থা পুরা
ক্ষোরগ রাক্ষ্যাঃ। পশ্চিম দক্ষিণ

তিব মতে ত**্রকোণাধি<del>পতী</del> রাছঃ।** म्बा। म्र्याः मुकः क्रमानू वाः निः शिक्यः भनिः भभी। स्रोग्र जिर भाकी ह भूगि। हि दिगधीयताः॥ তম্ভত্ত ॥

देनश्री की जनाही भुजीए प्रमध्य িদিক্। নৈশ্তকোণঃ। ইতি রাজ-निर्घक्तः को १६व का।

रेनपूर्वाः क्री निशूर्वाः यथाः शतिन প্তিতাশি দৈশু শ্যে উত্তমশ্লোক লী-नगा गृशीजक्रजाता अर्वजा थाने · **দুদ্ধীত**বান্ ॥ ইতি **প্রি**ভাগবতে - विजीयक्षकः ॥

रैनर्चन १ की निर्चन दुः।। विवय देव-রাগ্য:।যথা। বিষয়েশ্বতিসংরাগো ্য শানলো মল উচ্যক্তে।তেম্বেব হি विद्यानस रेनमंग्रा नमूनाक्उ ॥ ্ ইতি প্রা**য**িষ্কত তত্ত্বা

त्ननाः क्षे नीनमा ज्ञायः। नीनमा। ইতি মুশ্ববোধ টীকাবা রামতর্ক-বাগীশু:1

ইনবিদ্যুণ ক্লী বংশফুৎ কারগুণবিশেষঃ । ৰথা। নৈবিড্য প্রোচতা চাপি সূ वत्वक नींयुका। माक्र्या मिकि श कामी कूटक्रं उष् छंगाः मृजाः।। ইতি ्रम्हीज्यात्मारतः ॥ निविष्ठा ह ॥

स्मिनाधिशिक्तिः। इक्तिनाः । स्क्रा- तिरवर्गः जि निर्वरनीयमुद्धः। ज् शक्विषः। यथा। नित्तस्नीयः य-দুব্য পুশন্ত পুয্ত তথা। তদ্ত-ক্ষাৰ্হণ পঞ্চবিধণ নৈবেদ্য মিতি ক-থ্যতে ৷৷ ভক্ষ্য ভোক্সঞ্ লেহ্ঞ পেয় চোষ্যঞ্ পঞ্ম । সর্বত্র চৈ-**ज्रोबादम् । जाबाद्यादम् निर्देश्या** ॥ 🗱।। তৎপাত্র যথা। তৈজসেযু চ পাক্তেমু সৌবর্ণে রাজতে তথা ৷ তা-মেু বা পুস্তরে বাপি পদাপত্তে ২থবা भूनः॥ यद्धमाकमाय वाशि रेनदा-দ্য স্থাপথেছু খঃ। সর্বাভাবে চ মা-.ছেযে শ্বহন্ত ষটিতে যদি।। ইতি ত-জ্বসারঃ।। রু।। তদান ফল । যথা। रेनरवरम् इन्ट्रिक्ट सर्गा रेनरवरम् -নামৃত ভবেং। ধর্মার্থ কাম মো-ক্ষাশ্চ নৈবেদ্যেরু পুতিষ্ঠিতাঃ নী স-र्ब यब्ब कवः निष्ठाः निर्वारः मर्बः

> प्र•1 क्कानप्र• मानप्र• शूग्र• मर्ब-ভোগ্য মুখ্ তথা।৷ মনসাপি মহা-দৈবৈ বৈবেদ্য দাভুমিছত। যোন-রো ভক্তি যুক্তঃ সন্ দীর্ঘাযুঃ স সুখী **ভবে** । महामायाः कनात्त्वी सर्हः विवृत्रिम् लिक्जः। नाना विदेशस त्निक्तिन् विकि विकासना यः॥ न नईकांगान नश्लाश्य गय द्यात्क মহীয়তে॥ ইতি কালিকা পুরাণে

१८८१ ११० व्यथायः॥ ॥ अ८कात्ना यथा। अर्द्वाक् विमर्क्कनामुव्यः रेनव-দ্য সৰ্ব মুচ্যতে। বিসৰ্জ্জিতে জগ-॥ মাথে নিৰ্মান্য ভবতি ক্ষণা ।। প ঞ্জাত্র বিদো নৃখ্যা নৈবেদ্য ভুঞ্জতে সুথ । ইতিগৰ্ডপুরাণ ।। ৠ।। তস্য স্থাপন ক্রো যথা। গৌতমীযে। বানতস্ত ত , গুপ মগ্রে বান জু দ-।। बिन्दः । रेनदिन ५ मिक्ता र्जाल श्रू-রাজে বান পৃষ্ঠতঃ॥'দক্ষিণ ভাগস্ত দেবতায়। এবঁ ন তু সাধকস্য।। প-क्थ प्रवंजा वास्य जानाहरिक्द म-किए। भूव कव गठ निष्काया । ए ক্ষিণন্ত পরিভ্যজ্য বানে চৈব নিধা-পথে**। অভো**গ্র্য তদ্ভবে**দন্ন প**া নীযঞ্চ সুরোপন॰ ॥ ইতি তব্দসারঃ ॥ 🕸 ॥ जम मु। यथा। रेनरवन् अ मु। मञ्जूष्ठ किनिष्ठाच्छा॰ शुक्रमायट । क निष्ठानागिकाक्रेष्ठ मू मा भागमा की-র্ত্তিতা।। তৃর্জনী মধ্যমাঙ্গুষ্ঠৈ রপান-न्। जू मृद्धिका। अनामा मध्यमाङ्क्रीक करानमऽजुमाम्जा।।जन्दनऽश्नामा-মধ্যাভিঃ সাঙ্গুণ্ঠাভি শুভূর্থিকা। স र्वाजिः ना नमानम् शानाम् हम्यूरा জিতা।। তারপূরা জপেয়ী कुर পা-'गारीना॰ शुरमंदिए।। इंछि बामनः । 🟶 ।। द्रान्त्राय ७९ ममर्शन थया।

माकार थामि देनरवम् विभुक्त-পী জনার্দনঃ। ব্রাক্ষণে পরিতুষ্টে চ **गर्डहाः गर्दा**एवणः ॥ एत्वाय एत् दैनदिन १ फिजाय न शुराह् छि । जमी-ख्ठंक रेनर्विषः भूजनः मिद्गुलः जर्तर ॥ (मवम्खः न ভाক্তव्यः नित्वम्यक्ष विना इतिः। शुभासः गर्वपावितु वि-का दिन्दिर खाजनः ॥ # ॥ **मृ**मुत्र ऽ जंखका विधि यथा । मृमु का **७ ७ क** नित्वर । जाजाना पुकः । আমাম হর্যে দ্বা পাক কৃত্রা চ 'খাদতি॥ ইতি ত্রীকৃষ্ণনম্থণ্ডে ২১ व्यथ्रायं: ॥ 🛊 ॥ विकृ रेनरवम् । 🖘। জন ফলাদি স্বান্দে। কৃত্বা হৈবে-প্রবাসন্ত ভোক্তব্য দ্বাদশী দিনে ৷ নবেদ্য তুলসী মিশু হত্যা কোটি विनामनः।। भाष्य। इपि कंशः मूर्थ नाम रेनरविष् भूषर्तं इरतः। शाका-**म्कक्ष निर्माण्डः मस्टाक युंग्ड (मा** २ठूऽउः ॥ कात्म । जन्निक्षाम मह-সৈশ্চ বাজপেয় শতৈ স্তথা। তুল্য ফল ভবেদ্ধেবি বিক্ষো কৈৰেছ। ত্ৰ-क्रगार्था शास्त्राहरूक् निर्याक्ष देन-'বেদ্যঞ্ বিশেষতঃ। মহাপুসাদ ই-ত্যুক্তাগু।ছ শবিকোঃ পুষত্নতঃ। বস্ত্ চ গৃহ্থ পরিশিঙ্কে। পবিত্রণ বিষ্ণু নৈ-্বেদ্যং সুর সিন্ধবিভিঃ মৃতং। অনুচ

(मवम्) रेन(वम्) जुङ्ग हान्मु । य**१४**-রেৎ !। স্ব দক্ত মিতি বিশেষণীয় ।। मृत्जो । तुक्काबि शृहरिए क दन इ যতিভি তথা ৷ ভোক্তব্য**• বিষ্ণু নৈ**-रेन्हु नाज कार्या विज्ञातना ॥ इ-ত্যেকাৰ্দশীতভ্ৰু ॥ 🕸 ॥ অপিচ। বিষ্ণো নিবেদিত প্রস্তু নৈবেদ্য বা ফল• জল•। প্রাপ্তিনাত্তেণ ভোক্তব্য: ত্যাগেন বৃহ্মহা জনঃ ৷৷ ভুষ্ট 🗐 ভুষ্ট বৃদ্ধিশ্চ ভুষ্টজ্ঞানো ভবেমরঃ। ব স্ত্য-জেদ্বিষ্ণু নৈবেদ্য ভাগ্যেনোপস্থিত শুভ•াাপাপ্তি নাত্রেণযো ভুড্কে ড-'ক্তিগা বিষ্ণু নিবেদিত । পু**•সা॰ শ**ত॰ निमुष्कृ छ। की तमुष्कः स्रयः खराष्ट्र ॥ বিষ্ণু নৈবেদ্য ভোদ্ধী যো নিভ্যু বা পুণনে দ্ধরিণ। পূজ্যেৎ স্তৌতি বা ভ ক্ত্যা স বিষ্ণু সদৃশো ভবেৎ।। পু॰-শ্চল গে নবীরাম শুদুশাজাম মেব চ । यक्तः तं तित्वमुक्ष वृथानाः म मजः क्ककः ॥ भिवनिक्शुम्खायः यममः मृम्यादिनाः। विकिৎ, मक विजामक (पूर्वनाम क्लेप्य ह 11 कन्ताविकशि-णा मन यमम (यानिकी विना । अण् জান পয়ু বিত সর্বভক্ষ্যাবৃশেষ-কু ৷৷ শূদাপতিছিজানক ব্যবাহ-षिकाञ्चकः। अमीकि उद्विकानाक य-हत्र नदेराष्ट्रिनाः ॥ অগন্যাগানি-

নাংখ্য বিজানা নয় মেব চ। মিত্রক হা• কৃত্যানা মল• বিশ্বাস্ঘাতিনা৽ ॥ वि्थामाकार्भुतानाक द्वाकाराना-ন্তথ্যে চ। এতৎ সর্ব বিশুদ্ধেত বি-ষ্ণে। নৈবেদ্য ভক্ষণাৎ ।। ইতি বুক্ষ-বৈবর্জে পুকৃতিখণ্ডে৩০অধ্যায়ঃ॥‡॥ विका निविधिकामिन यञ्जेताः मर्ब দেবতাঃ। পিতরো ২তিথ্য শৈচব মি-তি বেদেষু বিশুতে ॥ অমৃত সর্ব वस्नाः निष्ठेः मातः मुन्त्छः। विर्षा নিবেদিতান্বস্য কলা নাইন্তি যোড-भी॰ ॥ यम्ह्या ठरेनादमाः या जुङ्ख्ङ নাধু সত্নতঃ। ষ্ঠিবর্য সহসাুণা পূা-গ্নোতি তপুসা ফল ।। যো নিবেদ্য হরি॰ ভূউক্তে ভক্ত্যা ভুক্তশ্চ নিত্যশঃ । কি॰ বা তপস্যা সুভরা॰ স হরে স্তেজসা সমঃ।। ইতি বুকবৈবর্ত্তে 🕮 कृषकम्पराख २१ व्यस्त्रायः ॥ 🕸 ॥ **भिव रेनरवरम्य विकास्या यथा । व-**স্কৃতগৃহাপরিশিষ্টে। অগ্রাহাণ শিব নৈবেদ্যে পতা পুষ্ণ ফল জল।। भानगुमं भिना म्हर्भाट मई गाउ পবিত্রতা ৷৷ শালগাম শিলাযা শিবপূজনে তদ্গান্থ মিত্যাহিক-তত্ত্ব কালিকাপুরাণে। যো যদে-वाईन त्रजः न जोवातम्। जंककः । কেবল সৌর শৈবে তু বৈষ্ণবে৷ নৈব

**ज्रक्र**यंथ्या विक्व शर ममें। (सर्वाः পाসक পর ।। সমান ন্তুন্য নৈবেদ্য **ज्ञारयहरा देववा । अवहरनार** সৃষ্টপর॰। নন্দিকেশ্বর পুরাণে। দত্বা रिनर्विषः विज्ञानि नाममी कथ्यः न। **`ত্যক্তব্য॰ শিব মুদ্দিশ্য তদাদানে**় न ज़ एकन ।। ইতি निवह खि-**भियः।** ইত্যেকाममीज्वुः॥ 🕸॥ স্বদত্ত শিব নৈবেদ্যস্যাপি ভক্ত্যা ভক্ষ্যত্ব মুক্ত॰ যথা। রোগ• হরতি निर्मानुः भाक्छ চরণाদকः। অশেব॰ পাতক৽ হন্তি শস্তো নৈবে-দ্য ভক্ষণ ॥ ইতি শাক্তানন্দতর-किनी ॥ 🛎 ॥ निव रेनरवर्गमागु। ছত্ত্ব কার্ন বথা। রাধিকোবাচ। এব মূতস্য চ বিভো সর্বেশস্য ম হাত্মনঃ।ন শস্ত কথ্যু ছিষ্ট বুছি স-নেহভঞ্জন।। একৃষ্ণ উবাচ। শৃণু দেবি পুৰক্ষে ছে নিতিহাস পুরাত-य॰। পাপেশ্বनाना॰ एट्टन जुल्मि लिएथाश्रम ।। जन< क्रमाद्भा दिक्छे</li> মেকদা চ জগামহ। দদর্শ ভুক্তবন্তঞ্চ ाथ नात्रायण विकः ॥ जुड्ठाव गृरैणः গবৈশ্চ পুণম্য ভক্তিতো মুদা। অ বশেষ দদৌ তমে সম্ভষ্টো ভক্তবং সদঃ ॥ প্রাপ্তসাত্রেণ তত্ত্বৈব ভুক্ত• তिरेनव किथन। किथिमुतक विम्ना ।

ভक्षभाष D मूर्वाछ ।। जिस्ता भूषा D তদ্তে গুরবে শ্লপাণিনে। ভক্তু-দুকাছ তৎসর্ব॰ ভুক্তঞ্চ প্রাপ্তিমাত্র-তঃ ।। ভুক্ত। সুদুর্লভ॰ বস্তু ননর্ত্ত পুেন বিস্তৃলঃ। পুলকাঞ্চিত মর্বাঙ্গু: সমু-नित्वा मूमानि उः॥ भारतम् खनः छ-ক্ত্যা সুকণ্ঠঃ পঞ্চবক্তুতঃ। রাগভেদৈ-কতানেন তাল মানেন সৃন্দরে ।। প-शास उगक ईसार म्नक वरायुक्त ह । স্বয়ণ নিপত্য পশ্চাচ কদন্দ্রি ম্বা-প চ ৷৷ অতীব কমনীযৈতদুপ ধ্যা-নৈক্মানসঃ।সহসুদল মধ্যস্থ-মা॰ পশ্যৰ স্থসরোক্ত্যে এতিমিল্ড-ः त एवी मूर्गा मूर्यिनाणिनी । मूमा त्रगाम मोघु॰ उ९ शुमम वनतम्मना । কদন্ত মূৰ্ছিত দৃষ্টা নিপতম্বঞ্চ ভ-ক্তিতঃ।পুহস্যবার্তা॰ পপুছ সমার• লপাণিনঃ ॥ সর্ব তা॰ কথ্যামাস भातः मःभूटाङ्गिलः। भुषा हूका-াসা দেবী শিব॰ পুরু বিভাধর। ॥ गः मध्यूमूम् जाः प्तृती मुखाय ह जि नाहनः। (वायग्रमान-विविश् जू-ाव मः शूषाञ्जिलिः॥ गुजा स्तार्त्र छाव॰ न ममाश मिव॰ मिवा। मुक्र গকে তদুহিষ্ট মভক্ষ্য বিদুয়া মপি । शार्बज्यात । मूंतित्रक उने सक्ष या नक् खुभी थतः। प्या विरकाः श

मारान विकाश कथ विद्या ॥ ब्लान प्रविद्यार्ग विद्यार्थ प्र যাধুনা। অতো মত্তো গৃহাগৈতৎ ফলনেব নছেশ্বর।। অদ্য পুভৃতি যে ুলাকা নৈবেদ্য• ভুঞ্জাত তবাতে **জ**-ক্মিক• সারমেযা ভবিষ্যন্ত্যের ভার-তে।। ইত্যুক্তা পাৰ্বতী মানাদ্রোদ পুরতো বিভো:। দৃষ্টিঃ পপাত তৎ कछिनी वक्छ। यज्य मः॥ जरा निवः . শিবাণ ভক্ত্যা কৃত্বা বক্ষসি সাদয়ণ। তন্মানভঙ্গ স্তোত্ত্রেণ বিনয়েন-চকা-त र II कर्त्रण ठक्क्स्या नी तः अभ्वाह , ह भूनः भूनः । वाध्यामाम विविध मी जिवारेका मंत्राहरेतः ॥ পরিতু-ষ্ঠা চ সা দেবী ভর্তার সমূবাচ হ। कलवत्रक्ष जाकामि रेनरवरमान वि-ना रुद्धः ॥ विভर्षि (तरु॰ সতত॰ তব সৌভাগ্য বৃদ্ধিত । কথ বহা মি সৌভাগ্য রহিতঞ্চ কলেবর ।। व्यभूर्बः छव रेनरवम्रः बन्म मृजूर बन রা হর॰। কৃত॰ দুষ্ট॰ যত ন্তমাৎ প-শ্যদেহ ত্রজামি চা লিকোপরি **ष्ट्रपाद्धः उ**रम्यागुश्च भीश्वत् । भू-পবিত্র ভবেত্তত্র বিক্ষোর্নবেদ্য মি मुिछ ।। ইতে sa मुक्का मा (मवी रमहर काङ्क नमूर्जा। बाँखा इत उट পুরত: ভবা চ ৰীচকার হ।। ইতি

वुक्तरिवसर्छ बीकृष्णक्रमथए७ ७१ ण-धायः॥ ॥ ७८ कात्रवास्त्रः यथा। वुकामीना क्लानिया ७९ कथ পরনেশান নির্মাল্য তব দূষিত ।। मेथत उवाह। मारेज मारेज मंशासित জ্ঞানসার শৃণু পুিষে । এতজ্জান মহাদেবি সারাৎসার• পরাৎপর• ৷৷ পঞ্ভূতাত্মক দেবি মূখ শে পরি-কীৰ্ত্তিত । মধ্যস্থান স্থিত যকুত-ইশান•সদা উদ্ধৃ • সুচি মিতে। কা-লাগ্ন ৰূপিণ তত্ত্ব সৰ্বশক্তি ম্যুণ जना ॥ তেজো मयः महिनानि मुथ गृक्व • वतानत्। की तिकि गञ्चत क-বি উত্থিত গরল বিষ।। উত্থিত পরল যন্ত্রকাও নাশকারক। ত-দেব গরল দেবি হত্তে কৃত্বা তু তদ্ধি-य । क्षाञ्चन निज फिर्ड गद्रन জলবন্তদা।। মমহন্তে নহেশানি আ-১ বিরাসীত্ শুচিমিতে। ততঃ করত-লীক্ত। তাদিষ পরমেশর।। নিপী-য তদ্বিশ সূক্ষণ তীম্নণ বুক্ষাগু নাশ कः॥ जजः भागम मूर्थमित न शीषा 'তদ্বিন্' গ্রিয়ে।। তদ্বিণ কঠদেশ তু ছিত হি সর্বদামন ॥ ততঃ পুভৃতি रिरंदिण मूर्थ ज्ञानायर जन। ॥

रेगरवम्ऽ

**करिश्वं कन्य • ज्या जमा विश्व का-**মিনি। ততঃ পুভৃতি দেবেশি নীল-किथेष मानु याः।। मेणानः ममूथः (ह-বিপর বুন্ধ বরাননে। পুত্যব্দিরাময (सर्वि मग्र्थ॰ कमनानति।। जाकार ेজ্যোতির্মধী দেবী সদা মে মুখ সং-স্থিতা। পত্ৰ• বা যদি বা পুষ্ণ• **জল**• वा वत्रवर्गिनि॥ यन् । हि भत्रामानि উপচার॰ মনোহর॰। या पम्या পুর্মেশানি মন্মুখোপরি পার্বতি॥ वगुाश्-उद्नियानाः नाकाबुकान য॰ ততঃ। এতত্ত্ব পরমেশানি নির্মা-न्। यस शादरपट् ॥ म जुरहा बायर দেবি নিষ্কৃতিশান্তি তত্ৰ বৈ। অগ্ৰা-**ए॰ मम निर्मान्। जञ्जद द्रान्त** ।। यদভ अग्रूर्थ দেবি পুল্প । পত मूख्न । जनियाना भरमानि गृ-,হ্লীযাৎ শিরসা সদা।। স বুন্ধ তেজ-সা তস্য সমতা যাতি সুন্দরি ৷ ন मन्त्राचित (मर्दिन उभाव मृद्धि মিতে।। লিকোপরি বরারোহে গ শ্চ তম্য শুচিমিতে। নিগদামি শৃণু श्रीरा वहन मम कानिनि ॥ म वव नात्रकी ज्ञा नद्रकः नर्बनात्र् या८.। ज्यानय नत्रकः ज्ञा जात्मर्वे तानि मन्तुरबद् ॥ चालाम्, ज्ञावतः रहित बक्रमक छथा शिए। जुका जु नह रेनरविन

পাপান্স অশেব কিমিতাণ বুৱেৎ ॥ मृग् (रवि शुवक्रांनि উहिक्वे म्-ম পার্রতি। উপচার স্থাপিত্রা প্ত পাত্রান্তরে প্রিয়ে ॥ কৃত্বা তু मखभूज हि उभागत निवस्त । वामामवामि मारविन मूर्थयू म्यू -বর্ণিনি। ভক্ষণ মম দেবেশি বৃক্ষা- 🗸 ও সৃষ্টি কারক। এতদ্বি পরমে-, भानि वुकारीनाः त्रूर्वछः॥ अभू-ि दी मूठि दीशि उहिडे जकरर म्ब्रि। न এव পর্যারাধ্যः नाका-দুকা শুচিমিতে।। উদ্বিপ্ত ভক্ষণে कागी मध्य अनिशासियः। निर्माः ष्ठ नृष्ड किषान् गृशीया प्रशास था- . इं जि ॥ शुथन दिक्द पद्म दिक् भारता जुन्तति । निर्मालाः सम (मरविन विक्शाशा ऋ· ब्रहानरन ॥ (म्वामृत मनुष्ठाम्ह भक्तर्बाः किन-वाम्यः। তে সর্বে পর্য়েশানি ব-वाकाः कूप्वूष्यः ॥ निर्मालायु ह (मरविण चिधिकात्री कथः ভरवरे। ইতি লিছাৰ্চন তত্তে ১৩। ১৪ প-े हेनः ॥

रेनरविषकः क्षी निष्यम्मार्थः गार्ड्याः य यथः, कन्ता मीयरक छः । यथाः ज्मीशाः काम वजाम खिल्मेनर्भः शुज्जिन्यान् । रेनरविष्यकः सर्वसूर्युः

নৈদ্বং পু• নলরাজা। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেবং ।। নিষ্ধ সম্বন্ধিনি ত্রি ।। নৈশ্চিত্য• ত্রি নিশ্চিতত্ব• । নিশ্চি-তস্য ভাব ইত্যর্থে ষ্ণ্য প্রত্যুয়

নৈষ্কিকঃ পুণ ৰূপ্যাধ্যক্ষঃ। ইত্যনরঃ
।। টক্ষকপতিঃ।। পুৰুষাখাদি ৰূপণ

ক্ষিত্ৰ বৃদ্ধত ৰূপ্য ত্স্যাধ্যক্ষঃ

- । ইতি ভরত: ॥

रेनिकः भुः वुक्तवर्गः कृषायावड्डीयः स्क अत्व त्या वमिक मः।यथा। नि-शिका वुक्तवाती व वत्मनावार्गः म-मिथो। उन्हलात १ मा ज्ञान्य भन्नाः रेन्था तति वा ॥ ज्ञान्य विधिना रिष्टः माध्यविज्ञिक्तिमुदः । वुक्त त्वाक भ्वाद्याजि न्ष्ट् ज्ञाय्र भूनः॥ इंडिंगक्फभूत्रानः ॥

নৈস্থিকঃ ত্রি স্বাভাবিকঃ। বথা।

প্রাম স্থানিব ভকিঃ স্বলন্ধা পরশাস্ত্রনঃ। কস্যুবা শিক্ষিতা রাজন্
ক্রিয়া নৈস্থিকী তব।। ইতি করিপুরাণে২৬ অধ্যায়ঃ।।

নৈজিংশিক্ষঃ ত্রি খন্নধারী ৷ নিজিশেন পুহরতি যং ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷
অসিহেতিঃ ২ ৷ ইন্তঃনরঃ ৷৷ অসিহেতিকঃ ১ ৷ ইতি শদরত্মাবলী ৷৷
নো ব্য নহি ৷ অভাবঃ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷
নো ব্য নহি ৷ অভাবঃ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷
নোধাঃ পুং ক্ষবিভেদঃ ৷ ইন্তুগাদিকোষঃ ৷৷

নোপছাতা ত্রি দুরছঃ ৷ ন উপ
সমীপে তিপ্ততি যঃ সঃ ৷৷ হীনার্থি
বিশেষঃ ৷ যথা ৷ অন্যবাদী ক্রিযাদ্বেষী নোপছাতা নিক্তরঃ ৷ আহৃতপুপলায়ী চ হীনঃ পঞ্চবিধঃ
মৃতঃ ৷৷ ইতি মিত্যুক্রায়া ব্যবহারমাত্কা ৷৷

तोः खी तोका। इंड्रमतः ॥
तोका खी नम्रामिमखत्र नार्थका क्षामिनिर्मित यान विश्नितः। छ० भर्यायः
। तोः २ छतिका ३ छत्र निः ८ छत्र नी ६
छतिः ४ छति १ छत्र छी ৮। इंडि
भूमत्र ज्ञावणी ॥ ॥ णथ नित्रमयात्नाष्म् ॥ तोकाम् । नित्रमयात्नाष्म् ॥ भूषिविक्र यम्पान- इत्य मर्वः शुकिविक्र यमान- यात्ना विश्वि- विम्तुः
त्यात्म इत्य विवादा मक्त्राम् विद्याः।

ৰক্ষেত্ৰ্য সপ্তশ্বতিরেকতোন্যে বদ-स्टि नोकाष्ठेनामि कर्य !! # !! ज-শ্বি থরা শু সুধানিধি পূরা মিত্র ধ-নাচ্যুতভে শুভলগ্নে। তারক যোগ जिथीनम् विभूक्ता (नोगमनः मूजमः **मू**जवात ॥ # ॥ वृक्षायूर्वम गमिजा वृक्कजाि अञ्बिधा । नगामित्व গদিত তেষা কাষ্ঠ চতুর্বিধ ॥ তন্মথা। লবু যৎ কোনল কাঠ। नुवहे॰ तुक्ककाठि उ९ । मृहाकः व-यू यदकान्त्र भविष्टे कथानि उदा কোনলং গুৰু যৎ কাঠ্ঠ বৈশ্যজাতি তদ্চ্যতে। দ্ঢাক। গুৰু যৎ কাষ্ঠ। শূদুজাতি তদুচ্যতে।। লক্ষণ দ্ব योशिन दिकािं कार्ड मःगुरः ॥ ক্ষ্ত্ৰিয় কাঠৈ ৰ্ঘটিতা ভোজমতে সুখ जम्मर् भोका। ज्ञान् वयुक्तिः जून् ঢৈ বিৰূপতি জলদুল্পদে নৌকা॰।। বি-ভিন্ন জাতি দ্বয় কাণ্ঠ জাতা ন শুে্ব-त्म नाशि मूथाय तोका । निवा कि-র•তিষ্ঠতি পচ্যতে চ বিভিদ্যতে বা<sup>-</sup> রিণি মজ্জতে চ**া। ন সি**ন্ধুগাদ্যা ई-তিলৌহবদ্ধ• তল্পোহকালৈ ব্রিবতে हि लोरः। विभाग्राक द्वन बलायुः (नोका ख्रान वृक्षः निक्रगामः (ভाकः) ॥ 🛊 ॥ व्यथ लक्ष्णानि । जामान् १ . विष्णवण्य नोकाया नक्क व वयः ।

অত্র সামান্য । রাজহন্ত মিভাবা-मा जल्लाम निर्देश किनी। जानीम-বোষতা দৌকা কুদুেতি গদিতা বুধিঃ ৷৷ অতঃ সাৰু মিতাযামা তদৰ প-রিণাহিনী। বিভাগেণোথিতা ব কা মধ্যমেতি পুচক্ষ্যতে।। কুদুৰ্থ মু খ্যনা ভীমাচপলা পটলা ভষা। দী-র্ঘা পত্রপুটা চৈব গর্ভরা মন্থরা তথা ॥ (नोका मन्नक भिजू । छ॰ दाखहरैल त्रनुक्रम । একৈক वृष्टिः नार्षिक विजानीयां इय॰ इय॰ ॥ स्मिजिन्ह 'পুৰীণা চ হস্তাদৰ্জা'**শ স**ম্মিতা। অত্র ভীমা ভ্যা চৈব গর্ভরা চাশুক্ত পুদা।৷ মন্তরা পরতো যাস্ত তাসামে-বাৰুধৌগতিঃ। তাসা গুণস্ত সংক্ষ পাৎ দৃচতা চ পুকীৰ্ণতা ৷৷ 🛊 ৷৷ অথ বি**শেবঃ। দীর্ঘা চৈবোন্নতা** চেক্তি বি-শেষে দ্বিবিধা ভিদা৷ তত্ৰ দীৰ্ঘা যথা । द्राज्ञई उपयोगा यक्षाः भ भद्रि-शाहिनी। मोर्किय॰ हीर्घिका नाम ह-শাঙ্গেনোর তাপি চ।। দীর্ঘিকা তর-জহ্বালা প্লাবিনী চৈব খারিণী বেগিনী **७**था ॥ ताब हरिडॉककवृका तोका नामानि किम्म। उन्निः भन्निगहि मनाडा भ मिलीकंगा ।। जब ल ना गामिनी हु श्लाविनी मुत्स्न सा खर्य ८ ६

ৰোলায় মান মারভ্য বাবস্কবতি गवृत्ता।(लाबायाःकन मायस्य वरः ानकाम् निर्परः। स्विनिन्। भन्ना ্যাতৃ সা শিবাধোকর যথা।।ভো-ब्बाशि । सोका नीर्य गरशह जा **•स्टेंबजानि विवर्क्कत्य ८। इस्टम•थ**ा পরিত্যান্ত্যা বসু বেদ:গুহোন্ডরে ॥ ্ৰষ্ট্যুন্তর মিতানৌকা ফল হস্তি বৃল **খন**। নবতে ৰুত্তরে যাপি যা চত্তারি• **শতে: প**রা।। এতেন চত্ত্বারিণ্শতি য 🔞 নবতি সম্থ্যা তৎপরতোপি। यावरभन्न एमक जावराव उৎक्र মিতি। ইতি দীর্ঘা।। অথোমতা। **রাজহন্ত ঘর মিতা তাবৎ পুস**রণো-वजा इय मूर्चा जिथा मोका कमाय ्र श्थिवीजुडाः ॥ अक्षा कृष्ण सर्भ्यो গর্ভিণী মন্থরা তথা। রাজহত্তৈকৈক বৃদ্ধ্য নাম পঞ্জাত্রয় ভবে । অত্রা न्कां अर्जिगी ह निनित्र नौमयुग्मक॰ । নছরাযাঃ পরা যাস্ত তাঃ শুভায যথোন্তর• । ভোজেপে। বাণাগু ১-ভূরতো মান নৌকানা মশুভ ব-ह्दा शकामम्स्रित्झाञः धननाम बरगर्बा । इंजू मठा ॥ 🗱 ॥ शी-षानीन। मंद्रां वंकिं निर्गय किन ক্ষুপূৰ্য । কনক বজড় তামু ত্ৰি-छ्यम् यथा कमः ॥ तुकारि जिः भ

विन्तर्भा भोका विजय कर्षां । इजूः শ্ৰা ত্ৰিশ্ৰাভা বিশ্ৰা চৈকশ্ৰি-ণী :৷ সিত রক্কাপীত নীল বর্ণান্দ-म्रांचथाकन । (कनती नहिर्या ना-পো ছিরদো ব্যাঘু এব চ ॥ পক্ষী ভে-কো ননুষ্যক্ত এতেয়া বদনাইক । नावाः मूर्थ शतिनात्रा जामिजादि मणा जूवा ।। कलामा मर्भन कन्मु **दिवरमानाः गरी**जुङ्गा । इन्मः (क्की শুকঃ সিংহোগজো পছি র্র্যুষ্টপ सो ॥ वारिजारि हमा बाउ हो-কোপরি পরিন্যসেৎ। গ্রানৌকাসু मि विमाला विख्यानवक्ष्य । মুক্তান্তবকৈ যুক্তানৌকা স্যাৎ সর্ব-তোভ্যাতে সংখ্যা চেদথরসবেদ ঘ্য সমিতা ক্রমশঃ য় কনকাদীনাণ মালা জয়মালেতি গদ্যতে সন্ডিঃ। বুন্ধ ক্ষণ্ডে দিত্যেএকৈকে বৈশ্য শুদু यानी॥#॥निग्रः नग्रद्याथ उ९-. मुर्बः द्विविधः ভবেৎ । निग्रं इः भूर्ब मूफ्डि नग्हानि यथा मृत् ॥ नग्-হা ত্ৰি বিধা প্ৰোক্তা সৰ্বসধ্যাপুমন্দি-র। সর্বতো মন্দিরে যত্র সাজেয়া गर्वगनित्वा।। ब्राड्याः कामाथ ना-রীণাশ যান মত্র পুশস্তে। মধ্যতা निन्द्रिः राज् मा रिक्ट्या नशुक्तिहा। ।। ब्रांकाः विवान याजारि वर्षाम् ह

পুলস্যতে । অগুতো মন্দির• যত্র<sub>॥</sub> সা জ্বেয়া ত্বুমন্দিরা।। চিরপুরাস याजाया॰ त्रा काल घनाज्या ॥॰ मनिरतमानः भोका भुमत्र ज्वार्ष ভাগতো न्रुन ।। (ভাइस। भीर्य वृत বসু ষট্ দিবাকরানেক দিছব মিতা যথাক্রন ৷ রাজ পঞ্চ ভূজ সমিতো-মতি মন্দিরে তরিগতে নহীভূ**রা**ণ ॥ ভाऋद्रानिक मन्ना जुवा॰ भूनः ধাতু নিৰ্ণমন নত্ৰ পূৰ্ব বং । পতা-का कल जारीनाः निर्गर्या नवर्षः व ।। কাষ্ঠজ॰ খাতুজঞ্চেতি নন্দির॰ দি-বিধ ভবেং। কাষ্ঠজ সুথ সপত্তৈ। विनारम शाजूबः गठः॥ शब भयऽ। **স**নাধীনা•নৃত্ত্ত্বাল্লোচযোরপি। অ-त्रियारिकत मूनि जिनियः शूर्ववम छः ॥ निष्पाञ निष गुनिष्ठे॰ नोका वक्त गुनु तः। भुवारमञ्जूव नियसा ष्यभुक्षारन न निर्वयः ॥ लघुठा मृष्ठी চৈব গামিতা ছিদুতা তথা। সমূত-· डि श्राराष्ट्रामा (नोकाना ग्रः भुका-শিতঃ ৷৷ এব বিচিন্ত্য যো রাজা নৌকা যান করোতি চাস চিরু मूथ भारता जि विकश मृत्तात शियः।।· रवा रखानामन प्या यान सोकाना ष्ट्रकुछ न्थः। उत्माकानि विनमा यत्ना बीर्याः वतः धनः ॥ इति निद्धः म् त्रातालुद्धम् क्लेकागानः॥ ॥

करन्। जनयानानि यथा। तोकान।-তো জলে যান জ্বন্য মিতি গদ্য তে। তদেহা বহব তে তু পাশ্চা-जाना• शुकीर्खिजाः ॥ पुानी **कश** स यमानं पुगीयानं समूह (कि. ষটাভিৰ্ঘটিত যান ঘটানোকেছি गर्राख ॥ जुद्युतिरा **स करेन** यान•, कनयान भुत्रकारा । वर्षा ख्न .शूर्व यह संयान जमूहाराज ॥ यान বল্লযুভি বৃ কৈ বৃ ক্ষান স্তুচ্যতো **ब**ल्ला अन्य क्षा अन्य क्षा अन्य विश्व वि পুচক্ষ্যতে ৷৷ বাহুভ্যা• সম্ভরেদ্বারি **ब्रह्म** म निर्नयः ॥ इंडि यूकि-क्ला उद्यो निव्यास्थारनारम्थः ॥ े লীকাদণ্ডঃ পু॰ ক্ষেপণী।চাইড ইতি ইতি নগী ইতিচ ভাষা। ইত্যমরঃ ৷৷ নৌতার্য্য • ब नाव्य । নৌকাগন্য দেশাদি। ইত্যনরঃ ।। 📑 न्यकाकका जी मक्ट्कींग्रेश विश्वा-किभिः। ইতি हात्रात्नी H नुद्भातः भ् नाक्ताना उद्भवागः। অবজ্ঞা২ পরীছার: ১ পরিহার: ৪ পরাভব:৫অপনান ৬পরিভন্: ৭ তিরস্বার:৮তিরক্তিযা ১ অর্কুলা ১० (रुवा) ३ व्यवस्थान । १२ (ई वन २० अनामतः १८ या जिल्दाः १० मूकः ৭০ ১৬ সূক্রণ ১৭ রীচা ১৮ অভিনে

্ডিঃ ১৯ নিকৃতিঃ ২০ অবুষ্ণা ২১ 🛚 चानुकारा २२:नी कात्रः २० व्यवस्था ২৪ অসানন ২৫ ক্ষেপঃ ২৬ নিকারঃ ূ**২৭ বিহুারঃ** ২৮। ইতি শব্রন্না **्विणी। विभानना। ইতি कालिए। সः** नुष्णाधः श्॰ वहेव्कः॥ वरामशति ्रमानः। इज्जनतः ॥ मनीवृकः। इंडि मिरिनी।। वियमगी ।। माइ-ः নাখ্যোষধিঃ। ইতি বিশ্বঃ।। मुर्गुाथशतिम् थनः शुः व्यामशति-নিতোছুগপরীণাহঃপুক্ষঃ। এতা-দৃশা: পুৰুষা জ্বেতা যুগে চক্ৰবৰ্ত্তিন व्यामन्। यथा। महाधनुर्धता रेण्ठव **विज्ञायाः एकवर्स्टिनः। मर्द ए**क्नग जम्मना नुर्भाष्मतिम छलाः॥ नु-शासो ज्याजो वार्वप्रामा न्र-পোধ উচ্যতে। ব্যামেন উদ্যোধ স্য অধ উদ্ধৃ ঞ দৈহিনঃ।। সমো-हुव भेहीगारश न्याभुविभित्रें नख-**णः। ইতি भा**ष्टागुऽर्रे अथ्यायः॥ न्राशुष्त्रविष्ठिम् छन। खी व्यक्ता विष्ण-यः। यथा। उत्ने मूक्ठिनो यम्त ি নিতম্বেচ বিশালতা। মধ্যে ক্ষীণা खुदाया ना नुर्श्याक्षभित्रमखना ॥

के जिन्दमाना।।

न्यानीयां जी न्यानीयी के जिन्द न्यानी।।

न्यानीयां जी जिन्दियों। के न्यानकानी ্ইতি তাবা। পুর্নসতী ইতি কেচিৎ । ইত্যমর্জরতৌ ॥

नार्षे वि नीहः। धर्वः। ইতাসরः॥ निमः। ইতি মেদিনী॥ कार्ज्याः। ইতি বিখः॥

ন্যকু: পু॰ মৃগভেদ:।ইত্যমর:।।
মণিবিশেষ:।ইতি মেদিনী।।
ন্যকুভ্মহ: পু॰ শোণকবৃক্ষঃ।ইতি
ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

मृश्चित्र जि व्यथः किछ । देखि को। भूतः ॥

नायः भू व्यभवयः। ইতি किविः।।
नाउः जि निह्यः। इाभियः। छूट भर्यायः। निष्ठः २। ইতাময়ः॥ व्यमा भर्यायास्त्रः निकिस भाषा पृष्ठेवाः।

ন্যতশত্রঃ পূ
 পিতৃলোকঃ ইতি
কিবাওশেবঃ ৷৷ ত্যক্তশন্তে কি ৷

যথা ৷ ন্যতশত্র দিলীপঞ্চ তঞ্চ
শূর্বা পুভু ৷ রাজ্ঞামুজ্ত নারাচে ইদি শল্য মিবার্পিত ৷৷ ইতি
ঃ ৷৷

नाकः व्री कार्ज्याः। ज्वाः। निक्रिः बि। इष्टि मिनि ।। नाकः भूः महिषः। ইखि मिनि ॥ बाम्प्याः। ইखि हमन्मुः॥ नाकाः व्री ज्ञेष्ठ्याः। मूखि इखिः जावा। ज्यागाः। च्यागाः। ज्ञानः

न्य

क्रिक्व १०। इंडिनेक्ट निका ॥ न्यामः भू वाहातः। हेर्नुमतः। न्तायः प् विकृशायथा। अनुनी भी मगीः अभाग्रारमा निका ममीत्रमः। ইতি তস্য সহসুনাম মধ্যে গণিতঃ ।। # ।। উठिउ: । তৎ পर्यत्रायः । অত্রেবঃ ২ কল্প: ৩ দেশৰূপ•৪ সম-ঞ্জন• ৫। ইত্যমরঃ ॥ 🗱 ॥ পুতিজ্ঞা रिज्राहद्राणाभनय निगमनाज्यक পঞ্চাবয়ৰ বাক্য•। তল্পক্ষণ• যথা। অনুমিতি চরম কারণ লি**ক্পরা**মর্শ পুर्याञक नाम खान जनक वाक ত্ব-। ইতি চিন্তানণিঃ॥ উচিতানুপ্ धी कशुजिङ्का नि शक्षक ममूमा यदः । ইতিশিরোমণিঃ ॥ তল্পক্যুণ যথা । পর্বতো বহিমান্ ধূমাৎ যো যো ধূনরান্স বহিমোন্যথা নহানস• ্ৰুছিব্যাপ্য ধূমবা॰ শ্চায়ণ তন্মান্ধ-शियान्। ইতি जगरीणः॥ 🕸 🗓 ষড্দৰ্শনাম্বৰ্গত দৰ্শন বিশেষঃ। তৃৎ · भर्यायः। उक्विम्रा २ वादिकिकी ০। ইত্যমরভরতৌ।। এতদর্শন ম-তে নিত্যে ছাকৃতি মৃতি সহিতঃ প ब्रमाजा ब्रेसदः म जू दुक्तशहराणी দ্বীবাতিরিক:। এতহাত্র পুথোন-ন চাৰাকাদি মত নিরাকরণ পূর্ব क्रेक्श काजगठवा है यज कंग्हा-श्रीन नामग्राहि निक्शालन विहार्य

দিন্ধশ্চ।। দ্যায়দর্শনকারো গোভুলঃ। তৎ সূত্ৰ পুমাৰ্থাদি ষোড়শ পদাৰ্থ নিৰপণণা তেস্পি ভব্বজ্ঞানা নিশ্ৰেষ-- ग॰। তস্য ভাষ্যকারো বৃধি স্থায়নঃ । তদার্ভিক কারঃ কাত্যায়নঃ। ওঁজী কাকারোবাচন্নতিনিশু:। তहाक্র ডি मयमा हो ग्रीः अनुभा अवि शुक् जिश्ह-कातः। अनुगाञ्जलि शिकाकारतो रुप्ति-माम बामचापुरे। मामानाभाषायः भुज उकानुमीत्मार्थमान ने बांच । चांच **ठ**ञ्डेगाञाक विद्यागिकातः।, उट সূত্যে বৰ্জনানোপাধ্যায় স্তযোশ্য-ত্রৌ নণিমিশু যজ্ঞপত্যুপাধ্যাযৌম-ণিপুভাকারে। 'যজ্ঞপভাগার্মার ছাত্রঃপক্ষবরমিশুলিভামণেরালো-ককারঃ। পক্ষধরমিশু ছাতো র-ঘুনাথ শিরোমণি শিল্ভামণে দী ধি-তিকারঃ। তहाর্ত্তো সথুরানাথ তর্ক-্রাগীশ শিস্তামণি দীধিভৌগ ষ্টাকা-কার:। তছাত্রো ভবানন্দ সিদ্ধান্ত বাগীশোদীধিতে ষ্টাকুাকার:। তহা-क्रिकारीण उर्काणकात गराध्य ভক্তাচার্য্যে দীধিতি টীকাকারৌ-1 अञ्चित्रिका वामार्थकाता वस्तः शिख्ठा यात्रन्।। सा स्व कृषि भुषम मूक विचारि । भुमारा नुस्मय जन्मय भूरयाञ्चन मृद्रास्त्रिकासा १व-यक छक निर्म पार सन्न विख्ला

হেল্লভাস হল জাতি নিগুৰ্হানা-नाः , जङ्गकानाविद्भुयनाविश्वनः । क्याः नक्षाति ग्रह्मा शुर्कान्-गानाश्मान नेषाः शुमायानि। ३। काल महीतिन्यार्थ द्वा मनः পুৰুত্তি দোষ পুৰুত্তাৰ ফল দুঃথা-भवशास भुरम्य । राज्यमानातक ধর্মোগপত্তে বিশুতিপত্তে ৰূপল-ন্ধ্যানুপলন্ধ্য বৃহত্য বিশেষাপে-(का विमर्भः मः भयः । ७ । यमर्थ मिष्ठु भुवर्ख्य उर भुराबन 18। लोकिक भन्नीककानाः यस्य . अर्थ वृक्षि मामानाः य मृष्टी उः । ए। তজাধিকরণাভুগেগম সংস্থিতিঃ সিদ্ধান্তঃ । ১। পুতিক্তা হেতৃদাহ ज्ञाताश्रमय निगमनान्यव्यवाः । १। ত্মবিজ্ঞাত তত্ত্বে হর্থেকারণোপপ ভিত স্তুজ্ঞানার্মূহ স্কঃ,। ৮। বিসৃশ্য পক্ষ পুতিপক্ষাভ্যা মর্থা-বধারণ নির্ণয় ৷ ১ ৷ পুমাণ তক नाथरनाभावसः निषास्त्राविकषः পঞ্চাব্যবোগপ্নঃ পক্ষ পুতিপক্ষ . भित्रिगुरहा वामः । २० । यर्थाभ-পদ হল ভাতি নিগুহ সানোপাল-ि क्रि: 1'३३। मर भुजिभकं हा-भोग शिला विजया १,३२ । जवा-ভিচার বিৰুদ্ধ পুকরণ সমসাধ্য স मकालाञ्याभिति है। रहेवा जामाः

120। यहन विशास्त्रा ६६ विकल्हाल-शन्त्रा इनः। १८। मार्स्याः देवस्याः ভ্যা॰ পুত্যবন্থান• জাতিঃ। ১৫। বি-পুতিপত্তি রপুতিপত্তিক নিগুছছা-न । १७। इंडि भाउममूब ।। 🛊 ॥ ন্যায়শান্ত্ৰঞ্চ পঞ্চাধ্যায়াত্মক । তত্ৰ পুত্যধ্যায়সগাহ্লিক ধ্য় । জক্র পু-থ্যাধ্যায়স্য পুথ্যাহ্লিকে ভগবতা भोजरमन श्रुमाशानि शरार्थः नद्रक वक्षा निक्षा विधाय विश्रीय दा-मानि मध श्रमार्थ जंकग निक्रशन 1) । बिञीयमाञु श्रुथान मः भय श-तीकनः भूगान हजूकेवाभुालाना भ-ন্ধা নিরাকর পে। দ্বিতীয়ে অর্থাপ-ভ্যাদে রম্ভর্ভাব নিৰূপণ । ২। তৃ **ठीयम्। भूथान जाजा भंतीति मुर्यार्थ** পরीक्षा । विजीय दुष्कि म्नः भ-রীক্ষণ । ৩। চতুর্থস্য পুথমে প্রারু-ত্তি দোষ প্রেত্যভাব ফল দুঃখাপ-वर्ग भन्नीकनः। विजीय स्निष् नि-মিত্তকৃত্ব নিৰ্কেশণ অব্যবাদি নিৰ্কা পণঞ্চ। ৪। পঞ্চনস্য পুথনে জাতি-ভেদ নিৰ্পূগৃণ ৷ দ্বিতীয়ে নিগুহস্থান (छर निक्षान । ६। इंडि जर्बरणन न गुरुः ॥ # ॥ युक्ति मूलक मृक्षेष्ठ वित्मवः। ज़रु देश विशः। र्ङ्याः यार्थे श्रुतिकानाः नाम वक्ष श्रुमा शानि विथुत्छ ॥

निरायनामानि

: व्यक्तरगानाक्त न्यायः ३।

विक्षशत्रु न तायः २ १

र्ध्क रंखीन ग्रायः ठ।

ष्याक्वनिका न्यायः ध्रा

#### एक भगावि

কান্চদুভাত্ম। মহারণ্য নাগে পাঞ্চি সন্ধ ধ্বস্থু নগর জিগমিষু ব্ভাষে কিন্তাগুমতা দুঃখিতেৰ ছীৰত ইতি म ठामः मुখ्यागी मार्क्ग जमाश्वः मः ত্বোবাচ অহে। মন্ডাগপ্বেশ্ যদত্র ভ वान मीन गा॰ बाजीहे नगत शाखाः সমর্থ ভাষতইতি স্চ বিপুলিশ্ন দু (১) (गायुवान मानीय उपीय लाञ्च मञ्च-পু৷হ্যামাস উপদিদেশ চৈনমন্ধনেষ গোযুবা ত্বা॰ নগর॰ নেষ্যতি নাত্যজ-লাফুল মিতি সচান্ধ: শুদ্ধালুত্যা ত-দত্যজন্ স্বাভীষ্ট মপ্রাপ্যানর্থপরস্প-রাম্পাপ্তঃ। 🔰 । अक्षक्रिकाकाः भक्नु र्यथा अक्षमः भ-**ন্দ্যা**•অধ্বাতিক্রম সমর্থ তথা সচান্ধঃ পংকাদ্ভ্যাণ চক্ষুঃমানিব ভবতি হৈ ৷ বহবো হন্ধা হস্তি নিৰ্কশ্বণাৰ্থ-পুৰুত্তীঃ কেনচিৎ চর্নাণ স্পৃষ্ট্বাস্তম্ভা কারত্ত্বনকে नाशि लाङ्ग्ल प्रश्वे। बच्छा कांबर दन श-রেণশ্রোত্র•শৃষ্ট্রাসূর্পাকারত্বেনাপরেণ শুণ্ডি শুধ্বা সর্পাকারত্বে নগর্জীনিণী তঃ **जुंन**) खगारि भाविना माभाकारि ना-के वनाना॰ ज्यंनीक वन गमरने जेंडेरनऽ वन गर्मनार्शका न ११ जिल्हा । उन्ह গুণশালিনি ইনৈ স্তিত্তি রাইণেনী শোক বনে সীতা ছাপিতা তত্ত্ব বনা खदा शानानम्भना १८८

उट श्रुवांगानि

रक्षा जान नथूत्री-नाथ होकारपः )।

कार्य क्षेत्रारमे हरी मात्र होका २।

ভাগবঁডाদ্य: ৩।

ভাষ্যসন্তমসূত্র ব্যাখ্যা ৪ ৷

## न्रायनामानि

উষ্ট্ৰ কণ্টক ভোজন ন্যায়ঃ ৫1

श्रेष्या व्याप्त कम प्रायः ७। कृत क्इपन प्रायः १।

काकाकिरगानक नऽयिः ৮। क्र्याह्रनऽयः ३।

हेकमू जिक्न जायः ३०।

**খলেকপোত**ন্যায়ঃ ১১।

अधिश्विकान्यः भ्राः भावनीयसंन्यायः

जि न जिनामित्रीयः १८।

# **उसक्**गानि

উদ্ভূল্য শমী কণ্টক ক্ষত জন্য বহু मुश्य महन প्रकि॰ किषिए সুখ बनक সপত্ৰ শনীকটক ভক্ষণ ৷৫৷ कम्ब (गानकम्) मर्बाक्यत्वयु यूगनः দেব পুষ্ণাণা মুৎপত্তিঃ। ৬। কল্পদেনৈৰ কর ভূষণ বিশেষ বোধ সম্ভবে ংপিকর শব্দ পূর্বক কল্পণদঃ কর সংলগ্ন কঙ্কণ বোধার্থকঃ। १। এক মেব চক্ষু গোঁলক মু ভ্য চকুঃ সম্ব-ন্ধি সনুভয় চক্ষুঃকার্য্য কারক । ৮। कूर्यः (महरा जनानि भुनादयि नः কোচযতি তদ্বৎ ৷ ৯ ৷ যন্ডার বহন• দুর্বলস্যাপি সাধ্য• ত ভার বহন সুতরা সবলস্য সাধ্য 1701 বৃদ্ধা যুবানঃ **শিশ**বঃ কপোতাঃ খলে-

य्थानी यूरानः लिलवः करमाञाः श्राम यथानी यूरामे मञ्जूष्ट मञ्जूष्ट मज्ञी मञ्जूष्ट महार्थाः मङ्ग्णादानान् विता ज्यस्ति। १३१

७७ जिल्हा मुम्राक्त तमा बाहन तमर्थ कलः।

**পতन उद्दर्श १८।** -

**७**८ शुमागानि

বেদান্তশঙ্কর ভাবত টীকা ৫ ৷

ভाষাপরিছেল দ্যঃ ৬। কাব্যপুকাশটীকা-দ্যঃ १।

यमज्ञकाय हीका-हराः ৮। शक्षमणीहीका २।

वऽधिकत्रगश्यांक हिमाजावजगरील होका २०। जानानऽलक्ष्मणे क्र-गरील होका २२।

ভাষ্যরন্ধুভা ১২ i

नाहिज्यमर्भगामयः २०१

व्याधिशक्यक क-

## न्रायनामामि

ভূপারণিমণিন্যাবঃ ১৫।

म्याभवन्त्रायः ५ ।

দওচকাদিন্যায়ঃ ১৭। দুভাপুপন্যায়ঃ১৮৷

शक्षश्रकाणनं नहायः २२। भिन्दापिनहायः २०।

্রাজপুরপুবেশ ন্যায়ঃ ২১।

**ल्**ठाउखन्त्रायः २२।

वित्मत्य वित्मवा नगर्भः

শ্রীচীতরক্ষ্যায়ঃ ংশু।

#### ভলকণানি

ত্ণারণি মণীনা মেক মাত্র জন্য রক্টে ব্যক্তিচার ভিষা নৈক্ধর্মাবছির্দ পুতি कात्र । कि स्वार्थ । कि कार्य । जारा हमक মক্ষবলয়।কার্য্যকারণভাব ত্র্যপ্ত। পত্রাণাণ দখানামপি পূর্বাকারেণাব স্থান জ্ঞান মাত্রণ নতু বস্তুতঃ পত্রত্বণ ঠ शहेजारम क्रम धर्मावंहिम भुि म ७ ह-कारीना॰ कात्रगष्ड्॰। २१। আগুভক্ষিতৈকদেশ দণ্ড পশ্যত স্ত-দেকদেশ সংলগ্ন পিষ্টক ভঞ্চণ বুন্ধিঃ शक्र (लशन शृर्वक कालन **मरशक**ऽ भक्तालिशन (भूगः। १२)। দাহ-পুতিজ্ঞলস্য পুতিবন্ধকত্ব-ৰহি नामक उरा रशेकिक मिन महा भीना-স্ত তদ্বিলক্ষণপুতি বন্ধকরণৰাতজ্যেণ বিশ্হল গন্নাসহিত্যু রক্ষক স্তুর্বে त्राजभूति जनानाः भागी कव्या भु-বেশঃ।২১ঃ ल्ञ न्क्यू ः भार । कान : त्रव्य ि न -इत्रिक छष्ट । रर ভূতলে জাদৌ কেবল ঘটো বিশেষণ তত তত্ত্ৰ ফটে জল বিশেষণ নতু क्रणविभिष्ठेचिकवीति वित्राचन १२०। বীচীজনিত তর্গ তজ্জনিকোপিতর-व इंडि कामन उन्नर्शं शिवित १ ६८।

্তৎপুমাণানি বাধগুছটীকা ১৫।

বেদাকতাব্যটাকা ১৬। পরামর্শমপুরানাথ টীকা ১৭। দাযভাগাদ্য:১৮)

व्यवयम् ज्ञामान्न-त्री होका २२। शक्का क्षामीन होका २०।

न्ताय नदश्ख्म्यू-द्रानाथ होका २२।

বেদান্ত সার টীকা .

২২ ৷

সামান লেক্ষণা ম-

भागान। नक्या य-भूतामाथ होका <u>क्य</u>ा

्रीभाविका ४८

न्रायनामानि

बीबाङ्ग्रनप्रायः २०

न्द्रादर्भान्यायः २७

শক্তাকভেদন্যায়ঃ ২৭।

**শৃৰণুাহিতান্যা**যঃ ২৮।

मनरः भुगुनिङ ं नऽपरः २३।

नवारभकानग्रयः २०। मूठीकठा हनग्रयः १वित्रमञ्जू

#### তলক্ণানি

मेर्एमें वीकः उटा रक्तः किमाना-वकूत्र खंछा बीज मिळानिनंदयन बी-बाकुत शुवारमा रनापिः। २०१ कनारि मह्मास्तिन त्वा वित्नव निर्गयः। २७। উ**প**যুৰ্গ পরিছিত**শ**তসংখ্যকপত্রাণাণ স্চ্যা যুগপন্তেদ ভুম বিষ্যাণামপি বস্তুত একভেদানন্তর নপরভেদঃ ৷২৭৷ দুর্ত্ত বৃক্তাদেঃ পুথমতঃ কৌশলে-रेनक मृत्र गुरुगः भन्तामभन्न मृत्र गुरुगः। २४ । न प्राप्ता गाँउ मी यम् भूमिकः। যথা তেনোভয় পার্ম ধারণেন বস্ত পাপিতথাতি অযোধ্যামপুরা भाग काभी काकी व्यवस्थिक।। भूती षाद्भवजीटेवन मरेखजारमा क्रमायिकाः॥ ইত্যব্ৰকাশ্যাঃ পুর এয় পাঠানন্তরণ পুরত্রব পাঠ পুর্ঞ পঠিতত্ত্ব তদি-छत्र वर्षे भूतानिकामी भाभकानि।२२ বেহ্যু নিমজিতেযু একমিলাগতেপি ভোজ্য নদীয়তে সন্ধানপেক্ষতেতদ্বৎ बल्लुमभाधा मृही निर्माणग्नस्तर वर्च-सुरामाध्य करोह निर्याण १ ००१ . वृक्ष रुक्ष यद्धिः मरुना वक्ष श्रीत ৰ্চিৎ পততি বৃচিম্পততি তৰ্থাঞ্ তৎপুমাণানি

सम्याधानिहीका-एवः २०१

भवभागञ्जास्यः २७। পুত্रक्रथञ्जभूजा-नाथ होका २१।

অবস্থেদকত্বনিক্তে জাগদীশী টীকা ২৮। কাশীখণ্ডটীকা ২৯।

ভাৰ্যৱন্ত্ৰপুভাঞ৷

কুলাপব্যাকরণান-নলেহরীটীকাদযঃ কুলাপটীকা। ০ংশ न्धायत्रात्रिगी जी यूक्तिशृत्तं कृष्णका-दिगी। তৎপর্য্যাयः। লুখী ২। ইতি ভিকাওশেষঃ।।

न्यामः शृ॰ উপनिधिः। श्राभ्युत्रः। ইত্যুসরঃ।৷ অস্য বিবর্ত্বর্ণ নিক্ষেপ भक्त पृष्ठेवाः ॥ #॥ विनाताः । य-र्भा । यथा। भनगारम जानी কমল পরিপূর্ণা বসুমতী দৃগানেং।-रैल तिन्तीवत्रमय मञ्दयत जनः। इन वार कि कि विज्ञान वहः स्थात ন্যুর ধরায়া মপ্যান্তা বিধুমুখি সুধায়াঃ পরিচয়ঃ॥ ইতি কালিদা-भः ॥ क ॥ जागः। यथा। काम्।-'ৰা' কৰ্মণাং **ৰ্ব্যাস**ণ সম্যাসণ কব-या विदूः। नर्वं क्यं कृत उत्रगः পুাহু স্ত্যাগ বিচক্ষণাঃ।। ইতি 🗐 ভগবদ্দীতাষা• ১৮ পঞ্চায়ঃ ॥ # ॥• ় কাশিকাথ্য পাণিনি সূত্র কর্মখ্যান गृह वित्भवः। यथा । यनुर्रम्ब शप्रनिधान। जन्तिः निर्वेशन।

भंग विष्ठाव ना ভार्छि द्राजनीजि রপস্পশ। । ইক্তি মাঘ দ্বিতীয়সর্গঃ ॥ #॥ ऋग्रामः। यथा। वत्कर वि-বিদিষা ন্যাস বিদ্বন্যাসঞ্চ ভেদতঃ । (रुज् विरार मुख्यक जीवमुरक क्र তৌ ক্ৰমাৎ ৷৷ ইতি জীবমুক্তি পূৰ্মন विविकः ॥ 🗱 ॥ भूजा जभारमः भाषि-ম্নাশ মত্রসিজ্যাদ্যর্থণ দেহান্ত র্ব-হি বৰ্ণাদি বিন্যাসঃ। তত্ৰ ন্যাস কা-লো যথা। প্রাতঃকালে **ংথবা পূজা** সন্যে হোম কর্মণি। জপকালে পি বা তেষা বিনিযোগঃ পৃথক্ পৃথক্। পূজা কালে সমস্ত বা জ-র্য্যাৎ সাধক সত্তনঃ।ইতি যোগিনী इन्य ।। 🕸 ।। अथ नाज्कानतामः । অস্য নাত্কা মন্ত্ৰস্য বুদ্ধ ঋষি র্গাযত্রীছন্দে। মাত্কা সরশ্বতী দে-वर्ञा देशानि बद्धाः भक्तया লিপিন্যাসে বিনিয়োগঃ দু শিরসি **खेतुकारा अयारानमः। मूर्य खेँगायजी** ছলসেনমঃ। ছদি ভ্রমত্কা সর-बुद्धि (एवजारेयनमः ॥ ख्राष्ट्र ख्रुंवर-ঞ্জনেভ্যে বীক্ষেভ্যোনমঃ। পাদযোঃ স্বরেজ্যঃ শক্তিভ্যোননঃ । তথাচ জ্ঞানাৰ্ণবে। মাতৃকাঃ শ্ৰু বিশ্ব বিশ म्राज्ञ शाभ निक्छनी । सर्वि वैकाः मा मुख्यमा भायकी हुन्त उठाउँ ॥ -

দেবতা মাতৃকাদেবী বীজ ব্যঞ্জন সঞ্চয় । শক্তয়স্ত শ্বরা দেবি ষড় -न्याम माहरत्या ७७: वं उक्न्या-সৌ। অ॰ ক॰ খ॰ গ॰ ষ॰ ড॰ আ॰ न्भांकु आज्ञा॰ नमः। ই॰ চ॰ ছ॰ ज॰ य॰ के रे॰ उर्द्धनीज्याः सारा। উ॰ ট॰ र्ठ- ए॰ ए॰ १॰ 🕸 मध्या जा वर्षे। এ ত খ দ ধ ন এ জনামিকা-ভ্যা হ । ও প ফ ক ব ভ ম ও কনিধাভ্যা বৌষট্। অ य র ল । ব • শ • ম • ম • হ • ল • ক্ষ • অঃকরতল্প **পৃ**ष्ठाञ्जाः कर्। अवः ऋम्यामिषु। अः ্ক • ৫ আ॰ হৃদ্যায় নমঃ। ইত্যাদি। তথাচ জ্ঞানাৰ্ণবে। অ॰ আ॰ মধ্যে কবর্গম্ভ ই• ই• মধ্যে চবর্গক•1উ• উ• মধ্যে টবর্গস্ত এ•ঐ• মধ্যে তবর্গক•॥ ও ও মধ্যেপবৃর্গম্ভ বিন্দু যুক্ত ন্য-(म< शिर्य। अनुश्राह्म विमर्गाष्ठ र्य **म**े वरगो गनकरको ॥ क्रयञ्च भित्र। দেবি শিখা কবচক তথা ৷ নেত্ৰ মন্ত্ৰ • न্যসেৎ ডেস্ত নমঃ স্বাহা ক্রমেণ তু॥ वषद् छ । वोष पश्च क पश्च । यो ज्या । शिर्य। यज्**का २ग**९ माठ्कायाः ज-किनान रदाः मृजः॥ 🗱 ॥ ज्यास-. মাত্রকান্যাসঃ। অকারাদি বোডশ स्त्रान् म्विन्त्न् (भाष्ण मन् कर्मान कर्श्रम्ता नारमः। कुकाहारि बारमः

বৰ্ণান্ সবিন্দূন্ ছাদশদলকনলে হং-मर्य नारमः। एकात्रामि मन्पर्यात् जित्निन्न् मणमण कमाल नाजि नऽ-म् । वकातानि यप्वर्णान् अविनृन् य एरन कमला निक्र्यूल न्रारंगः । वकातारि ठजूरतावनान् मविन्मृन् इन जूर्पनकमत्न मृनाशात न्यानः। इ-क्रवर्ग वय अविन्तु विष्वक्रमा खु-मस्थ्र न्राप्तर । তथाह ज्जानार्गत । ষ্যষ্ঠ পত্ৰাষুজে কণ্ঠে ষরান্ বোডশ বিন্যসেৎ ৷ দ্বাদশ ছদ হৃৎপদ্ম कामीम् असम्भ विन्यान्यः ॥ मन পত্রামুদ্ধে নাভৌ ডকারাদীম্যসে-দশ। ষট্পত্র মধ্যে লিঙ্গস্থে বকা-রাদীন্সলেচ যট্।। আথারে চতুরে। वर्गान् नऽरमहामीम् ठलूर्म्स । इस्मी ञ्ज मथ्यारा भाषी हिमल विन्यानर পূিষে ॥ অগস্ত্য সংহিতাযা: । এ কৈক বৰ্ণ মেকৈক পত্ৰান্তে বিন্যসেৎ शिर्य । अवसन्धः भूविनामा सनमा-তো पहि नंतरन १ 🛊 ॥ देवस्य जू। अरेकक वर्ग सूहार्यं। भूनाशात्राहिता-স্তক• ৷ নমোস্ত মিতি বিন্যাস আন্তরঃ পরিকীর্ভিঙঃ ।। অথান্তর্মাতৃকান্যা-्रमः म्वाधात हरूपंता । मूर्गाए ব পুষুস চতুৰণ বিভ্ষিতে।। বড়দ ल रिरेट्रोठ ग्रिज बाशिशास १नन

দ্বিদি। ব ভ নৈ বৰ হৈ বুক্তে ব न्दैर्नः विद्युक्त भू वृद्ध ॥ मिनशूदा ६-"मनल नीवबीम् ७ मश्रिष्ठ । छानि-কান্ত দলৈ যুক্তে বিন্দূভাষিত মন্ত-় কৈঃ।। অনাহতে দ্বাদশারে পুবাল कृष्टि ममिए । कामि ठाउ मरेन यू रक ্যেপপিনা হৃদ্যক্ষে ৷৷ বিশুলে বো-**७ मन त्र भूगा उन्हर्म व । जा**-জ্ঞাচকে তু চন্দ্রীন্তে দ্বিদলে হ ক লাঞ্তি॥ সহসারে হিমনিভে সর্ব ধর্ণবিভূষিতে। অ ক থাদি ত্রি রেখা-षा र न क वय जिल्ला उमार्था পর বিন্দুঞ্চ সৃষ্টি ভিল্লোযাত্মক । এবং সমাহিত মনা ধ্যাযেষ্যাসো **९**य माख्रः ॥ 🕸 ॥ व्यथ वाष्ट्रमाञ्का न्रामः। उन्ता श्रानः यथा। भक्षाः শলিপিভি বিভক্ত মুখদোঃ পমধ্য वर्कः इना जायस्योनि निवस हन्तुः जकना भाशीन जूक्खनी । भूमानक खन मुथाए। कलम विम्राक इस মুবৈ বিভাগে বিষদ প্ভা তিম্য नाः वार्यवं ज्ञानायः। ववः ध्राजा न्यत्र । ज्ञाकृ वि नियम खत्य । व-बार्ट नामिका मध्य विनातम्मूर्थ পক্তে। তৰ্জনী মধ্যমনামা বৃদ্ধা-्रमात्म हत्नवर्याः॥ अत्रू ४ वर्भर्या नं मु कृतिशक्षको नरमार्शं मधा खि- 🏲

त्या गल्यान्ह मध्यात्भाक्षा रह (जिट् ।। जनामाः महत्या र्जि नहा-मा मुख्याक्रक। मूर्यक्रामाः मध्र भाक रेख भारत्यू भाषरवाः॥ क-निक्षा नाभिका मध्या खास श्रह ह विन् न्राप्तर। जाः नाकुष्ठा नाजि विस् नर्वाः कूरको ह विन्तर्रात्र ॥ इतिय ह . जन गर्द म**ः**भयाण कन ८ इता। **জ্ৎপূৰ্ব• হন্ত পৎ লক্ষি মুখেষু তল** মেবচ ৷৷ এতাক্ত মাতৃকা মূদুাঃ ক্রমেণ প্রিকীর্ত্তিতাঃ। অ্জ্ঞাত্বা বিন্যসেত্রস্ত ন্যাসঃ স্যান্তস্য নিম্কু-नः ॥ भाजभीयं । ननारे मूथ-क् ত্তাক্ষি শুতি যুমণেষু গওযোঃ। ওষ্ট म्हाल्याकाम्। माः भट्मा কেষু চ ॥ পার্শ্ববাঃ পৃষ্ঠতো নাভৌ कठेत्त्र इंनरय १ भारक। कझन्। राम ह क्ट भूब भागि भाम यूर्ग उथा ॥ क्रेताननयाने <del>(ल.स.क्र</del>्मानान् यथा कर्मा ।। जन्मथा। यः नत्मा वनार्हे । आ॰ नर्गा मूचवृर्ख । इ॰ इ॰ ठक्क-वाः। छ • कर्नवाः। श श्र नताः .। ৯· র· গণ্ডুযোঃ। এ· ওঠে। ঐ· **অ**-थुरंत । ७ जैस् रांड । ७ जावान छ। व वुद्धत्र । यः मूर्थ । क पूर् त्राङ्गुत्व। थः कंश्रंति। गः में निरंह । ज्ञः अक्विमला। उ॰ अक्वार्श।

**७व॰ ह॰ ६ वामवाङ्म्ल जक्षाशुरकवृ**। **७व॰ है॰ ६ एकिंग शाम्य्य अक्ष**र्गुः क्वित् । जर ज क वामना मन् नक्र গুকেষু। প॰ দক্ষিণপার্ম্যে। ফ॰ বাম-भार्त्य। वः भ्रष्ठ। छः नालो। मः उद्भित्र। ये क्षि। ते एक वाल्ग्ला ্ল • কঁকুদি। ব॰ বামবাহম্লে। শ॰ इनामि नक्षश्ख। य॰ इनामि वाम श्खान क्रांति मक्कशास । इं इपापि वामशारि। वः इपापूरप्रतः। कः क्रानियूर्थ। अर्बव् नत्मारस्र ন্যসেৎ। তথাচ। ওমাদ্যন্তো নমো-ম্ভোবা সবিন্দু বিন্দু বৰ্জ্জিতঃ। পঞ্চা-শৈষ্ণ বিন্যাসঃ ক্রমাদুক্তো মণীষি-ভিঃ॥ ইতি ভউঃ॥#॥ অথ স•হার **भाज्का नत्रजः। जम**त्र श्रानः यथा । व्यक्त भूब॰ रुद्रिगला ज मूंम्यू हेक বিদ্যাঃ করৈ রবিরত• দপতী• ত্রি-नवाः। अव्यन्त्र भौति सक्या मः রবিন্দ রামা• বর্ণেশ্বরী• শুণমত স্ত-न ভाরनमाः ॥ न्यामस भकाताम्य काताष्ट्रः।यथा। क्र-नमा इनि মুখে ইত্যাদি॥ 🗱 ॥ অপরঞ্চ। চ-जूषी माज्का (शुक्ता किवना विन्तू কিংবুতা। সবিস্পা সোভ্যা চ রহ-म् नै्र्यू कथ्रात्ठ ii विन्ताकृती (कृत-ना ह माख्या जुकिनायिनी श्रिश्य द्वाग्राय के दक्कितात्री वृष्यग्राय।

मा अविमुर्ग कु अविन्मु विख मापि नी।। विर्वास्थात। वाश्वाम् ताक निरेषा त्रभामा छ। भुवृष्यय। क्ला-খাদ্যা সর্বসিদ্যে কামাদ্যা লোক वनारमा। बिक्शेम्रानिमान् न्रामार সর্ব নন্তঃ পুসীদতি ॥ 🗱 । 🕮 বিদ্যা विषय नवत्रज्ञश्रतः । वायुवान्तरः न-নোস্তাশ্চ ন্যন্তব্যা মাতৃকাক্ষরাঃ ! विविष्ठा विषय मजी वाश्वाम् । है সিদ্ধ্যে।। জামলে। ভূতশুদ্ধি লিপি न्यारमो विना यस्त श्रुशृं क्राय ८ । वि-পরীত ক্লা দদ্যদভক্ত্য পূজন यथा ॥ 🐞 ॥ जोगान । नहारत्र वाळू-लि नियस्मा भोजभीत्य । मनना दि-न्या न्या निष्या । **অঙ্গু** ধ্বানামিকাভ্যা বা চান্যথা विकल ७ ७ वर ॥ वित्नव न्याज जू नाय॰ नियमः॥ अथ भीठे नामः । ওঁআধারশক্তযেনমঃ ওঁপুক্তযে न्नः उक्रायनमः उवनन्तरमः उ भेषिरेव ,नमः अँकी तस्यू मायनमः अ-শ্বেতদ্বীপার্যনমঃ এবং মণিমগুপায় কল্পকৃষ্ণায় মণিবেদিকায়ৈ রত্নসিশ্ হাসনায এতৃৎ সর্বস্ত হুদি। ততে। रिकिनकर्क उँथयीयनमः। वामकरक **७७ के शायनमः । व्या वारमात्मे दि**न

मूर्य अवर्थाय। वामनादि अक्तनाय न नार्जि जरितताग्राय। मिक्निनशार्य जरिन्थर्यराय। मर्दव शुनवामि नस्मा-एडन नुरुष्ट्। उथाठ भात्रमायाः। व्यानाक र्युगारिया विद्यान श्रामिक ণ্যেন সাধকঃ। ধর্মণ জ্ঞানঞ্চ বৈরাগ্য रिम्पर्ये कनमः मुधीः॥ मूथ भार्य नाञ्जि शार्त्वव्यक्षां नीन् शुक्त्रायः । **পুनर्ज्ञि।ॐ अन्डायन**मः। এব॰ পদ্মাय-नभः। अ॰ मूर्यप्रभक्षनाय बारमकनाः जात नगः। উ भागम अनाय वा उ नक्वाञ्चात् नमः। मुख्यमञ्जाय मनकलाजात ननः लिल्लेखाय नमः। द्र॰ द्रबरम नमः। उ॰ उमरम नमः। व्या॰ व्याकातम् नमः। व्यः व्यवद्यावारन নমঃ। প॰ পরমাতানে নমঃ। ব্রী জা-नाजात नगः। ३७,७ विन्रम् ह्र् भग्नेग्र भ्रामि कि**म**तिषु उख क-**द्मारू** भीठेमकी मंस्य भीठेमन्क नुरन्धा यथा नात्रमायादा जुनलः ः इत्या भगान्/उमिन् मूर्यान्यः भाव-कान्। अयुर्व च कजा। नामा र्रिकत शूर्वजः॥ मङ्गरीन् विश्व-শান্ ন্যন্য ত্ৰথৈবাত্ৰ ধ্ৰুত্তনঃ। আ चान महताचान भवताचान अव

न्। भविछ। गहि यत मूथा छ काषा यः नाकाख्यमा मन्। मः नाभयि भूकाका में उन्। श्वि রীর্রিতঃ ়া গুৰুত্বান্মন্তকে চাস্য न्यागञ्च পরিকীর্তিতঃ । नर्द्धाः **मञ्जूना॰ हान्नाह्न ्रि**ह्ड ।। वक्तवार अरवाह गूर्थ हनः সমীরিত ৷ সর্বেধামেৰ জভুনাং ज्ञायनाट (भूत्रभाख्या ॥ इपर्या-ম্ভোজ মধ্যন্থ। দেবতা তত্ৰ তা नप्रम् । अविहत्मा १ मतिकानाम-नक कनजाउद्दर ॥ कोईनाऽ या-তি মজাণা বিনিযোগ মজানতা -उद्याख्रतः श्वि न*्*रिम्यू क्ष्रिं (एल्मे हनस्य मूथशक्षा (पवजाः क्राय চৈব বীজন্ত গুছা দেশকে।। শক্তিঞ্চ भारत्या देग्हद भंबात्य वीलक् ना मिट्रा # 11 व्याक्तामः। उता-कृति नियमः। बिक्रिक रिशक वि बि मन्द्रिया, रेमन मस्टार । जकूनीना छिठि वर्षमामिठि शर्कमाथावनः ॥ कामरन। इत्य मन्यानामा उक्की শীভিঃ মৃত্যু শিরঃ। মধ্যমা তর্জনী ख्या॰ महार्रक्रुष्ट्रन् शिथा मृजा ॥ हैं-শভি: কৰঠ প্ৰোক্ত তিস্ভি ৰেত্ৰ हा। क्वानाचान भूविनामा मात्राम । क्वितिकं (भाकाकृषीका मंद्राम প্রীক্রাইতভঃ।। 🗱 । ত্রিথ পব্যাদিনী 🟋 ক' কুপ্তি রিখ নতা।। তিসুভি ত্ত-

ৰ্জনী মধ্যমানামাভিঃ॥ তৰ্জনী মধ্য। गानामा (शुक्ता त्व वर्ष कमार । यित तब इयं ल्याकं उदा उर्क्तन মধ্যমে ॥ ইতি ভউণ্ত কচনাৎ ॥ ्रकृयामिषु विन्तरम् मञ्जाः छजः न् 👣 🤁 क्रियाय नमः भूई शिक्रल . বিহ্নবল্পভা।। শিখাবৈবৰড়িত্যুক্ত॰ কবচায ভূমীরিত 1 নেত্রভ্রয়য বৌ-ষট্স্যাদক্রায় কডিতি ক্রমাৎ ॥ যড क्र मखानिज्यकान् वष्टक्यू निर्या-कारपः । পঞ্চাকानि मना र्यं उव নেত্র মনু• ত্যভেৎ ॥ ইতি শারদা व्यवन ।। 🗱 ॥ विकास जू। अन्त्रुष्ठा या-केरवा इंड नाथा ज्यमुन्। इत्रय भीर्यक ह। अर्थाष्ट्रका थलू गृष्टिः লিখাযা করদ্বন্যস্থলয়ে বর্মণি দ্যুঃ ।। নারাচ মুখ্রুছেত বাহু মুম কা-क्रू ७ उद्धन् । विश्व वि শকা কমিতান্ত মুদুা যত্তাক্ষিণী ত क्दिनि गश्राम ह।। भारतिगार। निर्वाम क्रामा (मर्ह्यू अमीनीन मुँडरोखणः পুষ্ণাদ্যৈ পীঠনবৃত্ত তিমাণ্ড পর দৈবতা ।। ইতি দর্শনাৎ শ্রীরে, शीठेश्जा।। अक्हीनम्। नखमः (च-रेप्ताकानि कन्नायट ! जिथा तुकाका माना बनामाम् अवतः वीकः मानी ॰ ষা মভিধীয়তে।। #।। অথ ব্যাপক-ৠ

न्त्रोजाः । ज्यवान्त्रध्या वाशि ग्रावन পঞ্জা/ত্রিধেতি ভৈরব তন্ত্র বচনাৎ<sub>্র</sub> । নুদ্রা করণে শিরন্তঃ পাদান্ত পা-দতঃ শিরোন্ত । এব চজুরা। সপ্তথা করণে তাদৃশ তিথা। শঞ্চধা করণে তাদৃশ দিখা। ত্রিধা করণেপি তা-म्म (मक्षा। इति मूथा छ छ भार একখা সর্বত্তিব । শত্থা করণে তু তार्मः शक्षामदीतः इसारि गूथाः স্তুণ নাজীতি ব্যাপক ম্যাসঃ। ইত্যা গম্ভত্ত্ববিল্ঞাসঃ।। 🏶 🗓 নিত্যু ন্যাস করণ ফ্লু॰ ৰূপা। আগনোক্তেন বি-थिन। निर्देश मुगान करहा ि यः । দেবতা ভাব মাগ্নোতি মজসিদ্ধিঃ পুজাযতে ॥ যে। न্যাস কবচ इत्मा মন্ত্রণ জপতি তণ প্রিয়ে। বিশ্ব। দৃষ্ট্র। भनायर मि॰ह॰ मृद्धा यथा शङ्गाः ॥ 🛊 ॥ न्यानाकद्राय स्वारा य्था । অক্রা ন্যাস জাল যো মূচ্বাৎ ं शुक्रशिकानुः । अर्दिविषः य वाधः স্যাদ্যায়ৈ মৃ'গশিশু র্যথা ৷৷ ইতি তজ্ঞসারঃ i৷ 🗱 ৷৷ এতে ন্যাসাঃ সা-मान्। भूका भुकत्राभाकाः। अत्रि हे দেবতা বিশেষে বহুবঃ সম্ভি। বাহুল্য ज्याद्ध्याः भुगागारिक गविधिषा क्वैष् नामानि विश्वास्त्र छवे हि कु विष्किरिक्षविकी द्यापि प्रमूर्दिश-

नुर्वस

ঞ্জর ২ তত্ত্ব ত ভূতিপ জের ৪ দশাক ৫ अक्षाक्ष ७ न जा जाः। निविविविविवि काि विभागाि भिष्मृ विश्व मञ्ज मृर्खि १ (गानक ८ मुजगारि ७ ज्यन १ न्यांनाः विषय् भूनं विषय भेर-न्रामः >। श्रीविष्ठा विषय विन-नशिक्त > नवरवानशाञ्चक २ शीठे ० তত্ব ৪ পঞ্চদশী ৫ যোডশী ৬ সং शत १ ছिতি ৮ मृश्वित नाम > বোঢ়া ১১ গণেশ ১২ গুহ ১৩ নক্ষত্ৰ ১৪ যোগিনী ১৫ রাশি ১৬ ত্রিপুর। ১৭ ফোডশনিত্যা গ্রাম্থিতি ১৯ সৃষ্টিস্থিতি ২০ পু णागूथ २२ नजामाः । जात्राविषय क्षु > शृह २ (लाक्शान ७ न्या माः। এতেষা পুনাণানি তল্পারাদৌ **मु**ष्ठेवश्रनि ॥

নুগ্রঃ প্রু॰ সামবেদেনিযতপুণবৃষ্ট্ক॰

1 দীর্ঘবান্যমিতি ন্যনান্দরঃ ॥
ইত্যনরভরতৌ ॥ সম্যক্ ॥ ন
নাক্তঃ। ইভিনেদিনী ॥

নুত্রে ক্লী কর্মরঞ্চফল । ইতি নে দিনী
। শুন্ধাদিপাত্রভেদ: । ইতি শদরত্বাবলী ॥ তথাচ গোভিলঃ ।
পূথ্নে পাত্রে সংস্বান্ সম্বনীয প্রার্ক্তি পুথ্নে পাত্রে সংস্বান্ সম্বনীয প্রার্ক্তি পুথ্নে পাত্রেজ্ঞ ভ্রপাত্রে

। मन्त्रान् भिजामहापि शक्षार्य-পাত्र (भव जनानि। जमवनीय करमण शामिष्या। उरमावमार्भु-পিতানহ পাত্রেণাছাদন নাহ শৌনকঃ। পুলিতামহ পাত্রেণ পি थाय भुजिष्ठाभयजीजि। याख्युर् ्री-নাপি তৎপাত্রস্যাধঃস্থাভিধা-নাৎ পাত্রান্তরেণ পিধান মাক্ষিপ্ত .। তথাচ যাজ্ঞবহ্ন্যঃ। দত্বার্য্যণ সণ-সুবাণ স্তেষাণ পাত্রে কৃত্বা বিধানতঃ । পিতৃভ্যঃ স্থান মসীতি নুরে পাত্র॰ করোর্ত্যখ:।। বিধানতঃ যথা পূৰ্ব॰ স্থাপিত• ক্ৰমেণ্। তেন পু-পিতামহ পাত্রেণাধঃ কৃত পিতৃ পাত্ৰণ উদ্ধৃ মুখ মবস্থিতণ নুব্লেণ ক-রোতি। তম্যাসশ্চ। পিতৃপাত্তে নি-ধাযাথ নু,ব্লুমুক্তরতোন্যসেৎ।ইতি মৎস্য পুরাণ বচনে ন্যেদিত্যতা-্ণ্যাতো**পহাপিত** করু বীমপার্শ্বে कर्वद्राः। इंडि माष्ट्रज्वः॥ न्। कु: भू मर्ज्ययमुक् । इंडि त्यिनी ়া। সশং॥ সুক্। ইতি হেমচন্দু:॥ न्दुः , वि बद्धा प्राथामू थः। ३७ मिनि ॥ बंबाजूगः । ३७९मतः ॥ রোগেন বকী কৃতপৃষ্ঠাধোমুখ প্র শদুঃ। ইতি ভরতঃ॥

ক্রার্থন্ধ: পু জরখন্ন: ত্রিকাতর-

न्।नश

वाह है डि छारा। उट शर्यायः।
की उनः । है जिका अल्मयः॥
वृत्तः जि शर्याः॥ छनः। हे जातः॥
वृत्तं श्रिका कार्यः। छनः। हे जातः॥
वृत्तं श्रिका कार्यः। श्रिका हे जातः। शांगा हे जायः। स्था।
है प्रीहि जिल्ला श्रिका विकाक कार्यः।

नहिंगा

खराबाक्न - जिस्द म्नश्माण-खादा बाजाः भन्नीत्रजः ॥ इंडि कानिकाशृतात विजीयाद्यायः ॥ वृहिमानी श्रु भितः । इंडि जिका-खत्मतः ॥ नन्नाहिमानाविभित्रः जि॥